परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19–03–1971 ❊ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❊ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

हिन्दी शब्द सागर

भाग -०९

सम्पादक
श्याम सुन्दर दास

प्रकाशक
नागरी प्रचारिणी सभा
वाराणसी (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

हिंदी शब्दसागर के सशोधन संपादन का संपूर्ण तथा प्रथम एव द्वितीय भाग के प्रकाशन का साठ प्रतिशत व्ययभार भारत सरकार के शिक्षामत्रालय ने वहन किया।

पश्चिर्धित, संशोधित, नवीन संस्करण

शकाब्द १८९४ स० २०२९ वि० १९७२ ई०

नागरीप्रचारिणी सभा
वाराणसी
मूल्य ... २५०

पूर्ण दस भागो का २५०)

शभुनाथ वाजपेयी
द्वारा
नागरी मुद्रण, वाराणसी
में मुद्रित

प्रकाशिका

'हिंदी शब्दसागर' अपने प्रकाशनकाल से ही कोश के क्षेत्र मे भारतीय भाषाओ के दिशानिर्देशक के रूप मे प्रतिष्ठित है। तीन दशक तक हिंदी की मूर्धन्य प्रतिभाओ ने अपनी सतत तपस्या से इसे सन् १९२८ ई० में मूर्त रूप दिया था। तब से निरतर यह ग्रथ इस क्षेत्र मे गभीर कार्य करनेवाले विद्वत्समाज मे प्रकाशस्तभ के रूप में मर्यादित हो हिंदी की गौरवगरिमा का आख्यान करता रहा है। अपने प्रकाशन के कुछ समय बाद ही इसके खड एक एक कर अनुपलब्ध होते गए और अप्राप्य ग्रथ के रूप में इसका मूल्य लोगो को सहस्र मुद्राओ से भी अधिक देना पडा। ऐसी परिस्थिति में अभाव की स्थिति का लाभ उठाने की दृष्टि से अनेक कोशो का प्रकाशन हिंदी-जगत् में हुआ, पर वे सारे प्रयत्न इसकी छाया के ही बल जीवित थे। इसलिये निरतर इसकी पुन अवतारणा का गभीर अनुभव हिंदी-जगत् और इसकी जननी नागरीप्रचारिणी सभा करती रही, किंतु साधन के अभाव मे अपने इस कर्तव्य के प्रति सजग रहती हुई भी वह अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वाह न कर सकने के कारण मर्मातक पीड़ा का अनुभव कर रही थी। दिनोत्तर उसपर उत्तर-दायित्व का ऋण चक्रवृद्धि सूद की दर से इसलिये और भी बढता गया कि इस कोश के निर्माण के बाद हिंदी की श्री का विकास बडे व्यापक पैमाने पर हुआ। साथ ही, हिंदी के राष्ट्रभाषा पद पर प्रतिष्ठित होने पर उसकी शब्दसपदा का कोश भी दिनोत्तर गतिपूर्वक बढते जाने के कारण सभा का यह दायित्व निरतर गहन होता गया।

सभा की हीरक जयती के अवसर पर, २२ फाल्गुन, २०१० वि० को, उसके स्वागताध्यक्ष के रूप मे डा० सपूर्णानद जी ने राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद जी एव हिंदीजगत् का ध्यान निम्नाकित शब्दो मे इस ओर आकृष्ट किया—'हिंदी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने से सभा का दायित्व बहुत बढ गया है। हिंदी मे एक अच्छे कोश और व्याकरण की कमी खटकती है। सभा ने आज से कई वर्ष पहले जो हिंदी शब्दसागर प्रकाशित किया था उसका बृहत् सस्करण निकालने की आवश्यकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस काम के लिये पर्याप्त धन व्यय किया जाय और केंद्रीय तथा प्रादेशिक सरकारो का सहारा मिलता रहे।'

उसी अवसर पर सभा के विभिन्न कार्यों की प्रशसा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा—'वैज्ञानिक तथा पारिभाषिक शब्दकोश सभा का महत्वपूर्ण प्रकाशन है। दूसरा प्रकाशन हिंदी शब्दसागर है जिसके निर्माण मे सभा ने लगभग एक लाख रुपया व्यय किया है। आपने शब्दसागर का नया सस्करण निकालने का निश्चय किया है। जब से पहला सस्करण छपा, हिंदी में बहुत बातो में और हिंदी के अलावा ससार मे बहुत बातो में बड़ी प्रगति हुई है। हिंदी भाषा भी इस प्रगति से अपने को वचित नही रख सकती। इसलिये शब्दसागर का रूप भी ऐसा होना चाहिए जो यह प्रगति प्रतिबिंबित कर सके और वैज्ञानिक युग के विद्यार्थियो के लिये भी साधारणत पर्याप्त हो। मैं आपके निश्चयो का स्वागत करता हूँ। भारत सरकार की ओर से शब्दसागर का नया सस्करण तैयार करने के सहायतार्थ एक लाख रुपए, जो पाँच वर्षों मे बीस बीस हजार करके दिए जाएँगे, देने का निश्चय हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि इस निश्चय से आपका काम कुछ सुगम हो जाएगा और आप इस काम मे अग्रसर होगे।'

राष्ट्रपति डा० राजेंद्रप्रसाद जी की इस घोषणा ने शब्दसागर के पुन सपादन के लिये नवीन उत्साह तथा प्रेरणा दी। सभा द्वारा प्रेषित योजना पर केंद्रीय सरकार के शिक्षामत्रालय ने अपने पत्र स० एफ।४—३।५४ एच० दिनाक ११।५।५४ द्वारा एक लाख रुपए। पाँच वर्षों मे, प्रति वर्ष बीस हजार रुपए करके, देने की स्वीकृति दी।

इस कार्य की गरिमा को देखते हुए एक परामर्शमडल का गठन किया गया, इस सबध में देश के विभिन्न क्षेत्रो के अधिकारी विद्वानो की भी राय ली गई, किंतु परामर्शमडल के अनेक सदस्यो का योगदान सभा को प्राप्त न हो सका और जिस विस्तृत पैमाने पर सभा विद्वानो की राय के अनुसार इस कार्य का सयोजन करना चाहती थी, वह भी नही उपलब्ध हुआ। फिर भी, देश के अनेक निष्णात अनुभवसिद्ध विद्वानो तथा परामर्शमडल के सदस्यो ने गभीरतापूर्वक सभा के अनुरोध पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए। सभा ने उन सबको मनोयोगपूर्वक मथकर शब्दसागर के सपादन हेतु सिद्धात स्थिर किए जिनसे भारत सरकार का शिक्षामत्रालय भी सहमत हुआ।

उपर्युक्त एक लाख रुपए का अनुदान बीस बीस हजार रुपए प्रति वर्ष की दर से निरतर पाँच वर्षों तक केंद्रीय शिक्षा मत्रालय देता रहा और कोश के सशोधन, सवर्धन और पुन स्पादन का कार्य लगातार होता रहा, परतु इस अवधि मे सारा कार्य निपटाया नही जा सका। मत्रालय के प्रतिनिधि श्री डा० रामधन जी शर्मा ने बडे मनोयोगपूर्वक यहाँ हुए कार्यों का निरीक्षण परीक्षण करके इसे पूरा करने के लिये आगे और ६५०००) अनुदान प्रदान करने की सस्तुति की जिसे सरकार ने कृपापूर्वक स्वीकार करके पुन उक्त ६५०००) का अनुदान दिया। इस प्रकार सपूर्ण कोश का सशोधन सपादन दिसबर, १९६५ मे पूरा हो गया।

इस ग्रथ के सपादन का सपूर्ण व्यय ही नही, इसके प्रकाशन के व्ययभार का ६० प्रतिशत बोझ भी दो खडो तक भारत सरकार ने वहन किया है, इसी लिये यह ग्रथ इतना सस्ता निकालना सभव हो सका है। उसके लिये शिक्षामत्रालय के अधिकारियो का प्रशसनीय-सहयोग हमे प्राप्त है और तदर्थ हम उनके अतिशय आभारी है।

जिस रूप मे यह ग्रथ हिंदीजगत् के समुख उपस्थित किया जा रहा है, उसमे अद्यतन विकसित कोशशिल्प का यथासामर्थ्य उपयोग और

प्रयोग किया गया है, किंतु हिंदी की और हमारी सीमा है। यद्यपि हम अर्थ और व्युत्पत्ति का ऐतिहासिक क्रमविकास भी प्रस्तुत करना चाहते थे, तथापि साधन की कमी तथा हिंदी ग्रथो के कालक्रम के प्रामाणिक निर्धारण के अभाव मे वैसा कर सकना सभव नही हुआ। फिर भी यह कहने मे हमे सकोच नही कि अद्यतन प्रकाशित कोशो मे शब्दसागर की गरिमा आधुनिक भारतीय भाषाओ के कोशो मे अतुलनीय है, और इस क्षेत्र मे काम करनेवाले प्राय सभी क्षेत्रीय भाषाओ के विद्वान् इससे आधार ग्रहण करते रहेगे। इस अवसर पर हम हिंदीजगत् को यह भी नम्रतापूर्वक सूचित करना चाहते है कि सभा ने शब्दसागर के लिये एक स्थायी विभाग का सकल्प किया है जो बराबर इसके प्रवर्धन और सशोधन के लिये कोशशिल्प सबधी अद्यतन विधि से यत्नशील रहेगा।

शब्दसागर के इस सशोधित प्रवर्धित रूप मे शब्दो की सख्या मूल शब्दसागर की अपेक्षा दुगुनी से भी अधिक हो गई है। नए शब्द हिंदी साहित्य के आदिकाल, सत एव सूफी साहित्य (पूर्व मध्यकाल), आधुनिक काल, काव्य, नाटक, आलोचना, उपन्यास आदि के ग्रथ, इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य आदि और अभिनदन एव पुरस्कृत ग्रथ, विज्ञान के सामान्य प्रचलित शब्द और राजस्थानी तथा डिंगल, दक्खिनी हिंदी और प्रचलित उर्दू शैली आदि से सकलित किए गए हैं। परिशिष्ट खड मे प्राविधिक एव वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दो की व्यवस्था की गई है।

हिंदी शब्दसागर का यह सशोधित परिवर्धित सस्करण कुल दस खडो मे पूरा होगा। इसका पहला खड पौष, सवत् २०२२ वि० मे छपकर तैयार हो गया था। इसके उद्घाटन का समारोह भारत गणतत्र के प्रधान मत्री स्वर्गीय माननीय श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा प्रयाग मे ३ पौष, स० २०२२ वि० (१८ दिसबर, १९६५) को भव्य रूप से सजे हुए पडाल मे काशी, प्रयाग एव अन्यान्य स्थानो के वरिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यसेवियो, पत्रकारो तथा गण्यमान्य नागरिको की उपस्थिति मे सपन्न हुआ। समारोह मे उपस्थित महानुभावो मे विशेष उल्लेख्य माननीय श्री प० कमलापति जी त्रिपाठी, हिंदी विश्वकोश के प्रधान सपादक श्री डा० रामप्रसाद जी त्रिपाठी, पद्मभूषण कविवर श्री प० सुमित्रानदन जी पत, श्रीमती महादेवी जी वर्मा आदि हैं। इस सशोधित सवर्धित सस्करण की सफल पूर्ति के उपलक्ष्य मे इसके समस्त सपादको को एक एक फाउंटेन पेन, ताम्रपत्र और ग्रथ की एक एक प्रति माननीय श्री शास्त्री जी के करकमलो द्वारा भेंट की गई। उन्होने अपने सक्षिप्त सारगर्भित भाषण मे इस सभा की विभिन्न प्रवृत्तियो की चर्चा की और कहा 'सार्वजनिक क्षेत्र मे कार्य करनेवाली यह सभा अपने ढग की अकेली सस्था है। हिंदी भाषा और साहित्य की जैसी सेवा नागरीप्रचारिणी सभा ने की है वैसी सेवा अन्य किसी सस्था ने नही की। भिन्न भिन्न विषयो पर जो पुस्तकें इस सस्था ने प्रकाशित की है वे अपने ढग के अनूठे ग्रथ हैं और उनसे हमारी भाषा और साहित्य का मान अत्यधिक बढा है। सभा ने समय की गति को देखकर तात्कालिक उपादेयता के वे सब कार्य हाथ मे लिए हैं जिनकी इस समय नितात आवश्यकता है। इस प्रकार यह निस्सकोच कहा जा सकता है कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र मे यह सभा अप्रतिम है'।

प्रस्तुत नवें खड मे 'व' से लेकर 'ष्ठ्यूति' तक के शब्दो का सचयन है। नए नए शब्द, उदाहरण, यौगिक शब्द, मुहावरे, पर्यायवाची शब्द और महत्वपूर्ण ज्ञातव्य सामग्री 'विशेष' से सवलित इस भाग का शब्दसख्या लगभग २०,००० है। अपने मूल रूप मे यह अश कुल ४२८ पृष्ठो मे था जो अपने विस्तार के साथ इस परिवर्धित सशोधित सस्करण मे लगभग ४४९ पृष्ठो मे आ पाया है।

सपादकमडल के प्रत्येक सदस्य ने यथासामर्थ्य निष्ठापूर्वक इसके निर्माण मे योग दिया है। स्व० श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड नियमित रूप से नित्य सभा मे पधारकर इसकी प्रगति को विशेष गभीरतापूर्वक गति देते थे और प० करुणापति त्रिपाठी ने इसके सपादन और सयोजन मे प्रगाढ निष्ठा के साथ घर पर, यहाँ तक कि यात्रा पर रहने पर भी, पूरा कार्य किया है। यदि ऐसा न होता तो यह कार्य सपन्न होना सभव न था। हम अपनी सीमा जानते हैं। सभव है, हम सबके प्रयत्न मे त्रुटियाँ हो, पर सदा हमारा परिनिष्ठित यत्न यह रहेगा कि हम इसको और अधिक पूर्ण करते रहे क्योकि ऐसे ग्रथ का कार्य अस्थायी नही, सनातन है।

अत मे शब्दसागर के मूल सपादक तथा सभा के सस्थापक स्व० डा० श्यामसुदरदास जी को अपना प्रणाम निवेदित करते हुए, यह सकल्प हम पुन दुहराते है कि जब तक हिंदी रहेगी तब तक सभा रहेगी और उसका यह शब्दसागर अपने गौरव से कभी न गिरेगा। इस क्षेत्र मे यह नित नूतन प्रेरणादायक रहकर हिंदी का मानवर्धन करता रहेगा और उसका प्रत्येक नया सस्करण और भी अधिक प्रभोज्वल होता रहेगा।

ना० प्र० सभा, काशी
निर्जला एकादशी २०२९ वि०

सुधाकर पाडेय
प्रधान मंत्री

संकेतिका

[उद्धरणों में प्रयुक्त संदर्भग्रंथों के इस विवरण में क्रमशः ग्रंथ का संकेताक्षर, ग्रंथनाम, लेखक या संपादक का नाम और प्रकाशन के विवरण दिए गए हैं।]

अंधेरे०	अंधेरे की भूख, डा० रागेय राघव, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम सस्करण
अबिकादत्त (शब्द०)	अबिकादत्त व्यास
अकबरी०	अकबरी दरबार के हिंदी कवि, डा० सरजूप्रसाद अग्रवाल, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, स० २००७
अखबार	'आज' दैनिक, वाराणसी
अखिलेश (शब्द०)	अखिलेश कवि
अग्नि०	अग्निशस्य, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं०
अजात०	अजातशत्रु, जयशकर प्रसाद, १६वाँ सं०
अणिमा	अणिमा, पं० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', युग मदिर, उन्नाव
अतिमा	अतिमा, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
अधखिला (शब्द०)	अधखिला फूल (उपन्यास), अयोध्यासिह उपाध्याय
अनामिका	अनामिका, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', प्र० स०
अनुराग०	अनुरागसागर, सपा० स्वामी युगलानद विहारी, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, प्र० स०
अनुराग बाग (शब्द०)	अनुराग बाग
अनेक (शब्द०)	अनेकार्थ नाममाला (शब्दसागर)
अनेकार्थ०	अनेकार्थमजरी और नाममाला, सपा० बलभद्रप्रसाद मिश्र, युनिवर्सिटी आफ इलाहाबाद स्टडीज, प्र० स०
अपरा	अपरा, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग
अपलक	अपलक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, प्र० सं०, १९५३ ई०
अभिशप्त	अभिशप्त, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४४ ई०
अमिट०	अमिट स्मृति, महावीरप्रसाद द्विवेदी, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९३० ई०
अमृतसागर (शब्द०)	अमृतसागर
अयोध्या (शब्द०)	अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध'
अरस्तू०	अरस्तू का काव्यशास्त्र, डा० नगेंद्र, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २०१४ वि०
अर्चना	अर्चना, प० सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', कलामदिर, इलाहाबाद
अर्थ०	अर्थशास्त्र, कौटिल्य (५ खड), सपा० आर० शाम शास्त्री, गवर्नमेंट ब्राच प्रेस, मैसूर, प्र० स०, १९१९ ई०
अर्ध०	अर्धकथानक, संपा० नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, प्र० स०
अष्टाग (शब्द०)	अष्टागयोग सहिता
अष्टाग०	अष्टागयोग सहिता
आँधी	आँधी, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स०
आ० अ० रा०	आज की अतर्राष्ट्रीय राजनीति, रामनारायण यादवेंदु, आर्यावर्त प्रकाशन मदिर, पटना, १९५१ ई०
आकाश०	आकाशदीप, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, इलाहाबाद, पचम सं०
आचार्य०	आचार्य रामचद्र शुक्ल, चद्रशेखर शुक्ल, वाणी वितान, वाराणसी, प्र० स०
आत्रेय अनुक्रमणिका (शब्द०)	आत्रेय अनुक्रमणिका
आदि०	आदिभारत, अर्जुन चौबे काश्यप, वाणी विहार, बनारस, प्र० स०, १९५३ ई०
आधुनिक०	आधुनिक कविता की भाषा
आनदघन (शब्द०)	कवि आनदघन
आराधना	आराधना, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', साहित्यकार ससद्, इलाहाबाद, प्र० सं०
आर्द्रा	आर्द्रा, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९८४ वि०
आर्य भा०	आर्यकालीन भारत
आर्यों०	आर्यों का आदिदेश, सपूर्णानद, भारता भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, १९९७ वि०, प्र० स०
इद्र०	इद्रजाल, जयशकर प्रसाद लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
इंद्रा०	इद्रावती, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०

इंशा०	इंशा, उनका काव्य तथा रानी केतकी की कहानी, सपा०, ब्रजरत्नदास, कमलमणि ग्रंथ-माला, बुलानाला, काशी, प्र० स०
इति०	इतिहास और आलोचना, नामवर सिंह, प्र० सं०
इतिहास	हिंदी साहित्य का इतिहास, प० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, नवाँ स०
इत्यलम्	इत्यलम्, 'अज्ञेय,' प्रतीक प्रकाशन केंद्र, दिल्ली
इनशा (शब्द०)	इनशा अल्ला खाँ
इरा०	इरावती, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
उत्तर०	उत्तररामचरित नाटक, अनु०प० सत्यनारायण कविरत्न, रत्नाश्रम, आगरा, पचम स०
एकात०	एकांतवासी योगी, अनु० श्रीधर पाठक, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९८६ वि०
कंकाल	कंकाल, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सप्तम स०
कठ० उप० (शब्द०)	कठवल्ली उपनिषद्
कढी०	कढी मे कोयला, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर, प्र० स०
कबीर ग्र०	कबीर ग्रथावली, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, काशी
कबीर० बानी	कबीर साहब की बानी
कबीर बीजक	कबीर बीजक, कबीर ग्र थ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि०
कबीर बी०	कबीर बीजक, सपा० हसदास, कबीर ग्रंथ प्रकाशन समिति, बाराबकी, २००७ वि०
कबीर म०	कबीर मसूर (२ भाग), वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बबई, सन् १९०३ ई०
कबीर० रे०	कबीर साहब की ज्ञानगुदडी व रेख्ते, वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद
कबीर० श०	कबीर साहब की शब्दावली (४ भाग), वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, सन् १९०८
कबीर(शब्द०)	कबीरदास
कबीर सा०	कबीर सागर (४ भा०), सपा० स्वा० श्री युगलानद बिहारी, वेंकटेश्वर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, बंबई
कबीर सा० सं०	कबीर साखी सग्रह, वेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०
कमलापति (शब्द०)	कवि कमलापति
करुणा०	करुणालय, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०
कर्ण०	सेनापति कर्ण, लक्ष्मीनारायण मिश्र, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०
कर्पूर मजरी (शब्द०)	कर्पूरमजरी नाटक, भारतेंदु लिखित
कविंद (शब्द०)	कविंद कवि
कविता कौ०	कविता कौमुदी (१–४ भा०), संपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, तृ० स०
कवित्त०	कवित्तरत्नाकर, सपा० उमाशंकर शुक्ल, हिंदी परिषद्, विश्वविद्यालय, प्रयाग
कादंबरी (शब्द०)	कादंबरी ग्रंथ अनुवाद
कानन०	काननकुसुम, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पचम स०
कामायनी	कामायनी, जयशकर प्रसाद, नयम स०
काया०	कायाकल्प, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, ९वाँ स०
काले०	काले कारनामे, 'निराला,' कल्याण साहित्य मदिर, प्रयाग, २००७ वि०
काव्य०	काव्यशास्त्र
काव्य० निबध	काव्य और कला तथा अन्य निबध, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
काव्य० प्र०	काव्य प्रभाकर (शब्द०)
काव्य० य० प्र०	काव्य यथार्थ और प्रगति, डा० रागेय राघव, विनोद पुस्तक मदिर, आगरा, प्र० स०, २०१२ वि०
काशीराम (शब्द०)	काशीराम कवि
काश्मीर०	काश्मीर सुषमा, श्रीधर पाठक, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
काष्ठजिह्वा (शब्द०)	काष्ठजिह्वा स्वामी
कासीराम (शब्द०)	कासीराम कवि
किन्नर०	किन्नर देश में, राहुल साकृत्यायन, इडिया पब्लिशर्स, प्रयाग, प्र० स०
किशोर (शब्द०)	किशोर कवि
कीर्ति०	कीर्तिलता, स० बाबूराम सक्सेना, ना० प्र० सभा, वाराणसी, तृ० सं०
कुकुर०	कुकुरमुत्ता, 'निराला', युगमदिर, उन्नाव
कुणाल	कुणाल, सोहनलाल द्विवेदी
कृषि०	कृषिशास्त्र
केशव (शब्द०)	केशवदास
केशव ग्र०	केशव ग्रंथावली, सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
केशव० अमी०	केशवदास की अमीघूँट
कोई कवि (शब्द०)	अज्ञातनाम कोई कवि
कुलार्णव तत्र (शब्द०)	कुलार्णव तत्र
कौटिल्य अ०	कौटिल्य का अर्थशास्त्र
क्वासि	क्वासि, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', राजकमल प्रकाशन, बंबई, १९५३ ई०
खानखाना (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
खालिक०	खालिकबारी, सपा० श्रीराम शर्मा, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०, २०२१ वि०
खिलौना	खिलौना (मासिक)

खुदाराम	खुदाराम और चद हसीनो के खतूत, पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र', गऊघाट, मिर्जापुर आठवाँ स०
खुमरो (शब्द०)	अमीर खुमरो
खेती की पहली पुस्तक (शब्द०)	खेती की पहली पुस्तक
गग क०	गंग कवित्त (ग्रथावली), सपा० बटेकृष्ण ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
गदाधर०	श्रीगदाधर भट्ट जी की बानी
गदाधर सिंह (शब्द०)	गदाधर सिंह
गबन	गबन, प्रेमचद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, २६वाँ स०
गर्ग संहिता (शब्द०)	गर्ग संहिता
गालिब०	गालिब की कविता, स० कृष्णदेवप्रसाद गौड, वाराणसी, प्र० स०
गि० दा०, गि० दास गिरिधरदास (शब्द०)	गिरिधरदास (बा० गोपालचद्र)
गिरिधर (शब्द०)	गिरिधर राय (कुडलियावाले)
गीतिका	गीतिका, सूर्यकात त्रिपाठी 'निराला', भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
गुजन	गुजन, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
गुधर (शब्द०)	गुधर कवि
गुमान (शब्द०)	गुमान मिश्र
गुरुदास (शब्द०)	गुरुदास कवि
गुलाब (शब्द०)	कवि गुलाब
गुलाल०	गुलाल बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १६१० ई०
गोकुल (शब्द०)	कवि गोकुल
गोदान	गोदान, प्रेमचद, सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र० स०
गोपाल उपासनी (शब्द०)	गोपाल उपासनी
गोपाल० (शब्द०)	गिरिवर दास (गोपालचद्र)
गोपालभट्ट (शब्द०)	गोपालभट्ट, वाल्मीकि रामायण के अनुवादक
गोरख०	गोरखबानी, स० डा० पीतावरदत्त बडथ्वाल, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०
गोल० (शब्द०)	गोलघिनोद (ग्रथ)
ग्राम०	ग्राम साहित्य, सपा० रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मदिर, प्रयाग, प्र० स०
ग्राम्या	ग्राम्या, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
घट०	घट रामायण (२ भाग), सतगुरु तुलसी साहिब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, तृ० स०
घनानद	घनानंद, संपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, प्रसाद परिषद्, वाणीवितान, ब्रह्मनाल, वाराणसी
घाघ०	घाघ और भड्डरी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
घासीराम (शब्द०)	घासीराम कवि
चद०	चद हसीनो के खतूत, 'उग्र', हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, प्र० स०
चद्र०	चद्रगुप्त, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, नवाँ स०
चक्र०	चक्रवाल, रामधारी सिंह 'दिनकर', उदयाचल, पटना, प्र० स०
चरण (शब्द०)	चरणदास
चरणचद्रिका (शब्द०)	चरणचद्रिका
चरण० बानी	चरणदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
चाँदनी०	चाँदनी रात और अजगर, उपेंद्रनाथ 'अश्क', नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग, प्र० स०
चाणक्य नीति (शब्द०)	चाणक्य नीति
चाणक्य (शब्द०)	चाणक्य नीति दर्पण
चिंता	चिंत, अज्ञेय सरस्वती प्रेस, प्र० सं०, सन् १६४० ई०
चिंतामणि	चिंतामणि (२ भाग), रामचद्र शुक्ल, इडियन प्रेस, लि०, प्रयाग
चिंतामणि (शब्द०)	कवि चिंतामणि त्रिपाठी
चित्रा०	चित्रावली, स० जगन्मोहन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
चुभते०	चुभते चौपदे, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स०
चोखे०	चोखे चौपदे, „ „ „
चोटी०	चोटी की पकड, 'निराला,' किताब महल इलाहाबाद, प्र० स०
छद०	छद प्रभाकर, भानु कवि, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० स०
छत्र०	छत्रप्रकाश, स० विलियम प्राइस, एजुकेशन प्रेस, कलकत्ता, १८२६ ई०
छिताई०	छिताई वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
छीत०	छीत स्वामी, सपा० ब्रजभूषण शर्मा, विद्या विभाग, अष्टछाप स्मारक समिति, कांकरोली, प्र० स०, सवत् २०१२
जंतुप्रबंध (शब्द०)	जतुप्रबंध ग्रथ

जग० बानी	जगजीवन साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९, प्र० सं०
जग० श०	जगजीवन साहब की शब्दावली
जगन्नाथ (शब्द०)	जगन्नाथप्रसाद 'भानु'
जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)	जगन्नाथ शर्मा (लेखक)
जनमेजय०	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर 'प्रसाद' भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, पचम स०
जनानी०	जनानी ड्योढी, अनु० यशपाल, अशोक प्रकाशन, लखनऊ
जमाना (शब्द०)	जमाना अखबार (शब्द०)।
जय० प्र०	जयशकर प्रसाद, नददुलारे वाजपेयी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०, १९९५ वि०
जयसिंह (शब्द०)	जयसिंह कवि
जरासधवध (शब्द०)	जरासधवध नाम का काव्य
जायसी ग्र०	जायसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, द्वि० स०
जायसी ग्र० (गुप्त)	जायसी ग्रथावली, सपा० माताप्रसाद गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५१ ई०
जायसी (शब्द०)	मलिक मुहम्मद जायसी
जिप्सी	जिप्सी, इलाचद्र जोशी, सेंट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई०
जुगलेश (शब्द०)	जुगलेश कवि
ज्ञानदान	ज्ञानदान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ १९४२ ई०
ज्ञानरत्न	ज्ञानरत्न, दरिया साहब, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
झरना	झरना, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स०
झाँसी०	झाँसी की रानी, वृदावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी, द्वि० स०
टैगोर०	टैगोर का साहित्यदर्शन, अनु० राधेश्याम पुरोहित, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्र० सं०
ठडा०	ठडा लोहा, धर्मवीर भारती, साहित्य भवन लि०, प्रयाग, प्र० स०, १९५२ ई०
ठाकुर०	ठाकुर शतक, सपा० काशीप्रसाद, भारत-जीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, सवत् १९६१
ठेठ०	ठेठ हिंदी का ठाठ, अयोध्यासिंह उपाध्याय, खड्गविलास प्रेस, पटना, प्र० स०
ढोला०	ढोला मारू रा दूहा, सपा० रामसिंह, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
तितली	तितली, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सातवाँ स०
तिथितत्व (शब्द०)	तिथितत्व निर्णय
तुलसी	तुलसीदास, 'निराला', भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, चतुर्थ स०
तुलसी ग्र०	तुलसी ग्रथावली, सपा० रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, काशी, तृतीय स०
तुलसी सुधाकर (शब्द०)	तुलसी सुधाकर
तुरसी श०, तुलसी श०	तुलसी साहब (हाथरसवाले) की शब्दावली, बेसवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०९,१९११
तेग अली (शब्द०)	बदमाश दर्पण के रचयिता तेग अली
तेग०, तेगबहादुर (शब्द०)	गुरु तेगबहादुर
तेज०	तेजबिंदूपनिषद्
तोप (शब्द०)	कवि तोप
त्याग०	त्यागपत्र, जैनेंद्रकुमार, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बबई, प्र० स०
द० सागर	दरिया सागर, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९१० ई०
दक्खिनी०	दक्खिनी का गद्य और पद्य, सपा० श्रीराम शर्मा, हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद, प्र० स०
दयानद (शब्द०)	स्वामी दयानंद जी
दयानिधि (शब्द०)	दयानिधि कवि
दरिया० बानी	दरिया साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि० स०
दश०	दशरूपक, सपा० डा० भोलाशकर व्यास, चौखभा विद्याभवन, वाराणसी, प्र० सं०
दशम० (शब्द०)	भाषा दशम स्कध, भागवत
दहकते०	दहकते अगारे, नरोत्तमप्रसाद नागर, अभ्युदय कार्यालय, इलाहाबाद
दादू०	श्री दादूदयाल की बानी, सपा० सुधाकर द्विवेदी, ना० प्र० सभा, वाराणसी
दादूदयाल ग्रं०	दादूदयाल ग्रथावली
दादू० (शब्द०)	दादूदयाल
दिनेश (शब्द०)	कवि दिनेश
दास (शब्द०)	कवि भिखारीदास
दिल्ली	दिल्ली, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, प्र० स०
दिव्या	दिव्या, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४५ ई०
दीन० ग्रं०	दीनदयाल गिरि ग्रथावली, सपा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
दीनदयाल (शब्द०)	कवि दीनदयाल गिरि

दीप०	दीपशिखा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४२ ई०
दी० ज०, दीप ज०	दीप जलेगा, उपेंद्रनाथ 'अश्क,' नीलाभ प्रकाशन गृह, प्रयाग
दुर्गाप्रसाद मिश्र (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद मिश्र
दुर्गाप्रसाद (शब्द०)	दुर्गाप्रसाद कवि
दुर्गेशनदिनी (शब्द०)	दुर्गेशनदिनी, उपन्यास, मूल लेखक बंकिमचंद्र चटर्जी (अनुवाद)
दूलह (शब्द०)	कवि दूलह
देवकीनंदन (शब्द०)	देवकीनदन खत्री
देव० ग्र०	देव ग्रंथावली, ना० प्र० सभा, काशी, प्र०स०
देव (शब्द०)	देव कवि
देव (शब्द०)	देव कवि (मैनपुरीवाले)
देवदत्त (शब्द०)	देवदत्त कवि
देवीप्रसाद (शब्द०)	मुंशी देवीप्रसाद
देशी०	देशी नाममाला
दैनिकी	दैनिकी, सियारामशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०, १९९९ वि०
दो सौ बावन०	दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता (दो भाग), शुद्धाद्वैत एकेडमी, कांकरोली, प्रथम स०
द्वद्व०	द्वद्वगीत, रामधारी सिंह 'दिनकर,' पुस्तक भंडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०
द्वि० अभि० ग्रं०	द्विवेदी अभिनदन ग्रंथ, ना० प्र० सभा, वाराणसी
द्विज (शब्द०)	द्विज कवि
द्विजदेव (शब्द०)	अयोध्यानरेश महाराजा मानसिंह 'द्विजदेव'
द्विवेदी (शब्द०)	आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी
धरनी० बानी	धरनी साहब की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९११ ई०
धरम० शब्दा०, धरम०	धरमदास की शब्दावली
धीर (शब्द०)	'धीर' कवि
धूप०	धूप और धूआँ, रामधारीसिंह 'दिनकर,' अजता प्रेस, लि०, पटना ४
ध्रुव०	ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद, भारती भंडार, प्रयाग
नद० ग्र०, नददास ग्र०	नददास ग्रंथावली, सपा० ब्रजरत्नदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स०
नई०	नई पौध, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५३
नकछेदी (शब्द०)	नकछेदी तिवारी, कवि
नट०	नटनागर विनोद, सपा० कृष्णविहारी मिश्र, इडियन प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
नदी०	नदी के द्वीप, 'अज्ञेय,' प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०, १९५१ ई०
नया०	नया साहित्य नए प्रश्न, नददुलारे वाजपेयी, विद्यामदिर, वाराणसी, २०११ वि०
नरेश (शब्द०)	'नरेश' कवि
नागयज्ञ	जनमेजय का नागयज्ञ, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, सप्तम सं०
नागरी (शब्द०)	नागरीदास कवि
नागरी० उर्दू०	नागरी और उर्दू का स्वाँग अर्थात् नागरी और उर्दू का एक नाटक, पं० गौरीदत्त, देवनागरी प्रचारिणी सभा, विद्यादर्पण यंत्रालय, मेरठ, प्र० स०
नाथ (शब्द०)	नाथ कवि
नाथसिद्ध०	नाथसिद्धो की बानियाँ, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
नानक (शब्द०)	सत नानक गुरु
नाभादास (शब्द०)	नाभादास सत
नारायणदास (शब्द०)	नारायणदास
निबधमालादर्श (शब्द०)	निबधमालादर्श (म० प्र० द्विवेदी), निबधसंग्रह
निश्चलदास (शब्द०)	सत निश्चलदास जी
नील०	नीलकुसुम, रामधारीसिंह 'दिनकर', उदयाचल पटना, प्र० स०
निहाल (शब्द०)	निहाल कवि
नूतनामृतसागर (शब्द०)	नूतनामृतसागर नाम का ग्रंथ
नूर (शब्द०)	'नूर' उपनाम के कवि
नृपशंभु (शब्द०)	शिवाजी के पुत्र महाराज शभाजी
नेपाल०	नेपाल का इतिहास, प० बलदेवप्रसाद, वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, १९६१ वि०
पचवटी	पचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
पजनेस०	पजनेस प्रकाश, सपा० रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन यत्रालय, काशी, प्र० स०
पदमावत	पदमावत, स० वासुदेवशरण अग्रवाल, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
पदु०, पदुमा०	पदुमावती, सपा० सूर्यकात शास्त्री, पजाब विश्वविद्यालय, लाहौर, १९३४ ई०
पद्माकर ग्र०	पद्माकर ग्रंथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, वाराणसी, ग्र० स०
पद्माकर (शब्द०)	पद्माकर भट्ट
प० रा०, प० रासो	परमाल रासो, सपा० श्यामसुदरदास, ना०प्र० सभा, काशी, प्र० स०
परमानद०	परमानदसागर
परमेश (शब्द०)	परमेश कवि

परिमल	परिमल, 'निराला', गगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र० स०
पर्दे०	पर्दे की रानी, इलाचद्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, १९९९ वि०
पलटू०	पलटू साहब की बानी (१-३ भाग), बेल्वेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०७ ई०
पल्लव	पल्लव, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, प्र० स०
पाणिनि०	पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वासुदेवशरण अग्रवाल, मोतीलाल बनारसीदास, प्र० स०
पारिजात०	पारिजातहरण
पार्वती	पार्वती, रामानद तिवारी शास्त्री, भारतीभवन, मगलभवन, नयापुरा, कोटा (राजस्थान), प्र० स०, १९५५ ई०
पा० सा० सि०	पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धात, लीलाधर गुप्त, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०, १९५२ ई०
पिजरे०	पिजरे की उडान, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
पीतल०	पीतल की मूर्ति (जार्ज विलियम रेनाल्ड के ब्रान्ज स्टैच्यू का अनुवाद), पाँच भाग, वर्मन प्रेस कलकत्ता, प्र० स० सं०, १९७४ वि०
पूर्ण (शब्द०)	पूर्ण कवि
पू० म० भा०	पूर्वमध्यकालीन भारत, वासुदेव उपाध्याय भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०, २००९ वि०
पृ० रा०	पृथ्वीराज रासो (५ खड), सपा० मोहनलाल विष्णुलाल पडया, श्यामसुदर दास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
पृ० रा० (उ०)	पृथ्वीराज रासो (४ खड), स० कविराज मोहनसिंह, साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, प्र० स०
पोद्दार अभि० ग्र०	पोद्दार अभिनदन ग्र०, सपा० वासुदेवशरण अग्रवाल, अखिल भारतीय व्रज साहित्यमडल, मथुरा, स० २०१० वि०
प्र० सा०	प्रगतिशील (वादी) साहित्य
प्रताप ग्र०	प्रतापनारायण मिश्र ग्रथावली, सपा० विजयशकर मल्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
प्रताप (शब्द०)	व्यग्यार्थ कौमुदी के रचयिता प्रताप कवि
प्रताप सिंह (शब्द०)	प्रताप सिंह
प्रबध०	प्रबधपद्म, 'निराला', गगा पुस्तकमाला, लखनऊ, प्र० स०
प्रभावती	प्रभावती, 'निराला,' सरस्वती भडार, लखनऊ, प्र० स०
प्राण०	प्राणसगली, सपा० सत सपूरणसिंह, बेल्वेडियर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
प्रा० भा० प०	प्राचीन भारतीय परपरा और इतिहास डा० राघेय राघव, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, प्र० स०, १९५३ ई०
प्रिय०	प्रियप्रवास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, षष्ठ स०
प्रिया० (शब्द०)	प्रियादास
प्रेम०	प्रेमपथिक, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
प्रेम० और गोर्की	प्रेमचद और गोर्की, सपा० शचीरानी गुर्टू, राजकमल प्रकाशन लि०, बबई, १९५५ ई०
प्रेमघन०	प्रेमघन सवस्व, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, प्र० स०, १९९६ वि०
प्रे० सा० (शब्द०)	प्रेमसागर
प्रेमाजलि	प्रेमाजलि, ठा० गोपालशरण सिंह, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, १९५३ ई०
फिसाना०	फिसाना ए आजाद (चार भाग), प० रतननाथ सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, चतुर्थ स०
फूलो०	फूलो का कुर्त्ता, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, प्र० स०
बगाल०	बगाल का काल, हरिवश राय 'बच्चन,' भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९४६ ई०
बदन०	बदनवार, देवेंद्र सत्यार्थी, प्रगति प्रकाशन, दिल्ली, १९४९ ई०
बद०	बदमाश दर्पण, तेगअली, भारतजीवन प्रेस, बनारस, प्र० स०
बलबीर (शब्द०)	बलबीर कवि
बलभद्र (शब्द०)	बलभद्र कवि
बाँकी० ग्र०, बाँकीदास ग्र०	बाँकीदास ग्रथावली (तीन भाग), सपा० रामनारायण दूगड, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
बाँगेदरा	बाँगेदरा
बापू	बापू, कवितासग्रह, सियारामशरण गुप्त, प्र० स०
बालकृष्ण (शब्द०)	बालकृष्ण
बालमुकुद (शब्द०)	बालमुकुद गुप्त
बिरहा (शब्द०)	प्रचलित बिरहा गीत
बिल्ले०	बिल्लेसुर बकरिहा, निराला, युगमदिर, उन्नाव, प्र० स०
बिसराम (शब्द०)	बिसराम कवि
बिहारी र०	बिहारी रत्नाकर, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर', गगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र० स०
बिहारी (शब्द०)	कवि बिहारी

बी० रासो	बीसलदेव रासो, सपा० सत्यजीवन वर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
बीसल० रास	बीसलदेव रास, सपा० माताप्रसाद गुप्त, प्र० सं०
बी० श० महा०	बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य, डा० प्रतिपाल सिंह, ओरिएंटल बुकडिपो, देहली, प्र० सं०
बुद्ध च०	बुद्धचरित, रामचद्र शुक्ल, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
बृहत्०	बृहत्सहिता
बृहत्सहिता (शब्द०)	बृहत्सहिता
बेनी (शब्द०)	कवि बेनी प्रवीन
बेला	बेला, 'निराला,' हिंदुस्तानी पब्लिकेशंस, इलाहाबाद, प्र० सं०
बेलि०	बेलि क्रिसन रुकिमणी री, सपा० ठाकुर रामसिंह, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९३१ ई०
बैताल (शब्द०)	बैताल कवि
बोधा (शब्द०)	कवि बोधा
ब्रज०	ब्रजविलास सपा० श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, तृ० सं०
ब्रज० ग्रं०	ब्रजनिधि ग्रंथावली, सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
ब्रजमाधुरी०	ब्रजमाधुरी सार, सपा० वियोगी हरि, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, तृ० सं०
ब्रह्म (शब्द०)	ब्रह्म कवि (बीरबल)
भक्तमाल (प्रि०)	भक्तमाल, टीका० प्रियादास, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, १९५३ वि०
भक्तमाल (श्री०)	भक्तमाल, श्रीभक्तिसुधाबिंदु स्वाद, टीका० सीतारामशरण, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, द्वि० सं०, १९८३ वि०
भक्ति०	भक्तिसागरादि, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, संवत् १९६० वि०
भक्ति प०	भक्ति पदार्थ वर्णन, स्वामी चरणदास, वेंकटेश्वर प्रेस, बंबई, संवत् १९६०
भगवतरसिक (शब्द०)	भगवत रसिक
भजन (शब्द०)	भजन
भट्ट (शब्द०)	बालकृष्ण भट्ट
भस्मावृत०	भस्मावृत चिनगारी, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४६ ई०
भा० इ० रू०	भारतीय इतिहास की रूपरेखा, जयचद्र विद्यालकार, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० सं०, १९३३ वि०
भा० प्रा० लि०	भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशकर हीराचद ओझा, इतिहास कार्यालय, राजमेवाड, प्र० सं०, १९५१ वि०
भारत०	भारतभारती, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, नवम सं०
भा० भू०, भारत० नि०	भारत भूमि और उसके निवासी, जयचद्र विद्यालकार, रत्नाश्रम, आगरा, द्वि० सं०, १९८७ वि०
भारतीय०	भारतीय राज्य और शासनविधान
भारतेंदु ग्र०	भारतेंदु ग्रथावली (४ भाग), सपा० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
भा० सैन्य०	भारत का सैन्य इतिहास, सर जदुनाथ सरकार, अनु० सुशील त्रिवेदी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, प्र० सं०
भा० शिक्षा	भारतीय शिक्षा, राजेंद्रप्रसाद, आत्माराम ऐंड सस, दिल्ली, १९५३ ई०
भाषा शि०	भाषाशिक्षण, प० सीताराम चतुर्वेदी
भिखारी ग्र०	भिखारीदास ग्रंथावली (दो भाग), सपा० प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा काशी
भीखा श०,	भीखा शब्दावली प्र० सं०
भुवनेश (शब्द०)	भुवनेश कवि
भूधर (शब्द०)	भूधर कवि
भूपति (शब्द०)	भूपति कवि
भूमि०	भूमि की अनुभूति (कवितासग्रह)
भूषण ग्र०	भूषण ग्रंथावली, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, साहित्य सेवक कार्यालय, काशी, प्र० सं०
भूषण (शब्द०)	कवि भूषण त्रिपाठी
भोज० भा० सा०	भोजपुरी भाषा और साहित्य, डा० उदयनारायण तिवारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र०सं०
मतपरीक्षा (शब्द०)	मतपरीक्षा (पुस्तक)
मति० ग्र०	मतिराम ग्रंथावली, सपा० कृष्णबिहारी मिश्र, गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ, द्वि० सं०
मतिराम (शब्द०)	कवि मतिराम त्रिपाठी
मधु०	मधुकलश, हरिवशराय 'बच्चन,' सुषमा निकुंज, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९३९ ई०
मधुज्वाल	मधुज्वाल, सुमित्रानदन पंत, भारती भडार, इलाहाबाद, द्वि० सं०, १९३९ ई०
मधु मा०	मधुमालती वार्ता, सपा० माताप्रसाद गुप्त, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० सं०
मधुशाला	मधुशाला, हरिवश राय 'बच्चन,' सुषमा निकुंज, इलाहाबाद, प्र० सं०
मधुसूदन (शब्द०)	मधुसूदनदास कवि
मनविरक्त०	मनविरक्तकरन गुटका सार (चरणदास)
मनु०	मनुस्मृति
मन्नालाल (शब्द०)	कवि मन्नालाल
मलूक० बानी	मलूकदास की बानी, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

मलूक० (शब्द०)	मलूकदास
महा०	महाराणा का महत्व, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, चतुर्थ स०
महावीरप्रसाद (शब्द०)	पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी
महाभारत (शब्द०)	महाभारत
महाराणा प्रताप (शब्द०)	महाराणा प्रताप, ग्र थ
माधव०	माधवनिदान, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, बबई, चतुर्थ स०
माधवानल०	माधवानल कामकदला, बोधा कवि, नवल-किशोर प्रेस, लखनऊ, प्र० स०, १८९१ ई०
मान०	मानसरोवर, प्रेमचद, हस प्रकाशन, इलाहाबाद
मानव	मानव, कवितासकलन, भगवतीचरण वर्मा
मानव०	मानवसमाज, राहुल साकृत्यायन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० स०
मानस	रामचरितमानस, सपा० शभुनारायण चौबे, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
मा० स०, मा० स० रू०	मानवसमाज या मानव समाज की रूपरेखा
मिट्टी०	मिट्टी और फूल, नरेंद्र शर्मा, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०, १९९९ वि०
मिलन०	मिलनयामिनी, हरिवश राय 'बच्चन,' भारतीय ज्ञानपीठ काशी, प्र० स०, १९५० ई०
मीरा (शब्द०)	भक्त मीरा बाई
मीर हसन (शब्द०)	मीर हसन
मुशी अभि० ग्र०	मुशी अभिनदन ग्र थ, सपा० डा० विश्वनाथ-प्रसाद, हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
मुकुदलाल (शब्द०)	मुकुदलाल कवि
मुबारक (शब्द०)	मुबारक कवि
मुरारिदान (शब्द०)	कवि मुरारिदान
मृग०	मृगनयनी, वृ दावनलाल वर्मा, मयूर प्रकाशन, झाँसी
मैला०	मैला आँचल, फणीश्वरनाथ 'रेणु,' समता प्रकाशन, पटना–४, प्र० स०
मोहन०	मोहनविनोद, स० कृष्णबिहारी मिश्र, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, प्र० स०
यमुना (शब्द०)	यमुनाशकर
यशो०	यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
यामा	यामा, महादेवी वर्मा, किताबिस्तान, प्रयाग, प्र० स०
युग०	युगवाणी, सुमित्रानदन पत, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
युगपथ	युगपथ ,, ,, ,,
युगलेश (शब्द०)	कवि युगलेश
युगात	युगात, सुमित्रानदन पत, इद्र प्रिंटिंग प्रेस, अल्मोडा, प्र० स०
योग०	योगवाशिष्ठ (वैराग्य मुमुक्षु प्रकरण), गगा-विष्णु श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर छापा-खाना, कल्याण, बबई, स० १९६७ वि०
रगभूमि	रगभूमि, प्रेमचद, गगा ग्रथागार, लखनऊ, प्र० स०, १९८१ वि०
रघु० रू०	रघुनाथ रूपक गीतावली, सपा० महताबचद्र खारेरू, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
रघु० दा०, रघुनाथदास (शब्द०)	रघुनाथदास
रघुनाथ (शब्द०)	रघुनाथ
रघुराज, रघुराजसिंह (शब्द०)	रीवानरेश महाराज रघुराजसिंह, स० १८८०-१९३६ वि०
रजत०	रजतशिखर, सुमित्रानंदन पत, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, २००८ वि०
रज्जब०	रज्जब जी की बानी, ज्ञानसागर प्रेस, बंबई, १९७५ वि०
रतन०	रतनहजारा, सपा० श्री जगन्नाथप्रसाद श्रीवास्तव, भारतजीवन प्रेस, काशी, प्र० स०, १९८२ ई०
रति०	रतिनाथ की चाची, नागार्जुन, किताब महल, इलाहाबाद, द्वि० स०, १९५३ ई०
रत्न० (शब्द०)	रत्नसार
रत्नपरीक्षा (शब्द०)	रत्नपरीक्षा
रत्नाकर	रत्नाकर [दो भाग], ना० प्र० सभा, काशी, चतुर्थ, द्वि० और प्रथम स० १९८०
रत्नावली (शब्द०)	रत्नावली नाटिका
रश्मि०	रश्मिबध, सुमित्रानदन पत, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
रस०	रसमीमासा, सपा० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
रस क०	रसकलश, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध,' हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, तृतीय स०
रसखान०	रसखान और घनानद, सपा० अमीरसिंह, ना० प्र० सभा, द्वि० स०
रसखान (शब्द०)	सैयद इब्राहिम रसखान
रस र०, रसरतन	रसरतन, सपा० शिवप्रसाद सिंह, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
रसनिधि (शब्द०)	राजा पृथ्वीसिंह
रसिया (शब्द०)	रसिया कवि ? रसिया गीत ?
रहिमन (शब्द०)	रहीम कवि

रहीम (शब्द०)	अब्दुर्रहीम खानखाना
रहीम०	रहीम रत्नावली
राज० इति०	राजपूताने का इतिहास, गौरीशकर हीराचद ओझा, अजमेर, १९९७ वि०, प्र० स०
राज०	राजतरंगिणी
रा० रू०	राजरूपक, सपा० प० रामकर्ण, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
रा० वि०	राजविलास, सपा० मोतीलाल मेनारिया, ना० प्र० सभा, वाराणसी, प्र० स०
राजनीतिक०	राजनीतिक विचारधाराएँ
राज्यश्री	राज्यश्री, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, सातवाँ स०
राम०	रामचरितमानस, सपा० विजयानद त्रिपाठी, भारती भंडार, इलाहाबाद, प्र० सं० १९७३ वि०
राम, रामकवि (शब्द०)	राम कवि
रामकृष्ण (शब्द०)	रामकृष्ण
राम० च०	सक्षिप्त रामचद्रिका, सपा० लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, वाराणसी, षष्ठ स०
राम० धर्म०	रामस्नेह धर्मप्रकाश, सपा० मालचद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिहथल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।
राम० धर्म० सं०	रामस्नेह धर्मसग्रह, सपा० मालचद्र जी शर्मा, चौकसराम जी (सिहथल), बडा रामद्वारा, बीकानेर ।
रामरसिका०	रामरसिकावली (भक्तमाल)
रामसहाय (शब्द०)	रामसहाय कवि कृत सतसई
रामानद०	रामानद की हिंदी रचनाएँ, संपा० पीतावरदत्त बडथ्वाल, ना० प्र० सभा, प्र० स०
रामाश्व०	रामाश्वमेध, ग्रथकार, मन्नालाल द्विज, त्रिपुरा भैरवी, वाराणसी, १९३९ वि०
रिखिनाथ (शब्द०)	कवि रिखिनाथ
रेणुका	रेणुका, रामधारी सिह 'दिनकर,' पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना, प्र० स०
रै० बानी	रैदास बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
लक्ष्मणसिह (शब्द०)	राजा लक्ष्मणसिह
लल्लू, लल्लूलाल (शब्द०)	लल्लुलाल
लवकुश चरित्र (शब्द०)	लवकुश चरित्र
लहर	लहर, जयशकर प्रसाद, भारती भडार, इलाहाबाद, पचम स०
लाल (शब्द०)	लाल कवि (छत्रप्रकाशवाले)
वर्ण०, वर्णरत्नाकर	वर्णरत्नाकर
वाल्मीकीय० (शब्द०)	वाल्मीकीय रामायण
विद्यापति	विद्यापति, सपा० खगेंद्रनाथ मित्र, यूनाइटेड प्रेस, लि०, पटना
विनय०	विनयपत्रिका, टीका० प० रामेश्वर भट्ट, इडियन प्रेस लि०, प्रयाग, तृ० स०
विशाख	विशाख, जयशकर प्रसाद, लीडर प्रेस, प्रयाग, तृ० स०
विश्राम (शब्द०)	विश्रामसागर
विश्वनाथसिह (शब्द०)	रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिह जी (स० १८४६-१९११ वि०)
विश्वप्रिया	विश्वप्रिया, अज्ञेय
विश्वास (शब्द०)	विश्वास ?
वीणा	वीणा, सुमित्रानदन पत, इडियन प्रेस, लि० प्रयाग, द्वि० स०
वेणी (शब्द०)	वेणी (या बेनी) कवि
वेनिस (शब्द०)	वेनिस का बाँका
वैशाली०, वै० न०	वैशाली की नगरवधू, चतुरसेन शास्त्री, गौतम बुकडिपो, दिल्ली, प्र० स०
वो दुनिया	वो दुनिया, यशपाल, विप्लव कार्यालय, लखनऊ, १९४१ ई०
व्यग्यार्थ०	व्यग्यार्थ कौमुदी प्रताप कवि कृत, बाबू रामकृष्ण वर्मा, भारत जीवन प्रेस, काशी, प्र० सं०, सवत् १९५७
व्यग्यार्थ (शब्द०)	व्यग्यार्थ कौमुदी
व्यास (शब्द०)	प्रविकादत्त व्यास
ब्रज (शब्द०)	ब्रज विलास
श० दि० (शब्द०)	शकरदिग्विजय
शकर (शब्द०)	शकर कवि
शकर०	शकरसर्वस्व, सपा० हरिशकर शर्मा, गयाप्रसाद ऐंड सस, आगरा, प्र० स०
शंभु (शब्द०)	शभु कवि, शिवाजी के पुत्र सभाजी
शकु०	शकुतला, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, चिरगाँव, झाँसी
शकुतला	शकुतला नाटक, अनु० राजा लक्ष्मणसिह, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, चतु० स०
शब्दावली (शब्द०)	शब्दावली ग्रथ
शाहजहाँनामा (शब्द०)	शाहजहाँनामा
शार्ङ्गधर स०	शार्ङ्गधर सहिता, टी० सीताराम शास्त्री, मूबई वैभव मुद्रणालय, सवत् १९७१
शिखर०	शिखर वशोत्पत्ति सपा० पुरोहित हरिनारायण शर्मा, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०, १९८५
शिरमौर (शब्द०)	कवि शिरमौर
शिवप्रसाद (शब्द०)	राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद

शिवराम (शब्द०)	शिवराम कवि
शिवशभु (शब्द०)	शिवशभु का चिट्ठा
शुक्ल० अभि० ग्रं०	शुक्ल अभिनदन ग्रथ, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य समेलन
शृ० सत० (शब्द०)	शृगार सतसई
शृगार सुधाकर (शब्द०)	शृगार सुधाकर
शेखर (शब्द०)	शेखर कवि
शेर०	शेर ओ सुखन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्र स
शैली	शैली, प० करुणापति त्रिपाठी, प्र० स०
श्यामबिहारी (शब्द०)	श्यामबिहारी मिश्र ('मिश्रबधु')
श्यामा०	श्यामास्वप्न, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रद्धानद (शब्द०)	स्वामी श्रद्धानद
श्रद्धाराम (शब्द०)	श्रद्धाराम फुल्लौरी
श्रीकृष्णसदेश (शब्द०)	श्रीकृष्णसदेश
श्रीधर (शब्द०)	श्रीधर कवि
श्रीधर पाठक (शब्द०)	श्रीधर पाठक
श्रीनिवास ग्र०	श्रीनिवास ग्रथावली, सपा० डा० कृष्णलाल, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
श्रीपति (शब्द०)	श्रीपति कवि
सतति०	चद्रकाता सतति, देवकीनंदन खत्री, वाराणसी
सचिता	सचिता (कवितासग्रह)
सत तुरसी०	सत तुरसीदास की शब्दावली, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद।
सं० दरिया, सत० दरिया	सत कवि दरिया, सं० धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०
स० दा० (शब्द०)	सगीत दामोदर
स० शा० (शब्द०)	सगीत शाकुंतल
सत र०	सत रविदास और उनका काव्य स्वामी रामानद शास्त्री, भारतीय रविदास सेवासघ, हरिद्वार, प्र० स०
संतवाणी०, सत०सार०	सतवाणी सार सग्रह (२ भाग), बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
सन्यासी	सन्यासी, इलाचद्र जोशी, भारती भडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सपूर्णा० अभि० ग्र०	सपूर्णानद अभिनदन ग्रथ, सपा० आचार्य नरेंद्रदेव, ना० प्र० सभा, वाराणसी
स० दर्शन	समीक्षादर्शन, रामलाल सिंह, इडियन प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सत्य०	कविरत्न सत्यनारायण जी की जीवनी, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य समेलन, प्रयाग, द्वि० स०
सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)	सत्यार्थप्रकाश, स्वामी दयानद
सबल (शब्द०)	सबलसिंह चौहान (महाभारत)
सभा० वि० (शब्द०)	सभाविलास
सरस्वती (शब्द०)	सरस्वती मासिक पत्रिका
सर्पाघातचिकित्सा (शब्द०)	सर्पाघात चिकित्सा
स० शास्त्र	समीक्षाशास्त्र, प० सीताराम चतुर्वेदी, अखिल भारतीय विक्रम परिषद्, काशी, प्र० स०
स० सप्तक	सतसई सप्तक, सपा० श्यामसुदरदास, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
सरलाबाई (शब्द०)	सरलाबाई, कवयित्री।
सहजो०	सहजो बाई की बानी, बेलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद, १९०८ वि०
साकेत	साकेत, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी, प्र० स०
सागरिका	सागरिका, ठा० गोपालशरण सिंह, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
सात सतक	हस्तलेख, छत्रपति संभा जी, उपनाम शभु कवि
साम०	सामधेनी, रामधारी सिंह 'दिनकर,' उदयाचल, पटना, द्वि० सं०
सा० दर्पण	साहित्यदर्पण, सपा० शालिग्राम शास्त्री, श्री मृत्यु जय औषधालय, लखनऊ, प्र० स०
सा० द०	साहित्य दर्शन
सा० लहरी	साहित्यलहरी, सपा० रामलोचनशरण बिहारी, पुस्तक भडार, लहेरियासराय, पटना
सा० समीक्षा	साहित्य समीक्षा, कालिदास कपूर, इडियन प्रेस, प्रयाग
साहित्य०	साहित्यालोचन, श्री श्यामसुदर दास, इडियन प्रेस इलाहाबाद
सिद्धातसग्रह (शब्द०)	सिद्धातसग्रह
सीतल (शब्द०)	कवि सीतल
सीताराम (शब्द०)	सीताराम कवि
सुदर० ग्र०	सुदरदास ग्रथावली (दो भाग), सपा० हरिनारायण शर्मा, राजस्थान रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता
सुदरीसिंदूर (शब्द०)	सुदरी सिंदूर, कवितासग्रह
सुकवि (शब्द०)	सुकवि उपनाम के कवि
सुखदा	सुखदा, जैनेंद्रकुमार, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र० स०
सुखदेव (शब्द०)	कवि सुखदेव
सुधाकर (शब्द०)	महामहोपाध्याय प० सुधाकर द्विवेदी
सुजान०	सुजानचरित (सूदनकृत), सपा० राधाकृष्ण, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी, प्र० स०

सुधानिधि	कवि तोष और सुधानिधि, सं० सुरेंद्र माथुर, ना० प्र० स० काशी, प्र० स०
सुनीता	सुनीता, जैनेंद्रकुमार, साहित्यमडल, बाजार सीताराम, दिल्ली, प्र० स०
सुदर (शब्द०)	सुदर कवि, सुंदरदास जी
सूत०	सूत की माला, पत और बच्चन, भारती भडार, इलाहाबाद, प्र० स०
सूदन (शब्द०)	सूदन कवि (भरतपुरवाले)
सूर०	सूरसागर (दो भाग), ना०प्र० सभा, द्वितीय स०
सूर० (शब्द०)	सूरदास
सूर० (राधा०)	सूरसागर, सपा० राधाकृष्णदास, वेंकटेश्वर प्रेस, प्र० स०
सेवक (शब्द०)	'सेवक' कवि
सेवक श्याम (शब्द०)	सेवक श्याम कवि
सेवासदन	सेवासदन, प्रेमचद, हिंदी पुस्तक एजेंसी, कलकत्ता, द्वि० सं०
सैर कु०	सैर कुहसार, प० रतननाथ 'सरशार', नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ, च० स०, १९३४ ई०
सो अजान० (शब्द०)	सो अजान और एक सुजान, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
स्कद०	स्कदगुप्त, जयशकर प्रसाद, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
स्वर्ण०	स्वर्णकिरण, सुमित्रानंदन पत, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
स्वाधीनता (शब्द०)	स्वाधीनता
स्वामी रा०	स्वामी रामकृष्ण
स्वामी राम कृष्ण (शब्द०)	
स्वामी हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हस०	हसमाला, नरेंद्र शर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयाग, प्र० स०
हंसराज (शब्द०)	हंसराज
हकायके०	हकायके हिंदी, ले० मीर अब्दुल वाहिद, प्र० सपा० 'रुद्र' काशिकेय, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० स०
हनुमन्नाटक (शब्द०)	हनुमन्नाटक
हनुमान, हनुमान कवि (शब्द०)	हनुमान कवि
हम्मीर०	हम्मीरहठ, सपा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर,' इडियन प्रेस लि०, प्रयाग
ह० रासो०	हम्मीर रासो, सपा० डा० श्यामसुदरदास, ना० प्र० सभा, काशी, प्र० सं०
हरिजन (शब्द०)	कवि हरिजन
हरिदास (शब्द०)	स्वामी हरिदास
हरिश्चद्र (शब्द०)	भारतेंदु हरिश्चद्र
हरिसेवक (शब्द०)	हरिसेवक कवि
हरी घास०	हरी घास पर क्षण भर, अज्ञेय, प्रगति प्रकाशन, नई दिल्ली, १९४९ ई०
हर्ष०	हर्षचरित एक सास्कृतिक अध्ययन, वासुदेवशरण अग्रवाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, प्र० स०, १९५३ ई०
हालाहल	हालाहल, हरिवशराय बच्चन, भारती भडार, प्रयाग, १९४६ ई०
हिंदी आ०	हिंदी आलोचना
हिंदी का०	हिंदी काव्य की अंतश्चेतना
हि० का० प्र०	हिंदी काव्य पर अंग्रेज प्रभाव, रवीद्रसहाय वर्मा, पद्मजा प्रकाशन, कानपुर, प्र० सं०
हि० क० का०	हिंदी कवि और काव्य, गणेशप्रसाद द्विवेदी हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, प्र० स०
हि० ना०	हिंदी के नाटक
हिंदी प्रदीप (शब्द०)	हिंदी प्रदीप
हिंदी प्रेमगाथा०	हिंदी प्रेमगाथा काव्यसग्रह, गणेशप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, १९३९ ई०
हिंदी प्रेमा०	हिंदी प्रेमाख्यानक काव्य, डा० कमल कुलश्रेष्ठ, चौधरी भानसिंह प्रकाशन, कचहरी रोड
हि० प्र० चि०	हिंदी काव्य मे प्रकृतिचित्रण, किरणकुमारी गुप्त, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
हि० सा० भू०	हिंदी साहित्य की भूमिका, हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्र थ रत्नाकर कार्यालय, बबई, तृ० सं०, १९४८
हिंदु० सभ्यता	हिंदुस्तान की पुरानी सभ्यता, बेनीप्रसाद, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयाग, प्र० स०
हित हरिवश (शब्द०)	वैष्णव सत हित हरिवश दास
हिम कि०	हिमकिरीटिनी, माखनलाल चतुर्वेदी, सरस्वती प्रकाशन मदिर, इलाहाबाद, तृ० सं०
हिम त०	हिमतरगिणी, माखनलाल चतुर्वेदी, भारती भडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, प्र० स०
हिम्मत०	हिम्मतबहादुर विरुदावली, लाला भगवानदीन, ना० प्र० सभा, काशी, द्वि० स०
हिल्लोल	हिल्लोल, शिवमगल सिंह 'सुमन', सरस्वती प्रेस, बनारस, द्वि० स०
हुमायूँ०	हुमायूँनामा, अनु० ब्रजरत्नदास, ना० प्र० सभा, वाराणसी, द्वि० स०
हृदय०	हृदयतरग, सत्यनारायण कविरत्न
हृदयराम (शब्द०)	कवि हृदयराम

[व्याकरण, व्युत्पत्ति आदि के संकेताक्षरों का विवरण]

अं०	अंग्रेजी
अ०	अरबी
अक० रूप	अकर्मक रूप
अनु०	अनुकरण शब्द
अनुध्व०	अनुध्वन्यात्मक
अनु० मू०	अनुकरणार्थमूलक
अनुर०	अनुरणनात्मक रूप
अप०	अपभ्रंश
अर्ध मा०	अर्धमागधी
अल्पा०	अल्पार्थक
अव०	अवधी
अव्य०	अव्यय
इता०	इतालवी
इव०	इवरानी
उ०	उदाहरण
उच्चा०	उच्चारण सुविधार्थ
उडि०	उडिया
उप०	उपसर्ग
उभय०	उभयलिंग
एकव०	एकवचन
कनाडी	कन्नड भाषा
कहावत	कहावत
काव्यशास्त्र	काव्यशास्त्र
[कौ०], (कौ०)	अन्य कोश
*	सभाव्य व्युत्पत्ति
?	अनिश्चित व्युत्पत्ति
कोंक०	कोंकणी
क्रि०	क्रिया
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक
क्व०	क्वचित्
गीत	लोकगीत
गुज०	गुजराती
चीं०	चीनी भाषा
छं०	छंद
जापा०	जापानी
जावा०	जावा द्वीप की भाषा
जी०, जीवन०	जीवनचरित
ज्या०	ज्यामिति
ज्यो०	ज्योतिष
डिं०	डिंगल
त०	तमिल
तर्कं०	तर्कशास्त्र
ति०	तिब्बती भाषा
तु०	तुर्की
दू०	दूहा या दूहला
तुल०	तुलनीय
दे०	देखिए
देश०	देशज
देशी	देशी
धर्म०	धर्मशास्त्र
नाम०	नामधातु
ना० धा०	नामधातुज क्रिया
नामिक धातु	नामिक धातु
ने०	नेपाली
न्याय०	न्याय या तर्कशास्त्र
पं०	पंजाबी
परि०	परिशिष्ट
पा०	पाली
पु०	पुंलिंग
पुर्तं०	पुर्तगाली
पु० हिं०	पुरानी हिंदी
पू० हिं०	पूर्वी हिंदी
पृ०	पृष्ठ
प्र०	प्रकाशकीय या प्रस्तावना
प्रत्य०	प्रत्यय
प्रा०	प्राकृत
प्रे०	प्रेरणार्थक रूप
फ०	फ्रांसीसी भाषा
फकीर०	फकीरों की बोली
फा०	फारसी
बँग०	बँगला भाषा
बरमी०	बरमी भाषा
बहुव०	बहुवचन
बुं० खं०	बुंदेलखंड की बोली
बुंदेल०	" "
बोल०	बोलचाल
भाव०	भाववाचक संज्ञा
भू०	भूमिका
भू० कृ०	भूत कृदंत
मरा०	मराठी
मल०	मलयाली या मलयालम भाषा
मला०	मलाया की भाषा
मि०	मिलाइए
मुसल०	मुसलमानों द्वारा प्रयुक्त
मुहा०	मुहावरा

यू०	यूनानी	सयो० क्रि०	संयोजक क्रिया
यौ०	यौगिक	स०	सकर्मक
राज०	राजस्थानी	सक० रूप	सकर्मक रूप
लश०	लशकरी	सघु०	सघुक्कडी भाषा
ला०	लाक्षणिक	सर्व०	सर्वनाम
लै०	लैटिन	सिंहली	सिंहली भाषा
व० कृ०	वर्तमान कृदत	स्पे०	स्पेनी भाषा
वर्ण वि०	वर्णविपर्यय	स्त्रि०	स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त
वि०	विशेषण	स्त्री०	स्त्रीलिंग
वि० द्वि० मू०	विषमद्विरुक्तिमूलक	हि०	हिंदी
वै०	वैदिक	ⓟ	काव्यप्रयोग, पुरानी हिंदी
व्या०	व्याकरण	>	व्युत्पन्न
व्यंग्य	व्यंग्यार्थ मे प्रयुक्त	†	प्रातीय प्रयोग
(शब्द०)	हिंदी शब्दसागर प्र० सं०	‡	ग्राम्य प्रयोग
स०	सस्कृत	√	धातुचिह्न
सयो०	सयोजक अव्यय		

हिंदी शब्दसागर

व

व—हिंदी या सस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन वर्ण, जो उकार का विकार और अतस्थ अर्धव्यजन माना जाता है। इसका उच्चारणस्थान दत्योष्ठ है अर्थात् दाँत और ओठ से इसका उच्चारण होता है। प्रयत्न ईषत्स्पृष्ट होता है, अर्थात् उच्चारण के समय दाँतो का ओठ से कुछ स्पर्श होता है। हिंदी मे इस वर्ण का उच्चारण अधिकतर केवल ओठ से होता है, केवल सस्कृताभ्यासी लोग ही शुद्ध दत्योष्ठ उच्चारण करते है।

वक[1]—वि० [स० वङ्क या वक्र] कुछ झुका हुआ। टेढा। वक्र।

वक[2]—सज्ञा पु० १ नदी का मोड। वकर। २. टेढापन। कुटिलता (को०)। ३ पल्ययन। दे० 'वका'। (को०)। ४ आवारा व्यक्ति (को०)।

वकट—वि० [स० वङ्क] १ टेढा। बाँका। २ कुटिल। जो सीधा न हो। ३ विकट। दुर्गम। उ०—रही है घूँघटपट की ओट। मनौ कियो फिर मान मवासो मन्मथ वकट कोट।—सूर (शब्द०)।

वकटक—सज्ञा पु० [स० वङ्कटक] एक पर्वत जिसे वकाटक भी कहा गया है।

वकनाल—सज्ञा पु० [स० वङ्कनाल] शरीर की एक नाडी का नाम। सुषुम्ना।

वंकनाली—सख्या स्त्री० [हिं० वक+नाडी] साधुओ की बोलचाल मे सुषुम्ना नामक नाडी, जो मध्य मे मानी गई है। उ०—वकनालि सदा रस पीवै, तब यहु मनुवाँ कही न जाय। विगसै कँवल प्रेम जब उपजै ब्रह्म जीव को करैं सहाय।—दादू (शब्द०)।

वकर—सज्ञा पुं० [स० वङ्कर] वह स्थान जहाँ से नदी मुडी हो। नदी का मोड।

वकसेन—सज्ञा पुं० [स० वङ्कसेन] अगस्त का वृक्ष।

वका—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्का] चारजामे की अगली मेडी।

वकाटक—सज्ञा पु० [स० वङ्काटक] एक पर्वत का नाम।

वकाला—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्काला] राजतरगिणी के अनुसार बगाल की प्राचीन राजधानी का नाम जिसके कारण उस देश का बगाल नाम पडा। (राज०)।

वकिणी—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्किणी] एक छुप का नाम।

वंकिम—वि० [स० वङ्किम] ईषत् वक्र। कुछ टेढा या झुका हुआ। बाँका। उ०—निद्रालस वकिम विशाल नेत्र मूँदे रही। किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिए।—अपरा, पृ० ५।

वकिल—सज्ञा पु० [स० वङ्किल] कटक। काँटा।

वक्य—वि० [स० वडक्य] टेढा। लचीला। वक्र [को०]।

वक्रा—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्क्रा] दे० 'वक्रि'।

वंक्रि—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्क्रि] १ पशुओ की पसली की हड्डी। २. काँडी। कडी। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

वक्षण—सज्ञा पु० [स० वङ्क्षण] मूत्राशय और जंघास्थल का सधिस्थान। वह स्थान जो पेडू और जाँघ के बीच मे है और जहाँ 'वर्म्म' नामक रोग की गाँठ निकला करती है।

वंक्षु—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्क्षु] १ आक्सस नदी जो हिंदूकुश पर्वत से निकलकर मध्य एशिया मे बहती हुई आरल समुद्र मे गिरती है।

विशेष—इस नदी का नाम वेदो मे कई जगह आया है। पुराणो मे यह केतुमाल वर्ष की एक नदी कही गई है। महाभारत मे इसको गणना पवित्र नदियो मे की गई है। रघुवंश की प्राचीन प्रतियो मे भी रघु के दिग्विजय के अतर्गत इस नदी का उल्लेख है और इसके किनारे हूणो की बस्ती कही गई है।

२ गगा की एक छोटी सी शाखा (को०)।

वंग—सज्ञा पुं० [स० वङ्ग] १ मगध या बिहार के पूर्व पडनेवाला प्रदेश। बगाल।

विशेष—ऋग्वेद मे सबसे पूर्व पडनेवाले जिस प्रदेश का उल्लेख है, वह 'कीकट' (मगध) है। अथर्व सहिता मे 'अग' देश का भी नाम मिलता है। सहिताओ मे वग' नाम नही मिलता। ऐतरेय आरण्यक मे ही सबसे पहले वग देश की चर्चा आई है, और वहाँ के निवासियो की दुर्बलता और दुराहार आदि का उल्लेख पाया जाता है। बात यह है कि सहिता काल मे कीकट और वग देश मे अनार्या का ही निवास था। आर्य लोग वहाँ तक न पहुँचे थे। बौधायन धर्मसूत्र मे लिखा है कि वग, कलिग, पुड्र आदि देशो मे जानेवाले को लौटने पर पुनस्तोम यज्ञ करना चाहिए। मनुस्मृति मे तीर्थयात्रा के लिये जाने की आज्ञा है। इससे जान पडता है कि उस समय आर्य वहाँ बस गए थे। शतपथ ब्राह्मण

के समय मे मिथिला मे विदेह वश प्रतिष्ठित था। रामायण मे प्राग्ज्योति पुर (रगपुर से लेकर आसाम तक प्रागज्योतिष प्रदेश कहलाता था) की स्थापना का उल्लेख है।

महाभारत (आदिपर्व) मे लिखा है कि क्षत्रिय राजा बलि को कोई सतति न हुई। तब उन्होने अधे दीर्घतमा ऋषि द्वारा अपनी रानी के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न कराए, जिनके नाम हुए—अग, वग, कलिंग, पुड्र और सुह्म। इन्ही के नाम पर देशो के नाम पडे।

२ राँगा नाम की धातु। ३ राँगे का भस्म। ४ कपास। ५ बैंगन। भटा। ६ राजा बलि का पुत्र। एक चद्रवशी राजा (को०)। ७ एक धातु। सीसा। सीसक।

वगज[1]—सज्ञा पु० [स० वङ्गज] १ सिंदूर। २ पीतल।

वंगज[2]—वि० १ बगाल मे उत्पन्न होनेवाला। २ बगाली।

वगजीवन—सज्ञा पु० [स० वङ्गजीवन] चाँदी।

वगन—सज्ञा पु० [स० वङ्गन] बैंगन।

वगमल—सज्ञा पु० [स० वङ्गमल] सीसा नामक धातु।

विशेष—प्राचीनो की यह धारणा थी कि राँगा और सीसा दोनो एक ही धातु हैं और वे सीसे को राँगे का मल समझते थे।

वगला—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गला] बगाला या बगालिका नाम की रागिनी। विशेष दे० 'बगाली'।

वगशुल्यज—सज्ञा पु० [स० वङ्गशुल्यज] काँसा। कास्य [को०]।

वगसेन—सज्ञा पु० [स० वङ्गसेन] लाल फूलवाला अगस्त।

वगा—सज्ञा पु० [स० वङ्ग] दे० 'वग'। उ०—तेलगा, वगा, चोला, कलिंगा राआ पुत्ते मडिया।—कीर्ति०, पृ० ४८।

वगारि—सज्ञा पु० [स० वङ्गारि] हरताल।

वगाल—सज्ञा पु० [स० वङ्गाल] एक राग। दे० 'बगाल'-२।

वगाली—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गाली] भैरव राग की एक रागिनी।

विशेष—यह ओडव जाति की है और इसमे ऋषभ तथा धैवत स्वर नही लगते। कल्लिनाथ के मत से यह सपूर्ण जाति की है और इसमे दो बार मध्यम आता है।

वगाष्टक—सज्ञा पुं० [स० वङ्गाष्टक] एक रसौषध जिसमे राँगा आदि आठ धातुएँ एक साथ मिलाकर फूँकी जाती हैं। यह प्रमेह रोग पर दिया जाता है।

विशेष—पारा, गधक, लोहा, चाँदी, खपरिया, अभ्रक और ताँबा बराबर लेकर जितना सब हो, उतना राँगा लेकर सब को एक साथ मर्दन करके गजपुट द्वारा फूँकते हैं। जब भस्म हो जाता है, तब उसको वगाष्टक कहते हैं। वगाष्टक की मात्रा दो रत्ती है, और मधु, हलदी के चूर्ण तथा आमले के रस मे इसे खाते हैं।

वगेरिका—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गेरिका] चगेरी। डलिया। टोकरी [को०]।

वगेरी—सज्ञा स्त्री० [स० वङ्गेरी] चँगेरी। डलिया [को०]।

वगेश्वर—सज्ञा पु० [स० वङ्गेश्वर] एक प्रसिद्ध रस।

विशेष—पारे का भस्म ८ तोला, वग का भस्म ८ तोला, ताँबे का भस्म ३२ तोला और गधक ३२ तोला लेकर मदार के दूध मे मलकर फिर पिंडी बनाकर 'भूधर यत्र' द्वारा फूँकते हैं। जब भस्म हो जाता है, तब उसे वगेश्वर कहते हैं। इसकी मात्रा २ रत्ती है। इसे गुल्मोदर रोग मे घी के साथ देते हैं, और ऊपर से पुनर्नवा का रस और गोमूत्र या हल्दी का रस पिलाते हैं।

वघ—सज्ञा पु० [स० वङ्घ] एक वृक्ष का नाम [को०]।

वचक[1]—वि० [स० वञ्चक] १ धूर्त। धोखेबाज। ठग। २ खल।

वचक[2]—सज्ञा पुं० १ गीदड। २ सोधियार। ३. चोर। ठग। ४ गृहवभ्रु। गधमूषक (को०)।

वचति—सज्ञा पुं० [स० वञ्चति] अग्नि [को०]।

वचथ—सज्ञा पुं० [स० वञ्चथ] १ धर्तता। छलना। २ धूर्त। छली। ३ पिक। कोकिल। ४ मरण। मृत्यु [को०]।

वचन—सज्ञा पु० [स० वञ्चन] [वि० वचित] १ धोखा देना। धूर्तता। ठगी। २ धोखा खाना। ठगा जाना। ३ भ्राति। व्यामोह (को०)। ४ क्षति। हानि (को०)।

यौ०—वचनचतुता = वंचन कार्य मे कुशलता। वचनपटुता = दे० 'वचनचतुता'। वचनप्रवण = धोखा देने की ओर प्रवृत्त। वचन योग = ठगी या धोखा देने का अभ्यास।

वचना[1]—सज्ञा स्त्री० [स० वञ्चना] धोखा। जाल। फरेब। छल। वंचन।

यौ०—वचनापडित = कुशल धोखेबाज। वचनापटु, वचना-कुशल = वचना करने मे पडित।

वचना(यु)[2]—क्रि० स० [स० वञ्चना] धोखा देना। ठगना। उ०—दभ विलोक्यो कहल जो, दिल्ली नगरी जाइ। वचतु जग जैसे फिरतु मो पै बरनि न जाइ।—केशव (शब्द०)।

वचना(यु)[1]—क्रि० स० [स० वाचन] पढना। बाँचना।

वचनीय—वि० [स०] १. त्याज्य। परित्याग करने लायक। छोडने के काबिल। २ भोला भाला। जिसे धोखा दिया जा सके। जो ठगा जा सके [को०]।

वचयिता—वि० [स० वञ्चयितृ] वचना करनेवाला। दे० 'वचक' [को०]।

वचित—वि० [स० वञ्चित] १ धोखे मे आया हुआ। जो ठगा गया हो। २ अलग किया हुआ। ३ विमुख। अलग। हीन। रहित। जैसे—मैं इस कृपा से वचित रखा गया हूँ।

वचिता—सज्ञा स्त्री० [स० वञ्चिता] प्रहेलिका। गूढ प्रश्न। पहेली [को०]।

वचुक[1]—वि० [स० वञ्चुक] [वि० स्त्री० वचुकी] धूर्त। ठग। चालाक। बेईमान [को०]।

वचुक[2]—सज्ञा पुं० गीदड। स्यार [को०]।

वचुलक—सज्ञा पु० [स० वञ्चुलक] १ एक प्रकार का वृक्ष। दे० 'वजुल'। २ एक पक्षी [को०]।

वछित—वि० [स० वाञ्छित] दे० 'वाछित'। उ०—कितहूँ न भयो वछित कछू अब तौ तृष्ना मोहि तजि।—ब्रज० ग्र०, पृ० १०७।

वजुल—सज्ञा पु० [स० वञ्जुल] १ बेत। उ०—मजु वजुल की लता और नील निचुल के निकुज जिनके पता ऐसे सघन जो सूय को

फिरनी को भी नहीं निकलने देते।—श्यामा०, पृ० ४१। २. तिनिश का पेड। ३ अशोक का पेड। ४ स्थलपद्म। ५ एक प्रकार के पक्षी का नाम।

यौ०—वजुलद्रुम = अशोक। वजुलप्रिय = वेतस।

वजुला—सज्ञा स्त्री० [स० वञ्जुला] १ अधिक दूध देनेवाली गौ। दुधारी गाय। दुधारू गाय। २ एक नदी का नाम जो मत्स्य-पुराणानुसार सह्याद्रि पर्वत से निकलती है।

वजुलावती—सज्ञा स्त्री० [सं० वञ्जुलावती] एक नदी का नाम जो दक्षिण के एक पवत से निकलती है।

वट[1]—सज्ञा पु० [स० वण्ट] १ भाग। बाँट। २ हँसिया आदि की मूठ। बेंट। वह। ३. वह जिसकी पूँछ न हो या कट गई हो। लँडूरा। बाँडा। ४. अविवाहित पुरुष।

वट[2]—वि० १ बाँडा। लँडूरा। २ अविवाहित [को०]।

वटक[1]—सज्ञा पु० [स० वण्टक] भाग। बाँट।

वंटक[2]—वि० बाँटनेवाला। विभाजक।

वटन—सज्ञा पु० [स० वण्टन] अश या भाग लगाना। विभक्त करना। बाँटना [को०]।

वटनीय—वि० [स० वण्टनीय] बाँटने लायक। वटन के योग्य।

वटाल—सज्ञा पु० [स० वण्टाल] १ शूरो का युद्ध। २. नौका। ३ खोदने का औजार। खनती।

वठ[1]—वि० [स० वण्ठ] १ जिसका कोई अग खडित हो। हीनाग। जैसे—लूला, लँडूरा, खंजा आदि। २. अविवाहित (को०)।

वठ[2]—सज्ञा पु० १ अविवाहित पुरुष। २. दास। सेवक। ३ वामन। बौना। ४ कुत। भाला।

वठर—सज्ञा पु० [स० वण्ठर] १. ताड के वृक्ष का कोपल। २ बाँस के कल्ले का वह मोटा पत्ता जो उसे छिपाए रहता है।

विशेष—यह पत्ता गाँठ गाँठ पर होता है और बहुत कडा तथा भूरे रग का होता है।

३ कुत्ते की पूँछ। ४. वह रस्सी जिससे बकरी, गाय आदि को गले से बाँधते हैं। ५ स्तन। थन। ६. मेघ। ७ कुत्ता।

वठाल—सज्ञा पु० [स० वण्ठाल] दे० 'वटाल'।

वड[1]—सज्ञा पु० [स० वण्ड] १ वह जिसकी लिगेंद्रिय के अग्र भाग पर वह चमडा न हो, जो सुपारी को ढाँके रहता है। २ ध्वजभग नामक रोग।

पर्या०—दुश्चर्मा। द्विनग्नक। शिपिविष्ट।

वड[2]—वि० १ बाँडा। हीनाग। २ अविवाहित (को०)।

वडर—सज्ञा पु० [स० वण्डर] १ मक्खीचूस। सूम। कजूस। २ वह नपुसक जो अत पुर का रक्षक हो। खोजा।

वडा—सज्ञा स्त्री० [स० वण्डा] रंडा। पुश्चली स्त्री।

वडाल—सज्ञा पुं० [स० वण्डाल] दे० 'वटाल'।

वद—वि० [स० वन्द] १. स्तुति या प्रशस्ति करनेवाला। २. परोपजीवी [को०]।

वदक—सज्ञा पु० [स० वन्दक] १ स्तुतिकर्ता। चारण। वंदी। २ एक परोपजीवी पौधा। विशेष दे० 'वदा'। ३ बौद्ध भिक्षु [को०]।

वदका—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दका] दे० 'वदा' [को०]।

वदथ—सज्ञा पु० [स० वन्दथ] १ वदीजन। चारण। २ वदनीय व्यक्ति [को०]।

वंदन—सज्ञा पु० [स० वन्दन] १ स्तुति और प्रणाम। पूजन।

विशेष—वदन षोडशोपचार पूजन मे है। यह समस्त पदो के अत मे 'वदन' शब्द से पूजित या पूज्य का अर्थ देता है। (जैसे,—जगवदन)

२ शरीर पर बनाए हुए तिलक आदि चिह्न। ३ एक विष का नाम। ४ एक असुर का नाम। ५ एक ऋषि का नाम। ६ वदाक। बाँदा।

वदनक—सज्ञा पु० [स०] विनम्र भाव से नमस्कार [को०]।

वदनमाल—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दनमाल] वदनवार।

वदनमाला—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दनमाला] दे० 'वदनमाल'।

वदनमालिका—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दनमालिका] दे० 'वदनमाल'।

वदनवार—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दनमाल] वह माला जो सजावट के लिये घरो के द्वार पर या मडप के चारो ओर उत्सव के समय बाँधी जाती है। उ०—सेजहि सुधारैं एक, रोशनी उज्यारैं एक, बाँधती वदनवारैं झारैं फूल क्यारी को।—राम (शब्द०)।

विशेष—इस माला मे फूल पत्तियाँ गुथी रहती हे। यज्ञादि के अवसर पर इसमे आम के पल्लव गूँथे जाते है।

वदना—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दना][वि० वदित, वदनीय] १. स्तुति। २ प्रणाम। वदन। ३ वह तिलक जो होम के भस्म से यज्ञ के अत मे लगाया जाता है।

वदनी—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दनी] १ स्तुति। २ जीवातु नामक ओषधि। ३. गोरोचन। ४ तिलकादि चिह्न जो शरीर पर बनाए जाते है। ५ याचनाकर्म। ६. बटी।

वदनीय[1]—वि० [स० वन्दनीय] वदना करने योग्य। आदर करने योग्य।

वदनीय[2]—सज्ञा पु० पीत भृगराज। पीली भँगरैया [को०]।

वदनीया—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दनीया] गोरोचना [को०]।

वदा—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दा] दूसरे पेडो के उपर उसी के रस से पलनेवाला एक प्रकार का पौधा। वदाक। बाँदा।

पर्या०—वृक्षादनी। वृक्षरुहा। वदाका। जीवतिका। शेखरी। सव्या। वदका। वदक। नीलवल्ली। वदाकी। परवासिका। वशिनी। पुत्रिणी। वद्या। परपुष्टा। पराश्रया। कामवृक्षा। केशरूपा। गधमादनी। कामिनी। श्यामा। कामवृक्ष।

विशेष—इसका स्वाद तिक्त होता है, और वैद्यक मे यह कफ, पित्त, तथा श्रम को दूर करनेवाला कहा गया है।

२ भिक्षुणी (को०)।

वदाक—सज्ञा पु० [स० वन्दाक] दे० 'वदा'।

वंदाका—सज्ञा स्त्री० [स० वन्दाका] दे० 'वंदा'।

वंदाकी—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्दाकी] दे० 'वदा'।

वंदार—संज्ञा पु० [सं० वन्दार] परोपजीवी पौधा। वदा। बाँदा [को०]।

वंदारु[1]—संज्ञा पु० [सं० वन्दारु] १ स्तोत्र। २ बाँदा। वदाक। ३ वैतालिक। चारण। स्तुतिपाठक। स्तुतिकर्ता। भाट (को०)।

वंदारु[2]—वि० वदशील। नम्र।

वंदि—संज्ञा पु० [सं० वन्दि] १ दे० 'बदी'। २ कैद। ३ सोपान। सीढी। ४ स्तुति। ५ स्तुतिपाठक। वदी [को०]।

वंदिग्राह—संज्ञा पु० [सं० वन्दिग्राह] डाकू।

वंदिचौर—संज्ञा पु० [सं० वन्दिचौर] १ चोर। तस्कर। २ डाकू [को०]।

वंदित—वि० [सं० वन्दित] [वि० स्त्री० वदिता] १ आदृत। पूजित। २ पूज्य। आदरणीय।

वंदितव्य—वि० [सं० वन्दितव्य] दे० 'वद्य'।

वंदिता—संज्ञा पु० [सं० वन्दितृ] स्तुति करनेवाला। प्रशसा करनेवाला [को०]।

वंदिपाल—संज्ञा पु० [सं० वन्दिपाल] कैदखाने का अधिकारी [को०]।

वंदी—संज्ञा पु० [वन्दिन्] १ दे० 'बदी'। २ दे० 'बदि'।

वंदीक—संज्ञा पु० [सं० वन्दीक] इद्र।

वंदीगृह—संज्ञा पु० [सं० वन्दीगृह] कैदखाना।

वंदीजन—संज्ञा पु० [सं० वन्दीजन] राजाओ आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति।

वंद्य—वि० [सं० वन्द्य] वदना करने योग्य। वदनीय। आदरणीय। पूजनीय।

वंद्या—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्द्या] १ बाँदा। वदा। २ गोरोचन [को०]।

वंद्र—संज्ञा पु० [सं० वन्द्र] १ अभ्युदय। मगल। २ प्राचुर्य। प्रचुरता। ३ भक्त। उपासक [को०]।

वंधु—संज्ञा पु० [सं० वन्धु] दे० 'बधु'।

वंधुर—संज्ञा पु० [सं० वन्धुर] १ रथ या गाडी का आश्रय जिसमे दोनो हरसे और धुरा प्रधान है। २. गाडी मे का वह स्थान जहाँ सारथी या गाडीवान बैठकर उसे चलाता है।

वंधुर[2]—वि० दे० 'बधुर'।

वंध्य—वि० संज्ञा पुं० [सं० वन्ध्य] दे० 'बध्य'।

यौ०—वध्यफल।

वंध्या—संज्ञा स्त्री० [सं० वन्ध्या] बाँझ स्त्री जिसे सतान न उत्पन्न हो। दे० 'बध्या'।

यौ०—वध्यातनय। वध्यापुत्र। वंध्यासुत। वध्यासूनु = दे० 'बध्यापुत्र'।

वंन(पं)—संज्ञा पु० [सं० वर्ण, प्रा० वण्ण] दे० 'वर्ण'। उ०—मारुवणी मुँह वन्न आदित्ता है उज्जली।—ढोला०, दू० ४६४।

वंभ—संज्ञा पु० [सं० वम्भ] बाँस [को०]।

वंभारव—संज्ञा पु० [सं० वम्भारव] रँभाना। जानवर के रँभाने का शब्द [को०]।

वंश—संज्ञा पु० [सं०] १ बाँस। २ बँडेर। ३ पीठ की हड्डी। ४ नाक के ऊपर की हड्डी। बाँसा। ५ बाँसुरी। ६ एक प्रकार की ईख। ७ खड्ग के बीच का वह भाग जो ऊँचा हो, अर्थात् जहाँ पर वह अधिक चौडा होता है। ८ बारह (कुछ के मत मे दस) हाथ का एक मान। ९ बाहु आदि की लबी हड्डियाँ। १० युद्ध की सामग्री। जैसे, रथ, ध्वजा इत्यादि। ११ विष्णु। १२ वशलोचन। १३. फूल। १४. कुल। परिवार। जाति (को०)। १५. सतान। पुत्र (को०)। १६ एक ही जैसी वस्तुओ का समूह या वग (को०)। १७ शाल का वृक्ष (को०)। १८ अभिमान। दर्प (को०)। १९ दृढ ग्रथि। मजबूत गाठ (को०)। २० ववडर।

यौ०—वशज। वशकृत। वशक्षय। वशच्छेद, इत्यादि।

वंशऋषि—संज्ञा पु० [सं०] वे ऋषि जिनके नाम वश ब्राह्मण मे आए हैं।

वंशकज—संज्ञा पुं० [सं० वशकञ्ज] काले अगर की लकडी। कृष्णागुरु।

वंशक—संज्ञा पु० [सं०] १. अगर नामक गधद्रव्य। अगुरु। २ एक प्रकार की मछली। ३ एक प्रकार का गन्ना या ईख।

विशेष—वैद्यक मे इसे शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, सारक, वृष्य और कफनाशक लिखा है। इसके रस का स्वाद कुछ खारीपन लिए भारी होता है। इसे 'कडऊख' कहते हैं।

४ बाँस की गाँठ या सधि (को०)। ५. छोटी जाति का बाँस।

वंशकठिन—संज्ञा पु० [सं०] जहाँ बाँस परस्पर गुथे हुए हो। बाँस का जगल [को०]।

वंशकपूर—संज्ञा पु० [सं० वशकर्पूर] वसलोचन।

वंशकफ—संज्ञा पु०] सं०] सेमल आदि का घूआ जो आकाश मे उडता फिरता है।

वंशकर—संज्ञा पु० [सं०] १ वह पुरुष जिससे किसी वश का आरभ हुआ हो। मूल पुरुष। पूर्वज। पुरखा। २. पुत्र (को०)।

वंशकरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार्कडेय पुराणानुसार एक नदी जो महेंद्र पर्वत से निकलती है। वशधारा।

वंशकर्पूर—संज्ञा पु० [सं०] वसलोचन।

यौ०—वशकर्पूररोचना, वशकर्पूररोचनी, वशकर्पूरलोचना = दे० 'वशलोचन', 'वसलोचन'।

वंशकर्म—संज्ञा पु० [सं० वशकर्मन्] बँसोर का काम। बाँस की डलिया, सूप, टोकरी आदि बनाने का काम [को०]।

यौ०—वशकर्मवृत् = दे० 'वसोर'।

वंशकार—संज्ञा पु० [सं०] गधक।

वंशकृत्—संज्ञा पु० [सं०] किसी वश का मूल पुरुष [को०]।

वंशकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] वशीवादन। बाँसुरी बजाना [को०]।

वंशक्रम—संज्ञा पु० [सं०] किसी वश की तालिका। वशानुक्रम [को०]।

वंशक्षय—संज्ञा पुं० [सं०] वश या कुल का विनाश [को०]।

वंशक्षीरी—सज्ञा स्त्री० [स०] बंसलोचन।

वंशगोप्ता—सज्ञा पु० [स० वंशगोप्तृ] वह जो कुल या वश का सरक्षक हो [को०]।

वंशघटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दिव्यावदान के अनुसार एक प्रकार का खेल।

वंशचर्मकृत्—सज्ञा पु० [स०] वह जो बाँस और चमडे की वस्तुएँ बनाता हो [को०]।

वंशचरित—सज्ञा पु० [स०] किसी वश का इतिहास [को०]।

वंशचिंतक—सज्ञा पु० [स० वंशचिन्तक] कुल या वश का कुर्सीनामा तैयार करनेवाला [को०]।

वंशच्छेत्ता—सज्ञा पु० [स० वंशच्छेत्तृ] वश का अतिम पुरुष [को०]।

वंशज[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बाँस का चावल या बीज। २ पुत्र। ३ कुल मे उत्पन्न पुरुष। सतान। सतति। औलाद। ४ वंशलोचन (को०)।

वंशज[2]—वि० १. बाँस का बना हुआ। २ अच्छे कुल मे उत्पन्न। ३ (किसी) वश मे उत्पन्न [को०]।

वंशजा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वंशलोचन। २ कन्या।

वंशतंडुल—सज्ञा पु० [स० वंशतण्डुल] बाँस का चावल या बीज [को०]।

वंशतालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वंशवृक्ष। कुर्सीनामा (को०)।

वंशतिलक—सज्ञा पु० [स०] एक छंद का नाम।

वंशचला—सज्ञा स्त्री० [स०] जोरिका तृण। बाँसा। विशेष दे० 'वंशपत्री' [को०]।

वंशधर—सज्ञा पु० [स०] १ कुल मे उत्पन्न। वंशज। संतति। सतान। २ वंश की मर्यादा रखनेवाला।

वंशधरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक नदी जो महेंद्र पर्वत से निकली है। यह नदी मध्य प्रदेश मे है। इसे वंशकरा भी कहते है। इसका आधुनिक नाम वंशधारा है।

वंशधान्य—सज्ञा पु० [स०] बाँस का चावल।

वंशनर्तो—सज्ञा पु० [स० वंशनर्त्तिन्] भाँड।

वंशनाडिका, वंशनाडी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बाँसुरी। २ बाँस की पुपली या नली [को०]।

वंशनाथ—सज्ञा पुं० [स०] वंश का प्रधान पुरुष। जाति का मुखिया या प्रधान व्यक्ति [को०]।

वंशनाश—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जो शनि और राहु के सूर्य के साथ एक लग्न मे, विशेषत पचम मे पडने पर होता है।

वंशनेत्र—सज्ञा पु० [स०] ईख के अकुरवाले डठल जिन्हे जमीन मे गाडने से ईख का नया पौधा उत्पन्न होता है। आँख।

वंशपत्र—सज्ञा पु० [स०] १ हरताल। २ बाँस का पत्ता (को०)। ३. एक प्रकार का सरकडा (को०)।

वंशपत्रक—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार की ईख जो सफेद होती है। २. एक प्रकार की मछली। ३. हरताल। ४. सरकंडा (को०)।

वंशपत्रपतित—सज्ञा पुं० [स०] १७ वर्णों के एक छद का नाम जिसमे क्रम से भगण, रगण, नगण, भगण, नगण और अत मे एक लघु और एक गुरु होता है।

वंशपत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार की हीग। २ एक घास जिसे बाँसा कहते हैं।

विशेष—इसकी पत्तियाँ बाँस की पत्तियो से मिलती है। वैद्यक मे यह शीतल, मधुर, रुचिकारी तथा रक्तपित्त के दोषो को शात करनेवाली कही गई है।

पर्या०—वशदला। जीरिका। जीर्णपत्रिका। वेणुपत्री। पिंडा। शिराटिका।

वंशपरंपरा—सज्ञा स्त्री० [स० वंशपरम्परा] १ वंशतालिका। वंशवृक्ष। २ पूर्वपुरुषो से चली आती हुई रीति। कुलगत आचार।

वंशपात्र—सज्ञा पु० [स०] बाँस का बना पात्र। जैसे, डलिया, टोकरी आदि [को०]।

वंशपीत—सज्ञा पु० [स०] गुग्गुल।

वंशपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] क्षुप जाति की एक वनौषधि। सहदेई। विशेष दे० 'सहदेई'।

वंशपूरक—सज्ञा पु० [स०] ईख या गन्ने की पोर [को०]।

वंशपोट—सज्ञा पुं० [स०] १ बाँस का अकुर। करइल। २ अच्छे कुल की सतान [को०]।

वंशबाह्य—वि० [स०] वंश से बाहर किया गया। वंशच्युत [को०]।

वंशब्राह्मण—सज्ञा पु० [स०] सामवेद के ब्राह्मणो मे एक प्रधान ब्राह्मण, जिसमे सामवेदी ब्राह्मणो के वंशकार ऋषियो की नामावली है।

वंशभव—वि० [स०] १ बाँस का बना हुआ। २. कुलीन। पालनकर्ता।

वंशभृत्—सज्ञा पु० [स०] वंश का प्रधान [को०]।

वंशभोज्य—सज्ञा पु० [स०] १. वह सपत्ति जिसपर वंशगत अधिकार हो। मौरूसी जायदाद। २ वंशगत अधिकार की शासनप्रणाली।

वंशायव—सज्ञा पुं० [स०] बाँस का बीज [को०]।

वंशराज—सज्ञा पु० [सं०] १ बहुत लबा बाँस। २ खानदान का मालिक। कुल का प्रधान।

वंशरोचना—सज्ञा स्त्री० [स०] वंसलोचन।

वंशलून—वि० [स०] जिसके वंश का लून अर्थात् उच्छेद हो गया हो। ससार मे अकेला [को०]।

वंशलोचन—सज्ञा पु० [स०] वंसलोचन।

पर्या०—त्वक्क्षीरा। वंशलोचना। तुगाक्षीरी। वाशी। वंशजा। क्षीरिका। तुगा। त्वक्क्षीरी। शुभ्रा। शुभा। वंशक्षीरी। त्वक्सारा। कर्म्मरी। श्वेता। वंशकर्पूर। रोचना। रोचनिका। पिंगा। वंशशर्करा। वेणुलवण। वैणवी।

वंशलोचना—वि० स्त्री० [स०] वंसलोचन।

वंशवन—सज्ञा पु० [स०] बाँसो का जंगल [को०]।

वशवर्धन—सज्ञा पु० [स०] वश को वृद्धि करनेवाला । पुत्र [को०] ।

वशविततिं—सज्ञा स्त्री० [स०] १ परिवार । २ बाँसो का झुरमुट [को०] ।

वशविस्तर—सज्ञा पु० [स०] वशवृत्त [को०] ।

वशवृत्त—सज्ञा पु० [स०] १ बाँस का पेड । २ किसी वश की वृत्त की आकृति मे बनाई गई तालिका [को०] ।

वशशर्करा—सज्ञा स्त्री० [स०] वसलोचन ।

वशशलाका—सज्ञा स्त्री० [स०] बीन, सितार आदि बाजो का डडा ।

वशसपत्—सज्ञा स्त्री० [वशसम्पत्] उच्च कुल मे जन्म एव प्रभूत वैभव [को०] ।

वशस्थ—सज्ञा पु० [स०] बारह वर्णो का एक वर्णवृत्त जिसका व्यवहार सस्कृत काव्यो मे अधिक मिलता है । इसमे जगण, तगण, जगण और रगण आते हैं । जैसे,—प्रथा जु वशस्थ विलधि धावती । नसाय तीनो कुल को लजावती । इसे 'वशस्थविल' भी कहते है ।

वशस्थविल—सज्ञा पु० [स०] १ बाँस के भीतर का खोखला हिस्सा । २ एक वर्णिक छद । वशस्थ [को०] ।

वशहीन—वि० [स०] जिसके वश मे कोई न हो । निर्वश । २ अपुत्र ।

वशाकुर—सज्ञा पु० [स० वशाङ्कुर] १ बाँस का कोपल । करइल । २ पुत्र [को०] ।

वशागत—वि० [स०] कुल परपरा से आता हुआ ।

वशाग्र—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वशाकुर' [को०] ।

वशानुक्रम—सज्ञा पुं० [स०] वशावली ।

वशानुकीर्तन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वशानुचरित' [को०] ।

वशानुचरित—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन राजवशो की कथा ।

विशेष—यह पुराणो के लक्षणो मे से एक है ।

वशावली—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी वश मे उत्पन्न पुरुषो की पूर्वोत्तर क्रम से सूची ।

वशाह्व—सज्ञा पु० [स०] वसलोचन ।

वशिक—सज्ञा पु० [स०] १ अगर की लकडी । २ काला गन्ना । केतारा । ३ प्राचीन काल की एक माप जो चार स्तोम की कही गई है (को०) । ४. एक जाति जो शूद्र और वेषी से उत्पन्न कही गई है (को०) ।

वशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अगर की लकडी । २ बसी । मुरली । ३ पिप्पली ।

वशी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बाँस मे सुर निकालने के लिये छेद करके बनाया जाता है । बाँसुरी । मुरली ।

विशेष—पुराने ग्रथो मे लिखा है कि वशी बाँस ही की होनी चाहिए, पर खैर, लाल चदन आदि की लकडी की अथवा सोने, चाँदी की भी हो सकती है । यह वास्तव मे बाँस की एक पोली नली होती है, जिसके बजानेवाले छोर पर एक जीभ लगी होती है और दूसरी ओर नली के ऊपर एक पक्ति मे सुर निकालने के छेद होते है । मातंग ऋषि का मत है कि नली का छेद कनिष्ठा उँगली के मूल के बराबर होना चाहिए । जो छोर मुँह मे रखकर फूँका जाता है, उसे 'फूत्काररध्र' और सुर निकालनेवाले सात छेदो को 'तारध्र' कहते है । इस बसी के अतिरिक्त मातग के अनुसार चार प्रकार की मुरलियाँ और होती हैं, जिन्हे मदानदा, नदा, विजया और जया कहते है । मदानदा मे तारध्र फूत्काराध्र से दस अगुल पर, नदा मे ग्यारह अगुल पर, विजया मे बारह अगुल पर और जया मे चौदह अगुल पर होते हैं । आजकल वह वशी जो एक साथ दो बजाई जाती है, अलगोजा कहलाती है । प्राचीन काल के गोपो मे इस बाजे का प्रचार बहुत था ।

यौ०—वशीधर ।

२ चार कर्ष का एक मान, जो आठ तोले के बराबर होता है । ३ वसलोचन । ४ धमनी । नाडी (को०) ।

वशीधर—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण, जो वशी बजाया करते थे ।

वशीधारी—सज्ञा पु० [स० वशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण । २ वह जो बाँसुरी बजाता हो । बाँसुरीवादक [को०] ।

वशीय—वि० [स०] वशोद्भव । कुल मे उत्पन्न । जैसे,—चंद्रवशीय ।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दो के अत मे हुआ करता है ।

वशीवट—सज्ञा पु० [स०] वृदावन मे वह बरगद का पेड जिसके नीचे श्रीकृष्ण वशी बजाया करते थे ।

वशीवादन—सज्ञा पु० [स०] वशी बजाना ।

वशोद्भव—वि० [स०] वशज । कुल मे उत्पन्न ।

वशोद्भवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वसलोचन ।

वश्य¹—वि० [स०] १ वशी । वशज । २ मेरुदड सबधी । मुख्य अस्थि से सबद्ध (को०) । ३ अच्छे कुल का । कुलीनवश सबधी [को०] ।

वश्य²—सज्ञा पु० १ पीठ की रीढ । २ वह बडी लकडी जो छाजन के बीचोबीच रीढ के समान होती है । बँडेर । ३ पूर्व पुरुष । पूर्वज (को०) । ४ सतति । सतान (को०) ५ परिवार या कुल का कोई व्यक्ति (को०) । ६ शिष्य (को०) । ७ वे सबधी व्यक्ति जो सात पुश्त पूर्व और सात पीढी बाद के हो (को०) ।

वंश्या—सज्ञा स्त्री० [स०] धनिया [को०]

वस—सज्ञा पु० [स० वश] दे० 'वश' । उ०—एक पुत्र हे, सो तेरो वस चल्यो जायगो ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७२ ।

वसग—सज्ञा पु० [स०] साँड । वृषभ [को०] ।

वँसली‡—सज्ञा स्त्री० [हिं० बासुरी] दे० 'बाँसुरी' । उ०—गावणहार माँडइ (अ) र गाई । रास कइ (सम) यइ वँसली वाई ।—बी० रासो, पृ० ५ ।

व¹—सज्ञा पुं० [स०] १ वायु । २ बाण । ३ वरुण । ४ बाहु । ५ मत्रणा । ६ कल्याण । ७ सात्वना । ८ वसति । बस्ती । ९ वरुणालय । समुद्र । १०. शार्दूल । ११ वस्त्र । १२ कोई का कद । सेरुकी । १३. जल मे उत्पन्न होनेवाले कद । शालुक ।

१४ वंदन। १५ अस्त्र। १६ खड्गधारी पुरुष। १७ मूर्वा नामक लता। १८ वृक्ष। १९ कलण से उत्पन्न ध्वनि। २० मद्य। २१ प्रचेता। २२। पानी। जल (को०)। २३ आदर। समान (को०)। २४ राहु (को०)।

व[२]—वि० बलवान्।

व[३]—अव्य० [फा०] और। जैसे,—राजा व रईस।

वअनⓊ—संज्ञा पु० [स० वचन, प्रा० वयण, वअन] दे० 'वचन'। उ०—कुटिल राजनीति चतुरहु, मोर वअन आकण्णे करहु।—कीर्ति०, पृ० २०।

वइठनाⓊ†—क्रि० अ० [स० √विष्, विष्ट, प्रा० बिट्ठ+हिं० ना (प्रत्य०) या स० वितिष्ठति, प्रा० वइट्ठइ] दे० 'बैठना'। उ०—वइठहिं ठामहि ठामा।—कीर्ति०, पृ० ९६।

वइरागⓊ†—संज्ञा पु० [स० वैराग्य, प्रा० वइराग] दे० 'वैराग्य'। उ०—मनि वइराग न थाइ, वाँलभ वीछुडिया तणी।—ढोला०, दू० १७१।

वइसानाⓊ—क्रि० स० [हिं० बैठाना] दे० 'बैठाना'। उ०—अमरापति चढि चाल्यो राय। ली अस्त्री अरधग वइसाय।—बी० रासो, पृ० २७।

वक—संज्ञा पु० [सं०] १ बगला नाम का पक्षी। २ अगस्त का पेड या फूल। ३ एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था मे मारा था। ४ एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था। ५ कुबेर। ६ एक यक्ष का नाम। ७ एक जाति का नाम। ८ वचक। ठग। ढोगी (को०)।

वकअत—संज्ञा स्त्री० [अ० वकअत] इज्जत। मान। गौरव। साख। ऊँचाई। प्रतिष्ठा। उ०—सबसे ज्यादा जिस बात से तअज्जुब होता है, यह है कि खान देहली की जबान और उर्दू को भी वकअत की निगाह से नही देखते।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ८७।

वककच्छ—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जनपद जो नर्मदा के किनारे था।

विशेष—कथासरित्सागर मे लिखा है कि उज्जयिनी के राजा सातवाहन सर्ववर्मा ने कलाप व्याकरण का अध्ययन करके अपने गुरु को यह राज्य गुरुदक्षिणा मे दिया था।

वकचर—संज्ञा पु० [स०] दे० 'वकवृत्ति'।

वकचिंचिका—संज्ञा स्त्री० [स० वकचिञ्चिका] एक प्रकार की छोटी मछली।

वकजित्—संज्ञा पु० [स०] १ श्रीकृष्ण। २ भीमसेन।

वकत—संज्ञा स्त्री० [अ० वकत] दे० 'वकअत' [को०]।

वकनख—संज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वकनिषूदन—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'बकनिषूदन' [को०]।

वकधूप—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'बकधूप' [को०]।

वकपचक—संज्ञा पु० [स० वकपञ्चक] कार्तिक के शुक्ल पक्ष की एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक की पाँच तिथियाँ।

वकयंत्र—संज्ञा पु० [स० वकयन्त्र] आसव आदि भवके से उतारने के लिये एक यत्र या बरतन, जिसके मुँह पर बगले की गरदन की तरह टेढी नली लगी रहती है।

वकवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] धोखा देकर काम निकालने की घात मे रहने की वृत्ति। कदाचार।

वकल—संज्ञा पु० [स० वल्कल] भीतर की छाल [को०]।

वकव्रत—संज्ञा पु० [स०] बगले की तरह घात मे रहनेवाला। कपटी। चालबाज मनुष्य।

वकाची—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मछली [को०]।

वकार—संज्ञा पुं० [अ० वकार] १ प्रतिष्ठा। बडप्पन। इज्जत। २ गुरुता। गभीरता [को०]।

वकारना—क्रि० अ० [देश०] गरजना। ललकारना। हुकारना। उ०—भये त्रिपत बीराधिवर, पूरन डकक डकार। प्रति आनंदत उल्हसत, बोलत वयन वकार।—पृ० रा०, ६।१७०।

वकालत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ दूसरे के किसी काम का भार लेना। दूसरे के स्थानापन्न होकर काम करना। २ दूसरे का संदेसा जोर देकर कहना। दूतकर्म। ३ दूसरे के पक्ष का मडन दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना। जैसे,—उन्हे जो कुछ कहना होगा आप कहेगे, तुम क्यो उनकी ओर से वकालत करते हो। ४ अदालत या कचहरी मे किसी मामले मे वादी या प्रतिवादी की ओर से प्रश्नोत्तर या वादविवाद करने का काम। मुकदमे मे किसी फरीक की तरफ से बहस करने का पेशा।

मुहा०—वकालत चलना या चमकना = वकालत के पेशे मे आमदनी होना। वकालत जमना = वकालत के पेशे मे लाभ होने लगना।

यौ०—वकालतनामा।

वकालतन्—क्रि० वि० [अ०] वकील के द्वारा। अमालतन् का उलटा।

वकालतनामा—संज्ञा पुं० [अ० वकालत+फा० नामह्] वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ से मुकदमे मे बहस करने के लिये मुकर्रर करता है।

वकाली—संज्ञा स्त्री० [स० वक+आलि] वकपक्ति। उ०—नभ मे मेघावलि है काली, क्षिति मे है मजुल हरियाली, है दोनो के बीच वकाली। विद्युद्बाला की माला सी, है वह सुदर श्वेत सुमन की।—प्रेमाजलि, पृ० ११९।

वकासुर—संज्ञा पु० [स०] एक राक्षस का नाम।

विशेष—इस नाम के दो राक्षस हुए है। एक को श्रीकृष्ण ने अपनी बाल्यावस्था मे मारा था। बत्सासुर और अघासुर नाम के इसके दो भाइयो को भी कृष्ण ने सहार किया था। यह पूतना नाम की राक्षसी का भाई और कस का अनुचर था। दूसरे को भीमसेन ने उस समय मारा था, जब पाँचो पाडव लाक्षागृह से निकलकर वन मे जाकर रहते थे।

वकी—संज्ञा स्त्री० [स०] एक राक्षसी का नाम।

वकीअ—वि० [अ० वकीअ] १ इज्जतदार। प्रतिष्ठित। २. ऊँचा। बलद।

वकीअत—संज्ञा स्त्री० [अ० वकीअत] १ कुत्सा। निंदा। २ युद्ध। लड़ाई [को०]।

वकील—संज्ञा पु० [अ०] १ दूसरे के काम को उसकी ओर से करने का भार लेनेवाला। २ दूसरे का संदेसा ले जाकर उसपर जोर देनेवाला। दूत। ३ राजदूत। एलची। उ०—सूरज कही नवाब के है आनद सरीर। तब वकील बिनती करी कृपा पाइ जदुबीर।—सूदन (शब्द०)। ४ प्रतिनिधि। ५ दूसरे का पक्ष मंडन करनेवाला। दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात करनेवाला। ६ कानून के अनुसार वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जिसे हाईकोर्ट की ओर से अधिकार मिला हो कि वह अदालतों में मुद्दई या मुद्दालेह की ओर से बहस करे।

वकीलीं—संज्ञा स्त्री० [अ० वकील + हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'वकालत'।

वकुल—संज्ञा पु० [सं०] १ अगस्त का पेड़ या फूल। २ मौलसिरी। उ०—सूखा है यह मुख यहाँ, रूखा है मन आज। किंतु सुमन-सकुल रहे प्रिय का वकुल समाज।—साकेत, पृ० २९३। ३. शिव। दे० 'बकुल'।

वकुला—संज्ञा स्त्री० [सं०) कुटकी नामक ओषधि।

वकुली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली नाम की ओषधि। २ वकुल। मौलसिरी।

वकुश—संज्ञा पु० [सं०] १ वह त्यागी यती, साधु जिसे अपने ग्रंथों, शरीर और भक्तों या शिष्यों की कुछ कुछ चिंता रहती हो। (जैन)। २ पत्तों के झुरमुट में रहनेवाला एक जंतु (को०)।

वकूअ—संज्ञा पुं० [अ० वकूअ] घटित होना। प्रकट होना।

मुहा०—वकूअ में आना = प्रकट होना। घटित होना।

वकूआ—संज्ञा पु० [अ० वकूआ] १ फसाद। झंझट। २ घटना। वारदात। हादसा (को०)।

वकूफ—संज्ञा पु० [अ० वकूफ] १ जानकारी। ज्ञान। २ बुद्धि। समझ।

यौ०—बेवकूफ = मूर्ख।

वक्त'—संज्ञा पुं० [अ० वक्त] १ समय। काल।

मुहा०—वक्त काटना = (१) किसी प्रकार समय बिताना। (२) जी बहलाना। वक्त की चीज = (१) किसी समय या ऋतु विशेष में मिलनेवाली चीज। (२) किसी विशेष समय में गाया जानेवाला गीत या राग। जैसे,—कोई वक्त की चीज गाइए। वक्त खोना = समय नष्ट करना।

२ किसी बात के होने का समय। अवसर। मौका।

मुहा०—वक्त पर = अवसर आने पर। कोई विशेष परिस्थिति होने पर। जैसे,—इसे रख छोड़ो, वक्त पर काम आवेगी। वक्त ताकना = मौका देखना। इस बात की प्रतीक्षा में रहना कि कब उपयुक्त अवसर मिले और कोई बात करूँ। वक्त हाथ से देना = अवसर चूकना। मौका आने पर भी काम न करना।

३ इतना समय कि कोई काम किया जा सके। अवकाश। फुरसत।

क्रि० प्र०—निकलना।—निकालना।—मिलना।

४ विपत्काल। मुसीबत का समय (को०)। ५ मौसिम (को०)। ६ मरने का नियत समय। मृत्युकाल।

क्रि० प्र०—आ जाना।—आ पहुँचना।

वक्त[1]—वि० सं० वक्तृ, वक्ता दे० 'वक्ता'। उ०—उनईस सहस गरुणह पुरान। ओतान वक्त भक्ती उरान।—पृ० रा० १।५०।

वक्तन् फौक्तन्—क्रि० वि० [अ० वक्तन् फौक्तन्] यदाकदा। कभी कभी। २ यथासमय।

वक्तव्य'—वि० [सं०] १ कहने योग्य। वाच्य। २ कुछ कहने सुनने लायक। ३ हीन। तुच्छ। ४ जिम्मेदार। उत्तरदायी। ५ आधारित। निर्भर। आश्रित (को०)।

वक्तव्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कथन। वचन। २ वह बात जो किसी विषय में कहनी हो। ३ निंदा। बुराई (को०)। ४ नियम (को०)। ६ सीख। शिक्षा (को०)।

वक्तव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दोषारोपण। तिरस्कार। २. निर्भरता। पराधीनता [को०]।

वक्तव्यत्व—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वक्तव्यता' [को०]।

वक्ता—वि० [सं० वक्तृ] १ वाग्मी। बोलनेवाला। २ भाषणपटु। वदान्य। ३ ईमानदार (को०)।

वक्ता[2]—संज्ञा पुं० १ कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास। उ०—सूत तहँ कथा भागवत की कहत है ऋषि अठासी सहस हुते श्रोता। राम को देखि सनमान सब ही कियो सूत नहिं उठयो निज जानि वक्ता।—सूर (शब्द०)। २ शिक्षक। अध्यापक (को०)। ३ बुद्धिमान्। मेधावी व्यक्ति (को०)।

वक्तुकाम—वि० [सं०] बोलने की इच्छा रखनेवाला [को०]।

वक्तुमना—वि० [सं० वक्तुमनस्] जो बोलना चाहता हो। जिसके मन में बोलने की इच्छा हो [को०]।

वक्तृक—वि० [सं०] बोलनेवाला। वक्तृता देनेवाला [को०]।

वक्तृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वाग्मिता। वाक्पटुता। २ व्याख्यान। ३ कथन। भाषण।

वक्तृत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. वक्तृता। वाग्मिता। २ व्याख्यान। प्रवचन। ३ कथन। भाषण।

वक्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ मुख। २ तगर की जड़। ३ एक प्रकार का छंद जो अनुष्टुप छंद के अनुरूप होता है। ४ काम का आरंभ। ५ मुखाकृति। चेहरा (को०)। ६ दाँत (को०)। ७ बाण की नोक (को०)। ८ एक प्रकार का पहनावा।

यौ०—वक्त्रज।

वक्त्रखुर—संज्ञा पु० [सं०] दंत। दाँत [को०]।

वक्त्रज—संज्ञा पु० [सं०] १ ब्राह्मण। २ दाँत [को०]।

वक्त्रताल—संज्ञा पुं० [सं०] वह ताल जो मुँह से उत्पन्न किया जाय। जैसे, वंशी को बजाने से या मुँह में वायु भरकर छोड़ने से।

वक्त्रतुंड—संज्ञा पु० [सं० वक्त्रतुण्ड] गणेश।

वक्त्रदल—सज्ञा पु० [स०] तालु । तालू ।

वक्त्रभट्ट—सज्ञा पु० [स०] तोबडा [को०] ।

वक्त्रपरिस्पद—सज्ञा पु० [स० वक्त्रपरिस्पन्द] वार्ता । बात [को०] ।

वक्त्रबाहु सज्ञा पु० [स०] बाराही कद ।

वक्त्रभेदी—वि० [स० वक्त्रभेदिन्] बहुत तीखा या चरपरा [को०] ।

वक्त्रवास—सज्ञा पु० [स०] नारगी ।

वक्त्रशल्या—सज्ञा स्त्री० [स०] गुजा । घुँघची ।

वक्त्रशोधी[1]—सज्ञा पु० [स० वक्त्रशोधिन्] जमीरी नीबू [को०] ।

वक्त्रशोधी[2]—वि० मुख को शुद्ध करनेवाला [को०] ।

वक्त्रासव—सज्ञा पु० [स०] लाला । थूक [को०] ।

वक्फ—सज्ञा पु० [अ० वक्फ] १ वह भूमि या सपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो । किसी धर्म के काम मे लगी हुई जायदाद ।

क्रि० प्र०—करना ।

२ किसी धर्म के काम मे धन आदि देना । धर्मार्थ दान । ३ किसी के लिये चीज या धन सपत्ति आदि छोड देना (क्व०) ।

वक्फनामा—सज्ञा पु० [अ० वक्फ् + फा० नामह्] वह पत्र जिसके अनुसार किसी के नाम कोई चीज वक्फ की जाय । दानपत्र ।

वक्फा—सज्ञा पु० [अ० वक्फ़ा] १. अवकाश । अतर । छुट्टी । मोहलत ।

क्रि० प्र०—देना ।—मिलना ।

२. काम करने से विराम ।

क्रि० प्र०—मिलना ।

वक्र[1]—वि० [स०] १ टेढा । बाँका । ऋजु का उलटा । २ झुका हुआ । तिरछा । ३ कुटिल । दाँवपेच चलनेवाला । ४ बेईमान (को०) । ५ निर्दय । क्रूर (को०) ।

वक्र[2]—सज्ञा पु० १ नदी का मोड । बाँका । २ तगरपादुका । ३. शनैश्चर । ४ भौम । मगल । ५ रुद्र । ६ पर्पट । ७ वह ग्रह जिसमे तीस अश के अदर ही सूर्य हो । वक्री गह । ८ एक राक्षस का नाम । ९ त्रिपुरासुर । १० नासिका । नाक (को०) । ११ अस्थिभग का एक प्रकार (को०) ।

वक्रकट—सज्ञा पु० [स० वक्रकण्ट] बैर का वृक्ष । वक्रकटक ।

वक्रकटक—सज्ञा पु० [स० वक्रकण्टक] १. बैर का वृक्ष । २. खैर का पेड (को०) ।

वक्रकील—सज्ञा पु० [स०] अकुश [को०] ।

वक्रगति—सज्ञा पु० [स०] १ भौम । मगल । २ ग्रहलाघव के अनुसार वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें हो । इस प्रकार मगल ३६ दिन, बुध २१ दिन, बृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ दिन वक्री होता है ।

वक्रगल—सज्ञा पु० [स० वक्र + गला] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है ।

वक्रगामी—वि० [स० वक्रगामिन्] १ टेढी चाल चलनेवाला । २. शठ । कुटिल ।

वक्रगुल्फ—सज्ञा पु० [स०] ऊँट ।

वक्रग्रीव—सज्ञा पु० [स०] ऊँट । क्रमेलक [को०] ।

वक्रचचु—सज्ञा पु० [स० वक्रचञ्चु] तोता । शुक पक्षी ।

वक्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ टेढापन । २ पीछे की ओर मुडने की क्रिया । ३ विफलता । असफलता । चूक । ४ कुटिलता [को०] ।

वक्रताल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बजाया जाता है । वक्रनाल ।

वक्रताली—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वक्रताल' ।

वक्रतुड—सज्ञा पु० [स० वक्रतुण्ड] १. शुक पक्षी । तोता । २ गणेश ।

वक्रत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वक्रता' ।

वक्रदष्ट्र—सज्ञा पु० [स०] शूकर । सूअर ।

वक्रदृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ टेढी दृष्टि । २ क्रोध की दृष्टि । ३ मद दृष्टि ।

वक्रधर—सज्ञा पु० [हिं० वक्र + धर] द्वितीया का टेढा चंद्रमा धारण करनेवाले, शिव ।

वक्रधी[1]—वि० [स०] टेढ़ी बुद्धिवाला । धूर्त । बेईमान [को०] ।

वक्रधी[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] धूर्तता । बेईमानी । मक्कारी ।

वक्रनक्र—सज्ञा पु० [स०] १ पिशुन । चुगुलखोर । २ शुक पक्षी । तोता ।

वक्रनाल—सज्ञा पु० [स०] वक्रताल नाम का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है ।

वक्रनासिक[1]—सज्ञा पु० [स०] उल्लू ।

वक्रनासिक[2]—वि० टेढ़ी नाकवाला ।

वक्रपद—सज्ञा पु० [स०] विभिन्न प्रकार की नक्काशी से युक्त कपडा । छीट [को०] ।

वक्रपाद—वि० [स०] जिसका पैर टेढा हो ।

वक्रपुच्छ, वक्रपुच्छिक—सज्ञा पु० [स०] कुत्ता ।

वक्रपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ अगस्त का पेड । २ पलाश ।

वक्रबुद्धि—वि० [स०] दे० 'वक्रधी' [को०] ।

वक्रभाव—सज्ञा पु० [स०] १ टेढापन । २ धूर्तता [को०] ।

वक्रभुज—सज्ञा पु० [स०] गणेश [को०] ।

वक्रम—सज्ञा पु० [स०] भागना । अवक्रम । पलायन [को०] ।

वक्रमति—वि० [स०] दे० 'वक्रधी' [को०] ।

वक्रय[1]—सज्ञा पु० [स०] मूल्य । दाम ।

वक्रय[2]—सज्ञा पु० [स०] अवक्रम । भागना [को०] ।

वक्रवक्त्र—सज्ञा पु० [वि०] शूकर । सूअर [को०] ।

वक्रशल्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कडवा कद्दू या घीया । २ लाल फूल की विपलागली ।

वक्राग[1]—वि० [स० वक्राङ्ग] जिसका अग टेढा हो ।

वक्राग[2]—सज्ञा पु० १. हस । २. सर्प । साँप ।

वक्राख्य—सज्ञा पु० [स०] टीन [को०]।

वक्रि—वि० [स०] असत्यभाषी। झूठा [को०]।

वक्रित—वि० [स०] जो टेढा हो गया हो।

वक्रिम—वि० [स०] टेढा। कुटिल।

वक्रिमा—सज्ञा स्त्री० [स० वक्रिमन्] १ टेढापन। कुटिलता। २ कथन की भगी [को०]।

वक्री¹—वि० [स० वक्रिन्] १ अपने मार्ग को छोडकर पीछे लौटनेवाला।

विशेष—फलित ज्योतिष मे जो ग्रह अपनी राशि से एकबारगी दूसरी राशि मे चला जाता है, उसे अतिवक्री या महावक्री कहते हैं। यह वक्रता मगल आदि पाँच ग्रहो मे भी होती है। विशेष दे० 'वक्रगति'।

२ कुटिल। टेढा (को०)। ३ धूर्त। मक्कार। फरेबी (को०)।

वक्री²—सज्ञा पु० १ वक्र ग्रह। २ वह प्राणी जिसके अग जन्म से टेढे हो। २ बुद्धदेव या जैन जिन्होने टेढी युक्तियो से वैदिक मत का विरोध किया था।

वक्रोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का काव्यालकर जिसमे काकु या श्लेष से वाक्य का और का और अर्थ किया जाता है। २ काकूक्ति। ३ वह उक्ति जिसमे चमत्कार हो। बढिया उक्ति।

विशेष—किसी किसी आचार्य (जैसे 'वक्रोक्तिजीवितम्' के कर्ता) ने वाक्चातुर्य को ही काव्य की आत्मा कह दिया है, जिसका और आचार्यो ने खडन किया है।

वक्रोक्तिजीवित—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य शास्त्र का एक ग्रथ जिसमे वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा माना गया है। इसके रचयिता आचार्य 'कुतक' थे।

वक्रोष्ठि, वक्रोष्ठिका—सज्ञा स्त्री० [स०] ऐसी मद हँसी जिसमे दाँत न खुलें केवल ओठ कुछ टेढे हो जायँ। मुसकान। स्मित।

वक्वस—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का मद्य।

वक्ष-स्थल—सज्ञा पुं० [स०] उरस्थल। वक्ष।

वक्ष—सज्ञा पुं० [स० वक्षस्] १ पेट और गले के बीच मे पडनेवाला भाग जिसमे स्त्रियो के स्तन और पुरुषो के स्तन के से चिह्न होते हैं। छाती। उरस्थल। २. बैल। वृषभ। ३ शक्ति। बल। ताकत (को०)।

वक्षण—सज्ञा पु० [स०] १ छाती। सीना। २ शक्ति या स्फूर्तिदायक पदार्थ। ३ अग्नि। पावक [को०]।

वक्षणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पेट। उदर। २ नदी का पाट या चौडाई। ३ नदी [को०]।

वक्षथ—सज्ञा पु० [स०] १ उगना। बडा होना।

वक्षस्थल—सज्ञा पु० [स०] उर। छाती।

वक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्निशिखा।

वक्षु—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वक्षु'।

वक्षोग्रीव—सज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वक्षोज—सज्ञा पु० [स०] स्तन। कुच।

वक्षोरुह—सज्ञा पु० [स०] स्तन। कुच।

वक्षोमडली—सज्ञा पुं० [स० वक्षोमण्डलिन्] नृत्य में हाथो की एक मुद्रा या स्थिति [को०]।

वक्षोमणि—सज्ञा स्त्री० [स०] मणि या रत्न जो वक्ष पर धारण किया जाय [को०]।

वक्ष्यमाण—वि० [स०] १ वाच्य। वक्तव्य। २ जिसे कह रहे हो अथवा जो आगे या बाद मे कहा जानेवाला हो। जो कथन का प्रस्तुत विषय हो।

वखरुह¹—सज्ञा पु० [स०] १ मुह से निकला हुआ शब्द। बोल। वकार। २ अश। भाग। बखरा। उ०—वखरु मानु करे वा पारु। नानक पाए मुक्ति द्वार।—प्राण०, पृ० १०४।

वखाण¹—सज्ञा पु० [हि० बखान] दे० 'बखान'। उ०—मालव दस बखोडिया, मारू किया बखाण। मारू सोहागिणि वइ, नु दरि मगुण नुजाण। - टोला०, दू० ६७२।

वगपती—सज्ञा स्त्री० [स० बकपङ्क्ति] बगलो की पाँत। बकपक्ति। उ०—जामन चलत मेत सिर दती। स्याम घटा मानहु बगपती—हि० क० का०, पृ० २२३।

वगर¹—अव्य० [फा०] दे० 'अगर'। उ०—मेरे घर मे बोनो के क्या रग है। वगर नहीं तो तुप मूँ मेरा जग है।—दक्खिनी०, पृ० ३४८।

वगर⑤²—सज्ञा पुं० [स० प्रघण, प्रा० पघण] महल। निवास। दे० 'बगर'। उ०—जडित नीलमणि जानु वगर सुदर चामीकर। नगर परम रमनीय सुथर सुरलोकहु ते वर।—दीन० ग्र०, १४६।

वगरना—अव्य० [फा० बगरह्] अन्यथा। वर्ना। नही तो [को०]।

वगराना—क्रि० स० [स० विकीर्णन] फैलाना। दे० 'बगराना'। उ०—कुसुम समूह रहत सुदर सुगध वगराई।—प्रेमघन०, पृ० १६।

वगलबदी—सज्ञा स्त्री० [फा० बगलबदी] मिरजई। उ०—अत. वगलबदी आई, पर वह भी न भई।—प्रेमघन० भा० २, पृ० २१६।

वगला—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'बगलामुखी'।

वगलामुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] दस महाविद्याओ मे से एक जिसकी पूजा का महत्व तत्रो मे वर्णित है।

वगा—सज्ञा स्त्री० [अ० वगा] युद्ध। लडाई [को०]।

वगाह—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'अवगाह' [को०]।

वगैरह—अव्य० [अ० वगरह] एक अव्यय जिसका अर्थ यह होता है कि 'इसी प्रकार और भी समझिए'। इत्यादि। आदि। जैसे,—बैल, ऊँट, हाथी, वगैरह बहुत से जानवर वहाँ आए थे।

विशेष—इसका प्रयोग वस्तुओ को गिनाने मे उनके नामो के अत मे सक्षेप या लाघव के लिये होता है।

वग्ग¹—सज्ञा पु० [स० वर्ग, प्रा० वग्ग (=बाडा)] १ दे० 'वर्ग'। समूह। शाला। (लाक्ष०)। उ०—ढोलह चित्त विमासियउ, मारू देश अलग्ग। आपण जाए जोइयउ, करहा हदउ वग्ग। —ढोला०, दू० ३०७।

वग्ग(पु)[2]—सज्ञा पु० [अ० बाग] बगीचा। बाग। उ०—फुले सुगध के वरन फूल। देखत वग्ग पावस्स भूल।—पृ० रा०, १४।६८।

वग्ग[3]—सज्ञा स्त्री० [स० वल्गा, प्रा० वग्ग] लगाम। उ०—फेरे वग्ग तुरग री, तोले खग्ग करग्ग। —रा० रू०, पृ० ३२।

वग्गना(पु)—क्रि० अ० [स०√वल्ग्, प्रा० वग्ग (=दहाडना) + हिं० ना (प्रत्य०)] तीव्र ध्वनि करना। गरजना। बजना। उ०—बजे त्रव जंगी गढे नाल वग्गी। लजावत जगी दूहूँ दीठ लग्गी।—रा० रू०, पृ० १८६।

वग्गु[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वक्ता। वाचक। २ शब्द। आवाज। ध्वनि। ३ (किसी पशु की) चिल्लाहट [को०]।

वग्गु[2]—वि० बकवादी [को०]।

वग्घनु—सज्ञा पु० [स०] ध्वनि [को०]।

वचडी—सज्ञा स्त्री० [स० वचण्डी] १ सारिका। मैना। २ दीप की बत्ती। बत्ती। ३ एक शस्त्र का नाम।

विशेष—मेदिनी कोश मे इस शब्द का पाठ 'वचडा' और 'वरडा' है।

वचदा—सज्ञा स्त्री० [स० वचन्दा] दे० 'वचडी' [को०]।

वच[1]—सज्ञा पु० [स०] १ तोता। शुक पक्षी। २ वजह। कारण। हेतु। ३ सूर्य।

यौ०—वचार्च=सूर्यपूजक।

वच[2]—सज्ञा पु० [वचस्, वचन] १ वचन। वाक्य। २. आज्ञा। आदेश (को०)। ३ सलाह। मत्रणा। परामर्श (को०)। ४ चिडियो की चहचह ध्वनि (को०)। ५ स्तुति। स्तवन (को०)। ६. (व्याकरण मे) शब्द के रूप मे वह विधान जिससे एकत्व आदि का बोध होता है। दे० 'वचन'-३।

वचक्नु[1]—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण [को०]।

वचक्नु[2]—वि० बकवादी। वग्नु। बहुत बोलने या बडबडानेवाला [को०]।

वचन—सज्ञा पु० [स०] १. मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य।

पर्या०—इरा। सरस्वती। ब्राह्मी। भाषा। गिरा। गोर्देवी। भारती। वरजा। वर्णमातृका। व्याहार। लपित।

२ कही हुई बात। कथन। उक्ति।

यौ०—वचनबद्ध। वचनगुप्ति।

३ व्याकरण मे शब्द के रूप मे वह विधान जिससे एकत्व या बहुत्व का बोध होता है।

विशेष—हिंदी मे दो ही वचन होते है—एकवचन और बहुवचन। पर कुछ और प्राचीन भाषाओ के समान सस्कृत मे एक तीसरा वचन द्विवचन भी होता है।

४. बोलना। बोलने की क्रिया। उच्चारण। वाचन (को०)। ५ शास्त्रो का उधृत अश। जैसे शास्त्रवचन, श्रुतिवचन (को०)। ६. आदेश (को०)। ७ मत्रणा। परामर्श (को०)। ८ घोषणा। प्रख्यापन (को०)। ९. शब्द का अर्थ या भाव (को०)। १०. सोठ शुंठी (को०)।

वचनकर—वि० [स०] १. दे० 'वचनकारी'। २. किसी नियम या आदेश का लेखक या उद्घोषक।

वचनकारी—वि० [स० वचनकारिन्] आज्ञाकारी।

वचनक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] आज्ञापालन [को०]।

वचनगुप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] जैन धर्म के अनुसार वाणी का ऐसा सयम जिससे वह अशुभ वृत्ति मे प्रवृत्त न हो।

वचनगोचर—वि० [स०] जो वाणी द्वारा व्यक्त हो। कथन द्वारा व्यक्त [को०]।

वचनगौरव—सज्ञा पु० [स०] आज्ञा की गुरुता। आदेश के प्रति आदर भाव [को०]।

वचनग्राही—वि० [स० वचनग्राहिन्] आज्ञा का पालन करनेवाला [को०]

वचनपटु—वि० [स०] बातचीत करने मे कुशल [को०]।

वचनबद्ध—वि० [स०] प्रतिज्ञाबद्ध। प्रतिश्रुत [को०]।

वचनरचना—सज्ञा स्त्री० [स०] कथन, लेखन, भाषण की प्रभावशाली शब्दावली [को०]।

वचनलक्षिता—सज्ञा स्त्री० [स०] वह परकीया नायिका जिसकी बातचीत से उसका उपपति से प्रेम लक्षित या प्रकट होता है। जैसे,—अगन की छवि भूषन की रघुनाथ सराहि सबै सिहराते। आपनी प्रीति, मया उनकी प्रगटी प्रगटे सुख के हियरातें। काहे के आजु छिपावति हौ हमसो करि ये चतुराई की घातें। मै निज कान सुनी जो कही यह काल्हि सखी सो गोपाल की बातें।—रघुनाथ (शब्द०)।

वचनविदग्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] नायिकाओ का एक भेद। वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती हो। जसे,—जब लौं घर को धनी आवै घरै तब लौ तो कहुँ चत दैबो करो। पदमाकर ये बछरा अपने बछरान के सग चरैबो करो। अरु औरन के घर तें हम सो तुम दूनी दुहावन लैबो करो। नित साँझ सकारे हमारी हहा। हरि गैयन को दुहि जैबो करो।—पद्माकर (शब्द०)।

वचनव्यक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी उक्ति का ठीक ठीक आशय। २ भाष्य। विवृति। निर्वचन। व्याख्या [को०]।

वचनसहाय[1]—वि० [स०] सहायता का वचन देनेवाला [को०]।

वचनसहाय[2]—सज्ञा पु० १. कथन द्वारा की गई सहायता। २ मित्र [को०]।

वचनस्थित—वि० [स०] बात पर दृढ रहनेवाला [को०]।

वचनावक्षेप—सज्ञा पु० [स०] अवक्षेप से भरे वचन का कथन [को०]।

वचनीय—वि० [स०] १ कथनीय। २ निंदनीय (को०)।

वचनीय[2]—सज्ञा पु० [स०] निंदा। शिकायत।

वचनोपक्रम—सज्ञा पु० [स०] वाक्य का आरभ [को०]।

वचर—सज्ञा पु० [स०] १ कुक्कुट। २ शठ।

वचलु—सज्ञा पु० [स०] १ दुश्मन। शत्रु। २. दुष्ट व्यक्ति [को०]।

वचस[1]—वि० [स०] १ कुशल। चतुर। २. वाचाल [को०]।

वचसांपति—सज्ञा पु० [स० वचसाम्पति] बृहस्पति [को०]।

वचसा—अव्य० [सं०] वचन द्वारा । कथन द्वारा [को०] ।

वचस्कर—वि० [स०] १ आज्ञाकारी । २ बोलनेवाला [को०] ।

वचस्वी—वि० [स० वचस्विन्] बोलने मे पटु । प्रवक्ता ।

वचा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वच नाम की ओषधि । विशेष दे० 'वच' । २ सारिका पक्षी । मैना ।

वचार—सज्ञा पु० [?] दे० 'विचार' । उ०—बाँहे सुदरि बहरखा, चासू चुडस वचार । मनुहरि कटि थल मेखला, पग झाँझर झणकार ।—ढोला०, दू० ४८१ ।

वचोग्रह—सज्ञा पु० [स०] कर्ण । कान [को०] ।

वचोहर—सज्ञा पु० [स०] दूत । सदेशवाहक [को०] ।

वच्छ(पु)[1]—सज्ञा पु० [स० वक्ष्, प्रा० वच्छ] उर । छाती ।

वच्छ[2]—सज्ञा पु० [स० वत्स, प्रा० वच्छ] दे० 'वत्स' ।

वजग—सज्ञा पु० [अ० वजग] दे० 'वजगा' [को०] ।

वजगा—सज्ञा पु० [अ० वज्गह्] १ मडूक । मेढक । २ गृहगोधा । छिपकिली । ३ गिरगिट । कृकलास [को०] ।

वजन—सज्ञा पु० [अ० वजन] १ भार । बोझ । २ तौल । ३ तौलने की क्रिया । ४ मान । मर्यादा । गौरव ।

क्रि० प्र०—करना ।—रखना ।

यौ०—**वजनदार** = दे० 'वजनी' ।

वजनी—वि० [अ० वज्न + ई] १ जिसका बहुत बोझ हो । भारी । २ जिसका कुछ असर हो । मानने योग्य ।

वजर(पु)†[1]—सज्ञा, पु० [स० वज्र] दे० 'वज्र' । उ०—एक अनेकाँ सूँ हिचै, छाती वजर कपाट ।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ५ ।

यौ०—**वजरकपाट** = वज्र के समान दरवाजा ।

वजर[2]—सज्ञा पु० [अ०] भय । डर । खौफ [को०] ।

वजह—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कारण । हेतु । २ प्रकृति । ३ तत्व । ४ मुखाकृति । चेहरा (को०) ।

वजा—सज्ञा स्त्री० [अ० वजअ] १ सघटन । बनावट । रचना । २ चालढाल । सजधज । ३ रूप । आकृति । ४ दशा । अवस्था । ५ रीति । प्रणाली । तौर तरीका । उ०—हुनकी रहन सहन वजा अदाज और कार्यो मे.. ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७७ । ६ मुजरा । मिनहा । कटती । ७ जनना । प्रसव (को०) ८ रखना (को०) । ९ सदैव एक समान रहना और यथायोग्य व्यवहार करना । (को०) ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

वजादार—वि० [अ० वजा + फा० दार] १ जिसकी बनावट या गठन आदि बहुत अच्छी हो । तरहदार । दर्शनीय । २ अपनी रीतिनीति पर कायम रहनेवाला । जो अपनी वजा का पाबद हो (को०) ।

वजादारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वजा + फ़ा० दारी] १ कपडे वगैरह पहनने का सुदर ढग । फैशन । २ सजावट का उत्तम ढग । ३ किसी प्रकार की मर्यादा आदि का भली भाँति निर्वाह । ३ उ०—प्राय स्त्रियो के नाज व अदाज के कारण नजाकत वजादारी से रहित न हो प्रचलित थी ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ५ ।

वजारत सज्ञा स्त्री० [अ० वजारत] १ मत्री, वजीर या अमात्य का पद । वजीरी । २ मत्री या अमात्य का कार्य । ३, अमात्य का कार्यालय ।

वजाहत[1]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सुदरता । भव्यता । चेहरे का रोब । उ०—कहते है जो था कोई सौदागर एक । वजाहत मन पाक सीरत मे नेक ।—दक्खिनी०, पृ० ७ । २ प्रतिष्ठा । महत्व । बडप्पन ।

वजाहत[2]—सज्ञा स्त्री० [अ० वज़ाहत] १, स्पष्टता । विवरण । २ विस्तार । फैलाव [को०] ।

वजीफा—सज्ञा पु० [अ० वज़ीफ़ह्] १ वृत्ति । उ०—याद करना हर घडी तुझ यार का । है वजीफा मुझ दिले बीमार का ।—कविता को०, भा० ४, पृ० ६ । २ वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानो, छात्रो, सन्यासियो, दीनो या बिगडे हुए रईसो आदि को दी जाती है । ३ निवृत्त वेतन । पेनशन (को०) । ४ वह जप या पाठ जो नियमपूर्वक प्रतिदिन किया जाता है । (मुसलमान) । उ०—प्रात काल नमाज वजीफा पढिकै चट पट ।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० २० ।

क्रि० प्र०—पढना ।

वजीफादार—वि० [अ० वजीफ़ह् + फा० दार] वजीफा पानेवाला ।

वजीर—सज्ञा पु० [अ० वज़ीर] १, वह जो बादशाह का रियासत के प्रबध मे सलाह या सहायता दे । मत्री । अमात्य । दीवान । २ शतरज की एक गोटी ।

विशेष—यह बादशाह से छोटी और शेष सब मोहरो से बडी होती है । यह गोटी आगे, पीछे, दाहिने, बाएँ और तिरछे जिधर चाहे, उधर और जितने घर चाहे, उतने घर चल सकती है ।

यौ०—वजीरे आजम = प्रधान मत्री । वजीरे इसाफ = न्यायमत्री । वजीरे खारिजा = परराष्ट्रमत्री । वजीरे गिजा = खाद्यमत्री । वजीरे जग = युद्धमत्री । वजीरे तालीम = शिक्षामत्री । वजीरे दाखिला = गृहमत्री । वजीरे माल = अर्थमत्री ।

वजीरा[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० वज़ीरी] वजीर का काम या पद ।

वजीरी[2]—सज्ञा पुं० १ सरहदी पठानो का एक वर्ग या कबीला । २ घोडो की एक जाति जो बलूचिस्तान मे पाई जाती है ।

विशेष—इस जाति के घोडे बडे परिश्रमी और दौडने मे बहुत तेज होते है । इनके कधे ऊँचे और पुट्ठे चौडे होते हैं ।

वजीह—वि० [अ०] दृढ । मजबूत [को०] ।

वजीहा—वि० [अ० वजीहह्] १ सुदर । भव्य । रोबदार । २ सामान्य । विशिष्ट [को०] ।

वजू—सज्ञा पुं० [अ० वुजू] नमाज पढने के पूर्व शौच के लिये हाथ पाँव आदि धोना । उ०—का भो वजू व मज्जन कीन्हे का मसजिद सिर नाएँ । हृदया कपट निमाज गुजारै का भो मक्का जाएँ । कबीर (शब्द०) ।

विशेष—मुसलमानो का नियम है कि नमाज पढने के पूर्व वे पहले तीन वार हाथ धोते, फिर तीन वार कुल्ली करके नयनो मे पानी देते ह। फिर मुँह धोकर कुहनियो तक हाथ धोते है, और सिर पर पानी लगे हाथ फेरते है। अत मे पाँव धोते हैं। इसी आचार का नाम वजू है।

क्रि० प्र०—करना।

वजूद—सज्ञा पुं० [अ०] १ सत्ता। स्थिति। अस्तित्व। उ०—नाही खवर वजूद की मै फकीर दिवाना।—मलूक० वानी, पृ० ७। २ शरीर। देह। उ०—वजूद खजाना अलह का, जर अदर अरि वाहि। रज्जब पीर खजानची, दसत न सकई वाहि। —रज्जब०, पृ० १८। ३ सृष्टि। ४ प्रकट या घटित होना। अभिव्यक्ति।

मुहा०—वजूद पकडना = प्रकट होना। अस्तित्व मे आना। वजूद मे आना = उत्पन्न होना। प्रकट होना। वजूद मे लाना = उत्पन्न करना।

वजूहात—सज्ञा स्त्री० [अ० वजूह का वहु० रूप] कारणो का समूह।

विशेष—यह वहुवचन शब्द है, और इसका प्रयोग भी सदा वहुवचन मे ही होता है।

वजेकता—सज्ञा पु० [अ० वजए+कत्अ्] वनावट। तर्ज। ढग। उ०—और फकीराना मकान होने की शहादत अपनी वजेकता और तर्ज तामीर से व जवाने हाल खुद ही दे रहा है।—सुदर० ग्र० (जी०), भा० १, पृ० ५३।

वजेदारी—सज्ञा स्त्री० [फा० वज्अदारी] दे० 'वजादारी'। उ०—पडित पुरुपोत्तमदास ने वडी वजेदारी से कहा।—श्रीनिवास ग्रं०, पृ० १७०।

वजोग†—सज्ञा पु० [स० वियोग] दे० 'वियोग'। उ०—किसन वजोग चारणाँ कारण गलियो जुजठल राव गत।—वाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ११२।

वज्जित्तⒼ—सज्ञा, पु० [स० वादित्र] वादित्र। वाजा। उ०—वज्जित्त नृघोप अरि घोप पर, छोरि पग दिप्पे सु हय।—पृ० रा०, २६।१४।

वज्द—सज्ञा पु० [अ०] १ आनदातिरेक मे होनेवाली आत्मविस्मृति। २. काव्य या सगीत की रसानुभूतिजन्य तन्मयता। ३ आनद की स्थिति मे आपा भूला हुआ व्यक्ति [को०]।

वज्र[१]—सज्ञा पु० [स०] १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है।

विशेष—इसकी उत्पत्ति की कथा ब्राह्मण ग्रथो और पुराणो मे लिखी हुई है। ऋग्वेद मे उल्लेख है कि दधीचि ऋषि की हड्डी से इद्र ने राक्षसो का ध्वस किया। ऐतरेय ब्राह्मण मे इसका इस प्रकार विवरण है। दधीचि जब तक जीते थे, तब तक असुर उन्हे देखकर भाग जाते थे पर जब वे मर गए, तब असुरो ने उत्पात मचाना आरभ किया। इद्र दधीचि ऋषि की खोज मे पुष्कर गए। वहाँ पता चला कि दधीचि का देहावसान हो गया। इसपर इद्र उनकी हड्डी ढूँढने लगे। पुष्कर क्षेत्र मे सिर की हड्डी मिली। उसी का वज्र वनाकर इद्र ने असुरो का सहार किया। भागवत मे लिखा है कि इद्र ने वृत्रासुर का वध करने के लिये दधीचि की हड्डी से वज्र वनवाया था। मत्स्य-पुराण के अनुसार जब विश्वकर्मा ने सूर्य को भ्रमयत्र (खराद) पर चढाकर खरादा था, तब छिलकर जो तेज निकला था, उसी से विष्णु का चक्र, रुद्र का शूल और इद्र का वज्र बना था। वामनपुराण मे लिखा है कि इद्र जब दिति के गर्भ मे घुस गए थे, तब वहाँ उन्हे वालक के पास ही एक मासपिड मिला था। इद्र ने जब उसे हाथ मे लेकर दवाया, तब वह लवा हो गया और उसमे सौ गाँठें दिखाई पडी। वही पीछे कठिन होकर वज्र बन गया। इसी प्रकार और और पुराणो मे भी भिन्न भिन्न कथाएँ है।

पर्या०—ह्लादिनी। कुलिश। भिदुर। पवि। शतकोटि। स्वरु। शव। दभोलि। अशनि। स्वरुम्। जभारि। शतार। शतधार। आपोन्न। अद्रिज। गिरिकटक। गो। अश्नात्य। दभ, इत्यादि। वैदिक निघटु के अनुसार—विद्युत्। नेमि। हेति। नम। पवि। सृक्। वृक। वच। अर्क। कुत्स। कुलिश। तुज। तिग्म। मेनि। स्वधिति। सायक परशु।

२ विद्युत्। बिजली।

क्रि० प्र०—गिरना।—पडना।

मुहा०—वज्र पडे = दैव से भारी दड मिले। सत्यनाश हो। (स्त्रियाँ)।

३ हीरा। उ०—मुझे वडी दयापूर्वक एक अमोल वज्र की अँगूठी केवल स्मरणार्थ दे गए थे।—श्यामा०, पृ० १२७। ४ एक प्रकार का लोहा। फौलाद।

विशेष—वैद्यक के ग्रथो मे वज्रलौह के अनेक भेद कहे गए है। यथा—नीलपिड, अरुणाभ, मोरक, नागकेसर, तित्तिराग, स्वर्णवज्र, शैवालवज्र, शेणवज्र, रोहिणी, काकोल, ग्रथिवज्रक, और मदन।

५ भाला। वरछा। उ०—हरन रुकिमनी होत है, दुहूँ ओर भई भीर। अति अघात, कछु नाहिन सूझत, वज्र, चलहि ज्यो नीर। सूर० (शब्द०)। ६ ज्योतिष मे २२ व्यतीपात योगो मे से एक। ७ वास्तुविद्या के अनुसार वह स्तंभ (खभा) जिसका मध्य भाग अष्टकोण हो। ८ विष्णु के चरण का एक चिह्न। ९ अभ्रक। १० कोकिलाक्ष वृक्ष। ११ श्वेत कुश। १२ काँजी। १३ वज्रपुष्प। १४ धात्री। १५. थूहर का पेड। सेहुँड। १६ कृष्ण के एक प्रपौत्र जो अनिरुद्ध के पुत्र थे। १७ विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। १८ वौद्ध मत मे चक्राकार चिह्न। १९ वालक। शिशु (को०)। २०. आसन की एक मुद्रा या स्थिति। वैठने का एक प्रकार (को०)। २१ एक प्रकार का सैनिक व्यूह (को०)। २२ रत्न, मणि आदि छेदने का एक औजार (को०)। २३ वज्रवत् कठोर एव घातक अस्त्र (को०)। २४. कठोर भाषा। वज्र की तरह कठोर भाषा (को०)। २५. अकलवीर नाम का पौधा।

वज्र[२]—वि० १. वज्र के समान कठिन। वहुत कडा या मजवूत। अत्यत

दृढ और पुष्ट। जैसे,—यह मसाला जब सूखेगा, तब वज्र हो जायगा। २ घोर। दारुण। भीषण। उ०—वज्र अगिनि विरहिनि हिय जारा। सुलगि सुलगि दहि कै भइ छारा।—जायसी (शब्द०)। ३ जिसमे अनी या शल्य हो। अनीदार। काँटेदार।

वज्रककट—सज्ञा पु० [स० वज्रककट] हनुमान का एक नाम।

वज्रकटक—सज्ञा पु० [स० वज्रकण्टक] स्नुही वृक्ष। थूहर। सेंहुड। २ कोकिलाक्ष वृक्ष।

वज्रकटशाल्मली—सज्ञा पु० [स० वज्रकण्टशाल्मली] भागवत पुराण के अनुसार अट्ठाईस नरको मे से एक नरक का नाम।

वज्रकद—सज्ञा पु० [स० वज्रकन्द] १. जगली सूरन या जिमीकद। २ शकरकद। कदा। ३. ताल के वृक्ष का फूल।

वज्रक—सज्ञा पु० [स०] १. वज्रक्षार। २. फलित ज्योतिष के अनुसार सूर्य के आठ उपग्रहो मे से एक, जो सूर्य से तेईसवा नक्षत्र होता है। ३ एक प्रकार का तेल (को०)। ४ हीरा (को०)।

वज्रकपाली—सज्ञा पु० [स० वज्रकपालिन्] बौद्धो की महायान शाखा के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

वज्रकर्ण—सज्ञा पु० [स०] द० 'वज्रकद' (को०)।

वज्रकपण—सज्ञा पु० [स०] इद्र (को०)।

वज्रकवच—सज्ञा पुं० [स०] १ समाधि का एक भेद। एक प्रकार का समाधि। २ वह कवच जिस काटा न जा सके। वज्र के समान दुर्भेद्य कवच (को०)।

वज्रकारक—सज्ञा स० [स०] नख नामक सुगधित द्रव्य।

वज्रकालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बुद्ध की माता मायादेवी का नाम।

वज्रकाली—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनो की एक शक्ति (को०)।

वज्रकीट—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का कीडा जो पत्थर या काठ को काटकर उसमे छेद कर देता है।

विशेष—कहते हैं, गडक नदी मे इन कीटो के द्वारा काटी हुई शिला ही शालग्राम की बटिया बन जाती है।

वज्रकील—सज्ञा पु० [स०] सौदामिनी। तडित्। बिजली (को०)।

वज्रकुक्ष—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की समाधि।

वज्रकूट—सज्ञा पु० [स०] १ एक पर्वत का नाम। २ हिमालय की चोटी पर का एक प्राचीन नगर।

वज्रकेतु—सज्ञा पु० [स०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक राक्षस जो नरक का राजा था। नरकासुर।

वज्रक्षार—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे एक रसायन योग जिसका व्यवहार गुल्म, शूल, अजीर्ण, शोथ तथा मदाग्नि आदि उदर रोगो मे होता है।

विशेष—साँभर, सैधव, काच और सौवर्चल लवण तथा जवाखार और सज्जी सम भाग लेकर चूर्ण करते हैं, और उसको थूहर के दूध मे भिगोकर तीन दिन तक छाया मे सुखाते हैं। इसके उपरात उस चूर्ण का आक (मदार) के पत्तो मे लपेटकर एक घडे मे गजपुट द्वार फूँकते हैं। जब वह भस्म हो जाता है, तब उसमे सोठ, मिर्च पीपल, त्रिफला, अजवायन, जीरा और चित्रक (चीता) का चूर्ण उतना ही मिलाकर खरल कर लेते है और दो टक मात्रा मे सेवन कराते है। इसका अनुपान उष्ण जल, गोमूत्र, घी या काँजी है।

वज्रगर्भ—सज्ञा पु० [स०] बौद्धो की महायान शाखा के अनुसार एक बोधिसत्व का नाम।

वज्रगोप—सज्ञा पु०] स०] बीरबहूटी नाम का कीडा। इद्रगोप।

वज्रघात—सज्ञा पु० [स०] १ वज्र की चोट। २ वह चोट जो वज्र की चोट के समान भयकर हो (को०)।

वज्रघोष—सज्ञा पु० [स०] १ बिजली की कडक। २ बिजली की कडक के समान भीषण ध्वनि (को०)।

वज्रचचु—सज्ञा पु० [स० वज्रचञ्चु] गृद्ध (को०)।

वज्रचर्मा—सज्ञा पु० [स० वज्रचर्मन्] गैडा।

वज्रजित्—सज्ञा पुं० [स०] गरुड का एक नाम (को०)।

वज्रज्वाला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरोचन दैत्य की पौत्री का नाम। २ कुभकर्ण की पत्नी। ३ बिजली की अग्नि (को०)।

वज्रटीक—सज्ञा पुं० [स०] वज्रकपाली बुद्ध का एक नाम (को०)।

वज्रडाकिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] महायान शाखा के तात्रिक बौद्धो की उपास्य डाकिनियो का एक वर्ग।

विशेष—इस वर्ग के अतर्गत ये आठ डाकिनियाँ मानी जाती हैं,—लास्या, माला, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीपा और गधा। इनकी पूजा तिब्बत मे होती है।

वज्रतर—सज्ञा पुं० [स०] १ वृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार का जोडने या पलस्तर करने का मसाला। वज्रलेप (को०)।

वज्रतुड—सज्ञा पु० [स० वज्रतुण्ड] १ गरुड। २ गणेश। ३ गीध। ४ मशक। मच्छड। ५ थूहर। सेहुँड।

वज्रतुल्य—सज्ञा पुं० [स०] नीलम (को०)।

वज्रदड—सज्ञा पुं० [स० वज्रदण्ड] एक अस्त्र का नाम जिसे इद्र ने अर्जुन को प्रदान किया था।

वज्रदत—सज्ञा पु० [सं० वज्रदन्त] १ चूहा। २ सूअर।

वज्रदती—सज्ञा स्त्री० [स० वज्रदन्ती] एक पकार का पेड या पौधा।

विशेष—इसकी दतुवन अच्छी होती है और वैद्यक मे इसकी जड वमनकारक कही गई है।

वज्रदष्ट्र—देश० पु० [स०] १ इद्रगोप नाम का कीडा। बीरबहूटी। २ भागवत के अनुसार एक असुर का नाम।

वज्रदक्षिण—सज्ञा पुं० [स०] इद्र का एक नाम (को०)।

वज्रदशन—सज्ञा पुं० [स०] चूहा (को०)।

वज्रदेह—वि० [स०] वज्र के समान कठोर शरीरवाला (को०)।

वज्रदेहा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

वज्रद्रुम—सज्ञा पु० [स०] थूहर का वृक्ष। स्नुही। सेहुड़।

वज्रधर—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र । २ बौद्धों की महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध ।

विशेष—तिब्बत के तांत्रिक बौद्ध मतानुसार ये प्रधान बुद्ध, प्रधान जिन, गुह्यपति तथा सब तथागतों के प्रधान मंत्री आदि अनंत और वज्रसत्व हैं । अपदेवताओं ने उनसे हार मानकर प्रतिज्ञा की थी कि बौद्ध धर्म के विरुद्ध कभी प्रयत्न न करेंगे ।

३ उल्लू । उलूक ।

वज्रधात्वीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक देवी जिसकी उपासना तांत्रिक करते हैं । २ वैरोचन की पत्नी [को०] ।

वज्रधार—वि० [सं०] जिसका धार हीरे की तरह कठिन होता है [को०] ।

वज्रधारण—संज्ञा पु० [सं०] नकली सोना । कृत्रिम सोना [को०] ।

वज्रनख—संज्ञा पु० [सं०] नृसिंह ।

वज्रनाभ—संज्ञा पु० [सं०] १ स्कंद के एक अनुचर का नाम । २. एक दानवराज । ३. राजा उक्थ के पुत्र का नाम । ४ विष्णु के चक्र का नाम को (को०) ।

वज्रनिर्घोष—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वज्रघोष' ।

वज्रपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हीरे की परख [को०] ।

वज्रपाणि—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र । २ ब्राह्मण । ३ बौद्धशास्त्रानुसार एक प्रकार की देवयोनि । ४. एक बोधिसत्व । ध्यानी बोधिसत्व । ५ उलूक । उल्लू (को०) ।

वज्रपात—संज्ञा पु० [सं०] १ बिजली का गिरना । २ भारी विपत्ति का आना [को०] ।

वज्रपुष्प—संज्ञा पु० [सं०] १ तिल का फूल । २ एक विशिष्ट गुणवान कीमती पुष्प [को०] ।

वज्रपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शतपुष्पा [को०] ।

वज्रप्रभ—संज्ञा पु० [सं०] एक विद्याधर का नाम ।

वज्रबाहु—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र । २. रुद्र । ३ अग्नि ।

वज्रबीजक—संज्ञा पु० [सं०] लता [को०] ।

वज्रभृकुटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार तंत्र की एक देवी जिसकी उपासना तांत्रिक करते हैं [को०] ।

वज्रभृत्—संज्ञा पु० [सं०] इंद्र [को०] ।

वज्रभैरव—संज्ञा पु० [सं०] महायान शाखा के बौद्धों के एक देवता, जिन्हें भूटान में 'यमांतक शिव' कहते हैं । इनके अनेक मुख और हाथ माने जाते हैं ।

वज्रमणि—संज्ञा पु० [सं०] हीरा ।

वज्रमय—वि० [सं०] १ कठोर । कठिन । २ क्रूर हृदय । कठिन हृदयवाला [को०] ।

वज्रमति—संज्ञा पु० [सं०] एक बोधिसत्व [को०] ।

वज्रमुख—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का कीडा । वज्रकीट । २ एक प्रकार की समाधि [को०] ।

वज्रमुष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] १. इंद्र । २. एक राक्षस का नाम । ३ जंगली सूरन । ४. वीर । क्षत्रिय । योद्धा (को०) । ५. एक अस्त्र (को०) । ६ वज्र के समान हाथ की बँधी हुई मुट्ठी (को०) । ७ तीर चलाने के समय हाथ की मुद्रा (को०) ।

वज्रमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] माषपर्णी ।

वज्रयान—संज्ञा पु० [सं०, प्रा० वज्जजाण] वह बौद्ध मत जिसपर तंत्र का बहुत अधिक प्रभाव था । उ०—उस काल की रचना के नमूने बौद्धों की वज्रयान शाखा के सिद्धों की कृतियों के बीच मिले हैं ।—इतिहास, पृ० ६ ।

वज्रयोगिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्रानुसार एक देवी । इसे वरदयोगिनी भी कहते हैं ।

वज्ररथ—संज्ञा पु० [सं०] क्षत्रिय ।

वज्ररद—संज्ञा पु० [सं०] सूकर [को०] ।

वज्रलिपि—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिखने की एक विशेष रीति [को०] ।

वज्रलेप—संज्ञा पु० [सं०] एक मसाला या पलस्तर जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि अत्यंत दृढ और मजबूत हो जाती है ।

विशेष—यह दो तरह से बनता है । एक में तो तेंदू और कैथ के कच्चे फल, सेमल के फूल, शल्लकी (मलई) के बीज, धन्वन की छाल और बच को लेकर एक द्रोण पानी में उबालते हैं । जब जलकर आठवाँ भाग रह जाता है, तब उसे उतारकर उसमें गंधाबिरोजा, बोल, गूगल, भिलावाँ, कुंदुरु, गोंद, राल, अलसी और बेल का गूदा घोटकर मिलाते हैं । दूसरा मसाला इस प्रकार है—लाख, कुंदुरु, गोंद, बेल का गूदा, गँगेरन का फल, तेंदू का फल, महुए का फल, मजीठ, राल, बोल और आँवला इन सबको द्रोण भर पानी में उबालते हैं । जब अष्टमांश रह जाता है, तब काम में लाते हैं ।

वज्रलोहक—संज्ञा पु० [सं०] चुंबक [को०] ।

वज्रवध—संज्ञा पु० [सं०] १ अशनिपात जन्य मृत्यु । वज्रपात से हुई मौत । २ वज्र के समान कठोर आघात [को०] ।

वज्रवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] अस्थिसंहार नाम की लता [को०] ।

वज्रवारक—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार जैमिनि, सुमंत, वैशंपायन, पुलस्त्य, और पुलह नामक पाँच ऋषि, जिनका नाम लेने से वज्रपात का भय नहीं रहता ।

वज्रवाराही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बौद्धों की एक देवी का नाम ।

पर्या०—मारीची । त्रिमुखा । वज्रकालिका । विकटा । गौरी ।

२ बुद्ध की माता मायादेवी का नाम ।

वज्रविष्कंभ—संज्ञा पु० [सं० वज्रविष्कम्भ] गरुड के एक पुत्र का नाम ।

वज्रवीर—संज्ञा पु० [सं०] महाकाल रुद्र का एक नाम ।

वज्रवृक्ष—संज्ञा पु० [सं०] मेहुँड [को०] ।

वज्रवेग—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक राक्षस का नाम । २ एक विद्याधर का नाम ।

वज्रव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की सेना की रचना, जो दुधारे खड्ग के आकार में स्थित की जाती थी ।

वज्रशल्य—संज्ञा पु० [सं०] साही नाम का वन्य जंतु । शल्यक [को०] ।

वज्रशाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैन मत के एक संप्रदाय का नाम जिसे वज्रस्वामी ने चलाया था।

वज्रशृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्रशृङ्खला] जैन मतानुसार सोलह महाविद्याओं में से एक।

वज्रसंघात—संज्ञा पुं० [सं० वज्रसङ्घात] १ भीमसेन। २ पत्थर जोड़ने का एक मसाला जिसमें आठ भाग सीसा, दो भाग काँसा और एक भाग पीतल होता था। इससे पत्थर की जोड़ाई की जाती थी।

वज्रसंहत—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

वज्रसत्व—संज्ञा पुं० [सं०] एक ध्यानी बुद्ध का नाम।

वज्रसमाधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध धर्म के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

वज्रसार[१]—संज्ञा पुं० [सं०] हीरा।

वज्रसार[२]—वि० अत्यंत कठोर [को०]।

वज्रसूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह सुई जिसकी नोक पर हीरा लगा हो। २ एक उपनिषद्। ३ अश्वघोषप्रणीत एक ग्रंथ [को०]।

वज्रसंभव—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

वज्रसेन—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम [को०]।

वज्रहस्त—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र। २ अग्नि (को०)। ३ मरुत (को०)। ४ शिव (को०)।

वज्रहृदय—वि० [सं०] कठोर। क्रूर।

वज्राक—वि० [सं० वज्राङ्क] हीरा जड़ा हुआ [को०]।

वज्राग—संज्ञा पुं० [सं० वज्राङ्ग] १ सर्प। साँप। २. हनुमान। उ०—जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव। वज्राग तेज घन बना पवन को।—अनामिका, पृ० १५३।

वज्रागी—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राङ्गी] १ गवेधुक। कौड़िल्ला। २ हड़-जोड़ नाम की लता जो चोट लगने पर लगाई जाती है।

वज्रांबुजा—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राम्बुजा] बौद्धों की एक देवी का नाम। [को०]

वज्रांशु—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण के एक पुत्र का नाम [को०]।

वज्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्नुही। थूहर। २ गुडूच। ३ दुर्गा।

वज्राकर—वि० पुं० [सं०] हीरे की खान [को०]।

वज्राकार—वि० [सं०] १ वज्र के समान। वज्र जैसा। २ वज्र के आकार का [को०]।

वज्राक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेहुंड नाम का कँटीला पौधा [को०]।

वज्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक रत्न। एक मूल्यवान् पत्थर। [को०]।

वज्राग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राग्नि] वज्र की आग। उ०—राठौड़ा उण वार रा जोस पराक्रम जोर। की बडवाग वज्राग की मिघन अगन सोर—रा० रू०। ७८।

वज्राग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्राग्नि] वज्र की ज्वाला। बिजली की आग। उ०—परि है वज्राग्नि ताकै ऊपर अचानचक्र घूरि उडि जाइ कहुँ ठौहर न पाइ है।—सुंदर ग्र०, भा० २, पृ० ५००।

वज्राघात—संज्ञा पुं० [सं०] वज्र की चोट। बिजली का आघात [को०]।

वज्राचार्य—संज्ञा पुं० [सं०] नैपाली बौद्धों के अनुसार तांत्रिक बौद्ध आचार्य जिसे तिब्बत में लामा कहते हैं।

विशेष—यह बौद्ध आचार्य गृहस्थ होता है और अपने पुत्र कलत्र के साथ विहार में रह सकता है। नेपाल और तिब्बत में ऐसे आचार्यों का बड़ा मान है।

वज्राभ—संज्ञा पुं० [सं०] दुग्ध पाषाण। स्फटिक मृत्तिका। एक मूल्यवान् पत्थर [को०]।

वज्राभिषवन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अनुष्ठान जिसमें तीन दिन तक जौ का सत्तू पीकर रहते थे।

वज्राभ्र—संज्ञा [सं०] एक प्रकार का अभ्रक जो काले रंग का होता है।

वज्रायुध—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र।

वज्रावर्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक मेघ का नाम। उ०—सुनत मेघवर्तक सजि सैन लै आए। जलवर्त, वारिवर्त, पवनवत, वज्रावर्त, अगिवर्तक जलद सग लाए।—सूर। (शब्द०)।

वज्राशनि—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रात्मा। वज्र [को०]।

वज्रासन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हठ योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें गुदा और लिंग के मध्य के स्थान को बाएँ पैर की एड़ी से दबाकर उसके ऊपर दाहिना पैर रखकर पालथी लगाकर बैठते हैं। २ वह शिला जिसपर बैठकर बुद्धदेव ने बुद्धत्व लाभ किया था। यह गया जी में बोधिद्रुम के नीचे थी।

वज्रास्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेहुंड [को०]।

वज्रास्थिशृंखला—संज्ञा स्त्री० [सं० वज्रास्थिशृङ्खला] तालमखाना। कोकिलाक्ष [को०]।

वज्रिजित्—संज्ञा पुं० [सं०] गरुड़।

वज्री[१]—संज्ञा पुं० [सं० वज्रिन्] १ इंद्र। २ एक प्रकार की ईंट। ३ वह जो वज्र से युक्त हो (को०)। ४ उल्लू (को०)। ५ बौद्ध भिक्षु [को०]।

वज्री[२]—संज्ञा स्त्री० १ थूहर। स्नुही। २ तिधारा। नरसेज।

वज्रेश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बौद्धों की एक देवी। २ एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहनिका भी कहते हैं।

विशेष—इसमें वज्र बनाकर मंत्रों द्वारा अभिषेक करते हैं और उसपर सोने से मंत्र लिखते हैं। इसके उपरांत उस वज्र को किसी जितेंद्रिय पुरुष के हाथ में दे देते हैं और लाख बार मंत्र जाप करके वज्रकुंड में हवन करते हैं। इस प्रयोग से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

वज्रोद्गम—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

वज्रोली—संज्ञा स्त्री० [सं० या हिं० वज्र+ओली] हठयोग की एक मुद्रा का नाम।

वट—संज्ञा पुं० [सं०] १ बरगद का पेड़। उ०—लेकर वट का दूध जटा प्रभु ने रचीं, अब सुमंत्र के लिये न कुछ आशा बची। साकेत, पृ० १२६। २ गोली वस्तु। गेंद। गोल (को०)। ३. एक खाद्य। बड़ा या पकौड़ा (को०)। ४ साम्य। एकरूपता

(को०)। ५ शृंखला। लडी या डोरी (को०)। ६ एक पक्षी (को०)। ७ कौडी। कपर्दक (को०)। ८ गवक (को०)। ९. शून्य। सिफर (को०)। १०. शतरज का प्यादा (को०)।

वटक—सज्ञा पु० [स०] १ वडी टिकिया या गोला। वट्टा। २ वडा। पकौडा। ३ एक तौल जो आठ माशे की होती है और सोना तौलने के काम मे आती थी। इसे त्रुटम, प्रक्षण और कोक भी कहते थे। यह १० गुजा या शोण के बराबर कही गई है,—१० गुजा = १ माशा, ४ माशा = १ शोण, २ शोण = १ वटक।

वटका—सज्ञा पु० [देश०] टुकडा। उ०—दोह घटका खिरै वट वटका दुवै, आध जगनाथ राजाण अटका हुवै।—रघु० रू०, पृ० १८४।

वटच्छद—सज्ञा पु० [स०] श्वेत वर्वरा। सफेद वनतुलसी।

वटपत्र—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वटच्छद' २ वट का पत्ता (को०)।

वटपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] वृत्तमल्लिका नामक फूल का पौधा।

वटपत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] पाखानभेद। पथरफोड।

वटर[1]—वि० [स०] दुष्ट। खल। शठ (को०)।

वटर[2]—सज्ञा पु० [स०] १ चोर। २ वटेर नामक पक्षी। ३ पगडी। ४ विस्तर। चटाई। ५ मथानी। ६ एक सुगधित घास (को०)। ७ मुर्गा (को०)।

वटवासी—सज्ञा पु० [स० वटवासिन्] यक्ष (को०)।

वटसावित्री—सज्ञा स्त्री० [स०] एक व्रत का नाम जिसमे स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं। दे० 'वरसायत'।

वटाकर, वटारक—सज्ञा पु० [स०] रज्जु। रस्सी।

वटावीक—सज्ञा पु० [स०] छद्मतापस। दाभिक (को०)।

वटाश्रय—सज्ञा पु० [स०] कुवेर का एक नाम (को०)।

वटि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कृमि। कीट। २. चिउँटी। चीटी। ३ दे० 'वटिका' (को०)।

वटिक—सज्ञा पु० [स०] शतरज का प्यादा या मोहरा (को०)।

वटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोली। वटी। २ शतरज का मोहरा। वटिक (को०)। ३ एक खाद्य पदार्थ जो चावल और उडद के मिश्रण से वनता है (को०)।

वटी[1]—वि० [स० वटिन्] जिसमे डोरी या सिकडी लगी हो। वर्तुल या गोलाकार (को०)।

वटी[2]—सज्ञा पु० शतरज की गोटी। वटिक (को०)।

वटी[3]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोली या टिकिया। वटी। २ रस्सी। सिकडी। रज्जु (को०)।

वटु—सज्ञा पु० [स०] १ बालक। २ ब्रह्मचारी। माणवक।

वटुक—सज्ञा पु० [स०] १ बालक। २ माणवक। ब्रह्मचारी। ३ एक भैरव। वटुकभैरव। ४ मूर्ख। अज्ञ (लाक्ष०)।

वटुरी वि० [स० वटुरिन्] चौडा। विस्तृत। फैलावदार (को०)।

वटेस्वर—सज्ञा पु० [स० वटेश्वर] शिव। महादेव। उ०—पुज्जि वटेश्वर मल्ल सौं परौ सरसव जाय।—प० रासो, पृ० ६१।

वटोदका—सज्ञा स्त्री० [स०] भागवत के अनुसार एक नदी जो पवित्र मानी जाती है।

वटोरनाⓊ†—क्रि० स० [स० वर्तुल + करण] दे० 'बटोरना'। उ०—परम ब्रह्म परमत्थ बुज्झइ, वित्ते वटोरइ कित्ति।—कीर्ति०, पृ० ८।

वट्ट[1]—सज्ञा पु० [स० वर्त्म, प्रा० वट्ट] बाट। मार्ग। रास्ता।

वट्ट[2]—सज्ञा पु० [देश०] १ प्याला। कटोरा। (तुल० गुज० वाटको)। २ हानि। नुकसान (तुला० गुज० वट्टो, हिं० बट्टा)। ३. वट्टा। लोढा (को०)।

वट्टक—सज्ञा पु० [स०] गोली। वटिका (को०)।

वट्टा—सज्ञा पुं० [स० वर्त्मन्, प्रा० वट्टअ] रास्ता। बाट। पथ।

वठर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ अवष्ठ नामक एक वर्णसकर जाति। २ २ शब्दकार। ३ चिकित्सक। हकीम (को०)। ४ जल-पात्र (को०)।

वठर[2]—वि० १ मूर्ख। २ शठ। ३ मद।

वडफर‡—सज्ञा स्त्री० [देश०] ढाल। उ०—अति खीजे सुण सुण असुर, जण जण छीजे प्राण। अवदल खाँ पढियौ अकस, कस वटफर केवाँण।—रा० रू०, पृ० २२९।

वड्ब—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० वड्वा] घोडा।

वडवा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वडवा' (को०)।

वडभा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की चिडिया (को०)।

वडभी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह शाला या घर जो किसी प्रासाद के शिखर पर हो। गृहचूडा। वौरहर। वरहरा।

पयो०—गोपानसी। चंद्रशाला। कूटागार। वलभी।

वडवा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वडवा'[1] (को०)।

वडवाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वडवाग्नि'।

वडवाभर्ता—सज्ञा पु० [स० वडवाभर्तृ] इद्र का अश्व जिसका नाम उच्चैं श्रवा है (को०)।

वडवामुख—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वडवाग्नि। २ शिव। ३ एक प्राचीन जनपद। ४ एक पौराणिक समुद्र। दे० 'वडवामुख' (को०)।

वडवासुत—सज्ञा पु० [स०] अश्विनीकुमार (को०)।

वडहसिका, वडहसी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी। दे० 'वड-हसिका' (को०)।

वडा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक पक्वान्न। दे० 'वडा'। २ छोटा गोला। वटिका (को०)।

वडिल—सज्ञा पु० [स०] दे० वडिश (को०)।

वडिश—सज्ञा पु० [स०] १ वसी जिसमे मछली फँसाई जाती है। कँटिया। २ चिकित्सको का एक अस्त्र जिससे वे वेधते या नश्तर लगाते है। (वैद्यक)।

वड्ड—वि० [देशी या स० वड्र] बडा। महान्।

वड्डिपनⓊ—सज्ञा पु० [अप० वड्डप्पण, हिं० बड़प्पन] बड़प्पन।

बडाई। महत्ता। उ०—ता कुल केरा वड्डिपन कहवा कवन उपाए।—कीर्ति०, पृ० १०।

वड़—वि० [स०] बडा। महान्। श्रेष्ठ [को०]।

वर्ण(पु)†'—सज्ञा पु० [देश०] धनुष। उ०—वरण छेद मुजेह, कवाण वरणी। फव ईस थकै फिर सेस फणी।—रा० रू०, पृ० ३४।

वर्ण'—सज्ञा पु० [स०] शब्द। ध्वनि। शोर [को०]।

वणिक्—देश० पु० [स० वणिज्] १ वह जो वाणिज्य के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो। रोजगार करनेवाला। २ वैश्य। बनिया। उ०—पर हुई गति और ही नृप चित्त की। सोचकर घटना वणिक् के वित्त की।—शकु०, पृ० ४१।

यौ०—वणिक्पटह = वणिक्मार्ग। वणिक्कर्म = सौदागरी। वणिक्कर्मा। वणिक्क्रिया = वणिक्कर्म। सौदागरी। वणिक्पथ = दे० 'वणिक्पथ'। वणिक्सार्थ = व्यापारियो का काफिला। कारवाँ। वणिग्ग्राम = व्यापारियो का दल। वणिग्जन। वणिग्बधु। वणिग्भाव = व्यापार। वणिग्वह। वणिग्वीथी = हाट। बाजार। वणिग्वृत्ति = वणिक् की जीविका। व्यापार।

वणिक्कर्मा—सज्ञा पु० [स० वणिक्कर्मन्] व्यापारी। सौदागर [को०]।

वणिग्जन—सज्ञा पु० [स०] १ वैश्य। बनिया। २ व्यापारी। सौदागर [को०]।

वणिग्बधु—सज्ञा पु० [स० वणिग्बन्धु] नील का पौधा [को०]।

वणिग्वह—सज्ञा पु० [स०] क्रमेलक। ऊँट [को०]।

वणिग्वृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यापार। सौदागरी। २ लाभ की दृष्टि से काम करना [को०]।

वणिज—सज्ञा पु० [स०] १ व्यापार। बनिज। २ व्यापारी। सौदागर। ३ तुला राशि। ४ शिव का एक नाम। ५ ज्योतिष मे एक करण [को०]।

वणिजक—सज्ञा पुं० [स०] व्यापारी। सौदागर [को०]।

वणिजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सौदागरी। व्यापार [को०]।

वणिजार(पु)†—सज्ञा पु० [स० वणिज + हिं० आर (प्रत्य०)] बनजारा। व्यापारी। उ०—बहुले भाँति वणिजार हाट हिंडए जवे आवधि।—कीर्ति०, पृ० ३०।

वणिज्य—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वणिज्या] व्यापार। सौदागरी [को०]।

वतड—सज्ञा पुं० [स० वतण्ड] साधु। संत। महात्मा [को०]।

वतग—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'अवतस'।

वतसित—वि० [स०] अवतसित। विभूषित [को०]।

वत'—सज्ञा पुं० [स०] १ खेद। २ अनुकंपा। ३ सतोष। ४ विस्मय। ५ आमत्रण।

वत'—अव्य० [स०] शब्दो एव विचारो पर जोर देने के लिये प्रयुक्त शब्द। विशेष दे० 'वत'।

विशेष—हिंदी मे इसका प्रयोग नही मिलता है।

वतक—सज्ञा पु० [देश० या गुज० वाडको] बत्तख के गर्दन के आकार की सुराही जिसमे शराब रखी जाती है। उ०—मतवाला री वतक प्यऊँ, पिय नइँ परहरियाह।—ढोला०, दू० ४१८।

वतन—सज्ञा पु० [अ०] १ निवासस्थान। वासस्थान। २ जन्मभूमि। स्वदेश।

यौ०—वतनपरस्ती = देशभक्ति।

वतनी—सज्ञा पु० [अ० वतन] अपने देश का निवासी। उ०—एते जीव ज्याचे वतनी सो ऐसा राजा त्रिभुवन धनी।—दक्खिनी०, पृ० ३०।

वतास(पु)†—सज्ञा पु० [स० वातसह] दे० 'वातास'। उ०—काहु होंग अइसनो ग्रास कउमे लागन आचर वतास।—कीर्ति०, पृ० ३६।

वतीरा—सज्ञा पु० [अ०] १ ढग। रीति। प्रथा। २ चाल ढाल। ३ लत। टेव। बान।

वतू'—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वर्ग की एक नदी [को०]।

वतू'—सज्ञा पु० [स०] १ सडक। २ आँख का एक रोग [को०]।

वतोका—सज्ञा स्त्री० [स०] वध्या स्त्री। २ वह स्त्री या गाय जिसका गर्भ किसी दुर्घटना से गिर जाय [को०]।

वत्—अव्य० [स०] समान। तुल्य। सदृश। जैसे, पुत्रवत्। मित्रवत्।

वत्री†—सज्ञा स्त्री० [स० वार्ता, प्रा० वत्तडी] दे० 'वार्ता'। उ०—दुगम पिनाक सहल तो दीसे विगत हमैं सुण वत्री। खडे मैं वसुधा विण खत्री कीधो वार इकीसे।—रघु० रू०, पृ० ६०।

वत्स—सज्ञा पु० [स०] १ गाय का बच्चा। बछडा। २ शिशु। बालक। बच्चा। ३ वत्सर। वर्ष। ४ कस का एक अनुचर। वत्सासुर। ५ इद्रजौ। ६ वक्ष। उर। छाती। ७ एक देश का नाम जो कोशावी की राजधानी था और जहाँ का राजा उदयन था।

वत्सक—सज्ञा पु० [स०] १ पुष्प कसीस। २ कुटज। ३ इद्रजौ। ४ निर्गुंडी। ४ छोटा बछडा (को०)। ५ शिशु। बच्चा (को०)।

वत्सकामा—सज्ञा स्त्री० [स०] बच्चो को प्यार करनेवाली स्त्री या गाय [को०]।

वत्सघोष—सज्ञा पु० [स०] वृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम जो नक्षत्रो के प्रथम वर्ग मे है।

वत्सतन्त्री—सज्ञा स्त्री० [स० वत्सतन्त्री] बछडा बाँधने की रस्सी।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार बछडा बाँधने की रस्सी को लाँघना नही चाहिए।

वत्सतर—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वत्सतरी] जवान बछडा जो जोता न गया हो। दोहान।

वत्सतरी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह बछिया जो तीन वर्ष की हो। कलोर।

विशेष—वृषोत्सर्ग मे चार वत्सतरी के साथ एक वृष उत्सर्ग करने का विधान है।

वत्सदंत—सज्ञा पु० [स० वत्सदन्त] एक प्रकार का बाण [को०]।

वत्सनाभ—सज्ञा पु० [स०] १ एक विष जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं। मीठा जहर।

विशेष—इसका पौधा हिमालय के कम ठडे भागो मे होता है। इसकी जड विशेषत नैपाल से आती है। इसके पत्ते भँभालू के पत्तो के समान होते हैं। विष जड मे होता है। यह विष शोधकर औषधो मे दिया जाता है। शोधन के लिये जड के छोटे छोटे

टुकडे काटकर तीन दिन तक गोमूत्र मे भिगोते है। फिर छाल अलग करके लाल सरसो के तेल मे भिगोए हुए कपडे मे पोटली बाँधकर रखते हैं। उपयुक्त मात्रा और युक्ति के साथ सेवन करने से यह रसायन, योगवाही, वातनाशक और त्रिदोषघ्न कहा गया है। वैद्य लोग इसे ज्वर और लकवा रोग मे देते है। इसके प्रयोग मे बडी सावधानी चाहिए, क्योकि अधिक मात्रा मे होने से यह विष प्राणनाशक होता है। इसके योग से मृत्युजय रस, आनदभैरव रस, पचवक्त्र रस आदि कई प्रसिद्ध औषधे बनती है।

पर्या०—अमृत। विष। उग्र। महौषध। गरल। मारण। नाग। वत्सोद्भव। प्राणहारक। स्थावर।

२ एक वृक्ष का नाम।

वत्सपत्तन सज्ञा पु० [स०] कौशाबी नगरी का प्राचीन नाम। जहाँ का राजा उदयन था [को०]।

वत्सपद—सज्ञा पु० [स०] बछडे के खुर का निशान। गोपद [को०]।

वत्सपाल—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो बछ गायो का पालन करता हो। गोपाल। २ कृष्ण। ३ बलराम [को०]।

वत्सपालक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वत्सपाल'।

वत्सपीता—सज्ञा स्त्री० [स०] वह गाय जिसका दूध बछडा पी चुका हो [को०]।

वत्सबधा—सज्ञा स्त्री० [स० वत्सबन्धा] वह गाय जिसका बछडा बँधा हुआ हो। गाय जो अपने बछडे को पाना चाहती हो [को०]।

वत्सर—सज्ञा पु० [स०] उतना काल या समय जितने मे पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है और सब ऋतुओ की एक उद्धरणी हो जाती है। काल का वह मान जो बारह महीनो या ३६५ दिनो का होता है। वर्ष। साल। बरस।

वत्सरातक—सज्ञा पु० [स० वत्सरान्तक] वर्ष का आखिरी महीना [को०]।

वत्सराज—सज्ञा पु० [स०] एक राजा का नाम।

विशेष—इस नाम के अनेक राजा हो गए हैं। एक तो कौशाबी का प्रसिद्ध राजा था, जो गौतम बुद्ध का समसामयिक था। चौहान वश मे भी एक वत्सराज हुआ। लाट देश का एक चौलुक्यवशी राजा भी इस नाम का हुआ है। महोबे के चदेल राजाओ का एक मत्री भी वत्सराज था जो आल्हा गानेवालो मे आल्हा का पिता कहा गया है और 'बच्छराज' के नाम से प्रसिद्ध है।

वत्सरादि—सज्ञा पु० [स०] मार्गशीर्ष। अगहन का महीना [को०]।

वत्सराण—सज्ञा पु० [स०] ऋण जो एक वर्ष के लिये लिया अथवा दिया गया हो [को०]।

वत्सरूप—सज्ञा पु० [स०] छोटा बछड़ा [को०]।

वत्सल[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वत्सला] १ पुत्र या संतान के प्रति पूर्ण स्नेह से युक्त। बच्चे के प्रेम से भरा हुआ। जैसे,—पुत्रवत्सल पिता, पुत्रवत्सला माता। २ अपने से छोटो के प्रति अत्यत स्नेहवान् या कृपालु। जैसे,—प्रजावत्सल राजा।

वत्सल—सज्ञा पु० १ साहित्य मे कुछ लोगो के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस। वात्सल्य रस, जिसमे पिता या माता का अपनी सतति के प्रति रतिभाव या प्रेम प्रदर्शित होता है। २ घास फूस की आग (को०)। ३ विष्णु का एक नाम (को०)।

वत्सशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] बछडे बाँधने की जगह। वह स्थान जहाँ बछडे रखे जायँ [को०]।

वत्साक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] तरबूज। कलीदा।

वत्साद्दन—सज्ञा पु० [स०] वृक। भेडिया [को०]।

वत्सादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] गुडुच। गिलोय।

वत्सासुर—सज्ञा पु० [स०] कस का अनुचर एक राक्षस जिसे कृष्ण ने बाल्यावस्था मे मारा था।

वत्सिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बछिया। बाछी [को०]।

वत्सिमा—सज्ञा स्त्री० [स० वत्सिमन्] शिशुता। बचपन [को०]।

वत्सी[1]—सज्ञा पु० [स० वत्सिन्] विष्णु।

वत्सी[2]—वि० जिसे बहुत बच्चे हो [को०]।

वत्सीय[1]—सज्ञा पु० [स०] गोपालक [को०]।

वत्सीय[2]—वि० वत्स सबधी। बछडा सबधी [को०]।

वदति, वदती—सज्ञा स्त्री० [स० वदन्ति, वदन्ती] कथा। कहानी। २ बात। वार्ता।

वद—वि० [स०] बोलनेवाला।

विशेष—यह शब्द समासात मे जुडता है। जैसे,—वशंवद, प्रियवद, आदि।

वदक—सज्ञा पु० [स०] वक्ता। कहनेवाला।

वदतोव्याघात—सज्ञा पु० [स०] कथन का एक दोष, जिसमे कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।

वदन—सज्ञा पु० [स०] १ मुख। मुँह। २ अगला भाग। ३. कथन। बात कहना। ४ त्रिभुज का शीर्ष भाग (को०)। ५. चेहरा। आकृति। स्वरूप (को०)।

वदनपवन—सज्ञा पु० [स०] मुख की हवा। साँस [को०]।

वदनमदिरा—सज्ञा स्त्री० [स०] अधरासव। अधरामृत [को०]।

वदनश्यामिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मुख का एक रोग। मुँह पर पडी हुई झाई। २ मुँह का कालापन [को०]।

वदनामय—सज्ञा पु० [स०] मुख का रोग [को०]

वदनासव—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वदनमदिरा'। २ लार। लाला।

वदनोदर—सज्ञा पु० [स०] मुखगह्वर। मुख का गड्ढा [को०]।

वदन्य—वि० [स०] दे० 'वदान्य' [को०]।

वदर—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बदर' [को०]।

वदान्य—वि० [स०] १ अतिशय दाता। उदार। २. मधुरभाषी। अपनी बात से दूसरो को सतुष्ट करनेवाला।

वदाम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'बादाम' [को०]

वदाल—सज्ञा पु० [स०] १. पाठीन मत्स्य। पढ़िना मछली। २. आवर्त। भँवर (को०)।

वदालक—सज्ञा पु० [स०] पाठीन मत्स्य (को०)।

वदावद—वि० [स०] वाग्मी। वाचाल। वडवडिया (को०)।

वदि—सज्ञा पुं० [स० अवदिन] कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।

वदितव्य—वि० [स०] बोलने योग्य। कहने लायक (को०)।

वदिता—सज्ञा पु० [स० वदितृ] बोलनेवाला। कहनेवाला। वक्ता।

वदोअत—सज्ञा स्त्री० [अ०] अमानत। धरोहर।

वदुसाना(पु)—क्रि० स० [स० विदूषण] दोष देना। भला बुरा कहना। इलजाम लगाना। उ०—हम सब जानत हरि की घातें। तुम जो कहत हरि राज करत नहि जानत हौ कछु का तें? उग्रसेन बैठारि सिंघासन लोग कहत कुल नाते। तप तें राज, राज तें आगे तुम सन समुझन बातें। सूरश्याम यहि भाँति सयाने हमहीं को वदुसाते।—सूर (शब्द०)।

वदेस(पु)—सज्ञा पुं० [स० विदेश] परदेश। विदेश। उ०—वहु वबालू आव घरि, काँसू करइ वदेम। सपत सघाले सपज, आ दिन कहा लहेस।—ढोला०, दू० १७८।

वद्दल—सज्ञा पु० [देशी०] दुर्दिन। वरसात।

वद्य'—वि० [स०] १ कथनीय। २ अनिंद्य। निर्दोष (को०)।

वद्य'—सज्ञा पु० १ कृष्ण पक्ष। २ वात। कथन (को०)।

यौ०—वद्यपक्ष = कृष्णपक्ष।

वध—सज्ञा पु० [स०] १ घात। नाश। मरण। विशेष दे० 'वध'। २ प्रहार। अभिघात। मार (को०)। ३ लकवा (को०)। ४ तिरोधान। लोप। ओझल। ओट (को०)। ५ (गणित में) गुणन क्रिया (को०)। ६ वधक। मारनेवाला (को०)। ७ जेता। जयी (को०)। ८ मृत्युदड (को०)। ९ विफलता। हार। पराजय (को०)। १० दोष। दूषण (को०)। ११ उत्पत्ति। उपज (वीजगणित)।

वधक—सज्ञा पुं० [सं०] १ घातक। हिंसक। २ व्याध। ३ मृत्यु। ४ एक प्रकार का सरकडा (को०)।

वधकर्माधिकारी—सज्ञा पुं० [स० वधकर्माधिकारिन्] जल्लाद।

वधजीवी—सज्ञा पु० [सं० वधजीविन्] वह जो वध करके जीविका निर्वाह करता हो।

वधत्र—सज्ञा पुं० [सं०] अस्त्र। हथियार।

वधनिग्रह—सज्ञा पु० [स०] मृत्युदड। फाँसी की सजा (को०)

वधनिर्णेक—सज्ञ पुं० [स०] हत्या का प्राचश्चित्त।

वधभूमि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वधभूमि'।

वधागक—सज्ञा पु० [स० वधाङ्गक] कारागार। कैदखाना।

वधाव(पु)—सज्ञा पुं० [पा० वद्धव] दे० 'वधावा'। उ०—शोक वधाव जिन सम करि माना। ताकी वात इहहुँ नहिं जाना।—कबीर वी० (शिशु०), पृ० २५४।

वधावरा(पु)—सज्ञा पु० [हिं० वधाव+रा (प्रत्य०)] दे० 'वधावा'। उ०—सोक को जनम व्रज ओक मे भयो है ऊधो साँवरे विरह तै वधावरे वजत ये।—दीन० ग्र०, पृ० ४०।

वधिक—सज्ञा पु० [स०] १ मृगमद। कस्तूरी। २ दे० 'वधिक' (को०)।

वधित्र—सज्ञा पु० [स०] १ कामदेव। २ कामासक्ति (को०)।

वधिर—वि० [स०] दे० 'बधिर'।

वधु—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वधुका'।

वधुआ—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पुत्र की स्त्री। वहू। २ दुलहन। स्त्री।

वधुटी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वधूटी'।

वधू—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नव विवाहिता स्त्री। दुलहन। २ पत्नी। भार्या। ३ पुत्र की वहू। पतोहू।

यौ०—वधूगृहप्रवेश, वधूप्रवेश = विवाहिता स्त्री का पति के घर मे पहली वार प्रवेश करने की विधि। वधूधन = स्त्री की निजी सपत्ति। वधूपक्ष = कन्यापक्ष। वधूवस्त्र = विवाह के समय कन्या को दिया जानेवाला वस्त्र।

वधूटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नई व्याही हुई स्त्री। दुलहिन। २ भार्या। पत्नी। ३ पुत्रवधू। पतोहू।

वधूत(पु)—सज्ञा पु० [स० अवधूत] दे० 'अवधूत'। उ०—श्रवन कुडल गरल कठ करुणाकद सच्चिदानद वदे वधूत।—तुलसी (शब्द०)।

वध्य—वि० [स०] मार डालने योग्य। वधार्ह।

यौ०—वध्यघ्न = जल्लाद। वध्यचिह्न = प्राणदड पाए हुए अपराधी का चिह्न। वध्यडिडिम, वध्यपटह = फाँसी देने के समय की जानेवाली सूचना। वध्यपट = वध दड दिए जाने के समय का काला या लाल वस्त्र। वध्यपाल = जेलर। वध्यशिला = वह वेदी या शिला जिसपर वध किया जाता है।

वध्र—सज्ञा पु० [स०] सीसा नाम की धातु।

वध्रि—सज्ञा पुं० [स०] वधिया।

वध्रिका—सज्ञा पुं० [स०] वह पुरुष जो वधिया हो। खोजा।

वध्री—सज्ञा स्त्री० [स०] चमडे का तसमा (को०)

वध्र्य—सज्ञा पु० [स०] पदत्राण। जूता (को०)।

वध्र्यश्व—सज्ञा पु० [स०] १ आखता घोडा। २ एक प्राचीन राजा का नाम।

वन—सज्ञा पुं० [स०] १ वन। जगल। २ वाटिका। ३ जल। ४ घर। आलय। ५ चमसा नामक यज्ञपात्र जो काठ का होता था। ६ रश्मि। ७ शकराचार्य के अनुयायी सन्यासियो की एक उपाधि। ८. फूलो का गुच्छा। ९ समूह। झुड। १० काष्ठ। लकडी (को०)। ११ वादल (को०)। १२ पहाड (को०)। १३ जगल का निवास (को०)। १४. झरना। सोता। १५ अर्चन। पूजन (को०)।

वनकर्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] वनपिप्पली।

वनकदली—सज्ञा पु० [स०] जगली केला (को०)

वनकरी—सज्ञा पु० [स० वनकरिन्] जगली हाथी (को०)।

वनकुंजर—सज्ञा पुं० [स० वनकुञ्जर] दे० 'वनकरी'।

वनकुंडल—संज्ञा पुं० [सं० वनकुण्डल] अच्छी जाति का सूरन या जिमीकंद।

वनकोकिलक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का क्षुद्र (को०)।

वनकोलि—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली बेर (को०)।

वनग—संज्ञा पुं० [सं०] वन में रहनेवाला। वनवासी (को०)।

वनगज—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली हाथी (को०)।

वनगमन—संज्ञा पुं० [सं०] १ संन्यासग्रहण (को०)। २ सब कुछ छोड़कर वन को जाना या जाना।

वनगव—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बैल (को०)।

वनगहन—संज्ञा पुं० [सं०] घना जंगल (को०)।

वनचंदन—संज्ञा पुं० [सं० वनचन्दन] १. अगुरु। अगर। २ देवदार।

वनगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] जामुन (को०)।

वनगोचर'—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिकारी। व्याधा। २ वनवासी। वन। ३ जंगल (को०)।

वनगोचर'—वि० १ जंगल में रहनेवाला। २ जल में रहनेवाला (को०)।

वनग्रामक—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली गाँव। २ गरीब गाँव (को०)।

वनग्राही—संज्ञा पुं० [सं०] व्याधा। बहेलिया (को०)।

वनचंद्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं० वनचन्द्रिका] मल्लिका।

वनचंपक—संज्ञा पुं० [सं० वनचम्पक] एक प्रकार का चंपा का पुष्प।

वनचर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन में भ्रमण करने या रहनेवाला। २ जंगली मनुष्य या प्राणी। ३. शरभ नामक वनजंतु।

वनचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन भ्रमण या वनवास (को०)।

वनछाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली बकरा। २. सूअर (को०)।

वनछिद—संज्ञा पुं० [सं० वनच्छिद] लकड़ी काटनेवाला। लकड़हारा (को०)।

वनज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २ कमल। ३ मुस्तक। मोथा। ४ तुंबुरु का फल। ५ जंगली बिजौरा नीबू। ६. वनतुलसी।

वनजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मुद्गपर्णी। २ निर्गुंडी। ३ सफेद कटसरैया। ४. वनतुलसी। ५ अश्वगंधा। ६ वनकपासी।

वनजीर—संज्ञा पुं० [सं०] काली जीरी।

वनजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वनजीविन्] १ वनवासी। २ लकड़हारा (को०)।

वनतिक्त—संज्ञा पुं० [सं०] हरीतकी। हड़।

वनतिक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठा। २ पथरी नाम का शाक।

वनद—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

वनदाह—संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि।

वनदीप—संज्ञा पुं० [सं०] वनचंपक पुष्प।

वनदेव, वनदेवता—संज्ञा पुं० [सं०] वन का अधिष्ठाता देवता।

वनदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन की अधिष्ठात्री देवी।

वनद्विप—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली हाथी (को०)।

वनद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली पेड़ पौधा (को०)।

वनधेनु—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली गाय। गवय (को०)।

वनधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली धान्य। एक प्रकार का धान (को०)।

वनन—संज्ञा पुं० [सं०] वन संभजन। सेवा (को०)।

वनप—संज्ञा पुं० [सं०] १ वनरक्षक। २ वनभंजक। उ०—वन जगत की देखभाल करनेवाले (वनप), जंगली आग बुझानेवाले (दावप)। हिं० सभ्यता, पृ० ६८।

वनपल्लव—संज्ञा पुं० [सं०] शाकभाजन वृक्ष। सहिंजन (को०)।

वनपांसुल—संज्ञा पुं० [सं०] शिकारी। व्याध (को०)।

वनपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १. वनरक्षक। २ वनपालक। उ०—मुरधर थया वनपालणा, हरण डरइ नाम। ज्यूं वनपालै पाडिया, सिर आपो वैताल।—रा० रू०, पृ० २६।

वनपिप्पली—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटी पीपर।

वनपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बिजौरा नीबू (को०)।

वनप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] तपस्या।

वनप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिक। २ बहेड़ा का वृक्ष। ३ कपूरकचरी। ४ सांभर हिरन।

वनभूषणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोयल (को०)।

वनभेक्षिक—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगल। वन (को०)।

वनमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेवली का पौधा या फूल।

वनमल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वनमल्लिका' (को०)।

वनमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन के फूलों की माला। २. एक विशेष प्रकार की माला।

विशेष—यह सब ऋतुओं में होनेवाले अनेक प्रकार के फूलों से बनती और घुटने तक लंबी होती थी। ऐसी माला श्रीकृष्ण धारण करते थे।

वनमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्वारका पुरी का एक नाम।

वनमाली'—वि० [सं० वनमालिन्] वनमाला धारण करनेवाला।

वनमाली'—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

वनमुक्—संज्ञा पुं० [सं० वनमुच्] बादल। मेघ (को०)।

वनमुद्ग—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मूँग (को०)।

वनमूत—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ। बादल।

वनमूर्धजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जंगली बिजौरा नीबू। २ कामकस्तूरी।

वनमोचा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वन्य केदली। जंगली केला (को०)।

वनर—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वानर' (को०)।

वनरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगल की देखभाल करनेवाला। वनरक्षा (को०)।

वनराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ सिंह। २ सर्वश्रेष्ठ वृक्ष।

वनराजि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन की श्रेणी। वनपंक्ति। वृक्षपंक्ति। २ वन के बीच बनी हुई सड़क। ३. रघुवंश का एक राजा का नाम।

वनराजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वनराजि'।

वनरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

वनलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वन की शोभा। वनश्री। २ कदली। केला।

वनलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली बेल।

वनवर्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बत्तक। बटेर। लवा पक्षी [को०]।

वनवसना—संज्ञा स्त्री० [सं०] धरती जिसका वस्त्र वन है। पृथिवी। उ०—नमित शालि से भरी हुई, सुरर वनवसना।—अपरा, पृ० १६५।

वनवह्नि—संज्ञा पुं० [सं०] दावाग्नि [को०]।

वनवास[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन का निवास। जंगल मे रहना। २ बस्ती छोड़कर जंगल मे रहने की व्यवस्था या विधान।

मुहा०—वनवास देना = जंगल मे रहने की आज्ञा देना। बस्ती छोड़ने की आज्ञा देना। वनवास लेना = बस्ती छोड़कर जंगल मे रहना। अंगीकार करना।

वनवास[2]—वि० जंगल मे रहनेवाला। वनवासी।

वनवासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ शाल्मली कंद। २ एक प्राचीन नगर जो कादंब राजाओं की राजधानी था।

वनवासन—संज्ञा पुं० [सं०] गंधबिलाव [को०]।

वनवासी[1]—वि० [सं० वनवासिन्] [वि० स्त्री० वनवासिनी] वन मे रहनेवाला। बस्ती छोड़कर जंगल मे निवास करनेवाला।

वनवासी[2]—संज्ञा पुं० १ ऋषभ नामक ओषधि। २ वाराही कंद। ३ शाल्मली कंद। ४ नीलमहिष कंद। ५ द्रोण काक। डोम कौआ। ६ दक्षिण मे तुंगभद्रा की शाखा वरदा नदी के किनारे बसा हुआ एक प्राचीन नगर जो कादंब राजाओं का प्रधान नगर था। ७ वानप्रस्थ आश्रमी। तपस्वी (को०)।

वनविलासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शंखपुष्पी लता।

वनवीज, वनवीजक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली नींबू [को०]।

वनवृंताकी—संज्ञा स्त्री० [सं० वनवृन्ताकी] जंगली बैंगन। भंटा [को०]।

वनव्रीहि—संज्ञा पुं० [सं०] तिन्नी नाम का जंगली अन्न।

विशेष—यह अपने आप पैदा होता है और इसे अन्नों मे नहीं गिना जाता। इसका व्यवहार फल के रूप मे व्रतादि मे होता है।

वनशूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कपिकच्छु। केवाँच। २ जंगली मादा सूअर।

वनशृंगाट—संज्ञा पुं० [सं० वनशृङ्गाट] गोखरू।

वनशृंगाटक—संज्ञा पुं० [सं० वनशृङ्गाटक] दे० 'वनशृंगाट'।

वनशोभन—संज्ञा पुं० [सं०] कमल [को०]।

वनश्वा—संज्ञा पुं० [सं० वनश्वन्] १ स्यार। गीदड़। २ गंधबिलाव। ३ चीता। बाघ [को०]।

वनसंकट—संज्ञा पुं० [सं० वनसङ्कट] मसूर।

वनसंवासी—संज्ञा पुं० [सं०] १ जो वानप्रस्थ आश्रम का हो। वन मे रहनेवाला। वनवासी [को०]।

वनसमूह—संज्ञा पुं० [सं०] निविड वन। घना जंगल [को०]।

वनसरोजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनकपासी [को०]।

वनसिंधुर—संज्ञा पुं० [सं० वनसिन्धुर] जंगली हाथी। वनकुंजर [को०]।

वनसू—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौंदर्य। लावण्य। २ कीर्ति। यश। ३ वनदौलत।

वनस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वन मे रहनेवाला। २ वानप्रस्थ आश्रम। ३ मृग। हिरन।

वनस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनभूमि। अरण्यदेश। जंगली जमीन।

वनस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अश्वत्थ। पीपल का पेड़। २ वट। न्यग्रोध वृक्ष [को०]।

वनस्थी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वनस्था' [को०]।

वनस्पति[1]—संज्ञा स्त्री०, पुं० [सं०] १ वह वृक्ष जिसमे फूल न हो (अर्थात् न दिखाई पड़े) केवल फल ही हों। जैसे,—गूलर, बड़ पीपल आदि वट वर्ग के वृक्ष। (मनु०)। २ वृक्ष मात्र। पेड़ पौधा। ३ वट वृक्ष। बरगद। ४ सोम नाम का पौधा (को०)। ५ पेड़ का तना। स्कंध (को०)। ६ घरन। बड़ेर। लट्ठा (को०)। ७ यज्ञस्तंभ। यूप (को०)। ८ काठ का रक्षा कवच (को०)। ९ वध्यपंच। फाँसी का तख्ता (को०)। १० यती। तपस्वी। योगी (को०)। ११ मूँगफली, बिनौला, नारियल आदि का जमाया हुआ तेल।

वनस्पति[2]—संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

वनस्पतिशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसके द्वारा यह जाना जाता हो कि पौधा और वृक्ष आदि के क्या क्या रूप और कौन कौन सी जातियाँ होती हैं, उनके भिन्न भिन्न अंगों की बनावट कैसी होती है और कलम आदि के द्वारा किस प्रकार के नए पौधे या वृक्ष उत्पन्न होते हैं। वनस्पति विज्ञान।

वनस्रक्—संज्ञा स्त्री० [सं० वनस्रज्] दे० 'वनमाला' [को०]।

वनहरिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जंगली हल्दी।

वनहव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ। एकाह यज्ञ [को०]।

वनहास, वनहासक—संज्ञा पुं० [सं०] १ काश। कास। २ कुंद का फूल।

वनहुताशन—संज्ञा पुं० [सं०] वनाग्नि। वनवह्नि [को०]।

वनांत—संज्ञा पुं० [सं० वनान्त] वनप्रांत। जंगली भूमि या मैदान।

वनांतर—संज्ञा पुं० [सं० वनान्तर] १ दूसरा वन। २ वन का भीतरी भाग [को०]।

वनाखु—संज्ञा पुं० [सं०] खरगोश। शशक [को०]।

वनाखुक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साँप। उरद [को०]।

वनाग्नि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दावानल। वन मे अपने आप लगनेवाली आग [को०]।

वनाज—संज्ञा पुं० [सं०] वन्य अज। जंगली बकरा [को०]।

वनाटु—संज्ञा पुं० [सं०] नीली जंगली मक्खी [को०]।

वनानी—संज्ञा स्त्री० [सं० वनानी] वन का समूह। घना और विस्तृत वन। उ०—काफल थे रँग रहे, फूल मे थी फल लिए

खुवानी। लाल बुरुसो के मधु छत्तो से थी भरी वनानी।—अतिमा, पृ० १५।

वनायु—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्राचीन देश का नाम जहाँ का घोडा अच्छा होता था। २ इस देश मे रहनेवाली जाति। ३ पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

वनायुज—सज्ञा पु० [स०] वनायु देश का घोडा।

वनारिष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] वनहरिद्रा। वनहल्दी [को०]।

वनार्चक—सज्ञा पु० [स०] माली। माला या हार बनानेवाला [को०]।

वनार्द्रका—सज्ञा स्त्री० [स०] वन अदरक जिसे ऐंद्र भी कहते है [को०]।

वनालक्त—सज्ञा पु० [स०] गेरु।

वनालक्तक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनालक्त' [को०]।

वनालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] हस्तिशु डी लता। हाथी सूँडी।

वनाश[1]—वि० [स०] केवल जल पीकर रहनेवाला [को०]।

वनाश[2]—सज्ञा पु० १ वनविहार। पिकनिक। २ एक प्रकार का छोटा जौ [को०]।

वनाश्रम—सज्ञा पु० [स०] वानप्रस्थ आश्रम [को०]।

वनाश्रमी—सज्ञा पु० [स० वनाश्रमिन्] वानप्रस्थी। तपस्वी [को०]।

वनाश्रय—सज्ञा पु० [स०] १ काला कौआ। डोम कौआ। २ वह जो जगल का निवासी हो (को०)।

वनाहिर—सज्ञा पु० [स०] वन्य शूकर। जगली सूअर [को०]।

वनि[1]—सज्ञा पु० [स०] १ याचना। २ राशि। ढेर। ३. आग। अग्नि [को०]।

वनि[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] इच्छा। कामना [को०]।

वनिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कु जवन। उपवन।

वनित—वि० [स०] १ पूजित। २ इच्छित। ३. याचित [को०]।

वनिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनुरक्ता स्त्री। प्रिया। प्रियतमा। २ स्त्री। औरत। ३ छह वर्णा की एक वृत्ति जिसे 'तिलका' और 'डिल्ला' भी कहते है। इसमे दो सगण होते है। जैसे,—मसि बाल खरो। शिव भाल धरो। ४ मादा (को०)।

वनिताद्विष्—सज्ञा पु० [स० वनिताद्विट्] स्त्रीविद्वेषी [को०]।

वनितामुख—सज्ञा पु० [स०] मार्कडेयपुराण के अनुसार मनुष्यो की एक जाति।

वनितावि लास—सज्ञा पु० [स०] वनिताओ का विहार। स्त्रियो की क्रीडा [को०]।

वनिष्णु—वि० [स०] मागनेवाला। याचक [को०]।

वनी[1]—सज्ञा पु० [स० वनिन्] १ वानप्रस्थ। २ वृक्ष (को०)। ३ सोमलता (को०)।

वनी[2]—वि० १ पूजित। २ अभिलषित। ३ दिया हुआ। ४ जल के ऊपर निर्वाह करनेवाला। ५. जगल मे रहनेवाला [को०]।

वनी[3]—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा वन। वनस्थली। उ०—अति चचल जहँ चलदलै, विधवा वनी, न नारि।—केशव (शब्द०)।

वनीक—सज्ञा पु० [स०] याचक। भिखारी [को०]।

वनीपक—सज्ञा पु० [स०] भिखारी [को०]।

वनीयक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनीपक' [को०]।

वनीयस—वि० [वनीयस्] अत्यत उदार [को०]।

वनेकिंशुक—सज्ञा पु० [स०] वह वस्तु जो वैसे ही, बिना माँगे मिले जैसे वन मे किंशुक बिना माँगे या प्रयास किए मिलता है।

वनेक्षुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] करज [को०]।

वनेचर—सज्ञा पु० [स०] १ वन मे फिरनेवाला मनुष्य। वनचर। जगली आदमी। २ यती। तपस्वी (को०)। ३ जगली पशु। जगली जानवर (को०)। ४. प्रेत। भूत। पिशाच (को०)।

वनेजा—सज्ञा पु० [स०] १ आम। २ पर्पट। पापडा।

वनेज्य—सज्ञा पु० [स०] १ पापडा। २. उत्तम जाति का आम [को०]।

वनेसर्ज—सज्ञा पु० [स०] पीतसाल का वृक्ष। असन [को०]।

वनेविल्वक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनेकिंशुक' [को०]।

वनोत्सर्ग—सज्ञा पु० [स०] १ देवमदिर, वापी, कूप, उपवन, आदि का उत्सर्ग जो शास्त्रविधि से किया जाता है। मदिर कुआँ आदि बनवाकर सर्वसाधारण के लिये दान करना। २ ऐसे दान या उत्सर्ग की विधि।

वनोत्साह—सज्ञा पु० [स०] गैंडा [को०]।

वनोद्भवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वनकपासी जिसे वनोद्भवा भी कहा गया है [को०]।

वनोपप्लव—सज्ञा पु० [स०] वनदाह। जगल मे आग लगना [को०]।

वनोपल—सज्ञा पु० [स०] कडा। करीष। सूखा गोबर [को०]।

वनौकस्—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका घर वन मे हो। वनवासी। २ जगली पशु। बदर, शूकर आदि। ३ तपस्वी। यती।

वनौका—सज्ञा पु० [स० वनौकस्] दे० 'वनौकस्' [को०]।

वनौषध—सज्ञा स्त्री० [स०] वन की ओषधियाँ। जगली जडी बूटी।

वन्न—सज्ञा पु० [स०] हिस्सेदार। साझीदार [को०]।

वन्य[1]—वि० [स०] १. वन मे उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २. जगली।

यौ०—**वन्य गज**=वन्यद्विप। **वन्यचर**। **वन्यद्विप**=जगली हाथी। **वन्यपक्षी**=वन के पक्षी। **वन्यवृत्ति**=जगल मे उत्पन्न पदार्थो से जीवननिर्वाह करनेवाला।

वन्य[2]—सज्ञा पु० १. वनसूरन। २ क्षीर विदारी। ३ वाराही कद। ४ शख। ५. जगली जानवर (को०)। ६. जगली पौधा (को०)। ७ बदर (को०)। ८. जगल मे उत्पन्न होनेवाले फल (को०)। ९. त्वचा। छाल (को०)।

वन्यचर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वनचर'। उ०—बस, पत्र पुष्प हम वन्यचरो की सेवा।—साकेत, पृ० २०६।

वन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १. मुद्गपर्णी। २. गोपाल ककडी। ३. गुजा। ४. भद्रमुस्ता। ५. अश्वगध। असगध। ६. सघन जगल। वन-

समूह। ७ बाढ़। जलप्लावन। ६ अप्रकेत जलराशि। १० लता। उ०—परतु मेरा तो निज का कोई स्वार्थ नही, हृदय के एक एक कोने को छान डाला--कही भी कामना की वन्या --नही। स्कद०, पृ० ६३।

वन्योपोदकी—सज्ञा स्त्री० [स०] लताविशेष। वन पोय। (को०)।

वन्र—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वन्न' (को०)।

वप--सज्ञा पु० [स०] १ बीज बोना। २ बीज बोनेवाला। ३ क्षौर। मुडन। ४ बुनाई।

वपन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वपनीय] १ केशमुडन। २ बीज बोना। ३ शुक्र। बीज (को०)। ४ बाल बनाने का अस्तुरा (को०)। ५ क्रम से रखना। रोपना (को०)।

वपनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्थान जहाँ नाई क्षौरकार्य करते हैं। वह स्थान जहाँ हज्जाम बैठकर हजामत बनाते हैं। २ वह स्थान जहाँ जुलाहे कपडा बुनते हैं। ३ कपडा बुनने का औजार। करघा (को०)।

वपनीय—वि० [स०] १ बोने योग्य। २ वपन के योग्य। मूँडने लायक (को०)।

वपा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चरबी। मेद। २ वल्मीक। बाँबी। ३ विवर। छिद्र (को०)। ४ आँतो की झिल्ली। अन्नावरण (को०)। ४ बाहर निकली हुई नाभि (को०)।

वपाकृत्—सज्ञा पु० [स०] मज्जा (को०)।

वपित—वि० [स०] बोया हुआ (को०)।

वपिल—सज्ञा पु० [स०] पिता। जनक (को०)।

वपु[१]—सज्ञा पु० [स० वपु] १ शरीर। देह। २ रूप। ३ सौदर्य (को०)। ४ सत्व। सत्ता। नैसर्गिक प्रवृत्ति (को०)। ५ पानी (वेद)। ६ आश्चर्य (को०)। ७ अश (को०)।

यौ०—वपुर्गुण। वपु प्रकर्ष। वपुर्धर। वपु स्रव।

वपु[२]—सज्ञा स्त्री० दक्ष की एक कन्या का नाम जो धर्मराज की पत्नी थी (को०)।

वपु प्रकर्ष—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वपुर्गुण' (को०)।

वपु स्रव—सज्ञा पुं० [स०] शरीरस्थ रस धातु (को०)।

वपुन—सज्ञा पु० [स०] देवता (को०)।

वपुमान—वि० [स०] १ सुदर शरीरवाला। २ साकार। मूर्त (को०)।

वपुरा(पु)—वि० [देश०] बेचारा। उ०—तुम्हेण होसउँ असहना जइ सुनिअउँ तिउ नाम। इअर वपुरा को करओ वीरत्तण निज ठाम।—कीर्ति०, पृ० ६०।

वपुर्गुण—सज्ञा पु० [स०] आकृति का सौदर्य (को०)।

वपुर्धर—वि० [स०] १ सौदर्ययुक्त। सुदर। २ शरीरी। मूर्त (को०)।

वपुष(पु)[१]—सज्ञा पु० [स० वपुस्] शरीर। देह। उ०—विन नाथ को मैं दीन। विधवा सु वपुष नवीन। जग सिंधु घोर अपार। ता मद्धि मो तनु डारि।—प० रासो, पृ० ११।

वपुष[२]—वि० [स०] १ सुदर। सलोना। २ आश्चर्यजनक (को०)।

वपुष[३]—सज्ञा पु० [स०] आकार या शरीर का सौदर्य (को०)।

वपुष्टमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पद्मचारिणी लता। २ हरिवश के अनुसार काशिराज की एक कन्या, जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय से ब्याही थी।

विशेष—हरिवश मे लिखा है कि राजा जनमेजय ने एक अश्वमेध यज्ञ किया। उनकी पत्नी, वपुष्टमा साथ ही बैठी थी। इद्र ने अश्व के शरीर मे प्रविष्ट होकर उसके साथ सहवास किया। जब मरा हुआ अश्व जीवित दिखाई पडा, तब इद्र की चाल का पता लगा। जनमेजय ने क्रुद्ध होकर इद्र को शाप दिया कि अब से अश्वमेध मे तुम्हारा कोई पूजन न करेगा। उन्होने ऋत्विक् ऋषियो को भी देश से निकाल दिया और वपुष्टमा का भी तिरस्कार किया। उसी समय गधर्वराज विश्वावसु ने आकर राजा को समझाया कि इद्र ने तुम्हारे अश्वमेध यज्ञ मे डरकर रभा अप्सरा को वपुष्टमा का शरीर धारण करा के भेजा है। ऋत्विजो को निकालने से तुम्हारा अश्वमेध का पुण्य क्षीण हो गया।

वपुष्मान्—वि० [स० वपुष्मत्] १ मूर्तिमान्। शरीरी। २ सुदर। ३ हृष्टपुष्ट। ४ पूर्ण। अक्षत। ५ देहात्मवादी (को०)।

वपोदर—वि० [स०] तुदिक। तोदवाला (को०)।

वप्ता—सज्ञा पु० [स० वप्तृ] १ पिता। जनक। २ कवि। ३ नापित। नाई। ४ बीज बोनेवाला। ५ कपक। किसान (को०)।

वप्प(पु)—सज्ञा पुं० [स० वप्तृ>वप्ता, प्रा० वप्प, वप्पा] दे० 'बाप'। उ०—जें सत्तु समर सम्मदि कहू वप्प वैर उद्धरिअ धुअ।—कीर्ति०, पृ० ८।

वप्पीओ(पु)—सज्ञा पु० [देशी] चातक। पपीहा।—देशी०, पृ० २८५।

वप्पो(पु)—सज्ञा पु० [स० वपुस्] शरीर। तनु। देह।—देशी०, पृ० ३०७।

वप्र—सज्ञा पु० [स०] १ मिट्टी का ऊँचा घुस्स, जो गढ या नगर की खाई से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारो ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है। चय। मृत्तिकास्तूप। २ क्षेत्र। खेत। ३ रेणु। धूल। ४ ऊँचा किनारा। कगार। (नदी आदि का)। ५ पहाड की चोटी। ६ टीला। भीटा। ७ सीमा नाम की धातु। ८ प्रजापति। ६ द्वापर युग के एक व्यास। १० चौदहवें मनु के एक पुत्र का नाम। ११ साँड अथवा हाथी का अपनी सींग या दाँत से मिट्टी का ढूह गिराना (को०)। १२ पिता। जनक (को०)। १३ सोना (को०)। १४ नींव (को०)। १५ परिखा। खाई (को०)। १६ घेरा (को०)। १७ मैदान (को०)।

वप्रक—सज्ञा पु० [स०] वृत्त की परिधि। गोलाई का घेरा। चक्कर।

वप्रक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वप्रक्रीडा'।

वप्रक्रीड़ा—सज्ञा स्त्री० [स० वप्रक्रीडा] टीले या ऊँचे उठे हुए मिट्टी के ढेर को हाथी, साँड आदि का दाँतो या सींगो से मारना, जो उनकी एक क्रीडा है।

वप्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मजीठ। २ जैनो के इक्कीसवें जिन नेमिनाथ की माता का नाम। ३ मिट्टी का चिपटे सिरे का बाँध (को०)। ४ उद्यानशय्या (को०)।

वप्राभिघात—सज्ञा पु० [स०] १ तटाघात। २ दे० 'वप्रक्रिया' [को०]।

वप्रि—सज्ञा पु० [स०] १ क्षेत्र। २ समुद्र। ३. स्थान की दुर्गमता। दुर्गति।

वप्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्मीक। बाँबी। २ मिट्टी का ढूह (को०)।

वफा—सज्ञा स्त्री० [अ० वफा] १ वादा पूरा करना। बात निबाहना।

यौ०—वफादार। वफादारी। वफापरस्त = दे० 'वफादार'। वफापरस्ती = वफादार होना। वफादारी। वफाशनास = वफा की पहचान रखनेवाला। वफाशनासी = वफा को पहचानना।

२ निर्वाह। पूर्णता। उ०—अब कूच ही करना सही इस खेत से न वफा लही।—मुदन (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।

३ मुरौवत। सुशीलता। उ०—वे खाए ते बेवफा वफा रहै ठहराइ। मीनै कीनै दूर ज्यौं तेही तै रह जाइ।—रसनिधि (शब्द०)।

वफात—सज्ञा स्त्री० [अ० वफात] मौत। मृत्यु।

क्रि० प्र०—करना।—पाना।—होना। उ०—नवाब आलिफ खाँ कोट कागडे मे वफात प्राप्त हुआ और लाश फतेहपुर मे लाके रक्खी।—मुदर० ग्र० (जी०), भाट० १, पृ० ५१।

वफादार—वि० [अ० वफा + फा० दार] [सज्ञा वफादारी] १. वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला। २ अपने काम को ईमानदारी से करनेवाला। ३ सच्चा।

वफादारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वफा + फा० दारी] १ प्रतिज्ञापालन। बात को पूरा करना। २ मित्र या स्वामी का तन, मन, धन से साथ निभाना [को०]।

वफीक—सज्ञा पु० [अ० वफीक] अनुकूल आचरण करनेवाला, मित्र। दोस्त। उ०—जा को साहब देत वफीक, चारि पियाला करु तहकीक।—धरनी०, पृ० २०।

वफ्क—सज्ञा पु० [अ० वफ्क] अनुकूल। मुआफिक [को०]।

वफ्द—सज्ञा पु० [अ० वफ्द] दूतमडल। प्रतिनिधि मडल [को०]।

वबर—सज्ञा पु० [अ०] ऊन। बाल [को०]।

वबा—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरी। महामारी। फैलनेवाला भयकर रोग। जैसे,— हैजा, प्लेग आदि। २. छूत का रोग।

क्रि० प्र०—आना।—पडना।—फैलना।

वबाई—सज्ञा स्त्री० [अ०] वबा सबधी। फैलनेवाली। छुतही [को०]।

वबाल—सज्ञा पु० [अ०] १ बोझ। भार। २ आपत्ति। कठिनाई। ३ घोर विपत्ति। आफत। ४ ईश्वरीय कोप। ५ पाप का फल।

क्रि० प्र०—होना।

मुहा०—किसी का वबाल पडना = किसी को दु ख पहुँचाने का फल मिलना। दुखिया की आह पडना। जैसे,—इसका वबाल तेरे ऊपर पडेगा।

वभ्रु—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार का सर्प। (सुश्रुत)। २ एक यदुवशीय योद्धा। विशेष दे० 'वभ्रु'।

वभ्रुवाहन—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बभ्रुवाहन'।

वम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वमन' [को०]।

वमति—सज्ञा स्त्री० [स०] वमन करना। वमनक्रिया [को०]।

वमथु—सज्ञा पु० [स०] १ वमन। २ थूक। ३ हाथी के सूँड से निकला हुआ पानी। ४ खाँसी [को०]।

वमन—सज्ञा पुं० [स०] १ कै करना। उलटी करना। छर्दन। २ वमन किया हुआ पदार्थ। ३ आहुति। ४ पीडा। ५. भाँग (को०)।

वमना—क्रि० स० [स० वमन] कै करना। उलटी करना [को०]।

वमनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जोक। २ कपास का पौधा (को०)।

वमनाया—सज्ञा स्त्री० [स०] मक्खी।

वमि[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक रोग, जिसमे मनुष्य का जी मतलाता है, मुँह से पानी छूटता है और जो कुछ वह खाता पीता है, उसे मुँह के रास्ते निकालकर बाहर फेंक देता या कै कर देता है।

विशेष—यह वमन रोग पाँच प्रकार का माना गया है,—वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, और आगतुक। वातज मे बगल और छाती मे दर्द, मस्तक और नाभि मे शूल तथा अगो मे सूई छेदने की सी पीडा होती है। वमन बडे वेग से और बडे शब्द के साथ अधिक मात्रा मे निकलता है। पित्तज मे मूर्छा, प्यास, मुँह सूखना, तालू और आँखो मे जलन और आखो के सामने अँधेरा छाना आदि लक्षण होते है और वमन कुछ हरा और तीता होता है। कफज मे मुँह मीठा रहता है, कुछ कफ निकलता है। भोजन की अनिच्छा होती है, शरीर भारी जान पडता है और वमन सफेद, गाढा और मीठा होता है, तथा वमन के समय रोगटे खडे हो जाते है और बडी पीडा होती है। आगतुक वमन कोई बुरी वस्तु खा लेने या घृणित वस्तु देखने या सूँघने से एकबारगी हो जाता है।

२ वमन करानेवाली दवा

वमि[2]—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ धतूरा। ३ दुष्ट।

वमित—वि० [स०] वमन किया हुआ। जो वमन किया गया हो [को०]।

वमी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] वमन। छर्दि। दे० 'वमि'।

वमी[2]—वि० [स० वमिन्] वमन रोग का रोगी [को०]।

वम्य—वि० [स०] (औषध आदि) जिससे वमन हो। वमन करानेवाली [को०]।

वम्र—सज्ञा पु० [स०] दीमक। वम्री [को०]।

वम्रक[1]—सज्ञा पुं० [स०] दीमक या चीटा [को०]।

वम्रक[2]—वि० अत्यत छोटा। बहुत छोटा [को०]।

वम्री—सज्ञा स्त्री० [स०] दीमक।

वम्रीकूट—सज्ञा [स०] वल्मीक । वाँबी । बिमौट ।

वम्ह(पु)†—सज्ञा पु० [देशी] वल्मीक । बिमौट ।—देशी०, पृ० २८४ ।

वम्हण(पु)†—सज्ञा पुं० [स० ब्राह्मण, प्रा० वम्हन] दे० 'ब्राह्मण' । उ०—बहुल वम्हण बहुल काश्रथ राजपुत्त कुल बहुल बहुल जाति मिलि बइस ।—कीर्ति०, पृ० ३० ।

वय(पु)—सर्व० [स० अस्मद् शब्द का प्र० पु० बहुवचन] हम । उ०—विकटतर वक्र छुर धार प्रमदा तीव्र दर्प कदर्प खर खड्गधारा । धीर गभीर मन पीर कारक तत्र के वराका वय विगत सारा ।—तुलसी (शब्द०) ।

वय क्रम—सज्ञा पु० [स०] क्रमागत जीवन काल । अवस्था । उम्र ।

वय परिणति—सज्ञा स्त्री० [स०] अवस्था की परिपक्वता । प्रौढ अवस्था [को०] ।

वय परिणाम—सज्ञा पु० [स०] वय परिणति ।

वय प्रमाण—सज्ञा पुं० [स०] जीवन का पूरा समय [को०] ।

वय सधि—सज्ञा स्त्री० [स० वय सन्धि] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति । लड़कपन और जवानी के बीच का काल ।

वय स्थ—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'वयस्थ' ।

वय स्था—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वयस्था' ।

वय स्थान—सज्ञा पु० [स०] जवानी । दे० 'वयस्थान' [को०] ।

वय[1]—सज्ञा पु० [स० वयस्] १ बीता हुआ जीवनकाल । अवस्था । उम्र । २ बल । शक्ति । ३ पक्षी । ४ युवावस्था । जवानी (को०) । ५ कौवा (को०) । ६ यज्ञ प्रयुक्त बलि पदार्थ । बलि या अन्न (वेद) (को०) । ७ स्वास्थ्य । पुष्टता (को०) ।

वय[2]—सज्ञा पु० [स०] १ ततुवाय । जुलाहा । २ बया पक्षी ।

वय[3]—सज्ञा स्त्री० जुलाहो के करघे मे सूत का एक जाल । विशेष दे० 'वै' या 'वय' ।

वयताल(पु)†—सज्ञा पु० [स० वैताल] उ०—कालीदास भोज कै ज्यौं विक्रम के वयताल ।—बाकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १३३ ।

वयन—सज्ञा पु० [स०] बुनने की क्रिया या भाव । बुनना ।

वयराट(पु)—वि० [स० वैराट] दे० 'विराट्' । उ०—वयराट रूप गावत निगम । निज दासन (दाता) अक्षय ।—नट०, पृ० १० ।

वयस्—सज्ञा पु० [स०] १ बीता हुआ जीवन काल । अवस्था । उम्र । २ पक्षी ।

वयस—सज्ञा पु० [स० वयस्] दे० 'वयस्' ।

वयसिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वयस्या' ।

वयस्क—वि० [स०] [स्त्री० वयस्का] १ उमर का । अवस्थावाला । विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग समस्तपद के अत मे होता है । जैसे, अल्पवयस्क, समवयस्क इत्यादि ।
२ पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ । जो अब बालक न हो । सयाना । बालिग ।

वयस्कर—वि० [स०] दे० 'वयस्कृत्' ।

वयस्कृत—वि० [सं०] आयु प्रद । जीवन देनेवाला ।

वयस्थ[1]—वि० [स०] [स्त्री० वयस्था] १ प्राप्तवयस्क । २. युवा । युवक । ३ समवयस्क ।

वयस्थ[2]—सज्ञा पुं० समवयस्क पुरुष ।

वयस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आमलकी । आँवला । २ हरीतकी । हड । ३ गुडूच । ४ छोटी इलायची । ५ काकोली । ६. सेमल । ७. युवती । ८ मत्स्याक्षी (को०) । ९ अत्यम्लपर्णी (को०) । १० सोमवल्लरी । सोमलता (को०) । ११ आली । सखी । सहेली । (को०) ।

वयस्थान—सज्ञा पु० [स०] यौवन ।

वयस्य—सज्ञा पुं० [सं०] १. समवयस्क । एक उमरवाले । हमजोली । २. मित्र । उ०—प्रिय वयस्य ? आज तुम्हें आए तीन दिन हुए ।—स्कद० पृ० १२७ ।

यौ०—वयस्यभाव = मित्रता । मैत्री । दोस्ती ।

वयस्यक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वयस्य' [को०] ।

वयस्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सखी । सहेली । उ०—देखकर अपनी सखी को पलक सी ध्यानलग्ना, एक ने सकेत कर यो वयस्या से दबे स्वर मे कहा ।—प्रिय०, पृ० ७२ । २ इष्टका । ईंट ।

वयस्यिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'वयस्या'-१ । २ अतरग चेटी या दासी [को०] ।

वया—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वयाक' [को०] ।

वयाक—सज्ञा पुं० [स०] १ डाली । टहनी । २. लता (को०) ।

वयार(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'बयार' ।

वयाल(पु)—सज्ञा पुं० [स० व्याल] १ दे० 'व्याल' । २ वायु । हवा । उ०—अया भया बनाय वैद की बात न मानै । विषय वयाला खाय करै सजय का जानै ।—पलटू०, पृ० ६० ।

वयुन—सज्ञा पुं० [स०] १ ज्ञान । बुद्धि । बौद्धिक चेतना । २ मदिर । देवागार । ३ आज्ञा । आदेश । नियम । ४ कर्म । ५ रीति । पद्धति । सरणि । ६ स्पष्टता [को०] ।

वयोगत[1]—वि० [सं०] प्रौढ । अधिक वय का ।

वयोगत[2]—सज्ञा पु० युवावस्था का गमन । प्रौढावस्था [को०] ।

वयोधा[1]—सज्ञा पु० [स० वयोधस्] १ अन्न । २ युवा अथवा मध्यम वय का व्यक्ति । प्रौढ़ व्यक्ति [को०] ।

वयोधा[2]—वि० [स०] १. शक्तिशील । ताकतवर । २ शक्तिदायक वा स्वास्थ्यप्रद । ३ भोजन देनेवाला । अन्न देनेवाला [को०] ।

वयोधा[3]—सज्ञा स्त्री० शक्ति । ताकत । सामर्थ्य [को०] ।

वयं बाल—वि० [स०] छोटी उम्र का । बाल्यावस्था का [को०] ।

वयोरग—सज्ञा पुं० [स० वयोरङ्ग] सीसा धातु [को०] ।

वयोरग—सज्ञा पु० [स० वयोरङ्ग] सीसक । सीसा धातु [को०] ।

वयोविशेष—सज्ञा पु० [स०] वय की विशेषता । उम्र का अतर [को०] ।

वयोवृद्ध—वि० [स०] जो अवस्था मे बड़ा हो । बड़ा बूढ़ा ।

वयोहानि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बल या शक्ति का कम होना। २. बुढाना। वृद्धावस्था होना [को०]।

वरच—अव्य [स० वरञ्च] १ ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। अपितु। २. परतु। लेकिन। किंतु।

वरड—सज्ञा पु० [स० वरण्ड] १ बर्मी की डोर। शिम्त। २. समूह। ३. मुहाँसा। ४ घास का गट्ठर ५ फौलखाने आदि मे की वह दीवार जो दो लडाके हाथियो के बीच मे लडाई बचाने के लिये बनाई जाती है। ६ कोष। थैली। झोला (को०)। ७. अलिंद। बरामदा। दालान (को०)।

वरडक[1]—सज्ञा पु० [स० वरण्डक] १ मिट्टी का भीटा। टूह। २ दो लडाके हाथियो के बीच की दीवार। ३ हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा। ४ मुँहासा (को०)। ५ दीवार (को०)।

वरडक[2]—वि० १ लबा। बडा। विस्तृत। २ भयानक। डरावना। भयभीत। ३ दुखी। पीडित। ४ गोल। वर्तुलाकार [को०]।

वरडलबुक—सज्ञा पु० [स० वरण्डलम्बुक] बर्सी की डोरी [को०]।

वरडा[1]—सज्ञा स्त्री० [स० वरण्डा] १ कटारी। कर्त्री। २ बत्ती। ३ मैना। सारिका (को०)।

वरडा[2]—सज्ञा पु० दे० 'बरामदा'।

वरडालु—सज्ञा पु० [स० वरण्डालु] एरड वृक्ष। रेड का पेड [को०]।

वर[1]—सज्ञा पुं० [स०] किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। वह बात जिसके लिये किसी देवी, देवता या बडे से प्रार्थना की जाय। जैसे,—उसने शिव से यह वर माँगा।

क्रि० प्र०—माँगना।

२ किसी देवता या बडे से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। वह बात जो किसी देवता या बडे की प्रसन्नता से प्राप्त हुई हो। जैसे,—उसे यह वर था कि वह किसी के हाथ से न मरेगा।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

३. जामाता। ४. पति या दूल्हा। ५ गुग्गुल। ६ कुकुम। केसर। ७ दारचीनी। ८ बालक। ९ अदरक। आर्द्रक। १० सुगध तृण। ११ सेंधा नमक। १२. पियाल या चिरौजी का पेड। १३ बकुल। मौलसिरी। १४ हलदी। १५ गौरा पक्षी। १६ चुनाव (को०)। १७ पसद (को०)। १८ इच्छा (को०)। १९ लपट या छिछोरा व्यक्ति (को०)। २० वह जो किसी से प्रेम करता हो। प्रेमी (को०)। २१ दहेज (को०)।

वर[2]—वि० १ श्रेष्ठ। उत्तम। २ सर्वोत्तम (को०)।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय श्रेष्ठता सूचित करने के लिये सज्ञा या विशेषणो के आगे होता है। जैसे,—पडितवर, विज्ञवर, वीरवर, मित्रवर।

वरकठ—सज्ञा पु० [स० वर+कण्ठ] सुग्रीव। उ०—वरकठ वामा धरी धामा किता कामा वद किया। भय मेट भारी धनुष धारी अरज सारी येह।—रघु० रू०, पृ० १४६।

वरक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ साधारण वस्त्र। गमछा, दुपट्टा आदि। उ०—गुरु के चरन अनद जाय करि, अनुभव वरक उतारी।—घरनी०, पृ० ३। २ नाव का आच्छादन। ३ वनमूँग। ४ काकुन। प्रियगु। ५ जगली बेर। झडबेरी। ६ अभिलाषा। मनोरथ। इच्छा (को०)। ७. घडी। घटा (को०)। ९ किसी स्त्री से विवाह की प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति (को०)।

वरक[2]—सज्ञा पु० [अ० वरक] १ पत्र। २ पुस्तको का पन्ना। पत्रा। ३ दल। पत्र। पखुडी (को०)। ४ सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर, जो कूटकर बनाए जाते है और मिठाइयो पर लगाने और औषध मे काम आते है।

यौ०—वरकसाज = सोने चाँदी के वरक बनानेवाला। वरकसाजी = वरकसाज का क'म।

वरका—सज्ञा पु० [अ० वरकह] दल। पत्र। पत्ता [को०]।

वरकी—वि० [अ० वरकी] वरक की तरह पतला [को०]।

वरकोद्भव—सज्ञा पु० [स०] कोविदार। कचनार का पेड।

वरक्रतु—सज्ञा पु० [स०] इद्र।

वरग—सज्ञा पु० [स० वर्ग, प्रा० वग्ग] दे० 'वग्ग'। उ०—मालवणी मनि दूमणी आवी वरग विमासि।—ढोला०, दू० ३१६।

वरचदन—सज्ञा पुं० [स० वरचन्दन] १ काला चदन। २ देवदारु।

वरज—वि० [स०] ज्येष्ठ। बडा।

वरजिश—सज्ञा स्त्री० [फा० वरजिश] १. व्यायाम। कसरत। शारीरिक परिश्रम। २ अभ्यास। मश्क। ३. ग्रहण। इख्तियार [को०]।

यौ०—वरजिशखाना, वरजिशगाह = व्यायामशाला। अखाड़ा।

वरजिशी—वि० [फा० वरज़िशी] कसरती [को०]।

वरजीवी—सज्ञा पु० [स० वरजीविन्] १ एक वर्णसकर जाति जो स्मृतियो मे गोप और ततुवाय के सयोग से उत्पन्न कही गई है। २ ब्राह्मण का औरस पुत्र जो शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हो।

वरट—सज्ञा पु० [स०] १ हस। २. कुद का फूल। ३ भिड। बर्रे। ४ एक प्रकार का अन्न (को०)। ५ कुसुम का बीज (को०)।

वरटक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वरटिका, वरट्टिका] कुसुम का बीज। बर्रे का बीज।

वरटा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हसी। २ गधिया कीडा। गधकीट। ३ बर्रे। ततैया। भिड। ४ कुसुम का बीज (को०)।

वरटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हसी। २ गधिया कीडा। ३ पीली मक्खी। उ०—वरटी (पीली माँखी), झोगर आदि आपसे चौगुने भारी भी हैं।—माधव०, पृ० १९२।

वरण[1]—सज्ञा पु० [स०] १ किसी को पसद करके किसी कार्य के लिये नियुक्त करना। किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. मगल कार्य के विधान मे होता आदि कार्यकर्ताओ को नियत करके दान आदि से उनका सत्कार करना। ३. मगल कार्य मे नियत किए हुए होता आदि के सत्कारार्थ दी हुई वस्तु या दान। जैसे,—विवाह मे ११ आदमियो को वरण मिला है।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

४. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति। ५ पूजा। अर्चना। सत्कार। ६ ढकने या लपेटने की वस्तु। आवरण। आच्छादन। वेष्ठन। ७ किसी स्थान के चारो ओर घेरी हुई दीवार। ८ ऊँट। ९ वरुण वृक्ष। १० पुल। सेतु। ११ धनुष की सज्जा या अलकार (को०)। १२. इंद्र (को०)। १३ एक प्रकार का अस्त्र का मत्र (को०)। १४. वृक्ष। पेड (को०)। १५. याचना। प्रार्थना।

वरणⓅ[2]—सज्ञा पु० [स० वर्ण] १ रग। दे० 'वर्ण'। २ मनुष्यो के चार विभाग या वर्ण। उ०—जो कोइ भक्त हमारा होई। जात वरण को त्यागै सोई।—कबीर सा०, पृ० ८२०।

वरणक—सज्ञा पु० [स०] १ आच्छादन। आवरण। २ वह जो किसी का आच्छादन करे। आच्छादन करनेवाला (को०)।

वरणजथाⓅ सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का डिंगल छद।—रघु० रू०, पृ० २५३।

वरणनाⓅ—क्रि० स० [स० वर्णन] वर्णन करना। कहना। उ०—नभ वायु तेज चल धरणी। पीछे बहु विधि करि वरणी।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६७।

वरणमाला—सज्ञा स्त्री० [स०] जयमाल (को०]।

वरणसी—सज्ञा स्त्री० [स०] वाराणसी।

वरणा—सज्ञा स्त्री० [स० वरुण ?] १. एक छोटी नदी का नाम जो काशी के उत्तर मे बहती है। यह नदी वाराणसी क्षेत्र की उत्तरीय सीमा है। वरुणा। २. पजाब देश की एक नदी का नाम जो सिंधु नद मे दक्षिण ओर से अटक के विपरीत दिशा से आकर मिलती है। ३. अरहर।

वरणी—सज्ञा स्त्री० [स० वरण] दे० 'वरण'—३।

वरणीय—वि० [स०] [वि० स्त्री० वरणीया] १. पूजनीय। पूज्य। २. श्रेष्ठ। बडा। ३. चुनने या ग्रहण करने योग्य। उ०—थी अनत की गोद सदृश जो विस्तृत गुहा वहाँ रमणीय। उसमे मनु ने स्थान बनाया सुदर स्वच्छ और वरणीय।—कामायनी, पृ० ३०।

वरतनु—सज्ञा पुं० [सं० वरतन्तु] एक ऋषि का नाम।

वरतⓅ—सज्ञा पु० [स० व्रत] उपवास। दे० 'व्रत'-२। उ०—विकट करो तीरथ वरत, धरो भेष के धार। विनै नाम रघुबीर रै, परत न उतरै पार।—रघु० रू०, पृ० ३४।

वरतनु[1]—वि० [स०] सुदर शरीरवाला (को०]।

वरतनु[2]—सज्ञा स्त्री० सुदरी स्त्री (को०]।

वरतमानⓅ—वि० [स० वर्तमान] दृश्य जगत् जो वर्तमान है। उ०—वरतमान मँह सतगुरु सारा। सतगुरु भव तारन कडिहारा।—कबीर सा०, पृ० ४३०।

वरतिⓅ—सज्ञा स्त्री० [स० व्रत] दे० 'व्रत'। उ०—वरति करइ धरि आपणाइँ।—बी० रासो, पृ० ४९।

वरतिक्त—सज्ञा पुं० [स०] १ कुटज। कोरैया। २ नीम। ३. पर्पट। पापडा। ४. रोहितक। रोहना का पेड।

वरतिक्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पाठा।

वरत्तⓅ—सज्ञा स्त्री० [स० वरयात्रा, प्रा वरत्त] दे० 'बारात'। उ०—नायदवारे परसवा, आवी धार वरत्त।—रा० रू०, पृ० ३५६।

वरत्र—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वरत्रा' [को०]।

वरत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बरेत। बरेता। २. हाथी खींचने का रस्सा। ३. चमडे का तसमा।

वरत्वच—सज्ञा पु० [स०] नीम का पेड।

वरद[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वरदा] वर देनेवाला। अभीष्टदाता। २ प्रसन्न। हर्षयुक्त (को०)।

यौ०—वरदचतुर्थी = वरदा चतुर्थी। वरदहस्त = वर देने की मुद्रा। हाथ की वरद मुद्रा।

वरद[2]—सज्ञा पु० [स०] १ उपकारी। कल्याणकर। २ पितृगणो का एक वर्ग [को०]।

वरदक्षिणा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है। दहेज। दायदा।

वरदा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कन्या। २ अश्वगध। ३ अडहुल। ४ आदित्यभक्ता। हुरहुर। ५ वाराही कद। ६ एक नदी का नाम [को०]।

वरदाई[1]—वि० [स० वरदायिन्] वरदायी। वर देनेवाला। उ०—इद्र को इद्र, देव देवन को, ब्रह्मा को ब्रह्म महा वरदाई।—नद० ग्र०, पृ० ३४३।

वरदाई[2]—सज्ञा पु० पृथ्वीराज रासो के रचयिता चद का उपनाम।

वरदा चतुर्थी—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी। वरदा चौथ।

वरदाता—वि० [स० वरदातृ] [वि० स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला। वरद। उ०—जीवन समीर शुचि नि श्वसना, वरदात्री।—अपरा, पृ० २०३।

वरदान—सज्ञा पु० [स०] १ किसी देवता या बडे का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। उ०—देन कहेहु वरदान दुइ तेउ पावत सदेह।—तुलसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—देना।

२ किसी फल का लाभ जो किसी को प्रसन्नता से हो।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

वरदानी—सज्ञा पु० [स० वरदानिन्] वर प्रदान करनेवाला। मनोरथ पूर्ण करनेवाला। वरदायक।

वरदायक[1]—वि० [स०] दे० 'वरदाता'।

वरदायक[2]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

वरदारुक—सज्ञा पु० [स०] विषैली पत्तियोवाला एक पौधा [को०]।

वरदी—सज्ञा स्त्री० [अ०] वह परिधान जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियो के लिये नियत हो। वह पोशाक या पहनावा जो किसी खास महकमे के अफसरो और नौकरो के लिये मुकर्रर हो। जैसे,—पुलिस की वरदी, फौज की वरदी।

वरद्रुम—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का अगर, जिसका वृक्ष बहुत बडा होता है।

वरन्—अव्य० [स० वरम्] ऐसा नही। बल्कि।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग अब उठता जा रहा है।

वरन(पु)†—सज्ञा पु० [स० वर्ण] दे० 'वर्ण'। उ०—इनकौ अग बोहोत सुदर और गौर वरन है, श्री स्वामिनी जी सदृश।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०८।

वरना[1](पु)—सज्ञा पु० [स० वरण] ऊँट। उ०—वरना भख कर मे अवलोकत केश पास कृतवद। अधर समुद्र सदल जो सहसा ध्वनि उपजत सुखकद।—सूर (शब्द०)।

वरना[2]—अव्य० [अ०] नही तो। यदि ऐसा न होगा तो। जैसे,—आप बैठिए, वरना मैं भी उठकर चला जाऊँगा।

वरना(पु)[3]—क्रि० स० [स० वरण] वरण करना। उ०—और चाहते होगे फिर से मर्त्य धरा पर आकर, जीवन श्रम के शोभा सुख को वरना।—युगपथ, पृ० ११५।

वरपक्ष—सज्ञा पु० [स०] १ बरात। २ बराती [को०]।

वरपर्णाख्य—सज्ञा पु० [स०] क्षीरकचुकी का वृक्ष [को०]।

वरपीतक—सज्ञा पु० [स०] अबरक। अभ्रक [को०]।

वरप्रद—वि० [स०] [वि० स्त्री० वरप्रदा] १ वर देनेवाला। २ प्रसन्न।

वरप्रदा—सज्ञा स्त्री० [स०] अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा [को०]।

वरप्रदान—सज्ञा पु० [स०] मनोरथ पूर्ण करना। कोई फल या सिद्धि देना। वर देना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

वरप्रभ[1]—सज्ञा पु० [स०] एक बोधिसत्व [को०]।

वरप्रभ[2]—वि० शोभायुक्त। अच्छी कातिवाला [को०]।

वरप्रस्थान—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वरयात्रा' [को०]।

वरफल—सज्ञा पुं० [स०] नारिकेल। नारियल।

वरबाह्लिक—सज्ञा पुं० [स०] केसर [को०]।

वरम(पु)—सज्ञा पुं० [स० वर्म] दे० 'वर्म'।

वरमना(पु)†—क्रि० अ० [देश० या स० विरमण] रमना। झुकना। उ०—झिरिहिरि बहै बयारि अमी रस ढरकै हो। वरमी नौरँगिया कै डारि, चँदन गछ महकै हो।—पलटू० भा० ३, पृ० ७३।

वरमेल्हो—सज्ञा पु० [पुर्त०] एक प्रकार का लाल चदन जो मलाया द्वीप से आता है।

वरम्म(पु)—सज्ञा पु० [स० वर्म] दे० 'वर्म'। उ०—नमसकार सुराँ नराँ, विरद नरेस वरम्म। रिजक उजालै साँम रौ, पानै साँम घरम्म।—बाकी० ग्र०, भा० १, पृ० १३।

वरमुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक गधद्रव्य। रेणुका [को०]।

वरयात्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विवाह के लिये वर का अपने इष्ट-मित्रो और सबधियो के सहित धूमधाम के साथ कन्या के घर जाना। दूल्हे का बाजे गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। २ वह भीड भाड जो दूल्हे के साथ चलती है। बरात।

वरयिता—सज्ञा पु० [सं० वरयितृ] १ वरण करनेवाला। २. पति। भर्ता।

वरयुवति, वरयुवती—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदरी स्त्री [को०]।

वररुचि—सज्ञा पु० [स०] एक अत्यत प्राचीन पडित, वैयाकरण और कवि।

विशेष—अष्टाध्यायीवृत्ति, प्राकृतप्रकाश, लिंगानुशासन, राक्षस काव्य आदि अनेक ग्रथ इनके नाम से प्रसिद्ध है, पर सब इनके नही बनाए हैं। इनका प्राकृत का व्याकरण 'प्राकृत प्रकाश' बहुत प्राचीन और प्रामाणिक माना जाता है। ये कब हुए, इसका ठीक ठीक निश्चय विद्वानो को अभी नही हुआ है। कथा सरित्सागर मे ये पाणिनि के सहाध्यायी और प्रतिद्वद्वी कहे गए है, पर यह कल्पना मात्र है। उसी ग्रथ मे वररुचि और कात्यायन एक हो गए ह, पर यह भी ठीक नही है। इसी प्रकार ज्योतिर्विदाभरण का नवरत्नवाला वह श्लोक भी, जिसमे वररुचि का नाम है, कपोलकल्पना मात्र है। 'प्राकृतप्रकाश' की भूमिका मे कावेल साहब ने वररुचि को इसा की पहली शताब्दी का ठहराया है, और कोई कोई इन्हे चद्रगुप्त मौर्य स भी पहले ईसा से ४०० वर्ष पूर्व का मानते ह। फिर भी ये पतजलि (ई० पू० १५७) मे एक दो शती पूर्ववर्ती थे, इसमे कोई सदेह नही है।

वरल—सज्ञा पुं० [स०] भिड। बर्रे [को०]।

वरलब्ध—सज्ञा पु० [स०] १ चपक वृक्ष। २ वह जो वररूप मे प्राप्त हो। वरदान के रूप मे प्राप्त वस्तु [को०]।

वरला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हसी। २ भिड। बर्रे (को०)।

वरली—सज्ञा स्त्री० [स०] भिड। बर्रे [को०]।

वरवत्सला—सज्ञा स्त्री० [स०] सास। पत्नी की माता [को०]।

वरवराह—सज्ञा पु० [स०] घुँघराले बालोवाला जगली आदमी। बर्बर।

वरवर्ण—सज्ञा पु० [स०] स्वर्ण। सोना [को०]।

वरवर्णिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तम स्त्री। २ लाख। ३ हल्दी। ४ गोरोचन। ५ कँगनी। काकुन। ६ गौरी। ७ लक्ष्मी। ८ सरस्वती। ९ महिला। स्त्री (को०)। १७. प्रियगु लता (को०)।

वरवाह्लीक—सज्ञा पु० [स०] कुकुम। केसर।

वरवृद्ध—सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव [को०]।

वरशिख—सज्ञा पु० [स०] एक असुर जिसे इद्र ने सपरिवार मारा था।

वरशीत—सज्ञा पु० [स०] दालचीनी। विशेष दे० 'दारचीनी' [को०]।

वरसाल(पु)†—सज्ञा पु० [स० वर्षाकाल] वर्षाऋतु। बरसात का मौसम। उ०—बिना नीर जहो कमल है बिन बरखा वरसाल।—राम० धर्म०, पृ० ६१।

वरसावरस(पु)†—सज्ञा पु० [स० वर्ष+प्रतिवर्ष] सालोसाल। प्रतिवर्ष। उ०—सोदौ उदियासिघ सूँ, कीधौ राम करार। सोझल लौ वरसावरस रुपिया सात हजार।—रा० रू०, पृ० २२४।

वरसुरत—वि० [स०] १. रति के भेदो का ज्ञाता। रतिज्ञ। २. कामी। भोगी। विलासी (को०)।

वरस्रक्—सज्ञा स्त्री० [स० वरस्रज्] वरमाल। वर को पहनाई जानेवाली माला [को०]।

वरहक—सज्ञा पु० [स०] एक जनपद का नाम ।

वरही[1]—सज्ञा पु० [हिं० वर] सोने की एक लबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है । टीका ।

वरही(पु)[2]—सज्ञा पु० [स० वर्हिन् । मयूर । दे० वर्ही' ।

वरही[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० बारह+ई (प्रत्य०)] प्रसूता का बारहवें दिन स्नान । दे० 'बरही' ।

वरही[4]—सज्ञा स्त्री० [देश०] मोटी रस्सी । दे० 'बरही[3]' ।

वराग[1]—सज्ञा पु० [स० वराङ्ग] १ मस्तक । २ गुदा । ३ योनि । ४ हस्ती । ५ विष्णु का एक नाम । ६ एक प्रकार का नक्षत्र-वत्सर जो ३२४ दिनो का होता है । ७ दारचीनी । ८ पेड की टहनी का सिरा । ९ कामदेव का एक नाम (को०) । १० मुख्य भाग । उत्कृष्ट अश (को०) । ११ सुदर रूप (को०) ।

वराग[2]—वि० सुदर एव सुघटित अश युक्त [को०] ।

वरागक—सज्ञा पु० [स० वराङ्गक] दारचीनी ।

वरागना—सज्ञा स्त्री० [स० वराङ्गना] सुदर स्त्री ।

वरागी—सज्ञा पु० [स० वराङ्गिन्] १ हाथी । २ अमलवेल ।

वरागी—सज्ञा स्त्री० [स० वराङ्गी] १ हल्दी । २. नागदती । ३ मजीठ ।

वरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ त्रिफला । रेणुका नामक गधद्रव्य । ३ गुरुच । ४ मेदा । ५ ब्राह्मी । ६ विडग । ७ पाठा । ८ हल्दी । ९ बैगन । १० अडहुल । जपा । देवीफूल । ११ मद्य । १२ सोमराजी लता । १३ अपराजिता । १४ शतमूली । १५ पार्वती का एक नाम (को०) ।

वराक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शिव । २ युद्ध । ३ पापडा ।

वराक[2]—वि० १ शोचनीय । २ नीच । ३ अशुचि । अशुद्ध (को०) ।

वराकक—सज्ञा पु० [स०] १ शिव । २ युद्ध । लडाई [को०] ।

वराकी—वि० स्त्री० [स०] दीन । भाग्यहीन । दु खिनी [को०] ।

वराजीवी—सज्ञा पु० [स० वराजीविन्] ज्योतिषी । गणक ।

वराट—सज्ञा पु० [स०] १ कौडी । २ रस्सी । ३ पद्मबीज । कँवलगट्टे का बीज ।

वराटक—सज्ञा पु० [स०] १ कौडी । २ रस्सी । ३ पद्म का बीज ।

वरातकरजा—सज्ञा पु० [स० वराटकरजस्] नागकेसर का पेड ।

वराटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कौडी । २ तुच्छ वस्तु । ३ नागकेसर ।

वराटी, वराडी—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक प्रकार का राग [को०] ।

वराण—सज्ञा पु० [स०] १ इद्र । २ वरुण वृक्ष । बरना ।

वराणसी—सज्ञा स्त्री० [स०] वाराणसी । काशी [को०] ।

वरानना—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदर स्त्री ।

वरान्न—सज्ञा पु० [स०] १ दला हुआ उत्तम अन्न । २ उत्तम खाद्य । उत्कृष्ट भोजन (को०) ।

वराभिद, वराभिध—सज्ञा पु० [स०] अम्लवेतस् । अमलवेद ।

वराम्ल—सज्ञा पु० [स०] करौदा ।

वरारक—सज्ञा पु० [स०] हीरा । हीरक ।

वरारणि—सज्ञा स्त्री० [स०] माता ।

वरारुह—सज्ञा पु० [स०] वृषभ । बैल । साँड [को०] ।

वरारोह[1]—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु । २ एक प्रकार का पक्षी । ३ चतुर सवार । ४ अश्वारोही वा गजारोही (को०) । ५ सवार होना । सवारी करना (को०) ।

वरारोह[2]—वि० [वि० स्त्री० वरारोहा] १ श्रेष्ठ सवारीवाला । २ जिसकी कटि या नितब सुदर हो (को०) ।

वरारोहा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदर स्त्री । वरवर्णिनी । २ कटि । कमर । [को०] ।

वरारोहा[2]—वि० स्त्री० नितबिनी । ऊँचे चक्राकार नितबोवाली [को०] ।

वरार्घक सज्ञा पु० [स०] पूजा की सामग्री जिसमे चदन, कुकुम और जल सम भाग होता है ।

वराल, वरालक—सज्ञा पु० [स०] १ लवग । लौग । २ दानी । दाता [को०] ।

वराला—सज्ञा स्त्री० [स०] हस्तिनी [को०] ।

वरालि—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा ।

वरालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा ।

वराशि—सज्ञा पु० [स०] मोटा कपडा ।

वरासत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ उत्तराधिकार । दायाधिकार । २. मृत पुरुष की सपत्ति जो उत्तराधिकार मे प्राप्त हो । रिक्थ । तरका [को०] ।

वरासतन्—वि० [अ०] उत्तराधिकार के रूप मे [को०] ।

वरासतनामा—सज्ञा पु० [अ० वरासत+फा० नामह्] उत्तराधिकार-पत्र । वरासत का कानूनी दस्तावेज [को०] ।

वरासन—सज्ञा पु० [स०] १ श्रेष्ठ आसन । ऊँचा आसन । २ विवाह मे वर के बैठने का आसन या पाटा । ३ जपा । देवी फूल । अडहुल । ४ हिजडा । खोजा । ५ द्वारपाल ।

वरासि—सज्ञा पु० [स०] १ मोटा कपडा । २ कृपाणधर पुरुष ।

वरासी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नहाने का मोटा कपडा । २ मैला कपडा । मलिन वस्त्र [को०] ।

वराह—सज्ञा पु० [स०] १ शूकर । सूअर । २ विष्णु । ३ मुस्ता । मोथा । ४ एक पर्वत का नाम । ५ एक मान । ६ सूँस । शिशुमार । ७ वराहीकद । ८ अठारह द्वीपो मे से एक छोटा द्वीप । ९ भेडा । मष (को०) । १० साँड (को०) । ११ बादल । मेघ (को०) । १२ मगर । घडियाल (को०) । १३ सेना का एक व्यूह । दे० 'वराह व्यूह' (को०) । १४ वराहमिहिर का नाम (को०) । १५ सिक्का (को०) । १६ एक प्रकार का तृण (को०) । १७ एक पुराण जो १८ पुराणो मे से है ।

वराहकद—सज्ञा पुं० [स० वराहकन्द] वराहीकद [को०] ।

वराहक—सज्ञा पुं० [स०] १ हीरा । २ शिशुमार । सूँस ।

वराहकर्ण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाण [को०] ।

वराहकर्णिका—संज्ञा स्त्री० [स०] एक अस्त्र का नाम [को०]।

वराहकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्वगंधा। असगंध।

वराहकल्प—संज्ञा पुं० [स०] वह कल्प या काल जिसमें विष्णु ने वराह अवतार धारण किया था [को०]।

वराहकांता—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाराही' [को०]।

वराहक्रांता—संज्ञा स्त्री० [स० वराहक्रान्ता] १ वाराही। २ लज्जालु। लजालू।

वराहकाली—संज्ञा स्त्री० [स०] सूर्यमुखी का फूल [को०]।

वराहपत्री—संज्ञा स्त्री० [स०] अश्वगंधा। असगंध।

वराहमिहिर—संज्ञा पु० [स०] ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य जिनके बनाए बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका और बृहज्जातक नामक ग्रंथ प्रचलित हैं।

विशेष—इनके समय के संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद कुछ वचनों के आधार पर प्रचलित हैं। जैसे,—ज्योतिर्विदाभरण के एक श्लोक में कालिदास, धन्वंतरि आदि के साथ वराहमिहिर भी विक्रम की सभा के नौ रत्नों में गिनाए गए हैं। पर इन नौ नामों में से कई एक भिन्न भिन्न काल के सिद्ध हो चुके हैं। अतः यह श्लोक प्रमाण के योग्य नहीं। इसी प्रकार कुछ लोग ब्रह्मगुप्त के टीकाकार पृथुस्वामी के इस वचन का आश्रय लेते हैं—'नवाधिक पंचशतसंख्य शाके वराहमिहिराचार्य्यो दिवंगत।' और शक ५०९ में वराहमिहिर की मृत्यु मानते हैं। पर अपनी पंचसिद्धांतिका में 'रोमकसिद्धांत' का 'अहर्गण' स्थिर करते हुए वराहमिहिर ने शक संवत् ४२७ लिया है। ज्योतिषी लोग अपना समय लेकर ही अहर्गण स्थिर करते हैं। अतः इससे ईसा की पाँचवीं शताब्दी में वराहमिहिर का होना सिद्ध होता है। अपने बृहज्जातक के उपसंहाराध्याय में आचार्य ने अपना कुछ परिचय दिया है। उसके अनुसार ये अवंती (उज्जयिनी) के रहनेवाले थे। 'कापित्थ' स्थान में सूर्यदेव को प्रसन्न करके इन्होंने वर प्राप्त किया था। इनके पिता का नाम आदित्यदास था।

वराहमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का मोती।

विशेष—जैसे, 'गजमुक्ता' हाथी से उत्पन्न मानी जाती है, वैसे ही यह सूअर से उत्पन्न मानी जाती है।

वराहव्यूह—संज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का व्यूह या सेना की रचना, जिसमें अग्र भाग पतला और बीच का भाग चौड़ा रखा जाता था।

वराहशिला—संज्ञा स्त्री० [स०] एक विचित्र पवित्र शिला जो हिमालय के शिखर पर है।

वराहशृंग—संज्ञा पुं० [स० वराहशृङ्ग] शिव।

वराहशैल—संज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम।

वराहसंहिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वराहमिहिर रचित ज्योतिष की बृहत्संहिता नाम की प्रसिद्ध पुस्तक।

वराहांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वराहाङ्गी] क्षुद्रदंती।

वराहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवाँच। कौंच।

वराही—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूअरी। शूकरी। २ भद्रमुस्ता। नागरमोथा। ३ वाराहीकंद। ४ अश्वगंधा। ५ एक प्रकार का पक्षी जो गौरैया के बराबर और काले रंग का होता है। ६. दे० 'वाराही'।

वराहु—संज्ञा पुं० [स०] शूकर। सूअर।

वरिता—वि० [स० वरित] १ वरण करनेवाला। २ ढकनेवाला [को०]।

वरिमा—संज्ञा स्त्री० [स० वरिमन्] १ श्रेष्ठता। उत्तमता। प्रमुखता। २ विस्तार। आयाम। परिणाह। ३ मंडल। घेरा [को०]।

वरिवसित—वि० [स०] पूजित। संमानित। उपासित [को०]।

वरिवसिता—संज्ञा पु० [सं० वरिवसितृ] उपासक। भक्त [को०]।

वरिवस्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १ उपासना। पूजा। २ सेवा। शुश्रूषा।

वरिवस्यित—वि० [स०] दे० 'वरिवसित'।

वरिशो—संज्ञा स्त्री० [स०] मछली फँसाने की कँटिया। बंसी [को०]।

वरिष—संज्ञा पुं० [स०] वर्ष। वत्सर।

वरिषा—संज्ञा स्त्री० [स० वर्षा ?] वर्षा ऋतु। बरसात [को०]।

यौ०—**वरिषाप्रिय** चातक पक्षी।

वरिष्ठ[1]—वि० [सं०] १ श्रेष्ठ। पूजनीय। उ०—भाव देख उन एक महा व्रतनिष्ठ के, भर आए युग नेत्र वरिष्ठ वशिष्ठ के।—साकेत, पृ० १०८। २ बहुत बड़ा। अत्यंत विस्तृत (को०)। ३ बहुत वजनी। अत्यंत भारी (को०)। ४ खराब। अत्यंत दुष्ट (को०)।

वरिष्ठ[2]—संज्ञा पु० १ तित्तिर पक्षी। तीतर। २ चाक्षुष मनु के पुत्र का नाम। ३ धर्म सावर्णि मन्वंतर के सप्त ऋषियों में से एक। ४ ताम्र। ताँबा। ५ सिर्वा। ६ उत्तमन् ऋषि का एक नाम। ७ नारंगी का पौधा (को०)।

वरिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ हलदी। २ हुरहुर नाम का पौधा।

वरिस(पु)—संज्ञा पुं० [स० वरिष] दे० 'वरिष' या 'वर्ष'। उ०—दरबार बरहे दिवस भइट्टे, वरिसहु भेट्ट न पावता।—कीर्ति०, पृ० ४६।

वरिष्ठिष्ठ—संज्ञा पु० [स०] १ उशीर। खस। २ सुगंधवाला।

वरी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ शतावरी। सतावर। २ सूर्य की पत्नी। छाया।

वरीता—वि० [स० वरीतृ] दे० 'वरिता' [को०]।

वरीमा—संज्ञा स्त्री० [स० वरीमन्] दे० 'वरिमा' [को०]।

वरीयान्[1]—वि० [सं० वरीयस्] १ श्रेष्ठ। २ अति पूजा।

वरीयान्[2]—संज्ञा पुं० १ फलित ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों में से अठारहवाँ योग।

विशेष—इस योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य दयालु दाता, सुंदर, सत्कर्म करनेवाला और मधुर स्वभाव का होता है।

२ पुलह ऋषि के एक पुत्र का नाम।

वरीवर्द—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वलीवर्द' [को०]।

वरीषु—संज्ञा पु० [सं०] कामदेव।

वरीसिय(पु)—वि० [स० वरीयस्] प्रगाढ। घनघोर। बहुत बडा। उ०—मनु सहित उडगन नवग्रहनु मिल जुद्ध रच्चि वरीसिय।—सुजान०, पृ० १६।

वरीसणहार(पु)—वि० [स० वर्षण, हिं० वरीसना+हार] बरसने-देनेवाला। उ०—लक वरीसणहार मुण, दमकवर दुख मीह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ४६।

वरु—अव्य० [अ० वल्कि, हिं० वरुक, वरु] बल्कि। उ०—खेदि देहे वरु निकलि जाउ, मोरे नामे भिखि मागि खाउ।—विद्यापति, पृ० १३।

वरुक—सज्ञा पु० [स०] एक मोटा अन्न। एक कदन्न [को०]।

वरुट—सज्ञा पु० [स०] म्लेच्छो की एक जाति [को०]।

वरुड—सज्ञा पु० [स०] बाँस, बेंत आदि से कुर्सी, चटाई आदि बनानेवाली एक जाति का नाम [को०]।

वरुण—सज्ञा पु० [स०] १ एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओ का नाशक और देवताओ का रक्षक कहा गया है। पुराणो मे वरुण की गिनती दिक्पालो मे है और वह पश्चिम दिशा का अधिपति माना गया है। वरुण का अस्त्र पाश है।

विशेष—बहुत प्राचीन वैदिक काल मे वरुण प्रधान देवता थे, पर क्रमश उनकी प्रधानता कम होती गई और इद्र को प्रधानता प्राप्त हुई। वरुण अदिति के आठ पुत्रो मे कहे गए हैं। निरुक्तकार इन्हे द्वादश आदित्यो मे बतलाते हैं। ऋग्वेद मे वरुण के अनेक मत्र है, जिनमे से कुछ के सबध मे ऐतरेय ब्राह्मण मे शुन-शेफ की प्रसिद्ध गाथा है। इसके अनुसार 'हरिश्चद्र वैधस' नामक एक राजा ने पुत्रप्राप्ति के लिये वरुण की उपासना की। वरुण ने पुत्र दिया, पर यह वचन लेकर कि उसी पुत्र से तुम मेरा यज्ञ करना। पुत्र का नाम रोहित हुआ। जब वह कुछ बडा हुआ और उसे यह पता चला कि मुझे वरुण के यज्ञ मे बलिपशु बनना पडेगा, तब वह जगल मे भाग गया। वहाँ उसे इद्र घर लौटने को बराबर मना करते रहे। अत मे राजा ने अजीगर्त नामक एक ऋषि को सौ गौएँ देकर उनके पुत्र शुन शेफ को बलि के लिये मोल लिया। जब शुन शेफ यूप मे बाँधा गया, तब वह अपने छुटकारे के लिये प्रजापति, अग्नि, सविता आदि कई देवताओ की स्तुति करने लगा। अत मे वरुण की स्तुति करने से उसका उद्धार हुआ। ऋग्वेद मे वरुण के कुछ मत्र वे ही हैं, जिन्हे पढकर शुन शेफ ने स्तुति की थी।

पुराणो मे वरुण कश्यप के पुत्र कहे गए हैं। भागवत मे लिखा है कि चर्षणी नाम्नी पत्नी से वरुण को भृगु और वाल्मीकि नामक दो पुत्र हुए थे। वरुण अब तक जल के देवता माने जाते हैं और जलाशयोत्सर्ग मे इनका पूजन होता है। साहित्य मे ये करुण रस के अधिष्ठाता माने गए हैं।

पर्या०—प्रचेतस। पाशी। यादसांपति। अपति। अप्पति। यादपति। अपांपति। जवूक। मेघनाद। परजय। वारिलोम। कुहली।

२. वरुण का पेड। ३. जल। पानी। ४. समुद्र (को०)। ५. आकाश (को०)। ६ सूर्य। ७ एक ऋषि का नाम। ८ एक ग्रह का नाम जिसे अँगरेजी मे 'नेपचून' कहते हैं। (आधुनिक)।

वरुणक—सज्ञा पुं० [स०] बरना का वृक्ष।

वरुणकुमार—सज्ञा पु० [स०] अगस्त्य ऋषि। उ०—उन वरुणकुमार अगस्त्य जी की स्तुति करने का फल हम कहाँ तक कहें।—बृहत्०, पृ० ७६।

वरुणगृहीत—वि० [स०] जलोदर रोग से पीडित। जलोदर का रोगी [को०]।

वरुणग्रह—सज्ञा पुं० [सं०] घोडो का एक रोग जो अचानक हो जाता है।

विशेष—इस रोग मे घोडे का तालू, जीभ, आँख और लिंगेंद्रिय आदि अग काले रग के हो जाते हैं। उसका शरीर भारी हो जाता है और पसीना छूटता है। यह रोग भयानक होता है और बहुत यत्न करने पर घोडे के प्राण बचते हैं।

२ वरुण नाम का ग्रह। नेपचून।

वरुणघृत—सज्ञा पु० [स०] घृत मे बनी हुई एक औषध जो अश्मरी (पथरी) रोग मे दी जाती है।

विशेष—इसमे बरना नामक पेड की छाल को जल और घी में जलाकर क्वाथ बनाया जाता है।

वरुणदेव—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वरुणदैवत' [को०]।

वरुणदैवत—सज्ञा पुं० [सं०] शतभिषा नक्षत्र।

वरुणपाश—सज्ञा पुं० [स०] १ वरुण का अस्त्रपाश या फंदा। २ नाक नामक जलजतु। नक्र।

वरुणप्रघास—सज्ञा पुं० [स०] एक व्रत या कृत्य जो आषाढ या श्रावण की पूर्णिमा के दिन किया जाता है।

विशेष—इसमे लोग जौ का सत्तू खाकर रहते हैं। इस व्रत का फल यह कहा गया है कि व्रत करनेवाला जल मे डूबता नही और उसे मगर, घडियाल आदि जलजतु नही पकडते।

वरुणप्रघासा—सज्ञा स्त्री० [स०] पति द्वारा पत्नी से उसके प्रेमियो के बारे मे पूछताछ की रीति। उ०—वरुणप्रघासा उस रीति को कहते थे, जिसमे पति अपनी पत्नी से उसके प्रेमियो के बारे मे पूछता था।—प्रा० भा० प०, पृ० ६०।

वरुणप्रस्थ—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के पश्चिम मे था।

वरुणमडल—सज्ञा पुं० [स० वरुणमण्डल] नक्षत्रो का एक मडल जिसमे रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल, उत्तराभाद्रपद और शतभिषा है। उ०—रेवती आदि सात नक्षत्र वरुणमडल के है।—बृहत्०, पृ० १४६।

वरुणा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वरुणा'। उ०—वरुणा असी गग के तीरा।—कबीर सा०, पृ० १५८१।

वरुणागरुह—सज्ञा पु० [स० वरुणाङ्गरुह] वरुणकुमार। अगस्त्य मुनि का एक नाम [को०]।

वरुणात्मज—सज्ञा पु० [स०] जमदग्नि ऋषि [को०]।

वरुणात्मजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वारुणी। सुरा। मदिरा। शराब।

विशेष—पुराणों में यह समुद्रमथन से उत्पन्न कही गई है।

वरुणादिगण—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ों और पौधों का एक वर्ग।

विशेष—सुश्रुत में इस वर्ग के अंतर्गत बरुन, नील झिंटी, सहिंजन, जपती मेढासींगी, पूतिका, नाटकरंज, अग्निमंथ (अगेंथू), चीता, शतमूली, वेल, अजशृंगी, डाभ, बृहती और कटकारी (भटकटैया) हैं। (सुश्रुत)।

वरुणानी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण की स्त्री।

वरुणालय—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र।

वरुणावास—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र। [को०]।

वरुणावि—संज्ञा स्त्री० [सं०] वरुण से आविर्भूत, लक्ष्मी [को०]।

वरुणेश—संज्ञा पुं० [सं०] शतभिषा नक्षत्र। दे० 'वरुण दैवत' [को०]।

वरुणोद—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र।

वरुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] उपरना। उत्तरीय [को०]।

वरुल—वि० [सं०] १ सभक्त। वितरित। विभाजित। २ सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। [को०]।

वरूथ—संज्ञा पुं० [सं०] १ तनुत्राण। बकतर। २ ढाल। ३ लोहे की चद्दर या सीकड़ों का बना हुआ आवरण या झूल जो शत्रु के आघात से रथ को रक्षित करने के लिये उसके ऊपर डाली जाती थी। ४ सैन्य। सेना। फौज। ५ एक प्राचीन ग्राम (रामायण)। ६ दल। झुंड। समूह (को०)। ७ रक्षण। बचाव (को०)। ८ परिवार (को०)। ९ कोयल। कोकल (को०)। १० गृह। घर (को०)। ११ समय। काल (को०)।

वरूथप—संज्ञा पु० [सं०] सेनापति।

वरूथवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेना। फौज [को०]।

वरूथाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] सेनापति।

वरूथिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना। २. वैशाख कृष्ण एकादशी (को०)।

वरूथी[1]—संज्ञा पुं० [पं० वरूथिन्] [स्त्री० वरूथिनी] १ हाथी की काठी। २ रक्षक। प्रहरी। (को०) ३ रक्षास्थान या घेरा (को०)। ४ रथ (को०)।

वरूथी[2]—वि० १ रथारूढ़। २ कवच या बकतर धारी। ३ सेना से घिरा हुआ या रक्षित। ४ रक्षक। बचानेवाला [को०]।

वरूनी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० वरुण] बरनी। वरुण। उ०—सो ब्राह्मन ने रुपैया ले कै वरूनी कराई। महादेव के नाम को जज्ञ कियो। बेहोत जतन किए।—दो सौ बावन—भा० २, पृ० ४५।

वरेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वरेन्द्र] १ राजा। २ इंद्र। ३ बंगाल का एक भाग।

वरेंद्री—संज्ञा स्त्री० [सं० वरेन्द्री] गौड़ देश [को०]।

वरे—अव्य० [हिं०] परे। उधर।

वरेण—संज्ञा पुं० [सं०] बर्रे। भिड़ [को०]।

वरेणुक—संज्ञा पु० [सं०] अनाज। अन्न [को०]।

वरेण्य[1]—वि० [सं०] १ प्रधान। मुख्य। २ वरणीय। पूजनीय। ३ जिसकी कामना की जाय (को०)।

वरेण्य[2]—संज्ञा पु० १ भृगु के एक पुत्र का नाम। २ महादेव। ३ कुंकुम। केसर। ४ पितृगणों का एक वर्ग (को०)।

वरेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] शिव [को०]।

वरोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ मरुवा। मरुवाक। २ मरुवा का पुष्प (को०)।

वरोरु—वि० स्त्री० [सं०] १ श्रेष्ठ जघोवाली। २ सुंदरी।

वरोरू—वि० स्त्री० [सं०] दे० 'वरोरु'।

वरोल—संज्ञा पु० [सं०] बर्रे। भिड़ [को०]।

वर्क—संज्ञा पुं० [अ०] कार्य। काम।

वर्कट—संज्ञा पु० [सं०] १ हाथी का बंधन जो लकड़ी का बना हुआ और काँटेदार होता है। २ काँटा। कील। ३ अगरी। अर्गल।

वर्कण—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान बकरी। पठिया।

वर्कर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जवान पशु। २ बकरा। ३ भेड़ का बच्चा। मेमना। ४ आमोद प्रमोद। परिहास।

यौ०—वर्कर कर्कर = मेढा, बकरा आदि बाँधने का चमड़े का फीता या रस्सी।

वर्कर[2]—संज्ञा पुं० [अं०] कार्यकर्ता। काम करनेवाला।

वर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जवान बकरी। पठिया [को०]।

वर्करांट—संज्ञा पुं० [सं०] १ कटाक्ष। २ मध्याह्न के सूर्य की प्रभा। ३ स्त्री के कुच के किनारे लगा हुआ नखक्षत।

वर्किंग कमिटी—संज्ञा स्त्री० [अ०] कार्यकारिणी समिति। जैसे—कांग्रेस वर्किंग कमिटी।

वर्कुर—संज्ञा पुं० [सं०] किल्ली। कील [को०]।

वर्ग—संज्ञा पु० [सं०] १ एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। जाति। कोटि। गण। श्रेणी। २ आकार प्रकार में कुछ भिन्न, पर कोई एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का समूह। जैसे, अंतरिक्ष वर्ग शूद्र वर्ग, ब्राह्मण वर्ग। ३ शब्दशास्त्र में एक स्थान से उच्चरित होनेवाला स्पर्श व्यंजन वर्णों का समूह। जैसे,—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, इत्यादि।

विशेष—ज्योतिष में स्वर अंतस्थ और ऊष्म वर्ण भी (जैसे,—अ, य, श,) क्रमशः अवर्ग, यवर्ग और शवर्ग के अंतर्गत रखे गए हैं। इस प्रकार ज्योतिष के व्यवहार के लिये सब वर्णों के विभाग 'वर्ग' के अंतर्गत किए गए हैं और अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, यवर्ग, तथा शवर्ग के स्वामी क्रमशः सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध, बृहस्पति, शनि और चंद्रमा कहे गए हैं।

४ ग्रंथ का विभाग। परिच्छेद। प्रकरण। अध्याय। ५ दो समान अंकों या राशियों का घात या गुणनफल। जैसे,—३ का ९, ५ का २५ (३ × ३ = ९। ५ × ५ = २५)। ६. वह चौकोंटा क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर और चारों कोण समकोण हों। (रेखागणित)। ७ शक्ति। सामर्थ्य (को०)। ८. अर्थ, धर्म तथा काम का निर्वाह (को०)।

वर्गचर—सज्ञा पुं० [स०] पढ़ना या पढ़िना मछली। पाठीन।

वर्गघन—सज्ञा पुं० [स०] वर्ग का घन।

वर्गण—सज्ञा पु० [स०] गुणन। घात।

वर्गणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गुणन। घात। २ सचयन। एकत्री करण। राशि। ३ श्रेणी। विभाग। विभाजन [को०]।

वर्गपद्—सज्ञा पु० [स०] वह अक जिसके घात से कोई वर्गाक बना हो। वर्गमूल।

वर्गफल—सज्ञा पु० [स०] वह गुणनफल जो दो समान राशियो के घात से प्राप्त हो। वह अक जो किसी अक को उसी अक के साथ गुणा करने से आवे। जैसे,—५ का वर्गफल २५ होता है।

वर्गभेद—सज्ञा पु० [स०] दो या अधिक वर्गों वा श्रेणियो का पारस्परिक अतर। उ०—इसलिये वगभेद और द्वेष दिन पर दिन वढता ही गया।—भा० इ० रू०, पृ० ६७।

वर्गमूल—सज्ञा पुं० [स०] किसी वर्गाक का वह अक जिसे यदि उसी से गुणन करें, तो गुणन वही वर्गाक हो। जैसे,—४ वर्गाक का वर्गमूल २ और २५ का ५ होगा।

वर्गवर्ग—सज्ञा पुं० [स०] वर्ग का वर्ग। जैसे,—३ का वर्ग ९ और उसका वर्ग ८१ (९×९) हुआ [को०]।

वर्गलाना—क्रि० स० [फा० 'वरगला नीदन' से] १ कोई काम करने के लिये उभारना। कुछ करने के लिये उत्तेजित करना। उकसाना। २ बहकाना। फुसलाना।

वर्गश—क्रि० वि० [सं० वर्गशस्] वर्गों के अनुसार। वर्गों के क्रम से [को०]।

वर्गस्थ—वि० [स०] वर्ग के साथ रहनेवाला। पक्षपाती। तरफदार [को०]।

वर्गाक—सज्ञा पु० [स० वर्ङ्गाक] वह अक जो किसी अक का वर्ग हो [को०]।

वर्गात्य—सज्ञा पु० [स० वर्गान्त्य] व्याकरण मे वर्ग का अतिम अक्षर। नासिक्य वर्ण।

वर्गाष्टक—सज्ञा पु० [स०] व्यजनो के आठ वर्ग। जैसे, कवर्ग, चवर्ग आदि [को०]।

वर्गी[1]—वि० [स० वर्गिन्] किसी वर्ग या पक्ष मे सबधित।

वर्गी[2]—सज्ञा पुं० वर्ग का नेता [को०]।

वर्गीकरण—सज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओ को विभिन्न वर्गों में बाँटना [को०]।

वर्गीकृत—वि० [सं०] १ वर्गों मे बँटा हुआ। २ गणित मे जिसका वर्ग किया गया हो [को०]।

वर्गीण—वि० [स०] वर्गी। वर्ग से सबद्ध [को०]।

वर्गीय[1]—वि० [सं०] किसी वर्ग से सबद्ध [को०]।

वर्गीय[2]—सहपाठी [को०]।

वर्गोत्तम—सज्ञा पु० [स०] १ फलित ज्योतिष मे राशियो के वे श्रेष्ठ अश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

विशेष—चर राशि (मेष, कर्कट, तुला, मकर) का प्रथम अश, स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुभ) का पचम अश और द्वयात्मक राशि (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) का नवम अश वर्गोत्तम कहा जाता है। इसके अतिरिक्त राशियो का नवाश भी वर्गोत्तम कहा जाता है।

२ नासिक्य वा अनुनासिक वर्ण। द० 'वर्गात्य' (को०)।

वर्ग्य[1]—वि० [सं०] एक ही वर्ग, जाति या समूह मे संबद्ध। (व्यक्ति, पदार्थ आदि)।

वर्ग्य[2]—सज्ञा पुं० १ सहयोगी। २ वर्गाय। सहाध्यायी [को०]।

वर्च स्थान—सज्ञा पुं० [स०] पाखाना। (परा० स्मृति)।

वर्चटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वेश्या। पातुर। २ एक प्रकार का धान [को०]।

वर्चस्—सज्ञा पुं० [स०] [वि० वर्चस्वान्, वर्चस्वी] १ रूप। २ तेज। कांति। दीप्ति। ३ अन्न। ४ निष्ठा। ५ शक्ति। शौर्य (को०)। ६ शुक्र। वीर्य (को०)।

वर्चस्क—सज्ञा पुं० [सं०] १ दीप्ति। तेज। २ विष्ठा। ३ शौर्य। शक्ति (को०)।

वर्चस्य—वि० [सं०] १ तेजवर्धक। २ रेचक। दस्तावर (को०)।

वर्चस्व—सज्ञा पु० [सं० वर्चस्] १ शक्ति। २ प्रधान्य। उ०—मेरी प्रार्थना यह है कि वे महानुभाव जीवन को सर्वांगरूप में समझने मे अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं जब वे काव्य या कला में घोर पदार्थमूलक उपयोगितावाद का ही वर्चस्व चाहने लगते है।—कुकुम, पृ० ७।

वर्चस्वान्—वि० [सं० वर्चस्वत्] [स्त्री० वर्चस्विणी] १ वर्चस् युक्त। शक्तिमान्। २ तेजवान्। दीप्तियुक्त। समुज्वल।

वर्चस्वी[1]—वि० [स० वर्चस्विन्] [स्त्री० वर्चस्विणी] १ तेजस्वी। दीप्तियुक्त। २ शौर्यशाली। शक्तिमान।

वर्चस्वी[2]—सज्ञा पुं० [सं०] चद्रमा।

वर्चा—सज्ञा पु० [स० वर्चस्] बुध। चद्रमा का पुत्र [को०]।

वर्चोग्रह—सज्ञा पुं० [स०] कब्ज। कोष्ठबद्धता [को०]।

वर्चोभेद—सज्ञा पु० [स०] अतीसार [को०]।

वर्चोमार्ग—सज्ञा पुं० [स०] गुदा [को०]।

वर्चोवानग्रह—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वर्चोग्रह' [को०]।

वर्ज[1]—सज्ञा पु० [स०] परित्याग। छोट देना [को०]।

वर्ज[2]—वि० छोडा हुआ। परित्यक्त [को०]।

वर्जक—वि० [स०] १ वर्जन करनेवाला। २ त्यागनेवाला [को०]।

वर्जन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १ त्याग। छोडना। २ ग्रहण या आचरण का निषेध। मनाही। मुमानियत। ३ हिंसा। मारण। ४ अपवाद (को०)।

वर्जना[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्जन। निषेध। मनाही। उ०—प्रभु की वह सौम्य वर्जना।—साकेत, पृ० ३५७।

वर्जना[2]—क्रि० स० [स० वर्जन] १ वरजना। मना करना। निषेध करना। २ त्यागना। छोडना।

वर्जनीय—वि० [स०] १ छोडने योग्य। न ग्रहण करने योग्य। त्याज्य। २ निषेध के योग्य। निषिद्ध। मना।

वर्जयिता—वि० [स० वर्जयितृ] १ वर्जन करनेवाला। २ त्यागनेवाला। छोडनेवाला।

वर्जित—वि० [स०] १ त्यागा हुआ। छोडा हुआ। त्यक्त। २ जो ग्रहण के अयोग्य ठहराया गया हो। अग्राह्य। निषिद्ध। जैसे,—कलि मे नियोग वर्जित है। ३ रहित। जैसे, गुणवर्जित।

वर्जिश—सज्ञा स्त्री० [फा० वर्जिश] दे० 'वरजिश'।

वर्जी—वि० [स० वर्जिन्] दे० 'वर्जक' [को०]।

वर्ज्य[1]—वि० [स०] १ छोडने योग्य। त्याज्य। वर्जनीय। २ जिसका निषेध किया गया हो। जो मना हो। ३ अपवाद योग्य (को०)।

वर्ज्य[2]—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा की एक विशेष स्थिति जिसमे नया काम निषिद्ध होता है [को०]।

वर्ण—सज्ञा पु० [स०] १ पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदो का नाम। रग। विशेष दे० 'रग'। २ जनसमुदाय के चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जो प्राचीन आर्यों ने किए थे। जाति।

विशेष—इस शब्द का प्राचीन प्रयोग ऋग्वेद मे है। वहाँ यह जनता के दो वर्गों आर्यों और दस्युओ को सूचित करने के लिये हुआ है। यह विभाग पहले रग के आधार पर था, क्योकि आर्य गोरे थे और दस्यु या अनार्य काले। पर पीछे यह विभाग व्यवसाय के आधार पर हुआ और चार वर्ण माने गए। पुरुषसूक्त मे चारो वर्णों की उत्पत्ति का आलकारिक रूप से इस प्रकार वर्णन है कि ब्राह्मण ईश्वर के मुख से, क्षत्रिय बाहु से, वैश्य जघे से और शूद्र पैर से उत्पन्न हुए। इस व्यवस्था के अनुसार 'वर्ण' शब्द की व्युत्पत्ति 'वृ' धातु से बताई जाती है, जिसका अर्थ है 'चुनना'। अत 'वर्ण' शब्द का अर्थ हुआ व्यवसाय। स्मृतियो मे भिन्न भिन्न वर्णों के धर्म निरूपित हैं। जैसे, ब्राह्मण का धर्म—अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह, क्षत्रिय का धर्म—प्रजारक्षा, दान, यज्ञानुष्ठान और अध्ययन, वैश्य का धर्म—पशुपालन, कृषि, दान, यज्ञ और अध्ययन, शूद्र का धर्म—तीनो वर्णों की सेवा। व्यवसायभेद और सब देशो में भी चला आ रहा है, पर भारतीय आर्यों की लोकव्यवस्था मे वह व्यवसायो के विचार से जातिगत या जन्मना माना गया है। इसी 'वर्ण' और 'आश्रम' की व्यवस्था को भारतीय आर्य अपना विशेष लक्षण मानते थे और अपने धर्म को 'वर्णाश्रम धर्म कहते थे।

३. भेद। प्रकार। किस्म। ४. आकारादि शब्दो के चिह्न या सकेत अक्षर। ५ गुण। ६ यश। कीर्ति। ७ स्तुति। बडाई। ८ स्वर्ण। सोना। ९ मृदग का एक ताल जो चार प्रकार का होता है—पाट, विधि पाट, कूट पाट और खड पाट। १० रूप। ११. अंगराग। विलेपन। १२ कुकुम। केसर। १३ चित्र। तसवीर। १४ रग। रोगन (को०)। १५. रग ढग। आकृति। बाह्य रूप (को०)। १६. पोशाक। वेशभूषा (को०)। १७. एक प्रकार का ढीला ढाला अंगरखा। लबादा (को०)। १८ ढकन। आवरण (को०)। १९ हाथी की झूल (को०)। २० उपवास। व्रत (को०)। २१ अज्ञात राशि (को०)। २२ एक की सख्या (को०)। २३ एक माप (को०)। २४ एक गध-द्रव्य (को०)।

वर्णकट—सज्ञा पुं० [स० वर्णकण्ट] तूतिया।

वर्णक—सज्ञा पु० [स०] १ हरताल। २ अनुलेपन। उबटन। ३ चदन। ४ पिसी हुई हल्दी आदि जो देवताओ को चढाई जाती है। ५ मडल। ६ चारण। ७ रग। ८ अभिनेताओ के परिधान या परिच्छद। ९ चित्रकार। १० विभाग। अध्याय। परिच्छेद (को०)। ११ सिंदूर (को०)। १२ चित्रलेखन (को०)। १३ ढाँचा। रूपरेखा (को०)। १४ अक्षर। वर्ण। १५ वक्ता। व्याख्याता (को०)। १६ कलम। लेखनी। उ०—ललितविस्तर के अध्याय १० (अंग्रेजी अनुवाद, पृ० १८१–१८५) मे बुद्ध का लिपिशाला मे जाकर अध्यापक विश्वामित्र से चदन की पाटी पर वर्णक (कलम) से लिखना सीखने का वृत्तात मिलता है।—भा० प्रा० लि०, पृ० ६।

वर्णका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नृत्यादि के समय अभिनेताओ का परिच्छद या परिधान। २ रग। रोगन। ३ उच्च कोटि का सोना। ४ सेंदुर। ईंगुर [को०]।

वर्णकवि—सज्ञा पु० [स०] कुबेर के एक पुत्र का नाम [को०]।

वर्णकूपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दावात। मसिपात्र [को०]।

वर्णक्रम—सज्ञा पु० [स०] १ अक्षरानुक्रम। २ जाति या रगो का क्रम [को०]।

वर्णखडमेरु—सज्ञा पु० [स० वर्णखण्डमेरु] पिंगल या छदशास्त्र मे वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए मेरु का काम निकल जाता है। अर्थात् यह ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त मे कितने गुरु और कितने लघु होगे।

विशेष—जितने वर्णों का खडमेरु बनाना हो, उतने से एक कोष्ठ अधिक बाईं से दाहिनी ओर को बनावे। फिर उन्ही कोष्ठो के नीचे पहला स्थान छोड़कर दूसरे स्थान से आरंभ करके ऊपर से एक कोष्ठ कम बनावे। इसी प्रकार उसी स्थान से नीचे एक कोष्ठ कम बराबर बनाता जाता जाय, जब तक एक कोष्ठ न आ जाय। इन कोष्ठो को इस प्रकार भरे, कोष्ठो की पहली पक्ति मे बाईं ओर से सब मे एक एक का अक लिखे। दूसरी पक्ति के पहले कोष्ठ से आरंभ करके क्रमश २, ३, ४, ५, ६, आदि अत तक लिख जाय। इसके अनतर कोष्ठो की प्रथम पक्ति के तीसरे अक से उत्तरोत्तर नीचे की ओर वक्रगति से अको को जोडकर अगले खानो मे रखता जाय। अतिम कोष्ठो मे जो अक होंगे, वे लघु गुरु के हिसाब से वृत्तो के भेद सूचित करेंगे। उदाहरणार्थ आठ वर्णों का खडमेरु बनाना हो, तो इस प्रकार करे—

वर्णखंडमेरु की आकृति—

१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२	३	४	५	६	७	८	
	३	६	१०	१५	२१	२८		
	४	१०	२०	३५	५६			
	५	१५	३५	७०				
	६	२१	५६					
	७	२८						
	८							

वर्ण वृत्तो मे एक भेद ऐसा होगा जिसमे सब गुरु होगे, और एक ऐसा होगा, जिसमे सब लघु होगे अत सर्वगुरु से आरभ करके एक एक गुरु घटाते जायँ, तो भेदो की सख्या इस प्रकार होगी। १ भेद ऐसा होगा, जिसमे सब (८) गुरु होगे। ८ भेद ऐसे ऐसे होगे जिनमे १ लघु और ७ गुरु होगे। ८ भेद ऐसे होगे जिनमे २ लघु और ६ गुरु होगे। ५६ भेद ऐसे होगे, जिनमे ३ लघु और ५ गुरु होगे। ७० भेद ऐसे होगे, जिनमे ४ लघु और ४ गुरु होगे। ५६ भेद ऐसे होगे, जिनमे ५ लघु और ३ गुरु होगे। २८ भेद ऐसे होगे, जिनमे ६ लघु और २ गुरु होगे। ८ भेद ऐसे होगे जिनमे ७ लघु और १ गुरु होगा। एक भेद ऐसा होगा, जिसमे सब लघु होगे।

वर्णगत—वि० [स०] १ रगीन। रग या वर्ण युक्त। २ बीज गणित सबधी [को०]।

वर्णगुरु—सज्ञा पु० [स०] राजा का पुत्र। राजकुमार। राजा [को०]।

वर्णग्रथणा—सज्ञा पुं० [स०] पद्यरचना की एक पद्धति [को०]।

वर्णचारक—सज्ञा पुं० [स०] चित्रकार [को०]।

वर्णचित्र—सज्ञा पु० [स०] रगो के द्वारा बना चित्र। रगीन चित्र। उ०—इस काल मे भी वर्णचित्र और रेखाचित्र भी बने जरूर होगे।—भा० इ० रू०, पृ० ३७।

वर्णज्येष्ठ—सज्ञा पु० [सं०] सब वर्णों मे बडा, ब्राह्मण।

वर्णतर्णक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वर्णतर्णिका] चटाई या बिछाने के काम मे प्रयुक्त ऊनी वस्त्र। ऊन की दरी [को०]।

वर्णतूलि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते हैं। कलम।

वर्णतूलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्णतूलि'।

वर्णतूली—सज्ञा स्त्री० [स०] चित्र बनाने की कूँची। दे० 'वर्णतूलि'।

वर्णद[1]—सज्ञा पु० [स०] कालीयक। एक प्रकार की पीली लकडी [को०]।

वर्णद[2]—वि० रग देनेवाला। रँगनेवाला [को०]।

वर्णदात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] हरिद्रा। हल्दी [को०]।

वर्णदूत—सज्ञा पु० [स०] लिपि। लेख।

वर्णदूषक—सज्ञा पु० [स०] अपने ससर्ग से दूसरे को जातिभ्रष्ट करनेवाला। पक्तिदूषक। पतित मनुष्य।

वर्णधर्म—सज्ञा पु० [स०] वर्णों या जातियो का पृथक् पृथक् धर्म। जातिधर्म [को०]।

वर्णधर्मी—वि० [स० वर्णधर्मिन्] वर्णव्यवस्था को माननेवाला। वर्णों के धर्म मे विश्वास रखनेवाला। उ०—यह मर्यादा उन आर्य, अनार्य, अनुलोम, सकर सभी पर लागू हो, जो वर्णधर्मी हो।—वैशाली०, पृ० ३४०।

वर्णधातु—सज्ञा पु० [स०] गेरु, ईंगुर आदि रग के काम मे आनेवाली धातु।

वर्णन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १ चित्रण। रँगना। २ किसी बात को सविस्तार कहना। कथन। बयान। उ०—सो चौबीस रूप निज कहियत वर्णन करत विचार।—सूर (शब्द०)। ३. स्तवन। प्रशसा। गुणकथन। तारीफ। ४ लिखना। लेखन (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

वर्णनष्ट—सज्ञा पु० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तो के अमुक सख्यक भेद का रूप लघु गुरु के हिसाब से कैसा होगा।

विशेष—जितने वर्ण के प्रस्तार के किसी भेद का रूप निकालना हो, उतने लघु के चिह्न लिखकर उनके सिरे पर क्रमश वर्णोद्दिष्ट अक (१ से आरभ करके क्रमश दूने दूने अक) लिखे। फिर अतिम अक का दूना करके उसम से पूछी हुई सख्या घटावे। जो अक शेष रहे, वह जिन जिन उद्दिष्टा के योग से बना हो, उनके नीचे की लघु मात्राओ के चिह्नो को गुरु कर दे। जो रूप सिद्ध होगा, वही उत्तर होगा। जैस,—किसी ने पूछा कि चार वर्णों के प्रस्तार मे तेरहवें भेद का रूप क्या होगा? इसके लिये हमने यह क्रिया की—

१	२	४	८
|	|	|	|
|	|	|	|
|	|	|	|
|	|	|	|

अतिम अक ८ का दूना १६ हुआ। उसमे से १३ घटाया, तो ३ रहा। अब हमने देखा कि ३ संख्या ऊपर दिए हुए उद्दिष्टाको में से १ और २ जोडने से आ जाती है। अत. उनके नीचे गुरु बनाया तो यह रूप ऽऽ। सिद्ध हुआ।

वर्णना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गुणकथन। २ चित्रकारी। २ व्याख्या। किसी विषय का व्यौरेवार कथन। ४ लेखन (को०)।

वर्णनातीत—वि० [स०] जिसका वर्णन न हो सके। अवर्णनीय [को०]।

वर्णनात्मक—वि० [स०] वर्णनप्रधान। जिसमे वर्णन की प्रमुखता हो।

वर्णन संबंधी। उ०—ऐसी अलकृत भाषा मे जो भिन्न भिन्न भागो मे भिन्न भिन्न रीतियो से चमत्कृत हो—वर्णनात्मक रीति से नही वरन् कार्यात्मक रीति से।—पा० सा० सि०, पृ० ३।

वर्णनाश—सज्ञा पु० [स०] निरुक्तकार के अनुसार शब्द मे किसी वर्ण का नष्ट हो जाना। जैसे,—'पृषोदर' शब्द मे 'पृषतोदर' शब्द के 'त' का नाश पाया जाता है।

वर्णनीय—वि० [स०] १ चित्रण करने योग्य। २ वर्णन करने योग्य [को०]।

वर्णपताका—सज्ञा स्त्री० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि वर्णवृत्ता के भेदो मे से कौन सा (पहला, दूसरा या तीसरा आदि) ऐसा है, जितमे इतने लघु और इतने गुरु होगे।

वर्णपत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ लघु तत्प। २ रग रखने का पात्र।

वर्णपरिचय—सज्ञा पुं० [स०] १ अक्षरो का बोध करानेवाली पुस्तक। २ सगीत का ज्ञान [को०]।

वर्णपरिध्वंस—सज्ञा पु० [स०] जातिच्युति। जातिभ्रश [को०]।

वर्णपात—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णनाश'।

वर्णपाताल—सज्ञा पु० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णो के कुल कितने वृत्त हो सकते है और उन वृत्तो मे से कितने लघ्वादि और कितने लघ्वत, कितने गुर्वादि और कितने गुर्वत तथा कितने सर्वगुरु और कितने सर्वलघु होगे।

विशेष—जितने वर्णों का पाताल बनाना हो, उतनी ही खडी रेखाएँ और उन्हे काटती हुई पाँच आडी रेखाएँ खीचे। इस प्रकार कोष्ठ बन जाने पर कोष्ठो की पहली पक्ति मे क्रम से १, २, ३, ४ आदि अक भरे। दूसरी पक्ति मे २, ४, ८, १६ आदि वर्णसूची के अक लिखे। तीसरी पक्ति मे सूची के अको के आधे लिखे, और चौथी पक्ति मे पहली और तीसरी पक्ति के अको का गुणनफल लिखे। उदाहरण के लिये ९ वर्णों का पाताल इस प्रकार होगा।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	वर्णसख्या।
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	सर्वसख्या।
१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	लघ्वादि, लघ्वत, गुर्वादि, गुर्वत।
१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	सर्वगुरु, सर्वलघु।

इस पाताल से विदित हुआ कि ९ वर्णों के ५१२ वृत्त हो सकते हैं। इन वृत्तो मे २५६ ऐसे वृत्त होगे, जिनके आदि मे लघु होगे, २५६ ऐसे होगे, जिनके अत मे लघु होगे, फिर २५६ ऐसे होगे जिनके आदि मे गुरु होगे, और २५६ ऐसे होगे, जिनके अत मे गुरु होगे। सब वृत्तो मे कुल मिलाकर २३०४ गुरु और २३०४ लघु होगे।

वर्णपात्र—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णपत्र' [को०]।

वर्णपुर—सज्ञा पु० [स०] शुद्ध राग का एक भेद।

वर्णपुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] १ पारिजात। २ राजतरुणी नाम का फूल का वृक्ष [को०]।

वर्णपुष्पक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णपुष्प [को०]।

वर्णप्रकर्ष—सज्ञा पु० [स०] १ रग की विशिष्टता। २ जाति की उत्तमता [को०]।

वर्णप्रणाली—सज्ञा स्त्री० [स० वर्ण+प्रणाली] वर्णों या जातियो मे एक क्रम के स्थापन की पद्धति। वर्णव्यवस्था। उ०—यज्ञ-विधियो के विस्तार के साथ ही साथ उस वर्णप्रणाली का भी विकास और सगठन होने लगा जिसमे ब्राह्मणो को सामाजिक एव धार्मिक श्रेष्ठता प्राप्त हुई।—सत० दरिया (भू०), पृ० ५३।

वर्णप्रत्यय—सज्ञा पु० [स०] छद शास्त्र या पिंगल मे वे क्रियाएँ जिनके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्या के वर्णवृत्तो के कितने भेद हो सकते है और उनके स्वरूप क्या होग, इत्यादि।

विशेष—जिस प्रकार मात्रिक छदो मे ९ प्रत्यय होते है, उसी प्रकार वर्णवृत्तो मे भी ९ प्रत्यय होते हैं—प्रस्तार, सूची, पाताल, उद्दिष्ट, नष्ट, मेरु, खडमेरु, पताका और मर्कटी।

वर्णप्रसादन—सज्ञा पु० [स०] अगुरु [को०]।

वर्णप्रस्तार—सज्ञा पु० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे वह क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तो के इतने भेद हो सकते है और उन भेदो के स्वरूप इस प्रकार होगे।

विशेष—जितने वर्णों का प्रस्तार बढाना हो, उतने वर्णों का पहला भेद (सर्वगुरु) लिखे। फिर गुरु के नीचे लघु लिखकर शेष ज्यो का त्यो लिखे। फिर सबसे बाईं ओर के गुरु के नीचे लघु लिखकर आगे ज्यो का त्यो लिखे, और बाई ओर जितनी न्यूनता रहे, उतनी गुरु से भरे। यह क्रिया अत तक अर्थात् सर्वलघु भेद के आने तक करे। उदाहरण के लिये तीन वर्णों का प्रस्तार इस प्रकार होगा—

रूप	भेद
ऽ ऽ ऽ	पहला
। ऽ ऽ	दूसरा
ऽ । ऽ	तीसरा
। । ऽ	चौथा
ऽ ऽ ।	पाँचवाँ
। ऽ ।	छठा
ऽ । ।	सातवाँ
। । ।	आठवाँ

इस प्रस्तार से प्रकट हुआ कि तीन वर्णों के आठ ही भेद हो सकते है, अर्थात् आठ ही प्रकार के वृत्त बन सकते है, अधिक नही।

वर्णबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [सं०] अक्षर या ध्वनिजन्य सबद्ध आशय अथवा बोध [को०]।

वर्णभिन्न—सज्ञा पुं० [स०] सगीत का एक ताल [को०]।

वर्णभीरु—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वर्णभिन्न' [को०]।

वर्णभेद—सज्ञा पु० [स०] शरीर के वर्ण या जाति के कारण होनेवाला भेदभाव [को०]।

वर्णभेदिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] मोटा अन्न जिसमे बाजरा, कोदो, मडुवा, जोन्हरी आदि है [को०]।

वर्णमचिका—सज्ञा स्त्री० [स० वर्णमञ्चिका] सगीत का एक ताल [को०]।

वर्णमर्कटी—सज्ञा स्त्री० [स०] पिंगल या छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णो के इतने वृत्त हो सकते हैं, जिनमे इतने गुर्वादि, गुर्वत और इतने लघ्वादि लघ्वत होगे, तथा सब वृत्तो मे मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु, लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिड (= दो कल) होगे।

विशेष—जितने वर्ण हो, उतने खाने बाएँ से दाहिने बनावे। फिर उन खानो के नीचे उतने ही खानो की छह पक्तियाँ और बनावे। कोष्ठो की पहली पक्ति मे १, २, ३, आदि अक लिखे, दूसरी में वर्णसूची के अक (२, ४, ८, १६ आदि) लिखे, तीसरी पक्ति मे दूसरी पक्ति के अको के आधे अक भरे, चौथी मे पहली और दूसरी पक्ति के अको के गुणनफल लिखे, पाँचवीं मे चौथी पक्ति के आधे अक भरे, छठी पक्ति मे चौथी और पाँचवी पक्ति के अको का योग लिखे, और सातवी पक्ति मे छठी पक्ति के आधे अक भरे। उदाहरण के लिये छह वर्णो की मर्कटी इस प्रकार होगी।

१	२	३	४	५	६	वर्णसख्या
२	४	८	१६	३२	६४	वृत्तो की सख्या
१	२	४	८	१६	३२	गुर्वादि, गुर्वत, लघ्वादि, लघ्वत
२	८	२४	६४	१६०	३८४	सर्व वर्ण
१	४	१२	३२	८०	१९२	गुरु लघु
३	१२	३६	९६	२४०	५७६	सर्व कला
१½	६	१८	४८	१२०	२८८	पिंड

इस मर्कटी से प्रकट हुआ कि ६ वर्णो के ६४ वृत्त हो सकते हैं। ३२ वृत्त ऐसे होगे जिनके आदि मे गुरु, ३२ ऐसे जिनके अत में गुरु, ३२ ऐसे जिनके आदि मे लघु और ३२ ही ऐसे जिनके अत मे लघु होगे। सब वृत्तो को मिलाकर ३८४ वर्ण होगे, इत्यादि, इत्यादि।

वर्णमाता—सज्ञा स्त्री० [स० वर्णमातृ] कलम। लेखनी [को०]।

वर्णमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती। विद्या देवी। २ वर्णमाला [को०]।

वर्णमाला—सज्ञा स्त्री० [स०] अक्षरो के रूपो की यथाश्रेणी लिखित सूची। किसी भाषा मे आनेवाले सब हरफ जो ठीक सिलसिले से रखे हो। जैसे देवनागरी मे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ।

क	ख	ग	घ	ङ।
च	छ	ज	झ	ञ।
ट	ठ	ड	ढ	ण।
त	थ	द	ध	न।
प	फ	ब	भ	म।
य	र	ल	व।	
श	ष	स	ह।	
अ	ं।			

वर्णपति—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक एक ताल का नाम [को०]।

वर्णरेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] खडिया मिट्टी [को०]।

वर्णलेखा, वर्णलेखिका—सज्ञा स्त्री० [स०] खडिया [को०]।

वर्णवती—सज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी।

वर्णवर्ति, वर्णवर्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. चित्र बनाने की कूँची या कलम। २ पेंसिल [को०]।

वर्णवादी—सज्ञा पु० [स० वर्णवादिन्] स्तुतिपाठक। बदीजन चारण। बतालिक [को०]।

वर्णविकार—सज्ञा पु० [स०] निरुक्त के अनुसार शब्दो मे एक वर्ण का बिगडकर दूसरा वर्ण हो जाना। जैसे 'हल्दी' शब्द मे 'हरिद्रा' के 'र' का 'ल' हो गया है। 'द्वादश' के 'द' का 'बारह' शब्द मे 'र' हो गया है।

वर्णविक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] जातिगत विद्वेष। किसी जाति के प्रति दुर्भावना [को०]।

वर्णविचार—सज्ञा पु० [स०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमे वर्णों के आकार, उच्चारण और सधि आदि के नियमो का वर्णन हो।

विशेष—प्राचीन वेदाग मे यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था और व्याकरण से बिल्कुल स्वतत्र माना जाता था।

वर्णविन्यास—सज्ञा पु० [स०] १ रूपयोजना। चित्रण। रूपाकन। २ अक्षरो की योजना। वर्णो का चुनाव। उ०—जिस प्रकार की रूपरेखा या वर्णविन्यास से किसी की तदाकार परिणति होती है, उसी प्रकार की रूपरेखा या वर्णविन्यास उसके लिये सुदर है।—रस०, पृ० ३०। ३ वर्ण नवृत्ति। हिज्जे।

वर्णविपर्यय—सज्ञा पु० [स०] निरुक्त के अनुसार शब्दो मे वर्णों का उलटफेर हो जाना। जैसे, 'हिंस' शब्द से बने 'सिंह' शब्द मे हुआ है।

वर्णविभाग—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णव्यवस्था'।

वर्णविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी।

वर्णविलोडक—सज्ञा पु० [स०] १ काव्य का चोर। काव्यार्थचौर। रचना का चोर। २ सेंध खोलकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर [को०]।

वर्णविवृति—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्णविन्यास। हिज्जे [को०]।

वर्णवृत्त—सज्ञा पुं० [स०] वह पद्य जिसके चरणो मे वर्णों की संख्या और लघु गुरु के क्रमो मे समानता हो ।

वर्णव्यतिक्राता—सज्ञा स्त्री० [स० वर्णव्यतिक्रान्ता] वह औरत जो अपने से नीची जातिवाले के साथ सबध करे [को०] ।

वर्णव्यवस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्णों के आधार पर समाज की योजना एव सघटन । विशेष दे० 'वर्ण' । उ०—ऋग्वेद के समय तक वर्णव्यवस्था कायम नही हुई थी ।—हिंदू० सभ्यता पृ० ३३ ।

वर्णवैचित्र्य—सज्ञा पुं० [स० वर्ण + वैचित्र्य] रगो की विचित्रता । विविध रगो का अनूठापन । वर्णों के सयोजन का अनूठापन । उ०—बाहर नयनाभिराम रूपरेखा, विकसित वर्णवैचित्र्य, चमक दमक इत्यादि है तो भीतर सौदर्य की मादक अनुभूति, प्रेमोल्लास, स्वप्न, दर्शनपिपासा, इत्यादि ।—रस०, पृ० ७४ ।

वर्णश्रेष्ठ—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण ।

वर्णसकर—सज्ञा पु० [स० वर्णसङ्कर] १ वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियो के स्त्री पुरुष के सयोग से उत्पन्न हो ।

विशेष—स्मृतियो मे ऐसी बहुत सी जातियाँ गिनाई गई हैं । इस विषय मे एक दूसरे के मत भी नही मिलते । वर्णसकर दो प्रकार के कहे गए है, अनुलोमज और दूसरा प्रतिलोमज । अनुलोमज का पिता माता से श्रेष्ठ वर्ण का होता है और प्रतिलोमज की माता पिता मे श्रेष्ठ वर्ण की होती है । प्रतिलोमज सकर प्राचीन काल मे निषिद्ध माने जाते थे । अनुलोम विवाह का प्रचार प्राचीन काल मे था, पर पीछे बद हो गया । धर्मशास्त्रो मे यद्यपि वर्णसकरता के ये कारण गिनाए गए हैं—(१) व्यभिचार, (२) अवेद्यावेदन और (३) स्वकर्मत्याग, पर लोक मे अतिम बात पर ध्यान नहीं दिया जाता ।

२ वह व्यक्ति जो ऐसे स्त्री पुरुष के सयोग से उपन्न हुआ हो, जो धर्मानुसार विवाहित न हो । व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य । दोगला ।

वर्णसघात—सज्ञा पु० [स० वर्णसङ्घात] वर्णमाला । वर्णसमाम्नाय । अक्षरसमूह [को०] ।

वर्णसयोग—सज्ञा पु० [सं०] किसी एक जाति के भीतर परस्पर विवाह सबध [को०] ।

वर्णसंसर्ग—सज्ञा पु० [स०] जातियो का घालमेल । दूसरी जाति मे विवाह सबध [को०] ।

वर्णसहार—सज्ञा पु० [स०] १ प्रतिमुख सधि के तेरह अगो मे एक । २ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारो वर्णों के लोगो का एक स्थान पर सम्मेलन । (नाट्यशास्त्र) ।

विशेष—भरत नाट्यशास्त्र के व्याख्याता अभिनवगुप्ताचार्य (अभिनव भारती) का मत है कि नाटक के विभिन्न पात्रो के एक स्थान पर सम्मेलन को वर्णसहार कहना चाहिए ।

वर्णसमाम्नाय—सज्ञा पु० [स०] वर्णमाला ।

वर्णसि—सज्ञा पु० [स०] १ जल । पानी । २. कमल [को०] ।

वर्णसूची—सज्ञा स्त्री० [स०] छद शास्त्र या पिंगल मे एक क्रिया जिसके द्वारा वर्णवृत्तो की सख्या की शुद्धता, उनके भेदो मे आदि अत लघु और आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है ।

विशेष—जितने वर्णों की सूची देखनी हो उतने वर्णों की सख्या तक क्रम से २, ४, ८ इत्यादि अर्थात् उत्तरोत्तर दूने अक लिखे । इस क्रिया के अत मे जो सख्या आएगी, वह वृत्तभेद की सख्या होगी । अत के अक से बाई ओर जो अक होगा, उतने आदिलघु और अतलघु तथा आदिगुरु और अंतगुरु होगे । फिर उससे भी बाई ओर अर्थात् अत से तीसरे कोष्ठ मे जो अक होगा उतने ही आद्यत लघु और आद्यत गुरु वृत्त होगे । उदाहरणार्थ ४ वर्णों की सूची यह है —

२	४	८	१६
	आद्यत लघु आद्यत गुरु	आदि लघु अत लघु आदि गुरु अंत गुरु	सब वृत्त

वर्णस्थान—सज्ञा पु० [स०] वर्णों के उच्चारण का स्थान, कठ, गला आदि [को०] ।

वर्णहीन—वि० [स०] जाति से बहिष्कृत [को०] ।

वर्णांका—सज्ञा स्त्री० [सं० वर्णाङ्का] कलम । लेखनी ।

वर्णांतर—सज्ञा पु० [स० वर्णान्तर] दूसरा वर्ण । दूसरी जाति [को०] ।

यौ०—वर्णांतर गमन = (१) अन्य वर्ण मे जाना । जाति या धर्म परिवर्तन । (२) व्याकरण मे ध्वनि या अक्षर का बदलना ।

वर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] अरहर ।

वर्णागम—सज्ञा पु० [स०] व्याकरण मे किसी शब्द के बीच किसी वर्ण का आगम होना । जैसे,—'हंस' शब्द मे ह के ऊपर अनुस्वार का आगम हो जिससे इस शब्द का व्युत्पन्न रूप 'हंस' हो जाता है । (निरुक्त) ।

वर्णाट—सज्ञा पु० [स०] १ चित्रकार । गायक । ३ स्त्री के द्वारा उपार्जित धन से जीविका करनेवाला । ४ प्रेमी [को०] ।

वर्णात्मक वि० [स०] वर्णमय । वर्णरूप । उ०—दूसरा वर्णात्मक शब्द वर्णविन्यास युक्त होता है ।—रस क०, (भू०), पृ० २ ।

वर्णात्मा—सज्ञा प्र० [स० वर्णात्मन्] शब्द [को०] ।

वर्णाधम—सज्ञा पु० [स०] वह जो वर्णों वा जातियो मे निम्न श्रेणी का हो ।

वर्णाधिप—सज्ञा पुं० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार ब्राह्मणादि वर्णों के अधिपति ग्रह ।

विशेष—ब्राह्मण के अधिपति बृहस्पति और शुक्र, क्षत्रिय के भौम और रवि, वैश्य के चद्र, शूद्र के बुध और अत्यज के शनि माने जाते है ।

वर्णानुप्रास—सज्ञा पुं० [स०] एक शब्दालकार विशेष । दे० 'अनुप्रास' ।

वर्णापसद—सज्ञा पु० [स०] जातिच्युत व्यक्ति [को०] ।

वर्णापेत—वि० [स०] वर्णहीन। जातिच्युत [को०]।

वर्णार्ह—संज्ञा पु० [स०] मूँग [को०]।

वर्णावकृष्ट—संज्ञा पु० [स०] शूद्र [को०]।

वर्णावर—वि० [स०] निम्न जाति का [को०]।

वर्णावली—संज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्णमाला'। उ०—हमारी सरकार से वहाँ की एक दूसरी ही भाषा और वर्णावली स्वीकार की जाती है।—प्रेमघन, भा० २, पृ० ४१४।

वर्णाश्रम—संज्ञा पु० [स०] वर्ण और आश्रम। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम। उ —वर्णाश्रम की नव स्फुरित ज्योति, नूतन विलास।—अपरा, पृ० २०१।

यौ०—**वर्णाश्रम गुरु**=शिव। **वर्णाश्रम धर्म**=वर्णों और आश्रमों के कर्तव्य।

वर्णि—संज्ञा पु० [स०] १ स्वर्ण। सोना। २. बलि। ३ सुगधित अगराग (को०)।

वर्णिक[1]—संज्ञा पु० [स०] लेखक।

वर्णिक[2]—वि० वर्ण से सबध रखनेवाला। जैसे, वर्णिक वृत्त।

वर्णिकवृत्त—संज्ञा पु० [स०] वह वृत्त या छद जिसके प्रत्येक चरण के वर्णों की सख्या और लघु गुरु के स्थान समान हों।

वर्णिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कठिनी। खडिया। २ मसि। स्याही। ३ सोने का पानी। ४ चद्रमा। ५ विलेपन। ६ नट की वेशभूषा या पहनावा। अभिनेताओं का परिच्छद या पोशाक (को०)। ७ चित्र मे विशिष्ट वर्णों या रगों का सयोजन (को०)।

वर्णित—वि० [स०] १ कथित। कहा हुआ। २ जिसका वर्णन हो। बयान किया हुआ। ३ चित्रित। अकित (को०)। ४ प्रशसित स्तुत (को०)।

वर्णिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्त्री। नारी। २ चार वर्णों मे से किसी एक वर्ण की स्त्री। ३ हरिद्रा हल्दी [को०]।

वर्णिलिंगी—संज्ञा पु० [स० वर्णिलिङ्गिन्] ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारी की वेशभूषा धारण करनेवाला व्यक्ति [को०]।

वर्णी[1]—संज्ञा पु० [स० वर्णिन्] १ लेखक। २ चित्रकार। ३ ब्रह्मचारी। उ०—बाण के अनुसार निम्नलिखित सप्रदाय अधिक प्रचलित थे। भागवत, वर्णी (ब्रह्मचारी) आदि।—प्रार्य० भा०, पृ० ४५२। ४ चारो वर्णों मे स किसी वर्ण का व्यक्ति (को०)।

वर्णी[2]—वि० १ विशेष आकृति या रगवाला। जैसे, देववर्णी। २ किसी जाति से सबध रखनेवाला।

वर्ण्य—संज्ञा पु० [स०] १ एक नदी का नाम। वन्नू। आदित्या। २ वन्नू नामक देश। ३ सूर्य।

वर्णोदक—संज्ञा पु० [स०] रगीन जल। रग मिला हुआ पानी [को०]।

वर्णोद्दिष्ट—संज्ञा पु० [स०] छद शास्त्र मे एक क्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक सख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौन सा भेद है।

विशेष—जो भेद दिया गया हो, उसमे लघु गुरु के ऊपर क्रम से दूने अक अर्थात् १, २, ४, ८ इत्यादि लिखे। फिर लघु के ऊपर जितने अक हो, उन्हे जोडकर उसमे १ और जोड दें। जैसे,—किसी ने पूछा कि चार वर्ण के वृत्तों मे ।ऽऽ कौन सा भेद है तो यह क्रिया की—

१	२	४	८
।	।	ऽ	ऽ

अब लघु वर्णों के ऊपर अक (१+२) जोडने से ३ हुए। इससे विदित हो गया कि यह चौथा भेद है।

वर्ण्य[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ कुकुम। २ वनतुलसी। बबई। ३ प्रस्तुत विषय। ४ उपमेय।

वर्ण्य[2]—वि० १ वर्णन के योग्य। २ जो वर्णन का विषय हो। उ०—वर्ण्य वस्तु और वर्णन प्रणाली बहुत दिनों से एक दूसरे से अलग कर दी गई है।—रस०, पृ० ५०।

वर्ण्यमान—वि० [स० वर्ण्यमत्] जिसका वर्णन या उल्लेख किया जा रहा हो। उ०—उसके अत करण मे यह दृढ सस्कार होना चाहिए कि वर्ण्यमान नदी, पर्वत तथा वन के समुख वह स्वय उपस्थित होकर उसकी शोभा देख रहा है।—हिं० भा० प०, पृ० ६६।

वर्ण्यविषय—संज्ञा पुं० [स०] वह विषय जिसका वर्णन किया जाय या किया गया हो। उ०—तीसरे अध्याय मे उपर्युक्त कवियों की रचनाओं तथा उनके वर्ण्य विषय का परिचय दिया गया है।—अकबरी०, पृ० ६।

वर्ण्यसम—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का हेत्वाभास [को०]।

वर्त—संज्ञा पु० [स०] जीविका। आहार। समाहार मे प्रयुक्त, जैसे, कल्यवर्त [को०]।

वर्तक[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ बटुवा। २ नर बटेर। ३ घोडे का खुर। ४ एक प्रकार का पीतल या काँसा (को०)।

वर्तक[2]—वि० १ रहनेवाला। अस्तित्वयुक्त। २ अनुरक्त [को०]।

वर्तका—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० बटेर।

वर्तकी—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्तका'।

वर्तजन्मा—संज्ञा पु० [स० वर्तजन्मन्] बादल। मेघ [को०]।

वर्ततोद्दण—संज्ञा पु० [स०] १ दे० वर्तलोह'। २ एक प्रकार का पीतल या काँसा धातु [को०]।

वर्तन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्तित] १ बरताव। व्यवहार। २ व्यवसाय। जीवनोपाय। वृत्ति। रोजी। ३ फेरना। घुमाना। बटना। ४ परिवर्तन। फेर फार। ५ स्थिति। ठहराव। ६ स्थापन। रखना। ७ सिल बट्टे से पीसना। पेषण। बटना। ८ वर्तमान। ९ चरखे की वह लकडी जिसमे तकला लगा रहता है। १० बटलोई। बकला। ११ पात्र। बरतन। १२ घाव मे सलाई डालकर हिलाना डुलाना, जिससे घाव या नासूर की गहराई और फैलाव आदि का पता लगता है। शल्यकर्म। १३ विष्णु। १४ कौआ। १५ गोल। वर्तुल। गेंद (को०)। १६ वामन। बौना (को०)। १७. रजन। लगाना।

संयोजित करना। १८ घोड़े के लोटने की जगह (को०)। १९. देखना। दृष्टि (को०)। २० रक्षा। रक्षा (को०)। २० स्वाद (को०)। २२ प्रायः अर्थित शब्द। बारबार कहा हुआ शब्द (को०)।

वर्तन[३]—वि० १. रहनेवाला। ठहरनेवाला। २. वर्तन। घटना। ३ जीवित रखनेवाला। ४. गतिमान करनेवाला (को०)।

वर्तनदान—संज्ञा पुं० [सं०] रोटी देना। जीविका देना (को०)।

वर्तनविनियोग—संज्ञा पुं० [सं०] वेतन। भृति (को०)।

वर्तना—क्रि० अ०, क्रि० स० [सं० वर्तन] दे० 'बरतना'।

वर्तनार्थी—वि० [सं०] रोजी या जीविका चाहनेवाला। नौकरी का इच्छुक (को०)।

वर्तनि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पूर्व दिशा। पूर्व देश। २ बाट। रास्ता। ३. शुक्ल रात का एक भेद। ४ स्तोत्र। सूक्त (को०)।

वर्तनि[२]—संज्ञा स्त्री० १ सड़क। पथ। २ पहिया। चक्र। ३. लीक। गाड़ी के पहिए का निशान। ४ अक्षिरोम। बरौनी (को०)।

वर्तनी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटने की क्रिया। पेषण। पिसाई। २ बाट। रास्ता। ३. तकला। टेकुआ (को०)। ४ भेजने या प्रेषण करने की क्रिया (को०)। ५ रहना। वर्तमान होना (को०)।

वर्तनी[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्तन] अक्षरक्रम का न्यास। हिज्जे। दे० 'बरतनी'।

वर्तमउ—संज्ञा पुं० [सं० वर्त्मन्] मार्ग। रास्ता। उ०—वर्तम अच्छा सरनि पथ सचर पादविहार।—अनेकार्थ०, पृ० ७७।

वर्तमान[१]—वि० [सं०] १ चलता हुआ। जो जारी हो। जो चल रहा हो। २. उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। ३. साक्षात्। ४ आधुनिक। हाल का।

वर्तमान[२]—संज्ञा पुं० १. व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं हुई है।

विशेष—वर्तमान के कई भेद होते हैं। 'वह मारता है' इस क्रिया में आरंभ और चला चलता पाया जाता है, समाप्ति नहीं, इससे यह 'सामान्य वर्तमान' है। कभी कभी वर्तमान के प्रयोग द्वारा 'नित्य प्रवृत्ति' भी पाई जाती है। जैसे,—'भारत के उत्तर में हिमालय है।' कभी कभी 'वृत्तविरलता' भी पाई जाती है। जैसे,—'इस मैदान में लड़के खेलते हैं।' इस वाक्य से यह सूचित होता है कि चाहे खेलते समय लड़के न खेलते रहे हों, पर उनके पूर्व कई बार खेल चुके हैं और आगे भी बराबर खेलेंगे। इसी प्रकार 'वह भात नहीं खाता' इस वाक्य में 'पक्षवृत्तोपरता' पाई जाती है, अर्थात् वह जन्म से ही भात नहीं खाता। इसी प्रकार और भी भेद हैं।

२. वृत्तांत। समाचार। ३ चलता व्यवहार। उ०—तुम पांच मास पीछे के वर्तमान को सब्बान व्यवहार मानते हो।—सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)।

वर्तरूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक नदी का नाम। २ पौधे का

घोंसला। ३. द्वारमार्ग। ४. गतिहीन या स्थिर जल। ५ आवर्त। भंवर (को०)। ६ छोटा नाला या पोखर जिसका जल पंक के कारण मलिन हो। डाबर (को०)।

वर्तलोह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लोहा।

विशेष—वैद्यक में गोले हुए वर्तलोह को कफ, वात और पित्त का नाशक और उसके स्वाद को कटु मधुर और तिक्त लिखा है। यह वही लोहा है जिसके बिदरी बरतन बनते हैं।

पर्या०—वर्तलौहिण्ड। वर्तक। लोहसंघट। नीलक। नीलज। नीलोह।

वर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बत्ती। २ अंजन। ३ वह बत्ती जो वैद्य घाव में देता है। ४ औषध बनाना। ५ अनुलेपन। उबटन। ६ गोली। बटी। ७ नकोर। रेखा (को०)। ८ गले की सूजन (को०)। ९. ऐंद्रजालिक या आभिचारिक तिलक (को०)। १०. कपड़े के किनारे की झालर (को०)। ११ चिराग। दीपक (को०)।

वर्तिक—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर।

वर्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटेर। २ अंजनपूती। ३ बत्ती। ४ शलाका। सलाई। ५ तूलिका। चित्र बनाने की कूंची (को०)। ६ रंग। रोगन (को०) ७ छड़ा। यष्टि (को०)।

वर्तिकाबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० वर्तिकाबिन्दु] हीरे का एक दोष।

विशेष—'रत्नपरीक्षा' के अनुसार इस प्रकार के हीरे को धारण करने से भय उत्पन्न होता है।

वर्तित—वि० [सं०] १ संपादित। निष्पादित। किया हुआ। २. चलाया हुआ। जारी किया हुआ। ३ तुलस्त किया हुआ। ४ व्यतीत। बीता हुआ। जैसे, वर्तित जीवन या काल (को०)।

वर्तितजन्मा—वि० [सं० वर्तितजन्मन्] उत्पादित। जनित। उत्पन्न किया हुआ (को०)।

वर्तिर—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर।

वर्तिष्णु—वि० [सं०] १ वर्तुलाकार। २ चक्कर खानेवाला। ३ स्थिर। ४ युद्ध में अविचल। ५ रहनेवाला (को०)।

वर्ती[१]—वि० [सं० वर्तिन्] [वि० स्त्री० वर्तिनी] १ वर्तनशील। बरतनेवाला। २ स्थित रहनेवाला। जैसे,—समीपवर्ती।

वर्ती[२]—संज्ञा स्त्री० १ बत्ती। २ शलाका। सलाई।

वर्तीर—संज्ञा पुं० [सं०] बटेर (को०)।

वर्तुल[१]—वि० [सं०] गोल। वृत्ताकार।

वर्तुल[२]—संज्ञा पुं० १ वृत्त। गाजर। २ मटर। ३ दूब घास। ४ मुहासा। ५ गोला गेंद (को०)। ६ वृत्त। घेरा (को०)। ७. शिव का एक गण।

वर्तुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] तकुए के सिरे की घुंडी (को०)।

वर्तुलाकार—वि० [सं० वर्तुल+आकार] गोल। वृत्ताकार। उ०—(क) अब ब्रह्मांड अकाश तत्व है पुनि वर्तुलाकार।—पुरुष प्रं०, भा० १, पृ० ५२। (ख) पुनि वर्तुलाकार आपै बनत

...दनी के खंभों की नाईं गजती थी मानो किसी ने उलटे स्तंभ ...गा दिए हों।—श्यामा०, पृ० २८।

वर्तुलाक्ष—[illegible] पुं० [सं०] श्येन। बाज पक्षी। (को०)।

वर्तुली—[illegible] स्त्री० [सं०] गजपिप्पली (को०)।

वर्त्म—[illegible] पुं० [सं० वर्त्मन्] १ मार्ग। पथ। २ गाडी के पहिए ...ा मार्ग। लीक। ३ किनारा। औंठ। बारी। ४ आँख की पलक। ५ आधार। आश्रय। ६ प्रथा। परंपरा। कार्यविधि (को०)। ७ अवकाश। क्षेत्र (को०)।

वर्त्मकर्दम—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें पित्त और रक्त के प्रकोप से आँखों में कीचड भरा रहता है।

वर्त्मकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वर्त्मकर्मन्] रास्ता बनाना। राह बनाना। पथ निर्माण (को०)।

वर्त्मगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पथ। राह। २ सडक राजमार्ग (को०)।

वर्त्मनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वर्त्मनि' (को०)।

वर्त्मपात—संज्ञा पुं० [सं०] १ पथ का अतिक्रमण। मार्गभ्रंश। २ राह पर आना। मार्ग पर आना। रास्ता पकडना (को०)।

वर्त्मपातन—संज्ञा पुं० [सं०] लूटने के लिये राह में घात लगाए रहना (को०)।

वर्त्मबंध—संज्ञा पुं० [सं० वर्त्मबन्ध] आँख का एक रोग जिसमें पलक में सूजन हो आती है, खुजली तथा पीडा होती है और आँख नहीं खुलती।

वर्त्मबंधक—संज्ञा पुं० [सं० वर्त्मबन्धक] एक नेत्ररोग। दे० 'वर्त्मबंध' (को०)।

वर्त्ममाक्षिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्वर्णमाक्षिका। सोनामाखी।

वर्त्मरोग—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें पलकों में विकार उत्पन्न हो जाता है और आँखों को खोलने में बडी पीडा होती है।

विशेष—वैद्यक में इस रोग के २१ भेद माने गए हैं। उत्संगिनी, कुंभिका, पोथकी, वर्त्मशर्करा वर्त्मार्श, शुष्कार्श, अजनदूषिका, बहलवर्त्म, वर्त्मबंधक, क्लिष्टवर्त्म, वर्त्मकर्दम, श्यायवर्त्म, पिष्मलवर्त्म, अक्लिन्नवर्त्म, वातहतवर्त्म, वर्त्मार्बुद, निमेष, शोणितार्श, नगण, विषवर्त्म और कुचन।

वर्त्मशर्करा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें पलकों में छोटी छोटी फुंसियों के सहित एक बडी और कडी फुंसी हो जाती है।

वर्त्मस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँखों का एक रोग। वर्त्मरोग।

वर्त्मार्बुद—संज्ञा पुं० [सं०] आँख का एक रोग जिसमें पलक के अंदर एक गाँठ उत्पन्न हो जाती है। यह टेढी और लाल रंग की होती है और इसमें पीडा नहीं होती।

वर्त्मोपघात—[illegible] पुं० [सं०] यात्राजन्य श्रम (को०)।

वर्त्मोपरोध—[illegible] पुं० [सं०] वर्त्मरोग।

वर्द—[illegible] पुं० [सं०] बाँध। पुश्ता। सेतु। पुल (को०)।

वर्दी—संज्ञा स्त्री० [सं० वर्त्मी (=वर्त्सी)] मूँज की पत्ती जो रस्से के ढीले होने पर बराबर में लगाई जाती है।

वर्दी[1]—संज्ञा स्त्री० [अं०] दे 'वरदी'।

वर्द्ध, वर्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ सीसा धातु। २ भारंगी। ३. काटना। तराशना। ४ पूर्ति। पूरण। ५ बढ़ोतरी। वृद्धि (को०)। ७ ब्राह्मणयष्टिका। एक क्षुप। छडी।

वर्द्धक, वर्धक[1]—वि० [सं०] १ बढानेवाला। पूरक। २ काटनेवाला। छीलनेवाला।

वर्द्धक, वर्धक[2]—संज्ञा पुं० १ बढई। २ एक वृक्ष का नाम। भारंग।

वर्द्धकि, वर्धकि—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्द्धकी' (को०)।

वर्द्धकी वर्धकी[1]—संज्ञा पुं० [सं० वर्द्धकि, वर्द्धकिन्] बढई। लकडी का काम करनेवाला।

वर्द्धकी, वर्धकी[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] गणिका। वेश्या। कुलटा स्त्री।

वर्द्धन, वर्धन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्द्धित] १ बढाना। २. वृद्धि। बढती। उन्नति। ३ छेदना। काटना। छीलना। तराशना। ४ दाँत पर जमनेवाला दूसरा दाँत (को०)। ५ शिव (को०)। ६ शिक्षण (को०)। ७ पूर्ति। पूरण (को०)। ८ वह जिसमें बल, शक्ति आदि बढे। सत्व वर्धक (को०)।

वर्द्धन, वर्धन[2]—वि० १ अभ्युदय वा वृद्धि करनेवाला। जैसे, हर्षवर्धन। यशवर्धन।

वर्द्धनक, वर्धनक—वि० [सं०] अभ्युदय करनेवाला। उल्लास और आनंददायक को०]।

वर्द्धनिका, वर्धनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह छोटा घडा या पात्र जिसमें पवित्र जल रखा जाता है (को०)।

वर्द्धनी, वर्धनी—संज्ञा स्त्री० [संज्ञा] १ झाडू। २ कलसी। छोटा घडा। ३. अरथी (को०)।

वर्द्धमान, वर्धमान[1]—वि० [सं०] १ बढता हुआ। जो बढता जा रहा हो। उ०—कज्जल का वर्धमान भूधर, उतरा नभ पर, उतरा भू पर।—अपलक, पृ० ६६। २ बढनेवाला। वर्धनशील।

वर्द्धमान, वर्धमान[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न भिन्न होती है, अर्थात् १४, १३, १८ और १५।

विशेष—इसके चारों चरणों में वर्णों की संख्या इस प्रकार होती है। प्रथम चरण—मगण, सगण, जगण, भगण, गुरु, गुरु, द्वितीय चरण—सगण, नगण, जगण रगण, गुरु, तृतीय चरण—नगण, नगण, सगण, नगण, नगण, सगण, और चतुर्थ चरण—नगण, नगण, नगण, जगण, यगण। यथा—गोविंदा पद में जु मित्त चित्त लगैहौ। निहचै यहि भवसिंधु पार जैहौ। अमत सकल जग मोह मर्दहि सब तज रे। तन मन धन सन भजिए हरि को रे।

२. मिट्टी का प्याला। सकोरा। ३ जैनियों के २४ वें जिन महावीर का नाम। ४ बंगाल का एक जिला और नगर। आधुनिक बर्दवान। ५ एरंड वृक्ष। रेंड (को०)। ६ एक प्रकार की पहेली (को०)। ७. विष्णु का एक नाम (को०)। ८ मीठा नीबू। ९ हाथों की एक विशिष्ट मुद्रा (को०)। १० नृत्य की एक मुद्रा (को०)। ११ वह मकान जिसमें दक्षिण दिशा में दरवाजा न

हो (को०)। १२ वास्तु सबधी एक तात्रिक यत्र वा रेखाकित आकार (को०)। १३ एक विशिष्ट प्रकार का प्रासाद या मदिर जो उक्त तात्रिक यत्र के आधार पर निर्मित हो (को०)। १४ ईशान कोण मे स्थित दिग्गज।

वर्द्धमानक, वर्धमानक—सज्ञा पु० [स०] १ कसोरा। सकोरा। २ ढक्कन [को०]।

वर्द्धमानगृह—सज्ञा पु० [स०] क्रीडागृह। प्रमोदमंदिर को०]।

वर्द्धमानपुर—सज्ञा पु० [स०] एक नगर। आधुनिक वर्दवान [को०]।

वर्द्धयिता, वर्धयिता—सज्ञा पु० [स० वर्द्धयितृ] [स्त्री० वर्द्धयित्री] बढानेवाला।

वर्द्धा, वर्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम जो सतपुरा के पर्वतो से निकलकर गोदावरी मे गिरती है। म०प्रदेश की अमरावती नगरी इसी नदी के किनारे बसी है।

वर्द्धापन, वर्धापन—सज्ञा पु० [स०] १ कर्णवेध। नाडीछेदन। कनछेदन। २ महाराष्ट्र देश मे अभ्यगादि क्रिया जो किसी पुरुष की जन्मतिथि को की जाती है। ३ जन्मदिन का उत्सव (को०)। ४ वह उत्सव जिसमे किसी के अभ्युदय की कामना की जाय, अथवा बधाई दी जाय (को०)। ५ काटना। छेदना (को०)।

वर्द्धापनिक, वर्धापनिक—सज्ञा पु० [स०] १ अभिनदन। २ अभिनदन के समय दी जानेवाली भेंट [को०]।

वर्द्धापिका, वर्धापिका—सज्ञा स्त्री० [स०] धाय। धात्री [को०]।

वर्द्धित, वर्धित—वि० [स०] १ बढा हुआ। २ पूर्ण। ३ छिन्न। कटा हुआ।

वर्द्धिष्णु, वर्धिष्णु—वि० [स०] वृद्धिशील। बढने की कामना करनेवाला [को०]।

वर्द्धीणस, वर्धीणस—सज्ञा पु० [स०] वह सफेद रग का बकरा जिसके कान नदी मे पानी पीते समय पानी मे छू जायँ।

वर्द्ध्म, वर्ध्म—सज्ञा पु० [स० वर्द्ध्मन्] १ वह फोडा जो जाँघ के मूल मे सधिस्थान मे निकल आता है। यह फोडा कठिन होता है। इसके रोगी को ज्वर आता है, शूल होता है और वह सुस्त पड़ा रहता है। वद। २ अत्रवृद्धि रोग। आँत उतरने का रोग।

वर्द्ध्र, वर्ध्र—सज्ञा पु० [स०] १ खाल। चमडा। २ चमडे की बद्धी। वर्धिका। ३ सीसा। राँगा।

वर्द्धिध्रका, वर्धिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चमडे की रस्सी। बद्धी। २ एक प्रकार का आभूषण जिसे बद्धी कहते है।

वर्द्ध्री, वर्ध्री—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्द्धिध्रका'।

वर्ननⓊ—सज्ञा पु० [स० वर्णन] दे० 'वर्णन'। उ०—दीपक वर्नन कह कहौ, सबै मनोरथ काज।—कबीर सा०, पृ० ५६७।

वर्प—सज्ञा पुं० [स०] आकृति। आकार। रूप [को०]।

वर्म—सज्ञा पु० [स० वर्म्मन्] १ कवच। बकतर। २ घर। आश्रय। ३ पित्त पापडा। पर्पटक। ४ वल्कल। छाल (को०)।

वर्मक—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम, जिसे अब 'बरमा' कहते हैं।

वर्मकटक—सज्ञा पु० [स० वर्मकण्टक] पित्तपापडा। पर्पटक।

वर्मकशा, वर्मकषा—सज्ञा स्त्री० [स०] सातला। सप्तला।

वर्मण—सज्ञा पु० [स०] नारगी का पेड़ [को०]।

वर्मधर—वि० [स०] कवची। वर्महर।

वर्महर—वि० [स०] १ वर्मधर। कवचधारी। २ जो वर्म धारण न कर सके। जैसे, अत्यत वृद्ध (को०)।

वर्मा—सज्ञा पु० [स० वर्म्मन्] क्षत्रियो आदि की उपाधि जो उनके नाम के अत मे लगाई जाती है।

वर्मि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

वर्मिक—वि० [स०] दे० 'वर्मित' [को०]।

वर्मित—वि० [स०] कवचधारी। कृतसन्नाह।

वर्मिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार सडक का महसूल। पथकर (को०)।

वर्मी—वि० [स० वर्मिन्] दे० 'वर्मिक' [को०]।

वर्मुष—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली [को०]।

वर्य[1]—वि० [स०] १. प्रधान। २ निर्वाचित या चुनने योग्य। ३. श्रेष्ठ।

विशेष—इसका प्रयोग विशेषत समस्त पदो मे होता है। जैसे,—विद्वद्वर्य।

वर्य[2]—सज्ञा पु० कामदेव।

वर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कन्या। २. पतिवरा वधू। ३ अरहर।

वर्वट—सज्ञा पु० [स०] लोबिया। बोडा। बजरबट्टू।

वर्वणा—सज्ञा स्त्री० [स०] नीली मक्खी।

वर्वर—सज्ञा पु० [स०] १ एक देश का नाम। २ इस देश का असभ्य निवासी जिसके बाल घुँघराले कहे गए हैं।

विशेष—यद्यपि वर्वर देश का उल्लेख महाभारत (भीष्मपर्व) तथा वामन, मार्कडेय आदि पुराणो मे है, तथापि यह जनपद कहाँ था, इसका ठीक ठीक पता नही। कही कही वर्वरो के बाल घुँघराले कहे गए है। पुराने यूनानी और रोमन भौगोलिको ने सिंधु नद के मुहाने के आसपास के प्रदेश को बर्बर (बारबेरियन) देश कहा है। कुछ भारतीय ग्रथकारो ने महाराष्ट्र देश के एक विशेष भाग को वर्वर कहा है। वर्वर नाम की एक प्राकृत भाषा का उल्लेख भी 'प्राकृतचद्रिका' मे है। इसमे सदेह नही कि इस जनपद के निवासी असभ्य समझे जाते थे और घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। पीछे से दूर दूर तक की सभ्य जातियो मे यह शब्द 'म्लेच्छ' और जगली' का वाचक हुआ। प्राचीन यूनानी अपनी जाति के लोगो के अतिरिक्त औरो को 'वर्वर' कहा करते थे। रोमनो मे भी ऐसा ही था।

३ पामर। नीच। ४ घुँघराले बाल। ५ काली बनतुलसी। ६ हिंगुल। ईंगुर। ७ पीला चदन। ८ मूर्ख। अज्ञ (को०)। ९ नीच जाति (को०)। १०. जातिभ्रष्ट व्यक्ति (को०)। ११. नृत्य का एक प्रकार। एक प्रकार का नाच (को०)। १२. शस्त्रो का परस्पर टकराना।

वर्वर[१]—वि० १ घुँघराला। छल्लेदार। २. जो स्पष्ट न हो [को०]।

वर्वरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चंदन।

विशेष—इसका गुण शीतल, कफ, वायु पित्त, कोढ़, खाज और व्रण तथा रक्तदोष का नाशक और स्वाद कटुवा माना गया है।

पर्या०—वर्वरोत्थ। शीत। पित्तारि।

वर्वरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार की मक्खी। नीली मक्खी। २ वर्वरी। वनतुलसी [को०]।

वर्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनतुलसी। २ दे० 'वर्वरा'।

वर्वरीक—संज्ञा पुं० [सं०] १ भार्गी। २ वनतुलसी। ३. महाकाल। ४ भीम के पौत्र का नाम जो घटोत्कच का पुत्र था। ५ घुँघराले केश। छल्लेदार बाल [को०]।

वर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वर्वरी। वनतुलसी [को०]।

वर्वि—वि० [सं०] बहुत खानेवाला। पेटू [को०]।

वर्वुर—स्त्री० पुं० [सं०] एक वृक्ष। विशेष दे० 'बबूल' [को०]।

वर्वूर—संज्ञा पुं० [सं०] बबूल।

वर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृष्टि। जलवर्षण। २ काल का एक मान जिसमे दो अयन और बारह महीने होते है। उतना समय जितने मे सब ऋतुओ की एक आवृत्ति हो जाती है। संवत्सर। साल।

विशेष—वर्ष चार प्रकार के होते हैं—सौर, चांद्र सावन और नाक्षत्र। सौर वर्ष ३६५ दिन, ५ घटे, ४८ मिनट और ४६ सेकंड का होता है। यह उतना समय है, जितने मे पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेती है। पृथ्वी के इसी भ्रमण के कारण सूर्य का सत्ताईस नक्षत्रो और बारह राशियो मे गमन दिखाई पडता है। लोग कहते हैं कि अब सूर्य अमुक नक्षत्र या राशि मे है। घूमते समय पृथ्वी की धुरी सीधी न रहकर कुछ टेढी रहती है और उसके मार्ग की कक्षा गोल न होकर अंडाकार होती है। इसी से सूर्य कुछ महीनो तक भूमध्यरेखा के उत्तर और कुछ महीनो तक दक्षिण मे उदय होता दिखाई पडता है। ये दोनो 'उत्तर अयन' और 'दक्षिण अयन' कहलाते हैं। वर्ष मे केवल दो दिन सूर्य भूमध्य या विषुवत् रेखा पर उदय होता है। इन दोनो को सायन कहते। एक सायन तुला राशि मे और दूसरा मेष मे होता है। सूर्य कर्क राशि मे आकर दक्षिण की ओर बढने लगता है और धनु राशि मे पहुँचने तक भूमध्यरेखा के दक्षिण ही रहता है। मकर राशि से फिर उत्तर की ओर बढने लगता है और कर्क राशि मे पहुँचने तक उत्तर ही रहता है। प्राचीन भारतीय आर्यों मे राशियो का व्यवहार न था; इससे सौर वर्ष दो अयनो का ही माना जाता था। ग्रहो का उदय राशियो मे न माना जाकर २७ नक्षत्रो मे माना जाता था। इससे कभी कभी बडी अव्यवस्था होती थी। चांद्र वर्ष ३५४ दिन, ८ घटे, ४८ मिनट और ३६ सेकंड का होता है। इतने काल मे चंद्रमा पृथ्वी की बारह परिक्रमाएँ कर लेता है। इस प्रकार सौर वर्ष और चांद्र वर्ष मे प्रति वर्ष १० दिन, २१ घटे का अंतर पडता है। हिंदू पंचांग मे यह अंतर प्रति तीसरे वर्ष, १३ महीने का वर्ष मानकर दूर किया जाता है। उस बढ़े हुए महीने को 'अधिमास' या 'मलमास' कहते हैं। सावन वर्ष पूरे ३६० दिनों का होता है और उसके महीने तीस तीस दिन के होते हैं। वैदिक काल मे सावन मास ही अधिक चलता था और प्रत्येक मास की तिथि की गणना चंद्रमा के ही हिसाब से होती थी। शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा तक १५ दिन का शुक्ल पक्ष और कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक १५ दिन का कृष्ण पक्ष होता था। नाक्षत्र वर्ष ३२४ दिन का और उसका प्रत्येक महीना २७-२७ दिन का होता है। इन चार प्रकार के वर्षों के अतिरिक्त प्राचीन काल में और कई प्रकार के वर्षों का प्रचार था। जैसे,—सप्तर्षि वर्ष।

२ पुराण मे माने हुए सात द्वीपों का एक विभाग। ४ किसी द्वीप का प्रधान भाग, जैसे,—भारतवर्ष। ५ मेघ। बादल।

वर्षकर—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ।

वर्षकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिंडी। रामतुरई।

वर्षकाम—वि० [सं०] वृष्टि की कामना रखनेवाला। वृष्टि चाहनेवाला।

वर्षकामेष्टि—संज्ञा पुं० [सं०] एक यज्ञ जो वर्षा के लिये किया जाता था।

वर्षकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जीरा।

वर्षकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] लाल रंग की पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

वर्षकोश—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्षकोष' [को०]।

वर्षकोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ दैवज्ञ। ज्योतिषी। २. मोर। उदद।

वर्षगाँठ—संज्ञा स्त्री० [हिं० वर्ष + गाँठ] वह कृत्य जो किसी पुरुष के जन्मदिन पर किया जाता है। विशेष दे० 'बरसगाँठ'।

वर्षगिरि—संज्ञा पुं० [सं०] भारत का विभाग करनेवाले सात पर्वत जो वर्षपर्वत कहे जाते हैं। इनके हिमवान्, हेमकूट, निषध, मेरु, नील, श्वेत, और शृंगी नामक पर्वत हैं [को०]।

वर्षघ्न[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ पवन। २ ग्रहो का वह योग जिससे वर्षा नष्ट हो जाती है।

वर्षघ्न[२]—वि० वर्षा से बचानेवाला।

वर्षज—वि० [सं०] १ वर्षा से उत्पन्न। २ एक वर्ष का [को०]।

वर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वर्षित] १ वृष्टि। बरसना। उ०—भाव बदला हुआ—पहले को घनघटा वर्षण बनी हुई।—अपरा, पृ० १४३। २ छिडकना। नीचे किसी पर डालना या फेंकना। जैसे, द्रव्यवर्षण, पुष्पवर्षण [को०]।

वर्षणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृष्टि। वर्षा। २ कर्म। क्रिया। कृति। ३ निवास। वर्तन। ४. यज्ञकर्म। यज्ञ [को०]।

वर्षत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छत्र। छाता [को०]।

वर्षत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वर्षत्र' [को०]।

वर्षधर—संज्ञा पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २ अंत पुर का रक्षक। नपुंसक। खोजा। ३. पर्वत। पहाड (को०)। ४ वर्ष (भूखंड का

खड) का अधिपति (को०)। ६ पृथ्वी को वर्षो (खडो) मे विभाजित करनेवाले पहाड। (जैन)।

वर्षधर्प—सज्ञा पु० [सं०] अत पुर का रक्षक। नपुसक। खोजा।

वर्षप—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वर्षपति'।

वर्षपति—सज्ञा पु० [स०] वर्ष के अधिपति ग्रह।

विशेष—फलित ज्योतिष मे वर्षप्रवेश होने पर कोई न कोई ग्रह उस वर्ष का अधिपति या राजा माना जाता है। इसी अधिपति के विचार से यह बताया जाता है कि वर्ष शुभ होगा या अशुभ।

वर्षपद—सज्ञा पु० [स०] पचाग। पत्रा। जत्री (को०)।

वर्षपर्वत—सज्ञा पु० [स०] पृथ्वी को सात भागो मे बाँटनेवाले पहाड। वर्षगिरि (को०)।

वर्षभकी—सज्ञा पु० [स० वर्षभकिन्] आम्रातक। आमडा।

वर्षपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] सहदेई नाम की लता (को०)।

वर्षपूग—सज्ञा पु० [स०] वर्षशृखला। वर्ष का समूह (को०)।

वर्षप्रतिबध—सज्ञा पु० [स० वर्षप्रतिबन्ध] वृष्टि का न होना। अनावृष्टि। अवर्षण। सूखा (को०)।

वर्षप्रवेग—सज्ञा पु० [स०] घनघोर वर्षा (को०)।

वर्षप्रवेश—सज्ञा पु० [स०] नववर्षारभ (को०)।

वर्षप्रिय—सज्ञा पु०] स०] पपीहा। चातक (को०)।

वर्षफल—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष मे जातक के अनुसार वह कुडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहो के शुभाशुभ फलो का विवरण जाना जाता है।

क्रि० प्र०—निकालना।—बनाना।

वर्षरात्र—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु (को०)।

वर्षवर—सज्ञा पु० [स०] नपुसक। अत पुर का रक्षक। खोजा (को०)।

वर्षवसन—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु मे किसी एक निवास मे रहना। (बौद्ध)।

वर्षवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्षगाँठ। जन्मदिन (को०)।

वर्षशत—सज्ञा पु० [स०] सौ वर्ष। शताब्दी (को०)।

वर्षसहस्र—सज्ञा पु० [स०] एक हजार वर्ष (को०)।

वर्षाग—सज्ञा पु० [स० वर्षाङ्ग] मास। महीना।

वर्षागी—सज्ञा स्त्री० [स० वर्षाङ्गी] पुनर्नवा (को०)।

वर्षाबु—सज्ञा पु० [स०] वर्षा का जल (को०)।

वर्षाश—सज्ञा पु० [स०] महीना।

वर्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह ऋतु जिसमे पानी बरसता है।

विशेष—छह ऋतुओ के हिसाब से सावन और भादो के दो महीने वर्षा ऋतु के माने जाते हैं। पर साधारण व्यवहार मे जाडा, गरमी और बरसात के हिसाब से वर्षा काल आषाढ से कुआर तक चार महीने का लिया जाता है जिसे चातुर्मास या 'चौमासा' कहते है।

पर्या०—प्रावृट्। पावस। घनागम। घनाकर।

२ पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना = (१) बहुत अधिक परिमाण मे ऊपर से गिरना। जैसे,—फूलो की वर्षा होना। (२) बहुत अधिक सख्या मे मिलना। जैसे,—वहाँ रुपयो की वर्षा होती है।

वर्षाकाल—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु। बरसात।

वर्षागम—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु का आगमन। वर्षारभ।

वर्षाघोष—सज्ञा पु० [स० वर्षा+आघोष] बडा मेढक (को०)।

वर्षाधिप—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो सवत्सर के वर्ष का अधिपति हो। वि० दे० 'वर्षपति'।

वर्षाप्रिय—सज्ञा पु० [स०] चातक। पपीहा।

वर्षाबीज—सज्ञा पु० [स०] मेघ। बादल।

वर्षाप्रभजन—सज्ञा पु० [स० वर्षाप्रभञ्जन] आँधी (को०)।

वर्षाभव—सज्ञा पु० [स०] रक्त पुनर्नवा। पुनर्नवा जिसके फूल लाल होते हैं (को०)।

वर्षाभू[1]—सज्ञा पु० [स०] १ भेक। दादुर। मेढक। २ इद्रगोप। ग्वालिन नाम का कीडा। ३ लाल रग की पुनर्नवा। ४ कीडे मकोडे।

वर्षाभू[2]—वि० वर्षा मे उत्पन्न होनेवाला।

वर्षाभ्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मादा मेढक। छोटा मेढक। २ पुनर्नवा। २ केचुआ (को०)।

वर्षाभद्र—सज्ञा पु० [स०] मयूर। मोर।

वर्षायस—वि० [स०] नब्बे बरस से ऊपर की अवस्था का। अति वृद्ध।

वर्षारात्र—सज्ञा पु० [स०] १ वर्षा ऋतु। २ वर्षा की रात (को०)।

वर्षारात्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वर्षारात्र'

वर्षार्ची—सज्ञा पु० [स० वर्ष+अर्चिस्] मगल ग्रह।

वर्षार्ह—वि० [स०] वर्ष भर के लिये पर्याप्त (को०)।

वर्षालिकायिका—सज्ञा स्त्री० [स० वर्षालिङ्कायिका] पृक्का। असवर्ग।

वर्षाल—सज्ञा पु० [स०] फतिगा। पतग।

वर्षावसान—सज्ञा पु० [स०] शरद् ऋतु (को०)।

वर्षाशन—सज्ञा पु० [स०] वर्ष भर के लिये दिया जानेवाला अन्न का दान (को०)।

वर्षाहिक—सज्ञा पु० [स०] बरसाती साँप जिसमे विष नही होता।

वर्षिक[1]—वि० [स०] १. वर्षा सबधी। २ एक वर्ष का। वार्षिक (को०)।

वर्षिक[2]—सज्ञा पु० अगुरु (को०)।

वर्षित[1]—सज्ञा पु० [स०] वृष्टि। वर्षा (को०)।

वर्षित[2]—वि० बरसा हुआ (को०)।

वर्षिता—वि० [स० वर्षितृ] बरसने या वर्षा करनेवाला (को०)।

वर्षिष्ठ—वि० [स०] बहुत वृद्ध (को०)।

वर्षी—वि० [सं० वर्षिन्] १. वर्षा करनेवाला। २ वर्ष का। साल का। समासात मे प्रयुक्त। जैसे, घनवर्षी। वारिवर्षी (को०)।

वर्षीका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वृत्त [को०]।

वर्षीण—वि० [स०] (इतने) वर्ष का [को०]।

वर्षीय - वि० [स० वर्षीयस्] दे० 'वर्षीण'।

वर्षीयस्—वि० [स०] १ वर्षा युक्त। २ वृद्ध। अत्यत बूढा। ३ अत्यत शक्तिशाली। ४ महत्तम। विशिष्ट [को०]।

वर्षुक—वि० [स०] १ जलयुक्त। २ वर्षा करनेवाला [को०]।

वर्षेज—वि० [स०] दे० 'वर्षज'।

वर्षेश—सज्ञा पु० [स०] वर्षाधिप। विशेष दे० 'वर्षपति'।

वर्षोपल—सज्ञा पु० [स०] १ ओला। करका। २ एक तरह की गोलाकार मिठाई [को०]।

वर्ष्म—सज्ञा पु० [स०] शरीर। दे० 'वर्ष्मा' [को०]।

वर्ष्मवान्—वि० [स० वर्ष्मवत्] शरीरवाला। शरीरधारी [को०]।

वर्ष्मा—सज्ञा पु० [स० वर्ष्मन्] १ शरीर। २ प्रमाण। ३ इयत्ता। ४ जलरोधक बाँध। ५ नाप। उँचाई (को०)। ६ अत्यत सुदर या कोमल आकृति। ७ वर्षीयान्। अत्यत वृद्ध (को०)।

वर्ह—सज्ञा पु० [स०] १ मोर का पख। २ गठिवन। ग्रथिपर्णी। ३ पत्र। पत्ता। ४ दे० 'परीवार' (को०)।

वर्हण—सज्ञा पु० [स०] पत्र। पत्ता।

वर्हा—सज्ञा पु० [स० वर्हस्] १ अग्नि। २ दीप्ति। ३ यज्ञ। ४ कुश। ५ चित्रक। चीते का पेड। ६ एक राजा का नाम। ७ जल। पानी (को०)।

वर्हि शुष्मा—सज्ञा पु० [स० वर्हि शुष्मन्] आग। अग्नि [को०]।

वर्हि—सज्ञा पु० [स० वर्हिस्] १ जल। २ अग्नि। ३ यज्ञ। ४. कुश। ५ चित्रक वृक्ष। ६. दीप्ति। ७ एक राजा [को०]।

वर्हिकुसुम—सज्ञा पु० [स०] गठिवन। ग्रथिपर्णी [को०]।

वर्हिज्योति—सज्ञा पु० [स० वर्हिज्योतिस्] अग्नि [को०]।

वर्हिण—सज्ञा पुं० [स०] १ मोर। २ भारतवर्ष के एक द्वीप का नाम। ३ तगर [को०]।

यौ०—वर्हिणवाहन = स्कद का एक नाम। वर्हिणवासा = 'वर्हिवासा'।

वर्हिण[२]—वि० मोरपख से सज्जित [को०]।

वर्हिध्वज—सज्ञा पु० [स०] स्कद [को०]।

वर्हिवर्ह—सज्ञा पु० [स०] एक गधद्रव्य।

वर्हिमुख - सज्ञा पु० [स०] १ देवता। २ अग्नि [को०]।

वर्हिवासा—वि० [स० वर्हिवासस्] वह बाण जिसमे मोर का पख लगा हो [को०]।

वर्हिवाहन—सज्ञा पु० [स०] स्कद।

वर्हिषद्—सज्ञा पु० [स०] एक पितर का नाम।

वर्हिष्केश—सज्ञा पु० [स०] अग्नि। पावक [को०]।

वर्ही—सज्ञा पु० [स० वर्हिन्] १. मयूर। मोर। २ कश्यप के एक पुत्र का नाम। ३. तगर।

वलतिका—सज्ञा स्त्री० [स० वलन्तिका] अगविक्षेप या हाव भाव की एक विशेष मुद्रा [को०]।

वलय—सज्ञा पु० [स० वलम्ब] १ अवलब। सहारा। २ लव (ज्यामिति)। आधार (को०)।

वल—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। २ एक असुर का नाम।

विशेष—यह देवताओं की गौएँ चुराकर एक गुहा मे जा छिपा था। इद्र उस गुहा को खोदकर उसमे से गौओं को छुडा लाए थे। फिर वल ने वैन का रूप धारण किया और वह बृहस्पति के हाथ से मारा गया। दे० 'वल'।

वलक सज्ञा पुं० [स०] मार्कडेयपुराणानुसार तामस मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि का नाम। २ यात्रा (को०)। ३ शहतीर (को०)। ४ जुलूस (को०)।

वलक्ष—वि० [स०] धवल। श्वेत। उ०—मानव की पूजा की मैंने सुर के समक्ष, नर की महिमा का लिखा पृष्ठ नूतन, वलक्ष। सामधेनी, पृ० ५३।

वलग्न—सज्ञा पु० [स०] कटि। कमर [को०]।

वलज—सज्ञा पु० [स०] १ अन्न का ढेरी। २ खेत। क्षेत्र। ३ अन्न। ४ युद्ध। लडाई। ५, प्राकार। चहारदीवारी [को०]।

वलजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदरी स्त्री [को०]।

वलद्विप—सज्ञा पु० [स० वलद्विप्] इद्र।

वलन—सज्ञा पुं० [स०] १ ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रह, नक्षत्रादि का मार्गनाश मे हटकर चलना। विचलन। वक्रगति। २ गोल मे घूमना। चक्कर खाना (को०)। ३ क्षोभ (को०)।

वलनाश—सज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष के अनुसार अयनाश से किसी ग्रह के वलन अर्थात् हटकर चलने या वक्रगति की दूरी का अश।

वलनाशन, वलभित्—सज्ञा पु० [स०] इद्र [को०]।

वलभि, वलभी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह मडप जो घर के ऊपर शिखर पर बना हो। रावटी। वडभी। २ घर की चोटी। ३ छानी। ४ एक पुरानी नगरी जो काठियावाड मे थी और जिसके खँडहर अब तक मिलते है।

विशेष—यहाँ एक प्रसिद्ध राजवश का राज्य था, जिसके सस्थापक सेनापति भट्टार्क थे।

वलय—सज्ञा पु० [स०] १ मडल। २ ककण। ३ चूडी। ४ वेष्ठन। ५ अठारह प्रकार के गलगड रोगो मे से एक।

विशेष—इसमे कफ के कारण गले के अदर उस नली मे जिसमे से होकर अन्न जल पेट मे जाता है, एक गाठ उत्पन्न हो जाती है। यह गाँठ ऊँची और बडी होती है और अन्न जल के जाने का मार्ग रोक देती है। वैद्य लोग इसे असाध्य मानते हैं।

६ दड व्यूह का एक भेद। सैनिको की दो दो पक्तियो मे स्थिति। (कौटिल्य अर्थशास्त्र)। ८ कुडल। बाला (को०)। ९ कटिबध। मेखला। कमरपेटी (को०)। १० प्राकार। चहारदीवारी (को०)। ११ शाखा। डाली (को०)। १२ शरीर की गोल हड्डियाँ। १३ प्राचुर्य। विविधता। आधिक्य (को०)।

वलयित—वि० [स०] १, वेष्ठित । परिवृत्त । घेरा हुआ । २. चक्कर खाता हुआ (को०) । ३ गोल मुडा हुआ (को०) ।

वलयिता—वि० [स० वलयितृ] वेष्ठित करनेवाला । घेरनेवाला (को०) ।

वलयी—वि० [स० वलयिन्] १ वलय या ककण पहननेवाला । २ आवेष्ठित । घिरा हुआ (को०) ।

वलवडⓅ—वि० [स० वलवन्त] दे० 'बरिवड' । उ०—अपैसिह अयनैत इक खल खडन वलवड ।—सुजान०, पृ० ५ ।

वलवला—सज्ञा पु० [अ०] उमग । आवेश ।

वलसूदन—सज्ञा पु० [स०] इद्र ।

वलहता—सज्ञा पु० [स० वलहन्तृ] इद्र ।

वलाक—सज्ञा पु० [स०] वगला । वक (को०) ।

वलाका—सज्ञा स्त्री० [स०] वगला । दे० 'बलाका' ।

वलाकी—वि० [स० वलाकिन्] दे० 'बलाकी' ।

वलाट—सज्ञा पु० [स०] मूँग ।

वलायत—सज्ञा पु० [अ०] १ विलायत । इग्लैड । २. वली होना । सरदार होना (को०) ।

वलासक—सज्ञा पु० [स०] १ कोकिल । २ मेढक । भेक (को०) ।

वलाहक—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ । बादल । २ पर्वत । ३ एक दैत्य का नाम । ४ साँपो की एक जाति जो दर्वीकर के अतर्गत मानी जाती है । ५. मुस्तक । मोथा । ६ श्रीकृष्ण के रथ के एक घोडे का नाम । ७ एक नद का नाम । ८ कुशद्वीप के एक पर्वत का नाम । दे० 'बलाहक' ।

वलि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रेखा । लकीर । २ चदन आदि से बनाई हुई रेखा । ३ सिकुडन के कारण पडी हुई लकीर । झुर्री । ४ पेट के दोनो ओर पेटी के सिकुडने से पडी हुई रेखा । वल । जैसे,—त्रिवली । ५ देवता को चढाने की वस्तु । ६ राजकर । ७ एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था और जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था । विशेष—दे० 'बलि' । ८ कौटिल्य कथित एक प्रकार का धार्मिक कर । धर्म-कार्य के लिये लगाया हुआ कर । ९, श्रेणी । पक्ति । १० ववासीर का भस्सा । ११ छाजन की ओलती । १२ गधक । १३ एक प्रकार का बाजा ।

वलिक—सज्ञा पु० [स०] घर की छत या छाजन की ढाल का अत जहाँ से पानी गिरता है । ओलती ।

वलित[1]—वि० [स०] १ बल खाया हुआ । लचका हुआ । २ झुका हुआ । मोडा हुआ । ३ परिवृत्त । आवेष्ठित । घेरा हुआ । ४ जिसमे झुर्रियाँ पडी हो । जो जगह जगह से सिकुडा हो । ५ लिपटा हुआ । लगा हुआ । उ०—उरज मलय शैल शील सम मुनि देखि अलक वलित व्याल आशा कर आए है ।—केशव (शब्द०) । ६ आच्छादित । ढका हुआ । उ०—कटक कलित तृन वलित विध जल ।—केशव (शब्द०) । ७ युक्त । सहित । उ०—श्री रघुवर के इष्ट अश्रु वलित सीतानयन ।—केशव (शब्द०) ।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग 'कलित' आदि के समान काव्य की भाषा मे बहुत अधिक होता है ।

वलित[2]—सज्ञा पु० १ काली मिर्च । २. नृत्य मे हाथ मोडने की एक मुद्रा ।

वलितक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का आभूषण । एक गहना (को०) ।

वलिन, वलिम—वि० [स०] झुर्रीदार । सिकुडनवाला (को०) ।

वलिमान्—वि० [स० वलिमत्] दे० वलि युक्त । 'वलिन ।'

वलिमुख—सज्ञा पु० [स०] १. वानर । २ गरम दूध मे मट्ठा मिलाने से उत्पन्न छठा विकार ।

वलिर—वि० [स०] ऐंचाताना (को०) ।

वलिस—सज्ञा पु० [स०] वडिश । कँटिया । बसी (को०) ।

वलिशि, वलिशी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वलिश' (को०) ।

वली[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ झुर्री । शिकन । २ अवली । श्रेणी । ३ रेखा । लकीर । ४ चदन आदि से बनाई हुई लकीर । ५ पेट के दोनो ओर पेटी के सुकडने से पडी हुई लकीर । जैसे,—त्रिवली । उ०—यह रोग गुदा की तीन वली के भीतर होय है ।—माधव०, पृ० ५३ ।

वली[2]—सज्ञा पु० [अ०] १ मालिक । स्वामी । उ०—बेवहा मेरे सिर पर सदा वली अल्लाह मदद बेवहा की, दोहाई दरिया साहब की, दोहाई ।—सत० दरिया, पृ० ३५ । २ शासक । हाकिम । अधिपति ।

यौ०—वलीअहद ।

३ साधु । फकीर । उ०—करम उनका मदद जब तें न होवे । वला हर्गिज विलायत कूँ न पावे ।—दक्खिनी०, पृ० ११४ ।

यौ०—वली खुदा = साधु होने का झूठा दावा रखनवाला । धर्म-ध्वजी साधु ।

४ [स्त्री० वलीया] उत्तराधिकारी । वारिस (को०) । ५ मित्र । दोस्त । सहायक (को०) ।

वलीअहद—सज्ञा पु० [अ०] युवराज । टीका । टिर्कत ।

वलीक—सज्ञा पु० [स०] १ घर की छत या छाजन का ओलती । २ सरकडा ।

वलीभूत्—वि० [स०] घुँघराला । मुडा हुआ । वलियुक्त (को०) ।

वलीमुख—सज्ञा पुं० [स०] १ वानर । २ दे० 'वलिमुख' (को०) ।

वलीवदन, वलीवक्त्र—सज्ञा पु० [स०] वानर । कपि (को०) ।

वलीवर्द—सज्ञा पु० [स०] वृषभ । बैल (को०) ।

वलूक—सज्ञा पु० [स० [१ पद्ममूल । भिस्सा । भसीड । कमल की जड । २ एक प्रकार का पक्षी ।

वलूल—वि० [स०] शक्तिपान् । बली (को०) ।

वले, वलेक—अव्य० [फा० वलेकिन का सक्षिप्त रूप] लेकिन । मगर उ०—नुमाइश मे गरचे मुठा भर हूँ मैं । वले इल्म के फन मे बेहतर हूँ मैं ।—दक्खिनी०, पृ० ७९ ।

वलेकिन—अव्य० [फा०] किंतु । परतु । मगर (को०) ।

वल्क[1]—सज्ञा पु० [स०√वल्क् (=भषण, कथन)] वक्ता। वाचक। दूक [को०]।

वल्क[2]—सज्ञा पु० [स०] १ पेडो के धड और काड पर का आवरण। वल्कल। छाल। २ मछली के ऊपर की छाल। चोई। शल्क (को०)। ३ खड। भाग (को०)। ६ एक प्रकार का वस्त्र (को०)। ५ पट्टिका लोध्र। पठानी लोध (को०)।

यौ०—वल्कतरु। वल्कद्रुम। वल्कपत्र। वल्कफल। वल्कलोध्र। वल्कवासा = वल्कल या छाल का परिधान।

वल्कतरु—सज्ञा पु० [स०] सुपारी का वृक्ष।

वल्कद्रुम—सज्ञा पु० [स०] भोजपत्र का वृक्ष।

वल्कपत्र—सज्ञा पु० [स०] हिंताल।

वल्कफल—सज्ञा पु० [स०] अनार का पेड को०]।

वल्कल—सज्ञा पु० [स०] १ वृक्ष की छाल। पेडो के धड और काड पर का आवरण।

पर्या०—त्वक्। वल्क। चोच। चोलक। शल्क। छल्लक। छल्लि। छल्ली।

२ वृक्ष की छाल का वस्त्र, जिसे अरण्यवासी मुनि और तपस्वी पहना करते थे उ०—वल्कल की चोली हँस हँसकर ढीली करती थी आली।—शकु०, पृ० ५। ३ ऋग्वेद की वाष्कल नामक शाखा। ४ एक प्रकार की लोध (को०)। ५ एक दैत्य (को०)।

यौ०—वल्कलसवीत = वृक्ष की छाल का परिधान धारण करनेवाला।

वल्कला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सफेद रग का एक प्रकार का पत्थर जिसका गुण शीतल और शातिकारक माना जाता है। शिलावल्का। २ तेजबल।

वल्कली—वि० [स० वल्कलिन्] वल्कल या पेड की छाल पहननेवाला। वल्कलधारी।

वल्कलोध्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की लोध। पठानी लोध।

वल्कवान्[1]—सज्ञा पु० [स० वल्कवत्] वह जिसमे शल्क या चोई हो, मछली मीन [को०]।

वल्कवान्[2]—वि० दे० 'वल्कली' [को०]।

वल्कल—सज्ञा पु० [स०] कटक। काँटा।

वल्कुट—सज्ञा पु० [स०] छाल। वल्कल [को०]।

वल्गक—वि० [स०] उछलनेवाला। नाचने कूदनेवाला [को०]।

वल्गन—सज्ञा पुं० [स०] १ घोडे का कूदते या उछलते हुए चलना। दुलकी। २ बहुत सी इधर उधर की बातें कहना। बहुत बकना।

वल्गर—वि० [अ०] ग्राम्य। भोडा। अशिष्ट। उ०—वल्गर शब्द ही इस आशय को व्यक्त कर सकता है।—रगभूमि, भा० २, पृ० ५००।

वल्गा—सज्ञा स्त्री० [स०] लगाम। बाग।

वल्गित—वि० [स०] १ घूमता या नाचता हुआ। नचता हुआ। उ०—अपलक था आकाश चपल वल्गित गति लक्ष्मी।—साकेत, पृ० ४०३। २ उछलता कूदता हुआ।

वल्गित[2]—सज्ञा पुं० १ डीग। बढा चढा कर की गई बात। २ घोडे की एक चाल। प्लुत गति [को०]।

वल्गु[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ छाग। बकरा। २ बौद्धो के बोधिद्रुम के चार अधिष्ठाता देवताओ मे से एक।

वल्गु[2]—वि० १ सुदर। खूबसूरत। २ मीठा। मधुर (को०)। ३ अमूल्य। बहुमूल्य (को०)।

वल्गु[3]—क्रि० वि० सुदरता से। सुस्पष्टतापूर्वक [को०]।

वल्गुक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ चदन। २ विपिन। वन। ३ पण। बाजी। ४ सौदा। ५ मूल्य (को०)।

वल्गुक[2]—वि० रुचिर। सुदर।

वल्गुजघ—सज्ञा पुं० [स० वल्गुजङ्घ] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वल्गुज—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वल्गुजा] छाग। बकरा।

वल्गुदतीसुत—सज्ञा पुं० [स० वल्गुदन्तीसुत] इद्र।

वल्गुनाद—वि० [स०] मधुर कूजन या गान करनेवाला [को०]।

वल्गुपत्र—सज्ञा पु० [स०] वनमूँग।

वल्गुपोदिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लहसुआ नाम का साग। २ एक प्रकार की लता।

वल्गुल—सज्ञा पुं० [स०] चमगादड। गादुर।

वल्गुला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बकुची। २ चमगादड।

वल्गुलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कत्थई रग का पतग जाति का कीडा जिसे 'तैलपायी' भी कहते हैं। चपटा। २ मजूरा। झावा। पिटारा।

वल्गुली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चमगादड। गादुर। २ मजूरा। झावा। पिटारा।

वल्द—सज्ञा पु० [अ०] औरस बेटा। पुत्र।

विशेष—किसी मनुष्य के कुल के परिचय के लिये उसके नाम के आगे इस शब्द का व्यवहार करके उसके पिता का नाम रखा जाता है। जैसे,—गोकुल वल्द बलदेव' अर्थात् गोकुल, बेटा बलदेव का'। दस्तावेजो और सरकारी कागजो आदि मे, जिनकी भाषा उर्दू होती है, इस शब्द का प्रयोग अधिक होता है।

वल्दियत—सज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम का परिचय। बाप के नाम का पता। जैसे,—अपनी वल्दियत और सकूनत लिखाओ।

वल्मन—सज्ञा पु० [स०] १ आहार। भोजन। २ खाना। भोजन करना [को०]।

वल्मिक, वल्मिकि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वल्मीक' [को०]।

वल्मी—सज्ञा स्त्री० [स०] दामक। चोटी [को०]।

यौ०—वल्मीकूट।

वल्मीक—सज्ञा पु० [स०] १. दीमको का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमोट।

यौ०—वल्मीकभौम, वल्मीकराशि, वल्मीकवपा = बाँबी। बिमौट। वल्मीकशीर्ष। वल्मीक सभव।

२ वाल्मीकि मुनि। ३. वह मेघ जिसपर सूर्य की किरणें पडती हो। ४ एक प्रकार का रोग।

विशेष—इस रोग मे त्रिदोष के कारण गले, कधे, काँख, हाथ, पैर और सधि स्थानो (जोडो) में सूजन हो जाती है, जो क्रमश गाँठ की तरह कडी हो जाती है। इसमे सूई चुभने की सी पीडा होती है और पकने पर अनेक छेद हो जाते हैं। यदि आरभ मे ही इसकी चिकित्सा न की जाय, तो यह रोग असाध्य हो जाता है।

वल्मीकशीर्ष—सज्ञा पु० [स०] स्रोताजन। लाल सुरमा।

वल्मीकसंभवा—सज्ञा स्त्री० [स० वल्मीकसम्भवा] एक प्रकार की ककडी [को०]।

वल्मीकाग्र—सज्ञा पु० [स०] रामगिरि पर्वत का एक शृग [को०]।

वल्मीकूट—सज्ञा पु० [स०] बिमौट [को०]।

वल्ल—सज्ञा पु० [स०] १ लीलावती के अनुसार एक मान जो तीन गुजा या रत्ती के बराबर तौल मे होता है।

विशेष—वैद्यक मे दो गुजा का एक 'वल्ल' माना गया है और राजनिघटु सार्ध एक घुँघची का ही वल्ल मानता है।

२ खलिहान मे भूसा अलग करना। बरसाना। ओसाना। ३ निषेध। ४ आवरण। ५ सलई का पेड। ६ बौंरा। ७ एक माशा चाँदी (को०)। ८ एक किस्म का गेहूँ (को०)।

वल्लक—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र मे रहनेवाला एक प्रकार का जतु। २ चिडिया। पक्षी (को०)।

वल्लकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वीणा। उ०—वही वल्लकी मैं लिए गोद मे, उसे छेडती थी महामोद मे।—साकेत, पृ० ३०४। २. सलई का वृक्ष।

वल्लणहार—वि० [स० √वल् या वल्ल् (=गमन)+हिं० हार] गमनशील। चलनेवाला। चलायमान। उ०—सज्जण वल्ले, गुण रहे, गुण भी वल्लणहार। सूकण लागी वेलडी, गयाज सीचणहार।—ढोला०, दू० ३७४।

वल्लभ[1]—वि० [स०] १ अत्यत प्रिय। प्रियतम। प्यारा। २ सर्व श्रेष्ठ। सर्वप्रधान (को०)।

वल्लभ[2]—सज्ञा पु० १ अत्यत प्यारा व्यक्ति। प्रिय मित्र। नायक। २ पति। स्वामी। जैसे,—राधावल्लभ। ३ अध्यक्ष। मालिक। ४ सुदर लक्षणो से युक्त घोडा। ५ एक प्रकार की सेम। ६ वैष्णव सप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका सप्रदाय वल्लभ सप्रदाय कहलाता है।

विशेष—इनके माता पिता का पता नही। लक्ष्मण भट्ट नामक एक दाक्षणी ब्राह्मण ने चुनारगढ के पास एक बालक पडा पाया, और उसे अपने घर लाकर पुत्र के समान पाला। फिर वही बालक प्रसिद्ध वल्लभाचार्य हुआ। जबतक लक्ष्मण भट्ट जीते रहे, तबतक वल्लभ उन्ही के पास अध्ययन करते थे। उनके मरने पर वे विष्णुस्वामी के मदिर मे जाकर शिष्य हुए और काशी मे आकर सन्यास लिया। सन्यास छोडकर ये फिर गृहस्थ हो गए थे। इनके कई पुत्र हुए, जो गद्दियो के मालिक गोस्वामी हुए। इन्होने राधाकृष्ण की बडी आडबरपूर्ण उपासना चलाई और अपना वेदात सबधी एक स्वतत्र सिद्धात भी स्थापित किया जो 'विशुद्धाद्वैतवाद' के नाम से प्रसिद्ध है। इस कारण ये वेदात के चार मुख्य आचार्यो मे माने जाते हैं। इनका जन्म सन् १४७९ ई० और मृत्यु १५३१ ई० मे हुई। सूरदास आदि अष्टछाप के कवि इन्ही के शिष्य थे।

वल्लभपाल, वल्लभपालक—सज्ञा पु० [स०] साईस। अश्वरक्षक [को०]।

वल्लभमत—सज्ञा पु० [स०] विशुद्धाद्वैतवाद। उ०—वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र विट्ठलनाथ ने 'वल्लभ मत' के आठ प्रधान भक्त कवियो को लेकर 'अष्टछाप' की स्थापना की।—अकबरी०, पृ० ५।

वल्लभा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रिय स्त्री। प्रिय पत्नी। प्यारी जोरू।

वल्लभा[2]—वि० स्त्री० प्यारी। प्रिया।

वल्लभाचार्य—सज्ञा पु० [स०] वैष्णव मत के एक प्रसिद्ध आचार्य। विशेष दे० 'वल्लभ'-६। उ०—चैतन्य महाप्रभु एव वल्लभाचार्य द्वारा कृष्णभक्ति को प्रश्रय मिला।—अकबरी०, पृ० ५।

वल्लभाग्रित—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रतिबध [को०]।

वल्लभी—सज्ञा पु० [स०] १. दे० 'वलभी'। २ गोपिका। गोपी (को०)।

वल्लर—सज्ञा पु० [स०] १ लता। २ निकुंज। ३ वन। ४ कृष्णागुरु। अगर। ५ मजरी। दे० 'वल्लुर'।

वल्लरि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वल्लरी'।

वल्लरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्ली। लता। २ मजरी। ३ मेथी। ४ वच। ५. एक प्रकार का बाजा।

वल्लव—सज्ञा पु० [स०] १ गोप। उ०—छीत स्वामी सकल जीव उद्धरन हित प्रगट वल्लव सदन दनुज हारी।—छीत०, पृ० १। २ सूपकार। सुआर। रसोइया। ३ भीम का एक नाम। दे० 'वल्लभ' (को०)।

वल्लवी—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपी। अहीरिन [को०]।

वल्लह⑤—सज्ञा पु० [स० वल्लभ, प्रा० वल्लह] दे० 'वल्लभ'। उ०—सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा तोइ। खिण खिण अतर सभरइ, नही विसरइ सोइ।—ढोला०, दू० २३।

वल्लाह—अव्य० [अ०] ईश्वर की शपथ। सचमुच। उ०—इन नए नखरो ने तो वल्लाह बस बेतरह आफत मचा दिया।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २४।

वल्लि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लता। २ पृथिवी [को०]।

वल्लिकटकारिका—सज्ञा स्त्री० [स० वल्लिकण्टकारिका] अग्निदमनी। शोला।

वल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता । २ बेला । ३ पोई नाम की लता जिसकी पत्तियों का साग बनाकर खाया जाता है ।

वल्लिकाम्र—संज्ञा पु० [सं०] मूँगा [को०] ।

वल्लिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वल्लकी' [को०] ।

वल्लिज—संज्ञा पु० [सं०] मरिच । मिर्च ।

वल्लिदूर्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्वेत दूर्वा । सफेद दूब ।

वल्लिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वल्लिदूर्वा' [को०] ।

वल्लिपाषाणसंभव—संज्ञा पु० [सं० वल्लिपाषाणसम्भव] मूँगा [को०] ।

वल्लिय—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्ली] लता । उ०—विना वृक्ष वल्लिय आरोहति ।—पृ० रासो०, पृ० ६३ ।

वल्लिशूरण, वल्लिसूरण—संज्ञा पु० [सं०] अत्यम्लपर्णी लता । रामचना । रपटुआ ।

वल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लता । २ केवटी मोथा । कैवर्तिका । ३ अग्निदमनी । शोला । ४ काली अपराजिता । ५ चव्य । चाव (को०) । ७ अजमोदा ।

वल्लीकर्ण—संज्ञा पु० [सं०] कानों का वैरूप्य । श्रवणेंद्रिय की विरुपता [को०] ।

वल्लागड—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की मछली [को०] ।

वल्लीज—संज्ञा पुं० [सं०] मिर्च ।

वल्लीपद—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का वस्त्र [को०] ।

वल्लीबदरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की बेर [को०] ।

वल्लीवृक्ष—संज्ञा पु० [सं०] शाल वृक्ष ।

वल्लुर—संज्ञा पु० [सं०] १ कुंज । २ मंजरी । फूलों का गुच्छा ३ क्षेत्र । ४ निर्जन स्थान । सूखी जगह ।

वल्लूर—संज्ञा पु० [सं०] १ धूप में सुखाया हुआ मांस । २ शूकर का मांस । ३ ऊषर । ऊसर । रेगिस्तान । ४ जंगल । ५ वीरान । उजाड । ६ बिना जोती हुई भूमि । परती (को०) । ७ कुंज । लतामंडप (को०) । ८ मंजरी (को०) । १०, निर्जल भूमि (को०) ।

वल्लूरक—संज्ञा पु० [सं०] कान की कुरूपता । वल्लीकर्ण । [को०] ।

वल्ल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] धात्री वृक्ष । आँवला [को०] ।

वल्वग—संज्ञा पु० [सं०] आँवला ।

वल्वज—संज्ञा पु० [सं०] ओखली ।

वल्वजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तृण या घास ।

पर्या०—दृढपत्री । तृणेक्षु । दृढत्वरा । मौंजीपत्री ।

विशेष—वैद्यक में यह शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह और तृषा को दूर करनेवाली कही गई है ।

वल्वल—संज्ञा पु० [सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था । इल्वल । उ०—राम दिन कइक ता ठौर औरहु रहे, आइ वल्वल तहाँ दियो दिखाई । रुधिर अरु मांस की लग्यो वर्षा करन, ऋषिमकल देखि कै गए डराई ।—सूर (शब्द०) ।

वल्हिक, वल्हीक—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वल्हीक' [को०] ।

वव—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार ग्यारह करणों में एक करण, जिसमें जन्म लेनेवाले मनुष्य का बलवान्, धीर, कृती, और विचक्षण होना माना जाता है ।

ववजाँ—संज्ञा पुं० [सं० व्यपगम या देशज] विघ्न । बाधा । उ०—सदेमाँहि ववज पडयो ।—बी० रासो, पृ० ६७ ।

ववणी—संज्ञा स्त्री० [देशी] कपास ।—देशी०, पृ० २८४ ।

ववहार—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] दे० 'व्यवहार' ।

ववनाँ—क्रि० स० [प्रा०√वव] बोना ।

वशकर—वि० [सं० वशङ्कर] वश या काबू में करनेवाला [को०] ।

वशकृत—वि० [सं० वशङ्कृत] वशीभूत [को०] ।

वशगत—वि० [सं० वशङ्गत] वशवर्ती [को०] ।

वशंवद—वि० [सं०] १ वशीभूत । वशवर्ती । २ आज्ञाकारी । दास ।

वश'—संज्ञा पु० [सं०] १. इच्छा । चाह । २ एक व्यक्ति पर दूसरे का ऐसा प्रभाव कि दूसरा उसके साथ जो चाहे कर सके, या उससे जो चाहे करा सके । काबू । इख्तियार । अधिकार । जैसे,—(क) इस समय वह तुम्हारे वश में है, जो चाहो करा लो । (ख) मैं उसके वश में हूँ, जैसा वह कहेगा, वैसा करूँगा । (ग) उसपर मेरा कोई वश नहीं है ।

मुहा०—(किसी का किसी के) वश में होना = (१) अधिकार में होना । काबू में होना । कब्जे में होना । अधीन होना । (२) कहे में होना । आज्ञानुवर्ती होना । दबाव मानना । किसी पर वश होना = किसी पर अधिकार होना । किसी पर ऐसा प्रभाव होना कि उसे इच्छानुकूल चलाया जा सके । जैसे,—उस लड़के पर हमारा कोई वश नहीं है । वश का = जिसपर अधिकार हो । जो इच्छानुसार चलाया जा सके । अधीन । जैसे,—अब वह सयाना हुआ, हमारे वश का नहीं है ।

३ किसी वस्तु या बात को अपने अनुकूल घटित करने का सामर्थ्य । शक्ति की पहुँच । काबू । जैसे,—(क) जो अपने वश की बात नहीं उसके लिये शोक क्या ? । (ख) हार जीत अपने वश की बात नहीं ।

मुहा०—वश का = इच्छा के अधीन । वश चलना = शक्ति काम करना । कुछ करने का सामर्थ्य होना । काबू चलना । जैसे,—यदि मेरा वश चलता, तो मैं उसे निकाल देता ।

४ अर्जन करने का भाव । अधिकार । कब्जा । प्रभुत्व । उ०—हरि कछु ऐसो टोना जानत । सबके मन अपने वश आनत ।—सूर (शब्द०) । ५ जन्म । ६ वेश्याओं के रहने का स्थान । चकला । ७ आर्यों का एक समूह । उ०—मध्यदेश में कुरुओं और पंचालों के अलावा वश और उशीनर भी थे ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७७ ।

वश[2]—वि० १ अधीन । २ आज्ञाकारी । ३. मुग्ध [को०] ।

वश[3]—प्रत्य० [फा०] समान । तुल्य ।

वशका—संज्ञा स्त्री० [सं०] आज्ञाकारिणी पत्नी [को०] ।

वशकारक—वि० [स०] वश या अधिकार मे करनेवाला। वशीभूत कराने योग्य [को०]।

वशक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] वश मे लाने की क्रिया। वशीकरण प्रयोग [को०]।

वशग—वि० सज्ञा पु० [स०] दे० 'वशवर्ती' [को०]।

वशगा—सज्ञा स्त्री० [स०] आज्ञाकारिणी स्त्री। दासी [को०]।

वशन—सज्ञा पु० [स०] इच्छा या आकाक्षा करना। चाहना। अभिलाषा करना [को०]।

वशवर्ती[1]—वि० [स० वशवर्तिन्] जो दूसरे के वश मे रहे। जो दूसरे के आज्ञानुसार चलता हो। अधीन। तावे। उ०—उसके सपादक आग्रह और हठ के वशवर्ती हो अपनी मर्यादा को सर्वथा भूल गए हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २८५।

वशवर्ती[2]—सज्ञा पु० सेवक। चाकर। दास [को०]।

वशा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वन्ध्या स्त्री। बाँझ। २ नारी। स्त्री। ३ पत्नी। ४ गाय। ५ हथिनी। ६ वन्ध्या गाय। ठाँठ। ७. पति की बहन। ननद। ८. कन्या। बेटी। पुत्री (को०)। ९ वेश्या। वारागना (को०)।

वशाकु—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की चिडिया।

वशाद्यक—सज्ञा पु० [स०] शिशुमार सूँस।

वशानुग[1]—सज्ञा पु० [स०] आज्ञाकारी सेवक। अधीन दास।

वशानुग[2]—वि० वशीभूत।

वशापायी—सज्ञा पु० [स० वशापायिन्] कुत्ता। श्वान [को०]।

वशालोभ—सज्ञा पु० [स०] हथिनी के द्वारा हाथी को पकडने का ढग या तरीका [को०]।

वशि—सज्ञा स्त्री० [स०] वश मे करना। समोहित करना [को०]।

वशिक—वि० [स०] शून्य। खाली।

वशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] अगर। अगर की लकडी।

वशिता[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अधीनता। तावेदारी। २ मोहने की क्रिया या भाव। मोहन। ३ दे० 'वशित्व' (को०)।

वशिता[2]—वि० [स० वशितृ] स्वतत्र। २ सयमी [को०]।

वशित्व—सज्ञा पु० [स०] १ वशता। अधीनता। २. योग के अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों मे से एक। कहते हैं कि इस सिद्धि से साधक सबको अपने वश मे कर लेता है। ३ आत्मसयम (को०)।

वशिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शमी का पेड। २ एक वनस्पति। बाँदा (को०)। ३ पत्नी। स्त्री (को०)।

वशिमा—सज्ञा स्त्री० [स० वशिमन्] योग की आठ सिद्धियो मे से एक वशित्व। सिद्धि।

वशिर—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्रनवण। समुद्री नमक। २ एक प्रकार का वृक्ष। ३. एक प्रकार की लाल मिर्च। मिर्चा। ४. चव्य (को०)। ५ अपामार्ग (को०)। ६ राजपिप्पली (को०)।

वशिष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वसिष्ठ'।

वशी[1]—वि० [स० वशिन्][वि० स्त्री० वशिनी] १ अपने को वश मे रखनेवाला। २ वश मे किया हुआ। काबू मे लाया हुआ। अधीन। ३ शक्तिशाली (को०)।

वशी[2]—सज्ञा पु० १ ऋषि। २ शासक। राजा [को०]।

वशीकर—वि० [स०] वश मे करनेवाला। अधीन बनानेवाला [को०]।

वशीकरण—सज्ञा पु० [स०] [वि० वशीकृत] १ वश मे लाने की क्रिया। नियमन। निग्रह। २ मणि, मत्र या औषध आदि के द्वारा किसी को अपने वश मे करने का प्रयोग। अधीन करना।

विशेष—तत्र मे चार प्रकार के प्रयोग कहे जाते हैं—मारण, मोहन, वशीकरण और उच्चाटण। अथर्ववेद मे मत्र सिद्ध करके मणि और औषध द्वारा वश मे करने का उल्लेख है।

वशीकरणीय—वि० [स०] वश मे किए जाने योग्य। अपना लेने लायक। उ०—तुम वशीकरणीय, प्रियतम, तुम रुचिर वरणीय साजन। लाजनत तव नयन मे अब विरति के रंग राग ये क्यो ?—क्वासि, पृ० ४३।

वशीकार—सज्ञा पु० [स०] वश मे करना।

वशीकृत—वि० [स०] १ किसी प्रकार वश मे किया हुआ। २ मत्र द्वारा वश मे किया हुआ। मत्रमुग्ध। ३ मोहित। मुग्ध।

वशीभूत—वि० [स०] १ वश मे आया हुआ। अधीन। तावे। २. दूसरे की इच्छा के अधीन। ३ शक्तिशाली। शक्तिपूर्ण (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

वशीर—सज्ञा पुं० [स०] गजपिप्पली [को०]।

वशेंद्रिय—वि० [स० वशेन्द्रिय] इद्रियो को अधीन रखनेवाला। जितेंद्रिय [को०]।

वश्य[1]—वि० [स०] १ वश मे आनेवाला। तावे होनेवाला। २ किसी की इच्छा के अधीन। दूसरे की आज्ञा या कहने मे रहनेवाला। वश मे रहनेवाला। उ०—तुम्हारा धन हे मान अवश्य, किंतु हूँ मै तो यो ही वश्य।—साकेत, पृ० ४४।

वश्य[2]—सज्ञा पु० १ दास। सेवक। २ मातहत। ३ मार्कंडेयपुराण के अनुसार अग्नीध्र का पाँचवाँ पुत्र। ४. लवग। लौंग (को०)।

वश्यक—वि० [स०] आज्ञापालक। वश मे रहनेवाला [को०]।

वश्यका—सज्ञा स्त्री० [स०] वश्या। आज्ञाकारिणी स्त्री [को०]।

वश्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] वश मे होने की अवस्था या भाव। अधीनता। (राष्ट्र या राजा)।

वश्यमित्र—सज्ञा पु० [स०] वह (राष्ट्र या राजा) मित्र जिसका बहुत प्रकार से उपयोग किया जा सके। यह तीन प्रकार का होता है। —(१) एकतोभोगी, (२) उभयतोभोगी और (३) सर्वतोभोगी।

वश्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लगाम। २ नीला परिजिता। ३ गोरोचन। ४ आज्ञाकारिणी या वशीभूता स्त्री (को०)।

वषट्—अव्य० [स०] एक शब्द जिसका उच्चारण अग्नि मे आहुति देते समय यज्ञो मे होता है। अगन्यास और करन्यास मे शिखा और मध्यमा के साथ इसका व्यवहार होता है।

वषट्कर्ता—सज्ञा पु० [स० वषट्कर्तृ] वषट् का या देवाहुति के मत्रो का उच्चारण करनेवाला होता (को०)।

वषट्कार—सज्ञा पु० [स०] १ देवताओ के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ। होम। होत्र। २. वेदोक्त तैतीस देवताओ मे से एक।

वषट्कृत—वि० [स०] देवताओ के निमित्त अग्नि मे डाला हुआ। होम किया हुआ। हुत।

वषट्कृत्य—सज्ञा पु० [स०] होम।

वष्कय—सज्ञा पु० [स०] एक वर्ष का बछडा (को०)।

वष्कयणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वष्कयिणी'।

वष्कयिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] बकेना गाय।

वसत—सज्ञा पु० [स० वसन्त] [वि० वासत, वासतक, वासतिक, वसती] १ वर्ष की छह ऋतुओ मे से प्रधान और प्रथम ऋतु जिसके अतर्गत चैत और वैसाख के महीने माने गए है। नई पत्ती लगन और बहुत से फूल फूलने की सुदर ऋतु। बहार का मौसम।

विशेष—प्राचीन वैदिक काल मे यह ऋतु चैत और वैसाख मे ही पडती थी, पर क्रमश अयन खिसकने से आजकल प्रकृति मे कुछ अतर दिखाई पडता है। इसी से पीछे के कुछ ग्रथो मे फागुन और चैत के महीने वसत ऋतु के कहे गए हैं। पर काव्य आदि मे परपरानुसार अबतक चैत और वैसाख ही इस ऋतु के महीने माने जाते हैं। वसत ऋतु के ये लक्षण कहे गए हैं—पेडो मे फूल लगना और नई पत्तिया आना, शीतल, मद और सुगधयुक्त वायु चलना, सायकाल अत्यत मनोरम होना और स्त्री पुरुषो का उमग से भरना, आदि। इस ऋतु मे प्राचीन काल मे वसतोत्सव और मदनपूजा होती थी। आजकल होली का उत्सव उसी की परपरा है। पुराणो मे इस ऋतु का अधिष्ठाता देवता कामदेव का सहचर कहा गया है।

२ अतिसार रोग। ३ शीतला रोग। विस्फोटक। चेचक। ४ मसूरिका रोग। ५ छह रागो मे दूसरा राग। (सगीत)।

विशेष—इस राग की उत्पत्ति पचवक्त्र शिव के पाँचवें मुख से कही गई है। इसकी छह रागिनियाँ ये है—देशी, देवगिरी, वैराटी, ताडिका, ललिता और हिंडोला। कल्लिनाथ के अनुसार छह रागिनियाँ ये हैं—अधूली, गमकी, पटमजरी, गौडकेरी, वामकली और देवशाखा। सगीतदामोदर का मत है कि श्रीपचमी से हरिशयनी एकादशी तक वसत राग गा सकते है। पर सगीतदर्पण के अनुसार इसे वसत ऋतु मे ही गाना चाहिए। इसका सरगम इस प्रकार है—सा, रि, ग, म, प, नि, सा। कुछ लोग इस राग को हिंदोल राग का पुत्र मानते हैं।

६ एक ताल का नाम। (सगीत)। ७ फूलो का गुच्छा। ८ नाटक मे विदूषको की आख्या वा नाम (को०)। ९ एक वृत्त का नाम (को०)।

वसतक—सज्ञा पु० [स० वसन्तक] १ वसत ऋतु (को०)। २ श्योनाक। सोनापाढा। टेंटू। अरलू।

वसतकाल—सज्ञा पु० [स० वसन्तकाल] बहार का मौसम। वसत ऋतु (को०)।

वसतकुसुम—सज्ञा पुं० [स० वसन्तकुसुम] गोदनी नाम का वृक्ष। विशेष दे० 'गोदी' (को०)।

वसतकुसुमाकर—सज्ञा पु० [स० वसन्तकुसुमाकर] एक उत्तम रसौषध। (वैद्यक)।

वसतघोष—सज्ञा पु० [स० वसन्तघोष] कोकिल। कोयल (को०)।

वसतघोषी—सज्ञा पु० [स० वसन्तघोषिन्] कोकिल।

वसतजा—सज्ञा पु० [स० वसन्तजा] १ वासती या माधवी लता। २ सफेद जुही। ३ वसतोत्सव।

वसततिलक—सज्ञा पु० [सं० वसन्ततिलक] १ एक प्रकार के फूल का नाम। २ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण, जगण, जगण, और दो गुरु, इस प्रकार कुल चौदह वर्ण होते हैं। जैसे,—लाला ललाम मृदुता अवलोकनीया।

वसततिलका—सज्ञा स्त्री० [स० वसन्ततिलका] एक वर्णवृत्त। दे० 'वसततिलक'।

वसतदूत—सज्ञा पु० [स० वसन्तदूत] १ आम का वृक्ष। २ कोयल। ३ पचम राग। ४ चैत्र मास।

वसतदूती—सज्ञा स्त्री० [सं० वसन्तदूती] १ कोकिला। २ पटोली वृक्ष। पाँडरी। पाडर। ३ माधवी लता।

वसतद्रु—सज्ञा पुं० [स० वसन्तद्रु] आम्रवृक्ष (को०)।

वसतद्रुम—सज्ञा पु० [सं० वसन्तद्रुम] आम का वृक्ष (को०)।

वसतपचमी—सज्ञा स्त्री० [स० वसन्तपञ्चमी] माघ महीने की शुक्ल पचमी।

विशेष—इस दिन वसत और रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है। वसत राग के सुनने का महाफल है। इस दिन एकाहार व्रत भी किया जाता है।

वसतपुष्प—सज्ञा पु० [स० वसन्तपुष्प] १. वसत ऋतु के पुष्प। २ एक प्रकार का कदबपुष्प (को०)।

वसतबधु—सज्ञा पुं० [स० वसन्तबन्धु] कामदेव।

वसतभैरवी—सज्ञा स्त्री० [स० वसन्तभैरवी] एक रागिनी का नाम।

वसतमहोत्सव—सज्ञा पु० [स० वसन्तमहोत्सव] १ एक उत्सव जो प्राचीन काल मे वसतपचमी के दूसरे दिन कामदेव और वसत की पूजा के उपलक्ष्य मे मनाया जाता था। २ होलिकोत्सव।

वसतमारु—सज्ञा पु० [स० वसन्तमारु] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

वसतमालतीरस—सज्ञा पुं० [स० वसन्तमालतीरस] एक प्रसिद्ध रसौषध का नाम (को०)।

वसतमालिका—सज्ञा स्त्री० [स० वसन्तमालिका] एक वर्णवृत्त। एक छद का नाम (को०)।

वसतयात्रा—सज्ञा स्त्री० [स० वसन्तयात्रा] वसतोत्सव।

वसतयोध—सज्ञा पु० [स० वसन्तयोध] कामदेव (को०)।

वसततु—सज्ञा पु० [सं० वसन्ततु] ऋतुराज वसत। बहार का मौसम [को०]।

वसतवाक्—सज्ञा पु० [स० वसन्तवाक्] सगीतदामोदर के अनुसार चौदह तालो मे से एक।

वसतव्रत—सज्ञा पु० [स० वसन्तव्रत] कोकिल।

वसतसखा—सज्ञा पु० [स० वसन्तसखः] १ कामदेव। मदन। २ मलय पवन।

वसतसखा—सज्ञा पु० [स० वसन्तसखा] १ मदन। कामदेव। २ मलयानिल।

वसतसहाय—सज्ञा पु० [स० वसन्तसहाय] जिसका सहायक वसत हो, कामदेव [को०]।

वसता—सज्ञा पु० [हिं० वसता] हरे रग की एक सुदर चिडिया जिसका कठ और सिर लाल होता है।

वसतार्त—सज्ञा पु० [स० वसन्तार्त्त] विभीतक वृक्ष। बहेडा।

वसती[1]—सज्ञा पु० [हिं० वसत] एक रग जो हलका पीला होता है। सरसो के फूल के रग का। वसती।

वसती[2]—वि० वसती रग का।

विशेष—वसतोत्सव मे इस रग के कपडे पहने जाते हैं।

वसतोत्सव—सज्ञा पु० [स० वसन्तोत्सव] १ एक उत्सव, जो प्राचीन काल मे वसत पचमी के दूसरे दिन होता था।

विशेष—इसे 'मदनोत्सव' भी कहते थे। इसमे उद्यानो मे जाकर लोग वसत और कामदेव का पूजन करते थे। होली का उत्सव इसी की परपरा है।

२ होली का उत्सव।

वसअत—सज्ञा स्त्री० [अ० वसअत] १. विस्तार। फैलाव। २ समाई। अँटने की जगह। ३ चौडाई। ४ सामर्थ्य। शक्ति। जैसे—सब काम अपना वसअत देखकर करना चाहिए।

वसति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वास। रहना। २ घर। ३ बस्ती। आबादी। ४ जैन साधुओ का मठ। ५. रात। रात्रि। विश्राम काल। ६ शिविर। पडाव (को०)।

वसती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वास। रहना। २. रात। ३. घर। दे० 'वसति'।

वसत्त—सज्ञा स्त्री० [स० वस्तु] दे० 'वस्तु'। उ०—हुता सज्जण हीयइ सयणा हदा हत्त। जउ सोहणो साचइ होअइ, सोहणो वडी वसत्त।—ढोला०, दू० ५०६।

वसथ—सज्ञा पु० [स०] १ रहने का स्थान। २ वास। घर। ४. पक्षियो का घोसला [को०]।

वसन—सज्ञा पु० [स०] १ वस्त्र। २ ढकने की वस्तु। आवरण। छादन। ३ घेरा। अवरोध। परिवेष्ठन (को०)।

यौ०—वसनपर्याय = वस्त्रपरिवर्तन। वस्त्र बदलना। वसनसद्म = तबू। खेमा। रावटी।

वसना[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] स्त्रियो की कमर का एक आभूषण।

वसना[2]—वि० (समास मे) १ वस्त्र धारण करनेवाली। जैसे, शुभ्र-वसना। २ घिरी हुई। आवेष्टित। जैसे समुद्रवसना। ३ निमग्न। लीन [को०]।

वसनार्णवा—सज्ञा स्त्री० [स०] भूमि। पृथिवी।

वसनी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वसना' [को०]।

वसमा—सज्ञा पु० [अ० वसमह्] १ नील का पत्ता। २ खिजाब। ३ उबटन। ४ एक प्रकार का छपा कपडा जो चाँदी के वर्क लगाकर छापा जाता है।

वसवस्त—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'वसवास' [को०]।

वसवास—सज्ञा पु० [अ०] [वि० वसवासी] १ भ्रम। दुविधा। सदेह। २ भुलावा। बहकावा। प्रलोभन या मोह। उ०—सरगहुँ ते दोउ निकसे नारद के वसवास।—जायसी (शब्द०)।

वसवासी—वि० [अ० वसवास] १ विश्वास न करनेवाला। शक्की। सशयात्मा। २ भुलावे मे डालनवाला। बहकानेवाला।

वसह—सज्ञा पु० [स० वृषभ, प्रा० वसह] बैल। वसह।

वसा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. मेद। २ चरबी। ३ भेजा। मगज (को०)।

वसाकेतु—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार के धूमकेतु जो पश्चिम मे उदय होते है और जिनका पूँछ का विस्तार उत्तर की ओर होता है। ये देखने मे स्निग्ध जान पडते हैं और इनके उदय से सुभिक्ष होता है।

वसाच्छटा—सज्ञा स्त्री० [स०] मस्तिष्कपिड। भेजा [को०]।

वसाढ्य—सज्ञा पु० [स०] शिशुमार। सूँस।

वसाढ्यक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वसाढ्य'।

वसातनी—सज्ञा स्त्री० [स०] पीला शीशम।

वसाति[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ वसाति नामक जनपद का अधिवासी। उ०—दक्षिणी पश्चिमी पजाब मे अबष्ठो, क्षत्रियो तथा वसातियो के छोटे छोटे सघ थे।—आ० आ० पृ० २१०। २ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। ३ जनमेजय के एक पुत्र का नाम।

वसाति[2]—सज्ञा स्त्री० १ उत्तर के एक जनपद का नाम। २. उषा (को०)।

वसादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] पीला शीशम [को०]।

वसान—वि० [स०] निवास करनेवाला। रहनेवाला [को०]।

वसापायी—सज्ञा पु० [स० वसापायिन्] कुत्ता।

वसापावन—सज्ञा पु० [स० वसापावन्] एक प्रकार के वैदिक देवता। पशुभाजा।

वसाप्रमेह—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का मेह रोग जिसमे मूत्र के साथ चरबी मिलकर निकलती है।

विशेष—आधुनिक डाक्टरी चिकित्सा मे यह बहुमूत्र का भेद है, जिसमे मूत्र के साथ शरीर का सत निकलता है और रोगी बहुत क्षीण हो जाता है।

वसाप्रमेही—वि० [स० वसाप्रमेहिन्] चर्बीयुक्त अथवा चर्बी के समान

पेशाब करनेवाला। उ०—वसाप्रमेही वसा (चर्बी) युक्त अथवा वसा के समान मूते '—माधव०, पृ० १८४।

वसामूर—संज्ञा पु० [स०] एक जनपद का नाम।

वसामेह—संज्ञा पुं० [स०] वसाप्रमेह।

वसार—संज्ञा पु० [स०] १ इच्छा। २ वश। ३ अभिप्राय।

वसारोह—संज्ञा पु० [स०] कुकुरमुत्ता। खुमी।

वसि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ भवन। घर। २ वस्त्र। कपडा [को०]।

वसित'—संज्ञा पु० [स०] १ निवासस्थान। २ वस्त्र।

वसित—वि० १ बसा हुआ। निवसित। २ पहना हुआ। ३ इकट्ठा किया हुआ [को०]।

वसितव्य—वि० [स०] १ धारण के योग्य। पहनने लायक। २ निवास करने या ठहरने के उपयुक्त [को०]।

वसिता—वि० [स० वसितृ] १ निवास करनेवाला। २ पहननेवाला [को०]।

वसिर—संज्ञा पुं० [स०] १ समुद्रलवण। २ गजपिप्पली। ३ लाल रंग का अपामार्ग। लाल चिचडा। ४ जलनीम।

वसिष्ठ—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्राचीन ऋषि, जिनका उल्लेख वेदो से लेकर रामायण, महाभारत, पुराणो आदि तक मे है।

विशेष—वेदो मे ये मित्र और वरुण के पुत्र कहे गए हैं। यज्ञस्थल मे एक बार उर्वशी को देखकर मित्र और वरुण का वीर्यपात हो गया। वह वीर्य एक यज्ञकुभ मे रखा गया। कुभ से वासष्ठ और अगस्त्य का जन्म हुआ। 'बृहद्देवता' मे लिखा है कि कुभ के जल मे मत्स्य, स्थल मे वासष्ठ और कुभ मे अगस्त्य उत्पन्न हुए थे। ऋग्वेद के अनुसार ये वासिष्ठ गाधार और काबुल की ओर राज्य करनेवाले त्रित्सु वश के राजा दिवोदास के पौत्र और पिजवन के पुत्र सुदास के पुरोहित थे। सुदास ने इनको बहुत कुछ दान दिया था। एक बार सुदास ने यज्ञ करने के लिये विश्वामित्र को बुलाया, इसपर वसिष्ठ बहुत क्रुद्ध हुए। उन्होंने अपने अन्य यजमानो, भरतो के द्वारा विश्वामित्र को बहुत तग किया। विश्वामित्र तो चले आए, पर सुदास के पुत्रो ने वासष्ठ के सौ पुत्रो का नाश कर दिया। फिर वसिष्ठ ने 'एकस्मान्न' इत्यादि ५० मत्रो द्वारा यज्ञ करके सौदासो को पराभूत किया।

पुराणो मे वसिष्ठ ब्रह्मा के मानसपुत्र कहे गए हैं। राजा निमि और वसिष्ठ के बीच एक बार झगडा हुआ। वसिष्ठ ने निमि को और निमि ने वसिष्ठ को शाप दिया। निमि तप करके शरीररहित होकर अमर हुए और उनका वश विदेह कहलाया। वासिष्ठ ने शरीर को त्यागकर मित्रावरुण के वीर्य से जन्म ग्रहण किया। कामधेनु के लिये वसिष्ठ और विश्वामित्र (जो पहले राजा थे) से बहुत दिनो तक झगडा होता रहा। विश्वामित्र के सौ पुत्रो को वसिष्ठ ने केवल हुकार से जला दिया था। विश्वामित्र अत मे हारकर ब्राह्मणत्व प्राप्त करने के लिये तप करने लगे। पुराणो मे वसिष्ठ की अनेक पत्नियो के नाम मिलते है, जिनमे से एक अरुधती थी, जो कर्दम की कन्या थी और वसिष्ठ को सबसे प्रिय थी। इनकी एक और स्त्री अक्षमाला नीच जाति की थी। किसी और पत्नी से इन्हे शक्ति नामक एक पुत्र हुआ था जो गोत्रकार ऋषि हुआ। ऋग्वेद के अनेक मत्रो के द्रष्टा वसिष्ठ हैं। सप्तम मडल के द्रष्टा ये ही माने जाते हैं।

२. सप्तर्षिमडल का एक तारा जिसके पास का छोटा तारा अरुधती कहलाता है। ३ नाम। ४ एक स्मृतिकार [को०]।

वसिष्ठक—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'वसिष्ठ' [को०]।

वसिष्ठनिह्व, वसिष्ठनिह्नव—संज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

वसिष्ठपुराण—संज्ञा पु० [स०] एक उपपुराण जिसका उल्लेख देवी भागवत मे है। कुछ लोग कहते हैं कि लिंगपुराण ही वसिष्ठ पुराण है।

वसिष्ठप्राची—संज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल के एक जनपद का नाम।

वसिष्ठशफ—संज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

वसिष्ठससर्प—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सन्यासी।

वसिष्ठसहिता—संज्ञा स्त्री० [स०] एक स्मृति का नाम।

वसिष्ठसिद्धात—संज्ञा पुं० [स० वासिष्ठसिद्धान्त] ज्योतिष का एक सिद्धात ग्रथ।

वसिष्ठाकुश—संज्ञा पुं० [स० वसिष्ठाङ्कुश] एक साम का नाम।

वसिष्ठानुपद—संज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

वसिष्ठापवाद—संज्ञा पुं० [स०] सरस्वती नदी के किनारे का एक प्राचीन स्थान।

विशेष—कथा है कि जब वसिष्ठ और विश्वामित्र के बीच घोर युद्ध हुआ था, तब सरस्वती नदी ने वसिष्ठ को विश्वामित्र से बचाने के लिये इसी स्थान पर छिपा लिया था।

वसिष्ठोपपुराण—संज्ञा पु० [स०] वसिष्ठपुराण नाम का एक उपपुराण [को०]।

वसी'—पु० [स० वसिन्] ऊदबिलाव [को०]।

वसी²—संज्ञा पु० [अ०] वह व्यक्ति जिसके नाम वसीयतनामा लिखा गया हो [को०]।

वसीअ—वि० [अ० वसीअ्] विस्तृत। लबा चौडा [को०]।

वसीअत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'वसीयत'।

यौ०—वसीअतनामा = वसीयतनामा।

वसीक—वि० [अ० वसीक] मजबूत। टिकाऊ। ठोस। दृढ [को०]।

वसीका—संज्ञा पुं० [अ० वसीकह्] १ मुसलमानी धर्मशास्त्र के अनुसार वह धन जो विधर्मी या काफिर से नगद रुपए के मुनाफे के तौर पर लिया जाय। २. वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी खजाने मे जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के सबधियो को मिला करे अथवा किसी धर्मकार्य, मकान की मरम्मत आदि मे लगाया जाय। उ०—आपको पाँच सौ रुपए महीने का वसीका सरकार से मिलता है। —प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८४। ३. ऐसे धन से आया हुआ सूद। वृत्ति। ४. वक्फ का इकरारनामा।

वसीकादार—संज्ञा पु० [अ० वसीकह् + फा० दार] वसीका पानेवाला। पेंशनयाफ्ता [को०]।

वसीअ—वि० [अ०] १ चारु। सुंदर। मनोहर। २ अंकित। चिह्नित [को०]।

वसीयत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह अंतिम आदेश जो विदेश जानेवाला या मरणासन्न पुरुष इस उद्देश्य से करता है कि मेरी अनुपस्थिति में अमुक काम इस प्रकार किया जाय। २. अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई वह व्यवस्था जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है। विल।

वसीयतनामा—संज्ञा पु० [अ० वसीयत + फा० नामह्] वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो। विल।

वसीरो—वि० [सं० √वस्] बसा या बसाया हुआ। प्रजा। उ०—हुवै वसीरो वाणियो, पातर हुवै खवास।—बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ६२।

वसीला—संज्ञा पु० [अ० वसीलह्] १ संबंध। २ आश्रय। सहायता। उ०—बिना वसीला सत नाम से भेंट न होई।—पलटू०, पृ० ७। ३ किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग। जरिया। द्वार। जैसे,—(क) किस वसीले से वह यहाँ आया। (ख) नौकरी के लिये जाता हूँ, कोई वसीला निकल ही आवेगा।

मुहा०—वसीला पैदा करना = (१) किसी कार्य की सिद्धि का मार्ग निकालना। सहारा पैदा करना। (२) आमदनी आदि का रास्ता निकालना। वसीला रखना = (१) संबंध रखना। (२) आसरा रखना।

वसुंधरा—संज्ञा स्त्री० [सं० वसुन्धरा] १ धरा। पृथ्वी। २. शंखफलक की कन्या जो साध्य से ब्याही थी। ३ एक देवी का नाम। ४ देश। राज्य (को०)।

वसुंधराधर—संज्ञा पुं० [सं० वसुन्धराधर] भूधर। पर्वत [को०]।

वसुंधराधव—संज्ञा पु० [सं० वसुन्धराधव] भूपति। राजा [को०]।

वसुंधराभृत्—संज्ञा पु० [सं०] पहाड़ [को०]।

वसु—संज्ञा पुं० [सं०] १ देवताओं का एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं।

विशेष—वेदों में वसु शब्द का प्रयोग अग्नि, मरुद्गण, इंद्र, उषा, अश्वी, रुद्र और वायु के लिये मिलता है। वसु को आदित्य भी कहा है। बृहदारण्यक में इस गण में पृथिवी, वायु, अंतरिक्ष, आदित्य, द्यौ, अग्नि, चंद्रमा और नक्षत्र माने गए हैं। महाभारत के अनुसार आठ वसु ये हैं—धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास। श्रीमद्भागवत में ये नाम हैं—द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वास्तु और विभावसु। अग्निपुराण में आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास वसु कहे गए हैं। भागवत के अनुसार दक्ष प्रजापति की कन्या 'वसु' ने, जो धर्म को ब्याही थी, वसुओं को उत्पन्न किया।

देवीभागवत में कथा है कि एक बार वसुओं ने वसिष्ठ की नंदिनी गाय चुरा ली थी, जिसमें वसिष्ठ जी ने शाप दिया था कि तुम लोग मनुष्य योनि में जन्म लोगे। उसी शाप के अनुसार वसुओं का जन्म शांतनु की पत्नी गंगा के गर्भ से हुआ, जिनमें सात को तो गंगा जनमते ही गंगा में फेंक आई, पर अंतिम भीष्म बचा लिए गए। इसी से भीष्म वसु के अवतार माने जाते हैं।

२. शब्दों द्वारा संख्या सूचित करने की रीति के अनुसार आठ की संख्या। ३ रत्न। ४ धन। ५ वंक वृक्ष। अगस्त का पेड़। ६ अग्नि। ७ रश्मि। किरण। ८. जल। ९. सुवर्ण। सोना। १० योक्त्र। जोत। ११. कुबेर। १२ पीली मूँग। १३ वृक्ष। पेड़। १४ शिव। १५ सूर्य। १६ विष्णु। १७ मौलसिरी। बकुल। १८ साधु पुरुष। सज्जन। १९ सरोवर। तालाब। २० राजा नृग के एक पुत्र का नाम। २१ छप्पय के हो सकनेवाले भेदों में से ६९ वाँ भेद। २२ घृत। घी (को०)। २३ वस्तु। पदार्थ (को०)। २४ एक प्रकार का नमक (को०)। २५ रास। लगाम। बागडोर (को०)। २६ रज्जु। रस्सी (को०)। २७ हाथ की कुहनी से लेकर बँधी हुई मुट्ठी तक की लंबाई या दूरी (को०)।

वसु[2]—संज्ञा स्त्री० १ दीप्ति। आभा। २ वृद्धौषध। वृद्धि। ३ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी और जिससे द्रोण आदि आठ वसुओं का जन्म हुआ था। ४ अमरावती। इंद्रपुरी (को०)। ५ अलका। कुबेर की नगरी (को०)।

वसु[3]—वि० १ जो सबमें वास करता हो। २ जिसमें सबका वास हो। ३ मीठा। मधुर (को०)। ४ सूखा। शुष्क (को०)। ५. धनी। संपन्न। ६ अच्छा। उत्तम।

वसुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँभर नमक। २ पांशु लवण। रेह। ३ वास्तुक शाक। बथुआ। ४ काला अगर। कृष्णागुरु। ५ क्षार लवण। ६ मदार का वृक्ष। ७. बनहल्दी वृक्ष। बड़ी मौलसिरी। ८ एक प्रकार का ताल (को०)। ९ एक प्रकार का पुष्प (को०)।

वसुकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

वसुकीट—संज्ञा पुं० [सं०] भिखारी [को०]।

वसुकृत—संज्ञा पु० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

वसुकृमि—संज्ञा पुं० [सं०] भिक्षुक। भिखारी [को०]।

वसुकोदर—संज्ञा पुं० [सं०] तालीशपत्र।

वसुक्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम।

विशेष—इस नाम के दो ऋषि हुए हैं। एक इंद्र के गोत्र में उत्पन्न हुए थे, दूसरे वसिष्ठ के गोत्र के थे।

वसुचरण—संज्ञा पुं० [सं०] गण के चौथे भेद का नाम जिसके आदि में गुरु और फिर दो लघु होते हैं। (पिंगल)।

वसुचारुक—संज्ञा पुं० [सं०] सोना।

वसुच्छिद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा ।

वसुद[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ कुबेर । २ विष्णु ।

वसुद[2]—वि० धन देनेवाला [को०] ।

वसुदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्कंदमाताओं में से एक । २ पृथ्वी । ३ माली राक्षस की पत्नी ।

विशेष—यह नर्मदा नाम की गंधर्वों की पुत्री थी । इसके अनल, निल, हर और संपति नामक चार पुत्र थे, जो विभीषण के अमात्य थे ।

वसुदान—संज्ञा पु० [सं०] १ विदेहराज के एक पुत्र का नाम । २. बृहद्रथ के एक पुत्र का नाम ।

वसुदामा[1]—संज्ञा पुं० [सं० वासुदामन्] बृहद्रथ के एक पुत्र का नाम ।

वसुदामा[2]—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंदमाताओं में से एक का नाम ।

वसुदेव—संज्ञा पु० [सं०] १ यदुवंशियों के शूर कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे ।

विशेष—इनके पिता का नाम देवमीढ और माता का मारिषा था । इनके जन्म के समय स्वर्ग में दुंदुभि का शब्द सुनाई पड़ा था इससे ये 'आनकदुंदुभी' कहलाते थे । ये अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे । इनकी बारह स्त्रियाँ थीं—पौरवी, रोहिणी, मदिरा, धरा, वैशाखी, भद्रा, सुनाम्नी, सहदेवा, शांतिदेवा, सुदेवा, देवरक्षिता और देवकी । इन पत्नियों के अतिरिक्त इनके सुतनु और बडवा नाम की दो परिचारिकाएँ भी थीं । रोहिणी के गर्भ से बलराम और देवकी के गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था । वसुदेव की बहन कुंती थी, जिससे पांडव उत्पन्न हुए थे ।

२ एक राजा जो पहले वसुभूति का अमात्य था और पीछे उसे मारकर आप राजा हुआ । ३ धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुदेवत—संज्ञा पु० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुदेव्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ धनिष्ठा नक्षत्र । २ पक्ष की नवमी तिथि ।

वसुदैव—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वसुदैवत' [को०] ।

वसुदैवत—संज्ञा पु० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] उदुंबर । गूलर ।

वसुधर्मा—संज्ञा पु० [सं० वसुधर्मन्] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम ।

वसुधार्मिक—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० वसुधार्मिका] स्फटिक पत्थर [को०] ।

वसुधा[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । भूतल । २ देवलोक ।

वसुधा[2]—वि० वसु अर्थात् धन देनेवाला । धनदाता ।

वसुधातल—संज्ञा पु० [सं०] धरातल । पृथ्वीतल [को०] ।

वसुधाधर—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत । २ विष्णु ।

वसुधाधिप—संज्ञा पु० [सं०] राजा ।

वसुधान—संज्ञा पु० [सं०] पृथ्वी ।

वसुधार—संज्ञा पुं० [सं०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम ।

वसुधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जैनों की एक देवी का नाम ।

पर्या०—तारा । नीलसरस्वती । महाश्री । स्वाहा । श्री । जया । अनंता । शिवा । भद्रा । शंखिनी । महातारा । त्रिलोचना । तारिणी ।

२ कुबेर की पुरी, अलका । ३ एक तीर्थ का नाम । ४ नांदीमुख श्राद्ध का अंग एक कृत्य, जिसमें राजा वसु के लिये घी की सात धारें दी जाती हैं । पहले दीवार में चंदन से सात चिह्न बनाए जाते हैं । फिर वेदमंत्र पढ़ते हुए धारें दी जाती हैं । ५ एक नदी का नाम । स्वर्गगंगा । मंदाकिनी ।

वसुधारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी [को०] ।

वसुधार्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्फटिक । स्फटिकपत्थर । २ संगमर्मर ।

वसुनेत्र—संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा, जिन्हें चार मुख होने के कारण आठ आँखें हैं [को०] ।

वसुनीत—संज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा ।

वसुनीथ—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि ।

वसुपति—संज्ञा पुं० [सं०] कृष्ण [को०] ।

वसुपाता—संज्ञा पुं० [सं० वसुपातृ] कृष्ण [को०] ।

वसुपाल—संज्ञा पु० [सं०] राजा [को०] ।

वसुप्रद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव । २ स्कंद के एक अनुचर का नाम । ३ कुबेर ।

वसुप्रद[2]—वि० धन देनेवाला [को०] ।

वसुप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक । २ कुबेर की नगरी । अलका [को०] ।

वसुप्राण—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि [को०] ।

वसुबंधु—संज्ञा पु० [सं० वसुबन्धु] एक प्राचीन बौद्ध आचार्य जो महायान शाखा के अनुयायी थे । इन्होंने अनेक ग्रंथ रचे थे, जिनमें से कुछ के अनुवाद चीनी भाषा में भी वर्तमान है ।

वसुभ—संज्ञा पु० [सं०] धनिष्ठा नक्षत्र ।

वसुभारत—वि० [सं०] धनपूर्ण । धनाढ्य [को०] ।

वसुमती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी । २ छह वर्णों का एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में तगण और सगण होते हैं । उ०—तासों परिहरो जो है । हितु खरो । रारी जडमती । धारी वसुमती । ३ धनी या संपन्न स्त्री (को०) । ४ देश । राज्य । प्रदेश (को०) ।

वसुमना—संज्ञा पु० [सं० वसुमनस्] पुराणानुसार एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम ।

वसुमान[1]—संज्ञा पु० [सं० वसुमत्] १ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो उत्तर दिशा में है । २ वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम (को०) । ३ कृष्ण का एक नाम (को०) ।

वसुमान[2]—वि० धनवान् । धनी । समृद्ध [को०] ।

वसुमित्र—संज्ञा पु० [सं०] एक बौद्ध आचार्य ।

विशेष—ये महायान शाखा के अंतर्गत वैभाषिक संप्रदाय के थे। ये काश्मीर के पश्चिम अश्मापरांत देश के निवासी कहे गए हैं।

वसुर वि० [सं०] कीमती। मूल्यवान् [को०]।

वसुरक्षित—संज्ञा पुं० [सं०] एक बौद्ध आचार्य का नाम।

वसुरात—संज्ञा पुं० [सं०] एक ऋषि का नाम।

वसुरुच—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार के देवता।

वसुरुचि—संज्ञा पु० [सं०] एक गंधर्व का नाम।

वसुरूप—संज्ञा पु० [सं०] शिव।

वसुरेता—संज्ञा पु० [सं० वसुरेतस्] १ अग्नि। २ शिव।

वसुरोचि—संज्ञा पु०। सं० वसुरोचिस्] १ यज्ञ। २ अग्नि [को०]।

वसुरोधी—संज्ञा पु० [सं०] शिव।

वसुल—संज्ञा पुं० [सं०] देवता।

वसुवन—संज्ञा पु० [सं०] वृहत्संहिता के अनुसार ईशान कोण में स्थित एक देश।

वसुवाह—संज्ञा पु० [सं०] एक ऋषि का नाम।

वसुविद्—वि० [सं० वसुविन्द] धन पानेवाला [को०]।

वसुविद्—संज्ञा पु० [सं०] अग्नि।

वसुव्रत—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का अनुष्ठान। एक तरह की तपस्या जिसमें १२ दिनों तक पृथ्वी पर गिरे हुए अन्न को खाकर रहा जाता है [को०]।

वसुश्रवा—संज्ञा पु० [सं० वसुश्रवस्] शिव [को०]।

वसुश्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

वसुश्रुत—संज्ञा पु० अत्रिगोत्रीय एक ऋषि का नाम।

वसुश्रेष्ठ—संज्ञा पु० [सं०] १ चाँदी। रजत। २ कृष्ण। ३. नकली सोना। कृत्रिम स्वर्ण [को०]।

वसुषेण—संज्ञा पु० [सं०] १ कर्ण। २ विष्णु [को०]।

वसुसारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका।

वसुसेन—संज्ञा पु० [सं०] कर्णराज [को०]।

वसुस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुबेर की पुरी, अलका।

वसुहंस—संज्ञा पु० [सं०] वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम। उ०—चल्यो वीर वसुहंस हंस दुति हंस वरन पट। जादवकुल अवतंस शत्रु विध्वंसकरन भट।—गोपाल (शब्द०)।

वसुहट्ट, वसुहट्टक—संज्ञा पु० [सं०] अगस्त का वृक्ष।

वसुहोम—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार अंग देश के एक राजा का नाम।

वसूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ अगस्त का पेड़ या फूल। २ सांभर नमक। ३. दे० 'वसुक'।

वसूज—संज्ञा पु० [सं०] अत्रिगोत्रीय एक ऋषि जो ऋग्वेद के एक सूक्त के द्रष्टा थे।

वसूत्तम—संज्ञा पु० [सं०] पितामह भीष्म का एक नाम [को०]।

वसूदम—संज्ञा पु० [सं०] सज्जीखार [को०]।

वसूरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेश्या [को०]।

वसूल[1]—वि० [अ०] १ पास पहुँचा हुआ। मिला हुआ। प्राप्त। जैसे,—खत का वसूल होना। २. जो चुका लिया गया हो। जो हाथ में आ गया हो। प्राप्त। लब्ध। जैसे,—लगान वसूल करना, रुपया वसूल करना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—वसूल पाना = दूसरे से जो पाना हो, वह मिल जाना।

वसूल[2]—संज्ञा पुं० दे० 'उसूल'।

वसूली—संज्ञा स्त्री० [अ० वसूल] १ चुकता कराने की क्रिया। दूसरे से रुपया पैसा या वस्तु लेने का काम। प्राप्ति। जैसे,—इन्हें रुपया देते तो हो, पर वसूली में बड़ी दिक्कत होगी। २ बाकी निकला या चाहता हुआ रुपया लेने का काम। जैसे,—उस गाँव में वसूली शुरू हो गई।

वस्क—संज्ञा पुं० [सं०] १. जाना। चलना। गमन। २ परिश्रम। अध्यवसाय [को०]।

वस्कय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वष्कय'।

वस्कयणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वष्कयणी'।

वस्कराटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू [को०]।

वस्त[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. बकरा। २ निवास की जगह। ३. मकान। घर (को०)।

वस्त[2]—अव्य० [अ०] मध्य। बीच।

वस्त[3]—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वस्तु'।

वस्तक—संज्ञा पुं० [सं०] कृत्रिम लवण। बनाया हुआ नमक।

वस्तकर्ण—संज्ञा पु० [सं०] शाल वृक्ष। साखू का पेड़।

वस्तगंधा—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्तगन्धा] अजगंधा [को०]।

वस्तमोदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा।

वस्तर—संज्ञा पुं० [सं० वस्त्र] दे० 'वस्त्र'। उ०—कामकंदला बिरहबसि, वस्तर गात मलीन। मुख माधौ माधौ रटै, होइ सो छिन छिन छीन।—हिं० क० का०, पृ० २१२।

वस्तव्य—वि० [सं०] १ निवास योग्य। रहने लायक। २ बिताने या व्यतीत करने लायक [को०]।

वस्तव्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] निवास। रहना [को०]।

वस्तात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृषपत्रिका नामक पौधा। अजात्री [को०]।

वस्ता—वि० [सं० वस्तृ] १ द्योतित या दीप्त होनेवाला। चमकनेवाला। २. पहनने या धारण करनेवाला। ३ रखनेवाला। ऊपर रखनेवाला [को०]।

वस्ताद[1]—संज्ञा पुं० [अ० उस्ताद] दे० 'उस्ताद'। उ०—अव्वल याद करो वस्ताद की। गुरु, पीर, पैगंबर की और याद किए करतार की।—दक्खिनी०, पृ० ५७।

वस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नाभि के नीचे का भाग। पेडू। २ मूत्राशय। ३. पिचकारी। ४ रहना। रुकना। पड़ाव। निवास (को०)। ५. वस्त्र का आँचल। छोर (को०)।

वस्तिकर्म—सज्ञा पु० [सं० वस्तिकर्मन्] लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों मे पिचकारी देने की क्रिया।

वस्तिकर्माढ्य—सज्ञा पु० [स०] रीठे का पेड़। अरिष्ट वृक्ष [को०]।

वस्तिकुंडलिका—सज्ञा स्त्री० [स० वस्तिकुण्डलिका] एक रोग।

विशेष—इस रोग मे मूत्राशय मे गाँठ सी पड जाती है, उसमे पीडा तथा जलन होती है और पेशाव कठिनता से उतरता है। गाँठ को दबाने से कभी तो बूँद बूँद करके पेशाव गिरता है, और कभी धार भी निकल पडती है। यह रोग असाध्य कहा जाता है। अधिक परिश्रम करने, दौडकर चलने या चोट लगने से इस रोग की उत्पत्ति कही गई है।

वस्तिकोश—सज्ञा पु० [स०] मूत्राशय [को०]।

वस्तिमल—सज्ञा पु० [स०] मूत्र। पेशाव।

वस्तिवात—सज्ञा पु० [स०] एक मूत्र रोग जिसमे वायु बिगडकर वस्ति (पेडू) मे मूत्र को रोक देता है।

वस्तिशिर—सज्ञा पु० [स० वस्तिशिरस्] १ पिचकारी का अग्रभाग या टोटी। २ मूत्राशय का ऊपरी सकीर्ण भाग [को०]।

वस्तिशोधन—सज्ञा पु० [स०] १ मदन वृक्ष। मैनफल का पेड। २ मदनफल। मैनफल।

वस्ती[1]—वि० [अ०] दरम्यानी। बीच का। मध्यवर्ती [को०]।

वस्ती[2]—सज्ञा स्त्री० [स० वस्ति=(रहना)] रहने की जगह। जनपद।

वस्तु—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० वास्तव, वास्तविक] १. वह जिसका अस्तित्व हो। वह जिसकी सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। जैसे,—इस कोई वस्तु नही। २ सत्य। ३ वह जिसका नाम-रूप हो। गोचर पदार्थ। चीज। जैसे,—घर मे बहुत सी वस्तुएँ इधर उधर पडी हैं। ४ इतिवृत्त। वृत्तात। ५ आधार। पीठ (को०)। ६ उपकरण। सामग्री। ७ नाटक का कथन या आख्यान। कथावस्तु।

विशेष—नाटकीय कथावस्तु दो प्रकार की कही गई है—आधिकारिक जिसमे नायक का चरित्र हो, और प्रासगिक जिसमे नायक के अतिरिक्त और किसी का चरित्र बीच मे आ गया हो। विशेष दे० 'नाटक'।

८ धन। सपत्ति (को०)। ९ ढाँचा। आकार। रूपरेखा (को०)।

वस्तुक—सज्ञा पु० [स०] बथुआ का साग [को०]।

वस्तुकी—सज्ञा स्त्री० [स०] बथुआ नाम का साग। श्वेत चिल्ली।

वस्तुगत—वि० [स०] वस्तुनिष्ठ। कथागत। वस्तु या आख्यान मे स्थित। उ०—सक्षेप मे ये विचार साहित्य और जीवन का यथार्थ, अविच्छेद्य और वस्तुगत सबध मानते हैं।—न० सा० न० प्र०, पृ० १४१।

वस्तुजगत्—सज्ञा पु० [स०] प्रत्यक्ष ससार। दृश्यमान विश्व [को०]।

वस्तुजात—सज्ञा पुं० [स०] वस्तुओं का योग या समूह [को०]।

वस्तुज्ञान—सज्ञा पु० [स०] १ किसी वस्तु की पहचान। २ मूल तथ्य का बोध। सत्य की जानकारी। तत्वज्ञान।

वस्तुत—अव्य० [स० वस्तुतस्] यथार्थत। सचमुच। असल में।

वस्तुनिर्देश—सज्ञा पुं० [स०] मगलाचरण का एक भेद, जिसमे कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है। यह एक तरह की सूची होती है।

वस्तुनिष्ठ—वि० [स०] वस्तु अर्थात् वृत्तात, कथा आदि से सबद्ध। वस्तुपरक। जैसे,—वैसी लबी वस्तुनिष्ठ कविताएँ वे पहले लिख चुके है।

वस्तुपरक—वि० [स०] वस्तुनिष्ठ। वस्तुगत। जैसे,—विज्ञानवेत्ता का परीक्षण वस्तुपरक होगा।

वस्तुपुरुष—सज्ञा पु० [स०] नायक [को०]।

वस्तुबल—सज्ञा पु० [स०] वस्तु का गुण।

वस्तुभान—सज्ञा पुं० [स०] सत्यता। यथार्थता [को०]।

वस्तुभेद—सज्ञा पु० [स०] तात्विक अतर [को०]।

वस्तुमात्र—सज्ञा पु० [सं०] किसी विषय या पदार्थ का बाहरी रूप [को०]।

वस्तुरचना—सज्ञा स्त्री० [स०] शैली।

वस्तुवाद—सज्ञा पु० [स०] वह दार्शनिक सिद्धात जिसमे जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे,—न्याय और वैशेषिक।

विशेष—यह सिद्धात अद्वैतवाद का विरोधी है, जिसमे नामरूपात्मक जगत् की सत्ता नही मानी जाती।

वस्तुविनिमय—सज्ञा पुं० [सं०] वस्तुओं का पारस्परिक लेन देन। अदला बदली [को०]।

वस्तुविवर्त—सज्ञा पु० [स०] दर्शन मे सत्व या सत्ता का प्रसार [को०]।

वस्तुवृत्त—सज्ञा पु० [स०] १ यथार्थ बात। यथार्थ कथा। २ सुदर चरित्र [को०]।

वस्तुव्यापार—सज्ञा पु० [स०] वस्तु का स्वभाव और धर्म। उ०—प्राकृतिक वस्तुव्यापार का सूक्ष्म निरीक्षण धीरे धीरे कम होता गया।—रस०, पृ० १२६।

वस्तुशून्य—वि० [स०] यथार्थतारहित [को०]।

वस्तुस्थिति—सज्ञा स्त्री० [स०] सच्ची स्थिति [को०]।

वस्तूत्प्रेक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद। विशेष दे० 'उत्प्रेक्षा'।

वस्तूपमा—सज्ञा स्त्री० [स०] उपमा अलकार का भेद, जिसमें साधारण धर्म का लोप होता है। विशेष दे० 'उपमा'।

वस्त्य—सज्ञा पुं० [स०] बसने की जगह। घर।

वस्त्र—सज्ञा पु० [सं०] १ कपडा। २ पहनावा। पोशाक (को०)। ३ दारचीनी का पत्ता (को०)।

वस्त्रक—सज्ञा पु० [स०] कपडा [को०]।

वस्त्रकुट्टिम—सज्ञा पु० [स०] १ छाता। २ खेमा। डेरा।

वस्त्रगृह—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वस्त्रभवन' [को०]।

वस्त्रगोपन—सज्ञा स्त्री० [स०] ६४ कलाओं मे से एक का नाम। विशेष दे० 'कला'।

वस्त्रग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० वस्त्रग्रन्थि] नीवी । नाडा । इजारबद ।

वस्त्रघर्घरी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का बाजा । २ छनना या छानने का वस्त्र (को०) ।

वस्त्रदशा—संज्ञा स्त्री० [स०] कपडे की किनारी [को०] ।

वस्त्रधारणी—संज्ञा स्त्री० [स०] खूँटी । नागदंतिका । अलगनी [को०] ।

वस्त्रधावी—वि० [स० वस्त्रधाविन्] कपडा धोनेवाला [को०] ।

वस्त्रनिर्णेजक—संज्ञा [सं०] धोबी [को०] ।

वस्त्रपञ्जल—संज्ञा पु० [स० वस्त्रपञ्जल] कोलकंद [को०] ।

वस्त्रापथ—संज्ञा पु० [स०] १ एक तीर्थ स्थान, जिसका नाम पुराणो मे वस्त्रापथक्षेत्र मिलता है । यह आजकल का गिरनार है, जो गुजरात मे है । २ शुक्रनीति के अनुसार रेशम, ऊन तथा सब प्रकार के वस्त्रो को पहचानने और उनके भाव आदि का पता रखनेवाला राजकर्मचारी ।

वस्त्रपुत्रिका—संज्ञा स्त्री० [स०] कपडे की बनी गुडिया । पुतरी [को०] ।

वस्त्रपूत—वि० [स०] कपडे से छना हुआ ।

वस्त्रपेशी—संज्ञा स्त्री० [स०] झालर [को०] ।

वस्त्रबंध—संज्ञा पुं० [स० वस्त्रबन्ध] नीवी ।

वस्त्रभवन—संज्ञा पुं० [स० वस्त्र + भवन] कपडे का बना हुआ घर । जैसे,—रावटी, खेमा आदि ।

वस्त्रभूषण—संज्ञा पु० [स०] रक्ताजन ।

वस्त्रभूषणा—संज्ञा स्त्री० [स०] मजीठ ।

वस्त्रभेदक—संज्ञा पु० [स०] दरजी [को०] ।

वस्त्रभेदी—संज्ञा पु० [स० वस्त्रभेदिन्] कपडा सीनेवाला दरजी [को०] ।

वस्त्रभौन(पु)—संज्ञा पु० [स०] रावटी । खेमा । डेरा । उ०—वस्त्रभौन स्यो वितान आसने विछावने, दायजो विदेहराज भाँति भाँति को दियो ।—केशव (शब्द०) ।

वस्त्रयोनि—संज्ञा स्त्री० [स०] वस्त्र का उपादान । जैसे,—रुई आदि [को०] ।

वस्त्ररजन—संज्ञा पुं० [स० वस्त्ररञ्जन] कुसुम का वृक्ष ।

वस्त्ररंजनी—संज्ञा स्त्री० [स० वस्त्ररञ्जनी] मजीठ ।

वस्त्रवेश—संज्ञा पु० [स०] दे० 'वस्त्रवेश्म' ।

वस्त्रवेश्म—संज्ञा पु० [स० वस्त्रवेश्मन्] रावटी । वस्त्रभवन [को०] ।

वस्त्राचल, वस्त्रांत—संज्ञा पुं० [स० वस्त्राञ्चल, वस्त्रान्त] कपडे का किनारा या छोर [को०] ।

वस्त्रांतर—संज्ञा पु० [स० वस्त्रान्तर] उपरना । ऊर्ध्ववस्त्र [को०] ।

वस्त्रागार—संज्ञा पु० [स०] १ कपडे की दुकान । २ कपडे का घर । रावटी । खेमा [को०] ।

वस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] भवन । घर [को०] ।

वस्था—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'अवस्था' [को०] ।

वस्त—संज्ञा पुं० [स०] १. वेतन । २ मूल्य । ३ वस्त्र । ४ द्रव्य । चीज । ५. धन । ६. त्वक् । वल्कल । छाल । ७. गुडुच (को०) ।

वस्तन—संज्ञा पुं० [स०] कटिभूषण । करधनी ।

वस्तसा—संज्ञा स्त्री० [स०] स्नायु । नस [को०] ।

वस्तिक—वि० [स०] धनलोलुप । । भूतिभोगी [को०] ।

वस्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूल्यवान् थाती । बहुमूल्य धरोहर [को०] ।

वस्फ—संज्ञा पुं० [अ० वस्फ्] १ प्रशसा । स्तुति । उ०—करें सब वस्फ उस शाहशाह के ।—कबीर म०, पृ० ३९९ । २ गुण । सिफत । उ०—फिर मुझे लिखना जो वस्फे रुए जाना हो गया । वाजिब इस जा पर कलम को सर झुकाना हो गया ।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, ८४९ । ३ विशेषता ।

वस्म—संज्ञा पु० [सं० वस्मन्] १ कपडा । २ वासस्थान (वैदक अर्थ) ।

वस्य—वि० [स० वस्यस] १ उत्कृष्ट । उत्तम । २ बहुत सपत्तिशाली । धनी ।

वस्र—संज्ञा पुं० [स०] १. दिन । २ घर । मकान । २ निवास । ३ वह स्थान जहाँ मार्ग मिलें , चौराहा ।

वस्ल—संज्ञा पु० [अ०] १ दो चीजो का आपस मे मिलना । मिलन । २ सयोग । मिलाप । विशेषत. प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप । उ०—अगर उसके वस्ल के सब रंडरोना है यह हँसी नही ।—भारतेंदु ग्र०, भा० १ पृ० ५७० ।

वस्वौकसारा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्रपुरी । २. कुबेरपुरी । ३ गगा । ४ इद्र नामक नदी ।

वहंत—संज्ञा पु० [स० वहन्त] १ वायु । २ बालक । ३ रथ (को०) ।

वह[1]—सर्व० [स० स या असौ] १. एक शब्द जिसके द्वारा दूसरे मनुष्य से बातचीत करते समय किसी तीसरे मनुष्य का सकेत किया जाता है । जैसे,—तुम जाओ, वह आता ही होगा । २ एक निर्देशकारक शब्द जिससे दूर का या पराक्ष वस्तुओ का सकेत करते है । जैसे,—यह और वह दोनो एक ही हैं ।

विशेष—इस अर्थ मे यह शब्द सज्ञा के पहले विशेषण की तरह भी आता है । जैसे,—यह आदमी और वह आदमी ।

वह[2]—संज्ञा पु० [स०] १ बैल का कूबा । २. घोडा । ३. वायु । ४. मार्ग । पथ । ५. नद । ६ वाहन (को०) । ७. प्रवाह । धारा (को०) । ८ ले जाने या ढोने की क्रिया (को०) । ९. चार द्रोण का एक मान (को०) । १०. गाय के रभाने का शब्द (को०) ।

वह[3]—वि० १. बोझ उठाकर ले जानेवाला । जैसे, काष्ठ भारवह । २ गवाहक । जैसे, धवह (समास मे) ।

वहत—संज्ञा पु० [स०] १. बैल । २ यात्रा । गमन (को०) । ३ जिसपर लोग चलते है, पथ । मार्ग (?) ।

वहतावरी—संज्ञा स्त्री० [स० वहतावरी] धोगलाछी क्षुप ।

विशेष—वैद्यक मे यह पौधा कटु तथा कास रोग का नाशक और शुक्रवर्धक कहा गया है ।

पर्या०—वृषगधा । मयूरी । वृषगधिका ।

वहति[1]—संज्ञा पु० [स०] १. वायु । २ बैल । गाडी खींचनेवाला बैल । ३ बल । वृष (को०) ।

वहती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गाय । २ नदी जो प्रवहमान रहती है ।

वहतु—सज्ञा पु० [स०] १. बैल। २ पथिक (वेद)। ३. विवाह (वेद)। ४ स्त्रीधन। दायज। दहेज (को०)।

वहदत—सज्ञा स्त्री० [अ०] एकत्व। वाहिद या एक होने का भाव। अद्वैतवाद। उ०—परीखे वे गर इस राज का खास। के जे वहदत की दरिया का है गव्वास —द० प० ग०, पृ० १५५।

वहदानी—वि० [अ०] एक ईश्वर से ही सबध रखनेवाला। अद्वैतवाद को माननेवाला। अद्वैतवादी [को०]।

वहन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १ बेडा। तरेंदा। नौका नाव। २ खीचकर अथवा सिर या कधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। जैसे,—भार वहन करना। रथ वहन करना। ३. कधे या सिर पर लेना। ४ ऊपर लेना। उठाना। ५ वास्तु विद्या मे खभे के नौ भागो मे से सब से नीचे का भाग। ६ बहना। प्रवाहित होना (को०)। ७ यान। सवारी (को०)।

वहनभग सज्ञा पुं० [सं०] पोतभग। पोत आदि का डूब जाना [को०]।

वहनीय—वि० [स०] १ उठा या खीचकर ले जाने योग्य। २. ऊपर लेने या धारने योग्य।

वहम—सज्ञा पु० [अ०] १ बिना सकल्प के चित्त का किसी बात पर जाना। मिथ्या धारणा। झूठा खयाल। २ भ्रम। ३ व्यर्थ की शका। मिथ्या सदेह। फजूल शक। जैसे,—वहम की तो कोई दवा ही नही। उ०—जिस वस्तु की ससार मे सृष्टि ही न हो वह भी वहम समा जाने से तत्काल दिखाई देने लगती है। —श्रीनिवास ग्र०, पृ० २४५।

वहमी—वि० [अ० वहम] १ वृथा सदेह द्वारा उत्पन्न। भ्रमजन्य। २ झूठे खयाल मे पडा रहनेवाला। ३ वहम करनेवाला। जो व्यर्थ सदेह मे पडे। किसी बात के सबध मे जो व्यर्थ भला बुरा सोचे। सशयात्मा।

वहल[1]—सज्ञा पुं० [स०] नौका। नाव।

वहल[2]—वि० १ दृढ। मजबूत। २ दे० 'बहल'।

वहलगध—सज्ञा पु० [स० वहलगन्ध] शवर चदन।

वहलचक्षु—सज्ञा पु० [स० वहलचक्षुस्] मेढासींगी। मेषशृंगी।

वहलत्वच्—सज्ञा पु० [स०] लोध।

वहला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शनपुष्पा। २. बडी इलायची। ३. दीपक राग की एक रागिनी का नाम।

वहवाँ†—क्रि० वि० [हिं० वहाँ] उस स्थान पर। उस जगह। वहाँ। उ०—अहवाँ सूरज क्राति प्रकाशा। वहवाँ जोती स्थिर निवासा।—कबीर सा०, पृ० ९८।

वहश—सज्ञा पुं० [अ०] वन्य पशु जगली पशु [को०]।

वहशत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. जगलीपन। असभ्यता। बर्बरता। २ उजड्डपन। ३ पागलपन। बावलापन। ४ चित्त की चचलता। अधीरता। ५ विकलता। घबराहट। ६ चहल-पहल या रौनक न होना। सन्नाटापन। उदासी। उ०—ऐ खिरदमदो मुबारक हो तुम्हे फर्जानगी। हम हो औ सहरा हो औ वहशत हो औ दीवानगी।—कविता को०, भा० ४, पृ० ४३। ७ डरावनापन।

मुहा०—वहशत उछलना=(१) सनक होना। खब्त होना। (२) धुन होना। वहशत बरसना=(१) उदासी छाना। करुणा या दु ख का भाव प्रकट होना। रौनक न रहना। (२) जगलीपन प्रकट होना।

वहशतजदा—वि० [अ० वहशत+फा० जद्दह] भयभीत। उद्विग्न [को०]।

वहशियाना—वि० [फा०] वहशी जैसा। वहशी के समान [को०]।

वहशी—वि० [अ०] १ जगल मे रहनेवाला। जगली। उ० ये लोग भी एक किस्म के वहशी हैं, इनमे दुनियाँ के लोगो को किसी तरह का फायदा नहीं पहुँचता।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० १८। २ जो पालतू न हो। जो आदमियो मे रहना न जानता हो। ३ असभ्य। ४ भडकनेवाला।

वहस†—सज्ञा पुं० [देश०] सम। तुक। उ०—विषम सम विषम सम दवालै वेद तुक ठीक गुर, अत तुक वहम ठाला।—रघु० रू०, पृ० ५०।

वहाँ अव्य० [हिं० वह] उस जगह। उस स्थान पर। उहा।

विशेष—जैसे 'यहाँ' का प्रयोग पास के स्थान के लिये होता है, वैसे ही इस शब्द का प्रयोग दूर के स्थान के लिये होता है।

वहा[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] नदी। स्रोतस्विनी [को०]।

वहा[2]—वि० स्त्री० वहन या धारण करनेवाली। जैसे, स्रोतोवहा।

वहावी—सज्ञा पुं० [अ०] मुसलमानो का एक सप्रदाय जो अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ है।

विशेष—अब्दुलवहाब अरब के नज्द नामक स्थान मे उत्पन्न हुआ था। वह मुहम्मद साहब के सर्वोच्च पद को अस्वीकार करता था। इस मत के अनुयायी किसी व्यक्ति या स्थानविशेष की प्रतिष्ठा नही करते। अब्दुलवहाब ने अनेक मसजिदो और पवित्र स्थानो को गिराया और मुहम्मद साहब की कब्र को भी खोदकर फेंक देना चाहा था। इस मत के अनुयायी अरब और फारस मे अधिक हैं।

वहाल—सज्ञा पुं० [स०] वायु [को०]।

वहि—अव्य० [सं० वहिर्] जो अदर न हो। बाहर।

विशेष—हिंदी मे इस शब्द का प्रयोग अकेले नही होता, समस्त रूप मे होता है। सस्कृत व्याकरण के अनुसार समास मे इसके रूप वहिर्, वहिश्, वहिष् आदि होते है। जैसे,—वहिर्गत। वहिश्चर। वहिरग। वहिष्कार इत्यादि।

वहित—वि० [स०] १ ढोया हुआ। वहन किया हुआ। २ अवहित। ३. प्रसिद्ध। ख्यात। ४ प्राप्त [को०]।

वहित्र—सज्ञा पु० [सं०] १ नाव। जहाज। २. स्तंभयुक्त। एक प्रकार का वर्गाकार रथ [को०]।

वहित्रकर्ण—सज्ञा पुं० [स०] एक योगासन जिसमे दोनो पैर एक में मिलाकर सामने फैलाए जाते है [को०]।

वहित्रक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वहित्र' [को०]।

वहिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] नौका। नाव।

वहिया—सज्ञा स्त्री० [हिं० बाहा] बाहा। धारा। सोता। उ०—बगाल मे तो चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण को केंद्र मे रखकर भक्ति की वहिया ही बहा दी।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ९२।

वहिरंग[1]—सज्ञा पु० [स० वहिरङ्ग] १ शरीर का बाहरी भाग। देह का बाहरी हिस्सा। २ ऊपर या बाहर का हिस्सा। बाहरी भाग। अतरग का उलटा। ३ वह जो किसी वस्तु के भीतरी तत्व को न जानना चाहता हो। ४ आगतुक पुरुष। कही बाहर से आया हुआ आदमी। ५ वह मनुष्य जो अपने दल या मडली का न हो। बायवी आदमी। ६. पूजा मे वह कृत्य जो आदि मे किया जाय।

वहिरंग[2]—वि० १ ऊपर ऊपर का। बाहर का। जो अतरंग न हो। बाहरी। २ जो सार रूप न हो। जो भीतरी तत्व न हो। ३ अनावश्यक। फालतू।

वहिरतर—वि० [स० वहिर्+अन्तर] बाहरी और भीतरी। आतरिक और बाह्य।

उ०—'ज्योत्सना' मे मैंने जीवन की वहिरतर मान्यताओ का समन्वय करने का प्रयत्न किया है।—हिं० आ० प्र०, पृ० २५३।

वहिरिंद्रिय—सज्ञा स्त्री० [स० वहिरिन्द्रिय] १. कर्मेंद्रिय। २ बाह्य-करणमात्र। कर्मेंद्रिय और ज्ञानेंद्रिय।

वहिर्गत—वि० [स०] जो बाहर गया हो। निकला हुआ। बाहर का।

वहिर्देश—सज्ञा पु० [स०] १. बाहर का स्थान। २ विदेश। ३. अज्ञात स्थान। ४. द्वार। दरवाजा।

वहिर्द्वार—सज्ञा पु० [स०] बाहरी फाटक। सदर फाटक। तोरण।

वहिर्ध्वजा—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।

वहिर्भूत—वि० [स०] वहिगत।

वहिर्मुख—वि० [स०] विमुख।

वहिर्योग—सज्ञा पु० [स०] हठयोग।

वहिर्लंब—सज्ञा पु० [स० वहिर्लम्ब] रेखागणित मे वह लब जो किसी क्षेत्र के बाहर बढाए हुए आधार पर गिराया जाता है।

वहिर्लापिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कोई ऐसा टेढा वाक्य या प्रश्न जिसका उत्तर बतलाने के लिये श्राता से कहा जाय। पहेली।

विशेष—पहेलियाँ दो प्रकार की होती है। जिनके उत्तर का शब्द पहेली के वाक्य के अदर ही रहता है, उसे 'अतर्लापिका' कहते हैं। और जिनके उत्तर का पूरा शब्द पहेली के अदर नहीं होता, वे 'वहिर्लापिका' कहलाती हैं। जैसे,—भाखै काह सज्जन को ? कौन शंभु वाहन है ? काको सुख होत ? काकी माल शिव धारो ह ? कहा गज बधन ? छबीले रग का के अति ? कौन हरपुत्र ? सीमुत को सुप्यारो है। शोभा को सुनाम का है ? कृष्ण नख धारो कहा ? सिधु से मिलत कौन ? काह अनियारो है ?। उत्तर के वर्णन मे आदि अत छाँडि दीजै, मध्य लीजै सो हिये मनोरथ हमारो है।

इन प्रश्नो के उत्तर क्रमश ये होगे—(१) सयाने। (२) वरद। (३) सुकती। (४) कपाल। (५) साँकल। (६) हरिणी। (७) गनेश। (८) मुकता। (९) पानिप। (१०) पहाड। (११) सरिता। (१२) नयन। उत्तर के इन शब्दो के मध्याक्षर लेने से यह उत्तर वाक्य निकलता है,—यार कृपा करि नेक निहारिय।'

वहिर्वेगज्वर—सज्ञा, पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर मे ताप, प्यास आदि उपद्रव होते हैं। उ०—तृष्णादिक लक्षण थोडे होवे ये वहिर्वेगज्वर के लक्षण हैं।—माधव०, पृ० ३७।

वहिश्चर—सज्ञा पु० [स०] केवडा।

वहिष्क—वि० [स०] बाहरी। बाह्य [को०]।

वहिष्करण—सज्ञा पु० [स०] बाहर की इद्रियाँ। पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेंद्रियाँ। बाह्येंद्रिय। (मन या अत करण को भीतर की इंद्रिय कहते हैं।)

वहिष्कार—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बहिष्कार' [को०]।

वहिष्कृत—वि० [स०] १ निकाला हुआ। बाहर किया हुआ। २ अलग किया हुआ। त्यागा हुआ। त्यक्त।

वहिष्ठ—वि० [स०] अधिक भार उठानेवाला।

वहिष्प्राण—सज्ञा पु० [स०] १ जीवन। २ श्वास। वायु। ३. अर्थ।

वही—अव्य० [हिं० वहाँ+ही] उसी स्थान पर। उसी जगह।

विशेष—जब वहाँ शब्द पर जोर होता है तब 'ही' लगाने के कारण उसका यह रूप हो जाता है।

वही[1]—सर्व० [हिं० वह+ही] १ उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से सकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके सबध में कुछ कहा जा चुका हो। पूर्वोक्त व्यक्ति। जैसे,—(क) यह वही आदमी है जो कल आया था। २. निर्दिष्ट व्यक्ति। अन्य नही। जैसे—जो पहले वहाँ पहुँचेगा, वही इनाम पावेगा।

वही[2]—सज्ञा पु० [स० वहिन्] १ बैल। २ मोटिया। भारवाहक। बोझा ढोनेवाला [को०]।

वहीर—सज्ञा पु० [हिं० भीर, वहीर या देश०] परिजन। प्रजा। दे० बहीर'। उ०—चाली अहमद वेगमरी, दिल्ली दिसा वहीर।—रा० रू०, पृ० ३१७।

वहीरु—सज्ञा पु० [स०] १ रक्तवाहिनी नाडियो का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। ३ मासपेशी। पुट्ठा।

वहूदक—सज्ञा पु० [स०] चार प्रकार के सन्यासियो मे से एक।

विशेष—सूतसहिता के अनुसार कुटीचक, वहूदक, हस और परमहंस ये चार प्रकार के सन्यासी कहे गए हैं। वहूदको के लिये यह नियम है कि वे एक घर से पूरी भिक्षा न ग्रहण करें, सात घरो से लें। उन्हे अपने साथ मे गाय की पूँछ के रोयो से बँधा हुआ त्रिदड, शिक्य, जलपूर्ण पात्र, कौपीन, कमंडलु, कथा, पादुका, छत्र, रुद्राक्ष की माला, योगपट्ट, खनित्र और कृपाण रखना चाहिए। मरने पर वहूदक सन्यासी जल मे डुबाए जाते है।

वहेटक, वहेडुक, वहेडुक—सज्ञा पु० [स०] विभीतक वृक्ष [को०]।

वह्नि—सज्ञा पु० [स०] १. अग्नि। २ कृष्ण के एक पुत्र का नाम, जो मित्रविदा से उत्पन्न हुआ था। ३. तुर्वसु क पुत्र का नाम। ४. कुक्कुर वशी एक यादव का नाम। ५. चित्रक। चीता।

६ भिलावाँ। ७ तीन की सख्या। ८ राम की सेना के सेनापति एक वदर का नाम। ९ जैनो के अनुसार लौकातिक जीवो का तीसरा वर्ग। १० पाचन शक्ति। पाचन। जठराग्नि (को०)। ११ यान (को०)। १२. देवता (को०)। १३. मरुत् (को०)। १४ सोम (को०)। १५ सवारी खीचनेवाले जानवर। बैल, घोडा आदि (को०)। १६ निबूक। बिजौरा नीबू। चकोतरा नीबू (को०)। १७ तत्र के अनुसार रेफ, रवर्ण (को०)। १८ आठवाँ कल्प (को०)। १९ पुरोहित (को०)। २० क्षुधा। भूख (को०)।

वह्निक[1]—सज्ञा पु० [स०] उष्णता। गरमी (को०)।

वह्निक[2]—वि० गरम। उष्ण (को०)।

वह्निकर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ विद्युत्। बिजली। २ जठराग्नि। ३ चकमक। पथरी।

वह्निकर[2] वि० १ उत्तापक। उद्दीपक। २ पाचक। क्षुधावर्धक (को०)।

वह्निकरी - सज्ञा स्त्री० [स०] धौ का फूल।

वह्निकाष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का अगुरु। दाहागुरु (को०)।

वह्निकुड—सज्ञा पु० [स० वह्निकुण्ड] अग्निकुड।

वह्निकुमार—सज्ञा पु० [स०] भुवनपति देवगण मे से एक।

वह्निकोण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'अग्निकोण' (को०)।

वह्निकोप—सज्ञा पुं० [स०] १. ज्वलन। जलना। प्रदाह। २ प्रलयाग्नि। ३ दावाग्नि (को०)।

वह्निगध—सज्ञा पु० [स० वह्निगंध] १ धूप। लोबान। २ यक्षधूप। राल (को०)।

वह्निगर्भ सज्ञा पु० [स०] १ बाँस। २ शमीवृक्ष।

वह्निगर्भा—सज्ञा स्त्री० [स०] शमीवृक्ष (को०)।

वह्निचक्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] कलिहारी या कलियारी नाम का विष।

वह्निजाया—सज्ञा स्त्री० [स०] वह्नि की पत्नी स्वाहा। स्वाहा मत्र (को०)।

वह्निज्वाल—सज्ञा पु० [स०] एक नरक का नाम (को०)।

वह्निज्वाला—सज्ञा स्त्री० [स०] धव का पेड।

वह्निदमनी—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्निदमनी नाम का पौधा।

वह्निदीपक—सज्ञा पु० [स०] कुसुभ का वृक्ष।

वह्निदीपिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] अजमोदा।

वह्निदैवत—वि० [स०] अग्नि की पूजा करनेवाला। अग्नि का उपासक अग्निपूजक (को०)।

वह्निधौत—वि० [स०] अग्नि के समान पवित्र (को०)।

वह्िनामा—सज्ञा पुं० [स० वह्िनामन्] १ चित्रक। चीते का पेड। २ भिलावाँ।

वह्निनी—सज्ञा स्त्री० [स०] जटामासी।

वह्निपुष्पा, वह्निपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [सं०] धव का वृक्ष।

वह्निबीज—सज्ञा पु० [सं०] १ स्वर्ण। सोना।

विशेष—ब्रह्मवैवर्त पुराण के कृष्णजन्म खड मे स्वर्ण की उत्पत्ति की कथा यह है—स्वर्ग की सभा मे एक बार सब देवता बैठे हुए थे और रभा नाच रही थी। रभा को देखकर अग्निदेव कामपीडित हुए और उनका वीर्य गिरा, जिसे उन्होने लज्जावश कपडो से ढाँक लिया। कुछ दिनो पीछे वह वीर्य दमकती हुई धातु होकर वस्त्र भेदकर नीचे गिरा, जिससे सुवर्ण की उत्पत्ति हुई।

२ तत्र मे 'र' बीज। ३ नीबू।

वह्निभूतिक—सज्ञा पुं० [स०] चाँदी।

वह्निभोग्य—सज्ञा पुं० [सं०] घी।

वह्निमथ—सज्ञा पुं० [स० वह्निमन्थ] गनियारी का पेड। अग्निमथ वृक्ष। अगेथू का पेड।

वह्निमथन—सज्ञा पुं० [स० वह्निमन्थन] गनियारी का पेड।

वह्निमारक—सज्ञा पुं० [स०] पानी। जल (को०)।

वह्निमित्र—सज्ञा पुं० [स०] वायु। हवा।

वह्निमुख—सज्ञा पुं० [स०] देवता।

विशेष—यज्ञ की अग्नि मे डाला हुआ भाग देवताओ को पहुचता है इसी से वे वह्निमुख कहलाते हैं।

वह्निरेता—सज्ञा पु० [स० वह्निरेतस्] शिव।

वह्निलोह - सज्ञा पु० [स०] ताम्र। ताँबा।

वह्निलोहक—सज्ञा पु० [स०] १ काँसा। २. ताँबा (को०)।

वह्निवक्त्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] कलिहारी या कलियारी नाम का विष।

वह्निवधू—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वह्निजाया' (को०)।

वह्निवर्ण—सज्ञा पुं० [सं०] लाल कमल।

वह्निवल्लभ—सज्ञा पुं० [स०] सर्ज रस। यक्षधूप (को०)।

वह्निवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वह्निजाया'।

वह्निवीज—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वह्निबीज'।

वह्निशिख—सज्ञा पु० [स०] १. केसर। २ कुसुम (को०)।

वह्निशिखर—सज्ञा पु० [स०] रुद्रजटा नाम का पौधा।

वह्निशिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कलिहारी या कलियारी नाम का विष। २. धव का पेड। ३ काकुन नाम का अन्न। प्रियगु। ४ गजपिप्पली।

वह्निशेखर—सज्ञा पुं० [स०] केसर (को०)।

वह्निसज्ञक—सज्ञा पुं० [स०] चित्रक वृक्ष (को०)।

वह्निसख—सज्ञा पु० [स०] १. जीरक। जीरा। २ पवन (को०)।

वह्निसाक्षिक—सज्ञा पुं० [स०] साक्षीस्वरूप अग्नि।

वह्निसात्—सज्ञा पुं० [स०] जल जाना। भस्मीभूत होना (को०)।

वह्निसुत—सज्ञा पु० [स०] पयोलस। पायस क्षीरिका। अन्नरस। रस।

वह्नीक—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'वाह्लिक'।

वह्नीश्वरी—सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी (को०)।

वह्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वाहन। यान। २ शकट। गाडी।

वह्यक—सज्ञा पुं० [सं०] उठाकर ले जानेवाला। वाहक।

वह्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] मुनिपत्नी। ऋषिवधू (को०)।

वाक—सज्ञा पुं० [स० वाङ्क] समुद्र [को०]।

वागाल—सज्ञा पु० [स० वाङ्गाल] सगीत मे एक राग [को०]।

वागाली—सज्ञा स्त्री० [स० वाङ्गाली] एक रागिनी (सगीत) [को०]।

वाछक—वि० [स० वाञ्छक] चाहने या वाछा करनेवाला। अभिलाषी। इच्छुक [को०]।

वाछन—सज्ञा पु० [स० वाञ्छन] चाहना। इच्छा करना [को०]।

वाछनीय—वि० [स० वाञ्छनीय] १ चाहने या कामना के योग्य। २ जिसकी इच्छा हो।

वाछा—सज्ञा स्त्री० [स० वाञ्छा] [वि० वाछित, वाछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

विशेष—सिद्धात मुक्तावली के अनुसार वाछा नामक आत्मवृत्ति दो प्रकार की होती है। एक उपायविषयिणी, दूसरी फलविषयिणी। फल का अर्थ है—सुख की प्राप्ति और दुःख का न होना। जिस वाछा का कारण फलज्ञान हो, अर्थात् जो वाछा इस रूप मे हो कि अमुक सुख मुझे मिले, वह फलविषयिणी है। जो वाछा किसी ऐसे उपाय के सबध मे हो, जिससे इष्टसाधन हो, वह उपायविषयिणी है।

वाछातीत—वि० [स० वाञ्छातीत] इच्छा के परे। जिसकी अभिलाषा न की जा सके। उ०—उन्मेष इसकी गति तीव्र हो या मद, प्रत्यक्ष हो या परोक्ष, वाछित हो या वाछातीत।—नदी०, पृ० ८८।

वाछित¹—वि० [स० वाञ्छित] अभिलषित। इच्छित। चाहा हुआ। जिसकी इच्छा हो।

वाछित²—सज्ञा पु० १. इच्छा। आकाक्षा। चाह। २ संगीत मे एक ताल [को०]।

वाछितव्य—वि० [स० वाञ्छितव्य] देश० 'वाछनीय'।

वाछिनी—सज्ञा स्त्री० [स० वाञ्छिनी] १. कुलटा। पुश्चली। २ कामार्थिनी या अत्यत कामुक स्त्री [को०]।

वाछी—वि० [स० वाञ्छित] १ इच्छुक। चाहनेवाला। २ कामुक। लपट। विषयी [को०]।

वाछेय—वि० [स० वाञ्छेय] दे० 'वाछनीय'।

वात¹—सज्ञा पुं० [स० वान्त] १ वमन। कै। २ वमन किया हुआ पदार्थ [को०]।

वात²—वि० १ वमन किया हुआ। २ निःसृत। त्यक्त। उत्क्षिप्त। ३ गिराया हुआ। चूआ हुआ। ४ जिसने कै किया हो [को०]।

वाताद—सज्ञा पुं० [स० वान्ताद] १ कुत्ता। श्वान। २. एक पक्षी का नाम। [को०]।

वातान्न—सज्ञा पु० [स० वान्तान्न] वमित अन्न। कै किया हुआ अन्न।

वाताशी¹—वि० [स० वान्ताशिन्] वमन खानेवाला।

वाताशी²—सज्ञा पु० १ कुत्ता। २ वह ब्राह्मण जो भोजन के लिये अपने कुल या गोत्र की प्रशंसा करे। ३ दूषित या निषिद्ध पदार्थों को खानेवाला राक्षस (को०)।

वाति—सज्ञा स्त्री० [स० वान्ति] १. वमन। वात। कै। २. वमन करने की क्रिया [को०]।

वातिका—सज्ञा स्त्री० [सं० वान्तिका] कुटकी।

वातिकृत्¹—सज्ञा पु० [स० वान्तिकृत्] मदनफल वृक्ष। मैनफल का पेड़।

वातिकृत्²—वि० वमनकारक। वमन करानेवाला [को०]।

वातिदा—सज्ञा स्त्री० [स० वान्तिदा] कुटकी।

वातिशोधनी—सज्ञा स्त्री० [स० वान्तिशोधनी] जीरक। जीरा।

वातिहृत्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वातिकृत्'।

वाश—वि० [स०] वश सबधी। बाँस का बना हुआ [को०]।

वाशिक—सज्ञा पु० [स०] १ बाँसुरी बजानेवाला। २. बाँस काटनेवाला [को०]।

वाशी—सज्ञा स्त्री० [स०] वशरोचना। वसलोचन [को०]।

वाँ—अव्य० [हिं० वहाँ का सक्षिप्त रूप] उस जगह। उस स्थान पर। उ०—घर बैठत वाँ जल सो रजए।—हम्मीर रा०, पृ० ४५।

वाँकम†—सज्ञा पु० [हिं० वाक्रमन् या वक्रम्] वक्रता। बाँकापन। उ०—सखी अमीणो साहिबो, वाँकम सूँ भरियोह।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० ७।

वाँग‡—सज्ञा पु० [फा० बाँग] दे० 'बाँग'। उ०—कतहु वाँग कतहु वेद, कतहु मिसिमल कतहु छेद।—कीर्ति०, पृ० ४२।

वाँचण—क्रि० स० [स० वाचन, हिं० बाँचना] दे० 'बाँचना'। उ०—सदेसा मति मोकलउ, प्रीतम तूँ आवेस। आँगलडी ही गलि गयाँ, नयण न वाँचण देस।—ढोला०, दू० १४४।

वाँलम—सज्ञा पुं० [स० वल्लभ] दे० 'वल्लभ—२'। उ०—वाँलम एक हिलोर दे, आइ सकइ तउ आइ। वाहडियाँ वे थक्किया, काग उडाइ उडाइ।—ढोला०, दू० १६७।

वाँस—सज्ञा पु० [स० पार्श्व, प्रा० पास, वास] दे० 'पास'। उ०—साल्ह कुँवर करहइ चढ्यउ, वाँसइ चाढी नार।—ढोला०, दू० ६२५।

वा—सज्ञा पु० [स० वार्] जल। पानी [को०]।

वा किटि—सज्ञा पु० [स०] जल का कोट वा शूकर, शिशुमार। सूँस।

वा पुष्प—सज्ञा पु० [स०] लवग। लौंग।

वा सदन—सज्ञा पु० [स०] जलपात्र [को०]।

वा स्थ—वि० [स०] पानी मे स्थित। पानी मे टिका हुआ [को०]।

वा¹—अव्य० [स०] विकल्प या सदेहवाचक शब्द। या। अथवा।

वा²—सर्व० [हिं० वह] व्रजभाषा मे प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप, जो कारकचिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे,—वाने वाको, वासे, वासो इत्यादि। उ०—(क) वा सुरतरु महँ अवर एक अद्भुत छबि छाजै। साखा दल फल फूलनि हरि प्रतिबिंब बिराजै।—नद० ग्र०, पृ० ६। (ख) रहै देह वाके परस याहि दृगन ही देख।—बिहारी (शब्द०)। (ग) और प्रभु जब किवाड खोलन पधारते तब

श्री ठाकुर जी वा इ पुकार सो पूछने ।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १०१ ।

वा[3]—वि० [फा०] कुशादा । खुला या फैला हुआ । खुले । उ०—दिन के वा दतुण्न के दर्बार मे रौनक अफरोज हुए ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७ ।

वाइ(पु[1]—सर्व० [हिं० वह] दे० 'वाहि' । उ०—नैन कमल ह्या लगत है कमल लगत है वाइ । कमल काल सज्जन हियो दोनो एक सुभाइ ।—रसनिधि (शब्द०) ।

वाइ†[2]—सज्ञा स्त्री० [स० वापी] वापिका दे० 'बाय' ।

वाइक(पु—वि० [सं० वाचिक] कहा हुआ । वाणी या वचन द्वारा व्यक्त । उ०—काइक वाइक मानस हू करि है गुरु देव ही वदन मेरो ।—सुदर० ग्र०, भा० २, पृ० ३८३ ।

वाइकौट—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० वाइकौटेस] इगलैंड के सामतो और बडे बडे भूम्यधिकारियो को वशपरपरा के लिये दी जानेवाली एक प्रतिष्ठासूचक उपाधि जिसका दर्जा 'अर्ल' के नीचे और 'बैरन' के ऊपर है । विशेष दे० 'ड्यूक' ।

वाइज—वि० सज्ञा पु० [अ० वाइज] धर्मोपदेष्टा । उपदेशक । मजहबी नसीहत देनेवाला । उ०—रगे शराब से मेरी नीयत बदल गई । वाइज की बात रह गई साकी की चल गई ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ६२० ।

वाइदा—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'वादा' ।

वाइन—सज्ञा स्त्री० [अँ०] शराब । मद्य । सुरा ।

वाइस(पु[1]—सज्ञा पुं० दे० [स० वायस] 'वायस' । उ०—कक वाइस उलू गिद्ध सुर असुभ कहि ।—सुजान०, पृ० १६ ।

वाइस[2]—सज्ञा पु० [अ०] प्रतिनिधि । दूसरे के स्थान पर या सहायक रूप मे काम करनेवाला व्यक्ति । जैसे, वाइस चासलर, वाइस प्रेसिडेंट आदि ।

वाइस चासलर—सज्ञा पु० [अ०] विश्वविद्यालय का वह ऊँचा मुख्याधिकारी जो चासलर के सहायतार्थ हो और प्राय उसकी अनुपस्थिति के कारण उसके अधिकाश कामो को कर सकता हो । हिंदी मे इसके पर्याय रूप मे कहीं कुलपति और कहीं उपकुलपति शब्द प्रयुक्त हो रहा है ।

वाइस चेयरमैन—सज्ञा पु० [अ०] वह जिसका दर्जा चेयरमैन या सभाध्यक्ष के बाद ही होता है और जो उसकी अनुपस्थिति मे उसका काम करता है । उपाध्यक्ष । उपसभापति । जैसे,—म्युनिसिपैलिटी के वाइस चेयरमैन ।

वाइस प्रेसिडेंट—सज्ञा पु० [अ०] वह जिसका दर्जा प्रेसिडेंट या सभापति के बाद ही होता है और जो उसकी अनुपस्थिति मे सभा का सचालन करता है । उपसभापति । जैसे,—कौंसिल के वाइस प्रेसिडेंट ।

वाइसराय—सज्ञा पुं० [अ०] अग्रेजो के शासन काल मे हिंदुस्तान का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो सम्राट् के प्रतिनिधि (बडा लाट) के रूप मे कार्य करता था और भारत का सर्वोच्च अधिकारी था । बडे लाट साहब ।

वाई†—सज्ञा स्त्री० [स० वायु] दे० 'वायु' । उ०— सकसे का जैतवार अकसे का वाई । अरिदल समुद्र आए कुभज के भाई ।—रा० रू०, पृ० ६७ ।

वाउ†—सज्ञा पुं० [सं० वायु] दे० 'वायु' । उ०—आति गनै सो लवै न वाउ ।—प्राण०, पृ० ३३ ।

वाउचर—सज्ञा पुं० [अ०] वह कागज या पुरजा या बही जिसमे किसी प्रकार के हिसाब का व्योरा हो ।

वाक्—पु० [सं० वाच्] १ वाणी । वाग्य । २ सरस्वती । ३ बोलने की इद्रिय । ४ शब्द । ५ ध्वनि (को०) । ६ कथन । वक्तव्य (को०) । ७. वादा । प्रतिज्ञा । ८ उक्ति (को०) ।

वाक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ बगलो का समूह । २ बगलो की उडान (को०) । ३ वाणी । वाक्य । ४ वेद का एक भाग । ५ खेत की वह कूत जो बिना खेत नापे की जाती है ।

वाक[2]—वि० वक सबधी । बगलो का ।

वाकई[1]—वि० [अ० वाकइ] ठीक । यथार्थ । सच । वास्तव । जैसे,—जो कुछ कहता हूँ, वह वाकई कहता हूँ ।

वाकई[2]—अव्य० सचमुच । यथार्थ मे । वास्तव में । जैसे—क्या आप वाकई वहाँ गए थे ?

वाकफियत—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकफियत] १ वाकिफ होने का भाव जानकारी । २ जान पहचान । परिचय ।

वाकया—सज्ञा पुं० [अ० वाकिअह्] १ कोई बात जो घटित हो । व्यापारसयोग । घटना । २. वृत्तात । समाचार ।

यौ०—वाकयानवीस, वाकयानिगार=मुसलमानी साम्राज्य मे वह कर्मचारी जिसका कार्य इतिहास के रूप मे घटनाओ को लिखना होता था ।

वाकयात—सज्ञा पुं० [अ० वाकिआत] वाकया का बहुवचन ।

वाका—सज्ञा पु० [अ० वाकअ्] १ होनेवाला । घटनेवाला ।

मुहा०—वाका होना=घटना के रूप मे उपस्थित होना । घटित होना ।

२ स्थित । खडा । प्रतिष्ठित । जैसे,—वह मकान दरिया के किनारे वाका है ।

वाकिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] तत्र के अनुसार एक देवी का नाम ।

वाकिफ—वि० [अ० वाकिफ] १ जानकार । ज्ञाता । जैसे,—मैं इस बात से वाकिफ न था । २ बात को समझने बूझनेवाला । बातो का जानकारी रखनेवाला । अनुभवी । जैसे—किसी वाकिफ आदमी को इतजाम के लिये भेजना चाहिए ।

वाकिफकार—वि० [अ० वाकिफ+फा० कार] काम को समझने बूझनेवाला । जो अनाडी न हो । कार्याभिज्ञ उ०—ये हैं वाकिफकार मिलन की राह बतावैं ।—पलटू०, पृ० ७ ।

वाकिफकारी—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफकारी] परिचय । जानकारी । अभिज्ञता (को०) ।

वाकिफीयत—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफीयत] दे० 'वाकफियत' (को०) ।

वाकुची—सज्ञा स्त्री० [स०] बकुची ।

वाकुल—सज्ञा पुं० [स०] बकुल या मौलसिरी का पेड वा पुष्प ।

वाकै—सज्ञा पुं० [अ० वाकअ] दे० 'वाका' । उ०—इस सब से उसकी कारवाई मे अक्सर खलल वाकै होते रहते हैं ।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ३१ ।

वाकोवाक—सज्ञा पु० [स०] कथोपथन। बातचीत।

वाकोवाक्य—सज्ञा पु० [स०] परस्पर कथोपकथन। बातचीत। २ परस्पर तर्क। ३ तर्क विद्या।

विशेष—छादोग्योपनिषद् मे नारद ने सनत्कुमारो से अपनी जिन जिन विद्याओ के ज्ञाता होने की बात कही थी, उनमे 'वाकोवाक्य' विद्या भी थी।

वाकौ†—सज्ञा पु० [अ० वाकयह्] दे० 'वाकया'। उ०—वाकौ झूठौ अक्खयौ, दक्खिण गयो सदूर।—रा० रू०, पृ० ३२४।

वाक्कलह—सज्ञा पु० [स०] कहासुनी। वाक्युद्ध। उ०—मुख्य विवाद-ग्रस्त विषय छूट कर व्यर्थ घृणित वाक्कलह उत्पन्न हो जाता। प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३०३।

वाक्का—सज्ञा स्त्री० [स०] चरक के अनुसार एक प्रकार का पक्षी।

वाक्कीर—सज्ञा पु० [स०] पत्नी का भाई। साला। श्यालक [को०]।

वाक्केलि, वाक्केली—सज्ञा स्त्री० [स०] हास परिहास [को०]।

वाक्क्षत—सज्ञा पु० [स०] बात की चोट।

वाक्चपल—वि० [स०] १ बहुत बातें करनेवाला। बातें करने मे तेज। मुँहजोर। २ भडभडिया।

वाक्छल—सज्ञा पु० [स०] न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदो मे से एक।

विशेष—जब वक्ता के साधारण रूप से कहे हुए कथन मे दूसरे पक्ष द्वारा अभिप्रेत अर्थ से अन्य अर्थ की कल्पना उसे केवल चक्कर मे डालने के लिये की जाती है, तब वाक्छल कहा जाता है। जैसे,—वक्ता ने कहा,—यह बालक नवकबल है। (नव-कबलोऽय बालक) अर्थात् नए कबलवाला है। इसका प्रति-वादी यदि यह अर्थ लगावे कि इस बालक के पास सख्या मे नौ कबल हैं, और कहे—'नौ कबल कहाँ है, एक ही तो है'। तो यह वाक्छल होगा।

वाक्पटु—वि० [स०] बात करने मे चतुर। वाक्कुशल।

वाक्पति—सज्ञा पु० [स०] १ बृहस्पति। २. विष्णु। ३ पुष्य नक्षत्र (को०)। ४ अनवद्य वचन। पटु वाक्य। निर्दोष बात।

वाक्पतिराज—सज्ञा पु० [स०] १ एक कवि जो राजा यशोवर्मा के आश्रित थे। इन्होने प्राकृत मे गौडवहो (गौडवध) नामक काव्य की रचना की है। ये भवभूति के समसामयिक थे। २. मालवा का एक परमार राजा जो सीयक का पुत्र था। (इस नाम का एक और राजा हुआ है।)

वाक्पथ—सज्ञा पु० [स०] १ बोलने के लिये उपयुक्त क्षण। २ वाणी का क्षेत्र। भाषण का क्षेत्र [को०]।

वाक्पाटव—सज्ञा पु० [स०] वाक्पटुता। भाषण की योग्यता। [को०]।

वाक्पारीण—सज्ञा पु० [स०] वह जो वाणी या कथन के क्षेत्र को पार कर गया हो।

वाक्पारुष्य—सज्ञा पु० [स०] १ वचन की कठोरता। बात का कडुआपन। मुँहजोरी। २. धर्मशास्त्रानुसार किसी की जाति, कुल इत्यादि के दोषो को इस प्रकार ऊँचे स्वर से कहना कि उससे उद्वेग उत्पन्न हो।

वाक्पुष्प—सज्ञा पु० [स०] डीगभरी बात। बे सिर पैर की बात [को०]।

वाक्प्रचोदन—सज्ञा पु० [स०] मौखिक या शाब्दिक आज्ञा [को०]।

वाक्प्रतोद—सज्ञा पु० [स०] वाणी का अकुश। व्यग्य। ताना। [को०]।

वाक्प्रदा—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती नदी [को०]।

वाक्प्रलाप सज्ञा पु० [स०] वाक्पटुता। वाग्मिता [को०]।

वाक्प्रसारी - वि० [सं० वाक्प्रसारिन्] भाषणकुशल। लबी चौडी बातें करनेवाला [को०]।

वाक्फियत—सज्ञा स्त्री० [अ० वाकिफियत] जानकारी। परिज्ञान।

वाक्य—सज्ञा पु० [स०] १. वह पद समूह जिसपे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। भाषा की भाषावैज्ञानिक आर्थिक इकाई का बोधक पद समूह। वाक्य मे कम से कम कारक (कर्तृ आदि) जोसज्ञा या सर्वनाम होता है, और क्रिया का होना आवश्यक है। क्रियापद और कारक पद से युक्त साकाक्ष अर्थबोधक पद-समूह या पदोच्चय। उद्देश्याश और विधेयाशवाले सार्थक पदों का समूह।

विशेष—नैयायिको और अलंकारियो के अनुसार वाक्य मे (१) आकाक्षा, (२) योग्यता और (३) आसक्ति या सन्निधि होनी चाहिए। 'आकाक्षा' का अभिप्राय यह है कि शब्द या ही रखे हुए न हो, वे मिलकर किसी एक तात्पर्य का बोध कराते हो। जैसे, कोई कहे—'मनुष्य चारपाई पुस्तक' तो यह वाक्य न होगा। जब वह कहेगा—'मनुष्य चारपाई पर पुस्तक पढता है।' तब वाक्य होगा। 'योग्यता' का तात्पर्य यह है कि पदो के समूह से निकला हुआ अर्थ असगत या असभव न हो। जैसे, कोई कहे—'पानी मे हाथ जल गया' तो यह वाक्य न होगा। 'आसक्ति' या 'सन्निधि' का मतलब है सामीप्य या निकटता। अर्थात् तात्पर्यबोध करानेवाले पदो के बीच देश या काल का व्यवधान न हो। जैसे, कोई यह न कहकर कि 'कुत्ता मारा, पानी पिया' यह कहे—'कुत्ता पिया मारा पानी' तो इसमे आसक्ति न होने से वाक्य न बनेगा, क्योकि 'कुत्ता' और 'मारा' के बीच 'पिया' शब्द का व्यवधान पडता है। इसी प्रकार यदि कोई 'पानी' सवेरे कहे और 'पिया' शाम को कहे, तो इसमे काल सबंधी व्यवधान होगा।

काव्य भेद का विषय मुख्यत न्याय दर्शन के विवेचन से प्रारभ होता है और यह मीमासा और न्यायदर्शनो के अतर्गत आता है। दर्शन शास्त्रीय वाक्यो के ३ भेद-विधिवाक्य, अनुवाद वाक्य और अर्थवाद वाक्य किए गए हैं। इनमे अतिम के चार भेद-स्तुति, निंदा, परकृति और पुराकल्प बनाए गए हैं।

वक्ता के अभिप्रेत अथवा वक्तव्य की अबाधकता वाक्य का मुख्य उद्देश्य माना गया है। इसी की पृष्ठ भूमि मे सस्कृत वैयाकरणो ने वाक्यस्फोट की उद्भावना की है। वाक्यपदीयकार द्वारा स्फोटात्मक वाक्य का अखड सत्ता स्वीकृत है।

भाषावैज्ञानिको की दृष्टि मे वाक्य सश्लेषणात्मक और विश्लेषणा-त्मक होते हैं। शब्दाकृतिमूलक वाक्य के शब्दभेदानुसार चार भेद है—समासप्रधान, व्यासप्रधान, प्रत्ययप्रधान और विभक्तिप्रधान। इन्ही के आधार पर भाषाओ का भी वर्गी-

करण विद्वानो ने किया है। आधुनिक व्याकरण की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं—सरल वाक्य मिश्रित वाक्य और सयुक्त वाक्य।

२ कथन। उक्ति (को०)। ३ न्याय मे युक्ति। उपपत्ति। हेतु ४. विधि। नियम। अनुशासन (को०)। ५ ज्योतिष मे गणना की सौर प्रक्रिया (को०)। ६ प्रतिज्ञा। पूर्व पक्ष (को०)। ७. आदेश। प्रभुत्व। शासन (को०)। ८ विधिसम्मत साक्ष्य वा प्रमाण (को०)। ९ वाक्प्रदत्त होना (को०)।

वाक्यकंठ—वि० [स० वाक्यकण्ठ] जिसके कंठ मे बात आ गई हो। जो बोलना ही चाहता हो [को०]।

वाक्यकर—सज्ञा पु० [स०] १ एक की बात दूसरे से कहनेवाला। दूत। २ बातें बनानेवाला।

वाक्यखंड—सज्ञा पुं० [स० वाक्यखण्ड] वाक्य के भीतर आया हुआ वाक्य। उपवाक्य [को०]।

वाक्यखंडन—सज्ञा पु० [स० वाक्यखण्डन] तर्क का खंडन करना [को०]।

वाक्यग्रह—सज्ञा पुं० [स०] किसी कारण से वाणी का रुकना। वाक्स्तभन [को०]।

वाक्यज्ञान—सज्ञा पु० [स०] केवल वार्तालाप करना। वाचक ज्ञान। विद्या का ज्ञान। उ०—वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुनभव पार न पावै कोई। निशि गृह मध्य दीप की बातन तम निवृत्त नहिं होई। सतवाणी०, भा० २, पृ० ८५।

वाक्यपदीय—सज्ञा पु० [सं०] भर्तृहरि द्वारा विरचित एक व्याकरण ग्रंथ जिसमे तीन काड है। वाक्यपद सबधी व्याकरण दर्शन के सिद्धातो का कारिकाओ मे गूढ विवेचन है। व्याकरण दर्शन के प्राचीनतम और प्रामाणिक ग्रथो मे इसकी गणना है। शब्दब्रह्म, स्फोटब्रह्म और स्फोटवाद का इसमे प्रतिपादन है। इसे 'हरिकारिका' भी कहते है। इसकी दो प्राचीन टीकाएँ प्राप्त होती है।

वाक्यपद्धति—सज्ञा स्त्री० [स०] वाक्यरचना की पद्धति, प्रणाली या ढग। शैली [को०]।

वाक्यप्रबंध—सज्ञा पु० [स०] १. निबंध। लेख। २ वाक्य की गति। वाक्य का प्रवाह [को०]।

वाक्यभेद—सज्ञा पुं० [स०] मीमासा के एक ही वाक्य का एक ही काल मे परस्पर विरुद्ध अर्थ करना।

वाक्यरचना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाक्यविन्यास'।

वाक्यवक्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] वाक्यगत वक्रता। वाक्य की भगिमा। उ०—अलकार, चाहे अप्रस्तुत वस्तुयोजना के रूप मे हो (जैसे उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा इत्यादि मे), चाहे वाक्यवक्रता के रूप मे हो (जैसे अप्रस्तुतप्रशसा, परिसख्या, व्याजस्तुति, विरोध इत्यादि मे), चाहे वर्णविन्यास के रूप मे (जैसे अनुप्रास मे) लाए जाते हैं वे प्रस्तुत भाव या भावना के उत्कर्ष के लिये ही।—रस०, पृ० ४९।

वाक्यविन्यास—सज्ञा पुं० [स०] वाक्यरचना। वाक्यो का संयोजन या गठन [को०]।

वाक्यविलेख—सज्ञा पु० [स०] लेखा जोखा तथा आदेश आदि लिखने का प्रधान अधिकारी [को०]।

वाक्यविशारद—वि० [स०] बात करने में कुशल [को०]।

वाक्यशेष—सज्ञा पुं० [स०] १ अधूरी बात। अधूरा भाषण। २ अपूर्ण वाक्य। न्यूनपद वाक्य [को०]।

वाक्यसारथि—सज्ञा पु० [स०] प्रवक्ता। प्रमुख बोलनेवाला [को०]।

वाक्यस्थ—वि० [स०] आज्ञाकारी। विनत। नम्र (को०)।

वाक्यहारक—सज्ञा पु० [स०] दूत। सदेशवाहक [को०]।

वाक्यहारिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दूती। संदेशवाहिका [को०]।

वाक्याडंबर—सज्ञा पुं० [स० वाक्यआडम्बर] दीर्घ और क्लिष्ट शब्दो तथा लबे लबे समासो से युक्त वाक्य [को०]।

वाक्यार्थ—सज्ञा पु० [स०] १ वाक्य का अर्थ। २ वाक्य प्रमाण के बल पर प्राप्त किया हुआ वाक्य का अभिप्राय। सामान्य ढंग से अभिप्रवृत्त, पदार्थों का विशेष मे अवस्थान (सामान्येनाभिप्रवृत्तानां पदार्थानां यद्विशेषेऽवस्थानं स वाक्यार्थ)।

वाक्यालाप—सज्ञा पु० [स०] बात चीत। सभाषण। प्रवचन [को०]।

वाक्यैकवाक्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] मीमासा के अनुसार एक वाक्य को दूसरे वाक्य से मिलाकर उसके सुसगत अर्थ का बोध कराना।

वाक्यशक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी। सरस्वती। उ०—ईश्वरीय वाक्शक्ति अर्थात् वाणी वा सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७१।

वाक्शलाका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कडी बात। २ लगनेवाली बात। ३ श्राप। शाप [को०]।

वाक्शल्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वाक्शलाका'।

वाक्सग—सज्ञा पु० [स०वाक्सङ्ग] १ धीरे धीरे कहना। २ वाणी का रुक जाना। वाक्यस्तभ [को०]।

वाक्सतक्षण—सज्ञा पुं० [स० वाक्य सन्तक्षण] व्यग्यात्मक वचन [को०]।

वाक्सयम—सज्ञा पु० [वि०] वाणी का संयम। अन्यथा बात न कहना। व्यर्थ बातें न करना।

वाक्सवर—सज्ञा पु० [स०] वाणी को प्रतिरुद्ध या सीमित करना वाक्यसयम [को०]।

वाक्सरणि—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी की पद्धति या राह। वाक्यप्रकार। बात कहने का ढग। उ०—वाक्सरणि जिसके द्वारा पात्रो के विचार व्यक्त होते है।—पा० सा० सि०, पृ० १३१।

वाक्सार—सज्ञा पु० [स०] व्यग्य [को०]।

वाक्सिद्ध—सज्ञा पु० [स०] वह जिसकी कही हुई बात ठीक निकले। वह जिसने वाक्सिद्धि प्राप्त कर ली हो [को०]।

वाक्सिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी की सिद्धि, अर्थात् इस प्रकार का सिद्धि या शक्ति कि जो भी बात मुँह से निकले, वह ठीक ठीक घटे।

वाक्स्तभ—सज्ञा पु० [स० वाक्स्तम्भ] वाणी का रुक जाना। वाणी को लकवा मार जाना। बोली बद हो जाना [को०]।

वागत—सज्ञा पु० [स० वागन्त] सबसे ऊँचा स्वर [को०]।

वागⓨ—सज्ञा स्त्री० [स० वागा] दे० 'वागा'। उ०—धाली टापर वाग मुखि, भेक्यउ राज दुआरि। करहइ किया टहूकडा, निद्रा जागी नारि।—ढोला०, दू० ३४५।

वागतीत—सज्ञा पु० [स०] एक मिश्र वा सकर जाति [को०]।

वागधिप—सज्ञा पु० [स०] बृहस्पति [को०]।

वागना ⑤—क्रि० अ० [स० √वक=(चलाना)] दे० 'वागना'।

वागपहारक—वि०, संज्ञा पु० [स०] १ दूसरो की उक्ति को चुराने वाला। २ मिथ्यावादी [को०]।

वागपेत—वि० [स०] मूक। गूँगा [को०]।

वागर—संज्ञा पु० [स०] १. वारक। २ शाण। सान। ३. निर्णय। ४ वृक। भेंडिया। ५ पंडित। ६ मुमुक्षु। ७. निर्भय। निडर। नायक। ८. वडवाग्नि। (को०)। ९. सूर्य का एक घोडा।

वागरवाल ⑤—वि० [स० वागर] वाक्चतुर। विद्वान्। पडित। उ०—नरवर गढ ढोलइ कन्हइ, जावउ वागरवाल।—ढोला०, दू०, पृ० १०५।

वागा—संज्ञा स्त्री० [स०] वल्गा। लगाम।

वागाडवर—संज्ञा पुं० [सं० वाक्+आडम्बर] वाग्जाल। व्यर्थ की लंबी चौडी बात। उ०—किसी जन विशेष को मनस्ताप देने ही के अर्थ व्यर्थ वागाडवर।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २९९।

वागात्मा—वि० [स० वाक्+आत्मन्] शब्दमय [को०]।

वागारु—संज्ञा पु० [स०] आशा देकर निराश करनेवाला। आसरे मे रखकर पाछे धोखा देनेवाला। विश्वासघाती।

वागाशनि—संज्ञा पु० [स०] बुद्धदेव।

वागीश'—संज्ञा पुं० [स०] १ बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३ वाल्मी। कवि। ४ पुष्य नक्षत्र [को०]।

वागीश'—वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

वागीशा—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वागीश्वर'—संज्ञा पुं० [स०] १ बृहस्पति। २ ब्रह्मा। ३ मजुघोष बोधिसत्व। ४. वाल्मी। कवि।

वागीश्वर'—वि० अच्छा बोलनेवाला। सद्वक्ता।

वागीश्वरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वागुजार—संज्ञा पु० [स० वागुज्जार] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की मछली।

वागुजार—वि० [फा० वागुजार] छोडने या त्यागनेवाला [को०]।

वागुजारी—संज्ञा स्त्री० [फा० वागुज़ारी] १ मुक्ति। त्यागना। २ छूट (जायदाद आदि की)।

वागुजारता—वि० [फा० वागुजाश्तह्] छूटा या छोडा हुआ [को०]।

वागुजी—संज्ञा स्त्री० [स०] बकुची नाम की ओषधि। सोमराजी।

वागुण—संज्ञा पु० [स०] १. कमरख। २ बैंगन। भटा।

वागुरा—संज्ञा स्त्री० [स०] मृगा या पक्षियो के फँसाने का जाल। जाल।

यो०—वागुरावृत्ति=(१) शिकारी। बहेलिया। (२) पशु फँसाने जीविका।

वागुरिक—संज्ञा पु० [स०] हिरन फँसानेवाला शिकारी। मृगव्याध।

वागुरीक—संज्ञा पु० [स०] दे० 'वागुरिक'। उ०—एक ततुवाय के सेवक के रूप म, वागुरीक मृगपाशिक अथवा बढ़ई का काम करते है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ३०४।

वागुलि—संज्ञा पु० [स०] डिब्बा। पानदान।

वागुलिक—संज्ञा पु० [स०] राजाओं का वह सेवक जिसका काम उनका पान खिलाना होता है। खवास।

वागुस—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बडा मत्स्य [को०]।

वागृषभ—संज्ञा पु० [स०] १. उत्तम वक्ता। २. विद्वान् [को०]।

वागृषु—संज्ञा पु० [स०] वक्तृत्व की श्रेष्ठता। बोलने का एक गुण वा पद्धति।

विशेष—हेमचंद्र ने ३५ प्रकार के वाग्गुण कहे हैं।

वाग्गुद—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पक्षी।

विशेष—मनुस्मृति मे लिखा है कि जो गुड चुराता है, वह दूसरे जन्म मे वाग्गुद पक्षी होता है।

वाग्गुलि, वाग्गुलिक—संज्ञा पु० [स०] राजाओं का वह खवास जो उनको पान खिलाता है।

वाग्जाल—संज्ञा पु० [स०] बातो की लपेट। बातो का आडबर या भरमार।

वाग्जीवन—संज्ञा पु० [स०] विदूषक [को०]।

वाग्डवर—संज्ञा पु० [स० वाग्डंबर] १ दर्पवचन। अतिशयोक्ति। २ विदग्धतापूर्ण भाषा [को०]।

वाग्दंड—संज्ञा पु० [स० वाग्दण्ड] १. भला बुरा कहने का दड। मौखिक दड। डाँट डपट। लियाड़। २. वाक्सयम। वाणी का नियत्रण (को०)।

वाग्दत्त—वि० [स०] मुँह से दिया हुआ। वचनो द्वारा प्रदान किया हुआ। जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हो।

वाग्दत्ता—संज्ञा स्त्री० [स०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो, केवल विवाह सस्कार होने को बाकी हो। उ०—यह विधि वाग्दत्ता कन्या के लिये है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १९९।

विशेष—पूर्व काल मे प्रथा थी कि कन्या का पिता जामाता के पास जाकर कहता था कि मैं अपनी कन्या तुम्हे दूँगा। इस प्रकार देने को कही हुई कन्या वाग्दत्ता कही गई है। आजकल इस प्रकार तो नही कहा जाता, पर वरच्छा या फलदान का टीका चढाया जाता है।

वाग्दरिद्र—वि० [स०] बहुत कम बोलनेवाला। अल्पवक्ता [को०]।

वाग्दल—संज्ञा पुं० [स०] ओष्ठाधर। ओठ।

वाग्दान—संज्ञा पु० [स०] कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हे व्याहूँगा।

विशेष—प्राचीन काल मे कन्या का पिता जिसे उत्तम वर समझता था, उसके पास जाकर कहता था—मैं अपनी कन्या तुम्हे दूँगा। यही कथन वाग्दान कहलाता था।

वाग्दुष्ट'—वि० [स०] १. परुषभाषी। कटुभाषी। २ जिसे किसी ने शाप दिया हो। जिस किसी ने कोसा हो। शापग्रस्त। ३ अशुद्ध वा व्याकरण के प्रतिकूल भाषा का प्रयोग करनेवाला (को०)।

वाग्दुष्ट'—संज्ञा पु० [स०] १. वह जो निंदा करता हो। निंदक। वह ब्राह्मण जिसका उपयुक्त समय पर उपनयन सस्कार न हुआ हो [को०]।

वाग्देवता—संज्ञा पु० [स०] वाणी। सरस्वती।

वाग्देवी—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती। वाणी।

वाग्देवत्यचरु—संज्ञा पु० [स०] वह चरु जो सरस्वती के उद्देश्य से पकाया गया हो।

वाग्दोष—संज्ञा पु० [स०] १ बोलने का त्रुटि। जैसे, वर्ण का ठीक उच्चारण न करना इत्यादि। २. व्याकरण सबधी त्रुटि या दोष। ३. निंदा या गाली।

वाग्धारा—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी की अप्रतिहत गति। वाणी की अटूट धारा। उ०—रामानद और वल्लभाचार्य ने जिस भक्तिरस का प्रभूत सचय किया, कबीर, सूर आदि की वाग्धारा ने उसका सचार जनता के बीच किया।—आचार्य०, पृ० ६४।

वाग्निबधन—वि० [स० वाग्निबन्धन] जो शब्दो पर निर्भर या आधारित हो [को०]।

वाग्बधन—सज्ञा पु० [स० वाग्बन्धन] बोलने से विरत करना। बोलने न देना।

वाग्बद्ध—वि० [स०] मौन। चुप [को०]।

वाग्बाहुल्य—सज्ञा पुं० [स०] स० 'वागाडबर'। उ०—उनकी कृति वाग्बाहुल्य से भरा रहती है।—साहित्य०, पृ० २५१।

वाग्भट—सज्ञा पु० [स०] १ अष्टागहृदय सहिता नामक वैद्यक के ग्र थ के रचयिता जिनके पिता का नाम सिहगुप्त था। ग्रथकार का वद्यक के ग्रथकर्ताओ मे बडा समान और प्रामाण्य है। २ पदार्थ-चद्रिका, भावप्रकाश, रसरत्न समुच्चय, शास्त्रदर्पण आदि के रचायता। ३ वैद्यक निघटु के रचायिता। ४. एक जैन पडित जिनक पिता का नाम नेमिकुमार था। इनके रचे अलकारतिलक, वाग्भटालकार और छदानुशासन प्रसिद्ध ग्र थ हैं।

वाग्मिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पाडित्य। २ उत्तम वक्तृत्व शक्ति [को०]।

वाग्मित्व—सज्ञा पु० [स०] द० 'वाग्मिता' [को०]।

वाग्मी—सज्ञा पुं० [स० वाग्मिन्] १ वाचाल। अच्छा वक्ता। २. पडित। ३ बृहस्पति। ४. एक पुरुवशी राजा। ५. विष्णु (को०)। ६ शुक। तोता (को०)।

वाग्य'—वि० [स०] १. परिमितभाषी। २ सत्य वक्ता [को०]।

वाग्य'—सज्ञा पु० १ निर्वेद। २ विनम्रता। विनय। शालीनता (को०)। ५. सदेह। शका। विकल्प (को०)।

वाग्यत—वि० [स०] वाणी का सयम या निरोध करनेवाला मितभाषी। [को०]।

वाग्यम—सज्ञा पु० [स०] वह जिसने वाणी का निरोध कर लिया हो, मुनि [को०]।

वाग्यमन—सज्ञा पु० [स०] वाणी का सयम। बोलने मे सयम।

वाग्याम—सज्ञा पु० [स०] मूक। गूँगा [को०]।

वाग्युद्ध—सज्ञा पु० [स०]। कहासुनी। वादविवाद।

वाग्वज्र—सज्ञा पु० [स०] १ अशुद्ध रूप से कहा हुआ वाक्य। २ कठोर वाक्य। ३. शाप।

वाग्वद—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चमगादड [को०]।

वाग्वादिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वाग्विद—वि० [स०] द० 'वाग्विदग्ध' [को०]।

वाग्विदग्ध—वि० [स०] १ पडित। २ बातचीत करने मे चतुर।

वाग्विदग्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] द० वाग्वैदग्ध्य'।

वाग्विनि सृत—वि० [स०] कथन से व्यजित [को०]।

वाग्विभव—सज्ञा पु० [स०] वाणीरूपी सपत्ति। वाणी का वैभव। भाषा पर विशेष अधिकार [को०]।

वाग्विरोध—सज्ञा पु० [पु०] वादविवाद। कहासुनी [को०]।

वाग्विलास—सज्ञा पु० [स०] आनदपूर्वक परस्पर सभाषण। आनद-पूर्वक बातचीत करना। २. व्यर्थ का वागाडबर।

वाग्विलासी—सज्ञा पु० [स० वाग्विलासिन्] १ कपोत। कबूतर। २ पडुक। पडुखी [को०]।

वाग्विस्तर—सज्ञा पु० [स०] वाक्प्रपच। वाणी का विस्तार [को०]।

वाग्वीर—सज्ञा पु० [स०] खूब लबी चौडी बातें करनेवाला व्यक्ति। बातचीत मे वीरता दिखानेवाला आदमी [को०]।

वाग्वैचित्र्य—सज्ञा पु० [स०] चमत्कारप्रियता। भाषा की विचित्रता। उ०—अभिव्यजनावाद तो वैचारा अभिव्यजना को छोडकर किसी वाग्वैचित्र्य की बात ही नही करता।—आचार्य०, पृ० १२०।

वाग्वैदग्ध्य—सज्ञा पुं० [स०] १ बात करने की चतुरता। २ सुंदर अलकार और चमत्कारपूर्ण उक्तियो का निपुणता। उ०—कवि गग ने छदो मे जैसा काव्यगत चमत्कार, वाग्वैदग्ध्य, भाषासौष्ठव वर्तमान है, उनके प्रकाश मे रीतिकालीन कवियो का पृथक्ता स्पष्ट हो जाती है।—अकबरी०, पृ११८।

विशेष—काव्य मे वाग्वैदग्ध्य को प्रधानता मानते हुए भी काव्य की आत्मा रस ही कहा गया है। अग्निपुराण मे स्पष्ट लिखा है—'वाग्वैदग्ध्यप्रधानेऽपि रस एवात्र जीवितम्'।

वाग्व्यय—सज्ञा पु० [स०] वाक्क्षय। वाक्क्षय [को०]।

वाग्व्यवहार—सज्ञा पु० [स०] वाचिक विचारणा। मौखिक निरूपण या कथन [को०]।

वाग्व्यापार—सज्ञा पु० [स०] १ कथन की पद्धति। २ भाषण शैली। ३ बातचीत। वार्तालाप [को०]।

वाघभर—सज्ञा पु० [स० व्याघ्राम्बर] द० 'वाघबर'। उ० शिव विभूत गोला लिये, वाघभर धरि अग।—पृ० रासो, पृ० १७६।

वाघमर—सज्ञा पु० [स० व्याघ्राम्बर] द० 'वाघबर'।

वाङ्निमित्त—सज्ञा पु० [स०] पूर्वसूचना [को०]।

वाङ्निश्चय—सज्ञा पु० [स०] वाणी द्वारा विवाह की बातचीत पक्की होना [को०]।

वाङ्निष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] वचनबद्धता। वचन का पालन [को०]।

वाङ्मती—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी जो नैपाल से निकलती है और आजकल 'बागमती' कहलाती है।

विशेष—वराहपुराण (गोकर्ण महात्म्य) मे इस नदी को अत्यत पवित्र, गगा से भी पवित्र, कहा है और इसमे स्नान करने तथा इसके किनारे मरने से विष्णुलोक की प्राप्ति बतलाई है।

वाङ्मधुर—वि० [स०] मिष्टभाषी। मधुर बोलनेवाला [को०]।

वाङ्मय'—वि० [स०] १ वाक्यात्मक। वचन सबधी। २. वचन द्वारा किया हुआ। जैसे,—वाङ्मय पाप।

विशेष—वचनो द्वारा किए हुए पाप चार प्रकार के कहे गए हैं—पारुष्य, अनृत, पैशुन्य और असबद्ध प्रलाप।

३. जो पठन पाठन का विषय हो। ४ वाक्पटु। वाक्चतुर [को०]।

वाङ्मय'—सज्ञा पु० १ गद्य पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन पाठन का विषय हो। साहित्य। उ०—इस्लाम के प्रवेश ने भारतवर्ष की ललित कलाओ तथा वाङ्मय के क्षेत्रो पर अपना विशेष प्रभाव डाला।—अकबरी० (भू०) पृ० २। २. वाक्पटुता। वाग्मिता (को०)। ३. अलकारशास्त्र। साहित्यशास्त्र (को०)।

वाङ्मयी—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वाङ्मुख—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का गद्यकाव्य। उपन्यास। २ भूमिका। प्रस्तावना।

वाङ्मूर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वाणी। सरस्वती (को०)।

वाचयम—सज्ञा पु० [स०] १ मुनि। २ मौन व्रत धारण करनेवाला पुरुष। मौनी।

वाच्—सज्ञा स्त्री० [स०] वाचा। वाणी। वाक्य।

वाच¹—सज्ञा स्त्री० [स० वाच्] दे० 'वाच्'। उ०—काय मन वाच सब धर्म करिवो करै।—केशव (शब्द०)।

वाच²—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक प्रकार की मछली। २. मदन नाम का एक पौधा (को०)।

वाँच—सज्ञा स्त्री० [अं०] जेब मे रखने की या कलाई पर बाँधने की छोटी घडी।

वाचक¹—वि० (स०) १ बतानेवाला। कहनेवाला। द्योतक। सूचक। बोधक। जैसे—उपमावाचक शब्द, लिंगवाचक प्रत्यय। २. मौखिक। शाब्दिक (को०)।

वाचक²—सज्ञा पु० १ वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो। नाम। सज्ञा। सकेत। २ वक्ता। ३ पाठक (को०)। ४. दूत। सदेशवाहक (को०)।

वाचकत्व—सज्ञा पु० [स०] सूचकत्व। वाचक होने का भाव। बोधकत्व। उ०—मेरी समझ मे रसास्वादन का प्रकृत स्वरूप आनद शब्द से व्यक्त नही होता। लोकोत्तर, अनिर्वचनीय आदि विशेषणो से न तो उसके वाचकत्व का परिहार होता है, न प्रयोग का प्रायश्चित्त होता है —आचार्य०, पृ० ४।

वाचकता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाचकत्व'।

वाचकधर्मलुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] वह उपमा जिसमे वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो, जैसे ईस प्रसाद असास तुम्हारी। सब सुनबधू देवसरि बारी।—तुलसी। यहाँ उपमान और उपमेय तो है पर उपमावाचक शब्द और साधारण धर्म नही है।

वाचकपद—सज्ञा पु० [स०] बोधक पद या शब्द (को०)।

वाचकलुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का उपमालकार जिसमे उपमावाचक शब्द का लोप होता है। जैसे,—नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन।—तुलसी (शब्द)।

वाचकोपमानधर्मलुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] वह उपमा जिसमे वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनो लुप्त हो केवल उपमेय भर हो। जैसे,—जेहि वर बाजि राम असवारा। तेहि सारदौ न बरनै पारा।—तुलसी।

वाचकोपमानलुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] उपमालकार का एक भेद जिसमे वाचक और उपमान का लोप होता है। यथा,—तेरे ये कटु वचन हैं सुनत हियो हरखात।

वाचकोपमेयलुप्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] उपमालकार का एक भेद जिसमे वाचक और उपमेय का लोप होता है। जैसे,—अटा उदय होतै भयो छबिधर पूरन चद।

वाचक्नवी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वचक्नु ऋषि की अपत्या। गार्गी। वाचकूटी।

वाचन—सज्ञा पु० [स०] पढना या उच्चारण करना। पठन। बाँचना। २ कहना। बताना। ३ प्रतिपादन।

वाचनक—सज्ञा पु० [स०] १ पहेली। २ एक प्रकार की मिठाई (को०)।

वाचना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पाठ। २ पाठ का अश। ३ अध्याय। परिच्छेद (को०)।

वाचनालय—सज्ञा पुं० [स०] वह कमरा या भवन जहाँ पुस्तकें और समाचारपत्र आदि पढने को मिलते हो। (अं०) रीडिंग रूम।

वाचनिक—वि० [स०] १ वचन सबधी। मौखिक। शब्दो द्वारा व्यक्त २ वाचन करनेवाला (को०)।

वाचयिता—वि० [स० वाचयितृ] १ वाचक। बाँचनेवाला। २ पाठ करानेवाला। पाठसचालक (को०)।

वाचसपति—सज्ञा पु० [स० वाचस्पति] बृहस्पति।—(सोम, ब्रह्मा, प्रजापति, विश्वकर्मा आदि के लिये भी प्रयुक्त।)

वाचस्पति—सज्ञा पु० [स०] १ बृहस्पति। २ शब्द प्रतिपालक। ३ पुष्य नक्षत्र (को०)। ४. सुवक्ता (को०)। एक कोशकार (को०)। ६. एक ऋषि का नाम (को०)। ७ एक दार्शनिक का नाम (को०)। ८ वेद (को०)।

वाचस्पत्य¹—सज्ञा पुं० [स०] १ भाषणकुशलता। २ उत्तम वक्तव्य। ३ सस्कृत का एक कोशग्रथ (को०)।

वाचस्पत्य²—वि० १ वाचस्पति सबधी। २ बृहस्पति द्वारा कथित या उक्त (को०)।

वाचा¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वाणी। सरस्वती। २. वाक्य। वचन। शब्द। ३. सूक्त। ऋचा (को०)। ४ शपथ। कसम (को०)।

वाचा²—वि० वचन द्वारा। वचन या कथन से।

वाचाट—वि० [स०] १. वाचाल। २ बकवी। बकवादी।

वाचापत्र—सज्ञा पु० [स०] प्रतिज्ञापत्र।

वाचाबध—वि० [स० वाचाबद्ध]। प्रतिज्ञाबद्ध। वचनबद्ध। उ०—वाचाबध कस कार छाँड्या तब वसुदेव पतीज हा। याक गर्भ अवतरे जे सुत सावधान ह्वै लाज हा।—सूर (शब्द०)।

वाचाबधन—सज्ञा पु० [स० वाचाबन्धन] प्रतिज्ञाबद्ध होना।

वाचाबद्ध—सज्ञा पु० [स०] वादे मे बँधा हुआ। वचन देने के कारण विवश। प्रतिज्ञाबद्ध।

वाचाल—वि० [स०] १. बोलने मे तेज। वाक्पटु। २ बकवादी। व्यर्थ बकनेवाला।

वाचालता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बहुभाषिता। बहुत बोलना। २. बातचीत मे निपुणता।

वाचासहाय—सज्ञा पु० [स०] वह जो वाणी द्वारा सहायक हो, मित्र। मधुरभाषी सखा (को०)।

वाचिक¹—वि० [स०] [वि० स्त्री० वाचिका, वाचिकी] १ वाणी सबधी। २. वाणी से किया हुआ। ३ सकेत से कहा हुआ।

वाचिक[2]—सज्ञा पु० अभिनय का एक भेद जिसमें केवल वाक्यविन्यास द्वारा अभिनय का कार्य सपन्न होता है।

यौ० वाचिकपत्र—(१) प्रतिज्ञापत्र। (२) समाचारपत्र। (३) चिट्ठी। पत्र। वाचिकहारक = सदेशहारक। दूत।

वाची—वि० [स० वाचिन्] १ वाक्ययुक्त। २ प्रकट करनेवाला। बोध करानेवाला। सूचक।

विशेष—यह शब्द समास मे समस्त पद के अत मे आने से वाचक और विधायक का अर्थ देता है। जैसे,—पुरुषवाची = पुरुषवाचक।

वाचोयुक्ति[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदर भाषण। २ वक्तव्य [को०]।

वाचोयुक्ति[2]—वि० भाषणपटु। वक्तव्य मे निपुण [को०]।

वाचोयुक्तिपटु—स० [स०] वाग्मी [को०]।

वाच्य[1]—वि० [स०] १ कहने योग्य। जो कथन मे आवे। २ शब्द-सकेत द्वारा जिसका बोध हो। अभिधा द्वारा जिसका बोध हो। अभिधेय।

विशेष—जिस शब्द द्वारा बोध होता है, उसे 'वाचक' कहते हैं, और जिस वस्तु या अर्थ का बोध होता है, उसे 'वाच्य' कहते ह।

३ जिसे लोग भला बुरा कहे। कुत्सित। हीन।

वाच्य[2]—सज्ञा पु० १ अभिधेयार्थ। वाच्यार्थ। शब्दयोजना से प्राप्त अर्थ। व्यग्य का उलटा। विशेष दे० 'वाच्यार्थ'। उ०—एक मे भाव वाच्य द्वारा प्रकट किया गया, दूसरे मे अलकार रूप व्यंग्य द्वारा।—रस०, पृ० १२३। ४ प्रतिपादन।

वाच्यचित्र—सज्ञा पु० [स०] निम्न कोटि का काव्य [को०]।

वाच्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वाच्य होने का भाव। २ कुत्सा। निंदा। अपयश [को०]।

वाच्यत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वाच्यता' [को०]।

वाच्यार्थ—सज्ञा पुं० [स०] वह अभिप्राय जो शब्दो के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। सकेत रूप से स्थिर शब्दो का नियत अर्थ। मूल शब्दार्थ।

विशेष—अभिधा, लक्षणा और व्यजना ये तीन शक्तियाँ शब्द की माना जाती हैं। इनमे से प्रथम के सिवा और सब का आधार 'अभिधा' है, जो शब्दसकेत मे नियत अर्थ का बोध कराती है। जैसे,—'कुता' और 'इमली' कहने से पशुविशेष और वृक्षविशेष का ही बोध होता है। इस प्रकार का मूल अर्थ वाच्यार्थ कहलाता है। विशेष दे० 'शब्दशक्ति'।

वाच्यावाच्य—सज्ञा पु० [स०] भली बुरी या कहने न कहने योग्य बात। जैसे,—उसे वाच्यावाच्य का विचार नही है।

वाछोⓊ†—सज्ञा पु० [स० वत्सक, प्रा० वच्छअ, वच्छय] दे० 'वत्स'। उ०—पाँच कोपर चरावे। चित सौ वाछा राखीला।—दक्खिनी०, पृ० ३३।

वाजतीⓊ—वि० [हिं० बाजना, बजना] बजती हुई। उ०—बोली वीणा हस गत, पग वाजती पाल। रायजादी घर अगणइ छुटे पटे छछाल।—ढोला०, दू०, ५४०।

वाज[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ घृत। घी। २ यज्ञ। ३. अन्न। ४ जल। ५ सग्राम। युद्ध। ६ बल। ७ बाण मे वा पख जो पीछे लगा रहता है। ८ पलक। निमेष। ९. वेग। उ०—अबलबत, रव, जव, चपल, रहसि, रय, त्वर, वाज। सहसा, सत्वर, रभ, तुरा, तुरन वेग के साज।—नद० ग्र०, पृ० १०७। १० मुनि। ११. शब्द। आवाज। १२ श्राद्ध मे दिया जानेवाला चावल का पिंड (को०)। १३ पख। पर (को०)। १४ चैत्र मास का एक नाम (को०)। १५ यज्ञ के अत मे पढा जानेवाला एक मत्र (को०)। १६ प्रतियोगिता मे प्राप्त पुरस्कार (को०)। १७ तीव्र गतिवाला घोडा (को०)। १७. तीन ऋतुओ मे से एक ऋतु (को०)। १८. प्राप्ति। लाभ (को०)।

वाज[2]—सज्ञा पु० [अ० वाज] १. उपदेश। शिक्षा। २. धार्मिक व्याख्यान। ३. धार्मिक उपदेश। कथा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

वाजकर्मा—वि० [सं० वाजकर्मन्] युद्ध मे सलग्न [को०]।

वाजकृत्य—सज्ञा पु० [स०] लडाई [को०]।

वाजगध्य—वि० [स० वाजगन्ध्य] जिसके पास गाडी भर धन या लूट का माल हो। [को०]।

वाजजित्—वि० [स०] प्रतियोगिता या युद्ध मे विजयी होनेवाला [को०]।

वाजदा—वि० [स०] वाज अर्थात् बल या वेग प्रदान करनेवाली [को०]।

वाजदावर्पा—सज्ञा पु० [स० वाजदावर्पस्] एक साम का नाम।

वाजदावा—वि० [स० वाजदावन्] धनद्रव्य, इनाम आदि देनेवाला [को०]।

वाजनाⓊ†—क्रि० अ० [हिं०] बजना। ध्वनित होना।

वाजपति—सज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि। २ अन्नपति।

वाजपेईⓊ—सज्ञा पु० [स० वाजपेयिन्, वाजपेयी] दे० 'वाजपेयी'। उ०—व्याध अपराध की साध राखी कौन, पिंगलै कौन मति भक्तभेई। कौन धौं सामजाजी अजामिल अधम कौन गजराज धौं वाजपेई ? - तुलसी (शब्द०)।

वाजपेय—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञो मे पाचवाँ है।

वाजपेयक—वि० [स०] वाजपेय यज्ञ सबधी [को०]।

वाजपेयी—सज्ञा पुं० [सं० वाजपेयिन्] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणो का एक उपाधि जो कान्यकुब्जो मे होती है। ३. अत्यत कुलीन पुरुष। जैसे,—वे कौन बड़े भारी वाजपेयी हैं।

वाजप्य—सज्ञा पुं० [स०] एक गोत्रकार ऋषि। इनके गोत्र के लोग वाजप्यायन कहलाते हैं।

वाजबी—वि० [फा० वाजिबी] दे० 'वाजिबी'।

वाजभर्मीय—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

वाजभृत—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम।

वाजभोजी—सज्ञा पुं० [स० वाजभोजिन्] वाजपेय यज्ञ [को०]।

वाजयु—वि० [स०] १. युद्ध या प्रतियोगिता के लिये इच्छुक। २ तेजस्वी। शक्तिशाली। ३ उत्साही। ४. धन देनेवाला [को०]।

वाजवत—सज्ञा पु० [स०] [अपत्य वाजवतायनि] एक गोत्रकार ऋषि, जिनके गोत्र के लोग 'वाजवतायनि' कहलाते हैं।

वाजवाल—सज्ञा पु० [सं०] मरकत [को०]।

वाजश्रव—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि का नाम।

वाजश्रवस—सज्ञा पु० [स०] १ वाजश्रवा ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष। २ एक ऋषि जिनके पुत्र का नाम 'नचिकेता' था और जो अपने पिता के क्रुद्ध होने पर यमराज के यहाँ चला गया था। वहाँ उसने उनसे ज्ञान प्राप्त किया था।

वाजश्रवा—सज्ञा पुं० [स० वाजश्रवस्] १ अग्नि। २ एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

वाजस—सज्ञा पु० [स०] एक साम ? का नाम।

वाजसन—सज्ञा पु० [स०] १. शिव। २. विष्णु [को०]।

वाजसनि—सज्ञा पु० [स०] १. सूर्य। २ अन्नदाता (को०)।

वाजसनेय—सज्ञा पु० [स०] १. यजुर्वेद की एक शाखा का नाम।

विशेष—इसे याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशपायन पर क्रुद्ध होकर उनकी पढाई हुई विद्या उगलने पर सूर्य के तप से प्राप्त की थी। मत्स्य पुराण के अनुसार वैशंपायन के शाप से वाजसनेय शाखा नष्ट हो गई। पर आजकल शुक्ल यजुर्वेद की जो सहिता मिलती है, वह वाजसनेय सहिता कहलाती है। यजुर्वेद के दो पाठ है शुक्ल और कृष्ण। शुक्ल मे १५ शाखा है, कराव, माध्यदिन; जावाल, बुधेय, शाकेय, तापनीय, कापीस, पौंड्रवहा, आवर्त्तिक, परमावर्त्तिक, पाराशरीय, वैनेय, बौधेय, औधेय और गालव। यह सब एकत्रित होकर वाजसनेयी शाखा भी कहलाती हैं।

२ याज्ञवल्क्य ऋषि जो सूर्य के छात्र थे।

वाजसनेयक—वि० [स०] १. वाजसनेय सबधी। २ याज्ञवल्क्य द्वारा रचित [को०]।

वाजसनेयी[1]—सज्ञा पुं० [स० वाजसनेयिन्] १ वाजसनेय शाखा के प्रवर्तक याज्ञवल्क्य। २ इस शाखा के अनुयायी लोग [को०]।

वाजसनेयी[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] शुक्ल यजुर्वेद की पद्रहो शाखाओ का नाम।—प्रा० भा० प०, पृ० १८२।

वाजसाम—सज्ञा पु० [स० वाजसामन्] एक साम का नाम।

वाजस्रजाक्ष—सज्ञा पु० [स०] वेण राजा का नाम।

वाजा(पु)[1]—सज्ञा, पु० [स० वाद्य] दे० 'बाजा'। उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजा रग। जिण वाटइ सज्जण गया, सा वाटडी सुरग।—ढोला०, दू० ३५६।

वाजिगधा—सज्ञा स्त्री० [स० वाजिगन्धा] अश्वगधा। असगध।

वाजित—वि० [सं०] वाज युक्त। पखोवाला। जैसे, वाण [को०]।

वाजित्र—सज्ञा पु० [स० वादित्र] बाजा। वाद्य। वाद्ययत्र। उ०—हुई सोपारी मनि हरष्यो छइ राव। वाजित्र बाजइ नीसाँणो घाव।—वी० रासो, पृ० ६।

वाजिदंत, वाजिदंतक—सज्ञा पुं० [स० वाजिदन्त, वाजिदन्तक] वासक। अडूसा।

वाजिन—सज्ञा पुं० [स०] १ शक्ति (वेद)। २ सघर्ष। होड। ३. उलझन। ४ छेने का पानी [को०]।

वाजिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ घोडी। २ अश्वगधा। असगध। ३ उषा (को०)। ४ अन्न (वेद)।

वाजिब—वि० [अ०] उचित। ठीक। मुनासिब। उ०—वाकिफ हो सो गमि लहै, वाजिब सखुन अजूब।—कबीर० श०, पृ० ३०।

वाजिबी—वि० [अ०] उचित। ठीक। मुनासिब।

मुहा०—वाजिबी बात = ठीक बात। यथार्थ या सच्ची बात। वाजिबी खर्च = आवश्यक खर्च।

वाजिबुल्अदा[1]—वि० [अ०] (रकम या धन) जिसके देने का समय आ गया हो। (वह रकम) जिसका दे देना उचित हो, या जिसे देने का समय पूरा हो गया हो।

वाजिबुल् अदा[2]—सज्ञा पु० ऐसा धन या रकम जिसे देने का समय पूरा हो चुका हो।

वाजिबुल् अर्ज—सज्ञा पु० [अ० वाजिबुल अर्ज] वह शर्त जो कानूनी बदोबस्त के समय जमीदारो और काश्तकारो के बीच गाँव के रिवाज आदि के सबध मे लिखी जाती है।

वाजिबुल् वसूल[1]—वि० [अ०] (धन) जिसके वसूल करने का वक्त आ गया हो।

वाजिबुल् वसूल[2]—सज्ञा पु० ऐसा धन या रकम जिसे वसूल करना उचित हो।

वाजिपृष्ठ—सज्ञा पु० [स०] अम्लान वृक्ष। दे० 'अम्लान' [को०]।

वाजिभ—सज्ञा पुं० [पुं०] अश्विनी नक्षत्र।

वाजिभक्ष—सज्ञा पुं० [स०] चना। चणक [को०]।

वाजिभोजन—सज्ञा पुं० [सं०] मूँग। मुद्ग।

वाजिमान्—सज्ञा पुं० [सं० वाजिमत्] परवल। पटोल [को०]।

वाजिमेध—सज्ञा पु० [स०] एक यज्ञ। अश्वमेध।

वाजियोजक—सज्ञा पु० [स०] सारथी। साईस [को०]।

वाजिराज—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ उच्चैश्रवा।

वाजिविष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] वट का वृक्ष। बरगद [को०]।

वाजिशत्रु—सज्ञा पुं० [स०] अश्वमार। कनेर का पेड।

वाजिशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] मदुरा। अस्तबल। घुडसाल [को०]।

वाजिशिरा—सज्ञा पुं० [स० वाजिशिरस्] १ भगवान् के एक अवतार का नाम। २ एक दानव का नाम।

वाजी[1]—सज्ञा पुं० [स० वाजिन्] १ घोडा। २. वासक। अडूसा। ३ फटे हुए दूध का पानी।

विशेष—वैद्यक मे इसे रुचिकर तथा तृष्णा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर का नाशक लिखा है।

४ हवि। ५. बाण। तीर (को०)। ६ वह जो वाजसनेयी शाखा का अनुयायी हो (को०)। ७. आदित्य। सूर्य (को०)। ८. इंद्र।

९ बृहस्पति (को०)। १० पक्षी (को०)। ११. मात की संख्या (को०)। १२ लगाम। वल्गा (को०)।

वाजी—वि० १ तीव्र। वेगयुक्त। तेज। २ सुदृढ। मजबूत। ३ अन्नवाला। जिसके पास अन्न हो। ४ पखोवाला। पक्षयुक्त (को०)।

वाजीकर—वि० [स०] १ कामोद्दीपक। २ शक्तिवर्धक (को०)।

वाजीकरण—संज्ञा पु० [स०] वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य मे वीर्य, स्तंभनशक्ति और पुंस्त्व की वृद्धि हो। उ०—जिस औषध से स्त्री विषये अभिलाषा उत्पन्न हो और धातु बढे तिसको वाजीकरण कहते हैं।—शार्ङ्गधर०, पृ० ३९।

विशेष—जिस प्रयोग से मनुष्य अश्व के समान रतिशक्तिवाला हो, उसे वाजीकरण कहते हैं। मनुष्य मे जब वीर्य की अल्पता होती है, तब वाजीकरण औषधो का व्यवहार किया जाता है। साधारणत घी, दूध, मास आदि पदार्थ वीर्यवर्द्धक होते है। पर आयुर्वेद मे वाजीकरण पर एक अलग प्रकरण रहता है, जिसमे अनेक प्रकार की काष्ठौषधो और रसौषधो की व्यवस्था रहती है।

वाजीत्र—संज्ञा पुं० [सं० वादित्र] बाजा। वाद्ययंत्र। उ०—मोती चउक पुरावीया, वाजीत्र वाजै घुरइ निसाण।—बी० रासो, पृ० २२।

वाजूँ—वि० [अ० व जूँ] अधोमुख। उलटा।

वाजे—वि० [अ० वाजेअ] १ रखने या धर देनेवाला। बजा करनेवाला। २ रचनेवाला बनानेवाला (को०)।

वाट—संज्ञा पु० [स०] १ मार्ग। रास्ता। उ०—जिण वाटइ सज्जण गया सा वाटडी सुरग।—ढोला०, दू० ३१६। २ वास्तु। इमारत। ३ मडप। ४ आवृत स्थान। घेरेदार जगह (को०)। ५ उद्यान। उपवन (को०)। ६ एक अन्न (को०)। ७ तट पर लगाया हुआ लकडी का बाँध (को०)। ८ उरुसधि। वक्षण (को०)। ९ प्रांत। प्रदेश (को०)।

वाटक—संज्ञा पु० [स०] १ उद्यान। उपवन। २ घेरा। बाड। दे० 'वाट' (को०)।

वाटडी—संज्ञा स्त्री० [स०] वाट+(राज०) डी (प्रत्य०) मार्ग। राह। पथ। उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारग। जिण वाइट सज्जण गया सा वाटडी सुरग।—ढोला०, दू० ३५६

वाटधान—संज्ञा पु० [स०] १ एक जनपद जो काश्मीर के नैऋत्य कोण मे कहा गया है। नकुल के दिग्विजय मे इसे पश्चिम मे और मत्स्यपुराण मे उत्तर दिशा मे लिखा है। २ स्मृति के अनुसार ब्राह्मणी माता और वर्ण ब्राह्मण या कर्महीन ब्राह्मण से उत्पन्न एक संकर जाति। ३ वह सैन्याधिकारी जो अपनी सेना की प्रकृति एव प्रवृत्ति से परिचित हो (को०)। ४ भूस्वामी। जमींदार (को०)।

वाटर—संज्ञा पु० [अ०] पानी।

यौ०—वाटरकलर=(१) एक प्रकार का रग। (२) इस रग से बना चित्र। वाटर पेंटिंग=वाटरकलर से चित्र बनाना। वाटरपोलो=एक खेल का नाम। वाटरप्रूफ। वाटर मार्क=(१) जल की गहराई का सूचक चिह्न। (२) कागज पर छपा विशेष प्रकार का चिह्न आदि जो प्रकाश के सामने करने पर दिखाई पडता है, जैसे मुद्राविनिमय के नोटो आदि पर रहता है। वाटर वर्क्स। वाटरशूट। साडावाटर आदि।

वाटरप्रूफ—वि० [अ०] जिसपर पानी का प्रभाव न पडे। जो पानी मे न भीग सके। जैसे, वाटरप्रूफ कपडा।

वाटरवर्क्स—संज्ञा पु० [अ०] १ नगर मे पानी पहुँचाने का विभाग। पानी पहुँचाने का कल का कार्यालय। २ पानी पहुँचाने की कल। जलकल।

वाटरशूट—संज्ञा स्त्री० [अ०] पानी मे कूदकर तैरने की क्रीडा। जलक्रीडा।

वाटली[१]—संज्ञा स्त्री० [स० वर्तुली, प्रा० वट्टुली, राज०, वाटला, अथवा दश० वट्टु या वट्ट, गुज० वाटको०] पात्र। छोटी कटोरी। उ०—माती जडी म हाथि, नुरह सुगधी वाटली। सूती माँझिम राति, जागूँ ढोलू जागली।—ढोला० दू०, ५०५।

वाटशृखला—संज्ञा स्त्री० [स० वाट शृङ्खला] वह शृखला या जजीर जिससे कोई स्थान घेर दिया गया हो (को०)।

वाटि[१]—संज्ञा स्त्री० [स०] घिरा हुआ भूभाग (को०)।

वाटि[२]—संज्ञा स्त्री० [स० वर्ति, प्रा० वट्टि, राज० वाटि] दे० 'बत्ती'। उ०—ढोला माखडी मुई, मइँ गारडी न लव्व। दीवा केरी वाटि जिम, खोडी खोडी दव्व।—ढोला०, दू० ६०९।

वाटिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वास्तु। इमारत। २ बाग। बगीचा। ३ हिंगुपत्री। ४ पर्णशाला। कुटीर (को०)। ५ अतिबला। बरियारा (को०)।

वाटिदीर्घ—संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वाटिदीर्घा] सरपत। एक प्रकार का लबी घास (को०)।

वाटी—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वास्तु। इमारत। घर। २ वह भूभाग जहाँ कोई घर बनाया गया हो (को०)। ३ अहाता। बाडा (को०)। ४ उद्यान। उपवन (को०)। ५ सडक। रथ्या (को०)। ६ जाँघ का जोड। उरुसधि (को०)। ७ एक प्रकार का अन्न (को०)। ८ अतिबला। बरियारा (को०)।

वाट्क—संज्ञा पु० [स०] भुना हुआ जौ। बहुरी।

वाट्य[१]—संज्ञा पु० [स०] १ बना। बरियारा। खिरैटी। २ भुना हुआ जौ।

वाट्य[२]—वि० १ उपवन। २ वट्काष्ठ का बना हुआ। वट निर्मित (को०)।

वाट्यपुष्प—संज्ञा पु० [स०] १ चदन। २ कुकुम।

वाट्यपुष्पी—संज्ञा स्त्री [स०] अतिबला। बरियारा

वाट्यमड—संज्ञा पुं० [स० वाट्यमण्ड] बिना भूसी या छिलके के भुने हुए और दले हुए जौ का माड।

विशेष—एक भाग दले हुए जौ को चौगुने पानी मे पकाने से वाट्यमड बनता है। वैद्यक मे यह हल्का, रुचिकर, दीपन, हृद्य तथा पित्त, श्लेष्मा, वायु और दाहनाशक कहा गया है।

वाट्या—सज्ञा स्त्री० [स०] बरियारा। बीजबद।

वाट्याल—सज्ञा पुं० [स०] बरियारा। बीजबद।

वाट्यालक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वाट्याल'।

वाट्यालिका, वाट्याली—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा बरियारा।

वाड—सज्ञा पु० [स०] घेरा। बाड। वेष्टन [को०]।

वाड़ी—सज्ञा स्त्री० [स० वाड] दे० 'बाड'। उ०—सील सतोष की वाड करायलो गुरु शब्द रखवारी।—राम० धर्म०, पृ० ४२।

वाडव[1] सज्ञा पुं० [स० वाडव] १ दे० 'बाडव'[1]। २ ब्राह्मण (को०)। ३ एक वैयाकरण का नाम (को०)। ५. वडवा का समूह। अश्वसमूह (को०)। ६ एक मुहूर्त का नाम (को०)। ७ एक रतिबध। ८ पाताल (को०)।

वाडव[2]—वि० दे० 'बाडव'[2]।

वाडवहरण—सज्ञा पुं० [स०] घोडो का चारा। घोडे को दिया जानेवाला चारा, दाना, घास आदि [को०]।

वाडवहारक—सज्ञा पु० [स०] एक समुद्री जतु [को०]।

वाड़वाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स० वाडवाग्नि] १ समुद्र के अदर की आग। २ समुद्री आग। वह आग जो समुद्र मे दिखाई देती है।

वाडवानल—सज्ञा पु० स० वाडवानल] बडवानल। दे० वाडवाग्नि [को०]।

वाडवेय—सज्ञा पु० [स०] १. अश्विनीकुमार। २ ब्राह्मण। ३ अश्व। घोडा। ४ साँड [को०]।

वाडव्य—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण समुदाय [को०]।

वाढ—वि० [स०] दे० 'बाढ'[1] [को०]।

वाढम्—अव्य० [स०] अलम्। बस। काफी है। बहुत हो चुका।

वाण—सज्ञा पु० [स०] धारदार फल लगा हुआ छडी के आकार का छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खीचकर छोडा जाता है। तीर।

विशेष—बृहत् शार्ङ्गधर मे धनुष और बाण बनाने के सबध मे बहुत से नियम दिए गए है। उसमे लिखा है कि बाण या तीर का फल शुद्ध लोह का होना चाहिए। फल कई आकार के बनाए जाते थे, जैसे,—आरामुख, क्षुरप्र, गोपुच्छ, अधचद्र, सूचीमुख, भल्ल, वत्सदन, द्विभल्ल, कर्णक और काकतुड। ये सब भिन्न भिन्न कामो के लिये होते थे। जसे,—आरामुख बाण वर्म (बकतर) भेदने के लिये, अधचद्र सिर काटने के लिये, आरामुख और सूचीमुख ढाल छेदने के लिये, क्षुरप्र धनुष काटने के लिये, भल्ल हृदय भेदने के लिये, द्विभल्ल धनुष की डोरी काटने के लिये, आदि। बाण के फल पर अच्छी जिला होनी चाहिए। पीपल, सेंधा नमक और गुड को गोमूत्र मे पासकर फल पर लेप करे, फिर फल को अग्नि मे तपाकर तेल मे बुझावे, तो अच्छी जिला होगी। शर कैसा होना चाहिए, इसके सबध मे भी बहुत सी बातें है। बाण ठीक सीधा जाय, रास्ते मे इधर उधर न हो, इसके लिये पिछले भाग मे कुछ दूर तक कौवे, हस, बगले, गीध और मयूर आदि किसी पक्षी के पर लगाने चाहिए। विशेष विवरण के लिये देखिए 'धनुर्वेद' और 'बाण' शब्द।

वाणावली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बाणो की अवली। तीरो की कतार। तीरो की लगातार वर्षा। २ एक साथ बने हुए पाँच श्लोक। श्लोको का पचक।

वाणि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बुनना (कपडा आदि)। २ करगह। करघा। ३ सरस्वती। ४ बादल। ५ मूल्य। कीमत। ६. शब्द। वाणी [को०]।

वाणिज—सज्ञा पु० [स०] १ वणिक। २ बडवानल। ३. तुला राशि का चिह्न (को०)।

वाणिजक—सज्ञा पु० [स०] वणिक्। व्यापारी।

वाणिजिक—सज्ञा पु० [स०] १ वणिक्। व्यापारी। २. धूर्त। ठग। ३ बडवानल [को०]।

वाणिज्य—सज्ञा पु० [स०] व्यापार। वाणिज्य।

वाणिज्यक—सज्ञा पु० [स०] व्यापारी [को०]।

वाणिज्य दूत—सज्ञा पु० [स०] वह मनुष्य जो किसी स्वाधीन राज्य या देश के प्रतिनिधि रूप मे दूसरे देश मे रहता और अपने देश के व्यापारिक स्वार्थो की रक्षा करता हो। कान्सल। उ०—दोनो सरकार महावाणिज्य दूतो, वाणिज्य दूतो, उपवाणिज्य दूतो, तथा अन्य वाणिज्य दूताभिकर्ताओ की नियुक्ति के लिये समत हैं।—नेपाल०, पृ० २५६।

वाणिज्या—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाणिज्य' [को०]।

वाणिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्त [को०]।

वाणिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नर्तकी। २ मत्त। ३ शृगार-प्रिय और स्वेच्छाचारिणी औरत (लाक्ष०)। ४ एक वर्णवृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण मे १६ वर्ण अर्थात् क्रमानुसार नगण, जगण, भगण, फिर जगण और अत मे रगण और गुरु होता है।

वाणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १, सरस्वती। २ मुह मे निकले हुए सार्थक शब्द। वचन। उ०—इसमे भी मन और भाव है किंतु नही वैसी वाणी।—पचवटी, पृ० ६।

मुहा०—वाणी फुरना = मुँह से शब्द निकलना।

३ वाक्शक्ति। उ०—इतनी कहत गरुड पर चढिकै तुरतहि मधुवन आए। कबु कपोल परसि बालक के वाणी प्रगट कराए।—सूर (शब्द०)। ४ वागिंद्रिय। जीभ। रसना। उ०—नैन निरखि चक्रित ह्वै गए। मन वाणी दोऊ थकि रए।—सूर (शब्द०)। ५ स्वर। ६ साहित्यिक रचना या कृति। ग्रथ (को०)। ७ प्रशसा। स्तवन। स्तुति (को०)। ८ एक छद (को०)। ९ बुनाई [को०]।

वाणीवाद—सज्ञा पु० [स०] एक पक्षी (को०)।

वाणीमय—वि० [स०] शब्दित। शब्दायमान। ध्वनित। उ०—वाणीमय मरु प्रातर, छई है विपरण लाज।—आराधना, पृ० ३१।

वातड—सज्ञा पु० [स० वातण्ड] एक गोत्रकार ऋषि का नाम, जिनके गोत्रवाले वातड्य कहलाते हैं।

वातड्य—सज्ञा पुं० [स० वातण्ड्य] [स्त्री० वातड्यादिनी] वातड ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष।

वात—सज्ञा पु० [स०] १ वायु। हवा। २ वैद्यक के अनुसार शरीर के अदर की वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

विशेष—शरीर मे इसका स्थान पक्वाशय माना गया है। कहते हैं, शरीर की सब धातुओ और मल आदि का परिचालन इसी से होता है, और श्वास प्रश्वास, चेष्टा, वेग आदि इद्रियो के कार्यो का भी यही मूल है।

३ वायु का देवता। वायु का अधिष्ठाता देवता (को०)। ४ गठिया। सधिवात (को०)। ५ धृष्ट नायक (को०)।

वात[२]—वि० १ बही हुई। २ इच्छित। अभीष्ट। प्रार्थित [को०]।

वातकटक—सज्ञा पु० [स० वातकण्टक] एक प्रकार का वात रोग

विशेष—इसमे पाँव की गाठो मे वायु के घुसने के कारण जोडो मे बडी पीडा होती है। यह रोग ऊँचे नीचे पैर पडने या अधिक परिश्रम करने से हो जाता है।

वातक—सज्ञा पु० [स०] १ अशनपर्णी। २ उपपति। जार (को०)।

वातकपिडक—सज्ञा पुं० [स० वातक पिण्डक] जन्मजात नपुसक [को०]।

वातकर—वि० [स०] वायुकारक। शरीर में वात पैदा करनेवाला।

वातकर्म—सज्ञा पुं० [स० वातकर्मन्] अपानवायु का निकालना। पादना [को०]।

वातकी—वि० [स० वातकिन्] १ वात सबधी। वात दोष से उत्पन्न। उ०—स्वरभेद और सूखी खाँसी उठे ये बातकी खाँसी के लक्षण हैं।—माधव०, पृ० ८६। २ वात रोग का रोगी (को०)।

वातकुडलिका—सज्ञा स्त्री० [स० वातकुण्डलिका] एक प्रकार का मूत्ररोग। उ०—इस दारुण व्याधि को वातकुडलिका रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० १७४।

विशेष—मूत्रकृच्छ्र का रोगी यदि कुपथ्य करके रूखी वस्तुएँ खाता है, तो यह उपद्रव होता है। इस व्याधि मे वायु कुडलाकार होकर पेडू मे घूमता रहता है, रोगी को पेशाब करने मे पीड़ा होती है, और बूँद बूँद करके पेशाब उतरता है।

वातकुडली—सज्ञा स्त्री० [स० वात कुण्डली] एक मूत्ररोग। विशेष दे० 'वातकुडलिका' [को०]।

वातकुभ—सज्ञा पुं० [स० वातकुम्भ] हाथी के माथे का निचला भाग। हाथी का गडस्थल [को०]।

वातकेतु—सज्ञा पुं० [स०] धूल। गर्द।

वातकेलि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुदर आलाप। प्रेमियो की कानाफूसी। २. उपपति के दाँतो या नखो का क्षत।

वातकोपन—वि० [स०] शरीरस्थ वायु को दूषित करनेवाला [को०]।

वातक्षोभ—सज्ञा पु० [स०] शरीरस्थ वायु का दूषित होना [को०]।

वातगड—सज्ञा पु० [स० वातगण्ड] वातज गलगड रोग जिसमे गले की नसें काली या लाल और कडी हो जाती हैं तथा बहुत दिन मे पकती हैं।

वातगज—सज्ञा पु० [स०] तीव्र गति से दौडनेवाला मृग [को०]।

वातगामी—सज्ञा पु० [स० वातगामिन्] पक्षी। विहग [को०]।

वातगुल्म—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गुल्म रोग जो वात के प्रकोप से होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार अधिक भोजन करने, रूखा अन्न खाने, बलवान् से लडने, मल मूत्र रोकने या अधिक विरेचनादि लेने से यह रोग होता है। इसमे गोला सा बँध जाता है, जो इधर से उधर रेंगता सा जान पडता है। कभी कभी बडी पीडा होती है। यह पीडा प्राय भोजन पचने के पीछे खाली पेट होने पर होती है और भोजन करने पर घट जाती है।

२ आँधी। अधड। तूफान (को०)।

वातघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शालपर्णी। २ अश्वगधा। असगध।

वातचक्र—सज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष मे एक योग।

विशेष—आषाढी पूर्णिमा के दिन सूर्यास्त के समय यह योग आता है। उस समय वायु की दिशा द्वारा वर्ष के फलाफल का विचार किया जाता है।

२ अधंवायु। चक्रवात। बवडर।

वातचटक—सज्ञा पु० [स०] तित्तिर। तीतर पक्षी।

वातज[२]—वि० [स०] वायु द्वारा उत्पन्न। वातकृत्।

वातज[२]—सज्ञा पु० उदरव्यथा। उदरशूल। पेट मे उत्पन्न होनेवाली चुभन या पीडा [को०]।

वातजात—सज्ञा पु० [स० वात+जात] पवनसुत। हनुमान। उ०—सहमि सुखात वातजात की सुरति करि लवा ज्यो लुकात तुलसी झपेटे बाज के।—तुलसी (शब्द०)।

वातज्वर—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर।

विशेष—इसमे गला, होठ और मुँह सूखते हैं, नीद नही आती, हिचकी आती है, शरीर रूखा हो जाता है, सिर और देह मे पीडा होती है, मुँह फीका लगता है और मल रुद्ध हो जाता है। यह ज्वर कभी घट और कभी बढ जाता है।

वाततूल—सज्ञा पु० [स०] महीन तागा जो कभी कभी आकाश मे इधर उधर उडता दिखाई पडता है।

विशेष—यह एक प्रकार की बहुत छोटी मकडियो का जाला होता है जिसके सहारे वह एक पेड से दूसरे पेड पर जाया करती हैं। इसी को बुढ़िया का तागा कहते हैं।

पर्या०—वृद्धसूत्रक। इद्रतूल। ग्रावग्राम। वशकफ। मरुध्वज।

वातथुडा,—सज्ञास्त्री० [स०] [अन्य रूप—वातखुडा, वातथूडा, वातहुडा] १ तेज हवा। २ भयकर वातरोगी। ३ एक प्रकार की चेचक की बीमारी। ४ सुदरी स्त्री [को०]।

वातध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। २ धूल (को०)।

वातनाड़ी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नासूर जिसमें वायु के प्रकोप से आँत की जड़ में नासूर हो जाता है। इसमें से रुक रुककर पीड़ा निकला करती है और कुछ रक्त भी पीड़ा होती है।

वातपड़—संज्ञा पुं० [सं० वातपटल] एक प्रकार का नेत्ररोग (को०)।

वातपट—संज्ञा पुं० [सं०] १. पतलून। इजार। २ नाक का पान (को०)।

वातपत्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिना।

वातपर्याय—संज्ञा पुं० [सं०] एक चतुरंग, जिसमें कभी भौं में और कभी आँखें धँसने से बड़ा पीड़ा होती है।

वातपात—संज्ञा पुं० [सं०] वायु का प्रबल वेग या झोंका (को०)।

वातपित्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक तरह का गठिया रोग (को०)।

वातपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. हनुमान। २ भीम। भीमसेन। ३. वंचक। ठग (को०)।

वातपोथ—संज्ञा पुं० [सं०] पतंग।

वातपोथक—संज्ञा पुं० [सं०] पतंग (को०)।

वातप्रकृति—वि० [सं०] जिसकी प्रकृति वायुप्रधान हो।

वातप्रकोप—संज्ञा पुं० [सं०] वायु का बढ़ जाना। वायु की अधिकता।

विशेष—इसमें अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातप्रगी—संज्ञा पुं०,स्त्री० [सं०] १ मृग। हिरन। २ नकुल। नेवला। ३ घोड़ा।

वातप्रमेह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रमेह। उ०—उदावर्त,... शोष सूखी खाँसी, श्वास ये वातप्रमेह के उपद्रव हैं।—माधव०, पृ० १८५।

वातप्रवाहिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अतिसार रोग (को०)।

वातप्रशमिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मालकँगनी।

वातफुल्लास—संज्ञा पुं० [सं० वातफुल्लास] १ वायु के कारण आँतों का फूलना। २ पुफ्फुस (को०)।

वातमंडली—संज्ञा स्त्री० [सं० वातमण्डली] वात्याचक्र। बवंडर (को०)।

वातमज—संज्ञा पुं० [सं०] जिसका डील हलका हो, ऊपर मुँह करके दौड़नेवाला मृग। वातमृग।

वातमार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वायुपथ। आकाश (को०)।

वातमृग—संज्ञा पुं० [सं०] जिसका डील हलका हो, ऊपर मुँह करके दौड़नेवाला मृग। वातमृग।

वातरंग—संज्ञा पुं० [सं० वातरङ्ग] चंदन वृक्ष। पीतन।

वातर—वि० [सं०] १. फुर्तीला। फुर्तीबाज। २. तेज। चुस्त (को०)।

वातरक्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जिसमें दूषित और अनुपयोगी रक्त शरीर में रक्तवाहिनी नसों में जाता है।

विशेष—इसमें पैर के अँगूठे या एड़ी पर छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं, जलराशि सा पड़ जाता है और शरीर दुबला होता जाता है।

वातरक्तघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] गुडूची नाम की लता (को०)।

वातरक्तारि—संज्ञा पुं० [सं०] विलायती मदार (को०)।

वातरथ—संज्ञा पुं० [सं०] मेघ।

वातरायण—संज्ञा पुं० [सं०] १. निष्प्रयोजन भ्रमण। निकम्मा आवारगी। २. बाँस। ३. रास्ता। मार्ग। ४ दूत। हरकारा। ५. बाँस का पेड़। वंश वृक्ष। ६. उन्मत्त पुरुष। ७ साधु। ८ वातरोग की दवा। तीन या सात दिन तक पहनने की धोती (को०)।

वातरूप—संज्ञा पुं० [सं०] १ ईश्वर। २ वायुरूप। भूत। हवा। ३ तूफान। प्रचंड हवा। आँधी (को०)।

वातरोग—संज्ञा पुं० [सं०] वात से उत्पन्न रोग। गठिया आदि (को०)।

वातरोहिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी की जाँघ पर चारों ओर फोड़े के समान गोल उभार होता है और उसका गला रुक सा जाता है। इसमें रोगी को बड़ा कष्ट होता है।

वातर्द्धि—संज्ञा पुं० [सं०] काठ और लोहे का बना हुआ पाश।

वातल'—संज्ञा पुं० [सं०] १ चना। २ वायु। हवा (को०)।

वातल'—वि० १ वायुकारक। वायुवर्धक। २ सूजनी। हवा भरा (को०)। ३. हवा से फूला हुआ (को०)।

यौ०—वातलमटरी = बवंडर। वात्याचक्र। वातलरोग = वायु का दूषित होना।

वातवलासक ज्वर—संज्ञा पुं०[सं०] एक प्रकार का ज्वर। उ०—इस रोग में अंग जकड़ जाते, कफ विशेष होता, यह ज्वर वात और कफ से होता है इसको वातवलासक ज्वर कहते हैं।—माधव०, पृ० ३३।

वातवसन—संज्ञा पुं० [सं०] पतलून। पाजामा। उ०—तीसरा नीला वातवसन, दुर्गति है नीला की।—अपरा, पृ० ९८।

वातवस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूत्रनिरोध (को०)।

वात विलोड़ित—वि० [सं०] हवा से मथा हुआ। वायुमथित। उ०—वात विलोड़ित जलप्रवाह में झाग और बुदबुदों का आभास मिलता है।—रस०, पृ० १७।

वातवृद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] अपचन की सूजन। अंडवृद्धि। [वै०]।

वातवैरी—संज्ञा पुं० [सं० वातवैरिन्] १ वातारि। २. अरंड। रेंड वृक्ष (को०)।

वातव्याधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] गठिया।

वातशीर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ पर्वत। पहाड़। २ सिरसाली।

वातशूल—संज्ञा पुं० [सं०] वायुविकारजन्य शूल। वायु के विकार से होनेवाली पीड़ा [वै०]।

वातशोणित—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वातरक्त' [वै०]।

वातश्लेष्मज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर। उ०—[रोगी के] नाम गले कपड़े से बहुत ढकने से कभी ही घाम लगता है, सर्दियों में कुलथी, तिल, उड़द, मटर, गेहूँ के पदार्थ मिर्च, सोंठी, चबाने से आता, खाने के बाद ज्वर का लक्षणों में वातश्लेष्मज्वर के लक्षण हैं।—माधव० पृ० १६।

वातसख—संज्ञा पुं० [सं०] धान।

वातसह—वि० [सं०] वात रोग को सहन करनेवाला। गठिया का रोगी। जिसे वातरक्त का रोग हो (को०)।

वातसार—सज्ञा पु० [स०] बिल्व। बेल।

वातसारथि—सज्ञा पु० [स०] अग्नि।

वातस्कध—सज्ञा पु० [स० वातस्कन्ध] आकाश का वह भाग जहाँ वायु चलती रहती है।

वातस्वन—सज्ञा पु० [स०] अग्नि।

वातहत—वि० [स०] वातजन्य उन्माद से ग्रस्त [को०]।

वातहा—वि० [स०] वायुविकार नाशक। वायुनाशक [को०]।

वाताड—सज्ञा पु० [स० वाताण्ड] अडकोश का एक रोग, जिसमे एक अड चलता रहता है।

वाता—सज्ञा पुं० [स० वातृ] पवन। वायु [को०]।

वाताख्य—सज्ञा पु० [स०] वह घर जिसमे दक्षिण और पूर्व की ओर दालान हो [को०]।

वाताट—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य का घोडा। २ हिरन।

वातातिसार—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का अतिसार जो वायुविकार से होता है।

विशेष—इसमे ललाई लिए हुए झागदार, रूखा, आम मिला हुआ दस्त होता है, और मल उतरते समय आवाज भी होती है।—माधव०, पृ० ४५।

वातात्मज—सज्ञा पुं० [स०] १ हनुमान। २ भीमसेन (को०)।

वाताद—सज्ञा पु० [स०] बादाम।

वाताब्वा—स० पुं० [स०] झरोखा। मोखा। गवाक्ष। खिडकी [को०]।

वातापि—सज्ञा पु० [स०] १ एक असुर का नाम।

विशेष—आतापि और वातापि दो भाई थे। दोनो मिलकर ऋषियो को बहुत सताया करते थे। वातापि तो भेंड बन जाता था और उसका भाई आतापि उसे मारकर ब्राह्मणो को भोजन कराया करता था। जब ब्राह्मण लोग खा चुकते, तब वह वातापि का नाम लेकर पुकारता था और वह उनका पेट फाडकर निकल जाता था। इस प्रकार उन दोनो ने बहुत से ब्राह्मणो को मार डाला। एक दिन अगस्त्य ऋषि उन दोनो के घर आए। आतापि ने वातापि को मारकर अगस्त्य को खिलाया और फिर नाम लेकर पुकारने लगा। अगस्त्य जी ने डकार लेकर कहा कि वह तो मेरे पेट मे कभी का पच गया, अब कहाँ आता है।

यौ०—वातापिद्विट्, वातापिसूदन, वातापिहा=वातापि को मारने या पचा जानेवाले, अगस्त्य ऋषि।

वातापी—सज्ञा पुं० [स० वातापि] दे० 'वातापि'। उ०—मुनियो की कोख के भेदन करनेवाले वातापी नामक असुर को जिन्होने पचा डाला था।—बृहत्सहिता, पृ० ७६।

वाताप्य—सज्ञा पु० [स०] १ उदक। जल। २ सोम। ३. शोथ। ४ उफान। खमीर [को०]।

वाताम—सज्ञा पु० [स०] बादाम।

वातामोदा—सज्ञा स्त्री० [स०] कस्तूरी।

वाताय—सज्ञा पु० [स०] पर्ण। पत्ता [को०]।

वातायन—सज्ञा [स०] १ गवाक्ष। झरोखा। छोटी खिडकी। २ घोडा। ३ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम। ४ रामायण के अनुसार एक जनपद का नाम। ५ अलिंद, द्वारमडप (को०)। ६ मडप। मांडो (को०)।

वातायमान—वि० [स०] वायु की तरह गतिशील [को०]।

वातायु—सज्ञा पुं० [स०] हिरन।

वातारि—सज्ञा पुं० [स०] १ एरड। रेंड। २ अन्नमूली। ३ सिहारू। निर्गुडी। ४ अजवाइन। ५ थूहर। सेंहुड। ६. वायविडग। ७ सूरन। जिमीकद। ८ भिलावाँ। ९ सतावर। १० तिलक वृक्ष। ११ नील का पौधा।

वातालि, वातालो—सज्ञा स्त्री० [स०] वात्या। आँधी। तूफान [को०]।

वातावरण—सज्ञा पु० [स०] १ पृथ्वी के चारो ओर रहनेवाली वायु। २ परिस्थिति। ३ आस पास की स्थिति। उ०—प्रगमित हैं वातावरण, नमितमुख साध्य कमल।—अपरा, पृ० ३८।

वातावर्त—सज्ञा पु० [स०] बवडर। वात्याचक्र [को०]।

वाताश—सज्ञा पु० [स०] सर्प [को०]।

वाताशी—सज्ञा पु० [स० वाताशिन्] साँप। सर्प [को०]।

वाताश्व—सज्ञा पु० [स०] तीव्रगामी घोडा [को०]।

वाताष्ठीला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उदररोग जिसमे नाभि के नीचे वायु की गाँठ सी पड जाती है, जो इधर उधर रेंगती सी जान पडती है। यह कभी कभी मूत्र का अवरोध भी करती है।

वातास—सज्ञा स्त्री० [स० वात, हिं० बतास] हवा। वायु। बयार। उ०—आज जाने कैसी बातास, छोडती सौरभ श्लथ उच्छ्वास।—गुजन, पृ० ५३।

वाताहत—वि० [स०] वायु से आहत, हिलाया हुआ। वायुकपित। उ०—दिक्पिजर मे बद्ध गजाधिप सा विनतानन, वाताहत हो गगन आर्त करता गुरु गर्जन —रश्मि०, पृ० ५४। २ गठिया रोग से ग्रस्त (को०)।

वाताहति—सज्ञा स्त्री० [स०] वायु का प्रचंड झोका [को०]।

वाताहार—वि० [स०] वायु पीकर जीनेवाला [को०]।

वातिगण—सज्ञा पु० [स० वातिङ्गण] दे० 'वातिगम' [को०]।

वाति—सज्ञा पु० [स०] १ वायु। २ सूर्य। ३ चद्रमा।

वातिक[1]—वि० [स०] [स्त्री० वातिकी] १ तूफानी। २ पागल। उन्माद से पीडित। ३ सधिवात या गठिया रोगवाला। ४ वायु के कारण उत्पन्न। वातजन्य। उ०—ऐसे शूलो को वातिक शूल कहते हैं।—माधव,० पृ० १५९।

वातिक[2]—सज्ञा पु० १ पपीहा। २ वह व्यक्ति जो वातव्याधि से प्रभावित हो। पागल। उन्मत्त। बातुल। ३ चाटुकार। ४ एक प्रकार का ज्वर। ५ देवयोनि विशेष। ६ ऐंद्रजालिक। बाजीगर। ७ विष वैद्य [को०]।

वातिग—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वातिगम'।

वातिगम—सज्ञा पु० [स०] १ भंटा। बैगन। २ वह व्यक्ति जो धातुविज्ञान का ज्ञाता हो। खनिजविज्ञान का वेत्ता (को०)।

वातीक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का छोटा पक्षी।

वातीय'—सज्ञा पु० [स०] चावल का माँड [को०]।

वातीय'—वि० वायुसबधी [को०]।

वातुल'—वि० [स०] १ वायुप्रधान। २ वायु के कोप से जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। बातूनी। बकवादी (को०)। ३ सन्निपात से पीडित (को०)।

वातुल'—सज्ञा पु० १ बावला। उन्मत्त। २ पागल। वायु का आवर्त। बवडर (को०)।

वातुलि—सज्ञा स्त्री० [स०] बडा चमगादड [को०]।

वातूल—वि० [स०] दे० 'वातुल'। उ०—उठता वह वातूल वेग से है कब से।—साकेत, पृ० ४०१।

वातूलीभ्रम—सज्ञा पु० [स०] बवडर। वात्याचक्र [को०]।

वातृ—सज्ञा पु० [स०] वायु [को०]।

वातोदर—सज्ञा पु० [स०] एक वातरोग।

विशेष—इसमे हाथ, पाँव, नाभि, काँख, पसली, पेट, कमर और पीठ मे पीडा होती है, सूखी खाँसी आती है, शरीर भारी रहता है, अगो मे ऐठन होती है, और मल का अवरोध हो जाता है। पेट मे कभी कभी गुडगुडाहट भी होती है और पेट फूला रहता है। पेट ठोकने से ऐसा शब्द निकलता है, जैसे हवा भरी हुई मशक ठोकने से।

वातोना—सज्ञा पु० [स०] गोजिह्वा नाम का एक पौधा [को०]।

वातोर्मी—सज्ञा पु० [स०] ग्यारह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे मगण, भगण, तगण और अत मे दो गुरु होते है। जैसे,—मो भाँती गो गहि धीरा धरो जू। नीकै कौरो सह युद्ध करो जू। पाओगे अर्जुन या रीति मुक्ति। वातोर्मी सो समुझो आत्मयुक्ति। —छद०, पृष्ठ १६१।

वातोलवन—सज्ञा पु० [स० वातोलम्बन] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

विशेष—इसमे रोगी को श्वास, खाँसी, भ्रम और मूर्छा होती है तथा वह प्रलाप करता है। उसकी पसलियो मे पीड़ा होती है, वह जभाई अधिक लेता है और उसके मुँह का स्वाद कसैला रहता है।

वात्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बवडर। २ तूफान। आँधी। उ०—आरंभिक वात्या उद्गम में अब प्रकृति बन रहा सस्मृति का।—कामायनी, पृ० ७६।

वात्याचक्र—सज्ञा पु० [स०] १. बवडर। २ बावेला (लाक्ष०)। उ०—कारण समझ मे नहीं आता—यह वात्याचक्र क्यो ?—चद्र०, पृ० १८१।

वात्स—सज्ञा पु० [स०] १ एक गोत्रकार ऋषि का नाम। २ एक साम का नाम।

वात्सक—सज्ञा पु० [स०] बछडो का समूह या झुड [को०]।

वात्सरिक—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिषी।

वात्सल्य—सज्ञा पुं० [स०] १. प्रेम। स्नेह। १. वह स्नेह जो पिता या माता के हृदय मे संतति के प्रति होता है। माता पिता का प्रेम।

विशेष—साहित्य मे जिस प्रकार नायक नायिका के रतिभाव के वर्णन द्वारा शृगार रस माना जाता है, उसी प्रकार कुछ लोग माता पिता के रतिभाव के विभाव, अनुभाव और सचारी सहित वर्णन को वात्सल्य रस मानते हैं। पर यह सर्वसमत नही है। अधिकाश लोग दापत्य रति के अतिरिक्त और प्रकार के रति भाव को 'भाव' ही मानते हैं।

वात्सि, वात्सी—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्राह्मण और शूद्रा के ससर्ग से उत्पन्न कन्या [को०]।

वात्सिपुत्र, वात्सीपुत्र—सज्ञा पु० [स०] नाई। नापित [को०]।

वात्स्य—सज्ञा पु० [स०] १. एक ऋषि का नाम। २ एक गोत्र जिसमे और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवान नामक पाँच प्रवर होते हैं।

वात्स्यायन—सज्ञा पु० [स०] १. एक ऋषि का नाम। २ न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। ३ कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाथुरी†—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक पुरानी जाति का नाम। उ०—अन्य जातियाँ भी थी—हाडिक, वागुडि के पूर्वज वाथुरी तथा चूहडे।—प्रा० भा० प०, पृ०, १८१।

वाद—सज्ञा पुं० [स०] १ वह बातचीत जो किसी तत्व के निर्णय के लिये हो। तर्क। शास्त्रार्थ। दलील।

विशेष—'वाद' न्याय के सोलह पदार्थों मे दसवाँ पदार्थ माना गया है। जब किसी बात के सबध मे एक कहता है कि यह इस प्रकार है और दूसरा कहता है कि नहीं, इस प्रकार है, और दोनो अपने अपने पक्ष की युक्तियो को सामने रखते हुए कथोपकथन मे प्रवृत्त होते है, तब वह कथोपकथन 'वाद' कहलाता है। यह वाद शास्त्रीय नियमो के अनुसार होता है, और उसमे दोनो अपने अपने कथन को प्रमाण द्वारा पुष्ट करते हुए दूसरे के प्रमाण का खंडन करते हैं। यदि कोई निग्रहस्थान मे आ जाता है, तो उसका पक्ष गिरा हुआ माना जाता है और वाद समाप्त हो जाता है।

२. किसी पक्ष के तत्वज्ञो द्वारा निश्चित सिद्धात। उसूल। जैसे—अद्वैतवाद, आरभवाद, परिणामवाद। ३ बहस। झगडा। ४. भाषण (को०)। ५ वक्तव्य। उक्ति। आरोप (को०)। ५ वर्णन। वृत्त (को०)। ६ उत्तर (को०)। ७. विवृति। व्याख्या (को०)। ८ ध्वनन। ध्वनि (को०)। ९. विवरण। अफवाह (को०)। १० अभियोग। नालिश। (को०)। ११ समति। सलाह (को०)। १२ अनुबध। इकरारनामा (को०)।

वादक—सज्ञा पु० [स०] १. बाजा बजानेवाला। २ वक्ता। ३. वाद करनेवाला। तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वादकर—वि० [स०] दे० 'वादकृत्' [को०]।

वादकर्ता—सज्ञा पु० [स० वादकर्तृ] वाद्य बजानेवाला। वादक [को०]।

वादकृत्—वि० [स०], जो झगडे या विवाद का कारण हो। विवाद करनेवाला [को०]।

वादग्रस्त—वि० [स०] १ किसी वाद का आग्रही। उ०—इसका प्रमाण वादग्रस्त आलोचकों की प्रवृत्ति है।—आचार्य०, पृ० १४१। २ अनिश्चित। विवादास्पद (को०)।

वादचंचु—संज्ञा पु० [स० वादचञ्चु] १ शास्त्रार्थ करने में पटु। वाद करने में दक्ष। २ हाजिरजवाब। श्लेषगर्भित उत्तर देने में पटु व्यक्ति (को०)।

वाददंड—संज्ञा, पु० [स० वाददण्ड] सारंगी आदि बाजों के बजाने की कमानी।

वाददं—वि० [स०] प्रतिस्पर्धी (को०)।

वादन—संज्ञा पु० [स०] १ बाजा बजाना। २ बाजा। ३ वह जो संगीतवाद्य को बजाता हो (को०)।

वादनक—संज्ञा पु० [स०] बाजा।

वादनीय—संज्ञा पु० [स०] नरसल। सर (को०)।

वादप्रतिवाद—संज्ञा पुं० [स०] शास्त्रीय विषयों में होनेवाला कथोपकथन। बहस।

वादयुद्ध—संज्ञा पु० [स०] विवाद। तर्कवितर्क (को०)।

वादरंग—संज्ञा पु० [स० वादरङ्ग] १ अश्वत्थ का वृक्ष। २ गूलर का वृक्ष (को०)।

वादर—संज्ञा पु० [स०] १ कपास के सूत का कपड़ा। २ कपास का पेड़। ३ बेर का पेड़।

वादरा—संज्ञा स्त्री० [स०] कपास।

वादरायण—संज्ञा पु० [स०] व्यासदेव। वेदव्यास।

वादरायणि—संज्ञा पु० [स०] १ व्यास के पुत्र, शुकदेव। २ व्यासदेव।

वादरि—संज्ञा पु० [स०] वादरायण के पिता।
विशेष—इनका मत वेदांत दर्शन में प्रायः उद्धृत मिलता है।

वादरिक—संज्ञा पु० [स०] बेर बीननेवाला।

वादल—संज्ञा पु० [स०] १ मधुयष्टिका। जेठी मधु। मधु। मुलेठी। २. अंधकारमय दिवस (को०)।

वादवादी—संज्ञा पु० [स० वादवादिन्] जैन (को०)।

वादविवाद—संज्ञा पु० [स०] शाब्दिक झगड़ा। बहस।

यौ०—वादविवाद प्रतियोगिता = वह वादविवाद जिसमें विभिन्न प्रतियोगी किसी निर्धारित विषय के पक्षविपक्ष में भाषण करते हैं और निर्णायकों की सम्मति से सर्वोत्तम वक्ता पुरस्कृत होते हैं।

वादसाधन—संज्ञा पु० [स०] १ अपकार करना। २ तर्क करना या तर्क में प्रमाण देना।

वादा—संज्ञा पु० [अ० वाइदह] (१) नियत समय या घड़ी।

मुहा०—वादा आना = १ घड़ी आ पहुँचना। नियत समय का प्राप्त होना। २ काल आना। मृत्यु का समय आना। वादा पूरा होना = जीवनकाल समाप्त होना।

२ इस बात का विश्वास दिलाना कि मैं अमुक काम करूँगा। वचन। प्रतिज्ञा। इकरार।

मुहा०—वादा करना = कोई बात या काम करने के लिये वचन देना। प्रतिज्ञा करना। वादा पूरा करना = वचन के अनुसार काम पूरा करना। प्रतिज्ञा पूर्ण करना। वादा टालना = जिस समय कोई काम करने का वचन दिया हो, उस समय न करना। प्रतिज्ञा भंग करना। वादा खिलाफी करना = बात पूरी न करना। कथन के विरुद्ध कार्य करना। वादा रखाना = वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।

उ०—सौंह करि कहत हौं, एहो प्यारे रघुनाथ आवति रखाए वादो उनही के घर सों।—रघुनाथ (शब्द०)। वादे से निकल जाना = वचन से पलट जाना। कहकर न करना। कहे के खिलाफ करना। कहकर मुकर जाना। उ०—नवाब साहब ने शरई कसम खाई और कहा, अगर अबकी वादे से निकल जाऊँ तो शरीफ नहीं पाजी समझना, चकमार समझना—फूल कुं०, पृ० २५।

यौ०—वादाखिलाफ = वादा पूरा न करनेवाला। वादाखिलाफी = प्रतिज्ञा भंग। वचन पूरा न करना। वादागाह = सहेट स्थल। वह स्थान जहाँ मिलने की बात तै हुई हो। वादाफरामोश, वादाशिकन = वचन भंग करनेवाला। वादा पूरा न करनेवाला।

वादानुवाद—संज्ञा पु० [स०] तर्क वितर्क। शास्त्रार्थ बहस।

वादान्य—वि० [स०] उदार। वदान्य (को०)।

वादाम—संज्ञा पु० [अ०] बादाम (को०)।

वादाल—संज्ञा पु० [स०] सहस्रदंष्ट्र नामक मछली।

वादाशिकनी [संज्ञा स्त्री०] [फा०] प्रतिज्ञा भंग। वादखिलाफी (को०)।

वादि'—संज्ञा पु० [स०] १ विद्वान्। बुद्धिमान। चतुर। उ०—लह्यो जीति बहु वादिगन जिन वादीश्वर नाम।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० १०२। २ वक्ता। बोलनेवाला (को०)।

वादि'—अव्य०, [हिं० वादि]। दे० 'वादि'।

वादिक'—वि० [स०] १ तार्किक। वाद करनेवाला।

वादिक'—संज्ञा पु० [स०] १ बाजीगर। जादूगर। ऐंद्रजालिक। २ बंदी। भाँट (को०)।

वादित' वि० [स०] १ बजाया हुआ। नादित। २ जो बोलने के लिये प्रेरित कराया गया हो। उच्चरित कराया हुआ (को०)।

वादित'—संज्ञा पु० [स०] वाद्य संगीत (को०)।

वादितव्य—संज्ञा पु० [स०] १ जो कहे या बजाए जाने योग्य हो। २ वाद्य संगीत (को०)।

वादित्र—संज्ञा पु० [स०] बाद्य। बाजा। उ०—पै मिलि बैठन जबै सबै रँगि जात एक रँग। भिन्न भिन्न वादित्र यथा मिलि बजत एक सँग।—प्रेमघन० भा० १ पृ० ४। २ वाद्यसंगीत (को०)।

यौ०—वादित्रगण = वाद्य समूह। वाद्यश्रेणी।

वादित्रलगुड—संज्ञा पु० [स०] नगाड़ा, ढाल आदि बजाने की लकड़ी।

वादिर—संज्ञा पुं० [स०] बेर के समान छोटे फलवाला वृक्ष (को०)।

वादिराज—संज्ञा पुं० [स० वादिराज] मजुघोष।

वादिश'—संज्ञा पु० [स०] १ विद्वान् पुरुष। विद्याव्यसनी। २ संत। ऋषि। मुनि (को०)।

वादिश'—वि० सत्यवक्ता। साधुवादी (को०)।

वादीद्र—संज्ञा [स० वादीन्द्र] मजुघोष।

वादी—संज्ञा पु० [स० वादिन्] १ वक्ता। बोलनेवाला। २ किसी वाद का पहले पहल प्रस्ताव करनेवाला जिसका प्रतिवादी की ओर से खंडन होता है। ३ व्यवहार में किसी के प्रति कोई अभियोग चलानेवाला। मुकदमा लानेवाला। फरियादी। मुद्दई। ४. व्याख्याता। अध्यापक (का०)। ५ राग का मुख्य स्वर (का०)। ६. रासायनिक। कीमियागर (का०)। ७ गायक। ८. बाजा बजानेवाला (का०)। ९. एक बुद्ध (का०)।

वादी[2]—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ घाटी। २. नदीतट का मैदान। ३ बना जगल [को०]।

वादीला(पु)—वि० [स० वादिन्+हिं० ला (प्रत्य०)] वाद करनेवाला। हठीला। हठवाला। उ०—वादीला बनवा रै, जितै कलाया जोर।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २०।

वादु(पु)—सज्ञा पु० [सं० वाद] वाद। सवाद। बातचीत। उ०—तेल तवोल का वादु।—अकबरी०, पृ० १५०।

वादूलि—सज्ञा पुं० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

वाद्गल—सज्ञा पु० [स०] ओष्ठ। ओष्ठ।

वाद्य—सज्ञा पु० [स०] १ बजाना। २ बाजा। ३ बाजे की ध्वनि या स्वर (को०)।

यौ० वाद्यकर, वाद्यधर=सगीतज्ञ। वाद्यनिर्घोष=वाद्य की ध्वनि। बाजे की आवाज वाद्यभाड

वाद्यक—सज्ञा पु० [स०] १ बाजा बजानेवाला। २ वाद्य (को०)।

वाद्यभाड—सज्ञा पु० [स० वाद्यभाण्ड] १ मुरज आदि बाजे। २ बाजो का समूह। वाद्ययंत्रो का ढेर (को०)।

वाद्यमान—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो बजने या बोलने मे प्रवृत्त किया जाय। २. वाद्य सगीत [को०]।

वाध, वाधन—सज्ञा पु० [स०] बाधा। रोक। प्रतिबध [को०]।

वाधल—सज्ञा पुं० [स०] तैत्तिरीय सहिता से सबधित एक श्रौत सूत्र [को०]।

वाधा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पीडा। २ निषेध। रोक [को०]।

वाधुवय, वाधूवय—सज्ञा पु० [स०] पाणिग्रहण। विवाह [को०]।

वाधुल—सज्ञा पु० [स०] १ एक व्यक्ति का नाम। २ वह व्यक्ति जो सस्कार करे। सस्कार करनेवाला [को०]।

वाधू—सज्ञा पु० [स०] १ नाव का डाँड। २ नौका। नाव।

वाधूल—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम। इस गोत्र के लोग वाधूल कहलाते है।

वाध्रीणस—सज्ञा पु० [स०] गैडा [को०]।

वाध्यश्व—सज्ञा पु० [स०] अग्नि।

वान[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वट। गोनटी। चटाई। २ पानी मे लगनेवाला वायु का झोका। ३ गति। ४ सुरग। ५ सौरभ। सुगध। ६ सुखा फल। ७ बाना। ८ बनो का समूह या घना जगल (को०)। ९ बुनाई। बुनने की क्रिया (को०)। १० घर की दीवार का छेद (को०)। ११ चतुर व्यक्ति (को०)। १२ यमराज (को०)। १३ एक प्रकार का वसलोचन (को०)।

वान[2]—वि० खिला हुआ। प्रफुल्लित। ३ हवा से सूखा हुआ। शुष्क। ३ वन का। वन सबधी। जंगली [को०]।

वान(पु)[3]—सज्ञा, स्त्री० [स० वाणी] वाणी। वचन। प्रतिज्ञा। उ०—निज्ज वान सुपमान। वान नीमान वधै सुर।—पृ० रा०।

वान(पु)[4]—सज्ञा पु० [स० वाण] दे० 'वाण'। उ०—करे कुभ चूर। भरे वान भूर।—पृ० रा०, २। २८।

वानक—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मचर्य की अवस्था [को०]।

वानदड—सज्ञा पु० [स० वानदण्ड] वह लकडी जिसमे बाना लपेटकर बुना जाता है।

वानप्रस्थ—सज्ञा पुं० [स०] १. महुए का पेड। मधूक वृक्ष। २ पलाश। ३ प्राचीन भारतीय आर्यो के अनुसार मनुष्य के चार विभागो या आश्रमो मे से तीसरा विभाग या आश्रम।

विशेष—यह आश्रम गार्हस्थ्य के पीछे और सन्यास के पहले पडता है। शास्त्र के अनुसार पचास वर्ष के ऊपर हो जाने पर और गार्हस्थ्य आश्रम से चित्त हट जाने पर मनुष्य इस आश्रम का अधिकारी होता है। इस आश्रम मे प्रवेश करनेवाले को नगर, गाँव या बस्ती मे अलग वन मे रहना, जगली फल खाना, और उन्ही से पचमहायज्ञादि करना चाहिए शय्या, वाहन, वस्त्र, पलग आदि सब त्याग देना चाहिए। स्त्री को चाहे पुत्र के पास छोडे, चाहे अपने साथ वन मे ले जाय। जब इस आश्रम मे रहकर मनुष्य पूर्ण वैराग्यसपन्न हो जाय, तब उसे सन्यास लेना चाहिए।

४ उदासी। वैरागी। साधु (को०)।

वानप्रस्थी—वि० [स० वानप्रस्थिन्] वानप्रस्थ के योग्य। वानप्रस्थ से सबधित। विरक्त। सर्वत्यागी। उ०—निर्मल वानप्रस्थी मनोवृत्ति मे बरामदे मे टहल रही थी।—नई दुनिया, पृ० १००।

वानप्रस्थ्य—सज्ञा पु० [स०] वानप्रस्थ की स्थिति या अवस्था [को०]।

वानर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बदर। २ दोहे का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे १० गुरु और २८ लघु होते हैं। यथा—जड चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार। सत हस गुण गहहिं पै परिहरि वारि विकार। ३. एक प्रकार का गधद्रव्य। राल। यक्षधूप (को०)।

वानर[2]—सज्ञा पु० [देश०] राठौड क्षत्रियो की एक शाखा। उ०—बन्नर नील जिसौ बल वानर।—रा० रू०, पृ० १४६।

वानरकेतन, वानरकेतु, वानरध्वज—सज्ञा पु० [स०] कपिध्वज। अर्जुन [को०]।

वानरप्रिय—सज्ञा पु० [स०] खिरनी का वृक्ष [को०]।

वानराक्ष—सज्ञा पु० [स०] जगली बकरा [को०]।

वानराघात—सज्ञा पु० [स०] लोध्र वृक्ष [को०]।

वानरापसद—सज्ञा पुं० [स०] उपेक्षणीय। तुच्छ।

वानरी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ केवाँच। कपिकच्छु। २ बदर की मादा। बँदरिया। मर्कटी।

वानरी[2]—वि० वानर का। वानर सबधी [को०]।

वानरेंद्र—सज्ञा पु० [स० वानरेन्द्र] १ हनुमान। २ सुग्रीव [को०]।

वानल—सज्ञा पु० [स०] काली बनतुलसी।

वानवासक—सज्ञा पु० [सं०] वैश्य पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न सतान [को०]।

वानवासिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सोलह मात्राओ के छदो या चौपाई का एक भेद जिसमे नवी और बारहवी मात्राएँ लघु पडती हैं। जैसे,—'सीय लषन जेहि विधि सुख लहही।

वानस्पत्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वह वृक्ष जिसमे पहले फूल लगकर पीछे फल लगते हैं। जैसे, आम, जामुन आदि। २ वनस्पति का समूह।

वानस्पत्य[२]—वि० १ वृक्ष संबंधी। वृक्ष से प्राप्त होनेवाला। वनस्पति निर्मित, जैसे सोम। २ वृक्ष के नीचे रहनेवाला (को०)।

वाना—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बटेर पक्षी। २ सूखा फल (को०)।

वानायु—संज्ञा पु० [सं०] १ भारत के पश्चिमोत्तर स्थित एक देश का प्राचीन नाम। २ हिरन (को०)।

वानायुज—संज्ञा पु० [सं०] वानायु देश का घोड़ा।

वानिक—वि० [सं०] वनवासी (को०)।

वानिनि—संज्ञा स्त्री० [सं० वणिज (वणिक) प्रा० वनिअ, वनी] बनियाइन। वणिक् का पत्नी। उ०—

वानिनि बीथी माँडि सए मदस हि नागरि।—कीर्ति०, पृ० ३२।

वानीथ[१]—संज्ञा पु० [सं०] कैवर्त मुस्तक। केवटी मोथा। कुट। गोन।

वानीय[२]—वि० बिनने योग्य (को०)।

वानीर—संज्ञा पु० [सं०] १ बेंत। उ० जिनके तीर वानीर के भिरे मदकल कूजित विहगमो से शोभित हैं।—श्यामा०, पृ० ४०। २ पाकड़ का पेड़। पक्कड़।

वानीरक—संज्ञा पुं० [सं०] मूँज।

वानीरज—संज्ञा पु० [सं०] १ मूँज नाम की घास। २ कुष्ठ नाम का वृक्ष (को०)।

वानेत—संज्ञा पु० [हिं० वान+एत (प्रत्य०)] दे० 'बानैत'। उ०—जित्यौ वानेत उदल चढेत वैस मरेत स्वर्ग गयौ।—प० रासो, पृ० १४६।

वानेय[१]—संज्ञा पु० [सं०] गोन नाम का तृण जो पानी मे होता है। कैवर्त मुस्तक।

वानेय[२]—वि० १ जलसंबंधी। जलीय। २. वनसंबंधी। वन का (को०)।

वान्य—वि० [सं०] दे० 'वानेय'।

वान्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वनसमूह। २ मृतवत्सा गौ (को०)।

वाप—संज्ञा पुं० [सं०] १ बोना। वपन। वयन। २ मुंडन। ३ क्षेत्र। खेत। ४ बुनना। ५ वप्ता। बोनेवाला (को०)। ६ बीया। बीज (को०)।

विशेष—हिंदी के पितावाचकशब्द 'बाप' का भी यह पूर्वकालीन रूप है।

वापक—संज्ञा पुं० [सं०] बीज बोनेवाला।

वापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीज बोना। २ क्षौर। मुंडन (को०)।

वापस—वि० [फा०] लौटा हुआ। फिरा हुआ।

मुहा०—वापस आना = किसी स्थान पर जाकर वहाँ से फिर आ जाना। लौट आना। वापस करना = (१) किसी आए हुए मनुष्य को फिर वहीं भेजना, जहाँ से वह आया हो। लौटाना। (२) किसी वस्तु को मोल लेकर फिर दूकानदार को दे देना और उसमे दाम ले लेना। जैसे, यह छाता अच्छा नही है, वापस कर दो। (३) दे० 'वापस लेना'। (४) किसी से ली हुई वस्तु को फिर दे देना। वापस जाना = फिर वहीं जाना, जहाँ से आया हो। लौट जाना। वापस लेना = दी हुई या बेचा हुई वस्तु को पुन देने या बेचनेवाले द्वारा ले लेना। वापस होना = (१) लौट जाना। (२) किसी मोल ली हुई वस्तु का फिर दूकानदार को उसमे दाम लेकर दे दिया जाना। फेरा जाना। जैसे,—अब यह छाता वापस नही हो सकता। (३) दी हुई वस्तु का फिर मिल जाना या ली हुई वस्तु का फिर दे दिया जाना।

वापसी—वि० [फा०] अंतिम। आखिरी। जैसे, वापसी साँस (को०)।

वापसी[१]—वि० [फा० वापस] लौटा हुआ या फेरा हुआ। जैसे,—वापसी डाक।

वापसी[२]—संज्ञा स्त्री० १ लौटने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्तन। जैसे,— वापसी के समय लेते जाना। २ किसी दी हुई वस्तु को फिर लेने या ली हुई वस्तु को फिर देने का काम या भाव।

वापारु—संज्ञा पु० [सं० व्यापार] दे० 'व्यापार'। उ०—सुख दुख अरु पुन्न पापु भला बुरा वापारु।—प्राण०, पृ० २११।

वापि—संज्ञा स्त्री० [सं० वापि, वापी] दे० 'वापी'। उ०—किधौं पेट यह किधौं, वापि किधौ सागर है। जेतो जल परै, तेतो सकल समातु है।—सुंदर ग्र०, भा० १, पृ० १२१।

वापिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बड़ा चौड़ा कूआँ या जलाशय। वापी। बावली।

वापित[१]—वि० [सं०] १ बोया हुआ। २ मुंडित। मूँड़ा हुआ।

वापित[२]—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का धान्य। बोवारी धान (को०)।

वापी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।

वापी[२]—वि० [सं० वापिन्] बोनेवाला (को०)।

वापीह—संज्ञा पु० [सं०] पपीहा। चातक (को०)।

वाप्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुट। २ बोवारी धान। ३. बावली का पानी।

वाबस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] लगाव। संबंध (को०)।

वाबस्ता—वि० [फा० वाबस्तह्] १ बँधा हुआ। संबद्ध। २. संलग्न। ३ संबंधी। आत्मीय (को०)।

वाभन—संज्ञा पु० [सं० ब्राह्मण] दे० 'ब्राह्मण'। उ०—वाभन को जनम जनेऊ मेलि जानि बूझ, जीभ ही बिगारिबे को याच्यो जन जन मे।—अकबरी०, पृ० ११५।

वाम[१]—वि० [सं०] १ बायाँ दक्षिण या दाहिने का उलटा। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। अहित मे तत्पर। उ०—विधि वाम की करनी कठिन जेहि मातु कीन्ही बावरी।—तुलसी (शब्द०)। ३ टेढ़ा। कुटिल। ४ खोटा। दुष्ट। नीच। ५ जो अच्छा न हो। बुरा। ६ बाईं ओर स्थित या विद्यमान (को०)। ७ सुंदर। प्रिय। लावण्यमय। जैसे, वामलोचना, वामोरु (को०)। ८ अल्प। लघु (को०)। ९ क्रूर। कठोर (को०)।

वाम[२]—संज्ञा पु० १ कामदेव। २ एक रुद्र का नाम। वामदेव। शिव। ३ वरुण। ४ कुच। स्तन। ५ धन। ६ ऋक्षीक के एक पुत्र का नाम। ७ कृष्ण के एक पुत्र का नाम। ८ चद्रमा के रथ के एक घोड़े का नाम। ९. २४ अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे सात जगण और एक यगण होता है। इसे मजरी, करद और मावती भी कहते है। यह एक प्रकार का सवैया ही है। जैसे,—जु लोक यथामति वेद पढैं सह आगम औ दम आठ सयाने। लहैं भलि वाम अरु धनधाम तु काह भयो बिनु रामहि जाने।—छद०, पृ० २४५।

१०. निषिद्ध आचरण वा कार्य। कदाचार। वामाचार (को०)। ११ बायाँ पार्श्व या हाथ (को०)। १२ प्राणी। जंतु (को०)। १३. साँप (को०)। १४ वमन। मतली (को०)। १५. सुंदरतम वा अभीप्सित वस्तु। प्रिय वस्तु या व्यक्ति (को०)। १६. दुर्भाग्य। अभाग्य। संकट (को०)।

वाम(यु)[२]—संज्ञा स्त्री० [सं० वामा] दे० 'वामा'। उ०—नवल त्रिभंग कदम तर ठाढो, मोहत सब ब्रज वाम।—गीत (शब्द०)।

वाम[३]—संज्ञा पुं० [फा०] १ ऋण। कर्ज। २ रंग। वर्ण (को०)।

वामक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंगभंगी का एक भेद। २ बौद्ध ग्रंथों के अनुसार एक चक्रवर्ती। ३ एक संकर जाति (को०)।

वामक[२]—१ बायाँ। २ विरुद्ध। विपरीत (को०)।

वामकक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम जिनके गोत्र के लोग वामकक्षायन कहे जाते थे।

वामकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी जिसकी पूजा प्रायः जादूगर आदि करते हैं।

वामत क्रि० वि० [सं० वामतस्] बाईं ओर। बाईं तरफ (को०)।

वामता—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रतिकूलता। विपरीतता। उ०—बुद्धि से तो क्षुद्र मानव भी चलाता काम अपने। वामता से हीन विधि की शक्ति क्या होती प्रमाणित।—इत्यलम्, पृ० ११४।

वामदृक्—संज्ञा स्त्री० [सं० वामदृश्] सुंदर नेत्रोंवाली औरत। स्त्री महिला।

वामदेव[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव महादेव। २ गौतम गोत्रीय एक वैदिक ऋषि जो ऋग्वेद के चौथे मंडल के अधिकांश सूक्तों के द्रष्टा थे। ३ दशरथ के एक मंत्री का नाम।

वामदेवी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २ सावित्री।

वामदेव्य[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक साम का नाम। २ एक ऋषि का नाम। ३ पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के एक पर्वत का नाम।

वामदेव्य[२]—वि० वामदेव ऋषि से उत्पन्न (को०)।

वामन[१]—वि० [सं०] १ बौना। छोटे डील का। २. ह्रस्व। खर्व। ३ विनत। नम्र (को०)। ४ पूज्य। अभिवाद्य (को०)। ५ दुष्ट। नीच। ओछा (को०)।

वामन[२]—संज्ञा पुं० १ विष्णु। २ शिव। ३ एक दिग्गज का नाम। ४. एक प्रकार का घोड़ा, जो डीलडौल में छोटा होता है। ५ दनु के एक पुत्र का नाम। ६ एक नाग का नाम। ७ गरुड़वंशी एक पक्षी का नाम। ८ क्रौंच द्वीप के एक पर्वत का नाम। ९ विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये अदिति के गर्भ से हुआ था। १० अठारह पुराणों में से एक। ११ नीले रंग का बकरा। उ०—नीले रंग के छाग को वामन कहते हैं।—बृहत्०, पृ० ३०८। १२ संस्कृत साहित्य में रीति संप्रदाय की प्रतिष्ठा करनेवाले एक आचार्य। १३ बौना या ठिगना व्यक्ति (को०)। १४ अकोट या अकोल का वृक्ष (को०)। १५. एक मास (को०)। १६ पाणिनि के सूत्र पर 'काशिका वृत्ति' नामक भाष्य के प्रणेता (को०)।

वामनक—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्रौंच द्वीप का एक पर्वत। २ छोटे कद का आदमी। ३ ठिगनापन। बौना (को०)।

वामनद्वादशी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक पर्व तिथि जो भाद्र शुक्ल १२ को पड़ती है। इस दिन व्रत करके विष्णु भगवान् के वामनावतार की पूजा की जाती है।

वामनपुराण—संज्ञा पुं० [सं०] अट्ठारह पुराणों में से एक पुराण।

वामनयना संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री (को०)।

वामना—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

वामनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्कंद की अनुचरी एक माता या मातृका का नाम। २ बौनी स्त्री।

वामनी[१]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बौने आकार की स्त्री। २ घोड़ी। ३ एक प्रकार का नारी रोग जो योनि में होता है। वामिनी। ४. एक प्रकार की स्त्री (को०)।

वामनी[२]—वि० वाम अर्थात् धन लानेवाली।

वामनीकृत—वि० [सं०] छोटा किया हुआ। नम्र किया हुआ। झुकाया हुआ (को०)।

वामनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] दीर्घ ईकार (को०)।

वामपथ—संज्ञा पुं० [सं० वाम+पथ] दे० 'वाममार्ग'। उ०—जन बलवर्धन के हेतु वामपथ का चालन।—अपरा पृ० २१२।

वामभ्रू—संज्ञा स्त्री [सं०] सुभ्रु। सुंदर भौंहोंवाली स्त्री (को०)।

वाममार्ग—संज्ञा पुं० [सं०] वेदविहित दक्षिण मार्ग से भिन्न तांत्रिक मत।

विशेष—वाम मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, व्यभिचार आदि निषिद्ध बातों का विधान रहता है। तांत्रिक मत की दक्षिण मार्ग शाखा भी है जिसमें दक्षिणकाली, शिव, विष्णु आदि की उपासना का विशिष्ट विधान है।

वामरथ—संज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि का नाम, जिसके गोत्र वाले वामरथ्य कहलाते थे।

वामलूर—संज्ञा पुं० [सं०] दीमक का भीटा। वल्मीक। बाँबी।

वामलोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

वामांगिनी, वामांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० वामाङ्गिनी, वामाङ्गी] पत्नी। भार्या (को०)।

वामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्री। २ दुर्गा। ३ लक्ष्मी (को०)। ४ सरस्वती (को०)। ५ मनोहारिणी स्त्री। भ्रूविलासवती सुंदरी रमणी (को०)। ६ दस अक्षरों के एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अंत में एक गुरु होता है। यथा—तू यों भंग वामा तें सरना। टेढ़ धनु ते ज्यों तीर चला। ये हैं दुख नाना की जननी। ऐसी हम गाया ते अकनी।—छंद०, पृ० १५४।

वामाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सुंदर स्त्री। २. दीर्घ ईकार। वामनेत्र।

वामागम—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वामाचार' (को०)।

वामाचार—सज्ञा पु० [स०] तात्रिक मत का एक भेद जिसमे पंच-मकार अर्थात् मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की पूजा की जाती है। इस मत को माननेवाले स्वमतावलबी को वीर, साधक आदि और विरोधी को कटक कहते हैं।

वामाचारी—सज्ञा पु० [स० वामाचारिन्] वामागम को माननेवाला वामाचार मत का अनुगामी [को०]।

वामापीडन—सज्ञा पु० [स०] पीलू का पेड।

वामारभ—वि० [स० वामारम्भ] जो झुके नही। स्वाभिमानी। अदमनीय [को०]।

वामावर्त—वि० [स०] १ दक्षिणावर्त का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु (देवप्रतिमा आदि) की बाई ओर से आरभ की जाय। जैसे,—वामावर्त परिक्रमा। २ (वह चक्कर) जो बाईं ओर से चला हो। ३ जिसमे बाई ओर का घुमाव या भँवरी हो। जैसे,—वामावर्त शंख।

विशेष—शख दो प्रकार के होते है—एक वामावर्त, दूसरा दक्षिणावर्त। दक्षिणावर्त शख अत्यत शुभ और दुष्प्राप्य कहा जाता है।

वामि—सज्ञा स्त्री० [स०] नारी [को०]।

वामिका—सज्ञा स्त्री० [स०] चडिका।

वामिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का योनिरोग जिसमे गर्भाशय से छह सात दिन तक रज का स्राव होता रहता है। इसमे कभी पीडा होती है, कभी नही होती।

वामिल—वि० [स०] १ सुदर। मनोहर। २ अहकारी। घमडी। ३ धूर्त। चालाक। कपटी [को०]।

वामी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शृगाली। गीदडी। २ मादा हाथी। हथिनी (को०)। ३ घोडी। ४ गदही।

वामी[2]—वि० [स० वामिन्] १. वामाचार को माननेवाला। २ वमन करनेवाला [को०]।

वामेक्षणा—सज्ञा स्त्री० [स०] मनोहर नेत्रोवाली स्त्री [को०]।

वामेतर—वि० [स०] दाहिना [को०]।

वामोरु, वामोरू—सज्ञा स्त्री० [स०] सुदर उरुवाली स्त्री। सुदरी स्त्री।

वाम्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक स्त्री जो गोत्रकार थी। इसके गोत्रवाले वाम्नेय कहलाते थे।

वाम्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वामदेव ऋषि के घोडे का नाम। २ वामता। कुटिलता। दुष्टता। विपरीतता (को०)।

वाम्र—सज्ञा पु० [स०] १ एक साम का नाम। २ एक ऋषि का नाम (को०)।

वाय[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बुनना या सीना। २ बुनने या सीने का साधन। ३ तागा। डोरा (को०)। ४ पक्षी (को०)। ५ नेता नायक (को०)।

वाय(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० वायु] दे० 'वायु'।—उ० वाय सो वाय मलि मलि कर जानि। पानि म घ्रत कस मथि आन।—रामानद०, पृ० १४।

वाय[3]—सज्ञा स्त्री० [स० वापी, हिं० वाय] बावली। वापी।

वायक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो बुनता हो। बुननेवाला। उ०—पत्र रध्र तें छनि छनि आवत, चाँदनि रस सिंगार की वायक।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ४००। २ ततुवाय। जुलाहा। ३. राशि। समूह। ढेर (को०)।

वायक[2](पु)—सज्ञा पु० [स० वाद, प्रा० वाय+क (प्रत्य०)] उक्ति। कथन। वचन। वाक्य। उ०—बाँका रा वायक सुणै, कायरड़ा किण काज।—बाँकी ग्र०, भा० १, पृ० ८।

वायदड—सज्ञा पु० [स० वायदण्ड] जुलाहो की ढरकी।

वायन—सज्ञा पु० [स०] १ वह मिठाई या पकवान जो देवपूजा या विवाहादि के लिये बनाया जाय। २ एक गधद्रव्य (को०)। विशेष—दे० 'बायन'।

वायनक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'बायन' [को०]।

वायनरज्जु—सज्ञा पु० [स०] जुलाहो के करघे की वै।

वायर(पु)—सज्ञा स्त्री० [हिं० बयार] वायु। बयार। उ०—सूरां नूर दरस्सिया, तोले सेल करग्ग। वायर ज्यौं लागा विमुह कायर आँडू मग्ग।—रा० रू०, पृ० २०३।

वायव—वि० [स०] [वि० स्त्री० वायवी] १ वायु सबधी या वायु से प्राप्त। २ आध्यात्मिक। ३ मन कल्पित। हवाई। ४ अमूर्त। सूक्ष्म। उ०—तुम्हारी अलौकिक शक्ति, वायवी प्रतिभा, एव मायावी आकर्षण के प्रभाव से यह कार्य अधिक सुगमता से सपन्न हो सकेगा, इसी लिये मैंने तुम्हारा आवाहन किया है।—ज्योत्स्ना, पृ० ५०।

वायवी—सज्ञा स्त्री० [स० वायवी, वायवीय] वायु की दिशा। उत्तरपश्चिम दिशा [को०]।

वायवीय—वि० [स०] वायु सबधी। २ सूक्ष्म। उ०—मूर्तिमती कला का वायवीय आकार उसके हृदय के भीतर स्पर्श करके मधुरता से भर रहा था।

यौ०—वायवीय पुराण=वायुपुराण।

वायव्य[1]—वि० [स०] १ वायु सबधी। २ वायुघटित। वायु से बना हुआ। ३ जिसका देवता वायु हो।

वायव्य[2]—सज्ञा पु० १ वह कोण या दिशा जिसका अधिपति वायु है। उत्तरपश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २ वायु पुराण। ३ एक अस्त्र का नाम। ४ स्वाती नक्षत्र (को०)।

वायव्या—सज्ञा स्त्री० [स०] पश्चिमोत्तर दिशा [को०]।

वायस—सज्ञा पु० [स०] १ अगुरु। अगर का पेड। २. कौआ। ३ तारपीन (को०)। ४ वह मकान जिसका दरवाजा उत्तरपूर्व की ओर हो (को०)। ५ कौओ का झुंड (को०)। ६ पक्षी। बडा पक्षी (को०)।

वायसजघा—सज्ञा स्त्री० [स० वायसजङ्घा] काकजघा नाम का पौधा विशेष दे० 'काकजघा'। [को०]।

वायसततु—सज्ञा पु० [स० वायसतन्तु] १ हनु के दोनो जोड। २ काकतुडी। कौआठोठी।

वायसतुड—सज्ञा पुं० [स० वायसतुण्ड] कौआठोठी [को०]।

वायसपीलु—सज्ञा पु० [स०] एक वृक्ष। काकपीलु [को०]।

वायसातक—सज्ञा पुं० [स० वायसान्तक] उलूक। उल्लू।

वायसादनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ महाज्योतिष्मती लता । २. कौआठोठी ।

वायसाराति, वायसारि—सज्ञा पु० [स०] उल्लू । उलूक [को०] ।

वायसाह्वा—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का भक्ष्य शाक ।

वायसी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटी मकोय जिसमे गुच्छो मे गोल मिर्च के समान लाल फल लगते हैं । काकमाची । २ महाज्योतिष्मती । ३ काकतुंडी । कौवाठोठी । ४ सफेद घुंघची । ५ काकजघा । मासी । ६ महाकरज । बडा कजा । ७ कौवे की मादा (को०) ।

वायुसेक्षु—सज्ञा पु० [स०] काँस नाम का तृण ।

वायसोलिका, वायसोली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काकोली । मालकगनी । २ महा ज्योतिष्मती लता ।

वायार—सज्ञा पुं० [देशी] ठंढ भरी हवा । जाडे की हवा ।—देशी०, पृ० २९५ ।

वायु—सज्ञा स्त्री० [स०] हवा । वात ।

विशेष—वैशेषिक दर्शन वायु को द्रव्यो मे मानता है और उसे रूपरहित, स्पर्शवान् तथा नित्य कहता है । न्याय दर्शन मे वायु पचभूतो मे है और इसका गुण स्पर्श कहा गया है । वायु से ही स्पर्शेंद्रिय की उत्पत्ति मानी गई है । वैशेषिक दर्शन स्पश के अतिरिक्त सख्या, परिमाण, पृथक्त्व, सयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और वेग भी वायु के गुण मानता है । साख्य मे वायु की उत्पत्ति स्पर्श तन्मात्र से मानी गई है । उपनिषदो के अनुसार वेदाती भी वायु को उत्पत्ति आकाश से मानते हैं ।

२. वायु देवता । पवन देवता (को०) । ३. प्राणवायु । जीवनवायु भी पांच प्रकार कहा का है—प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान । ४ सांस । श्वास (को०) । ५ 'य' अक्षर (को०) । ६. एक वसु (को०) । ८. एक दैत्य का नाम,(को०) । ९ गधर्वों के एक राजा का नाम (को०) ।

वायुकेतु—सज्ञा पु० [स०] धूलि [को०] ।

वायुकोण—सज्ञा पु० [स०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुगड—सज्ञा पु० [स० वायुगण्ड] अजीर्ण । अफरा [को०] ।

वायुगति—वि० [स०] तीव्र गति । अत्यत तीव्र चाल [को०] ।

वायुगीत—वि० [स०] सर्वविदित । प्रसिद्ध [को०] ।

वायुगुल्म—सज्ञा पु० [स०] १ वातचक्र । बगोला । बवंडर । २ पेट का एक रोग । वायगोला ।

विशेष—इस रोग मे पेट के अंदर वायु का एक गोला सा बँध जाता है, जो घटता बढता और सारे पेट मे फिरता रहता है । कभी कभी यह पीडा भी उत्पन्न करता है । इसमे प्राय. मल मूत्र का अवरोध भी हो जाता है और गला सूखा रहता है । हृदय, बगल और पसली मे कभी कभी बड़ा दर्द होता है । खाली पेट मे इसका जोर अधिक रहता है और भरे पेट मे कम । कडुवे, कसैले पदार्थों के खाने से यह रोग बढता है ।

३. जल का आवर्त । पानी की भँवर (को०) ।

वायुगोचर—सज्ञा पु० [स०] पश्चिमोत्तर दिशा ।

वायुग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० वायुग्रन्थि] १. वायुगुल्म । २. बवडर [को०] ।

वायुग्रस्त—वि० [स०] वात रोग से पीडित [को०] ।

वायुजात, वायुतनय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वायुपुत्र' [को०] ।

वायुदार, वायुदारु—सज्ञा पुं० [स०] मेघ । बादल ।

वायुदिश्—सज्ञा स्त्री० [स०] पश्चिमोत्तर दिशा [को०] ।

वायुदेव—सज्ञा पुं० [सं०] स्वाति नक्षत्र जिसके देवता वायु है [को०] ।

वायुनिघ्न—वि० [स०] वातप्रकोप से पीडित । उन्मत्त [को०] ।

वायुपचक—सज्ञा पु० [स० वायुपञ्चक] शरीरस्थ पंचवायु [को०] ।

वायुपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ हनुमान । २ भीम ।

वायुपुराण—सज्ञा पु० [स०] अट्ठारह पुराणो मे से एक पुराण ।

वायुफल—सज्ञा पु० [स०] १ इद्रवनुष । २ ओला (को०) ।

वायुभक्ष, वायुभक्ष्य—सज्ञा पु० [स०] १ सर्प । साँप । २. वह तपस्वी जो केवल वायु पीकर रहे ।

वायुभुक्—सज्ञा पु० [स० वायुभुज्] दे० 'वायुभक्ष' [को०] ।

वायुमडल—सज्ञा पु० [स० वायुमण्डल] १ आकाश, जिसमे वायु प्रवाहित होती है । २ बवंडर (को०) ।

वायुमरुल्लिपि—सज्ञा स्त्री० [स०] ललितविस्तर के अनुसार एक लिपि का नाम ।

वायुमार्ग—सज्ञा पुं० [स०] आकाश ।

वायुयान—सज्ञा पु० [स०] हवाई जहाज । वायु मे उडनेवाला यान । विमान । उ०—रेडियो, तार, औ फोन वाष्प, जल, वायुयान । मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान यान ।—ग्राम्या, पृ० ८८ ।

वायुयानवेधी तोप—सज्ञा स्त्री०[स० वायुयानवेधी+तु० तोप] विमान विध्वसक तोप । (अ० ऐंटी-एअरक्राफ्ट गन) । उ०—जमीन से वायुयानवेधी तोपें आक्रमणकारी वायुयानो पर गोले चला रही थी ।—'आज' ।

वायुर—वि० [स०] १. वायुयुक्त । हवादार । २ तूफानी । अधड से भरा हुआ [को०] ।

वायुरोषा—सज्ञा स्त्री० [स०] रात ।

वायुलोक—सज्ञा पु० [स०] १. पुराणानुसार एक लोक का नाम । २. आकाश ।

वायुवर्त्म—सज्ञा पु० [स० वायुवर्त्मन्] आकाश [को०] ।

वायुवाह—सज्ञा पुं० [स०] १ धुम । धूआँ । २ भाप [को०] ।

वायुवाहन—सज्ञा पु० [स०] १ धूम्र । धूआँ । ३ शिव (को०) । ४ विष्णु । (को०) ।

वायुवाहिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] शरीर की नस । शिरा [को०] ।

वायुवेग—वि० [स०] वायु के समान तीव्र गतिवाला [को०] ।

वायुसख, वायुसखा, वायुसखि—सज्ञा पु० [सं०] अग्नि ।

वायुस्कध—सज्ञा पु० [स० वायुस्कन्ध] वायु का क्षेत्र [को०] ।

वायुहन्—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि का नाम जो मकण ऋषि के पुत्र थे ।

विशेष—कथा है कि मकरण ऋषि एक बार सरस्वती मे स्नान कर रहे थे। वहाँ उनको एक नग्न स्त्री स्नान करती हुई दिखाई दी। उसे देखकर उनका वीर्य स्खलित हो गया। उसे उन्होने एक घडे मे रखा, वह सात भागो मे विभक्त हो गया और उनसे वायुवेग, वायुबल, वायुहन् वायुमडल, वायुजाल, वायुरेता और वायुचक्र नामक सात पुत्र उत्पन्न हुए।

वायौ†—वि० [स० वायुग्रस्त] बावला। उ०—विचित्र हुवौ लडता रस वायौ।—रा० रू०, पृ० ५१।

वाय्याप्पद—सज्ञा पु० [स०] आकाश। वातावरण [को०]।

वारक—सज्ञा पु० [स० वारङ्क] पक्षी।

वारग—सज्ञा पुं० [स० वारङ्ग] १ तलवार की मूठ। २ अँकुडे के आकार का एक अस्त्र जिससे चिकित्सक अस्थिविनष्ट शल्प निकालते थे। (सुश्रुत)।

वारट—सज्ञा पु० [अ०] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को वह काम करने का अधिकर प्राप्त हो जाय, जिसे वह अन्यथा करने मे असमर्थ हो। यह कई प्रकार का होता है, जैसे,—वारट गिरफ्तारी, वारट तलाशी, वारट रिहाई इत्यादि।

वारट गिरफ्तारी—सज्ञा पु० [अं० वारट+फा० गिरफ्तारी] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी पुरुष का पकडकर अदालत मे हाजिर करे।

वारट तलाशी—सज्ञा पु० [अ० वारट+फा० तलाशी] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी कर्मचारी को यह अधिकार दिया जाय कि वह किसी स्थान मे जाकर वहाँ की तलाशी ले।

वारट रिहाई—सज्ञा पुं० [अ० वारट+फा० रिहाई] अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी सरकारी कर्मचारी को यह आज्ञा और अधिकार मिले कि वह किसी पुरुष को, जो जेल, हवालात या गिरफ्तारी मे हो, छोड दे, या किसी माल या जायदाद को, जो कुर्क हो या किसी की सपुर्दगी मे हो, मालिक को लौटा दे।

वारवार—अव्य० [वारम् वारम्] दे० 'बारबार'। उ०—रिपुओ की पुकार भी मानो निष्फल जाती वारवार।—साकेत, पृ० ३९४।

वार—सज्ञा पु० [स०] १ जल। पानी। २ रक्षक। त्राता। प्रतिपालक (को०)।

वार[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ द्वार। दरवाजा। उ०—सदेसे ही घर भरचउ कइ अगणि कई वार।—ढोला०, दू० २००। २. अवरोध। रोक। रुकावट। ३, ढाँकनेवाली वस्तु। आवरण। ४ कोई नियत काल। अवसर। दफा। मरतबा। जैसे—बारबार। ५ क्षण। ६ सप्ताह का दिन। जैसे,—आज कौन वार है। ७ कुज वृक्ष। ८ पानपात्र। मद्य का प्याला। ९ बाण। तीर। १० नदी या समुद्र का किनारा।—उ० जोय प्रबल अणपार जल वार रह्या भड आन। निडर उलघण वारनिध, हुवो त्यार हनुमान।—रघु० रू०, पृ० १६३। ११. शिव का नाम। १२ जलराशि। जलौघ (को०)। १३ पूँछ। दुम (को०)। १४. दाँव। बारी। जैसे—अपना अपना वार है। उ०—देस देस के भूपति आवैं। द्वारे भीर वार नहिं पावैं।—हिं० क० रा०, पृ० १८८।

मुहा०—वार मिलना=फुरसत मिलना। वार सरना=अवसर या मौका मिलना। सभव हो सकना। पार पडना। उ०—सूआ एक सदेसडउ, वार मरेसी तुझ्झ। प्रीतम वाँसइ जाय नई, मुई सुणावे मुझ्झ।—ढोला०, दू० ३९८।

वार[2]—सज्ञापु०[स० वार(=दाँव, बारी।) या फा०] चोट। आघात। आक्रमण। हमला। उ०—वार नाम वैरी के ऊपर प्रहार चाहैं हैं किंवा वार है बाल ताको चाहै है, अर्थात् उत्तम बालक वा बारागना। × × × अथवा वार मूढ को न चाहैं।—दीन० ग्र०, पृ० १७८।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—वार खाली जाना=(१) प्रहार का ठीक स्थान पर न पडना। चलाया हुआ अस्त्र न लगना। (२) युक्ति सफल न होना। चली हुई चाल या तदबीर का कुछ नतीजा न होना।

वार[3]—सज्ञा स्त्री० [स० वार, हिं० बेर] देर। विलब। उ०—चल्या ठकुराल्या न लावीय वार, भोज तणाँ मिलिया असवार।—बी० रासो पृ० १६।

वार[4]—सज्ञा पु० [हिं० उबार] बचाना। रक्षा करना। उ०—गया है हृदय हिल, लो थके को वार।—आराधना, पृ० ४६।

वार[5]—सज्ञा पु० [स० बाल] [स्त्री० बारा] १ बालक। बच्चा। शिशु। २ अज्ञ या मूर्ख व्यक्ति। उ०—(क) किंवा वार है बाल ताको चाहै हैं अर्थात् उत्तम बालक।—दीन०। ग्र०, पृ० १७८। (ख) तीनो अड भए तिवारा। ता के रूप भए अधिकारा।—कबीर सा०, पृ० १६।

वार[6]—सज्ञा पुं० [अं०] युद्ध। समर। जग। जैसे,—जर्मन वार।

यौ०—वारफड=युद्ध के लिये आर्थिक मदद या चदा आदि का सग्रह।

वारक—सज्ञा पु० [स०] १. निषेध करनेवाला। वह जो वारण करे। प्रतिबंधक। २ घोडे का कदम। ३ घोडा। ४. एक प्रकार का विशेष घोडा (को०)। ५ वह स्थान जहाँ पीडा हो। कष्ट-स्थान। ६ बाधा का स्थान। ७ एक सुगधित तृण।

वारकन्यका, वारकन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वारकी—सज्ञा पुं० [स० वारकिन्] १. प्रतिवादी। शत्रु। २ समुद्र। ३. पत्ते खाकर रहनेवाला तपस्वी। पर्णाशी यति। ४ शुभ लक्षणो से युक्त घोडा (को०)।

वारकीर—सज्ञा पु० [स०] १ साला। २ द्वारपाल। ३ बाडवाग्नि। ४ जूँ। ५ कधी। ६ लडाई का घोडा। चित्राश्व।

वारट—सज्ञा पुं० [स०] खेत या खेतो का सिलसिला [को०]।

वारटा—सज्ञा स्त्री० [स०] हसिना [को०]।

वारण—सज्ञा पु० [स०] १. किसी बात को न करने का सकेत या आज्ञा। निषेध। मनाही। उ०—हठपूर्वक मुझको भरत करें यदि वारण।—साकेत, पृ० २२०।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. रोक। रुकावट। बाधा। ३ कवच। वकतर। ४. हाथी। ६ हरताल। ७ काला सीसम। ८ पारिभद्र। ९. सफेद कोरैया का फूल। १० छप्पय छद का एक भेद जिसमे ४१ गुरु, ७० लघु कुल १११ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है, अथवा ४१ गुरु, ६६ लघु, कुल १०७ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं। ११ द्वार। कपाट (को०)। १२ प्रतिरक्षा। सरक्षा। प्ररक्षा (को०)। १३ हाथी की सूँड। १४. मेहराब या तोरण की एक प्रकार की सजावट या नक्काशी (को०)।

वारणकणा—सज्ञा स्त्री० [स०] गजपिप्पली।

वारणकर—सज्ञा पु० [स०] हाथी की सूँड (को०)।

वारणकृच्छ्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत जिसमे एक महीने तक पानी मे जौ का सत्तू घोलकर पीना पडता है।

वारणकेसर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'नागकेसर'।

वारणबुषा, वारणबुसा—सज्ञा स्त्री० [स०] कदली। केला।

वारणवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] केला। कदली (को०)।

वारणशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] हस्तिशाला (को०)।

वारणसाह्वय—सज्ञा पु० [स०] हस्तिनापुर का एक नाम (को०)।

वारणसी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाराणसी' (को०)।

वारणहस्त—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का तंत्रवाद्य (को०)।

वारणानन—सज्ञा पु० [पु०] गजानन। गणेश (को०)।

वारणावत—सज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक जनपद या नगर जो गगा के किनारे था।

विशेष—यही पर दुर्योधन ने पाडवो को जलाने के लिये लाक्षागृह बनवाया था। कुछ लोग इसे करनाल के आसपास मानते हैं और कुछ लोग इलाहाबाद जिले के हँडिया नामक स्थान के पास।

वारणीय—वि० [स०] निषेध योग्य। प्रतिषेध्य।

वारता—सज्ञा स्त्री० [स० वार्ता] बातचीत। कथोपकथन। उ०—सदा ज्ञान वैराग्य योग की होत वारता। ईस भक्ति मैं निरत, सबन के हिय उदारता।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ४।

वारतिय—सज्ञा स्त्री० [स० वारस्त्री] वेश्या। उ०—ताके रही वारतिय दोई। रूपवती रभा छबि छोई।—रघुराज (शब्द०)।

वारत्र—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० वारत्रा] चर्म रज्जु। चमडे का बना तसमा (को०)।

वारत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पक्षी। वारटा (को०)।

वारद—सज्ञा पुं० [स० वारिद] बादल। उ०—सोहति धोती सेत मे कनक बरन तन बाल। सारद वारद बीजुरी भा रद कीजत लाल।—बिहारी (शब्द०)।

वारदात—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. कोई भीषण या शोचनीय काड। दुर्घटना। २ मारपीट। मारकाट। दगा फसाद।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३. घटना सबधी समाचार। हाल (को०)।

वारध—सज्ञा पु० [स० वारिधि] दे० 'वारिधि'। उ०—वारध मुनि पीयो, त्रवक विष, जिके प्रकट दरसे जग जाण।—रघु० रू०, पृ० २६८।

वारधान—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक जनपद का नाम। इसे वाटधान भी कहते है।

वारन'—सज्ञा स्त्री० [हिं० वारना] निछावर। बलि। उ०—नित हित सो पालत रहै रूप भूप नँदलाल। छवि पनिवारन मैं मनौ दृग पर वारन हाल।—रसनिधि (शब्द०)।

वारन'—सज्ञा पुं० [स० वदन] वदनवार। वदनमाला। उ०—घर घर धुजा पताका बानी। तोरन वारन वापर ठानी।—सूर (शब्द०)।

वारना'—क्रि० स० [हिं० उतारना] निछावर करना। उत्सर्ग करना। उ०—(क) चितै रही मुख इदु मनोहर या छवि पर वारति तन को। कछि काछिनी भेष नटवर को बीच मिली मुरली धर को।—सूर (शब्द०)। (ख) कौसिला की कोषि पर तोप तन वारिए री। राम दसरथ की बलाय लीजै आलि री।—तुलसी (शब्द०) (ग) तो पर वारौ उरवसी सुन राधिका सुजान। तू मोहन के उर बसी ह्वै उरवसी समान।—बिहारी (शब्द०)।

वारना'—सज्ञा पु० निछावर। उत्सर्ग। उ०—अति कोमल कर चरन सरोरुह, अधर दसन नासा सोहे री। लटकन सीस कठ मणि भ्राजत कोटि वारने गै री।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

मुहा०—वारने जाना=निछावर होना। बलि जाना। उ०—बाल बिभूषन, बसन मनोहर अगनि बिरचि बनैहौं। सोभा-निरखि निछावरि करि उर लाइ वारने जैहौं।—तुलसी (शब्द०)।

वारनारी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या।

वारनिश—सज्ञा स्त्री० [अं० वार्निश] एक प्रकार का यौगिक तरल पदार्थ जो लकडयो आदि पर उनमे चमक लाने के लिये लगाया जाता है।

वारपार'—सज्ञा पु० [स० अवार+पार] १ (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। पूरा विस्तार। जैसे,—नदी इतनी बढी है कि वारपार नही सूझता। २ यह छोर और वह छोर। अंत। उ०—वारपार नहिं सूझहि लाखन उमरा मीर।—जायसी (शब्द)।

वारपार'—अव्य० १. इस किनारे से उस किनारे तक। जैसे,—वारपार जाने मे एक घंटा लगेगा। उ०—अति सुमार गार सार वारपार बहत है।—घनानंद, पृ० ३५०।

मुहा०—वारपार करना=पूरा विस्तार तै करना। वारपार होना=पूरा विस्तार तै होना।

२. एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक। एक बगल से दूसरी बगल तक। पूरी चौडाई या मोटाई तक। जैसे,—बरछी वारपार हो गई।

मुहा०—वारपार करना=इस ओर से उस ओर तक धँसाना। पूरी मोटाई छेदकर दूसरी ओर निकालना।

वारफेर—सज्ञा स्त्री० [हिं० वार+फेर] १ निछावर। बलि। २ वह रुपया पैसा जो दूल्हा या दुलहिन के सिर पर से घुमाकर डोमनियो आदि को दिया जाता है। उ०—बोली कर जोरि मेरो जोर न चलत कछू चाहो सोई होहु यह वारिफेरि डारिए।—प्रियादास (शब्द०)।

वारबाण—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'वारवाण'। २ एक प्रकार का कवल (को०)।

वारबुसा, वारबूषा—सज्ञा स्त्री० [सं०] कदली। केला [को०]।

वारमुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। उ०—कहै तुम कौन वारमुखी नही भोग मग भरुवा सुगहै मौन सुनी पगै बेरी है।—प्रिया-दास (शब्द०)।

वारमुख्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्याओ के वर्ग की प्रधान स्त्री। कुट्टनी। कुट्टनी नायका।

वारयिता—सज्ञा पु० [स० वारयितृ] पति [को०]।

वारयुवती—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या [को०]।

वारयोग—सज्ञा पु० [स०] चूर्ण। पाउडर [को०]।

वारयोषित्, वारयोषा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वारवधू'।

वारला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हसी। हसिनी। २ केला। ३ भिड या बेर (को०)।

वारवारण—सज्ञा पु० [स०] १ कवच। २ ढाल [को०]।

वारलीक—सज्ञा पु० [स०] विल्वजा तृण। बनकप।

वारवधू—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वारवाण—सज्ञा पुं० [स०] १ कौटिल्य के अनुसार एँडी तक लबा अगा। २ कचुक। कुचुकी (को०)। ३ कवच। जिरहबख्तर।

वारवाणि[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वशी बजानेवाला। २ उत्तम गायक। ३ धर्माध्यक्ष। न्यायाधीश। जज। ४ ज्योतिर्विद। ज्योतिषी। ५ वर्ष (को०)।

वारवाणि[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी [को०]।

वारवाणी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या।

वारवासि—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम जो भारत का पश्चिमी सीमा के आगे था।

वारवास्य—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वारवासि'।

वारविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वारवृषा—सज्ञा पु० [स०] १ अन्न। २ केला [को०]।

वारवला—सज्ञा स्त्री० [स०] दिन का एक अशुभ समय जब कोई शुभ कार्य करना वाजत है [को०]।

वारशिप—सज्ञा पु० [अ०] जगी जहाज। लडाकू जहाज। युद्धपोत।

वारसुदरी—सज्ञा स्त्री० [स० वारसुन्दरी] दे० 'वारस्त्री'।

वारसेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वेश्यावृत्ति। रडी का व्यवसाय। २ वेश्याओ का समुदाय [को०]।

वारस्त्री—सज्ञा स्त्री० [स०] बाजारू स्त्री। गणिका। वेश्या। रडी।

वारागणा—सज्ञा स्त्री० [स० वाराङ्गणा] वेश्या। रडी।

वारागना—सज्ञा स्त्री० [स० वाराङ्गना] दे० 'वारागणा'।

वारानिधि—सज्ञा पुं० [स० वारान्निधि] समुद्र। उ०—जयति वैराग्य विज्ञान वारानिधे, नमत नर्मद पाप ताप हर्ता।—तुलसी (शब्द०)।

वारा[1]—सज्ञा पुं० [सं० वारण(=रक्षा, बचाव)] १ खर्च की बचत। किफायत। २ लाभ। फायदा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—बैठना।

वारा[2]—सज्ञा पु० [हिं० वार(=यह किनारा)] इधर का किनारा। इस ओर का तट या छोर। वार।

यौ०—वारान्यारा। वारापार।

वारा[3]—वि० किफायत। सस्ता।

वारा[4]—वि० [हिं० वारना] [वि० स्त्री० वारी] जो निछावर हुआ हो। जिसने किसी पर अपने को उत्सर्ग किया हो।

मुहा०—वारा होना=निछावर होना। कुरबान होना। (प्यार का वाक्य)। उ०—हौं वारी तेरे इदुवदन पर अति छवि अलसानि रोई।—सूर (शब्द०)। वारा जाना=दे० 'वारा होना'। उ०—वनवारी वारी गई वनवारी पै आज।—रसनिधि (शब्द०)।

वारा(प्रत्य०)—सज्ञा स्त्री० [स० वाला] दे० 'वाला'। उ०—इक सूक्ष्म अस्थूल दै, वारा भूषण येह।—प० रासो, पृ० १६३।

वाराणसी—सज्ञा स्त्री० [स०] काशी नगरी का प्राचीन नाम।

विशेष—कुछ लोग यह नाम वरुणा और असी नदियो के कारण मानते हैं। पर इस प्रकार यह शब्द सिद्ध नही होता। लोग इसका ठीक व्युत्पत्ति 'वर'+अनस् (जल) अर्थात् 'पवित्र जलवाली पुरी' बतलाते हैं। कुछ विद्वान् 'उत्तम रथोवाली पुरी' अर्थ भी करते हैं। विशेष दे० 'काशी'।

वाराणसेय—वि० [स०] वाराणसी का। वाराणसी मे स्थित या उत्पन्न। जैसे, वाराणसेय विद्वत्सभा।

वारान्यारा—सज्ञा पु० [हिं० वार+न्यारा] १ इस पक्ष या उस पक्ष मे निर्णय। किसी ओर निश्चय। फैसला। उ०—आर्य गौरव-सर्वस्व का वारान्यारा होना सहज सुलभ है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३७२। २ झझट या झगडे का निबटेरा। चले आते हुए मामले का खातमा। जैसे,—उस मामले का अभी तक कुछ वारान्यारा नही हुआ।

वारापार—सज्ञा पु० [हिं० वारपार] ओर छोर। अत। उ०—(क) महिमा अपार काहू बोल को न वारापार बडी साहबी मे नाथ बडे सावधान हौ।—तुलसी ग्र०, पृ० २२६। (ख) वह खुद सब कुछ सह सकती थी, उसकी सहन शक्ति का वारापार न था, पर चक्रधर को इस दशा मे देखकर उसे दु ख होता था।—काया०, पृ० ३७६।

वारालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।

वारावस्कदी—सज्ञा पु० [स० वारावस्कन्दिन्] अग्नि।

वाराशि—सज्ञा पुं० [सं०] सागर। समुद्र।

वारासन—सज्ञा पु० [स०] तालाब। झील। [को०]।

वाराह[1]—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वाराही] १ दे० 'वराह'। २ काली मैनी का वृक्ष। ३ पानी के किनारे होनेवाला वेंत। अम्बुवेतस। ४ एक पहाड (को०)। ५ एक साम (को०)।

वाराह[2]—वि० १ शूकर सबधी। २ वराह अवतार सबधी [को०]।

वाराहकद—सज्ञा पुं० [स० वाराहकन्द] एक प्रकार का कद, जिसपर शूकर के समान बाल होते हैं।

वाराहकर्णी—स्त्री० [सं०] असगध। वराहकर्णा [को०]।

वाराहकल्प—सज्ञा पु० [सं०] एक कल्प (ब्रह्मा का दिन) का नाम जिसमे हम लोग रह रहे हैं (को०)।

वाराहद्वादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ शुक्ल द्वादशी (को०)।

वाराहपत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] अश्वगधा। असगध।

वाराहागी—सज्ञा स्त्री० [स० वाराहाङ्गी] दंती का पेड।

वाराही—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्राह्मणी आदि आठ मातृकाओ मे से एक मातृका का नाम। २ एक योगिनी का नाम। ३ वाराहीकद। ४ कँगनी। ५ श्यामा पक्षी। ६ सफेद भूकुष्माडा। बिलाई कद। विदारी कद। ७ शूकरी (को०)। ८ पृथ्वी (को०)। ९ एक प्रकार की माप (को०)।

वाराहीकद सज्ञा पु० [स० वाराहीकन्द] एक प्रकार का महाकद जो गेठी कहलाता है।

विशेष—कहते हैं, यह अनूप (जलप्राय) देश मे होता है। इसके कद के ऊपर सूअर के बालो के समान रोएँ होते हैं। इसका आकार प्राय गुड की भेली के समान होता है और इसके पत्ते कँटीले, बडे बडे तथा अनीदार होते हैं। वैद्यक मे यह चरपरा, कडुवा, बलकारक, पित्तजनक, रसायन, शुक्रजनक, वीर्यवर्धक, अग्निदीपक, मधुर, गरम, स्वर को शुद्ध करनेवाला, आयुवर्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ, वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र का नाशक माना है।

पर्या०—वाराही। चर्मकारालुक। विष्क्सेनप्रिया। वृष्टि। वदरा। कच्छा। वनमालिनी। गृष्टि। बिल्वमूला। शूकरी। क्रोडकन्या। कौमारी। त्रिनेत्रा। ब्रह्मपुत्री। क्रोडी। कन्या। माधवेष्टा। शूकरकद। वनवासी। कुष्ठनाशन। वल्य। अमृत। महावीर्य। शवरकद। वराहकद। वीर। ब्राह्मीकद। महौषध। सुकदक। वृच्छिद। व्याधिहता। मागधी।

वारि[1]—सज्ञा पु० [स०] १ जल। पानी। २ तरल पदार्थ। ३ हीवेर। सुगधवाला।

वारि[2]—सज्ञा स्त्री० १ वाणी। सरस्वती। २ हाथी के बाँधने की जजीर आदि। ३. हाथी के बाँधने का स्थान। ४ छोटा कलसा या गगरा। ५ हाथियो के पकडने का गड्ढा आदि (को०)। ६ बदी। कैदी (को०)। ७ वाक्। बोली (को०)।

वारि[3]—सज्ञा स्त्री० [हिं० वारा(=छोटा)] दे० 'बारी'। उ०—सुनहु वारि माधौनल कहई। इहि जग नेहु नही थिर रहई।—माधवानल०, पृ० १९७।

वारिकटक—सज्ञा पु० [स० वारिकण्टक] सिंघाडा (को०)।

वारिकफ—सज्ञा पु० [स०] समुद्र।

वारिकर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुभी। कुभिका (को०)।

वारिकर्पूर—सज्ञा पु० [स०] इलीश या हिलसा नाम की एक मछली (को०)।

वारिकुब्ज—सज्ञा पु० [स०] सिंघाडा।

वारिकुब्जक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वारिकुब्ज'।

वारिकूट—सज्ञा पु० [स०] नगरद्वार की रक्षा के लिये बना हुआ स्तूप का ढूहा (को०)।

वारिकोल—सज्ञा पु० [स०] कच्छप। कछुआ।

वारिक्रिमि—सज्ञा पुं० [स०] जलौका। जोक (को०)।

वारिगर्भ—सज्ञा पु० [स०] बादल (को०)।

वारिगृह—सज्ञा पुं० [स०] तालाब। पोखरा (को०)।

वारिचक्र—सज्ञा पु० [स०] जलावर्त। भँवर। उ०—तुझमे बहु वारिचक्र है, कितने कच्छप और नक्र हैं।—साकेत, पृ० ३३०।

वारिचत्वर—सज्ञा पुं० [स०] १ कुभी। जलकुभी। कुभिका। २ जलाशय (को०)।

वारिचर—सज्ञा पुं० [स०] १ पानी मे रहनेवाले जतु। २. मत्स्य। मछली। ३ शख।

वारिचरकेतु—सज्ञा पु० [स०] कामदेव। मीनकेतन।

वारिचामर—सज्ञा पु० [सं०] शैवाल। सेवार (को०)।

वारिचारी वि० [स० वारिचारिन्] जल मे रहनेवाला (जतु)।

वारिज[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. कमल। २. द्रोणी लवण। ३, मछली। ४ शंख। ५ घोघा। ६ कौडी। ७ ? उत्तम सुवर्ण। खरा सोना। ८ एक प्रकार का शाक। विशेष दे० 'गौर सुवर्ण' (को०)। ९ लौंग (को०)।

वारिज[2]—वि० जल मे उत्पन्न। जल मे होनेवाला (को०)।

वारिजात—सज्ञा पु० [स०] १ कमल। २ शख। ३ दे० 'वारिज'।

वारिजीवक—वि० [स०] जल से जीविका चलानेवाला (मल्लाह)।

वारित—वि० [स०] १ जो रोका गया हो, जो मना किया गया हो। निवारित। २ छिपाया हुआ। ढका हुआ (को०)।

वारितर—सज्ञा पु० [स०] उशीर। खस।

वारितस्कर—सज्ञा पु० [स०] १ बादल। २ सूर्य (को०)।

वारित्र—सज्ञा पु० [स०] निषिद्ध आचरण (को०)।

वारित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] छत्र। छाता (को०)।

वारिद[1]—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। बादल। २ भद्र मुस्तक। नागरमोथा। ३ एक गंधद्रव्य। सुगधवाला। बाला। ४ पितरो को जल देनेवाला (को०)।

वारिद्र—सज्ञा पु० [स०] चातक। पपीहा (को०)।

वारिधर—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। बादल। वारिवाह। २ भद्रमुस्तक। नागरमोथा।

वारिधार—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम (को०)।

वारिधारा—सज्ञा स्त्री० [स०] वृष्टि की बौछार। जल की वर्षा (को०)।

वारिधि—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र। २ जलपात्र (को०)।

वारिनाथ—सज्ञा पु० [स०] १ वरुण। २ समुद्र। ३ बादल। मेघ। ४ नाग लोक जहाँ सर्पों का निवास माना जाता है (को०)।

वारिनिधि—सज्ञा पु० [स०] समुद्र।

वारिपथ—सज्ञा पु० [स०] समुद्रयात्रा। जलयात्रा (को०)।

वारिपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जलकुभी। २ पानी की काई।

वारिपूर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वारिपर्णी' (को०)।

वारिपृश्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] जलकुभी।

वारिप्रवाह—सज्ञा पु० [स०] १ जल का प्रवाह या धारा। २ झरना। जलप्रपात (को०)।

वारिबदर—स० स्त्री० [स०] आँवला (को०)

वारिवालक—सज्ञा पु० [सं०] हीवेर नामक गधद्रव्य (को०)।

वारिभव—सज्ञा पु० [स०] १ शख। २. रसाजन। सौवीर [को०]।
वारिमसि—सज्ञा पुं० [सं०] बादल।
वारिमुक—सज्ञा पु० [स० वारिमुच्] बादल। मेघ।
वारिमूली—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वारिपर्णी' [को०]।
वारियत्र—सज्ञा पु० [स० वारियन्त्र] १. फौआरा। जलयत्र। २ जलघटिका। रहट (को०)।
वारियाँ—सज्ञा स्त्री० [हिं० वारी] निछावर। बलि।
क्रि० प्र०—जाना।
मुहा०—वारियाँ जाऊँ = तुझपर निछावर हूँ। (स्त्रियो का प्यार का वाक्य जो वे बातचीत मे लाया करती हैं)।
वारिर—सज्ञा पुं० [स०] मेघ। बादल [को०]।
वारिरथ—सज्ञा पुं० [स०] नौका। नाव। पोत। [को०]।
वारिराज—सज्ञा पुं० [स०] वरुण [को०]।
वारिराशि—सज्ञा पु० [स०] १ समुद्र। २ झील।
वारिरुह—सज्ञा पु० [स०] कमल।
वारिलोमा—सज्ञा पु० [स० वारिलोमन्] वरुण।
वारिवद—सज्ञा पु० [स० वारिवन्द] एक प्राचीन जनपद।
विशेष—यह कूचबिहार के उत्तर मे बताया जाता है।
वारिवदन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वारिवदर'।
वारिवर—सज्ञा पुं० [स०] करौदा।
वारिवर्णक—सज्ञा पु० [स०] रेत। बालू। सिकता।
वारिवर्त(५)—सज्ञा पु० [सं० वारि आवर्त्त] एक मेघ का नाम। उ०— सुनत मेघवर्तक साजि सैन लै आए। जलवर्त, वारिवर्त, पवनवर्त, वज्रवर्त, आगिवर्तक जलद सग लाए।—सूर (शब्द०)।
वारिवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कद [को०]।
वारिवास—सज्ञा पु० [स०] मद्य बनानेवाला। कलवार। कलार।
वारिवाह, वारिवाहन—सज्ञा पुं० [स०] १ मेघ। वारिधर। २ मुस्तक। माथा।
वारिवाही—सज्ञा पु० [स० वारिवाहिन्] मेघ। बादल।
वारिश—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।
वारिशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष का एक ग्रथ।
विशेष—यह ग्रथ गर्ग मुनि का रचा हुआ कहा जाता है। इससे यह निकाला जाता है कि किस स्थान मे कैसी वृष्टि होगी, और कब कब होगी।
वारिसभव—सज्ञा पु० [स० वारिसम्भव] १ लौंग। २ अजन विशेष। ३ खस की सुगधित जड। उशीर [को०]।
वारिस—सज्ञा पु० [अ०] १ दायाद। दायभागी पुरुष। २ वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी और उसके ऋण आदि का देनदार हो। उत्तराधिकारी। ३ रक्षक।
वारिसाम्य—सज्ञा पु० [स०] दुग्ध। दूध [को०]।
वारिसार—सज्ञा पु० [स०] भागवत पुराण के अनुसार चंद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।
वारीद्र—सज्ञा पु० [स० वारीन्द्र] समुद्र।
वारी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हाथी के बाँधने की जजीर या अंदुआ। २ कलसी। छोटा गगरा। दे० 'वारि'।
वारी[2]—वि० दे० 'वारा'।
वारी[3]—सज्ञा स्त्री० [स० बालिका > प्रा० बालिआ > हिं० बरी] छोटी उम्र की बालिका उ०—वारी सुकुमारी, दरिद्र, जर्जर लस्त को व्याह दी जाय। प्रेमघन०, भा० २, पृ० १८७।
वारी[4]—सज्ञा स्त्री० [हिं० पारी, बारी] बारी। अवसर। समय। उ०—साँकिया राज राँणा मक्ल, अकल पाँण छित्रियौ अमुर। लहर्‌स जाँण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर।—रा० रू०, पृ० १६।
वारीट—सज्ञा पुं० [स०] हाथी।
वारीफेरी—सज्ञा स्त्री० [हिं० वारना + फेरना] किसी प्रिय व्यक्ति के ऊपर कुछ द्रव्य, या और कोई वस्तु घुमाकर इसलिये छोडना या उत्सर्ग करना, जिससे उसकी सब बाधाएँ दूर हो जायँ। निछावर। (स्त्रियो का एक टोटका)। उ०—भुजन पर जननी वारीफेरी डारी। क्यो तोरचा कामल कर कमलन सभु सरासन भारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) क्योकि आपकी लेखनी विचारी कलम की कारीगरी पर वारीफेरी हो जाती है। —प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७।
क्रि० प्र०—डालना।
वारीश—सज्ञा पु० [स०] समुद्र।
वारुड—सज्ञा पु० [स० वारुण्ड] १ साँपो का राजा। २, नाव मे से पानी निकालने का बरतन। तसला। ३ कान की मैल। खूँट। ४ आँख का कीचड।
वारुडी—सज्ञा स्त्री० [स० वारुण्डी] द्वार की सीढी [को०]।
वारु—सज्ञा पुं० [स०] १ विजयहस्ति। विजयकुजर। जगी हाथी। २ अश्व। घोडा (को०)।
वारुक—वि० [स०] चयनकर्ता। चुननेवाला [को०]।
वारुठ—सज्ञा पुं० [स०] १ अतशय्या। मरण खाट। २ वह टिकठी जिसपर मुरदे को लेट कर ले जाते हैं। अरथी।
वारुण[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ जल। २ शतभिषा नक्षत्र। ३ भारतवर्ष के एक खड का नाम। (इसे आजकल 'वरनारक' कहते हैं।) ४ एक अस्त्र का नाम। ५ हरताल। ६ एक उपपुराण का नाम। ७ वरुण या बरुना नाम का पेड। ८ जलजतु (को०)। ९ पश्चिम दिशा [को०]।
वारुण[2]—वि० १ वरुण सबधी। वरुण का। २ जलीय। जलसबधी। ३ पश्चिमी [को०]।
वारुणक—सज्ञा पुं० [स०] एक जनपद का नाम।
वारुणकर्म—सज्ञा पुं० [स० वारुणकर्मन्] कूआँ, पोखरा, बावली आदि जलाशय बनवाने का काम।
वारुणकृच्छ्र—सज्ञा पुं० [स०] स्मृति के अनुसार एक व्रत, जिसमे महीने भर तक पानी मे घुला सत्तू खाकर रहते थे।
वारुणपाशक—सज्ञा पुं० [सं०] एक विशाल समुद्री जतु [को०]।
वारुणि—सज्ञा पुं० [स०] १ अगस्त्य मुनि। २ वसिष्ठ। ३ भृगु। ४ विनता के एक पुत्र का नाम। ५ एक जनपद का नाम। ६ दंतैला हाथी। ७. वारुण वृक्ष। बरुना का पेड़।

वारुणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मदिरा। शराब।

विशेष—कई प्रकार की मदिरा का नाम वारुणी है। जैसे,—पुनर्नवा (गदहपूरना) को पीसकर बनाई हुई, ताड या खजूर के रस मे बनी हुई, साठी धान के चावल और हड पीसकर बनाई हुई।

२. वरुण की स्त्री। वरुणानी। ३. उपनिषद् विद्या, जिसका उपदेश वरुण ने किया था। ४ पश्चिम दिशा। ५ शतभिषा नक्षत्र। ६ एक नदी का नाम। ७ भूईंआँवला। ८ गाँडर दूब। ९ घोडे की एक चाल। १०. इद्रवारुणी लता। इँदारुन की वेल। ११. हथिनी। १२ एक पर्व जो उस समय माना जाता है जब चैत महीने की कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र पडता है। इस दिन लोग गंगास्नान दान आदि करते हैं। १३. दूर्वा। दूब (को०)। १४. घोडे की गति का एक भेद (को०)। १५ एक नदी का नाम (को०)। १६ वृदावन के एक कदव का रस, जो वरुण की कृपा से बलराम जी के लिये निकला था। १७ कदंब के पके हुए फलो से बनाया हुआ मद्य।

वारुणीवर—सज्ञा पु० [स०] जैनो के अनुसार चौथे द्वीप और उसके समुद्र का नाम।

वारुणीवल्लभ—सज्ञा पु० [स०] वरुण देवता को०]।

वारुणीश—सज्ञा पु० [स०] विष्णु [को०]।

वारुण्य'—सज्ञा पु० [स०] भ्रम। भ्राति [को०]।

वारुण्य'—वि० १ वरुण संबधी। २. मदिरा सबंधी [को०]।

वारूढ़—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वारूढा] १ अग्नि। आग। २. पिंजरा (को०)। ३. सबल। पाथेय (को०)। ४ द्वार का पल्ला (को०)। ५. वस्त्र का छोर (को०)। ६ किनारा। तट (को०)।

वारेंद्र—सज्ञा पु० [स० वारेन्द्र] [स्त्री० वारेंद्री] गौड देश के एक प्राचीन जनपद का नाम जो आजकल के राजशाही जिले मे था।

वारेा—क्रि० वि० [स० बहिर्] दे० 'बाहर'। उ०—पाँण जोडे हुकुम पावै अतुर वारैं भरथ आवै ले चले हित लेख।—रघु० रू०, पृ० ११६।

वार्कजभ—सज्ञा पु० [स० वार्कजम्भ] १ एक साम का नाम। २ वृकजभ ऋषि का गोत्रज।

वार्कार्या—सज्ञा स्त्री० [स०] एक यज्ञ कर्म।

वार्क्ष'—वि० [स०] [वि० स्त्री० वार्क्षी] १. वृक्ष संबधी या वृक्ष का बना हुआ। २ वृक्षो से युक्त या घिरा हुआ (को०)।

वार्क्ष'—सज्ञा पु० १ वृक्ष की छाल का बना हुआ वस्त्र। २ वन। अरण्य। जगल (को०)।

वार्क्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रचेतागण की स्त्री मारिषा का नाम।

विशेष—इसका जन्म कुडु मुनि और प्रम्लोचा अप्सरा से हुआ था। कुडु मुनि गोमती के तट पर तप कर रहे थे। उनको तपोभ्रष्ट करने के लिये इद्र ने प्रम्लोचा को भेजा था। वह मुनि के आश्रम मे बहुत काल तक रही। जब मुनि को उसके छल का ज्ञान हुआ, तब वे अपने को धिक्कारने लगे। प्रम्लोचा शाप के भय से भागी। उसके शरीर से पसीना निकला, जो एक वृक्ष के ऊपर पडा। उसी से मारिषा उत्पन्न हुई। मारिषा को राजा ने प्रचेतागण को प्रदान किया, जिनसे दक्ष प्रजापति का जन्म हुआ।

वार्क्ष्य—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्क्ष' [को०]।

वार्गर—सज्ञा पु० [स०] श्यालक। साला [को०]।

वार्च—सज्ञा पु० [स०] हम।

वार्ड—सज्ञा पुं० [अ०] १ रक्षा। हिफाजत। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिये घेरकर बनाया हुआ स्थान। ३ नगर मे उसके महल्लो आदि का समूह, जो किसी विशिष्ट कार्य के लिये अलग नियत किया गया हो। ४ अस्पताल या जेल आदि के अदर के अलग अलग विभाग। ५ अलग अलग कमरा या विभाग आदि (को०)।

वार्डन—सज्ञा पु० [अं०] १ अभिभावक। २ छात्रावासो मे छात्रो के प्रतिपालक। ३ रक्षक। ४. जेल के भीतर का पहरेदार [को०]।

वार्डर—सज्ञा पु० [अ०] १ वह जो रक्षा करता हो। रक्षक २. जेल आदि के अदर का पहरेदार।

वार्णक—सज्ञा पु० [स०] लेखक।

वार्णिक—सज्ञा पु० [स०] लेखक।

वार्तक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्त्तक' [को०]।

वार्त्त'—सज्ञा पु० [स०] १ आरोग्य। निरामय। २ किसी वृत्ति या व्यवसाय मे लगा हुआ व्यक्ति। कामकाजी आदमी। ३ कुशलता। दक्षता (को०)। ४ भूमी। तुप। छिलका (को०)।

वार्त्त'—वि० १. स्वस्थ। निरोग। २ हलका। कमजोर। सारहीन। ३. वृत्तिशाली। जीविकाप्राप्त।

वार्त्तक—सज्ञा पु० [स०] बटेर पक्षी।

वार्त्ता—सज्ञा स्त्री० [स० वार्त्ता, वार्ता] १ जनश्रुति। अफवाह। २. संवाद। वृत्तात। हाल। ३. विषय। मामला। प्रसंग। बात। ४ चार विद्यावर्गो (आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्ता और दंडनीति) मे एक। ५ कथोपकथन। बातचीत।

यौ०—वार्त्तालाप।

५ वैश्य वृत्ति जिसके अतर्गत कृषिकर्म, वाणिज्य, गोरक्षा और कुसीद हैं।

यौ०—वार्ताकर्म = कृषि, व्यापार, गोपालन आदि वैश्यो के कार्य। ६ दुर्गा। ७ अन्य के द्वारा क्रय विक्रय होना। ८ ठहरना। रहना (को०)। ९ बैंगन। भाँटा (को०)। १० वृत्ति। आजीविका (को०)।

वार्त्ताक—सज्ञा पु० [स०] १ बैंगन। भटा। २ बटेर पक्षी।

यौ०—वार्त्ताकिशाकट, वार्ताकिशाकिन = बैंगन का खेत [को०]।

वार्त्ताकी—सज्ञा स्त्री० [स०] बैंगन। भंटा।

वार्त्ताकु—सज्ञा पु० [स०] बैंगन। भंटा।

वार्त्तानुकर्षक—संज्ञा पु० [स०] १ गुप्तचर। जासूस। २ दूत। चर। संदेशवाहक [को०]।

वार्त्तानुजीवी—सज्ञा पु० [सं० वार्त्तानुजीविन्] कृषि, गोरक्षा, व्यापार आदि द्वारा जीविका चलानेवाला। वैश्य [को०]।

वार्त्तापति—सज्ञा पु० [सं०] काम करानेवाला मालिक।

वार्तायन—सज्ञा पु० [स०] १ गूढ पुरुष। प्रणिधि। चर। २ दूत। एलची। सदेशवाहक।

वार्त्तारंभ—सज्ञा पुं० [स० वार्त्तारम्भ] व्यापार। रोजगार [को०]।

वार्त्तालाप—सज्ञा पु० [स०] बातचीत। कथोपकथन।

प्र०—करना।—होना।

वार्त्तावह—सज्ञा पु० [स०] १ पनसारी। २ समाचार ले जानेवाला। दूत। ३ नीति शास्त्र का वह भाग, जो आय व्यय से सबध रखता है। वार्त्ता।

वार्त्तावशेष—वि० [स०] मृत। मरा हुआ।

वार्त्तावृत्ति—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसकी जीविका वार्त्ता, कृषिकर्म पर आधृत हो। २. गृहपति। ३ वैश्य [को०]।

वार्त्ताशस्त्रोपजीवी—सज्ञा पु० [स० वार्त्ताशस्त्रोपजीविन्] केवल वाणिज्य या युद्ध व्यवसाय मे लगे रहनेवाले लोग।

विशेष—कौटिल्य ने लिखा है कि काबोज और सौराष्ट्र देशवाले अधिकतर ऐसे ही है।

वार्ता साहित्य—सज्ञा पु० [सं०] आख्यान। कथा साहित्य। उ०—जिसका उल्लेख सग्रह ग्रथो, वार्तासाहित्य, समकालीन कवियो की रचनाओ, ऐतिहासिक ग्रथो तथा हस्तलिखित प्रतियो मे मिलता है।—अकबरी,० पृ० ३८।

वार्त्तिक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टाथकारी विवेचक वाक्य या ग्रथ। जैसे,—पाणिनि की अष्टाध्यायी पर कात्यायन का वार्तिक, न्यायसूत्र के वात्स्यायन भाष्य पर उद्योतकर का न्याय वार्तिक।

विशेष—वृत्ति और भाष्य केवल मूल ग्रथ के आशय को स्पष्ट करते हैं, उसके बाहर कुछ नही कहते। पर वार्त्तिककार को पूर्ण स्वतत्रता रहती है। वह नई बातें भी कह सकता है।

२ वृत्ति या आचार शास्त्र का अध्ययन करनेवाला। उ०—वेदज्ञ, वैद्य, वैदेशिक, वार्त्तिक, वक्ता, व्यसनी, व्यावहारिक विद्यामत। —वर्ण०, पृ० १०। ३ दूत। चर। ४ वैद्य (को०)। ५ बटेर पक्षी (को०)। ६ किसान (मुख्यत वैश्य)। ७ व्यवसायी। व्यापारी (को०)। ८ विवाह का भोजन (को०)। ९ भटा। बैंगन (को०)।

वार्तिक[1]—वि० १ सदेश लानेवाला। दूत। सदेशवाहक। २ समाचार सबधी। व्याख्यात्मक [को०]।

वार्त्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यापार। वाणिज्य। २ खबर। समाचार [को०]।

वार्त्तीक, वार्तीर—सज्ञा पुं० [स०] बटेर पक्षी का एक भेद।

वार्त्रघ्न[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ अर्जुन। २ जयत।

वार्त्रघ्न[2]—वि० वृत्रघ्न सबधी। इद्र सबधी। [को०]।

वार्त्रतूर—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

वार्द—सज्ञा पुं० [स० वार्द्] मेघ। बादल।

वार्दर—सज्ञा पु० [स० वार्द्दर] १ दक्षिणावर्त शख। २ जल। ३ घोडे के गले पर की दाहिनी ओर की भौरी। ४ आम की गुठली। ५ रेशम। ६ जल। ७ कार्कचिचा।

वार्दल—सज्ञा पुं० [स०] १ मेघाच्छन्न दिवस। दुर्दिन। वर्षा का दिन। २ मसिपात्र। ३ मसि। स्याही [को०]।

वार्दालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पौधा [को०]।

वार्द्धक—सज्ञा पु० [स०] १ बुढापा। वृद्धावस्था। २ बुढापे के कारण होनेवाली कमजोरी (को०)। ३ वृद्ध जनो का समूह या मडली (को०)।

वार्द्धक्य—सज्ञा पुं० [स०] १ बुढापा। २ वृद्धि। बढती। ३ बुढापे की कमजोरी (को०)।

वार्द्धि—सज्ञा पु० [स०] समुद्र।

वार्द्धिभव—सज्ञा पुं० [स०] समुद्री नमक। द्रोणी लवण [को०]।

वार्द्धुक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वार्द्धक' [को०]।

वार्द्धुप—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्द्धुषि'।

वार्द्धुषि—सज्ञा पुं० [स०] बहुत अधिक ब्याज लेनेवाला।

वार्द्धुषिक—सज्ञा पु० [स०] बहुत अधिक सूद लेनेवाला। सूदखोर।

वार्द्धुषी[1]—सज्ञा पुं० [स० वार्द्धुषिन्] सूदखोर। वार्द्धुषिक [को०]।

वार्द्धुषी[2]—सज्ञा स्त्री० सूदखोरी [को०]।

वार्द्धुष्य—सज्ञा पुं० [स०] अन्न को अधिक ब्याज पर देने का व्यवसाय। बिसार।

वार्द्धेय—सज्ञा पुं० [स०] समुद्री लवण [को०]।

वार्द्धर्य—सज्ञा पुं० [स०] वृद्धता। बुढापा [को०]।

वार्द्ध्र—सज्ञा पुं० [स०] चमड़े की बद्धी। तसमा।

वार्द्ध्री—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वार्द्ध्र' [को०]।

वार्द्ध्रीणस—सज्ञा पुं० [स०] १ गैंडा। २ वह बधिया बकरा जिसका रग सफेद हो और जिसके कान इतने लबे हो कि पानी पीते समय पानी से छू जायँ। ३ एक प्रकार का पक्षी जिसका सिर लाल, गला नीला और शेष शरीर काला कहा गया है। प्राचीन काल मे इस पक्षी का बलिदान विष्णु के उद्देश्य से होता था।

वार्धनी—सज्ञा पुं० [स०] जलपात्र। घडा [को०]।

वार्धि—सज्ञा पु० [सं०] समुद्र [को०]।

वार्धुषिक—सज्ञा पु० [सं०] कम दाम पर वस्तु खरीदकर अधिक दाम पर बेचने का व्यवसाय करनेवाला। खरीद फरोख्त का रोजगारी। बनिया। (स्मृति)।

वार्निश—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'बारनिश'। लकडी आदि की बनी वस्तुओ मे खूबसूरती और चमक लाने के लिये लगाया जानेवाला रोगन। उ०—(क) रमा ने मुरदर की जोडी देखी। उसपर वार्निश थी, साफ सुथरी, मानो अभी किसी ने फेरकर रख दिया हो।—गबन, पृ० २३४। (ख) वे मार्मिक से मार्मिक प्रत्यक्ष दृश्य के सामने वार्निश किए हुए काठ के कुदे या गढी हुई पत्थर की मूर्ति के समान खडे रह जायगे।—चिंतामणि, भा० २, पृ० २१२।

वार्वट—सज्ञा पुं० [स०] नाव [को०]।

वार्भट—सज्ञा पुं० [स०] घडियाल।

वामण—सज्ञा पुं० [स०] कवचो का समूह [को०]।

वार्मिण—सज्ञा पु० [स०] कवच धारण करनेवालो का दल [को०]।

वार्मुच—सज्ञा पुं० [स० वार्मुच्] १ बादल। २. मुस्तक। मोथा।

वार्य[1]—वि० [स०] १ जो रोका जा सके। जिसका निवारण हो सके। वारणीय। २ जिसे वारण करना हो। जिसे रोकना हो। ३ वारि सबधी। जल सबधी [को०]।

वार्य[2]—सज्ञा पुं० १ आशीर्वाद। वरदान। २ जायदाद। सपत्ति। ३. दीवार [को०]।

वार्युद्भव—सज्ञा पुं० [स०] जलज। कमल [को०]।

वार्योका—सज्ञा स्त्री० [स० वार्योकस्] जोक ।

वार्वट—सज्ञा पुं० [स०] नौका । नाव । बेडा ।

वार्वणा—सज्ञा स्त्री० [स०] नीले रंग की मक्खी ।

वार्ष—वि० [स०] १ वर्षा सबंधी । २. वार्षिक [को०] ।

वार्षक—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार पृथ्वी के दस भागो मे से एक भाग का नाम, जिसे सुद्युम्न ने विभक्त किया था ।

वार्षगण—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार के वैदिक आचार्य ।

वार्षभ—वि० [सं०] वृषभ सबधी । बैल संबंधी [को०] ।

वार्षभानवी—सज्ञा स्त्री० [स०] वृषभानु की पुत्री । राधा [को०] ।

वार्षल—वि० [स०] शूद्र सबधी । शूद्र का कार्य, पेशा आदि [को०] ।

वार्षलि—सज्ञा पु० [स०] शूद्रा का पुत्र ।

वार्षाहर—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम ।

वार्षिक[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वार्षिकी] १ वर्ष सबंधी । २. जो प्रतिवर्ष होता हो । सालाना । ३ वर्षाकाल मे होनेवाला । ४. एक वर्ष तक रहनेवाला [को०] ।

वार्षिक[2]—सज्ञा पुं० [स०] त्रायमाणा नाम की एक लता, जिसका प्रयोग ओषधि के रूप मे होता है ।

वार्षिकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बेले का फूल । २ वह नदी जिसमे साल भर पानी रहता है (को०) । ३. प्रति वर्ष नियमित रूप से होनेवाली पूजा आदि (को०) ।

वार्षिक्य[1]—सज्ञा पु० [स०] वर्षा ऋतु [को०] ।

वार्षिक्य[2]—वि० वर्षा सबंधी [को०] ।

वार्षिला—सज्ञा स्त्री० [स०] ओला । करका । पत्थर ।

वार्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्षा ऋतु [को०] ।

वार्षुक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वार्षुकी] बरसालू । वर्षणशील । बरसनेवाला [को०] ।

वार्ष्ण—सज्ञा पुं० [स०] कृष्णचद्र ।

वार्ष्णि—सज्ञा [स०] कृष्ण [को०] ।

वार्ष्णेय—सज्ञा पुं० [स०] १. वृष्णि की सतान । २. कृष्णचद्र । ३ नल का सारथी (को०) ।

वार्हं—वि० [स०] [वि० स्त्री० वार्ही] दे० 'बार्हं' [को०] ।

वार्हत—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का बगन । बृहती फल [को०] ।

वार्हद्रथ—सज्ञा पु० [स०] बृहद्रथ का पुत्र, जरासध ।

वार्हद्रथि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्हद्रथ' [को०] ।

वार्हस्पत—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्हस्पत' ।

वार्हस्पत्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वार्हस्पत्य' [को०] ।

वार्हिण—वि० [स०] मयूर सबधी । दे० 'बार्हिण' ।

वालंटियर—सज्ञा पुं० [अ०] १. वह मनुष्य जो बिना किसी पुरस्कार या वेतन के किसी कार्य मे अपनी इच्छा से योग दे । स्वयं-सेवक । स्वेच्छा सेवक । २. वह सिपाही जो बिना वेतन के अपनी इच्छा से फौज मे सिपाही या अफसर का काम करे । वल्लमटेर ।

वाल[1]—सज्ञा स्त्री० [स० बाला] युवती स्त्री । बाला । उ०—सुभत केश बालय । सारत्त ज्यौ सेवालय ।—पृ० रा०, ६१ । १८८३ ।

वाल[2]—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बाल' ।

वालक—सज्ञा पु० [स०] १ बालछड । २. कंकण । कगन । अगूठी । ३ घोडे या हाथी की पूँछ (को०) । दे० 'बालक' ।

वालखिल्य—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'बालखिल्य' । २. ऋग्वेद की ११ ऋचाएँ ।

वालदैन—सज्ञा पु० [अ०] माता पिता । माँ बाप ।

वालधान—सज्ञा पु० [स०] बालधि । पूँछ ।

वालधि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पूँछ । पुच्छ । २ भैसा । महिष । ३. एक ऋषि [को०] ।

वालनाटक—सज्ञा पुं० [स०] एक तरह का निम्नकोटि का अन्न वा कदब [को०] ।

वालपाशक—सज्ञा पुं० [स०] हाथी की पूँछ का एक भाग [को०] ।

वालपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] मूँछ [को०] ।

वालप्रिय—सज्ञा पुं० [स०] गाय की जाति का एक पशु । चमरी गाय [को०] ।

वालरा[1]—सज्ञा पुं० [देश०] विशेष ढग से की जानेवाली खेती । उ०—पहाडो के ढेलो आदि पर, जहाँ हल नही चलाए जा सकते, भील लोग जगह जगह लकडियाँ काटकर उनके ढेर लगाते और उनको जला देते हैं, जिसकी राख खाद का काम देती है फिर, वे लोग वहाँ की जमीन को खोदकर उसमे मक्का वगैरह अन्न बोते हैं । ऐसी खेती को वालरा (वल्लर) कहते है ।—राज० इति०, पृ० १४३४ ।

वालव—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष मे एक करण का नाम ।

वालव्यजन—सज्ञा पु० [स०] १ चामर । चँवर । २ छोटा पखा । उ०—यह माला, यह मल्लिका का वालव्यजन क्या होगा—मेरा दिनभर का परिश्रम ।—राज्यश्री, पृ० ८ ।

वालहस्त—सज्ञा पु० [स०] वालधि । पूँछ [को०] ।

वाला[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ इद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के मेल से बने हुए उपजाति नामक सोलह प्रकार के वृत्तो मे से एक, जिसके पहले तीन चरणो मे दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते है, तथा चौथे चरण मे और सब वही रहता है, केवल प्रथम वर्ण लघु होता है । जैसे,—राखौ सदा शभु हिए अखडा । बाधौ सबै शूर तनै जु दडा । धारो विभूती तन अच्छमंडा । नसै सबैई अघ ओघ चडा । २ नारियल (को०) ३ । दे० 'बाला' ।

वाला[2]—वि० [फा० बालह्] १ प्रतिष्ठित । मान्य । २. उच्च । उत्तुंग । श्रेष्ठ । उत्तम [को०] ।

यौ०—दे० 'बाला' शब्द मे ।

वालाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पौधा, जिसके फूलो के दल आँख के आकार के लगते हैं ।

वालाग्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन मान जो आठ रज का माना जाता था । उ०—आठ रज का वालाग्र होता है ।—बृहत्सहिता पृ० २८६ । दे० 'बालाग्र' ।

वालि—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बालि' ।

वालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'बालिका' । २ बालुका । बालू । ३ कान का एक गहना । बाला । बाली । ४. इलायची । ५. मुहर । मुद्रा (को०) ।

वालिखिल्ल(पु)—संज्ञा पु० [सं० वालखिल्य] दे० 'वालखिल्य'।

वालिद—संज्ञा पु० [अ०] पिता। बाप।

वालिदा—संज्ञा स्त्री० [अ० वालिदह्] माता। माँ।

वालिदैन—संज्ञा पु० [अ०] माँ बाप। उ—देखता वालिदैन अपने मकमूर हाल। परेशान अपने भी फिकर लग दुवाल।—दक्खिनी०, पृ० २६८।

वालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्विनी नक्षत्र [को०]।

वालिभ(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वल्लभ] दे० 'वल्लभ'। उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहु अकथथ्य। जिए चढ्या दल उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ।—ढोला०, दू० १६६।

वाली'—संज्ञा पु० [सं० वालिन्] बंदरों का एक राजा जो सुग्रीव का बड़ा भाई और अंगद का पिता था।

विशेष—पुराणों में इसकी उत्पत्ति इंद्र के वीर्य से कही गई है। विशेष दे० 'बालि'।

वाली'—संज्ञा पु० [अ०] १ मित्र। सखा। २ शासक। हाकिम। उ०—वह वाला वाली इस घर का। है खालिक सब बहरो बर का।—दक्खिनी०, पृ० २२३।

वालुक—संज्ञा पु० [सं० वालुङ्क] एक प्रकार की ककड़ी [को०]।

वालु—संज्ञा पु० [सं०] एक गंध द्रव्य।

वालुक'—संज्ञा पु० [सं०] १ एक गंध द्रव्य। २ पनियालू।

वालुक'—वि० १ बालू की तरह का। २ नमक से बना हुआ [को०]।

वालुकाबुधि—संज्ञा पु० [सं० वालुकाम्बुधि] बालू का समुद्र, मरुस्थल। रेगिस्तान [को०]।

वालुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बालू। रेत। २ शाखा। ३ हाथ पैर। ४. ककड़ी। ५ कपूर। ६ चूर्ण (को०)।

वालुकात्मिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] चीनी। शर्करा [को०]।

वालुकाप्रभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक नरक का नाम।

वालुकाब्धि—संज्ञा पु० [सं०] रेगिस्तान। मरुभूमि।

वालुकायंत्र—संज्ञा पु० [सं० वालुकायन्त्र] औषध सिद्ध करने का एक प्रकार का यंत्र। दे० 'बालुका यंत्र'।

वालुकार्णव—संज्ञा पु० [सं०] मरुभूमि। रेगिस्तान [को०]।

वालुकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ककड़ी।

वालुकेल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लवण [को०]।

वालुकेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] शिव [को०]।

यौ०—वालुकेश्वर तीर्थ = बंबई के पास का एक तीर्थ स्थान।

वालूक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का विष।

वालेय'—संज्ञा पु० [सं०] १ गधा। २ पुत्र। ३ एक प्रकार का करंज। अंगारवल्लरी।

वालेय'—वि० [सं०] दे० 'बालेय'' [को०]

वाल्क—संज्ञा पु० [सं०] क्षौमादि वस्त्र। वल्क से बना वस्त्र।

वाल्कल'—वि० [सं०] वल्कल का। छाल का।

वाल्कल'—संज्ञा पुं० दे० 'वाल्क'।

वाल्कली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मदिरा। गौड़ी मद्य।

वाल्गुक—वि० [सं०] बहुत सुंदर [को०]।

वाल्गुद—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का चमगादड़ [को०]।

वाल्मिकि, वाल्मीक, वाल्मीकि—संज्ञा पु० [सं०] एक मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि कहे जाते हैं।

विशेष—इनका जन्म भृगु वंश में हुआ था। ये प्रचेता के वंशज थे और तमसा नदी के किनारे, जिसे अब टौंस कहते हैं, रहते थे। ये एक बार अपने शिष्यों सहित नदी तट पर स्नान करने गए। वहाँ शिष्यों को घाट पर स्नान संध्या करने के लिये छोड़कर नदी के किनारे टहल रहे थे कि इसी बीच में एक निषाद ने एक क्रौंच को मारा। क्रौंच रक्त में लथपथ भूमि पर गिर पड़ा और क्रौंची चिल्लाने लगी। यह घटना देखकर मुनि के मुँह से यह वाक्य निकल गया—'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगम शाश्वती समा। यत्क्रौञ्च मिथुनादेकमवधी काममोहितम्।' यह वाक्य विशुद्ध वर्णयुक्त सुंदर अनुष्टुभ् था। यह छंद मुनि को इतना रुचिकर हुआ कि उन्होंने समस्त रामायण महाकाव्य इसी छंद में रच डाला।

वाल्मीकीय—वि० स्त्री० [सं०] १ वाल्मीकि संबंधी। वाल्मीकि की। २ वाल्मीकि की बनाई हुई।

वाल्लभ्य—संज्ञा पु० [सं०] प्रियता। प्यार। वल्लभता [को०]।

वाल्हा(पु)'—संज्ञा पु० [सं० वल्लभ] बालम। प्रिय। स्वामी। उ०—वाल्हा सेज हमारे रे, तूँ आव हूँ वारी रे, हूँ दासी तुम्हारी रे।—दादू०, पृ० ५०४।

वाल्हा'—संज्ञा स्त्री० [सं० वल्लभा] पत्नी। प्रिया। उ०—वाल्हा हूँ ताहरी, तूँ माहरो नाथ। तुम तू पहली प्रीतडी, पूरिवलो साथ।—दादू० पृ० ३८६।

वावदूक—संज्ञा पु० [सं०] १ अच्छा बोलनेवाला। वक्ता। वाग्मी। २ बहुत बकनेवाला। बकवादी।

वावदूकता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वाग्मिता।

वावय—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की तुलसी का पौधा [को०]।

वावसू(पु)—संज्ञा पु० [देश०] चर। दूत। जासूस। उ०—इतरे अस खड आविया, सब वावसू सताव। अकबर कहियो आवते, बहियो साह निवाब।—रा० रू०, पृ० १०८।

वावात—वि० [सं०] प्रिय। चहेता [को०]।

वावाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] राजा की वह प्रिया पत्नी जो शूद्र जाति की होती थी। उ०—उस समय राजा को चार स्त्रियाँ रखने का अधिकार था, महिषी (पटरानी), परिवाक्त्री (उपेक्षिता), वावाता (प्रिया) तथा पालागली (किसी दरबारी अफसर की लड़की)।—प्रा० भा० प०, पृ० १८५।

वावुट—संज्ञा पु० [सं०] नाव। बेड़ा। डोंगी [को०]।

वावू(पु)—संज्ञा, पु० [सं० वायु] दे० 'वायु'। उ०—खोजे वावू हत्थडा, धूडि भरेसी मूठि।—ढोला० दू० ३६१।

वावृत्त—वि० [सं०] छाँटा गया। चुना गया। पसंद किया गया [को०]।

वावैला—संज्ञा पु० [अ०] १. विलाप। रोना पीटना। २ शोरगुल। हल्ला। चिल्लाहट।

क्रि० प्र०—करना।—मचाना।—होना।

वाश'—संज्ञा पु० [सं०] अड़ूसा। वासक।

वाश'—वि० १. बहुत रोनेवाला। रोना। २. निवेदित।

वाश[3]—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम ।

वाशक—सज्ञा पु० [स०] १. चिल्लानेवाला । निनादकारी । २ रोनेवाला । ३ अडूसा ।

वाशन[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पक्षियो का बोलना । २ मक्खियो का भिनभिनाना ।

वाशन[2]—वि० १ चिल्लानेवाला । शब्द करनेवाला । २ चहचहानेवाला ३ भिनभिनानेवाला ।

वाशा—सज्ञा स्त्री० [स०] वासक । अडूसा ।

वाशि—सज्ञा पुं० [स०] अग्नि । आग ।

वाशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा

वाशित[1]—सज्ञा पुं० [स०] पशु पक्षी आदि का शब्द ।

वाशित[2]—वि० १. दे० 'वासित' । २ शब्दित । पुकारा हुआ । (को०) ।

वाशिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्त्री । २ हथिनी । ३ पत्नी [को०] ।

वाशितागृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] जवान हथिनी [को०] ।

वाशिष्ठ[1]—सज्ञा पु० [स०] १. एक उपपुराण का नाम । २ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वाशिष्ठ[2]—वि० [स०] वशिष्ठ सबधी । वशिष्ठ का ।

वाशिष्ठी—सज्ञा स्त्री० [स०] गोमती नदी ।

वाशी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुल्हाडी । कुठार । २ ध्वनि । स्वर । ३ युद्ध का निनाद [को०] ।

वाशुरा—सज्ञा स्त्री० [स०] रात । रात्रि [को०] ।

वाश्र—सज्ञा पु० [स०] १. मदिर । निवास । २ चौराहा । ३. दिन । दिवस (को०) । ४ वृषभ । बैल (को०) । ५ गोबर (को०) ।

वाश्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. माता । २ बछडे सहित गाय [को०] ।

वाष्कल[1]—सज्ञा पु० [स०] वीर । योद्धा [को०] ।

वाष्कल[2]—वि० महान् । बडा [को०] ।

वाष्प—सज्ञा पु० [स०] १ लोहा । २. आंसू । ३. भाप । भाफ । ४. कटकारि । भटकटैया ।

यौ०—वाष्पदुर्दिन = अश्रुभरी (आंखें) । वाष्पमुख = आंसू से जिसका मुंह गीला हो । वाष्पमोक्ष, वाष्पमोक्षण = अश्रुपात । रुदन । (अन्य यौ० शब्दो के लिये देखें 'बाष्प' शब्द) ।

वाष्पक—सज्ञा पु० [स०] १. मरसा नाम का साग । २. दे० 'बाष्पक' ।

वाष्पयान—सज्ञा पु० [स०] भाप की शक्ति से चलनेवाला यान । रेलगाडी । उ०—रेडियो, तार औ 'फोन',—वाष्प, जल, वायुयान, मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान मान । —ग्राम्या, पृ० ८८ ।

वाष्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] हिंगुपत्री ।

वाष्पी, वाष्पीका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वाष्पिका' [को०] ।

वासत[1]—सज्ञा पुं० [स० वासन्त] १. ऊंट । २ कोकिल । ३ मलय वायु । ४ मूंग । ५ मैनफल । ६ लपट या दुराचारी व्यक्ति (को०) । ७ जवान हाथी या कोई भी जवान पशु (को०) ।

वासत[2]—वि० १ बसती । वसंत ऋतु का । वसत सबधी । २ युवा । जीवन के वसत मे वर्तमान । युवक । ३. कार्यतत्पर । काम मे सलग्न [को०] ।

वासत[3]—सज्ञा पुं० [स० वसन्त] दे० 'वसत' । उ०—वासत बिना इन सकल बुधि सब्ब मनोरथ रह्यौ मन ।—पृ० रा०, ५८ । ८१ ।

वासतक—वि० [स० वासन्तक] १. वसत सबधी । २ वसंत ऋतु मे बोया हुआ ।

वासतिक[1]—सज्ञा पुं० [स० वासन्तिक] १. भाँड । विदूषक । २ नाचनेवाला । नर्तक । अभिनेता ।

वासतिक[2]—वि० वसंत संबधी ।

वासतिकता—सज्ञा स्त्री० [सं० वासंतिकता] वसत सबधी होने का भाव । आनद । मौज ।

वासती—सज्ञा स्त्री० [स० वासन्ती] १. माधवी लता । २ जूही । ३ एक पुष्प जो जूही की जाति का होता है । यह वसत ऋतु मे ही फूलता है और सुगधित होता है । नेवारी । ४ गनियारी नामक फूल । ५ मदनोत्सव । ६ दुर्गा । ७. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चौदह वर्ण (म, त, न, म, ग ग) होते हैं, जिनमे ६, ७, ८ और ९ वां वर्ण लघु और शेष गुरु होते है ।

वासदर Ⓤ—सज्ञा पु० [स० वैश्वानर, प्रा० वइसाणर, वइस्साणर, अप० वासदर, वंसदर] अग्नि । वंसदर । उ०—का वासदर सेवियइ, कइ तरुणी, कइ मंद ।—ढोला०, दू० २९४ ।

वास—सज्ञा पु० [स० वासस्] दे० 'वासस्' ।

यौ०—वास कुटी = रावटी । खेमा । तबू । २. वास खड = वस्त्र का टुकडा ।

वास—सज्ञा पु० [स०] १ अवस्थान । रहना । निवास । उ०—गोदावरी तीर पर प्रभु ने दडक वन मे वास किया ।—साकेत, पृ० ३७८ ।

क्रि० प्र०—करना ।—होना ।

यौ०—कारावास । तीर्थवास । कल्पवास । कैलाशवास । वैकुठवास ।

२ गृह । घर । मकान । ३. स्थान । स्थल । जगह । स्थिति (को०) । ४. वासक । अडूसा । ५ एक दिन की यात्रा (को०) । ६. वासना । भावना (को०) । ७ सकाश । औपम्य । सादृश्य (को०) । ८. सुगध । बू ।

यौ०—वासकर्णी । वासगृह = गृह का भीतरी हिस्सा । शयनकक्ष । वासताबूल = सुगधित पान । वासपर्यय । वासप्रासाद = महल । वासभवन, वासमदिर, वाससदन = निवासस्थान । घर । वासयष्टि । वासयोग = सुगधित चूर्ण । पाउडर । वाससज्जा = दे० 'वासकसज्जा' ।

वासक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ अडूसा । २ गान का एक अग ।

विशेष—शकर के मत से मनोहर, कदर्प, चारु और नदन नामक इसके चार भेद है । कोई कोई विनोद, वरद, नद और कुमुद को इसका भेद मानते हैं ।

३. वासर । दिन । ४ शालक राग का एक भेद । ५ वस्त्र । ६. गध । सुगधद्रव्य (को०) । ७ शयनागार शयनकक्ष (को०) ।

वासक Ⓤ[2]—सज्ञा पु० [स० वासुकि] दे० 'वासुकि' । उ०—एक दत पाताल चलावा । तहाँ जाय वासक को खावा ।—कबीर सा० पृ० ८०२ ।

वासक[1] –वि० [स०] [वि० स्त्री० वासका, वासिका] १ सुवासित करनेवाला। सुगधित करनेवाला। २ बसानेवाला बसने के लिये प्रेरित करनेवाला [को०]।

वासकर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह कक्ष जहाँ सार्वजनिक प्रदर्शन, नृत्य, गीत, कुश्ती आदि किए जायँ। २ यज्ञशाला [को०]।

वासकसज्जा—सज्ञा स्त्री० [स०] नायिका भेद के अनुसार वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो।

वासकसज्जिका –सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वासकसज्जा' [को०]।

वासका—पज्ञा स्त्री० [स०] अडूसा।

वासकेट—सज्ञा पु०, स्त्री० [अ० वेस्टकोट] एक प्रकार की छोटी बडी या कमर तक की कुरती जिससे केवल पीठ, छाती और पेट ढकता है।

विशेष—इसमे आस्तीन नही होती। आगे और पीछे के कपडो मे भेद होता है। इसे कसने के लिये पीछे बकसुएदार दो बद होते है।

२ एक प्रकार की बडी जिसमे आस्तीन नही होती। यह एक ही कपडे की बनती है। इसे जवाहर बडी भी कहते है।

वासत—सज्ञा पुं० [स०] गर्दभ। गदहा।

वासतेय—वि० [स०] वस्ती के योग्य। रहने लायक।

वासतेयी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रात। रात्रि। २ रहने की जगह। घर। निवास (को०)।

वासन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वासित] १ सुगधित करना। बासना। धूपन। २ वस्त्र। ३ वास। निवास। ४ ज्ञान। ५ वसना। निवास करना (को०)। ६ आच्छादन। गिलाफ। लिफाफा (को०)। ७ कोई पात्र, आधार, टोकरी, सदूक, बर्तन आदि (को०)। ८ योग की एक मुद्रा (को०)।

वासना[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रत्याशा। २ ज्ञान। ३ किसी पूर्व स्थिति के जमे प्रभाव से उत्पन्न मानसिक दशा। भावना। सस्कार। स्मृति हेतु। ४ न्याय के अनुसार देहात्म बुद्धिजन्य मिथ्या सस्कार। ५ इच्छा। कामना ६ दुर्गा। ७ अर्क की पत्नी। ७ सुगधित करने या बासने की क्रिया (को०)। ८ प्रमाण। उपपत्ति (गणित मे)।

वासना[2]—क्रि० स० दे० 'बासना'।

वासना[3]—सज्ञा स्त्री० [सं० वास] सुगध। खुशबू। उ०—बिन वासना को फूल कहो कौन काम को।—कबीर म०, पृ० ३६३।

वासनात्मक—वि० [स० वासना] वासनामय। वासनायुक्त। उ०—वासनात्मक अवस्था मे इन दोनो के विषय सामान्य रहते हैं। —रस०, पृ० ७५।

वासनामय –सज्ञा पुं० [सं०] सस्कारजन्य। भावना से युक्त [को०]।

वासनीय—वि० [सं०] दुर्बोध। अत्यत क्लिष्ट [को०]।

वासपर्यय—सज्ञा पु० [स०] स्थान बदलना। स्थानपरिवर्तन [को०]।

वासयष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] चिडियो के बैठने का अड्डा। छतरी [को०]।

वासर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ दिन। दिवस। उ०—यह तारक जो खचे रचे, निशि मे वासर बीज से बचे।—साकेत, पृ० १२२। २. क्रम। वारी (को०)। ३ एक नाग का नाम (को०)। ४ वह घर जिसमें विवाह हो जाने पर स्त्री पुरुष पहली रात को सोते है।

वासर[2]—वि० प्रभात सबधी। प्रात कालीन (को०)।

वासरकन्यका—सज्ञा स्त्री० [स०] रात्रि।

वासरकृत्—सज्ञा पु० [स०] सूर्य [को०]।

वासरमणि –सज्ञा पुं० [स०] सूर्य।

वासरसग—सज्ञा पु० [स० वासरसङ्ग] प्रातःकाल।

वासराधीश –सज्ञा पुं० [स०] दिन का स्वामी। सूर्य [को०]।

वासरेश –सज्ञा पु० [स०] सूर्य [को०]।

वासव[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ धनिष्ठा नक्षत्र।

यौ० –वासवचाप = इद्रधनुष। वासवज = इद्र का पुत्र—१ अर्जुन। (२) वालि। (३) जयत। वासवदत्ता = (१) सुबधु का सस्कृत गद्य काव्य (२) वत्सराज उदयन की महिषी। वासवदिक्, वासवदिशा = पूर्वदिशा जिसका अधिपति इद्र है।

वासव[2]—वि० १ वसु सबधी। २ इद्र सबधी। इद्र का [को०]।

वासवानुज सज्ञा पुं० [स०] १ उपेंद्र। विष्णु। २. कृष्णचद्र।

वासवार –सज्ञा पु० [देशी०] घोडा। तुरग।—देशी०, पृ० २९६।

वासवावरज—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु [को०]।

वासवावास—सज्ञा पु० [स०] आकाश। गगन [को०]।

वासवाशा—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्र की दिशा। पूर्व दिशा।

वासवि—सज्ञा पुं० [स०] इद्र के पुत्र—१ अर्जुन। २ वालि। ३ जयत।

वासवी—पज्ञा स्त्री० [स०] व्यास की माता सत्यवती। मत्स्यगधा।

वासवेय—सज्ञा पु० [स०] वासवी के पुत्र, वेदव्यास।

वासस्—सज्ञा पुं० [स०] १ वस्त्र। कपडा। २ आच्छादन। परदा (को०)। ३ प्रेत पट। आच्छादन (को०)। ४ बाणपुंख। तीर के पिछले भाग मे लगाया जानेवाला पर (को०)। ५ रुई। कपास (को०)। जाल। सूत्रजाल (को०)।

वासा[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वासक। अडूसा। उ०—वासा यह तरु पै तुम्हैं वासा वासर येक।—दीन० ग्र०, पृ० १०१। २ बासती। माधवी लता।

वासा[2]—सज्ञा पुं० दे० 'बासा'।

वासात्य—वि० [सं०] उप कालीन। उषाकाल का [को०]।

वासायनिक—वि० [स०] दरवाजे दरवाजे घूमनेवाला [को०]।

वासि—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का कुठार। बसूला। २. निवास। वास करना। रहना (को०)।

वासिक—वि० [अ० वासिक] मजबूत। दृढ़ [को०]।

वासिका –सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वासक' [को०]।

वासित[1]—वि० [सं०] १ सुगधित किया हुआ। महकाया हुआ। २ वस्त्राच्छादित। कपडे से ढका हुआ। ३ जो ताजा न हो। बासी। ४. ख्यात। प्रसिद्ध (को०)। ५ जो रोका गया हो। ठहराया हुआ (को०)। ६. बसाया हुआ। आबाद (को०)। ७. मसालेदार (को०)। ८. आर्द्र। तर। भिगोया हुआ (को०)।

वासित[१]—सज्ञा पुं० १. पक्षियो की चहचहाहट। कलरव। २ स्मृति-जन्य ज्ञान। वासना (को०)।

वासित[१]—वि० [अ०] मध्यवर्ती। बीच का (को०)।

वासिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. स्त्री। २ हथिनी। ३ दे० 'वाशिता'। ४ चद्रशेखर के मत से आर्याछद का एक भेद, जिसमे ९ गुरु और २९ लघु वर्ण होते हैं।

वासिल—वि० [अ०] १ पहुँचाया हुआ। प्राप्त। २. मिलनेवाला। मुलाकात करनेवाला (को०)। ३. सटा हुआ। सयुक्त (को०)। ४. मिला हुआ। जो वसूल हुआ हो।

यौ०—वासिल बाकी = वसूल और बाकी कम। उ०—वासिल वाकी स्याहा मुजमिल सब अधरम की बाकी। चित्रगुप्त होते मुस्तौफी शरण गहौं मैं काकी।—सूर (शब्द०)।

वासिलात—सज्ञा पुं० [अ०] वह धन जो वसूल हुआ हो।—वसूल हुए धन का योग।

विशेष—इसका प्रयोग बहुवचन मे होता है।

वासिष्टवा—सज्ञा पु० [स०] १. रक्त। रुधिर। २ दे० 'वसिष्ठ'।

वासिष्ठ[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वाशिष्ठी] वशिष्ठ सबधी। २ वशिष्ठ द्वारा कृत।

वासिष्ठ[२]—सज्ञा पु० वशिष्ठ ऋषि का पुत्र। २. दे० 'वासिष्ठ' (को०)।

वासिष्ठी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तर दिशा। २ गोमती नदी (को०)।

वासी[१]—सज्ञा पु० [स० वासिन्] रहनेवाला। बसनेवाला। अधिवासी। जैसे, ग्रामवासी। नगरवासी।

वासी[२]—सज्ञा स्त्री० [स०] वसूला जिससे बढई लकडी छीलते हैं। तक्षणी।

वासुधरेय सज्ञा पुं० [स० वासुन्धरेय] एक नरक का नाम (को०)।

वासुधरेयी—सज्ञा स्त्री० [स० वासुन्धरेयी] वसुंधरा की पुत्री। भूमिजा। भूमिसुत। सीता (को०)।

वासु—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ परमात्मा। ३. आत्मा (को०)। ४ पुनर्वसु नक्षत्र।

वासुक—सज्ञा पु० [स० वासुकि] दे० 'वासुकि'। उ०—दंड भरै सेवा करै, वासुक इद्र कुबेर। गनु गधर्व किन्नर सबै, जच्छ रहे होइ चेर।—माधवानल०, पृ० १८६।

वासुकि—सज्ञा पु० [स०] आठ नागो मे से दूसरा नागराज।

यौ०—वासुकिसुता = वासुकि की पुत्री। सुलोचना।

वासुकी—सज्ञा पु० [स० वासुकि] दे० 'वासुकि'।

वासुकेय—सज्ञा पु० [स०] वासुकि (को०)।

यौ०—वासुकेयस्वसा = मनसा देवी।

वासुदेव—सज्ञा पु० [स०] १ वसुदेव के पुत्र, श्री कृष्णचद्र। २ मुनि-श्रेष्ठ कपिल का एक नाम (को०)। ३ घोडा। अश्व (को०)। ४. जैनो का एक वर्ग (को०)। ५ हरिवश के अनुसार पुड्र देश के राजा का नाम (को०)। ६ पीपल का पेड़। अश्वत्थ। (बोलचाल)।

वासुदेवक—सज्ञा पुं० [स०] १ वासुदेव। २ श्रीकृष्ण का उपासक। ३ वह जिसमे वासुदेव नाम कलकेत हो (को०)।

वासुदेवप्रियकरी—सज्ञा स्त्री० [स० वासुदेवप्रियङ्करी] शतावरी। वासुदेवी (को०)।

वासुदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] शतावरी (को०)।

वासुभद्र—सज्ञा पु० [स०] वासुदेव। श्रीकृष्णचद्र।

वासुमद—सज्ञा पुं० [स० वासुमन्द] एक साम का नाम।

वासुरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. स्त्री। २. हथिनी। ३ रात्रि। रात। ४ भूमि। जमीन।

वासू—सज्ञा स्त्री० [सं०] नाटको की परिभाषा मे स्त्रियो के लिये सबोधन का शब्द।

वासूला—सज्ञापु० [हिं०] दे० 'वसूला'। उ०—ऊछले खले तज तुरग एक। वासूले पूलाँसूँ विमेख।—रा० रू०, पृ० २४९।

वासोख्त—सज्ञा पुं० [अ० वासोख्त] उर्दू कविता का एक प्रकार, जो मुसद्दस के ढग का होता है और जिसमे प्रेमिका के व्यवहार से रुष्ट होकर प्रेम छोडने और प्रेमिका के त्याग का उल्लेख होता है (को०)।

वासोख्ता—वि० [अ० वासोख्तह्] १ जला हुआ। २ रुष्ट (को०)।

वासोद—वि० [स०] जो वस्त्र देता हो। वस्त्रदाता (को०)।

वासोभृत्—वि० [स०] जो वस्त्र पहने हुए हो। जिसने वस्त्र पहना हो (को०)।

वासौकस्—सज्ञा पुं० [स०] १ निवासगृह। २ तबू। खेमा।

वास्कट—सज्ञा स्त्री० [अ० वेस्टकोट] फतुही।

वास्त—सज्ञा पु० [स०] बकरा।

वास्तव[१]—वि० [स०] प्रकृत। यथार्थ। सत्य।

यौ०—वास्तव मे = सचमुच। सत्यत। असल मे। दरअसल। वाकई।

वास्तव[२]—सज्ञा पु० परमार्थभूत। असल तत्व।

वास्तविक[१]—वि० [सं०] १ परमार्थ। सत्य। प्राकृत। २. यथार्थ। ठीक।

वास्तविक[२]—सज्ञा पुं० १ मालाकार। माली। २. यथ थवादी (को०)।

वास्तवीषा—सज्ञा स्त्री० [स०] निशा। रात (को०)।

वास्तव्य[१]—वि० [स०] १ रहने योग्य। बसने योग्य। २ बसनेवाला। अधिवासी। ३ अनुपयोगी होने से त्यक्त वा छोडा हुआ (को०)। ४ आबाद। जो बसा हुआ हो (को०)।

वास्तव्य[२]—सज्ञा पु बस्ती। आबादी।

वास्ता सज्ञा पु० [अ०] १ सबध। लगाव।

मुहा०—वास्ता पडना = व्यवहार का अवसर आना। काम पडना। जैसे—तुमको उससे वास्ता नही पडा है, नही तो जानते। वास्ता पैदा करना = ढर्व लगाना। सबध जोडना। वास्ता रखना = लगाव रखना। सबध रखना।

२ मित्रता। ३ स्त्री और पुरुष का अनुचित सबध। ४ वह जो मध्यस्थ हो (को०)।

वास्तिक—सज्ञा पु० [स०] बकरो का समूह (को०)।

वास्तु—सज्ञा पुं० [स०] १ शुभ निवासयोग्य स्थान। वह स्थान जिस-पर घर उठाया जाय। भीट।

विशेष—घर बनाने के पहले वास्तु या भीट के शुभाशुभ का विचार किया जाता है। बृहत्सहिता मे वास्तुगृह के उत्तम, मध्यम, आदि क्रम से पाँच भेद कहे गए हैं।

२ घर । गृह । मकान । ३ इमारत । ४ कक्ष । कमरा (को०) । ५ दे० 'वास्तूक'—१, २ । ६ आठ वस्सुओ में से एक का नाम (को०) । ७ एक प्रकार का अन्न (को०) ।

वास्तुक—सज्ञा पुं० [सं०] १ बथुआ नाम का साग । २. पुनर्नवा । गदहपूरना ।

यौ०—वास्तुकर्म = गृहनिर्माण। वास्तुकाल=भवन बनाने का उपयुक्त एव शुभ समय । वास्तुकालिंग । वास्तुकीर्ण = एक प्रकार का पट मडप । वास्तुज = घरेलू । गृह सबंधी । वास्तुज्ञान = दे० 'वास्तुकला' । वास्तुदेव, वास्तुदेवता = गृहदेवता । वास्तुनर = आदर्श भवन । वास्तुपि । वास्तुपति । वास्तुपुरुष । वास्तुपूजा । वास्तुयाग ।

वास्तुकी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक शाक । चिल्ली शाक [को०] ।

वास्तुकला—सज्ञा स्त्री० [स०] वस्तु या भवननिर्माण की कला । उ०—उसमे न तो मूर्तिकला और न वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरणो के सौदर्य की प्रशसा करने का क्षमता थी ।—पा० सा० सि०, पृ० १२१ ।

वास्तुकालिंग—सज्ञा पुं० [स० वास्तुकालिङ्ग] तरबूज । कलीदा ।

वास्तुप, वास्तुपति सज्ञा पुं० [स०] वास्तु का अधिष्ठाता देवता । उस स्थान का देवता जिसमे घर बना हो । वास्तुपुरुष ।

वास्तुपुरुष—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वास्तुपति' ।

वास्तुपूजा—सज्ञा स्त्री० [स०] वास्तुपुरुष की पूजा जो नवीन घर मे गृहप्रवेश के आरभ मे की जाती है ।

वास्तुबधन—सज्ञा पुं० [स० वास्तुबन्धन] गृहनिर्माण [को०] ।

वास्तुयाग—सज्ञा पुं० [स०] वह याग जो नवीन गृह मे प्रवेश करने के समय किया जाता है ।

वास्तुविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या जिससे वास्तु या इमारत के सबध की सारी बातो का परिज्ञान होता है । भवननिर्माण की कला ।

वास्तुविधान—सज्ञा पुं० [स०] गृहनिर्माण [को०] ।

वास्तुशाति—सज्ञा स्त्री० [स० वास्तुशान्ति] वह शाति आदि कर्म जो नवीन गृह मे प्रवेश करते समय किए जाते हैं ।

पर्या०—वास्तुशमन । वास्तुप्रशमन । वास्तुयाग । वास्तूपशम । वास्तूपशमन, आदि ।

वास्तुशाक - सज्ञा पुं० [स०] बथुआ [को०] ।

वास्तुशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] वास्तुविषयक शास्त्र । दे० 'वास्तुविद्या' ।

वास्तूक—सज्ञा पुं० [स०] एक शाक । बथुआ ।

वास्ते—अव्य० [अ०] १ लिये । निमित्त । जैसे,—तुम्हारे वास्ते आम लाया हूँ । २ हेतु । सबब । जैसे—तुम किस वास्ते वहाँ जाते हो ?

वास्तेय—वि० [स०] १ वस्ति सबधी । कुक्षि वा उदर सबधी । २ वस्त, वस्तु और वास्तु सबधी । बसाने लायक । आबाद करने लायक [को०] ।

वास्तोष्पति—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र । सुरपति । २ देवता मात्र । ३ वास्तुपति ।

वास्त्र'—सज्ञा पुं० [स०] रथ जिसपर परदा वा ओहार पडा हो । वस्त्र से ढका रथ [को०] ।

वास्त्र²—वि० १ वस्त्रनिर्मित । २ वस्त्र से आच्छादित या ढँका हुआ [को०] ।

वास्त्य—वि० [स०] वास्त्र मे रहनेवाला । जलस्थ ।

वास्प—सज्ञा पु० [स०] १ गरमी । ऊष्मा । २ लोहा । ३ भाप । वाष्प ।

वास्पेय—सज्ञा पु० [स०] नागकेसर ।

वास्य'—सज्ञा पु० [स०] कुठार । कुल्हाडा [को०] ।

वास्य'—वि० १ ढँकने या आच्छादन करने लायक । २ आबाद करने या बसाने योग्य [को०] ।

वास्र—सज्ञा पु० [स०] दिवस । दिन [को०] ।

वास्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सवत्सा गौ । गाय । २ माता [को०] ।

वाह'—सज्ञा पु० [स०] १ वाहन । सवारी । २ लादकर या खीचकर ले चलनेवाला । ३ घोडा । ४ बैल । ५ भैसा । ६ वायु । ७ बाहु । भुजा (को०) । ८ ढोना । ले जाना । वहन करना (को०) । ९. अर्जन । प्रापण (को०) । १० प्रवाह । धारा । बहाव (को०) । ११ प्राचीन काल का एक तौल या मान जो चार गोणी का होता था ।

वाह²—वि० १ लादकर या खीचकर ले जानेवाला । जैसे, अबुवाह । २ प्रवहमान । बहनेवाला [को०] ।

वाह³—अव्य० [फा०] १. प्रशसासूचक शब्द । धन्य । जैसे,—वाह ! यह तुम्हारा ही काम था ।

विशेष—कभी कभी अत्यंत हर्ष प्रकट करने के लिये यह शब्द दो बार भी आता है । जैसे, वाह वाह, आ गए ।

२ आश्चर्यसूचक शब्द । जैसे,—वाह ! मियाँ काले, क्या खूब रग निकाले । ३ घृणाद्योतक शब्द । जैसे,—वाह, तुम्हारा यह मुँह । ४ आनदसूचक शब्द ।

वाहक—सज्ञा पु० [स०] १ लादकर या खीचकर वस्तुओ को ले चलनेवाला । बोझ ढोने या खीचनेवाला । जैसे, भारवाहक । २ सारथी । ३ अश्वारोही । घुडसवार (को०) । ४ जल-प्रणाली । नहर (को०) ।

वाहन—सज्ञा पु० [स०] १ सवारी । २ धारण करना या ले जाना (को०) । ३ हाँकना । गति मे प्रवृत्त करना । जैसे, घोडे आदि को (को०) । ४ गज । हाथी (को०) । ५ नौका का दड । डाँडा । पतवार (को०) ।

वाहनप—सज्ञा पुं० [स०] अश्व आदि का परिचारक । साईस [को०] ।

वाहनश्रेष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] अश्व । घोडा [को०] ।

वाहना'—सज्ञा स्त्री० [स०] सेना [को०] ।

वाहना² क्रि० स० [स० वहन] दे० 'बाहना' ।

वाहरिपु—सज्ञा पु० [स०] महिष । भैसा ।

वाहल—सज्ञा पु० [स०] १ जलप्रणाली । प्रवाह । स्रोत । जल की धारा । २ यान । वाह । प्रवहण [को०] ।

वाहला†'—सज्ञा स्त्री० [स० वाहल] धारा । प्रवाह । जल का प्रवाह या पूर । उ०—जउ साहिब तू नावियउ, मेहाँ पहलइ पूर । विचइ वहेसी वाहला, दूर स दूरे दूर ।—ढोला०, दू० १४७ ।

वाहला†²—सज्ञा पु० [स० वल्लभ, प्रा० वल्लह] प्रिय । स्वामी । उ०—मारा वाहला जी, विपया थी वारे ।—दादू०, पृ० ५१६ ।

वाहवाह—अव्य० [फ़ा० वाह] बहुत अच्छा। साधुवाद। प्रशंसासूचक शब्द। उ०—जब अपने प्रान पिंड को जानो। तब प्रगटी वाह-वाह की बानी।—प्राण०, पृ० १६१।

मुहा०—वाह वाह होना = खूब प्रसन्न होना। उ०—जबाने खल्क भी 'हातिम' अजब तमाशा है। जिधर वह निकले उधर वाह वाह निकले है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ४५।

वाहवाही—सज्ञा स्त्री० [फा०] लोगो की प्रशंसा। स्तुति। साधुवाद।

मुहा०—वाहवाही लेना या लूटना = लोगो की प्रशंसा का पात्र बनना। जैसे,—दूसरे का माल बाँटकर उसने खूब वाहवाही लूटी।

वाहस्—सज्ञा पुं० [सं०] १. अग्नि। २. ऋचा। सूक्त [को०]।

वाहस—सज्ञा पुं० [स०] १. अजगर। २. अग्नि। पावक। ३. एक साग। ४ झरना [को०]।

वाहा—सज्ञा स्त्री० [स०] बाहु। भुजा [को०]।

वाहावाहवि अव्य० [स०] १. हाथोहाथ। २. आमने सामने [को०]।

वाहावाहवी—सज्ञा स्त्री० [सं०] हाथ से होनेवाला युद्ध [को०]।

वाहिक—सज्ञा पु० [सं०] १. गाडी। छकडा। २ ढक्का। ३ बोझ ढोने की गाडी (को०)।

वाहित[1]—वि० [स०] १ प्रवाहित। २. चलाया हुआ। चालित। ३ वचित। ४. जो वहन किया गया हो। ढोया हुआ। ५. बिताया हुआ। व्यतीत किया हुआ (को०)। ६. नष्ट। विध्वस्त (को०)। ७ जिसके निमित्त चेष्टा की गई हो (को०)।

वाहित[2]—सज्ञा पुं० बड़ा भार। भारी बोझ [को०]।

वाहित्थ—सज्ञा पुं० [स०] हाथी के मस्तक के बीच का भाग [को०]।

वाहिद[1]—सज्ञा पुं० [अ०] १. एक की सख्या। २ ईश्वर। खुदा। उ०—है वाहिद और युकजा वही। गुन ज्ञान की टकसार है।—कबीर म०, पृ० ३६१।

वाहिद[2]—वि० यकला। अद्वय। एक। इकला [को०]।

वाहिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सेना। २ सेना का एक भेद, जिसमे ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोडे और ४०५ पैदल होते थे। एक वाहिनी में तीन गण होते थे। ३. नदी (को०)।

यौ०—वाहिनीनिवेश = सेना की छावनी। सैन्यशिविर। वाहिनी-पति।

वाहिनीक—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाहिनी' [को०]।

वाहिनीपति—सज्ञा पुं० [सं०] १. वाहिनी नामक सेना विभाग का अधिपति या प्रधान। २. सेनापति। ३ नदियो का अधिपति। समुद्र (को०)।

वाहिनीश—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाहिनीपति'।

वाहिम—वि०[अ०] १ शकी। वहमी। २ कल्पना करनेवाला [को०]।

वाहिमा—सज्ञा पुं० [अ० वाहिमह्] १. भ्रम। भ्राति। वहम। २. कल्पना शक्ति [को०]।

वाहियात[1]—वि० [अ० वाही + फा० यात] १. व्यर्थ। फजूल। जैसे, —तुम तो यो ही वाहियात बका करते हो २. बुरा। खराब। जैसे,—वाहियात आदमियो का साथ मत किया करो।

वाहियात[2]—सज्ञा स्त्री० निरर्थक और व्यर्थ की बात।

वाही[1]—वि० [अ०] १. सुस्त। ढीला। २. निकम्मा। ३. बुद्धिहीन। मूर्ख। उ०—पीठि परो ईठि सो बसीठि बिनु डीठ मन नीठ न सँभारै वाही मोहि मढि रहो है।—देव (शब्द०)। ४. आवारा। ५. बेठिकाने का। ६. बेहूदा। उ०—वाही हो खासे।—सैर०, पृ० ४।

वाही[2]—सर्व० [हि०] दे० 'वही'। उ०—(क) वाही थी गुण बेलड़ी, वाही थी रस बेलि। पीणई पीवो मारवी, चाल्या सूती मेलि।—ढोला०, दू० ६१०। (ख) उपरना वाही कैं जु रह्यो। जाही के उर बसे स्यामघन, निसि को जहँ सुख गह्यो।—नंद० ग्र०, पृ० ३५५।

वाही[3]—वि० [सं० वाहिन्] १ वहन करने या ढोनेवाला। २ रथ आदि खीचनेवाला। ३ उत्पन्न करनेवाला। पैदा करने या लानेवाला। ४. बहनेवाला। ५. गिराने या प्रवाहित करने वाला [को०]।

वाही[4]—सज्ञा पु० रथ। गाड़ी [को०]।

वाहीतवाही[1]—वि० [अ० वाही + तवाही] १. बेहूदा। आवारा।

क्रि० प्र०—फिरना।

२. अडबंड। बेसिर पैर का।

क्रि० प्र०—बकना।

वाहीतवाही[2]—सज्ञा स्त्री० अडबड बातें। गाली गलौज। उ०—बेगम साहब के सामने लगी वाहीतवाही बकने, बडी एक हो।—सैर०, पृ० २७।

वाहु—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. हाथ के ऊपर का भाग जो कुहनी और कंधे के बीच मे होता है। भुजदड। दे० 'बाहु'। २ गणित शास्त्र में त्रिकोणादि क्षेत्रों के किनारे की (पार्श्व) रेखा। भुजा।

वाहुक—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'बाहुक' [को०]।

वाहुमूल—सज्ञा पुं० [सं०] कधे और बाँह का जोड़। काँख।

वाहुल—सज्ञा पुं० [सं०] १. कार्तिक का महीना। २. शाक्य मुनि के पुत्र का नाम। दे० 'बाहुल' [को०]।

वाहुल्य—सज्ञा पुं० [सं०] आधिक्य। अधिकता। बाहुल्य।

वाहुवार—सज्ञा पुं० [सं०] बहेडे का वृक्ष।

वाह्य[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ यान। रथ। सवारी। २. भारवाही पशु। दे० 'बाह्य'

वाह्य[2]—क्रि० वि० १. बाहर। २. अलग। जैसे,—लोकवाह्य।

वाह्य आतिथ्य—सज्ञा पुं० [सं०] बाहर से आया हुआ विदेशी माल।

वाह्यक—सज्ञा पुं० [सं०] रथ [को०]।

वाह्यकी—सज्ञा स्त्री० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक विषैला कीट [को०]।

वाह्यान्तर[1]—वि० [सं० बाह्यान्तर] भीतर और बाहर का। जैसे,—वाह्यातर शुद्धि।

वाह्यान्तर[2]—क्रि० वि० भीतर और बाहर।

वाह्याभरण—सज्ञा पुं० [सं०] बाहरी भूषण। बाहर की भूषा, या सजावट, अलंकार आदि। उ०—अलकार सिद्धात काव्य के केवल वाह्याभरण पर जोर देते हैं।—अरस्तू०, पृ० १५६।

वाह्यायाम—सज्ञा, पुं० [सं०] एक प्रकार का वात रोग।—माधव०, पृ० १३६।

वाह्याली—सज्ञा स्त्री० [सं०] घोडे के चलने योग्य सडक [को०]।

यौ०—वाह्यालीभू=वाह्याली।

वाह्येंद्रिय—सज्ञा स्त्री० [सं० वाह्येन्द्रिय] पाँचो ज्ञानेंद्रियाँ जिनका काम वाह्य विषयो का ग्रहण करना है। आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।

वाह्लि—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वाह्लीक'।

यौ०—वाह्लिज=बलख या वाह्लीक का अश्व।

वाह्लीक—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक जनपद जो भारत की उत्तरपश्चिम सीमा पर था। गाधार के पास का एक प्रदेश।

विशेष—साधारणत आजकल के 'बलख', जो अफगानिस्तान के उत्तरी भाग मे है, के आसपास का प्रदेश ही, जिसे प्राचीन पारसी 'बकतर' और यूनानी 'बैक्ट्रिया' कहते थे, वाह्लीक माना जाता है, पर पाश्चात्य पुरातत्वविद् इसे आजकल के हिंदुस्तान के बाहर नही मानना चाहते।

२. वाह्लीक देश का घोडा। ३ कुकुम। केसर। ४ हीग। ५. एक प्रमुख गधर्व का नाम।

विख—सज्ञा पुं० [सं० विड्ख] घोडे का खुर [को०]।

विगन†—वि० [सं० व्यङ्ग्य ?] व्यग्यजन्य। व्यग्य। सकेतित। उ०—दुसरी बानी विगन कही। पिंडज बानि मे बोलै सही।—कबीर सा०, पृ० ८८०।

विगेश—सज्ञा पुं० [सं० ?] अग्नि। आग।

विजना—सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जना] दे० 'व्यजना'। उ०—कवित की जाति बहु भाँति गुनि रीत धुनि, लच्छना कहाँ लो वाच्य विजना जनाओ मैं।—दीन० ग्र०, पृ० ६।

विजामर—सज्ञा पुं० [सं० विञ्जामर] आँख का वह भाग जो सफेद होता है।

विजोलि, विजोली—सज्ञा स्त्री० [सं० विञ्जोलि, विञ्जोली] श्रेणी। पक्ति। कतार।

विझ—वि० [स० विन्ध्य या विद्ध, प्रा० विज्झ] घना। गभीर। गझिन। उ०—नयणा आडा विझ वन, मनह न आडउ कोइ।—ढोला०, दू० २१३।

विझासनि—सज्ञा स्त्री० [स० विन्ध्यवासिनी] दुर्गा, विंध्य पर निवास करनेवाली देवी। उ०—एक सुदिन संध्या समय विझासनि के थान।—पृ० रा०, २४। ४६१।

विद'—सज्ञा पुं० [स० विन्द] १. अवंती के एक राजा का नाम। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३ दिन का एक विशेष भाग। ४ प्राप्ति। लाभ।

विद'—वि० १. प्राप्त करनेवाला। लाभ करनेवाला। २. जिसने प्राप्त किया हो।

विद'—सज्ञा पुं० [सं० वृन्द] दे० 'वृद'। उ०—कलिदजा के सुभ भूम लतान के विद वितान तने हैं।—राम (शब्द०)।

विद'—सज्ञा पुं० [सं० विन्द] दे० 'विंदु'।

विदक—सज्ञा पुं० [सं० विन्दक] १ प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। २ जाननेवाला। ज्ञाता। बेत्ता। उ०—(क) परम साधु परमारथ विंदक। संभु उपासक नहि हरि निंदक।—तुलसी (शब्द०)। (ख) भव कि परहिं परमातम बिंदक। सुखी कि होहिं कबहु हरिनिंदक।—तुलसी (शब्द०)।

विदणा†—सज्ञा पुं० [सं० वन्दीजन] स्तुतिपाठक। उ०—जे जया सबद विदण भणे, बदण राजा बामहा। लाखीण लडे अकबर लियाँ, दुरगे दरगण सामहा।—रा० रू०, पृ० १७३।

विंदु'—सज्ञा पुं० [सं० विन्दु] १ जलकण। बूँद। २ बुंदकी। बिंदी। ३ रग की बिंदी जो हाथी के मस्तक पर शोभा के लिये बनाई जाती है। ४ अनुस्वार। ५ शून्य। ६ दाँत का लगाया हुआ खत। दतक्षत। ७ दो भौहों के बीच की बिंदी। ८. एक बूँद परिमाण। ९ रेखागणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके। १० छोटा टुकडा। कण। कनी। उ०—कनक बिंदु दुइ चारि जे देखे। रहसे सीस सीय सम लेखे।—तुलसी (शब्द०)। ११. गन्नो का एक दोष या धब्बा जो चार प्रकार का कहा गया है—आवर्त्त (गोल), वर्ति (लंबा), आरक्त (लाल) और यव (जौ के आकार का) १२ भूँज या सरदैठे का भूँजा।

विंदु'—वि० १. ज्ञानी। वेत्ता। जानकार। २ उदार। दाता। ३ जानने योग्य।

विंदुचित्रक—सज्ञा पुं० [सं० विन्दुचित्रक] वह मृग जिसके शरीर पर गोल गोल सफेद बुंदकियाँ होती हैं। सफेद चित्तियो का हिरन।

विंदुजाल—सज्ञा पुं० [सं० विन्दुजाल] सफेद बिंदियो का समूह जो हाथी के मस्तक और सूँड पर बनाया जाता है।

विंदुजालक—सज्ञा पुं० [सं० विन्दुजालक] हाथियो का पक्षक नामक रोग।

विंदुतंत्र—सज्ञा पुं० [सं० विन्दुतन्त्र] १ चौपड आदि की बिसात। अक्ष। सारिफलक। २. तुरगक।

विंदुतीर्थ—सज्ञा पुं० [सं० विन्दुतीर्थ] काशी के प्रसिद्ध पचनद तीर्थ का नामातर जहाँ बिंदुमाधव का मदिर है। पंचगगा।

विंदुनिवेणी—सज्ञा स्त्री० [सं० विन्दुनिवेणी] गाने मे स्वरसाधन की एक प्रणाली जिसमे तीन बार एक स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके बाद के स्वर का उच्चारण करते हैं। फिर तीन बार उस दूसरे स्वर का उच्चारण करके एक बार तीसरे स्वर का उच्चारण करते है, और अत मे तीन बार सातवें स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके अगले सप्तक के पहले स्वर का उच्चारण करते है। यथा—आरोही—सा सा सा रे, रे रे रे ग, ग ग ग म, म म म प, प प प ध, ध ध ध नि, नि नि नि सा। अवरोही—सा सा सा नि, नि नि नि ध, ध ध ध प, प प प म, म म म ग, ग ग ग रे, रे रे रे सा।

विदुपत्र—संज्ञा पुं० [सं० विन्दुपत्र] भोजपत्र ।

विदुमति—संज्ञा स्त्री० [स० विन्दुमति] दे० 'विदुमती' ।

विदुमती—संज्ञा स्त्री० [स० विन्दुमती] राजा शशिविंदु की कन्या का नाम ।

विदुमाधव—संज्ञा पुं० [स० विन्दुमाधव] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति का नाम ।

विशेष—इनके विषय मे काशी खड मे लिखा है कि एक बार भगवान् विष्णु शिव जी की समति पाकर काशी आए और यहाँ के राजा दिवोदास को बाहर निकाल दिया। उस समय अग्निविंदु नामक ऋषि ने विष्णु की स्तुति की और भगवान् ने प्रसन्न होकर उससे वर माँगने के लिये कहा। ऋषि ने कहा कि मोक्षाभिलाषियो के हितार्थ पचनद तीर्थ पर आप अवस्थान करें और हमारे नाम से प्रसिद्ध होकर सबको मुक्ति प्रदान करें। विष्णु भगवान् ने 'एवमस्तु' कहकर कहा कि आज से हम तुम्हारा आधा नाम अपने नाम के आगे जोडकर विंदुमाधव नाम से प्रख्यात होकर पचनद तीर्थ (पचगगा) पर वास करेंगे। पचनद तीर्थ भी विंदुतीर्थ कहलावेगा ।

विदुर—संज्ञा पु० [स० विंदु+र (प्रत्य०)] किसी पदार्थ पर दूसरे रंग के लगे हुए छोटे छोटे चिह्न। बुंदकी। उ०—सिंदुर विंदुर वान के चिह्न चुनो जरि केसर कुंदन कीजै।—सुंदरी सं०। (शब्द०)।

विंदुराजि—संज्ञा पुं० [स० विन्दुराजि] एक प्रकार का साँप। राजमन।

विंदुल—संज्ञा पु० [स० विन्दुल] अगिया नामक कीडा जिसके छूने से शरीर में फफोले निकल आते है।

विंदुसर—संज्ञा पु० [स० विन्दुसर] १ पुराणानुसार एक सरोवर का नाम जिसके उत्तर कैलाश पर्वत है।

विशेष—कहते हैं, भगीरथ ने गगा के लिये इसी सर के किनारे तप किया था। गगा जी इसी स्थान से निकली हैं। देवताओ ने यहाँ अनेक यज्ञ किए थे और भगवती गगा के जितने विंदु पृथ्वी पर उतरते समय गिरे, वे इसी स्थान पर थे। इससे वह सर बन गया और विंदुसर कहलाने लगा।

२ उडीसा मे भुवनेश्वर क्षेत्र के एक प्राचीन सरोवर का नाम।

विंदुसार—संज्ञा पुं० [स० विन्दुसार] चद्रगुप्त के एक पुत्र का नाम।

विशेष—यह चद्रगुप्त के बाद मगध का राजा हुआ था। सम्राट् अशोक इसी का पुत्र था।

विंध—संज्ञा पुं० [स० विन्ध्य] विंध्याचल। विंध्य पर्वत। उ०—कुसमउ देखि सनेह सँभारा। बढ़त विंध जिमि घटज निवारा। —तुलसी (शब्द०)।

विंधपत्र—संज्ञा पुं० [स० विन्धपत्र] बेलसोठ। विल्व शलाटु।

विंधपत्री—संज्ञा स्त्री० [स० विन्धपत्री] दे० 'विंधपत्र'।

विंधस—संज्ञा पुं० [स० विन्धस] चद्रमा [को०]।

विंध्य—संज्ञा पु० [स० विन्ध्य] एक प्रसिद्ध पर्वत या पर्वतश्रेणी का नाम।

विशेष—यह पर्वत भारतवर्ष के मध्य मे पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है। आर्यावर्त देश की दक्षिण सीमा पर यह पर्वत है। विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश दक्षिणापथ या दक्षिण कहलाता है। इससे दो प्रधान नदियाँ नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा मे बहकर अरब की खाड़ी मे गिरती हैं। इस पर्वत के पत्थर प्रायः बलुए और परतदार होते हैं। इसकी अनेक शाखा प्रशाखाएँ सतपुरा आदि नाम से विख्यात हैं। पुराणानुसार यह सात कुलपर्वतो मे है और मनु के अनुसार मध्य देश की दक्षिणी सीमा है। महाभारत मे कथा है कि विंध्य ने सूर्य से कहा कि मेरु के समान तुम हमारी प्रदक्षिणा किया करो। जब सूर्य ने न माना, तब विंध्य ऊपर बढ़ने लगा और यह आशंका हुई कि यह सूर्य का मार्ग ही रोक देगा। देवताओ ने अगस्त्य जी से प्रार्थना की। अगस्त्य उसके पास गए और उसने साष्टाग दडवत किया। मुनि ने कहा कि जबतक मैं न लौटूँ, तबतक इसी तरह पड़े रहना। इतना कहकर अगस्त्य जी चले गए और फिर वापस नही आए। कहते है कि इसी लिये यह पर्वत अब तक ज्यो का त्यो लेटा पड़ा है, और इसी लिये इसका इतना अधिक विस्तार है।

यौ०—विंध्यकूट। विंध्यकूटक। विंध्यकूटन। विंध्यकैलासवासिनी। विंध्यगिरि=विंध्याचल। विंध्यचूलक। विंध्यचूलिक। विंध्यनिलया। विंध्यनिवासी। विंध्यवासी। विंध्यपति। विंध्यवासिनी। विंध्यशैल। विंध्यस्थ।

विंध्यकूट—संज्ञा पुं० [स० विन्ध्यकूट] १. विंध्य पर्वत। २. अगस्त्य मुनि का एक नाम।

विंध्यकूटक, विंध्यकूटन—संज्ञा पु० [स० विन्ध्यकूटक, विन्ध्यकूटन] विंध्य पर्वत। विंध्यकूट। २ अगस्त्य मुनि।

विंध्यकैलासवासिनी—संज्ञा स्त्री० [स० विन्ध्यकैलासवासिनी] विन्ध्यवासिनी देवी [को०]।

विंध्यगिरि—संज्ञा पु० [स० विन्ध्यगिरि] विंध्य नाम का पर्वत।

विंध्यचूलक—संज्ञा पु० [स० विन्ध्यचूलक] विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश। महाभारत के अनुसार यहाँ एक प्राचीन जगली जाति बसती थी।

विंध्यचूलिक—संज्ञा पुं० [स० विन्ध्यचूलिक] दे० 'विंध्यचूलक'।

विंध्यनिलया—संज्ञा स्त्री० [स० विन्ध्यनिलया] दे० 'विंध्यवासिनी'।

विंध्यवासिनी—संज्ञा स्त्री० [स० विन्ध्यवासिनी] देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति।

विशेष—यह मूर्ति मिर्जापुर जिले मे विंध्य के एक टीले पर अवस्थित है। पुराणो मे इस मूर्ति के सबध मे अनेक आख्यान है। वामन पुराण का मत है कि इंद्र ने भगवती दुर्गा को विंध्य पर्वत पर ले जाकर स्थापित किया था। किसी किसी का मत है कि सती के देह परित्याग करने पर जब शिव जी उनके शव को अपनी पीठ पर लादकर फिरने लगे, तब विष्णु धनुष बाण लेकर उनके पीछे पीछे चले, और जहाँ जहाँ अवकाश पाया, शव को काट काटकर गिराते गए। उसी समय एक अग यहाँ भी गिरा था, जिससे यह सिद्धपीठ हो गया। यह मूर्ति बहुत प्राचीन है; क्योंकि प्राकृत के गोड़वहो (गोड़वध)

काव्य मे वाक्पतिराज ने, जो आठवीं शताब्दी मे था, इसका वर्णन किया है। राजतरंगिणी मे विंध्यवासिनी को अमरवासिनी नाम से लिखा है। जिस स्थान पर यह मूर्ति है, वह स्थान विंध्याचल कहलाता है।

विंध्यवासी—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यवासिन्] १. व्याकरण के एक आचार्य व्याडि मुनि का एक नाम। २. वह जो विंध्य का निवासी हो। विंध्य पर्वत का रहनेवाला।

विंध्यशक्ति—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यशक्ति] एक यवन राजा का नाम।

विंध्यशैल—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यशैल] विंध्य नाम का पर्वत।

विंध्यस्थ—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यस्थ] १. व्याडि मुनि का एक नाम। २ विंध्य का निवासी।

विंध्या[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्या] १. एक नदी का नाम। २ सवत्ती नाम का वृक्ष जिसे हरफारेवडी भी कहते हैं (को०)। ३ इलायची (को०)। ४ समय का एक अत्यंत सूक्ष्म मान या विभाग दे० 'लुटि'—८ (को०)।

विंध्या[2]—सज्ञा पुं० दे० 'विंध्य'।

विंध्याचल—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्याचल] १. विंध्य पर्वत। २ विंध्य पर्वत की एक शाखा पर बसी हुई एक छोटी सी बस्ती जिसमे विंध्यवासिनी देवी का मंदिर है। यह मिर्जापुर से थोड़ी दूर पर है।

विंध्याटवी—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्याटवी] विंध्य का अरण्य। विंध्य पर्वत पर का जगल (को०)।

विंध्याद्रि—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यादि] विंध्य पर्वत।

विंध्यारि—सज्ञा पुं० [सं० विन्ध्यारि] अगस्त्य मुनि (को०)।

विंध्यावली—सज्ञा स्त्री० [सं० विन्ध्यावली] राजा बलि की स्त्री का नाम।

यौ०—विंध्यावली पुत्र, विंध्यावली सुत = बाणासुर।

विंब—सज्ञा पुं० [सं० बिम्ब] दे० 'बिंब' (को०)।

विंबक—सज्ञा पुं० [सं० बिम्बक] दे० 'बिंबक' (को०)।

विंबट—सज्ञा पुं० [सं० बिम्बट] सरसो का पौधा।

विंबा, विंबिका—सज्ञा स्त्री० [सं० बिम्बा, बिम्बिका] एक लता। कुंदरू।

विंबु—सज्ञा पुं० [सं० बिम्बु] सुपारी का पौधा। दे० 'बिंबु' (को०)।

विंबोष्ठ, विंबौष्ठ—सज्ञा पुं० [सं० बिम्बोष्ठ, बिम्बौष्ठ] दे० 'बिंबोष्ठ'।

विंश[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विंशी] क्रम में बीस के स्थान पर पड़नेवाला। बीसवां।

विंश[2]—सज्ञा पुं० बीसवां हिस्सा। बीसवां अंश (को०)।

विंशक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विंशकी] १. बीस (रुपए आदि) में खरीदा हुआ। २ बीस अंश या भाग का। ३ बीस (को०)।

विंशत—वि० [सं०] बीस। (कुछ समस्त शब्दो मे)।

विंशति[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. बीस की संख्या। २. इस संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२०। ३. सेना के व्यूह का एक प्रकार (को०)।

विंशति[2]—वि० जो गिनती में बीस हो।

विंशतिक—वि० [सं०] बीस के योग्य (को०)।

विंशतितम—वि० [सं०] बीसवां (को०)।

विंशतिप—सज्ञा पुं० [सं०] बीस गाँवों का अधिपति।

विंशतिबाहु, विंशतिभुज—सज्ञा पुं० [सं०] रावण का एक नाम। विंशद्बाहु।

विंशतिम—वि० [सं०] बीसवां। बीस की संख्या का (को०)।

विंशतीश—सज्ञा पुं० [सं०] बीस गाँवों का अधिपति।

विंशतीशी—सज्ञा पुं० [सं० विंशतीशिन्] बीस गाँवों का अधिपति। विंशतीश।

विंशी—सज्ञा पुं० [सं० विंशिन्] बीस। विंशति (को०)।

विंशोत्तरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति, जिसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके विभाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है। यथा—

ग्रह	काल	नक्षत्र
सूर्य	६ वर्ष	कृत्तिका, उत्तर फाल्गुनी और उत्तराषाढ़।
चद्र	१० वर्ष	रोहिणी, हस्त और श्रवण।
मंगल	७ वर्ष	मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा।
राहु	१८ वर्ष	आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा।
बृहस्पति	१६ वर्ष	पुनर्वसु, विशाखा और पूर्व भाद्र।
शनि	१९ वर्ष	पुष्य, अनुराधा और उत्तर भाद्र।
बुध	१७ वर्ष	अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती।
केतु	७ वर्ष	मघा, मूल और अश्विनी।
शुक्र	२० वर्ष	पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और भरणी।
कुल	१२० वर्ष	—

वि कृधिका—सज्ञा स्त्री० [सं० वि कृन्धिका] १. भेडकों की बोली। २. टर्र टर की आवाज। कर्कश ध्वनि। टर्राहट।

वि[1]—उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर इस प्रकार अर्थ देता है—१. पृथक्ता। वियोजन, जैसे,—वियोग। २. निषेध या वैपरीत्य। जैसे,—विक्रय, विकच्छ। ३ प्रभाग। भाग। जैसे,—विभाग। ४ क्रम। व्यवस्था। जैसे,—विधा। ५. विशेषता; जैसे,—विकराल, विहीन। ६ वैरूप्य; जैसे,—विविध।

वि[2]—सज्ञा पुं० [सं०] १. अन्न। २. आकाश। ३. चक्षु। आँख। ४ घोडा। ५ सोम का एक नाम। ६. पक्षी। ७. बागडोर (को०)।

वि[3]—सज्ञा स्त्री० पक्षी।

विआरिया—सज्ञा पुं० [देश०] पूर्वाह्न भोजन। वह भोजन जो दोपहर के पहले किया जाता है।—देशी०, पृ० ३०१।

विआल—सज्ञा पुं० [देशी, तुल० बँग० बिकाल] सध्या। सायकाल।—देशी०, पृ० ३१०।

विए(ए)—वि० [सं० द्वितीय] अन्य। दूसरा। उ०—सोमेसर परिगह प्रबध मित उप्पने खित्रिवर। हुए बीस अजमेर विए उप्पने अपर घर।—पृ० रा०, १। ५८३।

विककट—सज्ञा पुं० [सं० विकङ्कट] १. गोक्षुर। गोखरू। २ एक वृक्ष। विककत (को०)।

विककत—सज्ञा पुं० [सं० विकङ्कत] एक जगली वृक्ष का नाम। यज्ञादि मे स्रुवा इसी का बनता था।

विशेष—इसे कटाई, किंविणी और वज्र कहते हैं। इसके पत्ते छोटे छोटे और डालियो मे काटे होते है। इसके फल बेर के आकार के तथा पकने पर मीठे होते है, पर अधपकी अवस्था मे खटमीठे होते हैं। वैद्यक मे यह लघु, दीपन और पाचक तथा कफल और प्लीहा का नाशक लिखा है। यज्ञो के लिये स्रुवा इसी की लकडी का बनाने का विधान है।

पर्या०—ग्रंथिल। सुवावृक्ष। स्वादुकटक। कटकी। व्याघ्रपाद। कटकारी। वृतिकंट। स्रुग्दारु। मधुपर्णी। बहुफल। गोपघटी। दंतकाष्ठ। ब्रह्मपादप। हिमक। पिडार। पृथुवीज। रावण। पादरोहण। सुधावृक्ष, इत्यादि।

विकंकता—सज्ञा स्त्री० [स० विकङ्कता] अतिबला।

विकंटक—सज्ञा पुं० [स० विकण्टक] १. जवासा। २. विकंकट।

विकप—वि० [सं० विकम्प] १. चपल। चंचल। अस्थिर। काँपता हुआ। २. दीर्घ साँस लेनेवाला [को०]।

विकपन—सज्ञा पुं० [सं० विकम्पन] १. एक राक्षस का नाम। २. सूर्य की गति या कंपन (को०)। ३. कंपन। काँपना (को०)।

विकपित[1]—वि० [स० विकम्पित] काँपता हुआ। हिलता डुलता हुआ [को०]।

विकपित[2]—सज्ञा पुं० १ स्वरो का गलत उच्चारण करना। २ मंद पढ़ते हुए स्वर का एक भेद [को०]।

विकंपी—सज्ञा स्त्री० [सं० विकम्पी] सगीत में एक श्रुति [को०]।

विकंपी—वि० [सं० विकम्पिन्] काँपनेवाला। काँपता हुआ या हिलता हुआ [को०]।

विक[1]—सज्ञा पुं० [स०] सद्य प्रसूता गाय का दूध। तुरत की ब्याई गौ का दूध। पेउस। पीयूष।

विक[2]—वि० १. जलरहित। जलविहीन। २. जो प्रसन्न न हो। शुष्क। सूखा [को०]।

विकच—सज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रकार के धूमकेतु।

विशेष—इनकी सख्या ६५ है। ये बृहस्पति के पुत्र माने जाते हैं। इनमे शिखा नही होती। इनका वर्ण सफेद होता है और ये प्रायः दक्षिण दिशा मे उदय होते हैं। इनके उदय का फल अशुभ माना जाता है। (बृहत्सहिता)।

२. ध्वजा। केतु ३. क्षपणक।

विकच[2]—वि० १ विकसित। खिला हुआ। २. जिसमे बाल न हो। बिना बाल का। केशहीन। ३. विस्तृत। फैला हुआ। विस्तीर्ण (को०)। ४. सुस्पष्ट। व्यक्त। स्फुट (को०)। ५ उज्वल। दीप्तिमत् (को०)।

यौ०—विकचश्री = विकसित सौदर्य से युक्त। दीप्त। शोभायुक्त।

विकचा—सज्ञा स्त्री० [सं०] कदंबपुष्पी। महामुडी [को०]।

विकचित—वि० [स०] प्रफुल्ल। खिला हुआ [को०]।

विकच्छ—सज्ञा पुं० [सं०] (नदी) जिसके दोनो ओर तराई या कछार न हो। जिसके किनारे पर दलदल या गीली जमीन न हो।

विकट[1]—वि० [सं०] १ विशाल। २. विकराल। भयकर। भीषण। ३. वक्र। टेढा। उ०—(क) भृकुटी विकट निकट नैनन के राजत अति वर नारि। मनहुँ मदन जग जीति जेर करि राख्यो धनुष उतारि।—सूर (शब्द०)। (ख) विकट भृकुटि कच घूघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे।—तुलसी (शब्द०)। ४ कठिन। मुश्किल। उ०—(क) नित प्रति सबै उरहने के मिस आवति हैं उठि प्रात। अनसमुझे अपराध लगावति विकट बनावति बात।—सूर (शब्द०)। (ख) नट कृत कपट विकट खगराया। नट सेवकहि न व्यापहि माया।—तुलसी (शब्द०)। ५ दुर्गम। जैसे, विकट मार्ग ६ दुस्साध्य। ७ बिना चटाई का। ८. गर्वयुक्त। घमड से भरा हुआ। दर्पयुक्त (को०)। ९. सौंदर्य युक्त। सुंदर (को०)। १० जिसके दाँत लबे हो। लंबदत (को०)। ११ विकृत। भद्दा (को०)।

विकट[2]—सज्ञा पुं० १ विस्फोटक। व्रण। फोडा। २ सोमलता। ३. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४ गणेश [को०]। ५. चदन। मलयज (को०)। ६. श्वेत फेनाश्म। मैनसिल। मन.शिला (को०)।

विकटक—वि० [स०] भद्दी आकृति या देहवाला [को०]।

विकटमूर्ति—वि० [स०] डरावने शक्ल का। जिसका आकार भयंकर हो।

विकटवदन—सज्ञा पुं० [सं०] १ दुर्गा देवी के एक अनुचर का नाम। २. वह जिसकी आकृति भयावनी हो। डरावने मुहँवाला [को०]।

विकटविषाण—सज्ञा पुं० [सं०] बारहसिंहा [को०]।

विकटशृंग—सज्ञा पुं० [सं० विकटशृङ्ग] बारहसिंगा [को०]।

विकटा—सज्ञा स्त्री० [सं०] बुद्ध देव की माता माया देवी का एक नाम।

विकटाकृति—वि० [सं०] दे० 'विकटमूर्ति'।

विकटाक्ष—वि० [सं०] जिसकी आँखें विकट हो। भयंकर आँखोवाला।

विकटानन—सज्ञा पुं० [स०] १. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २. वह जिसका मुख विकट हो।

विकतिक [illegible] [पालि] ऊनी चद्दर। पलंगपोश। ऐसा शय्यास्तशेर, बाघ आदि की आकृतियाँ काढ़ी रहती हैं। [illegible] स्थान स्थान पर करीने से आसंदी, पलंग, चित्रक, [illegible]क, तूलिका, विकतिक, उच्छलोमी, [illegible] और समूरी मृग के खालो के [illegible] ये।—वैशाली०, पृ० ६५।

[illegible] [सं०] १ लबी चौड़ी बातें [illegible]। व्यग्योक्ति। झूठी प्रशसा

विकत्थन[२]—वि० १ शेखी बघारनेवाला। डींग हाँकनेवाला। २ व्यग्योक्तिपूर्वक प्रशंसा करनेवाला [को०]।

विकत्था—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ डींग। श्लाघा। २ झूठी प्रशंसा। व्यग्योक्ति। ३ स्तवन। स्तुति। प्रशसा। बडाई। ४ उद्घोषणा। कोई बात जोरो से कहना। घोषणा [को०]।

विकत्थी—वि० [स० विकत्थिन्] विकत्था करनेवाला। शेखी मारनेवाला। आत्मश्लाघी [को०]।

विकथा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विशिष्ट कथा। २ कुत्सित कथा। (जैन)।

विकद्रु—सज्ञा पुं० [सं०] यादवो के एक भेद का नाम।

विकनिकाहिक—सज्ञा पुं० [स०] एक साम का नाम।

विकर—सज्ञा पं० [स०] १ रोग। व्याधि। युद्ध का एक ढग। २ तलवार के ३२ हाथो मे से एक का नाम।

विकरण—सज्ञा पुं० [स०] १ परिवर्तन। सशोधन। सुधार। २ व्याकरण मे क्रियारूपों की रचना के समय धातु और कालवाचक लकार प्रत्ययो के मध्य मे रखे जानेवाले विशिष्ट गणद्योतक प्रत्यय अथवा चिह्न।

विकरार(पु)[१]—वि० [स० विकराल] विकराल। भयकर। डरावना। उ०—(क) कान नाक बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कियो युद्ध अति ही विकरार। लागी चलन रुधिर की धार।—सूर (शब्द०)।

विकरार[२](पु)—वि० [अ० फा० बेकरार] विकल। बेचैन। व्याकुल। उ०—खनहिं चेत खन होइ बिकरारा। भा चदन बदन सब छारा।—जायसी (शब्द०)।

विकराल—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकराला, विकराली] भीषण। भयानक। डरावना। उ०—कितनी आतुरता से देखे अपने पर्चे आली। निर्दय परीक्षको की कृतियाँ कैसी हैं विकराली।—कुकुम, पृ० ७६।

विकराला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २ एक वेश्या का नाम [को०]।

विकराली[१]—वि० [सं० विकरालिन्] ऊष्म। गरम [को०]।

विकराली[२]—सज्ञा स्त्री० ऊष्मा। ताप। गरमी [को०]।

विकर्ण[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ कर्ण के एक पुत्र का नाम। २. दुर्योधन के भाई का नाम जो कुरुक्षेत्र की लडाई मे मारा गया था। ३ एक साम का नाम। ४ एक प्रकार का बाण।

विकर्ण[२]—वि० १ श्रवण शक्ति से हीन। बधिर। २ जिसे कान न हो। ३ जिसके कान बडे बडे हो [को०]।

विकर्णक—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्रकार की गँठिवन। २. शिव का व्याडि नामक गण।

विकर्णिक—सज्ञा पुं० [स०] सारस्वत प्रदेश।

विकर्णी[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ईंट, जिसका व्यवहार यज्ञ की वेदी बनाने मे होता था।

विकर्णी[२]—सज्ञा पु० एक साम का नाम।

विकर्णी[३]—सज्ञा पुं० [स० विकर्णिन्] एक प्रकार का बाण [को०]।

विकर्तन—सज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २ मदार। आक। ३ वह पुत्र जो अपने पिता को राज्यच्युत करके राजा बना हो (को०)। ४. वह व्यक्ति जो विकर्तन करे। काटनेवाला (को०)।

विकर्म[१]—सज्ञा पुं० [स० विकर्मन्] १ निषिद्ध कर्म। विरुद्धाचार। २ अनेक प्रकार के काम। विविध कार्य (को०)। ३ कार्य व्यापार से मुक्त होना (को०)।

यौ०—विकर्मकृत् = निषिद्ध कर्म करनेवाला। विकर्मक्रिया = निषिद्ध कार्य। अविहित कर्म। विकर्मस्थ = पापात्मा।

विकर्म[२]—सज्ञा पुं० [सं० वि०+कर्म] विशिष्ट कार्य। उत्तम कर्म। उ०—अकर्म से दूर भागना और विकर्म मे मनुष्य अपने को मुक्त और भाग्यवान बनाता है।—कबीर सा०, पृ० ६६४।

विकर्मा—वि० [सं० विकर्मन्] कर्मभ्रष्ट। दुराचारी।

विकर्मस्थ—सज्ञा पुं० [स०] धर्मशास्त्रानुसार वह पुरुष जो वेदविरुद्ध कर्म करता हो। वेद के विरुद्ध आचार करनेवाला व्यक्ति। पापात्मा।

विकर्मिक[१]—सज्ञा पु० [स०] बाजार और मेले का निरीक्षक [को०]।

विकर्मिक[२]—वि० १ अविहित या निषिद्ध कर्म करनेवाला। दुष्कर्म करनेवाला। २ जो अनेक प्रकार के कार्यो मे लगा हो। विभिन्न काम करनेवाला [को०]।

विकर्ष—सज्ञा पु० [सं०] १ बाण। तीर। २ खीचना। आकर्षण (को०)। ३ दूरी। फासला। अतर (को०)।

विकर्षण—सज्ञा पुं० [स०] १ आकर्षण। खीचना। २ विभाग। हिस्सा। ३ एक शास्त्र का नाम, जिनमे आकर्षण करने की विद्या का वर्णन, है। उ०—सत्य अस्त्र मायास्त्र महाबल घोर तेज तनुकारी। पुनि पर तेज विकर्षण लीजै सौम्य अस्त्र भयहारी—(शब्द०)। ४ कामदेव के एक बाण का नाम (को०)। ५ निवारण। हटाना। दूरीकरण (को०)। ६ खाद्य से परहेज। अन्न से परहेज करना (को०)। ७ अन्वेषण। जाच। ८ कुश्ती का एक ढँग। अपनी ओर खीचकर गिराना या फेंकना (को०)। ९. प्रतिकूल कर्षण। विपरीत दिशा की ओर खीचना (को०)।

विकलक—वि० [स० विकलङ्क] कलकरहित। निर्दोष। दोषयुक्त।

विकल[१]—वि० [सं०] १ विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २ कलाहीन। अशरहित। ३ खडित। अपूर्ण। जैसे—विकलाग। ४ घटा हुआ। ह्रासप्राप्त। ५ अस्वाभाविक। अनैसर्गिक। ६ असमर्थ। ७ त्रस्त। भयभीत। डरा हुआ (को०)। ८ प्रभाव रहित। प्रभावहीन (को०)। ९ हतोत्साह। जिसका उत्साह समाप्त हो गया हो (को०)।

विकल[२]—सज्ञा पुं० दे० 'विकला'—५।

विकलकरण—वि० [स०] शिथिलाग। सस्ताग। श्लथ। क्षीणशक्ति [को०]।

विकलकरुण—वि० [स०] दयनीय। असहाय। निरवलंब [को०]।

विकलपाणिक—सज्ञा पुं० [स०] लूला। वह आदमी जिसके हाथ कट गए हो [को०]।

विकलाग—वि०[स० विकलाङ्ग] जिसका कोई अग टूटा या खराब हो। न्यूनाग। अगहीन। जैसे, लूला, लँगड़ा काना, खजा आदि।

विकला—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कला का साठवाँ अग। २ वह स्त्री जिसका रजोदर्शन होना बद हो गया हो। ऋतुहीना। ३. वह स्त्री जो ऋतुमती हो। रजस्वला (को०)। ४ बुध ग्रह की गति का नाम। ५. समय का एक अत्यंत छोटा भाग।

विकलाई—सज्ञा स्त्री० [स० विकल+हिं० आई (प्रत्य०)] व्याकुलता। विकलता। उ०—सूझो का पहिन पलेवर सा, विकलाई का कल जेवर सा। घुल घुल आँखो के पानी मे, फिर छलक छलक बन छद चलो, पर मद चलो।—हिम त०, पृ० ३।

विकलाना(५)[१]—क्रि० अ० [स० विकल+हिं० आना (प्रत्य०)] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना। उ०—(क) निठुर बचन सुनि स्याम के युवती बिकलानी। मनो महानिधि पाइकै खोए पछितानी।—सूर (शब्द०)। (ख) एक एक ह्वै ढूढही तरुनी विकलाही। सूर प्रभू कहु नाहिं मिले ढूँढति द्रुम पाही। —सूर (शब्द०)।

विकलाना(५)[२]—क्रि० स० व्याकुल करना। विचलाना।

विकलास—सज्ञा पु० [स० विकलास्य] एक प्रकार का प्राचीन बाजा, जिसपर चमडा मढ़ा होता था।

विकलित—वि० [स०] १. व्याकुल। बेचैन। २ दुखी। पीड़ित।

विकली—सज्ञा स्त्री० [स०] ऋतुहीना स्त्री [को०]।

विकलेंद्रिय—वि० [स० विकलेन्द्रिय] १. जिसकी इंद्रियाँ वश मे न हो। २ जिसकी कोई इद्रिय खराब हो, अथवा बिल्कुल न हो। न्यूनेंद्रिय। जैसे,— लूला, लँगडा, काना, खजा इत्यादि।

विकल्प—सज्ञा पुं० [स०] १ भ्राति। भ्रम। धोखा। २ एक बात मन मे बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच विचार। सकल्प का उलटा। ३ विपरीत कल्पना। विरुद्ध कल्पना। ४ विशेष रूप से कल्पना करना या निर्धारित करना। जैसे,—दंड विकल्प। ५ विविध कल्पना। नाना भाँति से कल्पना करना। ६ कई प्रकार की विधियो का मिलना।

विशेष—मीमासा मे विकल्प दो प्रकार का माना गया है—एक व्यवस्थायुक्त, दूसरा इच्छानुयायी। जिसमे दो प्रकार की विधियाँ मिलती हो, उसे व्यवस्थायुक्त कहते हैं। यथा 'दर्श पौर्णमास याग मे यव द्वारा होम करे, व्रीहि द्वारा होम करे इसमे दो प्रकार की विधियाँ हैं। इनमे यदि कर्ता यव से होम करे या व्रीहि से तो यह इच्छानुगायी विकल्प होगा। इच्छा विकल्प मे आठ दोष होते है—प्रमाणत्व परित्याग, अप्रामाण्य कल्पना, अप्रामाण्योपजीवन और प्रामाण्यहानि। ये चारो उक्त दोनो मे लगने मे आठ हो जाते हैं।

७ योग शास्त्रानुसार पचविध चित्तवृत्तियो मे एक।

विशेष—यह चित्तवृत्ति ऐसे शब्दज्ञान की शक्ति है जिसका वाच्य वस्तु नही होती। इसमे मनुष्य इस बात की खोज नही करता कि अमुक शब्द का वाच्य कोई पदार्थ है या नही, अथवा हो सकता है या नही। परपरा से उसके वाच्य के, सबध मे जैसा लोग मानते आते हैं वैसा ही वह भी मान बैठता है। जैसे,—पारस पत्थर न मिला और न किसी ने देखा है। पर पारस पत्थर शब्द से लोग यही समझते हैं कि कोई ऐसा पत्थर है, जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है। इस प्रकार के शब्दो के वाच्य के संबंध में जो वृत्ति चित्त मे उत्पन्न होती है, उसे विकल्प कहते हैं।

८ अवातर कल्प। ९ एक काव्यालंकार जिसमे दो विरुद्ध बातो को लेकर कहा जाता है कि या तो यही होगा या यही। जैसे,—कै लखिहौं मुख मोहन को कै पलास प्रसून की आगि जरौंगी। १० वैचित्र्य। विलक्षणता। ११. समाधि का एक भेद जिसे सविकल्प कहते हैं। १२ व्याकरण मे एक ही विषय के कई नियमो मे से किसी एक का इच्छानुसार ग्रहण। १३. गणना (को०)। १४ उपाय (को०)। १५ कथन। वक्तव्य (को०)। १६ उत्पत्ति (को०)। १७ देवता। ईश्वर (को०)। १८ कूटयुक्ति। कला (को०)।

विकल्प आपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य द्वारा व्याख्यात वह आपत्ति जो दूसरे मार्ग के अवलंबन से बचाई जा सकती हो।

विकल्पक—वि० [स०] विभेदक। विच्छेदक। विभाग कल्पक [को०]।

विकल्पजाल—सज्ञा पुं० [स०] अनिश्चय का घेरा। अनेक प्रकार की दुविधा।

विकल्पन—सज्ञा पुं० [स०] १. अनिश्चय। सदेह। द्विविधा। २. दो मे से किसी एक का निश्चय करने की छूट। ३ विचारशून्यता [को०]।

विकल्पसप्राप्ति—सज्ञा स्त्री० [स० विकल्पसम्प्राप्ति] वातादि दोषो की मिश्रित अवस्था मे प्रत्येक के अंशाश की कल्पना करना। (वैद्यक)।

विकल्पसम—सज्ञा पुं० [स०] न्यायदर्शन मे २४ जातियो मे से एक जिसमे वादी के दिए हुए दृष्टात मे अन्य धर्म की योजना करते हुए साध्य मे भी उसी धर्म का आरोप करके अथवा दृष्टात को असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का मिथ्या खडन किया जाता है। जैसे—वादी—'शब्द अनित्य है, क्योकि वह उत्पत्ति धर्मवाला है, घट के समान'। प्रतिवादी—'अनित्य और मूर्त है, क्योकि वह उत्पत्ति धर्मवाला है घट के समान जो अनित्य और मूर्त है'। यहाँ प्रतिवादी का अभिप्राय यह है कि या तो शब्द को मूर्त मानो अथवा उसका नित्य होना स्वीकार करो।

विकल्पित—वि० [स०] १ जिसके सबध मे निश्चय न हो। सदिग्ध। २. जिसका कोई नियम न हो। अनियमित। ३ क्रमबद्ध रूप मे व्यवस्थित (को०)। ४ विभाजित। विभक्त (को०)।

विकल्मष—वि० [स०] जिसमे पाप न हो। निष्पाप। पापरहित। निर्दोष।

विकवच—वि० [स०] वर्म से रहित। बिना कवच का [को०]।

विकश्वर—वि० सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विकरवर'।

विकषा—सज्ञा स्त्री० [स०] मजीठ।

विकस—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

विकसन—पद्मा पुं० [सं०] [वि० विकसित] प्रस्फुटन। फूटना। खिलना।

विकसना—क्रि० अ० [सं० विकसन] दे० 'विकसना'।

विकसा—सद्मा स्त्री० [स०] मजीठ [को०]।

विकसाना(पु)—क्रि० स० [हिं० बिकसना का प्रे० रूप] खिलाना। विकसित करना।

विकसित—वि० [सं०] १ प्रफुल्ल। खिला हुआ। २ प्रसन्न [को०]।

विकस्वर¹—वि० [सं०] १ विकासशील। खिलनेवाला। २. खुला हुआ। फूला हुआ (को०)। ३ जो स्पष्ट सुनाई दे (ध्वनि)। ऊँचे स्वरवाला (को०)। ४. निष्कपट (को०)।

विकस्वर²—सद्मा पुं० एक काव्यालंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि सामान्य बात से की जाती है। उ०—मधुप मोह मोहन तज्यो यह स्यामन की रीति। करी आपने काज लौं तुम्हैं भाति सौ प्रीति।

विकस्वरा—सद्मा स्त्री० [सं०] लाल रंग की पुनर्नवा। लाल गदहपुरना।

विकाक्ष—वि० [स० विकाङ्क्ष] काक्षा या इच्छा रहित। इच्छा रहित। निष्काम [को०]।

विकाक्षा—सद्मा स्त्री० [स० विकाङ्क्षा] १ मिथ्या कथन। विसंवाद। २. इच्छा का अभाव। ३ दुविधा। अनिश्चय [को०]।

विकाक्षी—वि० [स० विकाङ्क्षिन्] दे० 'विकाक्ष'।

विकाम—वि० [सं०] कामना रहित। निष्काम [को०]।

विकार¹—सद्मा पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। विकृति। २ मिरुक्त के चार प्रधान नियमों में एक जिसके अनुसार एक वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण हो जाता है। ३. दोष की प्राप्ति। बिगड़ना। खराबी। ४. दोष। बुराई, अवगुण। ५ मन की वृत्ति या अवस्था। मनोवेग या प्रवृत्ति। वासना। उ०— सकल प्रकार विकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई।—तुलसी (शब्द०)। ६ वेदांत और सांख्य दर्शन के अनुसार किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम। जैसे,—कंकण सोने का विकार है; क्योंकि वह सोने से ही रूपांतरित होकर बना है। ७ उपद्रव। हानि। ८ बीमारी। रोग। व्याधि (को०)। ९ घाव। जख्म। क्षत (को०)। १० परिवर्तन। रद्दोबदल (को०)। ११. मनोवृत्ति या विचार का बदलना (को०)।

विकारण—वि० [सं०] बिना कारण के। अकारण (को०)।

विकारित—वि० [सं०] विकृत किया हुआ। विकारयुक्त बनाया हुआ। परिवर्तित।

विकारी¹—वि० [स० विकारिन्] १. जिसमें विकार हो। विकारयुक्त। २ क्रोधादि मनोविकारों से युक्त। दुष्ट वासनावाला। उ०—रे रे अंध बीसहूँ लोचन परतिय हरन विकारी। सूने भवन गवन तैं कीनो शेष रेख नहिं टारी —सूर (शब्द०)। ३ जिसमें विकार या परिवर्तन हुआ हो। परिवर्तित। उ०— तो हूँ क्रोध न कियो विकारि। महादेव हू फिरे विहारि। —सूर (शब्द०)। ४. परिवर्तनशील। ५ प्रेमासक्त। आसक्त (को०)।

विकारी²—सद्मा पुं० [सं०] साठ संवत्सरों में से एक संवत्सर का नाम।

विकार्य—सद्मा पुं० [स०] अहंकार जो विकार से होता है [को०]।

विकाल¹—सद्मा पुं० [स०] १ अतिकाल। देर। २ ऐसा समय जब देवकार्य या पितृकार्य करने का समय बीत गया हो। ३ सायंकाल का समय।

पर्या०—सायं। दिनांत। सायाह्न। विकालक।

विकाल²—सद्मा पुं० [सं० द्विकाल, प्रा० वि+काल] दोनों काल—प्रातः सायं। उ०—होम जाप असनान विकाला। तजहि न एकौ तिनहुं क हाला।—चित्रा०, पृ० ११।

विकालक—सद्मा पुं० [स०] दे० 'विकाल¹'।

विकालत—सद्मा स्त्री० [अ० वकालत] दे० 'वकालत'।

विकालतनामा—सद्मा पुं० [फा० वकालतनामह] दे० 'वकालतनामा'। उ०—(क) विकालतनामा में लिख्यौ कर्मसिंह के नाम। नागरी मेरा नाम है आर्यावर्त है धाम।—नागरी० उर्दू०, पृ० ४। (ख) मिरजा साहब के नाम विकालतनामा इस प्रकार लिखा दिया।—नागरी० उर्दू०, पृ० ५।

विकालिका—सद्मा स्त्री० [स०] घड़ियाल का कटोरा। जलघड़ी।

विकाश¹—सद्मा पुं० [सं०] १ प्रकाश। २. प्रसार। फैलाव। विस्तार। वृद्धि। ३ आकाश। ४. विषम गति या सुस्पष्ट पद्धति। ५ प्रस्फुटन। खिलना। ६. एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े अत्यंत विकसित होना वर्णन किया जाता है। ७. किसी वस्तु की वृद्धि के लिये उसके रूप आदि में उत्तरोत्तर परिवर्तन होना। ८ प्रदर्शन। प्रकटीकरण। दिखलावा (को०)। ९ हर्ष। आनंद (को०)। १० उत्सुकता। प्रबल उत्कंठा (को०)। ११ एकांत स्थान। एकाकीपन (को०)।

विकाश²—वि० निर्जन। एकांत।

विकाशक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विकाशिका] प्रदर्शित करनेवाला। व्यक्त करनेवाला। खोलनेवाला [को०]।

विकाशन—सद्मा पुं० [स०] १ प्रकटीकरण। प्रदर्शन। २. खिलना।

विकाशना(पु)—क्रि० स० [स० विकाश] दे० 'विकासना'। उ० छटपटाहि वै अर्थ विकाशैं। ये पुनि आतम अर्थ प्रकाशैं। (शब्द)।

विकाशित—वि० [सं०] दे० 'विकासित'।

विकाशी¹—सद्मा पुं० [सं० विकाशिन्] धातुओं को शिथिल करनेवाली औषध। उ०—जो औषध धातुओं को शिथिल कर दे तिसको विकाशी कहते हैं।—शार्ङ्गधर०, पृ० ४०।

विकाशी²—वि० १ दिखाई देनेवाला। चमकनेवाला। २ फूलनेवाला। खिलनेवाला। ३ खिलानेवाला [को०]।

विकास¹—सद्मा पुं० [सं०] १ प्रसार। फैलाव। २ खिलना। प्रस्फुटित होना। ३ किसी पदार्थ का उत्पन्न होकर अंत या आरंभ से भिन्न रूप धारण करते हुए उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। जैसे,—सृष्टि का विकास, मानव सभ्यता का विकास,

बीज से पेड़ो का विकास, गर्भादि से शरीर का विकास। ४ एक प्रसिद्ध पाश्चात्य सिद्धांत जिसके आचार्य डार्विन नामक प्राणिविज्ञानवेत्ता हैं।

विशेष—इस सिद्धांत मे यह माना जाता है कि आधुनिक समस्त सृष्टि और उसमे पाए जानेवाले जीवजंतु तथा वृक्ष आदि एक ही मूल तत्व से उत्तरोत्तर निकलते गए हैं। यह सिद्धांत इस बात का विरोधी है कि सारी सृष्टि जैसी है, वैसी ही एक बारगी उत्पन्न हो गई थी। इसे विकासवाद भी कहते हैं।

विकास[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० वि+काश] एक प्रकार की घास जो नीची भूमि मे होती है। इसकी पत्तियाँ दूब की भाँति पर कुछ बड़ी होती हैं। चौपाए इसे बड़े चाव से खाते हैं।

विकासन—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'विकाशन' [को०]

विकासना(पु)[१]—क्रि० स० [सं० विकास] १ प्रकट करना। निकालना। उ०—जनु अमृत होड बन्न विकासा। कमल जो बास बास धन बासा।—जायसी (शब्द०)। २ विकसित करना। प्रस्फुटित करना। खिलने मे प्रवृत्त करना।

विकासना[२]—क्रि० अ० १ विकसित होना। खिलना। २ प्रकट होना। जाहिर होना।

विकासमान्—वि० [सं० विकासमत्] उत्तरोत्तर विकसित होनेवाला। उ०—उन्होने ईश्वर संबंधी मनुष्य की कल्पना को विकासमान् स्वीकार किया है।—आचार्य०, पृ० ७०।

विकासित—वि० [सं०] १ विकास किया हुआ। खिला हुआ। विस्तारित। उ०—विकासित केसर कुंकुम काम।—पृ० रा०, २५। २३३। २ प्रस्फोटित। ३ प्रकाशित। प्रदर्शित।

विकिर—संज्ञा पु० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। २ कूआँ। ३ वह चावल आदि जो पूजा के समय विघ्न आदि दूर करने के लिये चारो ओर फेंका जाता है। अक्षत। ४ पेड़ (को०)। ५ बूँद बूँद करके (तटवर्ती बालू आदि से) चूनेवाला जल (को०)। ६. अपमृत्यु (आग मे जलकर, पानी मे डूबकर आदि) प्राप्त पितरो को दिया जानेवाला पिंड (को०)। ७ छितराई या बिखेरी हुई वस्तु (को०)।

विकिरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ छितराना। इधर उधर बिखेरना। २. हिंसन। मारना। ३ ज्ञान। ४. किरणो का एकत्र करना। ५ अर्क वृक्ष। ६ एक समाधि [को०]।

विकिष्कु—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन काल का बढ़इयो का एक प्रकार का गज जो प्राय. सवा दो हाथ या ४२ इंच का होता था।

विकीरण—संज्ञा पुं० [सं०] आक। मदार।

विकीरन(पु)—संज्ञा पु० [सं० विकीर्णन] फैलाना। छितराना। उ०—मंद मंद आवै देखो प्रात समीरन करत सुगंध चारो ओर विकीरन।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० ६८६।

विकीर्ण[१]—वि० [सं०] १ चारो ओर फैला या छितराया हुआ। अस्तव्यस्त। बिखरा हुआ। २ विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ३ प्रसूत (को०)

विकीर्ण[२]—संज्ञा पु० स्वर के उच्चारण मे होनेवाला एक प्रकार का दोष।

विकीर्णक—वि० [सं०] फैलाने या बिखेरनेवाला [को०]

विकीर्णकेश, विकीर्णमूर्धज—वि० [सं०] अस्तव्यस्त या खुले बिखरे बालवाला। [को०]।

विकीर्णरोम—संज्ञा पुं० [सं० विकीर्णरोमन्] एक प्रकार का सुगंधित पौधा।

विकीर्णसज्ञ—दे० संज्ञा पु० [सं०] 'विकीर्णरोम'।

विकुचन—संज्ञा पु० [सं० विकुञ्चन] सिकुड़ने या सिमटने की क्रिया। मुड़ने की क्रिया।

विकुचित—वि० [सं० विकुञ्चित] सिकुड़ा या सिमटा हुआ। मुड़ा हुआ। मोड़दार [को०]।

विकुज—संज्ञा पु० [सं० विकुञ्ज] महाभारत के अनुसार एक जाति का नाम।

विकुंठ[१]—संज्ञा पुं० [सं० विकुण्ठ] १ वैकुंठ। विष्णुलोक। उ०—(क) हरि रस माते मगन रहइ। निरमल भगति प्रेमरस पीवइ आन न पूजा भाव धरइ। सहजइ सदा राम रसराते, मुक्ति विकुंठइ कहा करइ।—दादू (शब्द०)। (ख) नारायण सुंदर भुज चारी। बसहि विकुंठहि सदा सुखारी।—रघुराज (शब्द०)। २ विष्णु का एक नाम (को०)।

विकुंठ[२]—वि० [सं० विकुण्ठ] १ जो कुंठित न हो। तेज धारवाला। कुंद या भुथरा का उलटा। २. जो धारहीन हो। कुंद या अत्यंत भुथरा (को०)।

विकुंठा—संज्ञा स्त्री० [सं० विकुण्ठा] १ विष्णु की माता। २. मन को केंद्रस्थ करना (को०)।

विकुंठित—वि० [सं० विकुण्ठित] १ शक्तिहीन। अशक्त। २ धारहीन। कुंद। भोथरा (को०)।

विकुंभाड—संज्ञा पुं० [सं० विकुम्भ खड] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

विकुक्षि[१]—संज्ञा पुं० [सं०] अयोध्या के राजा कुक्षि के पुत्र का नाम।

विकुक्षि[२]—वि० जिसका पेट फूला या आगे को निकला हुआ हो। तोंदवाला।

विकुचित—संज्ञा पु० [सं०] युद्ध का एक प्रकार। लड़ने की एक प्रकार की पद्धति [को०]।

विकुज—वि० [सं०] १ भौम ग्रह से रहित। २ मंगल के व्यतिरिक्त (दिन)।

यौ०—विकुजरवींदु=मंगल, सूर्य और चंद्रमा रहित।

विकुत्सा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विगर्हणा [को०]।

विकुर्वण—संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। २. इच्छानुकूल रूप धारण की शक्ति। कामरूपता (बौद्ध०) [को०]।

विकुर्वाण—वि० [सं०] १ प्रसन्न। सुखी। २. परिवर्तनशील। ३. आत्मशोधक (को०)।

विकुर्वित—संज्ञा पुं० [सं०] नाना रूप धारण करना [को०]।

विकुल्ल—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

विकूजन—सज्ञा पु० [स०] १ कलरव करना। पक्षियो का चहचहाना। २ उदर मे वायुविकार से होनेवाली गुडगुडाहट [को०]।

विकूजित—सज्ञा पुं० [स०] कूजन। गुजार। पक्षियो का कलरव [को०]।

विकूणन—सज्ञा पु० [स०] १ टेढी चितवन। कटाक्ष। २ सँकोचन [को०]।

विकूणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] नासिका। नाक।

विकृत'—वि० [स०] १ जिसमे किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगडा हुआ। २ जो भद्दा या कुरूप हो गया हो। उ०—पुरुष के शुक्र और स्त्री के आर्तव मे कैसा दोष हो जाने से संतान नही होती अथवा विकृत सतान होती है।—जगन्नाथ शर्मा (शब्द०)। ३ असाधारण। अस्वाभाविक। अप्राकृतिक। ४ असस्कृत (को०)। ५ अपूर्ण। अधूरा। अगहीन। छिन्न भिन्न। ६ विद्रोही। अराजक। ७ रोगी। बीमार। ८ आवेशग्रस्त। भावाविष्ट (को०)। ९ बीभत्स। घृणास्पद (को०)। १० पराङ्मुख। विरक्त (को०)। ११ विच्छिन्न (को०)।

यौ०—विकृतदर्शन = जिसका रूप बदल गया हो या विकारयुक्त हो। विकृतदृष्टि। विकृतरक्त = लाल रँगा हुआ या लाल घब्बोवाला। विकृतवदन = भद्दी आकृतिवाला। बदशकल। विकृतवेषी = वस्त्रादि को असस्कृत रूप से पहननेवाला। विकृतस्वर।

विकृत स्वर—सज्ञा पु० [स०] वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियो पर जाकर ठहरता है।

विशेष—संगीत शास्त्र मे १२ विकृत स्वर माने गए हैं—(१) च्युत षडज, (२) अच्युत षडज, (३) विकृत षड्ज, (४) साधारण गाधार, (५) अंतर गाधार, (६) च्युत मध्यम, (७) अच्युत मध्यम, (८) त्रिश्रुति मध्यम, (९) कैशिक पचम, (१०) विकृत धैवत, (११) कैशिक निषाद और (१२) काकली निषाद।

विकृता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक योगिनी का नाम।

विकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विकार। खराबी। बिगाड। २. वह रूप जो विकार के उपरात प्राप्त हो। बिगडा हुआ रूप। ३ रोग। बीमारी। ४ साख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमे विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। ५ परिवर्तन। ६ मन मे होनेवाला क्षोभ। ७ विद्रोही होने का भाव। शत्रुता। ८ मूल धातु से बिगडकर बना हुआ शब्द का रूप। ९ उन्नति। विकास। १० माया का एक नाम। ११ २३ वर्ण के वृत्तो की सज्ञा। १२ गर्भपात। गर्भच्युति (को०)।

विकृती—सज्ञा स्त्री० [स०] १. रोग। २ विकार। ३. डिंब। ४. मदिरा (को०)।

विकृष्ट—वि० [स०] १. खीचा हुआ। आकृष्ट। २ अलग किया हुआ (को०)। ३ फैलाया हुआ। विस्तृत किया हुआ (को०)। ४ ध्वनित। शब्दायमान (को०)। ५ लुटा हुआ (को०)।

यौ०—विकृष्टकाल = चिरकाल।

विकेट—सज्ञा पु० [अ०] क्रिकेट के खेल मे दोनो पक्षो की ओर आमने सामने गाडे गए तीन तीन स्टप या डडे और उनके ऊपर लगाई जानेवाली दो दो गुल्लियाँ।

यौ०—विकेट कीपर = बल्लेबाज के पीछे के स्टंप के पास रहनेवाला प्रतिपक्ष का खिलाडी।

विकेट डोर—सज्ञा पुं० [अ०] एक प्रकार का छोटा चक्करदार दरवाजा या जाने का रास्ता, जो प्राय कमर तक ऊँचा और ऊपर से बिलकुल खुला हुआ होता है।

विशेष—यह बागो आदि के बडे दरवाजो के पास ही इसलिये लगाया जाता है कि आदमी तो आ जा सकें, पर पशु आदि न आ सकें। इसके रूप प्राय इस प्रकार के होते हैं—

(१) (V), (२) [×], (३) [▢]

विकेतु—वि० [स०] ध्वजाविहीन। पताका से रहित [को०]।

विकेश'—वि० [स०] [वि० स्त्री० विकेशी] १ जिसके बाल खुले या बीडर हो।

विकेश'—सज्ञा पुं० १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ पुच्छल तारा। ३ एक प्रकार के प्रेत।

विकेशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] झोमबब [को०]।

विकेशी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मही (पृथ्वी) रूप शिव की पत्नी का नाम। २ एक प्रकार की राक्षसी या पूतना। ३ बालो की छोटी छोटी लटो को मिलाकर बनाई गई चोटी। वेणी (को०)। ४ बिखरे बालोवाली स्त्री (को०)। ५ गजी स्त्री।

विकोक—सज्ञा पु० [स०] वृकासुर के पुत्र और कोक के छोटे भाई का नाम।

विकोदर'—सज्ञा पुं० [स० वृकोदर] दे० 'वृकोदर'। उ०—गोयद का सुदर विकादर सा बाहाँ। समर की मरजाद धरम के राहाँ। —रा० रू०, पृ० १२३।

विकोश—वि० [स०] दे० 'विकोष' [को०]।

विकोष—वि० [स०] १ कोष या म्यान से निकली हुई (तलवार)। २ जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण या आच्छादन न हो। बिना छिलके का।

विकौतुक—सज्ञा पु० [स०] उत्सुकता रहित। उदासीन [को०]।

विक्क—सज्ञा पु० [स०] करभ। हस्तिशावक। हाथी का बच्चा [को०]।

विक्कण'—सज्ञा पुं० [स० विक्रयण] दे० 'विक्रय'। उ०—वेवहार मुल्लहि वणिक विक्कण कीनि आनहि वव्वरा।—कीर्ति०, पृ० २८।

विक्केणुअ—वि० [स० विक्रेय] दे० 'विक्रेय'।—देशी०, पृ० ३००।

विक्टोरियाँ'—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ ब्रिटेन की महारानी जिसके शासनकाल मे भारत का शासन ईस्ट इडिया कंपनी के हाथ से ब्रिटिश पार्लियामेट के हाथ मे चला गया था। २ एक प्रकार की घोडागाडी जो देखने मे प्राय. फिटन से मिलती जुलती, पर उससे कुछ छोटी और हलकी होती है और जिसे प्राय एक एक ही घोडा खीचता है।

विक्टोरिया'—सज्ञा पु० एक छोटे गह का नाम जिसका पता हेंड नामक एक यूरोपियन ने सन् १८५० मे लगाया था।

विक्त—वि० [स०] १ पृथक् किया हुआ। २. खाली। रिक्त [को०]।

विक्रम'—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु का एक नाम। उ०—कटि तट प्रगट प्रताप महान त्रिविक्रम रच्चै। पृष्ठ देस महँ परम रास

वर विक्रम रखै।—गोपाल (शब्द०)। २. बल, शौर्य या शक्ति की अधिकता। ताकत का ज्यादा होना। बहादुरी। पराक्रम। उ०—(क) कासी भूपति चलेउ प्रकासी विक्रम रासी।—गोपाल (शब्द०)। (ख) वर भोगी भूपन को धरे पंचानन विक्रम अधिक।—गोपाल (शब्द०)। (ग) विपुल बल मूल सदूल विक्रम जलदनाद मदन महावीर भारी।—तुलसी (शब्द०)। ३. ताकत। बल। ४. गति। ५ प्रकार। ढग। मार्ग। ६. साठ सवत्सरो मे से चौदहवाँ संवत्सर। ७ वेदपाठ की वह प्रणाली जिसमे क्रम का अभाव हो। ८ दे० 'विक्रमादित्य'। ९ पादविक्षेप। कदम। डग (को०)। १० चडता। तीव्रता उत्कर्ष (को०)। ११ स्थिति (को०)। १२ चरण (को०)। १३ विसर्ग का उष्म मे न बदलना (को०)। १४ कुडली के लग्न चक्र का तीसरा स्थान (को०)। १५ सस्कृत भाषा के एक जैन कवि जिन्होने मेघदूत के पदो को लेकर नेमिदूत नामक काव्य की रचना की थी।

विक्रम(पु)[2]—वि० श्रेष्ठ। उत्तम। उ०—सुवा सुफल लै आएउँ तेहि गुन ते मुख रात। क्या पीत सो तासो सवरी विक्रम बात।—जायसी (शब्द०)।

विक्रमक—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय के एक गण का नाम।

विक्रमण—सज्ञा पुं० [स०] १. चलना। कदम रखना। २. विष्णु का एक डग (को०)। ३ शूरता। वीरता (को०)। ४ (पाशुपत) अलौकिक शक्ति (को०)।

विक्रमशील—सज्ञा पु० [स०] एक बौद्ध विहर का नाम [को०]।

विक्रमस्थान—सज्ञा पु० [स०] बौद्ध मठ। विहार [को०]।

विक्रमाजीत—सज्ञा पुं० [स० विक्रमादित्य] दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य—सज्ञा पुं० [स०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा का नाम।

विशेष—इनके सबध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। ये बहुत बडे विद्याप्रेमी, कवि, उदार, गुणग्राहक और दानी कहे जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि इनकी सभा मे नौ बहुत बडे बडे और प्रसिद्ध पडित रहा करते थे, जो 'नवरत्न' कहलाते थे और जिनके नाम इस प्रकार हैं—कालिदास, वररुचि, अमरसिंह, धनवतरि, क्षपणक, वेतालभट्ट, घटकर्पर, शकु और वाराहमिहिर। परतु ऐतिहासिक दृष्टि से इन नौ विद्वानो का एक ही समय मे होना सिद्ध नही होता, जिससे 'नवरत्न' को लोग कल्पित ही समझते हैं। आजकल जो विक्रमी सवत् प्रचलित है, उसके सबध मे भी लोगो की यही धारणा है कि इन्ही राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है, पर इस बात का भी कोई ऐतिहासिक प्रमाण अभी तक नही मिला है कि विक्रमी सवत् के आरभ होने के समय मालव देश मे या उसके आसपास विक्रमादित्य नाम का कोई राजा रहता था। विक्रमी सवत् किस राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ है, इसका अभी तक कोई ठीक ठाक पता नही चला है। कुछ विद्वानो का मत है कि विक्रम सवत् का विक्रमादित्य नाम के किसी राजा के साथ कोई सबध नही है और न वह किसी एक व्यक्ति का चलाया हुआ है। उनका मत है कि ईसवी सन् से ५८ वर्ष पूर्व शक नहपाण को गौतमीपुत्र ने युद्ध मे बुरी तरह परास्त करके उसे मार डाला था। इस युद्ध मे उसने अपना जो विक्रम (वीरता) दिखलाया था, उसी की स्मृति के रूप मे मालवो के गण ने उसी तिथि से 'कृत युग का आरभ माना' और इस प्रकार इस विक्रम संवत् का प्रचार हुआ। तात्पर्य यह है कि सवत् वाला 'विक्रम' शब्द किसी विक्रमादित्य नामक सवत् चलानेवाले राजा का सूचक नही है, बल्कि वह पीछे के किसी राजा के विक्रम या वीरता का द्योतक है। स्कंद-पुराण मे लिखा है कि कलियुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर विक्रमादित्य नाम का एक बहुत प्रतापी राजा हुआ था। मोटे हिसाब से यह समय ईसवी सन् से प्राय सौ वर्ष पूर्व पडता है, पर यह राजा कौन था, इसका निश्चय नही होता। यह भी प्रसिद्ध है कि इस राजा ने शकों को एक घोर युद्ध मे पराजित किया था और उसी विजय के उपलक्ष मे अपना सवत् भी चलाया था। शकों को पराजित करने के कारण ही इसको एक उपाधि 'शकारि' भी हो गई थी। बौद्धो और जैनियों के धर्मग्रथो तथा चीनी और अरबी आदि यात्रियो के यात्राविवरणों मे भी विक्रमादित्य के सबध मे कुछ फुटकर बातें पाई जाती हैं पर न तो यही ज्ञात है कि इन्होने कब से कब तक राज्य किया और न इनके जीवन की और बातों का ही कोई क्रमबद्ध इतिहास मिला है। इतिहास से यह भी पता चलता है कि गुप्तवशीय प्रथम चद्रगुप्त ने उत्तर भारत मे शकों को परास्त करके 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी, परतु ये सवत् चलानेवाले विक्रमादित्य के बहुत बाद के हैं। इसके अतिरिक्त इसी गुप्तवंश के समुद्रगुप्त के पुत्र द्वितीय चद्रगुप्त ने भी 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। ईसवी सातवीं शताब्दी के आरभ मे काश्मीर मे भी विक्रमादित्य नाम का एक राजा हुआ था जिसके पिता का नाम रणादित्य था। इसी प्रकार चालुक्य वश मे भी इस नाम के कई राजा हो गए हैं। पीछे से तो मानो यह प्रथा सी चल पडी थी कि जहाँ कोई राजा कुछ अधिक बढ निकलता था, वहाँ वह अपने नाम के साथ 'विक्रमादित्य' की उपाधि लगा लिया करता था। यहाँ तक कि अकबर की बाल्यावस्था मे जब हेमूं बूसर ने दिल्ली पर अधिकार किया, तब वह भी विक्रमादित्य बन बैठा था।

उज्जयिनी नरेश विक्रमादित्य का पता अब चल गया है। वह मालव गणतत्र का प्रधान था। ऊपर के अनुच्छेद मे इसे ही गौतमीपुत्र के नाम से पुकारा गया है। वह इतना पराक्रमी निकला था कि बाद के प्रभावशाली नरेशों ने भी अपने नाम के आगे उसका नाम जोडने मे गौरव का अनुभव किया। ई० सन् से ५७ वर्ष पूर्व उसने भयकर युद्ध करके शकों को पराजित करके भारत से बाहर निकाल दिया था। इस विषय मे तथ्य के निर्णय मे कतिपय शिलालेख और उज्जयिनी मे खुदाई मे निकले मदिर आदि अत्यत सहायक सिद्ध हुए हैं।

विक्रमाब्द—स्त्री० पुं० [सं०] विक्रमादित्य के नाम से चला हुआ सवत्। विक्रम सवत्।

विक्रमार्क—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमित—संज्ञा पुं० [सं०] शौर्य। वीर्य। पौरुष (को०)।

विक्रमी[1]—संज्ञा पुं० [सं० विक्रमिन्] १ वह जिसमें बहुत अधिक बल हो। विक्रमवाला। पराक्रमी। उ०—अति विक्रमी भोरसाज-नंदन। नाम तासध्वज दुष्ट निकंदन।—रघुराज (शब्द०)। २ विष्णु। ३ शेर।

विक्रमी[2]—वि० विक्रम का। विक्रम संबंधी। जैसे,—विक्रमी संवत्।

विक्रमीय—वि० [सं०] विक्रमादित्य संबंधी।

विक्रय—संज्ञा पुं० [सं०] मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। बेचना। बिक्री। उ० इस दलील के आधार पर हर विक्रय के मामूली व्यापार में दस्तदाजी करना—अर्थात् किसी चीज के बेचने या मोल लेने की मनाई कर देना—और भी अनुचित बात होगी।—स्वाधीनता (शब्द०)।

यौ०—क्रय विक्रय।

विक्रयक—संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रयण—संज्ञा पुं० [सं०] बेचने की क्रिया। विक्रय। बिक्री।

विक्रयपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि अमुक पदार्थ अमुक व्यक्ति के नाम इतने मूल्य पर बेचा गया। बैनामा। २ सामानों का सरीद की रसीद। नगदी खरीद का रसीद। कैशमेमो।

विक्रय प्रतिक्रोष्टा—संज्ञा पुं० [सं० विक्रय प्रतिक्रोष्टृ] बोली बोलकर बेचनेवाला। नीलाम करनेवाला।

विक्रयिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो विक्रय करता या बेचता हो। बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रयी—संज्ञा पुं० [सं० विक्रयिन्] विक्रय करनेवाला। बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रय्य—वि० [सं०] बेचने योग्य। जो बेचा जानेवाला हो (को०)।

विक्रस्र—संज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा (को०)।

विक्रांत[1]—संज्ञा पुं० [सं० विक्रान्त] १ बैसाख मणि। २ शूर। वीर। बहादुर। ३ शेर। सिंह। ४ पुराणानुसार हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। ५ व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग अविकृत ही रहता है। ६ एक प्रजापति का नाम। ७. पुराणानुसार कुवलयाश्व के पुत्र का नाम जिसका जन्म मदालसा के गर्भ से हुआ था। ८ चलने का ढंग। ९ साहस। हिम्मत। १० एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ।

विक्रांत[2]—वि० १ जिसकी क्रांति नष्ट हो गई हो। २ तेजस्वी। प्रतापी।

यौ०—विक्रांतगति = सिंह के समान गति या चालवाला। सुंदर गतिवाला। विक्रांतयोधी = पराक्रमी या उच्चकोटि का योद्धा।

विक्रांता[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रांता] १ अग्निमंथ वृक्ष। अरणी। २ जयंती। ३ मूसाकानी। ४, अरहुल। गुड़हर। ५ अपराजिता। ६. लाल लजालू। छुई मुई। ७. हंसपदी नाम की लता।

विक्रांता[2]—संज्ञा पुं० [सं० विक्रान्तृ] १ शूरवीर। वीर। योद्धा। २ शेर। सिंह। ३ विष्णु (को०)।

विक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रान्ति] १ गति। २. पैर की झपट मारना। ३ विक्रम। पैर। ४ वीरता। शूरता। बहादुरी।

विक्रायक—संज्ञा पुं० [सं०] बेचनेवाला। विक्रेता।

विक्रायिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विक्रयिक'।

विक्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विकार। परिवर्तन। २ किसी क्रिया के लिए उत्तेजित करना। ३ परिवर्तन (जैन)। ४. उत्तेजना। प्रकोप (जैन)। ५ पाप। ६ प्रतिक्रिया (जैन)। ७ नौकर का व्यवहार (जैन)। ८ व्यापार (जैन)। ९ शरीरसज्जा। शृंगार (जैन)। १० उपवास। कर्तव्य का पालन न होना (जैन)। ११ पाखंड पूर्ण (जैन)। १२ दुष्टि। त्रुटि। १३ बुलाना। निमंत्रण (आगरा)।

विक्रियोत्पन्ना—संज्ञा [सं०] एक प्रकार का उपधान प्रहार जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या व्यवहार का आरोपण किया जाता है।

विक्री—संज्ञा स्त्री० [सं० विक्रय] १ बेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। बिक्री। २. वह धन जो बेचने पर मिले।

विक्रीड—संज्ञा पुं० [सं०] १ खेल का मैदान। २ खेलने की वस्तु। खिलौना (को०)।

विक्रीत[1]—वि० [सं०] जो बेच दिया गया हो। बेचा हुआ।

विक्रीत[2]—संज्ञा पुं० बिक्री। विक्रय (को०)।

विक्रुष्ट[1]—वि० [सं०] १ निष्ठुर। निर्दय। २ रोता हुआ। गर्हित। निंदित।—विरुद्ध (जै०)। ३ उत्क्रोशित। उत्क्रोशित (जै०)।

विक्रुष्ट[2]—संज्ञा पुं० १ गाली। गालगलौज। २ महाजनों प्राप्त करने के लिये विज्ञापन। मुनादी करना। मुनादी (जै०)।

विक्रेतव्य—वि० [सं०] विक्रय के योग्य। बेचने लायक (जै०)।

विक्रेता—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कुछ लेकर देता हो। बेचनेवाला। विक्रय करनेवाला।

विक्रेय, विक्रेय्य—वि० [सं०] जो बेचने योग्य हो। बिकनेवाला। जो बिक्री योग्य हो।

विक्रोध—वि० [सं०] क्रोध। क्रोधरहित (को०)।

विक्रोश, विक्रोशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुकार। दुहाई। २ गाली। अपशब्द (को०)।

विक्रोष्टा—संज्ञा पुं० [सं० विक्रोष्टृ] १ वह जो महाजनों पुकार करता हो। २ अपशब्दों का प्रयोग करनेवाला (को०)।

विक्लव[1]—वि० [सं०] १. विह्वल। बेचैन। २ भयभीत। डरा हुआ। त्रस्त (को०)। ३ उत्पीड़ित। कातर (को०)। ४ अभिभूत। ग्रस्त। परास्त (को०)। ५. दुखी। कष्टग्रस्त। नतत (को०)। ६ जला हुआ (को०)। ७ हकलाने या लड़खड़ानेवाला (को०)।

विक्लव[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विह्वलता। व्याकुलता। बेचैनी। २. खौफ। डर। भय (को०)।

विक्लवता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भीरुता। कायरता (को०)।

विक्लवित—संज्ञा पुं० [सं०] भय से भरी बात। भयभीत वचन।

विक्लात—वि० [स० विक्लात] १ थका हुआ। श्रात। पस्त हिम्मत। २ हतोत्साह [को०]।

विक्लित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] आर्द्रता। क्लिन्नता। गीलापन [को०]।

विक्लिद्य—वि० [स०] पसीने से तर। प्रस्वेद से भीगा हुआ। [को०]।

विक्लिन्न—वि० [स०] १ जो पुराना होने के कारण सड या गल गया हो। जीर्ण शीर्ण। २ अत्यत गीला। पूरी तरह भीगा हुआ (को०)। ३ मुर्झाया हुआ। म्लान। शुष्क (को०)।

विक्लिष्ट'—वि० [स०] १ अत्यंत कष्टग्रस्त। दुखी। २ क्षतिग्रस्त। नष्ट किया हुआ [को०]।

विक्लिष्ट'—सज्ञा पु० उच्चारण दोष [को०]।

विक्लेद—सज्ञा पु० [स०] १ आर्द्रता। गीलापन। २ भली भाँति तर या गीला होना। ३ विगलन। द्रवीकरण [को०]।

विक्लेदन—सज्ञा पु० [स०] मुलायम या आर्द्र करने की क्रिया [को०]।

विक्लेश—सज्ञा पु० [स०] दैत्य वर्णों का अशुद्ध उच्चारण [को०]।

विक्षत'—वि० [स०] १. जिसमे क्षत लगा हो। जिसमे खराश पडी हो। घायल। जख्मी। २ पीटा हुआ (को०)। ३ प्रभावित। अभिभूत (को०)।

विक्षत'—सज्ञा पु० घाव। जख्म [को०]।

विक्षय—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जो अधिक मद्यपान करने से होता है।

विक्षर'—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम। २ कृष्ण। ३ एक राक्षस [को०]।

विक्षर'—वि० प्रवहमान। बहता हुआ [को०]।

विक्षरण—सज्ञा पु० [स०] बहना [को०]।

विक्षार—सज्ञा पु० [स०] भाग्यशाली दैवी घटना।

विक्षाव—सज्ञा पु० [स०] १ खाँसी। कास। २ शब्द। ध्वनि [को०]।

विक्षित—वि० [स०] १ नीचे गिरा हुआ। २ हीन। दुखी [को०]।

विक्षिप्त'—वि० [स०] १. फेंका या छितराया हुआ। २ जिसका त्याग किया गया हो। त्यक्त। ३ जिसका दिमाग ठिकाने न हो। पागल। उ०—(क) उसकी नींद भी उड जाती होगी और जो रात दिन जागता होगा, तो विक्षिप्त या अतिरोगी होगा। —दयानंद (शब्द०)। (ख) तुमहि कह्यो श्रुति शास्त्रन माही। जहँ विक्षिप्त भूप ह्वै जाही।—रघुराज (शब्द०)। ४ घबराया हुआ। पागलो का सा। विकल। व्याकुल। ५ भेजा हुआ। प्रेषित (को०)। ६ जिसका खडन किया गया हो। निराकृत (को०)। ७ कपित। विक्षुब्ध। जैसे, वि.क्षप्त भ्रूविलास (को०)।

विक्षिप्त'—सज्ञा पु० योग मे चित्त की वृत्तियो या अवस्थाओ मे से एक जिसमे चित्त प्राय अस्थिर रहता है, पर बीच बीच मे कुछ स्थिर भी हो जाता है। कहा गया है कि ऐसी अवस्था योग की साधना के लिये अनुकूल या उपयुक्त नही होती।

विशेष—दे० 'चित्तभूमि' और 'योग'।

विक्षिप्तक—सज्ञा पु० [स०] वह मृत शरीर जो जलाया या गाडा गया हो, बल्कि यो ही कहीं फेंक दिया गया हो। (बौद्ध)।

विक्षिप्तता सज्ञा स्त्री० [स०] विक्षिप्त या पागल होने का भाव। पागलपन। उ०—यहाँ तक कि कुछ काल के पश्चात् स्वयं उसे ही अपनी विक्षिप्तता को देखकर विस्मित होना पडता है। —निबधमालादर्श (शब्द०)।

विक्षीणक—सज्ञा पु० [सं०] १ देवमंडली। २ शिव के अनुचरो का प्रधान। ३ वह स्थान जहाँ से आमिषाहारी हटा दिए गए हो। ४ विध्वस या नष्ट करनेवाला व्यक्ति। विनाशक [को०]।

विक्षीर सज्ञा पु० [स०] आक। मदार।

विक्षीरणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दुद्धी। दुग्धिका।

विक्षुण्ण—वि० [स०] १ प्रोत्साहित। प्रेरित। २ चूर्णित। मर्दित। ३ पददलित [को०]।

विक्षुद्र—वि० [स०] जो अपेक्षाकृत छोटा हो [को०]।

विक्षुब्ध—वि० [स०] जिसके मन मे क्षोभ उत्पन्न हुआ हो। जिसका मन चचल हो। क्षुब्ध।

विक्षुभा—सज्ञा स्त्री० [स०] छाया का एक नाम।

विक्षेप सज्ञा पुं० [स०] १ ऊपर की ओर अथवा इधर उधर फेंकना। डालना। २ इधर उधर हिलाना। झटका देना। ३ (धनुष की डोरी) खीचना। चिल्ला चढाना। ४ मन को इधर उधर भटकाना। इद्रियो को वश मे न रखना। सयम का उलटा। उ०—ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, विक्षेप आदि दोषो से अलग हो के सत्य आदि गुणो को धारण करे।—दयानद (शब्द०)। ५ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जो फेककर चलाया जाता था। ६ सेना का पडाव। छावनी। ७ एक प्रकार का रोग। ८ बाधा। विघ्न। खलल। जैसे,—इस काम मे कई विक्षेप पडे हैं। उ०—समाधि की प्राप्ति होने पर भी उसमे चित्त स्थिर न होना ये सब चित्त की समाधि होने मे विक्षेप अर्थात् उपासनायोग के शत्रु है।—दयानंद (शब्द०)। ९ भेजना। प्रेषण (को०)। १०. खटका। भय (को०)। ११ तर्क का निराकरण (को०)। १२. भ्रुवीय अक्षरेखा (को०)। १३. व्यर्थ गवाँना (को०)। १४. अनवधानता (को०)।

विक्षेपण—सज्ञा पु० [स०] १ ऊपर अथवा इधर उधर फेंकने की क्रिया। २. हिलाने या झटका देने की क्रिया। ३ धनुष की डोरी खीचने की क्रिया। ४ विघ्न। बाधा। खलल। ५ प्रेषण। भेजना (को०)। ६. व्यामोह। व्यग्रता। चित्तविक्षेप (को०)।

विक्षेपलिपि—सज्ञा स्त्री० [स०] ललितविस्तर के अनुसार एक प्रकार की प्राचीन लिपि या लेख प्रणाली।

विक्षेपशक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वेदातदर्शन के अनुसार माया की शक्ति। अविद्या [को०]।

विक्षेपावस्था सज्ञा स्त्री० [स० विक्षेप+अवस्था] असयम की दशा। [illegible] स्थिति। उ०—जो उसकी यह विक्षेपावस्था [illegible] मे बदली कि उसका आवरण [illegible] साहित्य०, पृ० २३६।

विक्षेता—वि० [सं० विक्षेतृ] विक्षेप करनेवाला। फेंकनेवाला। तितर बितर करनेवाला (को०)।

विक्षोभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ मन की चंचलता या उद्विग्नता। क्षोभ। २ हाथी की छाती का एक भाग या पार्श्व। ३. हलचल। कंपन। जैसे, वीचिविक्षोभ (को०)। ४ क्रंदन। चीत्कार (को०)। ५ विदीर्णन। विदारण (को०)। ६ आतंक। भय। खौफ (को०)।

विक्षोभण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुराणानुसार एक दानव का नाम। २ मन में बहुत अधिक क्षोभ उत्पन्न होना या करना। ३. कंपित करना। हिलाना (को०)।

विक्षोभित—वि० [सं०] क्षुब्ध किया हुआ। हिलाया हुआ (को०)।

विक्षोभी—वि० [सं० विक्षोभिन्] [वि० स्त्री० विक्षोभिणी] जो क्षोभ उत्पन्न करे। क्षोभकारी। विक्षुब्ध करनेवाला।

विखंडित—वि० [सं० विखण्डित] १ तोड़ा हुआ। टुकड़े में विभक्त। विखंडित। २ दो भागों में किया हुआ। दो टुकड़ों में विभक्त। ३ अंगभंग किया हुआ। ४ जिसका खंडन या निराकरण किया गया हो (न्याय)। ५ क्षुब्ध। अशांत। क्षीण (को०)।

विखंडी—वि० [सं० विखण्डिन्] विखंडित या विभिन्न करनेवाला। नष्ट करनेवाला (को०)।

विख'—वि० [सं०] जिसको नाक न हो। बिना नाकवाला।

विख[७]²—संज्ञा पुं० [सं० विष, प्रा० विस्] दे० 'विष'।

विखइ, विखउ[७]—संज्ञा पुं० [सं० विषम या विषय] विपत्ति। संकट। दुर्दिन। उ०—(क) आज विखइ सों छीकरी, हासउ हुंमति लोइ।—ढोला०, दू० ७। (ख) परदेसे पांथण भणा विखउ न जाणइ मुद्ध।—ढोला०, दू० १७।

विखनन—संज्ञा पुं० [सं०] खोदना। खोदने का काम। खुदाई (को०)।

विखना—संज्ञा पुं० [सं० विखनस्] १ प्रजापति। ब्रह्मा। २ एक मुनि का नाम (को०)।

विखम[७]—वि० [सं० विषम] दे० 'विषम'। उ०—सब पहुचावो कीग दग, जहं गिरि विखम उजारि। धीरां चार तिमि बीत पुनि, भयो नपत उजियार।—विश्रा०, पृ० २७।

विखहा—संज्ञा पुं० [सं० विषहा] विषैले सर्पों के भक्षु, गरुड़।

विखाद[७]¹—संज्ञा पुं० [सं० विषाद] दे० 'विषाद'। उ०—अवतार अम अगजीत ग्रह वस विखाद पलट्टिया।—रा० रू०, पृ० ३७७।

विखाद'—संज्ञा पुं० [सं०] १ नष्ट करना। ध्वस्त करना। ध्वंसन। २ खादन। निगलना। भक्षण। खाना (को०)।

विखादितक—संज्ञा पुं० [सं०] वह मृत शरीर जिस पशुओं ने खा डाला हो। (बौद्ध)।

विखान[७]—संज्ञा पुं० [सं० विषाण] सींग।

विखानस—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैखानस'।

विखाना[७]†—क्रि० स० [सं० वीक्षण, प्रा० विक्खण ?] दिखाना। उ०—सोहँणि मूरती नू अर्घ्या तदां आनंदघन मुख आणि विखावै।—घनानंद०, पृ० ३६६।

विखासँघ—संज्ञा स्त्री० [हिं० बिन (=बिना)+आसंघ (संघ) (प्रत्य०)] बरसों या दलों की सी मार। विसासँघ। उ०—जो अनहद भरे अगमा। सोइ विगोय सकि नहिं तमा। जायसी (शब्द०)।

विखासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निद्रा। नींद (को०)।

विखु—वि० [सं०] नासाहीन। बिना नाक का।

विखुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ राक्षस। २ पाप।

विखेद—वि० [सं०] खेदरहित। आनंदमग्न। मुदित (को०)।

विगं'—संज्ञा स्त्री० [सं० विगम] विनाश। नाश। उ०—(क) तिनके तुम सागर चोर गए के सहाय, जो जल की थिति है जल जैसा सोपत। —रा०रू०, पृ० १२०। (ख) उपजत मात हती सो जगत। गई आइ तिहि को आगत। —रा० रू०, पृ० ३११।

विगंध—वि० [सं०] गंधहीन। (को०)।

विगत—वि० [सं०] १ जिसका गान किया गया हो। प्रसिद्ध। मशहूर। उ०—(क) सब ऐसन बहु पुत्र बड़ा जिन पावा सिव भाऊ। विगत काल महिपाल प्रतापी पुत्र अलप लिखाऊ।—रघु० (शब्द०)। (ख) सब कौ अति सुंदर बहु पावा। पुनि पुनि सिव सुत सुजस बखाना। सो सब विगत अलप।—कीरति (शब्द०)। २. नामवाला। नामधारी (को०)। ३ प्राप्त। लब्ध। पाया हुआ (को०)।

विगत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] विगत होने का भाव। प्रसिद्धि। मशहूरी। उ०—राम नाम गुनिवर गुनत मानस सकट कुजारि। तुलसि कृपा रघुवीर की सरत भुवन विगत्ति।—तुलसी (शब्द०)।

विगत्यान—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रसिद्ध करना। मशहूर करना। २ ख्यापन, घोषणा या विज्ञप्ति करना (को०)। ३ स्वीकार करना (को०)।

विगद, विगदु—वि० [सं०] नासाहीन। नासिकाविहीन (को०)।

विगदौर—संज्ञा पुं० [सं० विगदकरी] एक तरह का फूल। मल्लिका पुष्प (को०)।

विगध—वि० [सं० विगन्ध] १ जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो। २. बदबूदार। उ०—कटक सलिल तिन बलित विमल जस तिनके सतसत सता को प्रगास तू।—केशव (शब्द०)।

विगधक—संज्ञा पुं० [सं० विगन्धक] खुदी हुई।

विगधिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विगन्धिका] १ छुहारा। खजूर। २. अजगंधा। तिलवन।

विगणन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हिसाब लगाना। लेखा करना। २. विचारना। विचार विमर्श करना (को०)। ३ ऋण से मुक्त होना। कर्ज चुकाना।

विगणित—वि० [सं०] १ विचारित। २ चुकता किया हुआ। अदा किया हुआ (कर्ज)। ३ जिसका विगणन किया गया हो (को०)।

विगत'—वि० [सं०] १. जो गत हो गया हो। जो बीत चुका हो।

विशेष—जब यह शब्द यौगिक अवस्था में किसी संज्ञा के पहले आता है तब इसका अर्थ होता है—'जिसका नष्ट हो गया हो'।

जैसे,—विगतज्वर = जिसका ज्वर उतर गया हो। विगत-नयन = जिसकी आँखें नष्ट हो गई हो। विगतत्रास = जिसका भय दूर हो गया हो। उ०—विगतत्रास प्रमुदित मन माही। निरखि राम छवि दृग न अघाही।—रामाश्वमेध (शब्द०)।

२ गत से पहले का। अंतिम या बीते हुए से पहले का। जैसे,—विगत सप्ताह = गत सप्ताह से पहले का सप्ताह। ३. जो कही इधर उधर चला गया हो। ४. जिसकी प्रभा या कांति नष्ट हो गई हो। जिसकी चमक आदि जाती रही हो। निष्प्रभ। ५ रहित। विहीन। उ०—(क) विगत मान सम सीतल मन पर गुन नहिं दोस कहौंगो।—तुलसी (शब्द०)। (ख) प्रमुदित जनक निरखि अंबुज मुख विगत नयन मन पीर।—सूर (शब्द०)। ६ मृत (को०)। ७ खोया हुआ। लुप्त (को०)। ८ अधकारा च्छन्न। अस्पष्ट। धुँधला (को०)।

यौ०—विगतकल्मष = निष्पाप। पवित्र। विगतक्लम = अक्लांत क्लांतिरहित। विगतज्ञान = नष्टज्ञान। विनष्टबुद्धि। विगत-नयन = नेत्रहीन। अंधा। विगतभी = निर्भय। निडर। विगत-राग = विगतस्पृहा। विगतलक्षण = अभागा। विगतश्रीक = कांतिहीन। अभागा। विगतस्पृहा = आकांक्षाहीन उदासीन।

विगत[२]—संज्ञा पुं० पक्षियों का उड़ना [को०]।

विगत[३]—संज्ञा पु०० [सं० विगत(=व्यतीत)]। १ बीता हुआ। व्यतीत। २ असलीयत। व्यौरा। हालचाल। उ०—यह भाँत विगत विवाह सुणता अंग प्रफुल्लत आण।—रघु० रू०, पृ० ८१।

विगतवार—क्रि० वि० [हिं० विगत+वार] दे० 'व्योरेवार'। उ०—या मर्म्म आजानबाह जेते सरदार। कवि जेते जानैं सो बखानैं विगतवार।—रा० रू०, पृ० ११८।

विगता—वि० स्त्री० [सं०] १ जो विवाह करने के योग्य न रह गई हो। २ जो परपुरुष मे प्रेम करती हो।

विगतार्तवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह औरत जिसका ऋतुस्राव बंद हो गया हो [को०]।

विगतासु—वि० [सं०] मृत। निष्प्राण [को०]।

विगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्दशा। दुगति। खराबी।

विगतोबुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] एक बुद्ध का नाम।

विगत्त—संज्ञा पु० [सं० विगति(=व्यतीत)] व्यौरा। विवरण। उ०—उल्लमैं वेल परसैं अरस, ग्यान न लोक विगत्तारौ।—रा० रू०, पृ० १५३।

विगद[१]—वि० [सं०] गद रहित। नीरोग। स्वस्थ [को०]।

विगद[२]—संज्ञा पुं० एक साथ अनेक प्रकार के शब्द होना [को०]।

विगदित—वि० [सं०] १ चतुर्दिक् फैला हुआ (जनरव)। २ कहा हुआ। बातचीत किया हुआ। वर्णित [को०]।

विगम—संज्ञा पु० [सं०] १. प्रस्थान। अनुपस्थिति। चला जाना। प्रयाण। २ समाप्ति। अंत। खातमा। ३ नाश। हानि। ४ मोक्ष। ५ परित्याग (को०)। ६ मृत्यु (को०)। ७ पार्थक्य। अलगाव (को०)।

विगर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भोजन का त्याग करनेवाला व्यक्ति। २ नग्न यति। नागा। नगा यति। ३ पर्वत। पहाड़ [को०]।

विगर्जा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भर्त्सना करना। डाँटना। डपटना। धिक्कार। फटकार।

विगर्हण—संज्ञा पु० [सं०] समुद्र की लहरों की गर्जनध्वनि [को०]।

विगर्हणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] भर्त्सना। डाँट। फटकार।

विगर्हणीय—वि० [सं०] बुरा। दुष्ट। निंद्य [को०]।

विगर्हा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुत्सा। भर्त्सना। निंदा [को०]।

विगर्हित[१]—वि० [सं०] १. जिसे भर्त्सना की गई हो। जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। तिरस्कृत। २ बुरा। खराब। निंदनीय। ३ निषिद्ध। ४ नीच। दुष्ट (को०)।

विगर्हित[२]—संज्ञा पु० निंदा [को०]।

विगर्ही—वि० [सं० विगर्हिन्] निंदक [को०]।

विगर्ह्य—वि० [सं०] जो भर्त्सना करने योग्य हो। डाँटने डपटने या निंदा करने के योग्य।

विगलन—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिरना। श्लथ होना। शैथिल्य। २ नाश। ३ एकरूप होना। घुलना। ४ रिसना। बह जाना। ५ गल जाना [को०]।

विगलित—वि० [सं०] १ जो गिर गया हो। अध पतित। २ जो बह गया हो। जो चूकर या टपककर निकल गया हो। ३. ढीला पड़ा हुआ। छुटा हुआ। शिथिल। ४ बिगड़ा हुआ। उ०—ऋतुपति तरु विगलित सुदल, तहँ कुरूपता वास। बसी अरुचि यक अघन में, पाप न बस्यो विनास।—रामस्वयंवर (शब्द०)। ५ अंतर्हित। गया हुआ। लुप्त (को०)। ६ तितर बितर। अस्तव्यस्त (को०)। ७ विदीर्ण।

यौ०—विगलितकेश = बिखरे बालोंवाला। विगलितनीवी = जिसकी नीवी खुल गई हो। विगलितबंध = बंधनमुक्त। विग-लितलज्ज = धृष्ट। ढीठ। निर्लज्ज। विगलितवसन, विगलित-वस्त्र = विवस्त्र। नग्न। नंगा। विगलितशुचु, विगलितशोक = दुःखरहित। कष्टरहित। वेदनामुक्त।

विगसना†—क्रि० अ० [सं० विकसन] विकसित होना। खिलना। उ०—हीरा मन निज दास है, सब दासन को दास। सतगुरु से परिचय भई, विगसा प्रेम प्रकाश।—सं० दरिया, पृ० ४५।

विगाढ—वि० [सं० विगाढ] १ अतिशय। २ आगे बढ़ा हुआ। ३ धंसा हुआ (शस्त्र)। ४ स्नात। अवगाहित। ५ प्रगाढ। ६ गहरा घुसा हुआ। डूबा हुआ। निमज्जित [को०]।

विगाथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आर्या छंद का एक भेद जिसके विषम (प्रथम और तृतीय) पदों में १२, दूसरे में १५ और चौथे में १८ मात्राएँ होती हैं और अंत का वर्ण गुरु होता है। विषम गणों (पदों) में जगण नहीं होता, पहले दल का छठा गण (२७ ही मात्रा के कारण) एक लघु का मान लिया जाता है। इसे 'विगाहा' और 'उद्गीति' भी कहते हैं।

विगान—संज्ञा पु० [सं०] १ निंदा। भर्त्सना। मानहानि। अपमान। २. परस्पर विरोधी युक्ति। असंगति [को०]।

विगाह—सज्ञा पु० [स०] १ डुबकी लगाना। २ प्रवेश। ३ स्नान करना (को०)।

विगाहना—क्रि० अ० [स० विगाहन] अवगाहन करना। अवगाहना।

विगाहमान—वि० [स०] विलोडन या अवगाहन करनेवाला (को०)।

विगाहा—सज्ञा स्त्री० [स० विगाथा] दे० 'विगाथा'।

विगीत—वि० [स०] १ निंदित। बुरा। कुत्सित। २ परस्पर विरोधी। असगत। ३ बुरे ढग से गाया हुआ।

विगीति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ निंदा। झिडकी। २ परस्पर विरोधी उक्ति। ३ आर्याछद का एक भेद (को०)।

विगुण'—वि० [स०] १ जिसमे कोई गुण न हो। गुणरहित। निर्गुण। विशेष दे० 'निर्गुण'। उ०—दृशि रूप मन तमज विगुण। हृदयस्थ लखौ सब त्यागि भ्रम।—स्वामी रामकृष्ण (शब्द०)। २ बुरा। निकम्मा (को०)। ३ बिना रस्सी का (को०)। ४ सूक्ष्म (को०)। ५ अव्यवस्थित। अस्तव्यस्त (को०)। ६ असफल (को०)। ७ अपर्याप्त। थोडा। अधूरा (को०)। ८ विकृत। उलटा। विपरीत। उ०—मन का अवरोध होने से वायु विगुण (उलटा) होकर अफरा वात शूल और मूत्र इनका नाश करे तब मूत्रकृच्छ्र प्रगट होय।—माधव० पृ० १७१।

विगुल्फ—वि० [स०] प्रचुर। अधिक (को०)।

विगूढ—वि० [स० विगूढ] १ गुप्त। छिपा हुआ। २ निंदित (को०)।

विगृहीत—वि० [स०] १, विभक्त। भग्न किया हुआ। २ पकडा हुआ। अभिभूत। ३ मुकाबला किया हुआ। विरोध किया हुआ। ४ प्रतिबद्ध। निरुद्ध (को०)।

विगृह्यगमन—सज्ञा पु० [स०] कामंदक नीति के अनुसार चारो ओर से मित्रो तथा शत्रुओ से घिरकर पानी मे से भागना।

विगृह्ययान—सज्ञा पु० [स०] चढाई। हमला (को०)।

विगृह्यवाद—सज्ञा पु० [स०] कहासुनी (को०)।

विगृह्यास—सज्ञा पु० [स०] कामदक नीति के अनुसार शत्रु की शक्ति आदि की कुछ भी परवाह न करके की जानेवाली अवाधु ध चढाई।

विगृह्यासन—सज्ञा पु० [स०] १ दुश्मन को छेडकर या उसकी जमीन आदि छीनकर चुपचाप बैठना। २ शत्रुस्थित दुर्ग को जीतने मे असमर्थ होकर घेरा डालकर बैठना।

विग्गाहा—सज्ञा स्त्री० [स० विगाथा] विगाथा नामक छंद जो आर्या का एक भेद है।

विग्न—वि० [स०] १ कंपित। क्षुब्ध। २ त्रस्त। भीत (को०)।

विग्यपति—सज्ञा स्त्री० [स० विज्ञप्ति > विग्यपति] दे० 'विज्ञप्ति'। उ०—विग्यपति ये है देव। भृति भयौ भार्पै मेव। सुदर सुधा समुद्र ग्रथ मोहि भायौ है।—सुदर० ग्र० (जी०) भा० १, पृ० ६२।

विग्र—वि० [स०] १ नासाहीन। बिना नाक का। २. शक्तिशाली। मेधावी। बली (को०)।

विग्रह—सज्ञा पु० [स०] १ दूर या अलग करना। २ विभाग। ३ यौगिक शब्दो अथवा समस्त पदो के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना (व्याकरण)। ४ कलह। लडाई। झगडा। ५ युद्ध। समर। ६ नीति के छह गुणो मे से एक। विपक्षियो मे फूट या कलह उत्पन्न करना। ७ आकृति। शकल। ८ शरीर। ९ मूर्ति। १० सजावट। शृगार। ११ साख्य के अनुसार कोई तत्व। १२ शिव का एक नाम। १३ स्कद के एक अनुचर का नाम। १४ दूसरे के प्रति हानिकारक उपायो का प्रत्यक्ष प्रयोग। १५ विस्तार। फैलाव। प्रसार (को०)।

विग्रहग्रहण—सज्ञा पु० [स०] रूपाकार धारण करना (को०)।

विग्रहण—सज्ञा पु० [स०] रूप धारण करना। शक्ल मे आना।

विग्रहपर—वि० [स०] युद्ध या लडाई के लिये तुला हुआ।

विग्रहवान—वि० [स० विग्रहवत्] शरीरधारी (को०)।

विग्रहावर—सज्ञा पु० [स०] देह का पिछला भाग। पीठ (को०)।

विग्रही—सज्ञा पुं० [स० विग्रहिन्] १ लडाई झगडा करनेवाला। २ युद्ध करनेवाला। ३. युद्ध विभाग का मत्री या सचिव।

विग्रहेच्छु—वि० [स०] युद्ध चाहनेवाला। युद्धाभिलाषी (को०)।

विग्राहित—वि० [स०] बुरी धारणा रखनेवाला (को०)।

विग्राह्य—वि० [स०] जो इस योग्य हो कि उसके साथ लडाई की जा सके। जिसके साथ युद्ध हो सके।

विग्रीव—वि० [स०] ग्रीवा रहित। जिसकी गरदन कट गई हो। (को०)।

विघटन—सज्ञा पुं० [सं०] १ सयोजक अगो को अलग अलग करना। २ तोडना फोडना। उ०—प्रगटी धनु विघटन परिपाटी।—तुलसी (शब्द०)। ३ नष्ट या बरबाद करना।

विघटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] समय का एक छोटा मान। लगभग २३-२४ सेकेंड के बराबर का काल। घडी का २३ वाँ या ६० वाँ भाग। पल।

विघटित वि० [स०] १ जिसके संयोजक अग अलग अलग किए गए हो। २ जो तोड फोड डाला गया हो। ३ नष्ट।

विघट्टन—सज्ञा पु० [स०] १ खोलना। २ पटकना। ३ रगडना। ४ दे० 'विघटन'। ५ प्रहार करना। टक्कर मारना (को०)। ६ ठेस पहुँचाना। व्यथित करना (को०)।

विघट्टनीय—वि० [स०] १ पृथक् करने योग्य। २ जिसका विघटन किया जाय। विघटन करने योग्य (को०)।

विघट्टित—वि० [स०] १ खुला हुआ। २ तोडा फोडा हुआ। ३ विभक्त या अलग अलग किया हुआ (को०)। ४ रगडा हुआ (को०)। ५ हिलाया हुआ। विलोडित (को०)। ६ आधारित (को०)।

विघट्टी—वि० [स० विघट्टिन्] विघटित करनेवाला (को०)।

विघन'—सज्ञा पु० [स०] १ आघात करना। चोट पहुँचाना। २ एक प्रकार का बहुत बडा हथौडा। घन। ३ इद्र।

विघन२—वि० १ अत्यत ठोस। कठिन। कठोर। २ घनता से रहित। कोमल। मृदु। ३. मेघविहीन। बादलो से रहित (को०)।

विघन(पु)[१]—सज्ञा पु० [स० विघ्न] दे० 'विघ्न'।

विघर्षण—सज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह रगडने या घिसने की क्रिया।

विघस—सज्ञा पुं० [स०] १. आहार। भोजन। खाना। २ वह अन्न जो देवता, पितर, गुरु या अतिथि आदि के खाने पर बच रहे। उ०—अतिथि के भोजन से बचा हुआ अन्न 'विघस' और पचयज्ञ से बचा अन्न 'अमृत' कहलाता था।—प्रा० भा० प०, पृ० ३२९। ३ आधा चबाया हुआ ग्रास (को०)। ४ खाद्य पदार्थ (को०)। ५ सिक्थक। मोम (को०)।

विघसाश—सज्ञा पुं० [स०] विघस नामक अन्न का भक्षक। भुक्तशेष अन्न खानेवाला। जैसे, कौआ, कुत्ता आदि (को०)।

विघसाशी—सज्ञा पु० [स० विघसाशिन्] दे० 'विघसाश'।

विघात—सज्ञा पु० १. आघात। प्रहार। चोट। २. टुकडे टुकडे करना। तोडना फोडना। ३ नाश। ४ बाधा। विघ्न। रोक। ५. सफल न होना। विफलता। ६ हत्या। वध (को०)। ७ परित्याग करना। छोडना (को०)। ८ व्याकुलता (को०)।

विघातक—सज्ञा पु० [स०] १ विघ्न डालनेवाला। बाधक। २ विघात करनेवाला। घातक (को०)।

विघातन[१]—सज्ञा पु० [स०] १ विघात करने की क्रिया। २ मार डालना। हत्या करना।

विघातन[२]—वि० विघात करनेवाला। निवारण करने या हटानेवाला।

विघाती—सज्ञा पु० [स० विघातिन्] [स्त्री० विघातिनी] १ विघात करनेवाला। २ बाधा डालनेवाला। ३. हत्या करनेवाला। घातक।

विघुष्ट—वि० [स०] उच्च स्वर से कथित। उद्घोषित (को०)।

विघूणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] नासिका। नाक।

विघूर्णन—सज्ञा पु० [स०] चारो ओर घुमाना। चक्कर देना।

विघूर्णित—वि० [स०] १ कँपाया हुआ। कपित। २ चारो ओर घुमाया या चक्कर दिया हुआ (को०)।

विघृष्ट—वि० [स०] १ भली भाँति रगडा हुआ। घिसा हुआ। २ पीडित (को०)।

विघोषण—सज्ञा पु० [स०] घोषणा करना। जोरो से चिल्लाना (को०)।

विघ्न—सज्ञा पु० [स०] १ किसी काम के बीच मे पडनेवाल अडचन। रुकावट। बाधा। व्याघात। अतराय। खलल।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—दूर करना।—पडना।—होना।

विशेष—जब इस शब्द के साथ नायक, नाशक अथवा इनके पर्यायवाची शब्दो का योग होता है तब इसका अर्थ 'गणेश' होता है।

२ कृष्ण पाकफला। काली मकोय। ३ कष्ट। कठिनाई (को०)।

विघ्नक, विघ्नकर, विघ्नकर्ता—वि० [स०] विघ्न करनेवाला। बाधा डालनेवाला।

विघ्नकारी—सज्ञा पु० [स० विघ्नकारिन्] वह जो विघ्न डालता हो। बाधा उपस्थित करनेवाला।

विघ्नकृत्—वि० [सं०] दे० 'विघ्नक' (को०)।

विघ्नजित्—सज्ञा पु० [स०] विनायक। गणेश।

विघ्नायक—सज्ञा पुं० [स०] गणेश।

विघ्ननाशक—सज्ञा पु० [स०] गणेश।

विघ्ननाशन—सज्ञा पु० [स०] गणेश (को०)।

विघ्नपति—सज्ञा पुं० [स०] गणेश।

विघ्नराज—सज्ञा पु० [स०] गणेश।

विघ्नविनायक—सज्ञा पुं० [स०] गणेश।

विघ्नसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] विघ्न का दूर होना (को०)।

विघ्नहता—सज्ञा पुं० [सं० विघ्नहन्तृ] गणेश (को०)।

विघ्नहरण—सज्ञा पु० [स०] गणेश (को०)।

विघ्नहारी—सज्ञा पु० [स० विघ्नहारिन्] गणेश।

विघ्नित—वि० [स०] १ बाधायुक्त। अंतरायुक्त। अवरुद्ध। २. मलिन। आकुलित (को०)।

विघ्नेश—सज्ञा पुं० [स०] गणेश।

विघ्नेशकाता—सज्ञा स्त्री० [स० विघ्नेशकान्ता] सफेद दूर्वा।

विघ्नेशवाहन—सज्ञा पु० [स०] गणेश जी का वाहन। मूसा। चूहा (को०)।

विघ्नेशान—सज्ञा पु० [स०] गणेश (को०)।

यौ०—विघ्नेशानकाता=श्वेत दूर्वा।

विघ्नेश्वर—सज्ञा पु० [स०] गणेश। गणपति।

विचद्र—वि० [स० विचन्द्र] चद्रमारहित। जिसमे चंद्रमा न हो (को०)।

विचकित—वि० [स०] घबराया हुआ।

विचकिल—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार की मल्लिका या चमेली। २. मदनक। मदन वृक्ष।

विचक्र[१]—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

विचक्र[२]—वि० जो चक्ररहित हो। चक्रविहीन (को०)।

विचक्षण—वि० [स०] १ प्रकाशवान्। चमकता हुआ। २ जो स्पष्ट दिखाई दे। ३ जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो। निपुण। पारदर्शी। ४ पडित। विद्वान्। ५ बहुत बडा चतुर या बुद्धिमान्। उ०—परम साधु सब बात विचक्षण। बसे ताहि महँ सकल सुलक्षण।—रघुराज शब्द०)।

विचक्षणा—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदती।

विचक्षन(पु)—वि० [स० विचक्षण] दे० 'विचक्षण'। चतुर। बुद्धिमान्। उ०—अतरवेद विचक्षन नारि निरतर अतर को गति जानै।—देव (शब्द०)।

विचक्षा—सज्ञा पु० [स० विचक्षस्] आध्यात्मिक गुरु (को०)।

विचक्षु—सज्ञा पु० [स० विचक्षुस्] १ अधा। नेत्रहीन। २ आकुल। घबराया हुआ। ३ विमनस्क। उदास (को०)।

विचच्छन(पु)—सज्ञा [स० विचक्षण, प्रा० विचच्छन] बहुत बडा बुद्धिमान् या चतुर। उ०—(क) रन परम विचच्छन गरम तर धरम सुरच्छन करम कर।—गोपाल (शब्द०)। (ख) लच्छ रथी अध्यच्छ प्रबल प्रत्यच्छ विचच्छन। कसे कच्छ निज सैनु रच्छ

करि पर वल भच्छन ।—गोपाल (शब्द०)। (ग) ह्वै कपूर मनिमय रही मिलि तन दुति मुकुतालि। छिन छिन खरी विचच्छनौ लखति छ्वाय तिन आलि ।—विहारी (शब्द०)।

विचच्छिन—वि० [स० विचक्षण] दे० 'विचक्षण'। उ०—मुग्धा मे धीरादिक लच्छिन । प्रगट नही पै लखै विचच्छिन ।—नद० ग्र०, पृ० १४७।

विचय—सज्ञा पु० [स०] १ एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। २ जाँच पडताल करना। परीक्षा करना। अन्वेषण। खोजना। ढूँढना (को०)। ३ विशिष्ट रूप से रखना। क्रम या तरतीब से रखना (को०)।

विचयन—सज्ञा पु० [स०] १ इकट्ठा करना। एकत्र करना। २ जाँचना। परीक्षा करना। दे० 'विचय'।

विचर—वि० [स०] १ घूमा हुआ। भ्रमित। भ्रमण किया हुआ। २ भूला हुआ। भटका हुआ (को०)।

विचरण—सज्ञा पु० [स०] १ चलना। २ घूमना फिरना। पर्यटन करना। उ०—आर्य सतान उस दिन अपने प्राचीन वेष मे विचरण करती थी।—वालमुकुद गुप्त (शब्द०)।

विचरणीय—वि० [स०] विचरण के योग्य। आचरणीय (को०)।

विचरन—सज्ञा पु० [सं० विचरण] दे० 'विचरण'। उ०—(क) पूछ पूरी सोभा विचरन नरचपै दीह सीकर की चरनन रचना ऊपर है।—गोपाल (शब्द०)। (ख) भए कवीर प्रगट मथुरा में। विचरन लगे सकल वसुधा मे।—कवीर (शब्द०)।

विचरना—क्रि० अ० [स० विचरण] चलना फिरना। उ०—(क) जग महँ विचरि विचरि सब ठौरा। हरि विमुखन किय हरि की ओरा।—रघुराज (शब्द०)। (ख) भोग समग्री जुरी अपार। विचरन लागे सुख ससार।—सूर (शब्द०)। (ग) रामचरण धरि हृदय मुदित मन विचरत फिरत निर्शक।—सूर (शब्द०)।

विचरनि—सज्ञा स्त्री० [स० विचरण] चलने फिरने या विचरण करने की क्रिया या भाव।

विचरित[1]—वि० [स०] १ घूमा हुआ। विचरण किया हुआ। २ (लाक्ष०) अनुष्ठित। कृत। आचरित। (को०)।

विचरित[2]—सज्ञा पु० घूमना। विचरण (को०)।

विचर्चिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे दाने निकलते और खुजली होती है। व्योची। २. छोटी फुसी।

विचर्मा—वि० [स० विचर्मन्] विना ढाल का। जिसके पास चर्म अर्थात् ढाल न हो (को०)।

विचल—वि० [स०] १ जो बराबर हिलता रहता हो। २ जो स्थिर न हो। अस्थिर। ३ डिगा हुआ। स्थान से हटा हुआ। ४ व्यग्र। घबडाया हुआ (को०)। ५ अभिमानी। घमडी (को०) ६ प्रतिज्ञा या सकल्प से हटा हुआ।

मुहा०—चलविचल होना=मन का किसी एक बात पर न ठहरना। चित्त का चचल होना।

विचलता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विचल होने की क्रिया या भाव। चचलता। अस्थिरता। २. घबराहट।

विचलन—सज्ञा पुं० [सं०] १ अस्थिरता। २. इतस्तत' भ्रमण। ३ गर्व। घमड (को०)।

विचलना—क्रि० अ० [स० विचलन] १ अपने स्थान से हट जाना या चल पडना। (विशेषत घबराहट या गडबडी आदि के समय)। उ०—(क) श्री जोवन मैमत विर्षामा। विचला विरह विरह लै नामा।—जायसी (शब्द०)। (ख) दल विचलत लखिकै भट सगरे। धरि धरि धनुष गदादिक अगरे।—गोपाल (शब्द०)। (ग) जो सीता मत ते विचलै तौ श्रीपति काहि सँभारै। मोमे मुग्ध महापापी को कौन क्रोध करि तारै। —सूर (शब्द०)। २ विचलित होना। अधीर होना। घबराना। उ०—(क) जेहि भजत वि इक इकरदन चलन समर विचलत प्रवल।—गोपाल (शब्द०)। (ख) चलत जबै रन हेत तबै विचलत लखिकै पर।—गोपाल (शब्द०)। ३ प्रतिज्ञा या सकल्प पर दृढ न रहना। बात पर जमा न रहना।

विचलाना—क्रि० स० [स० विचलन] १. इधर उधर हटाना या चलाना। विचलित करना। उ०—एहि विधान भरि जोर सकल यदु दल विचलायो।—गोपाल (शब्द०)। २ ऐसा काम करना जिससे कोई घबरा जाय या स्थिर न रह सके।

विचलित—वि० [स०] १ जो विचल हो गया हो। अस्थिर। चचल। जैसे,—किसी चीज को देखकर मन विचलित होना। उ०—(क) उसकी बुद्धि ऐसी तीक्ष्ण थी कि कोई कैसा ही दुर्घट काम हो, परंतु वह, कभी विचलित न होता।—कादवरी (शब्द०)। (ख) तेहि ते अब यह रूप दुरावहु। विचलित सज्जन लोक सुख पावहु।—शं० दि० (शब्द०)। २ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ। जो दृढ न रहा हो। डिगा हुआ। ३ गया हुआ। गत। चलित (को०)। ४ घबराया हुआ। व्यग्र।

विचक्षण—वि० [स० विचक्षण, प्रा० विचक्खन, विचक्खण] दे० 'विचक्षण'। उ०—आनन इदु उदोत सु मानौं। जानन भोज विचक्षण जानौं। रवि ज्यो समुन के तन तापन। कामिनी कौं मकरध्वज मानन।—पृ० रा०, १।७५३।

विचार—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो कुछ मन से सोचा जाय अथवा सोचकर निश्चित किया जाय। किसी विषय पर कुछ सोचने या सोचकर निश्चय करने की क्रिया। २ वह बात जो मन मे उत्पन्न हो। मन मे उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल। जैसे,—अभी मेरे मन मे विचार आया है कि चलकर उससे बातें करूँ। ३ राजा या न्यायाधीश आदि का वह कार्य जिसमे वादी और प्रतिवादी के अभियोग और उत्तर आदि सुने जाते हैं, यह निश्चित किया जाता है कि किस पक्ष का कथन ठीक है, और तब कुछ निर्णय किया जाता है। मुकदमे की सुनवाई और फैसला। जैसे,—राजकर्मचारी दोनो को पकडकर उनका विचार कराने के लिये उन्हें राजद्वार पर ले गया (शब्द०)।

यौ०—विचारकर्ता। विचारविमर्श। विचारसभा। विचारस्थल।

४ विचरना। घूमना। ५ घुमाना। फिराना। ६ चयन (को०) ७ सकोच। सदेह (को०)। ८. दूरदर्शिता। सतर्कता (को०)। ९ विमर्श। गवेषणा। तत्वार्थनिर्णय (को०)। १०. विवेक। तर्कणा (को०)। ११ परीक्षण (को०)।

विचारक—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विचारिका] १ वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला। उ०—इन बातो पर ध्यान करके विचारक पुरुष जानते है कि ऐसा वृत्तान्त केवल कवीश्वर का कल्पित मात्र है।—मतपरीक्षा (शब्द०)। २ फैसला करनेवाला। न्यायकर्ता। उ०—तब तक विरोधी विचारको का होना बहुत ही जरूरी है।—स्वाधीनता (शब्द०)। ३ नेता। पथप्रदर्शक। ४ गुप्तचर। जासूस।

विचारकर्ता—सज्ञा पुं० [स० विचारकर्तृ] १ वह जो किसी प्रकार का विचार करता हो। सोचने विचारनेवाला। २ वह जो अभियोग आदि सुनकर उनका निर्णय करता हो। न्यायाधीश।

विचारज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो विचार करना जानता हो। विचार करने मे कुशल या प्रवीण। २ वह जो अभियोग आदि का निर्णय या निपटारा करता हो।

विचारण—सज्ञा पुं० [स०] १ विचार करने की क्रिया या भाव। २. घूमना फिरना। ३. घुमाना फिराना। ४ संदेह। हिचक (को०)। ५ परीक्षण। पर्यालोचन। अन्वेषण (को०)।

विचारणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विचार करने की क्रिया या भाव। उ०—क्योकि केवल अपनी बुद्धि, या अपने ज्ञान या अपनी विचारणा पर आदमी का विश्वास जितना कम होता है, उतना ही ससार की प्रमादहीनता या निभ्रमता पर उसका विश्वास अधिक होता है।—स्वाधीनता (शब्द०)। २ घूमने फिरने या घुमाने फिराने की क्रिया या भाव। ३ सदेह। हिचक (को०)। ४ परीक्षण। गवेषण (को०)। ५ दर्शन शास्त्र की मीमासा पद्धति (को०)।

विचारणीय—वि० [स०] १. जो विचार करने के योग्य हो। जिसपर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। उ०—अब यह अवश्यमेव विचारणीय है कि यदि ऐसा ही है तो बिना कारण किसी को दूषित करना और व्यर्थ उसपर दोषारोपण कर लोगो मे उसकी योग्यता कम करने के लिये यत्न करना नीचता एवं अक्षमता है।—निबधमालादर्श (शब्द०)। २ जो सिद्ध न हो। जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। चिंत्य। सदिग्ध।

विचारना—क्रि०अ० [स० विचार+हिं० ना (प्रत्य०)] १ विचार करना। सोचना। समझना। गौर करना। उ०—(क) कृष्णदेव द्वारावति अहै। मन मे बहुत विचारत रहै।—सबल (शब्द०)। (ख) फिर मैंने यह बात विचारी की लिखने मे तो कुछ अधिक अनर्थ नही होता।—श्रद्धाराम। (शब्द०)। (ग) आजु हो अजादवी घरा करौं विचारि कै।—गोपाल (शब्द०) (घ) रचो विरचि विचार तहँ, नृपमणि मधुकर शाहि।—केशव (शब्द०)। २. पूछना। ३ ढूँढना। पता लगाना। उ०—तुलसी तेहि अवसर लावनता दस चारि नव तीनि एकीस सबै। मति भारति पगु भई जो निहारि विचारि फिरी उपमा न पवै।—तुलसी (शब्द०)।

विचारपति—सज्ञा पुं० [सं० विचार+पति] वह जो किसी बड़े न्यायालय मे बैठकर मुकदमो आदि के फैसले करता हो। विचारक। न्यायाधीश।

विचारपरिणीत—वि० [स० विचार+परिणीत] जिसका विचार द्वारा ग्रहण किया गया हो। विचारित। भली भाँति विचार किया हुआ। सकल्प द्वारा गृहीत। उ०—वर श्रम प्रसूति से की कृतार्थ तुमने विचारपरिणीत उक्ति।—युगात, पृ० ५५।

विचारभू—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अदालत। न्यायालय। २ यम का न्यायासन। यमराज का न्यायालय (को०)।

विचारमूढ़—वि० [स० विचारमूढ] १ निर्णय लेने मे असमर्थ। जो भला बुरा समझने मे असमर्थ हो। २. जड। मूर्ख। अज्ञ (को०)।

विचारवान्—सज्ञा पुं० [स० विचारवत्] वह जिसमे सोचने समझने या विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारशील।

विचारशक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जिसकी सहायता से विचार किया जाय। सोचने या भला बुरा पहचानने की शक्ति। उ०—मनुष्य जानता तो है कि मैं जीता हूँ और सोच विचार भी करता हूँ, परतु प्राण और विचारशक्ति किससे बनाई गई।—गोलविनोद (शब्द०)।

विचारशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] मीमासा शास्त्र।

विचारशील—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसमे किसी विषय को सोचने विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्। उ०—(क) जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनत ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम ईश्वर है।—सत्यार्थप्रकाश (शब्द०)। (ख) विद्वान्, बुद्धिमान और विचारशील पुरुषो के चरण जिस भूमि पर पडते हैं वह तीर्थ बन जाती है।—शिवशभु (शब्द०)।

विचारशीलता—सज्ञा स्त्री० [स०] विचारशील होने का भाव या धर्म। बुद्धिमत्ता। अक्लमंदी। उ०—आत्मकर्त्तव्य का मामूली अर्थ विचारशीलता या बुद्धिमानी है।—स्वाधीनता (शब्द०)।

विचारशृखला—सज्ञा स्त्री० [स० विचार+शृङ्खला] परपरा द्वारा प्राप्त विचार की सरणि। विचारो की परपरा या कडी। उ०—इस तरह अनेक विचारशृखलाएँ अर्थात् अनेक व्यवस्थित दर्शन होते हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १९१।

विचारसरणि—सज्ञा स्त्री० [स०] विचार करने का ढग। विचार करने की पद्धति (को०)।

विचारस्थल—सज्ञा पुं० [स०] १ वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार होता हो। २ न्यायालय। अदालत। ३ तर्कसंगत चर्चा जिसपर विचार विमर्श किया जा सके।

विचारस्वातन्त्र्य—सज्ञा पुं० [स० विचार+स्वातन्त्र्य] १ किसी विषय पर अपने हृद्गत भावो को व्यक्त करने की छूट या आजादी। २ जो चाहे कहने की छूट। भाषण करने की स्वतत्रता। शासन की आलोचना करने मे प्रतिबध न होना।

विचाराध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स०] वह जो न्याय विभाग का प्रधान हो। प्रधान विचारक। प्रधान न्यायाधीश।

विचारालय—सज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ अभियोगो आदि का विचार होता हो। न्यायालय। कचहरी। उ०—बडे बडे आचार्य, नीतिज्ञ, धर्मशास्त्री लोग विचारालय मे बैठे विचार कर रहे है।—कादबरी (शब्द०)।

विचारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल की वह दासी जो घर मे लगे हुए फूल पौधो की देखभाल तथा इसी प्रकार के और काम करती थी। २ वह स्त्री जो अभियोगो आदि का विचार करती हो।

विचारित[1]—वि० [स०] १ जिसपर विचार किया जा चुका हो। जो सोचा समझा जा चुका हो। निर्णीत। निश्चित। २ जो अभी विचाराधीन हो। जिसपर अभी विचार होने को हो। सदिग्ध। अनिश्चित।

विचारित[2]—सज्ञा पुं० १ विचार। मतव्य। २ सदेह। सशय [को०]।

विचारितसुस्थ—सज्ञा पु० [स०] साहित्य का वह प्रकार जिसमे वैचारिक प्रौढता रहती है। बुद्धिप्रधान साहित्य। उ०—साहित्य विषय के दो प्रभेद है विचारितसुस्थ और अविचारित-रमणीय। पा० सा० सि०, पृ० ७।

विचारी—सज्ञा पु० [स० विचारिन्] १ वह जिसपर चलने के लिये बहुत बड़े बडे मार्ग बने हो (जैसे, पृथ्वी)। २ जो इधर उधर चलता हो। विचरण करनेवाला। ३ वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला। ४ कबंध के एक पुत्र का नाम। ५ जो लपट वा कामुक हो (को०)।

विचारु—सज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

विचार्य—वि० [स०] जो विचार करने के योग्य हो। जिसपर विचार करने की आवश्यकता हो। विचारणीय।

विचाल[1]—वि० [स०] मध्यस्थ। मध्यवर्ती। बीच का [को०]।

विचाल[2]—सज्ञा पु० १ विभाग करना। अलग करना। पृथक् करना। २ मध्यवर्ती स्थान या काल। अंतराल। अतर। उ०—अरणव साते उदर, विरछ रोमाच विचालें।—रघु० रू०, पृ० ४४।

विचालन—सज्ञा पुं० [स०] १. हटाना या चलाना। २ नष्ट करना।

विचिंतन—सज्ञा पु० [स० विचिन्तन] [स्त्री० विचिन्तना] चिंता करना। सोचना। २ देखभाल। निरीक्षण [को०]।

विचिंतनीय—वि० [स० विचिन्तनीय] १ जो चिंता करने या सोचने योग्य हो। २ देख भाल करने लायक (को०)।

विचिंता—सज्ञा स्त्री० [स० विचिन्ता] १ सोच विचार। २ देखभाल। निरीक्षण।

विचिंतित—वि० [स० विचिन्तित] विचारा हुआ [को०]।

विचिंत्य—वि० [स० विचिन्त्य] १. जो चिंतन करने या सोचने के योग्य हो। २ जिसमे किसी प्रकार का सदेह हो। सदिग्ध। ३ निरीक्षण या देखभाल करने योग्य (को०)।

विचि[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] वीची। तरग। लहर।

विचि(पु)[2]—क्रि० वि० [हिं० बीच] बीच मे। मध्य मे। उ०—सो मुख व्रज अवलोकन करैं। तब जु आइ विचि पलकैं परैं।—नद० ग्रं०, पृ० १६३।

विचिकित्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सदेह। अनिश्चय। शक। २ वह सदेह जो किसी विषय मे कुछ निश्चय करने के पहले उत्पन्न हो और जिसे दूर करके कुछ निश्चय किया जाय। ३ अनवधानता। भूल। प्रमाद (को०)।

विचिकित्सित—वि० [स०] सदिग्ध। सदेहास्पद [को०]।

विचिकीर्षा—सज्ञा स्त्री० [स० वि० (उप०)+चिकीर्षा] करने की इच्छा या अभिलाषा।

विचिकीर्षु—वि० [स० वि (उप०)+चिकीर्षु] करने की इच्छा रखनेवाला।

विचिचीषा—सज्ञा स्त्री० [स०] अन्वेषण की आकाक्षा [को०]।

विचिचीषु—वि० [स०] अन्वेषण करने की इच्छावाला [को०]।

विचित—वि० [स०] जिसका अन्वेषण किया जाय।

विचिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विचार। सोचना। २ अनुसधान।

विचित्त[1]—वि० [स०] १ अचेत। बेहोश। २. जिसका चित्त ठिकाने न हो। जो अपना कर्तव्य न समझ सकता हो।

विचित्त[2]—वि० [स० विचित्र, प्रा० विचित्त] दे० 'विचित्त'। उ०—अद्भुत चरित्त चदह चरिचि सुर विचित्त हिय हथ्थ किय।—पृ० रा०, ६।४६।

विचित्तर—वि० [स० विचित्र, प्रा० विचित्त] दे० 'विचित्र'। उ०—कभी नागा नहीं करता थी अवसर। चतुर सब औरतों मे थी विचित्तर।—दक्खिनी०, पृ० २४६।

विचित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बेहोशी। २ वह अवस्था जिसमें मनुष्य का चित्त ठिकाने न रहे।

विचित्र[1]—वि० [स०] १ जिसमे कई प्रकार के रंग हो। कई तरह के रगो या वर्णोवाला। रग बिरगा। २ जिसमें किसी प्रकार की विलक्षणता हो। जिसमें किसी प्रकार की असाधारणता हो। विलक्षण। जैसे,—(क) ऐसा विचित्र पक्षी मैंने पहले नहीं देखा था। (ख) तुम भी बडे विचित्र आदमी हो। ३. जिसके द्वारा मन मे किसी प्रकार का आश्चर्य उत्पन्न हो। विस्मित या चकित करनेवाला। ४ सुंदर। खूबसूरत। ५ रगीन। चित्रित। रँगा हुआ (को०)।

यौ०—विचित्रचरित्र=अद्भुत चरित्रवाला। विचित्रदेह=(१) सुदर शरीरवाला। (२) जिसकी देह चितकबरी हो। विचित्ररूप=विविध प्रकार का। अनेक रूपोवाला। विचित्रवीर्य। विचित्रशाला।

विचित्र[2]—सज्ञा पुं० १ पुराणानुसार रौच्य मनु के एक पुत्र का नाम। २ साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार जो उस समय होता है, जब किसी फल की सिद्धि के लिये किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है। उ०—(क) करिबैको उज्वल सुधा सो अभिराम देखो, मन व्रजबाम रँगती हैं श्याम रग मे (ख) राम कहेउ रिस तजहु मुनीसा। कर कुठार आगे यह सीसा।—तुलसी (शब्द०)। (ग) जीवन हित प्रानहि तजत नवै ऊचाई हेत। सुख कारण दुख सगहैं बहुधा पुरुष सचेत (शब्द०)। (घ) क्यों नहिं गगा को सुमिरि दरस परस सुख लेत। जाके तट मे मरत नर अमर होन के हेत (शब्द०)। ३ अनेक रगो का समूह। विभिन्न रगो का एकीभवन। (को०)। ४. आश्चर्य (को०)।

विचित्रक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ भोजपत्र का वृक्ष। २ आश्चर्य। विचित्र।

विचित्रक[2]—वि० दे० 'विचित्र'।

विचित्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रग बिरगे होने का भाव। २. विलक्षण या अद्भुत होने का भाव।

विचित्रताई—सज्ञा स्त्री० [स० विचित्र + स० तातिल्/हिं० ताई (प्रत्य०)] दे० 'विचित्रता'। उ०—उस विचित्रता से बढ़कर विचित्रताई दिखा सकने की आशा इन्हे होती।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३६।

विचित्रदेह—सज्ञा पु० [स०] मेघ। बादल।

विचित्रवर्षी—वि० [स० विचित्रवर्षिन्] इधर उधर बरसनेवाला। जहाँ तहाँ बरसनेवाला (मेघ)।

विचित्रवीर्य—सज्ञा पु० [स०] चद्रवशी राजा शातनु के पुत्र का नाम. जिनका कथा महाभारत मे है।

विशेष—जब राजा शातनु ने अपने पुत्र भीष्म के आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करने पर सत्यवती के साथ विवाह कर लिया था, तब उसी सत्यवती के गर्भ से उन्हे चित्राग्द और विचित्रवीर्य नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। चित्राग्द तो छोटी अवस्था मे ही एक गधर्व द्वारा मारा गया था, पर विचित्रवीर्य ने बडे होने पर राज्याधिकार पाया था। इसने काशिराज की अबिका और अबालिका नाम की दो कन्याओ के साथ विवाह किया था, जिन्हे भीष्म इसी के लिये हरण कर लाए थे। परतु थोडे ही दिनो बाद निःसतान अवस्था मे ही इसकी मृत्यु हो गई। सत्यवती को विवाह से पहले ही पराशर ऋषि से गर्भ रह चुका था और उससे द्वैपायन (व्यास) का जन्म हुआ था। विचित्रवीर्य के निःसंतान मर जाने पर सत्यवती ने अपने उसी पहले पुत्र द्वैपायन को बुलाया और उसे विचित्रवीर्य की विधवा स्त्रियो के साथ नियोग करने को कहा। तदनुसार द्वैपायन ने अबिका और अबालिका से धृतराष्ट्र और पाडु तथा एक दासी से विदुर (विशेष दे० 'विदुर') नाम के तीन पुत्र उत्पन्न किए थे।

विचित्रशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थों का सग्रह हो। अजायबघर।

विचित्राग[1]—सज्ञा पु० [स० विचित्राङ्ग] १. मोर। जिसकी देह चितकबरी हो। २ व्याघ्र। बाघ।

विचित्राग[2]—वि० चितकबरे शरीरवाला [को०]।

विचित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक रागिनी, जिसे कुछ लोग भैरव राग की पाच स्त्रियो मे से एक और कुछ लोग त्रिवणा, बरारी, गौरी और जयती के मेल से बनी हुई सकर जाति की मानते हैं। २ श्वेत हिरन (को०)।

विचित्रित—वि० [स०] १. जो कई तरह के रंगो आदि से बना हो। अनेक प्रकार के रगो से चित्रित। रग बिरगा। २. आभूषित। अलकृत (को०)। ३. आश्चर्यजनक (को०)।

विचिन्वत्क—सज्ञा पु० [स०] १ अन्वेषण। तलाश। खोज। २. योद्धा। शूरवीर। ३. गवेषणा [को०]।

विचिलक—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का जहरीला कीडा।

विची—सज्ञा स्त्री० [स०] वीची। तरग। लहर।

विचीर्ण—वि० [स०] १. अधिकृत। अधिकार मे लिया हुआ। २. जिसको विदीर्ण किया गया हो। ३ जिसमे प्रवेश किया गया हो [को०]।

विचुंबन—सज्ञा पुं० [स० विचुम्बन] चुबन। चूमना। चुम्मा [को०]।

विचुबित—वि० [स० विचुम्बित] १ चूमा हुआ। जिसका चुबन किया गया हो। २ स्पृष्ट। छूआ हुआ [को०]।

विचेतन—वि० [स०] १ जिसे चेतना न हो। सज्ञाहीन। अचेतन। बेहोश। २. निर्जीव। प्राणहीन (को०)। ३. जिसे भले बुरे का ज्ञान न हो। विवेकहीन। ४ सभ्रात। हतबुद्धि। कातर। अधीर (को०)।

विचेतना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विचेतन होने का भाव। सज्ञाहीन। अचेतनता। अधीरता। व्याकुलता।

विचेता—सज्ञा पु० [स० विचेतस्] १. जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। २. बेहोश। ३ जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। चतुर। विशेषज्ञ। ४ दुष्ट। पाजी। ५ मूर्ख। बेवकूफ।

विचेष्ट—वि० [स०] जिसमे किसी प्रकार की चेष्टा न हो। जो हिलता डोलता न हो।

विचेष्टन—सज्ञा पु० [स०] १. (पीडा आदि से) बुरी चेष्टा करना। इधर उधर लोटना। तडपना। २ (घोडे का) लात फेकना या लोटना (को०)।

विचेष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बुरी या खराब चेष्टा करना। मुँह बनाना या हाथ पैर पटकना। २. प्रयत्न। उद्यम। कोशिश। गति (को०)। ३. व्यवहार। आचार (को०)।

विचेष्टित[1]—वि० [स०] १ जिसके लिये उद्योग या प्रयत्न किया गया हो। २ परीक्षित। ३ अविचारित या मूर्खता के साथ किया हुआ। ४ अन्वेषित (को०)।

विचेष्टित[2]—सज्ञा पु० १ कार्य। काम। २. प्रयत्न। उद्योग। ३. इगित। सकेत। भावभगी। ४ कार्य। आचार। ५. अभिसधि। षड्यत्र। ६. बुरा कार्य। दुष्कर्म [को०]।

विच्छद[1]—वि० [स० विच्छन्द] विविध प्रकार के छदो से युक्त। अनेक छंदोवाला [को०]।

विच्छद[2]—सज्ञा पु० दे० 'विच्छदक'।

विच्छदक—सज्ञा पु० [स० विच्छन्दिक] १. देवमदिर। देवालय। २. प्रासाद। महल।

विच्छत्रक—सज्ञा पुं० [स०] सुसनी का साग।

विच्छर्दक—सज्ञा पुं० [स०] १. देवमंदिर। देवायतन। देवालय। २. प्रासाद। महल।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विछाडना†—क्रि० अ० [हिं० छोडना या स० वि+√छद्] लक्ष्य पर छोडना। चलाना।उ०—कोमड लियो रघुवीर करां सारग विछाडे सांध मरां।—रघु० रू०, पृ० १३३।

विछाल(पु)†—वि० [स० विशाल, या स० विस्तार, प्रा० विच्छार] दे० 'विशाल'। उ०—छाड्यो नयर विछाल छौ छाड्या साँभरि का रिणवास।—बी० रासो, पृ० ६०।

विछेद(पु)†—सज्ञा पु० [स० विच्छेद] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग। विछोह। उ०—सूर श्याम के परम भावती पलक न होत विछेद।—सूर (शब्द०)।

विछेप(पु)†—सज्ञा पु० [स० विक्षेप, प्रा० विच्छेव] दे० 'विक्षेप'। उ०—देहिक दैविक छुटै भवतिक सोइ अनन्य कहावन। इंद्री रहित विछेप नाही सोई है अतीतन।—पलटू०, पृ० ६२।

विछोई(पु)†—सज्ञा पु० [हिं० विछोह+ई (प्रत्य०)] वह जिसका अपने प्रिय से विच्छेद हो गया हो। वियोगी। उ०—हितू पियारा मीत विछोई। साथ न लाग आप गा सोई।—जायसी (शब्द०)।

विछोह(पु)†—सज्ञा पु० [स० विच्छेद, देशी विच्छोह] प्रिय से अलग या दूर होना। वियोग। उ०—जस बिछोह जल मीन दुहेला। जल हति काढ अँगन महँ मेला।—जायसी (शब्द०)।

विजघ—वि० [स० विजङ्घ] १. जिसकी जाँघें कट गई हो या न हो। २ (गाड़ी) जिसमें धुरी और पहिए आदि न हो।

विज(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युत्, प्रा० विज्जु, विज्ज] बिजली। विद्युत्। उ०—आवृत्त घत्त आजान भुग्र मनु कजल कोट कि विज लहि।—पृ० रा०, ७। १४२।

विजई(पु)†—सज्ञा पु० [स० विजयिन्] दे० 'विजयी'।

विजउरा†—सज्ञा पु० [स० बीजपूरक, प्रा० बीयऊरय] दे० 'बिजौरा'। उ०—करहा नीरै सोई चर वाट चलउ पूर। द्राख बिजउरा नीरती सो धण रही सू दूर।—ढोला०, ४२६।

विजट—वि० [स०] मुक्त। खुला हुआ। जैसे, केश (को०)।

विजडित—वि० [स० विज डित] १ स्थिर। अडोल। उ०—चरण हुए थे विजडित मधुभार से।—लहर, पृ० ६६। २ जडा हुआ। जटित।

विजन'—वि० [स०] जिसमे अथवा जहाँ आदमी न हो। जनरहित। एकात। निराला। उ०—तहाँ सचिव सब लेहिं सुधारी। भूपहि विजन भवन महँ डारी।—रघुराज (शब्द०)।

विजन'—सज्ञा पु० [स०] १ निर्जन या एकात स्थान। २ गवाह या साक्ष्य का अभाव (को०)।

विजन(पु)[३]—सज्ञा पु० [सं० व्यजन] हवा करने का पखा। बीजन। उ०—(क) मुरछल चँवर विजन बहु करते। मृदु कहि राह परिसम हरते।—गोपाल (शब्द०)। (ख) कोऊ विजन डोलावन लागे। कोउ सीचे जल अति अनुरागे।—रघुराज (शब्द०)।

विजनता—सज्ञा स्त्री० [स०] विजन होने का भाव। एकात का भाव।

विजनन—सज्ञा पु० [स०] जनन करने की क्रिया। प्रसव।

विजना(पु)†—सज्ञा पुं० [सं० विजन] पंखा। उ०—इत एक सखी वतराय रही विजना इत एक डुलाय रही।—सगीत शाकुतल (शब्द०)।

विजनित—वि० [स०] उत्पन्न। जनित। जन्म लिया हुआ (को०)।

विजन्मा'—सज्ञा पुं० [स० विजन्मन्] १ किसी स्त्री का उसके उग्पति या यार से उत्पन्न पुत्र। जारज। दोगला। २ मनु के अनुसार एक वर्णसंकर जाति। ३ वह जो जातिच्युत कर दिया गया हो।

विजन्मा'—सज्ञा पुं० उत्पत्ति। पैदाइश। जनन (को०)।

विजन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो प्रसव करने को हो। गर्भवती। गर्भिणी।

विजपिल—सज्ञा पु० [स०] कर्दम। कीचड (को०)।

विजयत—सज्ञा पु० [स० विजयन्त] इंद्र का एक नाम।

विजयतिका—सज्ञा स्त्री० [स० विजयन्तिका] एक योगिनी का नाम।

विजयती—सज्ञा स्त्री० [स० विजयन्ती] १ एक अप्सरा का नाम। २ ब्राह्मी बूटी।

विजय'—सज्ञा स्त्री० [स०] १. युद्ध या विवाद आदि मे होनेवाली जीत। विपक्षी या शत्रु को दबाकर अपना प्रभुत्व या पक्ष स्थापित करना। जय। जीत। पराजय का उलटा। उ०—पार्थ विजयी यह कथा राजा सुन के कान। विजय होय सब जगत मे शत्रु होय क्षय जान।—सबल (शब्द०)। २. एक प्रकार का छद जो केशव के अनुसार सवैया का मत्तगयद नामक भेद है। ३. हरिवश के अनुसार जयत (इद्र का पुत्र) के पुत्र का नाम (को०)। ४ जैनो के अनुसार पाँच अनुत्तरो मे से पहला अनुत्तर या सबसे ऊपर का स्वर्ग। ५. विष्णु के एक पार्षद का नाम। ६ अर्जुन का एक नाम। ७. यम का नाम। ८ जैनियो के एक जिन देव का नाम। ९ कलिंग के एक पुत्र का नाम। १. कालिकापुराण के अनुसार भैरववंशी कल्पराज के पुत्र का नाम जो काशिराज नाम से प्रसिद्ध थे ११. विमान १२ सजय के एक पुत्र का नाम। १३ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। १४ एक प्रकार का शुभ मुहूर्त। †१५ प्रस्थान। गमन (आदरार्थ), जैसे—विजययात्रा। उ०—श्री गुसाई जी फेरि श्री गोकुल को विजय करे।—दो सौ बावन०, पृ० १९३। १६ एक सवत्सर का नाम (को०)। १७ वर्ष का तीसरा भाग (को०)। १८ एक प्रकार का सैन्य व्यूह (को०)। १९. एक प्रकार की मान या तौल (को०)। २० जीत का पारितोषिक। लूट का माल (को०)। २१. प्रदेश। जिला (को०)। २२ एक प्रकार की बाँसुरी (को०)। २३ कृष्ण के पुत्र का नाम (को०)। २४ शिव का त्रिशूल (को०)। २५ राजकीय शिविर (को०)।

विजय†[२]—सज्ञा पुं० [स० व्यञ्जन<पू० हिं० विजन, विजय बीजन] भोजन करना। खाना। (पूरब)।

विजयक—वि० [स०] जो विजय करता हो। सदा जीतनेवाला।

विजयकर—वि० [स०] दे० 'विजयक' (को०)।

विजयकुजर—सज्ञा पु० [स० विजयकुञ्जर] १ राजा की सवारी का हाथी। २. लडाई के मैदान मे जानेवाला हाथी।

विजयकेतु—सज्ञा पुं० [स०] १ वह ध्वजा जो शत्रु पर विजय प्राप्त करके फहराई जाती है। विजय पताका। २ एक विद्याधर का नाम (को०)।

विजयछद—सज्ञा पु० [स० विजयच्छन्द] १ पाँच सौ मोतियो का हार। २ एक प्रकार का कल्पित हार, जो दो हाथ लबा और ५०४ (कुछ के मत) मे ५०० लडियो का माना जाता है। कहते। हैं कि ऐसा हार केवल देवता लोग पहनते हैं।

विजयडिडिम—सज्ञा पुं० [स० विजयडिण्डिम] प्राचीन काल का एक प्रकार का बडा ढोल, जो युद्ध के समय बजाया जाता था।

वियजतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

विजयदड—सज्ञा पुं० [स० विजयदण्ड] १ सैनिको का वह समूह अथवा सेना का वह विभाग जो सदा विजयी रहता हो। २ सेना का एक विशिष्ट विभाग जिसपर विजय विशेष रूप से निर्भर करती है। ३ विजयसूचक दड।

विजयदशमी—सज्ञा स्त्री० [स० विजय (विजया) + दशमी] दे० 'विजया दशमी'।

विजयदुदुभि—सज्ञा स्त्री० [स० विजयदुन्दुभि] युद्ध मे विजय होने पर बजनेवाला घौंसा या नगाडा। विजयडिडिम [को०]।

विजय द्वादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि का नाम [को०]।

विजयध्वज—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विजयपताका'। उ०—फिर चले छोडकर गृह त्याग के विजयध्वज से।—अपरा, पृ० २१३।

विजयनदन—सज्ञा पुं० [स० विजयनन्दन] इक्ष्वाकुवश के राजा जय का एक नाम।

विजयनगर—सज्ञा पु० [स०] एक नगर का नाम जो कर्नाटक के अतर्गत है [को०]।

विजयपताका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सेना मे की वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है। २ विजय का सूचक कोई चिह्न।

वियजपर्पटी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार की औषध।

विशेष—यह पारे, जयती के पत्तो, रेंड की जड और अदरक आदि के योग से बनाई और सग्रहणी रोग मे दी जाती है।

विजयपूर्णिमा—सज्ञा स्त्री० [स०] विजयदशमी के उपरात पडनेवाली पूर्णिमा। आश्विन की पूर्णिमा।

विशेष—इस तिथि को बंगाल मे लक्ष्मी का पूजन होता है और उत्सव मनाया जाता है।

विजयभैरव—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विशेष—इसमे हड का छिलका, चीता, इलायची, तज, संभालू, पीपल, लोहसार आदि के योग से गंधक और पारे की कजली तैयार की जाती है। यह सब प्रकार के रोगो और दुर्बलता को दूर करनेवाला माना जाता है।

विजयभैरव तैल—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार तेल।

विशेष—यह तेल, मालकंगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को कोल्हू मे पेरकर निकाला जाता है और सब प्रकार के वायुरोगो का नाशक माना जाता है।

विजयमर्दल—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। ढक्का।

विजययात्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह यात्रा जो किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

विजयरस—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो पारे, गंधक और सीसे के योग से बनता और प्राय अजीर्ण रोग मे दिया जाता है।

विजयलक्ष्मी—सज्ञा स्त्री० [स०] विजय की अधिष्ठात्री देवी। वह देवी जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयशील—सज्ञा पु० [स०] वह जो बराबर विजय करता हो। सदा जीतनेवाला।

विजयश्री—सज्ञा स्त्री० [स०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

विजयसार—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बडा वृक्ष, जिसकी लकडी औजार बनाने और इमारत के काम मे आती है। विशेष दे० 'विजैसार'।

विजयसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] विजयप्राप्ति। सफलता। कामयाबी [को०]।

विजया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार पार्वती की एक सखी का नाम, जो गौतम की कन्या थी। २ दुर्गा। ३ यम की भार्या का नाम। ४ हरीतकी। हर्रे। ५ वच। ६ जयती। ७ मजीठ। ८. एक प्रकार का शमी। ९ अग्निमथ। १० भाँग। सिद्धि। भग। उ०—(क) ससार के सब दु खो और समस्त चिंताओ को जो शिवशभु शमा दो चुल्लू बूटी पीकर भुला देता था, आज उसकी उम प्यारी विज्या पर भी मन नही है।—शिवशभु० (शब्द०)। (ख) हम तो यह जानते हैं कि यदि किसी मत्र, यत्र से सर्पादि के डंक का कष्ट या कोई ज्वर, शूल आदि विकार दूर हो जाता हो, तो वह मत्र सखिया, धतूरा, विजयादि के विषो पर पढा हुआ भी अवश्य फल करे।—श्रद्धाराम (शब्द०)। ११ एक योगिनी का नाम। १२ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत् की माता का नाम। १३ दक्ष क एक कन्या का नाम। १४. श्रीकृष्ण की माला का नाम। १५ इद्र की पताका पर की एक कुमारी का नाम। १६ प्राचीन काल का एक प्रकार का बडा खेमा। १७. काश्मीर के एक पवित्र क्षेत्र का नाम। १८ दस मात्राओ का एक मात्रिक छद जिसमे अक्षरो का कोई नियम नही होता और जिसके अत में रगण रखना कर्णमधुर होता है। १९ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे आठ वर्ण होते हैं। इसके अत मे लघु और गुरु अथवा नगण भी होता है। उ०—वरन वसु धारिए। चरण प्रति धारिए। लगन ना बिसारिए। सुविजया सम्हारिए। २० दे० 'विजयादशमी'। २१ एक विद्या का नाम जिसे ऋषि विश्वामित्र ने रामचद्र को सिखाया था (को०)। २२ षोडश मातृकाओ मे से एक का नाम।

विजया एकादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। २. फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

विजया दशमी—सज्ञा स्त्री० [स०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी।

विशेष—यह हिंदुओ का और विशेषतः क्षत्रियो का एक बहुत बडा त्योहार है। प्राचीन काल मे राजा लोग इसी दिन अपने शत्रुओ पर आक्रमण करने अथवा दिग्विजय आदि करने के लिये निकला करते थे। इस दिन देवी, घोडे, हाथी और खड्ग आदि का पूजन तथा राजा के दर्शन करने का विधान है। इस दिन किसी नए कार्य का आरंभ करना बहुत ही शुभ समझा जाता है।

विजयानद—सज्ञा पु० [स० विजयानन्द] १ संगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। २. वैद्यक मे एक प्रकार की औषध जो पारे और हरताल के योग से बनाई जाती और कुष्ठरोग मे दी जाती है।

विजयाभ्युपाय—सज्ञा पुं० [स०] युद्ध मे विरोधी पर विजय प्राप्त करने का उपाय [को०]।

विजयार्थी—वि० [स० विजयार्थिन्] विजय का इच्छुक। विजय पाने की कामना रखनेवाला [को०]।

विजयार्ध—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विजयावटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार की वटिका या गोली जो पारे और गधक के योग से बनाई जाती है और जिसका व्यवहार संग्रहणी मे होता है।

विजया सप्तमी—सज्ञा स्त्री० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार किसी मास के शुक्ल पक्ष की वह सप्तमी जो रविवार को पडे।

विशेष—ऐसी तिथि को पुराणानुसार रामचंद्र जी का पूजन और दान करने का विधान है।

विजयी—सज्ञा पुं० [स० विजयिन्] [वि० स्त्री० विजयिनी] १ वह जिसने विजय प्राप्त की हो। विजय करनेवाला। जीतनेवाला। उ०—(क) सीजर भी उसी धर्म के प्रभाव से ऐसी विजयी सेना सग होने पर भी काँप उठता है।—तोताराम (शब्द०)। (ख) ऐरावत विजयी द्विरद मत्त उसके सब। मेघा मे टक्कर मार खेलते है अब।—द्विवेदी (शब्द०)। (ग) शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय, समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो जाय।—कामायनी, ५६। २. अर्जुन।

विजयेश—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम, जो विजय के देवता माने जाते हैं।

विजयोत्सव—सज्ञा पुं० [स०] १ वह उत्सव जो आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को होता है। विजया दशमी को होनेवाला उत्सव। २ वह उत्सव जो किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने पर होता है।

विजर[1]—वि० [स०] १. जिसे जरा या बुढापा न आता हो। जरा-रहित। २. नवीन। नया।

विजर[2]—सज्ञा पु० वृक्ष का तना या डंठल [को०]।

विजरा—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्रह्मलोक की एक नदी का नाम।

विजर्जर—वि० [स०] १ बहुत जीर्ण। कमजोर। २ सड़ा हुआ। जैसे काष्ठ [को०]।

विजल[1]—सज्ञा पु० [स०] १ जल या वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। सूखा २. जल का न होना। पानी का अभाव। ३. दे० 'विजिल' (को०)।

विजल[2]—वि० जलहीन। निर्जल [को०]।

विजला—सज्ञा स्त्री० [स०] चंचु या चेंच नाम का साग।

विजल्प सज्ञा पु० [स०] १ सच, झठ और तरह तरह की ऊटपटाँग बातें करना। व्यर्थ की बहुत सी बकवाद। २ किसी सज्जन या भले आदमी के संबंध मे द्वेषपूर्ण झूठी बातें कहना। ३ सामान्य कथन या वार्ता (को०)।

विजल्पित—वि० [स०] १ निरर्थक या ऊटपटाँग कहा हुआ। २. कथित। कहा। अस्पष्ट या तुतलाहट से भरा हुआ [को०]।

विजवल—वि० [स०] पिच्छिल। फिसलाहट से भरा हुआ [को०]।

विजाग(पु)[1]—सज्ञा पु० [स० वियोग] विमोह। वियोग। उ०—सूरज जरत हिमंचल ताका। बिरह बिजाग सौंह रथ हाँका।—जायसी (शब्द०)।

विजाग(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० वज्राग्नि, हिं० बजागि] बिजली। उ०—छण रुचि, छटा, अकाल की, तडित चचला होइ। विद्युत, संप, विजाग, विजु, दामिनि घन बिनु सोइ।—नद० ग्र०, पृ० ८८।

विजागी(पु)—सज्ञा पु० [सं० वियोगिन्] जिसका अपने प्रिय से विछोह हुआ हो। वियोगी। उ०—तेहि के जरत जो उठै विजागी। तीनो लोक जरहिं तेहि लागी।—जायसी (शब्द०)।

विजात[1]—वि० [सं०] १ वर्णसकर। दोगला। हरामजादा। २. उत्पन्न या जनमा हुआ (को०)। ३ रूपातरित। जो दूसरे रूप मे परिणत हो (को०)।

विजात[2]—सज्ञा पु० सखी छद का एक भेद

विशेष—इसके प्रत्येक चरण मे ५-५-४ के विश्राम से १४ मात्राएँ और अत मे मगण या यगण होता है। इसकी पहली और आठवी मात्राएँ लघु रहती है। इसके अत मे जगण, तगण या रगण नही होना चाहिए।

विजाता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जारज लडकी। दोगली। २. वह स्त्री जिसे हाल मे सतान हुई हो। जच्चा। ३ माता (को०)।

विजाति[1]—वि० [स०] १ भिन्न या दूसरी जाति का। भिन्न वर्ग का। उ०—जो विजातियो और सजातियो मे भेद नही मानते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २२८।

विजाति[2]—सज्ञा स्त्री० विभिन्न जाति या वर्ग [को०]।

विजातीय—वि० [स०] १ जो दूसरी जाति का हो। एक अथवा अपनी जाति से भिन्न जाति का। उ०—(क) हम विजातीय कार्य-

कर्त्ताओ की बनाई हुई वस्तुओ को काम मे लाते हैं। (ख) ब्रह्म से पृथक् कोई सजातीय, विजातीय और स्वगत अवयवो के भेद न होने से एक ब्रह्म ही सिद्ध होता है।—दयानद (शब्द०)। २ विभिन्न प्रकार का। असमान। विषम (को०)। ३ मिली-जुली जाति का। मिश्रित जातिवाला (को०)।

विजानक—वि० [स०] ज्ञाता। परिचित। विज्ञ (को०)।

विजानता—सज्ञा स्त्री० [स०] चतुरता। बुद्धिमत्ता (को०)।

विजानना—क्रि० स० [सं० (उप०) वि०+हिं० जानना] जानना। भली भाँति जानना। विशेष रूप से जानना। उ०—आतम कवन अनातम को है। याको तत्त्व विजानत जो है।—पद्माकर (शब्द०)।

विजानु—सज्ञा पुं० [स०] तलवार चलाने के ३२ हाथो मे से एक हाथ या प्रकार। उ०—तिमि सव्य जानु विजानु सकोचित सुआहित चित्त को।—रघुराज (शब्द०)।

विजापयिता—वि०, सज्ञा पु० [स० विजापयितृ] वह जो विजय दिलावे। विजय करानेवाला (को०)।

विजायठ†—सज्ञा पु० [स० विजय ?] दे० 'विजायठ'। उ०—आभूषणो मे सोने के बने विजायठ, शिरोभूषण, हार, मुकुट आदि थे।—आ० भा०, पृ० ४१।

विजार—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार की मटिया भूमि जिसमे धान और कभी कभी चना भी बोया जाता है।

विजारत—सज्ञा स्त्री० [अ० विजारत] वजीर का पद, धर्म या भाव। मत्रित्व। उ०—वजीर की तनखाह १ लाख रुपए की और विजारत के दस्तूर समेत २ लाख रुपए की सालाना है।—देवी प्रसाद (शब्द०)। २. दे० 'वजारत'।

विजारी†—वि० [देश० या स० विजेतृ=विजेतर्] विजय करनेवाला। उ०—छात्र विजारी सोनगिर, वात सुणै ससार।—रा० रू०, पृ० ३५५।

विजिगीत—वि० [स०] ख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर (को०)।

विजिगीष—वि० [स०] विजिगीषु। विजयेच्छु (को०)।

विजिगीषा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह इच्छा जिसके अनुसार मनुष्य यह चाहता है कि मुझे कोई यह न कह सके कि मैं अपना पेट पालने मे असमर्थ हूँ। २ विजय प्राप्त करने की इच्छा। उ०—परस्पर की विजिगीषा के कारण दोनो दल जीतोड परिश्रम करेंगे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३२४। ३. व्यवहार। ४ उत्कर्ष। उन्नति।

विजिगीषु—वि० [स०] १. विजय की इच्छा करनेवाला। २ महत्वाकाक्षी (को०)। ३ योद्धा। शूर वीर (को०)। ४ प्रतिद्वंदी। प्रतिपक्षी (को०)।

विजिगीषुता—सज्ञा स्त्री० [स०] विजिगीषु होने भाव या धर्म।

विजिघत्स—वि० [स०] भूख पर विजय पानेवाला (को०)।

विजिघासु—वि० [स०] मारने की इच्छा रखनेवाला। हनन या विनाश करने को उत्सुक (को०)।

विजिज्ञासा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. जानने की विशिष्ट इच्छा। २. अन्वेषण। शोध। खोज (को०)।

विजिज्ञासु—वि० [स०] जो पूर्णतया जानना चाहता हो। जाँनने समझने की इच्छावाला। (को०)।

विजिट—सज्ञा स्त्री० [अं० विजिट] १ भेंट। मुलाकात। २. डाक्टर आदि का रोगी के देखने के लिये आना। उ०—मालती को भी एक विजिट करनी थी।—गोदान, पृ० १३४। ३ वह धन जो डाक्टर आदि को आने के उपलक्ष्य मे दिया जाय। डाक्टर की फीस।

विजिटर—वि० [अ० विजिटर] विजिट करनेवाला (को०)।

विजिटर्स बुक—सज्ञा स्त्री० [अ० विज़िटर्स बुक] किसी सार्वजनिक सस्था की वह पुस्तक जिसमे वहाँ के आने जानेवाले अपना नाम और कभी कभी उस सस्था के सबध मे अपनी सम्मति भी लिखते हैं।

विजिटिंग कार्ड—सज्ञा पु० [अ० विज़िटिंग कार्ड] एक प्रकार का बढ़िया छोटा कार्ड जिसपर लोग अपना नाम, पद और पता छपवा लेते हैं, और जब किसी से मिलने जाते है, तब उसे अपने आगमन की सूचना देने के लिये पहले यह कार्ड उसके पास भेज देते हैं।

विजित—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसपर विजय प्राप्त की गई हो। वह जो जीत लिया गया हो। २ वह प्रदेश जिसपर विजय प्राप्त की गई हो। जीता हुआ देश। ३ कोई प्रात या प्रदेश। ४ फलित ज्योतिष मे वह ग्रह जो युद्ध मे किसी दूसरे ग्रह से बल मे कम होता है। ५ जीत। विजय (को०)।

विजितवान्—वि० [स० विजितवत्] विजेता। विजयी (को०)।

विजिता[1]—सज्ञा पु० [स० विजितृ] १ निर्णायक। २ भागीदार। हिस्सेदार (को०)।

विजिता[2]—वि० १. पृथक्। २ भीत। डरा हुआ। ३ कंपित (को०)।

विजितात्मा—सज्ञा पु० [स० विजितात्मन्] १ शिव का एक नाम। २ वह जिसने अपनी वासनाओ का दमन कर लिया हो।

विजितामित्र—वि० [स०] अमित्रो को जीतनेवाला। शत्रुंजय। विजितारि (को०)।

विजितारि—सज्ञा पु० [स०] १ एक राक्षस का नाम। २. वह जिसने अपने शत्रु को जीत लिया हो।

विजिताश्व—सज्ञा पुं० [स०] राजा पृथु के एक पुत्र का नाम।

विजितासु—सज्ञा पुं० [स०] एक मुनि का नाम (को०)।

विजिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विजय। जीत। २. प्राप्ति।

विजिती—वि० [स० विजितिन्] विजयी (को०)।

विजितेंद्रिय—वि० [स० विजितेन्द्रिय] दे० 'जितेंद्रिय' (को०)।

विजितेय—वि० [स०] जिसे जीतना हो। विजय करने योग्य (को०)।

विजित्वर—वि० [स०] जीतनेवाला। विजेता।

विजित्वरा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

विजिन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विजिल'।

विजिल—सज्ञा पु० [स०] १ ऐसा भोजन जिसमे अधिक रस न हो। २. एक प्रकार का दही।

विजिविल—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विजिल' [को०]।

विजिहीर्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. मनोरजन की लालसा। २. घूमने की कामना [को०]।

विजिहीर्षु—वि० [स०] मनोरजन या घूमने के लिये इच्छुक [को०]।

विजिह्म—वि० [स०] १ कुटिल। झुका हुआ। मुडा हुआ। २ बेईमानी। ३. तिरछा। टेढा। ४ शून्य। ५. निष्प्रभ। फीका। विच्छाय [को०]।

विजिह्व—वि० [स०] १ जिह्वारहित। २ मूक। गूँगा [को०]।

विजीवित—वि० [स०] प्राणहीन। मृत [को०]।

विजीष—वि० [स०] जिसे जय प्राप्त करने की इच्छा हो।

विजु'—सज्ञा पु० [स०] पक्षी के शरीर का वह अग जहाँ से डैने निकलते है [को०]।

विजु(पु)[२]—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युत्, प्रा० विज्जु] बिजली। उ०—विद्युत सप विजाग विजु दामिनि घन विनु सोइ।—नंद० ग्रं०, पृ० ८८

विजुल—सज्ञा पु० [स०] शाल्मलि कद।

विजुली[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

विजुली[२]—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युत्] दे० 'बिजली'।

विजृभ—सज्ञा पु० [स० विजृम्भ] १. सिकोडना। सकोचन (भौंह आदि का)। २ जँभाई [को०]।

विजृभक—सज्ञा पुं० [स० विजृम्भक] एक विद्याधर [को०]।

विजृभण—सज्ञा पु० [स० विजम्भण] १ किसी पदार्थ का मुँह खोलना। २ बौर आना। कली आना। खिलना। ३ जँभाई लेना। उबासी लेना। ४ धनुष की डोरी खीचना। ५. (भौं) सिकोडना। ६ कामक्रीडा। आमोद प्रमाद। रँगरेली (को०)।

विजृंभा—सज्ञा स्त्री० [स० विजृम्भा] उबासी। जँभाई।

विजृभिका—सज्ञा स्त्री० [स० विजृम्भिका] १ जृभा। जँभाई। २ हफनी। हाँफ [को०]।

विजृभित'—वि० [स० विजृम्भित] १ जम्हाई लिया हुआ। २ उद्घाटित। विकसित। फैलाया हुआ। ३ प्रदर्शित। ४. उपस्थित। आविर्भूत। ५ क्रीडित। खेला हुआ [को०]।

विजृभित[२]—सज्ञा पु० १. क्रीडा। मनोरंजन। २ अभिलाषा। इच्छा। ३. प्रदर्शन। प्रदर्शनी। ४ कृत्य। कर्म। आचार। ५ फल। परिणाम। ३ जँभाई [को०]।

विजेतव्य—वि० [स०] [वि० स्त्री० विजेतव्या] जो विजित करने के योग्य हो। जो जीतने के योग्य हो।

विजेता—सज्ञा पुं० [स० विजेतृ] जिसने विजय पाई हो। जीतनेवाला। विजय करनेवाला।

विजेय—वि० [स०] जिसपर विजय प्राप्त की जाने को हो। जीता जाने के योग्य।

विजै(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० विजय] दे० 'विजय'। उ०—हारि जात नर करि उपाय। कपट न तिनको यह कँपाय। सोइ अकपन पद कहाय। त्रैलोक्य विजै जो रहा पाय।—देव स्वामी (शब्द०)।

विजैसार—सज्ञा पु० [स० विजयसार] एक प्रकार का बडा वृक्ष जो साल का एक भेद माना जाता है।

विशेष—यह पूर्वी भारत तथा बरमा मे बहुत अधिकता से पाया जाता है। इसकी लकडी बहुत मजबूत होती है और खेत के औजार बनाने तथा इमारत आदि के काम मे आती है।

विजैसाल—सज्ञा पु० [स० विजयसार] दे० 'विजैसार'।

विजोग(पु)—सज्ञा पु० [स० वियोग] बिछोह। वियोग। उ०—जूँ राणी मूँ पडइ विजोग।—बी० रासो, पृ० ६३।

विजोगी—वि० [स० वियोगी] दे० 'वियोगी'।

विजोर†[१]—सज्ञा पु० [स० बीजपूरक] दे० 'बिजौरा'।

विजोर[२]—वि० [हिं० वि+जोर (=बल)] अशक्त। निर्बल। कमजोर। उ०—जीव को सुख दुख तनु संग होई। जोर विजोर तन के संग सोई।—सूर (शब्द०)।

विजोहा—सज्ञा पु० [स० विमोहा] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण होते है। इसे 'जोहा', 'विमोहा' और 'विज्जोहा' भी कहते है।

विज्जन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विज्जल'।

विज्जनु—सज्ञा स्त्री० [प्रा० विज्ज] बिजली। विद्युत्। उ०—प्राची प्रमान समुह अनिय मुष पगुर विज्जनु मनिय।—पृ० रा०, ५५। ७।

विज्जल'—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार की लपसी या चटनी। २ शर। तीर। बाण। ३. शाल्मली कंद [को०]।

विज्जल[२]—वि० फिसलनेवाला। पिच्छिल [को०]।

विज्जलत्ता(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युल्लता] बिजली। विद्युत् की लता। दे० 'बिजली'। उ०—ठनक्कत घटा बलै अग मोरै। मनौ कूलटा छैल चित चालि चोरै। झमैकत दती सुनैन बिराजै। मनौ बिज्जलत्ता नभ मध्य छाजै। व—पृ० रा०, १२। १७८।

विज्जव—सज्ञा पुं० [स०] एक विशेष प्रकार का बाण या तीर।

विज्जाहार(पु)—सज्ञा पु० [स० विद्याधर, प्रा०] उ०—इद चद सुर सिद्ध चरण विज्जाहार राह भरिअ वीर जुज्झ देक्खह कारण।—कीर्ति०, पृ० १०६।

विज्जिल—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विज्जल' [को०]।

विज्जु(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युत्]। विद्युत। बिजली। उ०—ससि विज्जु मनहुँ दोउ दिसि बसत उडगन को बखतर धरे।—गोपाल (शब्द०)।

विज्जुझला(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युज्ज्वाला, प्रा० विज्जुझला] बिजली की चमक। विद्युत् की ज्योति। उ०—तरवारि चमक्कइ विज्जुझला।—कीर्ति०, पृ० ११०।

विज्जुल—सज्ञा पु० [स०] १. त्वचा। छिलका। २. दारचीनी।

विज्जुलता(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विद्युल्लता] विद्युत्। बिजली। उ०—कर लीने मनि रस्मि रस्मि राह फैलि अथोरी। विज्जुलता बढि मनहुँ रची विधुकरमा डोरी।—गोपालचद्र (शब्द०)।

विज्जुलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] जतुका या पहाडी नाम का लता।

विज्जोहा—सज्ञा पु० [स० विमोहा] दे० 'विजोहा'।

विज्ञ'—वि० [स०] १. जो जानता हो। जानकार। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. विद्वान्। पडित।

विज्ञ[२]—सज्ञा पु० [स०] १. बुद्धिमान् व्यक्ति। पंडित। २ मुनि। ऋषि (को०)।

विज्ञता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विज्ञ होने का भाव। जानकारी। २. बुद्धिमत्ता। ३ पाडित्य। विद्वत्ता।

विज्ञत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विज्ञता'।

विज्ञप्त—वि० [स०] जो बतलाया या सूचित किया गया हो। जतलाया हुआ।

विज्ञप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया। २ विज्ञापन। इश्तहार। ३ शिक्षा। उपदेश (को०)। ४ निवेदन। प्रार्थना (को०)।

विज्ञप्तिका—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रार्थना। निवेदन।

विज्ञबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] जटामासी।

विज्ञराज—सज्ञा पु० [स०] १ ऋषिश्रेष्ठ। २ पडितराज (को०)।

विज्ञात—वि० [स०] १ जाना या समझा हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

विज्ञातवीर्य—वि० [स०] जिसकी शक्ति प्रख्यात हो (को०)।

विज्ञातव्य—वि० [स०] जो जानने या समझने के योग्य हो।

विज्ञातस्थाली—सज्ञा स्त्री० [स०] सामान्य ढग से तैयार किया हुआ पात्र (को०)।

विज्ञाता—सज्ञा पुं० [स० विज्ञातृ] वह जो जानता या समझता हो।

विज्ञातार्थ—वि० [स०] जो स्थिति को जानता हो या जो उससे अच्छी तरह परिचित हो।

विज्ञाति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ज्ञान। समझ। २ जानकारी। ३ एक प्रकार की देवयोनि जिसे गय भी कहते हैं। ४ एक कल्प का नाम।

विज्ञान—सज्ञा पु० [स०] १. ज्ञान। जानकारी। २. किसी विशिष्ट विषय के तत्वो या सिद्धातो आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संगृहीत हो। किसी विषय की जानी हुई बातो का ठीक तरह से किया हुआ सग्रह जो एक अलग शास्त्र के रूप मे हो। शास्त्र। जैसे,—पदार्थ विज्ञान, राजनीति विज्ञान, शरीर विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, समाज-विज्ञान आदि। ३. किसी विषय का अनुभवजन्य, पूरा और अच्छा ज्ञान। कार्यकुशलता। ४ कर्म। ५ माया या अविद्या नाम की वृत्ति। ६ बौद्धो के अनुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। आत्मा का अनुभव। ७. ब्रह्म। ८ आत्मा। ९ आकाश। १०. निश्चयात्मिका बुद्धि। ११ मोक्ष। १२. संगीत (को०)। १३. चौदह विद्याओ का ज्ञान (को०)। १४ व्यवसाय। नियोजन (को०)।

विज्ञानकृत्स्न—सज्ञा पु० [स०] तत्र का एक कृत्स्न। (बौद्ध०)।

विज्ञानकेवल—सज्ञा पु० [स०] जीवात्मा (को०)।

विज्ञानकोश—सज्ञा पु० [स०] वेदात के अनुसार ज्ञानेंद्रियाँ और बुद्धि। विज्ञानमय कोश। विशेष दे० 'कोष'।

विज्ञानघन—सज्ञा पु० [स०] केवल ज्ञान। विशुद्ध ज्ञान (को०)।

विज्ञानता—सज्ञा स्त्री० [स०] विज्ञान का भाव या धर्म।

विज्ञानपति—सज्ञा पु० [स०] वह जो परम ज्ञानी हो।

विज्ञानपाद—सज्ञा पु० [स०] वेदव्यास का एक नाम।

विज्ञानमय—वि० [स०] प्रज्ञायुक्त। विशुद्ध ज्ञान से मडित (को०)।

विज्ञानमय कोष—सज्ञा पुं० [स०] ज्ञानेंद्रियो और बुद्धि का समूह। विशेष दे० 'कोष'।

विज्ञानमातृक—सज्ञा पु० [स०] बुद्धि का एक नाम।

विज्ञानयोग—सज्ञा पु० [स०] शुद्ध ज्ञान तक पहुँचने का साधन। प्रमाण (को०)।

विज्ञानवाद—सज्ञा पुं० [स०] १ वह वाद या सिद्धात जिसमे ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित हो। उ०—विज्ञानवाद को मैं अब तक इतना प्रिय समझता था।—मानव०, पृ० ४१७। २ वह वाद या सिद्धात जिसमे केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो।

विज्ञानवादी—सज्ञा पु० [स० विज्ञानवादिन्] १ वह जो योग के मार्ग का अनुसरण करता हो। योगी। २ वह जो आधुनिक विज्ञान शास्त्र का पक्षपाती हो। विज्ञान के मत का समर्थन करनेवाला।

विज्ञानहस—सज्ञा पु० [स०] दे० 'परमहस'। उ०—और ब्रह्मज्ञानी से बढकर विज्ञानहस है।—कबीर म०, पृ० ३०६।

विज्ञानिक—सज्ञा पु० [स०] १. जिसे ज्ञान हो। २ विज्ञ। पडित। ३ दे० 'वैज्ञानिक'।

विज्ञानिता—सज्ञा स्त्री० [स०] विज्ञानी का भाव या धर्म। किसी विषय का पूर्ण ज्ञान।

विज्ञानी—सज्ञा पु० [स० विज्ञानिन्] १. वह जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो। २ वह जो किसी विज्ञान का अच्छा वेत्ता हो। वैज्ञानिक। ३ वह जिसे आत्मा तथा ईश्वर आदि के स्वरूप के सबध मे विशेष ज्ञान हो।

विज्ञानीय—वि० [स०] विज्ञान सबधी। वैज्ञानिक।

विज्ञानेश्वर—सज्ञा पु० [स०] एक महात्मा का नाम जिन्होने याज्ञवल्क्य स्मृति की व्याख्या मिताक्षरा नाम से की थी। उ०—हिंदू व्यवहार के प्रसिद्ध व्याख्याता तथा 'मिताक्षरा' के के उन्नायक तथा विधायक विज्ञानेश्वर उसी के आश्रय मे रहते थे।—आ० भा०, पृ० ५५८।

विज्ञापक—सज्ञा पु० [स०] वह जो विज्ञापन करता हो। समझाने, बतलाने या जतलानेवाला।

विज्ञापन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विज्ञापनीय] १. किसी बात को बतलाने या जतलाने की क्रिया। जानकारी कराना। सूचना देना। २ वह पत्र या सूचना आदि जिसके द्वारा कोई बात लोगो को बतलाई जाय। इश्तहार। ३. निवेदन। प्रार्थना (को०)।

विज्ञापना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विज्ञप्त करना। जतलाना। बतलाना। २ निवेदन (को०)।

विज्ञापनीय—वि० [स०] १ जो बतलाने या जतलाने के योग्य हो। सूचित करने के योग्य। २. निवेदनीय। प्रार्थनीय।

विज्ञापित—वि० [स०] १. जो बतलाया जा चुका हो जिसको सूचना दी जा चुकी हो। २. जिसका इश्तहार दिया जा चुका हो।

विज्ञापी—वि० [स० विज्ञापिन्] जतलाने या बतलानेवाला। सूचना देनेवाला।

विज्ञाप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विज्ञप्ति'।

विज्ञाप्य[1]—वि० [स०] बतलाने योग्य। सूचित करने योग्य।

विज्ञाप्य[2]—सज्ञा पु० [स०] प्रार्थना। निवेदन [को०]।

विज्ञिप्सु—वि० [स०] जतलाने, सूचना देने अथवा निवेदन करने का अभिलाषी। [को०]।

विज्ञेय—वि० [स०] १ जो जानने, सीखने, या समझने के योग्य हो। २ सम्मान्य (को०)।

विज्य—वि० [स०] जिस धनुष से कसी डोर उतार दी गई हो। (वह धनुष) जिसमे डोर न हो। २ (धनुष) जो गुण या प्रत्यचा विहीन हो [को०]।

विज्वर—वि० [स०] १ जिसका ज्वर उतर गया हो। जिसका बुखार छूट गया हो। २ जिसे सब प्रकार की चिताओ से छुटकारा मिल गया हो। निश्चित। बेफिक्र। ३ जो सब प्रकार के क्लेशो आदि से मुक्त हो। जिसे किसी प्रकार का शोक या सताप न हो।

विज्वर्ह्वर—वि० [स०] १ अप्रिय। २ विषम। बेमेल [को०]।

विटक[1]—वि० [स० विटङ्क] सुदर। मनोहर।

विटक[2]—सज्ञा पु० १ सब से ऊँचा सिरा या स्थान। २ पक्षियो का पिंजड़ा। कबूतर का दरबा। कावुक। ३. बडी ककडी।

विटकक[1]—वि० सज्ञा पु० [स० विटङ्कक] दे० 'विटक' [को०]।

विटकित—वि० [स० विटङ्कित] १ टकित। मुद्राकित। २ उत्थित। खडा हुआ। अचित [को०]।

विट—सज्ञा पु० [स०] १. वह जिसमे कामवासना बहुत अधिक हो। कामुक। लपट। २ वह जो किसी वेश्या का यार हो या जिसने किसी वेश्या को रख लिया हो। ३. धूर्त। चालाक। ४. साहित्य मे एक प्रकार का नायक। साहित्यदर्पण के अनुसार जो व्यक्ति विषय भोग मे अपनी सारी सपत्ति नष्ट कर चुका हो, भारी धूर्त हो, फल या परिणाम का एक ही अग देखता हो, वेष भूषा और बातें बनाने मे बहुत चतुर हो, वह विट कहलाता है। ५. एक पर्वत का नाम। ६ एक प्रकार का खर जिसे 'दुर्गंध खैर' भी कहते है। ७. नारंगा का वृक्ष। ८. चूहा। ९ साँवर नमक। १० विष्ठा। गुह। मल। उ०—(क) कवि भस्म विट परिनाम तन तेहि लागि जगु वैरी भयो। (ख) पाछे तें शूकर सुत आवा। विट ऊपर मुख मारि गिरावा।—विश्राम (शब्द०)। ११. (नाटक मे) एक पात्र। नायक का सखा (को०)। १२ गाडू। इल्लती (को०)। १३. पल्लवयुक्त शाखा। पत्तोवाली डाली (को०)।

विटक—सज्ञा पु० [स०] १. प्राचीन काल की एक जाति का नाम। २. पुराणानुसार एक प्राचीन देश जो नर्मदा नदी के तट पर था। ३. फोडा। व्रण।

विटकाता—सज्ञा स्त्री० [स० विटकान्ता] हरिद्रा। हल्दी [को०]।

विटका—सज्ञा स्त्री० [स०] विटो के मिलने का कक्ष [को०]।

विटकारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पक्षी।

विटकृमि—सज्ञा पु० [स०] चुन्ना या चुनचुना नाम का कीडा जो बच्चो की गुदा मे उत्पन्न होता है।

विटप—सज्ञा पु० [स०] १ वृक्ष या लता की नई शाखा। कोपल। २ छतनार पेड। झाडी। ३ वृक्ष। पेड। उ०—ठहर गए नृप वहीं विटप की छाँह मे, हुआ विस्फुरण शकुनरूप वर बाँह मे।—शकुं०, पृ० ४७। ४ आदित्य पत्र। ५ विस्तार। फैलाव (को०)। ६ लता (को०)। ७ अडकोश पटल (को०)।

विटपक—सज्ञा पु० [स०] १ दुष्ट। पाजी। २ वृक्ष (को०)।

विटपि—सज्ञा पु० [स० विटपी] दे० 'विटपी'। उ०—नियममयी उलझन लतिका का भाव विटपि से आकर मिलना। जीवन वन की बनी समस्या आशा नभकुसुमो का खिलना।—कामायनी, पृ० २६५।

विटपिमृग—सज्ञा पु० [स०] वानर। बदर [को०]।

विटपी—सज्ञा पु० [सं० विटपिन्] १ जिसमे नई शाखाएँ या कोपलें निकली हो। २. वृक्ष। पेड। उ०—बढते ह विटपी जिधर चाहता मन है।—साकेत, पृ० २१२। ३ अजीर का पेड। ४ वट वृक्ष। बड का पेड।

विटपीमृग—सज्ञा पु० [स०] शाखामृग। बदर।

विटपेटक—सज्ञा पु० [स०] धूर्तमडली। धूर्तों का समुदाय [को०]।

विटप्रिय—सज्ञा पु० [स०] मोगरा नामक फूल या उसका पौधा।

विटभूत—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम।

विटमाक्षिक—सज्ञा पु० [स०] सोनामक्खी नाम का खनिज द्रव्य।

विटलवण—सज्ञा पु० [स०] साँचर नमक।

विटवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] पाटली वृक्ष।

विटाटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ धूर्तों का मिलन कक्ष। विट लोगो का आश्रय या गृह। २. एक प्रकार का मुस्तक या मोथा [को०]।

विटि, विटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लाल चदन। २ पीत चंदन [को०]।

विट्—सज्ञा पु० [स०] साँचर नमक।

विट्क—सज्ञा पु० [स०] १ विष। जहर। २ मल (को०)।

विट्घात—सज्ञा पु० [स०] मूत्राघात नामक रोग।

विट्चर—सज्ञा पु० [स०] गाँवो मे रहनेवाला सूअर।

विट्ठल—सज्ञा पु० [स०] पंढरपुर (महाराष्ट्र) की विष्णु की एक मूर्त्ति का नाम।

विट्पति—सज्ञा पुं० [स०] जामाता। दामाद।

विट्प्रिय—सज्ञा पु० [स०] शिशुमार या सूँस नामक जलजंतु।

विट्शूल—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का शूल रोग।

विट्सग—सज्ञा पुं० [स० विट्सङ्ग] मलरोध। कब्जियत।

विट्सारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पक्षी।

विठक—वि० [स० विठङ्क] नीच। दुर्वृत्त। कमीना [को०]।

विठर—सज्ञा पु० [स०] १. वृहस्पति का एक नाम। २. बावदूक। वाग्मी व्यक्ति। पडित ३. मूर्ख आदमी [को०]।

विठल—सज्ञा पु० [स० विट्ठल ?] दे० 'विट्ठल'।

विठोवा—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'विट्ठल'।

विट्ठल—सज्ञा पु० [स० या स० विष्टरश्रवस् = विष्णु (कृष्ण) के एक नाम का संक्षिप्त रूप, स० विष्टर>प्रा० विट्ठल] १ विष्णु या कृष्ण की एक मूर्ति जो पढरपुर मे है।

विट्ठलनाथ—सज्ञा पुं० [हिं०] वल्लभाचार्य के द्वितीय पुत्र का नाम जिन्होने 'वल्लभ मत' के आठ प्रधान भक्त कवियो को लेकर 'अष्ट छाप' की स्थापना की।

विडग'—सज्ञा पु० [स० विडङ्ग] वायविडंग।

विडग'—वि० अभिज्ञ। जानकार। निपुण [को०]।

विडग'—सज्ञा पु० [देश०] अश्व। घोडा। उ०—तिणमइ लेस्या टालिमा वाँकड मुहाँ विडग—ढोला०, दू० २२७।

विडँग(पु)—सज्ञा पुं० [देश०] घोडा। उ०—निस प्रथम जाम आलोझनर, दारण मोनागिर दुरग। कर वाचपाद अकवर कुशल, वीदहरे सझिया विडँग।—रा० रू०, पृ० १७०।

विडगी(पु)—वि० [हिं० वेढग] वेढगी। उ०—आया मृग मार मेसनू आखे वचव सूणो सवीता। दारुण कुटी विडगी दीसै सही गमाई सीता।—रघु० रू०, पृ० १३८।

विडव'—सज्ञा पुं० [स० विडम्ब] १. नकल। अनुकरण। २ दुखी करना। तग करना। ३ मजाक। परिहास। ठिठोली [को०]।

विडव—वि० अनुकरण करनेवाला। नकल करनेवाला।

विडवक—सज्ञा पु० [स० विडम्बक] १ ठीक ठीक अनुकरण करनेवाला। पूरी पूरी नकल करनेवाला। २ अनुकरण करके चिढाने या अपमान करनेवाला। ३ निंदा या परिहास करनेवाला।

विडवन—सज्ञा पु० [स० विडम्बन] १. किसी के रंगढग या चाल-ढाल आदि का ठीक ठीक अनुकरण करना। पूरी पूरी नकल करना। २. चिढाने या अपमानित करने के लिये नकल करना। भांडपन करना। मजाक करना। मजाक का विषय बनाना। ३ निंदा या उपहास करना। ४ धोखेबाजी। जालसाजी (को०)। ५ क्लेश। संताप (को०)। ६. निराश करना (को०)।

विडबना—सज्ञा स्त्री० [स० विडम्बना] [वि० विडबनीय, विडबित] १. अनुकरण करना। नकल उतारना। २ किसी को चिढ़ाने या बनाने के लिये उसकी नकल उतारना। ३. हँसी उडाना। मजाक करना। ४ हँसी का विषय। उ०—संसार के समस्त अभावो को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा। परतु कैसी विडंबना! लक्ष्मी के लालो के भ्रूभग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या?—स्कंद०, पृ० १६। ५ डाँटना डपटना। फटकारना। दे० 'विडवन'।

विडवनीय—वि० [स० विडम्बनीय] १ जो अनुकरण करने के योग्य हो। नकल उतारने लायक। २. चिढाने या उपहास करने योग्य। दे० 'विडवित'।

विडवित—वि० [स० विडम्बित] १ नकल किया हुआ। २ जिसका परिहास किया गया हो। ३ वंचित। छला हुआ। ४ सतप्त किया हुआ। जो हताश किया गया हो। ५ नीच। हेय। कमीना।

विडवी—सज्ञा पु० [स० विडम्बिन्] वह जो किसी प्रकार की विडंबना करता हो। विडबना करनेवाला।

विडव्य—सज्ञा पु० [स० विडम्ब्य] वह जो विडबना के लायक हो। उपहास का विषय [को०]।

विड—सज्ञा पु० [स०] १ विट् लवण। काला नमक। २ खड। अश। टुकडा (को०)।

विडगड—सज्ञा पु० [स० विडगण्ड] विट् लवण। साँचर नामक।

विडद‡—सज्ञा पु० [हिं० विरद] दे० 'विरुद'। उ०—भाट विड़द तिहाँ ऊचरै। धनि धनि हो वीसल चहूँवाण—वी० रासो, पृ० ११०।

विडरना(पु)†—क्रि० अ० [स० विधारित ? या स० तलव, हिं० डालना या स० वितरण] १ इधर उधर होना। तितर वितर होना। उ०—(क) विडरत विभुकि जानि रथ ते मृग जनु ससकि शशि लगर सारे।—सूर (शब्द०)। (ख) जानत नहीं कौन गुण यहि तन जाते सब विडरे। —सूर०। २ भागना। दौडना। उ०—हाँके मुगल ताल की जोरी। भजैं विडरि बालक चहुँ ओरी।—छत्रप्रकाश (शब्द०)। ३. चौंकना। भौचक होना। ४ डरना। भीत होना।

विडराना(पु)†—क्रि० स० दे० 'विडारना'।

विडाँणा, विडाणा(पु)†—वि० [देश०] [वि० स्त्री० विडाँणी] विराना। विगाना। पराया। उ०—(क) थल मथ्थइ ऊजासडइ, थे इण केहइ रग। घण लीजइ प्रे मारिजइ, छाँडि विडाँणउ सग।—ढोला०, दू० ६३२। (ख) रामनाम निशि दिन भजो तजो विडाणी तात। जन हरिया नर देह सो औसर बीतो जात।—राम० धर्म०, पृ० ५८। (ग) आँखडियाँ डवर हुई नयण गमाया रोय। से साजण परदेश मइँ रह्या विडाणा होय।—ढोला०, दू० १६५।

विडारक—सज्ञा पुं० [स०] विडाल। बिल्ली।

विडारना—क्रि० स० [हिं० विडरना का सक० रूप] १ तितर बितर करना। इधर उधर करना। छितराना। उ०—हारे लै विडारे जोइ। पति पै पुकारे कहो वजमारे मति जोवो हरि गाम्।—नाभादास (शब्द०)। २ नष्ट करना। उ०—विष्वक्सेन रूप हरि लेगे कोन्हो शिव को हेत। असुर मारि सब तुरत विडारे दीन्हे रुद्र निकेत।—सूर (शब्द०)। ३ भगाना। दौडाना। ४. चौंकाना। आश्चर्यचकित कर देना।

विडाल—सज्ञा पु० [स०] १. आँख का पिंड। २ आँख की एक प्रकार की दवा जो जेठी मधु, गेरू, दारु हल्दी और रसाजन आदि से बनती है और जिसका आँख के चारो ओर लेप किया जाता है। ३ आँख के चारो ओर किया जानेवाला कोई लेप। ४ बिल्ली। ५ गवमार्जार। मुश्क बिलाव। ६. हरताल। दे० 'बिडाल'।

विडालक—सज्ञा पु० [सं०] १ हरताल। २ बिल्ली। ३ आँख की एक औषध। विडाल।

विडालपद—सज्ञा पुं० [स०] दो तोले का परिमाण।

विडालपदक—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक परिभाषा के अनुसार एक कर्ष का परिमाण।

विडालाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम जो महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे गया था।

विडालाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक राक्षसी का नाम [को०]।

विडाली—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बिदारी कद। २. बिल्ली।

विडीन—सज्ञा पु० [स०] पक्षियो की उडान का एक प्रकार।

विडीनक—सज्ञा स० [स०] पक्षियो की उडान का एक भेद। पक्षियो का अलग अलग होकर उडना [को०]।

विडुल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बेत [को०]।

विडूरज—सज्ञा पु० [स०] एक बहुमूल्य रत्न। वैदूर्य मणि [को०]।

विडोजा, विडौजा—सज्ञा पु० [स० विडोजस् विडौजस्] इद्र का एक नाम।

विड्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विट' [को०]।

विड्गध—सज्ञा पु० [स० विड्गन्ध] विड लवण।

विड्ग्रह—सज्ञा पु० [स०] कोष्ठबद्धता। कब्जियत। मलरोध।

विड्घात—सज्ञा पु० [स०] मलमूत्र का अवरोध। पेशाब और पाखाना रुकना।

विड्ज—सज्ञा पु० [स०] विष्ठा आदि से उत्पन्न होनेवाले कीडे मकोडे।

विड्ड—सज्ञा पुं० [स०] अस्थि। हड्डी [को०]।

विड्ढल—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विठ्ठल' [को०]।

विड्बध—सज्ञा पु० [स० विड्बन्ध] मल का अवरोध। कब्जियत।

विड्भग—सज्ञा पु० [स० विड्भङ्ग] बहुत दस्त होना। पेट चलना।

विड्भव—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विट्ज' [को०]।

विड्भुक—सज्ञा पुं० [स० विड्भुज्] १. गुबरैला। २. सूअर [को०]।

विड्भेद—सज्ञा पु० [स०] बहुत दस्त होना। पेट चलना।

विड्भेदी—सज्ञा पु० [स० विड्भेदिन्] वह ओषधि या द्रव्य जो विरेचक हो। दस्तावर चीज या दवा।

विड्भोजी—सज्ञा पु० [स० विड्भोजिन्] वह जो विष्ठा खाता हो। शूकर, गुबरैला आदि।

विड्लवण—सज्ञा पु० [स०] विट्लवण। साँचर नमक।

विड्वराह—सज्ञा पु० [स०] गाँवो मे रहनेवाला सूअर।

विड्विघात—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का मूत्रघात रोग।

विढना ⓤ†—क्रि० अ० [स० वि+दहन तुल० हिं० बेढना] युद्ध करना। भिडना उ०—गाया साह अलावदा, विढ कटकाँसूँ वीर।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ८१।

विणज†—सज्ञा पुं० [स० वणिज्] व्यापार उ०—दारुण नगर सक जुत देखे। दौलत विणज बजार न देखे।—रघु०रू०, १।११२।

विणठना†—क्रि० अ० [स० विनष्ट, प्रा० विणट्ठ+हिं० ना (प्रत्य०)] नष्ट होना। उ०—तन विणठा जीउ खेलिया छाडि चलिया घर घाह।—प्राण०, पृ० २५६।

विणसना†—क्रि० अ० [स० विनशन] नष्ट होना। उ०—कलिजुग पाप जअवतरयो रजि के कारण विणसस लक।—बी० रासो, पृ० ८६।

विणास†—सज्ञा पुं० [प्र०] दे० 'विनाश'। उ०—अस्ती चरित गति को लहइ? एकइँ आखर रस मवइ विणास।—बी० रासो, पृ० २।

वितड—सज्ञा पु० [स० वितण्ड] १ हाथी। २ एक प्रकार का ताला (को०)।

वितडा—सज्ञा स्त्री० [स० वितण्डा] १ न्यायशास्त्र मे सोलह प्रकार की तर्क प्रणालियो मे से एक। दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। २ व्यर्थ का झगडा या कहासुनी। ३ कचूर। ४. दर्वी। ५ करवीरी (को०)। ६. शिलारस।

वितडावाद—सज्ञा पु० [स० वितण्डावाद] व्यर्थ के तर्क का आश्रय लेना। उ०—आधुनिक प्रवृत्तियो को प्रवाद और वितडावाद कहकर उनकी निंदा की थी।—आचार्य०, पृ० १४०।

वितत ⓤ—सज्ञा पु० [स० वि०+तन्त्र] वह बाजा जिसमे तार न लगे हो। बिना तार का बाजा। उ०—तत वितत सुघन वाजहिं शब्द होय झनकारा।—जायसी (शब्द०)।

वितनु[1]—सज्ञा पु० [स० वितन्तु] ऊँची जाति का घोडा। अच्छा घोडा [को०]।

वितनु[2]—सज्ञा स्त्री० पतिहीना स्त्री। विधवा [को०]।

वितन्त्री—सज्ञा स्त्री० [स० वितन्त्री] वह वीणा जिसके तारो के स्वरो मे एकरूपता न हो [को०]।

वितस—सज्ञा पु० [स०] १. पक्षियो अथवा छोटे छोटे पशुओ आदि को फँसाने का जाल। २ पिंजडा (को०)।

वित ⓤ—वि० [स० विद्] १ जाननेवाला। ज्ञाता। उ०—सब शस्त्र विसारद अस्त्र वित विदित बली मनि जगत जित।—गोपाल (शब्द०)। २ चतुर। निपुण। उ०—रन जु आन रद वित नृप लस्या करद मगध महराज को।—गोपाल (शब्द०)।

वित ⓤ—सज्ञा पु० [स० वित्त] धन दौलत।

वितर्च्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी अरणी।

वितड़ना‡—क्रि० स० [स० वितरण] १. बाँटना। २ अर्पित करना। दान करना। उ०—दादू ज्यौं आवै त्यौं जाइ विचारी। विलसी वितडी न माथै मारी।—दादू०, पृ० २३७।

वितत[1]—वि० [स०] १ विस्तृत। फैला हुआ। २ आयत। विशाल। विस्तीर्ण (को०)। ३ किया हुआ। सपन्न। कार्यान्वित (को०)। ४ ढका हुआ। आच्छादित (को०)। ५ खीचा हुआ। कर्षित। झुकाया हुआ (धनुष या ज्या)। जैसे, विततधनु, विततज्या (को०)।

वितत[2]—सज्ञा पुं० १. वीणा अथवा उससे मिलता जुलता हुआ और कोई बाजा। २ मृदग या ढोल आदि आनद्ध बाजा से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ३. दे० 'प्रतान' (को०)।

विततधन्वा—वि० [स० विततधन्वन्] धनुष की प्रत्यचा या डोरी को खीचनेवाला [को०]।

विततवपु—वि० [स०] लबे चौडे शरीरवाला [को०]।

विततताना ⓤ—क्रि० अ० [स० व्यथा] व्याकुल होना। बेचैन होना। उ०—देखे आइ तहाँ हरि नाही, चितवति जहाँ तहाँ वितताती।—सूर (शब्द०)।

विततायुध—वि० [स०] जिसने धनुष की प्रत्यचा या डोरी कान तक तान दी हो [को०]।

वितति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विस्तार। फैलाव। आतिशय्य। आधिक्य। २. संगह। गुल्म। झुंड (को०)। ३ रेखा। कतार। पंक्ति (को०)।

विततोत्सव—वि० [सं०] जिसने उत्सव की व्यवस्था की हो (को०)।

वितथ—वि० [सं०] [संज्ञा वितथता] १ मिथ्या। झूठ। २ व्यर्थ। निरर्थक। बेफायदा।

वितथता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वितथ का भाव। मिथ्यात्व।

वितथप्रयत्न—वि० [सं०] निष्फल यत्न करनेवाला।

वितथमर्याद—वि० [सं०] अनाचारी। आचारहीन (को०)।

वितथवादी—वि० [सं० वितथवादिन्] असत्यभाषी।

वितथाभिनिवेश—संज्ञा पुं० [सं०] असत्य बोलने की प्रवृत्ति या आदत (को०)।

वितथ्य—वि० [सं०] १ मिथ्या। असत्य। झूठ। २ व्यर्थ। निरर्थक।

वितद्रु—संज्ञा पु० [सं०] पंजाब की वितस्ता या झेलम नदी का एक नाम।

वितन(पु)—वि०, संज्ञा पुं० [सं० वितनु] दे० 'वितनु'।

वितनिता—वि०, संज्ञा [सं० वितनितृ] विस्तृत करनेवाला। वह जो विस्तृत करता हो। विस्तारक।

वितनु[1]—वि० [सं०] १ जो बहुत ही सूक्ष्म हो। २ शरीररहित (को०)। ३ सुंदर (को०)। ४ कोमल। मृदु (को०)। ५ निस्तत्व। सारहीन (को०)।

वितनु[2]—संज्ञा पु० कामदेव (को०)।

वितपन्न[1]—संज्ञा पु० [सं० व्युत्पन्न] वह जो किसी काम में कुशल हो। व्युत्पन्न। दक्ष। प्रवीण। उ०—(क) सूरज प्रभु वितपन्न कोक गुन ताते हरि हरि ध्यावत।—सूर (शब्द०) (ख) सगहि रहति सदा पिय प्यारी क्रीडत करति उपाधा। कोककला वितपन्न भई हौं कान्हरूप तनु आधा।—सूर (शब्द०)।

वितपन्न[2]—वि० [सं० विपत्+पन्न=विपन्न] घबराया हुआ। व्याकुल। उ०—उनहि मिले वितपन्न भई अब वै दिन गए भुलाइ।—सूर (शब्द०)।

वितमस्क—वि० [सं०] जिसमें अंधकार न हो। २ जिसमें तमोगुण न हो।

वितमा—वि० [सं० वितमस्] दे० 'वितमस्क' (को०)।

वितर—वि० [सं०] जो आगे पहुँचावे (मार्ग आदि)। आगे पहुँचानेवाला (को०)।

वितरक—संज्ञा पुं० [सं०] वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला। उ०—नुनु धुनि पूरत ताते नूपुर वितरक अर्थ सुरायन मे।—देवस्वामी (शब्द०)।

वितरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ दान करना। अर्पण करना। देना। २ बाँटना। ३ वितरक (को०)। ४ पार करना। पार जाना (को०)। ५ छोड देना। त्याग करना। तिलांजलि देना (को०)।

वितरन(पु)—संज्ञा पु० [सं० वितरण] १ बाँटनेवाला। वितरण करनेवाला। जैसे—तरन तरन दुःत भवतरन वितरन सुख हित रनकरन।—गोपाल (शब्द०)। २ दे० 'वितरण'। उ०—कछु दिन प्रभु तहँ कीने निवासा। वितरन बंधुन बृद हुलासा।—रघुराज (शब्द०)।

वितरना(पु)—क्रि० स० [सं० वितरण] वितरण करना। बाँटना। उ०—(क) ये लहुरे अति रहे उदारा। वितरहिं सब को द्रव्य अपारा।—रघुराज (शब्द०)। (ख) सुवरण तनु तिनके किए, सुवरण वितरि अपार।—रघुराज (शब्द०)।

वितरिक्त(पु)—अव्य० [सं० व्यतिरिक्त] अतिरिक्त। सिवा। उ०—हरि वितरिक्त जाहि शिर नावै मूरति तुरत फूटि सो जावै।—रघुराज (शब्द०)।

वितरित—वि० [सं०] जो वितरण किया गया हो। बाँटा हुआ।

वितरिता—वि० संज्ञा पु० [सं० वितरितृ] १ वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला। २ दान देनेवाला (को०)।

वितरेक(पु)[1]—संज्ञा पुं० [सं० व्यतिरेक] व्यतिरेक अलंकार। दे० 'व्यतिरेक'।

वितरेक(पु)[2]—क्रि० वि० [सं० व्यतिरिक्त] छोडकर। सिवा। उ०—वितरेक तोहि निर्दय महाबल आनु कहु को कहि सकै।—तुलसी (शब्द०)।

वितर्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक तर्क के उपरांत होनेवाला दूसरा तर्क। युक्ति। दलील। २ संदेह। शक। ३ अटकल। अनुमान। ४ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है और कुछ निर्णय नहीं होता। ६ विचार विनिमय (को०)। ७ आध्यात्मिक गुरु (को०)। ८ अभिप्राय। प्रयोजन (को०)।

वितर्कण—संज्ञा पु० [सं०] १ वादविवाद। २ तर्क करने की क्रिया। ३ संदेह। ४ अटकल करना। अंदाज लगाना (को०)।

वितर्कित—वि० [सं०] विचारित (को०)।

वितर्क्य—वि० [सं०] १ जिसमें किसी प्रकार के वितर्क या संदेह का स्थान हो। २ जो विचार करने योग्य हो (को०)। ३ जो देखने में बहुत विलक्षण हो।

वितर्दि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वेदी। मंच। वेदिका। २ छज्जा। बरामदा (को०)।

वितर्दिका, वितर्दी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वितर्दि' (को०)।

वितर्द्धि, वितर्द्धिका, वितर्द्धी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वितर्दि' (को०)।

वितल—संज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार सात पातालों में से तीसरा पाताल।

विशेष—देवी भागवत के अनुसार यही दूसरा पाताल है। कहते हैं, इस पाताल में शिव जी 'हाटकेश्वर' नाम से अपने पार्षदों के साथ रहते हैं। इनके स्वेद से हाटकी नाम की नदी बहती है जिसे हुताशन पीते हैं। उन्हीं हुताशन के मुँह से जब फुफकार निकलता है, तब उसमें हाटक नामक सोना निकलता है।

वितली—संज्ञा पुं० [सं० वितलिन्] वितल लोक को धारण करनेवाले, बलदेव। उ०—बलिन मुरलिन देव हलिन वितलिन स्वय।—गर्गसंहिता (शब्द०)।

वितष्ट—वि० [स०] १ काटा हुआ। २ खोदा हुआ। ३. समतल या हमवार किया हुआ [को०]।

वितसारू†—१. अव्य० [देश० या स० वित्त+सार] यथाशक्ति। उ०—दान सदा वितसारू देवै, नित रसणा लेवै हरिनाम। —रघु० रू०, पृ० २४।

वितस्त—सज्ञा पुं० [स० वितस्ति] वितस्ति। वालिश्त। एक वित्ता। बारह अगुल।

वितस्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] पजाब की झेलम नामक नदी का प्राचीन नाम। उ०—वितस्तातीर स्वच्छ स्थल।—का० सुषमा, पृ० १।

वितस्ताख्य—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार तक्षक नाग का निवासस्थान।

वितस्ताद्रि—सज्ञा पु० [स०] राजतरगिणी के अनुसार एक पर्वत का नाम।

वितस्ति—सज्ञा पुं० [स०] १ उतना परिमाण जितना हाथ अँगूठे और उँगली को पूरा पूरा फैलाने से होता है। वालिश्त। वित्ता। २ बारह अगुल का परिमाण।

विता† अव्य० [हिं० उतना—उत्ता] उतने। उ०—बहूँबचन विते वर्जा वहिश्त म्याँने जिते थे विते गुनहगार आदम हव्वाकर कते।—दक्खिनी०, पृ० ३३२।

विताड़न—सज्ञा पु० [स० विताडन] मारना। ताड़ना करना [को०]।

वितान[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ यज्ञ। २ विस्तार। फैलाव। ३ बडा चँदोआ या खेमा। ४ समूह। संघ। जमाव। ५ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बधन जो सिर पर के आघात या घाव आदि पर बाँधा जाता है। ६ अवसर। अवकाश। ७ घृणा। नफरत। ८ शून्य। खाली स्थान। ९ अग्निहोत्र आदि कर्म। १०. वेदिका। वेदी (को०)। ११ गद्दी (को०)। १२ प्राचुर्य। आधिक्य (को०)। १३ एक प्रकार का छद। १४. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, एक भगण और दो गुरु होते हैं। उ०—सुभगगा जल तेरो। सुखादता जन केरो। नसिक भौ दुख नाना। जस को तान विताना।—जगन्नाथ (शब्द०)।

वितान[2]—वि० १ मंद। धीमा। २ शून्य। खाली। ३ उदास। हतोत्साह (को०)। ४ जड बुद्धिहीन। ५ खल। दुष्ट (को०)। ६ सारहीन। तुच्छ (को०)।

वितानक[1]—सज्ञा पु० [सं०] धनिया।

वितानक[2]—सज्ञा पु० [स०] १ बडा चँदोआ या खेमा। २ समूह। जमावडा। ३ धन। सपत्ति। ४ बिछाने की बडी चाँदनी (को०)। ५. माड नामक वृक्ष (को०)।

विताननाⓤ†—क्रि० स० [स० वितान] १ शामियाना आदि तानना। २. कोई चीज तानना। उ०—मनी हीन छीन फनी, मीन बारि सो बिहीन ह्वै कै मलीन मति दीनता वितानई।—रसकुसुमाकर (शब्द०)।

वितानमूल—सज्ञा पु० [स०] खस। उशीर।

वितानमूलक—सज्ञा पु० [स०] उशीर। गाडर। खस।

वितामस[1]—सज्ञा पुं० [स०] प्रकाश। उजाला।

वितामस[2]—वि० १ जिसमें तमोगुण न हो। २ अधकार रहित।

वितार—सज्ञा पु० [स०] १. वृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार का केतु या पुच्छल तारा। २ वह रात्रि जिसमे तारे न हो।

वितारक—सज्ञा पु० [स०] विधारा नामक जडी।

वितालि—वि० [स०] १ अशुद्ध (ताल)। २ (सगीत मे) तालहीन [को०]।

वितिक्रमⓤ—सज्ञा पुं० [स० व्यतिक्रम] क्रम का भग होना। व्यतिक्रम। गडबडी। उ०—प्रीति परीक्षा तिहन की वैर वितिक्रम जानि।—तुलसी (शब्द०)।

वितिमिर—वि० [स०] अधकाररहित [को०]।

वितिलक—वि० [स०] साप्रदायिक तिलक से हीन ललाटवाला [को०]।

वितिहोतर—सज्ञा पुं० [स० वितिहोतृ] अग्नि। (डिं०)।

वितीतⓤ†—वि० [स० व्यतीत] दे० 'व्यतीत'। उ०—आम मजरी सग सनेह सो कछु दिन करत वितीत।—स० शा० (शब्द०)।

वितीपात—सज्ञा पु० [स० व्यतीपात] एक योग। दे० 'व्यतीपात'।

वितीपाती—सज्ञा पुं० [स० व्यतीपात+हिं० ई (प्रत्य०)] वह जो बहुत अधिक उपद्रव करता हो। पाजी। शरारती (लडका)।

वितीर्ण[1]—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वितरण'।

वितीर्ण[2]—वि० दे० 'उत्तीर्ण'।

वितुड—सज्ञा पुं० [स० वि०+तुण्ड] हाथी। उ०—(क) जादो पुड के वितुड चित्र तुड झुड झुंड मुंड धरे कुड सुंड कुडल करे करे। —गोपाल (शब्द०)। (ख) तहँ वसिष्ठ आदिक मुनिराई। चढे वितुडन आनँद छाई।—रघुराज (शब्द०)।

वितुⓤ†—सज्ञा पुं० [स० वित्त] धन। सपत्ति। उ०—दै चितु कै हित लै सब छबि वितु विधि निज हाथ सँवारे।—तुलसी (शब्द०)।

वितुड—सज्ञा पुं० [स०] नीला थोथा। तूतिया।

वितुद—सज्ञा पुं० [स०] वैदिक साहित्य के अनुसार एक प्रकार की भूतयोनि।

वितुन्न[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ शिग्रियारी या सुसना नामक साग। २ सेवार।

वितुन्न[2]—वि० छिन्न। चीरा या काटा हुआ [को०]।

वितुन्नक—सज्ञा पुं० [स०] १ धनिया। २ तूतिया। ३ कैवर्तमुस्तक। ४ भुइँ आँवला। ५ कान का छेद जिसमे आभूषण पहनते है (को०)।

वितुन्नका—सज्ञा स्त्री० [स०] भुइँ आँवला।

वितुन्नभूता—सज्ञा स्त्री० [स०] भुइँआँवला।

वितुन्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] भुइँआँवला।

वितुन्निका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वितुन्ना'।

वितुप—वि० [स०] तुपहीन। तुषरहित। जिसका छिलका निकाल लिया गया हो [को०]।

वितुष्ट—वि० [स०] जो सतुष्ट न हो। असतुष्ट।

वितृट्—वि० [स० वितृष्] तृषारहित। जिसे प्यास न हो [को०]।

वितृण—सज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ तृण या घास आदि न होती हो।

वितृतीय—वि० [स०] अंतर देकर होनेवाला। जैसे, ज्वर (को०)।

वितृप्त—वि० [सं०] १ जो तृप्त या संतुष्ट न हुआ हो। २ जो पूर्ण संतुष्ट हो (को०)।

वितृप्तक—वि० [सं०] दे० 'वितृप्त' (को०)।

वितृप्तता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वितृप्त या असंतुष्ट होने का भाव।

वितृष—संज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न रह गई हो। निस्पृह। उदासीन। २. वह जिसे तृषा न हो (को०)।

वितृष्ण—वि० [स०] इच्छा या कामनारहित। तृष्णारहित (को०)।

वितृष्णा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ तृष्णा का अभाव। तृष्णा का न होना। विरक्ति। २ संतुष्टि (को०)। ४ प्रबल कामना। तीव्र इच्छा (को०)।

वितोय—वि० [स०] निर्जल। जलविहीन (को०)।

वित्त'—संज्ञा पुं० [स०] १ धन। संपत्ति। उ०—पर हुई गति और ही नृप चित्त की। सोच कर घटना वणिक के वित्त की।—शकु०, पृ० ४०। २ प्राप्त वस्तु (को०)। ३ अधिकार (को०)। शक्ति (को०)। ५ सोना (को०)। ६ कुंडली के जन्मलग्न का दूसरा स्थान (को०)।

वित्त'—वि० १ सोचा या विचारा हुआ। २ जाना या समझा हुआ। ३ मिला या पाया हुआ। ४ विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। ५ परीक्षित (को०)।

वित्तक(पु)'—संज्ञा पुं० [स० वृत्त+क (अल्पार्थक प्रत्य०)] चरित्र। वृत्तक। आचरण। बात। उ०—(क) जिहि निसि सो वर वित्तक वित्ती। ज्यो राजन कंमास सु हत्ती।—पृ० रा०, ५७,११६। (ख) अव्वुअ पति पामार पह, लिय गिर गुज्जर राइ। ता पछ वित्तक वित्त यौ, कह्यौ चंद वरदाइ।—पृ० रा०, १२।१०६।

वित्तक'—वि० [स०] विशेष प्रसिद्ध (को०)।

वित्तकाम—वि० [स०] धन संपत्ति की कामना रखनेवाला (को०)।

वित्तकोश—संज्ञा पु० [स०] रुपए पैसे आदि रखने की थैली।

वित्तगोप्ता—संज्ञा पुं० [स० वित्तगोप्तृ] कुबेर के भंडारी का नाम।

वित्ताजानि,वित्ताजाय—वि० [सं०] विवाहित (को०)।

वित्तद—वि० [स०] दानी। दाता (को०)।

वित्तदा—संज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

वित्तनाथ—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर का एक नाम।

वित्तप—संज्ञा पु० [स०] १. वह जो धन की रक्षा करता हो। भंडारी। २ कुबेर का एक नाम।

वित्तपति—संज्ञा पुं० [स०] कुबेर का एक नाम। उ०— लज्यो वित्तपति चित्त महँ, कहि धनि अनुज हमार।—रघुराज० (शब्द०)।

वित्तपाल—संज्ञा पु० [स०] कुबेर का एक नाम।

वित्तपुरी—संज्ञा स्त्री० [स०] कुबेर की पुरी, अलका।

वित्तपेटा,वित्तपेटी—संज्ञा स्त्री० [स०] रुपया पैसा रखने की थैली। विसकोश (को०)।

वित्तमात्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन। संपत्ति (को०)।

वित्तरक्षी—संज्ञा पुं० [स० वित्तरक्षिन्] वह जिसके पास वित्त रक्षित हो। संपन्न व्यक्ति। धनी व्यक्ति (को०)।

वित्तराग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वीतराग] दे० 'वीतराग'। उ०—कपडिया वीर कहा कहौ वित्ति। मन वित्तराग लै मुक्ति जित्ति—पृ० रा०, ६।८३।

वित्तवान्—संज्ञा वि० [स० वित्तवत्] धनी (को०)।

वित्तविवर्धी—संज्ञा पु० [सं० वित्तविवर्धिन्] १. वह जो धन की अभिवृद्धि करता हो। २ ब्याज। सूद (को०)।

वित्तशाठ्य—संज्ञा पुं० [स०] लेनदेन में धोखाधड़ी (को०)।

वित्तहीन—संज्ञा पु० [सं०] धनहीन। दरिद्र। गरीब। उ०—सब परिवार मेरो याही लागे राजाजू हौं दीन वित्तहीन कैसे दूसरी गढ़ाइहौं।—तुलसी (शब्द०)।

वित्तागम—संज्ञा पुं० [स०] १ धन की प्राप्ति या आगम। २ धन की प्राप्ति का साधन (को०)।

वित्ताढ्य—वि० [सं०] बहुत धनी (को०)।

वित्तान(पु)—संज्ञा पुं० [सं० वितान] दे० 'वितान'। उ०—सिंघूजा रचयो भक्ति वित्तान।—भक्तमाल (श्री०), पृ० ३८१।

वित्तापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन की प्राप्ति।

वित्तायन—वि० [स०] धन लानेवाला (को०)।

वित्तार्थ—संज्ञा पुं० [स०] चतुर आदमी। निपुण व्यक्ति (को०)।

वित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विचार। २ लाभ। प्राप्ति। ३ ज्ञान। ४ संभावना।

वित्तीय—वि० [सं०] वित्त संबंधी। वित्त की व्यवस्था के अनुसार। जैसे, वित्तीय वर्ष।

वित्तेश—संज्ञा पुं० [सं०] कुबेर।

वित्तेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] कुबेर।

वित्तेहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वित्तैषणा' (को०)।

वित्तैषणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] धन का लोभ। संपत्ति पाने की लालसा। उ०—लोकैषणा, वित्तैषणा तथा दारैषणा की यथोचित संतृप्ति. भौतिक तथा आध्यात्मिक सुख एवं साफल्य की प्राप्ति समीक्षा शक्ति के ऊपर ही निर्भर है।—स० दर्शन, पृ० ६६।

वित्थार(पु)—संज्ञा पुं० [स० विस्तार, विस्थार] प्रसार। विस्तार। फैलाव।

वित्रप—वि० [स०] निर्लज्ज। बेहया। बेशरम।

वित्रस्त—वि० [स०] विशेष रूप से त्रस्त। बहुत डरा हुआ। उ०—यो तुम अपनी विजय घोषणा कर सकते हो क्योंकि मेरी गजवाहिनी तुम्हारे अश्वारोहियो से वित्रस्त हो चुकी है।—राज्यश्री, पृ० ५।

वित्रास—संज्ञा पुं० [सं०] आतंक। भय। डर। खौफ।

वित्रासन'—संज्ञा पु० [स०] भयभीत करना। डराना (को०)।

विश्रामन[2]—वि० भयानक। डरावना [को०]।

विश्रामित—वि० [सं०] किसी के द्वारा भयभीत कराया हुआ। डराया हुआ [को०]।

विश्रिभलग्नक—संज्ञा पुं० [सं०] क्षितिज के ऊपर रविमार्ग का सबसे ऊँचा बिंदु [को०]।

विश्वत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वेत्ता होने का भाव।

विश्वसन—संज्ञा पुं० [सं०] वेत्र। बेंट।

विश्वक—संज्ञा पुं० [हिं० विथकना ?] पवन।

विश्वकना†—क्रि० अ० [हिं० थकना] १ थकना। शिथिल होना। उ०—सुनि किन्नर गंधर्व सराहत विथके हैं विबुध विमान।—तुलसी (शब्द०)। २ मोहित या चकित होकर चुप हो जाना। उ०—तुलसी सुनि ग्रामवधू विथकी पुनकी तन धौ चले लोचन चर्व।—तुलसी (शब्द०)।

विश्वकित—वि० [हिं० विथकना] १ थका हुआ। शिथिल। उ०—तुलसी भइ मति विथकित करि अनुमान। राम लषन के रूप न देषेउ आन।—तुलसी (शब्द०)। २ जो आश्चर्य या मोह आदि के कारण कुछ न बोल सकता हो। उ०—गोपीजन विथकित ह्वै चितवत सब ठाढी।—सूर (शब्द०)।

विश्वराना—क्रि० स० [सं० विस्तरण, प्रा० विच्चरण] १. फैलाना। २. इधर उधर करना।

विश्वा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्यथा] १ व्यथा। पीडा। तकलीफ। उ०—(क) तनकहु विथा नहीं मन मोरो। पर उपकार न तनु प्रिय जान्यो।—रघुराज (शब्द०)। (ख) भँवर जानि पै कमल पिरीती। जेहि मंह विथा प्रेम गै बीती।—जायसी (शब्द०)। (ग) बूटी जटी मनो बहुविधि की। लीनी विथा निवारन सिधि की।—गोपाल (शब्द०)। २ रोग। बीमारी। उ०—फेन तजै मुख तै, पटकै कर, जो न कियो जू विथा निरवारन।—रस कुसुमाकर (शब्द०)।

विश्वारना—क्रि० स० [सं० विस्तारण, प्रा० वित्थारण] फैलाना। छितराना। उ०—श्री रघुवीर के बाक बिलास तें धर्म रच्यो त्रैलोक्य विथार्यो।—हृदयराम (शब्द०)।

विश्वित—वि० [सं० व्यथित] जिसे किसी प्रकार की व्यथा हो। व्यथायुक्त। दुखी।

विश्वुर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चोर। २ राक्षस। ३ सूप। नाज।

विश्वुर[2]—वि० १ अल्प। थोडा। कम। २ व्यथित। दुखित। ३. धनधान्यरहित। जो ठीक न हो [को०]। ४. विचलित। स्खलित [को०]।

विश्वुरना—क्रि० स० [सं० विस्तरण प्रा० वि थरण] फैलना। छितराना। इधर उधर होना। फटना। उ०—पर धन को अकाल ही के मेघ तो ये दुख में प्रवाह से विथुर गए आकाश सुन गया।—स्वर्गा०, पृ० ७।

विश्वुरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका स्वामी से वियोग हो। विरहिणी। २. विधवा [को०]।

विश्वा—वि० [सं० वृथा या मिथ्या] दे० 'वृथा'। उ०—विश्वा जीवन मनुष्य को, जो धन नहीं पास।—पृ० रा०, २१।८।

विश्व्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोली।

विदंड—संज्ञा पुं० [सं० विदंड] अंकुश। बर्छा।

विदंत[1]—वि० [सं० विदंत] (हाथी) जिसका दाँत कटा हो [को०]।

विदंत[2]—संज्ञा पुं० [सं० विद् (=जानना)] विद्वान्। ज्ञाता।

विदंता—संज्ञा स्त्री० [सं० विदन्ता] एक प्रकार की गोली।

विदंश—संज्ञा पुं० [सं०] १. ऐसा चरपरा साग जिसके खाने से प्यास लगती है। २ दंशन [को०]।

विद—संज्ञा पुं० [सं०] १. तिलपुष्पी। तिनपा। २ जाननेवाला। जाननेवाला। ३ पंडित। विद्वान्।

विदत्त—वि० [सं०] जो दिया गया हो। वितरित।

विदकना—क्रि० अ० [स० विदरण या देश०] भड़कना। बिदकना।

उ०—एक बूँद विष सात बूँद मधु का दूषित कर देता, अपनी परछाईं न भी तो मानव आज विदकता।—वरदा०, पृ० ८१।

विदग्ध[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. रसिक पुरुष। रसज्ञ। नागर। २ पंडित विद्वान्। ३. चतुर। चालाक। होशियार। कलाभिज्ञ। ४ रूपा नामक घास।

विदग्ध[2]—वि० १ जला हुआ। दग्ध। २. जिसका पाक हुआ हो। पका या पचा हुआ [को०]। ३. नष्ट। खत्म गया [को०]। ४ जो जमा या पचा न हो [को०]। ५ सुंदर [को०]। ६. भद्रसामुद्र। जैसे, पोशाक। ७. परिपक्व। जैसे, युक्ति [को०]। ८. तिक्त। पीला [को०]।

यौ०—विदग्ध अजीर्ण = दे० 'विदग्धाजीर्ण'। विदग्ध चरिकुल्या=पेट में अम्ल का घुमडना और पेट का फूलना। विदग्ध परिषद्=रसिकों या विदग्ध व्यक्तियों की सभा। विदग्धवचन=वाक्चतुर।

विदग्धक—संज्ञा पुं० [सं०] जलता हुआ माल [को०]।

विदग्धता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदग्ध होने का भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २. चातुर्य। चातुरी [को०]। ३. रसिकता [को०]।

विदग्धत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विदग्धता'।

विदग्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह परकीया नायिका जो हावभावों के साथ परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे।

विशेष—यह दो प्रकार की मानी गई है—वचनविदग्धा और क्रियाविदग्धा। जो स्त्री अपनी बातचीत के कौशल से परपुरुष पर अपनी कामासक्ति प्रकट करती है, वह वचनविदग्धा कहलाती है; और जो किसी प्रकार के हावभाव से अपना भाव प्रकट करती है, उसे क्रियाविदग्धा कहते हैं।

विदग्धाजीर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का अजीर्ण रोग जो पित्त के प्रकोप से हुआ करता है और जिसमें खट्टी डकार, मूर्छा, दाह और पेट में दर्द हुआ करता है।

विदग्धदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] आँख का एक प्रकार का रोग जो बहुत अधिक रोशनी लगने से हुआ करता है और जिसमें आँख पीली पड़ जाती है।

विदग्धालाप—वि० [स०] बात करने मे कुशल । वाक्पटु [को०] ।

विदत्—वि० [स०] १ जानकार । ज्ञाता । २ बुद्धिमान् [को०] ।

विदथ—सज्ञा पु० [स०] १ यागी । २ यज्ञ । ३ वैदिक काल के एक राजा का नाम । ४ विद्वान् । जानकार [को०] । ५. धार्मिक, सामरिक अथवा सामाजिक सघटन । ६ मकान । ७ ज्ञान । प्रज्ञा । बुद्धि । उ०—ऋग्वेद मे एक तीसरा शब्द विदथ भी अनेक बार आया है जिसका अर्थ कहीं तो धार्मिक, कही मकान, कही यज्ञ और कही बुद्धि इत्यादि है ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७२ ।

विदथी—सज्ञा पु० [स० विदथिन्] एक वैदिक ऋषि का नाम ।

विददक्षु—वि० [स० विददड्क्षु] डँसने के लिये तैयार या तत्पर [को०] ।

विदमान†[1]—वि० [स० विद्यमान] जो विद्यमान हो । उ०—(क) फारघा नयन काग नाह छाँड्यो सुरपति के विदमान ।—सूर (शब्द०) । (ख) ताको बधन कियो इहि रघुपति को देखत विदमान ।—सूर (शब्द०) ।

विदमान†[2]—सज्ञा पुं० [स० विद्वान्] पडित । ज्ञाता । विद्वान् ।

विदर'—सज्ञा पु० [स०] १ ककारी । विश्वसारक । २. विदारण करना । फाडना । ३ रध्र । विवर । दरार । उ०—प्रगति मग खुल्ले विदर ।—पृ० रा०, ५८ । २३५ ।

विदर[2]—वि० [स० विदल, प्रा० विदर] दे० 'विदल' ।

विदर†[3]—सज्ञा पु० [देश०] दासीपुत्र । उ०—विदर पिदर जाणै नही, मादर विदरां मूल ।—बाकी ग्र०, भा० २, पृ० ८५ ।

विदरण—सज्ञा पुं० [स०] १. विदारण करना । फाडना । २ विद्रधि नामक रोग ।

विदरना(पु)'—क्रि० अ० [स० विदरण] विदीर्ण होना । फटना । उ०—(क) विदरत नाहि बज्र की छाती हार बियोग क्यो साहए ।—सूर (शब्द०) ।

विदरना'—क्रि० स० विदीर्ण करना । फाडना । उ०—महेश यही तुमका निदरयाजू । अरा सम पत्रान ह्वै विदरयाजू ।—गुमान (शब्द०) ।

विदर्भ—सज्ञा पु० [सं०] १ आधुनिक बरार प्रदेश का प्राचीन नाम । २ भागवत के अनुसार एक राजा का नाम । कहते हैं, इसी राजा के नाम पर विदर्भ देश का नाम पडा था । ३ पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम । ४. दातो मे चोट लगने के कारण मसूडा फूलना या दातो का हिलना । ५. सूखा भूमि या मरुभूमि (को०) । ६. विदर्भ देश के निवासी (को०) ।

विदर्भजा—सज्ञा स्त्री० [स०] अगस्त्य ऋषि की स्त्री लोपामुद्रा का एक नाम । २ दमयती का एक नाम जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी । ३ रुक्मिणी का एक नाम ।

विदर्भतनया—सज्ञा स्त्री० [स०] दमयती [को०] ।

विदर्भराज—सज्ञा पु० [स०] दमयती के पिता राजा भीष्म या भीष्मक जो विदर्भ के राजा थे ।

विदर्भसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] दमयती [को०] ।

विदर्भी—सज्ञा पुं० [स०] १ विदर्भ की राजधानी । कुडिनपुर । २ एक नदी । ३ चाक्षुष मनु की पत्नी [को०] ।

विदर्भीविपति—सज्ञा पुं० [सं०] विदर्भ नरेश । राजा भीष्मक [को०] ।

विदर्भि—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

विदर्य—सज्ञा पुं० [स०] बिना फनवाला साँप ।

विदर्शना—सज्ञा स्त्री० [स०] विवेक । ज्ञान [को०] ।

विदल'—सज्ञा पुं० [स०] १. लाल रग का सोना । २ सोना । स्वर्ण । ३. अनार का दाना या कल्क । ४ बाँस का बना हुआ दौरा या और कोई पात्र । ५ चना । ६. पीठी । ७. पहाडी आबनूस (को०) । ८ विभाग । पार्थक्य (को०) । ९ टुकडा (को०) । १०. बेतस (को०) । ११ टहना (को०) । १२ दाल (को०) ।

विदल[2]—वि० विकसित । खिला हुआ । २ जिसमे दल न हो । बिना दल का ।

विदलन—सज्ञा पु० [स०] १ मलने, दलने या दबाने आदि की क्रिया । २. टुकडे टुकडे या इधर उधर करना । फाडना ।

विदलना(पु)—क्रि० स० [सं० विदलन] दलित करना । नष्ट करना । उ०—तैं रन बेहाल केहरि के बिदले अरि कुजर छैल छवा से । —तुलसी (शब्द०) ।

विदला—सज्ञा स्त्री० [स०] त्रिपुत या निसोथ नाम की एक प्रकार की लता । विशेष दे० 'निसोथ' [को०] ।

विदलान्न—सज्ञा पुं० [स०] १. पकाई हुई दाल । २. वह अन्न जिसमे दो दल हो । जैसे—चना, उडद, मूँग, अरहर, मसूर आदि ।

विदलित—वि० [स०] १. जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो । २ रौंदा हुआ । मला हुआ । ३. टुकडे टुकडे किया हुआ । ४ फाडा हुआ ।

विदलिनी—वि० स्त्री० [स० विदल+इनि ?] विदीर्ण करनेवाली । फाडनेवाली । उ०—किंतु तर्जनी तेरी हा, उनके मस्तक तैयार, पथ दर्शक अमरत्व और हो नभ विदलनी पुकार ।—हिम०, पृ० ५२ ।

विदश—वि० [स०] (वस्त्र) जिसमे किनारी या पाढ न हो । जो बिना किनारे के हो [को०] ।

विदस्त—वि० [स०] कृश । दुर्बल । क्षीण [को०] ।

विदा'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बुद्धि । अक्ल । समझ । २. ज्ञान ।

विदा[2]—सज्ञा स्त्री० [स० विदाय, मि० अ० विदाअ] १. प्रस्थान । रवाना होना । विदाई । जैसे, मैके से बहू । २. कहीं से चलने की आज्ञा या अनुमति ।

क्रि० प्र०—करना ।—माँगना ।—होना ।

विदाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. विदा होने की क्रिया या भाव । रवगती । प्रस्थान । २ विदा होने की आज्ञा या अनुमति । ३. वह धन आदि जो विदा होने के समय किसी को दिया जाय ।

क्रि० प्र०—देना ।—पाना ।—मिलना ।

विदान—सज्ञा पु० [स०] खड खंड करने की क्रिया [को०] ।

विदाम‡—सज्ञा पु० [स० वादाम से लक्ष्यार्थ] कौडी । छदाम । उ०—लेता नाम विदाम न लागै, विगत जिका दह व्यापै ।—रघु० रू०, पृ० २७ ।

विदाय—सज्ञा पु० [स०] १ विसर्जन । २. प्रस्थान । ३. जाने की आज्ञा या अनुमति । विदा । उ०—ता पाछे श्री गुसाई जी विजय करिवे को विदाय भए सो चले ।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ८१ ।

क्रि० प्र०—माँगना ।—लेना ।

४ दान । वितरण । ५ विभाग । विभाजन (को०) ।

विदायी[1]—सज्ञा पु० [स० विदायिन्] १. वह जो ठीक तरह से चलाता या रखता हो । नियामक । २ दान करनेवाला ।

विदायी[2]—सज्ञा स्त्री० [हिं० विदा + यी (ई) प्रत्य०] दे० 'विदाई' ।

विदार—सज्ञा पु० [स०] १ युद्ध । समर । २ दे० 'विदारण' । ३ प्लावन । पानी का ऊपर से बहना । जलोच्छ्वास (को०) ।

विदारक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वह वृक्ष या पर्वत आदि जो जल के बीच मे हो । २. छोटी नदियो के तल मे बनाया हुआ गड्ढा, जिसमे नदी के सूखने पर भी पानी बचा रहता है । ३. नौसादर ।

विदारक[2]—वि० विदारण करनेवाला । फाड डालनेवाला ।

विदारण—सज्ञा पु० [स०] १. बीच मे से अलग करके दो या अधिक टुकडे करना । फाडना । २. मार डालना । हत्या करना । ३ युद्ध । समर । लडाई । ४ कनेर । ५ खपरिया । ६. नौसादर । ७. जैनो के अनुसार दूसरो के पापो या दोषो की घोषणा करना । ८ पेड पौधे आदि काटकर साफ करना (को०) । ९. खोलना । जैसे, मुख विदारण (को०) । १० निवारण । छोड देना । रद्द करना (को०) । ११ रौंदना (को०) । १२. कष्ट देना । तकलीफ पहुँचाना । १३ दे० 'विदारक'—१ ।

विदारणा—सज्ञा स्त्री० [स०] लडाई । सग्राम [को०] ।

विदारनाए—क्रि० स० [हिं० विदरना] फाडना । उ०—(क) जनु उडगन विधु मिलन को चले तम विदारि करि वाट ।—तुलसी (शब्द०) । (ख) निज जाँघन पर ताहि पछार्‌यो । नखन साथ तब उदर विदार्‌यो ।—केशव (शब्द०) ।

विदारि—सज्ञा स्त्री० [स०] शालपर्णी । विदारी [को०] ।

विदारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार की डाकिनी जो घर के बाहर अग्निकोण मे रहती है । २ गंभारी वृक्ष । ३ विदारी कद । ४ शालपर्णी । ५ कडवी तूँबी । ६ विदारीकद के समान गोल और कडी जंघा-मूल की सूजन या पिटिका ।—माधव०, पृ० १८७ ।

विदारिगधा—सज्ञा स्त्री० [स० विदारिगन्धा] शालपर्णी ।

विदारिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] काश्मीरी । गभारी ।

विदारित—वि० [स०] विदीर्ण किया हुआ । फाडा हुआ ।

विदारी[1]—वि० [स० विदारिन्] फाडनेवाला । विदारण करनेवाला ।

विदारी[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शालपर्णी । २ भुइँ कुम्हडा । ३. भावप्रकाश के अनुसार अठारह प्रकार के कंठरोगो मे से एक प्रकार का कठरोग ।

विशेष—यह रोग पित्त के प्रकुपित होने से होता है । इसमे गले और मुँह पर लाली आ जाती है, जलन होती है और बदबूदार मास के टुकडे कट कटकर गिरने लगते है । कहते है, जिस करवट कोई अधिक सोता है—उसी ओर यह रोग होता है ।

४ एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे बगल मे फुसी निकलता है । ५. कान का एक रोग । ६ वाराहीकद । ७ क्षीर काकोली । ८ वाग्भट्ट के अनुसार मेढासीगी, सफेद पुनर्नवा, देवदार, अनतमूल, वृहती आदि ओषधियो का एक गण ।

विदारीकद—सज्ञा पुं० [स० विदारीकन्द] भुइँकुम्हडा ।

विदारीगधा—सज्ञा स्त्री० [स० विदारीगन्धा] १ शालपर्णी । २ सुश्रुत के अनुसार शालपर्णी, भुइँकुम्हडा, गोखरू, शतमूली, अनत-मूल, जीवती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि ओषधियो का एक गण ।

विशेष—इस गण की सब ओषधियाँ वायु तथा पित्त की नाशक, और शोथ, गुल्म, ऊर्ध्वश्वास तथा खासी आदि रोगो मे हितकर मानी जाती हैं ।

विदारीगधिका—सज्ञा स्त्री० [स० विदारीगन्धिका] दे० 'विदारीगधा' [को०] ।

विदारु—सज्ञा पु० [स०] कृकलास । ककचपाद । गिरगिट । गृहगोधा ।

विदाह—सज्ञा पु० [स०] १ पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाली जलन । २. हाथ पैर मे किसी कारण से होनेवाली जलन । ३ आँतो मे अम्ल बनने की क्रिया (को०) ।

विदाहक—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो विदाह उत्पन्न करता हो । २ दे० 'विदाह' ।

विदाही—सज्ञा पु० [स० विदाहिन्] वह पदार्थ जिससे जलन पैदा हो । दाह उत्पन्न करनेवाला । तीक्ष्ण । चरपरा उ०—विदाही, अर्थात् जो चीज खाने से छाती मे जलन होती है, और जितने प्रकार के रूखे अन्न है, जैसे बाजरा आदि, इनको न खाय ।

विदिक्[1]—सज्ञा स्त्री० [स० विदिश्] दिक्कोण । विदिश् [को०] ।

विदिक[2]—वि० भिन्न दिशा मे जानेवाला [को०] ।

विदिक्चग—सज्ञा पुं० [स० विदिक्चङ्ग] एक प्रकार का पक्षी जो पीला होता है [को०] ।

विदित[1]—वि० [स०] १. जाना हुआ । अवगत । ज्ञात । सूचित । २. विश्रुत । विख्यात (को०) । ३. प्रतिज्ञात । जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो । इकरार किया हुआ (को०) ।

विदित[2]—सज्ञा पुं० १ कवि । विद्वान् । विद्याव्यसनी । २ सूचना । परिज्ञान (को०) । ३. प्रसिद्धि । ख्याति (को०) । ५. अवाप्ति । लाभ (को०) ।

विदिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] जैनों की एक देवी।

विदितात्मा—संज्ञा पुं० [सं० विदितात्मन्] १ प्रसिद्ध या ख्यात व्यक्ति। २ आत्मज्ञानी पुरुष [को०]।

विदिथ—संज्ञा पु० [सं०] १ पंडित। विद्वान्। २ योगमार्गी। योगी। दे० 'विदथ'।

विदिश्—संज्ञा स्त्री० [सं० विदिश्] दे० 'विदिक्'। उ०— धायो धर शर शैल विदिश दिशि चक्रहूँ चाहि लयो।—सूर (शब्द०)।

विदिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २ पुराणानुसार पारियात्र पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम। ३ दे० 'विदिश्'।

विदिश—संज्ञा स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच का कोना। जैसे,—अग्नि या ईशान आदि।

विदीधिति—वि० [सं०] किरणहीन। निष्प्रभ [को०]।

विदीपक—संज्ञा पु० [सं०] दीपक। दीआ।

विदीपित—वि० [सं०] १ प्रज्वलित। २ प्रकाशित। दीपित। ३ धूपित। (को०)।

विदीप्त—वि० [सं०] प्रदीप्त। प्रभावान्। चमकीला [को०]।

विदीर्ण—वि० [सं०] १ बीच से फाडा या विदारण किया हुआ। उ०—हुआ विदीर्ण जहाँ तहाँ श्वेत आवरण जीर्ण। व्योम शीर्ण कंचुक धरे विषधर सा विस्तीर्ण।—साकेत, पृ० २७८। २ टूटा हुआ। भग्न। ३. मार डाला हुआ। निहत। ४ फैला या खोला हुआ (को०)।

यौ०—विदीर्णमुख=जिसका मुँह खुला हो। विदीर्णहृदय=छिन्नहृदय। भग्नहृदय।

विदु—संज्ञा पुं० [सं०] १ हाथी के मस्तक के बीच का भाग। २. घोडे के कान के नीचे का भाग। ३ दरियाई घोडा। जल-हस्ती (को०)।

विदुत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो सब बातें जानता हो। २. विष्णु का एक नाम

विदुर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो जानता हो। जानकर। वेत्ता। ज्ञाता। २ पंडित। ज्ञानी। ३ कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री।

विशेष—यह राजनीति, धर्मनीति और अर्थनीति में बहुत निपुण थे और धर्म के अवतार माने जाते हैं। महाभारत में कथा है कि जब सत्यवती ने अपनी पुत्रवधू अंबिका को दूसरी बार कृष्णद्वैपायन के साथ नियोग करने की आज्ञा दी, तब उसने कृष्णद्वैपायन की आकृति आदि से भयभीत होकर एक सुंदरी दासी को अपने कपडे आदि पहनाकर उनके पास भेज दिया, जिससे विदुर का जन्म हुआ। ये बहुत बडे पंडित, बुद्धिमान्, शांत और दूरदर्शी थे, और पांडवों के बहुत बड़े पक्षपाती थे। पहले ये राजा पांडु के मंत्री थे, और इसी लिये पीछे से अनेक अवसरों पर इन्होंने पांडवों की भारी भारी विपत्तियों में रक्षा की थी। जतुगृह के जलने के समय भी इन्हीं के परामर्श से पांडवों की जान बची थी। ये धृतराष्ट्र के छोटे भाई और मंत्री भी थे। जिस समय दुर्योधन के बहुत कहने पर धृतराष्ट्र ने इनसे जूए के संबंध में सम्मति माँगी थी उस समय इन्होंने उन्हें बहुत रोका और समझाया था। पांडवों के वन जाने पर ये दुर्योधन के पास रहते थे। महाभारत का युद्ध आरंभ होने से पहले इन्होंने धृतराष्ट्र को रात भर अनेक प्रकार के अच्छे अच्छे उपदेश देकर युद्ध रुकवाना चाहा था, पर इसमें भी इन्हें सफलता नहीं हुई। युद्ध में इन्होंने पांडवों का पक्ष ग्रहण किया था। महाभारत के युद्ध के उपरांत जब पांडवों का राज्य हुआ, तब भी ये बहुत दिनों तक मंत्री के पद पर थे। पर पीछे से वन में चले गए। वहाँ राजा युधिष्ठिर से एक बार इनकी भेंट हुई थी। वहीं बहुत दिनों तक घोर तपस्या करने के उपरांत इनका परलोकवास हुआ था। नीति की प्रसिद्ध पुस्तक 'विदुरनीति' या 'विदुर प्रजागर' इन्हीं की रचित मानी जाती है (जो महाभारत के पाँचवें पर्व में ३३ वें अध्याय से ४०वें तक है)।

विदुर²—वि० चतुर। जानकार। कुशल।

विदुल¹—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेंत। २. जलबेंत। ३. बोल या गवरस नामक गंधद्रव्य। ४ अमलबेत।

विदुल(पु)²—वि० [प्रा० विदुर] धीर। उ०—झर करत विदुल भर लोह भार।—पृ० रा० ५६। ८७।

विदुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक प्रकार का घूहर जिसे सातला कहते हैं। २ विट् खदिर। ३ महाभारत में वर्णित एक स्त्री जिसके पुत्र का नाम संजय था। युद्ध में पराजित होकर घर में युद्धविरत पडे हुए पुत्र का उद्बोधन कर इसने उसे युद्ध में भेजा था (को०)।

विदुष—संज्ञा पु० [सं० विद्वस] [स्त्री० विदुषी] विद्वान्। पंडित। उ०—(क) निज निज देह का सप्रेम जोग छेम मई मुदित असीस विप्र विदुषनि दई है।—तुलसी (शब्द०)। (ख) विदुष जनन विराट प्रभु दीखे अति मन में सुख पायो।—सूर (शब्द०)।

विदुषी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्या पढी हुई स्त्री। विद्वान् स्त्री। उ०—(क) जैसे लडके ब्रह्मचर्य सेवन से पूर्ण विद्या और सुशिक्षा को प्राप्त होके युवति, विदुषी, अपने अनुकूल प्रिय, सदृश स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं।—दयानंद (शब्द०)। (ख) जहाँ पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करनेवाली हो, वहाँ भेज दें।—दयानंद (शब्द०)।

विदुष्कृत—वि० [सं०] निष्पाप [को०]।

विदू—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'विदु' [को०]।

विदून—वि० [सं०] पीड़ित [को०]।

विदूर¹—वि० [सं०] जो बहुत दूर हो।

विदूर²—संज्ञा पुं० १. बहुत दूर का प्रदेश। २ एक देश का नाम। २ एक पर्वत का नाम। कहते हैं, वैदूर्यमणि इसी पर्वत में मिलती है। ४ दे० 'वैदूर्य'। (मणि)। उ०—वेदी लसत विदूर फटिकमय सलिल तीर लस पाँती।—श्यामा०, पृ० ११८। ५. कुरु का एक पुत्र (को०)।

विदूरग—वि० [सं०] दूर तक फैला हुआ। विस्तृत। जो दूर तक फैला हुआ हो। (को०)।

विदूरज—सज्ञा पु० [स०] विदूर पर्वत से उत्पन्न, वैदूर्यमणि।

विदूरजात—सज्ञा पु० [स०] वैदूर्यमणि। विदूरज (को०)।

विदूरत्व—सज्ञा पु० [स०] विदूर होने का भाव। बहुत अधिक दूर होना।

विदूरथ—सज्ञा पुं० [सं०] १ कुरुक्षेत्र का एक नाम। २ एक ऋषि का नाम (को०)। ३ एक वृष्णिवंशीय राजा जिनके पुत्र का नाम शूर था (को०)। ४. पुराणानुसार एकरा जा का नाम। ५ कुरु का एक पुत्र, इसकी माता का नाम सुभागी था (को०)।

विदूरभूधर—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विदूराद्रि' (को०)।

विदूरभूमि—सज्ञा स्त्री० [स०] विदूर नामक देश। कहते हैं, वैदूर्यमणि इसी देश मे होती है।

विदूररत्न—सज्ञा पुं० [स०] वैदूर्यमणि जो अनुश्रुति के अनुसार विदूर पर्वत पर प्राप्त होती है (को०)।

विदूरविगत—सज्ञा पु० [स०] अत्यज।

विदूरित—वि० [स०] [वि० स्त्री० विदूरिता] हटाया हुआ या दूर किया हुआ। उ०—करुण वरुणालया अर्बंध विदूरिता।—वी० श० महा०, पृ० २१६।

विदूराद्रि—सज्ञा पुं० [स०] विदूर पर्वत (को०)।

विदूरोद्भावित—सज्ञा पुं० [स०] विदूर पर्वत पर उत्पन्न होनेवाली, वैदूर्यमणि (को०)।

विदूप—सज्ञा पु० [स० विदूषक] भाँड। विदूषक। उ०—नाचहिं कहुँ विदूप करि जाला। कूजहिं काँख बजावहिं ताला।—सबल (शब्द०)।

विदूषक—सज्ञा पु० [सं०] १ वह जो अधिक विषयी हो। कामुक। २ वह जो तरह तरह की नक्लें आदि करके, वेश भूषा बनाकर अथवा बातचीत करके दूसरो को हँसाता हो। मसखरा।

विशेष—प्राचीन काल मे राजाओ और बडे आदमियो के मनोविनोद के लिये उनके दरबार मे इस प्रकार के मसखरे रहा करते थे जो अनेक प्रकार के कौतुक करके, बेवकूफ बनकर अथवा बातें बनाकर लोगो को हँसाया करते थे। प्राचीन नाटको आदि मे भी इन्हें यथेष्ट स्थान मिला है, क्योकि इनसे सामाजिको का मनोरजन होता है। साहित्यदर्पण के अनुसार विदूषक प्राय अपने कौशल से दो आदमियो मे झगडा भी कराता है, और अपना पेट भरना या स्वार्थ सिद्ध करना खूब जानता है। यह शृगार रस मे सहायक होता है और मानिनी नायिका को मनाने मे बहुत कुशल होता है।

३ चार प्रकार के नायको मे से एक प्रकार का नायक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेलि मे सहायक होता है। ४. वह जो दूसरो की निंदा करता हो। खल। ५. भाँड।

विदूषक²—वि० १. भ्रष्ट, दूषित या गंदा करनेवाला। २ परनिंदक। बदनाम करनेवाला। ३ हँसी करनेवाला। मसखरा (को०)।

विदूषण—सज्ञा पु० [स०] १ किसी पर विशेष रूप से दोष लगाने की क्रिया। ऐब लगाना। परिवाद। २ मलिन या दूषित करना। दुर्वचन। झिडकी (को०)।

विदूषना¹—क्रि० स० [स० विदूषण या हिं० वि०+दुखाना] १ सताना। दु ख देना। उ०—सुनु सठ काल ग्रसित यह देही। जनि तेहि लागि विदूषहि केही।—तुलसी (शब्द०)। २ दोष लगाना। दोषी ठहराना।

विदूषना²—क्रि० अ० दुखी होना। पीडा का अनुभव करना। उ०—तापन सो तपती बिर मे बिन काल वृथा बन माहिं विदूषती।—मन्नालाल (शब्द०)।

विदूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] पाप। अनाचार (को०)।

विदूषित—वि० [स०] १ अपमानित। तिरस्कृत। लाछित। २. दोषपूर्ण बनाया हुआ (को०)।

विदृक—वि० [स०] दे० 'विदृश'।

विदृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सधि। सीवन। २ खोपडी का जोड। उ०—यह शरीर ही द्वारकापुरी है। नौ इद्रिय द्वार और दसवाँ विदृति द्वार ये दस फाटक है।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६४०।

विदृश वि० [स०] जिसे दिखाई न पडे। अधा।

विदेव—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ दे० 'विदेह'।

विदेय—वि० [स०] जो दिया गया हो। देय। देने लायक (को०)।

विदेव¹—सज्ञा पुं० [स०] १ राक्षस। २ यक्ष। ३. अक्षक्रीडा। पासे का खेल।

विदेव²—वि० १ देवरहित। देवताविहीन। देवताओ से विरहित। जैसे, विदेव मदिर, विदेव यज्ञ। २. देवद्रोही। देवो का विद्वेषी (को०)।

विदेवन—सज्ञा पुं० [सं०] अक्षक्रीडा। पासा खेलना (को०)।

विदेश—सज्ञा पुं० [स०] अपने देश को छोडकर दूसरा देश। परदेश। परराष्ट्र।

विदेशग—वि० [स०] परदेश जानेवाला। विदेश जानेवाला (को०)।

यौ०—विदेशग। विदेशगमन=परदेश की यात्रा। विदेशगामी=विदेश जानेवाला। विदेशज=जो विदेश मे उत्पन्न हो। विदेशवास=विदेश मे रहना। विदेशवासी=प्रवासी। विदेश मे रहनेवाला। विदेशस्थ=(१) परदेश मे रहनेवाला। (२) परदेश मे होनेवाला।

विदेशप्रवृत्तिज्ञान—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार परराष्ट्र प्रवृत्तियो का ज्ञान और अनुमान। विदेशी मुआमलो की जानकारी।

विदेशी—वि० [स० विदेशिन्] १ विदेश सबधी। बाहरी। २ परदेशी। दूसरे देश का निवासी।

विदेशीय—वि० [स०] दे० 'विदेशी'।

विदेस†—सज्ञा पु० [स० विदेश] दे० 'विदेश'। उ०—अब तू विदेस का मनमाना मजा लूट।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७।

विदेह[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो शरीर से रहित हो। २ वह जिसकी उत्पत्ति माता पिता से न हो। जैसे,—देवता आदि। ३ ज्ञानी एव देहवाद को अधिक महत्व न देनेवाले राजा जनक का एक नाम। विशेष दे० 'जनक'। ४ राजा निमि का एक नाम। विशेष दे० 'निमि'। ५ प्राचीन मिथिला का एक नाम। ६ इस देश के निवासी।

विदेह[2]—वि० [स०] ज्ञानशून्य। सज्ञारहित बेसुध। अचेत। उ०—(क) मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ विदेह विदेहु विसेखी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) देखि भरत कर सोच सनेहू। भा निषाद तेहि समय विदेहू।—तुलसी (शब्द०)। (ग) कौन ले आई कौने चरन चलाई, कौने वहियाँ गही मा धौं केही री। सूरदास प्रभु देखे सुधि रही नहिं, अति विदेह भई अब मैं बूझनि तोही री।—सूर (शब्द०)। २ मृत (को०)। ३ विरागी। उदासीन (को०)। ४ शरीररहित। कामशून्य।

विदेहक—सज्ञा पुं० [स०] १ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। २ एक वर्ष का नाम (को०)।

विदेहकुमारी—सज्ञा स्त्री० [स०] (राजा जनक की पुत्री) जानकी। सीता। उ०—कहौ धौं तात क्यो जीनि सकल नृप वरी है विदेहकुमारी।—तुलसी (शब्द०)।

विदेहकूट—सज्ञा पु० [स०] जैन पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विदेहकैवल्य—सज्ञा पुं० [स०] वह निर्वाण या मोक्ष जो जीवन्मुक्त को मरने पर प्राप्त होता है।

विदेहजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सीता (को०)।

विदेहत्व—सज्ञा पुं० [स०] १ विदेह होने का भाव। २ शरीर का नाश। मृत्यु। मौत।

यौ०—विदेहत्वगत, विदेहत्वप्राप्त=(१) मृत। (२) मुक्त।

विदेहपुर—सज्ञा पुं० [सं०] राजा जनक की राजधानी, जनकपुर। उ०—विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानो कीन्ही जैसी आइ गो परी।—तुलसी (शब्द०)।

विदेहमुक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विदेहकैवल्य'। उ०—जीवन्मुक्ति और विदेहमुक्ति का भेद प्रगट है, परंतु तुझको मालूम नहीं हो सकता है।—कबीर मं०, पृ० १७६।

विदेहा—सज्ञा स्त्री० [स०] मिथिला नगरी और प्रदेश का एक नाम।

विदेही—सज्ञा पु० [स० विदेहिन्] ब्रह्म। उ०—कुल मर्यादा खोइ के खोजिनि पदनिर्वान। अंकुर बाज नसाइ क भए विदेही थान।—कबीर (शब्द०)।

विदोष—वि० [स०] जिसमे किसी प्रकार का दोष न हो। दोषरहित। बेऐब।

विदोह, विदोहन—सज्ञा पुं० [स०] किसी से अत्यधिक लाभ उठाना या अधिक दुहना। शोषण (को०)।

विद्[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो जानता हो। जानकार। २. पडित। विद्वान्। ३ बुध ग्रह। ४. तिल का पौधा।

विद्[2]—वि० ज्ञाता। जानकार। विद्वान्। समासात मे प्रयुक्त। जैसे,—वेदविद्, तद्विद।

विद्[3]—सज्ञा स्त्री० ज्ञान। समझ। जानकारी (को०)।

विद्ध—वि० [स०] १ बीच मे से छेद किया हुआ। छिदित। विदीर्ण। २ फेंका हुआ। क्षिप्त। ३ जिसमे बाधा पडी हो। बाधित। ४ समान। तुल्य। बराबर। ५ जिसको चोट लगी हो। ताडित। ६ टेढा। ७ मिला हुआ। आबद्ध।

यौ०—विद्धकर्ण १ जिसके कान छिदे हो। २ विद्धकर्णी। विद्धकर्ण, विद्धकर्णिका=पाठा। विद्धकर्णी।

विद्ध[2]—सज्ञा पु० (१) घाव। जख्म। (२) पहाडमूल। पाठा (को०)।

विद्ध(पु)[3]—सज्ञा पुं० [स० विधि] ब्रह्मा। विधि। उ०—सपेषक जपी सुकथ, माधव माननि मभझ। जो चिन हित्त बिलवियो। (सो) हरिहर विद्ध न सुझझ।—पृ० रा०, २।४२२।

विद्धक—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का यत्र जिससे मिट्टी खोदी जाती थी।

विद्धकर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अंबष्ठा। पाठा (को०)।

विद्धव्रण—सज्ञा पुं० [पुं०] वह सूजन जो शरीर के किसी अग मे काँटे की नोक के चुभने या टूटकर रह जाने से होती है।

विद्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिससे शरीर में बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ निकलती हैं।

विद्धायुध—सज्ञा पुं० [स०] धनुष का एक प्रकार। विशेष लबाई का धनुष (को०)।

विद्धि[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आघात करना। हनन। मारना। २ वेधना या छेदना।

विद्धि(पु)[2]—सज्ञा पुं० [स० विधि=काम करने का तरीका] विधि। जुगत। उ०—आहार पान घनसार पूर। बठे सु आइ एकत सूर। सब कहिग विद्धि कनवज दिगत। सुदरै वत्त सो काहु पान।—पृ० रा०, १।६२८।

विद्य—सज्ञा पुं० [स०] लाभ। प्राप्ति (को०)।

विद्यमान—वि० [सं०] १ वर्तमान। उपस्थित। मौजूद। उ०—सूर समर करनी करहि, कहि न जनावहि आपु। विद्यमान रन पाय रिपु, कायर करहिं प्रलापु।—सतवाणी०, पृ० ७३। २ तथ्यपूर्ण। तथ्यपूर्ण (को०)।

विद्यमानता—सज्ञा स्त्री० [स०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्यमानत्व—सज्ञा पुं० [स०] विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्याकुर—सज्ञा पु० [स० विद्या+अङ्कुर] आरभिक विद्या। बालको को पढाई जानेवाली ज्ञान की प्रथम पुस्तक। उ०—वहाँ राजा शिवप्रसाद सदृश विलक्षण विद्वान् के बनाए भूगोल हस्तामलक, इतिहास तिमिर नाशक, गुटका आदि विद्याकुर ने पढाये जाते थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४१७।

विद्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह ज्ञान जो शिक्षा आदि के द्वारा उपार्जित या प्राप्त किया जाता है। वह जानकारी जो सीखकर हासिल की जाती है। किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान। इल्म। जैसे,—(क) विद्या पढ़कर मनुष्य पडित होता है। (ख) आजकल पाठशालाओ मे अनेक प्रकार की विद्याएँ पढाई जाती हैं।

विशेष—हमारे यहाँ विद्या दो प्रकार की मानी गई है—परा और अपरा। जिस विद्या के द्वारा ब्रह्मज्ञान होता है, वह परा विद्या और इसके अतिरिक्त जो अन्य लौकिक या पदार्थ विद्याएँ हैं, वे सब अपरा विद्या कहलाती हैं।

२ वह ज्ञान जिसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि होती है। ३ वे शास्त्र आदि जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

विशेष—हमारे यहाँ इनकी सख्या १८ बतलाई गई है। यथा—चारो वेद, छओ अंग, मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद और अर्थशास्त्र।

४ दुर्गा। ५ देवी का मंत्र। ६ गनियारी। ७ सीता की एक सखी का नाम। ८. तत्र मे 'ई' अक्षर का वाचक शब्द (को०)। ९ छोटी घटी (को०)। १० ऐंद्रजालिक कौशल (को०)। ११ सिद्ध गुटिका। ऐंद्रजालिक गुटिका (को०)।

विशेष—कहते है, इसे मुँह मे रखने से व्यक्ति उडता हुआ कही भी गमन कर सकता था।

१२ आर्या छद का पाँचवाँ भेद, जिसमे चद्रशेखर के मत से २३ गुरु और ११ लघु मात्राएँ होती है।

विद्याकर—सज्ञा पु० [स०] विद्या का आकर। विद्वान् व्यक्ति। वह जिससे ज्ञान प्राप्त हो। अध्यापक। शिक्षक (को०)।

विद्याकोशगृह—सज्ञा पुं० [सं०] पुस्तकालय। ग्रथागार (को०)।

विद्याकोशसमाश्रय—सज्ञा पु० [स०] पुस्तकालय। लाइब्रेरी (को०)।

विद्यागम—सज्ञा पु० [स०] ज्ञानप्राप्ति। विद्याप्राप्ति (को०)।

विद्यागुरु—सज्ञा पुं० [स०] वह गुरु जिससे विद्या पढ़ी हो। पवित्र ज्ञान का देनेवाला। पढानेवाला गुरु। शिक्षक।

विद्यागृह—सज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ विद्या पढाई जाती हो। विद्यालय। पाठशाला।

विद्याचचु—वि० [स० विद्याचञ्चु] विद्या द्वारा ख्यात। प्रसिद्ध विद्वान् (को०)।

विद्याचण—वि० [स०] दे० 'विद्याचचु'।

विद्याजभक—वि० [स० विद्याजम्भक] भाँति भाँति की ऐंद्रजालिक क्रिया अथवा जादू के खेल दिखानेवाला (को०)।

विद्यातीर्थ—सज्ञा पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ शिव का एक नाम (को०)।

विद्यात्व—सज्ञा पुं० [स०] विद्या का भाव।

विद्यादल—सज्ञा पुं० [स०] भोजपत्र का पेड।

विद्यादाता—सज्ञा पुं० [स० विद्यादातृ] विद्या पढ़ानेवाला गुरु, जो शास्त्रो के अनुसार पिता माना जाता है।

विद्यादान—सज्ञा पु० [स०] १ विद्या पढाना। शिक्षा देना। २ पुस्तक का दान (को०)।

विद्यादायाद—सज्ञा पुं० [स०] विद्या का दायाद। किसी विद्या का उत्तराधिकारी (को०)।

विद्यादेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती। २ जैनियो की सोलह जैन देवियो मे से एक देवी का नाम।

विद्याधन—सज्ञा पुं० [स०] १ विद्या रूपी धन। २ वह धन जो अपनी विद्या द्वारा उपार्जित किया जाय। ऐसे धन मे किसी का हिस्सा नही लग सकता।

विद्याधर—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार की देवयोनि जिसके अतर्गत खेचर, गधर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २. सोलह प्रकार के रतिबधो मे से एक प्रकार का रतिबध। ३. वैद्यक मे एक प्रकार का यत्र जिससे पारे का सस्कार करते हैं।

विशेष—इसमे एक थाली में पारा रखकर उसपर दूसरी थाली रखकर मिट्टी से बीच का जोड बद कर देते हैं, और ऊपर की थाली मे पानी भरकर दोनो मिली हुई थालियो को पाँच पहर तक आग पर रखते हैं। इसके उपरात ठढे होने पर पारा निकाल लेते हैं।

४ एक प्रकार का अस्त्र। उ०—(क) वर विद्याधर अस्त्र नाम नदन जो ऐसो। मोहन स्वापन सयन सौम्य कर्षन पुनि है सो।—पद्माकर (शब्द०) (ख) महा अस्त्र विद्याधर लीजै पुनि नंदन जेहि नाऊँ।—रघुराज (शब्द०)। ५ विद्वान् व्यक्ति। पडित। उ०—कविदल विद्याधर सकल कलाधर राज राज वर वेश बने।—केशव (शब्द०)।

विद्याधर रस—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो पारे, गधक, ताँबे, सोठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि की सहायता से बनाया जाता है और ज्वर मे बहुत उपयोगी माना जाता है।

विद्याधरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] विद्याधर नामक की स्त्री। उ०—विद्याधरी किन्नरी नागा त्यो वानरी अपारा।—रघुराज (शब्द०)।

विद्याधरेंद्र—सज्ञा पु० [स० विद्याधरेन्द्र] जाबुवान का एक नाम।

विद्याधरेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक शिवलिंग का नाम।

विद्याधार—सज्ञा पु० [स०] पडित। विद्वान्।

विद्याधारी—सज्ञा पुं० [स० विद्याधारिन्] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे चार मगण होते है। उ०—मैं चारो वधू गाँठ भक्ती को पाऊँ। लाभै सारे यामे अतै ना जाऊँ। जानै भेदा याको सतसगा को धारी। वोही साँचो भक्ता साँचा विद्याधारी।—जगन्नाथ (शब्द०)।

विद्याधिदेवता—सज्ञा स्त्री० [स०] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधिप—सज्ञा पु० [स०] १ विद्या पढानेवाला। गुरु। शिक्षक। २ विद्वान्। पडित।

विद्याधिराज—सज्ञा पु० [स०] वह जो बहुत बडा पंडित हो।

विद्याध्र—सज्ञा पुं० [स०] विद्याधर नाम की देवयोनि।

विद्यानुपालन—सज्ञा पुं० [स०] अध्ययन (को०)।

विद्यानुपाली—सज्ञा पुं० [स० विद्यानुपालिन्] अध्येता [को०]।
विद्यानुसेवन—सज्ञा पु० [स०] विद्याध्ययन [को०]।
विद्यानुसेवी—सज्ञा पु० [स० विद्यानुसेविन्] अध्येता [को०]।
विद्यापति—सज्ञा पु० [स०] १ प्रमुख पडित या विद्वान्। २ मैथिली भाषा के एक महान् गीतकार कवि (को०)।
विद्यापीठ—सज्ञा पुं० [स०] शिक्षा का केंद्र। विद्यालय [को०]।
विद्याबल—सज्ञा पु० [स०] १ जादू की शक्ति। २ विद्या की शक्ति। विद्वत्ता का बल (को०)।
विद्याभाक्—वि० [स० विद्याभाज्] विद्वान्।
विद्याभ्यसन, विद्याभ्यास सज्ञा पुं० [स०] विद्याध्ययन।
विद्यामडलक—सज्ञा पु० [स० विद्यामण्डलक] पुस्तकालय [को०]।
विद्यामत—सज्ञा पु० [स० विद्यावत्] दे० 'विद्वान्'। उ०—व्यसनी व्यावहारिक विद्यामत वादी व्युहपति वदीजन वाहक।—वर्णा०, पृ० २०।
विद्यामदिर—सज्ञा पु० [स० विद्यामन्दिर] विद्यालय।
विद्यामणि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विद्याधन'।
विद्यामय—सज्ञा पु० [सं०] वह जो पूर्ण पडित हो।
विद्यामहेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।
विद्यामार्ग—सज्ञा पु० [स०] वह कार्य जो मनुष्य को मोक्ष की ओर ले जाय। श्रेय मार्ग (कठवल्ली उपनिषद्)।
विद्यारभ—सज्ञा पु० [स० विद्यारम्भ] वह सस्कार जिसमे विद्या की पढाई आरभ होती है।
विद्याराज—सज्ञा पु० [स०] विष्णु की एक मूर्ति का नाम।
विद्याराशि—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।
विद्यार्जन—सज्ञा पु० [स०] १ विद्या का अर्जन। विद्या की प्राप्ति। २ विद्या द्वारा होनेवाली प्राप्ति [को०]।
विद्यार्थ—वि० [स०] विद्याप्राप्ति का इच्छुक [को०]।
विद्यार्थी—सज्ञा पु० [सं० विद्यार्थिन्] वह जो विद्या पढता हो। पढनेवाला छात्र। शिष्य।
विद्यालय—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ विद्या पढाई जाती हो। पाठशाला।
विद्यालाभ—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विद्यार्जन' [को०]।
विद्यावश—सज्ञा पुं० [स०] किसी विद्या के शिक्षको की क्रमागत परपरा सूचनिका [को०]।
विद्यावधू—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती [को०]।
विद्यावान—सज्ञा पुं० [सं० विद्यावान्] पडित। विद्वान्। उ०—जीवत जग मे काहि पिछानी। विद्यावान होइ जो प्रानी।—विश्राम (शब्द०)।
विद्यावार्तिक—वि० [स०] तरह तरह के जादू के खेल करनेवाला [को०]।
विद्याविक्रय—सज्ञा पुं० [स०] धन लेकर शिक्षा देना [को०]।
विद्याविद्—सज्ञा पुं० [स०] विद्वान्। पडित।
विद्याविरुद्ध—वि० [स०] विद्या के विपरीत या विरुद्ध।
विद्याविशिष्ट—वि० [स०] विद्याज्ञान या विद्वत्ता के लिये ख्यात [को०]।
विद्याविहीन—वि० [स०] विद्याहीन। मूर्ख। अपढ [को०]।
विद्यावृद्ध—वि० [स०] विद्या या ज्ञान मे अग्रसर [को०]।
विद्यावेश्म—सज्ञा पु० [स० विद्यावेश्मन्] पाठशाला [को०]।
विद्याव्यवसाय—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'विद्याव्यसन'। २ दे० 'विद्याविक्रय'।
विद्याव्यसन—सज्ञा पुं० [स० विद्या+व्यसन] विद्या या ज्ञानप्राप्ति के लिये उत्कट अभिलाषा। विद्याप्रेम। अध्ययन। उ०—क्षत्रियो के पास सैन्य बल था, राजनैतिक प्रभुता थी, विद्याव्यसन भी था।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ६७।
विद्याव्रत—सज्ञा पु० [स०] वह व्रत जो गुरु के घर रहकर विद्या पढ़ने के उद्देश्य से धारण किया जाता है।
विद्यासागर—वि० [स०] विद्या का समुद्र। अगाध विद्वान् [को०]।
विद्याव्रतस्नातक—सज्ञा पुं० [स०] मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के पास रहकर वेद और विद्याव्रत दोनो समाप्त करके अपने घर लौटे।
विद्यास्नात—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विद्यास्नातक' [को०]।
विद्यास्नातक—सज्ञा पु० [सं०] मनु के अनुसार वह स्नातक जो गुरु के घर रहकर वेदाध्ययन समाप्त करके घर लौटा हो।
विद्यु—सज्ञा स्त्री० [स०] विद्युत्। बिजली।
विद्युच्चालक—सज्ञा पुं० [स० विद्युत्+चालक] वह पदार्थ जिसमे विद्युत् की धारा प्रवाहित हो। जैसे, ताँबा आदि।
विद्युच्छिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक पौधा जिसकी जड विषैली होती है। २ एक राक्षसी [को०]।
विद्युज्ज्वाल—सज्ञा पु० [स०] १ एक नाग का नाम। २ बिजली की कौंध [को०]।
विद्युज्ज्वाला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कलिकारी या कलियारी नामक वृक्ष। २ बिजली की कौंध। उ०—इसपर चमक रही है रक्तिम, विद्युज्ज्वाला बारबार।—अपरा, पृ० ३५४।
विद्युज्जिह्व—सज्ञा पु० [स०] १ रामायण के अनुसार रावण के पक्ष के एक राक्षस का नाम जो शूर्पणखा का पति था। २ एक यक्ष का नाम (को०)। ३ एक राक्षस का नाम।
विद्युज्जिह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
विद्युता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विद्युत्। बिजली। २ महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।
विद्युताक्ष—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।
विद्युत्'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सध्या। २ बिजली। ३ वृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार की उल्का। ४ एक प्रकार की वीणा। ५ वज्र (को०)। ६ उषा (को०)। ७ प्रजापति बाहुपुत्र की चार कन्याएँ (को०)। ८ अतिजगती छद का एक भेद या प्रकार (को०)।
विद्युत्'—सज्ञा पु० १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ समाधि का एक प्रकार (को०)। ३ एक असुर का नाम (को०)।
विद्युत्'—वि० १ जिसमे बहुत अधिक दीप्ति हो। बहुत चमकीला। २ जिसमे किसी प्रकार की दीप्ति या प्रभा न हो।

विद्युत्कप—सज्ञा पुं० [सं० विद्युत्कम्प] बिजली की कौंध या चमक (को०)।

विद्युत्केश—सज्ञा पुं० [सं०] रामायण के अनुसार हेति नामक राक्षस का पुत्र, जो काल की कन्या भया के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। इसी विद्युत्केश और सालकटंकटा से राक्षसों के वंश की वृद्धि हुई थी।

विद्युत्केशी—सज्ञा पुं० [सं० विद्युत्केशिन्] दे० 'विद्युत्केश' (को०)।

विद्युत्ता—सज्ञा पुं० [सं०] विद्युत् का भाव या धर्म। बिजलीपन।

विद्युत्पताक—सज्ञा पुं० [सं०] प्रलय के समय के सात मेघों में से एक मेघ का नाम।

विद्युत्पर्णा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

विद्युत्पात—सज्ञा पुं० [सं०] बिजली का गिरना। वज्रपात।

विद्युत्पुज—सज्ञा पुं० [सं० विद्युत् पुञ्ज] एक विद्याधर (को०)।

विद्युत्प्रपतन—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्युत्पात' (को०)।

विद्युत्प्रभ—सज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम। २ वह जो विद्युत् के समान दीप्तिमान् हो। ३ एक दैत्य का नाम।

विद्युत्प्रभा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ दैत्यों के राजा बलि की पोती का नाम। २ अप्सराओं का एक गण। ३. बिजली का प्रकाश या दीप्ति।

विद्युत्प्रिय—सज्ञा पुं० [सं०] काँसा नामक धातु या उसका कोई बरतन, जिसकी ओर बिजली जल्दी खिंचती है।

विद्युत्य—वि० [सं०] विद्युत् या बिजली से उत्पन्न।

विद्युत्वत्—सज्ञा पुं० [सं०] वह जिसमें विद्युत् हो। जैसे, बादल। (को०)। २ मेघ। बादल।

विद्युत्वान्[1]—सज्ञा पुं० [सं० विद्युत्वत्] १. एक पर्वत। २. बादल। मेघ (को०)।

विद्युत्वान्[2]—वि० १ बिजली के समान चमकीला। २. बिजली के समान क्षणिक (को०)।

विद्युदक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दैत्य का नाम।

विद्युदुन्मेष—सज्ञा पुं० [सं०] बिजली की चमक। विद्युत्कप (को०)।

विद्युद्गौरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति की एक मूर्ति का नाम।

विद्युद्दाम—पुं० [सं० विद्युद्दामन्] वक्रगति युक्त बिजली की कौंध या चमक। विद्युल्लता। विद्युल्लेखा। उ०—दुतरा विद्युद्दाम चढा द्रुत, इंद्रधनुष की कर टंकार।—पल्लव, पृ० ६२।

विद्युद्द्योत—सज्ञा पुं० [सं०] बिजली की चमक या कौंध (को०)।

विद्युद्ध्वज—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक असुर का नाम। २. दे० 'विद्युत्पताक'।

विद्युद्वर्णा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अप्सरा (को०)।

विद्युद्वल्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] बिजली की कौंधा। विद्युल्लता (को०)।

विद्युन्मापक—सज्ञा पुं० [सं० विद्युत्+मापक] एक विशेष प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि विद्युत् का बल कितना और प्रवाह किस ओर है।

विद्युन्माल—सज्ञा पुं० [सं०] १ रामायण के अनुसार एक बंदर का नाम। २ दे० 'विद्युन्माला'।

विद्युन्माला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिजली का समूह या सिलसिला। २. एक वर्णिणी का नाम। ३. एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में आठ आठ गुरु वर्ण अथवा दो भगण और दो गुरु वर्ण (भ भ ग ग) होते हैं और चार वर्णों पर यति होती है। उ०—मैं मागो गोपी सा दाना। भागा बाली नाही काना। कारी सारी ताही माला। भामी मोहो विद्युन्माला।—जगन्नाथ (शब्द०)।

विद्युन्माली—सज्ञा पुं० [सं० विद्युन्मालिन्] १. पुराणानुसार एक राक्षस का नाम। उ०—विद्युन्माली रजनिचर, हन्या सुप्रणहि बान। मारि सुपेणहुँ शृग इक, ताक्षा वाकर यान।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—इसने शिव की भक्ति करके सोने का एक विमान प्राप्त किया था और उसी विमान पर चढकर यह सूर्य के पास पीछे घूमा करता था। इससे रात के समय भी उस विमान में अधकार नहीं होने पाता था। इससे घबराकर सूर्य ने अपने तेज से वह विमान गलाकर जमीन पर गिरा दिया था। रामायण में कहा है कि यम के पुत्र सुपेण के साथ इसका युद्ध हुआ था।

२. महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम। ३ एक छंद का नाम जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण, एक सगण और अंत में दो गुरु होते हैं। ४. एक प्रकार के देवता (को०)। ५ एक विद्याधर का नाम (को०)।

विद्युन्मुख—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार के उपग्रह।

विद्युल्लक्षण—सज्ञा पुं० [सं०] अथर्ववेद का ५६वाँ परिशिष्ट (को०)।

विद्युल्लता—सज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली। उ०—नीरव विद्युल्लता आज लंका पर टूटी।—साकेत, पृ० ४०८।

विद्युल्लेखा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में दो भगण होते हैं। इसे शशिवदना भी कहते हैं। उ०—मैं माटी खाई। झूठे ग्वाला भाई। मू बायो मा दीखा। जानी विद्युल्लेखा।—जगन्नाथ (शब्द०)। २ विद्युत्। बिजली। कौंध। बिजली।

विद्युल्लोचन—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि (को०)।

विद्युल्लोचना—सज्ञा पुं० [सं०] एक नागकन्या (को०)।

विद्येश—सज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

विद्येश्वर—सज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २. शैव मतानुसार एक देवता यानि। ३. एक ऐंद्रजालिक (को०)।

विद्योत'—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ विद्युत्। बिजली। २ प्रभा। ज्योति। चमक। ३ एक अप्सरा का नाम।

विद्योत[2]—वि० चमकीला। प्रकाशमान (को०)।

विद्योतक—वि० [सं०] द्योतित करनेवाला। दीप्त करनेवाला (को०)।

विद्योतन'—वि० [सं० स्त्री० विद्योतिनी] १. प्रकाश करनेवाला। चमकानेवाला। २ उदाहरण के साथ निरूपण करनेवाला। व्याख्याता (को०)।

विद्योतन[२]—सज्ञा पुं० बिजली [को०]।

विद्योती—वि० [स० विद्योतिन्] [वि० स्त्री० विद्योतिनी] द्योतित करनेवाला। व्यक्त वा प्रकाशित करनेवाला [को०]।

विद्योपयोग—सज्ञा पु० [स०] प्राप्त ज्ञान को प्रयोग मे लाना या विद्यादान करना।

विद्योपार्जन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विद्यार्जन'।

विद्योपार्जित—वि० [स०] जिसे विद्या द्वारा अर्जित किया जाय। जैसे, विद्योपार्जित धन।

विद्र—सज्ञा पु० [स०] १ छिद्र। छेद। २ फाडना। खड खड करना। छेद करना (को०)।

विद्रध[१]—वि० [स०] १ मोटा ताजा। २ दृढ। मजबूत। पक्का। ३ जो किसी काम के लिये अच्छी तरह तैयार हो।

विद्रध[२]—सज्ञा पु० एक फोडा। दे० 'विद्रधि'।

विद्रधि—सज्ञा पुं०, स्त्री० [स०] पेट के अदर का एक प्रकार का फोडा जो बहुत घातक होता है।

यौ०—विद्रधिघ्न। विद्रधिनाशन = सहिजन।

विद्रधिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का छोटा फोडा जो प्रमेह रोग के बहुत दिनो तक रहने के कारण होता है।

विद्रधिघ्न—सज्ञा पु० [स०] शोभाजन। सहिजन।

विद्रम—सज्ञा पु० [स० विद्रुम] दे० 'विद्रुम'। उ०—गति गयद जँघ केलिप्रभ केहरि जिमि कटि लक। हरो डसण, विद्रम अधर, मारू भृकुटि मयक —ढोला०, दू० ४५४।

विद्रव—सज्ञा पु० [स०] १ पलायन। भागना। २ बुद्धि। अक्ल। ३ नाश। ४ भय। आतक। घबराहट। डर। ५ युद्ध। लडाई। ६ प्रवाह। बहना। ७ पिघलना। द्रवीभूत होना। ८ निंदा। शिकायत।

विद्रवण—सज्ञा पु० [स०] १ पलायन। भागना। २. पिघलना। गलना [को०]।

विद्रवित—वि० [स० वि+द्रवित] १ भागा हुआ। पलायित। २. छितराया या बिखरा हुआ। ३ जो द्रवित हो चुका हो। उ०—किंतु कौन तुम, मौन ज्योति विद्रवित जलद से।—रजत०, पृ० ६७।

विद्राण—वि० [स०] सुप्ति से जाग्रत अवस्था मे लाया हुआ। [को०]।

विद्राव—सज्ञा पु० [स०] १. बहना। क्षरण। २. पिघलना। गलना। ३ पलायन। 'विद्रव'।

विद्रावक—वि० [स०] १ भगानेवाला। २ द्रवित करनेवाला [को०]।

विद्रावण[१]—सज्ञा पु० [स०] १. भगाना। पराजित करना। २ पिघलाना। ३ गलाना। ४ उडाना। ५ फाडना। ६ वह जो नष्ट करता हो। ७ एक दानव का नाम।

विद्रावण[२]—वि० आतकित करनेवाला। भगानेवाला। घबरा देनेवाला। जैसे—महामोह विद्रावण।

विद्राविणी—सज्ञा स्त्री० [स०] कौवाठोठी।

विद्रावित—वि० [स०] १ खदेडा या भगाया हुआ। डराया हुआ। २. फैलाया या बिखराया हुआ। तितर बितर किया हुआ। ३ पिघलाया या गलाया हुआ [को०]।

विद्रावी—सज्ञा पुं० [सं० विद्राविन्] १ भागनेवाला। २ भगानेवाला। ३ गलनेवाला। ४ फाडनेवाला।

विद्राव्य—वि० [स०] १ जिसका विद्राव करणीय हो। भगाने के लायक। २. पिघलाने या गलाने योग्य [को०]।

विद्रुत[१]—वि० [स०] १ भागा हुआ। २. गला हुआ। ३ पिघला हुआ। ४ आतकित। भयभीत (को०)। ५ नष्ट (को०)।

विद्रुत[२]—सज्ञा पुं० [स०] १ युद्ध का एक विशेष ढग। २. उडान [को०]।

विद्रुति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भागना। २ गलना। ३ पिघलना। ४ नष्ट होना।

विद्रुधि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विद्रधि'।

विद्रुम[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ प्रवाल। मूँगा। २ मुक्ताफल नामक वृक्ष। ३ वृक्ष का नया पत्ता। कोपल। ४ एक पहाड का नाम (को०)।

विद्रुम[२]—वि० द्रुमहीन [को०]।

विद्रुमच्छवि—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

विद्रुमदड—सज्ञा पुं० [स०] मुक्ताफल या रत्नवृक्ष की शाखा [को०]।

विद्रुमफल—सज्ञा पु० [स०] कुंदुरु नामक सुगधित गाद।

विद्रुमलता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. नलिका या नली नामक गधद्रव्य। २ मूँगा।

विद्रुमलतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विद्रुमलता' [को०]।

विद्रूप—सज्ञा पु० [स०] परिहास। व्यंग्य। मजाक। ठट्ठा। उ०—प्रगतिशील साहित्य के मानदड पुस्तक मे डा० रागेय राघव का यह आक्रोश भरा विद्रूप।—हिंदी आ०, पृ० १२।

विद्रोह—सज्ञा पु० [स०] १. किसी के प्रति होनेवाला वह द्वेष या अचरण जिससे उसको हानि पहुचे। २. राज्य मे होनेवाला भारी उपद्रव जो राज्य को हानि पहुँचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से हो। क्राति। बलवा। बगावत।

विद्रोही—वि०, सज्ञा पु० [स० विद्रोहिन्] [स्त्री० विद्रोहिणी] १ जो किसी के प्रति विद्राह या द्वेष करता हो। २. राज्य का अनिष्ट करनेवाला। बागी।

विद्वज्जन—सज्ञा पु० [सं० विद्वत्+जन] १ विद्वान् या कुशल व्यक्ति। २. सत। तपस्वी ऋषि (को०)।

विद्वत्—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

यौ०—विद्वत्कल्प = जो विद्वान् न हो। कम पढ़ा लिखा। विद्वज्जन। विद्वत्तम = (१) शिव। (२) विद्वानो मे श्रेष्ठ। महान् विद्वान्। विद्वद्देश्य। विद्वद्दशीय = विद्वत्कल्प।

विद्वत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पाडित्य।

विद्वत्व—सज्ञा पु० [स० विद्वत्व] बहुत अधिक विद्वान होने का भाव। विद्वत्ता। पाडित्य।

विद्वद्देशीय—वि० [स०] विद्वत्कल्प। कम शिक्षित [को०]।

विद्वान्[१]—सज्ञा पु० [स० विद्वस्] १ वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो। २ वह जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पडित। ३. वह जो सब कुछ जानता हो। सर्वज्ञ।

विद्वान्[२]—वि० १. ज्ञाता। जानकार। २ बुद्धिमान्। पंडित। विद्यायुक्त।

विद्विट्[१]—संज्ञा पुं० [सं० विद्विष्] शत्रु [को०]।

विद्विट्[२]—वि० द्वेषी। द्वेष रखनेवाला [को०]।

विद्विष—संज्ञा पु० [सं०] वह जो विद्वेष या शत्रुता करता हो। शत्रु। दुश्मन।

विद्विषाण—वि० [सं०] द्वेष या शत्रुता करनेवाला [को०]।

विद्विष्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विद्विष'।

विद्विष्ट—वि० [सं०] १. जिसके साथ विद्वेष या शत्रुता की जाय। द्वेष का पात्र या भाजन। २. घृणित। कुत्सित (को०)।

विद्विष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्विष्ट होने का भाव।

विद्विष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्वेष। शत्रुता। दुश्मनी।

विद्वेष—संज्ञा पुं० [सं०] १. शत्रुता। दुश्मनी। वैर। द्वेष। २ अभिमत वा ईप्सित की प्राप्ति होने पर भी उद्धत गर्व या मान के कारण अनादर या घृणाभाव (को०)।

विद्वेषक—वि० संज्ञा पु० [सं०] वह जो विद्वेष करता हो। द्वेषी शत्रु। वैरी।

विद्वेषण—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० विद्वेषणी] १. शत्रुता। दुश्मनी। वैर। २. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसके द्वारा दो व्यक्तियों में द्वेष या शत्रुता उत्पन्न की जाती है। ३. वह जो द्वेष करता हो। शत्रु। वैरी। ४ सज्जनता का उल्टा। दुष्टता।

विद्वेषणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोषपूर्ण स्वभाव की स्त्री। कोपना स्त्री। २, द्वेष या वैर रखनेवाली औरत [को०]।

विद्वेषिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार दुःसह नामक यक्ष की आठवीं और अंतिम कन्या जो निर्याष्टि के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

विशेष—कहते हैं, यही लोगों में द्वेष उत्पन्न करती है। इसे शांत करने के लिये दूध, शहद और घी में मिले हुए तिलों से होम आदि करने का विधान है।

२. दे० 'विद्वेषणी'।

विद्वेषिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शत्रुता। शत्रुत्व भाव। दुश्मनी [को०]।

विद्वेषी—संज्ञा पु० [सं० विद्वेषिन्] [स्त्री० विद्वेषिणी] १. वह जो विद्वेष करता हो। द्वेषी। २. शत्रु। वैरी।

विद्वेष्टा—संज्ञा पु० [सं० विद्वेष्टृ] १. वह जो विद्वेष करता हो। २. शत्रु। वैरी।

विद्वेष्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसके साथ विद्वेष किया जाय। द्वेष का पात्र या भाजन। २ ककोल।

विधंस(पु)[१]—संज्ञा पु० [सं० विध्वंस] विध्वंस। नाश। उ०—माया कंस विधंस मुरारी। दारिद वारिद प्रबल बयारी।—रघुराज (शब्द०)।

विधंस[२]—वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।

विधंसना(पु)—क्रि० स० [सं० विध्वंसन] नष्ट करना। बरबाद करना। उ०—चाँद सुरज सों होइ विवाहू। वारि विधंसब, बेधब राहू।—जायसी (शब्द०)।

विध(पु)[१]—संज्ञा पुं० [सं० विधि] विधि। ब्रह्मा। उ०—नैन की कोर ते नेह किया विध डील की छाँह ते शील सँवारो।—हृदय० (शब्द०)।

विध[२]—संज्ञा स्त्री० दे० 'विधि'।

विध[३]—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकार। किस्म। २ ढंग। रीति। रूप। ३ प्रकार। तरह। किस्म। ४. हाथियों का आहार। ५ समृद्धि। वैभव। ६ छेदन [को०]।

विधत्री—संज्ञा स्त्री० [सं० विधात्री] ब्रह्मा की शक्ति, महासरस्वती।

विधन—वि० [सं०] जिसके पास धन न हो। निर्धन। गरीब।

विधनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विधन होने का भाव। निर्धनता। गरीबी।

विधना[१]—क्रि० स० [सं० विधि] १ प्राप्त करना। अपने साथ लगाना। ऊपर लेना। २. वेधन करना। वेधना। उ०—(क) लए फँदाइ बिहग मानो मदन व्याध विधए।—सूर (शब्द०)। (ख) थाके सूर पथिक मग माना मदन व्याधि विधए री।—सूर। (शब्द०)।

विधना[२]—क्रि० अ० १ बिंधा जाना। विद्ध होना। २. उलझना। फँसना। दे० 'बिधना'।

विधना[३]—संज्ञा स्त्री० [सं० विधि] वह जो कुछ होने को हो। भवितव्यता। होनी।

विधना[४]—संज्ञा पु० विधि। ब्रह्मा। उ०—विधना ऐसी रैन कर भोर कभी ना होय।—(शब्द०)।

विधनुष्क—वि० [सं०] धनुष से रहित। धनुषहीन [को०]।

विधन्वा—वि० [सं० विधन्वन्] दे० 'विधनुष्क'।

विधमन—संज्ञा पु० [सं०] १. धौंकनी या नल आदि के द्वारा हवा पहुँचाकर आग सुलगाना। धौंकना। विधूनन। उड़ाना। २. अग्नि आदि। बुझाना। नष्ट करना (को०)।

विधमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक राक्षसी [को०]।

विधर[१]—क्रि० वि० [पुं० हिं०] दे० 'उधर'। उ०—जैसे रथ के घोड़े बाग के आश्रय जिधर ले जाते हैं, विधर जाता है।—यमुना-शंकर (शब्द०)।

विधरकता[१]—संज्ञा स्त्री० [हिं० बेधड़क+ता (प्रत्य०)] निर्भयता। उ०—या प्रकार बोहोत ही प्रीति सों श्री गुसाईं जी सों हरिदास की बेटी ने प्रार्थना करि कै अपनी सास तें विधरकता सों बातीं। —दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २५५।

विधरण[१]—संज्ञा पु० [सं०] १ पकड़ना। रोकना। २. दे० 'विधृत'।

विधरण[२]—वि० पकड़नेवाला। रोकने या रुद्ध करनेवाला [को०]।

विधर्ता—वि०, संज्ञा पुं० [सं० विधर्तृ] व्यवस्था करनेवाला। संभाल करनेवाला। प्रबंधक [को०]।

विधर्म[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १. अपने धर्म को छोड़कर और किसी का धर्म। पराया धर्म। २ अन्याय। अधर्म (को०)। ३. अपने धर्म को छोड़कर दूसरे का धर्म ग्रहण करना, जो पाँच प्रकार के अधर्मों में से एक कहा गया है।

विधर्म[1]—वि० [स०] १ जिसकी धर्मशास्त्र मे निंदा की गई हो। २ जिसमे गुण न हो। गुणहीन।

विधर्मक—वि० [स०] दे० 'विधर्मिक'।

विधर्मा—वि० [स० विधर्मन्] अनुचित या गलत कार्य करनेवाला। अन्यायकारी (को०)।

विधर्मिक—वि० [स०] १ जो धर्मविरुद्ध आचरण करता हो। २ जो दूसरे धर्म का अनुयायी हो।

विधर्मी—वि० [स० विधर्मिन्] १. जो अपने धर्म के विपरीत आचरण करता हो। धर्मभ्रष्ट। २ जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी हो। ३. विभिन्न प्रकार का (को०)।

विधवन—सज्ञा पु० [स०] १. कपन। २ हिलाना (को०)।

विधवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति मर गया हो। पतिहीन स्त्री। राड। बेवा। उ०—(क) सुत वधू विधवा सो बोल कै सुनायो लेहु धनपति गह आ गुपाल भरतार ह।—नाभा (शब्द०)। (ख) ब्राह्मण विधवा नार सुर गुरु अश चुरावही। कहै न वचन विचार, परै सोई निरश्वास मँह।—विश्राम (शब्द०)।

विशेष—स्मृतियो मे विधवा स्त्रियो के लिये ब्रह्मचर्य तथा कठिन कठिन नियमो का पालन विधेय है। जैसे,—ताबूल और मद्य-मास आदि का त्याग। द्विजातियो मे विधवा के लिये पुनर्विवाह का नियम नही है। केवल पराशर सहिता मे यह कहा गया है कि स्वामी के नष्ट अर्थात् लापता होने, मरने, अथवा सन्यासी, क्लीव या पतित होने पर स्त्री दूसरा पति कर सकती है। पर और स्मृतियो के साथ अविरोध सिद्ध करने के लिये पडित लोग 'अन्य पति' शब्द का अर्थ 'दूसरा पालनकर्ता' किया करते हैं।

विधवागामी—सज्ञा पुं० [स० विधवागामिन्] विधवा स्त्री के साथ यौन सबध रखनेवाला व्यक्ति। विधवा का जार (को०)।

विधवापन—सज्ञा पु० [स० विधवा+हिं० पन (प्रत्य०)] विधवा होने की अवस्था। वह अवस्था जिसमे पति के मरने के कारण स्त्री पतिहीन हो जाती है। रँडापा। वैधव्य। उ०—लिख्यो न विधि मिलिबे तिहि मोही। प्राणजई विधवापन तोही।—रघुराज (शब्द०)।

विधवाविवाह—सज्ञा पु० [स०] विधवा स्त्री के साथ विवाह करना।

विधवावेदन—सज्ञा पु० [स० विधवा+आवेदन] दे० 'विधवाविवाह'।

विधवाश्रम—सज्ञा पु० [स० विधवा+आश्रम] विधवाओ के रहने का स्थान। अनाथ विधवाओ का शरणगृह। वह स्थान जहाँ विधवाओ के पालन पोषण तथा शिक्षा आदि का प्रबध किया जाता है। उ०—इन बालिकाओ के लिये अध्यापक कर्वे ने पूना मे 'अनाथ विधवाश्रम' खोला है।—सरस्वती (शब्द०)।

विधव्य—सज्ञा पु० [स०] कपन। थरथराहट। विक्षोभ (को०)।

विधस—सज्ञा पु० [स०] सोम।

विधस्—सज्ञा पु० [स०] सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा (को०)।

विधाँसना Ⓤ†—क्रि० स० [स० विध्वंसन] १ नष्ट करना। बरबाद करना। उ०—(क) औ जोबन मैमत विधाँसा। बिचला बिरह बिरह लै नासा।—जायसी (शब्द०)। (ख) भएउ जूझ जस रावन रामा। सेज विधास, बिरह सग्रामा।—जायसी (शब्द०)। २. अस्तव्यस्त करना। इधर उधर करना। गडबड कर देना।

विधा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ माध्यम। रीति। रूप। ढग। २. प्रकार, तरह। किस्म। ३ हाथी घोडे आदि का चारा। ४ समृद्धि। सपन्नता। ५ वेधन कर्म। छेदना। ६ उच्चारण। ७ पारिश्रमिक। मजदूरी। ८. व्यवहार। आचरण। क्रिया। चेष्टा (को०)।

विधातव्य—वि० [स०] १ विधान के योग्य। विधेय। २. करने योग्य। कर्तव्य।

विधाता[1]—सज्ञा पुं० [स० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १ विधान करनेवाला। रचनेवाला। बनानेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला। तैयार करनेवाला। उ०—विद्या वारिध बुद्धि विधाता।—तुलसी (शब्द०)। ३ व्यवस्था करनेवाला। प्रबध करनेवाला। इतजाम करनेवाला। ठीक तरह से लगानेवाला। उ०—ए गोसाईं। तू ऐस विधाता। जावत जीव सबन्ह सुखदाता।—जायसी (शब्द०)। ४ सृष्टि बनानेवाला। जगत् की रचना करनेवाला। सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा या ईश्वर। उ०—कुछ सदेह नहीं कि विधाता ने मुझे अत्यत सुकुमारी बनाया है —तारा (शब्द०)। ५ वितरण करने वा देनेवाला। दाता (को०)। ६ दैव। भाग्य। किस्मत (को०)। ७ विश्वकर्मा (को०)। ८ कामदेव (को०)। ९. मदिरा। शराब। (स्त्रीलिंग मे भी प्रयुक्त)। १०. माया (को०)।

विधातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] विधान करनेवाली। विधात्री।

विधातृभू—सज्ञा पुं० [सं०] नारद का एक नाम जो विधाता के पुत्र हैं (को०)।

विधात्रायु—सज्ञा पुं० [स० विधात्रायुस्] १ सूर्यमुखी का फूल। २. सूर्य की ज्योति। सूर्यप्रभा (को०)।

विधात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विधान करनेवाली। रचनेवाली। बनानेवाली। २ व्यवस्था करनेवाली। प्रबध करनेवाली। ३ पिप्पली। पीपल। ४ माता। जननी। ५ सरस्वती। शारदा। उ०—सती विधात्री इदरा देखी अमित अनूप। जेहि जेहि वेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप।—मानस, १।५४।

विधान—सज्ञा पु० [स०] १ किसी कार्य का आयोजन। काम का होना या चलना। विन्यास। सपादनक्रम। अनुष्ठान। जैसे—जो कुछ करना है, उसी का विधान अब होना चाहिए।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. व्यवस्था। प्रबध। इतजाम। बंदोबस्त। जैसे,—पहले ही से ऐसा विधान करो कि कार्य आरभ करने मे देर न हो। ३. कार्य करने की रीति। विधि। प्रणाली। पद्धति। जैसे—शास्त्रो में ऐसा विधान है। उ०—तुम विज्ञ विविध विधान।—केशव (शब्द०)। ४ रचना। निर्माण। ५ ढग। तरकीब। उपाय। युक्ति। जैसे—कोई ऐसा विधान निकालो कि कार्य निर्विघ्न हो जाय। ६ उतना चारा जितना हाथी एक बार मुह मे डालता है। हाथी का ग्रास। ७. हानि पहुँचाने का दाँवपेंच।

शत्रुता का आचरण। ८ प्रेरणा। भेजना। ९ अनुमति देने का कार्य। आज्ञा करना। १० धन संपत्ति। ११. पूजा। अर्चन। १२ नाटक मे वह स्थल जहाँ किसी वाक्य द्वारा एक साथ सुख और दु ख प्रकट किया जाता है। जैसे,—'बाल्यकाल ही मे तुम्हारा ऐसा उत्साह देख मुझे हर्ष और विषाद दोनो होते हैं। १३ पीडा। वेदना। संताप (को०)। १४ प्राप्ति। लाभ (को०)। १५ प्रतिकार (को०)। १६ वेद (को०)। १७. भाग्य। दैव (को०)। १८ उपसर्ग या प्रत्यय का योग (को०)। १९ नियम। कानून (को०)।

विधानक—सज्ञा पु० [स०] १ विधान। विधि। २ विधानवेत्ता। विधि या रीति जाननेवाला। ३ कष्ट। पीडा (को०)।

विधानग—सज्ञा पु० [स०] १ विधान का ज्ञाता। पडित। २. आचार्य। अध्यापक (को०)।

विधानज्ञ—सज्ञा पु० [सं०] १ विधान का ज्ञाता। २ अध्यापक। आचार्य (को०)।

विधानपरिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यवस्थापिका सभा। प्रात मे सुचारु रूप से व्यवस्था के लिये विधान या कानून बनानेवाली सभा।

विधानयुक्त—वि० [स०] विधिविहित। विधि के अनुकूल (को०)।

विधानविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] रचना। वाक्यविन्यास। वाक्य रूप या आकार प्रकार। (अ० फार्म) उ०—विधानविधि का भेद ऊपर सूचित किया गया।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १३९।

विधानव्रत—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य का एक व्रत। दे० 'विधानसप्तमी व्रत' (को०)।

विधानशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यवस्था शास्त्र। आईन। २. नीतिशास्त्र (को०)।

विधानसप्तमी—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ शुक्ला सप्तमी।

विधानसप्तमी व्रत—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य का एक व्रत जो माघ शुक्ला सप्तमी को आरभ करके साल भर तक (पौष तक) किया जाता है। इसमे सूर्य का पूजन होता है।

विधानापहार—सज्ञा पुं० [स०] विधान का अपहरण करना। निषेध को विधि के रूप मे लाना। उ०—विधानापहार—विधान को बदल देना अर्थात् निषेध को विधि रूप मे कहना।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, २६३।

विधानिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वृहती।

विधानी—सज्ञा पुं० [स० विधान+ई (प्रत्य०)] १ विधान का जाननेवाला। विधानज्ञ। २ विधिपूर्वक कार्य करनेवाला।

विधानीक—सज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का डिंगल छद। उ०—तुक तुक मे क्रम सो तवै, अवर अवर विध जाण। सभ चौथी तुक नाम सो विधानीक बाँखाण।—रघु० रू०, पृ० २४६।

विधायक—वि०, सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विधायिका] १ विधान करनेवाला। कार्य करनेवाला। २ बनानेवाला। रचनेवाला। सस्थापक। उ०—हे विरचि तै विश्वविधायक।—रघुराज (शब्द०)। ३. व्यवस्था करनेवाला। प्रबध करनेवाला। व्यवस्था देनेवाला। प्रस्तुत करनेवाला। उ०—मगल मूरति सिद्ध विधायक।—शंकर दि० (शब्द०)। ४. विधाननिर्माता। कानून बनानेवाला (आधु०)। ५ रचनात्मक।

विधायिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विधायक'।

विधायी—वि० [स० विधायिन्] ३ विधानकर्ता। २ व्यवस्थापक। ३ नियामक। दे० 'विधायक' (को०)।

विधायिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सस्थापिका। २ निर्मात्री (को०)।

विधारण—सज्ञा पु० [स०] १ सँभालना। रोकना। २ वहन करना। ढोना। ३ वह जो अलग करे। पृथक्कर्ता (को०)

विधारा—सज्ञा पु० [स० वृद्ध+दारु] एक प्रकार की लता जो दक्षिण भारत मे बहुतायत से होती है।

विशेष—इसका झाड बहुत बडा और इसकी शाखाएँ बहुत घनी होती है। इसकी डालियो पर गुलाब के से काँटे होते है। पत्ते तीन अंगुल लबे अडाकार और नोकदार होते हैं। डालियो के सिरे पर चमकदार पीले फूलो का गुच्छा होता है। वैद्यक मे इसे गरम, मधुर, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, धातुवर्धक और पुष्टिदायक माना है। उपदंश, प्रमेह, क्षय, वातरक्त आदि मे इसे ओषधि की भाँति व्यवहार मे लाते है।

पर्या०—जीर्णदारु। वृद्धदारु। वृद्धदारुक। गर्भवृद्धि।

विधि¹—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई कार्य करने की रीति। कार्यक्रम। प्रणाली। ढग। नियम। कायदा। जैसे—पूजा की विधि, यज्ञ की विधि। २ व्यवस्था। सगति। योजना। करीना। मेल या सिलसिला।

मुहा०—विधि बैठना=(१) परस्पर अनुकूलता होना। मेल बैठना। मेल खाना। व्यवहार निभना। जैसे,—हमारी उनकी विधि नही बैठेगी। (२) सब बातो का ठीक होना। इच्छानुकूल व्यवस्था होना। जैसे,—फिर क्या है, तुम्हारी विधि बैठ गई।

३ किसी शास्त्र या ग्रथ मे लिखी हुई व्यवस्था। शास्त्रोक्त विधान।

मुहा०—कुडली की विधि मिलना=कुडली मे लिखी बात का पूरा होना। फलित ज्योतिष द्वारा बताई हुई बात का ठीक घटना।

४ किसी शास्त्र या धर्मग्रथ मे किया हुआ कर्तव्यनिर्देश। कर्म के अनुष्ठान की आज्ञा या अनुमति। शास्त्र मे इस प्रकार का कथन कि मनुष्य यह काम करे।

विशेष—किसी काम को करने की आज्ञा को 'विधि' और न करने की आज्ञा को 'निषेध' कहते है। पूर्वमीमासा मे नियोग का नाम विधि है। अर्थात् जो वाक्य किसी इष्ट फल की प्राप्ति का उपाय बताकर उसे करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करे, वही विधि है। जैसे,—'स्वर्ग चाहनेवाला यज्ञ करे'। विधि दो प्रकार की कही गई है—प्रधान विधि और अग विधि। फल देनेवाली सपूर्ण क्रिया के आदेश करनेवाले वाक्य को 'प्रधान विधि' कहते हैं। जैसे,—'जिसे

पुत्र की कामना हो, वह पुत्रेष्टि यज्ञ करे'। प्रधान क्रिया के अंतर्गत होनेवाली छोटी छोटी क्रियाओं के निर्देश को 'अंग-विधि' कहते हैं। जैसे,—'चावल से यज्ञ करे, दधि का हवन करे, इत्यादि।

यौ०—विधि निषेध = किसी काम को करने और न करने की शास्त्रीय आज्ञा। उ०—विधिनिषेध मय कलिमल हरनी। —तुलसी (शब्द०)।

५ व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। जैसे,—यह काम करो या काम करना चाहिए। यह लिङ् लकार में होता है और इसके दो भेद हैं। एक विधिलिङ् दूसरा आशिष् लिङ्। ६ साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। जैसे—वर्षा काल के ही मेघ मेघ हैं। ७ आचार व्यवहार। चालढाल।

यौ०—गतिविधि = चेष्टा और कार्रवाई। जैसे,—उसकी गतिविधि पर ध्यान रखना।

८ भाँति। प्रकार। किस्म। तरह। उ०—एहि विधि राम सबहिं समुझावा। —तुलसी (शब्द०)। ९ प्रयोग (को०)।

विधि[२]—संज्ञा पु० [स०] १ सृष्टि का विधान करनेवाला। ब्रह्मा। उ० विधि करतब सब उलटे अहहीं। —तुलसी (शब्द०)। २ भाग्य। दैव (को०)। ३ विष्णु (को०)। ४ अग्नि (को०)। ५ समय (को०)। ६ हाथियों का खाद्य या चारा (को०)। ७ चिकित्सक। वैद्य (को०)। ८ कर्म (को०)। १० यज्ञ नियमों का उपदेशक ग्रंथ (को०)।

विधिकर—वि०, संज्ञा पुं० [स०] नौकर। दास। आज्ञाकारी। सेवक [को०]।

विधिकृत् वि० संज्ञा पुं० [स०] दे० 'विधिकर'।

विधिघ्न—वि० [स०] नियमों का उल्लंघन करनेवाला। विधि को न माननेवाला [को०]।

विधिज्ञ[१]—वि० [स०] १ विधि को जाननेवाला। शास्त्रोक्त विधान को जाननेवाला। २ रीति जाननेवाला।

विधिज्ञ[२]—संज्ञा पु० वह ब्राह्मण जो शास्त्रोक्त विधियों का पारगत हो। शास्त्रवेत्ता। विद्वान् [को०]।

विधित्समान—वि० [स०] करने या देने की इच्छा रखनेवाला। २ मतलबी।

विधित्सा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ संपन्न करने या विधान करने की इच्छा। २ आयोजन [को०]।

विधित्सित[१]—वि० [स०] जिसे करने की इच्छा की गई हो [को०]।

विधित्सित[२]—संज्ञा पुं० अभिप्राय। नीयत [को०]।

विधित्सु—वि० [स०] करने की इच्छा रखनेवाला [को०]।

विधिदर्शक—संज्ञा पु० [स०] दे० 'विधिदर्शी' [को०]।

विधिदर्शी—संज्ञा पुं० [स० विधिदर्शिन्] १ यज्ञ में यह देखने के लिये नियुक्त पुरुष कि होता, आचार्य आदि ठीक ठीक विधि के अनुकूल कर्म कर रहे हैं या नहीं। २. सदस्य।

विधिदृष्ट—वि० [स०] विधि के अनुकूल [को०]।

विधिदेशक—संज्ञा पुं० [स०] १ सदस्य। दे० 'विधिदर्शी'। २ अध्यापक। आचार्य [को०]।

विधिद्वैध—संज्ञा पुं० [स०] विधि या आदेश की विविधता। नियमों की भिन्नता [को०]।

विधिना—संज्ञा पुं० [सं० विधि हिं० + ना (प्रत्य०)] विधि। ब्रह्मा।

विधिनिषेध—संज्ञा पुं० [स०] करणीय और अकरणीय कर्म का निर्देश।

विधिपत्त(पु)—संज्ञा पुं० [सं० विधि + पत्र, प्रा० विधि + पत्त] विधि का पत्र। भाग्यलेख। उ०—दिय दरिद्र सगत वरहु को मेटै विधिपत्त।—पृ० रा०, ६१।१७८।

विधिपाट—संज्ञा पुं० [सं०] मृदंग के चार वर्णों में से एक वर्ण। चारों वर्ण ये हैं—पाट, विधिपाट, कूटपाट और खटपाट।

विधिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं० विधि + पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

विधिपुर—संज्ञा पुं० [स० विधि + पुर] ब्रह्मा का लोक, ब्रह्मलोक। उ०—स्वर्ग लोक महँ बचन न देनी। विधिपुर गयो प्राण निज लेनी।—रघुराज (शब्द०)।

विधिपूर्वक—अव्य० [सं०] नियम के अनुसार। 'विधिवत्' [को०]।

विधिप्रयोग—संज्ञा पुं० [स०] विधि या नियम का प्रयोग [को०]।

विधिबोधित—वि० [स०] शास्त्र विधि द्वारा बताया हुआ। शास्त्र सम्मत।

विधियज्ञ—संज्ञा पुं० [स०] वह यज्ञ जिसके करने की विधि हो। जैसे,—दर्शपौर्णमास।

विधियोग—संज्ञा पुं० [स०] १ नियम का अनुसरण या पालन। २. भाग्य का प्रभाव [को०]।

विधिरानी(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० विधि + हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती। उ०—वदौ वाणी वीणा कर विधिरानी विख्यात।—रघुराज (शब्द०)।

विधिलोक—संज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मलोक। सत्यलोक। २ शास्त्रीय विधानों का अभाव या न होना।

विधिलोप—संज्ञा पुं० [स०] विधि या नियमों का तिरस्कार [को०]।

विधिवत्—क्रि० वि० [सं०] १ विधिपूर्वक। विधि से। पद्धति के अनुसार। कायदे के मुताबिक। २. जैसा चाहिए। उचित रूप से। यथायोग्य।

विधिवधू—संज्ञा स्त्री० [स०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

विधिवशात्—अव्य० [स०] भाग्यवश। भाग्य से। दैवयोग से।

विधिवाहन—संज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा की सवारी हंस।

विधिविपर्यय—संज्ञा पु० [स०] भाग्य का फेर। दुर्भाग्य [को०]।

विधिविहित—वि० [स०] शास्त्र के अनुकूल। नियमानुकूल। [को०]।

विधिसेध—संज्ञा पुं० [स०] विधि और निषेध।

विधिहीन—वि० [स०] नियमशून्य। अशास्त्रीय। अविहित [को०]।

विधुत(पु)—संज्ञा पुं० [स० विधन्तुद] दे० 'विधुतुद'।

विधुंतुद—सज्ञा पुं० [स० विधुन्तुद] चद्रमा को दु ख देनेवाला, राहु। उ०—ज्ञानराकेस ग्रासन विधुंतुद चलन काम करि मत्त हरि।—तुलसी (शब्द०)।

विधुसन(पु)—क्रि० स० [स० विध्वंसन] दे० 'विधाँसना'। उ०— पंड कोपियौ किना धार पण, वीर भद्र दिख ज्याग विधुंसण —रा० रू०, पृ० ६५।

विधुसना(पु)—क्रि० [स० विध्वसप] विध्वस करना। नाश करना। उ०—ज्याग विधुंसे जावै।—रघु० रू०, पृ० ६४।

विधु—सज्ञा पुं० [स०] १. चद्र मा। २ वायु। ३ कपूर। ४ ब्रह्मा। ५ विष्णु। ६ एक राक्षस का नाम। ७ आयुव। ८ जलस्नान। ६. पापक्षालन। पाप छुडाना। प्रायश्चित्तपरक आहुति। १० शिव (को०)। ११. युद्ध। लडाई (को०)। १२ काल। समय (को०)। १३ एक राजा का नाम (को०)।

विधुक्रात—सज्ञा पुं० [स० विधुक्रान्त] सगीत का एक ताल।

विधुक्षय—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा की कलाओ का नाश। असित पक्ष। कृष्ण पक्ष [को०]।

विधुत—वि० [स०] १ त्यक्त। २ कपित। दे० 'विधूत' [को०]।

विधुति—सज्ञा स्त्री० [स०] सक्षोभ। कपन। विधूति [को०]।

विधुदार—सज्ञा पु० [स० विधु+दार] चद्रमा की स्त्री। रोहिणी। उ०—तारा किधो विधुदार किधो धृतधार सी पावक है परिरभौ।—मन्नालाल (शब्द०)।

विधुदिन—सज्ञा पु० [स०] चंद्रवार। सोमवार [को०]।

विधुनन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विधूनन' [को०]।

विधुपजर—सज्ञा पुं० [सं० विधुपञ्जर] खड्ग। खाँडा।

विधुपरिध्वस—सज्ञा पु० [स०] चद्रग्रहण [को०]।

विधुपिंजर—सज्ञा पु० [स०] विधु+पिञ्जर] खड्ग। खाँडा [को०]।

विधुप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] १. चद्रमा की स्त्री, रोहिणी। २ कुमुदिनी। कोई।

विधुवधु—सज्ञा पु० [स० विधुबन्धु] कुमुद का फूल।

विधुवधुर(पु)—सज्ञा पु० [स० विधु+बन्धुर (=प्रिय)] कुमुद। उ०—विधुबंधुर मुख भा बडो वारिज नैन प्रभाति।—रामसहाय (शब्द०)।

विधुवैनी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० विधु+वदन, प्रा० वयन] चद्रमुखी। सुदरी स्त्री। उ०—सग लिए विधुवैनी वधू रति हू जेहि रचक रूप दियो है।—तुलसी (शब्द०)।

विधुमडल—सज्ञा पुं० [स० विधुमण्डल] चद्रमा की परिधि या परिवेश। चंद्रमडल [को०]।

विधुमणि—सज्ञा पुं० [स०] चद्रकात मणि [को०]।

विधुमास—सज्ञा पुं० [स०] चाद्रमास। महीने की वह गणना जो कृष्ण प्रतिपदा से लेकर शुक्ल पूर्णिमा तक (१ मास) मानी जाती है।

विधुमुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विधुवदनी'।

विधुर[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० विधुरा] १ दु खी। २ घबराया हुआ। ३ डरा हुआ। ४ विकल। व्याकुल। जैसे—विरह विधुर। ५ असमर्थ। अशक्त। ६ परित्यक्त। शून्य। वचित। ७ विमूढ। ८ विरोधी (को०)। ६ एकाकी। अकेला। १०. (गाडी) जिसमे धुरा न हो (को०)।

विधुर[2]—सज्ञा पु० [स०] १ कष्ट। दु ख। २ वियोग। जुदाई। ३ अलग होने की क्रिया या भाव। ४ कैवल्य। मोक्ष। ५ शत्रु। दुश्मन। बैरी। ६ वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो [को०]।

विधुरा[1]—वि० स्त्री० [स०] १ कातर। व्याकुल। पीडित। २ विधवा। पतिहीना।

विधुरा[2]—सज्ञा स्त्री० १ कानो के पीछे की एक स्नायु ग्रथि जिसके पीडित या खराब होने से प्राणी बहरा हो जाता है। ३ दही की एक प्रकार की गाढ़ी लस्सी जिसे श्रीखड भी कहते हैं। रसाला।

विधुरित—वि० [स०] १ विवर्ण। मदप्रभ। २ कपित [को०]।

विधुवदनी—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा के समान मुखवाली स्त्री। सुदरी स्त्री। उ०—विधुवदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना वर नारी।—तुलसी (शब्द०)।

विधुवन—सज्ञा पु० [स०] कपन। हिलना [को०]।

विधूत—वि० [स०] १ कपित। काँपता हुआ। २ हिलता हुआ। डोलता हुआ। ३ त्यागा हुआ। छोडा हुआ। त्यक्त। ४. दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ५. निकाला हुआ। बाहर किया हुआ।

वितधूकल्मष—वि० [स०] दे० 'विधूतपाप्मा' [को०]।

विधूतकेश—वि० [स०] जिसके बाल लहरा रहे हो [को०]।

विधूतनिद्र—वि० [स०] सोते से जगाया हुआ [को०]।

विधूतपक्ष—वि० [स०] जिसने अपने पखने हिलाए हो [को०]।

विधूतपाप्मा—वि० [स० विधूतपाप्मन्] पाप से मुक्त। पापो से छुटकारा पाया हुआ [को०]।

विधूतबधन—सज्ञा [स० विधूतबन्धन] जिसने बधन दूर कर दिया हो। बधनमुक्त।

विधूतवेश—वि० [स०] जिसके वस्त्र लहरा या हिल रहे हो [को०]।

विधूति—सज्ञा स्त्री० [स०] थरथरी। कँपकँपी। विक्षोभ [को०]।

विधूनन[1]—पु० [स०] कपन। काँपना। विक्षोभ।

विधूनन[2]—वि० १ प्रतिघाती। विरोधक। विकर्षणशील। उ०— रस वात्सल्य करन अनुभव नित। विरह विधूनन हार मुख नाम।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४८१।

विधूनित—वि० [स०] १ क्षुब्ध। कँपित। उ०—हैं विल्प विधूनित होते, है छिपता पुलिन दिखाता। पत्तो पर बूँद पतन का, है टप टप नाद सुनाता।—पारिजात, पृ० १२५। २ उत्पीडित।

विधूम—वि० [स०] धूमरहित। बिना धुएँ का। उ०—जारि बारि कै विधूम वारिधि बुताई धूम।—तुलसी (शब्द०)।

विधूम्र—वि० [स०] धूमिल या मटमैले रग का। धूसर वर्ण।

विधूवन—सज्ञा पुं० [स०] कपन। काँपना।

विधृत[1]—वि० [स०] १ धारण या ग्रहण किया हुआ। २ पृथक् वा वियुक्त किया हुआ। ३ उठाया हुआ। ४ अधिकृत। स्वायत्तीकृत। अपनाया हुआ। ५. अवरुद्ध। ६ समर्थित। ७ रखा हुआ। रक्षित [को०]।

विधृत[2]—संज्ञा पु० १. असतोष। २ आदेश की अवहेलना। आज्ञा न मानना [को०]।

विधृति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ पृथक्ता। अलगाव। विभाजन। २ व्यवस्था। नियमन। उ०—सत्ता और विधृति ये दोनों प्रतिष्ठा के रूप है।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

विधेय—वि० [स०] १ विधान के योग्य। जिसका विधान या अनुष्ठान उचित हो। जिसका करना उचित हो। कर्तव्य। २ जिसका विधान हो या होनेवाला हो। जो किया जाय या किया जानेवाला हो। ३ जो नियम या विधि द्वारा जाना जाय। जिसके करने का नियम या विधि हो। ४ वचन या आज्ञा के वशीभूत। अधीन। ५ वह (शब्द या वाक्य) जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाय। जैसे,—'गोपाल सज्जन है' इस वाक्य में 'सज्जन है' विधेय है, क्योंकि वह गोपाल के संबंध में कुछ विधान करता है, अर्थात् उसकी कोई विशेषता बताता है।

विशेष—न्याय और व्याकरण में वाक्य के दो मुख्य भाग माने जाते हैं—उद्देश्य और विधेय। जिसके संबंध में कुछ कहा जाता है (अर्थात् कर्ता), वह उद्देश्य कहलाता है, और जो कुछ कहा जाता है, वह 'विधेय' कहलाता है।

६ आश्रित। निर्भर (को०)। ७ प्राप्य (को०)। ८ प्रज्वलित करने योग्य (को०)।

विधेय[2]—संज्ञा पुं० १ वह जो किया जाना चाहिए। कर्तव्य कर्म। प्रतिज्ञा या प्रस्थापन की उक्ति। ३ सेवक। भृत्य [को०]।

विधेयक—संज्ञा पु० [स०] अधिपत्र। विधान लिपि। अधिनियम का प्रस्तावित एवं प्राथमिक रूप। (अं० बिल) उ०—गवर्मेंट आफ इंडिया विधेयक (बिल) पार्लमेंट में प्रेषित किया गया।—भारतीय०, पृ० २।

विधेयज्ञ—वि० [स०] अपने कर्तव्य का ज्ञान रखनेवाला [को०]।

विधेयता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विधि की योग्यता। विधान का औचित्य। २ अधीनता। वश्यता।

विधेयत्व—संज्ञा पु० [सं०] विधेयता।

विधेयवर्ती—वि० [सं० विधेयवर्तिन्] दूसरे की आज्ञा में रहनेवाला। अधीन। वश्य [को०]।

विधेयात्मा[1]—संज्ञा पुं० [स० विधेयात्मन्] विष्णु [को०]।

विधेयात्मा[2]—वि० संयतात्मा। आत्मा को वश में रखनेवाला [को०]।

विधेयाविमर्ष—संज्ञा पुं० [स०] साहित्य में एक वाक्यदोष जो विधेय अंश को अप्रधान स्थान प्राप्त होने पर होता है। जो बात प्रधानतः कहनी है, उसका वाक्यरचना के बीच दबा रहना।

विशेष—प्रत्येक वाक्य में विधेय की प्रधानता के साथ निर्देश होना चाहिए। ऐसा न होना दोष है। 'विधेय' शब्द के समास के बीच पड़ जाने से या विशेषण रूप में आ जाने पर प्रायः यह दोष होता है। जैसे,—किसी वीर ने खिन्न होकर कहा—'मेरी इन व्यर्थ फूली हुई बाहों से क्या'। इस वाक्य में कहनेवाले का अभिप्राय तो यह है मेरी बाहें व्यर्थ फूली हैं, पर 'फूली हैं' के विशेषण रूप में आ जाने से विधेय की प्रधानता नहीं स्पष्ट होती। दूसरा उदाहरण—'मुझ रामानुज के सामने राक्षस क्या ठहरेंगे।' यहाँ कहना चाहिए था कि—'मैं राम का अनुज हूँ' तब राम के संबंध में लक्ष्मण की विशेषता प्रकट होती।

विधौत—वि० [स०] धुला हुआ। धोकर निर्मल किया हुआ। उ०—कठनगन मुक्तामाला इव मंजुल सुरसरि धारा। होना है विधौत पग पावन पूत पयोनिधि द्वारा।—पारिजात, पृ० १०।

विध्यापन—संज्ञा पुं० [स०] विकीर्ण करने या बिखेरनेवाला। तितर बितर करनेवाला [को०]।

विध्य—वि० [स०] १ बिंधने योग्य। छिदने योग्य। २ जिसे बेधना हो। जो छेद जानेवाला हो।

विध्यपराध—संज्ञा पुं० [स०] विधि या नियम की अवहेलना [को०]।

विध्यपाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] विधि के अनुकूल आचरण [को०]।

विध्यलंकार—संज्ञा पुं० [स० विध्यलङ्कार] एक काव्यालंकार जिसमें किसी सिद्ध बात का पुनर्विधान किया जाता है। दे० 'विधि'—६।

विध्यलंक्रिया—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विध्यलंकार'।

विध्याभास—संज्ञा पुं० [स०] १. एक अर्थालंकार जिसमें घोर अनिष्ट की संभावना दिखाते हुए अनिच्छापूर्वक किसी बात की अनुमति दी जाती है। जैसे,—विदेश जाते हुए नायक के प्रति नायिका का यह कथन 'जाते हो तो जाओ। जहाँ जाते हो, मैं भी वहाँ जन्म लेकर पहुँचूँगी'।

विध्र(ण्)[1]—संज्ञा पुं० [सं० ब्रध्न ?] सूर्य। उ०—विध्र, विरोचन, विभावसु, मार्तंड, त्रयिअंग।—नंद० ग्र०, पृ० ११२।

विध्र[2]—वि० सूर्य की तरह निर्मल। निर्दोष [को०]।

विध्वंस—संज्ञा पु० [स०] १ विनाश। नाश। बरबादी। २. घृणा। ३ अनादर। ४ वैर। ५ वैमनस्य।

विध्वंसक—संज्ञा पु० [सं०] १ नाश करनेवाला। २ छिछोरा। लंपट (को०)। ३ शत्रुओं के समुद्री पोतों को नष्ट करनेवाला पोत या अस्त्रशस्त्र (आधुनिक)।

विध्वंसन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विध्वंसित, विध्वस्त] विध्वंस करना। नाश करना। बरबाद करना।

विध्वंसात्मक—वि० [सं०] विध्वंस या विनाश करनेवाला। विनाशक। संहारक। उ०—यह समय भारत में ईसाइयत के प्रचार और (डेरोजीयनिज्म ऐसे) अति विध्वंसात्मक मतों के प्रसार का था।—हिं० का० प्र०, पृ० ३४।

विध्वंसित—वि० [स०] विध्वंस किया हुआ। नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ।

विध्वंसी—संज्ञा पु० [सं० विध्वंसिन्] [स्त्री० विध्वंसिनी] १ नाशकारी। सतीत्वनाश करनेवाला। २ बरबाद करने या होनेवाला। ३ दुश्मन। शत्रु। अरि (को०)।

विध्वस्त—वि० [सं०] १ नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ। २. इधर उधर बिकीर्ण या छिनराया हुआ (को०)। ३. अस्पष्ट। धुँधला (को०)। ४ ग्रहणग्रस्त (को०)।

विनशी—वि० [सं० विनशिन्] नष्ट होनेवाला। लुप्त होनेवाला (को०)।

विन[1]—सर्व० [हिं० वा (=उस)] प्रथम पुरुष बहुवचन सर्वनाम का वह रूप जो उसे कारकचिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है। जैसे,—विन ने, विन को, इत्यादि।

विन[2]—अव्य० [सं० विना] दे० 'बिना'।

विनअ—संज्ञा पु० [सं० विनय, प्रा० विणअ] दे० 'विनय'। उ०—तासु तनअ नअ विनअ गुन गरुअ राए गएनेस। जे पट्ठाइअ दसअो दिस कित्ति कुसुम सदेश।—कीर्ति०, पृ० १०।

विनक्क—संज्ञा पु० [सं० वणिक्, (स्वरव्यत्यय से) विणक्] दे० 'वणिक्'। उ०—गुरु पडन गुरु विदुष लच्छि पडन विनक्क घर।—पृ० रा०, ५५। ६३।

विनग्न—वि० [सं०] निर्वस्त्र। नगा (को०)।

विनटन—वि० [सं०] इधर उधर घूमना। चक्रमण (को०)।

विनत[1]—वि० [सं०] १ नीचे की ओर प्रवृत्त। झुका हुआ। २ टेढा पडा हुआ। वक्र। ३ सकुचित। सिकुडा हुआ। ४ विनीत। नम्र। ५. शिष्ट। शिक्षित। ६. अवसन्न। ७ हतोत्साह। ८ खिन्न (को०)।

विनत[2]—संज्ञा पु० १ सुग्रीव की सेना का एक बदर। २ शिव। महादेव। ३. एक प्रकार की चीटी (को०)। ४ सुद्युम्न का एक पुत्र (को०)। ५ व्याकरण मे स् का प् या न का ण होना। दे० विनाम।

विनतक—संज्ञा पु० [सं०] एक पर्वत का नाम।

विनतडी†—संज्ञा स्त्री० [सं० विनत+हिं० डा (प्रत्य०)] दे० 'विनती'। उ०—स्वामी तमो हौं सग न मेल्हो बीनतडी कहेस।—दादू (शब्द०)।

विनता[1]—वि० स्त्री० [सं०] कुबडी या खज (स्त्री)।

विनता[2]—संज्ञा स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप की स्त्री और गरुड की माता थी।

यौ०—विनतातनय, विनतात्मज, विनतानदन, विनतासुत = दे० 'विनतासूनु'। २ एक प्रकार का भयानक फोडा जो प्रमेह या बहुमूत्र के रोगियो को होता है।

विशेष—जिस स्थान पर यह फोडा होता है, वह स्थान मुरदा हो जाने के कारण नीला पड जाता है। सुश्रुत आदि प्राचीन ग्रंथो मे प्रमेह के अतर्गत इसकी चिकित्सा लिखी है। यह प्राय. घातक होता है। इसमे अग बहुत तेजी के साथ सडता चला जाता है। यदि बढने के पहले ही वह स्थान काटकर अलग कर दिया जाय, तो रोगी बच सकता है।

३. महाभारत के अनुसार एक राक्षसी जो व्याधि लाती है। ४. एक प्रकार की टोकरी वा डलिया (को०)। ५. रामायण के अनुसार एक राक्षसी का नाम जिसे रावण ने सीता को समझाने के लिये नियुक्त किया था।

विनतातनया—संज्ञा स्त्री० [सं०] विनता की कन्या जिसका नाम सुमति था। [को०]

विनतासूनु—संज्ञा पु० [सं०] १ अरुण। २ गरुड।

विनति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २ नम्रता। विनय। शिष्टता। सुशीलता। ३. अनुनय। प्रार्थना। विनती। ४ निवारण। रोक। ५ दमन। शासन। दड। ६ विनियोग।

विनतिय—संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] दे० 'विनति'। उ०—अतुल तेज प्रथिराज करव विनतिय हितकारिय।—प० रासो, पृ० ४३।

विनती—संज्ञा स्त्री० [सं० विनति] दे० 'विनति'।

विनतोदर—वि० [सं०] उदर के पास से झुका हुआ (को०)।

विनद—संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार का पेड। विन्याक वृक्ष। २. कोलाहल। ध्वनि। शोर (को०)।

विनदी—वि० [सं०] कोलाहल करनेवाला।

विनद्ध—वि० [सं०] १ बँधा हुआ। नँधा हुआ। २ जिसका बधन दूर किया गया हो। मुक्त।

विनमन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० विनत] १ नम्र करना। झुकाना। २. लचाना। लपाना।

विनमित—वि० [सं०] १ लचाया हुआ। नम्र। २ झुका हुआ (को०)।

विनम्र[1]—वि० [सं०] १ झुका हुआ। नम्र। २ विनीत। सुशील। ३ अवसन्न (को०)।

विनम्र[2]—संज्ञा पु० तगर का फूल।

विनम्रक—संज्ञा पु० [सं०] तगर वृक्ष का फूल (को०)।

विनय[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्यवहार मे दीनता या अधीनता का भाव। नम्रता। प्रणति। आजिजी। २ शिक्षा। नैतिक शिक्षण। मार्गदर्शन। ३ प्रार्थना। विनती। अनुनय। ४ शासन। तबीह। (स्मृति)। ५ नीति। उ०—नमत सबै करि विनय, विनय मत सबै बखानत।—गोपाल (शब्द०)।

विनय[2]—संज्ञा पु० १ वणिक्। बनिया। २ बला। बरियारा। ३. जितेंद्रिय। सयमी। ४ विनयपिटक (बौद्ध०)। उ०—'विनय जिसमे पाच ग्रथ है।'—हिंदु० सभ्यता, पृ० २४६।

विनय[3]—वि० १ फेंका हुआ। क्षिप्त। २. गुप्त। छिपाया हुआ। ३ दुर्वृत्त। अशिष्टाचारी। ४ अलग अलग करनेवाला। पृथक्कर्ता (को०)।

विनयकर्म—संज्ञा पु० [सं० विनयकर्मन्] शिक्षण। मार्गदर्शन (को०)।

विनयग्राही—वि० [सं० विनयग्राहिन्] अनुशासन के नियमो का पालक। आज्ञाकारी (को०)।

विनयधर—संज्ञा पु० [सं०] १ पुरोहित। २ अध्यक्ष। उ०—कम से कम निश्चित तथा अनिवार्य सख्या को 'गणपूर्ति' (कोरम) कहा जाता था और इसमे अध्यक्ष (विनयधर) की गणना नही होती थी।—आ० भा०, पृ० १६१।

विनयन—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिक्षा। अनुशासन। २. दूरीकरण। हटाना। दूर करना। उ०—रुधिर भरी वेदियाँ भयंकर

उनमे ज्वाला, विनयन का उपचार तुम्ही से खीच निकाला। —कामायनी, पृ० १६६।

विनयपिटक—सज्ञा पु० [स०] आदि बौद्ध शास्त्रो मे से एक।

विशेष—आदि बौद्ध शास्त्र, जो पाली भाषा मे है, तीन भागो मे विभक्त है—विनयपिटक, सूत्रपिटक और अभिधर्मपिटक। ये तीनो 'त्रिपिटक' नाम से प्रसिद्ध है। बुद्ध देव ने अपनी शिष्यमडली को भिक्षु धर्म के जो उपदेश दिए थे, वे ही विनयपिटक मे सगृहीत है। इसके सकलन के सबध मे यह कथा है कि बुद्ध भगवान् तथा सारिपुत्र मौद्गलायन आदि प्रधान प्रधान शिष्यो के निर्वाणलाभ करने पर बौद्ध शास्त्र के लुप्त होने का भय हुआ। इसपर महाकश्यप ने अजातशत्रु के राजत्वकाल मे राजगृह के पास वैभार पर्वत की सप्तपर्णी नाम की गुफा मे पाच सौ स्थविरो को आमत्रित करके एक बडी सभा की, जिसमे उपालि ने बुद्ध द्वारा उपदिष्ट 'विनय' का प्रकाश किया। इसके पीछे एक बार फिर गडबड उपस्थित होने पर वैशाली के वालिकाराम मे सभा हुई, जिसमे 'विनय' का फिर सग्रह हुआ। इस प्रकार कई सकलनो के उपरात अशोक के समय मे 'विनय' पूर्ण रूप से सकलित हुआ।

विनयप्रमाथी—वि० [स० विनयप्रमाथिन्] शिक्षा या अनुशासन न माननेवाला [को०]।

विनयभाक्—वि० [स० विनयभाज्] विनयी। विनम्र [को०]।

विनययोगी—वि० [स० विनययोगिन्] दे० 'विनयभाक्'।

विनयवाक्—वि० [स० विनयवाच्] मधुरभाषी। नम्रता से बात करनेवाला [को०]।

विनयवान्—वि० [स० विनयवत्] [स्त्री० विनयवती] जिसमे नम्रता हो। शिष्ट।

विनयशील—वि० [स०] विनययुक्त। नम्र। सुशील। शिष्ट।

विनयस्थ—वि० [स०] विनयशील [को०]।

विनयस्थिति स्थापक—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल मे विनय वा वाणिज्य विभाग की देख रेख करनेवाला अधिकारी। उ०—प्रातीय शासन के अधिकारियो मे कई पद थे जैसे, 'कुमारामात्य,' 'विनयस्थिति स्थापक' आदि।—आ० भा०, पृ० ४०२।

विनया'—सज्ञा स्त्री० [स०] वाट्यालक। बरियारा।

विनया[2]—सज्ञा स्त्री० [स० विनय] विनय। नम्रता। प्रार्थना। उ०—विना विनया नृप बद्ध कराय।—प० रासो, पृ० ४३।

विनयावनत—वि० [स०] विनय या शिष्टता से नम्र। नम्रता से झुका हुआ [को०]।

विनयासुर—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल मे राजसभा का एक कर्मचारी जो आगतुको के आगमन को सूचित करता, उनकी देखरेख करता एव उन्हे राजसभा मे ले जाता था।—[आ० भा०, पृ० ४४४।]

विनयी—वि० [स० विनयिन्] विनययुक्त। नम्र।

विनर्दन—सज्ञा पु० [स०] गरजन। चिग्घाड। शोरगुल [को०]।

विनयोक्ति—सज्ञा पु० [स०] विनयभरी उक्ति या कथन [को०]।

विनर्दी—वि० [स० विनर्दिन्] गरजनेवाला।

विनवना—क्रि० अ०, क्रि० स० [स० विनयन] दे० 'विनवना'।

विनशन—सज्ञा पु० [स०] [वि० विनष्ट, विनश्वर] १ नष्ट होना। नाश। बरबादी। हानि। लोप। क्षय। २. एक स्थान का नाम जहाँ सरस्वती नदी रेत में लुप्त हुई है (को०)।

विनशना—क्रि० अ० [स० विनशन] दे० 'विनसना'।

विनशाना—क्रि० स० [स० विनाशन] दे० 'विनसाना'।

विनश्वर—वि० [स०] सब दिन या बहुत दिन न रहनेवाला। नष्ट होनेवाला। व्यसशील। अचिरस्थायी। अनित्य। जैसे,—शरीर विनश्वर है।

विनश्वरता—सज्ञा स्त्री० [स०] अनित्यता। अचिरस्थायित्व।

विनश्वरत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विनश्वरता' [को०]।

विनष्ट—वि० [स०] १ नाश को प्राप्त। जो बरबाद हो गया हो। जो न रह गया हो। जिसका अस्तित्व मिट गया हो। ध्वस्त। २ मृत। मरा हुआ। ३ जो विकृत या खराब हो गया हो। जो व्यवहार के योग्य न रह गया हो। जो निकम्मा हो गया हो। बिगडा हुआ। ४ जिसका आचरण बिगड गया हो। भ्रष्ट। पतित। ५. मोहित। लुप्त। अलोप।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

यौ०—विनष्टचक्षु=जिसके चक्षु देख न सकें। विनष्टदृष्टि=दे० 'विनष्टचक्षु'। विनष्टधर्म=(१) धर्मभ्रष्ट व्यक्ति। (२) देश जिसका विधान भ्रष्ट हो।

विनष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नाश। २ लोप। ३ पतन।

विनष्टोपजीवी—वि० [स० विनष्टोपजीविन्] शव या सडी गली वस्तुओ को खाकर जीवन धारण करनेवाला [को०]।

विनस—वि० [स०] जिसे नासिका न हो। बिना नाक का। नकटा।

विनसना—क्रि० अ० [स० विनशन] नष्ट होना। न रहना। लुप्त होना। उ०—उपजै विनसै ज्ञान जिमि पाइ कुसग सुसग।—तुलसी (शब्द०)।

विनसाना[1]—क्रि० स० [हिं० विनसना का सक० रूप] १ ध्वस्त या नष्ट करना। २ बिगाडना।

विनसाना[2]—क्रि० अ० [स० विनशन] दे० 'विनसना'।

विना—अव्य० [स०] १. अभाव मे। न रहने की अवस्था मे। बगैर। जैसे—तुम्हारे विना यह काम न बनेगा। २. छोडकर। अतिरिक्त। सिवा। जैसे,—तुम्हारे विना और कौन यह काम कर सकता है।

विनाकृत—वि० [स०] १. अलग किया हुआ। २. परित्यक्त ३ निर्जन। निर्भृत। एकात [को०]।

विनाडि, विनाडिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विनाडी'।

विनाडी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक घडी का साठवाँ भाग। २४ सेकेंड का समय। पल।

विनाती‡—सज्ञा स्त्री० [स० विनती] विनती। विनय। उ०—ए गोसाइँ, सुनु मोरि विनाती।—जायसी (शब्द०)।

विनाथ—वि० [स०] जिसका कोई रक्षक न हो। अनाथ। उ०—नाथ नाथ विनाथ नाथ अनाथ नाथ सुसिद्ध।—केशव (शब्द०)।

विनादित—वि० [स०] शब्दित या ध्वनित [को०]।

विनादी—वि० [स० विनादिन्] नाद करनेवाला। शब्द करनेवाला। शोर करनेवाला [को०]।

विनान(पु)—सज्ञा पु० [स० विज्ञान, प्रा० विन्नाण] १ विज्ञान। सद्बोध। २ मधा। मति। बुद्धि। उ०—सुकी कहै सुक सभरौ, कही कथा प्रति प्रान। पृथु भोरा भीभग पहु, किम हुअ बंर विनान।—पृ० रा०, ५।१।

विनाभव—सज्ञा पु० [स०] पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव [को०]।

विनाभाव—सज्ञा पु० [स०] दे० विनाभव।

विनाम—सज्ञा पु० [स०] १ झुकाव। टेढापन २ भावप्रकाश के अनुसार किसी पीडा द्वारा शरीर का झुक जाना। ३. व्याकरण मे स् का ष् अथवा न् का ण् होना (को०)।

विनयित—वि० [स०] नम्र किया हुआ। झुकाया हुआ [को०]।

विनायक—सज्ञा पु० [स०] गणो के नायक, गणेश। २ गरुड। ३. विघ्न। बाधा। उ०—लसत विनायक केतु विनायक नसत निरखि रथ।—गोपाल (शब्द०)। ४ गुरु। ५ देवी का एक स्थान। ६ बुद्धदेव। ७ नेता। नायक (को०)। ८ वह जो (विघ्न) दूर करता हो (को०)।

विनायक[२]—वि० १ ले जानेवाला। २. हटानेवाला। दूर करनेवाला। ३. बिना नायक का। अनाथ [को०]।

विनायककेतु—सज्ञा पु० [स०] गरुडध्वज। श्रीकृष्ण। उ०—लसत विनायककेतु विनायक नसत निरखि रथ।—गोपाल (शब्द०)।

विनायक चतुर्थी—सज्ञा स्त्री० [स०] माघ महीने की शुक्ला चतुर्थी। माघ सुदी चौथ। गणेश चतुर्थी।

विशेष—इस दिन गणेश का पूजन और व्रत होता है।

विनायिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. विनायक की पत्नी। २. गरुड की पत्नी [को०]।

विनारुहा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'त्रिपर्णिका' [को०]।

विनाल—वि० [स०] नालरहित। बिना डठल का [को०]।

विनाश—सज्ञा पु० [स०] १ अभाव हो जाना। अस्तित्व का न रह जाना। न रहना। नाश। मिटना। ध्वस। बरबादी। २. लोप।। अदर्शन। ३ बिगड जाने का भाव। खराब हो जाना। चौपट हो जाना। खराबी। ४ बुरी दशा। तबाही। ५ हानि। नुकसान।

विनाशक—वि०, सज्ञा पु० [स०] १ विनाश करनेवाला। क्षय करनेवाला। २ बिगाडनेवाला। खराब करनेवाला। घातक।

विनाशधर्मा—वि० [स० विनाशधर्मन्] नश्वर। नाशवान् [को०]।

विनाशधर्मी—वि० [स० विनाशधर्मिन्] दे० 'विनाशधर्मा' [को०]।

विनाशन'—सज्ञा पु० [स०] [वि० विनाशी, विनाश्य] १ नष्ट करना। ध्वस्त करना। बरबाद करना। २ सहार करना। वध करना। उ०—दससीस विनाशन बीस भुजा।—तुलसी (शब्द०)। ३ खराब करना। बिगाडना। ४ एक असुर जो काल का पुत्र था।

विनाशन[२]—वि० नाशक। विध्वसक [को०]।

विनाशयिता—वि० सज्ञा पु० [स० विनाशयितृ] विनाश करनेवाला। नाश करनेवाला [को०]।

विनाशात—सज्ञा पु० [स० विनाशान्त] मरण। मृत्यु [को०]।

विनाशसभव—सज्ञा पु० [स० विनाशसम्भव] विनाश का निदान या प्रधान कारण [को०]।

विनाशहेतु—सज्ञा वि० [स०] विनाश का कारण या हेतु।

विनाशित—वि० [स०] १ नष्ट किया हुआ। ध्वस्त किया हुआ। २ मारा हुआ। ३ बिगाडा हुआ। खराब किया हुआ।

विनाशी—वि० [स० विनाशिन्] [वि० स्त्री० विनाशिनी] १ नष्ट करनेवाला। ध्वस्त करनेवाला। बरबाद करनेवाला। २ वध करनेवाला। मारनेवाला। ३ बिगाडनेवाला। खराब करनेवाला।

विनाशोन्मुख—वि० [स०] १. विनाश की ओर उन्मुख या प्रवृत्त। जिसका शीघ्र नाश होनेवाला हो। २ पारपक्व [को०]।

विनाश्य—वि० [स०] विनाश के योग्य।

विनास'—वि० [स०] नासारहित। बिना नाक का [को०]।

विनास(पु)[२]—सज्ञा पु० [स० विनाश] दे० 'विनाश'।

विनासक'—वि० [स०] बिना नाक का। नकटा।

विनासक(पु)[२]—वि०, सज्ञा पु० [स० विनाशक] दे० 'विनाशक'।

विनासन(पु)—वि०, सज्ञा पु० [स० विनाशन] दे० 'विनाशन'।

विनासना'(पु)—क्रि० स० [स० विनाशन] १ नष्ट करना। ध्वस्त करना। बरबाद करना। न रहने देना। २ सहार करना। वध करना। ३. खराब करना। बिगाडना।

विनासना[२]—क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना। खराब होना।

विनासिक—वि० [स०] बिना नाक का। नकटा [को०]।

विनासिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक विषयुक्त कीडी [को०]।

विनाह—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वीनाह' [को०]।

विनिद—वि० [स० विनिन्द] १ हँसोड। २ बढ जानेवाला [को०]।

विनिदक—वि०, सज्ञा पु० [स० विनिन्दक] १. अत्यत निंदा करनेवाला। २. आगे बढ जानेवाला।

विनिदा—सज्ञा स्त्री० [स० विनिन्दा] अतिशय निंदा। बहुत बुराई।

विनिदित—वि० [स० विनिन्दित] जिसकी बहुत निंदा या बुराई हुई हो। लाछित।

विनिःसरण—सज्ञा पु० [स०] निकलना। बहिर्गमन। बाहर जाना [को०]।

विनिःसृत—वि० [स०] १. पलायित। भागा हुआ। २. निकला हुआ। बहिर्गत। जो बाहर हुआ हो।

विनिःसृति—सज्ञा स्त्री० [स०] बाहर निकलना। विनिःसरण। भागना। पलायन [को०]।

विनिःसृष्ट—वि० [स०] निक्षिप्त। फेंका हुआ [को०]।

विनिकषण—सज्ञा पु० [स०] छीलने की क्रिया। खुरचना [को०]

विनिकार—सज्ञा पु० [स०] १ त्रुटि। क्षति। हानि। २. अपराध [को०]।

विनिकीर्ण—वि० [स०] १ बिखेरा हुआ। छितराया हुआ। इतस्ततः क्षिप्त। २. भरा हुआ। ढँका हुआ [को०]।

विनिकृत—वि० [स०] क्षति पहुचाया हुआ। जिसका तिरस्कार हुआ हो।

विनिकृतन—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो काटता या निकृतन करता हो। २ काटना। निकृतन। टुकडे टुकडे करना [को०]।

विनिकृत्त—वि० [स०] काटा हुआ। निकृतित [को०]।

विनिकेत—वि० [स०] निकेतरहित। गृहहीन। बेघर का।

विनिलोचन—सज्ञा पु० [स०] सिकोडना। सकोचन। जैसे,—भ्रूविनिकोचन [को०]।

विनिक्षिप्त—वि० [स०] १, नीचे गिराया या फेंका हुआ। २ किसी में या नीचे की ओर रखा हुआ [को०]।

विनिक्षेप—सज्ञा पुं० [स०] १ उछालना। फेंकना। २ अलगाव। ३ प्रेषण [को०]।

विनिगड—वि० [स० विनिगड] जिसके पैरों मे बेडी न हो। निगडरहित [को०]।

विनिगमक—वि० [स०] दो पक्षो मे से किसी एक पक्ष को सिद्ध करनेवाला।

विनिगमना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दो परस्पर विरुद्ध पक्षो मे से किसी एक पक्ष का युक्ति और प्रमाण द्वारा निश्चय। दो बातो मे से किसी एक बात के ठीक होने का निर्णय जो विचार और तर्क द्वारा हो। (वैशेषिक)। २ सिद्धात। नतीजा।

विनिगूहित—वि० [स०] छिपाया हुआ। ढका हुआ [को०]।

विनिगूहिता—सज्ञा पु० [स० विनिगूहितृ] वह जो गोप्य को छिपावे। गोपन करने या ढकनेवाला [को०]।

विनिग्रह—सज्ञा पु० [स०] १. नियम। बधेज। प्रतिबध। २ किसी वृत्ति को दबाकर अधीन करना। सयम। ३ अवरोध। रुकावट। ४ व्याघात। बाधा। ५. पारस्परिक विरोध (को०)। ६ पार्थक्य। अलगाव। विभाजन (को०)।

विनिग्राह्य—वि० [स०] निग्रह के योग्य। अवरुद्ध करने लायक।

विनिर्घूर्णित—वि० [स०] १ चक्कर करता हुआ। घूमता हुआ। २. अशात। क्षुब्ध [को०]।

विनिघ्न—वि० [स०] १. नष्ट। बरबाद। २ गुणित। वृद्धिगत। गुणा किया हुआ।

विनिच्चय—सज्ञा पु० [विनिश्चय, पा० विनिच्चय] न्यायाधीश। उ०—अट्ठकथा के अनुसार विनिच्चय ... यह आठ न्यायाधीश थे, जो एक एक करके मुकद्दमो की जाँच करते थे।—हिंदु० सभ्यता पृ० २६२।

विनिद्र'—सज्ञा पु० [स०] १. अस्त्र का एक संहार जिससे अस्त्र द्वारा निद्रित या मूर्छित व्यक्ति को नीद या बेहोशी दूर होती है। २. नीद न आने का एक रोग।

विनिद्र—वि० १ जिसकी नीद खुल गई हो। २ मुकुलित। खुला हुआ। फूला हुआ (को०)।

विनिद्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] निद्रा का अभाव। जागरण [को०]।

विनिद्रत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विनिद्रता'।

विनिध्वस्त—वि० [स०] नष्टभ्रष्ट। विध्वस्त किया हुआ [को०]।

विनिपतित—वि० [स०] अध.पतित। गिरा हुआ [को०]।

विनिपात—सज्ञा पु० [स०] १ विनाश। ध्वंस। बरबादी। २ वध। हत्या। ३ अवमान। अनादर। नजर से गिरना। ४ अधपतन। गिराव (को०)। ५ नरकपात। नरक (को०)। ६ क्षय। मृत्यु (को०)। ७ घटित होना। घटना (को०)। ८ पीड़ा। कष्ट। दुःख (को०)।

यौ०—विनिपातग्रस्त = अध पतित। दुर्भाग्यग्रस्त। विपन्न। विनिपातप्रतीकार = विपत्ति या कष्ट से बचने का उपाय। विनिपातशसी = उत्पात, विपत्ति या दुर्भाग्य का सूचक।

विनिपातक—सज्ञा पु० [स०] १ विनाशकारी। २. सहारकर्ता। ३. अपमान करनेवाला।

विनिपातन—सज्ञा पुं० [सं०] गर्भपातन। गर्भ गिराने की क्रिया [को०]।

विनिपातित—वि० [स०] १ जिसका विनिपात किया गया हो। गिराया हुआ। ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। २ मारा हुआ। हत [को०]।

विनिपाती—वि० [स० विनिपातिन] विनिपात करनेवाला। गिरानेवाला [को०]।

विनिबध—सज्ञा पु० [स० विनिबन्ध] किसी वस्तु से लगाव या सबध होना [को०]।

विनिबधन—सज्ञा पु० [स० विनिबन्धन] दे० 'विनिबध'।

विनिमग्न—वि० [स०] डूबा हुआ। लीन।

विनिमय—सज्ञा पु० [स०] १ एक वस्तु लेकर बदले मे दूसरी वस्तु देने का व्यवहार। अदल बदल। परिवर्तन। परिदान। २ गिरवी। बधक। ३ वर्णव्यत्यय। वर्णों का परिवर्तन (को०)। ४ अन्योन्यता। परस्परता (को०)। ५ किसी देश की मुद्रा या सिक्के का अन्य देश की मुद्रा मे परिवर्तन। जैसे, पौंड या डालर का भारतीय सिक्के मे। (अ० एक्सचेंज)।

विनिमित्त—वि० [स०] निमित्त या कारणरहित। जिसका कोई मुख्य कारण न हो [को०]।

विनिमीलन—सज्ञा पु० [स०] बद होना।

विनिमीलित—वि० [स०] जो बद हो गया हो। मुद्रित। सकुचित। मुँदा हुआ [को०]।

विनिमीलितेक्षण—वि० [स०] मुँदी हुई आँखोवाला [को०]।

विनिमेष, विनिमेषण—सज्ञा पु० [स०] १ (आँखो का) झपकना। पलको का गिरना। २ सकेत। इगित [को०]।

विनियत—वि० [स०] नियमन किया हुआ। नियत्रित। प्रतिबद्ध [को०]।

यौ०—विनियतचेता = जिसका चित्त वश मे हो। सयतात्मा। विनियतवाक् = (१) सयत कथन। (२) जिसकी वाणी सयमित हो। विनियताहार = मितभोजी। कम खानेवाला।

विनियम—सज्ञा पु० [स०] १ निग्रह। रोक। सयम। प्रतिबध। २ शासन [को०]।

विनियम्य—वि० [स०] नियमन के योग्य। वश मे रखने लायक [को०]।

विनियुक्त—वि० [स०] १ किसी काम मे लगाया हुआ। नियोजित। २ अर्पित। ३ प्रेरित। ४ अलग किया हुआ। विच्छिन्न (को०)। ५. व्यवहृत (को०)। ६. समादिष्ट। विहित (को०)।

विनियुक्तात्मा—वि० [स० विनियुक्तात्मन्] जिसका मन किसी वस्तु मे केंद्रित हो गया हो [को०]।

विनियोक्तव्य—वि० [स०] १ नियुक्त करने योग्य। २. आदेश को पूर्ण करने मे समर्थ [को०]।

विनियोक्ता—वि० [स० विनियोक्तृ] नियुक्त करनेवाला [को०]।

विनियोग—सज्ञा पु० [स०] १ किसी फल के उद्देश्य से किसी वस्तु का उपयोग। किसी विषय मे लगाना। प्रयोग। २. किसी वैदिक कृत्य मे मत्र का प्रयोग। ३ प्रेषण। भेजना। ४ प्रवेश। घुसना। ५ अलगाव। विभाग। विभाजन (को०)। ६ छोडना। त्यागना (को०)। ७ रुकावट। अडचन। ८ सबध। ताल्लुक (को०)।

विनियोजित—वि० [स०] १ प्रयुक्त। नियुक्त। लगाया हुआ। २ अर्पित। ३ प्रेरित।

विनियोज्य वि० [स०] १ नियुक्त किया जानेवाला। २. उपयोग किया जानेवाला [को०]।

विनिरोध—वि० [स०] १ जो निरोध न करे। निष्क्रिय। २ अप्रभावित [को०]।

विनिरोधी—वि० [स० विनिरोधिन्] निरोध करनेवाला। रोकनेवाला। बाधा उपस्थित करनेवाला।

विनिर्गत—वि० [स०] १ निकला हुआ। जो बाहर हुआ हो। बहिर्गत। २ गया हुआ। जो चला गया हो। निष्क्रात। ३ बीता हुआ। अतीत। व्यतीत।

विनिर्गम—सज्ञा पुं० [स०] १ बाहर होना। निकलना। २. प्रस्थान। चला जाना।

विनिर्घोष—सज्ञा पुं० [स०] उच्च स्वर।

विनिर्जन—वि० [स०] निर्जन। सुनसान। जनहीन [को०]।

विनिर्जय—सज्ञा स्त्री० [स०] पूरी जीत। पूर्ण विजय [को०]।

विनिर्जित—वि० [स०] पूर्णत पराजित। पूरी तौर से हारा हुआ [को०]।

विनिर्णय—सज्ञा पु० [स०] १ दृढ निश्चय। २ निर्धारित नियम। ३ पूर्ण रूप रूप से निबटारा या फैसला [को०]।

विनर्णीत—वि० [स०] १ निश्चित। २ स्पष्टतया निर्णीत [को०]।

विनिर्दग्ध—वि० [स०] पूर्ण रूप से जला या नष्ट किया हुआ [को०]।

विनिर्दहन—सज्ञा पु० [स०] पूरी तौर से जला डालना। सपूर्णतया नष्ट कर देना [को०]।

विनिर्दिष्ट—वि० [स०] जिसका निर्देश किया गया हो। विशेष रूप से निर्दिष्ट। सुस्पष्ट। उ०—देश (स्थान) और काल (उससे सबद्ध समय) दोनो दिए हो तो वह घटना या तथ्य पूर्णतया विनिर्दिष्ट होता है।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २२३।

विनिर्देश्य—वि० [स०] उल्लेख योग्य। जिसका निर्देश किया जाय।

विनिर्धुत, विनिर्धूत—वि० [स०] कपित या क्षुब्ध किया हुआ। २ क्षिप्त या फेंका हुआ [को०]।

विनिर्धौत—वि० [स०] भली भाँति धुला हुआ। स्वच्छ। निर्मल।

विनिर्बध—सज्ञा पुं० [स० विनिर्बन्ध] आग्रह। हठता।

विनिर्बाहु—सज्ञा पुं० [स०] तलवार चलाने का एक प्रकार [को०]।

विनिर्भिन्न—वि० [स०] खडित। टूटा हुआ। छिन्न भिन्न। फटा हुआ।

विनिर्भोग—सज्ञा पुं० [स०] एक कल्प का नाम।

विनिर्मद—वि० [स०] निरभिमान। गर्वरहित। निर्विकार। उ०—श्यामश्यामा के युगल पद कोकनद मन के विनिर्मद।—अर्चना, पृ० ९९।

विनिर्मल—वि० [स०] निर्मल। स्वच्छ। पूत। पवित्र। उ०—प्रथम वंदूँ पद विनिर्मल।—अर्चना, पृ० २७।

विनिर्माण—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विनिर्मित] विशेष रूप से निर्माण होना। अच्छी तरह बनना।

विनिर्माता—सज्ञा पु० [स० विनिर्मातृ] निर्माता।

विनिर्मित—वि० [स०] १ विशेष रूप से निर्मित या बना हुआ। जैसे,—प्रस्तरविनिर्मित भवन। २ बनाया हुआ। निर्माण किया हुआ (को०)। ३. (उत्सव आदि) जो सपन्न या मनाया गया हो (को०)। ४ निर्धारित। निश्चित (को०)।

विनिर्मिति—सज्ञा स्त्री० [स०] कृति। रचना। निर्माण (को०)।

विनिर्मुक्त—वि० [स०] १ बाहर निकला हुआ। बहिर्गत। २ जो खुला हो या ढँका न हो। अनाच्छन्न। ३ छूटा हुआ। बंधन से रहित।

विनिर्मुक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] पूरी स्वतत्रता होना। बधराहित्य। पूर्ण मुक्ति [को०]।

विनिर्मूढ—वि० [स० विनिर्मूढ] कर्तव्यबोध रखनेवाला [को०]।

विनिर्मोक—सज्ञा पु० [स०] १. निर्मोक रहित। २. बिना पहनावे का। वस्त्ररहित। परिधानशून्य।

विनिर्मोक्ष—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विनिर्मुक्ति'।

विनिर्याण—सज्ञा पु० [स०] गमन। प्रस्थान [को०]।

विनिर्यात—वि० [स०] गत। गया हुआ [को०]।

विनिर्वाण—सज्ञा पुं० [स०] विशेष प्रकार की मुक्ति। उ०—तर्क सिद्ध है, स्वप्न एक है विनिर्वाण यह।—अपरा पृ० १८७।

विनिवर्तक—वि० [स०] रद्द करने या बदलनेवाला [को०]।

विनिवर्तन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विनिवर्तित, विनिवर्ती] लौटना।

विनिवर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] विराम। निवृत्ति [को०]।

विनिवर्तित—वि० [स०] वापस किया हुआ। लौटाया हुआ [को०]।

विनिवर्ती—वि० [स०] वापस करने या परिवर्तन करनेवाला [को०]।

विनिवारण—सज्ञा पु० [स०] निवारण करना। दूर करना। नियंत्रित करना।

विनिविष्ट—वि० [स०] १ बसा हुआ। निवास किया हुआ। २ रखा हुआ। रक्षित [को०]।

विनिवेदन—सज्ञा पु० [सं०] विशिष्ट रूप मे निवेदन करना। घोषित

विनि[illegible] लौटा हुआ। वापस आया हुआ। २ (सेवा) [illegible]पन्न। ४ निकाला हुआ। उत्पन्न। ५

यौ०—विनिवृत्तकाम = आकाङ्क्षारहित। कामनाओं से मुक्त। विनिवृत्तशाप = शापमुक्त।

विनिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विश्रांति। आराम। मुक्ति। २ निवारण। दूरीकरण। ३ अंत। अवसान। समाप्ति [को०]।

विनिवेश—संज्ञा पु० [सं०] १ प्रवेश। घुसना। २ निवास करना। बसना। ३ छाप। चिह्न। ४ (पुस्तक आदि में) उल्लेख करना [को०]।

विनिवेशन—वि० [सं०] [वि० विनिवेशित, विनिवेशी] १ प्रवेश। घुसना। २ अधिष्ठान। स्थिति। वास। रहायश। ३ निर्माण [को०]। ४ व्यवस्था [को०]। ५ चिह्न या छाप डालना [को०]।

विनिवेशित—वि० [सं०] १ प्रविष्ट। घुसा हुआ। २ ठहरा या टिका हुआ। अधिष्ठित। स्थापित। ३ बसा हुआ। ४ निर्मित। रचा या बना हुआ [को०]।

विनिवेशी—वि० [सं० विनिवेशिन्] [स्त्री० विनिवेशिनी] १ प्रवेश करनेवाला। घुसनेवाला। २ रहनेवाला। बसनेवाला।

विनिश्चय—संज्ञा पु० [सं०] १ निश्चित करना। तय करना। २ निर्णय। निश्चय।

विनिश्चल—वि० [सं०] अचल। दृढ। कंपरहित। स्थित [को०]।

विनिश्वसित—संज्ञा पु० [सं०] साँस। प्रश्वास [को०]।

विनिश्वास—संज्ञा पु० [सं०] उच्छ्वास। गहरी साँस। उसास [को०]।

विनिपूदित—वि० [सं०] पूर्ण रूप से उच्छिन्न या नष्ट किया हुआ [को०]।

विनिष्कंप—वि० [सं० विनिष्कम्प] स्थिर। अचल [को०]।

विनिष्टप्त—वि० [सं०] भली भाँति पकाया या भूना हुआ [को०]।

विनिष्पतित—वि० [सं०] आगे की ओर उछला या झपटा हुआ [को०]।

विनिष्पात—संज्ञा पु० [सं०] तेजी से झपटना या टूट पड़ना [को०]।

विनिष्पाद्य—वि० [सं०] पूरा करने योग्य [को०]।

विनिष्पेष—संज्ञा पु० [सं०] कुचलना। पीसना। मर्दित करना। रगड़ना। मलना [को०]।

विनिस्तंद्र—वि० [सं० विनिस्तन्द्र] तंद्राविहीन। निरालस। उ०—कुब्जटिका अट्टहास अतर्दंग विनिस्तंद्र।—आराधना, पृ० १३।

विनिस्तार—संज्ञा पु० [सं०] १. पारगमन। मुक्ति। छुटकारा। उद्धार। उ०—कठिन यह संसार, कैसे विनिस्तार, ऊर्मि का पाथार, कैसे करे पार।—अर्चना, पृ० ७५।

विनिस्मृत—वि० [सं०] निर्दिष्ट। स्मृत। कीर्तित। वर्णित। लिखित [को०]।

विनिहत¹—वि० [सं०] १ चोट खाया हुआ। आहत। २ विनष्ट। ध्वस्त। बरबाद। ३ मारा हुआ। मृत। ४ लुप्त। ५ पूरी तरह परास्त किया हुआ (को०)। ६ उपेक्षित। उल्लंघित। तिरस्कृत (को०)।

विनिहत²—संज्ञा पु० १ कोई बड़ी या अनिवार्य विपत्ति। भाग्यदोष से या दैवात् आनेवाला संकट। २ धूमकेतु।

विनिहित—वि० १ नीचे रखा हुआ। २ जमाया हुआ। नियुक्त। ३ विकीर्ण। विभक्त। अलग किया हुआ।

विनिहितदृष्टि—वि० [सं०] जिसकी दृष्टि किसी वस्तु पर लगी हो [को०]।

विनिहितमना—वि० [सं० विनिहितमनस्] जिसने किसी बात का दृढ निश्चय कर लिया हो [को०]।

विनिह्नुत—वि० [सं०] १ छिपा हुआ। २ अस्वीकृत [को०]।

विनीत¹—वि० [सं०] १ जिसमें उत्तम शिक्षा का संस्कार और शिष्टता हो। विनययुक्त। सुशील। २. व्यवहार में अधीनता प्रकट करनेवाला। शिष्ट। नम्र। ३ जितेंद्रिय। ४ संयमी। ५ ग्रहण किया हुआ। ६ सिखाया हुआ। ७ दूर किया हुआ। हटाया हुआ। ले गया हुआ। ८ जिसको तंबीह की गई हो। दंडित। शासित। ९ नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला। धार्मिक। १० प्रिय। मनोहर (को०)। ११ साफ सुथरा (कपड़ा आदि)।

विनीत²—संज्ञा पु० १ वणिक्। बनिया। साहु। २ निकाला हुआ घोड़ा। ३ पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम। दमनक। दौने का पौधा। ५ सधाया हुआ बैल (को०)।

विनीतक—संज्ञा पु० [सं०] १ वाहन। पालकी। २. वह जो वहन करे। वाहक। [को०]।

विनीतता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विनीत होने का भाव। नम्रता।

विनीतत्व—संज्ञा पु० [सं०] विनीतता। नम्रता [को०]।

विनीता—वि० स्त्री० [सं०] विनयवाली। नम्र (स्त्री)। उ०—कुछ नहीं कहा क्या सीता ने, वैदेही वधू विनीता ने ?—साकेत, पृ० १८५।

विनीति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विनय। सुशीलता। २ सद्व्यवहार। ३ समाधान।

विनीय—संज्ञा पु० [सं०] १ पाप। दोष। जुर्म। अपराध। २ तलछट [को०]।

विनील—वि० [सं०] गहरा नीला। नील वर्ण का [को०]।

विनीलक—संज्ञा पुं० [सं०] वह मृत देह जो नीला पड़ गया हो। नीला शव। (बौद्ध)।

विनु पै†—अव्य० [सं० विना] बिना¹।

विनुक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। २ आश्वलायन श्रौत सूत्र के अनुसार एकाह कृत्य का नाम। ३ अपवारण। दूर करना (को०)।

विनुन्न—वि० [सं०] १ अपकारित। दूर किया हुआ। २ चोट खाया हुआ। घायल [को०]।

विनूट(पु)†—वि० [हिं० अनूठा?] दे० 'विनूठा'। उ०—अब सचिव मुद्र विनूट।—पृ० रा०, ६१। २११।

विनूठा†—वि० [हिं० अनूठा?] अनूठा। सुंदर। बढ़िया।

विने†—सर्व० हिं० विन+ने] दे० 'वह'। उ०—मेरे घर कूँ मेहमान जो आएगा। के यो शीर खुरमाँ विन खाएगा।—दक्खिनी०, पृ० ३३१।

विनेता¹—संज्ञा पु० [सं० विनेतृ] १ अगुआ। नेता। पथप्रदर्शक। २ अध्यापक। गुरु। शिक्षक। ३ दंड देनेवाला। ४ राजा। शासक [को०]।

विनेय¹—वि० [सं०] १ दंडनीय। शासन के योग्य। जिसको दंड दिया जाय। २ हटा देने या ले जाने लायक। नेतव्य। ३ शिक्षा देने योग्य। जिसे शिक्षा दी जाय [को०]।

विनेय[१]—स० पुं० शिष्य। वह जो शिक्षा ग्रहण करता हो। अंतेवासी। छात्र [को०]।

विनोक्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] एक अलंकार जिसमें (किसी वस्तु के अभाव में) किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता वर्णन की जाती है। जैसे—(क) जिय बिनु देह नदी बिनु वारी। तैसेइ नाथ पुरुष बिनु नारी।—तुलसी (शब्द०)। (ख) कैसे नीके लगत ये बिनु सँकोच के बैन।—बिहारी (शब्द०)

विनोद—संज्ञा पु० [सं०] १ कौतूहल। तमाशा। मनोरंजक व्यापार। २ क्रीडा। खेल कूद। लीला। ३ प्रमोद। हँसी। दिल्लगी। परिहास। ४ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन। ५ एक प्रकार का प्रासाद। प्रमोदगृह। ६ हर्ष। आनंद। प्रसन्नता।

यौ०—विनोदरसिक = क्रीडाशील। कौतुकी। विनोद में आनंद लेनेवाला। विनोदस्थान = आनंददायक स्थान। क्रीडा विनोद की जगह।

७ हटाना। दूर करना। अपनयन। जैसे, श्रमविनोद (को०)। ८ औत्सुक्य। उत्सुकता। उत्कंठा (को०)।

विनोदन—संज्ञा पुं० [स०] [वि० विनोदित, विनोदी] १ ऐसे व्यापार करना जिनका उद्देश्य केवल मनोरंजन हो। आमोद प्रमोद करना। क्रीडा करना। खेल कूद करना। २ हँसी दिल्लगी या हास विलास करना। ३ आनंद करना। ४. हटाना। दूर करना। अपवारण (को०)।

विनोदित—वि० [सं०] १. हर्षित। प्रसन्न। २ अपवारित। दूर किया या हटाया हुआ (को०)। ३. कुतूहलयुक्त।

विनोदी—वि० [स० विनोदिन्] [वि० स्त्री० विनोदिनी] १ कुतूहल करनेवाला। आमोद प्रमोद करनेवाला। क्रीडा करनेवाला। २ खेल कूद करनेवाला। चुहलबाज। ३ जिसका स्वभाव आमोद प्रमोद करने का हो। आनंदी। ४ हटाने या दूर करनेवाला। अपवारण करनेवाला (को०)। ५ क्रीडाशील। खेलकूद या हँसी ठट्ठे में रहनेवाला। उ०—श्याम विनोदी रे मधुबनिया। —सूर (शब्द०)।

विन्न वि० [स०] १ जाना हुआ। ज्ञात। २ प्राप्त। लब्ध। हासिल। ३ रखा हुआ। ४. विचारविमर्श किया हुआ। अनुसहित। विचारित। ५ अस्तित्वयुक्त। अस्तित्व या सत्ता रखनेवाला। ६. [स्त्री० विन्ना] परिणीत। विवाहित [को०]।

विन्नक—संज्ञा पु० [स०] अगस्त्य ऋषि [को०]।

विन्नप—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजतरंगिणी के अनुसार एक राजा का नाम। २. अगस्त्य ऋषि [को०]।

विन्ना—संज्ञा स्त्री० [स०] विवाहिता स्त्री [को०]।

विन्यय—संज्ञा पुं० [स०] दशा। स्थिति। [को०]।

विन्यसन—संज्ञा पुं० [स०] विन्यास करना [को०]।

विन्यस्त—वि० [स०] १. रखा हुआ। स्थापित। २ यथास्थान बैठाया हुआ। जड़ा हुआ। ३. करीने से लगा हुआ। ४. डाला हुआ। क्षिप्त। ५ सौंपा हुआ। समर्पित (को०)। ६. उपस्थित किया हुआ। प्रस्तुत (को०)।

विन्याक—संज्ञा पुं० [स०] बरियारा नाम का पौधा।

विन्यास—संज्ञा पुं० [स०] [वि० विन्यस्त] १. स्थापन। रखना। धरना। उ०—शेली ने प्रबंधक्षेत्र में भी अच्छी तरह घुसकर भावों की अनेकरूपता का विन्यास किया था।—रस०, पृ० ६६। २ यथास्थान स्थापन। ठीक जगह पर करीने से रखना या बैठाना। सजाना। रचना। ३ जड़ना। ४. किसी स्थान पर डालना। ५ सौंपना। समर्पण (को०)। ६ संग्रह। समवाय (को०)। ७ फैलाना। विस्तार करना (को०)। ८ आधार। स्थान (को०)। ९ स्थिति। जैसे, अंगविन्यास (को०)।

विपचनक—संज्ञा पुं० [स० विपञ्चनक] ज्योतिषी। भविष्यद्वक्ता [को०]।

विपचिक—संज्ञा पुं० [स० विपञ्चिक] [स्त्री० विपचिका] भविष्यद्वक्ता [को०]।

विपचिका, विपची—संज्ञा स्त्री० [स० विपञ्चिका, विपञ्ची] १ एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे रहते हैं। एक प्रकार की वीणा। उ०—(क) नवल बसंत धुनि सुनिए विपची नाद पंचम सुरनि ठानि ओठनि अमेठिए।—देव (शब्द०)। (ख) तंत्री वीणा वल्लभी बहुरि विपंची आहि।—नंददास (शब्द०)। २ केलि। क्रीडा। खेल।

विप—वि० [सं०] विद्वान् [को०]।

विपक्वम—वि० [स०] विपक्व। पका हुआ। परिपक्व [को०]।

विपक्व—वि० [स०] १ खूब पका हुआ। २ पूर्ण अवस्था को प्राप्त। ३ जो पका न हो। कच्चा।

विपक्ष[१]—संज्ञा पुं० [स०] १ विरुद्ध पक्ष। किसी बात के विरुद्ध दूसरी स्थिति। २ शत्रु या विरोधी का पार्श्व। ३ विरोध करनेवाला दल। शत्रु पक्ष। विरोधी। प्रतिद्वंद्वी। दूसरा फरीक। जैसे—विपक्ष में जाना। ४ प्रतिवादी या शत्रु। विरुद्ध दल का मनुष्य। ५ किसी बात के विरुद्ध की स्थापना। विरोध। खंडन। जैसे,—इसके विपक्ष में तुम्हें क्या कहना है? ६ व्याकरण में किसी नियम के विरुद्ध व्यवस्था बाधक नियम। अपवाद। ७. न्याय या तर्क शास्त्र में वह पक्ष जिसमें साध्य का अभाव हो। ८. वह दिन जब पक्ष बदले (को०)। ९ निष्पक्ष होने का भाव। निष्पक्षता। पक्षविहीनता (को०)।

विपक्ष[२]—वि० १. विरुद्ध। खिलाफ। प्रतिकूल। २. उलटा। विपरीत। ३ जिसके पक्ष में कोई न हो। जिसका कोई तरफदार न हो। बिना पक्ष का। ४ बिना पर या डैने का। पक्षहीन।

यौ०—विपक्षभाव, विपक्षवृत्ति=दे० 'विपक्षता'। विपक्षरमणी।

विपक्षता—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विरुद्ध पक्ष का अवलंबन। २. विपक्ष होने की क्रिया या भाव। खिलाफ होना।

विपक्षरमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी किसी अन्य स्त्री से प्रतिद्वंद्विता हो [को०]।

विपक्षी—सज्ञा पु० [स० विपक्षिन्] १ विरुद्ध पक्ष का। दूसरी तरफ का। २ शत्रु। प्रतिद्वद्वी। प्रतिवादी। फरीक सानी। ३ बिना पक्ष का। बिना पख या डैने का।

विपच्छ—सज्ञा पु० [स० विपक्ष, प्रा० विपच्छ] १ दे० 'विपक्षी'। २ बिना पख या डैने का। उ०—गिरिहै विपच्छ बनाइ। —गुमान (शब्द)।

विपज्जन्य—वि० [स० विपत्+जन्य] दुखी। पीडित। उ०—जन विपज्जन्य होकर अगर आपके—आराधना, पृ० १६।

विपण, विपणन—सज्ञा पु० [स०]

विपणि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूकान। २ विक्रय का सामान। ३ व्यापार। ४ विक्रय। ५ बाजार। उ०—अपने इन विहारो के दौरान मे कर्मशाला, सभा, कूप, विपणि, निर्माण-शाला—इन सब आवासस्थानो मे।—हिदु० सभ्यता, पृ० २२५।

यौ०—विपणिकर्म। विपणिगत=बाजार मे उपलब्ध या प्राप्त। विपणिजीविका=व्यापारजीवी। व्यवसायी। विपणिपथ=बाजार का मार्ग। पण्यवीथी।

विपणिकर्म—सज्ञा पु० [स० विपणिकर्मन्] दूकानदारी। व्यापार।

विपणी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपणि'।

विपणी[2]—सज्ञा पु० [स० विपणिन्] व्यापारी [को०]।

विपण्यु—वि० [स०] १ जिसने अपना रोजगार धधा छोड दिया हो। २ अन्यमनस्क [को०]।

विपताक—वि० [स०] पताकारहित। ध्वजविहीन [को०]।

विपतित—वि० [स०] १ गिरा हुआ। २ उडा हुआ [को०]।

विपत्—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपद्'।

यौ०—विपत्कर=कष्टकर। विपत्ति पैदा करनेवाला। विपत्काल=बुरा समय। विपज्जन्य। विपत्फल=जिससे सकट उठाना पडे। विपत्सकुल=विपत्तियो, आपत्तियो से भरा हुआ। उ०—छोटे छोटे राज्यो से हो गया विपत्सकुल यह देश।—अपरा, पृ० २१६। विपत्सागर=बहुत बड़ा सकट। विपत्तियो का समुद्र।

विपत्ति[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कष्ट, दुख या शोक की प्राप्ति। भारी रज या तकलीफ का आ पड़ना। आफत। २ क्लेश या शोक की स्थिति। रज या तकलीफ की हालत। सकट की अवस्था। बुरे दिन। जैसे,—विपत्ति मे कोई साथी नही होता।

क्रि० प्र०—आना।—पडना।

मुहा०—विपत्ति उठाना=सकट या कष्ट सहना। रज या तकलीफ बरदाश्त करना। विपत्ति काटना=सकट या कष्ट के दिन बिताना। रज या तकलीफ मे रहना। विपत्ति झेलना=कष्ट या शोक सहना। (किसी पर) विपत्ति डालना=(किसी को) शोक या दुख पहुँचाना। किसी को रज या तकलीफ में डालना। (किसी पर) विपत्ति ढहना=सहसा कोई दुख या शोक उपस्थित होना। एक बारगी आफत आना। विपत्ति मे डालना=सकट या दुख की अवस्था मे करना। विपत्ति मे पडना=शोक, दुख या सकट की दशा को प्राप्त होना। विपत्ति भुगतना या भोगना=शोक, दुख या संकट सहना।

३ कठिनाई। झझट। बखेडा।

मुहा०—विपत्ति मोल लेना=व्यर्थ अपने ऊपर झझट लेना। बखेडे मे पडना। विपत्ति सिर पर लेना=व्यर्थ झझट मे पडना। दिक्कत मे पडना।

४ मृत्यु। नाश। विध्वस (को०)। ५ समाप्ति।

विपत्ति[2]—सज्ञा पु० श्रेष्ठ पदाति। पैदल सिपाही। प्यादा [को०]।

विपथ—सज्ञा पु० [स०] १ कुमार्ग। बुरी राह। खराब रास्ता। २ बगल का रास्ता। ३ बुरी चाल चलन। बद आचरण। ४ एक प्रकार का रथ।

यौ०—विपथगति=कुमार्ग गमन। विपथगमन। विपथगा। विपथगामी।

विपथगा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सरिता। नदी। २ वह जो कुमार्ग पर चले [को०]।

विपथगामिन्—वि० [स० विपथगामिन्] [वि० स्त्री० विपथगामिनी] कुमार्गगामी। विरुद्ध मार्ग पर चलनेवाला। उ०—विपथ-गामी होने पर, वही सकेत करके मनुष्य का अनुशासन करती है।—आँधी, पृ० २०।

विपद्—सज्ञा स्त्री० [स०] विपत्ति। आफत। सकट।

विपदा—सज्ञा स्त्री० [स०] विपत्ति। आफत। दुख, शोक या संकट।

यौ०—विपद्गत=विपत्ति मे पडा हुआ। विपद्ग्रस्त=विपन्न। आफत का मारा। विपद्दशा=सकट की स्थिति। विपद्युक्त=विपत्तिग्रस्त। अभागा।

विपन—सज्ञा पुं० [स० विपिन] जगल। विपिन। उ०—विपन विहर ऊपल अकल सकल जीव जड जाल।—पृ० रा०, ६।१४।

विपन्न[1]—वि० [स०] १ जिसपर विपत्ति पडी हो। विपत्ति मे पडा हुआ। मुसीबत का मारा। २ दुखी। आर्त। ३ कठिनाई या झझट मे पडा हुआ। ४ भूला हुआ। भ्रम मे पडा हुआ। ५ विध्वस्त। नष्ट (को०)। ६ मृत।

विपन्न[2]—सज्ञा पु० सर्प [को०]।

विपन्नक—वि० [स०] १ भाग्यहीन। २ मृत। ३ नष्ट [को०]।

विपन्नाव—सज्ञा स्त्री० [स० विपत्+हिं० नाव] विपत्ति या भँवर मे पडी हुई नौका। उ०—जीवन बिना अन्न के विपन्नाव। —अर्चना, पृ० ८५।

विपरिक्रात—वि० [स० विपरिक्रान्त] वीर। साहसी। हिम्मतवर [को०]।

विपरिच्छिन्न—वि० [स०] १ कर्तित। कटा हुआ। २ विध्वस्त। नष्ट [को०]।

विपरिणति—सज्ञा स्त्री० [स०] परिणाम। परिवर्तन। उ०—वह यह सिद्ध करने का जतन करता था कि मानव इतिहास का विकास प्राकृतिक प्रभावो की विपरिणतियो का ठीक अनुसरण करता है।—भारत नि०, पृ० ३।

विपरिणमन—सज्ञा पुं० [स०] परिवर्तन [को०]।

विपरिणाम—सज्ञा पु० [स०] १ परिवर्तन। २ रूपपरिवर्तन। रूपातरण। ३. प्रौढि [को०]।

विपरिणामी—वि० [स० विपरिणामिन्] परिवर्तनशील [को०]।

विपरिधान—सज्ञा पुं० [स०] १ विशिष्ट परिधान। विशिष्ट प्रकार का पहनावा। २ विनिमय। लेनदेन [को०]।

विपरिवर्तन[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लौटना। घूमना। २ चक्कर खाना [को०]।

विपरिवर्तन[2]—वि० लौटानेवाला [को०]।

विपरिवर्तनी विद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या या मत्र जो किसी व्यक्ति को दूर से खीच लाए [को०]।

विपरिवर्तित—वि० [स०] लौटा या लौटाया हुआ [को०]।

विपरिवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] लौटना [को०]।

विपरीत[1]—वि० [स०] १. जो मेल मे या अनुरूप न हो। जो विपर्यय के रूप मे हो। उलटा। विरुद्ध। खिलाफ। २ किसी की इच्छा या हित के विरुद्ध। प्रतिकूल। जैसे,—विपरीत आचरण। ३ अनिष्टसाधन मे तत्पर। रुष्ट। जैसे,—दैव या विधि का विपरीत होना। ४ हितसाधन के अनुपयुक्त। दु खद। जैसे,—विपरीत समय। उ०—आजु विपरीत समय सब ही विपरीत है। (शब्द०)। ५ मिथ्या। असत्य (को०)। ६. व्यत्यस्त अर्थात् उलटा वा प्रतिकूल अभिनय करनेवाला (को०)।

विपरीत[2]—सज्ञा पु० १. केशव के अनुसार एक अर्थालकार, जिसमे कार्य की सिद्धि मे स्वय साधक का बाधक होना दिखाया जाता है। जैसे,—'राधा जू सो कहा कहौं दूतिन की मानै सीख साँ पनी सहित विषरहित फनिन की। क्यो न पैर बीच, बच आँगेयो न सहि सकै, बाच परी अगना अनेक आँगननि की'। (यहाँ दूतो को साधक होना चाहिए था, पर वह बाधक हुई)। २ सोलह प्रकार के रतिबधो मे से दसवाँ रतिबध।

यौ०—विपरीतकर, विपरीतकारक, विपरीतकृत = उलटा काम करनेवाला। विपरीतचेता। विपरीतमान। विपरीतरत = विपरीतरति। विपरीतलक्षणा। विपरीतवृत्ति।

विपरीतक[1]—सज्ञा पुं० [स०] विपरीतरति [को०]।

विपरीतक[2]—वि० प्रतिकूल। विपरीत [को०]।

विपरीतकरणी—सज्ञा स्त्री० [स०] हठयोग की एक क्रिया। उ०—विपरीतकरणी पुनि बज्रोली शक्ति चालन कीजिए।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ५०।

विपरीतकारी—वि० [स० विपरीतकारिन्] विपरीत या उलटा काम करनेवाला। प्रतिकूल कार्य करनेवाला [को०]।

विपरीतचेता—वि० [स० विपरीतचेतस्] उलटी बुद्धिवाला [को०]।

विपरीतता—सज्ञा स्त्री० [स०] विपरीत होने का भाव।

विपरीतत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विपरीतता' [को०]।

विपरीतरति—सज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य के अनुसार सभोग का एक प्रकार जिसमे पुरुष नीचे की ओर चित लेटा रहता है और स्त्री उसके ऊपर लेटकर संभोग करती है। कामशास्त्र मे इसे पुरुषायित सबध कहा है। इसके कई भेद कहे गए हैं।

विपरीतलक्षणा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह व्यग्यात्मक उक्ति जो विरोधी बात द्वारा व्यक्त की जाय [को०]।

विपरीतवृत्ति—वि० [स०] उलटा काम करनेवाला।

विपरीता—सज्ञा स्त्री० [स०] दुश्चरित्रा स्त्री।

विपरीतार्थ—वि० [स०] जिसका अर्थ उलटा हो।

विपरीति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विपरीत'।

विपरीतोपमा—सज्ञा पुं० [स०] केशव के अनुसार एक अलकार जिसमे किसी भाग्यवान् व्यक्ति की हीनता वर्णन की जाय और वह अतिहीन दशा म दिखाया जाय। यथा,—देखिए मंडित दडन सो, भुजदड दोऊ असि दड विहीनो। राजत श्री रघुनाथ के राज कुमडल छाडि कमडली लीनो।—केशव (शब्द०)।

विपर्जय—सज्ञा पु० [स० विपर्यय] दे० 'विपर्यय—३'। उ०—तब साधै हठ जोग विपर्जय को घर पावै। प्रान कर आयाम पुरुष तब नजरि मे आवै।—पलटू०, पृ० ३६।

विपर्ण[1]—वि० [स०] पर्णरहित। बिना पत्तो का।

विपर्ण[2]—सज्ञा पु० पलाश का पेड। टेसू।

विपर्यय—सज्ञा पु० [स०] १ एक वस्तु का दूसरी के स्थान पर और दूसरी का पहली के स्थान पर होना। उलट पुलट। इधर का उधर। जैसे,—वर्णविपर्यय। २ ऐसा परिवर्तन जिसमे दो वस्तुओ की स्थिति पूर्वस्थिति से विरुद्ध हो जाय। जैसी चाहिए, उससे विरुद्ध स्थिति। और का और। व्यतिक्रम। ३ मिथ्या ज्ञान। और का और समझना।

विशेष—योग दर्शन के अनुसार 'विपर्यय' चित्त की पाँच प्रकार की वृत्तियो (प्रमाण, विकल्प आदि) मे से एक है। जैसे,—रस्सी को साप या सीप को चाँदी समझना। यथार्थ ज्ञान द्वारा इसका निराकरण होता है। इस 'विपर्यय' या विपरीत ज्ञान के पाच अवयव कहे गए हैं—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनवश। इन्ही को साख्य मे क्रमश तम, मोह, महामोह तामिस्र और अधतामिस्र कहते हैं।

४ भ्रम। भूल। गलती। समझ का फेर। ५. गडबडी। अव्यवस्था। ६ नाश। विनाश। ७. अदल बदल। विनिमय (को०)। ८. शत्रुता (को०)। ९ बैर। विरोध (को०)। १०. प्रलय (को०)। ११ अभाव। अनस्तित्व (को०)।

विपर्यस्त—वि० [स०] १. जिसका विपर्यय हुआ हो। जो उलट पलट गया हो। जो इधर का उधर हो गया हो। २ अस्त व्यस्त। गडबड। चौपट। ३ मिथ्याज्ञानजन्य। और का और समझा हुआ। भूल से वास्तविक समझा हुआ (को०)।

विपर्यस्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसे लड़का न होता हो।

विपर्याण—वि० [स०] पर्याणहीन। जिसपर पलाना न हो। जिसमे चारजामा न हो [को०]।

विपर्यास—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विपर्यस्त] १ विपर्यय। उलट पलट। इधर का उधर। व्यतिक्रम। २. पूर्व मे विरुद्ध स्थिति। एक वस्तु का दूसरी के स्थान पर होना। ३. जैसा चाहिए,

उसके विरुद्ध स्थिति। और का और। ४ मिथ्या ज्ञान। और का और समझना।

विशेष—न्याय मे अप्रमात्मक बुद्धि का नाम विपर्यास है। जैसे,—रस्सी को साँप समझना।

विपल—सज्ञा पु० [स०] समय का एक अत्यत छोटा विभाग जो एक पल का साठवा भाग होता है।

विपलायन—सज्ञा पु० [स०] इतस्तत भागना। पलायन। इधर उधर भागना [को०]।

विपलायित वि० [स०] १ खदेडा या भगाया हुआ। २ पलायित। भागा हुआ [को०]।

विपलायी—वि० [स० विपलायिन्] इधर उधर पलायन करने या भागनेवाला [को०]।

विपलाश—वि० [स०] विपर्ण। पलाशहीन। पत्रविहीन [को०]।

विपवन[1]—वि० [स०] [वि० विपवनीय, विपव्य] १ विशेष रूप से पवित्र करनेवाला। २. वायुरहित। पवनरहित।

विपवन[2]—सज्ञा पु० विशुद्ध पवन। साफ हवा।

विपव्य—वि० [स०] विशेष रूप से शुद्ध या पवित्र करने योग्य [को०]।

विपशी—सज्ञा पुं० [सं० विपशिन्] एक बुद्ध का नाम।

विपश्चित्—वि० [स०] पडित। बुद्धिमान्। सूक्ष्मदर्शी। उ०—तेहि कारण शिव गग तेहि गहैं विपश्चित लोक। याह मे मज्जन किए ते मिटैं महा अघ शोक।—श० दि० (शब्द०)।

विपश्यन—सज्ञा पु० [स०] प्रकृत ज्ञान। यथार्थ बोध। (बौद्ध)।

विपश्यी—सज्ञा पु० [स० विपश्यिन्] एक बुद्ध का नाम।

विपश्वी—सज्ञा पु० [स० विपश्विन्] बुद्ध का एक नाम [को०]।

विपस्—सज्ञा पुं० [स०] १. मेधा। बुद्धि। २ ज्ञान। समझ।

विपहर(पु)†—सज्ञा स्त्री० [सं० द्वि+प्रहर, प्रा० वि+पहर] द्वितीय प्रहर। दुपहर।—पृ० रा०, ६१। १७०८।

विपाडु—वि० [स० विपाण्डु] स्वर्णाभ। पीला [को०]।

विपाडुर—वि० [स० विपाण्डुर] पीत। पीला [को०]।

विपाडुरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] महामेदा।

विपासुल—वि० [स०] जिसमे धूल न हो [को०]।

विपाक—सज्ञा पु० [स०] १ परिपक्व होना। पचन। पकना। २ पूर्ण दशा को पहुँचना। तैयारी पर आना। चरम उत्कर्ष। ३ फल। परिणाम। ४ कर्म का फल।

विशेष—योग दर्शन मे यह विपाक तीन प्रकार का कहा गया है—जाति (जन्म), आयु और भोग।

५ खाए हुए भोजन का पेट मे पचना। खाद्य द्रव्य को पेट के अदर रस रूप मे परिणति। ६ दुर्गति। दुर्दशा। ७ स्वाद। जायका। ८ पकाना। परिपक्व करना। ९ मुरझाना। कुम्हलाना (को०)।

यौ०—विपाककाल=पूर्णता या परिपक्व होने का समय। विपाकदारुण=जिसका परिणाम दु खद हो। विपाकदोष=पाचन-क्रिया का दोष या कुप्रभाव। अजीर्ण।

विपाट्—सज्ञा स्त्री० [स० विपाश्] एक नदी। विशेष—दे० 'विपासा' [को०]।

विपाट—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का बाण।

विपाटक वि० [स०] १ विपाटन करनेवाला। उत्पाटित करनेवाला। उखाडनेवाला। खोदनेवाला। अपहर्ता। अपहारक (को०)।

विपाटन—सज्ञा पुं० [स०] १ उखाडना। खोदना। २ खड खड करना (को०)। ३ अपहरण (को०)।

विपाटल—वि० [स०] गहरा लाल। विशेष लाल [को०]।

विपाटित—वि० [स०] १ उखाडा हुआ। उन्मूलित। खोदा हुआ। २ खड खड किया हुआ। अलग किया हुआ। ३ अपहृत। [को०]।

विपाठ—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार लबा बाण। तीर।

विपात—सज्ञा पु० [स०] पातन। नाश।

विपातक—सज्ञा पुं० [स०] १ नाश करनेवाला। नाशक। २ गला देनेवाला। पिघलानेवाला।

विपातन—सज्ञा पु० [स०] १. गलाना। २ नाश करना।

विपादन—सज्ञा पु० [स०] [वि० विपादित] वध। हत्या। नाश।

विपादिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुष्ठ रोग का एक भेद। अपरस।

विशेष—यह पैर मे होता है। इसमे उँगलियो के पास से ऊपर तक चमडे मे दरारें पड जाती हैं और बडी खुजली होती है। पीडा के कारण पैर नही रखा जाता है।

२. प्रहेलिका। पहेली।

विपादित—वि० [स०] विनाशित। नष्ट किया हुआ।

विपाद्य—वि० [स०] नाश करने योग्य। मारने योग्य। वध्य [को०]।

विपाप—वि० [स०] पापरहित। निष्पाप [को०]।

विपापा—सज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत मे वर्णित एक नदी का नाम।

विपाप्मा—वि० [स० विपाप्मन्] निष्पाप [को०]।

विपाल—वि० [स०] (पशु) जिसका कोई पालनेवाला या मालिक न हो। (स्मृति)।

विपाश—वि० [स०] पाशरहित। बधनमुक्त। निर्बध [को०]।

विपाशन—सज्ञा पु० [स०] मुक्त करानेवाला [को०]।

विपाशा—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यास नदी जो पजाब मे है। विशेष दे० 'विपासा'।

विपासा—सज्ञा स्त्री० [स०] पजाब की एक नदी। व्यास।

विशेष—ऋग्वेद मे इस नदी का उल्लेख शतुद्री (सतलज) के साथ है।

विपिन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वन। जगल। २. उपवन। वाटिका।

विपिन[2]—वि० भयानक। डरावना।

विपिनचर—सज्ञा पुं० [स०] १ वन मे रहनेवाला। वनचर। २. जगली आदमी। ३ पशु पक्षी आदि।

विपिनतिलका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, नगण, और दो रगण (न, स, न, र, र अर्थात् ।।।, ।।ऽ, ।।।, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ होते हैं।

विपिनपति—संज्ञा पु० [सं०] वन का राजा, सिंह। उ०—जिमि भेरी धुनि सुनि विपिनपति निज दुचरन मन में धरत। तिमि तरवी प्रवीन उतान गति सुर सिंगार करि समर रत।—गोपाल (शब्द०)।

विपिनविहारी—संज्ञा पु० [सं० विपिन+विहारिन्] १ वन में विहार करनेवाला। वनचारी। २. कृष्ण का एक नाम। उ०—दरसन पाइ मगन भई सारी। कहत भए तब विपिनविहारी।—विश्राम (शब्द०)।

विपिनौका—संज्ञा पु० [सं० विपिनौकस्] १ बंदर। २ वनमानुस। ३ वन में रहनेवाला मनुष्य (को०)।

विपुंसक—वि० [सं०] पुंसत्वरहित। पुरुषत्व से हीन।

विपुंसी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी चेष्टा, स्वभाव या आकृति पुरुषों जैसी हो।

विपुत्र—वि० [सं०] [स्त्री० विपुत्रा] पुत्ररहित। पुत्रहीन।

विपुन†—संज्ञा पु० [?] पक्ष। पखवारा। उ०—पख हारयो पीसू विपून अर्धमास बल जान। पख जु पक्ष हरि राखिए जातें होइ कल्यान।—नंद० ग्रं०, पृ० ६७।

विपुर—वि० [सं०] जो एक स्थान पर न रहे (को०)।

विपुल'—वि० [सं०] [स्त्री० विपुला] १. विस्तार, संख्या या परिमाण में बहुत अधिक। २ बृहत्। बड़ा। ३ अगाध। बहुत गहरा। ४. रोमांचित (को०)।

विपुलक—संज्ञा पु० [सं०] १ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २. मगध देश की प्राचीन राजधानी राजगृह के पास की एक पहाड़ी। ३ हिमालय। ४. एक देवीपीठ। देवी का एक प्रधान स्थान जहाँ की देवी का नाम विपुला है। ५. रोहिणी से उत्पन्न वसुदेव के एक पुत्र का नाम। उ०—विपुल विपुल बल चल्या रचत रन में पुल गर को।—गोपाल (शब्द०)। ६. समादृत व्यक्ति। संमानित व्यक्ति (को०)।

विपुलक—वि० [सं०] १. बहुत चौड़ा। २ जिसे रोमांच न हो। पुलकरहित।

विपुलग्रीव—वि० [सं०] जिसकी गर्दन लंबी हो (को०)।

विपुलच्छाय—वि० [सं०] (वृक्ष) जो घना छायावाला हो (को०)।

विपुलजघना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथु या बड़े नितंबोंवाली स्त्री (को०)।

विपुलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] आधिक्य। बहुलायत। बड़ाई। उ०—सबो बोली में उसकी भी विपुलता है।—अर्चना (भू०), पृ० 'स'।

विपुलत्व—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'विपुलता'।

विपुलपार्श्व—संज्ञा पु० [सं०] एक पर्वत का नाम।

विपुलद्रव्य—वि० [सं०] जिसके पास प्रचुर धन हो (को०)।

विपुलप्रज्ञ, विपुलबुद्धि—वि० [सं०] दे० 'विपुलमति'।

विपुलमति—वि० [सं०] बहुत बुद्धिवाला। बहुत बुद्धिमान्।

विपुलमति'—संज्ञा पु० १ एक बोधिसत्व का नाम। २. जैनों के अनुसार मनःपर्याय ज्ञान का एक भेद। उ०—मनःपर्याय ज्ञान के दो भेद हैं—ऋजुमति,...और विपुलमति जो दूसरे के मन में सरलता तथा वक्रता में ठहरे हुए पदार्थों का जानता है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २४२।

विपुलरस—संज्ञा पु० [सं०] गन्ना। ईख (को०)।

विपुलश्रोणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विपुलजघना' (को०)।

विपुलस्कंध—संज्ञा पु० [सं० विपुलस्कन्ध] अर्जुन का एक नाम।

विपुलस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घीकुवार। विपुलास्रवा (को०)।

विपुलहृदय—वि० [सं०] विशाल हृदयवाला। उदारचेता।

विपुला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। वसुधरा। २. एक प्रकार का छंद, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो गुरु होते हैं। ३ आर्या छंद के तीन भेदों में से एक भेद जिसके प्रथम चरण में १८, दूसरे में १२, तीसरे में १५ और चौथे में १२ मात्राएँ होती हैं। ४. विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी। ५. एक प्रसिद्ध सती जो बहुला के नाम से प्रसिद्ध है। ६ एक तान का नाम। (संगीत)।

विपुलाई†—संज्ञा स्त्री० [सं० विपुल+हिं० आई (प्रत्य०)] विपुलता। अधिकता। ज्यादती। उ०—को बरहि सक कपि बल विपुलाई।—मानस, ६।४।

विपुलास्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] घृतकुमारी। घीकुवार। ग्वारपाठा।

विपुलेक्षण—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विपुलेक्षणा] विशाल नेत्रोंवाला। बड़ी आँखोंवाला (को०)।

विपुलोरस्क—वि० [सं०] जिसका उरस्क चौड़ा हो। चौड़ा छातीवाला। विशाल वक्षवाला (को०)।

विपुष्ट—वि० [सं०] दुर्बल। जिसे पर्याप्त पोषण न मिला हो (को०)।

विपुष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] उन्नति। समृद्धि। अभ्युदय (को०)।

विपुष्पित—वि० [सं०] हर्षित। प्रफुल्ल।

विपूय—संज्ञा पु० [सं०] मुंज तृण। मूँज।

विपूयक—संज्ञा पु० [सं०] १ सड़ी हुई वस्तु की गंध। सड़ाँव। २. सड़ा हुआ शव (बौद्ध)।

विपृक्—वि० [सं० विपृच्] अलग। जुदा। पृथक् (को०)।

विपृक्त—वि० [सं०] असंपृक्त। अलग किया हुआ। विमुक्त (को०)।

विपृक्वत्—वि० [सं०] शुद्ध। बेमेल। निर्मल (को०)।

विपोहना†—क्रि० स० [सं० वि+प्रोथ] १. पालना। सेवना। २. नाश करना। मिटाना। उ०—ज्यों जग जमुन मो को जग लाल विलोचन पाप विपोहे।—केशव (शब्द०)। ३. दे० 'पोहना'।

विप्पन†—संज्ञा पु० [सं० विपिन, प्रा० विपन, विप्पन] दे० 'विपिन'। उ०—बसुर घेरि विप्पन अप्प मूलन मे मंडिय। तहा एक एक रहिम हंकि पदा बिन्न छंडिय।—पृ० रा०, ६।२७।

विप्प†—संज्ञा पु० [सं० विप्र, प्रा० विप्प] दे० 'विप्र'। उ०—नमसद राइ मुख दरस कीजे। बिन्न कम्म पूरब फल लीजे। कर जोरयम्म मति घरष मोपि। देसोक विप्प बर बुद्ध बोपि।—पृ० रा०, १।६६६।

विप्र'—संज्ञा पु० [सं०] १. ब्राह्मण।

विशेष—जो यजन, याजन आदि कर्म पूर्ण रीति से करता है वह विप्र है। विशेष दे० 'ब्राह्मण'।

२ पुरोहित। यज्ञ करानेवाला। ३ वेदमंत्रों को जाननेवाला। कर्मनिष्ठ। स्तवन करनेवाला। स्तुतिपाठक। ४. शिरीष वृक्ष। सिरिस का पेड़। ५ अश्वत्थ। पीपल का पेड़। ६ पीपर का पौधा जो औषध के काम में आता है। रेणुक। ७ भाद्रपद मास (को०)। ८ चंद्रमा (को०)। ९ बुद्धिमान् व्यक्ति।

विप्र[२]—वि० मेधावी। बुद्धिमान्।

विप्रक—संज्ञा पुं० [सं० विप्र+क (प्रत्यय)] निम्न ब्राह्मण। क्षुद्र वा कुत्सित ब्राह्मण (को०)।

विप्रकर्ता—संज्ञा पुं० [सं० विप्रकर्तृ] वह जो विप्रकार करे। अपकार या तिरस्कार करनेवाला व्यक्ति (को०)।

विप्रकर्ष, विप्रकर्षण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विप्रकृष्ट] १ दूर खींच ले जाना। दूर हटाना। २ किसी कर्म या कृत्य का अंत। ३ अंतर। दूरी। फासला (को०)। ४ बिलगाव। अलगाव। भेद। फर्क (को०)।

विप्रकार[१]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विप्रकृत] १. तिरस्कार। अनादर। २ उपकार। ३ विभिन्न या विविध प्रकार। अनेक ढंग (को०)। ४ प्रतिशोध। बदला (को०)। ५ क्षति। हानि (को०)।

विप्रकार[२]—अव्य० विविध प्रकार से।

विप्रकारी—वि० [सं० विप्रकारिन्] १ तिरस्कार करनेवाला। २. विरोधी। ३ बदला लेनेवाला (को०)।

विप्रकाष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] नरमा या कपास का पौधा।

विप्रकीर्ण—वि० [सं०] १ बिखरा हुआ। छितराया हुआ। इधर उधर पड़ा हुआ। २ अस्त व्यस्त। अव्यवस्थित। गड़बड़। ३ चौड़ा। विस्तृत। फैला हुआ (को०)।

विप्रकुंड—संज्ञा पुं० [सं० विप्रकुण्ड] ब्राह्मण की जारज संतान (को०)।

विप्रकृत—वि० [सं०] १ तिरस्कृत। २. जिसकी हानि की गई हो (को०)।

विप्रकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विप्रकार। अपकार। २ परिवर्तन। भिन्नता। रद्दोबदल (को०)।

विप्रकृष्ट[१]—वि० [सं०] १. खींचकर दूर किया हुआ। २ जो दूरी पर हो। दूरस्थ। ३ फैलाया हुआ। विस्तारित (को०)।

विप्रकृष्ट[२]—संज्ञा पुं० [सं०] किसी ऋतु में संचित हुए कफ, पित्त आदि का अन्य ऋतु में कुपित होना। उ०—विप्रकृष्ट उसे कहते हैं जैसे हेमंत ऋतु में संचित हुआ कफ वसंत ऋतु में कुपित होता है।—माधव०, पृ० ३।

विप्रकृष्टक—वि० [सं०] दूरवर्ती। दूरस्थ। जो फासले पर हो (को०)।

विप्रगीत—वि० [सं०] जिसके विषय में मतैक्य न हो (जैन)।

विप्रग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मराक्षस (को०)।

विप्रचरण—संज्ञा पुं० [सं०] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

विप्रचरन—संज्ञा पुं० [सं० विप्रचरण] दे० 'विप्रचरण'। उ०—(क) उर बनमाल पदित अति शोभित विप्रचरन, चित कहँ करषै।—तुलसी (शब्द०)। (ख) उर मनि हार पदक की सोभा। विप्रचरन देखत मन लोभा।—तुलसी (शब्द०)।

विप्रचित्—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विप्रचित्ति'।

विप्रचित्ति—संज्ञा पुं० [सं०] एक दनव जिसकी पत्नी सिंहिका के गर्भ से राहु की उत्पत्ति हुई थी।

विप्रच्छन्न—वि० [सं०] छिपा हुआ। अंतर्हित। प्रच्छन्न (को०)।

विप्रणाश—संज्ञा पुं० [सं०] विनाश। नाश। प्रणाश (को०)।

विप्रता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्राह्मणत्व।

विप्रतापस—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण तपस्वी।

विप्रतारक—संज्ञा पुं० [सं०] बहुत धोखा देनेवाला।

विप्रतारित—वि० [सं०] जिसने धोखा खाया हो। जो छला गया हो (को०)।

विप्रतिकार—संज्ञा पुं० [सं०] १ खंडन। विरोध। २ प्रतिकार। प्रतिशोध (को०)।

विप्रतिकृत—वि० [सं०] जिसका विप्रतिकार किया गया हो। जिसका प्रतिशोध किया गया हो (को०)।

विप्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विरोध। मेल न बैठना। जैसे,—मनुष्यों के स्वार्थ का विप्रतिपत्ति। (मिताक्षरा)। २ ऐसा कथन जिसके अंदर दो ऐसी बातें हों जो एक के साथ न हो सकती हों। परस्पर विरुद्ध वाक्य। (न्याय)।

विशेष—जैसे कोई कहे कि वहाँ अग्नि है और नहीं है तो उसका यह कथन विप्रतिपत्ति का उदाहरण होगा।

३ किसी बात का बिलकुल उलटा निरूपण। किसी बात में ऐसा नतीजा निकालना जो ठीक न हो। विपरीत प्रतिपत्ति। असिद्धि। उ०—उनमें विप्रतिपत्ति न हो, उनमें यथार्थता हो।—पा० सा० सि०, पृ० १३२। ४. प्रसिद्धि का अभाव। अख्याति। ५ कुख्याति। बदनामी। ६. गलत धारणा। भ्रांत धारणा (को०)। ७ पारस्परिक संबंध। परिचय। जान पहचान (को०) ८ हैरानी। घबड़ाहट (को०)। ९ चातुर्य। विदग्धता (को०)। १०. किसी कृत्य या पूजन का वह विकृति जो प्रतिनिधि द्रव्य का नाम लेने से होती है।

विशेष—किसी कृत्य या पूजन में जो द्रव्य विहित है, उसके अभाव में यदि कोई दूसरा द्रव्य प्रतिनिधि रूप में रखा जाय, तो समर्पण वाक्य में प्रतिनिधि द्रव्य का नाम न लेकर जिसके अभाव में वह द्रव्य रखा गया हो, उसी का नाम कहना चाहिए। प्रतिनिधि द्रव्य का नाम लेने से पूजा विकृत हो जाती है।

विप्रतिपद्य—वि० [सं०] १ जो अनेक प्रकार से सिद्ध किया जाय। अनेक ढंग से सिद्ध किया जानेवाला। २ जिसका खंडन या विरोध किया जाय (को०)।

विप्रतिपद्यमान—वि० [सं०] पाप करनेवाला। पापात्मा।

विप्रतिपन्न—वि० [सं०] १. विप्रतिपत्तियुक्त। संदेहयुक्त। २ अस्वीकृत। ३. जो साबित न हुआ हो। असिद्ध। ४. व्याकुल।

घबडाया हुआ। हतबुद्धि। किंकर्तव्यविमूढ (को०)। ५ परस्पर संयुक्त या संबद्ध (को०)।

यौ०—विप्रतिपन्न बुद्धि = जिसकी धारणा गलत हो।

विप्रतिषिद्ध—वि० [स०] १ जिसका निषेध किया गया हो। जो मना हो। निषिद्ध। (स्मृति)। २ विरुद्ध। खिलाफ। उलटा। ३ निवारित। वर्जित।

विप्रतिषेध—संज्ञा पु० [स०] १ दो बातों का परस्पर विरोध। मेल न बैठना। २. नियंत्रण या वश में रखना (को०)। ३ प्रतिषेध। रोक। वर्जन (को०)। ४ व्याकरण में समान रूप से महत्वपूर्ण दो नियमों की एक स्थान पर उपस्थिति। जहाँ दो प्रसंग अन्वयार्थ एक साथ प्राप्त हों—यंत्र द्वौ प्रसंगान्वयार्थौ एकस्मिन् प्राप्नुत स विप्रतिषेध (काशिका)।

विप्रतिसार—संज्ञा पुं० [स०] १. अनुताप। पछतावा। २ रोष। क्रोध। ३ दुष्टता।

विप्रतिसारी—वि० [स० विप्रतिसारिन्] दुःखी। अनुतप्त (को०)।

विप्रतीप—वि० [स०] उलटा। प्रतिकूल (को०)।

विप्रतीसार—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'विप्रतिसार'।

विप्रत्यनीक, विप्रत्यनीयक—वि० [स०] शत्रुतापूर्ण। वैरभाव से युक्त (को०)।

विप्रत्यय—संज्ञा पुं० [स०] अविश्वास (को०)।

विप्रत्व—संज्ञा पु० [स०] ब्राह्मणत्व।

विप्रथित—वि० [स०] विख्यात। मशहूर।

विप्रदह—संज्ञा पु० [स०] सूखा फल, कंद, मूल आदि (को०)।

विप्रदुष्ट—वि० [स०] १ पापरत। २. कामी। ३ मद। नष्ट।

विप्रधर्ष—संज्ञा पुं० [स०] १ पीड़ा। क्लेश। दुःख। २ विरक्ति। व्यग्रता (को०)।

विप्रधुक्—वि० [स०] लाभकारी। हितकर।

विप्रपद—संज्ञा पु० [स०] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के वक्षस्थल पर माना जाता है। विप्रचरण।

विप्रपात—संज्ञा पुं० [स०] १ विशेष रूप से पतन। बिलकुल गिर जाना। २ ऊँचा ढालवाँ टीला। ३ खाई। ४ उड़ने की एक विशेष स्थिति या ढंग (को०)।

विप्रप्रिय—संज्ञा पु० [स०] १ पलाश का वृक्ष। २ जमा हुआ और खट्टा दही (को०)।

विप्रबंधु—संज्ञा पु० [स० विप्रबन्धु] १ वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से च्युत हो। नीच ब्राह्मण। २. गोपायन गोत्रीय एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

विप्रबुद्ध—वि० [स०] १ जागा हुआ। २ ज्ञानप्राप्त।

विप्रबोधित—वि० [स०] १ जिसकी चर्चा हो चुकी हो। जो विचारित हो। २ जगाया हुआ। प्रबोध किया हुआ।

विप्रमत्त—वि० [स०] जो अनवधान न हो। प्रमादरहित (को०)।

विप्रमना—वि० [स० विप्रमनस्] जिसका जी न लगता हो। अन्यमनस्क। अनमना।

विप्रमाथी—वि० [सं० विप्रमाथिन्] [वि० स्त्री० विप्रमाथिनी] १ खूब मथन करनेवाला। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ३ आकुल या क्षुब्ध करनेवाला।

विप्रमुक्त—वि० [सं०] १ निर्बंध। स्वतंत्र। खुला हुआ। मुक्त। २. जिसपर लक्ष्य संधान किया गया हो। ३ रहित। मुक्त। (समास में प्रयुक्त) जैसे, भयविप्रमुक्त (को०)।

विप्रमोक्ष—संज्ञा पुं० [स०] मोक्ष। मुक्ति (को०)।

विप्रमोच्य—वि० [स०] छोड़ने या मुक्त करने योग्य। जिसे मुक्त किया जाय (को०)।

विप्रमोह—संज्ञा पुं० [स०] नियमभंग। अपराध। त्रुटि (को०)।

विप्रमोहित—वि० [स०] मुग्ध। मूढ। हतबुद्धि (को०)।

विप्रयाण—संज्ञा पु० [स०] १ भागना। पलायन। २. चलना। गमन। जाना।

विप्रयात—वि० [स०] १ गत। गया हुआ। प्रस्थित। २ पलायित। भागा हुआ (को०)।

विप्रयुक्त—वि० [सं०] १ जो मिला न हो। विश्लिष्ट। विभिन्न। अलग। २ वियुक्त, बिछड़ा हुआ। (मित्र या प्रिय से)। ३. वंचित। रहित। उ०—संघ से मैं विप्रयुक्त हूँ, इसलिये दुखी हूँ।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० १६। ४ मुक्त। छोड़ा हुआ। ५ जिसका विभाग हुआ हो।

विप्रयोग—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विप्रयुक्त] १ वियोग। विरह। जुदाई। विप्रलंभ। २ विसंवाद। बुरा समाचार। ३. विच्छेद। अलग होना। ४ असहमति। कलह। मतभेद (को०)। ५ अनुकूलता। योग्यता। पात्रता (को०)। ६ अभाव (को०)।

विप्रयोगी—वि० [सं० विप्रयोगिन्] विरही। वियुक्त (को०)।

विप्रयोजित—वि० [स०] वियुक्त, रहित या मुक्त किया हुआ।

विप्रराम—संज्ञा पुं० [स०] परशुराम। उ०—बैरिन में विप्रराम, नीति माहिं जदुराम, बूँदीनाथ राजाराम शील माहिं राम है।—मतिराम (शब्द०)।

विप्रलंभ—संज्ञा पुं० [स० विप्रलम्भ] १ अभिलषित वस्तु की अप्राप्ति। चाही हुई वस्तु का न मिलना। २ प्रिय का न मिलना। वियोग। जुदाई। विरह। अमिलन।

विशेष साहित्य में शृंगार रस दो प्रकार का कहा गया है—संभोग शृंगार विप्रलंभ शृंगार। इन्हीं को संयोग और वियोग भी कहते हैं। विप्रलंभ शृंगार में नायक नायिका के विरहजन्य संताप आदि का वर्णन होता है।

३ अलग होना। विच्छेद। ४. छल से किसी को किसी लाभ से वंचित करना। धोखा। छल। धूर्तता। वंचना। ५ विरुद्ध कर्म। बुरा काम। ६ असहमति। कलह।

वि ल [स० विप्रलम्भक] धूर्त या धोखेबाज आदमी।

वि [स० विप्रलम्भन] छल करना।

वि [स० विप्रलम्भिन्] धोखेबाज। धूर्त।

विप्रलपित—वि० [स०] दे० 'विप्रलप्त'।

विप्रलप्त[1]—वि० [स०] १ तर्क या विवाद से युक्त। विचारित। २ विलपित। विलाप किया हुआ।

विप्रलप्त[2]—सज्ञा पु० १ तर्क। विवाद। २ विलाप।

विप्रलब्ध—वि० [स०] १ जिसे चाही हुई वस्तु न प्राप्त हुई हो। रहित। वचित। निराश। २ जिसे प्रिय का समागम न प्राप्त हुआ हो। वियोगदशाप्राप्त। ३ जो छल द्वारा किसी लाभ से वचित किया गया हो। प्रतारित। ४ हानि पहुँचाया हुआ। क्षतिग्रस्त (को०)।

विप्रलब्धा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] वह नायिका जो संकेत स्थान मे प्रिय को न पाकर निराश या दु खी हो।

विप्रलब्धा—वि० [स० विप्रलब्ध] छलिया। धूर्त (को०)।

विप्रलय—सज्ञा पु० [स०] पूर्ण विनाश। विलय। प्रलय (को०)।

विप्रलाप—सज्ञा पुं० [स०] १ सारहीन वाक्य। व्यर्थ बकवाद। २. पारस्परिक वचन विरोध। विवाद। ३ झगडा। तू तू मैं मैं। ४ बुरा वचन। ५ प्रतिज्ञाभग। वचनभग। कही हुई बात से मुकर जाना (को०)।

विप्रलापी—वि० [स० विप्रलापिन्] विप्रलाप करनेवाला। व्यर्थ बकवाद करनेवाला। बकवादी (को०)।

विप्रलीन—वि० [स०] बिखरा हुआ। छितराया हुआ। इधर उधर पडा हुआ। जैसे—विप्रलीन सैन्य = जिसकी सेना हारकर विच्छिन्न हो गई हो।

विप्रलुपक—सज्ञा पुं० [स० विप्रलुम्पक] १ बडा लालची। अति लोभी। २. अपने लाभ के लिये लोगो को सतानेवाला। उत्पीडक। ३ छीनकर लेनेवाला। बलात् लूटनेवाला (को०)। ४ अधिक कर लेनेवाला।

विप्रलुप्त—वि० [स०] १ जो लूटा गया हो। अपहृत। २ जो गायब किया गया हो। जो उडा लिया गया हो। ३ जिसके कार्य मे विघ्न पहुँचाया गया हो।

विप्रलून—वि० [स०] १ छिन्न किया या तोडा हुआ। २ एकत्रित। इकट्ठा किया हुआ (को०)।

विप्रलोक—सज्ञा पुं० [स०] चिडिया पकडनेवाला। व्याध। शिकारी।

विप्रलोडित—वि० [सं०] विलोडित या इतस्तत किया हुआ। बरबाद किया हुआ (को०)।

विप्रलोप—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विप्रलुप्त] १ पूर्णत अदर्शन या लोप। २ ध्वस। नाश।

विप्रलोपी—वि० [स० विप्रलोपिन्] तोडनेवाला। नष्ट या लुप्त करनेवाला।

विप्रलोभी—सज्ञा पुं० [स० विप्रलोभिन्] किंकिरात नामक वृक्ष, जो अशोक की तरह होता है (को०)।

विप्रवसित—वि० [स०] प्रवास के लिये गया हुआ। प्रवासगत (को०)।

विप्रवाद—सज्ञा पुं० [स०] १ बुरे वचन। २ व्यर्थ बकवाद। ३. कलह। विवाद। झगडा।

विप्रवास—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विप्रवसित] १ विदेश मे वास। परदेस मे रहना। २ सन्यास आश्रम में एक अपराध जो अपने कपडे दूसरे को देने से होता है।

विप्रवासन—सज्ञा पुं० [स०] १ देश से निकाल देना। २ प्रवासी होना। प्रवास मे रहना (को०)।

विप्रवासित—वि० [स०] दूर किया हुआ। अपवारित या नष्ट किया हुआ। (पाप आदि)।

विप्रविद्ध—वि० [स०] जो प्रविद्ध किया गया हो। इधर उधर किया या मारा हुआ (को०)।

विप्रव्राजिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो दो पुरुषो से सबध रखे।

विप्रश्न—सज्ञा पुं० [स०] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रश्निक—सज्ञा पुं० [स०] दैवज्ञ। ज्योतिषी।

विप्रश्निका—सज्ञा स्त्री० [स०] दैवज्ञा। ज्योतिषी स्त्री (को०)।

विप्रष्ट—सज्ञा पुं० [स०] एक यादव का नाम जो बलराम जी का छोटा भाई लगता था।

विप्रसन्न—वि० [स०] अत्यत सतुष्ट। बहुत अधिक खुश।

विप्रसारण—सज्ञा पु० [स०] विस्तार करना। फैलाना।

विप्रस्थित—वि० [सं०] प्रस्थान किया हुआ। गया हुआ।

विप्रहत—वि० [सं०] १ मारा हुआ। २. पराजित किया हुआ। मर्दित। पराभूत।

विप्रहरण—सज्ञा पुं० [स०] १ त्याग। २ मुक्ति।

विप्रहाण—सज्ञा पु० [स०] लोप। अत (को०)।

विप्रहीण—वि० [स०] १ वचित। निरस्त। २ लुप्त (को०)।

विप्राधिप—सज्ञा पुं० [स०] शशि। चद्रमा (को०)।

विप्रियकर—वि० [सं० विप्रियङ्कर] अप्रिय काम करनेवाला (को०)।

विप्रिय[1]—वि० [स०] १ अप्रिय। २ कटु। ३ अतिशय प्रिय। ४ वियोग।

विप्रिय[2]—सज्ञा पुं० अपराध। कसूर।

विप्रुट्—सज्ञा स्त्री० [स० विप्रुष्] १. पानी की छोटी बूँद या छीटा। २ थूक का वह छीटा जो वेदपाठ करने में उडता है।

विशेष—मनुस्मृति के अनुसार ऐसा छीटा अपवित्र नही है।

३ चिह्न। विदु। धब्बा (को०)। ४ दृग्विषय। गोचर वस्तु (को०)।

विप्रुद्धोम—सज्ञा पु० [सं० विप्रुष्+होम] एक प्रकार का पूजन जो यज्ञ के अवसर पर सोमप्राप्ति के लिये किया जाता था।

विप्रुष—सज्ञा पुं० [स०] १ पानी की छोटी बूंद या छीटा। २ दे० 'विप्रुट्'। ३ पक्षी।

विप्रेंद—सज्ञा पुं० [स० विप्रेन्द्र] वह जो ब्राह्मणो में मुख्य या प्रधान हो।

विप्रेक्षण, विप्रेक्षित—सज्ञा पु० [स०] चारो ओर देखना (को०)।

विप्रेक्षिता—वि० [स० विप्रेक्षितृ] चारो ओर देखनेवाला (को०)।

विप्रेत—वि० [स०] १ गत। २. फैला या बिखरा हुआ (को०)।

विप्रोषित—वि० [सं०] १ प्रवास में गया हुआ। २ अनुपस्थित। ३. पठाया हुआ वा निष्काषित (को०)।

विप्रोषितभर्तृका—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसका पति या प्रेमी परदेश गया हो। प्रोषितभर्तृका।

विप्लव[1]—सज्ञा पु० [स०] १ उपद्रव। हंगामा। अशाति और हलचल। २ राज्य के भीतर जनता की अशाति और उद्धत आचरण। बलवा। ३ दूसरे राष्ट्र द्वारा उपस्थित अशाति। परचक्र भय। ४. उथल पुथल। अव्यवस्था। ५ आफत। विपत्ति। ६ विनाश। ७ शत्रु को डराने के लिये मचाया हुआ शोरगुल। डाँट उपट या भभकी। ८ नाव का डूबना। पोतभंग। ९ जल की बाढ। बहिया। १० वेदो के अपूर्ण ज्ञान द्वारा उनका अनादर। ११ घोडे की बहुत तेज चाल। १२ बहना। इधर उधर प्रवाहित होना (को०) १३ विरोध। वैपरीत्य (को०)। १४ आइने पर का धब्बा (को०)। १५ पाप। दुष्टता (को०)।

विप्लव[2]—वि० [स०] प्लवरहित। पोतविहीन (को०)।

विप्लवक—वि० [स०] विप्लव करनेवाला (को०)।

विप्लवी—वि० [स० विप्लविन्] १ अस्थिर। नश्वर। २ विप्लव या विद्रोह करनेवाला। (को०)।

विप्लाव—सज्ञा पु० [स०] १. पानी की बाढ़। बहिया। २ घोडे की बहुत तेज चाल। ३ विप्लव। उपद्रव (को०)।

विप्लावक—वि० [स०] १ विप्लवकारी। उपद्रव मचानेवाला। २ राज्य मे उपद्रव खडा करनेवाला। बलवाई। ३. जल की बाढ लानेवाला।

विप्लावन—सज्ञा पु० [स०] निंदनीय वचन। अपशब्द (को०)।

विप्लावित—वि० [स०] १. बहाया हुआ। २. नष्ट किया हुआ। ३. व्यग्रता मे फेंका हुआ (को०)।

विप्लावी—सज्ञा पुं० [स० विप्लाविन्] [स्त्री० विप्लाविनी] १. उपद्रव करनेवाला। २. जल की बाढ लानेवाला।

विप्लुट्—सज्ञा स्त्री० [स० विप्लुष्] १ जलसीकर। २ स्फुलिंग। चिनगारी। ३ कण। ४ निशान। धब्बा। बिंदी (को०)।

विप्लुत[1]—सज्ञा पुं० [स०] विस्फोट। स्फोट (को०)।

विप्लुत[2]—वि० [स०] १. छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २ घबराया हुआ। आकुल। ३ क्षुब्ध। व्यग्र। दुखी। ४ भ्रष्ट। पतित। ५ नियम, प्रतिज्ञा आदि से च्युत। ६ व्यसन के कारण किसी वस्तु के अभाव मे व्याकुल। व्यसनार्त। ७ इधर उधर बहा हुआ (को०)। ८ डूबा हुआ। निमग्न। बाढग्रस्त (को०)। ९ विध्वस्त। उजडा हुआ (को०)। १० अपमानित। अनादृत (को०)। ११ नष्ट। बरबाद (को०)। १२ तिरोहित। विलुप्त (को०)। १३ विपरीत। उलटा (को०)। १४ असत्य। मिथ्या। झूठा (को०)।

विप्लुतनेत्र, विप्लुतलोचन—वि० [स०] हर्ष, शोक आदि के कारण जिसकी आँखो अश्रु पूरित हो। (को०)।

विप्लुतभाषी—वि० [स० विप्लुतभाषिन्] तुतलाकर या हकलाकर बोलनेवाला। (को०)।

विप्लुतयोनि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक स्त्रीरोग। दे० 'विप्लुता' (को०)।

विप्लुता—सज्ञा स्त्री० [स०] स्त्रियो की एक व्याधि जिसमें उनकी योनि मे नित्य पीडा रहती है।

विप्लुति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विप्लव। हलचल। उपद्रव। २ हानि। क्षति। (को०)।

विप्लुष्—सज्ञा पुं० दे० 'विप्रुट्'।

विप्लुष्ट—वि० [स०] झुलसा या जला हुआ (को०)।

विप्सा—सज्ञा स्त्री० [स० वीप्सा] दे० 'वीप्सा'।

विफल—वि० [स०] १ जिसमे फल न लगता या लगा हो। फलरहित। उ०—मुरली सुनत अचल चले। द्रवित ह्वै जल झरत पाहन विफल वृक्ष फले।—सूर (शब्द०)। २ जिसका कुछ परिणाम न हो। जिसका कुछ नतीजा न हो। जिससे कुछ सिद्धि न प्राप्त हो। निष्फल। व्यर्थ। बेफायदा। जैसे,—कोई प्रयत्न विफल होना, विफलमनोरथ होना। ३. जिसके प्रयत्न का कुछ परिणाम न हुआ हो। अकृतकार्य। नाकामयाब। ४ हताश। निराश। ५ अडकोशरहित। ६ प्रभावरहित। जिसका कुछ असर न हो (को०)।

विफलता—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्य की सिद्धि न होना। असफलता।

विफला[1]—वि० स्त्री० [स०] १ बिना फल की। जिसमे फल न लगें। २. जिसका कुछ परिणाम न निकले। ३ जो प्रयत्न मे कृतकार्य न हुई हो।

विफला[2]—सज्ञा स्त्री० केतकी।

विफाक—सज्ञा पुं० [अ० विफाक] १ सघ। २ अनुकूलता। ३. दोस्ती। मित्रता (को०)।

विबध—सज्ञा पुं० [स० विबन्ध] १ विशेष रूप से बधन। खूब जकडना। २ आनाह। रोग (अफरा) का एक भेद जिसमे खाए हुए पदार्थ का बिना पचा रस मल रूप मे पेट मे रुका रहता है और दस्त नही होता। ३. एक प्रकार की पट्टी। विबधन।

विबधन—सज्ञा पु० [स० निबन्धन] पीठ, छाती, पेट आदि के घाव या फोडे को कपडे से विशेष रूप से बाँधने की युक्ति या क्रिया। (सुश्रुत)।

विबधवर्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० विबन्धवर्ति] घोडो का एक रोग जिसमे उनका पेशाब बद हो जाता है तथा पेट और नाडियो में जकडने की सी पीडा होती है।

विबधहृत्—वि० [स०] विबंध को दूर करनेवाला।

विबधु—वि० [स० वि+बन्धु] १ बधुरहित। जिसके भाई बधु न हो। २ पितृहीन। अनाथ।

विबद्ध—वि० [स०] पूर्णतया बँधा हुआ (को०)।

विबल—वि० [स०] १ बलरहित। २ कमजोर। दुर्बल। अशक्त। ३. विशेष बली। अधिक ताकत रखनेवाला।

विबाध[1]—वि० [स०] बाधारहित। कष्टरहित।

विबाध[2]—सज्ञा पु० [स०] दूर करना। हटा देना [को०]।

विबाधा—सज्ञा स्त्री० [स०] कष्ट। व्यथा। पीडा [को०]।

विबाहु—वि० [स०] बाहुरहित। भुजाविहीन [को०]।

विबुक—सज्ञा पुं० [स०] मल्लि से उत्पन्न वैश्य का पुत्र [को०]।

विबुद्ध—वि० [स० वि+बुध] १ जाग्रत। जगा हुआ। २ विकसित। खिला हुआ। ३ ज्ञानप्राप्त। सचेत। ४. कुशल। चतुर (को०)।

विबुध—सज्ञा पु० [स० वि+बुध] १ पडित। बुद्धिमान्। २ देवता। ३ चद्रमा। ४ एक राजा का नाम। ५ शिव। महादेव।

विबुधगुरु—सज्ञा पुं० [स०] बृहस्पति [को०]।

विबुधतटिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवताओ की नदी, आकाशगगा। २ गगा, देवनदी।

विबुधतरु—सज्ञा पु० [स०] कल्पवृक्ष।

विबुधद्विट्—सज्ञा पु० [स०] देवताओ के शत्रु। असुर [को०]।

विबुधधेनु—सज्ञा स्त्री० [स०] कामधेनु।

विबुधनदी—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा। देवापगा [को०]।

विबुधपति—सज्ञा पु० [स०] देवताओ का राजा, इद्र।

विबुधप्रिया—सज्ञा पु० [स०] १ देवी। भगवती। २. अप्सरा। ३ एक वर्णवृत्त।

विबुधबेलि—सज्ञा स्त्री० [स०] कल्पलता। उ०—कृपा सुधा सीची विबुधबेलि ज्यौं फिरि सुख फरनि फरी।—तुलसी (शब्द०)।

विबुधरिपु—सज्ञा पु० [स०] असुर [को०]।

विबुधवन—सज्ञा पुं० [स० विबुध+वन] इद्र का उद्यान। नदन कानन।

विबुधविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवागना। देवता की स्त्री। २ स्वर्ग की वेश्या। अप्सरा। उ०—सकल सुआसिनी गुरुजन पुरजन पाहुने लोग। विबुधविलासिनी सुर मुनि जाचक जो जेहि जोग—तुलसी (शब्द०)।

विबुधवैद(यु)—सज्ञा पु० [स०] विबुधवैद्य, अश्विनीकुमार।

विबुधवैद्य—सज्ञा पुं० [स०] देवताओ के वैद्य, अश्विनीकुमार।

विबुधशत्रु—सज्ञा पुं० [स०] दैत्य। असुर [को०]।

विबुधसद्म—सज्ञा पुं० [स० विबुधसद्मन्] सुरलोक। स्वर्ग [को०]।

यौ०—विबुधसद्मसी=अप्सरा। देवागना।

विबुधाचार्य—सज्ञा पुं० [स०] देवो के आचार्य, बृहस्पति [को०]।

विबुधाधिप—सज्ञा पु० [स०] देवताओ के राजा, इद्र।

विबुधाधिपति—सज्ञा पु० [स०] देवराज। इद्र [को०]।

विबुधान—सज्ञा पु० [स०] १ पडित। बुद्धिमान। विज्ञ। आचार्य। शिक्षक। २ देवता।

विबुधानुचर—सज्ञा पुं० [स०] देवसेवक। देवोपासक [को०]।

विबुधापगा—सज्ञा स्त्री० [स०] देवताओ की नदी, आकाशगगा।

विबुधावास—सज्ञा पुं० [स० विबुध+आवास] १ देवताओ का निवासस्थान, स्वर्ग। २ देवमदिर।

विबुधेंद्र—सज्ञा पु० [स० विबुधेन्द्र] इद्र [को०]।

विबुधेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] इद्र। देवराज [को०]।

विबुभूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] आत्माभिव्यक्ति इच्छा या कामना [को०]।

विबोध—सज्ञा पुं० [स०] १ जागरण। जागना। २ एक सचारी भाव। उ०—चिंता मोह सुपन विबोध स्मृति अमर्ष गर्व उतसुक तासु अवहित्थ ठानिस।—पद्माकर (शब्द०)।

विशेष—दे० साहित्यदर्पण के अनुसार 'विबोध कार्य मार्गणम्' अर्थात् कार्य का अन्वेषण विबोध कहा जाता है। साहित्य के रसविधान में विबोध सचारी या व्यभिचारी भावो में से एक है।

२ सम्यक् बोध। अच्छा ज्ञान। ३ सचेत होना। जागना। सावधान होना। ४ होश मे आना। ५ विकास। प्रफुल्लता। ६ बुद्धि। प्रतिभा (को०)। ७ प्रमाद। अनवधानता (को०)। ८ एक पक्षी का नाम (को०)।

विबोधन—सज्ञा पु० [सं०] [वि० विबोधित] १ जगाना। प्रबोधन। २ ज्ञान कराना। आँख खोलना। ३ जगना। जागृत होना। ४. समझाना बुझाना। ढाढस देना।

विबोधित—वि० [सं०] १ जगाया हुआ। २ ज्ञापित। जताया हुआ। बतलाया हुआ। ३ खिलाया या प्रफुल्लित किया हुआ। विकासित।

विब्बोक—सज्ञा पुं० दे० 'बिब्बोक' [को०]।

विभगी—सज्ञा पुं० [स० विभङ्ग] १. विन्यास। गठन या रचना। २ टूटना। ३ विभाग। ४ क्रम या परपरा का टूटना। ५ भ्रूभग। भौं की चेष्टा। ६ मुख का भाव या चेष्टा। ७ ठहराना। अवरोध। पडाव (को०)। ८ शिकन। झुर्री (को०)। ९ सोपान। सीढ़ी (को०)। १० फूट पडना। प्रकट होना (को०)। ११ तरंग। लहर (को०)।

विभग[1]—वि० चपल। उ०—विमल विपुल वहमि वारि सीतल भय ताप हारि भँवर वर विभंग तर तरग मालिका।—तुलसी (शब्द०)।

विभगि—सज्ञा स्त्री० [सं० विभङ्गि] १ अनुकृति। २ भगिमा। भगी। (को०)।

विभगी—वि० [स० विभङ्गिन्] १ कपनधर्मा। कपनशील। २ जिसपर झुर्रियाँ पडी हो (को०)।

विभगुर—वि० [सं० विभङ्गुर] लोल। अस्थिर (दृष्टि)।

विभज—वि० [सं० वि+भज्[1]] १ टूटना। फूटना। २ नाश। ध्वस।

विभक्त[1]—वि० [स० वि+√भज्+क्त (प्रत्य०)] १ बँटा हुआ। विभाजित २. अलग किया हुआ। पृथक् किया हुआ। ३ जो अपने पिता की सपत्ति से अपना भाग पा चुका हो और अलग हो। ४ विभिन्न। विविध (को०)। ५ सेवानिवृत्त। एकांतवासी (को०)। ६ नियमित (को०)। ७ विभूषित। अलकृत (को०)। ८ मापा हुआ (को०)।

विभक्त[2]—सज्ञा पु० १ कार्तिकेय। २ एकातवास। ३ अलगाव। पार्थक्य। ४. भाग। हिस्सा। ५ सपत्ति जो विभाजित की हुई हो। विभक्त संपत्ति।

विभक्तज—सज्ञा पु० [सं०] वह बालक जो भाइयो या हिस्सेदारो मे सपत्ति का विभाजन हो जाने पर जन्मा हो [को०]।

विभक्ता—वि० [स० विभक्तृ] १ हिस्सा बाँटनेवाला। विभक्त करनेवाला। २ प्रबधक [को०]।

विभक्ति—वि० [स०] १. विभक्त होने की क्रिया या भाव। विभाग। बाँट। २ अलग होने की क्रिया या भाव। अलगाव। पार्थक्य। ३ उत्तराधिकार मे मिली हुई सपत्ति या हिस्सा (को०)। ४. व्याकरण मे शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या सबध है। उ०—एक ही प्रत्यय अथवा विभक्ति के योग से निष्पन्न धातु, शब्द, प्रत्यय या विभक्ति मे निर्दिष्ट क्रमानुसार स्वरध्वनियो में परिवर्तन हो जाता है।—भोज० भा० सा०, पृ० १०।

विशेष—सस्कृत व्याकरणानुसार नाम या सज्ञाशब्दो के बाद लगनेवाले वे प्रत्यय जो नाम या सज्ञाशब्दो को पद (वाक्य प्रयोगार्ह) बनाते हैं और कारक परिणति के द्वारा क्रिया के साथ सबध सूचित करते हैं। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि विभक्तियाँ हैं जिनमे एकवचन, द्विवचन, बहुवचन—तीन वचन होते है। पाणिनीय व्याकरण मे इन्हे 'सुप' आदि २७ विभक्ति के रूप से गिनाया गया है। सस्कृत व्याकरण मे जिसे 'विभक्ति' कहते है, वह वास्तव मे शब्द का रूपातरित अग होता है। जैसे,—रामेण, रामाय इत्यादि। आजकल की प्रचलित खडी बोली में इस प्रकार की विभक्तिया प्राय नही है, केवल कर्म और सप्रदान कारक के सर्वनामो मे विकल्प से आती हैं। जैसे,—मुझे, तुझे, इन्हे इत्यादि। संस्कृत में विभक्तियो के रूप शब्द के अत्य अक्षर के अनुसार भिन्न भिन्न होते हैं। पर यह भेद खडीबोली के कारको मे नही पाया जाता, जिसमे शुद्ध विभक्तियो का व्यवहार नही होता, कारकचिह्नो का व्यवहार होता है।

विभग्न—वि० [स० वि+भग्न] १ टूटा फूटा हुआ। २ जो जुदा हो। अलग हुआ। छिन्न।

विभचार—सज्ञा पु० [सं० व्यभिचार] दे० 'व्यभिचार'। उ०—आचार भ्रम नहि सुद्द मन विवि विचार विभचार घन।—पृ० रा०, २५। १२६।

विभच्छ—सज्ञा पु० [स० वीभत्स, प्रा० वीभच्छ] दे० 'बीभत्स'। उ०—भणौं सिंगार, विभच्छ, भय सात सुअद्भुत सार। करुण वीर रुद्र, हास रस, नव रस उक्त निहार।—रघु० रू०, पृ० ४६।

विभज—सज्ञा पु० [स०] बौद्धो के अनुसार एक बडी सख्या [को०]।

विभजन—सज्ञा पु० [सं०] भेद। अतर। पार्थक्य [को०]।

विभजनीय—वि० [स०] विभक्त करने योग्य [को०]।

विभज्य[1]—वि० [स०] १. जिसका विभाग करना हो। २ जिसका भेद दिखाना हो [को०]।

विभज्य[2]—क्रि० वि० विभाग करके। खड खड करके।

विभय[1]—सज्ञा पु० [स०] भय से छुटकारा। भय से मुक्ति।

विभय[2]—वि० निर्भय [को०]।

विभव—सज्ञा पु० [सं०] १ धन। संपत्ति। २ ऐश्वर्य। शक्ति। उ०—भव भव विभव पराभव कारिनि।—तुलसी (शब्द०)। ३. औदार्य। ४. बहुतायत। आधिक्य। ५. मोक्ष। जन्ममरण से छुटकारा। ६. साठ सवत्सरो मे से छत्तीसवाँ संवत्सर। ७. उन्नत अवस्था। पद। प्रतिष्ठा (को०)। ८ महत्ता (को०)। ९. पालन। रक्षण (को०)। १० प्रलय (बौद्ध)। ११ सगीत मे एक ताल (को०)।

विभवराशि—सज्ञा स्त्री० [स० विभव+राशि] धनराशि। संपत्ति का ढेर। उ०— विश्व की विभव राशि, और थे प्रणत वही गुर्जर महीप भी।—लहर, पृ० ७७।

विभववान्—सज्ञा स्त्री० [स० विभववत्] [स्त्री० विभववती] १ विभववाला। धनी। दौलतमंद। २ शक्तिशाली।

विभवशाली—वि० [स० विभवशालिन्] [वि० स्त्री० विभवशालिनी] १. विभववाला। २. प्रतापवाला। ऐश्वर्यवाला।

विभवी—वि० [स० विभविन्] ऐश्वर्यवान्। प्रतापी [को०]।

विभाडक—सज्ञा पुं० [स० विभाण्डक] एक ऋषि जो ऋष्यशृग के पिता थे।

विभाडिका—सज्ञा स्त्री० [स० विभाण्डिका] आहुल्य वृक्ष।

विभाडी—सज्ञा स्त्री० [स० विभाण्डी] नीली अपराजिता। विष्णुक्रांता लता।

विभाँति[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० वि+हिं० भाँति] प्रकार। भेद। किस्म।

विभाँति[2]—वि० अनेक प्रकार का।

विभाँति[1]—अव्य० अनेक प्रकार से।

विभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रभा। कांति। चमक। २ किरण। रश्मि। ३. शोभा। सुदरता।

विभाइ—सज्ञा पु० [स० विभाव] दे० 'विभाव'। उ०—रस दारुन भय सचरिग। घोर गँभीर विभाइ।—पृ० रा०, ६१। २८८।

विभाकर—सज्ञा पुं० [स०] १ प्रकाशवाला। २ सूर्य। उ०—तिमिर ग्रसित सब लोक ओक लखि दुखित दयाकर। प्रगट कियो अद्भुत प्रभाउ भागवत विभाकर।—नद० ग्र०, पृ० ४। ३. आक का पौधा। मदार। ४ चित्रक। चीते का पेड। ५ अग्नि। ६ राजा। ७. चंद्रमा का वह अश जो सूर्य के प्रकाश से दीप्त होता है।

विभाग—सज्ञा पुं० [स०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। किसी वस्तु के कई भाग या हिस्से करना। बँटवारा। तकसीम। जैसे,—सपत्ति का विभाग।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

२. कई वर्गों या खंडो मे विभक्त वस्तु का एक एक खंड या वर्ग। भाग। अंश। हिस्सा। बखरा। ३. पैतृक सपत्ति का कोई अश जो किसी को नियमानुसार दिया जाय। हिस्सा। बखरा। ४ प्रकरण। अध्याय। जैसे,—ग्रथ का विभाग। ५. कार्यक्षेत्र। मुहकमा। जैसे,—शिक्षा विभाग। ६ व्यवस्था। प्रबध। इतजाम (को०)। ७. गणित मे भिन्न का अश (को०)। ८. न्यायशास्त्र के अनुसार २४ गुणो मे से एक का नाम।

यौ०—विभागकल्पन = हिस्सा या अश नियत करना (याज्ञवल्क्य स्मृति)। विभागज्ञ = अतर को जाननेवाला। विभाग को समझनेवाला। विभागधर्म = दायभाग की विधि। बँटवारा

सबधी नियम कानून। विभागपत्रिका = विभाजन का दस्तावेज। वह कागज जिसपर विभाग का विवरण दर्ज हो। विभागभाक्, विभागभाज् = पहले से बँटी हुई सपत्ति का हिस्सेदार। विभाग पानेवाला। विभागरेखा = विभाजन की रेखा। दो हिस्सो का अलगाव सूचित करनेवाला चिह्न या निशान।

विभागक—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति। २ हिस्से बाँटनेवाला [को०]।

विभागत—क्रि० वि० [स० विभागतस्] विभाग के अनुसार। हिस्से के मुताबिक।

विभागश—क्रि० वि० [स० विभागशस्] विभाग के अनुसार।

विभागात्मक नक्षत्र सज्ञा पु० [स०] रोहिणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा और श्रवण आदि आठ प्रकाशमय नक्षत्र।

विभागाध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स० विभाग + अध्यक्ष] विभाग (अ० डिपार्टमेंट) का प्रधान अधिकारी या अध्यक्ष जैसे, हिंदी विभागाध्यक्ष।

विभागी—सज्ञा पु० [स० विभागिन्] [स्त्री० विभागिनी] १ विभाग करनेवाला। २ विभाग या हिस्सा पानेवाला। हिस्सेदार।

विभाजक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ विभाग करनेवाला। बाँटनेवाला। २ गणित मे वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या को भाग दें। भाजक।

विभाजक[2]—वि० विभाग या विच्छेद करनेवाला।

विभाजन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विभाजनीय, विभाजित, विभाज्य] १ विभाग करने की क्रिया या भाव। बाँटने का काम। २ पात्र। बरतन।

विभाजयिता—वि० [स० विभाजयितृ] विभाजन करनेवाला [को०]।

विभाजित—वि० [स०] जिसका विभाग किया गया हो। जो बाँटा गया हो। जिसके खड या हिस्से किए गए हो।

विभाज्य—वि० [स०] १ विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो। जिसे बाँटना हो। ३ (सख्या) जिसे किसी सख्या से बाँटना हो। भाज्य (गणित)।

विभाड़ु—वि० [प्रा० विब्भाड] नाशक। नाश करनेवाला। उ०—बेमग राइ दारिद विभाड। अचगल्ल राइ जाडा उपाड।—पृ० रा०, ५७।१६२।

विभात—सज्ञा पु० [सं०] सवेरा। प्रभात।

विभाति—सज्ञा पु० [स० विभा] दीप्ति। शोभा। सुंदरता।

विभाती—सज्ञा स्त्री० [स०] पौ फटना। प्रभात। सुबह (को०)। ॐ २ दीप्ति। शोभा। विभाति। उ०—और वनिता की ओर भूलेहूँ न देहौं मन तुम जो कहत आए सोह सीरी ताती मे। ताको अब करिवो निवाह सो देखाऊँ तुम्हें रघुनाथ देखौ देह आपनी विभाती मे।—रघुनाथ (शब्द०)।

विभानाॐ—क्रि० अ० [सं० विभा + ना (प्रत्य०)] १. चमकना। झलकना। २ शोभा पाना। शोभित होना। उ०—मनु फुल्ल कमल के मधि कठी सतगुन लता विभाति है।—गोपाल (शब्द०)।

विभारना[1]—क्रि० अ० [हिं० विभाना या सं० वि० + √भ्राज्] चमकना। झलकना। उ०—स्याम बरन पट अरुन विभारैं। रवि सम तेज सुलच्छन धारैं।—पद्माकर (शब्द०)।

विभाव—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य मे वह वस्तु जो रति आदि स्थायी भावो को आलबन मे उत्पन्न करनेवाली या उद्दीप्त करनेवाली हो। रसविधान मे भाव का आलबन या विभावक या उद्दीपक। उ०—इसी भाव (प्रेम) के विविध प्रकार के आलबनो और उद्दीपनो का चित्रण इस भूमि के विभाव पक्ष मे पाया जाता है।—रस०, पृ० ७४।

विशेष—विभाव दो कहे गए हैं—आलबन और उद्दीपन। आलबन वह है जिसके प्रति आश्रय या पात्र के हृदय मे कोई भाव स्थित हो। जैसे नायक के लिये नायिका और नायिका के लिये नायक। उद्दीपन वह है जिससे आलबन के प्रति स्थित भाव उद्दीप्त या उत्तेजित हो। रसभेद से आलबन और उद्दीपन भिन्न भिन्न होगे। जैसे, शृगार मे आलबन होगे नायक नायिका, हास में कोई बढगी आकृति या वाणी आदि वाला व्यक्ति, करुण में विनष्ट बधु आदि या कोई पीडित अथवा शोचनीय व्यक्ति इत्यादि, इत्यादि। इस प्रकार उद्दीपन भी रसभेद से भिन्न होगे। जैसे, शृगार मे चाँदनी, फूल आदि, रौद्र मे आलबन की दुष्ट चेष्टा इत्यादि।

२ मित्र। परिचित व्यक्ति (को०)। ३. कोई भी उत्तेजक दशा, अवस्था या स्थिति जिससे भावो का उद्दीपन हो (को०)। ४ शिव का एक नाम (को०)।

विभावक—वि० [स०] १ बहस करनेवाला। २ प्रकट करनेवाला। व्यक्त करनेवाला ३. सपादक। सघटित करनेवाला (को०)।

विभावन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विभावनीय] १. विशेष रूप से चिंतन। विचार। विमर्श। २. साहित्य के रसविधान मे वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र मे प्रदर्शित भाव का श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण द्वारा भागी होता है, विभावन व्यापार उ०—पर विभावन द्वारा जब वस्तुप्रतिष्ठा पूर्ण रूप से हो ले तब आगे कुछ और होना चाहिए।—रस०, पृ० ११६। ३. स्पष्ट ज्ञान या निश्चय। विवेक। निर्णय (को०)। ४. प्रत्यय। कल्पना (को०)। ५ विकास। प्रसार (को०)। ६ पालन। रक्षण (को०)। ७ देखना। अवलोकन। दर्शन (को०)। ८ दिखाना। अभिव्यक्ति।

विभावना—सज्ञा स्त्री० [सं०] साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे (क) कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या (ख) अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या (ग) प्रतिबंध होते हुए भी कार्य की सिद्धि या (घ) जो जिस कार्य का कारण नही हुआ करता, उससे उस कार्य का उत्पत्ति अथवा (ङ) विरुद्ध कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति या (च) कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई जाती है। उ०—(क) सुनत लखत श्रुति नैन बिनु, रसना बिनु रस लेत। (ख) राजकुमार सरोज से हाथन सो गहि शभु शरासन तोड्यो। (ग) तब बेनी नागिनि रहै, बाँधी गुनन बनाय। तऊ बाम अजचद को बदावदी डसि जाय। (घ) कारे घन उमड़ि अगारे

बरसत हैं। (ङ) अग्निधार स्रवत सुधाकर बिलोकिए। (च) और नदी नदन तें कोकनद होत तेरो कर कोकनद नदी नद प्रगटत हैं।

विभावनीय—वि० [स०] भावना या चिंतन करने योग्य।

विभावर—वि० [स०] उज्वल। प्रदीप्त [को०]।

विभावरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. रात्रि। रात। २ वह रात जिसमे तारे चमकते हो। ३ हरिद्रा। हलदी। ४. कुट्टनी। कुटनी। दूती। ५. टेढी स्त्री। चाल की औरत। ६ मुखरा स्त्री। बहुत बड बड करनेवाली स्त्री। ७ मेदा वृक्ष। ८. प्रचेतस् की नगरी का नाम। ९. वेश्या। गणिका [को०]। १० एक प्रकार का वृत्त (को०)।

विभावरीकात—सज्ञा पु० [स० विभावरीकान्त] निशापति। चद्रमा। रजनीकात [को०]।

विभावरीमुख—सज्ञा पुं० [स०] संध्या [को०]।

विभावरीश—सज्ञा पुं० [स०] निशापति। चद्रमा।

विभावस—वि० [स० विभावसु] दे० 'विभावसु'। उ०—हरि हरन-छिछ सुअछिछ वछिछ वर जछिछ विभावस।—पृ० रा०, २।१४४।

विभावसु[1]—वि० [स०] जिसमे प्रकाश की अधिकता हो। अधिक प्रभावाला।

विभावसु[2]—सज्ञा पु० १ वसुओ के एक पुत्र। २. सूर्य। ३ आक का पौधा। अर्क। मदार। ४ अग्नि। ५ चित्रक वृक्ष। चीता। ६ चंद्रमा। ७ एक प्रकार का हार। ८. एक दानव जो नरकासुर का पुत्र था। ९ एक ऋषि का नाम। (महाभारत)। १ एक गधर्व जिसने गायत्री से वह सोम छीना था, जो वह देवताओ के लिये ले जा रही थी।

विभावाश्रित—वि० [स०] विभाव पर आधृत वर्ण्य वस्तु पर आश्रित। उ०—जो भावपक्ष को महत्व देते हुए भी उसे विभावाश्रित देखना चाहती है।—आचार्य०, पृ० २२।

विभावित—वि० [स०] १. चिंतन किया हुआ। सोचा या विचारा हुआ। २ कल्पित। अनुमित। सकेतित। ३ निश्चित। ४ स्वीकृत। मजूर किया हुआ। ५ व्यक्त वा स्पष्ट किया हुआ। प्रकटीकृत (को०)। ६. सिद्ध। सर्वसमत (को०)।

विभावी—वि० [स० विभाविन्] १ भाव जाग्रत् करनेवाला। २. व्यक्त करनेवाला। ३ शक्तिमान् (को०)।

विभाव्य—वि० [स०] १ अनुभव किया जाने योग्य। २. विवेच्य। ३ ध्यान देने योग्य [को०]।

विभाषा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सस्कृत व्याकरण मे वह स्थल जहाँ ऐसे वचन मिलते है कि 'ऐसा न होगा' तथा 'ऐसा हो भी सकता है'। विकल्प। २ किसी व्यापक साहित्यभाषा क्षेत्र के अतर्गत अन्य साहित्यिक प्रतिष्ठाप्राप्त भाषा—उ०—व्रजभाषा हिंदी की विभाषा है। ३. बोली। किसी प्रधान भाषा के भीतर आने-वाली जनभाषा (को०)। ४. एक रागिनी (को०)। ५ (बौद्ध) वृहत्कारिका (को०)।

विभाषित—वि० [स०] वैकल्पिक। विकल्प से होनेवाला [को०]।

विभास—सज्ञा पुं० [स०] १. चमक। तेज। २ एक राग जो सबेरे के समय गाया जाता है। इसे कुछ लोग भैरव राग का ही भेद मानते हैं। उ०—अशब्द हो गई वीणा, विभास बजता था।—बेला, पृ० २६। ३ तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार सप्तर्षियो मे से एक। ४ मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक देवयोनि। ५ सात सूर्यो मे से एक सूर्य (को०)।

विभासक—वि० [स०] [वि० स्त्री० विभासिका] १. चमकनेवाला। प्रकाशयुक्त। २ चमकानेवाला। झलकानेवाला। ३ प्रकाशित करनेवाला। प्रकट या व्यक्त करनेवाला। जाहिर करनेवाला।

विभासना—क्रि० अ० [स० विभास+हि० ना (प्रत्य०)] चमकना। झलकना।

विभासा—सज्ञा स्त्री० [स०] चमक। दीप्ति। प्रभा [को०]।

विभासिका—वि० स्त्री० [स०] चमकानेवाली। दीप्त करनेवाली। उ०—कचनधाम अकास विभासिका।—भारतेंदु ग्रं०, भा० १, पृ० २८१।

विभासित—वि० [स०] १ प्रकाशित। दीप्त। चमकता हुआ। २. प्रकट। जाहिर।

विभित्ति—सज्ञा स्त्री० [स० उप० वि+√भिद् (=विदारण)] १. काटकर पृथक् करना। भेदना। २. टुकडे टुकड़े करना [को०]।

विभिदा—सज्ञा स्त्री० [स०] भेद। अतर [को०]।

विभिन्न[1]—वि० [स०] १ छिदा हुआ। बँटा हुआ। काटकर अलग किया हुआ। २ बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। ३ अनेक प्रकार का। कई तरह का। ४ मिश्रित। मिला हुआ (को०)। ५. और का और किया हुआ। उलटा। ६ हताश। निराश। ७ हैरान। परेशान। व्याकुल (को०)। ८ इधर उधर घूमा हुआ (को०)। ९ प्रकटित। प्रदर्शित (को०)। १० जो विश्वास करने योग्य न हो। अविश्वसनीय। अविश्वसित (को०)। ११. विरोधी (को०)।

विभिन्न[2]—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

विभिन्नता—सज्ञा स्त्री० [स०] विभिन्न होने का भाव। भेद। पार्थक्य। अलगाव। फर्क।

विभी—वि० [स०] निर्भय। अभीत। विगतभय। बेडर [को०]।

विभीत[1]—[स०] [वि० स्त्री० विभीता] डरा हुआ। उ०—वे परंपरा-प्रेमी, परिवर्तन से विभीत, ईश्वर परोक्ष से ग्रस्त, भाग्य के दास क्रीत।—ग्राम्या, पृ० ९१।

विभीत[2]—सज्ञा पुं० विभीतक। बहेडा।

विभीतक—सज्ञा पु० [स०] बहेडा। बहेडे का वृक्ष।

विभीतकी, विभीता—सज्ञा स्त्री० [स०] बहेडा [को०]।

विभीति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. डर। भय। २. शका। संदेह। उ०—नहिं तोरिहैं राम शिव को धनु यह विभीति परिहरहु।—रघुराज (शब्द०)।

विभीषक—सज्ञा पुं० [सं०] डरानेवाला। भयानक।

विभीषण[1]—वि० [स०] बहुत डरावना। बहुत भयानक।

विभीषण[१]—सज्ञा पुं० १ एक राक्षस जो रावण का भाई था और रावण के मारे जाने पर राम द्वारा लका का राजा बनाया गया था।

विशेष—यह विश्रवा मुनि द्वारा कैकसी राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और सुमाली नामक राक्षस का दौहित्र (नाती) था। एक दिन सुमाली ने कुबेर को पुष्पक विमान पर चढकर जाते देखा। उसे यह इच्छा हुई कि मेरे भी ऐसा ही दौहित्र होता। उसने अपनी परम रूपवती कन्या कैकसी को विश्रवा मुनि के पास भेजा। जिस समय वह गई, उस समय मुनि ध्यान मे मग्न थे। वे उसका अभिप्राय समझकर बोले—'तू बडे विकट समय मे आई। इससे इस बार तुझे एक विकट आकृति का पुत्र उत्पन्न होगा।' ककसा के बहुत विनय करने पर ऋषि ने फिर आशीर्वाद दिया—'अच्छा जा। तेरा अतम पुत्र मेरे ही वश का सा और परम धार्मिक होगा।' वही अतम पुत्र विभीषण हुआ। अपने बडे भाइयो रावण और कुभकर्ण के साथ विभीषण ने भी घोर तप किया। जब ब्रह्मा वर देने आए, तब विभीषण ने यही वर माँगा—'मेरा मति धर्म मे सदा स्थिर रहे'। ब्रह्मा ने वर दिया—'तुम बडे धार्मिक और अमर होगे'। वरप्राप्ति के उपरात विभीषण भी रावण के साथ लका मे ही आकर रहने लगा। रावण ने जब सीता-हरण किया, तब यह राम की ओर हो गया था।

२ नल तृण। नरसल का पौधा।

विभीषणा[१]—वि० स्त्री० [स०] डरावनी। भयानक।

विभीषणा—सज्ञा स्त्री० १ एक मुहूर्त का नाम। २ स्कद की एक मातृका (को०)।

विभीषा—सज्ञा स्त्री० [स०] भयालुता। भीरुता। भयभीत या शकित होने की भावना (को०)।

विभीषिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भयप्रदर्शन। डर दिखाना। २ भयकर बात। भयानक काड या दृश्य। ३ आतक। भय। खौफ (को०)। ४ भयभीत करनेका साधन (को०)।

विभु[१]—वि० [स०] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो। जो सब मूर्त पदार्थों मे रम रहा हो। जिसमे कोई स्थान खाली न हो। सर्वगत। सर्वव्यापक। जैसे,—दिक्, काल और आत्मा।

विशेष—जीव की जाग्रत् आदि चारो अवस्थाओ के चार विभु माने गए हैं। जाग्रत् का विभु 'विश्व', स्वप्न का 'तेजस्', सुषुप्ति का 'प्राज्ञ' और तुरीय का 'ब्रह्म' कहा गया है।

२ जो सब जगह जा सकता हो। सर्वत्र गमनशील। जैसे, मन। ३ अत्यत विस्तृत। बहुत बडा। महान्। ४ सब काल मे रहनेवाला। सर्वकालव्यापी। नित्य। ५ दृढ़। अचल। चिर स्थायी। ६ शक्तिमान्। ऐश्वर्ययुक्त। ७. योग्य। समर्थ। क्षम (को०)। ८. आत्मसयमी। जितेंद्रिय (को०)।

विभु[२]—सज्ञा पुं० १ ब्रह्मा। २ आत्मा। जीवात्मा। ३ प्रभु। स्वामी। ४. ईश्वर। उ०—विभु की बाट जोहते हैं सब ले ले-कर अपने उपहार।—साकेत पृ० ३७५। ५ शकर। शिव। ६. विष्णु। ७ भृत्य। ८ सूर्य (को०)। ९ चद्र (को०)। १० कुबेर (को०)। ११ एक देव वर्ग (को०)। १२ बुद्ध का एक नाम (को०)। १३ आकाश (को०)। १४ अवकाश। अवसर (को०)। १५. काल (को०)।

विभुक्षित—वि० [स० 'बुभुक्षित' का असाधु प्रयोग] भूखा। उ०—वह तीस कोटि विभुक्षित और नग्नतन सतान की माँ है।—हि० का० प्र०, पृ० २३३।

विभुग्न—वि० [स०] वक्र। टेढा। कुटिल (को०)।

विभुता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विभु होने का भाव। सर्वव्यापकता। उ०—युग युग की नव मानवता को। विस्तृत वसुधा की विभुता को।—लहर, पृ० ३। २. ऐश्वर्य। शक्ति। ३. प्रभुता। ईश्वरता। ४. अधिकार।

विभुत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विभुता'।

विभू—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विभु'।

विभूत—वि० [स०] १ उत्पन्न। जात। २. प्रकट। व्यक्त। ३. महान्। शक्तिमान्। ४ उत्तित। (को०)।

विभूति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बहुतायत। वृद्धि। बढती। २ विभव। ऐश्वर्य। ३ सपत्ति। धन। ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति जिसके अतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं।

विशेष—योगदर्शन के विभूतिपाद मे इसका वर्णन है कि किन किन साधनाओ से कौन कौन सी विभूतियाँ प्राप्त होती हैं।

५ शिव के अग मे चढ़ाने की राख या भस्म।

विशेष—देवी भागवत, शिवपुराण आदि में भस्म या विभूति धारण करने का माहात्म्य विस्तार से वर्णित है।

६ भगवान् विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी माना जाता है। ७ लक्ष्मी। ८ विविध सृष्टि। ९ एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। १० प्रभुत्व। बडाई। ११ सृष्टि। १२. ताकत। शक्ति। महत्ता (को०)। १३ प्रतिष्ठा। उच्च पद (को०)। १४ विस्तार। प्रसार (को०)। १५. प्रवृत्ति। प्रकृति। स्वभाव (को०)।

विभूतिमान्—वि० [स० विभूतिमत्] [वि० स्त्री० विभूतिमती] १ शक्ति सपन्न। ऐश्वर्यशाली। २ सपतिशाली। धनवान्। ३. विभूत। अलौकिक शक्ति से युक्त (को०)। ४ जिसने विभूति या भस्म धारण किया हो (को०)।

विभूमा—वि० [सं० वि+भूमन्] ऐश्वर्यवान्। शक्तिशाली।

विभूमा[२]—सज्ञा पुं० १ श्रीकृष्ण। २ महत्व। शक्ति (को०)।

विभूमा[३]—सज्ञा स्त्री० [स०] शक्ति। महत्ता। ऐश्वर्य (को०)।

विभूरसि—सज्ञा पुं० [स०] अग्नि की एक मूर्ति।

विभूषण—सज्ञा पुं० [वि० विभूष्य, विभूषित] १ अलकृत करने की क्रिया। गहने आदि से सजाने का काम। २ भूषण। अलकार। जेवर। गहना।

विशेष—किसी शब्द के आगे लगकर यह शब्द श्रेष्ठतावाचक हो जाता है। जैसे, रघुवशविभूषण।

३. मजुश्री का एक नाम। (बौद्ध)। ४ सौंदर्य। द्युति। (को०)

विभूषणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गहनो आदि की सजावट। भूषा। २ शोभा।

विभूषना(पु)—क्रि० स० [स० विभूषण] १ अलंकृत करना। गहने आदि से सजाना। २ सुशोभित करना। मडित करना। ३ अपने आगमन द्वारा सुशोभित करना। उ०—कहा रीति रावरी जो रक को विभूषौ गेह, तुम सो प्रवीन गुरु सेवा ततपर को।—दूलह (शब्द०)।

विभूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गहनो आदि की खूब सजावट। २ भूषण। अलंकार। गहना। ३. शोभा। सौंदर्य। कांति।

विभूषित'—वि० [स०] १ गहनो आदि से सजाया हुआ। २ अलकृत ३ (अच्छी वस्तु, गुण आदि से) युक्त। सहित। जैसे,—वे सब गुणो से विभूषित हैं। ४ शोभित।

विभूषित'—सज्ञा पुं० [स०] अलकार। गहना (को०)।

विभूषी—वि० [स० विभूषिन्] १ अलकृत। सज्जित। २ (गुण से) शोभित। ३ सजानेवाला (को०)।

विभूष्णु'—वि० [स०] विभूतियुक्त। सर्वव्यापक।

विभूष्णु'—सज्ञा पु० शिव।

विभूष्य—वि० [सं०] १. विभूषित करने योग्य। सजाने योग्य। २ जिसे गहनो आदि से सजाना हो।

विभृत—वि० [स०] १ जो धारण किया गया हो। सँभाला हुआ। २. पोषित। पालित (को०)।

विभेंटन(पु)—सज्ञा पुं० [स० वि०+भेंट] आलिगन करना। गले मिलना। भेंटना। उ०—एरे वाम नैन मेरे एरी भुज वाम आज रौरे फरकन तें जो बालम विहारि हौं। करिहौं गुलाब उपकार गुन मानिना कै देखन विभेंटन मैं आगे विस्तारिहौं।—पद्माकर (शब्द०)।

विभेद—सज्ञा पु० [स०] विभिन्नता। फरक। अतर। उ०—दोनो तुल्य स्त्री वा पुरुष बन सके और कभी कोई विभेद न रहे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६७। २ अनेक भेद। कई प्रकार। ३. छेदकर घुसना। धँसना। ४ काटना, तोडना या छेदना। ५ कटाव। छेद। दरार। ६ दो या कई खडो मे करना। विभाग। ७ एकरूपता से अनेकरूपता की प्राप्ति। विकास। परिवर्तन। ८ मिश्रण। ९ आहत करना (को०)। १० विरोध। वैर (को०)। ११ हस्तक्षेप। बाधा (को०)।

विभेदक'—वि०, सज्ञा पु० [स०] १ भेदन करनेवाला। काटने या छेदनेवाला। २ घुसनेवाला। धँसनेवाला। ३ दो वस्तुओ में भेद प्रकट करनेवाला। फर्क दिखाने या डालनेवाला। एक से दूसरे मे विशेषता प्रकट करनेवाला।

विभेदक'—सज्ञा पु० विभीतक। बहेडा।

विभेदकर—वि० [स०] [वि० स्त्री० विभेदकरी] विलगाव, फर्क वा भेद पैदा करनेवाला। दे० 'विभेदकारी'। उ०—अब दीनदयाल दया करिए मति मोरि विभेदकरी हरिए।—मानस, ६। ११०।

विभेदकारी—वि० [स० विभेदकारिन्] [वि० स्त्री० विभेदकारिणी] १ छेदने या का काटनेवाला। २ भेद या फर्क करनेवाला। ३ दो व्यक्तियो मे विरोध उत्पन्न करनेवाला। फूट डालनेवाला।

विभेदन'—सज्ञा पु० [स०] [वि० विभेदनीय, विभेद्य] १ छेदना। काटना या तोडना। २ छेदकर घुसना। धँसना। ३ काटकर दो या कई खडो मे करना। ४ पृथक् पृथक् करना। अलग अलग करना। ५. भेद या फर्क डालना या दिखाना।

विभेदन'—वि० दे० 'विभेदक'।

विभेदना(पु)—क्रि० स० [स० विभेदन] १ भेदन करना। छेदना। काटना। २ घुसना। प्रवेश करना। उ०—लोक विभेदति वामना वासु परी मनु दीरघ मे गनिए जू।—केशव (शब्द०)। ३ भेद या फर्क डालना।

विभेदिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० विभेदिका] पृथक् पृथक करनेवाला। विभक्त करनेवाला (को०)।

विभेदिनी—वि० स्त्री० [स० विभेदिन्] १ छेदन या भेदन करनेवाली। २ छेदकर घुसनेवाली। ३ भेद या फर्क करनेवाली।

विभेदी—वि० [स० विभेदिन्] [वि० स्त्री० विभेदिनी] १ छेदन करनेवाला। काटनेवाला। २ छेदकर घुसनेवाला। धँसनेवाला। ३ भेद या फर्क करनेवाला। ४ दूर, अलग या नष्ट करनेवाला (को०)।

विभेद्य—वि० [स०] विभेद करने लायक। काटने या अलग करने लायक (को०)।

विभेष—सज्ञा पु० [स० वि+वेष√भेष] कुवेश। विकृत वेष। बुरा वेश। उ०—भोजन छोभ मलीन तन बसन विभेष बनाइ। रैनि दिवस छिन पावत कल नही जहँ तहँ जाइ।—कबीर सा०, पृ० ४०३।

विभो'—सज्ञा पु० [स० 'विभु' का सबोधन रूप] हे विभु।

विभो(पु)'—सज्ञा पु० [स० विभव] दे० 'विभव'। उ०—फल आए तरवर झुकै झुकन मेघ जल आय। विभो पाय सज्जन झुकै यह परकाजि सुभाय।—शकुतला, पृ० ८८।

विभोर—वि० [स० विह्वल, वग० विभोर] आत्म विस्मृत। किसी भाव मे तल्लीन या खोया हुआ।

विभौ(पु)—सज्ञा पुं० [स० विभव] दे० 'विभव'। उ०—जोधपुर विभौ जोवडियौ, मेल बहादर खान जूं। हरि रुखै अचभा साहरा, दै थाँमा अनमान नूं—रा० रू०, पृ० २४।

विभ्रश—सज्ञा पु० [सं०] १ विनाश। ध्वस। २ पतन। अपनति। ३ ऊँचा कगार। ४ पहाड की चोटी पर का चौरस मैदान। ५ ह्रास। क्षय। बरबादी (को०)। ६ प्रवाहिका। संग्रहणी। अविस्तार (को०)। ७ अस्तव्यस्तता। अराजकता। विशृखलता (को०)।

विभ्रशयज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] एक दिन मे पूर्ण होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ (को०)।

विभ्रशित—वि० [सं०] १ विनष्ट। ध्वस्त। २ पतित। ३ गुमराह किया हुआ। बहकाया हुआ (को०)।

यौ०—विभ्रंशितज्ञान = जिसका ज्ञान नष्ट हो गया हो। मूर्ख। निर्बुद्धि।

विभ्रंशी—वि० [स० विभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट होनेवाला। २ खंड खंड होनेवाला [को०]।

विभ्रम—संज्ञा पु० [स०] १ भ्रमण। चक्कर। फेरा। २ भ्रम। भ्रांति। धोखा। भूल। ३ संदेह। संशय। ४ चकपकाहट। घबराहट। अस्थिरता। ५ स्त्रियों का हाव जिसमें वे भ्रम से उलटे पलटे भूषण वस्त्र पहन लेती हैं, तथा रह रहकर मतवाले की तरह कभी क्रोध, कभी हर्ष आदि भाव प्रकट करती हैं। ६ कांति। शोभा। ७ घमंड। अभिमान (को०)। ८ तरंग। सनक। मन की लहर (को०)। ९ विक्षोभ। उद्वेग (को०)।

विभ्रमवती—संज्ञा स्त्री० [स०] हाव विशेषवाली कन्या। बालिका [को०]।

विभ्रमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] बुढाई। बुढापा। वार्धक्य।

विभ्रमी—वि० [स० विभ्रमिन्] १ इधर उधर घूमनेवाला। भ्रमणकारी। घुमक्कड। २, चक्कर करने या खानेवाला [को०]।

विभ्रष्ट—वि० [स०] १ दूर किया हुआ। अलग किया हुआ। २ क्षीण। लुप्त। पतित। नष्ट। ३ ओझल। अंतर्हित। ४ वंचित। विरहित। ५ व्यर्थ। अनुपयुक्त। ६ सत्वहीन। निस्तत्व [को०]।

विभ्रांत—वि० [स० विभ्रान्त] १ घूमता हुआ। चक्कर खाता हुआ। २ भ्रम में पड़ा हुआ। विभ्रमयुक्त। ३. विक्षुब्ध। व्याकुल (को०)। ४ चारो ओर फैला हुआ (को०)।

यौ०—विभ्रांतनयन = तिरछी चितवनवाला। विभ्रांतमना = हतबुद्धि। जड। विभ्रांतशील = मत्त। मतवाला।

५ हतबुद्धि। ६ बदर। ७ सूर्य या चद्रमा का मंडल [को०]।

विभ्रांति—संज्ञा स्त्री० [स० विभ्रान्ति] १ फेरा। चक्कर। २ भ्रम। संदेह। ३ हड़बड़ी। घबराहट।

विभ्राजित—वि० [स०] चमकदार या दीप्तियुक्त किया हुआ [को०]।

विभ्राट्[1]—संज्ञा पुं० [स० विभ्राज्? तुल० बं०] १. आपत्ति। विपत्ति। संकट। २ उपद्रव। बखेड़ा। उ०—(क) तिलक विभ्राट् के समय गोखले विलायत में थे।—सरस्वती (शब्द०)। (ख) कुछ न कुछ विघटित हुआ विभ्राट्।—साकेत, १६८।

विभ्राट्[2]—वि० [स० विभ्राज्] प्रकाशमान्। दीप्तिमान्। उ०—भर सको अगर तो प्रतिमा में चेतना भरो, यदि नहीं निमंत्रण दो जीवन के दानी को। विभ्राट् महाबल जहाँ थके से दीख रहे, आगे आने दो वहाँ क्षीणबल प्राणी को।—धूप०, ७।

विभ्रातृव्य—संज्ञा पुं० [स०] १ बैर। शत्रुता। २ होड़ा होड़ी। प्रतिद्वंद्विता [को०]।

विभ्रेष—संज्ञा पुं० [स०] दुष्कर्म करना। अपराध करना [को०]।

विमंडन—संज्ञा पुं० [स० विमण्डन] [वि० विमंडित] १ गहने आदि से सजाना। २ शृंगार करना। सँवारना। ३ अलंकार। भूषण। गहना।

विमंडित—वि० [स० विमण्डित] १. अलंकृत। सजा हुआ। २ सुशोभित। ३ सहित। युक्त। (अच्छी वस्तु से)। उ०—देखि विमंडित दंडिन सो भुजदंड दुओ असि दंड विहीनो।—केशव (शब्द०)।

विमंथन—संज्ञा पुं० [स० विमन्थन] खूब मथना।

विमथित—वि० [स०] मथा हुआ। विलोडित [को०]।

विमज्जित—वि० [स०] डूबा हुआ। निमज्जित [को०]।

विमत[1]—संज्ञा पु० [स०] १ विरुद्ध मत। विपरीत सिद्धांत। उ०—छमत, विमत, न पुरान मत एक पथ नेति नेति नेति नित निगम करत।—तुलसी (शब्द०)। २ खिलाफ राय। प्रतिकूल सम्मति। ३ शत्रु। वैरी (को०)।

विमत[2]—वि० १ विरुद्ध मतवाला। भिन्न मत का। २ विषम। असंगत (को०)। ३ अनादृत। उपेक्षित (को०)। ४ संशयास्पद। संदिग्ध (को०)।

विमति[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] विरुद्ध मति। खिलाफ राय। प्रतिकूल विचार। २ उचित के विपरीत विचार। कुमति। दुर्बुद्धि। बुरा विचार। ३ असम्मति। अस्वीकृति। ४ वाद विवाद। वितर्क। वितंडा (को०)।

विमति[2]—वि० मूढ। मूर्ख। अज्ञ [को०]।

विमत्त—वि० [स०] १ अभिमानी। उ०—जे ज्ञानमान विमत्त तव भय हरनि भगति न आदरी।—मानस, ७।१३। २ मतवाला या मस्त (हाथी)।

विमत्सर[1]—संज्ञा पुं० [स०] अधिक अहंकार। उ०—तजि काम क्रोध विमत्सरालस लोभ मोह निवारि कै। छल मल कुसंगति त्यागि मद दुरवासना सनमानि कै।—विश्राम (शब्द०)।

विमत्सर[2]—वि० १ मत्सररहित। २. अहंकारशून्य।

विमद—वि० [स०] १ मदरहित। उन्मादहीन। जो मतवाला न हो। २ (वह हाथी) जिसे मद न बहता हो। ३ आनंद, दुःख आदि से रहित। हर्षशून्य (को०)।

विमद्य—वि० [स०] जिसने शराब पीना छोड़ दिया हो। जो मदिरा पान करना छोड़े हो को०]।

विमध्यम—वि० [स०] तटस्थ। मध्यवर्ती। उदासीन [को०]।

विमन[1]—वि० [स० विमनस्] अनमना। उदास। रंजीदा। खिन्न। उ०—विमन बदि मुनि सुर सरि तीरा। तह आयो नारद मुनि धीरा। क्यों उदास अस पूछ्यौ व्यासै। वर्ण्यो व्यास सकल निज त्रासै।—रघुराज (शब्द०)।

विमनस्क—वि० [स०] १ जिसका मन उचटा हो। जिसका मन न लगता हो। अनमना। २ उदास। खिन्न। अप्रसन्न। रंजीदा। ३ परेशान। व्याकुल। हैरान (को०)।

विमना—वि० [स० विमनस्] दे० 'विमनस्क' [को०]।

विमनिमा—संज्ञा स्त्री० [स० विमनिमन्] उदासी। विमनस्क होने का भाव खिन्नता [को०]।

विमन्यु—वि० [स०] विगतमन्यु। क्रोधरहित [को०]।

विमय—संज्ञा पु० [सं०] परिवर्तन। अदला बदली। लेन देन। विनिमय [को०]।

विमर्द—सज्ञा पुं० [सं०] १ चूर्ण करना। पीसना। २ मीजना। मसलना। रगडना। ३ सघर्ष। युद्ध। ४ बाधा। ५ संपर्क। स्पर्श। ६ खग्रास। ७ सूर्य और चद्रमा का मेल। ८ एक वृक्ष। ९ सपीडित करना। कसना (आलिंगन करते समय)। १०. छीनना। अपहरण करना। बिगाड देना। ११. शरीर पर उबटन आदि लगाना या मलना (को०) १२. विध्वस। विनाश (को०)। १३ थकान। क्लांति (को०)।

विमर्दक'—वि० [स०] १ खूब मर्दन करनेवाला। मसल डालनेवाला। २ चूर चूर करनेवाला। पीस डालनेवाला। ३ नष्ट भ्रष्ट करनेवाला। ध्वस्त करनेवाला।

विमर्दक'—सज्ञा पु० १. विमर्दन करने की क्रिया। २ उपराग। ग्रहण। ३ एक पौधा। चक्रमर्द। चकवँड (को०)।

विमर्दन—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विमर्दनीय, विमर्दित] १ खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना। दलना। २ कुचलना। पीस डालना। ३ ध्वस्त करना। नष्ट करना। बरबाद करना। ४ मार डालना। ५ पीडित करना। ६ अभिभव। प्रस्फुटन। स्फुरण। जैसे,—बीज फूटकर अकुर का प्रकट होना (साख्य)। ७ युद्ध। लडाई। सघर्ष (को०)। ८. उपराग। ग्रहण (को०)। ९. एक राक्षस का नाम (को०)।

विमर्दना—सज्ञा [स०] दे० 'विमर्दन' (को०)।

विमर्दनीय—वि० [स०] मर्दन करने योग्य।

विमर्दित—वि० [स०] १. मला दला हुआ। २ कुचला हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ। ४ पीडित। ५ अपमानित।

विमर्दिनि (पु)—वि० स्त्री० [स०] नाश करनेवाली। ध्वस्त करनेवाली। उ०—जै मधुकैटभ छलनि देवि जै महिष विमर्दिनि। —भूषण ग्र० पृ० ३।

विमर्दिनी—वि० स्त्री० [स०] नाश करनेवाली। वध करनेवाली।

विमर्दी—वि० [सं० विमर्दिन्] [स्त्री० विमर्दिनी] १ खूब मर्दन करनेवाला। २. कुचलनेवाला। पीसनेवाला। ३. नष्ट करनेवाला। ४ वध करनेवाला। मारनेवाला।

विमर्दोत्थ—वि० [सं०] (सुगध आदि) जो रगडने से उत्पन्न हो (को०)।

विमर्श—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी तथ्य का अनुसधान। किसी बात का विवेचन या विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३ परखने की क्रिया। परीक्षा। ४ परामर्श। सलाह। ५ असतोष। अधीरता। ६. सकोच। सदेह (को०)। ७ ज्ञान (को०)। ८ विपरीत निर्णय (को०)। ९ पिछले शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी हुई भावना या वासना (को०)। १०. शिव (को०)। ११ नाटक की पाँच प्रकार की सधियों में से एक। अवमर्श सधि (को०)।

विमर्शन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमृष्ट, विमर्शी] १ विवेचन करना। तर्क वितर्क करना। २. आलोचना करना।

विमर्श सधि—सज्ञा स्त्री० [स० विमर्श सन्धि] नाट्यशास्त्र के अनुसार पाँच प्रकार की संधियों में से एक। दे० 'अवमर्श सधि'।

विमर्शित—वि० [स०] १ विचारित। विवेचित। २ आलोचित। समीक्षित (को०)।

विमर्शी—वि० [स० विमर्शिन्] १ विचारक। विवेचक। २ आलोचक। समीक्षक (को०)।

विमर्ष—सज्ञा पु० [स०] १ विवेचन। विचार। २ आलोचना। समीक्षा। ३ नाटक का एक अग जिसके अतर्गत अपवाद सफेट, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसग, खेद, प्रतिषेध, प्ररोचना, आदान और छादन का वर्णन होता है।

विशेष—दोष कथन को अपवाद, क्रोध से भरी बातचीत को सफेट, कार्य के हेतु के उद्भव को व्यवसाय, शोक आदि के वेग में गुरुजनों के आदर आदि का ध्यान न रखने को द्रव, भय-प्रदर्शन द्वारा उद्वेग उत्पन्न करने को द्युति, विरोध की शांति को शक्ति, अत्यत गुणकीर्तन या दोषदर्शन को प्रसग, शरीर या मन की थकावट को खेद, अभिलषित विषय में रुकावट को प्रतिषेध, कार्यध्वस को विरोध, प्रस्तावना के समय नट, नटी नाटक या नाटककार आदि की प्रशसा की प्ररोचना, सहार विषय के प्रदर्शित होने को आदान, तथा कार्योद्धार के लिये अपमान आदि सह लेने को छादन कहते हैं।

४ उद्वेग। व्याकुलता। क्षोभ (को०)।

विमर्षित—वि० [स०] अशात। क्षुब्ध। व्याकुल। परेशान। उ०—अर्ध जीवित सा, औ' मृत सा, न हर्षित सा, न विमर्षित सा।—पल्लव, पृ० १११।

विमल'—वि० [स०] [वि० स्त्री० विमला] १ निर्मल। मलरहित। स्वच्छ। साफ। जैसे, जल। २ बिना ऐब का। निर्दोष। जैसे, विमल मति। ३ रमणीय। सुदर। मनोहर। ४ श्वेत। उज्वल।

यौ०—विमलकीर्ति। विमलगर्भ। विमलदत। विमलनिर्भास=दे० 'विमलभास'। विमलमणि। विमलमति।

विमल'—सज्ञा पुं० १ एक उपधातु जिसके शोधन आदि की विधि रसेंद्रसार में लिखी है। २ चाँदी। ३ गत उत्सर्पिणी के ५वें और वर्तमान अवसर्पिणी के १३वें अर्हत् या तीर्थंकर। (जैन)। ४, सुद्युम्न का पुत्र। ५ पद्मकाष्ठ। पद्म काठ। ६. मेंघा नमक। ७ चाद्र वर्ष (को०)। ८ अस्त्र सबधी एक मत्र (को०)। ९ एक लोक का नाम (को०)। १० समधि का एक प्रकार (को०)। ११ सिलखडी। खडिया (को०)।

विमलक—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का नग या बहुमूल्य पत्थर (को०)।

विमलकीर्ति—सज्ञा पुं० [स०] १ महायान पंथ के एक बौद्ध आचार्य जिन्होंने कई सूत्रों की रचना की है, जो उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। २. वह जिसकी कीर्ति विमल हो।

विमलता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्मलता। स्वच्छता। सफाई। २ पवित्रता। ३ शुद्धता। निर्दोषता। ४ रमणीयता। मनोहरता।

विमलदान—सज्ञा पुं० [स०] वह दान जो नित्य नैमित्तिक और काम्य के अतिरिक्त हो और केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाय। (गरुडपुराण)।

विमलध्वनि—सज्ञा पु० [सं०] छह चरणो का एक छद जो एक दोहे और समान सवैया से मिलकर बनता है।

विमलनेत्र—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध का नाम [को०]।

विमलप्रदीप—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार की समाधि। २ एक बुद्ध का नाम [को०]।

विमलभास—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की समाधि [को०]।

विमलमणि—सज्ञा पुं० [स०] स्फटिक [को०]।

विमलमति—वि० [स०] पवित्र अत करणवाला। जिसकी मति शुद्ध हो शुद्ध बुद्धिवाला[को०]।

विमला[1]—वि० स्त्री० [स०] निर्मल। स्वच्छ।

विमला[2]—सज्ञा स्त्री० १ सप्तला का पेड। कोची। सातला। चर्मकषा। २ सिद्धि की दस भूमियो (अवस्थायो) में से एक प्रकार की भूमि। ३ एक देवी का नाम जो कालिकापुराण मे वासुदेव की नायिका कही गई है। ४ शारदा। सरस्वती। ५ चाँदी का मुलम्मा (को०)।

विमलाक्ष—वि० [स०] वह घोडा जिसके शरीर पर बालो की दस भौंरी हो। इस प्रकार का घोड़ा बहुत उत्तम माना जाता है [को०]।

विमलात्मक—वि० [स०] शुद्ध। साफ। विमल [को०]।

विमलात्मा[1]—वि० [स० विमलात्मन्] शुद्ध हृदयवाला। शुद्ध मनवाला।

विमलात्मा[2]—सज्ञा पु० चद्रमा।

विमलाद्रि—सज्ञा पुं० [स०] गिरनार नामक पर्वत जो गुजरात मे स्थित है [को०]।

विमलापति—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा। उ०—जानत हो जिय सोदर दोऊ। कै कमला विमलापति कोऊ।—केशव (शब्द०)।

विमलार्थक—वि० [स०] विमल। निर्मल [को०]।

विमलाशोक—सज्ञा पु० [स०] १ सन्यासियो का एक भेद। २. एक तीर्थ स्थान।

विमलीकरण—सज्ञा पुं० [स०] १ विमल करने की क्रिया। शुद्ध करने की क्रिया। २ सर्वदर्शनसग्रह के अनुसार मन मे विचार कर ज्योति मंत्र से तीनो मलो का नाश करना।

विमलोदका, विमलोदा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम।

विमास—सज्ञा पु० [स०] अशुद्ध, अपवित्र या न खाने योग्य मास। (जैसे, कुत्ते आदि का)।

विमानु—सज्ञा पु० [स० विमान] दे० 'विमान'। उ०—परमानद निरखि लीला थके सुर विमान।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० २३०।

विमाई[1]—सज्ञा स्त्री० [स० विपादिका, हिं० बिवाई] दे० 'बिवाई'। उ०—तुम्हरे पग तो भई विमाई सो मल जानहु।—श्यामा०, पृ० १५६।

विमाता—सज्ञा स्त्री० [स० विमातृ] अपनी माता के अतिरिक्त पिता की दूसरी विवाहिता स्त्री। सौतेली माँ।

विमातृज—सज्ञा पुं० [स०] विमाता का पुत्र। सौतेला भाई।

विमात्र, विमात्रा—वि० [स०] जिसकी मात्रा समान न हो [को०]।

विमान—सज्ञा पु० [स०] १ आकाशमार्ग से गमन करनेवाला रथ जो देवताओ आदि के पास होता है। देवयान। जैसे, पुष्पक विमान। २ हवाई जहाज। वायुयान। उडन खटोला (अँ० एयरोप्लेन)। ३ मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अर्थी जो सजधज के साथ निकाली जाती है। ४ रथ। गाडी। ५ अश्व। घोडा। ६ सात खड का मकान। सात मजिल का घर। ७ अपमान। अनादर। ८ जलपोत। जहाज (को०)। ९ परिमाण। माप। १०. रामलीला आदि मे सजाई हुई एक सवारी। ११. राजप्रासाद। ११ एक प्रकार का बुर्ज या मीनार (को०)। १३ उपवन। वृक्षवाटिका (को०)। १४ विस्तार। फैलाव। वितति (को०)। १५ सभाभवन या कक्ष (को०)। १६. प्राचीन वास्तु विद्या के अनुसार वह देवमदिर जो ऊपर की ओर गावदुम या पतला होता हुआ चला जाय।

विशेष 'मानसार' नामक प्राचीन ग्रथ के अनुसार विमान गोल, चौपहला और अठपहला होता है। गोल को 'वेसर', चौपहले को 'नागर' और अठपहले को 'द्राविड' कहते हैं।

विमानगति—सज्ञा पु० [स० विमान+गति] देवता।—अनेकार्थ०, पृ० ४१।

विमानच्छद—सज्ञा पु० [स० विमानच्छन्द] प्रासाद विशेष। उ०—विमानच्छंद प्रासाद का नाम है।—बृहत्सहिता, पृ० २८२।

विमानचारी—वि० [स० विमानचारिन्] विमान पर चलनेवाला। वायुयान से यात्रा करनेवाला [को०]।

विमानचालक—सज्ञा पु० [स०] विमान या वायुयान चलानेवाला।

विमानधुर्य—सज्ञा पुं० [स०] तामजान, पालकी आदि ढोनेवाला व्यक्ति। (कहार आदि)।

विमानना—सज्ञा स्त्री० [स०] अपमान। अवमानना। तिरस्कार।

विमाननिर्व्यूह—सज्ञा पुं० [स०] एक समाधि [को०]।

विमानयान—वि० [स०] दे० 'विमानचारी' [को०]।

विमानराज—सज्ञा पु० [स०] १. श्रेष्ठ व्योमयान। २ देवविमान का चालक [को०]।

विमानवाह—सज्ञा पु० [स०] पालकी ढोनेवाला व्यक्ति [को०]।

विमानित—वि० [स०] तिरस्कृत। उपेक्षित [को०]।

विमानीकृत—वि० [स०] १ तिरस्कृत। अनादृत। २ विमान की तरह व्यवहृत। विमान बनाया हुआ [को०]।

विमार्ग—सज्ञा पुं० [स०] १ बुरा रास्ता। २ कदाचार। बुरी चाल। ३. झाड़। कूचा।

विमार्गगा—सज्ञा स्त्री० [स०] असती या कुलटा स्त्री [को०]।

विमार्गगामी—वि० [स० विमार्गगामिन्] कुमार्ग पर जानेवाला [को०]।

विमार्गण—सज्ञा पु० [स०] अन्वेषण। खोज। तलाश [को०]।

विमार्गदृष्टि—वि० [स०] असत् पथ पर दृष्टि डालनेवाला [को०]।

विमार्गप्रस्थित—वि० [स०] कुमार्ग की ओर प्रस्थित। विमार्गगामी। कदाचारी [को०]।

विमार्गस्थ—वि० [सं०] दे० 'विमार्गगामी' [को०]।

विमार्जन—सज्ञा पुं० [स०] १. पवित्र करना। शुद्ध करना। २. मार्जन करना। धोना [को०]।

विमासना†—क्रि० स० [सं० विमर्शन, प्रा० विमस्स] विचार विमर्श करना। सोचना। सलाह मशविरा करना। उ०—राणी राय विमासियउ, तेडइ साल्हकुमार।—ढोला०, दू० १००।

विमित'—सज्ञा पुं० [स०] १ वह चौकोर शाला या इमारत जो चार खभो पर टिकी हो। २. बडा कमरा या इमारत।

विमित'—वि० १. जिसकी सीमा या हद हो। परिमित। निश्चित। २. निर्मित।

विमिश्र—वि० [स०] १. मिला हुआ। मिश्रित। २. जिसमें कई प्रकार की वस्तुओ का मेल हो। मिला जुला। ३ (मूल या धन) जो सूद के साथ मिला हो (को०)

विमिश्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] मृगशिरा, आर्द्रा, मघा, और अश्लेषा नक्षत्र मे बुध की गति का नाम जो ३० दिनो तक रहती है।

विमिश्रित—वि० [स०] १. मिलाया हुआ। २ मिला जुला। विमिश्र।

विमुक्त—वि० [स०] १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। जो बधन से अलग हुआ हो। २ जिसे किसी प्रकार का प्रतिबध या रुकावट न रह गई हो। ३ स्वच्छद। आजाद। ४ (हानि, दड आदि से) बचा हुआ। ५ अलग किया हुआ। बरी। ६ पकड से छूटकर चला हुआ। फेंका हुआ। छोडा हुआ। जैसे,—विमुक्त बाण। ७ अभिव्यक्त (को०)। ८ मुक्तकचुक। (सर्प) जिसने केचुली छोडी हो (को०)। ९ युक्त। सहित (को०)। १० जो जल मे उतरा गया हो। जैसे, जलपोत (को०)।

विमुक्तकठ—वि० [सं० विमुक्तकण्ठ] १. जोर से चिल्लानेवाला। २. उच्च स्वर से रोनेवाला।

विमुक्तप्रग्रह—वि० [स०] ढीली लगामवाला या जिसकी लगाम को ढील दे दी गई हो [को०]।

विमुक्तमौन—वि० [सं०] जिसने मौन व्रत समाप्त कर दिया हो [को०]।

विमुक्तशाप—वि० [सं०] जिसे शाप से छुटकारा मिल गया हो। शाप-मुक्त [को०]।

विमुक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. छुटकारा। रिहाई। २ मुक्ति। मोक्ष। ३ पृथक्ता। अलगाव। वियोग (को०)।

यौ०—विमुक्तिपथ = मुक्ति का मार्ग।

विमुख—वि० [स०] १ मुखरहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। जो किसी कार्य या विषय मे दत्तचित्त न हो। जो किसी काम से हटा या अलग हो। प्रतत्पर। विरत। निवृत्त। जैसे,—कर्तव्य से विमुख होना। ३. जो अनुरक्त न हो। जिसे परवाह न हो। जिसने मन न लगाया हो। उदासीन। जैसे,—हरिपद विमुख। ४. जो किसी के हित के प्रतिकूल हो। जिसकी स्थिति या आचरण अनुकूल न हो। विरुद्ध। खिलाफ। अप्रसन्न। जैसे—जब ईश्वर ही विमुख है, तब क्या हो सकता है। ५ मुखरहित। छिद्ररहित। ६ जिसकी चाह या माँग पूरी न हुई हो। अप्राप्तमनोरथ। निराश। जैसे—उनके यहाँ से कोइ याचक विमुख नही गया। उ०—जो ऐहै सो भोजन पैहै। विमुख कोउ इनतें नहिं जैहैं।—रघुराज (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

विमुखता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी बात से दूर रहना। अतत्परता विरति। २. विपरीतता। विरोध। अप्रसन्नता।

विमुग्ध—वि० [स०] १ मोहित। आसक्त। २ भ्रम मे पडा हुआ। भूला हुआ। भ्रात। ३. घबराया हुआ। डरा हुआ। ४ उन्मत्त। मतवाला। ५ पागल। बावला। ६. बेसुध।

विमुग्धक—सज्ञा पुं० [स०] १ मोहनेवाला। २ एक प्रकार का छोटा अभिनय या नकल। (नाट्यशास्त्र)।

विमुग्धकर—वि० [स०] मोहक। आनदप्रद। उ०—रस का विवेचन जितना ही विमुग्धकर है उतना ही पाडित्यपूर्ण।—रस क०, पृ० २४।

विमुग्धकारी—सज्ञा पु० [स० विमुग्धकारिन्] [स्त्री० विमुग्धकारिणी] १ मोहित करनेवाला। २ भ्रम मे डालनेवाला।

विमुद'—वि० [स०] आनदरहित। उदास। खिन्न। उ०—करति केलि पिय हिय लगी, कोक कलनि अवरेखि। विमुद कुमुद लौं ह्वै रही चदु मद दुति देखि।—पद्माकर (शब्द०)।

विमुद'—सज्ञा पु० एक बडी संख्या का नाम।

विमुद्र—वि० [स०] १. जो मुद्राकित न हो। बिना मुहर का। २ विकसित। खिला हुआ। ३. अत्यधिक। प्रचुर। बहुत ज्यादा [को०]।

विमुद्रण—सज्ञा पुं० [स०] १. खोलना। अनावृत्त करना। विकसित करना। खिलाना [को०]।

विमूढ'—वि० [स० विमूढ] [स्त्री० विमूढ़ा] १. विशेष रूप से मुग्ध। अत्यत मोहित। २ मोहप्राप्त। भ्रम मे पडा हुआ। चकराया हुआ। ३. बेसुध। अचेत। ४. ज्ञानरहित। जिसे समझ न पडता हो। जैसे,—किंकर्तव्यविमूढ। ५ बहुत मूर्ख। जडबुद्धि। नादान। नासमझ। ६. चतुर। बुद्धिमान् (को०)।

विमूढ'—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार का सगीत करण। २. एक देव-योनि (को०)।

विमूढक—सज्ञा पुं० [स० विमूढक] एक प्रकार का ग्रहमन [को०]।

विमूढगर्भ—सज्ञा पुं० [स० विमूढगर्भ] वह गर्भ जिसमे बच्चा मरा या बेहोश हो और प्रसव मे बडी कठिनता हो।

विमूढचेता—वि० [सं० विमूढचेतस्] १. हतबुद्धि। अज्ञ। मूर्ख [को०]।

विमूढधी—वि० [स० विमूढधी] दे० 'विमूढचेता' [को०]।

विमूढभाव—सज्ञा पुं० [स० विमूढभाव] विमूढ होने की स्थिति [को०]।

विमूढसज्ञ—वि० [स० विमूढसज्ञ] विभ्रमित। घबराया हुआ। व्याकुल [को०]।

विमूढात्मा—वि० [सं० विमूढात्मन्] दे० 'विमूढसज्ञ' [को०]।

विमूर्च्छित'—वि० [सं०] बेहोश या अचेत पड़ा हुआ। उ०—दीर्घकाल स सुप्त और विमूर्च्छित रष्ट्र मे नवचेतना के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे।—हि० आ० प्र०, पृ० ३३। २ भरा हुआ। पूर्ण (को०)। ३ जो जमकर गाढा हो गया हो (को०)।

विमूर्च्छित²—सज्ञा पुं० मूर्छा। बेहोशी। गश (को०)।

विमूर्छन—वि० [स० विमूर्च्छन] बेहोश करनेवाला। उ०—सामर्थ्य दर्प से उन्मद, मैं जब तुझे पुकारा। किस ओर से वही उच्छल, यह दीप्त विमूर्छन धारा।—विश्वप्रिया, पृ० २२।

विमूर्त—वि० [सं०] जमा हुआ। ठोस (को०)।

विमूर्ध, विमूर्धज—वि० [सं०] गजा। खल्वाट (को०)।

विमूल—वि० [स०] १ मूलरहित। बिना जड का। २. मूल से रहित। उच्छिन्न। निर्मूल। ३ बरबाद। नष्ट।

क्रि०प्र०—करना।—होना।

विमूलन—सज्ञा पुं० [सं०] १ जड से उखाडना। उन्मूलन। २. विनाश। ध्वस।

विमृग—वि० [सं०] मृगरहित। जिसमे हिरन न हो। जैसे, जगल (को०)।

विमृत्यु—वि० [स०] जिसकी मृत्यु न हो। अमर (को०)।

विमृदित—वि० [स०] मसला हुआ। (को०)।

विमृश—सज्ञा पुं० [स०] चिंता। विमर्श। विचार (को०)।

विमृशित—वि० [स०] विचारित। चिंतित (को०)।

विमृश्य'—वि० [स०] १ विवेचन के योग्य। आलोचना या समीक्षा के योग्य। २ जिसपर विवेचना या विचार करना हो। जिसकी समीक्षा करनी हो।

विमृश्य²—क्रि० वि० विचारोपरात। विचार करके। विचार विमर्श के अनतर (को०)।

विमृश्यकारी—वि० [स० विमृश्यकारिन्] [वि० स्त्री० विमृश्यकारिणी] सोच विचारकर कार्य करनेवाला। विचारपूर्वक काम करनेवाला (को०)।

विमृष्ट'—वि० [स०] जिसपर तर्क वितर्क या सम्यक् विचार हुआ हो। २ जिसकी पूरी आलोचना या समीक्षा हुई हो। ३ परिच्छन्न। ४ मर्दित। मला हुआ। रगड हुआ (को०)।

विमृष्ट²—सज्ञा पुं० चिंतन। विचार (को०)।

विमोक'—वि० [सं०] १ मलरहित। रागरहित। दुर्वासनारहित। (जैन)। २ ऊपरी आवरणरहित। ३. साफ। स्पष्ट।

विमोक²—सज्ञा पुं० १ मुक्ति। छुटकारा। रिहाई। २ मुक्त करने, छोडने या खोलने की क्रिया।

विमोक्ता—सज्ञा पु० [सं० विमोक्तृ] मुक्त करनेवाला। छुडानेवाला।

विमोक्ष—सज्ञा पु० [स०] १. बधन, गाँठ आदि का खुलना। २ छुटकारा। मुक्ति। रिहाई। ३ जन्म मरण के बधन से छूटना। आवागमन से छुट्टी पाना। मुक्ति। निर्वाण। ४ सूर्य या चद्रमा का ग्रहण से छूटना। ग्रहण का हटना। उग्रह ५. किसी वस्तु का पकड से इस प्रकार छूटना कि वह दूर जा पडे। प्रक्षेपण। ६ मेरु पर्वत का एक नाम। ७. दान। उत्सर्ग (को०)।

विमोक्षक—वि० [सं०] मुक्त करने या बधन से छुडानेवाला (को०)।

विमोक्षण—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विमोक्षणा] १ बंधन आदि खोलना। २. मुक्त करना। रिहा करना। ३ हाथ से छोडना जिसमे कोई वस्तु दूर जा पडे। प्रक्षेपण। ४ अडे देना (को०)।

विमोक्षी—वि० [सं० विमोक्षिन्] मोक्षप्राप्त। मुक्ति पानेवाला (को०)।

विमोघ—वि० [सं०] १ व्यर्थ न होनेवाला। न चूकनेवाला। खाली न जानेवाला। अमोघ। २ व्यर्थ। बेकार। निष्फल (को०)।

विमोचक—वि० [सं०] १ मुक्त करनेवाला। छुडानेवाला। २. बधन खोलनेवाला। ३. गिरानेवाला। छोड़नेवाला। डालनेवाला।

विमोचन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बधन, गाँठ आदि खोलना। २ बधन से छुटाना। मुक्त करना। रिहा करना। ३ गाडी में बैल आदि को खोलना। ४ निकालना। बाहर करना। जैसे, —अश्रुविमोचन। ५ इस प्रकार अलग करना कि कोई वस्तु दूर जा पड़े। छोडना। फेंकना। जैसे,—धनुष से बाण। ६ गिराना। डालना। ७ शिव का एक नाम (को०)।

विमोचना ⓤ—क्रि० स० [सं० विमोचन] १. बधन आदि खोलना। २. छुटकारा देना। रिहा करना। मुक्त करना। छोडना। ३. गिराना। टपकाना। ४. निकालना। बाहर करना। उ०—जब तें परदेस सिधारे पिया अँसुवा अखियानि विमोचति सी।—बेनीप्रवीन (शब्द०)।

विमोचनीय—वि० [सं०] विमोचन के योग्य। छोडने के योग्य। मुक्त करने योग्य।

विमोचित'—वि० [सं०] १. खुला हुआ। जो बँधा न हो। २. जो छोड़ दिया गया हो। मुक्त किया हुआ।

विमोचित²—सज्ञा पुं० शिव का एक नाम (को०)।

विमोचितावास—सज्ञा पुं० [सं०] जैनो के अनुसार ऐसे स्थान मे निवास करना जिसे किसी ने रहने के अयोग्य समझकर छोड़ दिया हो।

विमोच्य—वि० [सं०] १ छोडने योग्य। मुक्त करने योग्य। २. जिसे छोडना, खोलना या मुक्त करना हो।

विमोह—सज्ञा पुं० [सं०] १ मोह। अज्ञान। भ्रम। भ्राति। उ०—मन वसुदेव विमोह कंस से। मोचक माधव दुविद ध्वस से।—रघुराज (शब्द०)। २ बेसुध होना। अचेत होना। आसक्ति। ४ एक नरक का नाम।

विमोहक—वि० सज्ञा पुं० [सं०] १ मोहनेवाला। लुभावना। २. मन मे लोभ उत्पन्न करनेवाला। ललचानेवाला। ३ ज्ञान या सुध हरनेवाला।

विमोहक²—सज्ञा पुं० [सं०] एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

विमोहन—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० विमोहित, विमोही] १ मोहित करना। मन लुभाना। मुग्ध करना। २. दूसरे का मन वश मे

करना। ३ सुध बुध भुलाना। ऐसा प्रभाव डालना कि चित्त-ठिकाने न रहे। मतिभ्रंश करना। ४ कामदेव के पाँच बाणों मे से एक। ५ एक नरक का नाम। ६ भ्रम। चक्कर (को०)।

विमोहनशील—वि० [सं० विमोहन + शील] [वि० स्त्री० विमोहनशीला] १ भ्रमकारी। धोखा देनेवाला। चक्कर मे डालनेवाला। भ्रांत करनेवाला। उ०—गिरिजा सुनहु राम कै लीला। सुर हित दनुज विमोहनशीला।—तुलसी (शब्द०)। २. मोहित करनेवाला। लुभानेवाला।

विमोहना[1]—क्रि० अ० [सं० विमोहन] मोहित होना। लुभा जाना। आसक्त होना। उ०—एक नयन कवि मुहमद गुनी। सोइ विमोहा जो कवि सुनी।—जायसी (शब्द०)। २ बेसुध होना। तन मन की सुध न रखना। भ्रांत होना। धोखा खाना।

विमोहना[2]—क्रि० स० १ मोहित करना। लुभाना। २ ऐसा प्रभाव डालना कि तन मन की सुधि न रहे। बेसुध करना। ३. भ्रांति मे करना। धोखे मे डालना। ४ वशीभूत करना (को०)।

विमोहा—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे दो रगण (ऽ।ऽ) होते हैं। इसे 'जोहा', 'विजोहा' और विज्जोहा' भी कहते हैं। विशेष दे० 'विजोहा'।

विमोहित—वि० [सं०] १. लुभाया हुआ। मुग्ध। उ०—तुम अस बहुत विमोहित भए। धुन धुन सीस जीव दै गए।—(शब्द०)। २ तन मन की सुध भूला हुआ। ३ मूर्छित। उ०—यह सुनना न पडे सोई अच्छा है और यही कहते कहते वह विमोहित हो गई।—कादबरी (शब्द०)। ४ वशीकृत (को०)।

विमोही—वि० [सं० विमोहिन्] [वि० स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित करनेवाला। जी लुभानेवाला। मन आकर्षित करनेवाला। २. सुध बुध भुलानेवाला। ऐसा प्रभाव डालनेवाला कि तन मन की सुध न रहे। ३. मूर्छित या बेहोश करनेवाला। ४ भ्रम मे डालनेवाला। भ्रांत करनेवाला। ५ जिसे मोह या दया न हो। जिसे ममता या स्नेह न हो। निष्ठुर। कठोरहृदय। उ०—जिउ गँवाइ सो गएउ विमोही। भा विनु जिव, जिउ दीन्हेसि ओही।—जायसी (शब्द०)।

विमौट—सज्ञा पुं० [सं० वल्मीक, प्रा० वम्मी + औट (प्रत्य०)] दीमकों का उठाया हुआ मिट्टी का ढूह। बाँबी। उ०—गोहर ह्वै तुम पूरव जनमा। बसे विमौट एक कहुँ बन माँ—रघुराज (शब्द०)।

विम्लान—वि० [सं०] १. मुरझाया हुआ। विवर्ण। शुष्क। २ ताजा। हरा भरा (को०)।

विम्लापन—सज्ञा पुं० [सं०] १ ताजगी। अम्लानता। २ विशुद्धि। परिष्कृति। ३ म्लान करनेवाला। मुरझा देनेवाला (को०)।

वियग—सज्ञा पुं० [हिं० विय + अग] दो अगवाले, महादेव। उ०—करहिं वियगा आलिगन। तेहि चंद्रहि कबहूँ सालिगन।—ज० दि० (शब्द०)।

वियता—वि० [सं० विगन्तृ] १ जिसका कोई नियता न हो। नियामकरहित। २. सारथिहीन (को०)।

विय—वि० [सं० द्वि, द्वितीय, प्रा० विय] १. दो। जोडा। २. दूसरा। उ०—कहत सबै कवि कमल से, मो मत नैन पखान। नातरु कत इनि विय लगत उपजत विरह कृशान।—बिहारी (शब्द०)।

वियच्चारी—सज्ञा पुं० [सं० वियत्चारिन्] चील पक्षी (को०)।

वियत्[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १. आकाश। २ वायुमंडल।

वियत्[2]—वि० गमनशील।

वियत्पताका—सज्ञा स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली।

वियत्पथ—सज्ञा पुं० [सं०] आकाशमार्ग। वायुमडल (को०)।

वियति—सज्ञा पुं० [सं०] १. भागवत के अनुसार नहुष राजा के एक पुत्र का नाम। २ चिडिया। पक्षी (को०)।

वियद्गगा—सज्ञा स्त्री० [सं० वियद्गङ्गा] आकाशगंगा।

वियद्गति—वि० [सं०] आकाशचारी (को०)।

वियद्ध—सज्ञा पुं० [सं० वियत्] दे० 'वियत्'। उ०—उठति एहि हल्लिता। वियद्ध चद्र चल्लिता।—पृ० रा०, २५।१३१।

वियद्व्यापी—वि० [सं० वियत् + व्यापिन्] आकाशव्यापी। उ०—शब्द वियद्व्यापी सत्ता है।—संपूर्णानद अभि० ग्रं०, पृ० ११२।

वियद्भूति—सज्ञा स्त्री० [सं०] अँधेरा। अंधकार (को०)।

वियन्मणि—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्य।

वियन्मध्यहस—सज्ञा पुं० [सं०] सूर्य (को०)।

वियम—सज्ञा पुं० [सं०] १ संयम। इद्रियदमन। २ दुःख। क्लेश। यातना। ३ प्रतिबध। रोक। नियंत्रण (को०)। ४. विराम। पडाव (को०)।

वियव—सज्ञा पुं० [सं०] आँत मे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का कीडा (को०)।

वियात—वि० [सं०] १ रास्ते से भटका हुआ। पथभ्रष्ट। २ गया गुजरा। गया बीता। ३. ढीठ। हिम्मती। धृष्ट (को०)। ४ निर्लज्ज। बेहया। ५. दुश्चरित्र। व्यसनी (को०)।

वियान—सज्ञा पुं० [सं० व्यान] शरीरस्थ एक वायु का नाम। दे० 'व्यान'। उ०—पाँचई बानी सिगन लेखा। वियान ध्यान सो कीन्ह विवेखा।—कबीर सा०, पृ० ८८०।

वियाम—सज्ञा पुं० [सं०] इंद्रियनिग्रह। सयम। २ दे० 'वियम' (को०)। ३. एक प्रकार की नाप जो विस्तृत दोनो भुजाओं की लंबाई के बराबर कही गई है (को०)।

वियास—क्रि० अ० [सं० व्यास] १. विस्तृत होना। बढ़ना। फैलना। २. उगना। हरा भरा होना। उ०—मन वच कर्म लगाय संत की सेवा लावै। उकठा काठ वियास साच जो दिल मे आवै।—पलटू०, पृ० १०४।

वियुक्त—वि० [सं०] १. जो संयुक्त न हो। जिसकी जुदाई हो गई हो। बिछुडा हुआ। वियोगप्राप्त। २ जुदा। अलग। पृथक्। ३ रहित। हीन। वंचित। ४ अभावग्रस्त (को०)।

वियुत—वि० [सं०] १. वियुक्त। अलग। २ रहित। हीन।

वियुति—सज्ञा स्त्री० [सं०] गणित मे दो राशियों का अतर (को०)।

वियूथ—वि० [स०] जो अपने दल से अलग हो गया हो। यूथभ्रष्ट [को०]।

वियो—वि० [स० द्वितीय, प्रा० वीय] दूसरा। अन्य। उ०—ज्ञान स्मारत पच्छ को नाहिन कोउ खडन वियो।—नाभादास। (शब्द०)।

वियोग—सज्ञा पुं० [स०] १ सयोग का अभाव। मिलाप का न होना। विच्छेद। २ पृथक् होने का भाव। अलगाव। ३ दो प्रेमियो का एक दूसरे से अलग होना। विरह। जुदाई।

विशेष—साहित्य मे शृगार रस दो प्रकार का माना गया है—सयोग शृगार (या सभोग शृगार) और वियोग शृगार (या विप्रलभ शृगार)। वियोग की दशा तीन प्रकार की होती है—पूर्वराग, मान और प्रवास।

४ गणित म राशि का व्यवकलन। ५ अभाव। हानि (को०)।

वियोगभाक्—वि० [स० वियोगभाज्] वियोगी। विरही [को०]।

वियोगात—वि० [स० वियोगान्त] (उपन्यास, नाटक या कथा आदि) जिसकी कथा का अत दु खपूर्ण हो।

विशेष—आधुनिक नाटक दो प्रकार के माने जाते हैं—सुखात और दु खात। इन्ही का कुछ लोग सयोगात और वियोगात भी कहते हैं। भारतवर्ष मे सयोगात या सुखात नाटक लिखने की ही चाल पाई जाती है, दु खात का निषेध ही मिलता है। पर पूर्वकाल मे दु खात नाटक भी लिखे जाते थे, इसका आभास कालिदास के पूर्ववर्ती महाकवि भास के नाटको से मिलता है।

वियोगावसान—वि० [सं०] जिसका अत वियोग हो [को०]।

वियोगावह—वि० [स०] वियोगजनक। वियोग करने या देनेवाला [को०]।

वियोगिन—सज्ञा स्त्री० [स० वियोगिनी] दे० 'वियोगिनी'।

वियोगिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो अपने पति या प्रिय से वियुक्त हो। जो अपने प्यारे से बिछुडी हुई हो। वह स्त्री जिसका पति या नायक पास मे न हो और जो उसके न रहने से दु खी हो। २ एक प्रकार का छद।

विशेष—इसे वैतालीय और सुदरी भी कहते हैं। इसके विषम चरणो में स स ज ग और सम चरणो मे स भ र ल ग होते हैं।

वियोगी'—वि० [स० वियोगिन्] [वि० स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से वियुक्त हो। जो प्रियतमा से बिछुडा हो। विरही। २. पृथक् किया हुआ। जुदा किया हुआ (को०)। ३. अनुपस्थित (को०)।

वियोगी'—सज्ञा पुं० १. वियोगी पुरुष। २ चक्रवाक। चकवा।

वियोजक—सज्ञा पु० [स०] १. अलग करनेवाला। दो मिली हुई वस्तुओ को पृथक् करनेवाला। २ गणित मे वह सख्या जिसे किसी दूसरी बडी सख्या मे से घटाना हो।

वियोजन—सज्ञा पु० [स०] [वि० वियोजनीय, वियोजित, वियोज्य] १. मिली हुई वस्तुओ को अलग करना। जुदा करना। पृथक् करना। २ गणित मे एक सख्या मे से उससे कुछ छोटी दूसरी सख्या निकालने या घटाने की क्रिया। बाकी।

वियोजित—वि० [स०] १ पृथक् किया हुआ। अगल किया हुआ। २ रहित। शून्य।

वियोज्य'—वि० [स०] १ वियोजन के योग्य। पृथक् करने योग्य। २ जिसे अलग करना हो। जिसे जुदा करना हो।

वियोज्य'—सज्ञा पुं० गणित मे वह सख्या जिसमे से कोई सख्या घटानी हो।

वियोनि'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनेक जन्म। बहु जन्म। नाना जन्म। २ पशुओ का गर्भाशय। ३ हीन जन्म। निकृष्ट या कलकपूर्ण पैदाइश। ४ अन्य जातीय स्त्री। विजातीय महिला [को०]।

वियोनि'—वि० १ हीनजन्मा। जारज। २. हीन या तिर्यक् योनि-वाला [को०]।

वियोनिज—वि० [स०] जो तिर्यक्योनि से उत्पन्न हो (पक्षी, पशु आदि) [को०]।

वियोनी—सज्ञा स्त्री०, वि० [स० वियोगिनि] दे० 'वियोनि'।

विरग'—वि० [स० विरङ्ग] १. बुरे रंग का। बदरग। विवर्ण। फीका। उ०—क्वैला करी काकिल कुरग वार कोर कोर कुढि कुढि केहरि कलक लक हदली। जरि जरि जवूनद विद्रुम विरग होत, अग फारि दाडिम त्वना भुजग बदली—(शब्द०)। २ अनेक रगो का। कई वर्णो का।

यौ०—रंग विरग, रग विरगा।

विरग'—सज्ञा पु० ककुष्ठ। एक प्रकार की पहाड़ी मिट्टी। विशेष दे० 'ककुष्ठ'।

विरंग'—सज्ञा पु० [स० विराग] वैराग्य। विराग। विरक्ति।

विरग काबुली—सज्ञा पुं० [फा०] बायविडग। भाभीरग।

विरच—सज्ञा पुं० [स० विरञ्च] ब्रह्मा।

विरचन—सज्ञा पु० [स० विरञ्चन] ब्रह्मा। विधाता [को०]।

विरचि—सज्ञा पु० [स० विरञ्चि] सृष्टि रचनेवाला, ब्रह्मा। विधाता। उ०—सचि विरचि निकाई मनोहर लाजति मूरतिवत बनाई। तापर तो बड भाग बड़े मतिराम लसैं पति प्रीति सुहाई।—मतिराम (शब्द०)।

विरचिसुत—सज्ञा पुं० [स० विरञ्चि+सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद। उ०—पुनि विरचिसुत अति हरषाए। कहत सुनहु जो चहत सुहाए।—गोपाल (शब्द०)।

विरच्य—सज्ञा पुं० [स० विरञ्च्य] ब्रह्मा [को०]।

विरज फूल—सज्ञा पुं० [हिं० विरज+फूल] एक प्रकार का धान या जडहन।

विरजित—वि० [स० विरञ्जित] विगतानुराग। जिसका प्रेम मद पड़ गया हो [को०]।

विरकत†—वि० [स० विरक्त] दे० 'विरक्त'। उ०—जन रामा विरकत सोई चौथे पद विश्राम जो—राम० धर्म०, पृ० ६८।

विरक्त'—वि० [स०] १. जो अनुरक्त न हो। जिसका जी हटा हो। जिसे चाह न हो। विमुख। जैसे,—ऐसी बातो से वे सदा

विरक्त रहते हैं। २ जो कुछ प्रयोजन न रखता हो। उदासीन। ३. अप्रसन्न। खिन्न। जैसे,—उनकी बातें सुनकर वे और भी विरक्त हो गए। ४. अत्यत लाल रग का (को०)। ५ बदरंग (को०)। ६ आविष्ट। आसक्त। आवेशयुक्त (को०)।

विरक्त[२]—सज्ञा पुं० ऐसे बाजे जो केवल ताल देने के काम मे आते है।

विरक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनुराग का अभाव। विरक्त होने का भाव। २. उदासीनता।

विरक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भाग्यहीन या खिन्न स्त्री। दुखियारी औरत। २ अननुकूला स्त्री (को०)।

विरक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। चाह का न होना। जी का हटा रहना। विराग। विमुखता। २ उदासीनता। ३ अप्रसन्नता। खिन्नता।

विरचन—सज्ञा पु० [स०] [वि० विरचनीय विरचित] १ प्रणयन। निर्माण। बनाना। २ क्रमपूर्वक रचना या बनाना (को०)। ३ धारण करना (को०)।

विरचना(पु)[१]—क्रि० स० [स० विरचन] १ रचना। बनाना। निर्माण करना। २. अलकृत करना। सजाना।

विरचना[२]—क्रि० अ० [स० वि०+रञ्जन] विरक्त होना। जी का हटना। उचटना। उ०—विरचि मन फेरि राच्यो जाइ।—सूर० (शब्द०)।

विरचयिता—सज्ञा पुं० [सं० विरचयितृ] रचनेवाला। बनानेवाला।

विरचित—वि० [स०] १. बनाया हुआ। निर्मित। २. रचा हुआ। जैसे,—कालिदास विरचित शकुंतला नाटक। ३ घटित किया हुआ। सरचित। खचित। जटित (को०)। ४ सँवारा हुआ। अलकृत (को०)। ५ धारण किया हुआ। पहनाया हुआ (को०)।

विरछ(पु)—सज्ञा पुं० [स० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ०—अरणव साते उदर, विरछ रोमाच विचालें।—रघु० रू०, पृ० ४४।

विरज[१]—वि० [स० विरजस्] १ रजोगुणरहित। सुख, वासना आदि से मुक्त। २ जिसपर धूल या गर्द न हो। निर्मल। स्वच्छ। साफ। ३ निर्दोष। बेऐब। ४ (स्त्री) जिसका रजोधर्म बद हो गया हो।

विरज[२]—सज्ञा पु० १ विष्णु। २ शिव। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ४ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम (को०)। ५ एक ऋषि (को०)।

विरजतमा—वि० [स० विरजतमस्] जो रजोगुण और तमोगुण से रहित हो (को०)।

विरजप्रभ—सज्ञा पुं० [स०] एक बुद्ध का नाम।

विरजमडल—सज्ञा पु० [सं० विरजमण्डल] एक तीर्थ जो उड़ीसा मे जाजपुर के पास माना गया है। यहाँ देवी की महाजया नामक मूर्ति है। (प्रभास खड)।

विरजस्क—वि० [सं०] दे० 'विरज' को०।

विरजस्का—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका मासिक धर्म रुक गया हो (को०)।

विरजा[१]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कपित्थानी का पौधा जिसकी पत्तियाँ कैथ की पत्तियो के समान होती हैं। २ श्रीकृष्ण की एक प्रेमिका सखी जिसने राधा के भय से नदी का रूप धारण कर लिया था।

विशेष—इसकी कथा ब्रह्मवैवर्तपुराण के श्रीकृष्ण जन्म खड मे दी हुई है। गोलोक में एक बार कृष्ण जी राधा को न देखकर विरजा नाम की एक गोपी के पास चले गए। खबर पाते ही राधा दौडी। श्रीकृष्ण तो अतर्धान हो गए, और विरजा बेचारी डर के मारे नदी हो गई। जब कृष्ण इसके विरह मे बहुत व्याकुल हुए, तब इसने फिर अपना पूर्व रूप धारण कर लिया। ३ दूब। दूर्वा (को०)। ४ राजा नहुष की पत्नी (को०)। ५. जगन्नाथ क्षेत्र (को०)।

विरजा[२]—वि० [स० विरजस्] दे० 'विरज'।

विरजा[३]—सज्ञा स्त्री० गतार्तवा स्त्री। वह स्त्री जिसका मासिक धर्म बद हो गया हो।

विरजाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] मार्कंडेयपुराण के अनुसार एक पर्वत जो मेरु के उत्तर ओर है।

विरजाक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] उड़ीसा मे एक तीर्थ स्थान जो जाजपुर के पास माना जाता है। विरज मंडल।

विरझ(पु)—सज्ञा पु० [देश०] समूह। उ०—नंद०ग्रं०, पृ० ११४।

विरट—सज्ञा पुं० [स०] १ कधा। २ अगरु। अगर वृक्ष।

विरण—सज्ञा पुं० [स०] बरिन नाम की घास।

विरण्य—वि० [स०] विस्तृत। विस्तीर्ण (को०)।

विरतत(पु)—सज्ञा पु० [स० वृत्तान्त] वृत्तान्त। हाल। कथा। उ०—ढोल्यू मनि आरति हुई साभलि ए विरतत। जे दिन मारू विण गया, दई न ग्यॉन गिणत।—ढोला०, दू० २०८।

विरत—वि० [स०] १ जो अनुरक्त न हो। जिसे चाह न हो। जिसका मन हटा हो। विमुख। जैसे,—स्त्री या भोग विलास से विरत होना। २ जो लगा हुआ न हो। जिसने अपना हाथ हटा लिया हो। निवृत्त। जैसे,—किसी कार्य मे विरत होना। ३ जिसने सासारिक विषयो से अपना मन हटा लिया हो। विरक्त। वैरागी। ४ विशेष रूप मे रत। बहुत लीन। बिल्कुल लगा हुआ। उ०—कहुँ गनक गनत, जागी जपत जत्र मत्र मन विरत नित।—गुमान। (शब्द०)। ५ जिसका अत या समाप्ति हो गई हो। समाप्त। उपरहृत (को०)। ६ विश्रात। थका या ठहरा हुआ (को०)।

विरति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २ जी का उचटना। उदासीनता। ३ सासारिक विषयो से जी का हटना। वैराग्य। उ०—जोग तें विरति, विरति ते ज्ञाना।—तुलसी (शब्द०)। ४ विश्राम। अवसान। यति (को०)।

विरत्त(पु)—वि० [स० विरक्त, प्रा० विरत्त] विरत। अप्रसन्न। उ०—साह विरत्तो मारवाँ ग्राह जही गज वार। जठै सदरसण चक्र ज्यॉ रिणमल्ला पणधार।—रा० रू०, पृ० ७०।

विरथ—वि० [स०] १ बिना रथ का। जिसके पास रथ या सवारी न हो। उ०—रावण रथी विरथ रघुबीरा।—तुलसी (शब्द०)। २ रथ से गिरा हुआ। ३ पैदल।

विरथीकरण—सज्ञा पुं० [स०] युद्ध मे रथ नष्ट करके शत्रु को रथहीन करना।

विरथ्य—सज्ञा पुं० [स०] शिव (को०)।

विरथ्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुमार्ग। खराब राह। २ उपमार्ग। गली। लेन (को०)।

विरद¹—सज्ञा पुं० [स० विरुद] १ बडा नाम। लबा चौडा या सुंदर नाम। २ ख्याति। प्रसिद्धि। उ०—बडे न हूजै गुनन बिनु विरद बडाई पाय। कहत धतूरा को कनक गहनो गढ्यो न जाय।—बिहारी (शब्द०)। ३ यश। कीर्ति। विशेष दे० 'विरुद'।

विरद²—वि० [स०] बिना दाँत का।

विरदावली—सज्ञा स्त्री० [स० विरुदावली] यश की कथा। कीर्ति की कथा। प्रशंसा के गीत।

विरदैत—वि० [हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] बडे विरदवाला। कीर्ति या यशवाला। बडे नामवाला।

विरध†—वि० [स० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—विरध भया कफ वाय ने घेरा। खाट पडा नहिं जाय खिपका रे।—कबीर श०, पृ० २६।

विरम—सज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्यास्त। २ समाप्ति। अत। ३ निवृत्ति। त्याग (को०)।

विरमण—सज्ञा पुं० [स०] १ विराम करना। रुकना। ठहरना। थमना। २ रम जाना। मन लगाना। ३ सभोग। विलास। ४ विरत होना। निवृत्त होना। त्याग। जैसे,—अदत्तदान-विरमण। (जैन)।

विरमना¹—क्रि० अ० [सं० विरमण] १ रम जाना। मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। २ विराम करना। ठहरना। रुकना। ३ मोहित होकर रुक जाना। उ०—सूरदास कित विरमि रहे प्रभु आवत नाहिं चले।—सूर (शब्द०)। ४ वेग आदि का थमना या कम होना। उ०—विरमै नहिं ताप जताए बिन, जगजीवन की अहै रीति यही। करैं जाहिर जीभ सो लाज लगै जो अकाज न आज फिरै उमही।—(शब्द०)।

विरमना²—क्रि० अ० [स० विलम्बन अथवा स० विरम से हिं० नामिक धातु] दे० 'विलबना'।

विरमाना—क्रि० स० [हिं० विरमना का सक० रूप] १ दूसरे का मन लगाना। अनुरक्त करना। २ मोहित करके रोक लेना। फँसाना। उ०—उत कुबजा विरमायो श्यामहि, इत यह दशा भई।—सूर (शब्द०)। ३ फँसा रखना। मशगूल रखना। उ०—देति न लेति कछू हँसिकै बडी बेर लौ बातन ही विरमावति।—(शब्द०)। ४ भुलावे मे रखना। भ्रम मे डाले रखना।

विरमाना²—क्रि० स० [स० विलम्बन] दे० 'विलंबाना'।

विररा—वि० [सं० विरल] दे० 'विरल'। उ०—विररा चिकुर मुख चुंब सनेही—कबीर सा०, पृ० १५९७।

विरल¹—वि० [स०] १ जो घना न हो। जिसके बीच बीच मे अवकाश हो। जिसके बीच बीच मे खाली जगह हो। 'सघन' का उलटा। जैसे,—आगे चलकर यह बन विरल होता गया है। २ जो पास पास न हो। जो दूर दूर पर हो। ३ जो अधिकता से न मिले। जो केवल कही कही पाया जाय। दुर्लभ। जैसे,—ऐसे लोग ससार मे बहुत विरल हैं। ४ जो गाढा न हो। पतला। ढीला। ५ शून्य। निर्जन। ६ अल्प। थोडा।

विरल²—सज्ञा पु० जमाया हुआ दूध। दही।

विरल³—अव्य० कठिनाई से। कभी कभी।

विरलजानुक—वि० [स०] जिसके दोनो घुटनो मे अधिक दूरी हो। जिसके घुटने आपस मे मिल न सकें। धनु पदी (को०)।

विरलद्रवा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लपसी (को०)।

विरलपातक—वि० [स०] जो बहुत कम पाप करे (को०)।

विरलपार्श्वग—वि० [स०] जो कम अनुचर या सेवक रखता हो (को०)।

विरलभक्ति—वि० [स०] जिसमे विविधता न हो। एक समान। नीरस। उबानेवाला (को०)।

विरला—वि० [सं० विरल] कोई एक। इक्का दुक्का। दे० 'विरला'। उ०—चित्र खीचती थी जब चपला। नीलमेघ पट पर वह विरला।—लहर, पृ० २६।

विरलागत—वि० [स०] जो शायद ही कभी घटित होने। विरल रूप में आनेवाला (को०)।

विरलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का झीना या महीन वस्त्र।

विरलित—वि० [स०] जो सघन न हो (को०)।

विरलीकरण—सज्ञा पुं० [स०] सघन को विरल करना।

विरव¹—सज्ञा पु० [स०] अनेक प्रकार के शब्द।

विरव²—वि० शब्दरहित। नीरव।

विरश्मि—वि० [सं०] रश्मि या किरण से रहित (को०)।

विरष†—सज्ञा पु० [स० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ० भएँ विरष पुनि हाथ न आवै। जो बल करै सोई दुख पावै।—चित्रा०, पृ० ५२।

विरस¹—वि० [स०] १ रसहीन। फीका। नीरस। बिना स्वाद का। उ०—जल पय सरिस बिकाय, देखहु प्रीति की रीति यह। विरस तुरत ह्वै जाय, कपट खटाई परत ही।—तुलसी (शब्द०)। २ जो अच्छा न लगे। विरक्तिजनक। जी हटानेवाला। अप्रिय। अरुचिकर। उ०—चहुँटी चिबुक चाँपि चूँबि लोल लोयन कौ, रस मे बिरस कलो बचन मलीनो है। गहि भरि लीनो कछू उत्तर न बाल दीनी हाल से हवाल राउ अक भरि लीनो है।—सूदन (शब्द०)। ३ (काव्य) जो रसहीन हो गया हो। जिसमे रस का निर्वाह न हो सका हो। ४. क्रूर। निर्दय (को०)।

विरस[२]—संज्ञा पु० १ काव्य मे रसभंग।

विशेष—केशव ने इसे 'अनरस' के पाँच भेदो मे से एक माना है। २ पीडा। वेदना (को०)।

विरसता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीरसता। फीकापन। २ रसभग। मजा किरकिरा होना।

विरसा—संज्ञा पुं० [अ०] मीरास। मृतक की सपत्ति। मरे हुए आदमी की जायदाद (को०)।

विरह[१]—संज्ञा पु० [स०] १ किसी वस्तु मे रहित होने का भाव। किसी वस्तु का अभाव। किसी वस्तु के बिना स्थिति। २ किसी प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। विच्छेद। वियोग। जुदाई। ३. वियोग का दु ख। जुदाई का रज। ४. अतर। व्यवधान। अविद्यमानता। उ०—नव नवय प्रातय विरह प्रावय सप दिव धुनि बज्जिय।—पृ० रा०, २४।११८। ५ परित्याग। छोड देना (को०)।

विरह[२]—वि० रहित। शून्य। बगैर। बिना।

विरहज, विरहजनित, विरहजन्य—वि० [स०] जो विरह के कारण उत्पन्न हो (को०)।

विरहज्वर—संज्ञा पुं० [स०] विरह से उत्पन्न ताप या पीडा (को०)।

विरहन‡—वि० स्त्री० [स० विरहिणी] दे० 'विरहिणी'। उ०—तजे सुग्रह धन धाम सहेली। पिय विरहन उठि चली अकेली। —कबीर सा०, पृ० ६।

विरहविधुर—वि० [स०] विरह के कारण व्यथित या अकेला। उ०—क्या आँसू सा ढुलक गया वह, विरहविधुर उर का उद्गार? —प्रपरा, पृ० १०२।

विरहा‡—संज्ञा पुं० [स० विरहक या हिं० विरह] एक प्रकार का गीत जिसे अहीर और गडरिए गाते हैं। विशेष दे० 'विरहा'। २ विरह। वियोग।

विरहागि(पु)—संज्ञा स्त्री० [स० विरहाग्नि] दे० 'विरहाग्नि'।

विरहाग्नि—संज्ञा स्त्री० [स०] विरह से उत्पन्न ताप (को०)।

विरहानल—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० विरहाग्नि' (को०)।

विरहिणी—वि० स्त्री० [सं०] १ जिसे प्रिय या पति का वियोग हो। जो पति या नायक से अलग होने के कारण दु खी हो। २. पारिश्रमिक। मजूरी (को०)।

विरहित वि० [स०] १ रहित। शून्य। बिना। उ०—आश्रम बरन धरम विरहित जग लोक वेद मरजाद गई है।—तुलसी (शब्द०)। २ छोडा हुआ। परित्यक्त (को०)। ३. वियुक्त (को०)। ४ अकेला। एकाकी (को०)।

विरही[१]—वि० [सं० विरहिन्] [वि० स्त्री० विरहिणी] १ जिसे प्रिया का वियोग हो। जो प्रियतमा से अलग होने के कारण दु खी हो। उ —बिरही कहँ लौ आयु सँभारै?—सूर। (शब्द०)। २ अकेला। एकाकी (को०)।

विरही‡[२]—संज्ञा पुं० [देश०] भीगा हुआ अन्न। उ०—नवरात्र मे घटस्थापन के साथ साथ, भूमि पर बाँस की आयताकार चौहद्दी बनाकर अनाज भिगोए जाते हैं, जिन्हे विरही कहते हैं। —शुक्ल अभि० ग्र० पृ० १३६।

विरहोत्कठिता—संज्ञा स्त्री० [स० विरहोत्कण्ठिता] नायिकाभेद के अनुसार प्रिय के न आने से दुखी वह नायिका जिसके मन मे पूरा विश्वास हो कि पति या नायक आवेगा, पर फिर भी किसी कारणवश वह न आवे।

विराग[१]—संज्ञा पु० [स०] १. अनुराग का अभाव। चाह का न होना। लगन न होना। २ किसी वस्तु से न विशेष प्रेम होना न द्वेष। उदासीन भाव। ३ सासारिक सुखो की चाह न करना। विषयभोग आदि से निवृत्ति। वैराग्य। उ०—राजभोग्य के योग्य, विपिन मे बैठा आज विराग लिए। —पचवटी, पृ० ६। ४ एक मे मिले हुए दो राग।

विशेष—एक राग मे जब दूसरा राग मिल जाता है, तब उसे विराग कहते हैं।

५ वर्ण या रग का परिवर्तन (को०)। ६ असतुष्टि। असतोष (को०)।

विराग[२]—वि० १ राग से रहित। उदासीन। विरागी। २ वर्ण या रगहीन (को०)।

विरागी—वि० [स० विरागिन्] [वि० स्त्री० विरागिनी] १ जिसे राग न हो। जिसे चाह न हो। जिसने मन न लगाया हो। उदासीन। विमुख। २ जिसने सासारिक विषयो से मन हटा लिया हो। संसारत्यागी। विरक्त।

विराज्—वि०, संज्ञा पु० [स०] दे० 'विराट्'।

विराज[१]—संज्ञा पुं० [स०] १ मंदिर का एक विशेष प्रकार। २ एक पौधा। ३ एक प्रजापति का नाम (को०)।

विराज[२]—वि० १. अत्युत्तम। अत्यत उत्कृष्ट। २ शासन करनेवाला। ३ चमकने वा द्योतित होनेवाला (को०)।

विराजन—संज्ञा पुं० [स०] [वि० विराजमान, विराजित] १. शोभित होना। २ शासक का कार्य करना। शासन करना (को०)। ३. वर्तमान होना। रहना।

विराजना—क्रि० अ० [स० विराजन] १ शोभित होना। प्रकाशित होना। सोहना। फबना। २ वर्तमान होना। मौजूद रहना। उपस्थित रहना। होना। रहना। ३ बैठना। जैसे,—आइए, विराजिए।

विराजमान—वि० [स०] १ प्रकाशमान। चमकता हुआ। चमक दमकवाला। २ विद्यमान। उपस्थित। मौजूद। जैसे, पडित जी यहाँ पहले ही से विराजमान है। ३ बैठा हुआ। उपविष्ट।

विराजित—वि० [स०] १ सुशोभित। २ प्रकाशित। ३ उपस्थित। विद्यमान।

विराज्ञी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साम्राज्ञी। रानी (को०)।

विराज्य—संज्ञा पुं० [स०] १ शासन। हुकूमत २ राज्य (को०)।

विराट्[१]—संज्ञा पुं० [स० विराज्] ब्रह्मा का वह स्थूल स्वरूप जिसके अदर अखिल विश्व है अर्थात् सपूर्ण विश्व जिसका शरीर है। विश्वशरीरमय अनत पुरुष।

विशेष—इस भावना का निरूपण इस प्रकार है—'उस पुरुष के सहस्रो मस्तक, सहस्रो आँखें और सहस्रो चरण है। वह पृथ्वी मे सर्वत्र व्याप्त रहने पर भी दस अगुल ऊपर अवस्थित है। पुरुष ही सब कुछ है—जो हुआ है और जो होगा। उसकी

इतनी बडी महिमा है, पर वह इससे कही बडा है। संपूर्ण विश्व और भूत एक पाद है, आकाश का अमर अंश त्रिपाद है। उससे विराट् उत्पन्न हुए और विराट् से अधिपुरुष। उन्होने आविर्भूत होकर सपूर्ण पृथ्वी को आगे पीछे घेर लिया'। भगवद्गीता के अनुसार भगवान् ने जो अपना विराट् स्वरूप दिखाया था, उसमे समस्त लोक, पर्वत, समुद्र, नद, नदी, देवता आदि दिखाई पडे थे। बलि को छलने के लिये भगवान् ने जो त्रिविक्रम रूप धारण किया था, उसे भी विराट् कहते हैं। पुराणो मे विराट् को ब्रह्मा का प्रथम पुत्र कहा है। ब्रह्मा दो भागो मे विभक्त हुए—स्त्री और पुरुष। स्त्री अश से विराट् की उत्पत्ति हुई जिसने स्वायभुव मनु को उत्पन्न किया। स्वायभुव मनु से प्रजापतियो की उत्पत्ति हुई।

२ लडाकू जाति। क्षत्रिय। ३ कांति। दीप्ति। सौंदर्य। ४ शरीर। देह (को०)। ५ प्रज्ञा। प्रतिभा। प्रज्ञा। (वेदात दर्शन)। ६ ब्रह्माड (को०)।

विराट्[२]—वि० १ बहुत बडा। बहुत भारी। जैसे,—विराट् सभा, विराट् आयोजन। २ शासन करनेवाला। प्रधान (को०)।

विराट्[३]—सज्ञा स्त्री० १ एक वैदिक वृत्ति का नाम। २ उत्कृष्टता। दीप्तिमत्ता। सुदरता [को०]।

विराट् स्वराज—सज्ञा पु० [स०] एक दिन मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ। एक प्रकार का एकाह। (श्रौत सूत्र)।

विराट—सज्ञा पु० [स०] १. मत्स्य देश जहाँ के राजा के यहाँ पाँचो पाडव अज्ञातवास के समय छिपे थे।

विशेष—मनुस्मृति मे मत्स्य देश का उल्लेख कुरुक्षेत्र और पाचाल के साथ है, इससे अनुमान होता था कि वह थानेसर के आस पास होगा। पर अब यह बात एक प्रकार से निश्चित हो गई है कि अलवर और जयपुर के बीच का प्रदेश ही महाभारत के समय मत्स्य देश कहलाता था। उक्त प्रदेश के अंतर्गत 'बैराट' और 'माचडी' दो स्थान अब तक 'विराट' और 'मत्स्य' का स्मरण दिलाते हैं।

२ मत्स्य देश का राजा।

विशेष—इनके यहाँ अज्ञातवास के समय पाडव नौकर के रूप मे रहते थे। इनकी कन्या उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था जिससे परीक्षित की उत्पत्ति हुई।

३ महाभारत का एक पर्व। ४ सगीत मे एक ताल का नाम।

विराटक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का निम्न कोटि का हीरा या नग जो विराट देश मे निकलता था। राजपट्ट। राजावर्त।

विराटज—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विराटक'।

विराटपर्व—सज्ञा पुं० [स० विराटपर्वन्] महाभारत के अठारह पर्वों मे से एक पर्व का नाम [को०]।

विराणी—सज्ञा पु० [स० विराणिन्] हस्ती। हाथी।

विरातक—सज्ञा पु० [न०] अर्जुन वृक्ष।

विरात्र—सज्ञा पु० [स०] १ रात का अवसान। प्रात काल। २. रात का द्वितीय तृतीय प्रहर। बहुरात्र। अपरात्र [को०]।

विराद्ध—वि० [स०] १. तिरस्कृत। २ जिसका विरोध किया गया हो। ३ अपकृत। जिसका अपकार किया गया हो [को०]।

विराध—सज्ञा पुं० [स०] १ पीडा। क्लेश। तकलीफ। २ पीडित करनेवाला। सतानेवाला। ३ विरोध। खिलाफत (को०)। ४ एक राक्षस जिसे दंडकारण्य मे लक्ष्मण ने मारा था।

विशेष—अग्निपुराण के अनुसार इसके पिता का नाम सुपर्वन्य और माता का नाम शतह्रदा था। यह राक्षस पूर्व जन्म मे तुबुरु नामक गधर्व था, जो वैश्रवण या कुबेर के शाप से राक्षस योनि मे उत्पन्न हुआ था। इसके बहुत प्रार्थना करने पर वैश्रवण ने कहा था—'अच्छा, जाओ। जब दशरथ के यहाँ भगवान् अवतार लेगे, तब तुम्हारा शाप छूटेगा'।

रामायण मे लिखा है कि दंडकारण्य मे विराध सीता को लेकर भागने लगा। राम ने बहुत बाण चलाए, पर वह युद्ध में न मारा गया और राम तथा लक्ष्मण दोनो को उठाकर ले चला। रास्ते मे फिर युद्ध होने लगा और दोनो भाइयो ने मिलकर उसकी भुजाएँ काट डाली। पर वह जल्दी मरता नही था। अत मे लक्ष्मण ने एक बडा सा गड्ढा खोदा और उसका शरीर उसमे डाल दिया गया। मरने के पहले इसे अपने पूर्वशरीर और शाप का स्मरण हो आया था।

विराधन—सज्ञा पुं० [न०] १ अपकार करना। हानि करना। २ विरोध (को०)। ३. पीडित करना। सताना। तग करना। ४ वेदना। पीडा (को०)।

विराधा—सज्ञा स्त्री० [स०] अपकार। दूसरे की हानि करना [को०]।

विराधान—सज्ञा पु० [स०] कष्ट। व्यथा। दु ख [को०]।

विराना—वि० [फा० बेगानह्] दे० 'विराना'। उ०—फिर विराने देश मे किससे पूछें।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५६।

विराम—सज्ञा पु० [स०] १ किसी क्रिया या व्यापार का कुछ देर के लिये बद होना, रुकना या थमना। ठहराव। ठहरना।

यौ०—विरामसधि = युद्ध में लिप्त दोनो पक्षो की ओर कुछ समय के लिये युद्ध बद करने का समझौता। युद्ध बद करने की सधि। उ०—हेगेरी ने विरामसधि कर ली।—आ० अ० रा०, पृ० ५२।

२. चलने को थकावट दूर करने के लिये रास्ते मे ठहरना। चलना रोकना। सुस्ताना। दम मारना। विश्राम।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

३ वाक्य के अतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पडता हो। ४ छद के चरण मे वह स्थान जहाँ पढते समय कुछ ठहरना पडे। यति। ५ विष्णु का एक नाम (को०)। ६. अत। समाप्ति। उपसहार।

यौ०—विरामचिह्न = वह निशान वा चिह्न जिससे रुकाव, ठहराव या समाप्ति सूचित हो।

विरामण[१]—सज्ञा पु० [स०] ठहराव [को०]।

विरामण[२]—सज्ञा पुं० [स० ब्राह्मण] ब्राह्मण।

विरामताल—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्म ताल का एक प्रकार या भेद [को०]।

विरामदायिनी—वि० स्त्री० [स०] विश्राम देनेवाली। आराम पहुँचानेवाली। उ०—और विरामदायिनी अपनी सध्या को दे जाता है।—पचवटी, पृ० ६।

विरामब्रह्म—पद्मा पु० [सं०] संगीत मे ब्रह्म ताल के चार भेदो में से एक भेद।

विराल—सज्ञा पु० [स०] बिडाल। बिल्ली। उ०—नेतक माडल गेंडुआ एक सफुर विराल एक।—वर्ण०, पृ० १४।

विराव[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शब्द। बोली। कलरव। उ०—कान परी कोकिला की काकली कलित जो कलापिन की कूक कल कोमल विराव की।—देव (शब्द०)। २. हल्ला गुल्ला। शोर गुल।

विराव[2]—वि० शब्दरहित।

विरावण—सज्ञा पुं० [स०] जिससे बहुत शोर गुल हो। बहुत हल्ला करने या करानेवाला (को०)।

विराविणी[1]—वि० स्त्री० [स०] १. बोलनेवाली। शब्द करनेवाली। २ रोने चिल्लानेवाली।

विराविणी[2]—सज्ञा स्त्री० १ झाड़ू। २ चिल्लाहट रुदन। ३ ध्वनि (को०)। ४ नदी।

विरावित—वि० [स०] ध्वनित किया हुआ (को०)।

विरावी—वि० [स० विरावित्] [वि० स्त्री० विरावणी] १ शब्द करनेवाला। बोलनेवाला। ध्वनि करनेवाला। गूँजनेवाला। २ रोने चिल्लानेवाला। विलाप करनेवाला।

विरावृत्त—सज्ञा पु० [स०] काली मिर्च (को०)।

विराम—सज्ञा पु० [स० विलास] दे० 'विलास'।

विरासत—सज्ञा स्त्री० [अ०] उत्तराधिकार। वरासत। विरसा। उ०—जो मिली विरासत तुम्हे, आँख उसकी आँसू से गीली है।—धूप०, पृ० ६३।

विरासी—वि० [स० विलासिन्] दे० 'विलासी'। उ०—जौ लगि कालिंदि होसि विरासी। पुनि सुरसरि होइ समुद परासी।—जायसी (शब्द०)।

विरिंच—सज्ञा पुं० [स० विरिञ्च] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव।

विरिंचन—सज्ञा पु० [स० विरिञ्चन] १ ब्रह्मा। २ विष्णु (को०)। ३ शिव (को०)।

विरिचि—सज्ञा पु० [स० विरिञ्चि] दे० 'विरिंच'।

विरिक्त—वि० [स०] १ जिसे विरेचन दिया गया हो। २. जिसका पेट छूटा हो। जिसे दस्त आ रहे हो। ३ निकालकर साफ या रिक्त किया हुआ (को०)।

विरिक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरेचन। २ रिक्त करने की क्रिया (को०)।

विरिञ्च—सज्ञा पु० [स०] ध्वनि। स्वर (को०)।

विरुक्मान्—सज्ञा पुं० [स० विरुक्मत्] १ दीप्तिमय या चमकीला आभूषण। २. दीप्त या ज्योतित शस्त्र (को०)।

विरुखा—वि० [फा० बेरुख़] दे० 'बेरुखा' या 'बेरुख'।

विरुग्ण—वि० [स०] १. विशेष रोगी। २. सुस्त। ३ खडित। टुकडो मे विभक्त। कटा फटा। विदीर्ण। ४. झुका हुआ। ५ विध्वस्त। विनष्ट। ६ कुठित। भोथरा (को०)।

विरुच—सज्ञा पुं० [स०] मंत्रविशेष जिससे अभिमंत्रित कर अस्त्रक्षेपण किया जाय (को०)।

विरुज्—सज्ञा स्त्री० [स० १ अत्यधिक पीडा। भीषण वेदना। २ विशिष्ट रोग। बडी व्याधि (को०)।

विरुज—वि० [स०] रोगरहित। नीरोग। स्वस्थ।

विरुझना†—क्रि० अ० [स० वि+रुन्धन] दे० 'उलझन'।

विरुझाना—क्रि० स० [हिं० विरुझना] दे० 'उलझाना'।

विरुत[1]—वि० [स०] रवयुक्त। अव्यक्त शब्दयुक्त। कूजित। गूँजता हुआ।

विरुत[2]—सज्ञा पु० १ चीखना। चिल्लाना। २ चिल्लाहट। ध्वनि। शोर। कोलाहल। ३ कलरव। गुजार (को०)।

विरुति—सज्ञा स्त्री० उत्क्रोश। क्रदन। चीख। चिल्लाहट (को०)।

विरुद—सज्ञा पु० [स०] १ गुण, प्रताप आदि का वर्णन। राजाओ की स्तुति या प्रशसा जो सुंदर भाषा मे की गई हो। यशकीर्तन। प्रशस्ति। २ यश या प्रशसासूचक पदवी जो राजा लोग प्राचीन काल मे धारण करते थे। जैसे, चद्रगुप्त विक्रमादित्य। (इसमे चंद्रगुप्त तो नाम है और विक्रमादित्य विरुद है।) ३. यश। कीर्ति। ४ उच्चारण करना। घोषित करना। प्रख्यापन (को०)। ५ जोर से चिल्लाना। चिल्लाहट (को०)।

विरुदध्वज सज्ञा स० [स०] राज्य या शासन की पताका। शासकीय ध्वज (को०)।

विरुदावली—सज्ञा स्त्री० [स०] १. किसी के गुण, प्रताप, पराक्रम आदि का सविस्तर कथन। यशवर्णन। प्रशसा। २ धार्मिक स्तुतियो का सग्रह। स्तुतिसग्रह (को०)।

विरुदित—सज्ञा पुं० [स०] रुदन। रोना। शोक, सताप करना (को०)।

विरुद्ध[1]—वि० [स०] १. जो हित के अनुकूल न हो। विरोधयुक्त। प्रतिकूल। खिलाफ। जैसे,—आजकल वह हमारे विरुद्ध है। २ अप्रसन्न। वाम। ३. जो मेल मे न हो। जो एकदम भिन्न या उलटा हो। विपरीत। जैसे,—यह बात उस बात से सर्वथा विरुद्ध है। ४. जो उचित से सर्वथा भिन्न हो। जो न्याय या नीति के अनुकूल न हो। विपरीत। अनुचित। जैसे,—विरुद्ध आचरण। ५ बाधित। जिसका विरोध किया गया हो (को०)। ६ घेरा हुआ। नाकेबदी किया हुआ (को०)। ७ प्रतिषिद्ध। वर्जित (को०)। ८ अनिश्चित। सदेहपूर्ण (को०)। ९ बाहृष्कृत। निराकृत। वचित (को०)।

विरुद्ध[2]—क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति मे। खिलाफ। जैसे—आजकल वह हमारे विरुद्ध चल रहा है।

विरुद्ध[3]—सज्ञा पु० [स०] १. विरोध। वैपरीत्य। शत्रुता। २. विरोध नामक एक अलकार (साहित्य)। ३ वैमत्य। असहमति (को०)।

विरुद्धकर्मा -सज्ञा स० [स० विरुद्धकर्मन्] १ विरुद्ध कर्म करनेवाला व्यक्ति। विपरीत आचरण का मनुष्य। बुरे चाल चलन का आदमी। २ केशव के अनुसार श्लेष अलकार का एक भेद, जिसमे एक ही क्रिया के कई परस्पर विरुद्ध फल दिखाए जाते है। उ०—वारुणी को राग होत, सूरज करत अस्त, अहो द्विजराज का जु होत यह कैसो है?—केशव (शब्द०) इस पद का साधारण अर्थ तो यह है कि पश्चिम दिशा के लाल होते ही सूर्य

तो अस्त होता है और चद्रमा उदय, यह कैसी बात है। पर श्लेष से इसका अर्थ होता है कि वारुणी (शराब) की चाह होते ही शूरवीर का तो पराभव होता है, पर वारुणी (उपनिषद् की एक विद्या) की चाह होते ही ब्राह्मण की उन्नति होती है।

विरुद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरुद्ध होने का भाव। २ प्रतिकूलता। विपरीतता। उलटापन।

विरुद्धधी—वि० [स०] वैर भाव रखनेवाला। दुष्ट। खोटा [को०]।

विरुद्धप्रसग—सज्ञा पु० [स० विरुद्धप्रसङ्ग] अकरणीय कार्य। न करने योग्य काम [को०]।

विरुद्धमतिकारिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक काव्यदोष, जो ऐसे पद या वाक्य के प्रयोग से होता है जिससे वाच्य के सबध मे विरुद्ध या अनुचित बुद्धि हो सकती है, जैसे, 'भवानीश' शब्द के प्रयोग से। 'भवानी' शब्द का अर्थ ही है शिव' की पत्नी। उसमे ईश लगाने से सहसा यह ध्यान हो सकता है कि 'शिव की पत्नी' का कोई और भी पति है।

विरुद्धमतिकृत्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विरुद्धमतिकारिता'।

विरुद्धरूपक—सज्ञा पु० [स०] केशव के अनुसार रूपक अलकार का एक भेद, जिसमे कही हुई बात बिलकुल 'अनमिल' अर्थात् असगत या असबद्ध सी जान पडती है, पर विचार करने पर अर्थात् रूपक के दोनो पक्षो (उपमेय, उपमान) का ध्यान करने पर अर्थ सगत ठहरता है।

विशेष—इसमे उपमेय का कथन नही होता, इससे यह 'रूपकातिशयोक्ति' ही है।

विरुद्ध हेत्वाभास—सज्ञा पु० [स०] न्याय मे वह हेत्वाभास जहाँ साध्य के साधक होने के स्थान पर साध्य के अभाव का साधक हेतु हो। जैसे,—यह द्रव्य वह्निमान् है, क्योकि यह महा ह्रद है। यहाँ महा ह्रद होना वह्नि के होने का हेतु नहीं है, वरन् वह्नि के अभाव का हेतु है।

विरुद्धाचरण—सज्ञा पुं० [स०] अनुचित, प्रतिषिद्ध या विरुद्ध आचरण और व्यवहार। [को०]।

विरुद्धार्थ—वि० [स०] विपरीत अर्थवाला [को०]।

विरुद्धार्थदीपक—सज्ञा पु० [स०] काव्यादर्श के अनुसार दीपक अलकार का एक भेद जिसमे एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओ का एक साथ होना दिखाया जाता है। जैसे,—जलकण मिली वायु 'ग्रीष्मताप' को घटाती और 'विरहताप' को बढाती है।

विरुद्धाशन—सज्ञा पु० [स०] वर्जित आहार। अखाद्य भोजन [को०]।

विरुद्धोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] विरोधपूर्ण कथन। प्रतिकूल कथन।

विरुव—वि० [स० विरुद्ध] दे० 'विरुद्ध'। उ०—कहे वले छवकाल विरुव भाषा विसतारै।—रघु० रू०, पृ० १४।

विरुल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साँप [को०]।

विरुला†—सज्ञा पु० [स० विरुह] दे० 'विरवा'। उ०—कलियाय कुरे को रह्यो विरुला परि लेत नही छवि फूलि भली।—शकुनला, पृ० १०७।

विरुक्ष—वि० [स०] कठोर। कर्कश [को०]।

विरूक्षण[1]—सज्ञा पु० [स०] १. रूखा करना। २. गर्हणा। निंदा। ३ शाप। अभिशाप। ४ रक्तस्राव को रोकनेवाली दवा [को०]।

विरूक्षण[2]—वि० १ सुखाने या रूक्ष करनेवाला। २. सकोचक [को०]।

विरूक्षित—वि० [स०] १ जो रूखा किया हुआ हो। २ लेपन किया हुआ। आवृत्त [को०]।

विरूज—सज्ञा पु० [स०] एक अग्नि जिसका जल मे होना कहा गया है।

विरूढ—वि० [स० विरूढ] १ आरूढ। चढा हुआ। २ अकुरित। जमा हुआ। बीज से फूटा हुआ। ३ जात। उत्पन्न। पैदा। ४ खूब जमा हुआ। खूब बैठा हुआ। खूब गडा या धँसा हुआ। ५ मुकुलित। खिला हुआ। [क] । ६ भरा हुआ (घाव) (को०)।

विरूढक—सज्ञा पु० [स० विरूढक] १ इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। २ एक शाक्यवशीय राजा का नाम। ३ एक लोकपाल का नाम। ४ अकुरित अन्न (को०)।

विरूढि—सज्ञा स्त्री० [स० विरूढि] १ भेद या फोडकर ऊपर उठना। २ अकुरित होना। अँखुआ फूटना (को०)।

विरूथिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैशाख कृष्ण एकादशी। वरूथिनी एकादशी।

विरूप[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० विरूपा, विरूपी] १ कई रग रूप का। कई शकलो का। तरह तरह का। २ कुरूप। बदसूरत। भद्दा। ३ विकटाकार। ३ बदला हुआ। परिवर्तित। ४ शोभाहीन। शोभारहित। ५ जो अनुरूप न हो। विरुद्ध। अप्राकृतिक। उलटा। ६ दूसरी तरह का। बिलकुल भिन्न। ७ जिसमे एक कम हो (को०)।

विरूप[2]—सज्ञा पु० १ पिपरामूल। २ पाडुरोग (को०)। ३ शिव का एक नाम (को०)। ४. एक असुर (को०)। ५ कुरूपता। भद्दी आकृति (को०)। ६ रूप, प्रकृति या चरित्र की भिन्नता (को०)।

विरूपक[1]—वि० १ कुरूप। २ भयकर। कराल। ३. अनुमित [को०]।

विरूपक[2]—सज्ञा पुं० १ एक असुर। २. पुकारने का अथवा उपाधि-नाम [को०]।

विरूपकरण—सज्ञा पु० [स०] १ कुरूप बनाने की क्रिया। २ क्षति या हानि पहुँचाना [को०]।

विरूपचक्षु—सज्ञा पुं० [स० विरूपचक्षुस्] त्रिनेत्र, शिव [को०]।

विरूपता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरूप होने का भाव। २. कुरूपता। बदसूरती। ३ भद्दापन। बेढगापन।

विरूप परिणाम—सज्ञा पु० [स०] एकरूपता से अनेकरूपता अर्थात् निर्विशेषता से विशेषता की ओर परिवर्तन। एक मूल प्रकृति से अनेक विकृतियो की ओर गति।

विशेष—साख्य मे परिणाम दो प्रकार के कहे गए है—स्वरूप परिणाम और विरूप परिणाम। 'विरूप परिणाम' द्वारा प्रकृति से नाना रूप पदार्थों का विकास होता है, और 'स्वरूप परिणाम' द्वारा फिर नाना पदार्थ क्रमश अपने रूप खोते हुए प्रकृति मे लीन होते हैं। एक परिणाम सृष्टि की ओर अग्रसर होता है और दूसरा लय की ओर।

विरूपरूप—वि० [स०] कुरूप। बदशक्ल [को०]।

विरूपा[1]—वि० स्त्री० [सं०] कुरूप। बदसूरत। उ०—शूर्पणखैं जो विरूपा करी तुम तातें दियो हमहूँ दुख भारी।—केशव (शब्द०)।

विरूपा[2]—सज्ञा स्त्री० १. दुरालभा। २ अतिविषा। ३ यम की पत्नी का नाम।

विरूपाक्ष[1]—वि० [स०] जिसके नेत्र बेढगे या डरावने हो।

विरूपाक्ष[2]—सज्ञा पु० १ शिव। शकर। २ शिव के एक गण का नाम। ३ रावण का एक सेनानायक जिसे हनुमान ने प्रमोद वन उजाडने के समय मारा था। ४ एक राक्षस का नाम जिसे सुग्रीव ने राम-रावण-युद्ध मे मारा था। ५ रावण का एक मत्री। ६. एक दिग्गज का नाम। ७. एक नाग का नाम।

विरूपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुरूप स्त्री। बदसूरत औरत।

विरूपी[1]—वि० [स० विरूपिन्] [वि० स्त्री० विरूपिणी] १ बदसूरत। कुरूप। उ०—हरि रुकमिनि मुख देखि छाँडि तब दीन्हेउ। मोछ गोछ शिर मुंडि विरूपी कीन्हेउ।—अकबरी०, पृ० ३४४। २. डरावनी सूरत का।

विरूपी[2]—सज्ञा पुं० कृकलास। गिरगिट।

विरूर—[सं० (उप०) वि०+हिं० रूरि या स० विरूढ, विरूह (=अंकुरित, जमा हुआ)] १ अत्यत सुदर। हृदयहारी। २ जमा हुआ। एकत्र। उ०—अगै सुदति पतिय विरूर। पलकत अदु मद झरत भूर।—पृ० रा०, १।६२४।

विरेक—सज्ञा पुं० [स०] १ दस्तावर दवा। जुलाब। विरेचन। २. आँत की सफाई। मल के निकालने की क्रिया (को०)।

विरेचक—वि० [स०] दस्त लानेवाला। मलभेदक। दस्तावर।

विरेचन—सज्ञा पुं० [स०] १ मलभेदक औषध। दस्त लानेवाली दवा। जैसे,—रेंडी का तेल। २. दस्त लाना। मलभेद करने की क्रिया।

विशेष—वैद्यक के ग्रथो मे विरेचन की विधि विशेष विस्तार से लिखी है, क्योकि कुपित मल ही सब रोगो का कारण कहा गया है। पूरी विधि के साथ विरेचन का विधान स्नेहन, स्वेदन और वमन के उपरात किया गया है। शरद और वसत मे विरेचन विधेय ठहराया गया है। बालक, वृद्ध, क्षतग्रस्त, रोग से अत्यत क्षीण, भयार्त, श्रात, पिपासार्त और मतवाले को विरेचन नही कराना चाहिए।

विरेचित—वि० [स०] विरेचन कराया हुआ। दस्त लाया हुआ (को०)।

विरेची—वि० [स० विरेचिन्] दस्त लानेवाला (को०)।

विरेच्य—वि० [स०] विरेचन के योग्य। जो दस्तावर दवा देने के योग्य हो।

विशेष वैद्यक के ग्रथो मे नीचे लिखे रोगियो को विरेचन के योग्य कहा है— गुल्म, बवासीर, विस्फोटक (चेचक), कमल रोग, जीर्णज्वार, उदररोग, विष, पेट की पीडा, योनि और शुक्रगत रोग, प्लीहा, कुष्ठ, मेह, श्लीपद (फीलपाँव), उन्माद, काश, श्वास, विसर्प इत्यादि से पीडित रोगियो को विरेचन देना चाहिए।

विरेफ—सज्ञा पु० [सं०] १. सरिता। नदी। २ 'र' वर्ण का अभाव या अनुपस्थिति (को०)।

विरेभित—वि० [स०] ध्वनित। शब्दित (को०)।

विरोक—सज्ञा पु० [स०] १. चमक। दीप्ति। २. रश्मि। किरण। ३ छिद्र। छेद। ४ चद्रमा। ५ विष्णु। ६ प्रभात। प्रात काल (ऋग्वेद)।

विरोग[1]—सज्ञा पु० [स०] स्वस्थता। निरोगता (को०)।

विरोग[2]—वि० स्वस्थ। तदुरुस्त (को०)।

विरोचन—सज्ञा पु० [स०] १ चमकना। प्रकाशित होना। २ दीप्तियुक्त। प्रकाशमान। ३. सूर्य। ४ चद्र। ५ अग्नि। ६ मदार का पौधा। आक। ७ विष्णु। ८. रोहित वृक्ष। ९ श्योनाक वृक्ष। १०. घृत करज। ११ प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता। १२ आलोचना। स्थापन (को०)।

विरोचनसुत—सज्ञा पु० [स०] राजा बलि।

विरोचिष्णु—वि० [स०] चमकीला। दीप्तिमान् (को०)।

विरोद्धा—वि० [स० विरोद्ध] विरोध करनेवाला (को०)।

विरोध—सज्ञा पु० [स०] १. मेल न होना। किसी दूसरी वस्तु के साथ अत्यत भिन्नता। विपरीत भाव। अनैक्य। जैसे,—इन दोनो भावो का परस्पर विरोध है। २ मेल का न होना। वैर। शत्रुता। बिगाड। अनबन। जैसे,—उन दोनो का विरोध बहुत पुराना है।

यौ०—वैर विरोध।

३ दो बातो का एक साथ न हो सकना। विप्रतिपत्ति। व्याघात। असहभाव। जैसे,—आपके कथन मे पूर्वापर विरोध है। ४. उलटी स्थिति। सर्वथा दूसरे प्रकार की स्थिति। ५ नाश। ६. नाटक का एक अंग, जिसमे किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ७. एक अर्थालकार जिसमे जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी एक का दूसरी जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी एक के साथ विरोध होना है। जैसे,—तुम्हारे वियोग मे उस कामिनी का मलया नल दावानल हो रहा है। यहाँ जाति के साथ जाति का विरोध है। इसी प्रकार यह कहना गुण का द्रव्य के साथ जातिविरोध होगा —'तुम्हारे बिना चद्रमा विष की ज्वाला से पूर्ण हो गया'। ८ प्रतिरोध। रुकावट (को०)। ९ नाकेबदी। घेरा। आवरण (को०)। १० सकट। दुर्भाग्य (को०)। ११. कलह। असहमति (को०)।

विरोधक—सज्ञा पुं० [स०] १. विरोध करनेवाला। २ नाटक मे वे विषय जिनका वर्णन निषिद्ध हो।

विरोधकारक—वि० [सं०] झगडालू। विरोधी।

विरोधकारी—वि० [स० विरोधकारिन्] विरोध उत्पन्न करनेवाला।

विरोधकृत्—वि० सज्ञा पुं० [स०] विरोधी। शत्रु (को०)।

विरोधक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] शत्रुता। झगडा। कलह (को०)।

विरोधन—सज्ञा पु० [स०] [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १ विराध करना। वैर करना। २ नाश। बरबादी। ३ नाटक मे विमर्श का एक अग जो उस समय होता है, जब किसी कारणवश कार्यध्वस का उपक्रम (सामान) होता है। जैसे—कुरुक्षेत्र के युद्ध के अत होने के निकट जब दुर्योधन बच रहा था, तब भीम का यह प्रतिज्ञा करना कि 'यदि दुर्योधन को न मारूँगा तो अग्नि म प्रवेश कर जाऊँगा'। सब बात बन जाने पर भी भीम का यह कहना युधिष्ठिर आदि के मन मे यह विचार लाया कि यदि दुर्योधन न मारा गया तो हम सब लोग भी भीम के बिना कैसे रहेगे। ४ बाधा। रुकावट (को०)। ५ प्रतिरोध। मुकाबिला (को०)। ६ परस्पर विरोध। असगति (को०)। ७ कलह (को०)।

विरोधना†—क्रि० स० [स० विरोधन] विरोध करना। अपने विरुद्ध करना। वैर करना। शत्रुता या झगडा करना। उ०—माई ये न विरोधिए गुरु, पडित, कवि, यार।—गिरिधर (शब्द०)।

विरोधपरिहार—सज्ञा पु० [स०] झगडा मिटना। असामजस्य या विराध का दूर होना (को०)।

विरोधवचन—सज्ञा पु० [स०] विरुद्ध कथन। किसी के विरोध मे कही गई बात (को०)।

विरोधशमन—सज्ञा पु० [स०] झगडा मिटना।

विरोधाचरण—सज्ञा पु० [स०] १. हित के प्रतिकूल आचरण। खिलाफ काररवाई। २. शत्रुता का व्यवहार।

विरोधाभास—सज्ञा पु० [स०] एक अर्थालकार जिसमे जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध दिखाई पडता है। विशेष दे० 'विरोध'।

विरोधित—वि० [स०] १ जिसका विरोध किया गया हो। २. क्षतिग्रस्त (को०)। ३ अस्वीकृत। निराकृत (को०)।

विरोधिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विरोध। शत्रुता। वैर। २ नक्षत्रो की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)।

विरोधिनी—वि० स्त्री० [स०] १ विराध करनेवाली। वैरिन। २ विरोध करानेवाली। दो आदमियो मे झगडा लगानेवाली। ३ एक राक्षसी जो दुसह की पुत्री थी (को०)।

विरोधिश्लेष—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विरोधीश्लेष'।

विरोधी[1]—वि० [स० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १ विरोध करनेवाला। हित के प्रतिकूल चलनेवाला। कार्यसिद्धि मे बाधा डालनवाला। २ प्रतिद्वद्वी। विपक्षी। शत्रु। बैरी। दुश्मन। ३ मुकाबिला करनेवाला। घेरा डालनेवाला (को०)। ४ झगडालू (को०)। ५ अनुकूल न पडनेवाला। (अन्न) (को०)।

विरोधी[2]—सज्ञा पु० १ साठ सवत्सरो मे से पचीसवाँ संवत्सर। २ शत्रु। बैरी (को०)।

विरोधी श्लेष—सज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार श्लेष अलकार का एक भेद, जिसमे श्लिष्ट शब्दो द्वारा दो पदार्थों मे भेद, विरोध या न्यूनाधिकता दिखाई जाती है। जैसे, उ०—कृष्ण हरे हरये हरै सपति, शभु विपत्ति यहै अधिकाई। जातक काम अकामन के हित, घातक काम सकाम सहाई। इसमे यह दिखाया गया है कि हर (शिव) दासो पर हरि की अपेक्षा अधिक कृपा करते हैं। कृष्ण धीरे धीरे सपत्ति हरते हैं और शिव विपत्ति। हरि काम को उत्पन्न करनेवाले हैं और निष्काम लोगो के हितू हैं, शिव काम के घातक हैं, पर कामना रखनेवालो के सहायक हैं। यहाँ 'काम' शब्द के 'कामदेव' और 'कामना' दो अर्थ हैं।

विरोधोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] विरोधी उक्ति। विरोध मे कही गई बात (को०)।

विरोधोपमा सज्ञा स्त्री० [स०] उपमा अलकार का एक भेद, जिसमे किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती है। जैसे,—'तुम्हारा मुख चद्रमा और कमल के समान है।' यहाँ कमल और चद्रमा इन दोनो उपमानो मे विरोध है।

विरोध्य—वि० [स०] १ विरोध के योग्य। २. जिसका विरोध करना हो।

विरोपण[1]—सज्ञा पु० [स०] [वि० विरोपणीय, विरोपित, विरोप्य] १ लेपन। लेप करना। २ लीपना। पोतना। तह चढाना। लेव चढाना। ३. जमीन मे पौधा लगाना। रोपना। ४ घाव का भरना (को०)।

विरोपण[2]—वि० १ पौधा रोपनेवाला। २ (औषधादि) जिससे घाव भर जाय (को०)।

विरोपित—वि० [स०] १ रोपा हुआ। २ भरा हुआ।
यौ०—विरोपितव्रण = जिसका घाव भर गया हो।

विरोम—वि० [स० विरोमन्] रोमरहित। बिना रोएँ का।

विरोमा—वि० [स० विरोमन्] दे० 'विरोम' (को०)।

विरोलना†—क्रि० स० [स० विलोडन] विलोडना। मथन करना। विवचित करना। उ०—मुद्रा सतोष शर्म पति झोली। गुरमुखि जोगी तत्तु विरोली।—प्राण०, पृ० १०६।

विरोलित—वि० [स०] अस्तव्यस्त। तितर बितर किया हुआ (को०)।

विरोस†—वि० [स० विरोष] रोष से पूर्ण। उ०—मुष हास नेन विरोस। नासाग्र उग्र न जोस।—पृ० रा०, ६१।१४६।

विरोह—सज्ञा पुं० [स०] १ उद्भव स्थान। उद्गम। बुनियाद। मूल। २ अकुरित होना। उगना (को०)।

विरोहण[1]—सज्ञा पुं० [स०] [वि० विरोहणीय विरोहित] १ एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर लगाना। रोपना। २ अकुरित होना (को०)। ३ एक नाग (को०)।

विरोहण[2]—वि० १ दे० 'विरोही'। २ जिससे घाव भर जाय (को०)।

विरोही—वि० [स० विरोहिन्] [वि० स्त्री० विरोहिणी] १ रोपनेवाला। पौधा लगानेवाला। २. अँखुआ फोडनेवाला। अकुरित होनेवाला (को०)।

विरौनी—सज्ञा स्त्री० [देश०] बाजरा, मडुवा, कोदो वगैरह की एक प्रकार की जोताई जो उनके पौधे कुछ ऊँचे होने पर की जाती है।

विर्त‡—सज्ञा स्त्री० [स० वृत्ति] दे० 'वृत्ति'। उ०—तस वह मोती आइ निसारै। तोहि सँग परमद विर्त सवारै।—इद्रा०, पृ० ३६।

विलघन—सज्ञा पु० [स० विलङ्घन] १ कूद या लाँघकर पार करने की क्रिया। २ उपवास करना। लघन करना। ३ किसी वस्तु के भोग से अपने आपको रोक रखना। वचित रखना। ४. अपराध। अतिक्रमण। क्षति (को०)।

विलघना—सज्ञा स्त्री० [स० विलङ्घना] १ फाँदना। उल्लंघन करना। २ उपवास या लघन करना। ३ नीचा दिखाना या पराजित करना [को०]।

विलघनीय—वि० [स० विलङ्घनीय] १ पार करने योग्य। लाँघने योग्य। २ नीचा दिखाने योग्य। परास्त करने योग्य।

विलघित[1]—वि० [स० विलङ्घित] १ जो परास्त हुआ हो। जिसने नीचा देखा हो २ जो विफल हुआ हो। निष्फल। ३ लाँघा हुआ। ४ अतिक्रात। आगे बढा हुआ (को०)।

विलघित[2]—सज्ञा पु० उपवास। भोजनादि न करना [को०]।

विलघी—वि० [स० विलङ्घिन्] १ लाँघनेवाला। डाक जानेवाला। अतिक्रमण करनेवाला। २ चढनेवाला [को०]।

विलघ्य—वि० [स० विलङ्घ्य] १ पार करने योग्य। (नदी आदि)। २ परास्त होने योग्य। वश मे आने योग्य। ३ करने योग्य। सहज।

विलव[1]—वि० [स० विलम्ब] आवश्यकता, अनुमान आदि से अधिक समय (जो किसी बात मे लगे)। बहुत काल। अतिकाल। देर।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

विलव[2]—सज्ञा पु० १ लटकना। टँगना। २ धीमापन। देरी। दीर्घसूत्रता। सुस्ती। ३ एक सवत्सर का नाम।

विलवन—सज्ञा पु० [स० विलम्बन] [वि० विलवनीय, विलबी, विलबित] १ देर करना। विलब करना। २ लटकना। टँगना। ३ सहारा पकडना। टेकना।

विलवना‡—क्रि० अ० [स० विलम्बन] १ देर करना। विलब करना। आवश्यकता से अधिक समय लगाना। २. रम जाना। मन लगने के कारण बस जाना। उ०—भँवर कँवल रस वेधिया, अनत न भरमै जाइ। तहाँ वास विलविया, मगन भया रस खाइ।—दादू (शब्द०)। ३ लटकना। ४ सहारा लेना।

विलविका—सज्ञा स्त्री० [स० विलम्बिका] एक प्रकार का रोग जो विदग्धाजीर्ण द्वारा उत्पन्न होता है।उ०—जिस (अजीर्ण) की चिकित्सा नही हो सके उसे विलंबिका रोग कहते हैं।—माधव०, पृ० ६७।

विशेष—इस रोग मे खाया हुआ अन्न कफ और वायु से दूषित होकर पेट मे दुख देता है। न तो वमन होता है, न मल निकलता है।

विलंबित[1]—वि० [स० विलम्बित] लटकता हुआ। झूलता हुआ। उ०—राजत रोमक की तन राजि वहै रस बीच नदी सुख देनी। आगे भई प्रतिबिंबित पाइ विलम्बित जो मृगनैनी कि वेनी।—द्विज (शब्द०)। २. जिसमे विलब या देर हुई हो। ३ आश्रित। सुसबद्ध (को०)। ४ मद। दीर्घसूत्री (को०)। ५ मथर। संगीत मे द्रुत का उलटा जैसे, विलबित लय या ताल।

यौ०—विलंबितगति=एक छद। एक वर्णवृत्त। विलबितफल=जिसका फल विलब से प्राप्त हो।

विलबित[2]—सज्ञा पुं० १ सुस्त चलनेवाला जानवर। जैसे,—हाथी, गैडा, भैंस इत्यादि। २ सुस्ती। देरी (को०)।

विलबित[3]—क्रि० वि० शनै शने। मद मद [को०]।

विलबी[1]—वि० [स० विलम्बिन्] [वि० स्त्री० विलबिनी] १ लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ विलब करनेवाला। देरी करनेवाला। दीर्घसूत्री (को०)।

विलबी[2]—सज्ञा पु० साठ सवत्सरो मे से वत्तीसवाँ सवत्सर।

विलंभ—सज्ञा पुं० [स० विलम्भ] १ उदारता। २ दान। ३ उपहार। भेंट।

विल—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बिल'[1]।

विलक्खा(पु)—वि० [स० वि०+लक्ष्य, प्रा० विलक्ख, हिं० बिलखना] उदास। व्याकुल। बिलखता हुआ। व्यथित। उ०—सालूरा पाँणी विना, रहइ विलक्खा जेम।—ढोला०, दू० १७३।

विलक्ष—वि० [स०] १ अचभे मे पडा हुआ। आश्चर्यचकित। २ लज्जित। ३. घबराया हुआ। व्याकुल। विह्वल। व्यस्त। ४ जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो (को०)। ५ उद्देश्य या लक्ष्य रहित (को०)। ६ निशाना चूक जानेवाला (को०)। ७ असाधारण। अपूर्व। ८ कृत्रिम। बनावटी (को०)।

विलक्षण[1]—वि० [स०] १ साधारण से भिन्न। असाधारण। अपूर्व। अद्भुत। उ०—इस युग मे न केवल राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एव सामाजिक दृष्टि से ही देश को उन्नति हुई वरन् हिंदी काव्य का भी विलक्षण उत्कर्ष हुआ।—अकबरी०, पृ० ६। २. अनोखा। अनूठा। ३ भिन्न। इतर (को०)। ४. जिसमे कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो (को०)। ५. अशुभ लक्षणो से युक्त (को०)। ६ निस्तेज। बुझी हुई। निष्प्रभ (को०)।

विलक्षण[2]—सज्ञा पुं० १ निष्फल या व्यर्थ स्थिति। २ गौर से देखना। अवेक्षण करना [को०]।

विलक्षणता—सज्ञा स्त्री० [स०] विलक्षण होने का भाव। अपूर्वता। अद्भुतता। अनोखापन।

विलक्षणा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की शय्या [को०]।

विलक्षन—वि० [स० विलक्षण] दे० 'विलक्षण'। उ०—आपके बिना या प्रकार निवेदन को विलक्षन मार्ग दिखायो, सो आप प्रभु हो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० २४०।

विलक्षित—वि० [स०] १ जो विशेष रूप से लक्षित किया गया हो। २ चिह्नरहित। ३ रुष्ट। क्षुब्ध। ४ अभेदित। जिसका भेदन न किया गया हो। ५ हतबुद्धि। आश्चर्यचकित। ६ उद्विग्न। घबराया हुआ। व्याकुल (को०)।

विलक्ष्य—वि० [स०] १ लक्ष्यहीन। २ लक्ष्य चूक जानेवाला। जैसे, बाण या लक्ष्य पर फेंकी हुई कोई वस्तु (को०)।

विलखना[1]—क्रि० अ० [स० विकल, या विलक्ष्य, प्रा० विलक्ख] दुखी होना। दे० 'बिलखना'।

विलखना[2]—क्रि० अ० [स० लक्ष] ताडना। पता पाना। लक्ष करना।

विलखाना—क्रि० स० [हिं० बिलखना] बिलखना का सकर्मक रूप। विकल करना। दे० 'बिलखाना'।

विलग[1]—वि० [हिं० वि (उप०)+लगना] अलग। पृथक्।

विलग[2]—सज्ञा पुं० अतर। भेद। फरक।

विलगाना[1]—क्रि० अ० [हिं० विलग+ना (प्रत्य०)] १ अलग होना। पृथक् होना। २ पृथक् पृथक् दिखाई पडना। विभक्त या अलग दिखाई पडना।

विलगाना[2]—क्रि० स० पृथक् करना। अलग करना। दे० 'बिलगाना'।

विलगित—वि० [स०] लगा हुआ। लग्न। सबद्ध (को०)।

विलग्न[1]—वि० [स०] १ विशेष रूप से लगा या जुडा हुआ। २. आदृधृत। ३. लटकता हुआ। ४ पिंजरे मे बद। ५ पतला। कोमल। ६ व्यतीत (को०)। ७ सलग्न। स्थिर (को०)।

विलग्न[2]—सज्ञा पुं० १ जन्मकुडली। जन्मपत्री। २ राशि का उदय। ३ कटि। कमर। ४ नितब (को०)।

विलग्नता—सज्ञा स्त्री० [स०] विलगता। अलग होने की क्रिया। अलगाव। उ०—काग्रेस से अपनी विलग्नता सूचन की।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७१।

विलच्छन—वि० [स० विलक्षण, प्रा० विलक्खन, विलच्छन] दे० 'विलक्षण'।

विलछाना—क्रि० अ० [स० वि+लक्ष (देखना)] दे० 'बिलछाना'। उ०—धर्मनी यह अनुराग की बानी। तुम तत देख कहूँ विलछानी।—कबीर सा०, पृ० ७।

विलज्ज—वि० [स०] निर्लज्ज। बेशर्म (को०)।

विलज्जित—वि० [स०] लजाया हुआ। शर्मिंदा (को०)।

विलपन—सज्ञा पुं० [स०] १ बातचीत या गपशप करना। २ विलाप करना। शोक प्रकट करना। ३. चीखट। तलछट।

यौ०—विलपनविनोद=रोकर दुख हलका करना।

विलपना—क्रि० अ० [स० विलाप] विलाप करना। रोना।

विलपाना—क्रि० स० [हिं० विलपना का सक० रूप] दूसरे को विलाप करने मे प्रवृत्त करना। रुलाना।

विलपित[1]—वि० [स०] जो विलाप कर रहा हो। जिसने रुदन किया हो।

विलपित[2]—सज्ञा पु० विलाप। रुदन (को०)।

विलब्ध—वि० [स०] १. दिया हुआ। पाया हुआ। २ त्यक्त किया हुआ।

विलम्बि—सज्ञा [स्त्री०] १ दूर करना। हटाना। २ प्राप्ति (को०)।

विलम—सज्ञा पुं० [सं० विलम्ब] देर। अबेर। विलब।

विलमना—क्रि० अ० [स० विलम्बन] दे० 'बिलमना'।

विलमाना—क्रि० स० [स० विलम्बन>हिं० विलमना का सक० रूप] दे० 'बिलमाना'। उ०—मुझे नाहक श्यामसुंदर इतनी देर बिलमाए रहे थे।—श्यामा०, पृ० ९२।

विलय—सज्ञा पुं० [सं०] १ विलीन होने की क्रिया या भाव। लोप। अस्त। २ मृत्यु। मौत। ३ नाश। ४ प्रलय। ५ द्रवित होना। पिघलना। विगलन (को०)।

विलयन—सज्ञा पुं० [स०] १ लय को प्राप्त होना। विलीन होना। २ घुल जाना। मिलकर एक होना। ३ हटाना। दूर करना (को०)। ४ पतला करना (को०)। ५. पतला करनेवाली ओषधि (को०)।

विललती—वि० स्त्री० [स० विलपन] विलाप करती हुई। दुखी। व्यग्र। व्याकुल। उ०—पयी हाथ सँदेसडइ, धन बिललती देह। पगसूँ काढ़इ लोहरी, उर आंसुआं भरेह।—ढोला०, दू० १३७।

विलवती—वि० [सं० विलप्, प्रा० विलव (=रोना)] विलाप करती हुई।—पृ० रा०, ६१।११६५।

विलसन—सज्ञा पु० [सं०] १ चमकने की क्रिया। २ क्रीडा। प्रमोद।

विलसना—क्रि० अ० [सं० विलस] १ शोभा पाना। २ विलास करना। क्रीडा करना। ३ आनद मनाना। दे० 'बिलसना'।

विलसाना—क्रि० स० [हिं० विलसना] दे० 'बिलसाना'।

विलसित[1]—वि० [स०] १. चमकीला। चमकता हुआ। २ प्रकट। व्यक्त। ३ शोभित। ४ विनोदी (को०)।

विलसित[2]—सज्ञा पुं० १ चमक। दीप्ति। २ प्राकट्य। अभिव्यक्ति। ३ क्रीडा। विनोद। ४ फन। परिणाम ५. भगिमा (को०)।

विलस्त—सज्ञा पुं० [फा० बालिश्त] बित्ता। अँगूठे के सिरे से छिगुनी के सिरे तक की लबाई का परिमाण। उ०—सवा बिलस्त की जाकी देहीं। नाम प्रसिद्ध जीव सनेही।—अष्टाग०, पृ० ७६।

विलहबदी—सज्ञा स्त्री० [?] जिले के बदोबस्त का वह सक्षिप्त ब्योरा जिसमे प्रत्येक महाल का नाम, काश्तकारो के नाम और उनके लगान आदि का ब्योरा लिखा होता है। इसे बितरबदी भी कहते हैं।

विला—सज्ञा स्त्री० [स० इरा, इडा (=पृथ्वी)] पृथ्वी। वसुधरा।

विलाता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चिडिया।

विलाना—क्रि० अ० [स० विलयन] दे० 'बिलाना'।

विलाप—सज्ञा पुं० [स०] १ बिलख बिलखकर या विकल होकर रोने की क्रिया। रोकर दुःख प्रकट करने की क्रिया। क्रदन। रुदन। २. शोक व्यक्त करना। रजीदा होना।

विलापन[1]— वि० [स०] १ रुलानेवाला। २ द्रवित करनेवाला। पिघला देनेवाला। ३ नाशक। नष्ट करनेवाला [को०]।

विलापन[2]—सज्ञा पुं० १ रुलानेवाला कार्य। २ नाश। विध्वंस। ३. नष्ट करने या द्रवित करने का साधन। ४ मृत्यु। ५ शिव का एक गण [को०]।

विलापना(पु)[1]—क्रि० अ० [स० विलापन] शोक करना। विलाप करना। रुदन करना।

विलापना[2]—क्रि० स० [स० विरोपण] वृक्ष रोपना या लगाना।

विलापयिता—वि० [स० विलापयितृ] १ द्रवित करने या पिघलानेवाला। २ विलाप करनेवाला [को०]।

विलापित—वि० [स०] पिघलाया हुआ [को०]।

विलापी—वि० [स० विलापिन्] विलाप करनेवाला [को०]।

विलायत—सज्ञा पु० [अ०] १ पराया देश। दूसरो का देश। दूरस्थ देश। दूर का देश। विशेषत आजकल की बोलचाल मे यूरोप या अमेरिका का कोई देश। (पहले इस शब्द का प्रयोग ईरान, तुर्किस्तान आदि के लिये होता था।) जैसे—आप दो बार विलायत हो आए हैं। उ०—एक बडे बाप के बेटे विलायत जाकर वहाँ की ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ७४। ३ बली होने का भाव या पद (को०)।

विलायती—वि० [अ०] १ विलायत का। विदेशी। २ दूसरे देश का बना हुआ। २ अन्य देश का रहनेवाला। परदेशी। उ०—अब विदेशी राजा के होने से नौकरियाँ विलायतियो को विशेषकर दी जाती हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २६८।

विलायती अनन्नास—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + अनन्नास] रामबाँस। रामबान। विशेष दे० 'रामबाँस'।

विलायती कद्दू—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + कद्दू] एक विशेष प्रकार का कद्दू जो तरकारी के काम मे आता है।

विलायती कपडा—सज्ञा पुं० [हिं०] विदेशी वस्त्र। विशेषत: यूरोप का बना हुआ।

विलायती कासनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + कासनी] एक प्रकार की कासनी जिसकी पत्तियाँ दवा के काम मे आती है।

विलायती कीकर—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + कीकर] पहाडी कीकर जो हिमालय पर पाँच हजार फुट की ऊँचाई तक होता है।

विशेष—यह बाड लगाने के काम आता है। यह जाडे के दिनो मे खूब फूलता है और इसके फूलो से बहुत अच्छी महक निकलती है। यूरोप मे इन फूलो से कई प्रकार के इत्र आदि बनाए जाते हैं। इसे पर्सी बबूल भी कहते हैं।

विलायती छछूँदर—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + छछूँदर] एक प्रकार का छछूँदर जो इगलैंड के पश्चिमी ओर के प्रदेशो मे बहुत पाया जाता है।

विशेष—यह पृथ्वी के नीचे सुरग मे रहता है और प्राय दूध पीता है। इसे अधकार अधिक प्रिय होता है। इसके अगले पैर चौडे और पट्टेदार तिरछे होते है। इसकी आँखें छोटी, थुथना लबा और नोकदार, बाल सघन और कोमल होते हैं। इसकी श्रवणशक्ति बहुत तेज होती है।

विलायती नील—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + नील] एक विशेष प्रकार का नीला रग जो चीन से आता है।

विलायती पटुआ—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + पटुआ] लाल पटुआ। लाल सन।

विलायती पात—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + पटुआ] रामबाँस। कृष्ण केतकी।

विलायती पानी—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + पानी] शराब। मदिरा। उ०—तौ भी भाँति भाँति के विलायती पानी।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३३।

विलायती प्याज—सज्ञा पुं० [हिं० विलायती + प्याज] एक प्रकार का प्याज जिसमे गाँठ नही होती, सिर्फ गूदेदार जड होती है।

विलायती बैंगन—सज्ञा पुं० [हिं० विलायती + बैंगन] एक प्रकार का बैंगन या भटा जो इस देश मे यूरोप से आया है।

विशेष—यह क्षुप जाति की वनस्पति है जो प्रतिवर्ष बोई जाती है। इसका क्षुप दो ढाई हाथ ऊँचा होता है। इसकी डालियाँ भूमि की ओर झुकी अथवा भूमि पर पसरी रहती हैं। पत्ते आलू के पत्तो के से होते हैं। डडियो के बीच बीच से सीके निकलते हैं जिनपर गुच्छे मे फूल आते हैं। ये फूल साधारण बैंगन के फूलो के सदृश, पर उनसे छोटे होते है। इनका रग पीला होता है। फल प्राय दो से चार इच तक के गोलाकार और कुछ चिपटे (नारगी के समान) होते हैं। कच्चे रहने पर उनका रग हरा और पकने पर लाल चमकीला हो जाता है। इसकी तरकारी, चटनी आदि बनती है। स्वाद मे यह कुछ खट्टापन लिए होता है। रासायनिक विश्लेषण से पता लगता है कि इसमे २३ सैकडे लोहे का अश होता है। इसमे 'ए' और 'सी' विटामिन होता है। अत यह रक्तवर्धक है। अँगरेज लोग इसका अधिक व्यवहार करते है। इसे अँगरेजी मे टोमैटो और हिंदी मे टमाटर कहते है।

विलायती भटा—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'विलायती बैंगन'।

विलायती मिट्टी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] विदेश मे होनेवाली ऐसी मिट्टी जिससे पात्र और खिलौने बनते हैं। उ०—विलायती मिट्टी, पत्थर, ईट।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २३३।

विलायती मेहदी—सज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + मेहदी] मेहदी की जाति का एक प्रकार का पौधा। सनट्ट।

विशेष—यह पौधा प्राय बाढ के रूप मे लगाया जाता है यह भारत, बलोचिस्तान, अफगानिस्तान, अरब, अफ्रिका आदि सभी स्थानो मे होता है। यह वर्षा और शीतकाल मे फूलता है। इसकी लकडी बहुत कडी होती है और इसपर खुदाई का काम बहुत अच्छा होता है।

विलायती लहसुन—सज्ञा पु० [हिं० विलायती + लहसुन] एक प्रकार का लहसुन जो मसाले के काम मे आता है।

विलायती सिरिस—सज्ञा पुं० [हिं० विलायती + सिरिस] एक प्रकार का सिरिस वृक्ष।

विशेष—यह पौदा विदेश से यहाँ आया है, पर अब यहाँ भी होने लगा है। यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है। पजाब मे भी यह पाया जाता है। इसकी छाल प्राय चमडा सिझाने के काम मे आती है।

विलायती सेम—सज्ञा स्त्री० [हिं० विलायती + सेम] एक प्रकार की सेम जिसकी फलियाँ साधारण सेम से कुछ बडी होती हैं।

विलायन—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक अस्त्र।

विशेष—कहते है, जब इस अस्त्र का उपयोग किया जाता था, तब शत्रु की सेना विश्राम करने लगती थी।

विलायित—वि० [स०] पिघलाया या द्रवित किया हुआ [को०]।

विलाल—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'बिडाल'।

विलावल—सज्ञा पु० [स०] एक राग। दे० 'बिलावल'।

विलावली—सज्ञा स्त्री० [हिं० विलावल] एक रागिनी जो हिंडोल राग की स्त्री मानी जाती है। (सगीत)।

विलास—सज्ञा पु० [स०] १ प्रसन्न या प्रफुल्लित करने की क्रिया। २ सुखभोग। आनदमय क्रीडा। मनोरजन। मनोविनोद। ३ आनद। हर्ष। ४ सयोग के समय मे अनेक हाव भाव अथवा प्रेमसूचक क्रियाएँ जिनसे स्त्रियाँ पुरुषो को अपनी ओर अनुरक्त करती हैं। हाव भाव। नाज नखरा। ५ किसी अग की मनोहर चेष्टा। जैसे, भ्रूविलास, करविलास। उ०—भृकुटि विलास जासु जग होई। राम वाम दिस सीता सोई।—तुलसी (शब्द०)। ६ किसी चीज का हिलना डोलना। जैसे, चपला का विलास। चमक दमक। ७ चमकना। दीप्त होना। ८ आरामतलबी। अतिशय सुखभोग। ९ प्रफुल्लता। उत्साहशीलता। तेजस्विता। (दशरूपक मे पुरुष का एक गुण कहा गया है।)

यौ०—विलासकानन = प्रमदवन। विलासकोदड, विलासचाप, विलासधन्वा, विलासबाण = कामदेव। विलासमदिर = केलिभवन। विलासवातायन = बरामदा। छज्जा। विलासविपिन = क्रीडाउपवन। विलासवेश्म = क्रीडागृह।

विलासक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० विलासिका] १ इधर उधर फिरनेवाला। भ्रमणशील। २. लास्य करनेवाला। नृत्यकर्ता [को०]।

विलासन सज्ञा पुं० [स०] १ क्रीडा। मनोरजन। २ रँगरेली। ३ विमोहन [को०]।

विलासमयी—वि० स्त्री० [स०] विलास से प्रेम करनेवाली। क्रीडाशीला। कामवती। उ०—ज्योतिमयी, हासमयी, विकल विलासमयी।—लहर, पृ० ६७।

विलासवती—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वेच्छाचारिणी वा कामुक स्त्री [को०]।

विलाससामग्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] विलास का सामान। प्रसाधन की वस्तुएँ। उ०—विलास सामग्री मँगाने मे शासक वर्ग को फायदा जरूर हुआ।—भा० इ० रु०, पृ० २७८।

विलासिका[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का रूपक जिसमे एक ही अक होता है। इसका विषय सक्षिप्त और साधारण होता है।

विलासिका[2]—वि० स्त्री० आनद देनेवाली।

विलासिता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुखभोग की अनुरक्तता। विलासी का भाव या कार्य। विलास की भावना। उ०—भोले थे, हाँ तिरते केवल, सब विलासिता के नद मे।—कामायनी, पृ० ७।

विलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुंदरी युवा स्त्री। २ कामिनी। हाव भाव करनेवाली स्त्री (को०)। ३ वेश्या। गणिका। ४ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ज, र, ज, ग, ग, (ISISISISS) होते हैं।

विलासी[1]—सज्ञा पु० [स० विलासिन्] [स्त्री० विलासिनी] १ सुखभोग मे अनुरक्त पुरुष। कामी। २ जिसे आमोद प्रमोद पसद हो। क्रीडाशील हँसोड। कौतुकशील। ३ ऐश-आरामपसद। आरामतलब। ४ वरुण वृक्ष। बरुन। ५ सर्प। साप (को०)। ६ अग्नि (को०)। ७ चद्रमा (को०)। ८ विष्णु (को०)। ९ कृष्ण (को०)। १० शिव (को०)। ११. वीर। कामदेव (को०)।

विलासी[2] वि० आमोदप्रिय। क्रीडाशील। ऐयाश [को०]।

विलास्य—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे होते हैं।

विलिंग—सज्ञा पु० [स० विलिङ्ग] १ वह जो भिन्न लिंग का हो। २ लिंग का अभाव [को०]।

यौ०—विलिंगस्थ = जो समझा न जा सके। जो समझने लायक न हो।

विलिपित—वि० [स० विलिम्पित] लेपा हुआ। लेप किया हुआ [को०]।

विलिखन—सज्ञा पु० [स०] १ खरोंचना। रेखाकित करना। २ लिखना। ३. विश्लेषण। विभाजन। ४ नदी का प्रवाह या सरणि [को०]।

विलिखित—वि० [स०] १ खरोचा हुआ। २ लिखा हुआ। ३ खुदा हुआ।

विलिगी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का साँप।

विलिप्त—वि० [स०] १ पुता हुआ। लिपा हुआ। २ कलुषित। मैला। दागदार (को०)।

विलिष्ट—वि० [स०] १ टूटा हुआ। उखडा हुआ। २ जो ठीक अवस्था मे न हो। अस्तव्यस्त।

यौ०—विलिष्टभेषज = हड्डी आदि टूटने की चिकित्सा।

विलीक(पु)—वि० पु० [स० व्यलीक] अनुचित। नामुनासिब।

विलीन—वि० [स०] १. जो अदृश्य हो गया हो। लुप्त। २ जो घुल गया या मिल गया हो। जैसे—पानी मे नमक विलीन हो गया। ३ छिपा हुआ। ४. संबद्ध। सलग्न। अनुपक्त [को०]। ५. अड्डे पर उतरा हुआ या बैठा हुआ (पक्षी आदि)। ६ नष्ट। मृत। क्षयप्राप्त।

विलीयन—सज्ञा पु० [स०] विलीन होना। मिल जाना [को०]।

विलुंचन—सज्ञा पु० [स० विलुञ्चन] उखाडना। नोचना। फाडना। छीलना [को०]।

विलुंठन—सज्ञा पुं० [स० विलुण्ठन] १ छीनना। लूटना। २ लुठन। लुठन। लोटना [को०]।

विलुठित—वि० [स० विलुण्ठित] १ लूटा हुआ। जो लूटा गया हो। २ लुढकता हुआ। लोटता हुआ [को०]।

विलुपक—सज्ञा पु० [स० विलुम्पक] चोर। डाकू। लुटेरा। लूटपाट करनेवाला [को०]।

विलुठित—वि० [स०] १ दे० 'विलुठित'। २ क्षुब्ध [को०]।

विलुप्तायोनि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का योनिरोग। इस रोग मे योनि मे सदा पीडा होती है।

विलुभित—वि० [स०] आकुल। अस्तव्यस्त। अव्यवस्थित। विलोडित। क्षुब्ध [को०]।

यौ०—विलुभितप्लव = आकुल या क्षुब्ध गति।

विलुलक सज्ञा पु० [स०] नाश करनेवाला।

विलुलित—वि० [स०] १ अस्तव्यस्त। २ उद्विग्न। ३ लहराता हुआ। हिलता हुआ। उ०—प्रिय! जब मेरे गात्रो मे आकर छिप जाता है मलयानिल, तब किस ध्वनि से मुखरित हो उठता है मेरा विलुलित आँचल।—इत्यलम्, पृ० २६।

यौ०—विलुलितकेश = अस्तव्यस्त केशवाला। बिखरे बालोवाला।

विलूघन§†—क्रि० अ० [स० वि० + लुब्ध, प्रा० वि + लुद्ध] विशेष लुब्ध होना। रम जाना। मोहित होना। आसक्त होना। उ०—आपस्वारथ येह विलूधा रे, आगम मरम न जाणै। जम कर मांथै बाण धरीला, ते तौ मनि न आणै।—दादू० पृ० ५५३।

विलून—वि० [स०] कटा हुआ। अलग किया हुआ।

विलूला§†—सज्ञा पु० [देश०] बुद्बुद। बुल्ला। उ०—वारि के विलूलन की सेज रचि कौन सोयो, ओसकन पिए हिए कौन तोस पायो है —दीन० ग्र०, पृ० १४०।

विलेख—सज्ञा पुं० [स०] छिद्र। विवर। गुफा। २ फाडना। खरोचना। ३ विदारण। विलेखन [को०]।

विलेखन—सज्ञा पु० [स०] १. लेखन। लिखना। २ खरोचना। रेखाकित करना। चिह्न बनाना। ३ उत्पाटन। उखाड़ना। ४. खोदना। खनना। ५ विभाग करना। विश्लेषण करना। ६ नदी की सरणि वा मार्ग [को०]।

विलेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चिह्न। खरोच। निशान। २. लिखित अनुबध या करार [को०]।

विलेखी—वि० [स० विलेखिन] विलेखन करनेवाला। लकीर, खरोच या चिह्न बनानेवाला [को०]।

विलेप—सज्ञा पुं० [स०] १ शरीर आदि पर चुपडकर लगाने की चीज। लेप। अगराग। २ पलस्तर। गारा। २ लेप करना। गारा आदि लगाना [को०]।

विलेपन—सज्ञा पुं० [स०] १. लेप करने या लगाने की क्रिया। अच्छी तरह लीपना। लगाना। २ लगाने या लेप करने का पदार्थ। जैसे,—चदन, केसर आदि।

विलेपनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] [पुं०] १ वह स्त्री जो परिमल द्रव्यो (इत्र आदि) से सुवासित हो। २ सुवेशा स्त्री। सुंदर वेशभूषावाली महिला। ३ माँड। चावल का माँड [को०]।

विलेपिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अगराग आदि लेपन करनेवाली महिला। प्रसाधिका। २ दे० 'विलेप्य' [को०]।

विलेपी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] माँड। चावल का माँड [को०]।

विलेपी[2]—वि० [स० विलेपिन्] १. लेप या पलस्तर करनेवाला। २ लसदार। लसीला। चिपकने या सबद्ध होनेवाला [को०]।

विलेप्य[1]—वि० [स०] १ जिसका लेप किया जाय। जैसे, विलेप्यौषध। २ जिसपर लेप किया जाय। जैसे, विलेप्य स्थान [को०]।

विलेप्य[2]—सज्ञा पु० [स्त्री० विलेप्या] चावल का माँड [को०]।

विलेवासी—सज्ञा पुं० [स० विलेवासिन्] विलेशय। सर्प [को०]।

विलेशय—सज्ञा पुं० [स०] १ बिल या दरार मे रहनेवाले जीव। जैसे, साँप, बिच्छू, गोह आदि। २ सर्प। साँप। उ०—आशीविष विषधर फणी मणी विलेशय व्याल।—नददास (शब्द०)।

विलै§—सज्ञा पु० [स० विलय] दे० 'विनय'। उ०—दियो है न दान कछू कियो है न पुन्य रच ऐसे हो प्रपच बीच वै सबै विलै भई।—दीन ग्र०, पृ० १२८।

विलोक[1]—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विलोकन'।

विलोक[2]—वि० लोकरहित। जनहीन। निर्जन। एकात। शून्य [को०]।

विलोकन—सज्ञा पु० [स०] १. विचार करना। २ खोजना। ३. परिचय पाना। जानकारी पाना। ४ दृष्टि। निगाह। नजर (को०)। ५ अवलोकन। अच्छी प्रकार से देखना। उ०—वह अपलक लोचन अपने पादाग्र विलोकन करती, पथप्रदर्शिका सी चलती धीरे धीरे डग भरती।—कामायनी, पृ० २८०।

विलोकना§—क्रि० स० [स० विलोकन] १ देखना। २ अवलोकन करना। दे० 'विलोकना'।

विलोकनि§—सज्ञा स्त्री० [स० विलोकन] दे० 'विलोकनि'।

विलोकनीय—वि० [स०] १. आकर्षक। सुदर। २ दर्शनीय। ३. समझने योग्य [को०]।

विलोकित[1]—वि० [स०] १. देखा हुआ। २. परिचित। ३. परीक्षित। विचारित [को०]।

विलोकित[2]—सज्ञा पु० १. परीक्षण। विवेचन। २ दृष्टि। ३ ताल विशेष [को०]।

विलोकी—वि० [स० विलोकिन्] १ देखने या अवलोकन करनेवाला। २ जानकारी हासिल करनेवाला। परिचय पानेवाला [को०]।

विलोक्य—वि० [स०] देखने योग्य। दर्शनीय [को०]।

विलोचन[1]—सज्ञा पु० [स०] १ नेत्र। नयन। आँख। उ०—धिक् ढोग कर रहे है अब व्यर्थ ही विलोचन।—शकु०, पृ० ३५। २. दृष्टि। अवलोकन।

यौ०—विलोचन पथ = नेत्रव्यापार का क्षेत्र। दृष्टिपथ। लोचनमग। विलोचनपात = दृष्टिपात। अवलोकन। निगाह करना।

३ पुराणानुसार एक नरक का नाम, जिसमे मनुष्य अधा हो जाता है और न देखने के कारण अनेक यातनाएँ भोगता है। ३ लोचनरहित करने की क्रिया। आँखें फोडने की क्रिया। नेत्ररहित कर देने की क्रिया।

विलोचन२—वि० विपरीतदृष्टि। वक्रदृष्टि। विकृतदृष्टि [को०]।

विलोचनाबु—सज्ञा पु० [स० विलोचनाम्बु] नेत्रजल। आँसू [को०]।

विलोट—सज्ञा पुं० [स०] विलोटन लुढकना [को०]।

विलोटक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली। बेला मछली।

विलोटन—सज्ञा पु० [स०] लुढकना [को०]।

विलोड—सज्ञा पुं० [स०] १ हिलना डुलना। लहराना। २ लुढ़कना। लोटना। ३ मथने की क्रिया। मथन [को०]।

विलोडक—सज्ञा पु० [स०] चोर। तस्कर [को०]।

विलोडन—सज्ञा पुं० [स०] १ मथन करना। २ हिलाना डुलाना। आदोलित करना। इतस्तत करना [को०]।

विलोड़ना क्रि—क्रि० स० [स० विलोडन] दे० 'विलोडना'।

विलोडित१—वि० [स०] १, कपित। क्षुब्ध। आदोलित। मथित उ०—हुआ विलोडित गृह, तब प्राणी, कौन। कहाँ। कब। सुख पाते ?—कामायनी, पृ० १६। २ लुठित। लुढका हुआ [को०]।

विलोडित२—सज्ञा पुं० [स०] मठा। छाछ [को०]।

विलोना—क्रि० स० [हिं०] दे० 'विलोना'।

विलोप—सज्ञा पुं० [स०] १. किसी वस्तु को लेकर भाग जाने की क्रिया। २ रुकावट। ३ विघ्न। बाधा। ४ आघात। ५. नाश। लोप। ६. हानि। नुकसान।

विलोपक—सज्ञा पुं० [स०] १ नाश करनेवाला। २ दूर करनेवाला। ३. लेकर भागनेवाला।

विलोपन—सज्ञा पु० [स०] १ विलोप करने की क्रिया। २ काटना या छिन्न करना। तोडकर अलग करना।

विलोपना क्रि—क्रि० स० [स० विलोपन] १ लोप करना। नाश करना। २. लेकर भागना। ३ विघ्न डालना। बाधा उपस्थित करना।

विलोपभृत—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वारा निर्दिष्ट वह सेना जो केवल लूटमार का लालच देकर इकट्ठी की गई हो।

विलोपित—वि० [स०] दे० 'विलु'। उ०—यदि मैं उसे इसी समय विलोपित कर दूँ।—कबीर म०, पृ० ११।

विलोपी—सज्ञा [स० विलोपिन्] [स्त्री० विलोपिनी] १ विलोप करनेवाला। २ नाश करनेवाला।

विलोप्ता—वि० [स० विलोप्तृ] लुटेरा। चोर। दस्यु। डाकू [को०]।

विलोप्य—वि० [स०] विलोप करने या होने योग्य।

विलोभ१—सज्ञा पु० [स०] १ आकर्षण। प्रलोभन। २. बहकावा। छलावा (को०)। ३ मोह। माया। भ्रम।

विलोभ२—वि० जिसके मन मे किसी प्रकार का लालच न हो। लोभरहित।

विलोभन—सज्ञा पुं० [स०] १ लोभ दिखाने की क्रिया। २ मोहित या आकर्षित करने का व्यापार। ३ प्रशसा। स्तवन। चाटुकारिता (को०)। ४ कोई बुरा कार्य करने के लिये किसी को लोभ दिलाने का काम। ललचाना।

विलोभनीय—वि० [स०] लुभानेवाला [को०]।

विलोभित—वि० [स०] १ लुब्ध किया हुआ। लुभाया हुआ। २ छला हुआ। बहकाया हुआ। ३ प्रशसा किया हुआ। प्रशंसित [को०]।

विलोम१ वि० [स०] [वि० स्त्री० विलोमी] १ विपरीत। उलटा। प्रतिकूल। उ०—तुम सन कही बचन कटु बागी। अपन हाथ मीचु वहि माँगी। कहेसि विलोम वचन तजि ज्ञाना। यहिकर काल आय नियराना।—सबल (शब्द०)। २ प्रतिकूल या विपरीत क्रम मे उत्पन्न (को०)। ३ पिछडा हुआ (को०)। ४ नियम वा रीति के विरुद्ध। ५ केशविहीन। रोम रहित (को०)।

विलोम२—सज्ञा पु० [स०] १ सर्प। २ वरुण। ३ कुत्ता। ४ रहट। ५ क्रमविपर्यय। उलटा क्रम (को०)। ६ सगीत मे ऊचे स्वर से नीचे स्वर की ओर आना। स्वर का अवरोह। उतार। ७ ऊँचे की ओर से नीचे की ओर आना।

विलोमक—वि० [स०] विपरीत। प्रतिकूल।

विलोम काव्य—सज्ञा पु० [स०] वह काव्य या कविता जिसके अक्षरो को उलटकर भी पढा जा सके और जो पहले से भिन्न एक विशेष अर्थ दे। सस्कृत मे इस प्रकार के कई काव्य प्राप्त होते हैं।

विलोम क्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] वह क्रिया जो अंत से आदि की ओर की जाय। उलटी ओर से होनेवाली क्रिया।

विलोमज—वि० [स०] वह सतान जिसकी माता पिता से उच्च वर्ण की हो [को०]।

विलोमजात—वि० [स०] दे० 'विलोमज' [को०]।

विलोमजिह्व—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हाथी।

विलोमन—सज्ञा पुं० [स०] नाट्यशास्त्र के अनुसार मुखसधि के बारह अगो मे से एक। नायक का मन नायिका की ओर अथवा नायिका का मन नायक की ओर आकृष्ट करने के लिये उसके गुणो का कथन। जैसे,—रत्नावली मे वैतालिक का सागरिका को लुभाने के लिये राजा उदयन के गुणों का कथन।

विलोमपाठ—सज्ञा पुं० [स०] आखीर से पढना। उलटा पढ़ना। विपरीत क्रम से पढना।

विलोमरसन—सज्ञा पु० [स०] हाथी [को०]।

विलोमवर्ण१—सज्ञा पु० [स०] एक सकर जाति। दोगली जाति।

विलोमवर्ण२—वि० दे० 'विलोमज'।

विलोमविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उलटी ओर से होनेवाली क्रिया या अनुष्ठान। विलोम क्रिया। २. गणित मे प्रतिलोम नियम (को०)।

विलोमा—वि० [स० विलोमन्] १. रोमरहित। केशहीन। २ विपरीत दिशा की ओर घूमा या मुडा हुआ।

विलोमाक्षर काव्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विलोम काव्य'।

विलोमित—वि० [स०] विलोम या उलटा किया हुआ (को०)।

विलोमी—सज्ञा स्त्री० [स०] आँवला। आमलकी।

विलोल—वि० [स०] १. चचल। हिलता डुलता। अस्थिर। २ सुदर। उ०—चपल विलोल डोल वह लागी। थिर न रहे चचल वैरागी।—जायसी (शब्द०)। ३ स्रस्त। ढीला। अस्तव्यस्त। बिखरा हुआ (केश)। जैसे, विलोलकबरी=स्रस्त वेणी या केश (को०)।

विलोलन—सज्ञा पु० [स०] १ हिलाना। कँपाना। २ मथना। आलोडन (को०)।

विलोलित[1]—वि० [स०] १ हिलाया हुआ। कँपाया हुआ। २. मथित। क्षुब्ध किया हुआ। क्षुभित (को०)।

विलोलुप—वि० [स०] निर्लोभ। लोभरहित (को०)।

विलोहित[1]—वि० [स०] १ नीललोहित या धूम्रवर्ण का। २ लाल रग का (को०)।

विलोहित[2]—सज्ञा पु० १ शिव। रुद्र। २ लाल रग का प्याज। ३. एक नरक का नाम (को०)।

विलोहितक—सज्ञा पु० [स०] वह मुर्दा जो लाल वर्ण का हो गया हो। लाल रग का शव (को०)।

विलोहिता—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक का नाम (को०)।

विल्ल—सज्ञा पु० [स०] १ थाला। आलबाल। २. गर्त। गड्ढा। ३ हीग (को०)।

विल्लसू—सज्ञा स्त्री० [स०] वह माता जो दस बच्चो को जन्म दे चुकी हो। दस सतानो की माँ (को०)।

विल्व—सज्ञा पु० [स०] बेल वृक्ष। बेल का पेड।

विल्व तैल—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल।

विशेष—इसे बनाने के लिये बेल की जड का रस, सोठ, मिर्च, पीपल, पीपलामूल, अपामार्ग का क्षार और जवाखार को कूट-कर गोमूत्र के साथ तेल मे डालकर मद आँच पर पकाते हैं। रस जलने और तेल मात्र रहने पर इसे उतार लेते हैं। कहते है कि इनसे कान से बधिरता, कर्णस्राव आदि रोग अच्छे हो जाते हैं।

विल्वपत्र—सज्ञा पु० [सं०] बेल का पत्ता, जो शिव जी पर चढाने के काम आता है। बेलपत्र।

विल्वमगल—सज्ञा पुं० [सं० विल्वमङ्गल] भक्त और महाकवि सूरदास का अधे होने से पूर्व का नाम।

विल्वातर—सज्ञा पु० [स० विल्वान्तर] एक वृक्ष (को०)।

विल्वेश—सज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक भिलसा नगरी का प्राचीन नाम।

विशेष—यह नगरी ग्वालियर के दक्षिण मे बेतवा नदी के दाहिने किनारे पर बसी है। इसका पुराना नाम भद्रावत भी कहा जाता है।

विल्हन—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का घोडा। बिनहान। बोल्लाह। उ०—सामतन कारन विल्हन, समपि नमर जस कज्ज।—पृ० रा०, ६१। १४०।

विवचिषु—वि० [स० विवञ्चिषु] वचक। धूर्त (को०)।

विवदिषु—वि० [स० विवन्दिषु] प्रशसा करने को उत्सुक। वदना की इच्छा रखनेवाला (को०)।

विवधक—सज्ञा पु० [स० विबन्धक] १ रोकनेवाला। कण्ठावरुद्धता। कब्जियत। कब्ज।

विवधन—सज्ञा पुं० [स० विबन्धन] रोक। बधन। रुकावट।

विव—वि० [स० द्वि] १ दो। २ द्वितीय। दूसरा। दे० 'विवि'।

विवकृत—सज्ञा पु० [स०] १ बहुत बोलनेवाला। वाचाल। २. स्पष्ट बोलनेवाला। ३ वक्ता। वाग्मी।

विवक्ता—सज्ञा पुं० [स० विवक्तृ] १ कहनेवाला। २. किसी बात को प्रकट करनेवाला। ३. दुरुस्त करने या सुधारनेवाला। सशोधन करनेवाला।

विवक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कोई बात कहने की इच्छा। बोलने की इच्छा। २ अर्थ। तात्पर्य। आशय। ३ अनिश्चय। शक। सदेह। ४ इच्छा। अभिलाषा (को०)।

विवक्षित[1]—वि० [स०] १. जिसकी आवश्यकता या इच्छा हो। इच्छित। अपेक्षित। २ कहे जाने या बोले जाने के लिये अभि-प्रेता। कथनीय (को०)। ३. उक्त। कथित। ४ अनुकूल। इष्ट। प्रिय (को०)।

विवक्षित[2]—सज्ञा पुं० १. प्रयोजन। अभिप्राय। उद्देश्य। आशय। २. जो कहने की इच्छा हो। मतलब। अर्थ (को०)।

विवक्षु—वि० [स०] कहने बोलने को इच्छुक या तत्पर (को०)।

विवर्त्म—सज्ञा पुं० [स० वि+वर्त्मन्, प्रा० वट्ट] कुराह। बुरी राह। वह राह जो प्रचलित न हो। उ०—अति बहुत भाँति विवट्ट वट्टहि भुलेओ बहुओ चेतना।—कीर्ति०, पृ० ५६।

विवत्स—वि० [स०] वत्सरहित। पुत्रहीन (को०)।

विवत्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह गौ जिसे वत्स न हो। बिना बछडे-वाली गाय (को०)।

विवत्सु—वि० [स०] बोलने को इच्छुक या तत्पर (को०)।

विवदन—सज्ञा पुं० [स०] विवाद। झगडा। मुकदमेबाजी (को०)।

विवदना—क्रि० अ० [स० विवाद+हिं० ना] किसी वस्तु या विषय पर जबानी झगडा करना। शास्त्रार्थ करना। विवाद करना। जबानी झगडना। उ०—इमि विवदहि शारद यति राजा। सुनि विस्मित सब विदुष समाजा।—शं० दि० (शब्द०)।

विवदित—वि० [सं०] १ विवाद मे पडा हुआ। विवादग्रस्त। २ विवाद करनेवाला। ३ जिसके लिये वाद किया गया हो (को०)।

विवदिषा—सज्ञा स्त्री० [स०] कहने या बोलने की आकाक्षा (को०)।

विवार—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यादन। फैलाना। २. अक्षर के उच्चारण मे होनेवाला कठ का फैलाव। ३ एक आभ्यतर प्रयत्न जो सवार प्रयत्न के विपरीत होता है। उ०—अल्पप्राण, महाप्राण, विवार, सवार, बाह्य, आभ्यतर प्रयत्नादिक अक्षरोच्चारो की एव उदात्तानुदात्त स्वरितादिक स्वरोच्चारो की शुद्धता कितनी महत्वपूर्ण मानी जाती थी।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २८०।

विवारी—वि० [स० विवारिन्] वारण करनेवाला। रोकनेवाला [को०]।

विवास—सज्ञा पु० [स०] १ निर्वासन। निष्कासन। २ वियोग [को०]।

विवासकरण—सज्ञा पु० [स०] निष्कासन। निर्वासन [को०]।

विवासकाल—सज्ञा पु० [स०] प्रात काल। सूर्योदय वेला [को०]।

विवासन—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विवास'।

विवासित—वि०[स०] निष्कासित। निर्वासित [को०]।

विवास्य—वि० [स०] निकाल देने योग्य।

विवाह—सज्ञा पु० [स०] एक प्रथा जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष आपस मे दापत्य सूत्र मे बँधते हैं। कही यह प्रथा सामाजिक होती है, कही धार्मिक और कही कानून के अनुसार होती है। यह हिदुओ के सोलह सस्कारो मे से एक सस्कार है। शादी। व्याह।

विशेष—मनुष्य जाति जब आदिम असभ्यावस्था मे थी, उस समय उसमे विवाह या पतिवरण की प्रथा न थी। केवल कामवेग के कारण स्त्री पुरुषो का समागम हुआ करता था। यह प्रथा अब भी कुछ असभ्य जातियो मे प्रचलित है। महाभारत मे लिखा है—'प्राचीन काल मे स्त्रियाँ नगी रहती थी। वे स्वतत्र और विहारिणी होती थी और बिना व्याह किए ही अनेक पुरुषो से समागम करती थी।' उनका यह कृत्य अधर्म नही समझा जाता था। सभ्यता बढने पर लोगो को घर बनाने और एक ऐसे व्यक्ति को अपने यहाँ रखने की आवश्यकता हुई जो उसका प्रबध कर सके। इसके लिये स्त्रियाँ उपयुक्त समझी गई। अत लोगो ने उनको फुसलाकर अथवा बलात् अपने यहाँ रखना आरभ किया। उन दिनो स्त्री एक पुरुष के अधिकार मे तबतक रहती थी जबतक कोई दूसरा उससे बली पुरुष उसे बलपूर्वक छीन न ले जाता था। अत अब ऐसा नियम बनाने का आवश्यकता हुई कि एक दूसरे की स्त्री को हरण न कर सके। पर स्त्रीस्वतत्रता मे बाधा नही थी। जब आर्यों की सभ्यता बढी और उनमे वर्णधर्म स्थापित हो चला, तब लोग सभुक्त स्त्री को अपने यहाँ रखने की अपेक्षा अभुक्त या कन्या को अच्छा समझते थे। कन्या के लिये कभी कभी युद्ध भी हुआ करते थे। धीरे धीरे सभ्यता बढ़ती गई और लोगो मे स्त्री पुरुष की ममता अधिक होती गई। पर स्त्रियो की स्वतत्रता बनी रही। वे एक पुरुष के अधिकार मे रहते हुए भी अन्य की कामना करती थी। उस समय यह व्यभिचार नही समझा जाता था। महाभारत से पता चलता है कि इस प्रथा को उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु ने उठा दिया। उन्होने यह मर्यादा बाँधी कि पति के रहते हुए कोई स्त्री उसकी आज्ञा के विरुद्ध अन्य पुरुष से सभोग न करे। पर उस समय भी पति की अयोग्यता की अवस्था मे उसके रहने स्त्रियाँ दूसरा पति कर लेती थी। महर्षि दीर्घतमा ने यह प्रथा निकाली कि 'यावत् जीवन स्त्रियाँ पति के अधीन रहे। पति के जीवनकाल में तथा उसके मरने पर भी वे कभी परपुरुष का आश्रय न लें और यदि आश्रय लें, तो पतित समझी जायँ।' धीरे धीरे स्त्रियो की स्वतत्रता जाती रही और वे उपभोग की सामग्री समझी जाने लगी। यहाँ तक कि लोग उन्हे पति के मरने पर उसके शव के साथ अन्य आमोद प्रमोद की वस्तुओ की भाँति जलाने लगे जिसमे मरे हुए व्यक्ति को वे स्वर्ग मे मिलें इसी प्रथा ने पीछे सती की प्रथा का रूप धारण किया। पीछे से आर्य जाति व्यभिचारी हो गई। एक पुरुष अनेक स्त्रियाँ रखने लगा, यहाँ तक कि तपस्वी भी इससे नही बचे थे। याज्ञवल्क्य के दो स्त्रियाँ (मैत्रेयी और गार्गी) थी। आर्य लोग अनार्य स्त्रियो को भी नहीं छोडते थे। इस कारण यह नियम बनाना पडा कि यज्ञदीक्षा के समय रामा अर्थात् शूद्रा से गमन न करे। पीछे से राजा वेणु ने अपने वश की रक्षा के लिये जबर्दस्ती 'नियोग' की प्रथा चलाई। मनु जी ने उनकी निंदा की है। वे लिखते हैं—'राजर्षि वेणु के समय मे विद्वान् द्विजो ने मनुष्यो के लिये इस पशु धर्म (नियोग) का उपदेश किया था। राजर्षिप्रवर वेणु समस्त भूमडल का राजा था। उसी कामी ने वर्णों का घालमेल किया।'

उस समय तक विवाह दो प्रकार के होते थे। एक तो छीन झपटकर, लड भिडकर या यो ही कन्या को फुसलाकर अपने यहाँ ले आते थे। दूसरे यज्ञो के समय यजमान अपनी कन्याएँ पुरोहितो को चाहे दक्षिणा के रूप मे या धर्म समझकर दे देते थे। धीरे धीरे जब विवाह की यह प्रथा अनुचित मालूम हुई, तब विवाह का अधिकार पिता के हाथ मे दे दिया गया और पिता योग्य वरो को एक समाज मे बुलाकर कन्याओ को उनमे से एक को चुनने का अधिकार देता था। यही आगे चलकर स्वयवर हुआ। कभी कभी स्वयवर के मौके पर भी क्षत्रिय लोग लडकियाँ उठा ले जाते थे। विवाह के समय प्राय वर की २५ वर्ष और कन्या की १६ वर्ष की अवस्था होती थी, अत विधवा होने की कम सभावना रहती थी। धीरे धीरे 'नियोग' की प्रथा मिट गई। विधवा का विवाह भी बुरा समझा जाने लगा। सभ्यता के बढने पर पुरुष लोग स्त्रियो पर कडी दृष्टि रखने लगे और उनकी स्वतत्रता जाती रही। स्त्रियो की अस्वतत्रता हो जाने पर पुरुषो मे बहुविवाह की प्रथा चल पडी। पीछे बुद्ध के समय मे एक बार स्त्रियो की स्वतत्रता फिर बढी। पर बौद्ध मत का लोप होने पर वह फिर जाती रही। मुसलमानो के आने पर स्त्रियो की रक्षा करने के लिये हिदुओ ने उनका जल्दी विवाह करना आरभ किया, क्योकि उस समय मुसलमान लोग विवाहित स्त्रियो पर बलात्कार करना धर्मविरुद्ध समझते थे। इसी से

वाल विवाह की प्रथा चली। विवाह आठ प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच। पर आजकल केवल ब्राह्म विवाह प्रचलित है।

पर्या०—दारकर्म। परिणय। पाणिग्रहण।

यौ०—विवाहकाम = विवाह की इच्छा रखनेवाला। विवाहार्थी। विवाहचतुष्टय = चार विवाह करना। विवाहदीक्षा = विवाह-विधि। विवाह नेपथ्य = विवाह के समय वर और वधू द्वारा धारण किया जानेवाला वेश। विवाहबंधन। विवाहविच्छेद = पालक। पतिपाली का परस्पर संबंध तोड़ना। विवाहविधि = विवाह का विधान या नियम। विवाहवेष = विवाह के समय वर वधू को वेशभूषा। विवाहनेपथ्य।

विवाहना—क्रि० स० [सं० विवाह+हिं० ना० (प्रत्य०)] दे० 'ब्याहना'।

विवाहबंधन—संज्ञा पु० [सं० विवाह+बन्धन] विवाह के द्वारा पत्नी के साथ हो जानेवाला दृढ संबंध। पति और पत्नी का धार्मिक संबंध। उ०—मैं पुन हुआ चेतन। सोचता हुआ विवाहबंधन।—अपरा, पृ० १७५।

विवाहित—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। ब्याहा हुआ।

विवाहिता—वि० स्त्री० [सं०] जिसका पाणिग्रहण हो चुका हो। ब्याही हुई स्त्री।

विवाही—वि० स्त्री० [सं० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो। उ०—और सहेली सबै विवाही। मो कह देव कतहुँ बर नाही।—जायसी (शब्द०)।

विवाह्य[१]—वि० [सं०] पाणिग्रहण करने योग्य। ब्याह करने योग्य। ब्याहने लायक।

विवाह्य[२]—संज्ञा पुं० १ दामाद। जामाता २ दूल्हा। वर (को०)।

विवि(यु)—वि० [सं० द्वि] १ दो। २ दूसरा। उ०—श्रीफल कज-कली से विराजत कै विवि मौनी बसे ढिग गग के। कै गिरि हेम कै सपुट साने कै राजत सभु मनो रस रग के।—द्विज (शब्द०)।

विविक्त[१]—वि० [सं०] १ पृथक् किया हुआ। उ०—साध्य और साधनो को विविक्त करके काव्य के नित्य स्वरूप, या मर्मशरीर को अलग निकालने का प्रयास बढता गया।—रस०, पृ० ५०। २ बिखरा हुआ। ३ पवित्र। ४ विजन। निर्जन। ५ एकाकी। अकेला (को०)। ६ विवेकशील। विवेकयुक्त (को०)। ७ विवेचित। व्याख्यात (को०)। ८. गूढ। गहन। सूक्ष्म (विचार या निर्णय)। ९ मुक्त। रहित (को०)। १०. ज्ञात। व्यक्त। सुस्पष्ट। उ०—दर्शको को ऐसा विविक्त रसानुभव होता है जो और रसो के समकक्ष है।—रस०, पृ० १८५।

विविक्त[२]—संज्ञा पु० [स्त्री० विविक्ता] १ सन्यासी। त्यागी। २ एकांत स्थान। ३. अकेलापन। एकाकीपन (को०)। ४ स्वच्छता। शुद्धता। पवित्रता (को०)।

विविक्तचरित—वि० [सं०] जिसका आचरण बहुत अच्छा और पवित्र हो। शुद्ध चरित्रवाला।

विविक्तचेता—वि० [सं० विविक्तचेतस्] स्वच्छ हृदयवाला (को०)।

विविक्तदृष्टि—वि० [सं०] १ स्पष्ट दृष्टिवाला। २ सूक्ष्मदर्शी (को०)।

विविक्तनाम—संज्ञा पु० [सं०] १ पुराणानुसार हिरण्यरेता के सात पुत्रो मे से एक। २ इसके द्वारा शासित वर्ष का नाम।

विविक्त शय्यासन—संज्ञा पु० [सं०] जैनो के अनुसार वह आचार जिसमे त्यागी सदा किसी एकांत स्थान मे रहता और सोता है।

विविक्तशरण—वि० [सं०] एकांतवास चाहनेवाला (को०)।

विविक्तसेवी—वि० [सं० विविक्तसेविन्] एकांत मे या अकेला रहने-वाला (को०)।

विविक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह भाग्यहीना स्त्री जिसे उसका पति न चाहता हो। दुर्भगा (को०)।

विविक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अलगाव। पार्थक्य। २. विवेक करना। विवेचन (को०)।

विविग्न—वि० [सं०] १ उद्विग्न। क्षुब्ध। २ अत्यंत क्रुद्ध। ३ शंका-युक्त। बहुत डरा हुआ (को०)।

विविचार—वि० [सं०] १ विचाररहित। विवेकरहित। उ०—हौं अपने विविचार विचार अचार विचार अपार बहाऊँ धीरज धूरि मिलै कहि केशव धर्म के धामिन धूरि जमाऊँ।—केशव (शब्द०)। २ आचाररहित। आचारहीन।

विविचारी—संज्ञा पु० [सं० विविचारिन्] [स्त्री० विविचारिणी] १ अविवेकी। मूर्ख। बेवकूफ। २ दुराचारी। दुश्चरित्र। बदचलन।

विविच्च—वि० [सं० विवित्त√विविच्+क्त], [प्रा० विविक्क] विविक्त। पृथग्भूत। विविध। उ०—विविच्च रोम रंगय। पदील सुत्त रगय। पृ० रा० ५७। १२९।

विविक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राप्ति। उपलब्धि (को०)।

विविदिसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जिज्ञासा। जानने की इच्छा (को०)।

विविदिसु—वि० [सं०] जिज्ञासु। जानने की इच्छा रखनेवाला (को०)।

विविदिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञानप्राप्ति की इच्छा जानने की कामना। उ०—इनके अलावा धृति, श्रद्धा, सुखा, विविदिषा, अविविदिषा, इत्यादि की भी विस्तृत व्याख्या की है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १९८।

विविदिषु—वि० [सं०] जानने की इच्छा रखनेवाला। ज्ञानप्राप्ति का अभिलाषी (को०)।

विविध[१]—वि० [सं०] बहुत प्रकार का। अनेक तरह का। भाँति भाँति का। जैसे,—विविध विषयों से विभूषित मासिक पत्रिका। उ०—अति रति गति मति एक करि, विविध विवेक विलास। रसिकन को रसिकप्रिया कीन्ही केशवदास।—केशव (शब्द०)।

विविध[२]—संज्ञा पु० कार्य या चेष्टा का वैविध्य।

विविर—सज्ञा पुं० [सं०] १ खोह। गुफा उ०—विविर जाय सुख पाय, पायो महाप्रसाद पुनि। तहँ के तीर्थ निकाय जाय जाय सादर कियो।—(शब्द०)। २ बिल। ३ दरार।

विविह—वि० [स० विविध, प्रा० विविह, विवह] अनेक प्रकार का। भाँति भाँति का। उ०—दीसँ विविह चरिय। जानिज्जँ सज्जन दुज्जन।—पृ० रा०,६१। ५०७।

विवीत—सज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जो चारो ओर से घिरा हो। बाडा। २ पशुओ के चराने का स्थान जो चारो ओर से घिरा हो।

विवीतभर्ता—सज्ञा पुं० [स० विवीतभर्तृ] चरागाह का मालिक [को०]।

विवीताध्यक्ष—सज्ञा पु० [स०] कौटलीय अर्थशास्त्र के अनुसार चरागाहो का निरीक्षक कर्मचारी।

विबुध—सज्ञा पु० [सं० विबुध] १ देवता। २ पडित। ज्ञानी। उ०—इसलिये पहिले पहल दृश्य काव्य के आधार मे ही इसकी ओर विबुधो का विचार आकर्षित हुआ।—रस०, पृ० १६।

विबुधपुर—सज्ञा पु० [स० विबुधपुर] देवताओ का देश स्वर्ग।

विबुधप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स० विबुधप्रिया] एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे र, स, ज, ज, भ, और र गण होते है। इसे 'चचरी', 'चचली' और 'चर्चरी' भी कहते हैं।

विबुधबैद—सज्ञा पुं० [स० विबुधवैद्य] दे० 'विबुधवैद्य'।

विबुधबन—सज्ञा पु० [स० विबुधवन] देवताओ का प्रमोदवन, नदनकानन।

विबुधवैद्य—सज्ञा पु० [स० विबुधवैद्य] देवताओ के चिकित्सक, अश्विनी कुमार।

विबुधेश—सज्ञा पुं० [स० विबुध+ईश] देवताओ का राजा। इद्र।

विवृक्त—वि० [स०] परित्यक्त। त्यागा हुआ [को०]।

विवृक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्भगा स्त्री। पति द्वारा परित्यक्ता स्त्री। विविक्ता [को०]।

विवृत[1]—वि० [स०] १ विस्तृत। फैला या फैलाया हुआ। २ खुला हुआ। अनावृत। ३ नग्न। ४ तृण, तरु से विहीन [को०]। ५ प्रदर्शित। प्रकटीकृत। अभिव्यक्त [को०]। ६ जिसकी व्याख्या या टीका की गई हो। व्याख्यात [को०]। ७. स्पष्ट। प्रत्यक्ष [को०]। ८ उद्घोषित। घोषित [को०]।

विवृत[2]—सज्ञा पु० १. व्याकरण और भाषाविज्ञान के अनुसार कतिपय ध्वनियो के उच्चारण करने का एक प्रयत्न। २ प्रदर्शित या व्यक्त करने की क्रिया। प्रकाशन [को०]। ३ खुली जमीन। अनावृत भूमि। परती जमीन [को०]।

विवृतद्वार—वि० [स०] १ उन्मुक्त। अनियत्रित। २ जिसका द्वार खुला हो। ३ सीमाहीन [को०]।

विवृतपौरुष—वि० [स०] शक्ति का प्रदर्शन करनेवाला [को०]।

विवृतभाव—वि० [स०] खुले हुए हृदयवाला। साफ दिल का। निष्कपट का भाव [को०]।

विवृतस्मयन—सज्ञा पु० [स०] वह हँसी जिसमे सभी दाँत दिखाई पड़ जायँ। खुली हँसी [को०]।

विवृता—सज्ञा स्त्री० [सं०] योनि का एक रोग, जिसमें गूलर के फल के सदृश मडलाकार फुसियाँ होती हैं और योनि में बहुत जलन होती है।

विवृताक्ष[1]—वि० [स०] विशाल नेत्रवाला। बडी आँखोवाला [को०]।

विवृताक्ष[2]—सज्ञा पुं० मुरगा। ताम्रचूड। तमचुर। कुक्कुट [को०]।

विवृतानन—वि० [सं०] जिसका मुख खुला हो। खुले मुँहवाला [को०]।

विवृतास्य—वि० [स०] दे० 'विवृतानन'।

विवृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चक्र के समान घूमने की क्रिया। परिभ्रमण। २ टीका। भाष्य। ३ विस्तार। ४. प्रदर्शन। प्रकटीकरण। अनावरण। व्यक्तीकरण। उ०—वेदना की अधिक विवृत्ति हम काव्यशिक्षा के विरुद्ध समझते हैं।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १०१।

विवृतोक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलकार जिसमे श्लेष से छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वय अपने शब्दो द्वारा प्रकट कर देता है।

विवृत्त—वि० [स०] १ परावर्तित। लौटा हुआ। २. भ्रमण करता हुआ। ३ चतुर्दिक् चक्कर खाता हुआ। ४ निरावृत। अनावृत। व्यक्त। ५ ऐंठा या मुडा हुआ [को०]।

विवृत्तदंष्ट्र—वि० [सं०] जिसके दाँत दिखाई पडते हो खुले हुए मुँहवाला [को०]।

विवृत्तवदन—वि० [सं०] मुँह मोड लेनेवाला [को०]।

विवृत्ताग—वि० [सं० विवृत्त+अङ्ग] पीडा से जिसके शरीर में ऐंठन हो रही हो [को०]।

विवृत्ता—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चर्मरोग [को०]।

विवृत्ताक्ष—वि० [सं०] मुर्गा। कुक्कुट। विवृताक्ष [को०]।

विवृत्तास्य—वि० [सं०] जिसका मुँह खुला हो।

विवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. विवृत्त होने का भाव या क्रिया। विस्तार। फैलाव। २ चक्कर खाना। घूमना। ३. लुढ़कना। ४ व्याकरण मे उच्चारणभग [को०]।

विवृद्ध—वि० [सं०] १ वृद्धिगत। बढा हुआ। तीव्र। २ पूर्ण विकसित। प्रौढ। ३. शक्तिमान्। ४ विपुल। बहुत अधिक। प्रचुर [को०]।

विवृद्धमत्सर—वि० [स०] जिसका मत्सर या द्वेष अधिक बढ़ गया हो। विवृद्धमन्यु [को०]।

विवृद्धमन्यु—वि० [स०] क्रुद्ध। विवृद्धमत्सर।

विवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ उन्नति। २ समृद्धि। ३ वर्धन। वृद्धि। ४ बढाव। बाढ़ [को०]।

यौ०—विवृद्धिभाक्=उन्नतिशील। वर्धनशील।

विवृह—सज्ञा पुं० [सं०] अलग होनेवाला। जो अन्य या दूसरो से स्वय अलग हो जाय [को०]।

विवेक—सज्ञा पुं० [सं०] १. भली बुरी वस्तु का ज्ञान। सत् असत् का ज्ञान। २ मन की वह शक्ति जिससे भले बुरे का ज्ञान होता हो। अच्छे और बुरे को पहचानने की शक्ति। ३ समझ। विचार। बुद्धि। ४. सत्य ज्ञान। ५. प्रकृति और

पुरुष की विभिन्नता का ज्ञान। ६ पानी रखने का एक प्रकार का बरतन। जलपात्र। ७ जैनो के अनुसार बहुत ही प्रिय पदार्थों का त्याग। ८ भेद। अतर। प्रभेद (को०)।

यौ०—विवेकख्याति = यथार्थ या वास्तविक ज्ञान। विवेकज्ञान = विवेचन की योग्यता। न्यायबुद्धि। विवेकपदवी = विचारणा। विवेचना। चिंतन। विवेकपरिपथी = न्याय मे बाधक। विवेकभाक् = विवेकी। बुद्धिमान्। विवेकमथरता = विवेक की दुर्बलता। विवेकविरह = विवेक से रहित होना। अविवेकिता। मूर्खता। विवेकविश्रान = मूर्ख। बुद्धिहीन। विवेकशील। विवेकशून्य।

विवेकज्ञ—वि० [स०] विवेक करनेवाला। विवेकी [को०]।

विवेकता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विवेक का भाव। ज्ञान। २ सत् और असत् का विचार।

विवेकदृश्वा—सज्ञा पु० [स० विवेकदृश्वन्] विचारवान् या दूरदर्शी व्यक्ति। विवेकी पुरुष [को०]।

विवेकवान्—सज्ञा पु० [स० विवेकवत्] १ वह जिसे सत् और असत् का ज्ञान हो। अच्छे बुरे को पहचाननेवाला। २ बुद्धिमान्। अक्लमद। विवेकी।

विवेकशील—वि० [स०] विवेकवान्। सत् और असत् का ज्ञान रखनेवाला। उ०—उसे ही सत्य का अंतिम बिंदु क्या कोई विवेकशील साहित्यकार स्वीकार कर सकता है।—हिंदी का०, पृ० ४।

विवेकशून्य—वि० [स०] भले और बुरे का ज्ञान न रखनेवाला। उ० उद्धत—विवेकशून्य, चाहिए उन्हे कि शक्ति अपनी वे पहचानें।—अपरा०, पृ० ६४।

विवेकी—सज्ञा पु० [स० विवेकिन्] १ वह जिसे विवेक हो। भले बुरे का ज्ञान रखनेवाला। २. विचारवान्। बुद्धिमान्। समझदार। ३. ज्ञानी। ४ न्यायशील। ५ वह जो अभियोगो आदि का न्याय करता हो। न्यायाधीश। ६. दार्शनिक (को०)।

विवेख, विवेखा†—सज्ञा पु० [स० विवेक] दे० 'विवेक'। उ०—और सुनो गुरुमुख का लेखा। भक्त होय सो करै विवेखा।—कबीर सा०, पृ० ८२३।

विवेचक—सज्ञा पुं० [स०] विवेचना करनेवाला। विवेकी।

विवेचन—सज्ञा पुं० [स०] १. किसी वस्तु की भली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। २. यह देखना कि कौन सी बात ठीक है और कौन नही। निर्णय। ३ व्याख्या। तर्क वितर्क। ४ अनुसंधान। ५. परीक्षा। ६. सत् असत् का विचार। ७. मीमासा।

विवेचना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विवेचन'।

विवेचनीय—वि० [स०] विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।

विवेचित—वि० [सं०] १ जिसकी विवेचना की गई हो। जिसका अनुसधान किया गया हो। निर्णय किया हुआ। २. तै किया हुआ। निश्चित।

विवेष ५—सज्ञा पुं० [सं० विवेक] दे० 'विवेक'। उ०—पढँ गुणँ औ घट पढँ जो गुर पथ त्र विवेष पायक चेतन कोटवाल।—रामानद०, पृ० १५।

विव्वोक—सज्ञा पुं० [स०] साहित्य शास्त्र के अनुसार एक हाव जिसमे स्त्रियाँ सभोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

विशक—वि० [स० विशङ्क] जिसे किसी प्रकार की शका या भय न हो। निशक। निर्भय। निडर।

विशकट—वि० [सं० विशङ्कट] [वि० स्त्री० विशकटा, विशकटी] १ बहुत बड़ा या विस्तृत। विशाल। २ प्रचड। शक्तिशाली (को०)। ३. भयानक। डरावना।

विशकनीय—वि० [स० विशङ्कनीय] जिससे किसी प्रकार की शका हो। डरने योग्य। सदेहास्पद। शकनीय।

विशका—सज्ञा स्त्री० [स० विशङ्का] १. आशका। भय। डर। २. आशका का अभाव।

विशकी—वि० [स० विशङ्किन्] जिसे किसी प्रकार की आशका या भय हो।

विशंक्य—वि० [स० विशङ्क्य] आशका या भय करने योग्य।

विशभर ५—सज्ञा पुं० [स० विश्वम्भर] दे० 'विश्वभर'। उ०—द्व द हरण गोविंद तरण भव सिंधु विशभर।—राम० धर्म०, पृ० ३०२।

विशंवरा—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा गाँव। पुरा। पूरवा [को०]।

विश[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ कमल की डडी। मृणाल। २. चाँदी। ३ मनुष्य। आदमी। ४. मृणालसूत्र या ततु। कमल की डठी का रेशा (को०)।

विश[2]—सज्ञा स्त्री० [स० विश्] कन्या। लडकी।

विशकंठा—सज्ञा स्त्री० [स० विशकण्ठा] १ वक पक्षी। बलाका। २. कमल के नाल के समान कठवाली स्त्री [को०]।

विशकलित—वि० [स०] जो अलग अलग या विभक्त हो। विभिन्न। सुस्पष्ट [को०]।

विशद[1]—वि० [स०] १ स्वच्छ। विमल। २ साफ। स्पष्ट। ३ जो दिखाई पडता हो। व्यक्त। ४ सफेद। ५ प्रसन्न। खुश। ६ सुदर। मनोहर। खूबसूरत। ७. अनुकूल। ८. ज्ञात। निश्चित (को०)। ९. कोमल। मुलायम।

विशद[2]—सज्ञा पु० १ सफेद रग। २ भागवत के अनुसार जयद्रथ के एक पुत्र का नाम। ३. कसीस। ४ बृहती। बडी कटाई। बनभटा। ५ एक प्रकार की गध (को०)। ६. एक प्रकार का स्पर्श। कोमल स्पर्श (को०)।

विशदप्रज्ञ—वि० [स०] तीव्र बुद्धिवाला। विचक्षण [को०]।

विशदप्रभ—वि० [स०] स्वच्छ या निर्मल प्रभावाला। श्वेत कांति युक्त [को०]।

विशदित—वि० [स०] विशद या स्वच्छ किया हुआ [को०]।

विशब्दित—वि० [स०] कहा हुआ। ध्वनित। कथित [को०]।

विशय—सज्ञा पुं० [सं०] १. सशय। सदेह। शक। २ आश्रय। सहारा। ३. केंद्र (को०)।

विशयी संज्ञा पुं० [सं० विशयिन्] १ वह जिसे किसी प्रकार की शंका या संदेह हो। संशयात्मा। २ संदिग्ध। संदेहास्पद। अनिश्चित।

विशर—संज्ञा पुं० [सं०] मार डालना। वध। २. टुकड़े टुकड़े करना। विदारण (को०)।

विशरण'—संज्ञा पुं० [सं०] मार डालना। हत्या करना। वध करना।

विशरण'—वि० अशरण। असहाय (को०)।

विशरद—संज्ञा पुं० [सं० विशारद] दे० 'विशारद'।

विशरारु—वि० [सं०] नाशवान्। क्षणभंगुर (को०)।

विशर्द्धन—संज्ञा पुं० [सं०] वायुत्याग। पादना।

विशल्य—वि० [सं०] १ जिसका काँटा निकल गया हो। २ शल्य-रहित (बाण)। ३ कष्ट से मुक्त। ४ जिसका शस्त्रास्त्रों का घाव अच्छा हो गया हो (को०)।

विशल्यकरण—वि० [सं०] शस्त्रादि का घाव भरनेवाला (को०)।

विशल्यकरणी, विशल्यकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] निशिंदी।

विशल्यकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ पत्थरी लता। २ अस्फोता या हरफरवाली (?) नामक लता।

विशल्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. गुडूच। २ अग्निशिखा नामक वृक्ष। ३ दंती वृक्ष। ४ नागदंती। ५ एक प्रकार की तुलसी जिसे रामदंती भी कहते हैं। ६ एक नदी का नाम। ७. लक्ष्मण की स्त्री का नाम। ८ निशाथ। ९ पाटला। १० सेमारी। ११ अजवायन। अजमोदा (को०)।

विशस—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। वध। २ खड्ग।

विशसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। हत्या करना। २ भागवत के अनुसार एक नरक का नाम। ३ खड्ग। ४ विनाश। बर्बादी (को०)। ५ युद्ध (को०)। ६ काटना। चीरना (को०)। ७. कठोर व्यवहार (को०)।

विशसित—वि० [सं०] काटा हुआ। विदारित। चीरा हुआ (को०)।

विशसिता—संज्ञा पुं० [सं० विशासितृ] १. चाकाल। २ काटने, चीरने, या मार डालनेवाला व्यक्ति (को०)।

विशस्त—वि० [सं०] १ जो मार डाला गया हो। २ काटा हुआ। ३ जिसे किसी प्रकार का भय न हो। ४ उजड्ड। अशिष्ट (को०)। ५ प्रख्यात। विख्यात (को०)।

विशस्ता—संज्ञा पुं० [सं० विशस्तृ] १ मार डालनेवाला। हत्या करनेवाला। २ यज्ञादि में बलिप्रदान करनेवाला। ३ चाकाल।

विशस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] मार डालना। हत्या।

विशस्त्र—वि० [सं०] शस्त्ररहित। अशस्त्र (को०)।

विशस्पति—संज्ञा पुं० [सं०] राजा।

विशापति—संज्ञा पुं० [सं० विशाम्पति] १ राजा। २ जामाता। दामाद (को०)। ३. व्यापारियों का प्रधान या मुखिया (को०)।

विशाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ भद्रचूड। लकाशीज। २. दंती। ३. हाथी शुंडी। ४. पाढर या पाटला का वृक्ष।

विशाख'—संज्ञा पुं० [सं०] १ कार्तिकेय। २. मनुष्य खाने के समय एक पैर आगे और एक पैर पीछे कुछ पीछे रखना। ३ तीर्थयात्रा। यात्रा। ४ पूजा। अर्चना। ५ गुरुपुष्य। वह योग जिसमें गुरु का नक्षत्र पुष्य हो। ६ पुराणानुसार एक दानव का नाम जिसका वध शिव ने पाशुपतास्त्र से किया था। ७ कार्तिकेय के रक्षक एक देवता का नाम। ८ विष्णु। ९. बंधु। हितैषी। सहृदय (को०)।

विशाख'—वि० १ जिसमें शाखा या डालियाँ न हों। २ छाया से रहित (को०)। ३ विशाखा नक्षत्र से युक्त। (को०)।

विशाखक—वि० [सं०] दे० 'विशाख'।

विशाखदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक नाटककार।

विशाखपाल—संज्ञा पुं० [सं०] चारणों का एक वंश।

विशाखयूप—संज्ञा पुं० [सं०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध नाटककार का नाम, जिन्होंने राक्षसकृत मुद्राराक्षस की रचना की थी।

विशाखयूप—संज्ञा पुं० [सं०] खजूर का वृक्ष। खजूरा एक प्रकार का नाग। (त्रिकांड)।

विशाखरूप—संज्ञा पुं० [सं०] कुमिकुलान्तर्गत एक प्रकार का एक प्राचीन देश का नाम। मुद्रा, जिस देश के अधिपति आर्य का आधुनिक विशाखपत्तन था।

विशाखवंश—संज्ञा पुं० [सं०] अग्नि वंशज के मनु की एक पुत्री। दे० विशाखा २-२ (को०)।

विशाखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अग्नि आदि नक्षत्रों में से पंद्रहवाँ नक्षत्र।

विशेष—यह तारा अगस्त के आरंभ में उदय होता है और इसका भोग १४ दिन ३० दंड है। इसमें चार तारे हैं और इसका आकार तोरण का सा है। यह नक्षत्र जिस राशि में होता है उसके दो भाग इसके अंतर्गत माने जाते हैं।

२ एक प्राचीन जनपद जो कोसल के पास था। ३ सफेद सहजन। ४ एक प्राचीन अग्निशिखा। ५ दूर। दूरी (को०)।

विशाखिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पुनर्नवा। गदहपूरना। २ नीली अपराजिता। ३ तरेना। ४ दर्भ जिसकी शाखाएँ हों (को०)।

विशातन'—संज्ञा पुं० [सं०] १ टुकड़े टुकड़े करना। काटना। नष्ट करना। २ निबंध करना। मुक्त करना। छोड़ना। ३. विष्णु (को०)।

विशातन'—वि० १. काटने या खंडित करनेवाला। २. बंधनमुक्त करनेवाला (को०)।

विशाप'—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विशाप'—वि० शापमुक्त (को०)।

विशाय—संज्ञा पुं० [सं०] पड़ोसियों का पानी पीने से रोकना।

विशायक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का लता जिसे विशाकर भी कहते हैं।

विशारण—संज्ञा पुं० [सं०] १ हत्या। वध। २ काटना। फाड़ना। टुकड़े टुकड़े करना (को०)।

विशारद[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो। २ वह जो किसी काम मे बहुत कुशल हो। दक्ष। ३ वह जिसे अपनी शक्ति पर भरोसा हो। ४. मकुल वृक्ष। मौलसिरी।

विशारद[2]—वि० १. विख्यात। प्रसिद्ध। मशहूर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. प्रगल्भ। साहसी। भरोसे का (को०)। ४. अभिमानी। घमंडी। ५ चतुरतापूर्ण (को०)। ६ वचन या वक्तृत्व शक्ति से हीन (को०)।

विशारदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ केवाँच कौंछ। २ घमासा। दुरालभा।

विशाल[1]—वि० [सं०] १. जो बहुत बड़ा और विस्तृत हो। लंबा चौड़ा। २ जो देखने मे सुंदर और भव्य हो। ३ प्रसिद्ध। मशहूर। ४. समृद्ध। भरा पूरा (को०)। ५ युक्त। सहित (को०)। ३. स्तंभरहित (को०)।

विशाल[2]—संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का मृग। २ चिड़िया। पक्षी। ३ पेड़। वृक्ष। ४ रामायण के अनुसार राजा इक्ष्वाकु के पुत्र का नाम, जिसने विशाला नाम की नगरी स्थापित की थी। ५ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ६ एक नाग जो तक्षक का पिता है (को०)।

विशालक—संज्ञा पुं० [सं०] १. कैथ। कपित्थ। २. गरुड़। ३ एक यक्ष का नाम।

विशालकुल—संज्ञा पुं० [सं०] ख्यात वंश। प्रसिद्ध कुल (को०)।

विशालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विशाल होने का भाव। बड़ापन। २ फैलाव। विस्तार (को०)। ३. उत्कर्ष। ख्याति (को०)।

विशालतैलगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] अकोट वृक्ष। अखरोट (को०)।

विशालत्व—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'विशालता' (को०)।

विशालत्वक्—संज्ञा पुं० [सं०] विशालत्वच्। छतिवन।

विशालदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की लता।

विशालनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशालनेत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आयत नेत्रोंवाली स्त्री। विशालाक्षी।

विशालपत्र—संज्ञा पु० [सं०] १ श्रीताल नामक वृक्ष। हिंताल। २. मानकंद। मानकच्चु।

विशालपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक कंद। मानकंद। (को०)।

विशालफलक—वि० [सं०] बड़े बड़े फलोंवाला (को०)।

विशालफलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] निष्पावी। बरसेमा।

विशाललोचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विशालनेत्रा'।

विशालविजय—संज्ञा पुं० [सं०] सेना का एक विशेष व्यूह (को०)।

विशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रवारुणी नामक लता। इंद्रायण। २ महेंद्रवारुणी। ३. पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम। ४ दक्ष की एक कन्या का नाम। ५. पाई का साग। ६ एकांगी। मुरामांसी। ७ कलंगा नामक धान। ८. उज्जयिनी का एक नाम (को०)। ९. एक नदी का नाम (को०)। १. संगीत मे एक मूर्छना (को०)।

विशालाक्ष[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ महादेव। शिव। २ विष्णु। ३. गरुड़। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५ एक प्रकार का उल्लू (को०)। ६ एक नाग का नाम (को०)। ७. कौटिल्य द्वारा उल्लिखित प्राचीन काल की एक प्रकार की राजकीय सत्ता (को०)।

विशालाक्ष[2]—वि० जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों।

विशालाक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसकी आँखें बड़ी और सुंदर हों। २ पार्वती। ३. देवी का एक रूप या मूर्ति। ४ चौंसठ योगिनियों मे से एक योगिनी का नाम। ५ नागदंती। हाथीशुंडी।

विशाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अजमोदा। २ पलाशी लता।

विशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] बालू। रेत।

विशिख[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ रामसर या भद्रमुंज नामक घास। २. बाण। उ०—राक्षस तेरे तुच्छ बाण क्या? मेरे इस उर मे है शैल। उसे भेदने के पहले तू मेरा एक विशिख ही झेल।—साकेत, पृ० ४९४। ३. वह स्थान जिसमे रोगी रहता हो। ४ एक शस्त्र। तोमर (को०)। ५ लोहे का कौवा (को०)। ६. गणित मे बाण की आकृति का चिह्न (×)।

विशिख[2]—वि० १ जिसे शिक्षा न हो। २ खल्वाट। गंजा। ३. भोथरी नोकवाला शस्त्र आदि। ४ अग्नि जिसमे लपट न हो। लपट से हीन। ५ धूमकेतु जिसमे पूँछ न हो (को०)।

विशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कौटिल्य द्वारा उल्लिखित एक प्रकार की रथ्या। राज्य की वह बड़ी सड़क जिसपर बड़े बड़े जौहरियों तथा सुनारों की दुकानें हों। २ कुदाल। फावड़ा। ३ रास्ता। पथ। ४ छोटा बाण। ५ तर्कु। तकुवा। ६ रोगियों के रहने का स्थान। ७ सुई या पिन (को०)। ८ नापित की नारिन स्त्री। नाउन। (को०)।

विशिखाश्रय—संज्ञा पुं० [सं०] तूणीर। तरकस (को०)।

विशित—वि० [सं०] तीक्ष्ण। निशित (को०)।

विशिप—संज्ञा पुं० [सं०] १. राजमहल। २. देवमंदिर। ३. भवन। आवास स्थान (को०)।

विशिरस्क—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार मेरु पर्वत के पास के एक पर्वत का नाम। २ कबंध। सिरविहीन धड़।

विशिरा—वि० [सं० विशिरस्] जिसे सिर न हो (को०)।

विशिष्ट[1]—वि० [सं०] १ मिला हुआ। युक्त। २. जिसमे किसी प्रकार की विशेषता हो। विशेषतायुक्त। जैसे,—कुछ विशिष्ट कर्म ऐसे होते हैं, जिनके लिये मनुष्य को प्रायश्चित्त तक करना होता है। ३. विलक्षण। अद्भुत। ४ जो बहुत अधिक शिष्ट हो। ५. यशस्वी। कीर्तिशाली। ६ प्रसिद्ध। मशहूर।

विशिष्ट—संज्ञा पुं० १. सीसा नामक धातु। २. विष्णु का एक नाम (को०)।

विशिष्टकुल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिष्ठित वंश (को०)।

विशिष्टकुल[2]—वि० विशिष्ट कुल का। कुलीन (को०)।

विशिष्टचरित्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशिष्टचारी—सज्ञा पुं० [स० विशिष्टचारिन्] एक बोधिसत्व ।

विशिष्टता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विशिष्ट का भाव या धर्म । २ विशेषता ।

विशिष्टपत्र—सज्ञा पुं० [स०] ग्रथिपर्णी । गठिवन ।

विशिष्टबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] सदसद् विवेकिनी प्रज्ञा । विवेक । प्रभेदक ज्ञान (को०) ।

विशिष्टलिंग—वि० [स० विशिष्टलिङ्ग] भिन्न लिंगवाला (को०) ।

विशिष्टवर्ण—वि० [स०] जो उत्कृष्ट या चोखे रंग का हो । उत्तम वर्ण या रंगवाला (को०) ।

विशिष्टाद्वैत—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रसिद्ध वेदांत दर्शन का दार्शनिक जिसके सिद्धांत अनुसार यह माना जाता है कि जीवात्मा और जगत् दोनो ब्रह्म से भिन्न होने पर भी वास्तव मे भिन्न नही हैं ।

विशेष—इस सिद्धांत मे यद्यपि ब्रह्म, जीवात्मा और जगत् तीनों मूलत. एक ही माने जाते हैं, पर फिर भी तीनो कार्यरूप मे एक दूसरे से भिन्न और कुछ विशिष्ट गुणों से युक्त माने जाते हैं । इस सिद्धांत के अनुसार जीव और ब्रह्म का वही संबंध है, जो किरण और सूर्य का है, अर्थात् किरण जिस प्रकार सूर्य से निकली हुई है, उसी प्रकार जीव भी ब्रह्म से निकला हुआ है, और जिस प्रकार किरण से सूर्य बहुत बडा है, उसी प्रकार जीव से ब्रह्म भी बहुत बडा है । इसमे ब्रह्म को एक भी माना जाता है और अनेक भी । वास्तव मे द्वैत और अद्वैत दोनो वादो के मध्य का यह मार्ग है, अर्थात् इसमे उन दोनो वादो मे सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा की गई है । यह वाद रामानुजाचार्य का चलाया हुआ है और 'भेदाभेदवाद' या 'द्वैताद्वैतवाद' भी कहलाता है ।

विशिष्टाद्वैतवादी—वि० [सं० विशिष्टाद्वैतवादिन्] विशिष्टाद्वैत मत का माननेवाला । रामानुज संप्रदाय को माननेवाला ।

विशिष्टी—सज्ञा स्त्री० [स०] शंकराचार्य की माता का नाम ।

विशीर्ण—वि० [स०] १ सूखा हुआ । २ दुबला पतला । ३ बहुत पुराना । जीर्ण । ४ छिन्न भिन्न । टुकडे टुकडे किया हुआ (को०) । ५ मुरझाया हुआ । कुम्हिलाया हुआ (को०) । ६ मर्दित हुआ (को०) । ८. सिकुडा हुआ । झुर्रियोवाला (को०) । ९. अपव्यय किया हुआ । उडाया हुआ (को०) । ९ गला या रगडा हुआ (सुगंधित द्रव्य) । १० जो सफल न हो । विफलीभूत (को०) । ११ नष्ट । ध्वस्त (को०) ।

विशीर्णपर्ण—सज्ञा पुं० [स०] नीम का पेड ।

विशीर्णमूर्ति'—सज्ञा पुं० [स०] १. कामदेव । २. वह जिसका शरीर विशीर्ण या छिन्न भिन्न हो (को०) ।

विशील—वि० [स०] १ जिसका शील या चरित्र अच्छा न हो । २ दुष्ट । पाजी ।

विशुंडि—सज्ञा पुं० [स० विशुण्डि] कश्यप के एक पुत्र का नाम ।

विशुद्ध'—वि० [स०] १ जो बिलकुल शुद्ध हो । जिसमे किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो । २ सत्य । सच्चा । ३ पवित्र । निष्पाप (को०) । ४. बेदाग । निष्कलंक (को०) । ५. विनीत । नम्र (को०) । ६ चमकता हुआ । उज्वल । जैसे, दाँत (को०) । ७ खर्च किया हुआ । अपव्ययित । जैसे, निधि (को०) ।

विशुद्ध'—सज्ञा पुं० तंत्र के अनुसार शरीर के अदर के छह चक्रो मे से पाँचवाँ चक्र, जो गले मे माना जाता है । कहते हैं, इसमे सोलह दल होते हैं और शिव तथा आकाश इसमे निवास करते हैं ।

विशुद्धकरण—वि० [स०] पवित्र कार्य करनेवाला (को०) ।

विशुद्धचरित्र'—सज्ञा पुं० [स०] एक बोधिसत्व का नाम ।

विशुद्धचरित्र'—वि० जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो ।

विशुद्धचारी—सज्ञा पुं० [स० विशुद्धचारिन्] वह जिसका चरित्र बहुत शुद्ध हो ।

विशुद्धता—सज्ञा स्त्री० [सं०] विशुद्ध होने का भाव या धर्म । पवित्रता ।

विशुद्धधी—वि० [स०] जिसकी बुद्धि धार्मिक हो (को०) ।

विशुद्धप्रकृति—वि० [स०] जो स्वभावत धर्मपरायण हो (को०) ।

विशुद्धसत्त्व—वि० [स०] शुद्ध मनवाला । पवित्र आचरणवाला (को०) ।

विशुद्धात्मा—वि० [स०] जिसकी आत्मा या मन निर्मल और विकारहीन हो (को०) ।

विशुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. विशुद्ध होने की क्रिया या भाव । शुद्धता । पवित्रता । २. यथार्थता । सत्यता (को०) । ३ परिष्कार । भूल सुधार (को०) । ४ ऋण, वैर आदि का परिशोध (को०) । ५ सादृश्य । समानता (को०) । बीजगणित । ६ घटाने की संख्या (को०) । ७ प्रायश्चित्त । पश्चात्ताप (को०) । ८ संदेह का निराकरण (को०) । ९ पूर्ण ज्ञान (को०) ।

विशुद्धिचक्र—सज्ञा पुं० [स०] गले मे स्थित एक चक्र । दे० 'विशुद्ध'' ।

विशूचिका—सज्ञा स्त्री० [स० विसूचिका] दे० 'विसूचिका' ।

विशून्य—वि० [सं०] पूर्णत रिक्त । बिल्कुल खाली । उ०—शून्य विशून्य न तहाँ होई अगाध महिमा सो कहो ।—कबीर सा०, पृ० ४ ।

विशूल—वि० [स०] १ भाले से रहित । कुंतविहीन । २ पीडा या व्यथारहित (को०) ।

विशृंखल—वि० [स० विशृङ्खल] १ जिसमे शृंखला न हो या न रह गई हो । उ०—स्वय देव थे हम सब तो फिर क्यो न विशृंखल होती सृष्टि ।—कामायनी, पृ० ९ । २ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके । ३ सब प्रकार के नैतिक बधनो से मुक्त । लंपट (को०) ।

विशृंग—वि० [स० विशृङ्ग] जिसे शृंग न हो । शृंगरहित ।

विशेष'—सज्ञा पुं० [स०] १ भेद । अंतर । फर्क । २ प्रकार । तरह । ढंग । ३ नियम । कायदा । ४ विचित्रता । ५. व्यक्ति । ६ सार । निचोड । ७ तारतम्य । मुनासिब । ८ वह जो साधारण के अतिरिक्त और उससे अधिक हो । अधिकता । ज्यादती । ९ अवयव । अंग । १० वस्तु । पदार्थ । चीज । ११. तिल का पौधा । १२. साहित्य में एक प्रकार का अलंकार । विशेष नामक अलंकार ।

विशेष—मम्मट ने अपने ग्रथ काव्यप्रकाश मे इसका विवरण दिया है। इसके तीन भेद कहे गए हैं। पहला वह भेद है जिसमे विना किसी आधार के ही आधेय का वर्णन होता है। जैसे—बिनु वारिद बिजुरी बिना वारि लसत युग मीन। बिधु ऊपर तम तोम यह निरखी रीति नवीन। दूसरा भेद वह है जिसमे थोडा सा ही काम करने पर बहुत बडा काम या लाभ हो। जैसे—पाइ चुके फल चारिहू करत गगजल पान। तीसरा भेद वह है जिसमे एक चीज का अनेक स्थानो मे होना वर्णित होता है। जैसे—घर बाहर अब ऊरधौ सब ठाँ राम लखाय।

१३ वैशेषिक दर्शन के अनुसार सात प्रकार के पदार्थो मे से एक प्रकार का पदार्थ।

विशेष—कणाद ने द्रव्य, गुण कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव ये सात पदार्थ माने हैं। 'विशेष' वे गुण हैं जिनके कारण कोई एक पदार्थ शेष दूसरे पदार्थो से भिन्न समझा जाता है। दो वस्तुओ मे रूप, रस और गध आदि मे जो अतर होता है वह इसी 'विशेष' गुण के कारण होता है। रूप, रस, गध, स्पर्श, स्नेह, द्रवत्व, बुद्धि, सुख, दु ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, सस्कार और शब्द ये वैशेषिक गुण या विशेष गुण कहलाते है। कणाद के दर्शन मे इन्ही विशेष पदार्थो या गुणो आदि का विवेचन है इसी लिये वह 'वैशेषिक दर्शन' कहलाता है। १४. प्रवर्ग। वर्ग (को०)। १५ मस्तक पर लगाया जानेवाला चदन या केसर का तिलक (को०)। १६ वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द के अर्थ को सीमित कर देता है (को०)। १७. ज्यामिति मे कर्ण (को०)। १८ परिचायक चिह्न। प्रभेदक चिह्न (को०)। १९ रोग की वह अवस्था जब सुधार आरभ होता है (को०)।

विशेष[2]—वि० १ असाधारण। असामान्य। २. अधिक। प्रचुर।

विशेषक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ माथे पर लगाया जानेवाला तिलक। टीका। २ तिलक वृक्ष। तिलपुष्पी। ३ चित्रक। ४ साहित्य मे एक प्रकार का पद्य जिसमे तीन श्लोको या पदो मे एक ही क्रिया रहती है, इस लिये उन तीनो श्लोको या पद्यो का साथ ही अन्वय होता है। ५ चदन आदि है। सुगधित या रगीन पदार्थों से मुख या शरीर पर रेखाकन करना (को०)। ६ भेद करनेवाला गुण। विशिष्टता (को०)। ७ विशेषोक्ति अलकार (को०)।

विशेषक[2]—वि० विशेषता उत्पन्न करनेवाला। विशेष रूप देनेवाला।

विशेषकच्छेद्य—सज्ञा पु० [स०] चौसठ कलाओ मे से एक माथे पर तिलक बनाने की कला (को०)।

विशेषकृत्—वि० [स०] अतर करनेवाला। विवेकी (को०)।

विशेषज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो। वह जो किसी बात का खास तौर पर जानकर हो। किसी विषय का पारदर्शी।

विशेषण[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। विभेदक लक्षण या चिह्न। २ व्याकरण मे वह विकारी शब्द जिससे किसी सज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है, अथवा उसकी व्याप्ति मर्यादित होती है। जैसे,—'वीर मराठे' या 'चपल बालक' मे वीर और 'चपल' शब्द विशेषण हैं।

विशेष—जब विशेषण किसी सज्ञा के साथ लगता है तब उसे विशेष्य विशेषण कहते हैं, और जब वह क्रिया के साथ लगता है, तब उसे विधेय विशेषण कहते है। जैसे—'हमे तो ससार सूना देख पडता है'। यहाँ 'सूना' विधेय विशेषण है। साधारणत. विशेषण तीन प्रकार के होते है—(१) सार्वनामिक विशेषण, जैसे,—'वह आदमी चला गया। में 'वह' सार्वनामिक विशेषण है। (२) गुणवाचक विशेषण; जैसे, नया, पुराना, सुडौल, सूखा, खराब आदि, और (३) सख्यावाचक विशेषण, जैसे—आधा, एक, चार, दसवाँ।

३ प्रकार। किस्म। जाति (को०)। ४ भेद। अतर। पार्थक्य (को०)। ५ गुणवर्णन या गुणोत्कर्ष (को०)।

विशेषण[2]—वि० १. गुण बतानेवाला। विशेषता बतानेवाला। २ प्रभेदक। व्यच्छेदक (को०)।

विशेषणीय—वि० [स०] दे० 'विशेष्य'।[2]

विशेषत.—अव्य० [स० विशेषतस्] १. विशेष रूप से। खास तौर से। २ समानुपात मे। ३ एकमात्र (को०)।

विशेषता—सज्ञा स्त्री० [स०] विशेष का भाव या धर्म। खसूसियत। खासपन। जैसे,—आपकी बातो मे यह विशेषता है कि तुरत प्रभाव डालती हैं।

विशेषदृश्य—वि० [स०] विशेष रूप से दर्शनीय। सुदर आकृतिवाला (को०)।

विशेषना पु०—क्रि० अ० [स० विशेष+हिं० ना (प्रत्य०)] १ निश्चित करना। निर्णय करना। उ०—अनत गुण गावै, विशेषहि न पावै।—केशव (शब्द०)। २ विशेष रूप देना। उ०—ताहि पूछत बोलि कै। तदपि भाँति भाँति विशेष कै।—केशव (शब्द०)।

विशेषपतनीय—सज्ञा पु० [स०] विशिष्ट पाप। विशेष प्रकार का पाप (को०)।

विशेषप्रतिपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] समानार्थ दिया गया विशेष चिह्न (को०)।

विशेषभाग—सज्ञा पु० [स०] हाथी के माथे का एक भाग (को०)।

विशेषमति—सज्ञा पुं० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

विशेषलक्षण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विशेषलिंग'।

विशेषलिग—सज्ञा पु० [स० विशेषलिङ्ग] विशिष्टतासूचक लक्षण वा चिह्न (को०)।

विशेषवचन—सज्ञा पु० [स०] विशेषता द्योतन करनेवाला कथन (को०)।

विशेषविद्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विशेषज्ञ'।

विशेषविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विशेष शास्त्र'।

विशेषशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] किसी विषय पर विशिष्ट विधान वा नियमपरक शास्त्र (को०)।

विशेषित—वि० [स०] १ जो खास तौर पर अलग किया गया हो। जो 'विशेष' किया या बनाया गया हो। २ जिसमें विशेषण लगा हो। ३ विलक्षण। विचित्र (को०)। ४ परिभाषित। लक्षित (को०)। ५ श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया (को०)।

विशेषाक—सज्ञा पु० [स० विशेष+अङक] पत्र पत्रिकाओं का वह अक जो किसी पर्व आदि विशिष्ट अवसर, व्यक्ति, घटना, वस्तु या विषय आदि के पूर्ण विवेचन और जानकारी के साथ तत्सबधी किसी विशिष्ट अवसर पर प्रकाशित हो।

विशेषी—वि० [स० विशेषिन्] १ जिसमे कोई विशेष बात हो। विशेषतायुक्त। २. पृथक्। अलग। भिन्न (को०)। ३ स्पर्धा करनेवाला। प्रतिद्वंद्विता करनेवाला (को०)।

विशेषोक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] काव्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे पूर्ण कारण के रहते हुए भी कार्य के न होने का वर्णन रहता है। जैसे,—(क) अलि इन लोयन की कछू उपजी बडी बलाय। नीर भरे नित प्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाय। (ख) तमकि ताकि तकि शिव धनु धरही। उठत न कोटि भाँति बल करही —तुलसी (शब्द०)।

विशेषोन्मुख—वि० [स० विशेष+उन्मुख] विशेष की ओर झुका हुआ। जो सामान्य से भिन्न हो। उ०—यह अतिम शक्ति उनमे है पर वह विशेषोन्मुख है।—आचार्य०, पृ० १४१।

विशेष्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ व्याकरण मे वह सज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता है। वह सज्ञा जिसकी विशेषता विशेषण लगाकर सूचित की जाय। जैसे,—मोटा आदमी या काला कुत्ता मे आदमी और कुत्ता विशेष्य है। २ नाम। सज्ञा (को०)।

विशेष्य[2]—वि० १ विशिष्ट या विशेषतायुक्त होने योग्य। २ मुख्य। प्रधान। उत्तम (को०)।

विशेष्यसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

विसेस—सज्ञा पु० [स० विशेष] दे० 'विशेष'। उ०—मिश्रत माँही माँ ह मिल, नाँघै उकत विसेस।—रघु० रू०, पृ० ४६।

विशोक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ अशोक वृक्ष। २ युधिष्ठिर के एक अनुचर का नाम। ३ पुराणानुसार ब्रह्मा के एक मानस पुत्र का नाम। ४ शोक का अत या अपनयन (को०)। ५ एक दानव (को०)। ६ भीम के सारथि का नाम। ८ एक पर्वत-श्रेणी (को०)।

यौ०—विशोककोट=एक पर्वत का प्राचीन नाम।

विशोक[2]—वि० जिसे शोक न हो। शोकरहित।

विशोकता—सज्ञा स्त्री० [स०] शोकरहित होने का भाव या धर्म

विशोकपष्ठी—सज्ञा स्त्री० [स०] चैत्र शुक्ला षष्ठी।

विशेष—कहते हैं कि इस दिन व्रत करने से मनुष्य को शोक नही होता।

विशोका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ योग दर्शन के अनुसार वह चित्तवृत्ति जो सप्रज्ञात समाधि से पहले होती है। इसे ज्योतिष्मती भी कहते है। २ दुख से छुटकारा। शोक से मुक्ति (को०)। ३ स्कद की मातृकाओं मे एक का नाम (को०)।

विशोणित—वि० [स०] जिसमे रक्त न हो [को०]।

विशोध—वि० [स०] विशुद्ध करने योग्य। साफ करने लायक।

विशोधन—सज्ञा पु० [स०] १ अच्छी तरह साफ करना। २ विष्णु। ३. पाप या दोष आदि से रहित होना (को०)। ४ प्रायश्चित्त (को०)। ५ निश्चित वा निर्णीत होना (को०)। ६ रेचन (को०)। ७ इधर उधर फैली पेड की शाखाओं को छाँटना या काटना (को०)।

विशोधनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ब्रह्मा की पुरी का नाम। २ नागदती। ३ नीली नामक पौधा। ४ पान। तांबूल।

विशोधनीय—वि० [स०] १ शुद्ध करने योग्य। २ सुधार करने लायक। ३ रेचन के योग्य [को०]।

विशोधित—वि० [स०] १ शुद्ध किया हुआ। साफ किया हुआ। २ निर्मल [को०]।

विशोधिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नागदती। २. नीली। ३ जमालगोटा।

विशोधिन बीज—सज्ञा पु० [स०] जमालगोटा।

विशोधी—वि० [स० विशोधिन्] बिलकुल शुद्ध करनेवाला। विशुद्धि करनेवाला।

विशोध्य[1]—वि० [स०] १ शुद्ध या पवित्र करने योग्य। साफ करने योग्य। २. जो घटाया या कम किया जाय। घटाने लायक।

विशोध्य[2]—सज्ञा पुं० ऋण। कर्ज [को०]।

विशोभित—वि० [स०] सुसज्जित [को०]।

विशोष—सज्ञा पु० [स०] नीरसता। शुष्कता। रूखापन।

विशोषण—सज्ञा पुं० [स०] अच्छी तरह सोखना।

विशोषित—वि० [स०] १ सुखाया हुआ। शुष्क किया हुआ। २. म्लान। मुर्झाया हुआ [को०]।

विशोषी—सज्ञा पुं० [स० विशोषिन्] अच्छी तरह सोखनेवाला।

विश्[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह जिसने जन्म लिया हो। प्रजा। २ कन्या। लडकी। २ प्रवेश। रसाई (को०)। ४ कुल वश। खानदान (को०)। ५ निवास। टिकान (को०)। ६ सपत्ति। धन दौलत।

विश्[2]—सज्ञा पु० [स०] १ तृतीय वर्ण। वैश्य। २ आदमी। मनुष्य। ३ जनता [को०]।

विश्न—सज्ञा पु० [स०] दीप्ति। कांति [को०]।

विश्पति—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० विशपत्नी] १ राजा। २ वैश्यो का प्रधान, मुखिया या पच। उ०—अग्नि विश्पति था। ये अपनी बस्ती को विश् कहते थे।—प्र० भा० प०, पृ० ६६।

विश्यापर्ण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का यज्ञ।

विश्रंभ—सज्ञा पु० [स० विश्रम्भ] १ विश्वास। एतबार। २ प्रेमी और प्रेमिका मे रति के समय होनेवाला झगडा। रतिकालीन प्रेमकलह। ३ प्रेम। मुठभेड। ४ हत्या। मार डालना। ५ स्वच्छदतापूर्वक घूमना फिरना। ६ गुप्त बात। रहस्य (को०)। ७ आराम। विश्राम (को०)। ८ घनिष्ठता। आत्मीयता (को०)। ९ स्नेह से पूछना। प्रेम से पूछना (को०)।

विश्र भ कथा—सज्ञा स्त्री० [स० विश्रम्भकथा] प्रेमी और प्रेमिका के बीच एकात मे होनेवाली प्रेमचर्चा। प्रेमपूर्ण बातचीत। उ०—सुख रजनी की विश्र भ कथा सुनती।—लहर, पृ० ६७।

विश्रभण—सज्ञा पु० [स० विश्रम्भण] विश्वास पाना [को०]।

विश्रभभूमि—सज्ञा स्त्री० [स० विश्रम्भभूमि] १ विश्वसनीय व्यक्ति। २ विश्वास के योग्य विषय [को०]।

विश्रभस्थान—सज्ञा पु० [स० विश्रम्भस्थान] दे० 'विश्रभभूमि'।

विश्र भी—वि० [स० विश्रम्भिन्] १ विश्वासी। विश्वस्त। २. विश्वास-प्राप्त। ३ प्रेम सबधी। प्रेमविषयक। ४ गोप्य [को०]।

विश्रणन—सज्ञा पुं० [स०] दान। दान करना। उपहार देना [को०]।

विश्रब्ध वि० [स०] १ जो उद्धत न हो। शात। २ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय। ३ जिसे किसी प्रकार का भय न हो। निर्भय। निडर। ४ दृढ़। स्थिर (को०)। ५ नम्र। विनीत। विनत (को०)। ६ अत्यधिक। बहुतज्यादा। ७ धीर (को०)।

विश्रब्धनवोढा—सज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य मे नवोढा नायिका जिसका अपने पति पर कुछ कुछ अनुराग और कुछ कुछ विश्वास होने लगा हो। जैसे, जाहि न चाह कहू रति की सु कछू पति को पतियान लगी है। त्यो पदमाकर आनन मे रुचि, कानन भौंह कमान लगी है। देति पिया न छुवै छतियाँ बतियान मे तो मुस्कयान लगी है। प्रीतम पान खवाइबे को परजक के पास लौं जान लगी है।—पद्माकर। (शब्द०)।

विश्रब्धप्रलापी—वि० [स० विश्रब्धप्रलापिन्] गोपनीय बाते कहनेवाला [को०]।

विश्रम—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विश्राम'।

विश्रमकर—वि० [स०] विश्राम करनेवाला। उ०—श्रम कर तू विश्रम-कर।—अर्चना, पृ० ९२।

विश्रमण—सज्ञा पु० [स०] १ आराम। विश्राम। २ विराम। समाप्ति। विरति [को०]।

विश्रमित—वि० [स०] १ जिसे विश्राम दिया गया हो। २ जिसने विश्राम किया हो [को०]।

विश्रय—सज्ञा पु० [स०] १ शरण। आश्रय। सहारा। २ अवलंबन [को०]।

विश्रयी—वि० [स० विश्रयिन्] जो सहारे पर हो। आश्रय लेनेवाला [को०]।

विश्रवण—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्रवा—सज्ञा पुं० [स० विश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि जो पुलस्त्य मुनि के पुत्र थे और जनकी पत्नी हविर्भू के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। कुबेर इन्ही के पुत्र थे और इन्ही की पत्नी इलविडा के गर्भ से जनमे थ। इन्ही की दूसरी पत्नी कैकसी के गर्भ से रावण, कुभकर्ण, विभीषण और सूर्पणखा का जन्म हुआ था।

विश्रात[1]—वि० [स० विश्रान्त] १ जिसने विश्राम कर लिया हो। जो थकावट उतार चुका हो। २. विरमित। रुका या रोका हुआ (को०)। ३ सौम्य। शात। स्वस्थ (को०)। ४. समाप्त (को०)। ५ रहित। वचित (को०)। ६ क्लात। अत्यंत थका हुआ (को०)। ७ घटा हुआ (दु खादि)।

विश्रात[2]—सज्ञा पु० [स० विश्रान्त] यमुना तट का एक घाट। विश्राम-घाट। उ०—श्री जमुना जी के तीर विश्रात पर जाइ बैठे। —दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १८१।

यौ०—विश्रातकर्ण = जो चुप हो। मौन। मूक। रुद्धवाक्। विश्रात-कर्णयुगल = जो कानो तक पहुँचता हो। कानो तक पहुँचने-वाला। विश्रातपुष्पोद्गम = जिसमे फूल आना बद हो गया हो। विश्रातविलास = क्रीडा कौतुक का त्याग कर देनेवाला। विश्रात-वैर = शत्रुता त्याग देनेवाला।

विश्राति—सज्ञा स्त्री० [स० विश्रान्ति] १. विश्राम। आराम। २. पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम

विशेष—कहते हैं, जनार्दन ने यही आकर विश्राम किया था।

३. विराम। रोक (को०)। ४ दु ख आकादि का न्यून होना। समाप्ति। अंत (को०)।

यौ० = विश्रातिकृत = आराम पहुँचानेवाला। विश्रातिभूमि = विश्राम देनेवाली वस्तु या स्थान।

विश्राणन—सज्ञा पुं० [स०] दान देना। दान [को०]।

विश्राणित—वि० [स०] १ प्रदत्त। दान स्वरूप दिया हुआ। २ बाँटा हुआ। विभक्त [को०]।

विश्राम—सज्ञा पु० [स०] १ अधिक समय तक कोई काम या परिश्रम करने के कारण थक जाने पर रुकना या ठहरना। श्रम मिटाना। थकावट दूर करना। आराम करना। उ०—किय विश्रामन मनु महिपाला।—तुलसी (शब्द०)। २ ठहरने का स्थान। विश्राम करने का स्थान। ३ शाति। आराम। चैन। सुख। स्वस्थता। उ०—कोउ विश्राम कि पाव तात सहज सतोष बिन। चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिय।—तुलसी (शब्द०)। ४ विराम। रोक (को०)। ५ न्यूनता। कमी (को०)। ६. समाप्ति। अत (को०)। ७ श्रम दूर करने के लिये गद्दी मांस लेना। ८ मकान। गृह (को०)।

विश्रामण—सज्ञा पुं० [स०] विश्राम देना। आराम कराना [को०]।

यौ०—विश्रामकक्ष, विश्रामवेश्म = आराम करने का स्थान या कमरा। विश्रामस्थान = विश्राम या विराम करने की जगह।

विश्रामालय—सज्ञा पुं० [स० विश्राम + आलय] यात्रियो के आराम करने का भवन। उ०—जिसमे अनेक कूप, बावली, विश्रामालय, लताकुंज।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ७०।

विश्राव—सज्ञा पुं० [स०] १ बहुत अधिक प्रसिद्धि। शोहरत। २ ध्वनि। ३ झरना, बहना या रसना। क्षरण।

विश्रावण—सज्ञा पुं० [स०] १ वर्णन करना। सुनाना। २. प्रवाहित करना। बहाना। ३ खून बहाना [को०]।

विश्री[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] मृत्यु। मौत।

विश्री[2]—वि० [सं०] १. जिसकी श्री नष्ट हो गई हो। शोभाहीन। उ०—लगती विश्री और विकृत आज मानवकृति। एकत्वशून्य है विश्वमानवी सस्कृति।—पुगात, पृ० ११। २. भद्दा। कुरूप।

विश्रुत[1]—वि० [सं०] १ जो जाना या सुना हुआ हो। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर। ३ प्रसन्न। आनदित। खुश (को०)। ४ बहता हुआ (को०)।

विश्रुत[2]—सज्ञा पुं० [स०] १. प्रसिद्धि। ख्याति। २ विद्या। शिक्षा (को०)। ३. वसुदेव का एक पुत्र। ४ भवभूति का एक नाम (को०)।

विश्रुतात्मा—सज्ञा पु० [स० विश्रुतात्मन्] विष्णु।

विश्रुति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रसिद्धि। शोहरत। २. झरना, बहना या रसना। ३ सगीत मे एक श्रुति (को०)।

विश्लथ—वि० [स०] १ विशेष श्लथ। ढीला। २ निर्बंध। बधन-मुक्त। ३ थका हुआ। मद। स्फूर्तिहीन। उ०—चूर्ण नील कुतल छहरा दिक् सौरभ विश्लथ।—रजत०, पृ० ६७।

विश्लथित—वि० [स०] विश्लथ किया हुआ (को०)।

विश्लिष्ट—वि० [स०] १ जो अलग हो गया हो। जो मिला हुआ न हो। जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २ विकसित। खिला हुआ। ३ जो प्रकट हो। प्रकाशित। ४ जो खुला हुआ हो। मुक्त। ५ थका हुआ। शिथिल। ६ अपने समूह से अलग-किया हुआ (को०)। ७ (अग या अवयव) जो स्थान-भ्रष्ट हो (को०)।

विश्लिष्टसधि—सज्ञा स्त्री० [स० विश्लिष्टसन्धि] १ वैद्यक के अनुसार हड्डी टूटने का एक प्रकार। २ शरीर के अगो की किसी साघ का चोट आदि के कारण टूटना।

विश्लेष—सज्ञा पु० [स०] १ अलग होना। पृथक् होना। २ वियोग। (पति पत्नी या प्रेमी प्रेमिका का)। ३. विछोह। बिलगाव। ४ शिथिलता। थकावट। ५ किसी की ओर से मन हट जाना। ६ विकास। ७ अपाय। हानि। अभाव (को०)। ८ दरार। छिद्र (को०)। ९ (गणित मे) योग का विपर्यय (को०)।

विश्लेषण—सज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ के सयोजक द्रव्यो का अलग अलग करना। २ आलोचना। विवेचन। व्याख्यान (को०)। ३ वायु के प्रकोप से फोडे या घाव मे होनेवाली एक प्रकार की वेदना।

विश्लेषित—वि० [स०] १ अलग किया हुआ। २ तोडा हुआ। भग्न। ३. विदीर्ण या फाडा हुआ (को०)।

विश्लेषी—वि० [स० विश्लेषिन्] १ वियुक्त। पृथक्। २ ढीला किया हुआ। ३ अलग अलग होनेवाला। बिखरनेवाला (को०)।

विश्लोक—वि० [सं०] जो ख्यात न हो। अप्रसिद्ध (को०)।

विश्वकर[1]—सज्ञा पु० [स० विश्वङ्कर] आँख। चक्षु (को०)।

विश्वकर[2]—वि० सृष्टिकर्ता (को०)।

विश्वतर—सज्ञा पु० [स० विश्वन्तर] वह जो सबको पराभूत कर दे। भगवान् बुद्ध का एक नाम।

विश्वभर—सज्ञा पु० [स० विश्वम्भर] १ सारे विश्व का पालन या भरण करनेवाला, परमेश्वर। २ विष्णु। ३ एक उपनिषद् का नाम। ४ अग्नि (को०)। ५ एक प्रकार का बिच्छू या उससे मिलता जुलता जानवर (को०)।

विश्वंभरक—सज्ञा पुं० [स० विश्वम्भरक] एक तरह का बिच्छू या उस आकार का जीव। एक प्रकार का जीव उ०—प्रथम एक पुरुष खोदने पर श्वेत रग का विश्वंभरक दिखाई देता है।—बृहत्०, पृ० २५९।

विश्वभर—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वम्भरा] पृथ्वी।

यो०—विश्वभरा पुत्र—मगल ग्रह। कुज।

विश्वभरी—सज्ञा [स० विश्वम्भरी] पृथ्वी (को०)।

विश्वभरेश्वर—सज्ञा पु० [स० विश्वम्भरेश्वर] १ पुराणानुसार हिमालय के एक शिवलिंग का नाम। २ राजा। भूपति (को०)।

विश्व[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ चौदहो भुवनो का समूह। समस्त ब्रह्माड। विशेष दे० 'ब्रह्माड'। २ ससार। जगत्। दुनिया। ३ सोंठ। ४ बोल नामक गधद्रव्य। ५ देवताओं का एक गण।

विशेष—इसमे दस देवता हैं—वसु सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरुरवा और माद्रवा। ये धर्म के पुत्र और दक्ष की कन्या विश्वा के गर्भ से उत्पन्न माने जाते हैं।

६ जीवात्मा। ७ विष्णु। ८ शिव। ९ शरीर। देह। १० नागरिक। शहराती। नागर (को०)। ११ तेरह की सख्या का वाचक शब्द (को०)। १२ सस्कृत का एक अभिधान ग्रथ जिसका नाम विश्वप्रकाश है। १३ पितृगणो का एक वर्ग (को०)।

विश्व—वि० १ समस्त। सब। २ बहुत अधिक। ३ हर एक। प्रत्येक (को०)।

विशेष—इन अर्थों में इस शब्द का व्यवहार यौगिक शब्द बनाने के लिये उनके आरभ मे होता है।

विश्वक—वि० [स०] १ सपूर्ण। समस्त। पूरा। २ सबमे व्याप्त। सर्वव्यापक (को०)।

विश्वकद्रु—सज्ञा पु० [स०] १ शिकारी कुत्ता। २ खल। दुष्ट। पाजी। ३. शब्द। आवाज।

विश्वकर्ता—सज्ञा पुं० [स० विश्वकर्तृ] ससार को उत्पन्न करनेवाला, परमेश्वर।

विश्वकर्म—सज्ञा पु० [स०] वह जो सब प्रकार के कार्य करने मे चतुर हो।

विश्वकर्मजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की पत्नी सज्ञा का एक नाम।

विश्वकर्मसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की पत्नी, सज्ञा।

विश्वकर्मा—सज्ञा पु० [स० विश्वकर्मन्] १. समस्त ससार की रचना करनेवाला, ईश्वर। २ ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ एक प्रसिद्ध आचार्य अथवा देवता जो सब प्रकार के शिल्पशास्त्र के आविष्कर्ता और सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता माने जाते है।

विशेष—पुराणानुसार ये आठ वसुओ मे से प्रभास नामक वसु के पुत्र थे और देवताओं के लिये विमान तथा प्रासाद आदि बनाया करते थे। आग्नेयास्त्र इन्ही का बनाया हुआ माना जाता है। महाभारत मे ये सर्वश्रेष्ठ शिल्पी और अमर कहे गए है रामायण के अनुसार इन्होने राक्षसो के लिये लका बनाई थी। वेदो मे ये सर्वदर्शी, सर्वनियंता और विश्वज्ञ कहे

गए हैं। वेदो मे कही कही 'विश्वकर्मा' शब्द इंद्र, सूर्य, प्रजापति, विष्णु आदि के अर्थ मे भी आया है। महाभारत के अनुसार इनकी माता का नाम लावण्यमयी था और सूर्य की पत्नी सज्ञा इन्ही की कन्या थी। कहते हैं, जब सूर्य के प्रखर ताप को सज्ञा न सह सकी, तब इन्होने उसका आठवाँ अग काट लिया और उससे सुदर्शन चक्र, त्रिशूल आदि बनाकर देवताओ मे बाँटे। सृष्टि की रचना करने के कारण ये प्रजापति और त्वष्टा भी कहे जाते हैं। भाद्रपद की सक्राति को इनकी पूजा हुआ करती है। ५. शिव का एक नाम। ६ चरक के अनुसार शरीर मे की चेतना नामक धातु। ७ बढई। ८ मेमार। राज। ९ लोहार। १० सूर्य की सात किरणो मे से एक किरण (को०)। ११ एक मुान का नाम (को०)। १२ एक पारमाण। एक माप (को०)।

विश्वकर्मेश—पद्मा पु० [स०] एक शिवलिंग का नाम।

विश्वकवि—सज्ञा पु० [स०] १ विश्वविश्रुत कवि। सर्वश्रेष्ठ कवि। महाकवि। उ०—अस्ताचल रवि, जल छन छल छवि, स्तब्ध विश्वकवि, जीवन उन्मन।—अपरा, पृ० २४। २ वग भाषा के ख्यात कवि रवीद्रनाथ ठाकुर का एक उपाधि।

विश्वका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक जलपक्षी। गगाचिल्ली (को०)।

विश्वकाय—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्माड जिनका शरीर है, विष्णु।

विश्वकाया—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा। उ०—तुम्ही मे है महामाया, जुडी छुटकर विश्वकाया।—अर्चना, पृ० ८।

विश्वकारक—सज्ञा पु० [स०] शिव।

विश्वकारु—पद्मा पुं० [स०] दे० 'विश्वकर्मा'।

विश्वकार्य—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य की सात प्रधान किरणो मे से एक का नाम। २ सूर्य की सात प्रधान ज्योतियो का समूह।

विश्वकाव्य—सज्ञा पु० [सं० विश्व+काव्य] ब्रह्मा का बनाया हुआ विश्वरूपी काव्य। काव्य के समान रमणीय, विश्व। ससार। उ०—इस विश्वकाव्य की रसधारा मे जो थोडी देर के लिये निमग्न न हुआ, उसके जीवन को मरुस्थल की यात्रा ही समझना चाहिए।—रस०, पृ० ८।

विश्वकूट—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम।

विश्वकृत—वि० [स०] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित या रचित (को०)।

विश्वकृत्—सज्ञा पु० [स०] १. विश्वकर्मा का एक नाम। २ जगत् का निर्माता, ब्रह्मा (को०)।

विश्वकृष्टि—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो सब लोगो को अपने सगे संबधी के समान समझता हो। २. वह जो सबमे रहता हो या व्याप्त हो (को०)।

विश्वकेतु—सज्ञा पुं० [स०] १. अनिरुद्ध का एक नाम। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

विश्वकोश—सज्ञा पुं० [स०] १ वह कोश या भाडार जिसमे ससार भर के सब पदार्थ आदि सगृहीत हो। २. वह ग्रथ जिसमे ससार भर के सब प्रकार के विषयो आदि का विस्तृत विवेचन या वर्णन हो। (अं० इन्साइक्लोपीडिया)।

विश्वकोष—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वकोश'।

विश्वक्सेन—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु। २ पुराणानुसार तेरहवें मनु का नाम। ३ कालिकापुराण के अनुसार एक चतुर्भुज देवता जो शख, चक्र गदा और पद्म धारण किए रहते है और जो विष्णु का निर्माल्य धारण करनेवाले माने जाते हैं। दे० 'विष्वक्सेन'।

विश्वक्सेना—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियगु नामक वृक्ष। कँगनी।

विश्वक्षय—सज्ञा पुं० [स०] विश्व या ब्रह्माड का नाश। प्रलय।

विश्वक्षिति—पद्मा स्त्री० [स०] दे० 'विश्वकृष्टि' (को०)।

विश्वगगा—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वगङ्गा] बरार प्रदेश का एक छोटी नदी का नाम।

विश्वगध—पद्मा पु० [स० विश्वगन्ध] १ सर्वत्र गध देनेवाला। बोल नामक गधद्रव्य। २ जिसके सभी अग गधमय हो, प्याज।

विश्वगधा—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वगन्धा] पृथ्वी।

विश्वगधि—सज्ञा पु० [स० विश्वगन्धि] भागवत के अनुसार पृथु के पुत्र का नाम।

विश्वग—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्मा। २ भागवत के अनुसार मरीचि के पुत्र का नाम जिसका जन्म पूर्णिमा के गर्भ से हुआ था।

विश्वगत—वि० [स०] सर्वव्यापक। सर्वगत।

विश्वगर्भ—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सबको धारण करता हो, विष्णु। २ शिव। ३. पुराणानुसार रैवत के एक पुत्र का नाम।

विश्वगाथ—सज्ञा पु० [स०] विश्व जिसकी गाथा है, ईश्वर। परमात्मा। उ०—जीवन के विपुल व्याल, मुक्त करो, विश्वगाथ।—अर्चना, पृ० ६।

विश्वगुरु—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

विश्वगोचर—वि० [स०] सर्वविदित। जो सबके समझने योग्य हो (को०)।

विश्वगोप्ता—सज्ञा पुं० [स० विश्वगोप्तृ] १ विष्णु। २ इद्र। ३. वह जो समस्त विश्व का पालन करता हो।

विश्वग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वग्रन्थि] हसपदी लता। २ लाल लजालू।

विश्वग्वात—सज्ञा पुं० [स्त्री०] दे० 'विश्वग्वायु'।

विश्वग्वायु—सज्ञा पु० [स्त्री०] वह वायु जो सब जगह समान रूप से चलती है।

विशेष—ऐसी वायु अनेक प्रकार के दोष और उत्पात उत्पन्न करनेवाली मानी जाती है।

विश्वचद्र—वि० [स० विश्वचन्द्र] पूर्णत दीप्त या प्रभामय (को०)।

विश्वचक्र—सज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार बारह प्रकार के महादानो मे से एक प्रकार का महादान।

विशेष—इसमे एक हजार पल का सोने का एक चक्र या पहिया बनवाया जाता है जिसमे सोलह आरे होते हैं, और तब यह चक्र कुछ विशिष्ट विधानो के अनुसार दान किया जाता है।

विश्वचक्रात्मा—सज्ञा पु० [सं० विश्वचक्रात्मन्] वह जिसका स्वरूप या आत्मा विश्वचक्र अर्थात् ब्रह्माड है। विष्णु।

विश्वचक्ष—वि० [स०] सब कुछ देखनेवाला [को०]।

विश्वचक्षण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वचक्षु' [को०]।

विश्वचक्षा—सज्ञा पु० [स० विश्वचक्षस्] सब देखनेवाला, नेत्र [को०]।

विश्वचक्षु—सज्ञा पु० [स० विश्वचक्षुस्] १. ईश्वर। २ लोकचक्षु। सूर्य। ३ सबको देखनेवाला, नेत्र। आँख (को०)।

विश्वचर—वि० [स०] विश्वव्याप्त। उ०—आनद का विश्वचर रूप 'यज्ञ' है। अन्नाद का अन्नग्रहण करना ही यज्ञ कहाता है इसलिये अन्न नाम से भी इस रूप का व्यवहार करते हैं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ६२२।

विश्वचर्षणि—वि० [स०] सर्वव्यापक। सर्वत्र व्याप्त [को०]।

विश्वच्यवा—सज्ञा पु० [सं०] सूर्य की सप्त रश्मियों में से एक का नाम [को०]।

विश्वछवि—सज्ञा स्त्री० [स० विश्व+छवि] ससार की शोभा। उ०—रश्मि नभ नील पर, सतत शत रूप धर, विश्वछवि में उतर।—अपरा, पृ० १२।

विश्वजन—सज्ञा पु० [सं०] मानव। मनुष्य [को०]।

विश्वजनीन—वि० [स०] विश्व भर के लिये हितकर। सबके लिये सुखदायक। उ०—इतना आकस्मिक उत्थान और पतन। जहाँ एक विश्वजनीन धर्म की उत्पत्ति की सूचना हुई।—इ०, पृ० ३६।

विश्वजनीय—वि० [स०] विश्वजन का। सर्वहितकारी। सबके उपयोग में आनेवाला [को०]।

विश्वजन्य—वि० [स०] दे० 'विश्वजनीन'।

विश्वजयी—वि० [स० विश्वजयिन्] ससार को जीतनेवाला। उ०—जीत न सका एक अबला का मन तू विश्वजयी कैसा?—साकेत, पृ० ३८८।

विश्वजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सोठ।

विश्वजित्—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्रकार का यज्ञ। उ०—किसने मख विश्वजित् किया? रख मृत्पात्र सभी लुटा दिया?—साकेत, पृ० ३२६। २ वरुण का पाश। ३ महाभारत के अनुसार एक प्रकार की अग्नि। ४ विष्णु का एक नाम (को०)। ५ एक दानव का नाम। ६ सत्यजित् के पुत्र का नाम। ७ वह जिसने सारे विश्व पर विजय प्राप्त की हो।

विश्वजीव—सज्ञा पु० [स०] ईश्वर।

विश्वज्योति[1]—वि० [स०] पूर्णत दीप्त वा द्योतित [को०]।

विश्वज्योति[2]—सज्ञा पुं० १ एक साम। २ एक एकाह यज्ञ। सूर्य।

विश्वज्योतिष—सज्ञा पुं० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

विश्वत—अव्य० [स० विश्वतस्] चारो ओर। सभी ओर। सर्वत्र। सब जगह [को०]।

विश्वततनु—सज्ञा पुं० [स०] समग्र विश्व जिनका शरीर माना गया है—विष्णु।

विश्वतुलसी—सज्ञा स्त्री० [सं०] बबुई तुलसी। वनतुलसी।

विश्वतृप्त—सज्ञा पुं० [सं०] १ विष्णु। २ वह जो प्रत्येक में तुष्ट और प्रसन्न हो (को०)।

विश्वतोमुख—वि० [सं०] जिसे चारो ओर मुँह हो [को०]।

विश्वतोयया—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा नदी।

विश्वत्रय—सज्ञा पुं० [स०] तीन लोक—आकाश, पाताल और मर्त्यलोक। त्रिलोक [को०]।

विश्वथा—अव्य० [सं०] १ सदैव। सब जगह। २ सदा। सर्वदा [को०]।

विश्वदंष्ट्र—सज्ञा पुं० [स०] एक असुर का नाम [को०]।

विश्वदानि—वि० [स०] सबका दाता। सबको देनेवाला [को०]।

विश्वदाव—वि० [स०] जगत् को जलानेवाला [को०]।

विश्वदासा—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की माता जिह्वाओं का एक नाम।

विश्वदेव—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्रकार के देवता जिनकी पूजा नादीमुख श्राद्ध में होती है। विश्वेदेवा।

विश्वदेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नागबला। गँवेरन। २ लाल दडोत्पल। ३ कसा। गवेधुक (को०)।

विश्वदैव—सज्ञा पु० [स०] उत्तराषाढा नक्षत्र, जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

विश्वदैवत—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विश्वदेव'।

विश्वधर—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

विश्वधरण—सज्ञा पु० [स०] सबका भरण पोषण [को०]।

विश्वधा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विश्वधरण'।

विश्वधाता—सज्ञा पुं० [स० विश्वधातृ] विश्व का धारण करनेवाला। ईश्वर [को०]।

विश्वधाम—सज्ञा पु० [स० विश्वधामन्] १. ईश्वर। २ स्वदेश। अपना देश।

विश्वधार—सज्ञा पुं० [स०] शाकद्वीप के राजा मेधातिथि के एक पुत्र का नाम।

विश्वधारा—सज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

विश्वधारिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी।

विश्वधारी—सज्ञा पुं० [स० विश्वधारिन्] देवता। सुर [को०]।

विश्वधेना—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी। धरित्री।

विश्वधेनु—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विश्वनद—सज्ञा पु० [स० विश्वनन्द] ब्रह्मा के एक मानसपुत्र [को०]।

विश्वनाथ—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। महादेव। २ काशी का प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।

यौ०—विश्वनाथधाम, विश्वनाथनगरी, विश्वनाथपुरी = काशी। वाराणसी।

३. संस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जो 'साहित्यदर्पण' नामक रीतिग्रथ के प्रणेता है।

विशेष—ये उत्कल के भट्ट ब्राह्मण थे। आलकारिक चक्रवर्ती और कविराज इनकी उपाधि थी। इनके पिता का नाम चद्रशेखर था। कविराज विश्वनाथ विद्वान् होने के साथ राज्य के उच्च पदाधिकारी थे और साधिविग्रहिक महापात्र थे। इनका समय विक्रम की चौदहवी शताब्दी है।

विश्वनाभ—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

विश्वनाभि—सज्ञा स्त्री० [स०] विष्णु का चक्र।

विश्वपति—सज्ञा पु० [स०] १. ईश्वर। २. एक अग्नि (को०)। ३ श्रीकृष्ण।

विश्वपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] भुई आँवला।

विश्वपा—सज्ञा पु० [स०] १ सबकी रक्षा करनेवाला, ईश्वर। २ सूर्य (को०)। ३ चद्रमा (को०)। ४ अग्नि (को०)।

विश्वपावक—वि० [स०] जो सबको पकाता हो। (अग्नि) सबको पकानेवाला (को०)।

विश्वपाणि—सज्ञा पु० [स०] एक बोधिसत्व का नाम।

विश्वपाता—सज्ञा पुं० [स० विश्वपातृ] एक पितृवर्ग [को०]।

विश्वपाल—सज्ञा पु० [स०] ईश्वर।

विश्वपावन—वि० [स०] सबको पवित्र करनेवाला।

विश्वपावनी—सज्ञा स्त्री० [स०] तुलसी।

विश्वपूजित—वि० [स०] जो सबके द्वारा पूजित हो। विश्व द्वारा पूज्य। सर्वसमान्य।

विश्वपूजिता—सज्ञा स्त्री० [स०] तुलसी।

विश्वप्रकाशक—सज्ञा स० [स०] वह जो समग्र विश्व को प्रकाशित करता हो। सूर्य।

विश्वप्रबोध—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

विश्वप्स—सज्ञा पु० [स० विश्वप्सन्] १. अग्नि। २. चद्रमा। ३. सूर्य। ४ देवता। ५ विश्वकर्मा।

विश्वप्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि।

विश्वबधु—सज्ञा पुं० [स० विश्वबन्धु] १ विश्व का बधु। ससार का मित्र। २ शिव। महादेव।

विश्वबधुता—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वबन्धुता] दे० 'विश्वबंधुत्व'।

विश्वबधुत्व—सज्ञा पु० [स० विश्वबन्धुत्व] १ शिवत्व। शिवता। २ सारे विश्व के मानवो मे बधु का भाव। सब को भाई समझने का भाव।

विश्वबाहु—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ महादेव।

विश्वबीज—सज्ञा पुं० [स०] विश्व की मूल प्रकृति या माया।

विश्वबोध—सज्ञा पु० [स०] भगवान् बुद्ध का एक नाम।

विश्वभद्र[1]—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सर्वतोभद्र'।

विश्वभद्र[2]—वि० पूर्णतया अनुकूल [को०]।

विश्वभरणा—सज्ञा स्त्री० [स०] सारे ससार का पालन करनेवाली जगदबिका। उमा। दुर्गा। उ०—भज भिखारी, विश्वभरणा सदा अशरण शरण शरणा।—अर्चना, पृ० ३।

विश्वभरन(ए)—सज्ञा पुं० [स० विश्व+भरण] १ ससार का पालन। उ०—विश्वभरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।—मानस० १। २ विश्वपालक। भगवान्। उ०—भजे न विश्वभरन बनवारी। अइया मनुपहुँ बूझ तुम्हारी।—सूदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३२८।

विश्वभर्ता—सज्ञा पु० [स० विश्वभर्तृ] ईश्वर।

विश्वभव—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्म जिससे सारे विश्व की सृष्टि हुई है।

विश्वभाव—सज्ञा पु० [स०] १ ईश्वर। २ विष्णु का नाम (को०)।

विश्वभावन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वभाव'।

विश्वभुक्[1]—सज्ञा पु० [स० विश्वभुज्] दे० 'विश्वभुज्'।

विश्वभुज्[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ ईश्वर। २ इद्र। ३ अग्नि। ४ इद्र का पुत्र। ५ पितरो का एक गण (को०)।

विश्वभुज्[2]—वि० सर्वभोक्ता। सब कुछ खानेवाला। सबका भोग करनेवाला [को०]।

विश्वभुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

विश्वभू—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध [को०]।

विश्वभेषज—सज्ञा पु० [स०] सोठ।

विश्वभोग—सज्ञा पु० [स०] वह भोग जो सारे ससार के लिये हो। सबका सुख उ०—तुम धन्य। तुम्हारा निरत त्याग। है विश्वभोग का वर साधन।—युगात, पृ० ५४।

विश्वभोजा—सज्ञा पुं० [स० विश्वभोजस] १ वह जो सब कुछ भोग कर सकता हो। २ वह जो सबकी रक्षा करता हो [को०]।

विश्वमच—सज्ञा पुं० [स० विश्व+मञ्च] विश्वरूपी मच। ससार। दुनिया। जगत्। उ०—नृप विश्वमच पर हुए उदित, बन जगजीवन के सूत्रधार।—युगात, पृ० ५६।

विश्वमघा—सज्ञा स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम।

विश्वमय—सज्ञा पु० [स०] ईश्वर। वह जिसका रूप समस्त विश्व मे है। उ०—विश्वमय का जो विशद निवास, व्याप्त उपमे मेरे चिर प्राण।—मधुज्वाल, पृ० ६७।

विश्वमहेश्वर—सज्ञा पु० [स०] महादेव।

विश्वमाता—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वमातृ] समस्त विश्व की माता, दुर्गा।

विश्वमुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती का एक नाम।

विश्वमूर्ति[1]—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम। २ ईश्वर (को०)। ३. शिव (को०)।

विश्वमूर्ति[2]—वि० सब रूपो मे रहनेवाला। सर्वव्यापक [को०]।

विश्वमोहन—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

विश्वयु—सज्ञा पुं० [स०] वायु [को०]।

विश्वयुद्ध—सज्ञा पु० [स० विश्व+युद्ध] जिसमे दुनिया के अधिकाश राष्ट्र दो गुटो मे विभक्त होकर आपस मे लडे (अ० वर्ल्डवार)।

विश्वयोनि—सज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु (को०)।

विश्वरथ—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार राजा गाधि के पुत्र का नाम जो विश्वामित्र नाम से प्रसिद्ध है। विशेष दे० 'विश्वामित्र'।

विश्वरद—सज्ञा पु० [स०] मग या भोजक ब्राह्मणो का एक धार्मिक ग्रथ जिसे वे अपना वेद मानते थे और जो भारतीय आर्यो के वेद का विरोधी था।

विश्वराज, विश्वराट्—सज्ञा पु० [स०] सारे ससार का राजा [को०]।

विश्वरुचि[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्रकार की देवयोनि। २ एक दानव का नाम।

विश्वरुचि[2]—सज्ञा स्त्री० अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक जिह्वा का नाम।

विश्वरुची—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विश्वरुचि' [को०]।

विश्वरूप[1]—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ शिव। ३ पुराणानुसार त्वष्टा के एक पुत्र का नाम। ४ भगवान् श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जो उन्होने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।

विशेष—श्रीकृष्ण ने उस अवसर पर अर्जुन को यह दिखलाया था समझाया था कि इस समस्त विश्व या ब्रह्माड मे सूर्य, चद्रमा, तारे, ग्रह आदि जो कुछ हैं, वे सब मेरे ही स्वरूप हैं।

५ पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम। ६ काला अगर (को०)। ७ एक प्रकार का पुच्छल तारा। ८ देवता। उ०—भूपन को रूप धरि विश्वरूप आए है।—केशव (शब्द०)।

विश्वरूप[2]—वि० सर्वत्र विद्यमान। सर्वव्यापक [को०]।

विश्वरूपक—सज्ञा पु० [स०] १ काला अगर। २ खिरनी।

विश्वरूपिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] आद्या शक्ति। महाशक्ति। उ०—विश्वरूपिणी तुम हो, तुम्हे मूर्ति मे रचकर। पूजा की बसंत के दिन दीनता विकच कर।—अपरा पृ० १९७।

विश्वरूपी[1]—सज्ञा पु० [स० विश्वरूपिन्] [स्त्री० विश्वरूपिणी] विष्णु। जनार्दन।

विश्वरूपी[2]—सज्ञा स्त्री० अग्नि की एक जिह्वा।

विश्वरेता—सज्ञा पु० [स० विश्वरेतस्] १ ब्रह्मा। २ विष्णु [को०]।

विश्वरोचन—सज्ञा पुं० [स०] १ नाडी या नारीच नामक साग। २ कचूर या पेचुक नामक साग।

विश्वलोचन—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य। २ चंद्रमा।

विश्वलोप—सज्ञा पु० [स०] एक वैदिक ऋषि का नाम।

विश्ववयन—सज्ञा पु० [स०] ससार की रचना। विश्वसृष्टि। उ०—उद्धृत शिति दीन हुई दिखा नवल विश्ववयन।—अर्चना, पृ० १०।

विश्ववर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] भुइँआँवला।

विश्ववसु—सज्ञा पु० [स०] राजा पुरुरवा के एक पुत्र का नाम।

विश्ववाक्—सज्ञा पु० [स० विश्ववाच्] असाधारण पुरुष [को०]।

विश्ववाद—सज्ञा पु० [स० विश्व+वाद] वह मत या वाद जिसके अनुसार सारे ससार के मानवो को परस्पर भाई भाई माना जाता है। विश्वबधुत्व।—उ०—यह विश्ववाद साम्राज्यवादियो के प्रभुत्व का साधन है।—आचार्य०, पृ० २२।

विश्ववार—सज्ञा पु० [पुं०] यज्ञ मे सोम का एक सस्कार।

विश्ववारा—सज्ञा स्त्री० [सं०] अत्रि गोत्र की एक स्त्री जो ऋग्वेद के पाँचवें मडल की कुछ ऋचाओ की ऋषि मानी जाती है।

विश्ववास—सज्ञा पु० [स०] ससार। जगत्। दुनिया।

विश्ववाह—वि० [सं०] [वि० स्त्री० विश्ववोही] सबको धारण करनेवाला। सबका भरण पोषण करनेवाला [को०]।

विश्ववाहु—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु [को०]।

विश्वविख्यात—वि० [स०] ससारप्रसिद्ध। विश्वविश्रुत। जगद्विख्यात।

विश्वविजयी—वि० [स० विश्वविजयिनी] जिसने समग्र ससार को जीत लिया हो। सारी दुनिया को जीत लेनेवाला।

विश्ववित्—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो विश्व का सब हाल जानता हो। बहुत बडा पडित। २ ईश्वर।

विश्वविद्यालय—सज्ञा पु० [स०] वह संस्था जिसमे सभी प्रकार की विद्याओ की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती हो, परीक्षाएँ ली जाती हो और जो लोगो को विद्या सबधी उपाधियाँ आदि प्रदान करती हो। (अँ० यूनिवर्सिटी)।

विश्वविधायी—सज्ञा पु० [स० विश्वविधायिन्] १. देवता। विबुध। २ ब्रह्मा [को०]।

विश्वविभावन—सज्ञा पु० [स०] विश्व का विभावन या निर्माण। ससार की रचना [को०]।

विश्वविश्रुत—वि० [स०] जो ससार भर मे प्रसिद्ध हो। जगद्विख्यात।

विश्वविस्त्र—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु [को०]।

विश्वविस्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैशाख मास की पूर्णिमा [को०]।

विश्ववृक्ष—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

विश्ववेदा—वि० [स० विश्ववेदस्] १ सर्वज्ञ। सब कुछ जाननेवाला। २ सत। महात्मा। तपस्वी [को०]।

विश्वव्यचा—सज्ञा स्त्री० [सं० विश्वव्यचस्]

विश्वव्यापक—वि० [सं०] दे० 'विश्वव्यापी'।

विश्वव्यापी[1]—सज्ञा पुं० [स० विश्वव्यापिन्] ईश्वर।

विश्वव्यापी[2]—वि० जो सारे विश्व मे व्याप्त हो।

विश्वश्रवा—सज्ञा पु० [स० विश्वश्रवस्] एक मुनि जो कुबेर और रावण आदि के पिता थे।

विश्वश्री—वि० [स०] जो सबके लिये लाभकर हो (अग्नि)। जो सबको समान रूप से उपयोगी हो [को०]।

विश्वसप्लव—सज्ञा पु० [स० विश्वसम्प्लव] विश्व का विनाश। प्रलय [को०]।

विश्वसभव—सज्ञा पु० [स० विश्वसम्भव] जिससे समग्र ससार उत्पन्न हुआ है, ईश्वर।

विश्वसवनन—सज्ञा पुं० [स०] समग्र विश्व का मोहन करना या हरण करना [को०]।

विश्वसहार—सज्ञा पु० [स०] महाप्रलय। विश्व का विनाश [को०]।

विश्वसख—सज्ञा पु० [स०] सबका मित्र। सबका सखा।

विश्वसत्तम—सज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। वासदेव। श्रीकृष्ण [को०]।

विश्वसन—सज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जहाँ ऋषि मुनि विश्राम करते हो। २ विश्वास। एतबार।

विश्वसनीय—वि० [स०] विश्वास करने के योग्य। विश्वास उत्पन्न करने योग्य। जिसका एतबार किया जा सके। जैसे,—(क) हमे यह समाचार विश्वसनीय सूत्र से मिला है। (ख) आपकी सब बातें बहुत विश्वसनीय हैं।

विश्वसहा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अग्नि की सात जिह्वाओ में से एक जिह्वा का नाम। २ पृथ्वी (को०)।

विश्वसाक्षी—सज्ञा पु० [स० विश्वसाक्षिन्] वह जो सब कुछ देखता है। ईश्वर।

विश्वसाम—सज्ञा पुं० [स० विश्वसामन्] एक वैदिक ऋषि का नाम जो आत्रेय गोत्र के थे और जो अनेक वैदिक मत्रो के द्रष्टा थे।

विश्वसार—सज्ञा पुं० [स०] एक तंत्र का नाम (को०)।

विश्वसारक—सज्ञा पु० [स०] कंकारी वृक्ष। विदर वृक्ष।

विश्वसित—वि० [स०] विश्वास करने के योग्य। विश्वसनीय। जिसपर विश्वास किया गया हो। विश्वस्त।—उ० उनकी समति सर्वसाधारण को विश्वसित प्रमाण रूप होती है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ४४०। २ निर्भय। निडर (को०)।

विश्वसृक्—सज्ञा पु० [स० विश्वसृज्] १ स्रष्टा। ब्रह्म। २ मयासुर। मय नामक असुर (को०)।

विश्वसृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] ससार की रचना या निर्माण।

विश्वस्त—वि० [स०] १ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय। २. विश्वास करनेवाला। भरोसा करनेवाला (को०)। ३. निडर। विशुद्ध (को०)। ४ जिसपर विश्वास किया गया हो। निष्ठ (को०)।

विश्वस्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] विधवा।

विश्वस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] शतावर।

विश्वस्रष्टा—सज्ञा पु० [स० विश्वस्रष्ट] ब्रह्मा जो सृष्टि का निर्माण करते है।

विश्वहर्त्ता—सज्ञा स्त्री० [स० विश्वहर्तृ] शिव।

विश्वहृदय—सज्ञा पु० [स०] अखिल विश्व से प्रेम करनेवाला हृदय। चराचर जगत् मे अनुरक्त हृदय। सर्वभूतमय हृदय। उ०—भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती है, उसका हृदय विश्वहृदय हो जाता है।—रस०, पृ० २५।

विश्वहेतु—सज्ञा पुं० [स०] विश्व को उत्पन्न करनेवाले, विष्णु।

विश्वाड—सज्ञा पु० [स० विश्वाण्ड] ब्रह्माड (को०)।

विश्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी और जिसमे सत्य, क्रतु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। २ एक मान जो २० पल का होता है। ३ अतिविषा। अतीस। ४ शतावर। ५ पीपल। ६ सोठ। उ०—विश्वा, नागर, जगभिषक, महा औषधी नाउँ।—नद० ग्र०, पृ० १०४। ७. शखिनी। चोरपुष्पी। ८ पृथ्वी। भूमि (को०)। ९ अग्नि की सात जिह्वा या अर्चियो मे से एक जिह्वा (को०)। १०. एक नदी (को०)।

विश्वाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] ईश्वर।

विश्वाची—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक वैदिक अप्सरा का नाम। २. एक प्रकार का रोग जिसमे वायु के कारण कधे से उँगलियो तक सारा हाथ न तो फैलाया जा सकता है और न सिकोडा जा सकता है।

विश्वातिथि—सज्ञा पु० [स०] वह जो सबका अतिथि हो। सन्यासी (को०)।

विश्वातीत—सज्ञा पु० [स०] जो सबसे परे हो, ईश्वर।

विश्वात्मवाद—सज्ञा पुं० [स०] सपूर्ण ससार को अपनी आत्मा समझने का सिद्धात। उ०—अहकारमूलक आत्मवाद का खडन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नही किया।—शैली, पृ० १८९।

विश्वात्मा—सज्ञा पु० [स० विश्वात्मन्] १ विष्णु। २ शिव। ३ ब्रह्मा। ४ ईश्वर। परमात्मा (को०)। ५ सूर्य (को०)।

विश्वाद्—सज्ञा पु० [स०] अग्नि जो सब कुछ भक्षण करता है।

विश्वादि—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का कषाय।

विशेष—यह कषाय जो सोठ, बाला, क्षेत्रपर्पटी, मोखा, लालचदन आदि से बनाया जाता है और जो ज्वर की प्यास, कै तथा दाह आदि को कम करनेवाला माना जाता है।

विश्वाधाया—सज्ञा पुं० [स० विश्वाधायस्] देवता (को०)।

विश्वाधार—सज्ञा पु० [स०] समग्र ससार का आधार। परमेश्वर। उ०—मन का समाहार करो विश्वाधार।—आराधना, पृ० ४६।

विश्वाधिप—सज्ञा पु० [स०] परमेश्वर

विश्वानर—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैश्वानर'।

विश्वानुरक्त—वि० [स०] समस्त विश्व से अनुराग रखनेवाला। विश्वहितैषी। उ०—विश्वानुरक्त है अनासक्त।—युगात, पृ० ५५।

विश्वाप्सु—वि० [स०] अनेक रूप धारण करनेवाला (को०)।

विश्वाभ्—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ ईश्वर, जो सर्वव्यापक है (को०)।

विश्वामित्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो गाधिज, गाधेय और कौशिक भी कहे जाते हैं।

विशेष—विश्वामित्र कान्यकुब्ज के पुरुवशी महाराज गाधि के पुत्र थे, परतु क्षत्रिय कुल मे जन्म लेने पर भी अपने तपोबल से ब्रह्मर्षियो मे परिगणित हुए। ऋग्वेद के अनेक मत्र ऐसे हैं जिनके द्रष्टा विश्वामित्र अथवा उनके वशज माने जाते है। इनका विश्वामित्र नाम ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर पडा था, नही तो इनका पहला क्षत्रिय दशा का नाम 'विश्वरथ' था। ऋग्वेद मे अनेक मत्र ऐसे मिलते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि ये यज्ञो मे पुरोहित का कार्य करते थे, और वृत्ति के सबध मे

इनमे तथा वशिष्ठ मे बहुत समय तक बराबर झगडे बखेडे होते रहते थे। पुराणो मे लिखा है कि राजा गाधि को सत्यवती नाम की एक सुदरी कन्या उत्पन्न हुई थी। वह कन्या उन्होने ऋचीक ऋषि को दे दी थी। ऋचीक ने एक बार दो अलग अलग चरु तैयार करके अपनी स्त्री सत्यवती को दिए थे और कहा था कि इसमे से यह एक चरु तो तुम खा लेना जिसमे तुम्हे ब्राह्मणो के गुण से सपन्न एक पुत्र होगा, और एक दूसरा चरु अपनी माता को दे देना जिससे उन्हे क्षत्रियो के गुणवाला एक बहुत तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होगा। इसी बीच मे राजा गाधि अपनी स्त्री सहित वहाँ आए। सत्यवती ने वे दोनो चरु अपनी माता के सामने रख दिए और उनका गुण बतला दिया। माता ने समझा कि ऋचीक ने अपनी स्त्री के लिये बढिया चरु तैयार किया होगा, इसलिये उसने उसका चरु तो आप खा लिया और अपना उसे खिला दिया। इससे उसके गर्भ से तो विश्वामित्र का जन्म हुआ, जिसमे क्षत्रिय होने पर भी ब्राह्मणो के से गुण थे, और सत्यवती के गर्भ से जमदग्नि का जन्म हुआ जो ब्राह्मण होने पर भी क्षत्रियो के गुणो से सपन्न थे। विश्वामित्र को शुनःशेफ, देवरात, देवश्रवा, हिरण्याक्ष, गालव, जय, अष्टक, कच्छप, नारायण, नर आदि सौ पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनके कारण इनके कौशिक वश की बहुत अधिक वृद्धि हुई थी। कहते है, एक बार जब विश्वामित्र ने बहुत बडा तप किया था, तब इद्र तथा समस्त देवताओने भयभीत होकर मेनका नामक अप्सरा को उनका तप भग करने के लिये भेजा था। इसी मेनका से विश्वामित्र को शकुतला नामक कन्या उत्पन्न हुई थी जो दुष्यत को ब्याही गई थी। यह भी प्रसिद्ध है कि इक्ष्वाकु वश के राजा त्रिशकु ने एक बार सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से एक यज्ञ करना चाहा था। परतु उनके पुरोहित वशिष्ठ ने कहा कि ऐसा होना असभव है। इसपर त्रिशकु ने विश्वामित्र की शरण ली और विश्वामित्र ने उन्हे सशरीर स्वर्ग पहुँचा दिया। यह भी कहा जाता है कि विश्वामित्र बहुत बडे क्रोधी थे और प्राय. लोगो को शाप दे दिया करते थे। राजा हरिश्चद्र के सत्य की सुप्रसिद्ध परीक्षा लेनेवाले भी यही माने जाते है। पुराणो मे इनके सबध मे इसी प्रकार की और भी अनेक कथाएँ प्रचलित हैं।

विश्वामित्रप्रिय—सज्ञा पु० [स०] १. नारियल का पेड। २ भगवान् रामचद्र। ३ कार्तिकेय [को०]।

विश्वामित्रसृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] तालवृक्ष, भैस, गवा आदि जिनकी रचना विश्वामित्र ऋषि ने की थी।

विश्वामित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक नदी का नाम।

विश्वामृत—वि० [स०] अमर। मृत्युजय [को०]।

विश्वायन—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ। २ ब्रह्मा।

विश्वराज, विश्वाराट्—सज्ञा पुं० [स०] समग्र विश्व का शासन करनेवाला। ईश्वर।

विश्वावसु[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पुराणानुसार एक गधर्व का नाम। २ विष्णु। ३. एक संवत्सर का नाम।

विश्वावसु[2]—सज्ञा स्त्री० रात।

विश्वावास—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विश्वाधार' [को०]।

विश्वाश्रय—सज्ञा पु० [स० विश्व+आश्रय] वह जो सबका आश्रय स्वरूप है। ईश्वर।

विश्वाश्रय—वि० विश्व मे परिव्याप्त। विश्व की आश्रयभूत। उ०—जागो विश्वाश्रय महिमा धर, फिर देखा।—अपरा, पृ० २०६।

विश्वास—सज्ञा पुं० [स०] १ वह धारणा जो मन मे किसी व्यक्ति के प्रति उसका सद्भाव, हितैषिता, सत्यता, दृढता आदि अथवा किसी सिद्धात आदि की सत्यता अथवा उत्तमता का ज्ञान होने के कारण होता है। किसी के गुणो आदि का निश्चय होने पर उसके प्रति उत्पन्न होनेवाला मन का भाव। एतबार। यकीन। जैसे,—(क) मैं तो सदा ईश्वर पर विश्वास रखता हूँ। (ख) उन्हे आपका पूरा पूरा विश्वास है। (ग) आप विश्वास रखें, ऐसा कभी न होगा।

क्रि० प्र०—करना।—मानना।—रखना।—होना।

मुहा०—विश्वास जमाना=किसी के मन मे विश्वास उत्पन्न करना या दृढ करना। विश्वास दिलाना=किसी के मन मे विश्वास उत्पन्न करना।

२. मन की वह धारणा जो विषय या सिद्धात आदि की सत्यता का पूरा पूरा प्रमाण न मिलने पर भी उसकी सत्यता के सबध मे होती है। जैसे— (क) बहुत से अशिक्षित भूत प्रेत पर विश्वास रखते हैं। (ख) और धर्मों की अपेक्षा बौद्ध धर्म पर उनका कुछ अधिक विश्वास है। ३ केवल अनुमान के आधार पर होनेवाला मन का दृढ निश्चय। जैसे,—मेरा तो यही विश्वास है कि वह अवश्य आवेगा। ४ गुप्त भेद या समाचार।

विश्वासकारक—वि० [सं०] १ विश्वास करनेवाला। यकीन करनेवाला। २ मन मे विश्वास उत्पन्न करनेवाला। जिससे विश्वास उत्पन्न हो।

विश्वासकार्य—सज्ञा पुं० [स०] गोपनीय कार्य [को०]।

विश्वासकृत्—वि० [स०] दे० 'विश्वासकारक' [को०]।

विश्वासघात—सज्ञा पुं० [स०] किसी के विश्वास के विरुद्ध की हुई क्रिया। अपने पर विश्वास करनेवाले के साथ ऐसा कार्य करना जो उसके विश्वास के बिल्कुल विपरीत हो।

विश्वासघातक—सज्ञा पु० [सं०] वह जो किसी के मन मे अपने प्रति विश्वास उत्पन्न करके भी उसका अपकार करे। विश्वास करने पर भी धोखा देनेवाला। धोखेबाज।

विश्वासघाती—सज्ञा पुं० [स० विश्वासघातिन्] [स्त्री० विश्वासघातिनी] दे० 'विश्वासघातक' [को०]।

विश्वासन—सज्ञा पु० [स०] विश्वास। एतबार। यकीन।

विश्वासपरम—वि० [स०] विश्वास से पूर्ण [को०]।

विश्वासपात्र—सज्ञा पु० [सं०] जिसपर भरोसा किया जाय। विश्वास करने के योग्य। विश्वसनीय।

विश्वासप्रद—वि० [स०] विश्वास देनेवाला। भरोसा पैदा करनेवाला।

विश्वासभग—सज्ञा पुं० [स० विश्वासभङ्ग] विश्वासघात। विश्वास न रखना।

विश्वासभाजन—सज्ञा पु० [स०] विश्वस्त। विश्वासपात्र। विश्वसनीय व्यक्ति [को०]।

विश्वासभूमि—सज्ञा पु० [स०] वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया जाय। विश्वास का स्थान या भूमि [को०]।

विश्वासस्थान—सज्ञा पु० [स०] वह जिसका विश्वास किया जाय। विश्वासभाजन।

विश्वासस्थित—वि० [स०] विश्वासी। विश्वासपूर्ण। दृढ विश्वासवाला। उ०—बोले आवेगरहित स्वर से विश्वासस्थित।—अपरा, पृ० ४९।

विश्वासिक—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसका विश्वास किया जाय। विश्वसनीय।

विश्वासित—वि० [स०] जिसे विश्वास दिलाया गया हो [को०]।

विश्वासी—सज्ञा पुं० [स० विश्वासिन्] १ वह जो किसी पर विश्वास करता हो। विश्वास करनेवाला। २ वह जिसका विश्वास किया जाय।

विश्वास्य—वि० [स०] १ विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय। २ जिसका विश्वास किया जाय। विश्वासभाजन।

विश्वाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] सोठ।

विश्वेक्षिता—वि० [स० विश्वेक्षितृ] सर्वदर्शी [को०]।

विश्वेदेव—सज्ञा पुं० [स०] १ अग्नि। २ देवताओ का एक गण जिसमे इद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।

विशेष—वैदिक युग मे लोग इन्हे मनुष्यो के रक्षक, शुभ कर्मों के फल देनेवाले और विश्व के अधिपति मानते थे। अग्निपुराण मे ये दस कहे गए है और इनके नाम इस प्रकार बतलाए गए हैं—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रव और पुरूरवा।

३ पुराणानुसार एक असुर का नाम। ४ एक देवता (को०)। ५ महान् व्यक्ति। महत् पुरुष (को०)। ६. तेरह की सख्या (को०)।

विश्वेभोजा—सज्ञा पु० [स० विश्वेभोजस्] इंद्र।

विश्वेवेदा—सज्ञा पु० [स० विश्वेवेदस्] अग्नि।

विश्वेश—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। २. विष्णु। ३ ब्रह्मा (को०)। ४ ईश्वर। ५ उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्व नामक देवता माने जाते है।

विश्वेशा—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रजापति दक्ष की एक पुत्री का नाम (को०)।

विश्वेश्वर—सज्ञा पु० [स०] १. ईश्वर। २. शिव की एक मूर्ति का नाम।

विश्वैकसार—सज्ञा पु० [स०] काश्मीर के एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विश्वोषध—सज्ञा पु० [सं०] सोठ।

विषग—वि० [स० विषङ्ग] १. लगा हुआ। २ जो लगता हो [को०]।

विषग(पु)[२]—वि० [स० विषाङ्ग] विषयुक्त। विषधर। उ०—काहर कघन कितक कितक स्वानन मुप ठुट्टन। विछी सर्प विपग मत्रवादी मिल लुट्टत।—पृ० रा०, ६। १०५।

विषगी—वि० [स० विषङ्गी] साथ लगनेवाला। सलग्न रहनेवाला [को०]।

विषड—सज्ञा पु० [स० विषण्ड] कमल की नाल। मृणाल।

विष—सज्ञा पु० [स०] वह पदार्थ जो किसी प्राणी के शरीर मे किसी प्रकार पहुँचने पर उसके प्राण ले लेता हो अथवा उसका स्वास्थ्य नष्ट करता हो। गरल। जहर।

विशेष—वैद्यक मे स्थावर और जगम ये दो प्रकार के विष माने गए हैं। स्थावर विष वृक्षो, पौधो और खानो आदि मे से निकला हुआ माना जाता है, और जगम विष वह कहलाता है जो अनेक प्रकार के जीवो के शरीर, नख, दाँत या डंक आदि मे होता हैं। कुछ विष कृत्रिम भी होते हैं और रासायनिक क्रियाओ स बनाए जाते है। चिकित्सा मे अनेक विषो का प्रयोग, बहुत थोडी मात्रा मे, अनेक रोगो को दूर करने और दुर्बल रोगी के शरीर मे बल लाने के लिये किया जाता है।

मुहा०—के लिये दे० 'जहर'।

२. वह जो किसी की सुख शाति आदि मे बाधक हो।

मुहा०—विष की गाँठ=वह जो अनेक प्रकार के उपद्रव और अपकार आदि करता हो। खराबी पैदा करनेवाला। जैसे—यही तो विष की गाँठ हैं, सब का झगडा इन्ही का खडा किया हुआ है।

३. जल। ४ पद्मकेशर। ५ कमल की नाल। ६ बोल नामक गधद्रव्य। ७ वछनाग। वत्सनाभ (को०)। ८ अतीस। ९ कलिहारी। १० जहरीला तीर। विषाक्त बाण (को०)। ११ तत्र मे 'म' का बोधक शब्द। 'म' की ध्वनि (को०)। १२ अनुचर (को०)।

विषई(पु)—वि० [स० विषयिन्] दे० 'विषयी'। उ०—विषई विषै सब विष की खानी। ए सब कहिये जम सहदानी।—कबीर सा०, पृ० ८०६।

विषकट—सज्ञा पु० [सं० विषकण्ट] इगुदी।

विषकटक—सज्ञा पुं० [स० विषकण्टक] दुरालभा।

विषकटका—सज्ञा स्त्री० [स० विषकण्टका] वंध्या ककोटी। बाँझ ककोटी।

विषकटकी—सज्ञा स्त्री० [स० विषकण्टकी] बाँझ ककोटी।

विषकठ—सज्ञा पु० [स० विषकण्ठ] शिव। महादेव।

विषकठिका—सज्ञा स्त्री० [स० विषकण्ठिका] बगला।

विषकद—सज्ञा पुं० [स० विषकन्द] १. भैसा कद। नील कंद। २. हिंगोट। इगुदी।

विषकन्यका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विषकन्या [को०]।

विषकन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह कन्या या स्त्री जिसके शरीर मे इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हो कि जो उसके साथ संभोग करे, वह मर जाय।

विशेष—प्राचीन काल में राजाओ के यहाँ बाल्यावस्था से ही कुछ कन्याओ के शरीर में अनेक प्रकार से विष प्रविष्ट करा दिए जाते थे। जिनके कारण उनके शरीर मे ऐसा प्रभाव आ जाता था कि जो उनके साथ विषय करता था, वह मर जाता था। जब राजा को अपने किसी शत्रु को गुप्त रूप से मारना अभीष्ट होता था, तब वह इस प्रकार की विषकन्या उसके पास भेज देता था, जिसके साथ सभोग करके वह शत्रु मर जाता था।

विषकुभ—सज्ञा पु० [स० विषकुम्भ] जहर का घडा। कुभ जो विष से भरा हो [को०]।

विषकृत—वि० [सं०] विषैला। विषयुक्त [को०]।

विषकृमि—सज्ञा पु० [स०] विष से उत्पन्न कीडा [को०]।

विषकृमि न्याय—सज्ञा पुं० [स०] एक न्याय विशेष, जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि दूसरो के लिये प्राणहारक वस्तु अपने मे से उत्पन्न जीव के लिये घातक नही होती [को०]।

विषक्त—वि० [स०] १ दृढतापूर्वक जमा हुआ। जडा हुआ। २. सलग्न। चिपका या चिपटा हुआ। ३ लटका हुआ। अवलबित। ४ उत्पादित। ५ अधिकृत। ६. फैला हुआ। विस्तृत। प्रसरित [को०]।

विषगधक—सज्ञा पुं० [स० विषगन्धक] एक प्रकार का तृण जिसमे भीनी गध होती है।

विषगंधा—सज्ञा स्त्री० [स० विषगन्धा] काली अपराजिता।

विषगिरि—सज्ञा पुं० [स०] वह पर्वत जिसपर उत्पन्न होनेवाले वृक्ष और पौधे आदि जहरीले होते हों।

विषग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० विषग्रन्थि] एक जहरीला क्षुप [को०]।

विषघ—वि० [स०] विष का नाश करनेवाला।

विषघटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक सौर मास का नाम [को०]।

विषघा—सज्ञा पुं० [स०] गुडूच।

विषघात—सज्ञा पुं० [सं०] विष का घातन करनेवाला। जहर का असर दूर करनेवाला। विषवैद्य [को०]।

विषघातक—सज्ञा पुं० [स०] वह जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो।

विषघाती—सज्ञा पुं० [सं० विषघातिन्] १ वह जिससे विष का प्रभाव नष्ट होता हो। २ सिरिस का पेड़।

विषघ्न—वि० [सं०] विष का प्रभाव दूर करनेवाला। विषनाशक।

विषघ्न—सज्ञा पुं० १ सिरिस का वृक्ष। २ भिलावाँ। ३ चंपा का वृक्ष। भूकदव। ५ गध तुलसी। ६ जवासा। धमासा (को०)।

विषघ्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] अतिविषा। अतीस।

विषघ्निका—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद अपामार्ग या चिचडा।

विषघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हिलमोचिका या हिलंच नामक साग। २ वनतुलसी। बबुई तुलसी। ३ इद्रवारुणी। ४. मुइँ आँवला। ५ लाल पुनर्नवा। गदहपूरना। ६ हलदी। ७. महाकरज। ८ वृश्चिकाली नाम की लता। ९ देवदाली या पीतघोषा नाम की लता। १ कठकेला। ११ सफेद अपामार्ग। १२ रास्ना।

विषचक्र—सज्ञा पु० [स०] चकोर पक्षी।

विषज—वि० [स०] विष से उत्पन्न। विष से होनेवाला [को०]।

विषजल—सज्ञा पुं० [स०] विषयुक्त जल [को०]।

विषजित्—सज्ञा पुं० [स०] एक तरह का शहद [को०]।

विषजिह्व—सज्ञा पु० [स०] देवताड नामक वृक्ष।

विषजुष्ट—वि० [स०] १ विषाक्त। जहरीला। २ विष से प्रभावित। विषयुक्त [को०]।

विषज्वर—सज्ञा पुं० [स०] १ वैद्यक के अनुसार वह ज्वर जो विष के कारण उत्पन्न हुआ हो।

विशेष—ऐसे ज्वर मे दाह होती है, दस्त आते हैं, भोजन की ओर रुचि नहीं होती, प्यास बहुत लगती है और रोगी मूर्छित हो जाता है।

२ भैंसा। महिष।

विषझाल—सज्ञा स्त्री० [हिं० विष+झाल] विष की ज्वाला। विषयरूपी विष की आग। उ०—पच चोर चितवत रहीं, मया मोह विषझाल। चेतन पहरै आपणौ, कर गहि खडग सँभाल।—दादू० पृ० ३८०।

विषणि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साँप।

विषण्ण—वि० [स०] १ जिसका चित्त दुखी हो। जिसे विषाद, शोक या रज हो। २ दुखपूर्ण। वेदनायुक्त। खिन्न। उ०—विफलता मे भी एक निराला ही विषण्ण सौंदर्य होता है।—रस०, पृ० ६०।

यौ०—विषण्णचेता = खिन्न। उदास। विषण्णमना = उदास। विषण्णमुख, विषण्णवदन = जिसके मुख पर उदासी छाई हो। विषण्णरूप = उदासी की दशा या अवस्था।

विषण्णता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विषण्ण या दुखी होने का भाव। २. मूर्खता। बेवकूफी। जड़ता।

विषण्णाग—सज्ञा पु० [स० विषण्णाङ्ग] शिव।

विषतत्र—सज्ञा पु० [स० विषतन्त्र] वैद्यक के अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा साँप आदि का विष दूर किया जाता है।

विषतरु—सज्ञा पुं० [स०] १ कुचला। २ जहरीला वृक्ष। विषवृक्ष।

विषता—सज्ञा स्त्री० [स०] विष का भाव या धर्म। जहरीलापन।

विषतिंदु—सज्ञा पु० [स० विषतिन्दु] १. कुच लता। २ कुपीलु।

विषतिंदुक—सज्ञा पु० [स० विषतिन्दुक] एक प्रकार का जहरीला पौधा [को०]।

विषतुल्य—वि० [स०] प्राणहारक [को०]।

विषतैल –सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का तेल जो कड़ुए तेल मे गोमूत्र, हलदी, दारु हल्दी, वच, लालचदन, मजीठ आदि डालकर बनाया जाता है और जिसका व्यवहार कुष्ठ आदि रोग दूर करने के लिये होता है।

विषदड—सज्ञा पुं० [सं० विषदण्ड] १ कमल की नाल। उ०—केशव कोदड विषदड ऐसो खडे अब मेरे भुजदंडन की बडी है विडबना।—केशव (शब्द०)। २. विष दूर करनेवाला ऐंद्र जालिक डडा।

विषदत—सज्ञा पुं० [स० विषदन्त] १ बिल्ली। २ वह जिसके दाँतो मे जहर हो।

विषदतक—सज्ञा पुं० [स० विषदन्तक] साँप।

विषदश—सज्ञा पु० [स०] बिल्ली।

विषदष्ट्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साँप का वह दाँत जिसमे जहर होता है। २. सर्पककालिका नाम की लता। ३ नागदमनी।

विषद[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ हीरा कसीस। २ सफेद रग। ३. अतिविषा। अतीस। ४ बादल।

विषद[2]—वि० निर्मल। स्वच्छ। साफ। उ०—विपद वासो के विभूषण, चरण के तल तू तरेगा।—अर्चना, पृ० ८६।

विषदमूला—सज्ञा स्त्री० [स०] माकदा नामक पौधा जिसके पत्तो का साग होता है।

विषदर्शनमृत्यु, विषदर्शनमृत्युक—सज्ञा पु० [स०] चकोर पक्षी [को०]।

विषदा—सज्ञा स्त्री० [स०] अतिविषा। अतीस।

विषदाता—सज्ञा पुं० [स० विषदातृ] वह जो किसी को मार डालने या बेहोश करने के अभिप्राय से जहर दे।

विषदायक—सज्ञा पु० [स०] जहर देनेवाला।

विषदायी—सज्ञा पु० [स० विषदायिन्] दे० 'विषदाता'।

विषदिग्ध—वि० [स०] विष मे बुझाया हुआ। जहरीला। विषाक्त [को०]।

विषदुष्ट—वि० [सं०] जो जहर मिलाकर खराब कर दिया गया हो।

विषदूषण[1]—वि० [स०] विष दूर करनेवाला।

विषदूषण[2]—सज्ञा पुं० [स०] भोज्य या पेय वस्तु मे विष मिलाना [को०]।

विषद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] कुचला। कारस्कर।

विषद्विषा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की गुरुच [को०]।

विषधर[1]—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विषधरी] १. सर्प। साँप। २. जलधर। बादल।

यौ०—विषधरनिलय = पाताल। नागलोक।

विषधर[2]—वि० विषैला। जहरीला [को०]।

विषधरी—सज्ञा स्त्री० [स०] सर्पिणी। साँपिन।

विषधर्मा—सज्ञा स्त्री० [स०] केवाँच [को०]।

विषधात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] जरत्कारु ऋषि की स्त्री मनसा देवी का एक नाम।

विषघ्वसी—सज्ञा पुं० [स० विषघ्वसिन्] नागरमोथा।

विषनाडी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक मुहूर्त जिसमे जनन अशुभ कहा गया है [को०]।

विषनाशन[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ सिरिस का पेड। २. मानकंद। ३. विष को दूर करना।

विषनाशन[2]—वि० जो विष को दूर करता हो। विषनाशक।

विषनाशिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सर्पककाली नाम की लता। २ बाँझ ककोटी। ३. गंधनाकुली।

विषनुत्—सज्ञा पुं० [स०] सोनापाठा। श्योनाक [को०]।

विषन्न(पु)—वि० [स० विषण्ण] दे० 'विषण्ण'। उ०—रोते रोते कंठरोध जब है हो जाता। उस विषन्न नीरव क्षण मे हो कहती गिरा तुम्हारी।—चिंता, पृ० १४८।

विषपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. किसी जहरीले बीज का छिलका। २ कोई जहरीला पत्ता।

विषपन्नग—सज्ञा पुं० [स०] जहरीला साँप।

विषपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] न्यग्रोध। वट वृक्ष [को०]।

विषपादप—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषवृक्ष'।

विषपीत—वि० [सं०] जिसने जहर पी लिया हो। विष पीनेवाला [को०]।

विषपुच्छ—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० विषपुच्छी] बिच्छू जिसकी पूँछ मे विष होता है।

विषपुट—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विषपुष्प—सज्ञा पु० [सं०] १. नीला पद्म। २. अलसी का फूल। ३ मैनफल का पेड। ४ विषयुक्त फूल (को०)।

विषपुष्पक—सज्ञा पुं० [स०] १ मदन नामक वृक्ष। मैनफल। २. विषैले फूलो के खाने से होनेवाला रोग (को०)।

विषप्रदिग्ध—वि० [स०] दे० 'विषदिग्ध' [को०]।

विषप्रयोग—सज्ञा पुं० [स०] १ दवा मे विष का उपयोग करना। २ जहर देना [को०]।

विषप्रशमनी—सज्ञा स्त्री० [स०] बाँझ ककोडी।

विषप्रस्थ—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक पर्वत का नाम।

विषभक्षण—सज्ञा पुं० [स०] जहर खाना।

विषभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] बडी दंती।

विषभद्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] लघु दंती।

विषभिषक्—सज्ञा पुं० [स० विषभिषज्] साँप आदि के विष को मत्र द्वारा दूर करनेवाला व्यक्ति। विषवैद्य [को०]।

विषभुजग—सज्ञा पुं० [सं० विषभुजङ्ग] जहरीला साँप।

विषभृत[1]—वि० [स०] जहरीला। विषयुक्त।

विषभृत[2]—सज्ञा पु० सर्प। साँप [को०]।

विषमजरी—सज्ञा स्त्री० [स०] विष सबंधी चिकित्सापरक एक आयुर्वेद कृति [को०]।

विषमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० विषमन्त्र] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २ संपेरा। ३ साँप के विष को उतारने का मंत्र (को०)।

विषम[1]—वि० [सं०] १ जो सम या समान न हो। जो बराबर न हो। असमान। २ (वह संख्या) जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। सम या जुफ्त का उल्टा। ताक। ३ जिसकी मीमांसा सहज में न हो सके। बहुत कठिन। जैसे,—विषम समस्या। ४ बहुत तीव्र। बहुत तेज। ५ भीषण। विकट। जैसे,—विषम विपत्ति। उ०—करैं न मेरे पीछे स्वामी विषम कष्ट साहस के काम। यही दुःखिनी सीता का मुख सुखी रहे उसके प्रिय राम।—साकेत, पृ० २८६। ६ जो समतल न हो। खुरदरा। ऊबड़ खाबड़ (को०)। ७ अनियमित (को०)। ८. अगम। दुर्गम (को०) ९ मोटा। स्थूल (को०)। १० तिरछा। वक्र (को०)। ११ पीड़ाप्रद। कष्टदायक (को०)। १२. बहुत मजबूत। उत्कट (को०)। १३ बुरा। प्रतिकूल। विपरीत (को०)। १४ अजीब। विचित्र। अनुपम। (को०)। १५ बेईमान (को०)। १६ विरामशील। विरत (को०)। १७. दुष्ट (को०)। १८. भिन्न (को०)। १९ अनुपयुक्त। अननुकूल (को०)।

विषम[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ संकट। विपत्ति। आफत। २ वह वृत्त जिसके चारों चरणों में बराबर बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। ३. एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का अभाव कहा जाता है। उ०—(क) कहाँ मृदुल तन तीय का सिरस प्रसून महान। कहाँ मदन की लाय यह अंब सम दुसह समान। (ख) खड़गलता अति स्याम तें उपजी कीरति सेन। ४ संगीत में ताल का प्रकार। ५. पहली, तीसरी, पाँचवीं आदि विषम संख्याओं पर पड़नेवाली राशियाँ। ६ वैद्यक के अनुसार चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक प्रकार की जठराग्नि जो वायु की अधिकता से उत्पन्न होती है। कहते हैं, जब जठराग्नि विषम होती है, तब कभी तो भोजन बहुत अच्छी तरह पच जाता है और कभी बिलकुल नहीं पचता। ७ विष्णु का एक नाम (को०)। ८ असमता (को०) ९ अनोखापन (को०)। १० दुर्गम स्थान। जैसे,—चट्टान, गड्ढा आदि (को०)। ११ कठिन या भयावह स्थिति। कठिनाई। दुर्भाग्य (को०)।

विषमक—वि० [सं०] १ असम। २ (मोती आदि) जिसकी पालिश सर्वत्र समान रूप से न हुई हो (को०)।

विषमकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ चारों समकोणोंवाले चतुर्भुज में किन्हीं दो कोणों को मिलाती हुई त्रिकोण बनानेवाली रेखा। समकोण त्रिकोण का कर्ण। २ असमान कर्णवाला चतुर्भुज।

विषमकर्म—संज्ञा पुं० [सं०] असाधारण कार्य।

विषमकाल—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिकूल समय। भयंकर समय (को०)।

विषमकोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो सम न हो। समकोण से भिन्न और कोई कोण।

विषमखात—संज्ञा पुं० [सं०] असमान खात (को०)।

विषमचक्रवाल—संज्ञा पुं० [सं०] गणित में दीर्घवृत्त। अंडवृत्त (को०)।

विषमचतुरस्र—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषम चतुष्कोण'।

विषमचतुर्भुज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषम चतुष्कोण'।

विषमचतुष्कोण—संज्ञा पुं० [सं०] वह चौकोर क्षेत्र जिसके चारों कोण समान न हों। विषम कोणवाला चतुष्कोण।

विषमच्छद—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन का पेड़।

विषमच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] धूपघड़ी के शंकु की दोपहर की छाया (को०)।

विषमज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का ज्वर जो होता तो नित्य है, पर जिसके आने का कोई समय नियत नहीं होता। उ०—जो ज्वर छोड़ दे और फिर आ जावे उसको विषमज्वर कहते हैं।—माधव०, पृ० ७०।

विशेष—इस ज्वर में तापमान भी समान नहीं रहता और नाड़ी की गति भी सदा एक सी नहीं रहती, बराबर बदलती रहती है। इसीलिये इसे विषमज्वर कहते हैं। ज्वर का यह रूप किसी न किसी कारण ज्वर के दबने अथवा पूरी तरह अच्छे न होने पर कुपथ्य करने के कारण होता है। वैद्यक में इसके अनेक भेद कहे गए हैं। जैसे—सतत, अनंत, तृतीयक, चतुर्थक आदि।

२ जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर। जूड़ी बुखार। ३ किसी रोग में होनेवाला ज्वर।

विषमता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ विषम होने का भाव। असमानता। २ वैर। विरोध। द्रोह। ३. अंतर। भेद। फर्क (को०)। ४ उलझन। जटिलता (को०)। ५. भीषणता। भयंकरता।

विषमत्रिभुज—संज्ञा पुं० [सं०] वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज छोटे बड़े हों, समान न हों।

विषमत्व—संज्ञा पुं० [सं०] विषम होने का भाव। विषमता।

विषमदृष्टि—वि० [सं०] ऐंचाताना (को०)।

विषमधातु—वि० [सं०] जिसकी शरीरस्थ धातुएँ अनंतुलित हों। रोगी। अस्वस्थ (को०)।

विषमनयन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

विषमनेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

विषमपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] नतपर्ण वृक्ष (को०)।

विषमपद—वि० [सं०] १ जिसमें असमान पद या चरण हों। जैसे—छंद, कविता। २ असमान या अस्तव्यस्त पैर रखनेवाला।

विषमपलाश—संज्ञा पुं० [सं०] छतिवन का वृक्ष।

विषमबाण—संज्ञा पुं० [सं०] कामदेव (को०)।

विषमबुद्धिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गधनाकुली।

विषमलक्ष्मी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुसमय। दुर्दिन। दुर्भाग्य (को०)।

विषमवल्कल—संज्ञा पुं० [सं०] नारंगी।

विषमबाण—संज्ञा पुं० [सं० विषमबाण] कामदेव का एक नाम।

विषम विभाजन—संज्ञा पुं० [सं०] संपत्ति आदि का असमान विभाजन (को०)।

विषमविलोचन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। त्र्यंबक (को०)।

विषमविशिख—सज्ञा पुं० [सं०] कामदेव का एक नाम।

विषमवृत्त—सज्ञा पु० [स०] वह वृत्त या छद जिसके चरण या पद समान न हो। असमान पदोवाला वृत्त।

विषम व्यूह—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का सैनिक व्यूह। समव्यूह का उलटा व्यूह विशेष दे० 'समव्यूह'।

विषमशर—सज्ञा पुं० [स०] कामदेव [को०]।

विषमशिष्ट—सज्ञा पु० [स०] प्रायश्चित्त आदि के लिये व्यस्था देने के संबध का एक दोष।

विशेष—यह दोष उस समय माना जाता है, जब कोई भारी पाप करने पर हल्का प्रायश्चित्त करने की या हलका पाप करने पर भारी प्रायश्चित करने की व्यवस्था दी जाती है।

विषमशील[1]—सज्ञा पु० [स०] विक्रमादित्य का एक नाम [को०]।

विषमशील[2]—वि० क्रोधी स्वभाववाला। असमान शीलवाला [को०]।

विषमसधि—सज्ञा स्त्री० [स० विषमसन्धि] वह सधि जिसमे शक्ति के अनुसार तत्काल सहायता न दी जाय। समसधि का उलटा। 'तुम आगे से हमारे मित्र रहोगे' इस प्रकार की सधि।

विषमसाहस—सज्ञा पु० [स०] उद्धतपन। उद्दडता [को०]।

विषमस्थ—वि० [स०] सकट मे फँसा हुआ [को०]।

विषमस्पृहा—सज्ञा पुं० [स०] दूसरे का धन हडपने का लालच [को०]।

विषमा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ झरबेरी। २. एक प्रकार का बछनाग।

विषमाक्ष—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

विषमाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार की जठराग्नि।

विशेष—कहते है, यह अग्नि कभी तो खाए हुए पदार्थों को अच्छी तरह पचा देती है और कभी बिल्कुल नही पचाती।

विषमाधुर—सज्ञा पु० [स०] शृगी विष। सीगिया।

विषमान्न—सज्ञा पु० [स० विषम+अन्न] अनियमित आहार [को०]।

विषमायुध—सज्ञा पु० [स०] कामदेव।

विषमावतार—सज्ञा पु० [स० विषम+अवतार] १ असमतल भूमि पर उतरना। २. खतरा मोल लेना [को०]।

विषमावरण—सज्ञा पु० [स० विषमवर्ण] दग्धाक्षर। उ०—धुरूपक ज्यौंही धरे, विषमावरण विशेष।—रघु० रू०, पृ० ११।

विषमाशन—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक के अनुसार ठीक समय पर भोजन न करके समय के पहले या पीछे अथवा थोडा या अधिक भोजन करना जिसके कारण शरीर मे आलस्य या दुर्बलता होती है।

विषमित—वि० [स०] जो विषम किया गया हो। विषम बनाया हुआ [को०]।

विषमुक्—सज्ञा पु० [स० विषमुच्] सर्प। साँप [को०]।

विषमुष्कक—सज्ञा पु० [स०] मैनफल।

विषमुष्टि—सज्ञा पु० [स०] १. जीवती। २. बकायन। ३. मीठी नीम। घोडा नीम। ४. कलिहारी। ५ कुचला।

विषमुष्टिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बकायन।

विषमूला—सज्ञा स्त्री० [स०] शिरामलक। शिर आँवला।

विषमृत्यु—सज्ञा पु० [स०] चकार पक्षी।

विषमेक्षण—सज्ञा पुं० [सं०] महादेव।

विषमेषु—सज्ञा पुं० [स०] कामदेव।

विषय—सज्ञा पुं० [स०] १. वह बडा प्रदेश जिसपर कोई शासन व्यवस्था हो।

विशेष—ग्राम से बडा राष्ट्र और राष्ट्र से बडा विषय माना जाता था। कितने बडे भूभाग को विषय कह सकते थे, इसका कोई निर्दिष्ट मान नही था।

२ वह पदार्थ जिसका ग्रहण ज्ञानेंद्रियो द्वारा होता हो। रूप, रस, गध, स्पर्श और शब्द जिनका सबध क्रमश. आँख, जिह्वा, नाक, त्वचा और कान से है। इंद्रियार्थ (को०)। ३ भौतिक वस्तु (को०)। ४ कारोबार। व्यवसाय (को०)। ५. इंद्रियसुख। वासनात्मक आनद (को०)। ६ विभागसूत्र। ७. पहुँच। परिधि। विस्तार (को०)। ८. लक्ष्य। उद्देश्य (को०)। ९. प्रसग। प्रकरण (को०) १०. वार्य। शुक्र (को०)। ११. स्वामी (को०)। १२ धार्मिक कृत्य (को०)। १३. पाँच की सख्या (को०)। १४. उपमेय। वर्ण्य पदार्थ (को०)। १५. राज्य (को०)। १६ आश्रयस्थल, शरणस्थल (को०)। १७. ग्रामो का समूह (को०)। १८. प्रेमी पति (को०)। १९. शृगार विषयक ग्रथ (को०)।

यौ०—विषयकर्म=भौतिक कृत्य। सासारिक कार्य। विषयकाम=भौतिक पदार्थों या सुखो की कामना। विषयग्राम=ऐंद्रिक विषयो का समूह। विषयज्ञ। विषयज्ञान=सासारिक सुखो का ज्ञान। वासनात्मक ज्ञान। विषयनिरत। विषयनिर्धारिणी समिति। विषयनिह्नुति। विषयपति। विषयरस। विषयसमिति। विषयस्पृहा।

विषयक—अव्य० [स०] विषय का। सबंधी। जैसे,—इस पत्र मे राजनीति विषयक बातें अधिक रहती है।

विषयज्ञ—वि० [स०] विषय का ज्ञाता। किसी विशिष्ट विषय का जानकार [को०]।

विषयता—सज्ञा स्त्री० [स०] विषय का भाव या धर्म।

विषयनिरत—वि० [स०] विषयासक्त। इंद्रियासक्त [को०]।

विषयनिरति—सज्ञा स्त्री० [स०] भोग विलास के प्रति लगाव। सासारिक उपभोग्य पदार्थों के प्रति आसक्ति। विषयासक्ति [को०]।

विषयनिर्द्धारिणी समिति—सज्ञा स्त्री० [स० विषय+निर्द्धारिणी+समिति] दे० 'विषयनिर्वाचिनी समिति'।

विषयनिर्वाचिनी समिति—सज्ञा स्त्री० [स० विषय+निर्वाचिनी+समिति] कुछ विशिष्ट सदस्यो की वह सभा जो किसी महासभा या समेलन मे उपस्थित किए जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तुत करती है। (अ० 'सबजेक्ट कमिटी')।

विषयनिह्नुति—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी विषय के प्रति गोपनीयता का भाव [को०]।

विषयपति—सज्ञा पु० [स०] १. किसी जनपद या छोटे प्रात का राजा या शासक। उ०—श्रेष्ठी नगरशासन तथा जिले के शासन मे नगरपति (जिलाधीश) की सहायता किया करता था।—पू० म० भा०, पृ० १२७। २. राज्यपाल (को०)।

विषयपराङ्मुख—वि० [सं०] सांसारिक सुखों से विमुख। जो विषयों से विमुख हो [को०]।

विषयप्रवण—वि० [सं०] भोगलिप्सु। विषयासक्त [को०]।

विषयप्रसग—सज्ञा पुं० [स० विषयप्रसङ्ग] विषय मे आसक्ति। भोगविलास मे रति [को०]।

विषयरत—वि० [स०] विषयासक्त [को०]।

विषयरस—सज्ञा पुं० [सं० विषय+रस] लौकिक भोग विलास का सुख। विषयानद। उ०—हुआ इस जग मे ऐसा कौन विषयरस किया न जिसने पान?—मधुज्वाल, पृ० ८४।

विषयलोलुप—वि० [सं०] विषयेच्छु। भोगेच्छु [को०]।

विषयविरत—वि० [स०] जो लौकिक विषयों से विरक्त हो। विषयो से पराङ्मुख।

विषयसग—सज्ञा पुं० [स० विषयसङ्ग] विषयो मे रति [को०]।

विषयसमिति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विषयनिर्वाचना समिति।'

विषयसुख—सज्ञा पुं० [स०] विषयानद। इद्रिय सबधी सुख [को०]।

विषयस्नेह—सज्ञा पुं० [स०] विषयैषणा। इद्रिय सबधी पदार्थों की कामना [को०]।

विषयस्पृहा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषयस्नेह'।

विषयात—सज्ञा पुं० [स० विषयान्त] विषय या प्रदश की सीमा [को०]।

विषयातर—सज्ञा पु० [स० विषयान्तर] १ प्रस्तुत वर्ण्य विषय का त्याग कर अन्य विषय का ग्रहण या प्रवर्तन। २ प्रस्तुत या वर्ण्य विषय की उपेक्षा [को०]।

विषया—सज्ञा स्त्री० [सं० विषय] सासारिक भोग्य पदार्थ। उ०—तनमन ताको दीजिए, जाके विषया नाहिं। आपा सबही डारि कै, रहै सनेह माहिं।—कबीर सा० सं०, पृ० २।

विषयाज्ञान—सज्ञा पुं० [स० विषय+अज्ञान] १ विषय को न जानना। तद्रा [को०]।

विषयात्मक—वि० [स०] १ विषय, प्रकरण या प्रसगवाला। २. २ आलस्य। थकावट। इद्रिय सबधी।

विषयाधार—सज्ञा पु० [स० विषय+आधार] विषयो का आश्रय। उ०—आत्मा को विषयाधार बना, दिशि पल के दृश्यो को सँवार। गा, गा, एकोह बहु स्याम, हर लिए भेद, भव भीति भार।—युगात, पृ० ५६।

विषयाधिकृत—सज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय या प्रात का सर्वश्रेष्ठ अधिकारी [को०]।

विषयाधिप—सज्ञा पुं० [स०] किसी छोटे प्रात का राजा या शासक।

विषयाधिपति—सज्ञा पुं० [स०] राजा। विषयाधिप [को०]।

विषयाभिरति—सज्ञा स्त्री० [स०] विषयो या सासारिक सुखो के प्रति अनुराग [को०]।

विषयानुक्रमणिका, विषयानुक्रमणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] ग्रंथादि की विषयसूची।

विषयायी—सज्ञा पुं० [सं० विषयायिन्] १ भौतिकवादी। नास्तिक। २ सांसारिक व्यक्ति। इद्रियसुखों मे लिप्त व्यक्ति। विलासी मनुष्य। ३. प्रेम का देवता। कामदेव। ४ राजा। ५ ज्ञानेंद्रिय।

विषयासक्त—वि० [सं० विषय+आसक्त] भोगरत। विलासी [को०]।

विषयासक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० विषय+आसक्ति] सांसारिक विषयो के प्रति आसक्त होना। लोभ से पति लगाव या प्रेम [को०]।

विषयी'—सज्ञा पुं० [सं० विषयिन्] १ वह जो भोग विलास या विषय आदि मे बहुत अधिक आसक्त हो। विलासी। कामी। २ राजा। ३. कामदेव। ४ जिसके पास बहुत अधिक विषय या धन सपत्ति हो। धनवान। अमीर। ५ विषय को जाननेवाला। विषयज्ञ। उ०—विषयी या ज्ञाता अपने चारों ओर उपस्थित वस्तुओं का कभी कभी अपने तत्कालीन भावों के रग मे देखता है।—चिंतामणि, भा० २, पृ० १८।१६। ६. भौतिकवादी। ७ ज्ञानेंद्रिय (को०)। ८ ज्ञान (को०)। ९ उपमेय। (अलकारशास्त्र)।

विषयी'—वि० कामुक। इद्रियपरायण।

विषयीकरण—सज्ञा पुं० [सं०] किसी वस्तु को विचार का विषय बनाना [को०]।

विषयीय'—सज्ञा पुं० [सं०] विषय। सासारिक पदार्थ।

विषयीय'—वि० विषय सबधी [को०]।

विषयैषी—वि० [सं० विषयैषिन्] विषयलोलुप। भोगेच्छु [को०]।

विषयोपरम—सज्ञा पुं० [सं०] विषयो से उपरम या विरक्ति [को०]।

विषयोपसेवा—सज्ञा स्त्री० [सं०] विषयो के प्रति आसक्ति [को०]।

विषरूपा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. अतिविषा। अतीस। २ मीठी नीम। घोडानीम। ३ ऐकसा।

विषल—सज्ञा पुं० [सं०] विष। जहर।

विषलता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ इद्रवारुणी नाम की लता। २ मृणाल। कमलनाल।

विषलागल—सज्ञा पुं० [सं० विषलाङ्गल] कलिहारी।

विषवचिका—सज्ञा स्त्री० [सं० विषवञ्चिका] बिच्छू नामक पौधा।

विषवल्लरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषवल्ली'।

विषवल्लि, विषवल्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] इद्रवारुणी नाम की लता।

विषविटपी—सज्ञा पुं० [सं० विषविटपिन्] जहरीला पेड [को०]।

विषविद्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] मत्र आदि की सहायता से झाड फूँककर विष उतारने की विद्या।

विषविधान—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'विषविधि'।

विषविधि—सज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन व्यवहारशास्त्र के अनुसार एक प्रकार की परीक्षा या दिव्य जिससे यह जाना जाता था कि अमुक व्यक्ति अपराधी है या नही। विशेष दे० 'दिव्य'।

विषवृक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १ थूहर। २ विष का वृक्ष। विषमय फल देनेवाला वृक्ष। उ०—माँ, क्या कठोर और क्रूर हाथो से ही राज्य सुशासित होता है? ऐसा विषवृक्ष लगाना क्या ठीक होगा।—अजात, पृ० २५।

विषवृक्ष न्याय—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का न्याय जिसके अनुसार अपनी उत्पन्न की हुई हानिकारक वस्तु भी स्वय नष्ट नही करनी चाहिए [को०]।

विषवेग—सज्ञा पुं० [सं०] विष की व्याप्ति। विष की लहर। विष का प्रभाव [को०]।

विषवैद्य—सज्ञा पुं० [स०] वह जो मत्र तत्र आदि की सहायता से विष उतारता हो।

विषवैरिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] निर्विषी नामक घास।

विष व्यवस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] १, शरीर मे विष भिदने की अवस्था। २ विष का प्रभाव [को०]।

विषव्रण—सज्ञा पु० [स०] जहरीला फोडा। जहरबाद [को०]।

विषशालूक—सज्ञा पु० [स०] कमलकद। भसीड।

विषशूक—सज्ञा पु० [स०] भीमरोल नामक कीडा।

विषशृगी—सज्ञा पु० [स० विषशृङ्गिन्] भीमरोल नामक कीडा।

विषसयोग—सज्ञा पु० [स०] सिंदूर। सेंदुर।

विषसूचक—सज्ञा पुं० [स०] चकोर नामक पक्षी।

विषसूक—सज्ञा पुं० [स० विषसूकन्] विषशूक। भृगरोल [को०]।

विषहता'—सज्ञा पुं० [स० विषहन्तृ] सिरेस का पेड।

विषहता[२]—वि० जिससे विष का प्रभाव दूर हो। विषनाशक।

विषहत्री—सज्ञा स्त्री० [सं० विषहन्त्री] १ अपराजिता। २. निर्विषी।

विषह'—वि० [स०] जो विष का नाश करता हो। विषघ्न।

विषह[२]—सज्ञा पु० १ देवदाली। २ निर्विषी।

विषहर—सज्ञा पु० [स०] १ वह औषध या मत्र आदि जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। २ भटेउर। चोरक। धनहर।

विषहरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवदाली। बदाल। २ निर्विषी। ३ मनसादेवी का एक नाम।

विषहरी—सज्ञा स्त्री० [स०] मनसा देवी का एक नाम।

विषहा'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवदाली। बंदाल। २ निर्विषी।

विषहा[२]—सज्ञा पुं० [स० विषहन्] १. वह जो विषघ्न हो या विष दूर करनेवाला हो। २ एक प्रकार का कदव वृक्ष। भुइँकदब। [को०]।

विषहारक—सज्ञा पुं० [स०] भुइँकदब।

विषहारिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी नामक घास।

विषहीन—वि० [सं०] जिसमे विष न हो [को०]।

विषहृदय—वि० [स०] कुटिल मनवाला। कपटी [को०]।

विषहेति—सज्ञा पु० [स०] सर्प [को०]।

विषह्य—वि० [स० वि+सह्य (षह्य)] १ सहन करने योग्य। जो बर्दाश्त किया जा सके। २ जिसका निर्धारण या निश्चय किया जा सके। ३ सभव। शक्य। ४ पराभूत करने योग्य [को०]।

विषाकुर—सज्ञा पुं० [सं० विषाङ्कुर] १ तीर जिसकी नोक विष युक्त हो। २. भाला। कुत (को०)।

विषागना—सज्ञा स्त्री० [सं० विषाङ्गना] दे० 'विषकन्या'।

विषातक—सज्ञा पुं० [स० विषान्तक] १. वह जिससे विष का नाश हो। २ शिव का एक नाम।

विषा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ अतिविषा। अतीस। २. कलिहारी। ३. कडवी कँदूरी। ४ कडवी तरोई। ५. काकोली। ६ बुद्धि। अक्ल।

विषाक्त—वि० [स०] जिसमे विष मिला हो। विषयुक्त। विषपूर्ण। जहरीला।

विषाख्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] अतीस।

विषाग्नि—सज्ञा स्त्री० [सं० विष+अग्नि] विष की ज्वाला या दाह विषप्रयोगजन्य शरीरदाह [को०]।

विषाग्रज—सज्ञा पुं० [स०] कृपाण। तलवार [को०]।

विषाण—सज्ञा पुं० [स०] १. कुट या कुट नामक ओषधि। २ हाथी दाँत। ३ पशु का सीग। ४ मेढासिंगी। ५ वाराहीकद। गँठी। ६ ऋषभक नामक ओषधि। ७. सूपर का दाँत। ८ इमली। ९ फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का सीग का बाजा। शृगी। उ०—क्वणित मजु विषाण हुए कई। रणित शृग हुए बहु साथ ही।—प्रिय०, पृ० २। १० चोटी। सिरा (को०)। ११ कुवाग्र। चुचुक (को०)। १२ अपने वर्ग का प्रधान। १३ तलवार या चाकू (को०)। १४. ककडे का पजा (को०)। १५ सीग जैसी शिव के सिर पर बँधी हुई जटा (को०)।

विषाणक—सज्ञा पुं० [स०] १. हाथी। २ सींग [को०]।

विषाणकोश—सज्ञा पुं० [स०] सीग का खोखला भाग [को०]।

विषाणात—सज्ञा पु० [स० विषाणान्त] गणेश जी का दाँत।

विषाणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेढासिंगी। २. सातला नाम का थूहर। ३. काकडासिंगी। ४ आवर्तकी या भगवतवल्ली नाम की लता। ५ सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओषधि। ७ काकोली।

विषाणी'—सज्ञा पुं० [स० विषाणिन्] १ वह जिसे सीग हो। सीगवाला। २ हाथी। ३ सूअर। ४ साँड। सिंघाडा। ६ ऋषभक नामक ओषधि।

विषाणी[२]—सज्ञा स्त्री० [स०] १. क्षीर काकोली। २ ऋषभक नामक ओषधि। ३ मेढासिंगी। ४. वृश्चिकाली। बिछाती। ५ इमली। ६ सिंघाडा। ७ विष। जहर। ८ भगवतवल्ली या आवर्तकी नाम की लता।

विषाद्—सज्ञा पुं० [स०] हलाहल विष खानेवाले, शिव।

विषाद'—सज्ञा पुं० [सं०] १. खेद। दुख। रज। २ निराशा। हताशा। नैराश्य (को०)। ३ जड या निश्चेष्ट होने का भाव। ४ काम करने को बिलकुल जी न चाहना। थकना। म्लान अवस्था (को०)। ५. मूर्खता। बेवकूफी। ६. एक प्रकार का सचारी भाव (को०)।

विषाद[२]—सज्ञा पु० [स० विष+√अद्(=भक्षण)] विष पीनेवाले शिव। शकर [को०]।

विषाद[2]—वि० विषभक्षी। विष खानेवाला [को०]।

विषादन—संज्ञा पु० [सं०] १ कष्ट। दुःख। खेद। रंज। २ निराशा। ३ एक काव्यालंकार, जो वहाँ होता है जहाँ इच्छा के विपरीत निराशा हाथ लगती है। जैसे—हौं सोई सखि सुपन मे मन भावन के पास। छोर छरा को छुवत ही आनि जगाओ सास।—मति० ग्र०, पृ० ६०।

विषादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पलाशी नाम की लता। २. इंद्रवारुणी।

विषादित—वि० [सं०] विषण्ण। विषादयुक्त। खिन्न [को०]।

विषादिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विषाद का धर्म या भाव।

विषादित्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषादिता' [को०]।

विषादिनी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. पलाशी नाम की लता। २. इंद्रवारुणी।

विषादिनी[2]—वि० स्त्री० [सं०] विष पीनेवाली। उ०—विचर रही निर्मम अबाध तुम, विश्व विषादिनी, लोकप्रसादिनी।—रजत०, पृ० ७६।

विषादी[1]—संज्ञा पुं० [सं० विषादिन्] वह जिसे विषाद हो। विषाद युक्त। दुःखी व्यक्ति।

विषादी[2]—वि० विष खानेवाला [को०]।

विषादाश्रु—संज्ञा पुं० [सं०] दुःख या निराशा के कारण उत्पन्न आँसू।

विषानन—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

विषान्न—संज्ञा पु० [सं० विष+अन्न] विषमिश्रित भोजन [को०]।

विषापवादिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] विष का प्रभाव दूर करने की एक मांत्रिक क्रिया [को०]।

विषापवादी—वि० [सं० विषापवादिन्] विष को दूर करनेवाला [को०]।

विषापह[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोखा नामक वृक्ष। मुष्कक। २. वह जिससे विष का नाश हो। ३ गरुड (को०)।

विषापह[2]—वि० विष का प्रभाव नष्ट कर देनेवाला [को०]

विषापहरण—संज्ञा पुं० [सं०] विष का प्रभाव हटाना [को०]।

विषापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रवारुणी। इंद्रायन। २ निर्विषी। ३ नागदमनी। ४ अर्कपत्री। इसरौन। ५ सर्पकाली। ६ सर्पदमनी। इंद्रपद। ७ त्रिपर्णी नामक कंद।

विषाभावा—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी [को०]।

विषायका—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्विषी।

विषायुध—संज्ञा पु० [सं०] १ साँप। २ वह अस्त्र जो जहर मे बुझाया गया हो। ३ विषैला जंतु (को०)।

विषार—संज्ञा पुं० [सं०] विषैला साँप।

विषारति—संज्ञा पु० [सं०] काला धतूरा।

विषारि[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ महाचंचु या चेंच नामक साग। २ घीकुवार।

विषारि[2]—वि० जिससे विष का नाश होता हो।

विषाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की मछली जिसका मांस वायु और कफ बढ़ानेवाला माना जाता है।

विषालु—वि० [सं०] विषैला। जहरीला [को०]।

विषासहि—वि० [सं०] विजेता। जयी। विजयी [को०]।

विषास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. साँप। २ जहर मे बुझाया हुआ अस्त्र।

विषास्य—संज्ञा पुं० [सं०] साँप।

विषास्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिलावाँ।

विषी[1]—संज्ञा पुं० [सं० विषिन्] १ विषपूर्ण वस्तु। जहरीली चीज। २ विषधर सर्प। जहरीला साँप।

विषी[2]—वि० [हिं०विष ?] विषयुक्त। जहरीला।

विषु—वि० [सं०] १. समान रूप से। २ विविध प्रकार से। अनेक प्रकार से। ३. समान। तुल्य [को०]।

विषुण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषुव'।

विषुण[2]—वि० १ अनेक रूप का। बहुरूपा। २ सर्वग। सर्वगत। ३ विप्रकीर्ण। बिखरा हुआ। ४ पराङ्मुख [को०]।

विषुद्गृह—संज्ञा पुं० [सं०] बाण। तीर।

विषुप—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विषुव'।

विषुप्त—वि० [सं०] गहरी नींद मे पड़ा हुआ। विसुप्त [को०]।

विषुव—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष के अनुसार वह समय जब सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनो बराबर होती हैं।

विशेष—ऐसा समय वर्ष मे दो बार आता है। एक तो मीन चैत मास की नवीं तिथि या अंग्रेजी २१ मार्च का, और दूसरा तौल आश्विन की नवीं तिथि या अंग्रेजी २२ सितंबर को। विशेष दे० 'विषुव रेखा'।

यौ०—विषुवच्छाया। विषुवदिन। विषुवरेखा। विषुवसमय।

विषुवच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] दोपहर के समय पड़नेवाली धूपघड़ी के शंकु की छाया [को०]।

विषुवत्—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'विषुव'।

विषुवत्रेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विषुवरेखा'।

विषुवद्वलय—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवरेखा।

विषुवद्वृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवरेखा।

विषुवद्दिन, विषुवद्दिवस—संज्ञा पुं० [सं०] वह दिन जब दिन और रात बराबर हो (को०)।

विषुवद्देश—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवरेखा के नीचे आनेवाले देश या भूभाग [को०]।

विषुवरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्योतिष के कार्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वी तल पर उसके ठीक मध्यभाग मे बेडे बल मे या पूर्व पश्चिम पृथ्वी के चारो मानी जाती है।

विशेष—यह रेखा दोनो मेरुओं के ठीक मध्य मे दोनो से समान अंतर पर है। आकाश मे इस रेखा से उत्तर की ओर मेष से कन्या तक की पहली छह राशियाँ और दक्षिण की ओर तुला से मीन तक की छह राशियाँ हैं। इसे 'निरक्ष वृत्त' भी कहते हैं।

विषूचक—संज्ञा पुं० [सं०] विसूचिका नामक रोग।

विषूचिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विसूचिका'। उ०—जिस अजीर्ण मे वादी देह को सुई के सदृश पीडा देय अर्थात् सूई सी चुभे उसको वैद्य विषूचिका कहते हैं।—माधव०, पृ० ६६।

विषै(पु)—सज्ञा पु० [स० विषय] दे० 'विषय' उ०—विषई विषै सब विष की खानी। ए सब कहिए जम सहिदानी।—कबीर सा०, पृ० ८०६।

विषैक(पु)—वि० [स० विषयक] दे० 'विषयक'। उ०—(क) सुत विषैक तव पद रति होऊ।—मानस, १।१५१। (ख) अब सुनि कृष्ण विषैक निरोध। जदपि अनत अखडित बोध।—नद० ग्र०, पृ० २१७।

विषैला—वि० [स० विष+हि० एला (प्रत्य०)] विषवाला। जहरीला।

विषौषधी—सज्ञा स्त्री० [स०] नागदंती।

विष्कंद—सज्ञा पुं० [स० विष्कन्द] १ तितर बितर होना। बिखरना। २. जाना। गमन। दूर गमन [को०]।

विष्कध—सज्ञा पु० [स० विष्कन्ध] १ वह जो गति को रोकता हो। २. बाधा। विघ्न।

विष्कधाजीर्ण—सज्ञा पु० [स० विष्कन्धाजीर्ण] एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

विशेष—रोग जिसमे रोगी के शरीर मे शूल के समान पीडा होती है, उसका पेट फूल जाता है और वह मल या अपान वायु का त्याग नही कर सकता।

विष्कभ—सज्ञा पुं० [स० विष्कम्भ] १ फलित ज्योतिष के अनुसार सत्ताईस योगो मे से पहला योग।

विशेष—आरंभ के पाँच दंडो को छोडकर शुभ कार्य के लिये यह योग बहुत अच्छा समझा जाता है। कहते हैं, इस योग मे जन्म लेनेवाला मनुष्य सब बातो मे स्वाधीन और भाई बंधु आदि से सदा सुखी रहता है।

२. विस्तार। ३ बाधा। विघ्न। ४ साहित्यदर्पण के अनुसार नाटक का एक प्रकार का अक जो प्रायः गर्भांक के समीप होता है। उ०—आज अमरता का जीवित हूँ मैं वह भीषण जर्जर दंभ, आह सर्ग के प्रथम अक का अधम पात्र मय सा विष्कभ।—कामायनी, पृ० १८।

विशेष—जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जो अभी होनेवाली हो, उसकी इसमे मध्यम पात्रो द्वारा सूचना दी जाती है। यह दो प्रकार का होता है—शुद्ध और सकीर्ण। जब एक या अनेक मध्यम पात्र इसका प्रयोग करते हैं, तब यह शुद्ध कहलाता है। और जब मध्यम तथा नीच पात्रो द्वारा इसका प्रयोग होता है, तब इसे सकीर्ण कहते है। शुद्ध विष्कभ मे मध्यम पात्रो का वार्तालाप सस्कृत भाषा मे और सकीर्ण विष्कभ मे मध्यम तथा नीच पात्रो का वार्तालाप प्राकृत भाषा मे होता है। शुद्ध का उदाहरण मालतीमाधव के पाँचवें अक मे कुडलाकृत प्रयोग और सकीर्ण का रामाभिनद मे चपणक और कापालिककृत प्रयोग है।

५ योगियो का एक प्रकार का वध। ६ वाराहपुराण के अनुसार एक पर्वत का नाम। ७. वृक्ष। पेड़। ८. अर्गल। ब्योडा। ९ दे० 'बडेरा।' बँडेरी (को०)। १०. स्तंभ। खभा (को०)। ११ मथनदड जिसमे रस्सी लपेटकर दधिमथन करते हैं (को०)। १२ किसी वृत्त या घेरे का व्यास (को०)। १३ क्रियाशीलता। कार्य मे निरत रहना (को०)।

विष्कभक—सज्ञा पु० [स० विष्कम्भक] दे० 'विष्कभ'।

विष्कभन—सज्ञा पुं० [स० विष्कम्भन] १ बाधा उपस्थित करना। २ विस्तृत करना। ३. विदारण करने, खोलने या फाडने का उपकरण [को०]।

विष्कंभित—वि० [स० विष्कम्भित] १ बाधायुक्त। अवरुद्ध २. दूरीकृत। अस्वीकृत। ३. (किसी वस्तु से) पूर्णत. युक्त [को०]।

विष्कभी'—सज्ञा पुं० [स० विष्कम्भिन्] १. शिव जी का एक नाम। २ अर्गल। ब्योडा। ३. एक तात्रिक देवी (को०)। ४ एक बोधिसत्व (को०)।

विष्कंभी'—वि० बाधा डालनेवाला। बाधक [को०]।

विष्क—सज्ञा पुं० [स०] वह हाथी जिसकी अवस्था बीस वर्ष की हो गई हो।

विष्कन्न—वि० [स०] १. इतस्तत. बिखरा हुआ। २. गत। जो चला गया हो [को०]।

विष्कब्ध—वि० [स०] स्थिर किया हुआ। जिसे टिकाया गया हो। अवलबित [को०]।

विष्कर—सज्ञा पु० [स०] १. पक्षी। चिडिया। २ अर्गल। ब्योडा। ३. एक दानव का नाम। ४. युद्ध का एक ढंग (को०)।

विष्कल—सज्ञा पु० [स०] सूअर। ग्रामशूकर।

विष्कलन—सज्ञा पु० [स०] भोजन। आहार।

विष्किर—सज्ञा पुं० [स०] १. पक्षी। चिडिया। २. वे पक्षी जो अन्न को इधर उधर छितराकर नखो से कुरेदकर खाते हैं। जैसे,—कबूतर, मुरगा, तीतर, बटेर आदि। ३ दर्वीकर नामक जाति के साँपो के अंतर्गत एक प्रकार का साँप। ४. एक अग्निविशेष (को०)। ५ फाडकर टुकडे टुकडे करना (को०)।

विष्कुभ—सज्ञा पु० [स० विष्कुम्भ] दे० 'विष्कभ' १।

विष्टभ—सज्ञा पु० [स० विष्टम्भ] १ बाधा। रुकावट। २. एक प्रकार का रोग जिसमे मल रुकने के कारण रोगी का पेट फूल जाता है। अनाह। विबध। ३ आक्रमण। चढाई। ४. अच्छी तरह से जमाना। ७ कदम रखना। डग भरना (को०)। ८. अवलब आसरा। सहारा (को०)। ९ सहन। बरदाश्त (को०)।

विष्टभन—सज्ञा पु० [स० विष्टभन] १. रोकने या सकुचित करने की क्रिया। २ वह जो रोकता या सकुचित करता हो।

विष्टभित—वि० [स० विष्टम्भित] १ मजबूती से खडा किया हुआ। अच[illegible]। २ (किसी वस्तु से) भरा या पूर्ण ढका

विष्टभी'[illegible]० विष्टम्भिन्] वह पदार्थ जिससे पेट का मल

[illegible] देनेवाला। २ स्तभित करने
[illegible]भ रोग युक्त। ४. विष्टंभ रो

विष्ट—वि० [स० विश्+क्त (प्रत्य०)] १. प्रविष्ट। घुसा हुआ। २ सहित। युक्त (को०)।

विष्टप—सज्ञा पुं० [स०] १ भुवन। लोक। २ पात्र। प्याला (को०)।

विष्टपहारी—वि० [सं० विष्टपहारिन्] भुवनमोहन। सबको लुभानेवाला (को०)।

विष्टप्[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ स्वर्ग लोक। २. जगत्। दुनिया। भुवन। ससार (को०)।

विष्टप्[2]—सज्ञा स्त्री० सिरा चोटी। ऊँचाई (को०)।

विष्टब्ध—वि० [स०] १ अच्छी तरह से जमाया हुआ। २ टेक लगा हुआ। सहारा दिया हुआ। ३ रोका हुआ। अवरुद्ध। स्तभित। गतिहीन। ५ भरा हुआ। ६ जो पचा न हो। ७ कठोर। कर्कश। कडा (को०)।

विष्टब्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] टेक लगाना या देना। सहारा देना। मजबूती से स्थिर करना (को०)।

विष्टभ—सज्ञा पु० [स०] लोक। ससार (को०)।

विष्टभित—वि० [स०] जो घर अपनी जगह दृढतापूर्वक स्थापित किया हुआ हो (को०)।

विष्टर[1]—वि० [स०] विस्तृत। लवा चौडा (को०)।

विष्टर[2]—सज्ञा पुं० [स०] १ आक। मदार। २ वृक्ष। पेड। ३ पीठ। ४. कुश का बना हुआ आसन। कुशास्तर। आसन। ५ मुट्ठी भर कुश (को०)। ६ यज्ञ में ब्रह्मा का आसन (को०)। ७ पचीस कुशाओ से बना हुआ एक आसन। ८ एक देवता (को०)।

विष्टरपक्ति—सज्ञा स्त्री० [स० विष्टरपङ्क्ति] एक वैदिक छद।

विष्टरबृहती—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वैदिक छद।

विष्टरभाक्—वि० [स० विष्टरभाज्] जो आसन पर उपविष्ट हो। आसन पर बैठा हुआ (को०)।

विष्टरश्रवा—सज्ञा पुं० [स० विष्टरश्रवस्] १. विष्णु। नारायण। २ २ कृष्ण (को०)। ३ शिव (को०)।

विष्टरस्थ—वि० [सं०] आसन पर बैठा हुआ (को०)।

विष्टरा—सज्ञा स्त्री० [स०] गुडासिनी नामक घास।

विष्टराश्व—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार पृथु के एक पुत्र का नाम।

विष्टरुहा—सज्ञा स्त्री० [स०] पीली केतकी।

विष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'विष्ठा'।

विष्टार—सज्ञा पुं० [सं०] १ कुश या घास का आस्तरण। २ एक वैदिक छद (को०)।

विष्टारपक्ति—सज्ञा स्त्री० [स० विष्टारपङ्क्ति] एक प्रकार का वैदिक छद जिसके प्रथम और चतुर्थ चरणो मे १२ वर्ण होते है।

विष्टारबृहती—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वैदिक छंद का नाम जिसके पहले और चौथे चरणो मे ८ और दूसरे तथा तीसरे चरणो मे १० वर्ण होते है।

विष्टारी—वि० [सं० विष्टारिन्] विस्तारयुक्त। विस्तृत। आयामयुक्त। फैला हुआ (को०)।

विष्टि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह काम जो बिना कुछ पुरस्कार दिए कराया जाय। बेगार। २ वेतन। तनख्वाह। ३ काम। ४ वर्षा। ५ फलित ज्योतिष के ग्यारह करणो मे से सातवाँ करण जिसे विष्टिभद्रा भी कहते हैं। उ०—विष्टि करण नाम से कही जाती है।—बृहत्०, पृ० ४४२। ६. व्याप्ति। फैलाव (को०)। ७ प्रेषण। भेजना (को०)। ८ दे० विष्टिकारी' (को०)। ९. नरकवास। नरक मे पडना (को०)।

विष्टिकर—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन काल मे राज्य का वह बडा सैनिक कर्मचारी जिसे अपनी सेना रखने के लिये राज्य की ओर से जागीर मिला करती थी। २ अत्याचारी। ३ बेगारो या दासो का अधिकारी (को०)।

विष्टिकर्मांतिक—सज्ञा पु० [स० विष्टिकर्मान्तिक] विष्टिकारी। वह जिससे बिना भृति दिए काम कराया जाय (को०)।

विष्टिकारी—सज्ञा पु० [स० विष्टिकारिन्] दे० 'विष्टिकर्मांतिक' (को०)।

विष्टिकृत्—सज्ञा पुं० [स०] बेगार। सेवक। दास (को०)।

विष्टिभद्रा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विष्टि'—५।

विष्टिव्रत—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्रकार का व्रत।

विष्ठल—सज्ञा पु० [स०] दूर का स्थान। दूरवर्ती स्थान। वह जगह जो निकट न हो (को०)।

विष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मल। मैला। गुह। पाखाना। २ पेट। उदर (को०)। ३ मध्यभाग। अंतर (को०)।

विष्ठाभुक्—सज्ञा पुं० [स०] सूअर।

विष्ठाभू—सज्ञा पुं० [स०] मल मे उत्पन्न होनेवाला कृमि (को०)।

विष्ठाभूदारक—सज्ञा पुं० [स०] ग्रामशूकर (को०)।

विष्ठारुहा—सज्ञा स्त्री० [स०] पीली केतकी।

विष्ठाशी—सज्ञा पुं० [स० विष्ठाशिन्] सूअर।

विष्ठित—वि० [स०] उपस्थित। पार्श्ववर्ता (को०)।

विष्ठेष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] हल्दी।

विष्णु—सज्ञा पुं० [स०] १ हिंदुओ के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरण, पोषण और पालन करनेवाले तथा ब्रह्मा के एक विशेष रूप माने जाते हैं।

विशेष—भारतवर्ष मे विष्णु को देवता के रूप मे बहुत दिनो से मानते चले आते है और इनकी उपासना बहुत अधिकता से होती आई है। ऋग्वेद मे यद्यपि विष्णु गौण देवता माने गए है, पर ब्राह्मण ग्रंथो मे इनका महत्व बहुत अधिक है। ऋग्वेद मे विष्णु विशाल शरीरवाले और युवक मान गए है और कहा गया है कि ये त्रि+वि+क्रम अर्थात् तीन कदमो या डगो से सारे विश्व को अतिक्रमण करनेवाले है। पुराणो के वामन अवतार का यही बीज रूप है। कुछ लोगो ने इन तीनो डगो या कदमो का अर्थ सूर्य का दैनिक उदय और अस्त माना है और कुछ लोग इसका अर्थ भूर्लोक, भुवर्लोक और स्वर्गलोक लेते हैं। इसके अतिरिक्त ये नियमित रूप, बहुत दूर तक और जल्दी जल्दी चलनेवाले मान गए हैं। यह भी कहा गया है कि ये इद्र के मित्र थे और वृत्र के साथ युद्ध करने मे इन्होने इद्र को सहायता दी थी। विष्णु और इद्र दोनो मिलकर वातावरण,

अंतरिक्ष, सूर्य, उषा और अग्नि के उत्पादक माने गए हैं और विष्णु इस पृथ्वी, स्वर्ग और सब जीवों के मुख्य आधार कहे गए हैं। ऋग्वेद और शतपथ ब्राह्मण में कुछ ऐसी कथाएँ भी हैं जो पौराणिक काल के वराह, मत्स्य तथा कूर्म अवतार का भी मूल या आरंभिक रूप मानी जा सकती हैं। वैदिक काल में विष्णु धन, वीर्य और बल देनेवाले तथा सब लोगों का अभीष्ट सिद्ध करनेवाले माने जाते थे। पुराणों के अनुसार विष्णु समय पर पृथ्वी का भार हलका करने के लिये, संसार में शांति और सुख की स्थापना करने के लिये और दुष्टों तथा पापियों का नाश करने के लिये अवतार धारण किया करते हैं। विष्णु के कुल चौबीस अवतार कहे गए हैं, जिनमें से दस मुख्य माने गए हैं (दे० 'अवतार')।

भिन्न भिन्न पुराणों में विष्णु के संबंध में अनेक प्रकार की कथाएँ और उनकी उपासना आदि का बहुत अधिक माहात्म्य मिलता है। विष्णु के उपासक वैष्णव कहलाते हैं। इनकी स्त्री का नाम श्री या लक्ष्मी कहा गया है। ये युवक, श्यामवर्ण और चतुर्भुज माने गए हैं। ये चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए रहते हैं। इनके शंख का नाम पांचजन्य, चक्र का नाम सुदर्शन और गदा का नाम कौमोदकी है। इनकी तलवार का नाम नंदक और धनुष का नाम शार्ङ्ग है। इनका वाहन वैनतेय नामक गरुड़ माना जाता है। पुराणों में इनके एक हजार नाम माने गए हैं, और उन नामों का जप बहुत शुभ फल देनेवाला माना जाता है। नारायण, कृष्ण, वैकुंठ, दामोदर, केशव, माधव, मुरारि, अच्युत, हृषीकेश, गोविंद, पीतांबर, जनार्दन, चक्रपाणि, श्रीपति, मधुसूदन, हरि आदि इनके प्रसिद्ध नाम हैं।

२ अग्नि। ३. वसु देवता। ४ बारह आदित्यों में से पहले आदित्य का नाम। ५ एक प्राचीन ऋषि जिनका बनाया हुआ धर्मशास्त्र प्रचलित है। ६ श्रवण नाम का नक्षत्र (को०)। ७ वह जो पुण्यात्मा हो। संत (को०)।

विष्णुऋक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] श्रवण नक्षत्र का एक नाम।

विष्णुकंद—संज्ञा पुं० [सं० विष्णुकन्द] एक प्रकार का बड़ा कंद जो प्रायः कोंकण प्रदेश में होता है। वैद्यक में यह मधुर, शीतल, रुचिकारी, तृप्तिकारक तथा दाह, पित्त और सूजन को दूर करनेवाला माना जाता है।

पर्या०—विष्णुगुप्त। सुपुष्ट ? (सुपुट)। बहुसपुट। जलवासा। वृहत्कंद। दीर्घपत्र। हरिप्रिय।

विष्णुकांची—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकाञ्ची] दक्षिण के एक प्राचीन तीर्थ का नाम। कहते हैं कि इसकी स्थापना शंकराचार्य ने की थी।

विष्णुकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकान्ता] नीली अपराजिता। नीली कोयल लता।

विष्णुकांती—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुकान्ती] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विष्णुकाक—संज्ञा पुं० [सं०] नीला अपराजिता। नीली कोयल लता।

विष्णुक्रांत—संज्ञा पुं० [सं० विष्णुक्रान्त] १ इश्कपेंचा नामक लता या उसका फूल। २. संगीत में एक प्रकार का ताल।

विष्णुक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुक्रान्ता] १. नीली अपराजिता या कोयल नाम की लता। २ वाराहीकंद। गेंठी। ३ नीले फूलवाली शंखाहुली।

विष्णुक्रांति—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुक्रान्ति] अपराजिता या कोयल नाम की लता।

विष्णुक्षेत्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

विष्णुगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुगङ्गा] एक प्राचीन नदी का नाम।

विष्णुगंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुगन्धि] लाल फूल की शंखाहुली।

विष्णुगुप्त—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो लोक में कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध थे। कहते हैं, एक बार शिव जी इनपर बहुत कुपित हुए थे। उस समय विष्णु ने इनकी रक्षा की थी। २ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम। विशेष दे० 'चाणक्य'। ३. बड़ी मूली। ४. विष्णुकंद। ५ वात्स्यायन मुनि का नाम (को०)।

विष्णुगुप्तक—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ी मूली।

विष्णुगृह—संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु भगवान का मंदिर। २ एक नगर। स्तंबपुर। ताम्रलिप्त (को०)।

विष्णुगोल—संज्ञा पुं० [सं०] विषुवत् रेखा (को०)

विष्णुग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० विष्णुग्रन्थि] शरीर की एक संधि (को०)।

विष्णुचक्र—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु के हाथ का चक्र। सुदर्शन चक्र।

विष्णुज—संज्ञा पुं० [सं०] अठारहवाँ कल्प का नाम (को०)।

विष्णुज'—वि० जो विष्णु नक्षत्र में उत्पन्न हो। श्रवण नक्षत्र में जन्म लेनेवाला (को०)।

विष्णुजन—संज्ञा पुं० [सं०] संत। महात्मा। तपस्वी (को०)।

विष्णुतिथि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियाँ जिनके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

विष्णुतैल—संज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का तेल जो वातरोगों के लिये बहुत उपकारी माना जाता है।

विष्णुत्व—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का भाव या धर्म।

विष्णुदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] राजा परीक्षित का एक नाम (को०)।

विष्णुदेवत—संज्ञा पुं० [सं०] श्रवण नामक नक्षत्र जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

विष्णुदैवत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसके अधिष्ठाता देवता विष्णु हों। २. श्रवण नक्षत्र (को०)।

विष्णुदैवत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ के प्रत्येक पक्ष की एकादशी और द्वादशी तिथि। विष्णु तिथि (को०)।

विष्णुद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

विष्णुधर्म—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह धर्म जिसमें विष्णु का वैदिक उपासना होती है। २ एक प्रकार का श्राद्ध (को०)।

विष्णुधर्मोत्तर—संज्ञा पुं० [सं०] एक उपपुराण का नाम जो विष्णु पुराण का एक अंग माना जाता है।

विष्णुधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ पुराणानुसार हिमालय से निकली हुई एक नदी का नाम।

विष्णुपजर—सज्ञा पुं० [सं० विष्णुपञ्जर] पुराणानुसार विष्णु का एक कवच।

विशेष—कहते हैं, यह कवच धारण करने से सब प्रकार के भय दूर हो जाते हैं।

विष्णुपत्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की स्त्री, लक्ष्मी। २ अदिति का एक नाम।

विष्णुपद—सज्ञा पु० [स०] १ कमल। २. आकाश। आसमान। वियद्। ३ विष्णु का चरणचिह्न जो गया मे है (को०)। ४ क्षीरसागर, दुग्ध समुद्र (को०)। ४ महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम (को०)। ६ एक पर्वत (को०)। ७ भौहो का मध्य भाग। भ्रूमध्य (को०)।

विष्णुपदी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गगा नदी जो विष्णु के पैरो से निकली हुई मानी जाती है। २ वृष, वृश्चिक, कुभ और सिंह इनमे से प्रत्येक की सक्राति। ३ द्वारिका पुरी (को०)।

विष्णुपदीचक्र—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष मे शुभाशुभ फल का ज्ञापक एक नराकार चक्र (को०)।

विष्णुपरायण—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु का भक्त, वैष्णव।

विष्णुपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पृश्निपर्णी। पिठवन।

विष्णुपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] भुइँआँवला।

विष्णुपीठ—सज्ञा पुं० [स०] तात्रिको के अनुसार एक पीठ या तीर्थ-स्थान का नाम।

विष्णुपुराण—सज्ञा पु० [स०] अठारह प्रमुख पुराणो मे से एक।

विष्णुपुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] विष्णु के रहने का स्थान, वैकुठ।

विष्णुप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तुलसी का पौधा। २ लक्ष्मी।

विष्णुप्रीति—सज्ञा स्त्री० [सं०] विष्णु की पूजा के निमित्त ब्राह्मण को दी जानेवाली भूमि (को०)।

विष्णुभ—सज्ञा पु० [स०] विष्णु नक्षत्र। श्रवण नक्षत्र (को०)।

विष्णुभक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] भगवत्सेवा (को०)।

विष्णुमाया—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।

विष्णुमित्र—सज्ञा पु० [स०] सार्वलौकिक नाम। अमुक। फलाँ (को०)।

विष्णुयशा—सज्ञा पु० [स० विष्णुयशस्] पुराणानुसार वह व्यक्ति जो ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता होगा।

विष्णुयान—सज्ञा पु० [स०] गरुड (को०)।

विष्णुरथ—सज्ञा पुं० [स०] गरुड।

विष्णुरात—सज्ञा पु० [स०] राजा परीक्षित का एक नाम।

विशेष—कहते है, अश्वत्थामा ने इन्हे गर्भ मे ही मार डाला था, पर विष्णु ने इन्हे फिर से जिला दिया, इसी से इनका यह नाम पडा।

विष्णुलिंगी—सज्ञा स्त्री० [स० विष्णुलिङ्गी] बटेर।

विष्णुलोक—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का निवासस्थान, वैकुठ। गोलोक।

विष्णुवल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तुलसी का पौधा। २ लक्ष्मी (को०)। ३. अग्निशिखा। कलिहारी।

विष्णुवाहन—सज्ञा पु० [स०] गरुड।

विष्णुवाह्य—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विष्णुवाहन'।

विष्णुवृद्ध—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

विष्णुशक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] लक्ष्मी।

विष्णुशिला—सज्ञा स्त्री० [सं०] शालिग्राम।

विष्णुशृखल—सज्ञा पु० [सं० विष्णुशृङ्खल] वह द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र मे हो। इसको गणना योग और पुण्यकाल मे होती है।

विष्णुश्रुत—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ एक प्रकार का आशीर्वाद वचन जिसका अभिप्राय है कि यह सुनकर विष्णु तुम्हारा मगल करें।

विष्णुसहिता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रसिद्ध स्मृति का नाम।

विष्णुसर्वज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रसिद्ध आचार्य जो सायण के गुरु माने जाते हैं।

विष्णुस्मृति—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध स्मृति जिसका उल्लेख याज्ञवल्क्य आदि ने किया है।

विष्णुस्वामी—सज्ञा पुं० [स० विष्णुस्वामिन्] कृष्णभक्तिपरक विष्णु-स्वामी सप्रदाय के प्रवर्तक का नाम। उ०—इन विष्णु स्वामी सप्रदाय दृढ करि ताको सार जो सेवा प्रकार ताको प्रकास कियो है।—दो सौ बावन०, भ० १, पृ० १४४।

विष्णुहिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. तुलसी का पौधा। २ मरुआ।

विष्णूत्तर—सज्ञा पुं० [स०] वह भूदान जो विष्णुपूजा के निमित्त किया जाय (को०)।

विष्पद—सज्ञा पु० [स० विष्पन्द] १. स्पदन। धडकन। २ आटे, घी और चीनी से बना हुआ एक व्यजन (को०)।

विष्पदन—सज्ञा पु० [स० विष्पन्दन] दे० 'विष्पंद'।

विष्पत्री—सज्ञा पुं० [स०] पक्षी। चिडिया।

विष्पर्धा[1]—सज्ञा पु० [स० विष्पर्धन्] स्वर्ग।

विष्पर्धा[2]—वि० जिस किसी प्रकार की स्पर्धा या मत्सर आदि न हो।

विष्पर्धा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] स्पर्धा। होड। लाग डाँट (को०)।

विष्पित—सज्ञा पु० [स०] कठिनता। कठिनाई। मुश्किल (को०)।

विष्पुलिंगक—वि० [स०] चिनगारी या स्फुलिंग युक्त (को०)।

विष्फार—सज्ञा पु० [स०] १ धनुष की टकार। २, विस्तार। फैलाव। विस्फार (को०)।

विष्फुलिंग—सज्ञा पुं० [स०] आग की चिनगारी। अग्निकण (को०)।

विष्यद—सज्ञा पु० [स० विष्यन्द] १ बूँद। विंदु। २ बहना। क्षरण। प्रवाह।

विष्यदन—सज्ञा पुं० [स० विष्यन्दन] १. बहना। चूना। २. एक मिठाई। दे० 'विष्यद'। ३ उफनकर बहना। ४. पिघलना। तरल होना (को०)। ५. विलीन होना। मिल जाना।

विष्यदी—वि० [स० विष्यन्दिन्] प्रवाही। तरल (को०)।

विष्य—वि० [स०] जो विष देकर मार डालने के योग्य हो। जहर देकर मार डालने के लायक।

विष्व—वि० [स०] १. हानिकर। पीडाकर। उत्पातकारी। २. हिंसक। हिंस्र (को०)।

विष्वक्[1]—संज्ञा पु० [सं० विष्वच्] १ वह जो सदा इधर उधर घूमता फिरता रहे। २ ... 'विषुव'।

विष्वक्[2]—क्रि० वि० सर्वत्र। चारो ओर [को०]।

विष्वक्[3]—वि० सर्वत्र जानेवाला। सर्वव्यापक। २. विभागो मे अलग अलग करनेवाला। ३ भिन्न।

विष्वक्पर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भुइँआँवला।

विष्वक्सेन—संज्ञा पु० [सं०] १. विष्णु का एक नाम। २ एक मनु का नाम जो मत्स्यपुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णुपुराण के अनुसार चौदहवें हैं। ३. शिव का एक नाम। ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ५ पुराणानुसार शकर के एक पुत्र का नाम। ६ विष्णु का एक पार्षद (को०)।

यौ०—विष्वक्सेनकाता = प्रियगु। विष्वक्सेनप्रिया = (१) प्रियगु। (२) लक्ष्मी।

विष्वक्सेना—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्रियगु।

विष्वग्गति—वि० [सं०] सर्वत्र गमन करनेवाला [को०]।

विष्वग्लोप—संज्ञा पु० [सं०] दुबधा। संभ्रम। सक्षोभ। विघ्न।

विष्वग्वात, विष्वग्वायु—संज्ञा पुं० [सं०] सब ओर से बहनेवाली एक प्रकार की वायु।

विष्वाणन—संज्ञा पु० [सं०] १. भोजन। २. क्वणित करना। शब्द उत्पन्न करना [को०]।

विष्वाण—संज्ञा पु० [सं०] भोजन। खाना [को०]।

विसकट[1]—संज्ञा पुं० [सं० विसङ्कट] १. इगुदी या हिंगोट नामक वृक्ष। २. सिंह। शेर।

विसकट[2]—वि० विशाल। खौफनाक। बडा। डरावना।

विसकुल[1]—वि० [सं० विसङ्कुल] सकुलतारहित। आकुलतारहित। धैर्यवान्। सुस्थिर।

विसकुल[2]—संज्ञा पु० अव्यग्रता। व्यग्र न होना। घबराहट न होना [को०]।

विसगत—वि० [सं० विसङ्गत] असगत। बेमेल [को०]।

विसगति—संज्ञा स्त्री० [सं० विसङ्गति] असगति। अनमिलपन।

विसचारी—वि० [सं० विसञ्चारिन्] इतस्तत भ्रमणशील। इधर उधर घूमनेवाला।

विसज्ञ—वि० [सं०] जिसे सज्ञा न हो। बेहोश।

विसज्ञित—वि० [सं०] सज्ञाहीन [को०]।

विसधि—संज्ञा स्त्री० [सं० विसन्धि] १ बुरी सधि। अभिसधि। अनभिमत सधि। २. सधि का अभाव जो साहित्य मे एक दोष है [को०]।

विसधिक—वि० [सं० विसन्धिक] जिनकी सधि न हो सकती हो।

विसभर—संज्ञा पु० [सं० विश्वम्भर] दे० 'विश्वभर'। उ०—तू मेरो बालक हो नदनदन, तोहि विसभर राखैं।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० २३४।

विसभरा—संज्ञा स्त्री० [सं० विसम्भरा] पत्नी। छिपकली [को०]।

विसभोग—संज्ञा पु० [सं० विसम्भोग] विरह। पार्थक्य [को०]।

विसंमूढ़—वि० [सं० विसम्मूढ] पूर्णत उन्मत्त [को०]।

विसयुक्त—वि० [सं०] असंयुक्त। पृथक् [को०]।

विसवाद[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. विरोध। २. डींट डपट। ३. धोखा। प्रतिज्ञाभग (को०)। ४ असंगति। असबद्धता। असहमति (को०)। ५ निराश करना (को०)।

विसवाद[2]—वि० विलक्षण। अद्भुत।

विसवादक—वि० [सं०] १. वचन भंग करनेवाला। कहकर मुकर जानेवाला। २ छली। धोखेबाज [को०]।

विसवादन—संज्ञा पुं० [सं०] प्रतिज्ञा भग करना [को०]।

विसवादी[1]—वि० [सं० विसवादिन्] १. वचक। धूर्त। २ वचन या प्रतिज्ञा का पालन न करनेवाला। ३. निराश करनेवाला। ४. खडन करनेवाला। भिन्न मत रखनेवाला। असहमत [को०]।

विसवादी[2]—संज्ञा पुं० राग मे अल्पप्रयुक्त स्वर जो सवादी के विरुद्ध होता है (संगीत)।

विसंष्ठुल—वि० [सं०] १ अस्थिर। क्षुब्ध। व्यग्र। २ जो हमवार न हो। असमतल [को०]।

विसहत—वि० [सं०] १ अलग किया हुआ। ढीला किया हुआ [को०]।

विस[1]—संज्ञा पु० [सं०] कमल की नाल। मृणाल।

विस†[2]—सर्व० [सं० युष्मद्>वस्] दे० 'उस'।

विसकठिका—संज्ञा स्त्री० [सं० विसकण्ठिका] एक प्रकार का छोटा बगला।

विसकुसुम—संज्ञा पु० [सं०] कमल।

विसक्ख—संज्ञा पु० [सं० विशिख] विशिख। बाण। उ०—उभे दले उचारयं, मचे सु मार मारय। विसक्ख, पारवारए, भडं सनाह मारए।—रा० रू०, पृ० ८३।

विसग्रथि—संज्ञा पुं० [सं० विसग्रन्थि] कमलकद। भसीड।

विसज—संज्ञा पुं० [सं०] कमल।

विसटी†—संज्ञा स्त्री० [देश० तुल० विष्टी] १. तांबे या पीतल का वह चक्र जिससे नागेसाधु लँगोटी की तरह बाँधते हैं। उ०—कवन मेखला कवन विसटी। कवन सेली कवन किसती।—प्राण०, पृ० ७६। २. कौपीन। चिट। चीरा।

विसतरना—क्रि० अ० [सं० विस्तरण] फैलना। विस्तृत होना। उ०—विसतरी वात सारी विसव अणाकारी उतपात सी।—रा० रू०, पृ० ६४।

विसदृश—वि० [सं०] १. जो सदृश या समान न हो। विपरीत। विरुद्ध। उलटा। २ विलक्षण। अद्भुत। अजीब।

विसद्द—वि० [सं० विशद] निर्मल। स्वच्छ। दे० 'विशद'। उ०—गुलिक कर्ण राजही। विसद हार साजही। पदिक सीस शोभयं रिपीस पुंज लोभयं।—प० रासो, पृ० १०।

विसन†—संज्ञा पुं० [सं० विष्णु] दे० 'विष्णु'।

विसनाभि—संज्ञा पुं० [सं०] कमलिनी। पद्मिनी।

विसन्न—संज्ञा पुं० [सं० व्यसन, प्रा० विसन] १. आदत। दे० 'व्यसन'। उ०—वाघ डरै नह वैर सुं वाघा वैर विसन्न।—बाँकी० ग्रं०, भा० १, पृ० १६। २. विपत्ति। संकट। उ०—वेढ़ा नर्णं विसन्न।—रा० रू०, पृ० १३७।

विसप्रसून—सज्ञा पुं० [स०] कमल।—नंद० ग्रं०, पृ० ११०।

विसभाग—वि० [स०] जिसका विभाग या हिस्सा न हो [को०]।

विसम—वि० [स० विषम] दे० 'विषम'।

विसमता—सज्ञा स्त्री० [सं० विषमता] दे० 'विषमता'।

विसमाद†—सज्ञा पुं० [स० विस्मय+ता] १ सशय। शका। २. दु ख। वेदना। उ०—कडिहारी और गृही को, कोई ना जाने अत। बिन परचै बिसमाद है, हरषत परचै सत।—कबीर सा०, पृ० ६५।

विसमाध†—सज्ञा पुं० [हिं० विस्माद] दे० 'विस्माद'।

विसमाधना—क्रि० अ० [हिं विसमाध+ना (प्रत्य०)] मसूसना। दु खी होना। शोकार्त्त होना।

विसमाप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] असमाप्ति। पूर्ण न होना [को०]।

विसमै—सज्ञा पुं० [स० वि०+समय] विकट समय। उ०—सोनागिर चाँपावत हाथ खग तोले। विसमै मैं द्रढ देण कोप बैण बोले।—रा० रू०, पृ० ११४।

विसमै—सज्ञा पुं० [स० विस्मय] अचभा। आश्चर्य। उ०—कहनै मैं विसमै सी देखे बन आवै।—रा० रू०, पृ० ४२।

विसयना†—क्रि० अ० [स० वि+शयन ?] डूबना। समाप्त होना। अस्त होना।

विसर—सज्ञा पुं० [सं०] १ आगे जाना। गमन करना। जाना। २ फैलना। बढना। विस्तृत होना। ३ भीड। समूह। झुंड। ४ राशि। ढेर [को०]।

विसरण—सज्ञा पुं० [स०] १ फैलना। विस्तृत होना। २ खस्त होना। ढीला पडना [को०]।

विसराम—सज्ञा पु० [स० विश्राम] दे० 'विश्राम'। उ०—तन को विसराम अराम घनो करि दीजतु है पै न दीजतु है।—ठाकुर०, पृ० ६।

विसर्ग—सज्ञा पु० [स०] १ दान। २ त्याग। ३ मल का त्याग करना। शौच। ४ व्याकरण के अनुसार एक वर्ण जिसमे ऊपर नीचे दो बिंदु होते है और जिनका उच्चारण प्राय अर्ध ह् के समान होता है। इसका रूप यह (:) होता है। ५. सूर्य का एक अयन। ६ मोक्ष। ७ मृत्यु। ८ प्रलय। ९ वियोग। बिछोह। १०. दीप्ति। चमक। ११ सूर्य का दक्षिणायन। वर्षा, शरद और हेमंत ये तीनो ऋतुएँ। १२ भेजना। प्रेषण। विसर्जन। (को०)। १३. गिराना। उडेलना। बूँद बूद करके गिराना (को०)। १४ क्षेपण। डालना। फेंकना (को०)। १५. निर्माण। रचना (को०)। १६ शिश्न (को०)। १७ सृष्टि का व्यापार (को०)। १८ शिव का नाम (को०)।

विसर्गी—वि० [स० विसर्गिन्] दान या त्याग करनेवाला [को०]।

विसर्जन—सज्ञा पुं० [स०] १ परित्याग। छोडना। उ०—अब मुझे प्राण विसर्जन करने में भी आगा पीछा नही है।—राधाकृष्ण (शब्द०)। २ किसी को यह कहकर भेजना कि तुम जाकर अमुक कार्य करो। ३ विदा होना। चला जाना। प्रस्थान करना। ४. षोडशोपचार पूजन मे अतिम उपचार अर्थात् आवाहन किए हुए देवता से पुन स्वस्थान गमन की प्रार्थना करना। ५ समाप्ति। अत। उ०—कथा विसर्जन होति है सुनौ वीर हनुमान।—(शब्द०)। ६ दान। ७ मलत्याग (को०)। ८. डालना। गिराना (को०)। ९ चलाने के लिये पशुओ का हाँकना (को०)। १० प्रतिमा का जल म बहाना (को०)। ११. वृषोत्सर्ग। साँड छोड़ना (को०)। १२ निर्माण। रचना (को०)। १३ क्षतिग्रस्त करना (को०)। १४ उत्तर देना (को०)।

विसर्जनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] गुदा के ऊपरी भाग मे स्थित तीन वलयो मे से एक [को०]।

विसर्जनीय'—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'विसर्ग'।

विसर्जनीय'—वि० विसर्जन किया जानेवाला। त्यागने योग्य [को०]।

विसर्जयिता—वि० [स० विसर्जयितृ] विसर्जन करनेवाला। त्यागनेवाला [को०]।

विसर्जिका—सज्ञा स्त्री० [स०] त्रेता युग [को०]।

विसर्जित—वि० [स०] १ त्यागा हुआ। त्यक्त। २ प्रेषित। भेजा हुआ। ३ हटाया हुआ। च्युत। ४ प्रदत्त।

विसर्प—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का रोग, जिसमे ज्वर के साथ सारे शरीर में छोटी छोटी फुसियाँ हो जाती है। २ रेंगना। सरकना (को०)। २ इधर उधर जाना। हिलना डुलना (को०)। ४. फैलाव। सचार (को०)। ५ किसी कर्म का अप्रत्याशित या अनपेक्षित दु खद फल (को०)।

विसर्पघ्न—सज्ञा पु० [सं०] सोम [को०]।

विसर्पण—सज्ञा पुं० [सं०] १ फैलना। फैलाव। वृद्धि। बाढ। २ फोडे आदि का फूलना। ३ फेंकना। ४ रेंगना। सरकना। धीरे धीरे चलना (को०)। ५ परित्याग (को०)।

विसर्पि—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विसर्पिका'।

विसर्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] विसर्प नामक रोग।

विसर्पिणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] यवतिक्ता नाम की लता। विशेष दे० 'शोरिवनी'।

विसर्पी—वि० [सं० विसर्पिन्] १. प्रसरणशील। फैलनेवाला। उ०—उठ उठ ह्यौं ते भागु तौ लौं अभागे। मम वचन विसर्पी सर्प जौ लौं न लागे।—केशव (शब्द०)। २ रेंगने या सरकनेवाला (को०)। ३ विसर्प रोग से पीडित (को०)।

विसल—सज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष का नया पत्ता। पल्लव। बिसल।

विसल्यकृत—सज्ञा पुं० [स०] भद्रवल्ली।

विसव†—सज्ञा पु० [स० विश्व] जगत्। दुनियाँ। उ०—(क) विसतरी बात सारी विसव अणकारी उतपान सी।—रा० रू०, पृ० ६४। (ख) विसव अवर जवनौ वसू करे सको मिल काज।—रा० रू०, पृ० ३६०।

विसवना†—क्रि० अ० [स० विश्रमण ? या, विस्रवण] १ अस्त होना। जैसे, दिन विसवना। २. व्यतीत होना। बीतना। जैसे, वेर विसवना।

विसवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० विसवर्त्मन्] वैद्यक के अनुसार आँखों का एक प्रकार का रोग जिसमें त्रिदोष के प्रकोप के कारण पलकों में सूजन हो आती है और उसमें छोटी छोटी फुंसियाँ हो आती हैं जिनमें से पानी बहा करता है।

विसवासह—संज्ञा पुं० [सं०] जावित्री।

विसवासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जावित्री।

विसशालूक—संज्ञा पुं० [सं०] कमलकंद। भसीड़।

विसाति—संज्ञा स्त्री० [अ० बिसात] १ शक्ति। हकीकत। २. गणना। उ०—मुनि सुरपती नाचि बहु भाँति। नर बपुरे की काह बिसाति।—जग० ग०, पृ० ६६।

विसामग्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सामग्री या साधन का अभाव। २ कारण का न होना जिससे कार्य की उत्पत्ति हो [को०]।

विसार संज्ञा पुं० [सं०] १ मछली। २ निर्गम। निकलना। ३ विस्तार। फैलाव। ४ प्रवाह। बहाव। ५ उत्पत्ति। ६ रेंगना या सरकना (को०)। ७ लकड़ी। काष्ठ (को०)। ८. वल्ली। शहतीर (को०)।

विसारथि—वि० [सं०] जिसके पास सारथी न हो [को०]।

विसारिणी'—वि० [सं० विसारिन्] फैलनेवाली। प्रसरणशील [को०]।

विसारिणी'—संज्ञा स्त्री० [सं०] मापपर्णी। मखवन।

विसारित—वि० [सं०] १ जिसका विसार किया गया हो। २. संपादित [को०]।

विसारी'—वि० [सं० विसारिन्] १. फैलनेवाला। प्रसार करनेवाला। २. विसार करनेवाला। निकलनेवाला। ३. रेंगने या सरकने वाला। ४ विस्तृत [को०]।

विसारी'—संज्ञा पुं० मछली [को०]।

विसारी'—संज्ञा पुं० [सं०] वायुमंडल।

विसाल'—संज्ञा पुं० [सं०] १ संयोग। मिलाप। २ आत्मा का ईश्वर में मिलना। मृत्यु। मौत। ३ प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप।

विसाल—वि० [सं० विशाल] दे० 'विशाल'।

विसावण—क्रि० स० [हिं०] दे० 'बिसाहना'। उ०—वैर हमेम विसावणा वाड बिना वसणोह।—राकी ग्र०, भा० १, पृ० २३।

विसासी—वि० [सं० अविश्वासी] [वि० स्त्री० विसासिनी] दे० 'बिसासी'। उ०—तू उसी बिसासी से पूछ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १४।

विसिंचित वि० [सं० वि+हिं० सिंचन (सं० सेचन)] सींचा हुआ। उ०—सुधन के जल से विसिंचित कल्प किंचित् विश्व उपवन।—अपरा, पृ० १६५।

विसिख—संज्ञा पुं० [सं० विशिख] दे० 'बिसिख'। उ०—वर्षा बधिक न उगे आज तेरे विरह के बिसिख से मारा।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १७।

विसिनी'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। पद्मिनी। मृणाल। २. पद्म। पुष्प [को०]।

विसिनी—संज्ञा पुं० [सं० व्यसनी] दे० 'व्यसनी'।

विसिल—वि० [सं०] मृणाल पक्षी [को०]।

विसुकर्मा—संज्ञा पुं० [सं० विश्वकर्मा] दे० 'विश्वकर्मा'। उ०—विसुकर्मा रुचि घरन श्रमन सोभा मुनि जानिय।—प० रासो, पृ० १६६।

विसुकृत—संज्ञा पुं० [सं०] धर्म के विरुद्ध कार्य। पाप। गुनाह।

विसुख—वि० [सं०] सुखहीन। आनंदरहित [को०]।

विसुध—वि० [हिं० वि+सुध] दे० 'बेसुध'। उ०—तुममें ही आश्रय पाते, ये प्रणय विसुध मतवाले। कितनी आहों के शोले तुमने शीतल कर डाले।—हिलोल, पृ० ६३।

विसुहृद्—वि० [सं०] जिसे कोई सुहृद् न हो। मित्रहीन [को०]।

विसूचन—संज्ञा पुं० [सं०] जनाने की क्रिया। सूचित करना [को०]।

विसूचिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसे हैजा मानते हैं।

विशेष—वैद्यक के अनुसार इसमें पहले पेट में दर्द होता है और फिर रोगी को बहुत से दस्त आते हैं। शरीर में जलन होती है और प्यास बहुत लगती है, छाती और सिर में पीड़ा होती है, भ्रम, मूर्छा और कंप होता है, जँभाई आती है, निर्बलता बहुत होती है, मूत्र बंद हो जाता है, नाड़ी मंद पड़ जाती है, आँखें बैठ जाती हैं, शरीर का रंग पीला पड़ जाता है और आवाज बंद जाती है। साथ ही वायु आदि के प्रकोप के कारण सारे शरीर में सुइयाँ चुभने की सी पीड़ा होती है, इसी से इसे विसूचिका कहते हैं। कुछ लोग इसे हैजा भी मानते हैं, पर अधिकांश डाक्टर आदि इसे हैजे से भिन्न समझते हैं। उनका मत है कि यह विसूचिका रोग अजीर्ण के कारण होता है, और हैजा एक प्रकार के विषाक्त जीवाणुओं के शरीर में प्रवेश करने से होता है।

विसूची—संज्ञा स्त्री० [सं०] विसूचिका नामक रोग।

विसूत—वि० [सं०] १. अव्यवस्थित। उद्विग्न। व्याकुल। २. उदास। रागहीन। विरक्त [को०]।

विसूरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. दुःख। रंज। शोक। २. चिंता। फिक्र। ३. विरक्ति। वैराग्य।

विसूरणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'विसूरण'।

विसूरित—संज्ञा पुं० [सं०] पश्चात्ताप। व्यथा। शोक [को०]।

विसूरिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्वर [को०]।

विसृज्य—वि० [सं०] १ जिसका विसर्जन किया जाय। भेजा जानेवाला। २ उत्पन्न किया जानेवाला [को०]।

विसृज्य'—संज्ञा पुं० [सं०] सृष्टिनिर्माण। सृष्टि का उत्पादन [को०]।

विसृत—वि० [सं०] १ कहा हुआ। २ विस्तृत। फैला हुआ। ३. विस्तारित। तना हुआ [को०]।

विसृत्वर—वि० [सं०] [स्त्री० विसृत्वरी] १ इधर उधर फैलने या व्याप्त होनेवाला। २ विसर्पण करने, रेंगने या सरकने वाला [को०]।

विसृमर—वि० [सं०] १. फैलनेवाला। प्रसरणशील। २. विसर्पण करनेवाला। रेंगनेवाला [को०]।

विसृष्ट'—वि० [सं०] १. जिसकी सृष्टि या रचना विशेष प्रकार से हुई हो। विशेष रूप से बनाया हुआ। २ भेजा हुआ। ३. त्यागा हुआ। छोड़ा हुआ। ४. बनाया या उत्पन्न किया हुआ।

भेजा हुआ। ५ उत्पन्न। निःसृत (को०)। ६ जो कार्यभार से मुक्त किया गया हो (को०)। ७ दिया हुआ। प्रदत्त (को०)।

विसृष्ट[2]—संज्ञा पुं० विसर्ग जो इस प्रकार लिखा जाता है ( )।

विसृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ निर्माण। रचना। २ प्रेषण। भेजना। ३ परित्याग। ४ दान। प्रदान। ५ निषेक। स्राव। क्षरण (शुक्र का)। ६ संतान। संतति [को०]।

विसेस†—संज्ञा पुं० [सं० विशेष] दे० 'विशेष'। उ०—तव प्रभुन की विसेस कृपा जाननी।—दो सौ बावन०, पृ० १५५।

विसेसन—संज्ञा पुं० [सं० विशेषण] दे० 'विशेषण'। उ०—होत विसेसन मे बहुत, समझहु कवि कुल कांत।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ५३५।

विसोटा†—संज्ञा पुं० [सं० वासक] अडूसा।

विसोढ—वि० [सं०] जो सह्य हो। सहन किया हुआ [को०]।

विसोम—वि० [सं०] चंद्रहीन (रात्रि)। चंद्रमा से रहित [को०]।

विसौख्य—संज्ञा पुं० [सं०] सुख न होना। सौख्य का अभाव। कष्ट। पीडा। दुःख [को०]।

विस्खलित—वि० [सं०] १ भटका हुआ। २ ठीक तरह से न निकला हुआ। लडखडाता हुआ (स्वर)। ३ त्रुटिपूर्ण। गलत। ४ गिरा हुआ। पतित। च्युत [को०]।

विस्त—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोना। २ एक प्रकार का परिमाण जो एक कर्ष के बराबर होता है। ३ ८० रत्ती।

विस्तज—संज्ञा पुं० [सं०] कुदरु।

विस्तर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रसार। फैलाव। दे० 'विस्तार'। २ प्रेम। ३ समूह। ४ आसन। ५ संख्या। ६ आधार। ७ शिव का एक नाम। ८ विवरण (को०)।

विस्तर[2]—वि० बहुत। अधिक। विशेष।

विस्तरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बहुत या अधिक होने का भाव।

विस्तार—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंबे या चौडे होने का भाव। फैले होने का भाव। फैलाव। जैसे—(क) इस मकान का विस्तार कम है। (ख) तुम बातों का बहुत अधिक विस्तार करते हो। २ पेड की शाखा। ३ गुच्छा। ४ शिव का एक नाम। ५. विष्णु का एक नाम। ६ विवरण। पूरा ब्यौरा (को०)। ७ वृत्त का व्यास (को०)। ८ झाडी (को०)।

विस्तारण—संज्ञा पुं० [सं०] फैलाने की क्रिया [को०]।

विस्तारता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तार का भाव। फैलाव।

विस्तारना—क्रि० स० [सं० विस्तरण] फैलाना। विस्तृत या व्याप्त करना।

विस्तारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] संगीत की एक श्रुति [को०]।

विस्तारित—वि० [सं०] विस्तृत किया हुआ। फैलाया हुआ। बढाया हुआ [को०]।

विस्तारी—संज्ञा पुं० [सं० विस्तारिन्] १ वह जिसका विस्तार अधिक हो। बडा। विशाल। २. वह जिसकी शक्ति अधिक हो। ३. बरगद। वड।

विस्तीर्ण—वि० [सं०] १. जो दूर तक फैला हुआ हो। विस्तृत। २ विशाल। बहुत बडा। ३ विपुल। बहुत अधिक।

विस्तीर्णकर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी।

विस्तीर्णजानु—संज्ञा स्त्री० [सं०] टेढे पैरोंवाली लडकी। प्रगतजानु कन्या, जिसे विवाह के अयोग्य कहा गया है [को०]।

विस्तीर्णता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विस्तीर्ण होने का भाव। विस्तार। फैलाव। उ०—क्षितिज की विस्तीर्णता का पवन अचल हिल गया है।—क्वासि, पृ० १००।

विस्तीर्णपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] मानकद।

विस्तीर्णभेद—संज्ञा पुं० [सं०] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

विस्तुर†—वि० [देश०] दूर। ओझल। बिहतुर। उ०—एको रोवा विस्तुर होइ हैं, धीर धीर मुगरिन्ह पीटो।—सत० दरिया, पृ० १२६।

विस्तृत—वि० [सं०] १ जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो। लंबा चौडा। विस्तारवाला। जैसे, वहाँ आप लोगों के लिये बहुत विस्तृत स्थान है। २ यथेष्ट विवरणवाला। जिसके सब अंग या सब बातें बतलाई गई हों। जैसे,—इस ग्रंथ में नाटक के स्वरूप का बहुत विस्तृत वर्णन है। ३ बहुत बडा या लंबा चौडा। विशाल। ४ बढा हुआ। विकसित (को०)। ५ प्रचुर। अधिक (को०)। ६ व्याप्त (को०)।

विस्तृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ फैलाव। विस्तार। २. व्याप्ति। ३. लंबाई, चौडाई और ऊँचाई या गहराई। ४ वृत्त का व्यास।

विस्थान—वि० [सं०] १ दूसरे से संबंध रखनेवाला। २ अन्य स्थान से संबद्ध। अन्य लिंग का। जैसे, वर्ण या ध्वनि [को०]।

विस्थापन—संज्ञा पुं० [सं०] दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया [को०]।

विस्थापित—वि० [सं०] दूसरे स्थान से लाकर बसाया गया। उ०—विस्थापित हैं, हम धरती के विस्थापित हैं।—रजत०, पृ० २८। २ जिन्हें उत्पीडित कर घर द्वार से रहित कर दिया गया हो।

विस्नु—संज्ञा पुं० [सं० विष्णु] दे० 'विष्णु'। उ०—विस्नु, नराइन, नरपती, बनमाला हरि स्याम।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ५४४।

विस्पंद—संज्ञा पुं० [सं० विस्पन्द] १ धडकन। २ एक प्रकार का व्यंजन। ३. बूँद। कण [को०]।

विस्पष्ट—वि० [सं०] १ सीधा। साफ। सुबोध। २ प्रकट। स्फुट। प्रत्यक्ष। खुला हुआ [को०]।

विस्फार—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० विस्फारित] १ धनुष की टंकार। कमान का शब्द। २ धनुष की डोरी। ज्या। ३ विस्तार। फैलाव। ४ स्फूर्ति। तेजी। ५ विकास। ६ काँपना। बार बार हिलना।

विस्फारक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जो बहुत ही भयंकर होता है और जिसमें रोगी को खाँसी, मूर्छा, मोह और कंप आदि होता है।

विस्फारण—संज्ञा पुं० [सं०] १. खोलना। २ प्रसारित करना या फैलाना (पंख) [को०]।

विस्फारित[1]—वि० [सं०] १ खोला हुआ। फैलाया हुआ। २. फैला हुआ या फाड़ा हुआ। जैसे, विस्फारित नेत्र। ३ प्रकट किया हुआ। ४ जिसे कँपाया गया हो। जिसमें थरथराहट पैदा की गई हो। ५ काँपता हुआ। कंपमान। थरथराता हुआ। ६ टंकारयुक्त [को०]

विस्फारित[2]—संज्ञा पुं० धनुष चढ़ाना या बाण चलाना [को०]।

विस्फीत—वि० [सं०] अधिक। प्रचुर। बहुत ज्यादा [को०]।

विस्फुट—वि० [सं०] १ सुस्पष्ट। खुला हुआ। व्यक्त। प्रकट किया हुआ। २ विकसित। खिला हुआ [को०]।

विस्फुटित—वि० [सं०] दे० 'विस्फुट'।

विस्फुर—वि० [सं०] चपल नेत्रवाला। खुली आँखोंवाला [को०]।

विस्फुरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ कंपन। २ काँपना। (बिजली का)। ३. फड़कना। उ०—ठहर गए नृप वहीं विटप की छाँह में। हुआ विस्फुरण शकुन रूप वर बाँह में।—शकु० पृ० ४७।

विस्फुरणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेंदुआ या तिंदुक नामक वृक्ष।

विस्फुरित—वि० [सं०] १ कंपित। काँपता हुआ। २ फड़कता हुआ। विस्तारित। चंचल। जैसे, विस्फुरित नेत्र। ३ विकसित। फूला हुआ [को०]।

विस्फुलिंग—संज्ञा पुं० [सं० विस्फुलिङ्ग] १ एक प्रकार का विष। २ आग की चिनगारी। अग्निकण। उ० विस्फुलिंग से जग दुख तजि तव विरह अगिन तन तायौं।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ५३९।

विस्फुलिङ्गक—वि० [सं० विस्फुलिङ्गक] दीप्तिमान। चमकीला [को०]।

विस्फूर्ज—संज्ञा पुं० [सं०] गर्जन। कड़क [को०]।

विस्फूर्जथु संज्ञा पुं० [सं०] १ दहाड़ना। गरजना। कड़कना। २ बादल की गरज। बिजली की कड़क। ३. वज्रपात जैसा आकस्मिक आघात। ४ लहरों का आंदोलित होना या उठना गिरना [को०]।

विस्फूर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पदार्थ का फैलना या बढ़ना। विकास। २ गर्जन। कड़क।

विस्फूर्जनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] तेंदुआ या तिंदुक नामक वृक्ष।

विस्फूर्जित[1]—वि० [सं०] १ प्रस्फुटित। २ गरजता हुआ। शब्दायमान। ३ प्रसारित। फैलाया हुआ। ४ क्षुब्ध। कंपित [को०]।

विस्फूर्जित[1]—संज्ञा पुं० १ दहाड़। चीत्कार। २ घूर्णन। परिभ्रमण। ३ फल। परिणाम। ४ वायु का वेग। ५ संकोच। भौंहों का सिकोड़ना। ६ स्फुटन [को०]।

विस्फोट—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना। जैसे,—ज्वालामुखी पर्वत का विस्फोट। उ०—क्षुब्ध नक्र जैसे पानी में पर्वत में जैसे विस्फोट। अरि समूह में विभु वैसे हो करते ये चोटों पर चोट।—साकेत, पृ० ३९४। २ कोई जहरीला और बहुत खराब फोड़ा। ३ विस्फोटक रोग। चेचक (को०)।

विस्फोटक—संज्ञा पुं० [सं०] १ फोड़ा, विशेषतः जहरीला फोड़ा। २ वह पदार्थ जो गरमी या आघात के कारण भभक उठे। भभकनेवाला पदार्थ। ३ शीतला का रोग। चेचक। उ०—डाक्टर और विद्वान् इसी विस्फोटक के नाश का उपाय टीका लगाना आदि कहेंगे।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ४७९। ४. एक प्रकार का कुष्ठ [को०]।

विस्फोटन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी पदार्थ का उबाल आदि के कारण फूट बहना। २ जोरों का शब्द।

विस्फोटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पादस्फोट। विपादिका [को०]।

विस्फोटित—वि० [सं० विस्फुटित] गर्जन के साथ फूटा हुआ। विस्फोटयुक्त। उ०—सुनता हूँ जब, विस्फोटित है चहुँ ओर भयंकर महा नाश।—दैनिकी, पृ० २५।

विस्मयकर—वि० [सं० विस्मयङ्कर] आश्चर्य में डालनेवाला [को०]।

विस्मयगम—वि० [सं० विस्मयङ्गम] आश्चर्यजनक [को०]।

विस्मय[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ आश्चर्य। ताज्जुब। २ साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी भाव जो अनेक प्रकार के अलौकिक और विलक्षण पदार्थों के वर्णन के कारण मन में उत्पन्न होता है। ३ अभिमान। गर्व। शेखी। ४ ऊहापोह संदेह। शक।

यौ०—विस्मयकर, विस्मयकारी = आश्चर्यजनक। विस्मयपद = आश्चर्य का भाजन। जिससे विस्मय हो। आश्चर्य का विषय।

विस्मय[2]—वि० १ जिसका गर्व नष्ट या चूर्ण हो गया हो। २. जो गर्वयुक्त न हो। निरभिमान।

विस्मयन संज्ञा पुं० [सं०] आश्चर्य। ताज्जुब [को०]।

विस्मयाकुल—वि० [सं०] आश्चर्य से चकित [को०]।

विस्मयाहत—वि० [सं०] आश्चर्यचकित। आश्चर्य से आहत। दुःख मिश्रित आश्चर्य की भावना से युक्त। उ०—विस्मयाहत हो पूछा—'इस धूप में ?—भस्मावृत०, पृ० ११।

विस्मयी—वि० [सं०] विस्मययुक्त। आश्चर्य करनेवाला। विस्मय में पड़ा हुआ।

विस्मरण—संज्ञा पुं० [सं०] स्मरण न रहना। भूल जाना।

विस्मापक—वि० [सं०] आश्चर्यजनक। हैरत अंगेज [को०]।

विस्मापन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ गंधर्वनगर। २ कामदेव का एक नाम। ३. बाजीगर। जादूगर। ४ छल। छलना। (अं०) ट्रिक (को०)। ५. आश्चर्य पैदा करना (को०)। कोई भी आश्चर्य में डालनेवाली वस्तु (को०)।

विस्मापन[2]—वि० [वि० स्त्री० विस्मापनी] जिसे देखकर विस्मय हो। आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला।

विस्मारक—वि० [सं०] भुला देनेवाला। विस्मरण करानेवाला।

विस्मारण—सज्ञा पुं० [स०] लीन हो जाना। लय हो जाना। नष्ट हो जाना।

विस्मारित—वि० [सं०] भुलाया हुआ। विस्मृत किया हुआ [को०]।

विस्मित[1]—वि० [स०] १ जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो। चकित। उ०—सो मुरारीदास को देखि के नरायनदास और सब कोई विस्मित होइ रहे।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १००।

विस्मित[2]—सज्ञा पु० १ एक वृत्त का नाम। २ घमडी। अभिमानी ३ उलट पुलट। अस्तव्यस्त।

विस्मिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विस्मय। आश्चर्य। २ दे० 'विस्मरण' [को०]।

विस्मृत—वि० [स०] जो स्मरण न हो जो याद न हो। भूला हुआ।

विस्मृति—सज्ञा स्त्री० [सं०] भूल जाना। विस्मरण।

विस्मेर—वि० [दे०] भौचक्का। आश्चर्यान्वित। चकित [को०]।

विस्रभ—सज्ञा पुं० [स० विस्रम्भ] १ विश्वास। यकीन। एतबार। २ केलि के समय स्त्री पुरुष मे होनेवाला झगडा। ३ वध। हत्या।

विस्रभालाप सज्ञा पुं० [स०] १ प्रेमालाप। प्रेमवार्ता। २ विश्वस्त होकर बातें करना।

विस्रभी—वि० [स० विस्रम्भिन्] १ विश्वासी। विश्वस्त। २. प्रेमी। प्रणयी [को०]।

विस्रस—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० विस्रसा] १. नीचे गिरना। पतन। २ क्षय। शिथिलता। दुर्बलता। ३ क्षरण [को०]।

विस्रसन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ अध पतन। नीचे गिरना। २ बहना। टपकना। ३ खोलना या ढीला करना। ४ रेचक। दस्त लानेवाला [को०]।

विस्रसन[2]—वि० १ पतनशील। २ खोलनेवाला। ढीला करनेवाला। जैसे,—नीवीविस्रसन [को०]।

विस्रसिका—सज्ञा स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का उपकरण जिससे यज्ञ में आहुति दी जाती थी।

विस्रसी—वि० [स० विस्रसिन्] सरक या फिसलकर गिर जानेवाला। जैसे—हार [को०]।

विस्र—सज्ञा पु० [स०] १ बडी मूली। २ मास के जलने की गध। चिरायँध। ३ आमगंध। कच्चे मास की गध।

विस्रगध—सज्ञा पु० [सं० विस्रगन्ध] १ प्याज। २. गोदती हरताल। ३ वह जिसमे कच्चे घास की महक हो (को०)।

विस्रगधा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोदती हरताल। २ प्याज। ३. हाऊबेर। हबुषा।

विस्रगधि—सज्ञा पुं० [स०] गोदती हरताल।

विस्रब्ध—वि० [स०] दे० 'विश्रब्ध'।

विस्रव—सज्ञा पु० [स०] बहना। बूँद बूँद टपकना [को०]।

विस्रवण—सज्ञा पुं० [स०] १ बहना। २ झरना। क्षरण। रसना।

विस्रसा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २ अशक्तता। जर्जरता (को०)।

विस्रस्त—वि० [सं०] १ ढीला किया हुआ। २ दुर्बल। कमजोर। ३ बिखरा हुआ [को०]।

यौ०—विस्रस्तचेता = उदास। खिन्न। विस्रस्तबधन = जिसके बधन खुल गए हो। विस्रस्तवसन = जिसके वस्त्र अस्तव्यस्त हो गए हो।

विस्रस्य—वि० [स०] ढीला किया जाने या खोला जानेवाला [को०]।

विस्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हाऊबेर। हबुषा। २ चरबी।

विस्राम Ⓤ†—सज्ञा पु० [स० विश्राम] दे० 'विश्राम'।

विस्राव—सज्ञा पुं० [स०] १ भात का माँड। पीच। २ बहना। दे० 'विस्रव' (को०)।

विस्रावण—सज्ञा पु० [स०] १ रक्त का बहना। २ चूना। रिसना। ३ एक प्रकार की गुड की शराब [को०]।

विस्रावित—वि० [स०] बहाया हुआ [को०]।

विस्रुत—वि० [स०] बहा हुआ।

विस्रुति—सज्ञा स्त्री० [स०] बहना। चूना। रसना।

विस्वर—वि० [स०] १ स्वरहीन। २ बेसुरा। बेमेल (स्वर)। कर्कश। ३ कठोर।

विस्वसा Ⓤ‡—सज्ञा पु० [स० विश्वास] दे० 'विश्वास'। उ० सुया बात राजा हसा खिलखिला, कहा मेरे दिल का टूट्या। विस्वसा।—दक्खिनी०, पृ० ३७७।

विस्वा Ⓤ‡—सज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—साधु लोग कहँ घका चुगुन कहँ आदर किज्जिअ। बहुत प्रीति मसधरहि दानु विस्वा कहँ दिज्जिअ।—अकबरी०, पृ० ३२२।

विस्वाद—वि० [स०] स्वादरहित। फीका [को०]।

विस्वास†—सज्ञा पु० [स० विश्वास] दे० 'विश्वास'। उ०—तब वा वैष्णवन ने वाही समै दडवत करी। तब वाके मन मे विस्वास आयो।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ६।

विस्साल Ⓤ—वि० [स० विशाल] दे० 'विशाल'। उ०—मोतिन माल विस्साल अति हीरा पौवी सुढरिय। जमराज सुवन अरचे अधिक मिलि मारु मगल करिय।—प० रा०, पृ० १३१।

विहग[1]—सज्ञा पु० [स० विहङ्ग] १ पक्षी। चिडिया। उ०—सुखी परेवा जगत मे एकै तुही विहंग।—बिहारी (शब्द०) २ सान-मक्खी। ३ बाण। तीर। ४ मेघ। बादल। ५ चद्रमा। ६ सूर्य। ७ एक नाग का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

विहग[2]—वि० [स०] आकाशगामी। आकाशचारी।

विहगक[1]—सज्ञा पुं० [स० विहङ्गक] छोटी चिडिया [को०]।

विहगक[2]—वि० आकाशचारी [को०]।

विहगम[1]—सज्ञा पु० [सं० विहङ्गम] १ पक्षी। चिडिया। २ सूर्य।

विहगम[2]—वि० आकाश मे विचरण करनेवाला। उडनेवाला [को०]।

विहगमा—सज्ञा स्त्री० [स० विहङ्गमा] १ सूर्य की एक प्रकार की किरण। २ ग्यारहवें मन्वतर के देवताओ का एक गण। ३ बहँगी मे की वह लकडी जिसके दोनो सिरो पर बोझ लटकाया जाता है।

विहगमिका—सज्ञा स्त्री० [सं० विहङ्गमिका] दे० 'विहंगिका'।

विहगय पे—सज्ञा पु० [स० विहाग] दे० 'विहागराग'। उ०—भणत श्री विनोदय, कल्याण केक मोदय। खँभायची पटंगय वगेसरी विहगय।—रा० रू०, पृ० ३७६।

विहगराज—सज्ञा पुं० [स० विहङ्गराज] गरुड।

विहगहा—सज्ञा पुं० [सं० विहङ्गहन्] बहेलिया। चिडीमार।

विहगिका—सज्ञा स्त्री० [स० विहङ्गिका] बहँगी जिसपर कहार बोझ ढोते हैं।

विहडण—वि० [स० विखण्डन] नाश करनेवाला। उच्छेद करनेवाला। उ०—सभा सिंगार सकल कुल मडण। धरम सथापक पाप विहडण।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० ६२।

विहतव्य—वि० [स० विहन्तव्य] मार डालने योग्य [को०]।

विहँड़ना—क्रि० स० [स० विखण्डन, प्रा० विहंडण] १ नष्ट करना। २ खडन करना। मार डालना। ३ मथना। अस्तव्यस्त करना। हिडोरना [को०]।

विहँसना—क्रि० अ० [स० विहसन] दिल खोलकर हँसना। उच्च स्वर से हँसना।

विह—सज्ञा पु० [स०] आकाश। गगन। (समस्त पद के प्रारभ मे प्रयुक्त। जैसे, विहग) [को०]।

विहग—सज्ञा पुं० [स०] १ पक्षी। चिड़िया। उ०—उ०—पाहन पशु विटप विहग अपने कर लीन्हे। महाराज दशरथ के रंकराव कीन्हे।—तुलसी (शब्द०)। २. बाण। तीर। ३. सूर्य। ४. चंद्रमा। ५ ग्रह। ६ बादल (को०)। ७. ग्रहो की एक विशेष अवस्थिति (को०)।

यौ०—विहगपति=पक्षियो का स्वामी। गरुड। विहगराज=गरुड। विहगवेग=(१) पक्षियो के समान वेग या गतिवाला (२) एक विद्याधर का नाम [को०]।

विहगेंद्र—सज्ञा पु० [सं० विहगेन्द्र] गरुड [को०]।

विहगेश्वर—सज्ञा पु० [स०] गरुड।

विहड—सज्ञा पु० [स० विकट] विकट या ऊँची नीची भूमि। वेहड। उ०—जमुन विहड बर विकट हक्क वज्जिय चावट्टिसि।—पृ० रा०, ५५। १२७।

विहत्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बाँझ गाय। बंध्या गौ। २. गर्भघातिनी गौ [को०]।

विहत[1]—वि० [स०] १ बधित। काटा हुआ। मारा हुआ। २ चुटीला। आहत। ३. प्रतिरुद्ध। ४ विदीर्ण [को०]।

विहत[2]—सज्ञा पु० जैन मंदिर [को०]।

विहति[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वध। २ चोट। आघात। ३. प्रतिरोध। निवारण। ४ पराजय। ५ असफलता। विफलता। ६. असहत करना। भगा देना [को०]।

विहति—पज्ञा पु० [स०] सखा। मित्र। दोस्त [को०]।

विहनन—सज्ञा पुं० [स०] १. हत्या करना। वध। चोट। २ क्षति। ३. रुकावट डालना। अवरोध। अडचन। ४ घुनिया की धुनकी (को०)।

विहर—सज्ञा पुं० [स०] १. वियोग। बिछोह। २ दे० 'विहार'।

विहरण—सज्ञा पु० [सं०] १ विहार करने की क्रिया। चलना। फिरना। घूमना। २ वियोग। बिछोह। ३ खोलना। फैलाना। ४. दूर करना। ले जाना। अपहरण करना (को०) ५. आमोद प्रमोद। मनोरजन (को०)। ६. बाहर जाना। निकल जाना (को०)।

विहरना—क्रि० अ० [सं० विहरण] विहार करना।

विहर्ता—सज्ञा पु० [सं० विहर्तृ] १. दस्यु। लुटेरा। २ इधर उधर घूमने या विहार करनेवाला व्यक्ति। घुमक्कड। मौजी [को०]।

विहर्ष—सज्ञा पुं० [स०] १. विशेष हर्ष। उल्लास। २ हर्षरहित व्यक्ति [को०]।

विहव—सज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ। २ युद्ध। लडाई।

विहसतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] स्मित। मृसकान [को०]।

विहसन—सज्ञा पुं० [स०] मीठी हँसी। मुस्कान [को०]।

विहसित—सज्ञा पु० [स०] वह हास्य, जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।

विहसित—वि० १ हँसता हुआ। मुस्कराता हुआ। २ जिसपर हँसा जाय [को०]।

विहस्त[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ पंडित। विद्वान्। २ कवीव। नपुसक (को०)।

विहस्त[2]—वि० १. घबराया हुआ। व्याकुल। २ जिसका हाथ टूटा हुआ हो। ३ कार्य करने मे अशक्त। अक्षम (को०)। ४ निपुण। चतुर। कुशल (को०)। ५ बुद्धिमान। शिक्षित (को०)।

विहस्तित—वि० [स०] व्याकुल। घबडाया हुआ [को०]।

विहाँगड़ा—सज्ञा पुं० [स० विहग+डा (प्रत्य०)] दे० 'विहग'। —ढोला०, पृ० ४९५।

विहाँण—सज्ञा पुं० [देश० या सं० विभानु अथवा हिं० विहान] दे० 'विहान'। उ०—ढाढी गाया निसह भरि सुणियउ साल्ह सुजाँण। ओछइ पाणी मच्छ ज्यँउ, वेलत थयउ विहाँण।—ढोला०, दू० १९२।

विहाँणी†—सज्ञा स्त्री० [स० विहाना (छोडना)] वह जो गुजरी या व्यतीत हुई हो। वारदात। घटना। उ०—हाजर बुलाए साह सुण दूत वाँणी। देखत ही फुरमाया कहो सो विहाँणी।—रा० रू०, पृ० ११०।

विहा—अव्य० [सं०] स्वर्ग।

विहाई†—सज्ञा पुं० [स० विहायस् > विहाय (=आकाश)] आकाश। व्योम। अनत। उ०—माप का विहाई सा, प्रतप्त का निदान।—रा० रू०, पृ० ९७।

विहाग—सज्ञा पुं० [स० विभाग] १ एक राग। दे० 'विहाग' (यह वियोग का राग है)। २ वियोग। जुदाई। बिछोह। (लाक्ष०)। उ०—तू अबतक सोई है आली आँखो मे भरे विहाग री।—लहर, पृ० १९।

विहान—संज्ञा पुं० [सं०] प्रातःकाल। सवेरा। भोर (को०)।

विहापित'—वि० [सं०] त्यक्त करने या देने के लिये प्रेरित किया हुआ (को०)।

विहापित'—संज्ञा पुं० दान। त्याग (को०)।

विहाय'—संज्ञा पुं० [सं० विहायस्] दे० 'विहायस' (को०)।

विहाय'—अव्य० [सं०] दे० 'विना'।

विहायगति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ आकाश में चलने की क्रिया या शक्ति (जैन)।

विहायस्, विहायस—संज्ञा पुं० [सं०] १ आकाश। व्योम। २. दान। ३ पक्षी। चिड़िया।

विहार—संज्ञा पुं० [सं०] १. मनबहलाव के लिए धीरे धीरे चलना। टहलना। घूमना। फिरना। २ रतिक्रीड़ा। संभोग। ३ रतिक्रीड़ा करने का स्थान। ४. बौद्ध या जैन श्रमणों के रहने का मठ। संघाराम। ५ दूर करना। हटाना (को०)। क्रीड़ा। खेल (को०)। ६ गतिशीलता। गतिमयता। जैसे, चरणविहार, पाणिविहार (को०)। ७ उद्यान। उपवन। क्रीड़ोद्यान (को०)। ८ स्कंध। कंधा (को०)। ९ देवालय। मंदिर (को०)। १०. इंद्र का प्रासाद (को०)। ११. इंद्र की ध्वजा। वैजयंत (को०)। १२ महल। प्रासाद (को०)। १३ एक प्रकार का पक्षी। विदुःसक पक्षी (को०)। १४ मीमांसकों के अनुसार अग्नित्रय—गार्हपत्य आहवनीय और दक्षिणाग्नि (को०)। १५ यजमान का गृह (को०)। १६ विस्तार। प्रसार (को०)। १७ वागिंद्रिय का प्रसार (को०)। १८. मगध का एक नाम। आधुनिक बिहार प्रदेश (को०)।

यौ०—विहारगृह = क्रीड़ाभवन। विहारदेश = मनोरंजन का स्थान। विहारदासी = सन्यासिनी। भिक्षुणी। विहारभूमि = (१) मनोरंजन का स्थान। (२) चरागाह। विहारवन = क्रीड़ोद्यान। विहारवापी = क्रीड़ा के लिये बना हुआ तालाब। विहारस्थली = क्रीड़ाभूमि।

विहारक—वि० [सं०] १ विहार करनेवाला विहरणशील। २. विहार या बौद्ध मठ संबंधी (को०)।

विहारण—संज्ञा पुं० [सं०] आमोद प्रमोद (को०)।

विहारवान्—वि० [सं० विहारवत्] विहार करनेवाला (को०)।

विहारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] संघाराम। विहार (को०)।

विहारी—संज्ञा पुं० [सं० विहारिन्] १ वह जो विहार करता हो। विहार करनेवाला। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। ३ विस्तारशील। फैलनेवाला (को०)। ४ मनोरम। सुंदर (को०)।

विहारचा(पु)†—संज्ञा पुं० [सं० व्यवहार] दे० 'व्योहरिया'। उ०—हाट विहारचा कइ जोवज्यो, कई जोवज्यो राजदुवारि।—बी० रासो०, पृ० ७८।

विहावणी†—वि० स्त्री० [स० √भी, प्रा० विह+हि० आवनी (प्रत्य०)] भयावना। भयंकर। उ०—सुणि तूं मनारे मूरखि मूठ विचार। आवै लहरि विहावणी दमैं देह अपार।—दादू०, पृ० ५८६।

विहास—संज्ञा पुं० [सं०] हँसना। मुसकान (को०)।

विहिंसक—वि० [सं०] हानि पहुँचानेवाला। हिंसक (को०)।

विहिंसन—संज्ञा पुं० [सं०] हानि करना। कष्ट देना (को०)।

विहिंस्र—वि० [सं०] क्षति या हानि करनेवाला। विहिंसक (को०)।

विहित'—वि० [सं०] १ जिसका विधान किया गया हो। जैसे,—यह कार्य शास्त्रविहित है। २ किया हुआ। ३. दिया हुआ। ४ प्रबद्ध। स्थिर किया हुआ। निर्धारित। निरूपित (को०)। ५ निर्मित। संरचित (को०)। ६ रखा हुआ। जमा किया हुआ। (को०)। ७ मुकर्रर। नियत (को०)। ८ कल्पित। मनगढ़ंत (को०)। ९. विनष्ट। विनाशित (को०)।

विहित—संज्ञा पुं० [सं०] आदेश। आज्ञा।

विहिति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कोई काम करने की आज्ञा। विधान। २ अनुष्ठान। क्रिया कर्म (को०)। ३ व्यवस्था (को०)।

विहीन—वि० [सं०] १ रहित। वर्जित। बिना। २ छोड़ा हुआ। त्यक्त हुआ। ३ अधम, नीच (को०)।

यौ०—विहीनजाति, विहीनवर्ण, विहीनवर्ण = नीच श्रेणी का।

विहीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] विहीन होने का भाव या धर्म।

विहीनर—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विहीनित—वि० [सं०] वर्जित। रहित।

विहुंडन—संज्ञा पुं० [सं० विहुण्डन] शिव के एक अनुचर का नाम।

विहूण, विहून(पु)—वि० [सं० विहीन] [वि० स्त्री० विहूणी, विहूनी] रहित। वर्जित। विहीन। उ०—इसा चरित्र विहूण मति पामउ, सोइ विहूणो ज्यारइ सह जाई।—बी० रासो, पृ० ७६।

विहृत'—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहित्य में नायक के उस प्रकार के स्वाभाविक अनुसार से उस प्रकार का अनुसार। २. क्रीड़ा। खेल (को०)। ३ टहलना। घूमना। सैर (को०)। ४. हिंसक चाहटण। हिंसक (को०)।

विहृत'—वि० १ खेला हुआ। क्रीड़ित। २ फैलाया हुआ। ३. हटाया हुआ। दूर किया हुआ। ४ विचरित। विमर्श (को०)।

विहृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ जबरदस्ती या बलपूर्वक हाथ से लेना या कोई काम करना। २ विहार। क्रीड़ा। ३. चालने की क्रिया। प्रसार। फैलाव (को०)।

विहेठ—संज्ञा पुं० [सं०] १ क्षति। पीड़ा। दुःख। २ सताना। उत्पीड़न (को०)।

विहेठक—वि० [सं०] १. उत्पीड़क। सतानेवाला। २. बुराई करनेवाला। निंदक (को०)।

विहेठन—संज्ञा पुं० [सं०] १ हानि करना। क्षति पहुँचाना। पेषण। पीसना। २. रगड़ना। ३. उत्पीड़न। पीड़ा। कष्ट। सताना। उत्पीड़न करना (को०)।

विह्वल—वि० [सं०] १ भय या इसी प्रकार के मनोवेग के कारण जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। अज्ञान। चुब्ध। व्याकुल। २ डरा हुआ। भय से अभिभूत (को०)। ३. उन्मत्त।

जो आपे से बाहर हो (को०)। ४ पीडाग्रस्त। कष्ट मे पडा हुआ (को०)। ५ विषादयुक्त। हतोत्साह। हताश (को०)। ६ द्रवित। तरल। पिघला हुआ (को०)।

यौ०—विह्वलचेतन, विह्वलचेता = व्याकुल। विह्वलतनु = शिथिल शरीरवाला। विह्वलदृष्टि, विह्वलनेत्र, विह्वललोचन = अस्थिर दृष्टिवाला। जिसकी दृष्टि चचल हो।

विह्वलता—सज्ञा स्त्री० [स०] विह्वल होने की क्रिया या भाव। व्याकुलता। घबराहट। चिंता। परीशानी।

विह्वलत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विह्वलता'।

विह्वलित—वि० [स०] विह्वलतायुक्त। विह्वल (को०)।

यौ०—विह्वलितदृष्टि = दे० 'विह्वल दृष्टि'। विह्वलित सर्वांग = व्याकुल शरीरवाला। अत्यत क्षुब्ध। विह्वलितांग = पीडित अगो या अवयवोवाला।

विह्वली—सज्ञा पुं० [सं० विह्वलिन्] वह जो विह्वल हो गया हो। वह जो बहुत घब रा गया हो।

वीखा—सज्ञा स्त्री० [स० वीडखा] १. नृत्य। नाच। २ घोडे की एक चाल। ३ शूकशिंबी। ४ सगम। सधि। ५ गति। गमन। चाल (को०)।

वींदा—सज्ञा पु० [स्त्री० वींदणी] पति। खाविंद। उ०—मह बाल मारां चित विचारा दरी दारां दे सिला। सभ आय सारां धणी धारा विमल तारा वींद।—रघु०रू०, पृ० १४६।

वीक'—सज्ञा पुं० [स०] १. वायु। २ पक्षी। चिडिया। ३. मन।

वीक'—सज्ञा पुं० [अ०] सप्ताह। हफ्ता।

वीका'—सज्ञा स्त्री० [स०] आँख की मैल। कीचड़ (को०)।

वीकाश—सज्ञा पुं० [स०] १. एकात स्थान। २. प्रकाश। रोशनी।

वीक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १ दृष्टि। देखना। ताकना। २. दृश्य पदार्थ (को०)। ३ अचभा। आश्चर्य (को०)। ४ अवेक्षण। निरूपण (को०)। ५ वैदग्ध्य। ज्ञान। बोध (को०)। ६. निपुणता। अनभिज्ञता (को०)।

वीक्षण—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० वीक्षणीय] १ देखने की क्रिया। निरीक्षण। दृष्टि। उ०—वीक्षण अराल, बज रहे जहाँ जीवन का स्वर भर छद, ताल, मौन मे मद्र।—अनामिका, पृ० १८। २ जाँच (को०)। ३. आँख (को०)।

वीक्षणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वीक्षण' (को०)।

वीक्षणीय—वि० [स०] १. जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। २. विचारणीय (को०)। विवेचनीय।

वीक्षा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ देखने की क्रिया। वीक्षण। दर्शन। २ जाँच। परीक्षा (को०)। ३ ज्ञान। प्रतिभा (को०)। ४. बेसुधी। बेहोशी (को०)।

वीक्षित'—वि० [सं०] दृष्ट। देखा हुआ।

वीक्षित'—सज्ञा पुं० दारेट (को०)।

वीक्षिता—वि० [सं० वीक्षितृ] दर्शक (को०)।

वीक्ष्य'—सज्ञा पुं० [सं०] १ विस्मय। आश्चर्य। २ वह जो कुछ देखा जाय। दृश्य। ३. वह जो नाचता हो। नाचनेवाला। नतक। अभिनेता। ४ घोडा।

वीक्ष्य'—वि० देखने योग्य। दर्शनीय। दृश्य। उ०—अब सो हत न किंतु वीक्ष्य थी।—साकेत, पृ० ३३६। २ प्रत्यक्ष। दृष्टिगोचर। व्यक्त (को०)। ३ विस्मय (को०)।

वीचि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लहर। तरग। २ बीच की खाली जगह। अवकाश। ३ सुख। आनद। विश्राति। ४. दीप्ति। चमक। ५ अविवेक। विचारशून्यता (को०)। ६. प्रकाश की किरण (को०)। ७ अल्पता। लघुता (को०)।

यौ०—वीचिकाक = दे० 'वीचीकाक'। वीचिक्षोभ = लहरो का वेग से उठना गिरना। वीचितरगन्याय। वीचिमाली।

वीचितरंग न्याय—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का न्याय। विशेष दे० 'न्याय'—४ (९३)।

वीचिमाली—सज्ञा पु० [स० वीचिमालिन्] समुद्र।

वीची'—सज्ञा [स०] तरग। लहर। दे० 'वीचि'।

वीची'—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी राह। रथ्या। गली।—देशी०, पृ० ३०२।

वीचीकाक—सज्ञा पु० [स०] जलकौआ।

वीज—सज्ञा पुं० [सं०] १ मूल कारण। २ शुक्र। वीर्य। ३ तेज। उ०—मनु पावक माझ वीज आनि अनरगन जगिय।—पृ० रा०, ६१। १६७८। ४. अन्न आदि का बीज। बीआ। ५ अकुर। ६. फल। ७ आधार। ८ निधि। खजाना। ९ तत्व। १० मूल। ११ मज्जा। १२ तात्रिको के अनुसार एक प्रकार के मंत्र जो बडे बडे मत्रो के मूल तत्व के रूप मे माने जाते हैं। प्रत्येक देवी या देवता के लिये ये मंत्र अलग अलग होते हैं। जैसे,—ह्रीं, श्रीं, क्लीं आदि। १३ बीजगणित।

वीजक—सज्ञा पु० [स०] १ विजयसार या पियासाल नामक वृक्ष। २ बिजौरा नीबू। ३. सफेद सहिजन ४. बीज। बीआ। ५ दे० 'बीजक'।

वीजकर—सज्ञा पुं० [सं०] उडद की दाल जो बहुत पुष्टिकारक मानी जाती है।

वीजकर्कटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] ककडी।

वीजकसार—सज्ञा पुं० [स०] १. विजयसार के बीज। २ बिजौरा नीबू का सार या सत्त।

वीजका—सज्ञा स्त्री० [सं०] मुनक्का।

वीजकाह्व—सज्ञा पु० [स०] बिजौरा नीबू का पेड।

वीजकृत्—सज्ञा पुं० [स०] वह औषध जिसके खाने से वीर्य बढता हो। वीर्य बढानेवाली दवा। वाजीकरण।

वीजकोश—सज्ञा पु० [सं०] १ कमलगट्टा। २. निघाडा। ३. फल, जिनमे बीज रहते है।

वीजकोशक—सज्ञा पुं० [स०] अडकोश।

बीजगणित—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गणित, जिसमें अज्ञात राशियों को जानने के लिये उनके स्थान पर अक्षर आदि रखकर कुछ सांकेतिक चिह्नों आदि की सहायता से गणना की जाती है। यह साधारण अंकगणित की अपेक्षा जटिल होता है, पर इसके द्वारा अज्ञात राशियों का पता लगाने में बहुत सहायता मिलती है।

बीजगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] परवल। पटोल।

बीजगुप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेम।

बीजद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] विजयसार या असन नामक वृक्ष।

बीजधान्य—संज्ञा पुं० [सं०] धनियाँ।

बीजन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पंखा झलना। हवा करना। २ पंखा। ३ चँवर। ४ चकवा। चकोर। चक्रवाक। ५ लोध का पेड़। ६ पदार्थ। वस्तु (को०)।

बीजपाद—संज्ञा पुं० [सं०] पियासाल। विजयसार। २. भिलावाँ।

बीजपुरुष—संज्ञा पुं० [सं०] किसी वंश का आदि या मूल पुरुष जिससे वह वंश चला हो।

बीजपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] १ महुआ। २ मौलसिरी। ३ अनार।

बीजपूर, बीजपूरक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजौरा नीबू। २. चकोतरा। ३ गलगल।

बीजपूर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजौरा नीबू। २. चकोतरा।

बीजपेशिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] अंडकोश।

बीजफलक—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू।

बीजमंत्र—संज्ञा पुं० [सं० बीजमन्त्र] दे० 'बीज-१२'।

बीजमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमलगट्टा।

बीजमार्गी—संज्ञा पुं० [सं० बीजमार्गिन्] एक प्रकार के वैष्णव जो पश्चिम भारत में पाए जाते हैं। ये लोग निर्गुण उपासक होते हैं और देवी देवताओं का पूजन नहीं करते।

बीजरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] उड़द की दाल।

बीजरेचक—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा।

बीजरेचन—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा।

बीजलि@†—संज्ञा स्त्री० [सं० विद्युत्, प्रा० विज्ज] दे० 'बिजली'। उ०—च्यारइ पासइ घण घणउ बीजलि विवइ अकास।—ढोला०, दू० २६०।

बीजवर—संज्ञा पुं० [सं०] उड़द। माष।

बीजवाहन—संज्ञा पुं० [सं०] महादेव। शिव।

बीजवृक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिजयसार। पियासाल। २ भिलावाँ।

बीजसार—संज्ञा पुं० [सं०] वायविडंग।

बीजसू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

बीजस्नेह—संज्ञा पुं० [सं०] पलाश। ढाक।

बीजाकुर—संज्ञा पुं० [सं० बीजाङ्कुर] अंखुआ। अंकुर।

बीजाकुरन्याय—संज्ञा पुं० [सं० बीजाङ्कुर न्याय] एक न्याय। विशेष दे० 'न्याय'—४ (६४)।

बीजान्य—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटा।

बीजाम्ल—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा। महाफल।

बीजावाप—संज्ञा पुं० [सं०] ऊँट।

बीजित—वि० [सं०] १ जिसे किसी बात का संदेह हो। शंकित। २. सिंचित (को०)।

बीजी—संज्ञा पुं० [सं० बीजिन्] १. वह जिसे संदेह हो। २ शिव। ३. भिलावाँ का पेड़।

बीजूफल†—संज्ञा स्त्री० [सं० बिल्व, प्रा० बिल्ल + सं० फल, प्रा० फल] बिल्व या बेल का फल, बेलफल। उ०—बेलगिरि दल बीजूफल दल मधुपुर दीजो।—सं० सूर, पृ० ८६।

बीजोदक—संज्ञा पुं० [सं०] खारी नमक मिला हुआ पानी। खारा पानी। शोरा।

बीज्य—वि० [सं०] १. जो बोने के योग्य हो। २. जो अन्न पैदा होने के उपयुक्त हुआ हो। पुष्ट। ३ बीजगणित। जिसे पंखा झला जाय (को०)।

बीठणा†—संज्ञा पुं० [सं० वीटा, प्रा० बीठा, प्रा० बीठण] दे० 'बीटा'। उ०—बाटी पीसी कुण पुरुष, बिलसे बीठा बाह। हूँ बाटी पीसी मालवी, मेरे आसल बिलाह।—ढोला०, दू० २६०।

बीठना†—क्रि० स० [सं० वीटा, प्रा० बीठा] बीड़ा लगाना। पान करना। उ०—बाटी पीसी कुण पुरुष बिलसे बीठा बाह। —ढोला०, दू० २६०।

बीटक—संज्ञा पुं० [सं०] (पान का) बीड़ा (को०)।

बीटा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. मांस या अन्य खाद्य पदार्थ के एक प्रकार का पेड़ा या बाटी जो घी में तलकर खाया जाता है।

विशेष—समझा यह जाता है कि यह पेड़ा पहले पहल बाटी से बनाया गया था। कुछ लोगों का यह भी मत है कि यह पेड़ा अंडे के आकार का होता है, इसी से इसका नाम बीटा पड़ा था।

२ धातु या पत्थर का बना हुआ गोला जिसे व्यायाम या प्रायश्चित्त के लिये कुहनी में रखते थे (को०)।

बीटि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पान का बीड़ा। २ तांबूल (को०)। ३ पोती का गाँठ (को०)। ४ कपड़ों का गाँठ जो पीछे रहती है (को०)।

बीटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लगाया हुआ पान का बीड़ा। २ दे० 'बीटि'।

बीटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पान का बीड़ा। २. दे० 'बीटि'।

बीटुली†—संज्ञा स्त्री० [सं० वेष्टा] पगड़ी। उ०—सबरी बो बीटुली ढोली मेल्हे सज। सरदा पट न लेटियउ, सूर न मेलइँ अज।—ढोला, दू० ५८०।

बीटो—संज्ञा पुं० [सं०] किसी व्यवस्थापिका सभा के स्वीकृत प्रस्ताव या मंतव्य को अस्वीकृत करने का अधिकार। वह अधिकार जिससे व्यवस्थापक मंडल की एक शाखा दूसरी शाखा के स्वीकृत प्रस्ताव या मंतव्य को अस्वीकृत कर सकती है। अस्वीकृति या निषेधाधिकार। नामंजूरी। मनाही। रोक।

यौ०—वीटोपावर = रोकने की शक्ति।

वीण(७)—संज्ञा स्त्री० [स० वीणा] दे० 'वीणा'।

वीणा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध बाजा। वीन।

विशेष—यह तत जातीय वाद्य है और इसका प्रचार अब तक भारत के पुराने ढग के गवैयो मे है। इसमे बीच मे एक लबा पोला दंड होता है, जिसके दोनो सिरो पर दो बडे बडे तूंबे लगे होते हैं और एक तूंबे से दूसरे तूंबे तक, बीच के दड पर से होते हुए, लोहे के तीन और पीतल के चार तार लगे रहते हैं। लोहे के तार पक्के और पीतल के कच्चे कहलाते है। इन सातो तारो को कसने या ढीला करने के लिये सात खूंटिया रहती हैं। इन्ही तारो को झनकारकर स्वर उत्पन्न किए जाते हैं। प्राचीन भारत के तत जाति के बाजो मे वीणा सब से पुरानी और अच्छी मानी जाती है। कहते हैं, अनेक देवताओ के हाथ मे यही वीणा रहती है। भिन्न भिन्न देवताओ आदि के हाथ मे रहनेवाली वीणाओ के नाम अलग अलग हैं। जैसे,—महादेव के हाथ की वीणा लंकी, सरस्वती के हाथ की कच्छपी, नारद के हाथ की महती, विश्वावसु की बृहती और तुबुरु के हाथ की कलावती कहलाती है। वत्सव उदयन की वीणा का नाम घोषवती या घोषा था। इसके अतिरिक्त वीणा के और भी कई भेद हैं। जैसे,—त्रितंत्री, किन्नरी, विपची, रजनी, शारदी, रुद्र और नादेश्वर आदि। इन सबकी आकृति आदि मे भी थोडा बहुत अतर रहता है।

पर्या०—वल्लकी। परिवादिनी। ध्वनिमाला। वगमल्ली। घोषवती। कठकूणिका।

२ विद्युत्। बिजली। ३ ज्योतिष में ग्रहो की एक विशेष अवस्थिति (को०)। ४ एक योगिनी का नाम (को०)।

वीणागणकी—संज्ञा पुं० [स० वीणागणकिन्] वह जो गायक दल का प्रमुख (को०) हो।

वीणागणिगी—संज्ञा पु० [स० वीणागणगिन्] दे० 'वीणागणकी'।

वीणागाथी—संज्ञा पुं० [स० वीणागाथिन्] वीणा बजानेवाला (को०)।

वीणातत्र—संज्ञा पुं० [स० वीणातन्त्र] तत्रविशेष (को०)।

वीणादड—संज्ञा पुं० [स० वीणादंड] वीणा मे का लबा दड या तुबी का बना हुआ वह अश जो मध्य मे होता है। इसे प्रवाल भी कहते हैं।

वीणानुबध—संज्ञा पु० [स० वीणानुबन्ध] वीणा का वह निचला भाग जहाँ तार बँधे रहते हे। उपनाह (को०)।

वीणापाणि[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वीणापाणि[2]—संज्ञा पु० [स०] नारद (को०)।

वीणापाणि[3]—वि० जिसके हाथ मे वीणा हो। वीणा लिए हुए।

वीणाप्रसेव—संज्ञा पु० [स०] वह गिलाफ जो वीणा पर उसकी रक्षा के लिये चढाया जाता है।

वीणाभिद्—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की वीणा।

वीणारव—संज्ञा पु० [स०] वीणावादन की ध्वनि।

वीणावशशलाका—संज्ञा स्त्री० [स०] उपनाह। वीणानुबंध (को०)।

वीणावती—संज्ञा स्त्री० [स०] १. सरस्वती। २ एक अप्सरा का नाम।

वीणावरा—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की मक्खी।

वीणावाद, वीणावादक—संज्ञा पुं० [स०] वह जो वीणा बजाता हो। वीनकार।

वीणावादन—संज्ञा पु० [स०] १ वीणा बजाना। २ वीणा बजाने का कोणाकार छल्ला। मिजराब (को०)।

वीणावादिनी—संज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती (को०)।

वीणावाद्य—संज्ञा पु० [स०] वीणा नामक तत्री वाद्य। वीणा बाजा। उ०—इद्रजाल, आकरज्ञान, रत्नपरीक्षा, तौर्यत्रिक, वीणावाद्य, हरमेपला, अश्ववध, मृगवंध, मीनवध, लीनवंध, चट।—वर्ण०, पृ० ३।

वीणाविनोद—संज्ञा पुं० [स०] एक विद्याधर का नाम (को०)।

वीणाशिल्प—संज्ञा पुं० [स०] वीणावादन की कला (को०)।

वीणास्य—संज्ञा पुं० [स०] नारद।

वीणाहस्त—संज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

वीणी—वि० [स० वीणिन्] १ वीणावादक। वीणा बजानेवाला। २ जो वीणा लिए हो। वीणावाला (को०)।

वीतस—संज्ञा पु० [स०] १ वह जाल, फदा या इसी प्रकार की और सामग्री जिससे पशु और पक्षी आदि फँसाए जाते है। २. चिडियाघर। खगालय (को०)। ३ शिकार के पशुओ को पालने की जगह (को०)।

वीत[1]—संज्ञा पुं० [स०] वे हाथी, घोड़े और सैनिक आदि जो युद्ध करने के योग्य न रह गए हो। २. अकुश के द्वारा मारना। अकुश का प्रहार करना। ३ साख्य के अनुसार अनुमान के दो प्रकारो मे से एक।

विशेष—साख्य मे अनुमान के तीन भेद कहे गए है—पूर्ववत् या केवलान्वयी, शेषवत् या व्यतिरेकी और सामान्यतो दृष्ट या अन्वय-व्यतिरेकी। इनमे से पूर्ववत् और सामान्यतोदृष्ट अनुमान तो 'वीत' कहलाते हैं और शषवत् को अवीत कहते है। विशेष दे० 'अनुमान'।

वीत[2]—वि० जिसका परित्याग कर दिया गया हो। जो छोड दिया हो। २ जो छूट गया हो। मुक्त। ३ जो बीत गया हो। जो समाप्त हो चुका हो। अतर्हित। गत। लुप्त। ४ जो निवृत्त हो चुका हो। जो (किसी बात से) रहित हो। मुक्त। शून्य। जैसे—वीतभय, वीतराग वीतशक। ५ इच्छित अनुमोदित। पसंद किया हुआ। सुन्दर। जिसको अलगाया गया हो (को०)। ७ जो युद्ध के योग्य न हो (को०)। ८ पालतू (को०)। ९ ओढा या धारण किया हुआ। पहना हुआ (को०)।

वीतक—संज्ञा पुं० [स०] १ घिरी हुई भूमि। बाडा। २ चदन और कपूर का चूर्ण रखने का पात्र (को०)।

वीतकल्मष—वि० [स०] निष्पाप। पापमुक्त (को०)।

वीतकाम—वि० [सं०] कामनाहीन (को०)।

वीतघृण—वि० [स०] निर्दय [को०]।

वीतजन्म—वि० [स०] अजन्मा [को०]।

वीततृष्णु—वि० [स०] तृष्णारहित। वासनाहीन [को०]।

वीतत्रसरेणु—वि० [स०] निर्विकार [को०]।

वीतदभ—सज्ञा पु० [स० वीतदम्भ] वह जिसने दभ या अहकार का परित्याग कर दिया हो। जिसका अभिमान नष्ट हो गया हो।

वीतन—सज्ञा पुं० [स०] कठ के दोनो पार्श्व [को०]।

वीतभय—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका भय छूट गया हो। २ विष्णु। ३ शिव का एक नाम (को०)।

वीतभीन—सज्ञा पु० [स०] एक असुर का नाम।

वीतमत्सर—वि० [स०] मत्सरहीन [को०]।

वीतमल—वि० [स०] १ जो कोई पाप न करे। पापरहित। २ जिसमे किसी प्रकार का कलक या मल आदि न हो। विमल।

वीतमोह—वि० [स०] निर्मोही [को०]

वीतराग[1]—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसने राग या आसक्ति आदि का परित्याग कर दिया हो। वह जो निस्पृह हो गया हो। उ०—निरुद्देश्य मेरे प्राण, दूर तक फैले उस विपुल अज्ञान मे, खोजते थे प्राणो को जड मे ज्यो वीतराग चेतन को खोजने।—अनामिका, पृ० ७१। २ बुद्ध का एक नाम। ३ जैनो के प्रधान देवता का एक नाम।

वीतराग[2]—वि० १ वासनाहीन। इच्छारहित। शात। ३ रागरहित। बिना राग का [को०]।

वीतविष—वि० [सं०] विशुद्ध। निर्मल [को०]।

वीतव्रीड—वि० [स०] निर्लज्ज [को०]।

वीतशोक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसने शोक आदि का परित्याग कर दिया हो। २ अशोक नामक वृक्ष।

वीतसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] यज्ञोपवीत। जनेऊ।

वीतहव्य[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जो अगिरा के वश मे थे। २ शुनक के पुत्र का नाम।

वीतहव्य[2]—वि० यज्ञ मे आहुति देनेवाला। जो यज्ञकुड मे आहुति या हव्य देता हो।

वीतहिरण्यमय—वि० [स०] स्वर्णपात्र से हीन [को०]।

वीतहोत्र—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वीतिहोत्र'।

वीति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गति। चाल। २ दीप्ति। चमक। आभा। ३ गर्भ धारण करने की क्रिया। ४ खाने या पीने की क्रिया। ५ यज्ञ। ६ फोडा। ७ प्रजनन। उत्पादन (को०)। ८. आनदोपभोग (को०)। ९ सफाई। परिमार्जन (को०)। १० निवृत्ति। पार्थक्य (को०)। ११ प्राप्ति (को०)।

वीतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जेठी मधु। मुलेठी। २ नीलिका।

वीतिहोत्र[1]—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ पुराणानुसार राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम। ४ हैहयवश के एक राजा का नाम। ५. वह जो यज्ञ करता हो।

वीतिहोत्रदयिता, वीतिहोत्रप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] स्वाहा [को०]।

वीती—सज्ञा पु० [सं० वीतिन्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वीथि—सज्ञा स्त्री० [स०, द० वीथी] दे० 'वीथी' [को०]।

वीथिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वीथी'।

वीथी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दृश्य काव्य या रूपक के २७ भेदो मे से एक भेद।

विशेष—यह एक ही अक का होता है और इसमे एक ही नायक होता है। इसमे आकाशभाषित और शृगार रस की अधिकता रहती है। प्राचीन काल मे ऐसे रूपक अलग भी खेले जाते थे और दूसरे नाटको के साथ भी। इसके नीचे लिखे १३ अग माने गए हैं—(१) उद्घातक। (२) अवलगित, (३) प्रपच, (४) त्रिगत, (५) छलन, (६) वाक्केली, (७) अधिबल, (८) गड, (९) अवश्यदित, (१०) नालिका, (११) असत्प्रलाप, (१२) व्याहार और (१३) मृदव। धनजय ने अपने दशरूपक मे वीथी के उक्त तेरह अगो का उल्लेख करके कहा है कि सूत्रधार इन वीथ्यगो के द्वारा अर्थ और पात्र का प्रस्ताव करके प्रस्तावना के अत मे चला जाय और तब वस्तुप्रपचन आरभ हो। साहित्यदर्पण के अनुसार वीथी के अंग ही प्रहसन के भी अग हो सकते हैं। अतर केवल यही है कि वीथी मे तो इसका होना आवश्यक है, पर प्रहसन मे ऐच्छिक होता है। अत कहा जा सकता है, वीथी और प्रहसन दोनो प्रस्तावना के ऐसे अशो को कहते थे, जिनमें हास्य रस की अधिकता होती थी और जिनके द्वारा सामाजिको या दर्शको के मन मे अभिनय के प्रति रुचि या उत्कठा उत्पन्न की जाती थी।

२ मार्ग। रास्ता। सडक। ३ वह आकाशमार्ग जिससे होकर सूर्य चलता है। रविमार्ग। ४ आकाश मे नक्षत्रो के रहने के स्थानो के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सडक के रूप मे माने गए है। जैसे,—नागवीथी, गजवीथी, ऐरावती वीथी, गोवीथी, मृगवीथी आदि।

विशेष—आकाश मे उत्तर, मध्य और दक्षिण मे क्रमश ऐरावत, जरद्भव और वैश्वानर नामक तीन स्थान माने गए हैं, और इनमे से प्रत्येक स्थान मे तीन तीन वीथियाँ हैं। इस प्रकार कुल नौ वीथियो मे सत्ताईस नक्षत्र समान भागो मे विभक्त हैं, अर्थात् प्रत्येक वीथी मे तीन तीन नक्षत्रो का अवस्थान माना गया है।

५ पक्ति। कतार (को०)। ६ हाट। पण्यवीथिका (को०)। ७ मकान मे सामने का छज्जा (को०)। ८ घुडदौड का चक्राकार मार्ग [को०]। ९ चित्रो की पक्ति (को०)।

वीथीकृत—वि० [सं०] पक्ति या राशि के रूप मे रखा हुआ अथवा व्यवस्थित [को०]।

वीथ्यग—सज्ञा पुं० [स० वीथ्यङ्ग] रूपक मे वीथी के अग जो १३ माने गए है। विशेष दे० 'वीथी—१'।

वीदग पु†—सज्ञा स्त्री० [देश०] कविता। उ०—पुरभूम पाठ पिगल मता साहित वीदग सार नै।—रघु० रू०, पृ० १४।

वीदेस(पु)—सज्ञा पु० [स० विदेश] दे० 'विदेश।' उ०—सूनी सेज वीदेस पीउ, दुइ दुख नाल्ह कहइयो कूण।—बी० रासो, पृ० ४३।

वीध्र[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. आकाश। २ अग्नि। ३. वायु।

वीध्र[2]—वि० शुद्ध। स्वच्छ [को०]।

वीनाह—सज्ञा पु० [स०] वह जँगला या ढकना आदि जो कुएँ के ऊपर लगाया जाता है।

वीनाही—सज्ञा पु० [स० वीनाहिन्] वह जिसमे वीनाह लगा हो। कूप। कुआँ [को०]।

वीप—वि० [स०] जलहीन। निर्जल [को०]।

वीपसा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वीप्सा] दे० 'वीप्सा'।

वीपा—सज्ञा स्त्री० [स०] विजली।

वीप्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक शब्दालंकार जहाँ आश्चर्य, आदर, घृणा, आदि भावो को व्यक्त करने के लिये एक ही शब्द अनेक वार प्रयुक्त होता है।

विशेष—हिंदी साहित्य मे सर्वप्रथम भिखारीदास ने 'वीप्सालकार' के नाम से इसे ग्रहण किया है।

२ परिव्याप्ति (को०)। ३. पुन पुन. कथन। पुनरुक्ति (को०)। ४ कार्य की निरतरता सूचित करने के लिये शब्दो की की जानेवाली द्विरुक्ति (को०)।

वीवुकोश—सज्ञा पु० [स०] चामर। चँवर [को०]।

वीरकरा—सज्ञा स्त्री० [स० वीरङ्करा] पुराणानुसार एक नदी का नाम, जिसे वीरकरा भी कहते हैं।

वीरघर—सज्ञा पु० [स० वीरन्धर] १ मयूर। मोर। २ जगली पशुओ के साथ होनेवाला युद्ध। ३ एक प्राचीन नदी का नाम। चमडे का कचुक या सदरी (को०)।

वीर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो साहसी और बलवान् हो। शूर। बहादुर। २ योद्धा। सैनिक। सिपाही। ३ वह जो किसी विकट परिस्थिति मे भी आगे बढकर उत्तमतापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करे। ४ वह जो किसी काम मे और लोगो से बहुत बढकर हो। जैसे,—दानवीर, कर्मवीर। ५ पुत्र। लडका। ६. पति। खसम। ७. भाई (स्त्रियाँ)। ८ महाभारत के अनुसार दनायु नामक दैत्य के पुत्र का नाम। ९ विष्णु। १० जिन ११ साहित्य मे शृगार आदि नौ रसो मे से एक रस।

विशेष—इसमे उत्साह और वीरता आदि की परिपुष्टि होती है। इसका वर्ण गौर और देवता इद्र माने गए हैं। उत्साह इसका स्थायी भाव है और धृति, मति, गर्व, स्मृति, तर्क और रोमाच आदि इसके सचारी भाव हैं। भयानक, शात और शृंगार रस का यह रस विरोधी है।

१२ तान्त्रिको के अनुसार साधना के तीन भावो मे से एक भाव।

विशेष—कहते है, दिन के पहले दस दड मे पशु भाव से, बीच के दस दड मे वीर भाव से और अतिम दस दड मे दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए। रुद्रयामल के ग्यारहवें पटल मे इसका विवरण है। वामकेश्वर तत्र के अनुसार कुछ लोगो का यह भी मत है कि पहले १६ वर्ष की आयु तक पशु भाव से, फिर ५० वर्ष की आयु तक वीर भाव से और इसके उपरात दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए।

१३ तान्त्रिको के अनुसार वह साधक जो इस प्रकार वीर भाव से साधना करता है।

विशेष—दिन रात मद्य पीना, पागलो की सी चेष्टा रखना, शरीर मे भस्म लगाए रहना और अपने इष्टदेव को मनुष्य, बकरी, भेडे या भैसे आदि का बलिदान चढाना इनका मुख्य कर्तव्य होता है।

१४ वह जो किसी काम मे बहुत चतुर हो। होशियार। १५ कर्मठ। कर्मशील। १६ यज्ञ की अग्नि। १६ सोनागेया नामक विष। १८ काली मिर्च। १९ पुष्करमूल। २० काँजी। २१ खस। उशीर। २२ आलूबुखारा। २३ पीली कटसरैया। २४ चौलाई का साग। २५ वाराहीकद। गेंठी। २६ लताकरंज। २७ कनेर। २८ अर्जुन नामक वृक्ष। २९ काकोली। ३०. सिंदूर। ३१. शालिपर्णी। सरिवन। ३२ लोहा। ३३ नरसल। नरकट। ३४ भिलावाँ। ३५ कुश। ३६ ऋषभक नामक ओषधि। ३७. तोरई। ३८. अग्नि (को०)। ३९ नट। अभिनेता (को०)। ४०. चावल का माँड (को०)।

वीर[2]—वि० १. शूर। बहादुर। २ शक्तिशाली। ताकतवर ३. श्रेष्ठ। सर्वोत्कृष्ट [को०]।

वीर(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० सखी। सहेली। दे० 'बीर'।

वीरकठ—सज्ञा पुं० [स० वीरकण्ठ] एक प्रकार का डिंगल गीत। —रघु० रू०, पृ० १९५।

वीरक—सज्ञा पु० [स०] १ सफेद कनेर। २ वह जो किसी निर्दिष्ट देश का निवासी हो। ३ पुराणानुसार चाक्षुष मन्वतर के एक मनु का नाम। ४ योद्धा। शूर। बहादुर। विक्रात (को०)।

वीरकरा—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम जिसे वीरकरा भी कहते हैं।

वीरकर्मा—सज्ञा पु० [स० वीरकर्मन्] वह जो वीरो की भाँति काम करता हो। वीरोचित कार्य करनेवाला।

वीरकाम—सज्ञा पु० [स०] वह जिसे पुत्र की कामना हो। पुत्र की इच्छा रखनेवाला।

वीरकीट—सज्ञा पुं० [स०] नगण्य सैनिक। नाम मात्र का सैनिक [को०]।

वीरकुक्षि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो।

वीरकेतु—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार पाचाल के एक राजकुमार का नाम।

वीरकेशरी—वि० [स० वीरकेशरिन्] वह जो वीरो मे सिंह के समान अथवा बहुत श्रेष्ठ हो।

वीरकेसरी—वि० [स० वीरकेसरिन्] दे० 'वीरकेशरी'।

वीरक्षुरिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] कृपाणी। कटार [को०]।

वीरगति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्वर्ग। २ वह उत्तम गति जो वीरो को रणक्षेत्र मे मरने से प्राप्त होती है।

विशेष—कहते हैं, युद्धक्षेत्र मे वीरतापूर्वक लड़कर मरनेवाले लोग सूर्यमडल का भेद न कर सीधे स्वर्ग जाते है।

वीरगोत्र—सज्ञा पु० [स०] वीरो का खानदान या कुल [को०]।

वीरगोष्ठी—सज्ञा स्त्री० [स०] योद्धाओ की गोठ। वीरो की आपसी वार्ता [को०]।

वीरचक्र—सज्ञा पुं० [स०] १ तत्र के अनुसार एक चक्र। २. वीरो का सैन्य दल। ३ विष्णु [को०]। ४ स्वतत्रताप्राप्ति के अनतर भारत सरकार द्वारा सैनिको की वीरता पर प्रसन्न होकर उन्हे प्रदान किया जानेवाला एक विशेष प्रकार का पदक।

वीरचक्रेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

वीरचक्षुष्मान्—सज्ञा पुं० [स० वीरचक्षुष्मत्] विष्णु। [को०]।

वीरचर्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] वीरता का कार्य। शूरकर्म।

वीरजनन—वि० [स०] वीर को उत्पन्न करनेवाला।

वीरजननी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वीरप्रसू'।

वीरजयतिका—सज्ञा स्त्री० [सं० वीरजयन्तिका] १ युद्ध। सग्राम। २. रण मे योद्धाओ का नृत्य [को०]।

वीरण—सज्ञा पुं० [स०] १ कुश, दर्भ, काँस और दूब आदि की जाति के तृण। २ उशीर। खस। ३. पुराणानुसार एक प्रजापति का नाम।

विशेष—इनकी कन्या असिक्नी का विवाह दक्ष से हुआ था। इस कन्या के गर्भ से पाँच हजार वीर पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनसे सृष्टि बढी थी।

४ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वीरणक—सज्ञा पु० [स०] एक नाग का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

वीरणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटाक्ष। तिरछी चितवन। २. गहरी भूमि। ३ वीणा की पुत्री और चाक्षुष की माता का नाम [को०]।

वीरतर[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ शर। तीर। बाण। २. उशीर। खस।

वीरतर[2]—वि० शूरो मे प्रधान। वीरश्रेष्ठ। सामर्थ्यवान् [को०]।

वीरतरु—सज्ञा पुं० [स०] १. अर्जुनवृक्ष। २. तालमखाना। ३ भिलावाँ। ४ शर नामक तृण। ५ पियासार या पियासाल नामक वृक्ष। ६ बिल्व वृक्ष (को०)।

वीरता—सज्ञा स्त्री० [स०] वीर होने का भाव। शूरता। बहादुरी।

वीरताडक—सज्ञा पुं० [स०] विधारा नाम की लता [को०]।

वीरतृण—सज्ञा पुं० [सं०] सरकडा [को०]।

वीरत्त—सज्ञा पुं० [सं० वीरत्व] वीरत्व। वीर होने का भाव। वीरता। उ०—आए सुमहल सामत सूर पूरंन तेज वीरत्त पूर। अनभग अग, अनभूल वान जिन दिट्ठ अरिय पावै न जान। —पृ० रा०, ६।१३३।

वीरत्तण—सज्ञा पुं० [अप०] वीरत्व। वीरता। उ०—उअर वपुरा को करेआ वीरत्तण नित ठाम।—कीर्त्ति०, पृ० ६०।

वीरत्व—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वीरता'।

वीरदर्प—सज्ञा पु० [स०] वीरता का जोश। वीरता का उत्साह या समग। उ०—जहाँ अल्हा गानेवाले सैकडो सुननेवालो को घंटो वीरदर्प से पूर्ण किए रहते हैं, वहाँ भेदभूमि से परे एक सामान्य हृदयसत्ता की झलक दिखाई पडती है।—चितामणि, भा० २, पृ० ६१।

वीरद्युम्न—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक राजकुमार का नाम।

वीरद्रु—सज्ञा पु० [स०] अर्जुन नामक वृक्ष [को०]।

वीरधन्वा—पज्ञा पुं० [स० वीरधन्वन्] कामदेव का एक नाम।

वीरनाथ—वि० [स०] १. वीरो मे श्रेष्ठ। २ जिसके सहायक शूर वीर हो [को०]।

वीरनायक—सज्ञा पु० [स०] उशीर। खस।

वीरपट्ट—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक विशेष प्रकार का पहनावा जो युद्ध के समय पहना जाता था।

वीरपट्टिका—सज्ञा स्त्री० [स०] ललाट पर बाँधी जानेवाली सोने की पट्टी [को०]।

वीरपत्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैदिक काल की एक नदी का नाम। २ वह जो किसी वीर की पत्नी हो।

वीरपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भाँग। भग। २ एक प्रकार का महाकद जिसे धारणी भी कहते हैं।

वीरपत्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक कद [को०]।

वीरपर्ण—सज्ञा पु० [स०] सुरपर्णा। माचीपत्री।

वीरपाण, वीरपाणक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वीरपान'।

वीरपान, वीरपानक—सज्ञा पु० [स०] वह पान जो वीर लोग युद्ध का श्रम मिटाने के लिये करते है।

वीरपुष्प—सज्ञा पु० [स०] एक क्षुप [को०]।

वीरपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ महाबला। सहदेई। २ सिंदुरपुष्पी। लटकन।

वीरप्रजायिनी, वीरप्रजावती—सज्ञा स्त्री० [स०] वीरप्रसू। वीर पुत्र को जन्म देनेवाली नारी। वीरमाता [को०]।

वीरप्रमोक्ष—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वीरप्रसवा, वीरप्रसविनी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० वीरप्रसू' [को०]।

वीरप्रसू—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो वीर सतान उत्पन्न करती हो।

वीरबाहु—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ३ एक वानर का नाम (को०)। ४ रावण के एक पुत्र का नाम।

वीरभद्र—सज्ञा पुं० [स०] १ अश्वमेध यज्ञ का घोडा। २ उशीर। खस। ३ प्रख्यात वीर। प्रसिद्ध योद्धा। श्रेष्ठ वीर (को०)। ४. शिव के एक प्रसिद्ध गण का नाम जो उनके पुत्र और अवतार माने जाते हैं। उ०—शिव जी के शरीर से अग्नि बहिर्गत हुई

कि मानो वह तीनो लोको को भस्म किया चाहती है और इस अग्नि मे से वीरभद्र उत्पन्न हुआ।—कबीर म०, पृ० २१८।

विशेष—कहते हैं, दक्ष का यज्ञ नष्ट करने लिये शिव जी ने अपने मुँह मे इनको सृष्टि की थी। वीरभद्र ने बहुत से रुद्रो की सृष्टि करके दक्ष का यज्ञ नष्ट किया था।

वीरभद्रक—सज्ञा पुं० [स०] खस। उशीर।

वीरभद्र रस—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस जो सन्निपात के लिये बहुत उपकारी माना जाता है।

वीरभवती—सज्ञा स्त्री० [स०] बडी बहिन [को०]।

वीरभार्या सज्ञा स्त्री० [स०] वीर की पत्नी [को०]।

वीरभाव—सज्ञा पुं० [स०] १ वीरो की प्रकृति या स्वभाव। २ तत्र मे एक भाव। वीरशैव सप्रदाय का एक भाव। विशेष दे० 'वीर'-१२।

वीरभुक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] आधुनिक वीरभूम का प्राचीन नाम।

वीरमणि—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार देवपुर के एक प्राचीन राजा का नाम।

विशेष—इस नरेश के पुत्र रुक्मागद ने रामचद्र जी के यज्ञ का घोडा पकड लिया था। इसपर शत्रुघ्न और हनुमान आदि ने इससे युद्ध किया था। कहते है, इस युद्ध मे महादेव जी भी वीरमणि की ओर से लडे थे और उन्होने शत्रुघ्न को अपने पाश मे बाँध लिया था। तब रामचंद्र ने आकर उन्हें और अपना घोडा छुडाया था।

वीरमत्स्य—सज्ञा पु० [स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वीरमर्दन—सज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

वीरमर्दल, वीरमर्दलक—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल जो युद्ध के समय बजाया जाता था।

वीरमाता—सज्ञा स्त्री० [स० वीरमातृ] वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो। वीरजननी। वीरप्रसू।

वीरमानी—वि० [स० वीरमानिन्] अपने को वीर माननेवाला [को०]।

वीरमार्ग—सज्ञा पुं० [स०] स्वर्ग।

वीरमुद्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का छल्ला जो प्राचीन काल मे पैर की बीचवाली उँगली मे पहना जाता था।

वीररज—सज्ञा पुं० [स० वीररजस्] सिंदूर।

वीररस—सज्ञा पुं० [स०] १ काव्य के नौ रसो मे एक का नाम। विशेष दे० 'वीर'—११। २ वीर भाव [को०]।

वीरराघव—सज्ञा पुं० [सं०] १. रामचद्र का नाम। २. सस्कृत का एक नाटक।

वीररेणु—सज्ञा पुं० [सं०] भीमसेन का एक नाम।

वीरललित—सज्ञा पुं० [सं०] वीरो का सा, पर साथ ही कोमल स्वभाव। वीरता के साथ ही कोमल स्वभाव।

वीरलोक—सज्ञा पुं० [स०] १. स्वर्ग। २. वीरो का समुदाय।

वीरवती—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. मासरोहिणी नाम की लता। २ वह स्त्री जिसके पति और पुत्र जीवित हो [को०]।

वीरवत्सा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वीरमाता [को०]।

वीरवल्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली नाम की लता।

वीरवह—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो घोडो द्वारा खीचा जाय। २. रथ। स्यदन।

वीरवाक्य—सज्ञा पुं० [सं०] ललकार [को०]।

वीरवाद—सज्ञा पुं० [सं०] वीरता के कारण प्राप्त यश। प्रतिष्ठा। ख्याति [को०]।

वीरवाह—सज्ञा पुं० [सं०] वीरवह। रथ। स्यदन [को०]।

वीरविक्रम—सज्ञा पुं० [स०] सगीत मे एक ताल का नाम [को०]।

वीरविप्लावक—सज्ञा पुं० [स०] वह ब्राह्मण जो शूद्रो से धन आदि लेकर हवन करता हो।

वीरवृक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] १. भिलावाँ। २ अर्जुन नामक वृक्ष। ३. महाशालि। देवधान्य। ४. बिल्वातर या बलतर नामक वृक्ष। ५ सावाँ नामक धान्य। ६. शाल वृक्ष।

वीरवेतस—सज्ञा पुं० [सं०] अमलवेत।

वीरव्यूह—सज्ञा पुं० [स०] वीरो का व्यूह। सैनिको का एक व्यूह [को०]।

वीरव्रत—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो अपने सकल्प पर सदा दृढ़ रहता हो। वीरतापूर्वक अपने सकल्प का पालन करनेवाला। २. वह ब्रह्मचारी जो बहुत ही निष्ठा तथा आचारपूर्वक रहता हो। ३. पुराणानुसार मधु के एक पुत्र का नाम जो सुमना के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ४ शूरता। वीरता (को०)।

वीरशकु—सज्ञा पुं० [सं० वीरशङ्कु] तीर। बाण [को०]।

वीरशय—सज्ञा पुं० [स०] १. वीरो के सोने का स्थान, रणभूमि। युद्धक्षेत्र। लडाई का मैदान। २. बाण की शय्या—जैसी पितामह भीष्म के लिये अर्जुन ने शरो से बनाई थी (को०)।

वीरशयन—सज्ञा पुं० [स०] १ वीरो का सोने का स्थान, रणभूमि। २ तीर की शय्या।

वीरशय्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १. रणभूमि। २. दे० 'वीरशय'।

वीरशाक—सज्ञा पु० [सं०] बथुआ नामक साग।

वीरशायी वि० [स० वीरशायिन्] वीरशय्या पर सोनेवाला [को०]।

वीरशैव सज्ञा पुं० [सं०] शैवो का एक भेद।

वीरश्रेष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] अद्वितीय योद्धा [को०]।

वीरसू—सज्ञा पुं० [स०] १. वह स्त्री जो पुत्रो को ही जन्म दे। २. वह स्त्री जो वीर पुत्र प्रसव करती हो। वीरजननी। उ०—अब, रहे यह रुदन वीर सु तुम, व्रत पालो। ठहरो प्रस्तुत वह्नि पर नीर न डालो।—साकेत, पृ० ४०४।

वीरसेन—सज्ञा पुं० [स०] १. राजा नल के पिता का नाम। २ आरुक या आढ़ नाम की जडी जो हिमालय मे होती है। ३. आलूबुखारा। ४. एक दानव का नाम (को०)। ५. हस्तिवैद्यक ग्रंथ के लेखक का नाम जिन्हे वीरसोम भी कहते हैं (को०)।

वीरसेनज, वीरसेनसुत—सज्ञा पु० [स०] राजा नल [को०]।

वीरसैन्य—सज्ञा पु० [स०] लहसुन [को०]।

वीरस्कंध—सज्ञा पु० [स० वीरस्कन्ध] महिष [को०]।

वीरस्थ—सज्ञा पु० [स०] वह पशु जिसका यज्ञ मे बलिदान हो।

वीरस्थान—सज्ञा पु० [स०] १ साधको का एक प्रकार का आसन जिसे वीरासन कहते है। २ स्वर्ग, जहाँ वीर लोग मरने पर जाते हैं।

वीरस्नाका—सज्ञा स्त्री० [स०] वेतस या नरसल की बनी हुई रेहल जिसपर रखकर पुस्तकें पढी जाती थी [को०]।

वीरहत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मनुष्य की हत्या करना। नरवध। २ पुत्रवध [को०]।

वीरहा[1]—सज्ञा पुं० [स० वीरहन्] १ विष्णु। २ वह अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसका अग्निहोत्रवाली अग्नि आलस्य आदि के कारण बुझ गई हो।

वीरहा[2]—वि० मनुष्यो या शत्रु के वीरो को मारनेवाला।

वीरहोत्र—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन प्रदेश का नाम जो विंध्य पर्वत पर था।

वीरातक—सज्ञा पु० [स० वीरान्तक] १ वह जो वीरो का अत या नाश करता हो। २ अर्जुन नामक वृक्ष।

वीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सुरामासी। सुरा। २ छोर काकोली। ३ भुईआँवला। ४ एलुवा। ५. केला। ६ विदारीकद। ७ काकोली। ८ शतावर। ९. घोकुंआर। १०. ब्राह्मी। ११. अतीस। अतिविषा। १२ मदिरा। शराब। १३ शीशम का पेड। १४ गभारी नामक वृक्ष। ५ पृश्निपर्णी। पिठवन। १६ खिरेंटी। १७ कुटकी। १८ जटामासी। बालछड। १९ आँवला। २० वह स्त्री जिसके पति और पुत्र हो। २१, वीरपत्नी। वीरभार्या (को०)। २२ पत्नी (को०)। २३ माता (को०)। २४ महाभारत के अनुसार एक प्राचान नदी का नाम।

वीराचारी—सज्ञा पु० [स० वीराचारिन्] एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त उपासक।

विशेष—वीराचारी अपने इष्ट देवताओ की वीर भाव से उपासना करते है। ये लोग मद्य को शक्ति और मास को शिव स्वरूप मानते है, और इन दोनो के भक्तो को भैरव समझते हैं। ये लोग चक्र मे बैठकर पूजन करते है और बीच बीच मे किसी स्त्री को काली मानकर उसपर मद्य, मास आदि चढाते हैं। ये लोग प्राय शव या मृत शरीर लाकर उसकी पूजा करते और उसी के द्वारा अनेक प्रकार के साधन और पूजन करते हैं।

वीराद्रु—सज्ञा पु० [स०] अर्जुन नामक वृक्ष।

वीरान—वि० [फा०] उजडा हुआ। जिसमे आबादी न रह गई हो। निर्जन। जैसे—यह बस्ती बिलकुल वीरान हो गई है। २ जिसकी शोभा नष्ट हो गई हो। श्रीहीन। ३ (भूमि) जिसमे कुछ पैदा न हो। बजर।

वीराना—सज्ञा पुं० [फा० वीरानह्] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की आबादी न हो। उजाड। जगल।

वीरानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] वीरान या उजाड होने का भाव।

वीराम्ल—सज्ञा पुं० [स०] अमलबेत।

वीरारुक—सज्ञा पु० [स०] आरुक या आड नाम की जडी जो हिमालय मे होती है।

वीराशसन—सज्ञा पुं० [स०] १ वह युद्धभूमि जो बहुत ही भीषण और भयानक जान पडती है। युद्ध मे जोखिम से भरी जगह। २ युद्ध का मैदान। रणक्षेत्र (को०)। ३ निगरानी रखना (को०) ४ अगतिक वा निरवलब आशा [को०]।

वीराष्टक—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वीरासन—सज्ञा पु० [स०] १ बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसका व्यवहार प्राय. पूजन और तात्रिको आदि के साधन मे होता है। इसमे बाएँ पैर और टखने पर दाहिना जाँघ रखकर बैठते हैं। २ काई एक जानु मोडकर बैठना (को०)। ३ युद्धक्षेत्र। रणभूमि (को०)। ४ निगरानी करने की जगह। सतरी का चौका (को०)।

वीरिण—सज्ञा पुं० [स०] ईरिण भूमि। ऊसर भूमि [को०]।

वीरिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वीरण प्रजापति की कन्या उसिक्नी जो दक्ष को ब्याही था। २ वह स्त्री जिसे पुत्र हो। पुत्रवती। ३. एक प्राचान नदी का नाम।

वीरी[1]—सज्ञा पु० [स० वैरिन्] वैरी। शत्रु। उ०—वीरी जणह न चालइ वाट।—वी० रासो, पृ० ६७।

वीरुध—सज्ञा पु० [स० वीरुत्, वीरुध्] १. वृक्ष। २ लता और वनस्पति आदि। ३ ओषधि। ४ विस्तृता या गुल्मनी नाम की लता। ५ शाखा। टहनी (को०)। ६ काटने पर पुन बढ जानेवाला पौधा (को०)।

वीरुधा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दवा के रूप मे काम मे आनेवाली वनस्पति। ओषधि। ३. दे० 'वीरुध'।

वीरेंद्र—सज्ञा पु० [स० वीरेन्द्र] श्रेष्ठ वीर [को०]।

वीरेंद्री—सज्ञा स्त्री० [स० वीरेन्द्री] एक योगिनी का नाम [को०]।

वीरेश—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। महादेव। २ श्रेष्ठ वीर। बडा योद्धा (को०)। ३. शिव की एक लिंगमूर्ति (को०)।

वीरेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। महादेव। दे० 'वीरेश'।

यौ०—वीरेश्वर लिंग=शिव की एक लिंगमूर्ति। वीरेश।

वीरोज्झ—सज्ञा पु० [स०] वह ब्राह्मण जो अग्निहोत्र करने मे आलस्य करता हो [को०]।

वीरोपजीवक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वीरोपजीविक' [को०]।

वीरोपजीविक—सज्ञा पु० [स०] वह जो अग्निहोत्र के द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो।

वीर्य—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर के सात धातुओ मे से एक धातु जिसका निर्माण सबके अत मे होता है और जिसके कारण शरीर मे बल और काति आती है।

विशेष—वीर्य को चरम धातु भी कहते हैं। यह स्त्रीप्रसग के समय अथवा रोग आदि के कारण यो ही मूत्रेंद्रिय से निकलता है। कुछ लोगो का मत है कि वीर्य दो प्रकार का है—शीत और उष्ण। और कुछ लोगो का मत है कि यह आठ प्रकार का होता है—उष्ण, शीत, स्निग्ध, रुक्ष, विशद, पिच्छिल, मृदु और तीव्र। विशेष दे० 'शुक्र'।

पर्या०—शुक्र। तेज। रेत। बीज। इद्रिय।

२. दे० 'रज'। ३. वैद्यक के अनुसार किसी पदार्थ का वह सार भाग जिसके कारण उस पदार्थ मे शक्ति रहती है। किसी वस्तु का मूल तत्व। ४ पराक्रम। बल। शक्ति। सामर्थ्य। ५ अन्न आदि का बीज। बीआ। ६ पुस्त्व (को०)। ७ साहस। दृढता (को०)। ८ (ओषधियो की) अचूकता। प्रभावकारिता (को०)। ९. आभा। दीप्ति। कांति (को०)। १० गौरव। महत्ता। महिमा (को०)। ११ गरल। विष (को०)। १२ सोना। सुवर्ण (को०)।

वीर्यकर—सज्ञा पु० [स०] मज्जा। मेद। वसा। वपा [को०]।

वीर्यकाम—वि० [स०] पुस्त्व का अभिलाषी [को०]।

वीर्यकृत—सज्ञा पुं० [स०] बलवान्। ताकतवर।

वीर्यकृत्—वि० [स०] जो बल या वीर्य उत्पन्न करता हो। बलकारक।

वीर्यज—सज्ञा पु० [स०] लडका। बेटा। पुत्र।

वीर्यतम—सज्ञा पु० [स०] वह जो बहुत बडा बलवान् हो।

वीर्यधर—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप मे रहनेवाले एक प्रकार के क्षत्रिय।

वीर्यपण—वि० [सं०] वीरता द्वारा क्रीत या खरीदा हुआ [को०]।

वीर्यपारमिता—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो के अनुसार छह सिद्धियो मे से एक। शक्ति की पराकाष्ठा [को०]।

वीर्यप्रपात—सज्ञा पु० [स०] वीर्य का पतन। वीर्य का स्खलन [को०]।

वीर्यवत्—वि० [स०] १ बलवान्। मजबूत। प्रबल। समर्थ। २. मासल। हृष्ट पुष्ट।

वीर्यवान्—वि० [स० वीर्यवत्] दे० 'वीर्यवत्'।

वीर्यवाही—वि० [स० वीर्यवाहिन्] बीज अथवा वीर्य उत्पन्न करनेवाला [को०]।

वीर्यवृद्धिकर—सज्ञा पु० [स०] वीर्य बढ़ानेवाली ओषधि। वाजीकरण [को०]।

वीर्यशुल्क[1]—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वीर्यशुल्का] वह प्रतिज्ञा या प्रण जो वीर्य सबधी हो। जैसे,—यह प्रतिज्ञा करना कि जो पुरुष (या स्त्री) अमुक कार्य करेगा, उसके साथ इस स्त्री (या पुरुष) का विवाह होगा।

वीर्यशुल्क[2]—वि० जिसका मूल्य वीर्य हो। शक्ति द्वारा क्रीत [को०]।

वीर्यसह—सज्ञा पु० [स०] सूर्यवंशी राजा सौदास के पुत्र कल्माषपाद का एक नाम।

वीर्यहारी—सज्ञा पुं० [स० वीर्य्यहारिन्] एक यक्ष का नाम जो दु.सह नामक यक्ष की कन्या के गर्भ से किसी चोर के वीर्य से उत्पन्न हुआ था।

विशेष—कहते हैं, जो लोग कदाचारी होते हैं, या बिना हाथ पैर धोए रसोईघर मे जाते हैं, उनके घर मे यह यक्ष अपने और दो भाइयो के साथ रहता है।

वीर्यहीन—वि० [स०] १ निर्वीर्य। कातर। कापुरुष। शक्तिहीन। २. पुस्त्वहीन। नपुसक। क्लीव। ३ बाजरहित। जिसमे बीज न हो [को०]।

वीर्यातराय—सज्ञा पुं० [स० वीर्यान्तराय] जैनियो के अनुसार वह पाप कर्म जिसका उदय होने से जीव पुष्टाग होते हुए भी शक्तिविहीन हो जाता है और कुछ पराक्रम नही कर सकता।

वीर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'वीर्य'। २ एक नागकन्या (को०)।

वीर्याधान—सज्ञा पु० [स०] गर्भाधान [को०]।

वीर्यान्वित, वीर्ययुक्त—वि० [स०] वीयवान्। शक्तिमान् [को०]।

वीर्यावदान—सज्ञा पु० [स०] किसी कार्य को वीरतापूर्वक सपन्न करना [को०]।

वीर्याविधूत—वि० [स०] वीर्य द्वारा तिरस्कृत वा कपित। शक्ति द्वारा पराजित [को०]।

वीवध—सज्ञा पु० [स०] १. अन्न की राशि। २. भूसे का ढेर। ३ सडक। ४ राजकर। ५ शकट आदि का जुआ। ६. घट। घडा। ७. बोझा [को०]।

वीवधिक—सज्ञा पु० [स०] १ बिसाती। बिसातखाने की दूकान करनेवाला। २. वह जो बहँगी आदि द्वारा बोझ ढोता हो। बहँगी ढोनेवाला व्यक्ति [को०]।

वीवाहⓊ—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'विवाह'।

वीश—सज्ञा पु० [स०] २० पल या ½ तोले का एक परिमाण [को०]।

वीषित—वि० [स०] बिखरा हुआ। विस्तृत। फला हुआ [को०]

वीस[1]—सज्ञा पु० [स०] नृत्य का एक प्रकार [को०]।

वीसⓊ†[2]—वि० सज्ञा स्त्री० [स० विशति, विंश] दे० 'बीस'। जैसे, वीस वसा = बीस बिस्वा।

वीसरना†—क्रि० अ०, क्रि० स० [स० विस्मरण] दे० 'बिसरना'। उ०—ढोला मिलिसि न वीसारसि नवि आविसि ना लेसि। —ढोला०, दू० १७५।

वीसवसाⓊ†—क्रि० वि० [हिं बीस + बिस्वा] पूरी तौर से। पूर्णतः। उ०—वेली तरलां तरां विलंबी वण हरियाली वीसवसा। —बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० १२२।

वीसारना†—क्रि० स० [स० विस्मारण] दे० 'बिसारना'। उ०—(क) सभारियाँ संताप, वीसारिया न वीसरइ।—ढोला०, दू० १८०। (ख) वीसारियाँ न वीसरइ चितारियाँ नावत।—ढोला०, दू० ६१२।

वीस्नⓊ—सज्ञा पु० [स० विष्णु] दे० 'विष्णु' उ०—ब्रह्मा वीस्न महादेव जानी। तिनते उतपत सकल पसारा उपजावत पालत करत सघारा।—रामानद०, पृ० ३१।

वीहगडा –सज्ञा पु० [स० विहङ्ग] १ पक्षी। २ विहायस। आकाश। उ०—जे सावण वीहगडे वीहगडउ न दूरि। —ढोला०, दू० ४९४।

वीह पु०—सज्ञा पु० [स० भी, प्रा० वीह, वोह] दे० 'वीह'। उ०—बोलि न सक्कूँ वोहतउ हेक ज वात हुई। राजि अपूठा वाहुडउ माल वणी मूई।—ढोला०, दू० ४०४।

वीहार—सज्ञा पु० [स०] दे० 'विहार'।

वुकूअ—सज्ञा पु० [अ वुकूअ] १ घटित होना। प्रकट होना। २ घटना। वाकिया। ३ पक्षियो का नीचे उतरना [को०]।

वुकूआ —सज्ञा स्त्री० [उर्दू वुकूअह्] दे० 'वाकिया', 'वाका'।

वुकूद—सज्ञा पु० [अ० वुकूद] अग्नि को दीप्त करना। जलाना [को०]।

वुकूफ —सज्ञा पु० [अ० वुकूफ] ज्ञान। जानकारी को०]।

वुजू—सज्ञा पु० [अ० वुजू] दे० 'वजू'। को०]।

वुजूद—सज्ञा पु० [अ० वुजूद] दे० 'वजूद' [को०]।

वुडित—वि० [स०] निमग्न। निमज्जित [को०]।

वुरुद –सज्ञा पु० [अ०] आगमन। आना। पधारना। २ प्रवेश [को०]।

वूर्ण –वि० [स०] वरण किया हुआ। चुना हुआ [को०]।

वुवूर्षु— वि० [स०] चुनने या वरण करने की इच्छावाला। जो चयन करना चाहता हो [को०]।

बुसूल—वि०, सज्ञा पु० [अ०] १ 'वसूल'। २ दे० 'उसूल [को०]।

वुसूली —सज्ञा स्त्री० [अ०] वसूला। प्राप्ति।

वृत—सज्ञा पुं० [स० वृन्त] १ स्तन का अगला भाग। कुचाग्र। चुचुक। २ बोंडी। डेढ़ा। ३ शाखा का वह अश जिससे पुष्प, फल, पत्ते आदि सयुक्त होते हैं। प्रसववधन (को०)। ४ घटीधारा। घड़ा रखने की तिपाई (को०)। ५ वृताक। भटा। बैंगन (को०)। ६ कोशवारी एक कीट। जैसे, रेशम का कीडा (को०)।

यौ०—वृततुवा=गोल कद्दू या लौकी। वृतफल=बगन। भटा। वृतयमक।

वृतक –सज्ञा पु० [स० वृन्तक] डठल [को०]।

वृतयमक—सज्ञा पुं० [स० वृन्तयमक] यमक अलकार का एक प्रकार जहाँ एक ही कविता मे अनेक यमको का प्रयोग होता है [को०]।

वृताक—सज्ञा पुं० [स० वृन्ताक] १ बैंगन। २ पोई का साग।

वृताकी—सज्ञा स्त्री० [स० वृन्ताकी] १ वनभटा। २ बैंगन।

वृतासन—सज्ञा पुं० [स० वृन्त+आसन] वृतरूपी पीठिका या आसन। उ०—वृतासन हिलता डुलता है। इधर उधर मृदु तनु तुलता है।—कुणाल०, पृ० ११६।

वृतिका—सज्ञा स्त्री० [स० वृन्तिका] लघु वृतक। छोटा डंठल [को०]।

वृतिता—सज्ञा स्त्री० [स० वृन्तिता] कटुका [को०]।

वृद—सज्ञा पु० [स० वृन्द] १ समूह। झुड। राशि। ढेर।

यौ०—वृदगान=समवेत गायन। कई गायको का एक साथ गाना। वृदगायक=अनेक गायको के साथ साथ गानेवाला। वृदगीत। वृदमाधव=चिकित्सापरक एक ग्रथ। वृंदवाद्य। वृदसंहिता, वृदसिधु=आयुर्वेद के ग्रथ का नाम।

२ सौ करोड की संख्या। ३ एक मुहूर्त का नाम। उ०—माघ शुक्ल भूता दिन जानो वृंद मुहूरत में पहिचानो।—विश्राम (शब्द०)। ४ गुच्छा। स्तवक (को०)। ५ कोरस (को०)। सहगान। वृदगान (को०)। ६ गले का फोटा, अर्बुद या ग्रथि (को०)। ७ आयुर्वेद के एक विद्वान् (को०)।

वृद—वि० अत्यधिक। बेशुमार [को०]।

वृदगीत —सज्ञा पु० [स० वृन्द+गीत] समवेत गान। कोरस गीत। वह गीत जिसे एक साथ कई गायक गाते हैं। उ०—जो वृदगीत युत वृदवाद्य से रखते महलो को मुखरित, ले अमित, पीन वीणा, मृदग आदिक वाद्यो के उपादान।—भूमि०, पृ० ६५।

वृदवाद्य—सज्ञा पुं० [स० वृन्द+वाद्य] कई वाद्यो का एक साथ बजनेवाला समूह। (अं०) आर्केस्ट्रा।

वृदा—सज्ञा स्त्री० [स० वृन्दा] १ तुलसी। २. राधिका के सोलह नामो मे से एक नाम। ३ गोकुल के समीप की एक अरण्यानी (को०)।

वृदाक—सज्ञा पुं० [स० वृन्दाक] परगाछा नाम का पेड।

वृदार—सज्ञा पु० [स० वृन्दार] १. मनोज्ञ। सुदर। आकर्षक। २ अधिक। बडा। विशाल। ३ प्रमुख। उत्तम। श्रेष्ठ [को०]।

वृदारक[1]—सज्ञा पुं० [स० वृन्दारक] १. देवता। २ श्रेष्ठ व्यक्ति। समादरणीय व्यक्ति (को०)। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र (को०)।

वृदारक[2]— वि० [स्त्री० वृन्दारका, वृदारिका] १. दे० 'वृदार'। २ आदरणीय। समान्य [को०]।

वृंदारका पु०—सज्ञा पुं० [स० वृन्दारक] देवता। वृदारक। —अनेकार्थ०, पृ० ४१।

वृदारण्य—सज्ञा पुं० [स० वृन्दारण्य] वृदावन।

वृदावन—सज्ञा पुं० [स० वृन्दावन] मथुरा जिले का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्णचद्र का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता है।

विशेष—कहते है, श्रीकृष्ण ने अपनी अधिकाश बाललीलाएँ यही की थी। पुराणो मे वृदावन के सबध मे अनेक प्रकार की विलक्षण कथाएँ आदि पाई जाती है। महमूद गजनवी ने वृदावन और उसके आस पास के अनेक स्थानो को बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर डाला था, और बहुत दिनो तक यह उसी दशा मे पडा रहा। पर पीछे से चैतन्य महाप्रभु ने यमुना के किनारे वर्तमान वृदावन नामक नगर की स्थापना की थी। इस नगर मे इस समय हजारो बडे बडे मदिर हैं और दूर दूर से यात्री लोग यहाँ दर्शनो के लिये आते हैं।

वृदावनी—सज्ञा स्त्री० [स० वृन्दावनी] तुलसी [को०]।

वृदावनेश्वर—सज्ञा पुं० [स० वृन्दावनेश्वर] श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृदावनेश्वरी—सज्ञा स्त्री० [स० वृन्दावनेश्वरी] राधिका का एक नाम।

वृदिष्ठ—वि० [स० वृन्दिष्ठ] १. अत्यत बडा। विशालतम। २. सुदरतम। मनोज्ञतम [को०]।

वृदी—वि० [स० वृन्दिन्] वृदवाला। समूहवाला [को०]।

वृदीयान्—वि० [स० वृन्दीयस्] १. दे० 'वृदिष्ठ'। २. सुदरतर [को०]।

बृंहण[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वह पदार्थ जो पुष्टिकारक हो। बलवर्धक द्रव्य। २ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का घृतपान। ३ असगध। ४ मुनक्का। ५ भुई कुम्हडा। ६ चरक के अनुसार सूअर के मास मे पकाया हुआ जौ का सत्तू। ७ पुष्ट करना (को०)। ८. हाथी की चिग्घाड (को०)।

बृंहण—वि० [स०] पुष्ट करनेवाला। पुष्टिकारक [को०]।

बृंहणवस्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की वस्ति जिसे निरुह या निरुढ भी कहते हैं। विशेष दे० निरुढ-वस्ति'।

बृंहित[2]—वि० [स०] परिवर्धित। पुष्ट किया हुआ [को०]।

बृंहित[2]—सज्ञा पुं० हाथी की चिग्घाड। बीड [को०]।

बृ—सज्ञा पुं० [स०] सेना की एक टुकडी। उ०—वेद काल मे 'बृ' सेना के एक गुल्म को कहते थे।—प्रा० भा० प०, पृ० १४०।

बृक—सज्ञा पु० [स०] १. कुत्ते की जाति का एक मासाहारी पशु। भेडिया। उ०—महा महिप बर। वरद बृकहु बहु हनत सहित श्रम।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ६४। २ शृगाल। गीदड। ३ कौवा। ४ क्षत्रिय। ५ चोर। लुटेरा। ६. वज्र। ७ अगस्त का पेड। ८. गवाविरोजा। ९ उलूक। उल्लू (को०)। १० सुगधित द्रव्यो का मिश्रण (को०)। ११ एक राक्षस का नाम। १२ जठराग्नि (को०)। १३ हल (को०)। १४ सूर्य (को०)। १५. चद्रमा (को०)। १६ कृष्ण का एक पुत्र (को०)।

बृककर्मा[1]—सज्ञा पु० [स० बृककर्म्मन्] एक असुर का नाम।

बृककर्मा[2]—वि० भेडिए के समान या तुल्य। अत्यत क्रूर [को०]।

बृकखड—सज्ञा पु० [स० बृकखण्ड] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बृकगर्त—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन जनपद का नाम।

बृकग्राह—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बृकजभ—सज्ञा पुं० [स० बृकजम्भ] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बृकदत—सज्ञा पु० [सं० बृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम। इसी की कन्या सानदिनी कुभकर्ण को ब्याही थी।

बृकदश—सज्ञा पुं० [स०] कुत्ता।

बृकदीप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

बृकदेव—सज्ञा पु० [सं०] पुराणानुसार वसुदेव के एक पुत्र का नाम।

बृकदेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी, देवकी का एक नाम।

बृकदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'बृकदेवा' [को०]।

बृकधूप—सज्ञा पुं० [स०] १ वह धूप जो अनेक प्रकार के सुगंधित द्रव्यो की सहायता से तैयार किया गया हो। २ सरल वृक्ष का निर्यास। तारपीन।

बृकधूमक—सज्ञा पु० [स०] एक क्षुप [को०]।

बृकधूर्त—सज्ञा पुं० [स०] गीदड।

बृकधूर्तक—सज्ञा पु० [स०] १ गीदड। २ रीछ [को०]।

बृकघोरण—सज्ञा पु० [स०] एक पशु [को०]।

बृकनिवृत्ति—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

बृकप्रस्थ—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक ग्राम का नाम।

बृकप्रेक्षी—वि० [स० बृकप्रेक्षित्] भेडिए की तरह देखनेवाला [को०]।

बृकबधु—सज्ञा पुं० [स० बृकबन्धु] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बृकरथ—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार कर्ण के एक भाई का नाम।

बृकल—सज्ञा पु० [स०] १ पुराणानुसार शिलष्टि के एक पुत्र का नाम। २ वल्कल का वस्त्र या परिधान (को०)।

बृकला—सज्ञा स्त्री० [स०] नाडी।

बृकवचिक—सज्ञा पुं० [स० बृकवञ्चिक] एक वैदिक ऋषि का नाम।

बृकवाला—सज्ञा स्त्री० [स०] द्वार के दोनो ओर लगाई जानेवाली लकडी। बाजू (को०)।

बृकस्थली—सज्ञा स्त्री० [स०] माहिष्मती नगरी [को०]।

बृका सज्ञा स्त्री० [स०] १. अवष्ठा या पाढा नाम की लता। २. प्राचीन काल का एक परिमाण जो दो सूपो के बराबर होता था।

बृकाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] निसोथ।

बृकाजिन—सज्ञा पु० [स०] १ भेडिए का चमडा। २. वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

बृकाम्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का खट्टा नीबू [को०]।

बृकायु[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ जगली कुत्ता। २ चोर।

बृकायु[2]—वि० भेडिए जैसी प्रकृतिवाला, हिंसक, क्रूर [को०]।

बृकारति—सज्ञा पुं० [स०] कुत्ता।

बृकारि—सज्ञा पु० [स०] कुत्ता।

बृकाश्व—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल के एक ऋषि का नाम।

बृकाश्वकि—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

बृकास्य—सज्ञा पुं० [स०] १ पुराणानुसार कृष्ण के एक पुत्र का नाम जिन्हे बृकाश्व भी कहते थे। २ वह जिसका मुँह भेडिए जैसा हो (को०)।

बृकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मादा भेडिया। २. सियारिन। ३ अवष्ठा। पाढा [को०]।

बृकोदर—सज्ञा पु० [सं०] १ भीमसेन का एक नाम।

विशेष—कहते हैं, भीमसेन के पेट मे बृक नाम की विकट अग्नि थी। इसी से उनका यह नाम पडा।

२ ब्राह्मण (को०)। ३ शिव के गणो का एक वर्ग (को०)।

बृक्क—सज्ञा पुं० [सं०] १ गुरदा। उ०—बृक्क जो कुक्षि गोल हैं सो उदर मे स्थित मेद की पुष्टि करनेवाले कहे हैं।—शार्ङ्गधर०, पृ० १५३। २ हृदय (को०)।

बृक्कक—सज्ञा पु० [स०] मूत्राशय। गुरदा।

बृक्का सज्ञा स्त्री० [स०] १ हृदय। २ गुरदा (को०)।

बृक्ण—वि० वि० [स०] १ कटा या काटा हुआ। छिन्न। २ विदारित। फाडा हुआ। ३ टुटा या तोडा हुआ [को०]।

वृक्त—वि० [स०] १. निर्मल किया हुआ। २. फैलाया या बिखेरा हुआ। विकीर्ण [को०]।

वृक्ष—संज्ञा पुं० [स०] १ वनस्पति या उद्भिज्ज के अंतर्गत वह बड़ा पेड़ जिसका एक ही मोटा और भारी तना होता है और जो जमीन से प्रायः सीधा ऊपर की ओर जाता है। पेड़। दरख्त। द्रुम। विटप।

विशेष—प्रायः लोग बोलचाल में वृक्ष और क्षुप अथवा वृक्ष और दूसरी छोटी वनस्पतियों में कोई अंतर नहीं रखते और उनमें से अधिकांश को प्रायः वृक्ष ही कहा करते हैं। पर क्षुप और वृक्ष में यह अंतर है कि क्षुप तीन चार हाथ से अधिक ऊँचा नहीं होता, और न उसमें कोई एक मुख्य तना होता है। उसकी जड़ से ही कई डालियाँ निकलकर इधर उधर फैल जाती हैं। परंतु वृक्ष में एक मुख्य और भारी तना होता है जो पहले कुछ ऊँचाई तक सीधा ऊपर की ओर जाता है, और तब उसमें से चारों ओर डालियाँ निकलती हैं। पर फिर भी कुछ बड़े क्षुप ऐसे होते हैं जो अपने आकार प्रकार के कारण ही वृक्ष कहलाने हैं। वृक्ष में कुछ ठोस काठ का रहना भी आवश्यक होता है। पर केले में काठ का कोई अंश न रहने पर भी उसे लोग प्रायः वृक्ष ही कहते हैं। कुछ वृक्ष ऐसे होते हैं जिनके सब पत्ते वसंत ऋतु के आरंभ में झड़ जाते हैं, और तब फिर नए पत्ते निकलते हैं। ऐसे वृक्ष 'पतझड़' वाले वृक्ष कहलाते हैं जिनमें पुराने पक्के पत्तों के गिरने से पहले ही नए पत्ते निकल आते हैं। ऐसे वृक्ष सदाबहार कहलाते हैं। वृक्षों में प्रायः अनेक प्रकार के फल लगते हैं जिन्हें लोग खाते हैं, और उसकी लकड़ी से तरह तरह की चीजें (जैसे,—मेज, कुरसी, दरवाजा, हल, गाड़ी आदि) बनाई जाती हैं। इनकी पत्तियाँ आदि औषध रूप में, रंग निकालने और चमड़ा सिझाने के काम में आती हैं। वृक्ष प्रायः बीजों से और कभी कभी पनीरी के द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं।

पर्या०—महीरुह। शाखी। विटपी। पादप। तरु। पलाशी। द्रुम। आगम। स्थिर। नग। अग। कुज। क्षितिरुह। महीज। शाखु।

२ किसी प्रकार का क्षुप या पौधा अथवा कोई कुछ बड़ा और ऊँची वनस्पति। ३ वृक्ष से मिलती जुलती वह आकृति जिसमें किसी चीज का मूल अथवा उद्गम और उसकी अनेक शाखाएँ प्रशाखाएँ आदि दिखलाई गई हों। वंशवृक्ष। ४ वृक्ष का तना (को०)। ५ कुटज। इंद्रजव (को०)। ६ कफन। मृतचीवर (को०)।

वृक्षकंद—संज्ञा पुं० [स० वृक्षकन्द] बिदारीकंद।

वृक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ छोटा पेड़। २ पेड़। दरख्त। ३ कुटज का पेड़।

वृक्षकुक्कुट—संज्ञा पुं० [स०] जंगली मुर्गा।

वृक्षकोटर—संज्ञा पुं० [स०] वृक्ष का खोड़रा [को०]।

वृक्षखंड—संज्ञा पुं० [स० वृक्षखण्ड] निकुंज। वृक्षों का समूह [को०]।

वृक्षगुल्म—वि० [स०] जो वृक्षों में आवृत हो। वृक्षों से ढका हुआ [को०]।

वृक्षगृह—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी, जिनका निवास वृक्ष है।

वृक्षचर—संज्ञा पुं० [सं०] बंदर।

वृक्षच्छाय—संज्ञा पुं० [सं०] जो वृक्ष की छाया युक्त हो, कुंज [को०]।

वृक्षच्छाया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पेड़ की छाया [को०]।

वृक्षज—वि० [सं०] वृक्ष से उत्पन्न (फल, फूल, काष्ठ आदि)।

वृक्षतक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] १ गिनहरी। २ वृक्ष को काटनेवाला लकड़हारा। काष्ठकेता।

वृक्षदल, वृक्षपत्र, वृक्षपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] पत्ता। पेड़ का पत्ता [को०]।

वृक्षदोहद—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष को फूल लगना। विशेष दे० 'दोहद ६'।

वृक्षधूप—संज्ञा पुं० [सं०] सरल या चीड़ का पेड़।

वृक्षनाथ, वृक्षनायक—संज्ञा पुं० [सं०] बड़ का पेड़। वट वृक्ष।

वृक्षनिर्यास—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ में से निकलनेवाला किसी प्रकार का रस या तरल द्रव्य।

वृक्षपाक—संज्ञा पुं० [सं०] जंड का पेड़। वट।

वृक्षपाल—संज्ञा पुं० [सं०] १ जंगली शाल वृक्ष। २ बनरखा। वन का रक्षक (को०)।

वृक्षप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] स्मृतियों आदि के अनुसार पुण्यफल की प्राप्ति के लिये अश्वत्थ आदि के वृक्ष लगने की क्रिया।

वृक्षभक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परगाछा नाम का पौधा। वि० दे० 'परगाछा'। २. बंदाक। बंदा।

वृक्षभवन—संज्ञा पुं० [सं०] कोटर। वृक्ष का खोंडरा [को०]।

वृक्षभित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] टाँगा, कुल्हाड़ी आदि जिससे वृक्ष काटा जाय [को०]।

वृक्षभेदी—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षभेदिन्] १ कुठार। कुल्हाड़ी। २ बढ़ई की तक्षणी, रंदानी आदि (को०)।

वृक्षमर्कटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिनहरी [को०]।

वृक्षमार्जार—संज्ञा पुं० [सं०] काष्ठबिडाल। पेड़ पर रहनेवाला एक जानवर।

वृक्षमूल—संज्ञा पुं० [सं०] पेड़ की जड़।

वृक्षमूलिक—वि० [स०] वृक्ष की जड़ या मूल से संबंध रखनेवाला।

वृक्षमृद्भु—संज्ञा पुं० [स०] पानी में उगनेवाला बेंत [को०]।

वृक्षराज—संज्ञा पुं० [सं०] परजाता। पारिजात।

वृक्षराट्—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षराज्] पीपल का पेड़।

वृक्षरुहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ परगाछा नाम का पौधा। २ रुद्रवंती। बंदाक। ३. अमरबेल। ४ जतुका नाम की लता। ५ विदारीकंद। ककही या कंघी नाम का पौधा। ७ पुष्करमूल।

वृक्षरोपक—संज्ञा पुं० [सं०] वृक्षादि को लगानेवाला व्यक्ति।

वृक्षरोपण—संज्ञा पुं० [स०] वृक्ष रोपना। पेड़ लगाना [को०]।

वृक्षरोपयिता—संज्ञा पुं० [सं० वृक्षरोपयितृ] वह जो वृक्ष आदि लगाने का काम करता हो [को०]।

वृक्षवाटिका, वृक्षवाटी—सज्ञा स्त्री० [स०] बाग। बगीचा। उपवन।

वृक्षवासी—वि० [स० वृक्षवासिन्] वृक्ष पर रहनेवाला। जगली। उ०—यक्ख अगुलिमाल (बौद्धकाल) पहले एक वृक्षवासी नरभक्षक था, परवर्ती रूप मे द्वारपाल हो गया।—प्रा० भा० प०, पृ० ८७।

वृक्षश सज्ञा पु० [स०] गिरगिट। प्रतिसूर्यक (को०)।

वृक्षशायिक—सज्ञा पु० [स०] लगूर।

वृक्षशायिका—सज्ञा स्त्री० [स०] गिलहरी।

वृक्षसकट—सज्ञा पु० [स० वृक्षसङ्कट] वह पगडडी जो घने वृक्षो के बीच से गई हो।

वृक्षसारक—सज्ञा पुं० [स०] द्रोणपुष्पी। गूमा।

वृक्षसेचन—सज्ञा पु० [स०] पेड की सिंचाई। पेडो मे पानी देना (को०)।

वृक्षस्नेह—सज्ञा पु० [स०] पेड मे से निकलनेवाला निर्यास या तरल द्रव्य।

वृक्षाघ्रि—सज्ञा पु० [स० वृक्षाङ्घ्रि] पेड का निचला भाग या चरण। वृक्षमूल (को०)।

वृक्षादन—सज्ञा पु० [स०] १ कुठार। कुल्हाड। २ बढई का बसूला या रुखानी (को०)। ३ अश्वत्थ वृक्ष। ४ पियाल का पेड। ५ मधुमक्खी का छत्ता।

वृक्षादनी, वृक्षादिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विदारी। २ बदा। बर्फा। बदाक।

वृक्षाधिरुहक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का आलिगन (को०)।

वृक्षाधिरूढ—सज्ञा पु० [स०] आलिगन का एक प्रकार, जिसमे नारी पुरुष से उसी प्रकार लिपट जाती है जिस प्रकार लता वृक्ष से (को०)।

वृक्षाधिरूढक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृक्षाधिरूढ' (को०)।

वृक्षाधिरुढि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लता का वृक्ष मे लिपटना। २ आलिगन का एक प्रकार (को०)।

वृक्षामय—सज्ञा पु० [स०] लाख।

वृक्षाम्ल—सज्ञा पु० [स०] १ इमली। २ चुक नामक खटाई। ३ अमडा। ४ अमलबेत। ५ अम्लकूटा। अवलकुटा।

वृक्षायुर्वेद—सज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे वृक्षो के रोगो आदि की चिकित्सा का वर्णन हो।

वृक्षार्हा सज्ञा स्त्री० [स०] महामेदा।

वृक्षालय—सज्ञा पु० [स०] पक्षी। चिडिया।

वृक्षावली—सज्ञा स्त्री० [स० वृक्ष+अवली] पेडो की कतार। वृक्षसमूह। उ०—तातें वैष्णवन को व्रज की वृक्षावली सर्वथा तोरनी नाही।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३०२।

वृक्षावास—सज्ञा पु० [स०] १ वनवासी। तपस्वी। २ पक्षी (को०)।

वृक्षाश्रयी—सज्ञा पुं० [स० वृक्षाश्रयिन्] छोटा उल्लू। २ पक्षी (को०)।

वृक्षिका—सज्ञा स्त्री० [स० वृक्ष] वह पुतली जो वृक्ष के आधार पर हो। शालभजिका। पुतली। उ०—यहाँ बौद्ध तोरणो मे प्रयुक्त वृक्षिका यक्षिणी के प्रतीक का प्रभाव स्पष्ट दीखता है, किंतु हिंदू शैली मे निर्मित होने के कारण इनके आकार और विषय मे परिवर्तन आ गया।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १९५।

वृक्षोत्थ—वि० [स०] पेड पर उगा हुआ। वृक्ष पर उगनेवाला (को०)।

वृक्षोत्पल—सज्ञा पु० [स०] कनियारी या कनकचपा का पेड।

वृक्षौका—सज्ञा पुं० [स० वृक्षौकस्] वनमानुष (को०)।

वृक्ष्य—सज्ञा पु० [स०] पेड का फल।

वृज—सज्ञा पु० [स० व्रज] दे० 'व्रज'।

विशेष—'वृज' शब्द के यौगिक आदि के लिये दे० 'व्रज' शब्द के यौगिक।

वृजन[1]—सज्ञा पु० [स०] १ आकाश। आसमान। २ दुष्कर्म पाप। ३ लडाई। युद्ध। ४ निपटारा। निराकरण। ५ ताकत। शक्ति। बल। ६. बाल। ७ शत्रु। दुश्मन। ८. रक्षित या घेरी हुई भूमि या चरागाह (को०)। ९ घुँघराले बाल (को०)। १० विपत्ति। आपत्ति। दु ख। सकट (को०)।

वृजन[2]—वि० १ कुटिल। टेढा। २ शक्तिशाली। मजबूत (को०)। ३ जो अचल न हो। चल। स्थायी (को०)। ४ विनश्वर। क्षयिष्णु (को०)।

वृजन्य—सज्ञा पुं० [स०] ग्राम मे रहनेवाला बहुत ही सीधा सादा आदमी। वह जो परम साधु हो।

वृजि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्रज भूमि। २ मिथिला प्रदेश। तिरहुत।

वृजिन[1]—सज्ञा पु० [सं०] १. पाप। गुनाह। उ०—देव अखिल मगल भवन निविड ससय समन दमन वृजिनाटवी कष्टहर्ता।—तुलसी (शब्द०)। २. दु ख। कष्ट। तकलीफ। ३ रक्त चर्म। लाल खाल या चमडा। ४ खून। लहू। रक्त। ५ बाल। कुचित केश। ६ दुष्ट व्यक्ति (को०)।

वृजिन[2]—वि० १ कुटिल। टेढा। २ पापयुक्त।

वृज्य—वि० [स०] जो मोडा जाय। जो ऐंठा या घुमाया जाय (को०)।

वृतत—सज्ञा पु० [स० वृत्तान्त] दे० 'वृत्तात'। उ०- इम आतम उद्धार करि जनम लिया भुप आइ। सो वृतत कवि चद कहि वरन्यौ कवित बनाइ।—पृ० रा०, १।५७८।

वृत—वि० [स०] १ जो किसी काम के लिये नियुक्त किया गया हो। मुकर्रर किया हुआ। २ ढका हुआ। छाया हुआ। ३ जिसके सबध मे प्रार्थना की गई हो। ४ जो मजूर किया गया हो। स्वीकृत। ५ गोल। ६ वरण किय हुआ। चुना हुआ (को०)। ७ चारो ओर से घेरा हुआ। आवृत (को०)। ८ जो दूषित किया गया हो (को०)। ९ सेवित (को०)।

वृतपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] पुत्रदात्री नाम की लता।

वृताक्ष—सज्ञा पु० [स०] मुरगा।

वृतिकर—सज्ञा पु० [स० वृतिङ्कर] विकतक नाम का वृक्ष।

वृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह जिससे कोई चीज घेरी या ढकी जाय। २. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। ३ छिपाने की क्रिया। ४ वरण। चुनाव (को०)। ५. याचना। प्रार्थना (को०)।

वृत्त¹—सज्ञा पुं० [सं०] १ चरित्र। चरित। २ वेदो और शास्त्रो के अनुकुल आचार रखना। ३ आचार। चाल चलन। ४ स्तन के आगे का भाग। चूचुक। ५ सफेद ज्वार। ६ गुडा या गुड नाम की घास। ७ अजीर। ८ सतिवन। ९ कछुआ। १० समाचार। वृत्तात। हाल। उ०—अब जो वृत्त नवीन, होय कहहु सो करि कृपा।—प्रेमघन०, भा० १, पृ०८२। ११ बडो के आदर, इद्रियनिग्रह और सत्य आदि की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। १२ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। १३ जीविका का साधन। वृत्ति। १४ वह छद जिसके प्रत्येक पद मे अक्षरो की सख्या और लघु गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छद। जैसे,—इद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा, मालिनी आदि। उ०—नूतन वृत्तो मे कविकोविद नए गीत रच लाते है। नव रागो मे, नव तालो मे, गायक उन्हे जगाते हैं।—साकेत, पृ० २७३।

विशेष—पदो के विचार से वृत्त तीन प्रकार के होते हैं। जिस वृत्त के चारो पद समान हो, वह 'सम वृत्त' कहलाता है, जिसमे चारो पद असमान हो, वह 'विषम वृत्त' कहलाता है, और जिसके पहले और तीसरे तथा दूसरे और चौथे पद समान हो, उसे 'अर्ध समवृत्त' कहते हैं।

१५ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे बीस वर्ण होते हैं। इसे गडका और दडिका भी कहते हैं। १६ वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मडल। १७ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक विंदु उसके अदर के मध्यबिंदु से समान अतर पर हो। १८ दे० 'वृत्तासुर'।

वृत्त²—वि० १ बीता हुआ। गुजरा हुआ। २ दृढ। मजबूत। ३ जिसका आकार गोल हो। वर्तुल। ४ मृत। मरा हुआ। ५ जो उत्पन्न हुआ हो। जात। अस्तित्वमय। विद्यमान। ६ निष्पन्न। सिद्ध। ७ ढका हुआ। आच्छादित। ८ अनुष्ठित। कृत (को०)। ९ पठित। अधीत (को०)। १० प्रसिद्ध। ख्यात (को०)। ११ घटित। सभूत (को०)।

वृत्तक—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह गद्य जिसमे कोमल तथा मधुर अक्षरो और छोटे छोटे समासो का व्यवहार किया गया हो। २ छद। ३ बौद्ध या जैन गृहस्थ (को०)।

वृत्तकर्कटी—सज्ञा स्त्री० [सं०] खरबूजा।

वृत्तकोशा—सज्ञा स्त्री० [सं०] देवदाली नाम की लता।

वृत्ताकोप—सज्ञा पुं० [सं०] पीली देवदाली।

वृत्तखड—सज्ञा पुं० [सं० वृत्तखण्ड] १ किसी वृत्त या गोलाई का कोई अश। २ मेहराब।

वृत्तगधि—सज्ञा स्त्री० [सं० वृत्तगन्धि] वह गद्य जिसमे अनुप्रासो और समासो की अधिकता हो। वह गद्य जिसमे पद्य का आनद आता हो।

वृत्तगधी—सज्ञा पुं० [सं० वृत्तगन्धिन्] दे० 'वृत्तगधि'।

वृत्तगुड—सज्ञा पुं० [सं० वृत्तगुण्ड] दीर्घनाल या गोंदला नाम की घास।

वृत्तचूड—वि० [सं०] १ मेहरावनुमा (झरोखा)। २ दे० 'वृत्तचौल' (को०)।

वृत्तचेष्टा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्वभाव। प्रकृति। मिजाज। २ आचरण। चालचलन।

वृत्तचौल—वि० [सं०] जिसका चूडाकरण सस्कार हो चुका हो (को०)।

वृत्तज्ञ—वि० [सं०] रीतिरिवाज, घटना, इतिहास, वृत्तात आदि जाननेवाला (को०)।

वृत्ततडुल—सज्ञा पुं० [सं० वृत्ततण्डुल] यवनाल। जवनाल।

वृत्तपत्र—सज्ञा पुं० [सं०] पुनर्नवा नाम की लता।

वृत्तपरिणाह—सज्ञा पुं० [सं०] वृत्त की परिधि या घेरा (को०)।

वृत्तपर्णी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. पाठा। पाढा। २ बडी शणपुष्पी।

वृत्तपुच्छा—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का चमडा (को०)।

वृत्तपुष्प—सज्ञा पुं० [सं०] १ सिरस का पेड। २ कदम या कदब का पेड। ३ जलबेत। ४ धुरी कदम। ५ मदागुलाब। सेवती। ६ मोतिया। मोगरा। मुग्दर। ७. मल्लिका। कुब्जक। मालती।

वृत्तपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ नागदमनी। २ मदागुलाब। सवती।

वृत्तपूरण—सज्ञा पुं० [सं०] वृत्त या छद को पूरा करना। छद की पूर्ति (को०)।

वृत्तप्रत्यभिज्ञ—वि० [सं०] धर्मतत्त्वो मे अत्यत दक्ष (को०)।

वृत्तफल—सज्ञा पुं० [सं०] १ कोई गोलाकार फल। २ काली मिर्च। ३ अनार। ४ बेर। ५ कैथ। कपित्थ। ६ लाल अपामार्ग। लाल चिचडा। ७ करज का पेड। ८ तरबूज। ९ खरबूजा।

वृत्तफला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ बैंगन। भटा। २ बडबी ककडी। ३ आँवला।

वृत्तबध—सज्ञा पुं० [सं० वृत्तबन्ध] वह जो वृत्त या छद के रूप मे बाँधा गया हो।

वृत्तबीज—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृत्तबीज'।

वृत्तबीजका, वृत्तबीजा—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृत्तबीजका'।

वृत्तभग—सज्ञा पुं० [सं० वृत्तभङ्ग] १ छदोभग। २ आचरण या व्यवहार की भ्रष्टता (को०)।

वृत्तभोजन सज्ञा पुं० [सं०] गडीर या गिडनी नाम का साग।

वृत्तमल्लिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद आक। २ त्रिपुरमल्लिका।

वृत्तमाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] वृत्तातो की माला। घटनाओ की शृखला। उ०—भिन्न भिन्न शाखाओ के हजारो कवियो की केवल वृत्तमालाएँ साहित्य के इतिहास के अध्ययन में कहाँतक सहायता पहुचा सकती थी ?—इतिहास, पृ० २।

वृत्तयुक्त—वि० [सं०] आचरणयुक्त। सदाचारी (को०)।

वृत्तवत्—वि० [सं०] १ जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी। २ वृत्त के समान। गोलवर्तुलाकार (को०)।

वृत्तविधान—सज्ञा पुं० [सं० वृत्त+विधान] छदोविधान। छदो की योजना। उ०—श्रुतिकटु मानकर कुछ वर्णों का त्याग, वृत्त-विधान, लय, अत्यानुप्रास आदि नाद सौंदर्य-साधन के लिये ही है।—रस०, पृ० ४६।

वृत्तवीज—सज्ञा पु० [स०] १ भिंडी। तरोई। २ लोबिया। राजमाष।

वृत्तवीजका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. अरहर नामक दाल। २ पाडुफली। पाडुरफली।

वृत्तवीजा—सज्ञा स्त्री० [स०] अरहर नाम का अन्न।

वृत्तशस्त्र—वि० [स०] जो शस्त्रविद्या मे निष्णात हो। शस्त्र विद्या में निपुण। धनुर्वेदज्ञ [को०]।

वृत्तशाली—सज्ञा पु० [स० वृत्तशालिन्] वह जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी।

वृत्तश्लाघी—सज्ञा पु० [स० वृत्तश्लाघिन्] १ वह जिसे अपने काम का अभिमान या श्लाघा हो। २ क्षत्रिय।

वृत्तसकेत—वि० [स० वृत्तसङ्केत] जिसने अपनी सहमति या स्वीकृति दे दी हो [को०]।

वृत्तसग्रह—सज्ञा पु० [स० वृत्त+सङ्ग्रह] १. जीवनवृत्तातो का सग्रह। २. ऐसा ग्रथ जिसमे केवल जीवनी दे दी गई हो। उ०—सारे रचनाकाल को आदि, मध्य, पूर्व, उत्तर इत्यादि खडो मे आँख मूदकर बाँट देना किसी वृत्तसग्रह को इतिहास नही बना सकता।—इतिहास, पृ० २।

वृत्तसपन्न—वि० [स०] आचारवान्। वृत्तयुक्त।

वृत्तसादी—वि० [स० वृत्तसादिन्] आचार व्यवहार को नष्ट करनेवाला अनाचारी। कमीना [को०]।

वृत्तस्क, वृत्तस्थ—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका चरित्र शुद्ध हो। सदाचारी। २ वह जो दूसरो का उपकार करता हो। परोपकारी।

वृत्तहीन—वि० [स०] आचारहीन। आचाररहित [को०]।

वृत्तागी—सज्ञा स्त्री० [स० वृत्ताङ्गी] प्रियगु लता [को०]।

वृत्तात—सज्ञा पु० [स० वृत्तान्त] १ किसी बीती हुई बात या घटी हुई घटना का विवरण। समाचार। हाल। जैसे,—(क) इस घटना का सारा वृत्तात समाचारपत्रो मे छप गया है। (ख) अब आप अपना कुछ वृत्तात सुनाइए। २ प्रक्रिया। ३ सपूर्णता। समस्तता। ४ प्रस्ताव। ग्रथ का अध्याय। ५. आख्यान। ६. अवसर। मौका। ७ भाव। ८. चालू विषय या प्रकरण। ९ प्रकार। किस्म (को०)। १० ढग। रीति (को०)। ११. अवस्था। दशा (को०)। १२. अवकाश (को०)। १३ गुण। प्रकृति (को०)। १४ एकात (को०)। १५. बीती या घटी हुई स्थिति। घटना (को०)।

वृत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ भिंभरीट नाम का क्षुप। २. रेणुका। रेणुबीज। ३. प्रियगु। ४ मासरोहिणी। ५ सफेद सेम। ६ नागदमनी। ७ ननुआ।

वृत्तानुपूर्व—वि० [स०] गोलाई के अनुरूप।

वृत्तानुवर्ती—सज्ञा पु० [स० वृत्तानुवर्तिन्] वह जिसका आ० हो। सदाचारी।

वृत्तानुसारी—वि० [स० वृत्त+अनुसारिन्] विहित रीति से कार्य करनेवाला [को०]।

वृत्तार्द्ध—सज्ञा पु० [स०] वृत्त का आधा भाग [को०]।

वृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह कार्य जिसके द्वारा जीविकानिर्वाह होता हो। जीविका। रोजी।

क्रि० प्र०—करना।—लगना। होना।

२ वह धन जो किसी दीन, विधवा या छात्र आदि को बराबर, कुछ निश्चित समय पर उसके सहायतार्थ दिया जाय। उपजीविका।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

३ सूत्रो आदि का वह विवरण या व्याख्या जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिये की जाती है।

विशेष—हमारे यहाँ सूत्रो आदि की व्याख्या के वृत्ति, भाष्य, वार्तिक, टीका और टिप्पणी ये पाँच भेद किए गए है। इनमे से वृत्ति उस व्याख्या को कहते है जो कुछ सक्षिप्त होती है और जिसकी रचना गभीर होती है।

४ विवरण। वृत्तात। हाल। ५ नाटको मे विषय के विचार से वर्णन करने की शैली।

विशेष—यह चार प्रकार की कही गई है और भिन्न भिन्न रसो के लिये उपयुक्त मानी गई है। जैसे—कौशिकी वृत्ति शृगार रस के लिये, सात्वती वृत्ति वीर रस के लिये, आरभटी वृत्ति रौद्र और बीभत्स रस के लिये और भारती वृत्ति शेष अन्य रसो के लिये। जहाँ अच्छा वेशभूषावाला नायिका, बहुत सी स्त्रियो और नृत्यगीत तथा भोगविलास आदि का वर्णन हो, उसे कौशिकी, जहाँ वीरता, दानशक्ति, दया, सरलता आदि का वर्णन हो उसे सात्वती, जहाँ माया, इद्रजाल, सग्राम, क्रोध आदि का वर्णन हो, उसे आरभटी, और जहाँ सस्कृतबहुल कथोपकथन हो उसे भारती वृत्ति कहते है। इन चारो वृत्तियो के भी कई अवातर भेद माने गए हैं।

६ व्यवहार। ७ वह जो किसी दूसरे पर आश्रित या अवलबित हो। आवेश। ८ योग के अनुसार चित्त की अवस्था जो पाँच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध। ९ व्यापार। कार्य। १०. स्वभाव। प्रकृति। ११ कर्तव्य। १२ सहार करने का एक प्रकार का शस्त्र। उ०—पारचि माली वृत्ति नाम पुनि अतिमाली नो। —पद्माकर (शब्द०)। १३ अस्तित्व। सत्ता। १४ टिकना। किसी विशेष स्थिति मे होना या रहना (को०)। १५. अवस्था। दशा (को०)। १६. क्रम। प्रणाली (को०)। १७ मजदूरी (को०) १८ समानपूर्ण वर्ताव (को०)। १९. चक्कर काटना। मुडना (को०)। २० किसी वृत्त या पहिए की परिधि (को०)। २१ शब्द की शक्ति—अभिधा, लक्षणा और व्यजना (को०)। २२. विचार करने की प्रक्रिया। २३ अनुप्रास अलकार का एक भेद। २४. रुद्र की पत्नी (को०)।

वृत्तिकर[1]—वि० [सं०] वृत्ति या जीविका देनेवाला [को०]।

वृत्तिकर[2]—सज्ञा पु० पेशे के ऊपर लगाया जानेवाला एक प्रकार का सरकारी कर। (अ० प्रोफेशन टैक्स)।

वृत्तिकर्पित—वि० [स०] जीविका के अभाव मे दुखी [को०]।

वृत्तिकार—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसने किसी सूत्रग्रथ पर वृत्ति लिखी हो।

वृत्तिकृत्—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृत्तिकार'।

वृत्तिक्षीण—वि० [स०] दे० 'वृत्तिकर्पित'।

वृत्तिचक्र—सज्ञा पुं० [स०] क्रियाओ या व्यापारो का समूह। व्यवहारसमुच्चय। (अ० सिस्टम) उ०—वह एक वृत्तिचक्र है जिसके अतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीर-धर्म सबका योग रहता है। चिंतामणि, भा० २, पृ०८८।

वृत्तिच्छेद—सज्ञा पुं० [सं०] १. वृत्ति या जीविका से रहित होना। २ दे० 'वृत्तिच्छेदन'।

वृत्तिच्छेदन—सज्ञा पु० [स०] किसी की वृत्ति या जीविका का अपघात करना जो एक दोष माना गया है।

वृत्तिता—सज्ञा स्त्री० [स०] वृत्ति का भाव या धर्म।

वृत्तिदाता—वि० [स० वृत्तिदातृ] वृत्ति देनेवाला। जीविका चलानेवाला। आश्रयदाता [को०]।

वृत्तिनिबधन—सज्ञा पुं० [स० वृत्तिनिबन्धन] जीविकाप्राप्ति का साधन [को०]।

वृत्तिनिरोध—सज्ञा पुं० [सं०] वृत्ति मे उपस्थित होनेवाली बाधा [को०]।

वृत्तिभग—सज्ञा पुं० [स० वृत्तिभङ्ग] जीविका की हानि [को०]।

वृत्तिमूल—सज्ञा पु० [स०] रोजी का सहारा। जीविका का आधार [को०]।

वृत्तिरुशना—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार रुद्र की एक स्त्री का नाम।

वृत्तिवैकल्य—सज्ञा पु० [स०] वृत्ति की हानि। दे० 'वृत्तिभग' [को०]।

वृत्तिसाम्य—सज्ञा पु० [स० वृत्ति+साम्य] भावानुभूति की समान स्थिति। उ०—सभवत काल के साथ तादात्म्य करके कवि मे वृत्तिसाम्य स्थापन के द्वारा आलोचना के क्षेत्र मे हमारा यह प्रयास है।—बी० श० महा०, पृ० 'ग'।

वृत्तिस्थ[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो अपनी वृत्ति या जीविका पर स्थित हो। २ वह जो आचारवान् या वृत्तियुक्त हो। ३ गिरगिट।

वृत्तिस्थ[2]—वि० १ आचारवान्। २ किसी भी स्थिति या नियुक्ति मे रहनेवाला (को०)।

वृत्तिहता—वि० [स० वृत्तिहन्तृ] किसी की आजीविका के साधन को नष्ट करनेवाला [को०]।

वृत्तिहा—वि० [स० वृत्तिहन्] किसी की जीविका के साधन को नष्ट करनेवाला [को०]।

वृत्तिहानि—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृत्तिभग'।

वृत्तिह्रास—सज्ञा पु० [सं०] जीविका छूटना। वृत्ति या जीविका न रहना [को०]।

वृत्तेर्वाह—सज्ञा पुं० [सं०] सरकूजे की बेत।

वृत्त्यनुप्रास—सज्ञा पुं० [सं०] १. पाच प्रकार के अनुप्रासो मे से एक प्रकार का अनुप्रास जो काव्य मे एक अलकार माना जाता है। इसमे एक या कई व्यजन वर्ण एक ही या भिन्न भिन्न क्रम मे बार बार आते है। जैसे, आज भागी कारा घटा, कारी नागी वेस। इसमे र और व ये दो व्यजन कई बार आए है, अत यह वृत्त्यनुप्रास हुआ।

वृत्त्युपरोध—सज्ञा पुं० [सं०] जीविका मे पडनेवाला विघ्न [को०]।

वृत्त्युपाय—सज्ञा पु० [स०] वृत्ति या जीविका का आधार।

वृत्य[1]—वि० [सं० वृत्य] १. जो नियुक्त करने के योग्य हो। मुकर्रर करने के योग्य। २ वरणीय। वरण करने योग्य (को०)। ३ जिसे घेरा जाय। जो आवृत किया जाय (को०)। ४ रक्षणीय। रखने योग्य (को०)।

वृत्य[2]—सज्ञा स्त्री० [सं० वृत्ति] दे० 'वृत्ति' (व्यापार)। उ०—तीन गुननि की वृत्य जे तिन मे तीनौं होइ।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १७३।

वृत्र—सज्ञा पुं० [सं०] १ अंधेरा। २ मेघ। बादल। ३. शत्रु। दुश्मन। ४ पुराणानुसार त्वष्टा के पुत्र एक दानव या असुर का नाम। त्रिशिरा।

विशेष—इसे इद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिये दधीच की हड्डियो का वज्र बनाया गया था। कहते है, एक बार इद्र ने विश्वरूप पुरोहित को मार डाला था। उनके पिता त्वष्टा ऋषि ने इसका बदला चुकाने के लिये यज्ञ करके इसे उत्पन्न किया। जब इसने इद्र पर आक्रमण किया, तब इद्र देवताओ सहित इद्रपुरी मे भाग गए। पर अत मे विष्णु की सम्मति से इद्र ने दधीच ऋषि से उनकी हड्डियाँ माँगी और उन्ही हड्डियो का वज्र बनाकर इससे लडना आरभ किया। जब इद्र ने इसके दोनो हाथ काट डाले, तब यह इद्र को उनके हाथी ऐरावत सहित निगल गया। तब इद्र इसका पेट फाडकर बाहर निकले और इसका सिर काट डाला। देवीभागवत मे इसकी कथा विस्तार के साथ दी गई है। वेदो मे भी 'वृत्र असुर' का उल्लेख है, पर वहाँ जो कुछ वर्णन मिलता है, उससे आलकारिक रूप मे मेघ और अधकार आदि के सबध मे ही 'वृत्र' शब्द आया हुआ जान पडता है।

५ एक पर्वत का नाम। ६. व्यक्ति (को०)। ७ चक्र (को०)। ८ इद्र (को०)। ९ पर्वत। पहाड (को०)। १०. पत्थर (को०)। ११. धन (को०)। १२. चर्म। चमडा (को०)।

वृत्रखाद—सज्ञा पुं० [सं०] इद्र का एक नाम, जिन्होने वृत्र नामक असुर को मारा था।

वृत्रघ्न—सज्ञा पुं० [सं०] १ वृत्र नामक असुर का मारनेवाले, इद्र। २ वैदिक काल के एक देश का नाम जो गगा के तट पर था।

वृत्रघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार पारियात्र नामक कुलपर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम।

वृत्रतूर्य—सज्ञा पु० [स०] युद्ध। लड़ाई।

वृत्रत्व—सज्ञा पुं० [स०] १ वृत्र का भाव या धर्म। २. शत्रुता। दुश्मनी।

वृत्रद्रुट्—सज्ञा पुं० [स० वृत्रद्रुह्] इद्र। दे० 'वृत्रघ्न' [को०]।

वृत्रद्विट्—सज्ञा पु० [स० वृत्रद्विष्] इद्र [को०]।

वृत्रनाशन—सज्ञा पु० [स०] वृत्र नामक असुर को मारनेवाला, इंद्र।

वृत्रभोजन—सज्ञा पु० [स०] गडोर या गुंदरी नामक साग।

वृत्ररिपु—सज्ञा पु० [स०] वृत्र के रिपु। इद्र।

वृत्रवैरी—सज्ञा पु० [स० वृत्रवैरिन्] वृत्र को मारनेवाले, इंद्र।

वृत्रशकु—सज्ञा पु० [स० वृत्रशङ्कु] एक प्रकार का पत्थर का खभा। (वैदिक)।

वृत्रशत्रु—सज्ञा पुं० [स०] इद्र।

वृत्रहता—सज्ञा पु० [स० वृत्रहन्तृ] इद्र [को०]।

वृत्रहा—सज्ञा पु० [स० वृत्रहन्] वृत्रासुर को मारनेवाले, इद्र।

वृत्रारि—सज्ञा पु० [स०] इद्र।

वृत्रासुर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वृत्र'—४।

वृत्वा—सज्ञा पु० [स० वृत्वन्] आकाश। आसमान [को०]।

वृथा[1]—वि० [स०] बिना मतलब का। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। फजूल।

वृथा[2]—क्रि० वि० १ बिना मतलब के। बेफायदा। २ अनावश्यक रूप से (को०)। ३ मूर्खता से। आलस्यपूर्वक (को०)। ४ गलत या अनुचित रूप से (को०)।

वृथाकथा—सज्ञा स्त्री० [स०] बेकार की बात। गप शप [को०]।

वृथाकार—सज्ञा पु० [स०] मिथ्या रूप। खाली तमाशा (को०)।

वृथात्व—सज्ञा पुं० [स०] वृथा होने का भाव या धर्म।

वृथादान (ऋण)—सज्ञा पु० [स०] वह ऋण जो चालबाज, धूर्त आदि लोगो को दिया गया हो।

वृथापक्व—वि० [स०] जैसे तैसे अपने लिये पकाया हुआ [को०]।

वृथापलित—वि० [स०] वयोवृद्ध होते हुए भी नासमझ [को०]।

वृथाप्रजा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह माता जिसने व्यर्थ ही सतान उत्पन्न की हो [को०]।

वृथाप्रतिज्ञ—वि० [स०] सहसा प्रतिज्ञा कर लेनेवाला। गभीरतापूर्वक प्रतिज्ञा न करनेवाला [को०]।

वृथामति—वि० [स०] न समझ। निर्बुद्धि [को०]।

वृथामास—सज्ञा पु० [स०] वह मास जो किसी देवी या देवता को अभिप्रेत न हो या चढाया न गया हो। ऐसा मास खाने का निषेध है।

वृथार्तवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वध्या स्त्री [को०]।

वृथालभ—सज्ञा पु० [स० वृथालम्भ] ओषधियो को अनावश्यक रूप से काटना [को०]।

वृथालिग—वि० [स० वृथालिङ्ग] जिसका मूल कारण अविदित हो [को०]।

वृथालिगी—वि० [स० वृथालिङ्गिन्] व्यर्थ ही अनधिकारपूर्वक किसी सप्रदाय का चिह्न धारण करनेवाला [को०]।

वृथावादी—वि० [स० वृथावादिन्] असत्यवक्ता [को०]।

वृथावृद्ध—वि० [स०] बुद्धिहीन [को०]।

वृथोक्त—वि० [स०] निष्प्रयोजन कहा हुआ। बेकार कहा हुआ [को०]।

वृथोत्पन्न—वि० [स०] जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो [को०]।

वृथोद्यम—वि० [स०] निरर्थक उद्यम करनेवाला [को०]।

वृद्ध[1]—सज्ञा पु० [स०] १ मनुष्य की तीन अवस्थाओ मे से एक अवस्था जो युवावस्था के उपरात और सबके अत मे आती है। बुढापा। जरा।

विशेष—यह अवस्था प्राय. ६० वर्ष के उपरात आती है। इसमे मनुष्य दुर्बल और क्षीण हो जाता है, उसके सब अग शिथिल हो जाते हैं, शरीर की धातुएँ तथा इद्रियाँ आदि भी बराबर क्षीण होती जाती हैं, और इसके अत मे मृत्यु आ जाती है।

२. वह जो इस अवस्था मे पहुँच गया हो। बुड्ढा। ३. समानित व्यक्ति। पडित। विद्वान्। ४ शीलज नामक गधद्रव्य। ५ वृद्धावस्था। ६ ऋषि। सत (को०)। ७ वशज। सतान (को०)। ८. व्य करण मे वह शब्द जिसके प्रथम स्वर का वृद्धि हुई हो (को०)। ९. गुग्गुल (को०)। १०. अस्सी साल का हाथी (को०)।

वृद्ध[2]—वि० १ बढ़ा हुआ। पूर्णत बढा हुआ। २ अधिक अवस्था का। ४ बडा। विशाल। ५ विकसित। ६ एकत्रित। सचित। ७ पठित। बुद्धिमान्। अधीत। शिक्षित। ८. योग्य। विशिष्ट [को०]।

वृद्धकट—सज्ञा पु० [स० वृद्धकण्ट] इगुदी का पेड।

वृद्धक—सज्ञा पु० [स०] १ वृद्ध व्यक्ति। बूढा आदमी। २ आख्यान। उपाख्यान। कथा वार्ता [को०]।

वृद्धकाक—सज्ञा पुं० [स०] द्रोणकाक। पहाडी कौवा।

वृद्धकाल—सज्ञा पुं० [स०] १ वृद्धावस्था। बुढापा। २ काशी का एक शिवलिंग। वृतकाल। वृद्धिकालेश्वर।

वृद्धकावेरी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम।

वृद्धकृच्छ्र—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का कृच्छ्र रोग।

वृद्धकेशव—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार सूर्य की एक मूर्ति का नाम।

वृद्धकोश—सज्ञा पु० [सं०] बहुत धनाढ्य व्यक्ति [को०]।

वृद्धक्रम—सज्ञा पुं० [स०] वृद्ध का क्रम या पद [को०]।

वृद्धगगा—सज्ञा स्त्री० [स० वृद्धगङ्गा] हिमालय का एक छोटी नदी का नाम।

वृद्धगर्भा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह गर्भिणी नारी जिसका गर्भस्थ शिशु बडा हो गया है [को०]।

वृद्धगोनस—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप।

वृद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वृद्ध का भाव या धर्म। बूढापन। २. पाडित्य।

वृद्धतिक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] पाठा। पाढ़ा।

वृद्धत्व—सज्ञा पु० [स०] १ वृद्ध होने का भाव या धर्म। बुढापा। २ पाडित्य।

वृद्धदार—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वृद्धदारक'।

वृद्धदारक—पद्मा पुं० [सं०] विधारा नामक क्षुप।
वृद्धदारु—संज्ञा पुं० [सं०] विधारा [को०]।
वृद्धद्युम्न—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।
वृद्धधूप—संज्ञा पु० [सं०] १ सिरिस का पेड़। २ सरल का वृक्ष।
वृद्धधूमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] लिसोड़ा।
वृद्धनाभि—संज्ञा पु० [सं०] वह जिसकी तोंद आगे को निकली हो। तोंदल। तुंदिल।
वृद्धपराशर—पद्मा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धप्रधान—संज्ञा पुं० [सं०] दादा का दादा [को०]।
वृद्धप्रपितामह—संज्ञा पु० [सं०] दादा का दादा। परदादा का पिता।
वृद्धप्रमातामह—संज्ञा पु० [सं०] परनाना का पिता।
वृद्धबला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ककही या कघी नामक पेड़। २ महाबला।
वृद्धबृहस्पति—संज्ञा पु० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धबौधायन—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धभाव—संज्ञा पुं० [सं०] वृद्धावस्था। बुढ़ापा [को०]।
वृद्धमत—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन मत [को०]।
वृद्धमनु—संज्ञा पु० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धयाज्ञवल्क्य—संज्ञा पु० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धयुवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ कुटनी। २ धात्री। दाई।
वृद्धराज—पद्मा पु० [सं०] अमलबेत।
वृद्धवय—वि० [सं० वृद्धवयस्] जो अवस्था में अधिक हो [को०]।
वृद्धवशिष्ठ—संज्ञा पुं० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धवासिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोदंती।
वृद्धवाहन—संज्ञा पु० [सं०] आम का पेड़।
वृद्धविभीतक—संज्ञा पु० [सं०] अमड़ा।
वृद्धविष्णु—संज्ञा पु० [सं०] एक धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धवीवधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुरातन रूढ़ि का वचन [को०]।
वृद्धवृष्णीय—वि० [सं०] अत्यंत शक्तिमान् [को०]।
वृद्धवेग—वि० [सं०] तीव्र गतिवाला। जिसमें प्रचंड वेग हो [को०]।
वृद्धशाकल्य—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।
वृद्धशीली—वि० [सं० वृद्धशीलिन्] जो वृद्धों के समान शील और स्वभाववाला हो [को०]।
वृद्धश्रवा—संज्ञा पु० [सं० वृद्धश्रवस्] इंद्र।
वृद्धश्रावक—संज्ञा पु० [सं०] कापालिक।
वृद्धसंघ—संज्ञा पु० [सं० वृद्धसङ्घ] वृद्धजनों की सभा [को०]।
वृद्धसूत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] कपास।
वृद्धसेवी—वि० [सं० वृद्धसेविन्] वृद्धजनों की सेवा करनेवाला जो वृद्ध लोगों की सेवा करता हो [को०]।
वृद्धहारीत—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन धर्मशास्त्रकार का नाम।
वृद्धांगुलि—पद्मा स्त्री० [सं० वृद्धाङ्गुलि] १. अंगूठा। अंगूठा। २ पैर का अंगूठा।
वृद्धांगुष्ठ—संज्ञा पु० [सं० वृद्ध+अङ्गुष्ठ] अँगूठा। उ०—महाभारत के मनोषियों ने उनके प्रति वृद्धांगुष्ठ प्रदर्शित करके प्रबल धिक्कार से उन्हें उड़ा दिया है।—प्र० गा०, पृ० ३६।
वृद्धात—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धान्त] वह जो सम्मान या प्रतिष्ठा करने योग्य हो। आदरणीय।
वृद्धा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जो अवस्था में वृद्ध हो। बूढ़ी औरत। २ अंगुष्ठा। अँगूठा। ३ महाश्रावणिका। ४. बनजा स्त्री (को०)।
वृद्धाचल—पद्मा पुं० [सं०] मदरास प्रांत के एक तीर्थ का नाम।
वृद्धाचार—संज्ञा पुं० [सं०] परंपरागत प्रथा [को०]।
वृद्धात्रि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।
वृद्धार्क—संज्ञा पुं० [सं०] १ अस्त होता हुआ सूर्य। २ संध्या। सायंकाल। सांझ [को०]।
वृद्धावस्था—पद्मा स्त्री० [सं०] बुढ़ापा [को०]।
वृद्धि—पद्मा स्त्री० [सं०] १ बढ़ने या अधिक होने की क्रिया या भाव। बढ़ती। ज्यादती। अधिकता। जैसे,—धन धान्य की वृद्धि, संतान की वृद्धि, यश की वृद्धि। २. ब्याज। सूद। ३. वह मंगल जो घर में संतान उत्पन्न होने पर होता है। ४ अभ्युदय। समृद्धि। ५. एक प्रसिद्ध लता।

विशेष—यह लता अष्टवर्ग के अंतर्गत मानी गई है। कहते हैं, यह कोशाम्बल देश में कांचन पर्वत पर पाई जाती है। इसके कंद पर सफेद रोएँ और कहीं कहीं छेद होते हैं। इसका फल कपास की गाँठ के समान होता है, आजकल यह प्रायः नहीं मिलती। वैद्यक में यह मधुर, शीतल, वायुनाशक, गर्भ धारण करानेवाली और रक्तपित्त, खाँसी तथा क्षय रोग को नष्ट करनेवाली मानी गई है।

पर्या०—यावनी। ऋद्धि। सिद्धि। लक्ष्मी। पुष्टिदा। वृद्धिदात्री। मंगल्या। श्री। सती। जनेष्टा। भूता। शुभा। जीवभद्रा।

६ राजनीति में हवन, वाणिज्य, दुर्ग, सेतु, कुंजरबंधन, वन्याकर, बलादान, और सन्यसानवेश इन आठ बातों का उल्लेख। बंधन। रुकावट। ७ फलित ज्योतिष के विष्कंभ आदि २७ योगों के अंतर्गत ग्यारहवाँ योग।

विशेष—कहते हैं, इस योग में जन्म लेनेवाला व्यक्ति विनयी, धन का अच्छा उपयोग करनेवाला और मान खरीदने तथा बेचने में बहुत चतुर होता है।

८ संस्कृत व्याकरण में स्वर का एक प्रकार जिसके अनुसार अ अथवा आ के पश्चात् दूसरे शब्द के आरंभ में ए, ऐ, तथा ओ, औ के आने पर दोनों मिलकर क्रमशः ऐ और औ हो जाते हैं। जैसे,—पुत्र+एषणा से 'पुत्रैषणा' तथा शुद्ध+ओदन से 'शुद्धौदन'। उ०—संस्कृत व्याकरण ने भी संस्कृत भाषा में धातु के स्वर में इस प्रकार के परिवर्तन का लक्ष्य करके इन तीन क्रमों को गुण, वृद्धि, एवं संप्रसारण नामकरण किया था।

—भोज० भा० सा०, पृ० १०। ९ सफलता। उन्नति। (को०)। १०. धनदौलत। जायदाद (को०)। ११ ढेर। राशि। परिमाण (को०)। १२ चंद्रमा की कला का बढना (को०)। १३. सूदखोरी (को०)। १४ लाभ। फायदा (को०)। १५ शक्ति या कर की वृद्धि (को०)। १६ अंडकोश वृद्धि (को०)। १७ छेदन। कर्तन (को०)। १८ संपत्ति का हरण (को०)। १९ पीडा (को०)। २० ऊँचाई। उच्चता (को०)।

वृद्धिकर—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वृद्धिकरी] बढानेवाला। वृद्धि करनेवाला। परिवर्धन करनेवाला। उ०—अल्प मूल्य की वृद्धिकरी हो।—प्रर्चना, पृ० २४।

वृद्धिकर्म—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धिकर्मन्] नांदीमुख श्राद्ध। वृद्धश्राद्ध।

वृद्धिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ ऋद्धि नाम की ओषधि। २ सफेद अपराजिता। ३ अर्कपुष्पी।

वृद्धिजीवक, वृद्धिजीवन—संज्ञा पु० [सं०] वह जो वृद्धि (ब्याज) से अपना निर्वाह करता हो। सूद से अपना निर्वाह करनेवाला।

वृद्धिजीविका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सूद से जीवन यापन करना (को०)।

वृद्धिद[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. जीवक नामक कंद। २. शूकरकंद।

वृद्धिद[2]—वि० वृद्धि देनेवाला।

वृद्धिदात्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृद्धि नाम की एक प्रकार की ओषधि। लताविशेष। दे० 'वृद्धि'—५।

वृद्धिपत्र—संज्ञा पु० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का शस्त्र जो सात अंगुल का होता था और जिसका व्यवहार चीरफाड में छेदने आदि के लिये होता था। इसका आकार प्रायः छुरे के समान होता था।

वृद्धिमान्—वि० [सं० वृद्धिमत्] १ अभिवर्धनशील। बढनेवाला। उन्नतिशील। २ धनाढ्य (को०)।

वृद्धियोग—संज्ञा पु० [सं०] फलित ज्योतिष के सत्ताइस योगों में से एक योग। विशेष दे० 'वृद्धि'—७।

वृद्धिश्राद्ध—संज्ञा पु० [सं०] नांदीमुख नाम का श्राद्ध। विशेष दे० 'नांदीमुख'।

वृद्धोक्ष—संज्ञा पु० [सं०] बूढा बैल। उ०—बुड्ढे बैल के लिये वृद्धोक्ष शब्द प्रचलित था।—संपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० २४८।

वृद्ध्याजीव—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वृद्धिजीवक' (को०)।

वृद्ध्याजीवी—संज्ञा पुं० [सं० वृद्धि+आजीविन्] कुसीदक। वृद्धिजीवक।

वृद्ध्युदय—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसकी प्राप्ति या उदय से लाभ ही लाभ हो।

वृद्ध्युपजीवी—संज्ञा पु० [सं० वृद्धि+उपजीविन्] दे० 'वृद्ध्याजीव' (को०)।

वृध[1]—संज्ञा पु० [सं० वृद्ध] दे० 'वृद्ध'। उ०—कुटल कुसील हीण जड कोढी, अधन वृध खल पगु अजै।—रघु० रू०, पृ० १०२।

वृधसान—संज्ञा पु० [सं०] मनुष्य (को०)।

वृधसानु—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुरुष। आदमी। २ काम। कार्य। कृति। क्रिया। ३ पत्ता। पर्ण (को०)।

वृधु—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक सूत्रकार जिससे भरद्वाज मुनि को बहुत सी गौएं मिली थीं।

वृध्य—वि० [सं०] बढाने के लायक। वर्धनयोग्य (को०)।

वृध्र—वि० १ कटा हुआ या नष्ट किया हुआ (को०)।

वृश[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ अडूसा। २ अदरक। आदी (को०)। ३. चूहा। मूषक।

वृश[2]—संज्ञा पु० [सं० वृष] दे० 'वृष'।

वृशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की ओषधि।

वृश्चन—संज्ञा पु० [सं०] १ वृश्चिक। बिच्छू। २ दे० 'व्रश्चन' (को०)।

वृश्चि—संज्ञा पुं० [सं०] लाल गदहपूरना।

वृश्चिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बिच्छू नामक प्रसिद्ध कीडा जिसके डंक में बहुत तेज जहर होता है। विशेष दे० 'बिच्छू'। २ गोबर में उत्पन्न होनेवाला कीडा। शूककीट। ३ पुनर्नवा। गदहपूरना। ४ मदन वृक्ष। मैनफल। ५ वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ६ ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि।

विशेष—इसके सब तारों से प्रायः बिच्छू का सा आकार बनता है। विशाखा नक्षत्र के अंतिम पाद से आरंभ होकर अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्रों के स्थितिकाल तक यह राशि मानी जाती है। भारतीय फलित ज्योतिष के अनुसार यह राशि शीर्षोदय, श्वेतकर्ण, कफ प्रकृति, जलचर, उत्तर दिशा की अधिपति और अनेक पुत्रों तथा स्त्रियों से युक्त मानी गई है। कहते हैं, इस राशि में जन्म लेनेवाला मनुष्य धन जन से युक्त, भाग्यवान्, खल, राजसेवा करनेवाला, सदा दूसरों के धन का अभिलाषी करनेवाला, उत्साही और वीर होता है।

पर्या०—सौम्य। अंगना। युग्म। सम। स्थिर। पुष्कर। सरीसृप-जाति। ग्राम्य।

७ फलित ज्योतिष के अनुसार मेष आदि बारह लग्नों में से आठवाँ लग्न।

विशेष—यह वृश्चिक राशि के उदय के समय माना जाता है। कहते हैं, जो बालक इस लग्न में जन्म लेता है, वह बहुत मोटा ताजा, खर्चीला, कुटिल, मातापिता के लिये अनिष्टकर, गंभीर और स्थिर प्रकृतिवाला, उग्र स्वभाव का, विश्वासी हँसमुख, साहसी, गुरु और मित्रों से शत्रुता रखनेवाला, राजसेवा करनेवाला, दुःखी, दाता, नीच प्रकृति और पित्तरोगी होता है।

८ अगहन मास जिसमें प्रायः सूर्योदय के समय वृश्चिक राशि का उदय होता है। ९ कर्कट। केकडा (को०)। १०. गोजर। कनखजूरा (को०)। ११ एक कीडा जो रोएँदार होता है (को०)।

वृश्चिकपत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पूतिका शाक। पोय या पोई (को०)।

वृश्चिकपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] पोई नाम का साग।

वृश्चिकपर्णी - संज्ञा स्त्री० [सं०] वृश्चिकाली। नागदंतिका (को०)।

वृश्चिकप्रिया—संज्ञा स्त्री० [सं०] पोई नाम का साग।

वृश्चिकराशि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वृश्चिक'—७।

वृश्चिकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मूसाकानी। आखुकर्णी।

वृश्चिकविषापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नकुलकंद। २ रास्ना।

वृश्चिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बिछुआ या बिच्छू नाम की घास। २ पिठवन। ३ सफेद पुनर्नवा। ४ पैर की अँगुलियों में पहिनने का गहना। बिछुआ (को०)।

वृश्चिकाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिच्छू नाम की लता।

विशेष—यह लता प्रायः सारे भारत में पाई जाती और बारहो मास हरी रहती है। इसके पत्ते ५-६ अंगुल लंबे, नुकीले और अंडाकार होते हैं और उनपर तथा डंठलों पर एक प्रकार के रोएँ होते हैं, जिनके शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होती है। इसकी जड़ का प्रयोग ओषधि रूप में होता है। वैद्यक में यह कड़वी, चरपरी, बल तथा रुचि बढ़ानेवाली, तथा खाँसी, श्वास और ज्वर को दूर करनेवाली मानी गई है।

वृश्चिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] पैर के अँगूठे का एक आभूषण। दे० 'वृश्चिका'—४ (को०)।

वृश्चिकेश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता देवता—मंगल। २ बुध ग्रह का एक नाम (को०)।

वृश्चिपत्रिका - संज्ञा स्त्री० [सं०] पूतिका। पोई।

वृश्चिपत्री - संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली। २ मेढ़ासिंगी।

वृश्चिपर्णी - संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वृश्चिकाली। २ मेढ़ासिंगी।

वृश्ची—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

वृश्चीक - संज्ञा पुं० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक विशेष प्रकार की ओषधि का नाम। (को०)।

वृश्चीर संज्ञा पुं० [सं०] सफेद गदहपूरना।

वृश्चीव—संज्ञा पुं० [सं०] गदहपूरना। पुनर्नवा।

वृष—संज्ञा पुं० [सं०] १ गौ का नर। साँड। २ कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक प्रकार का पुरुष।

विशेष—काम शास्त्र के अनुसार वृष जातीय पुरुष शंखिनी जाति की स्त्री के लिये उपयुक्त समझा जाता है। कहते हैं, ऐसा पुरुष अनेक गुणों से युक्त, अनेक प्रकार के रतिबंधों का ज्ञाता, सुंदर और सत्यवादी होता है।

३ धर्म, जिसके चार पैर माने जाते हैं और जो इसी कारण साँड के रूप में माना जाता है। ४ पुराणानुसार ग्यारहवें मन्वंतर के रुद्र का नाम। ५ चूहा। ६ अंडूसा। ७ श्रीकृष्ण या विष्णु का एक नाम। ८ शत्रु। दुश्मन। वैरी। ९ काम। १०, ऋषभ नामक ओषधि। ११ पति। स्वामी। १२ गेहूँ। १३ धमासा। १४ नदी में होनेवाला भिलावाँ। १५. ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से दूसरी राशि।

विशेष—इस राशि में कृत्तिका नक्षत्र के तीन पाद, पूरा रोहिणी नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो पाद हैं। यह राशि श्वेतवर्ण, वातप्रकृति, वैश्य, चार पैरवाली और दक्षिण दिशा की स्वामिनी मानी जाती है। कहते हैं, जो व्यक्ति इस राशि में जन्म लेता है, वह सुंदर, भला, क्षमाशील, स्त्रैण और निर्भय होता है तथा प्रारंभिक अवस्था में धन, बंधु, संतति आदि से रहित और अंतिम अवस्था में इन सब बातों से सुखी रहता है।

१६ फलित ज्योतिष में मेष आदि बारह राशियों में से दूसरी राशि।

विशेष—कहते हैं, इस लग्न में जन्म लेनेवाले मनुष्य के ओंठ और नाक मोटी तथा ललाट बहुत चौड़ा होता है, वह वातरोग, प्रकृति का, नम्रस्वभाव, सर्वोंका, मातृभक्त को कष्ट देनेवाला और बुरे कामों की ओर प्रवृत्ति रखनेवाला होता है। ऐसे मनुष्य का पुत्र कम और कन्याएँ अधिक होती हैं। इसकी मृत्यु किसी पशु या उसवाले व्यक्ति के द्वारा अथवा जल, शूल, पर्यटन आदि के कारण अथवा भूखा रहने से होती है।

१७. किसी वर्ग का मुख्य या प्रधान व्यक्ति, मुखियाँ, सरदार (को०)। १८ सुदृढ़ या व्यायामशील व्यक्ति (को०)। १९ शिव का बैल, नंदी (को०)। २० पुण्य। सत्कर्म (को०)। २१ कर्ण का एक नाम (को०)। २२ मुख्य अश्व या घोड़ा (को०)। २३. जल (को०)। २४ मंदिर की एक विशेष आकृति (को०)। २५ भवन-निर्माण के योग्य भूमि (को०)। २६ नर जाति का पशु (को०)। २७. मयूरपक्ष (को०)। २८ स्वीकृत। अंगीकृत (को०)। २९. शिव (को०)। ३०. सूर्य (को०)। ३१. अँगूठा। ३२. शुक्र। वीर्य (को०)। ३३ स्कंद का एक अनुचर (को०)। ३४ एक असुर (को०)। ३५ चंद्रमा के १० घोड़ों में से एक घोड़ा (को०)। ३६ कर्ण के पौत्र का नाम जो वृषसेन का पुत्र था (को०)।

वृषक—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँड। २ महाभारत के अनुसार गांधार के एक राजकुमार का नाम। ३. एक प्रकार का आम। ४. अडूसा। ५ कपिल नामक ओषधि। ६ धमासा। दुगलना। ७ भिलावाँ। ८ गेहूँ। ९ चूहा।

वृषकर्णिका, वृषकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर्शन नाम की लता। २ एक प्रकार की बिभारा।

वृषकर्मा—वि० [सं० वृषकर्मन्] परिश्रमी बैल की तरह काम करनेवाला (को०)।

वृषका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम।

वृषकेतन—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। महादेव।

वृषकेतु—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव या महादेव, जिनकी ध्वजा पर बैल का चिह्न माना जाता है। २. कर्ण के एक पुत्र का नाम। ३ लाल गदहपूरना।

यौ०—वृषकेतुसुत = शिव के पुत्र। स्कंद। षण्मुख।

वृषक्रतु—संज्ञा पुं० [सं०] वर्षा करनेवाले, रुद्र।

वृषखादि—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो सोमपान करता हो। २ कुडल पहननेवाला (को०)।

वृषगधा—सज्ञा स्त्री० [स० वृषगन्धा] १ ककही या कघी नाम का पौधा। २ एक प्रकार का विधारा।

वृषगधिका—सज्ञा स्त्री० [स० वृषगन्धिका] दे० 'वृषगधा'।

वृषग—सज्ञा पु० [स०] वृषभवाहन, शिव (को०)।

वृषगण—सज्ञा पु० [स०] वैदिक ऋषियो का एक गण या समूह। उ०—वृषगण ऋग्वेद मे गायक थे।—प्रा० भा० प०, पृ० १४४।

वृषचक्र—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का चक्र जिसमे एक बैल बनाकर उसके भिन्न भिन्न अगो मे नक्षत्र आदि रखते हैं और तब उसके द्वारा खेती सबधी शुभाशुभ फल आदि निकालते हैं।

वृषण[1]—सज्ञा पु० [स०] १ इद्र। २ कर्ण। ३ विष्णु। ४ साँड। ५. घोडा। ६ वृक्ष। ७ पीडा का ज्ञान या उससे होनेवाली बेहोशी। ८. अडकोष। पोता।

वृषण[2]—वि० १ सीचनेवाला। उपजाऊ बनानेवाला। २ दृढ। कठोर (को०)।

वृषणकच्छू—सज्ञा स्त्री० [स०] अडकोश के आस पास होनेवाली वे फुसियाँ आदि जो मैल और पसीने आदि के कारण हो जाती हैं और जिसमे खुजली होती है।

वृषणश्व—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रसिद्ध वैदिक राजा का नाम। २ इद्र के घोडे का नाम। ३ एक गधर्व (को०)।

वृषणी—सज्ञा स्त्री० [स०] घोडी (को०)।

वृषणवसु—सज्ञा पु० [स०] इद्र का खजाना या कोष (को०)।

वृषदत—सज्ञा पु० [स० वृषदन्त] बिडाल। बिल्ली (को०)।

वृषदश—सज्ञा पु० [स०] बिल्ली (को०)।

वृषदशक—सज्ञा पु० [स०] बिल्ली।

वृषदर्भ[1]—सज्ञा पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार कश्मीर के एक राजकुमार का नाम। २ पुराणानुसार शिवि के एक पुत्र का नाम। ३ श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषदर्भ[2]—वि० [स०] इद्र के अभिमान को दूर करनेवाला। इद्र के दर्प को चूर करनेवाला (को०)।

वृषदेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वायुपुराण के अनुसार वासुदेव की एक स्त्री का नाम।

वृषद्वीप सज्ञा पुं० [स०] बृहत्सहिता के अनुसार एक द्वीप का नाम।

वृषधर—सज्ञा पुं० [स०] वृषभध्वज शिव (को०)।

वृषध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। महादेव। २ गणेश। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ४ वह व्यक्ति जो बहुत पुण्यशील हो। पुण्यात्मा।

वृषध्वजा—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा का एक नाम।

वृषध्वाक्षा—सज्ञा स्त्री० [स० वृषध्वाङ्क्षा] नागरमोथा।

वृषध्वाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स० वृषध्वाङ्क्षी] दे० 'वृषध्वाक्षा'।

वृषनादी वि० [स० वृषनादिन्] बैल की भाँति बोलनेवाला। उच्च ध्वनि करनेवाला (को०)।

वृषनामा—सज्ञा पु० [स० वृषनामन्] अडूसा।

वृषनाशन—सज्ञा पु० [स०] १ विडंग। बायविडग। २ पुराणानुसार विष्णु या श्रीकृष्ण का एक नाम।

वृषपति—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। महादेव। २. नपुसक। हिजडा। पंड। ३. छोडा हुआ साँड (को०)।

वृषपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बस्तात्री या छागलाकी नाम की ओषधि जो विधारा का एक भेद है।

वृषपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] भारगी। ब्राह्मणयष्टिका।

वृषपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी। २. उदुंबरपर्णी। दती। ३ सुदर्शना नाम की लता।

वृषपर्वा—सज्ञा पु० [स० वृषपर्वन्] १ शिव। महादेव। २ महाभारत के अनुसार एक दैत्य का नाम जिसकी कन्या शर्मिष्ठा का विवाह ययाति से हुआ था। ३ विष्णु का एक नाम। ४. कसेरू। ५ एक प्रकार का तृण। ६ भँगरा। ७ एक बदर (को०)। ८ जलपात्र। लोटा (को०)। ९. मार्कडेयपुराण मे वर्णित एक राजा (को०)।

वृषपुष्प—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चूप (को०)।

वृषप्रिय—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

वृषभ—सज्ञा पु० [स०] १ बैल या साड़। २ साहित्य मे वैदर्भी रीति का एक भेद। ३ कान का छेद। ४ ऋषभ नाम की ओषधि। कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषो मे श्रेष्ठ पुरुष जो शखिनी जाति की स्त्री के लिये उपयुक्त कहा गया है। ६ सूर्य की वीथियो मे से एक वीथी का नाम। उ०—चौथा वीथी का नाम वृषभ है।—बृहत्०, पृ० ५४। ७ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ८ श्रीकृष्ण के एक सखा का नाम। ९ एक यूथपति बदर का नाम जो राम रावण युद्ध मे लडा था। १० नर जातीय या पुवर्गीय पशु (को०)। ११ वह जो अपने वर्ग मे प्रधान हो (को०)। १२ वृष राशि का चिह्न (को०)। १३. हाथी का कान (को०)। १४ कान का छिद्र। कर्णरध्र (को०)। १५. न्याय। धर्म (को०)।

वृषभकेतु—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

वृषभगति—सज्ञा पु० [स०] १. शिव। महादेव। २. वह सवारी जो बैल द्वारा खीची जाती हो।

वृषभता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वृषभत्व'।

वृषभतीर्थ—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वृषभत्व—सज्ञा पु० [स०] वृषभ होने का भाव या धर्म। वृषभता।

वृषभध्वज—सज्ञा पुं० [वृषभध्वज] दे० 'वृषभध्वज'।

वृषभध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। महादेव। २. एक प्राचीन पर्वत का नाम।

वृषभध्वजा—सज्ञा स्त्री० [स०] बडी दती। बँगडेरा।

वृषभपल्लव—सज्ञा पुं० [स०] अडूसा।

वृषभयान—सज्ञा पुं० [स०] बैलगाडी (को०)।

वृषभवीथि—सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य की वीथियो मे से एक वीथी का नाम। दे० 'वृषभ'—६।

वृषभस्कध—वि० [स० वृषभ+स्कन्ध] जिसके कधे चौडे और मजबूत हो। पुष्ट कधोवाला (को०)।

वृषभाक—सज्ञा पु० [स० वृषभाङ्क] शिव। महादेव।

वृषभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी का नाम। २ मघा, पूर्वा और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र (को०)।

वृषभाक्ष सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ वह जिसकी आँखें बैल की तरह हो (को०)।

वृषभाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्रवारुणी लता। इनारु।

वृषभाद्रि—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम (को०)।

वृषभानपि—सज्ञा पु० [स० वृषभानु] दे० 'वृषभानु'।

वृषभानु—सज्ञा पुं० [स०] १ श्री राधिका जी के पिता का नाम।

विशेष(१)—पुराणानुसार वृषभानु नारायण के अश से उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम सुरभानु और माता का नाम पद्मावती था। ये गोकुल के बडे सरदार थे और पहले रावल ग्राम मे रहते थे, जहाँ राधिका का जन्म हुआ था। पर अत मे कस के उपद्रव के कारण वहाँ से बरसाने मे जा बसे थे।

(२) 'वृषभानु' शब्द के साथ 'कन्या' या उसका पर्यायवाची शब्द लगाने स उसका 'राधिका' अर्थ होता है। जैसे,—वृषभानुसुता, वृषभानुनदिनी।

२ वृष राशि का सूर्य (को०)।

वृषभानुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] वृषभानु की पुत्री, राधा।

वृषभानुनदिनी—सज्ञा स्त्री० [स० वृषभानुनन्दिनी] राधिका।

वृषभानुसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] वृषभानु की कन्या, श्रीराधिका।

वृषभासा—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्र की पुरी अमरावती का एक नाम।

वृषभी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विधवा स्त्री। रांड। २ कपिकच्छु। केवाँच (को०)।

वृषभेक्षण—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु।

वृषमन्यु—वि० [स०] वीर। हिम्मतवाला। साहसी (को०)।

वृषमूल—सज्ञा पुं० [स०] अडूसे की जड।

वृषय—सज्ञा पुं० [सं०] १ आश्रय। शरण। २ आश्रम (को०)।

वृषरवि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वृषभानु'।

वृषराजकेतन - सज्ञा पु० [सं०] वृषभध्वज शिव (को०)।

वृषराशि—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बारह राशियो मे से दूसरी राशि। उ०—वृषराशि मे स्थित हो तो पैदा होते ही अन्न का नाश होता है।—बृहत्०, पृ० १६३।

वृषरुक्ष—सज्ञा पु० [स० वृषरुक्षन्] शिव। महादेव।

वृषल—सज्ञा पुं० [स०] १. शूद्र।

यौ०—वृषलपाचक=शूद्र की रसोई बनानेवाला। वृषलयाजक=वृषल का पुरोहित। शूद्र का यज्ञादि करानेवाला।

२ वह जिसे धर्म आदि का कुछ भी ध्यान न हो। पाप और दुष्कर्म करनेवाला। ३ घोडा। ४ चाणक्य द्वारा प्रयुक्त सम्राट् चद्रगुप्त का एक नाम। ५ गाजर। ६ शलगम। ७. नट। नर्तक (को०)। ८ वृषभ। बैल (को०)। ९ लहसुन (को०)। १० वह जो जाति मे बहिष्कृत हो। ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र वर्ग का वह व्यक्ति जो अपने कर्तव्य से च्युत हो (को०)। ११ बडी पिप्पली (को०)।

वृषलक—सज्ञा पु० [स०] निम्न कोटि का शूद्र (को०)।

वृषलक्षणा—सज्ञा स्त्री० [स०] पुरुषलक्षण से सपन्न नारी। वह स्त्री जिसका रग रूप पुरुष की तरह हो। ऋषभी (को०)।

वृषलता—सज्ञा स्त्री० [स०] वृषल होने का भाव या धर्म। वृषलत्व।

वृषलत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वृषलता'।

वृषलाछन—सज्ञा पु० [स० वृषलाञ्छन] शिव। महादेव।

वृषली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ स्मृतियो आदि के अनुसार वह कन्या जो रजस्वला तो हो गई हो, पर जिसका अभी विवाह न हुआ हो।

विशेष—कहते हैं, ऐसी कन्या का पिता बडा पातकी होता है और उसे उस कन्या की भ्रूणहत्या करने का पाप लगता है।

२ वह स्त्री जो अपने पति को छोडकर परपुरुष से प्रेम करती हो। ३ शूद्र जाति की स्त्री। वृषल की स्त्री। उ०—सोतौ वृषली पति भयौ कुलहि लगाई गारि।—सुदर ग्र०, भा० १, पृ० १९१। ४ वह स्त्री जो पाप या दुष्कर्म करती हो। ५ नीच जाति की स्त्री। ६ वह स्त्री जो मासिकधर्म से हो। रजस्वला स्त्री। ७ वह स्त्री जो मरी हुई सतान उत्पन्न करती हो। ८ वध्या स्त्री (को०)। ९ सद्य प्रसूता स्त्री (को०)।

वृषलीपति—सज्ञा पुं० [स०] १ शूद्र जाति या वर्ण की औरत का पति। २ वह पुरुष जिसने ऐसी कन्या के साथ विवाह किया हो जो विवाह से पहले ही रजस्वला हो चुकी हो। वृषली का पति।

विशेष—कहते हैं, ऐसे पुरुष को श्राद्ध आदि करने का अधिकार नही होता।

वृषलीफेन—सज्ञा पु० [स०] शूद्रा स्त्री का अधररस (को०)।

वृषलीसेवन—सज्ञा पु० [स०] शूद्रा के साथ सभोग करना।

वृषलोचन—सज्ञा पु० [सं०] चूहा। मूसा।

वृषवत्—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वृषवासी सज्ञा पु० [स० वृषवासिन्] केरल देश के वृष पर्वत पर बसनेवाले शिव जी। उ०—इनके घर लेहौ अवतारा। वृषवासी हर हृदय विचारा।—श० दि० (शब्द०)।

वृषवाह - सज्ञा पु० [स०] बैल पर सवार होना (को०)।

वृषवाहन—सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

वृषवीभत्स—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की कींछ या केवाँच।

वृषवृष—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का साम।

वृषशत्रु—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु।

वृषशिख—संज्ञा पु० [सं०] वैदिक काल के एक असुर का नाम।

वृषशील—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वृषल'।

वृषशुष्म—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम जो जतुकर्णी के पोते थे।

वृषषड—संज्ञा पु० [सं० वृषषण्ड] एक प्रवरकार ऋषि का नाम।

वृषसव—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसने यज्ञ करने के लिये मंगलस्नान किया हो।

वृषसानु संज्ञा पु० [सं०] १. मानव। आदमी। २ मृत्यु। मौत। (को०)।

वृषसार—संज्ञा पुं० [सं०] १. सफेद वड। २ देवकुमी। बड़ा गूमा।

वृषसाह्वया—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

वृषसृक्की—संज्ञा पु० [सं० वृषसृक्किन्] भीमरोल या भृंगरोल नाम का कीड़ा।

वृषसेन—संज्ञा पु० [सं०] भागवत के अनुसार कर्ण के एक पुत्र का नाम।

वृषस्कंध—संज्ञा पु० [सं० वृषस्कन्ध] शिव। महादेव।

वृषस्कंध२—वि० बैल की तरह पुष्ट और ऊँचे कंधोंवाला [को०]।

वृषस्यती—संज्ञा स्त्री० [सं० वृषस्यन्ती] किसी व्यक्ति से संभोग कराने की इच्छा से आतुर। २ कामुका या लंपट औरत। कामपीड़िता स्त्री। ३ उठी हुई गाय। वृष की कामना करनेवाली गौ [को०]।

वृषाक—संज्ञा पु० [सं० वृषाङ्क] १ शिव। महादेव। २ साधु। धर्मात्मा। ३ जल में होनेवाला भिलावाँ। ४ नपुंसक। हिजड़ा। ५ मोर।

वृषाकज—संज्ञा पु० [सं० वृषाङ्कज] डमरू।

वृषाकेन—संज्ञा पु० [सं० वृषाङ्केतन] शिव। महादेव।

वृषाड—संज्ञा पु० [सं० वृषाण्ड] महाभारत के अनुसार एक असुर का नाम।

वृषांतक—संज्ञा पु० [सं० वृषान्तक] विष्णु।

वृषा'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी। २. केवाँच कौंछ। ३. उदुंबरपर्णी। दंती। ४ बड़ी दंती। ५ असगंध। ६. मालकंगनी। ७ गौ।

वृषा२—संज्ञा पुं० [सं० वृषन्] १ वृष राशि। २. साँड़। ३ घोड़ा। ४ पीड़ा। व्यथा। ५ इंद्र। ६ कर्ण। ७ चंद्रमा। ८. अग्नि। ९ दल का मुखिया या प्रधान। १०. पीड़ा का ज्ञान न होना। ११ पुंजातीय पशु [को०]।

वृषाकपायी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जीवंती। डोडी। २ शतावरी। ३ लक्ष्मी। ४. गौरी। ५ इंद्र की पत्नी, शची। ६ अग्नि की पत्नी, स्वाहा (को०)। ७ सूर्य की पत्नी, उषा (को०)। ८. रुद्र की माता (को०)।

वृषाकपि—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। २ विष्णु। ३. अग्नि। ४. इंद्र। ५ सूर्य। ६ एक ऋषि का नाम। ७ ग्यारह रुद्रों में से एक। —प्रा० भा० प०, पृ० १२७।

वृषाकर—संज्ञा पुं० [सं०] उदंड। साँप।

वृषाकृति—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु।

वृषाक्ष—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु [को०]।

वृषाण—संज्ञा पु० [सं०] शिव के एक अनुचर वरुण का नाम [को०]।

वृषाणक—संज्ञा पुं० [सं०] १. शिव। महादेव। २ शिव के एक अनुचर का नाम।

वृषाणी—संज्ञा पुं० [सं० वृषाणिन्] ऋषभक नाम की ओषधि जो अष्टवर्ग में है।

वृषादनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी। इनारुन।

वृषादर्भ—संज्ञा पु० [सं०] भागवत के अनुसार शिवि के एक पुत्र का नाम।

वृषादित्य—संज्ञा पु० [सं० वृषा दित्य] वृष राशि के सूर्य। उ०—विषम वृषादित की तृषा जिए मतीरनु सोधि। अमित, अपार, अगाध जल, मारौ मूढ पयोधि।—बिहारी र०, दो०, ३१७।

वृषादित्य—संज्ञा पुं० [सं०] वृष राशि के सूर्य। सौर ज्येष्ठ मास की संक्रांति के सूर्य।

वृषाद्रि—संज्ञा पुं० [सं०] एक पर्वत का नाम जो केरल देश में है।

वृषान्न—संज्ञा पु० [सं०] पुष्टिकर भोजन [को०]।

वृषायण—संज्ञा पु० [सं०] १. शिव। महादेव। २. चटक या गौरैया नामक पक्षी।

वृषारणी—संज्ञा पु० [सं०] गंगा का एक नाम।

वृषारव—संज्ञा पु० [सं०] १ वे जंतु जिनकी बोली बहुत कर्कश हो। जैसे,—झिल्ली, मेंढक आदि। २ एक प्रकार का मुगरा या ताशा, नगाड़ा आदि बजाने की लकड़ी। चोब (को०)।

वृषावाह—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का जंगली धान्य [को०]।

वृषाशील—संज्ञा पुं० [सं०] वृषशील। दे० 'वृषल'।

वृषाश्रिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गंगा का एक नाम।

वृषासुर—संज्ञा पुं० [सं०] भस्मासुर दैत्य का एक नाम जिसने शिव से वर पाकर शिव ही को भस्म करके पार्वती को लेना चाहा था। वृकासुर। विशेष दे० 'भस्मासुर'।

वृषाहार—संज्ञा पु० [सं०] चूहों का खानेवाला, बिल्ली। मार्जार।

वृषाही—संज्ञा पुं० [सं० वृषाहन्] विष्णु।

वृषी'—संज्ञा पुं० [सं० वृषन्] मोर।

वृषी२—संज्ञा स्त्री० [सं०] ऋषि या ब्रह्मचारी का आसन जो कुश से बना होता है [को०]।

वृषेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० वृषेन्द्र] १. साँड़। २. बैल।

वृषोत्सर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। इस धार्मिक कृत्य में लोग अपने मृत पिता के नाम पर साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।

ऐसे छोडे हुए साँडो से किसी प्रकार का काम नही लिया जाता। कहते हैं, जिन पितरो के नाम पर साँड छोडे जाते हैं, वे स्वर्ग पहुँच जाते हैं। अशौच समाप्त होने के दूसरे दिन यह कृत्य करने का विधान है।

वृषोत्साह—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

वृषोदर—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

वृष्ट[1]—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार कुकुर के एक पुत्र का नाम।

वृष्ट[2]—वि० [स०] १. बरसा हुआ। जो बरस चुका हो। २ जो बरस रहा हो। बरसता हुआ। ३ वर्षा की बूँदो की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ [को०]।

वृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकाश से जल बरसना। वर्षा। बारिश। मेह। २ ऊपर से बहुत सी चीजो का एक साथ गिरना या गिराया जाना। जैसे,—पुष्पवृष्टि। उ०—कर रही थी जो अलौकिक रूपरस की वृष्टि।—शकु०, पृ० ६। ३ किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना। जैसे,—उनके बैठते ही चारो ओर से कटु वचनो की वृष्टि होने लगी।

वृष्टिकर—वि० [स०] बरसनेवाला। वर्षा करनेवाला [को०]।

वृष्टिका—सज्ञा स्त्री० [स०] शणपुष्पी। बनसनई।

वृष्टिकाम—वि० [स०] बरसा की कामना करनेवाला [को०]।

वृष्टिकामना—सज्ञा स्त्री० [स०] वर्षा की इच्छा [को०]।

वृष्टिकाल—सज्ञा पु० [स०] वर्षाकाल। वर्षाऋतु [को०]।

वृष्टिघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी इलायची।

वृष्टिजीवन—सज्ञा पु० [स०] १ वह देश जहाँ की खेतीबारी केवल वर्षा पर ही निर्भर हो। देवमातृक देश या कृषिभूमि। २ चातक पक्षी।

वृष्टिदाता—सज्ञा पु० [स० वृष्टिदातृ] १ इद्र। २ मेघ। बादल। ३ असुर। उ०—सायण ने असुर का अर्थ बलवान्, शत्रुहता और वृष्टिदाता किया है।—प्रा० भा० प०, पृ० (ग)।

वृष्टिपात—सज्ञा पु० [स०] वर्षा होना। पानी बरसना [को०]।

वृष्टिभू—सज्ञा पु० [स०] मेढक।

वृष्टिमान[1]—सज्ञा पु० [स०] वह यत्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी वृष्टि हुई।

विशेष—यह एक छोटा सा लंबा नल होता है, जिसमे वर्षा का जल भरता है। उसी जल की ऊँचाई इचो आदि से नापकर निश्चय किया जाता है कि अमुक समय मे इतने इच वर्षा हुई।

वृष्टिमान्—सज्ञा पुं० [स० वृष्टिमत्] बादल।

वृष्टिमान्[2]—वि० बरसाऊ। बरसनेवाला [स०]।

वृष्टिवैकृत—सज्ञा पु० [स०] वृहत्सहिता के अनुसार बहुत अधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना, जो उपद्रव आदि का सूचक समझा जाता है।

वृष्टिसपात—सज्ञा पु० [स० वृष्टिसम्पात] पानी बरसना। वर्षा का होना [को०]।

वृष्ट्यबु—सज्ञा पु० [स०] वर्षा का जल।

वृष्ण—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृष्णि[1]—सज्ञा स० [स०] १ मेघ। बादल। २ यादव वश जिसमें श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए थे। उ०—वृष्णि कुल कुमुद राकेश राधारमन कस वसाटवी धूमकतू।—तुलसी (शब्द०)। ३ श्रीकृष्ण या विष्णु। ४ इद्र। ५ अग्नि। ६ वायु। ७ ज्योति। प्रकाशरश्मि। ८ बल या गौ। ९. मेढा। मेष। १० शिव (को०)। ११ एक साम (को०)।

वृष्णि[2]—वि० १ प्रचड। उग्र। तेज। २ पामर। नीच। ३ बली। शक्तिशाली (को०)। ४ पाखडी (को०)। ५ क्रुद्ध। कोपाविष्ट (को०)। ६. बरसालू। वर्षणशील (को०)।

वृष्णिक—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वृष्णिगर्भ—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।

वृष्णिपाल—सज्ञा पुं० [स०] मेषपाल। गड़रिया [को०]।

वृष्ण्य—सज्ञा पुं० [स०] वीर्य।

वृष्य—सज्ञा पु० [स०] १ वह चीज जिससे वीर्य और बल बढता हो। २ वह चीज जिसके सेवन से मन में आनद उत्पन्न होता हो। ३ ईख। ऊख। ४ उडद की दाल। ५ ऋषभ नामक औषध। ६ आवला। ७ कमल की नाल। मृणाल। ८ शिव (को०)।

वृष्यकदा—सज्ञा स्त्री० [स० वृष्यकन्दा] १ विदारी कद। २. मूली।

वृष्यगधा—सज्ञा स्त्री० [स० वृष्यगन्धा] १ वृद्धदारक। विधारा। २ वस्त्रावी नाम की लता। ३ ककही। अतिबला।

वृष्यगधिका—सज्ञा स्त्री० [स० वृष्यगन्धिका] ककही। अतिबला।

वृष्यचडी—सज्ञा स्त्री० [स०] वृष्यचण्डी] मूसाकानी। आखुकर्णी।

वृष्यपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कद। भुइँ कुम्हडा।

वृष्यफला—सज्ञा स्त्री० [स०] आँवला।

वृष्यवल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कद। भुइँ कुम्हडा।

वृष्यवल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] विदारी कद।

वृष्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अष्टवर्ग की ऋद्धि नामक ओषधि। २ शतावर। ३. आवला। ४ केवाँच। कौंछ। ५ भुइँ आँवला। ६ विदारी कद। ७ ककही। अतिबला। ८ बडी दती। वँगडेरा।

वृह—सज्ञा पुं० [स० वृह, वृह] स्तवन। स्तुति। जैसे, वृहस्पति [को०]।

वृहच्चचु—सज्ञा पुं० [स० वृहत्चञ्चु] महाचचु नामक साग।

वृहच्चक्रभेद—सज्ञा पु० [स० वृहत्+चक्र+भेद] जयती। जैत।

वृहच्चित्त—सज्ञा पु० [स०] बिजोरा नीबू।

वृहच्छद—सज्ञा पु० [स०] अखरोट।

वृहच्छफरी—सज्ञा स्त्री० [स०] सफरी नाम की मछली।

वृहच्छल्क—सज्ञा पुं० [स०] भिगवा नाम की मछली।

वृहच्छालपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] महाशालपर्णी। बडी सरिवन।

वृहच्छ्रवी—सज्ञा स्त्री० [स० वृहच्छ्रम्बा] सेम।

वृहज्जीरक—सज्ञा पुं० [स०] मँगरैला।

वृहज्जीवंती—सज्ञा स्त्री० [स० वृहज्जीवन्ती] बडी जीवती।

वृहज्जीवा सज्ञा स्त्री० [स०] बडी जीवती।

वृहड्ढक्का—सज्ञा स्त्री० [स०] १. एक प्रकार का नगाडा या भेरी। २ पलाश भेद [को०]।

वृहतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दे० 'वृहती'। २ जपरना। उत्तरीय वस्त्र (को०)।

वृहती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कटकारी। छोटी कटाई। २ वनभटा। बडी कटाई। ३ बैंगन। ४. वंक्षक के अनुसार एक ममस्थान।

विशेष—यह छातियो के ठीक पीछे पीठ मे दोनो ओर होता है। इस ममस्थान पर आघात लगने से बहुत अधिक रक्त निकलता है और प्राय मनुष्य मर जाता है।

५ विश्वावसु नामक गधर्व की वीणा का नाम।

विशेष—कुछ लोगो के अनुसार 'वृहती' नारद की वीणा का नाम है।

६ वाक्य। ७ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण और सगण होता है। जैसे,—भाव सुपूजा कारज जू। प्रात गई सीता सरजू। कठमणी मध्ये सु जला। टूट परी खोजै अवला।—काव्य प्र० (शब्द०), ९. ३६ की सख्या (को०)। १० दुपट्टा। उत्तरीय (को०)। ११. आशय। कुड जैसे, जलाशय (को०)। दे० 'वृहती'।

वृहतीपति—सज्ञा पु० [स०] वृहस्पति।

वृहतीफल—सज्ञा पुं० [स०] बनभटा।

वृहत्—वि० [स०] बड़ा भारी। महान्। जैसे,—आपने यह बहुत वृहत् कार्य उठाया है।

वृहत्कद—सज्ञा पु० [स० वृहत्कन्द] १ विष्णुकद २. गाजर।

वृहत्कालशाक—सज्ञा पु० [स०] महा कासमर्द नाम का क्षुप। कसौदी।

वृहत्काश—सज्ञा पुं० [स०] उलूक नाम का तृण। खगडा।

वृहत्कुक्षि—वि०, सज्ञा पुं० [स०] वह जिसका पेट आगे की ओर निकला हो। तोदल।

वृहत्कोशातकी—सज्ञा स्त्री० [स०] नेनुआ। तरोई।

वृहत्खर्जूरिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] छुहारा।

वृहत्ताल—सज्ञा पु० [स०] श्रीताल या हिताल नाम का वृक्ष।

वृहत्तिक्त—सज्ञा पु० [स०] छोटा पाठा।

वृहत्तिक्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] पाठा। पाढा।

वृहत्तृण—सज्ञा पुं० [स०] बाँस।

वृहत्त्रयी—सज्ञा स्त्री० [स०] सस्कृत के किरातार्जुनीय (भारवि), शिशुपालवध (माघ) और नैषध (श्रीहर्ष) महाकाव्य। उ०—महाकाव्यो की वृहत्त्रयी (किरात, माघ, नैषध) मे इसका प्रमुख स्थान है।—बा० श० महा०, पृ० २३।

वृहत्त्वक्—सज्ञा पुं० [सं० वृहत्त्वच्] सप्तपर्ण या सतिवन नामक वृक्ष।

वृहत्त्वच—सज्ञा पु० [सं०] नीम का पेड।

वृहत्पचमूल—सज्ञा पु० [स० वृहत्पञ्चमूल] बेल, सोनापाठा, गभारी, पाँडर, और गनियारी इन पाँचो का समूह।

वृहत्पत्र सज्ञा पुं० [स०] १. हार्याकद। २. पठानी लोध। ३. बथुआ नाम का साग।

वृहत्पत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. त्रिपर्णी कद। २ कासमर्द। कसौदी।

वृहत्पत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] त्रिपर्णी कद।

वृहत्पर्ण—सज्ञा पुं० [स०] पठानी लोध।

वृहत्पर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] महा शणपुष्पी। बडी वनसनई।

वृहत्पाटलि, वृहत्पाटली—सज्ञा स्त्री० [स०] धतूरा।

वृहत्पाद सज्ञा पु० [सं०] वट का वृक्ष। बरगद।

वृहत्पारेवत—सज्ञा पुं० [स०] बडा पारेवत वृक्ष।

वृहत्पाली—सज्ञा स्त्री० [स० वृहत्पालिन्] वनजीरक। काली जीरी।

वृहत्पीलु—सज्ञा पु० [स०] महापीलु नामक वृक्ष। पहाडी अखरोट।

वृहत्पुष्प—सज्ञा पुं० [स०] १ केला। २ सफेद कुम्हडा। पेठा।

वृहत्पुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] शणपुष्पी। वनसनई।

वृहत्पुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] सन। सनई।

वृहत्फल—सज्ञा पुं० [स०] १ कुम्हडा। २ कटहल। ३ जामुन। ४ चिचडा।

वृहत्फला—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कद्दू। लौकी। २. कडवी लौकी। तितलौकी। ३ महेंद्रवारुणी। इनारुन। ४ बडा जामुन। ५. सफेद कुम्हडा। पेठा।

वृहदग—सज्ञा पु० [स० वृहदङ्ग] हाथी।

वृहदम्ल—सज्ञा पु० [स०] कमरख का पेड।

वृहदश्ववार—सज्ञा पु० [स० वृहत्+अश्ववार] अश्वसेना का नायक। घुडसवार सेना का सचालक। अश्वसेनाधिपति।—आ० भा०, पृ० ४४४।

वृहदेला—सज्ञा स्त्री० [स०] बडी इलायची।

वृहद्—वि० [स०] दे० 'वृहत्'।

वृहद्गृह—सज्ञा पु० [स०] वृहद्गृह या कारुष नामक प्राचीन देश।

वृहद्गृह—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल के एक देश का नाम जो विन्ध्यवर्वत के पश्चिम मे मालव देश के पास था। कारुष देश।

वृहद्गोल—सज्ञा पु० [सं०] तरबूज।

वृहद्दती—सज्ञा स्त्री० [स० वृहत्+दन्ती] बडी दती। द्रवती।

वृहद्दल—सज्ञा पु० [स०] १ पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। सतिवन। ३. श्रीताल या हिताल नामक वृक्ष। ४ लाल लहसुन। ५ लजालू। लज्जावती।

वृहद्दला—सज्ञा स्त्री० [स०] लाजवती। लजालू।

वृहद्द्रोणी—सज्ञा स्त्री० [स०] द्रोण नामक परिमाण।

वृहद्बल—सज्ञा पुं० [सं०] महालागल [को०]।

वृहद्धान्य—सज्ञा पु० [स०] यवनाल। ज्वार।

वृहद्बदर—सज्ञा पु० [स०] बड़ा बेर।

वृहद्दवला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पीतपुष्पा। महदेई। २ पठानी लोध। ३ लजालू। लज्जावती।

वृहद्दीज—सज्ञा पु० [स०] आम्रातक। अमडा।

वृहद्दभडी—सज्ञा स्त्री० [स० वृहद्दभण्डी] त्रायमाणा नाम की लता।

वृहद्दभट्टारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा का एक नाम।

वृहद्दभानु—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ भागवत के अनुसार सत्यभामा के एक पुत्र का नाम। ४ चित्रक। चीता।

वृहद्रथ'—सज्ञा पु० [स०] १ इद्र। २ यज्ञपात्र। ३ सामवेद के एक अश का नाम। ४ भागवत के अनुसार शतधन्वा के एक पुत्र का नाम। ५ देवरात के एक पुत्र का नाम। ६ एक प्रकार का मत्र।

वृहद्रथ²—वि० [वि० स्त्री० वृहद्रथा] जिसके पास बहुत से रथ हो।

वृहद्रथा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम।

वृहद्राय—सज्ञा पु० [स०] उल्लू पक्षी।

वृहद्रावी—सज्ञा पु० [स० वृहत्+रावित्] छोटा उल्लू [को०]।

वृहद्वर्ण—सज्ञा पु० [स०] सोनामक्खी।

वृहद्वल्क—सज्ञा पु० [स०] १. पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। सतिवन।

वृहद्वल्कल—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वृहद्वल्क'।

वृहद्वल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] करेला।

वृहद्वात—सज्ञा पु० [स०] देवदारु। पुनेरा।

वृहद्वारुणी—सज्ञा स्त्री० [स०] महेंद्रवारुणी। इन्द्रायन।

वृहद्वीज—सज्ञा पु० [को०] अमडा। आम्रातक [को०]।

वृहन्नल—सज्ञा पु० [स०] १ बाहु। बाँह। २ अर्जुन। दे० 'वृहन्नला'। ३ वृहन्नाल। बडा नरसल (को०)।

वृहन्नला—सज्ञा स्त्री० [स०] अर्जुन का उस समय का नाम जब वे वनवास के उपरांत अज्ञातवास के समय राजा विराट के यहाँ स्त्री के वेश मे रहकर उसकी कन्या को नाच गाना सिखलाते थे।

वृहन्नाल—सज्ञा पु० [स०] नरसल। नरकट।

वृहन्निव—सज्ञा पु० [स० वृहन्निम्ब] महानिंब। बकायन।

वृहन्मारिच—सज्ञा पु० [स०] गोल मिर्च।

वृहन्मरीच—सज्ञा पुं० [स०] काला मिर्च [को०]।

वृहल्लोणी—सज्ञा स्त्री० [स०] कुलफा नामक साग।

वृहस्पति—सज्ञा पु० [सं०] देवताओं के गुरु। विशेष दे० 'वृहस्पति'। (१, और २)।

वृही—सज्ञा पु० [स०] साठी धान्य।

वेंक—सज्ञा पु० [स० वेङ्क] दक्षिण भारत का एक देश और वहाँ के निवासी [को०]।

वेंकट—सज्ञा पु० [स० वेङ्कट] द्रविड प्रदेश के एक पर्वत का नाम। वेंकटगिरि [को०]।

वेंकटगिरि—सज्ञा पु० [स० वेङ्कटगिरि] दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम जहाँ वेंकटेश्वर विष्णु का प्रसिद्ध मदिर है।

वेंकटाचल—सज्ञा पु० [स० वेङ्कटाचल] दे० 'वेंकटगिरि'।

वेंकटाद्रि—सज्ञा पुं० [स० वेङ्कटाद्रि] दे० 'वेंकटगिरि'।

वकटेश—सज्ञा पु० [स० वेङ्कटेश] विष्णु [को०]।

वकटेश्वर—सज्ञा पु० [स० वेङ्कटेश्वर] विष्णु [को०]।

वेंघर—सज्ञा पुं० [स० वेङ्गर] रूप यौवन का मद। सुदरता का अभिमान [को०]।

वे—सर्व० [हिं० वह] १ वह का बहुवचन या समानवाचक रूप। जैसे,—(क) वे लोग चले गए। (ख) वे आज न आवेंगे। २ पत्नी द्वारा पति के लिये प्रयुक्त अन्य पुरुष का सर्वनाम।

वेउ†—सज्ञा पु० [स० वेद] दे० 'वेद'। उ०—मुनिवर विप्र मडन वेउ। माननी सकल माजन तेउ।—पृ० रा०, १८। ४३।

वेऊ—सर्व० [हिं वह+स० अपि, हिं० भी] वह भी।

वेक—वि० [स० एक] दे० 'एक'। उ०—जीते मरना पिव मे मिलना जीना जीने का फल वेक।—दक्खिनी०, पृ० ४४१।

वेकट—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार की मछली। भाकुर। २ युवक। जवान। ३ विदूषक। मसखरा। ४ जौहरी।

वेक्षण—सज्ञा पु० [स०] अच्छी तरह ढूँढना या देखना।

वेखना†—क्रि० अ० [स० वेक्षण, प्रा० वेक्खण>प०] देखना उ०—हुण क्या कीजै लाडिले वेखन नहिं पावै।—घनानद, पृ० १८०।

वेखलाना†—क्रि० स० [स० वेक्षण] दे० 'दिखलाना'। उ०—जिद निमाणी, तपदी, सोहणा मुख वेखलानी जानी।—घनानद, पृ०, ५३६।

वेग—सज्ञा पु० [स०] १ प्रवाह। बहाव। २ शरीर मे से मल मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति। ३ किसी ओर प्रवृत्त होने का जोर। तेजी। ४ शीघ्रता। जल्दी। ५ आनद। प्रसन्नता। खुशी। ६ कोई काम करने की दृढ प्रतिज्ञा या पक्का निश्चय। ७ उद्योग। उद्यम। ८ प्रवृत्ति। झुकाव। ९ वृद्धि। बढती। १० महाज्योतिष्मती। ११ लाल इनारु। १२ शुक्र। वीर्य। १३ न्याय के अनुसार चौबीस गुणो मे से एक गुण।

विशेष—यह गुण आकाश, जल, तेज, वायु और मन मे पाया जाता है। ससार मे जो कुछ गति देखी जाती है, वह इसी गुण के कारण होती है और उक्त पाँचो मे से किसी न किसी के द्वारा होती है।

१४ बाण की गति या चाल (को०)। १५ प्रेम। गाढ अनुराग (को०)। १६ रोग की तीव्रता (को०)। १७ विष आदि का सचार या फैलना (को०)। १८ आतरिक भावो की बाह्य अभिव्यक्ति। २० भावातिरेक (को०)।

वेगग—वि० [स०] तेज चलनेवाला। तीव्रगामी [को०]।

वेगगा—सज्ञा स्त्री० [स०] वेगपूर्वक चलनेवाली, नदी।

वेगघ्न—वि० [स०] तीव्रता से प्रहार करनेवाला [को०]।

वेगदड—सज्ञा पु० [स० वेगदण्ड] हाथी [को०]।

वेगदर्शी—सज्ञा पु० [स० वेगदर्शिन्] रामायण के अनुसार एक बदर का नाम।

वेगधारण—सज्ञा पु० [स०] मल, मूत्र या शरीर के इसी प्रकार के और किसी वेग को रोकना जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होता है।

वेगनाशन—सज्ञा पुं० [स०] श्लेष्मा । कफ ।

विशेष—कहते हैं, शरीर से निकलनेवाला मल आदि इसी के कारण कुछ रुकता है, इसीलिये इसका यह नाम पडा है ।

वेगनिरोध—सज्ञा पु० [स०] शरीर के मल मूत्र आदि वेगो को रोकना । वेगधारण ।

वेगपरिक्षय—सज्ञा पु० [स०] रोग के वेग या तेजी का कम होना (को०) ।

वेगरोध—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर के मल मूत्र आदि वेगो को रोकना । वेगधारण । २ गति मे बाधा । रुकावट । रोक ।

वेगवती—सज्ञा स्त्री० [स०] दक्षिण भारत की एक नदी का नाम ।

वेगवान्[1]—वि० [स० वेगवत्] [वि० स्त्री० वेगवती] वेगपूर्वक चलनेवाला । तेज चलनेवाला ।

वेगवान्[2]—सज्ञा पु० विष्णु ।

वेगवाहिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गंगा । २ पुराणानुसार एक प्राचीन नदी का नाम ।

वेगवाही—वि० [स० वेगवाहिन्] वेग से युक्त । वेगी (को०) ।

वेगविघात—सज्ञा पु० [स०] शरीर से निकलते हुए मल मूत्र आदि वेगो को सहसा रोक लेना जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक समझा जाता है ।

वेगविधारण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वेगरोध' (को०) ।

वेगसर—सज्ञा पु० [स०] १ तेज चलनेवाला घोडा । २. खच्चर ।

वेगहरिण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का मृग । वेगिहिरण (को०) ।

वेगा—सज्ञा स्त्री० [सं०] बडी मालकँगनी । महाज्योतिष्मती ।

वेगाघात—सज्ञा पु० [स०] १ अकस्मात् वेग या गति का रोकना । २ मलावरोध । कोष्ठबद्धता (को०) ।

वेगानिल—सज्ञा पुं० [स०] वेगयुक्त वायु । आँधी । प्रचंड पवन (को०) ।

वेगार(पु)†—सज्ञा पु० [फा० वेगार] दे० 'बेगार' । उ०—चाँट जाइते वेगार घर । —कीर्ति०, पृ० ४४ ।

वेगावतरण—सज्ञा पु० [स०] तीव्र गति से उतरना (को०) ।

वेगित—वि० [स०] १ जिसमे वेग हो । वेगयुक्त । २ विलोडित । मथित । क्षुब्ध । ३ जिसमे गति लाई गई हो । तेज किया हुआ (को०) ।

वेगिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सरिता । नदी । २ एक प्रकार की नौका । युक्तिकल्पतरु के अनुसार १७६ हाथ लबी, २२ हाथ ऊँची और १७½ हाथ चौडी नाव ।

वेगिहिरण—सज्ञा पुं० [स०] शिकारी मृग ।

वेगी—सज्ञा पुं० [स० वेगिन्] १ वह जिसमें बहुत अधिक वेग हो । २ धावन । हरकारा (को०) । ३ बाज नाम का पक्षी ।

वेगोदग्र—वि० [स०] तीव्रता से प्रभाव फैलानेवाला (विष आदि)—शीघ्र असर करनेवाला (को०) ।

वेचा—सज्ञा स्त्री० [स०] भृति । मजदूरी । वेतन (को०) ।

वेजानी—सज्ञा स्त्री० [स०] सोमराजी ।

वेजित—वि० [स०] १ उत्तेजित । कपित । क्षुब्ध । २. बढाया हुआ । वर्धित (को०) ।

वेट्—सज्ञा पु० [स०] स्वाहा ।

विशेष—वैदिक काल मे यज्ञो आदि में स्वाहा के स्थान मे वेट् शब्द का व्यवहार होता था ।

वेट—सज्ञा पुं० [स०] पीलु नामक वृक्ष (को०) ।

वेटा—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्यो की वसति या निवास । वैश्यो या वणिको की बस्ती (को०) ।

वेटी—सज्ञा स्त्री० [सं०] नौका । नाव (को०) ।

वेटेरिनरी—वि० [अ०] बैल, घोडे आदि पालतू पशुओ की चिकित्सा सबधी । शालिहोत्र संबधी । जैसे,—वेटेरिनरी अस्पताल ।

वेटेरिनरी अस्पताल—सज्ञा पु० [अ० वटेरिनरी हास्पिटल] वह स्थान या चिकित्सालय जहाँ घोडे आदि पालतू पशुओ की चिकित्सा की जाती है । पशु चिकित्सालय ।

वेट्टचदन—सज्ञा पुं० [स० वेट्टचन्दन] मलयागिरि चंदन ।

वेड—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चदन (को०) ।

वेडा—सज्ञा स्त्री० [स०] बेडा । नाव (को०) ।

वेढ[1]—सज्ञा पु० [प्रा०] १. आसन । स्थान । पीढा । २ घेरा । लपेट । उ०—कोई मूँगारो मूँसो गयो, कछु कसण ते लक की वेढ, रात दिवस धनी पहरीयो ।—बी० रासो, पृ० ६७ ।

वेढ†[2]—सज्ञा पुं० [देश०] युद्ध । उ०—माह उजाली सपतमी, वेढ ममीसर वार ।—रा० रू०, पृ० २७२ ।

वेढक†—वि० [देश०] लडाकू । उ०—वाघ फता वेढकाँ वीर वीराव विजावत ।—रा० रू०, पृ० १५७ ।

वेढमिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वह रोटी या कचौडी जिसमे उडद की पीठी भरी हो । बेढई ।

वेढिअ†—वि० [सं० वेष्टित या देशी] ढका हुआ । आवृत । —देशी०, पृ० ३०४ ।

वेण—सज्ञा पु० [स०] १ मनु के अनुसार एक प्राचीन वर्णसकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहक माता और अबष्ठ पिता से मानी गई है । २ सूर्यवशी राजा पृथु के पिता का नाम । ३ बाँस की वस्तुओ को बनाने का काम करनेवाली एक जाति । बँसोर । धरिकार (को०) ।

वेणयोनि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की लता ।

वेणवी—सज्ञा पु० [स० वेणविन्] १ वह जिसके पास वेणु हो । २. शिव का एक नाम ।

वेणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रामायण के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम जिसे पर्णासा भी कहते है । २ उशीर । खस ।

वेणि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ देवदाली । बदाल । २ वेणी गूँथना या बाँधना (को०) । ३ प्रोषितपतिका नायिका आदि की लटकती हुई चोटी जो एक हो (को०) । ४ जल का प्रवाह । जलधारा (को०) । ५ सरितसगम (को०) । ६ एक नदी (को०) । ७ गंगा, यमुना और सरस्वती का सगम (को०) । ८ पहले की विभक्त किंतु बाद मे पुन सयुक्त की गई सपत्ति (को०) । ९ बाँध । पुल (को०) । १० मेघा । भेंड (को०) । ११. प्रपात । निर्झर । उत्स (को०) ।

वेणिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक जनपद का नाम। २ इस देश का निवासी।

वेणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। वेणी। २ बाँस, नरसल आदि का बना बेड़ा (को०)। ३ जलयुक्त प्रवाह। झूटा धारा (को०)।

वेणिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके बालों में चोटी की हुई हो (को०)।

वेणिबंध—संज्ञा पुं० [सं० वेणिबन्ध] बालों को बाँधकर बनाई गई चोटी (को०)।

वेणिमाधव—संज्ञा पुं० [सं०] त्रिवेणी संगम के देवता विष्णु की मूर्ति।

वेणिवेधनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जोंक।

वेणिवेधिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककतिका। कंघी (को०)।

वेणी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। २ जल का प्रवाह। पानी का बहाव। ३ भीड़ भाड़। ४ देवदारी। ५ एक प्राचीन नदी का नाम। ६ भेड़। ७ पुल। बाँध। बंधा (को०)। ८ देवताड़। दे० 'वेणि'।

वेणी[2]—संज्ञा पुं० [सं० वेणिन्] नागविशेष (को०)।

वेणीग—संज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

वेणीदान—संज्ञा पुं० [सं०] वेणी या बाल कटवाने का एक संस्कार जो प्रयाग आदि तीर्थों में संपन्न कराते हैं (को०)।

वेणीफल—संज्ञा पुं० [सं०] देवदाली का फल।

वेणीमूल—संज्ञा पुं० [सं०] खस। उशीर।

वेणीमूलक—संज्ञा पुं० [सं०] उशीर। खस।

वेणीर—संज्ञा पुं० [सं०] १ नीम का पेड़। २ रीठा। अरिष्टक वृक्ष।

वेणीसंवरण—संज्ञा पुं० [सं०] वेणी को बाँधना। वेणीबंधन (को०)।

वेणीसंहरण—संज्ञा पुं० [सं०] चोटी बाँधना। जूड़ा बाँधना (को०)।

वेणीसंहार—संज्ञा पुं० [सं० वेणी+संहार] १ जूड़ा बाँधना। बिखरे केशों को सुधारकर चोटी बाँधना। २ भट्ट नारायण कृत संस्कृत का एक नाटक (को०)।

वेणीस्कंध—संज्ञा पुं० [सं० वेणीस्कन्ध] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

वेणु—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाँस। २ बाँस की बनी हुई बंशी। ३ एक प्राचीन राजा का नाम। दे० 'वेण'। ४ बेंत। वेतस (को०)। ५ राजा। केतु (को०)।

वेणुक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह लकड़ी या छड़ी जिससे गौओं, बैलों आदि को हाँकते हैं। २ अंकुश। आँकुस। ३ छोटी बंशी। बाँसुरी। ४ इलायची। ५ एक जनपद (को०)।

वेणुकर्कर—संज्ञा पुं० [सं०] कनेर का पेड़। करवीर का पेड़।

वेणुका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बाँसुरी। बंशी। २. एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल बहुत जहरीला होता है। ३ हाथी को चलाने का प्राचीन काल का एक प्रकार का अंकुश या दंड जिसमें बाँस का डंडा लगा होता था।

वेणुकार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो बाँस से बाँसुरी बनाता हो। बंशी बनानेवाला।

वेणुकीय—वि० [सं०] वेणुसंबंधी। वेणु का।

वेणुकीया—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह जगह जहाँ बाँस बहुत अधिक उत्पन्न हो (को०)।

वेणुगुल्म—संज्ञा पुं० [सं०] बाँसों का झुरमुट। बाँस की कोठी (को०)।

वेणुग्रव—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की ओषधि।

वेणुजघ—संज्ञा पुं० [सं० वेणुजङ्घ] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन मुनि का नाम।

वेणुज—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह चीज जो बाँस से उत्पन्न हुई हो। जैसे अग्नि आदि। २ बाँस के फूल में होनेवाले दाने, जो चावल कहलाते हैं और जो पीसकर ज्वार आदि के आटे के साथ खाए जाते हैं। बाँस का चावल। ३ गोल मिर्च।

वेणुजमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] बाँस में होनेवाला एक प्रकार का गोल दाना जो प्रायः मोती कहलाता है।

वेणुजाल—संज्ञा पुं० [सं० वेणु+जाल] बँसवारी। बाँस की कोठी। बाँसों का झुरमुट (को०)।

वेणुदत्त—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेणुदल—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस को चीरकर बनाया हुआ फट्टा या बड़ी खपाची (को०)।

वेणुदारि—संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक राजकुमार का नाम।

वेणुदारी[1]—संज्ञा पुं० [सं० वेणुदारिन्] दानवविशेष (को०)।

वेणुदारी[2]—वि० बाँस को चीरने या फाड़नेवाला (को०)।

वेणुध्म—संज्ञा पुं० [सं०] वंशीवादक। बाँसुरी बजानेवाला (को०)।

वेणुन—संज्ञा पुं० [सं०] मिर्च।

वेणुनिर्लेखन—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस की छाल।

वेणुनिस्रुति—संज्ञा पुं० [सं०] ईख। ऊख।

वेणुनृत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] तंत्र के अनुसार एक देवी (को०)।

वेणुप—संज्ञा पुं० [सं०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम जो रेणुप भी कहलाता था। २ इस देश का निवासी।

वेणुपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस का पत्ता।

वेणुपत्रक—संज्ञा पुं० [सं०] सर्प की एक जाति। सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप।

वेणुपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] वंशपत्री। हिंगुपर्णी।

वेणुपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वेणुपत्रिका' (को०)।

वेणुपुर—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक बेलगाँव का प्राचीन नाम।

वेणुबीज—संज्ञा पुं० [सं०] बाँस के फूल में होनेवाले छोटे दाने जो ज्वार आदि के आटे के साथ पीसकर खाए जाते हैं। बाँस का चावल।

वेणुमंडल—संज्ञा पुं० [सं० वेणुमण्डल] महाभारत के अनुसार कुशद्वीप के एक वर्ष का नाम।

वेणुमती—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार पाश्चिमोत्तर देश की एक नदी का नाम।

वेणुमय—वि० [स०] बाँस का बना हुआ।

वेणुमान्—सज्ञा पु० [स० वेणुमत्] १ पुराणानुसार एक वश (वर्ष) का नाम। २ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ३. ज्योतिष्मान् के एक पुत्र का नाम (को०)। ४. वह जो बाँस का बना हुआ हो (को०)।

वेणुमुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] तात्रिको की एक प्रकार की मुद्रा।

वेणुयव—सज्ञा पुं० [स०] बाँस के फूलो मे होनेवाले दाने जो ज्वार आदि के साथ पीसकर खाए जाते है। बाँस का चावल।

विशेष—वैद्यक मे यह रुक्ष, शीतल, कषाय और कफ, पित्त, मेद, कृमि तथा विष आदि का नाशक तथा बल और वीर्यवर्धक कहा गया है।

वेणुयष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] बाँस की लाठी या छडी [को०]।

वेणुवश—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक राजा का नाम।

वेणुवन—सज्ञा पु० [स०] १. राजगृह के पास का एक उपवन। राजा बिबिसार ने गौतम बुद्ध को बुलाकर यही ठहराया था। उ०—जब भगवान् बुद्ध राजगृह के वेणुवन मे विहार कर रहे थे।—गो० ज०, पृ० ६१। २ बाँसो का जगल।

वेणुवाद—सज्ञा पु० [स०] वह जो वंशी बजाता हो। बाँसुरी बजानेवाला।

वेणुवादक—सज्ञा पुं० [स०] बाँसुरी बजानेवाला। वंशीवादक [को०]।

वेणुवादन, वेणुवाद्य—सज्ञा पु० [स०] वशी बजाना [को०]।

वेणुवादिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वशी बजानेवाली स्त्री। २ बाँसुरी बजाती हुई यक्षिणी की प्रस्तरप्रतिमा। उ०—त्रिपुरी मे वेणुवादिनी, सुदशना, नागी इत्यादि कई प्रकार की यक्षिणियो की प्रतिमाएँ रखी है।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० १६४।

वेणुविदल—सज्ञा पुं० [स०] बाँस का फट्टा [को०]।

वेणुवीणाधरा—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

वेणुवैदल—वि० [स०] वेणुविदल का बना हुआ। बाँस की खपाचियो का बना हुआ।

वेणुशय्या—सज्ञा स्त्री० [स०] बास की बनी शय्या [को०]।

वेणुहय—सज्ञा पु० [स०] एक यदुवशी का नाम [को०]।

वेणुहोत्र—सज्ञा पुं० [स०] धृष्टकेतु के एक पुत्र का नाम।

वेण्य—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार विंध्य पर्वत से निकली हुई एक नदी का नाम।

वेण्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार पारियात्र पर्वत की एक नदी का नाम।

वेण्वातट—सज्ञा पु० [स०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम जो वेणा या वेण्वा नदी के तट पर था। २. इस देश का निवासी।

वेतंड—सज्ञा पु० [स० वेतण्ड] गज। हाथी। दे० 'वितड' [को०]।

वेतडा—सज्ञा स्त्री० [स० वेतण्डा] देवी दुर्गा का एक रूप [को०]।

वेतद—सज्ञा पुं० [स० वेतन्द] हाथी [को०]।

वेत—सज्ञा पु० [स० वेतस्] दे० 'बेंत'।

वेतन—सज्ञा पु० [स०] १. वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले मे दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २. वह धन जो बराबर कुछ निश्चित समय तक, प्राय एक मास तक, काम करने पर मिले। तनखाह। दरमाहा। महीना।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

३ चाँदी। रजत। ४ वृत्ति। जीविका (को०)।

वेतनकल्पना—सज्ञा स्त्री० [स०] तनखाह नियत करना।

वेतनकालातिपातन—सज्ञा पुं० [स०] तनखाह देने मे देर करना।

विशेष—चाणक्य के मत से यह व्यवस्थापको का दोष है और एतदर्थ वे दंड्य कहे गए है।

वेतननाश—सज्ञा पु० [स०] तनखाह या मजदूरी जब्त हो जाना।

विशेष—चाणक्य के समय मे यह राजनियम था कि जो कारीगर ठीक ढग से काम नही करते थे या कहा कुछ जाय और करते कुछ थे, उनका वेतन जब्त हो जाता था।

वेतनभुक्—सज्ञा पु० [स० वेतनभुज्] दे० 'वेतनभोगी' [को०]।

वेतनभोगी—सज्ञा पुं० [स० वेतनभोगिन्] वह जो वेतन लेकर काम करता हो। तनखाह पर काम करनेवाला।

वेतनादान—सज्ञा पुं० [स०] पारिश्रमिक न देना। वेतन न देना [को०]।

वेतनी—वि० [स० वेतनिन्] वेतनभोगी। वेतन पानेवाला [को०]।

वेतस—सज्ञा पु० [स०] १ बेंत। २ जलबेंत। ३. बडवानल। ४. बिजौरा नीबू (को०)।

वेतसक—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

वेतसगृह—सज्ञा पुं० [स०] बेत की बनी झोपडी या मडप [को०]।

वेतसपत्र—सज्ञा पु० [स०] १ बाँस का पत्ता। २ दे० 'वेतसपत्रक'।

वेतसपत्रक—सज्ञा पुं० [स०] सुश्रुत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जो प्राय एक अगुल मोटा और चार अगुल लबा होता था। इसका व्यवहार चीरफाड मे होता था।

वेतसपरीक्षिप्त—वि० [स०] बेंतो से घिरा हुआ। जैसे, स्थान या भूमि [को०]।

वेतसवृत्ति—वि० [स०] बेंत के समान झुक जाने का स्वभाव [को०]।

वेतसाम्ल—सज्ञा पु० [स०] अम्लवेत।

वेतसिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

वेतसी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वेतस'।

यौ०—वेतसीवृत्ति=बेंत के समान झुक जाने का स्वभाव या लचीलापन।

वेतसु—सज्ञा स्त्री० [स०] वैदिक काल के एक असुर का नाम।

वेदकौलेयक—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

वेदगंगा—संज्ञा स्त्री० [सं० वेदगङ्गा] दक्षिण भारत की एक नदी का नाम जो कोल्हापुर राज्य से निकलकर कृष्णा नदी मे मिलती है।

वेदगत—वि० [स०] चतुर्थ स्थान का। चौथे स्थानवाला [को०]।

वेदगर्भ—संज्ञा पु० [स०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु (को०)। ३ ब्राह्मण।

वेदगर्भा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती नदी। २ रेवा नदी।

वेदगर्भापुरी—संज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वेदगाभीर्य—संज्ञा पुं० [सं० वेदगाम्भीर्य] वेदो की गभीरता या गूढ अर्थ।

वेदगाथ—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदगुप्त—संज्ञा पु० [स०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २. भागवत के अनुसार पराशर के एक पुत्र का नाम।

वेदगुह्य—संज्ञा पु० [स०] विष्णु।

वेदघोष—संज्ञा पुं० [स०] वेदध्वनि [को०]।

वेदजननी—संज्ञा स्त्री० [स०] सावित्री जो वेद की माता मानी जाती है।

वेदज्ञ—संज्ञा पु० [स०] १. वह जो वेदो का ज्ञाता हो। वेद जाननेवाला। २ वह जो ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर चुका हो। ब्रह्मज्ञानी।

वेदतत्व—संज्ञा पुं० [स०] वेद का प्रमुख उद्देश्य। ब्रह्मज्ञान [को०]।

वेदतात्पर्य—संज्ञा पु० [स०] वेदो का वह अर्थ जो समुचित और अभिप्रेत हो [को०]।

वेदतीर्थ—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वेदत्रय—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'वेदत्रयी' [को०]।

वेदत्रयी—संज्ञा स्त्री० [स०] ऋक्, यजु तथा साम ये तीनो वेद। उ०—उ०—वेदत्रयी अरु राजसिरी परिपूरणता शुभ योगमयी है।—केशव (शब्द०)।

वेदत्व—संज्ञा पुं० [सं०] वेद का भाव या धर्म।

वेददक्षिणा—संज्ञा स्त्री० [स०] वेद विद्या पढाने की दक्षिणा। वेदाध्ययन की दक्षिणा [को०]।

वेददर्श—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन मुनि का नाम।

वेददर्शन—संज्ञा पुं० [स०] वह जो देखने मे वेदो का स्वरूप जान पडे।

वेददर्शी—संज्ञा पु० [स० वेददर्शिन्] वह जो वेदो का ज्ञाता हो।

वेददल—वि० [स०] १ चार दलो या पत्तोवाला। २ चार सेनाओ या समूहोवाला [को०]।

वेददान—संज्ञा पुं० [स०] वेद पढाना।

वेददीप—संज्ञा पुं० [स०] महीधर का किया हुआ शुक्लयजुर्वेद का भाष्य।

वेददृष्ट—वि० [स०] वेद द्वारा प्रमाणित [को०]।

वेददेवी—संज्ञा स्त्री० [स०] सावित्री

वेदवाह्य—वि० [स०] १ वेद के प्रतिकूल। वेद के विरुद्ध। २. वेदों के प्रति अविश्वास करनेवाला।

वेदबीज—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।

वेदब्रह्मचर्य—सज्ञा पु० [स०] वेद पढने की अवस्था [को०]।

वेदभू—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार देवताओं के एक गण का नाम।

वेदभृत्—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदमत्र—सज्ञा पु० [स० वेदमन्त्र] १ वेदो मे आए हुए मंत्र। २ पुराणानुसार एक जनपद का नाम। ३. इस जनपद का निवासी।

वेदमाता—सज्ञा स्त्री० [स० वेदमातृ] १ गायत्री। सावित्री। २. दुर्गा। ३. सरस्वती।

वेदमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] सावित्री।

वेदमित्र—सज्ञा पुं० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

वेदमुण्ड—सज्ञा पु० [स० वेदमुण्ड] एक असुर का नाम।

वेदमुख्य—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का क्षुद्र कीट या खटमल [को०]।

वेदमूर्ति—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो वेदो का बहुत बडा ज्ञाता हो। २ आदित्य। सूर्य।

वेदमूल—वि० [स०] वेद ही जिसका मूल आधार हो। वेद पर आधारित [को०]।

वेदयज्ञ—सज्ञा पु० [स०] १. वेद पढना। वेदपाठ करना। २. वैदिक यज्ञ यागादि।

वेदयिता—वि० सज्ञा [स० वेदयितृ] ज्ञाता। जानने या अनुभव करनेवाला [को०]।

वेदरक्षण—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मणो का प्रमुख कर्तव्य—वेदो की रक्षा करना।

वेदरहस्य—सज्ञा पु० [स०] उपनिषद्।

वेदरिचा(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वेदऋचा] वेदो की ऋचा। वेदमत्र। उ०—जे वे गोप वधू ही व्रज मे तेइ अब वेदरिचा भई येह। —छीत०, पृ० ७।

वेदल(पु)—वि० [स० विदल] विकसित। दे० 'विदल'। उ०—मिलै पद पद्म सु वेदल चप।—पृ० रा०, ६१।४३७।

वेदवचन—सज्ञा पु० [स०] वेदवाक्य। वेदमत्र [को०]।

वेदवती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ राजा कुशध्वज की कन्या का नाम। कहते है, यही दूसरे जन्म मे सीता हुई थी। २ पुराणानुसार पारियात्र पर्वत की एक नदी का नाम। ३ अप्सरा। ४ दक्षिण भारत की एक नदी का नाम।

वेदवदन—सज्ञा पुं० [स०] १. ब्रह्मा। २ व्याकरण।

वेदवाक्य—सज्ञा पु० [स०] १ वेद का कोई वाक्य। २. ऐसी बात जो पूर्ण रूप से प्रामाणिक हो और जिसका खंडन न हो सकता हो।

वेदवाद—सज्ञा पुं० [स०] १ वेदो पर होनेवाला शास्त्रार्थ। २ वेदज्ञान [को०]।

वेदवादी—सज्ञा पु० [स० वेदवादिन्] वह जो वेदों का अच्छा ज्ञाता हो।

वेदवास—सज्ञा पु० [स०] ब्राह्मण।

वेदवाह—सज्ञा पु० [स०] वह जो वेदो का ज्ञाता हो।

वेदवाहन—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य।

वेदविक्रयी[1]—वि० [स० वेद+विक्रयिन्] वेद को बेचनेवाला। धन लेकर वेद पढानेवाला [को०]।

वेदविक्रयी[2]—सज्ञा पुं० पतित वेदज्ञ [को०]।

वेदविद्—सज्ञा पु० [स० वेदवित्] १ वह जो वेदो का ज्ञाता हो। वेदज्ञ। २ विष्णु का एक नाम।

वेदविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] वेद का विधान या विधि। वेद मे निर्धारित विधान। उ०—प्रच्छन्न बौद्ध ज्यो कहने लगे, वेदविधि के कर्मकाड के लोप से दुखी जन वे विधि के प्रत्याशी।—अपरा, पृ० २१४।

वेदविहित—वि० [स०] वेद के अनुकूल [को०]।

वेदवृद्ध—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

वेदवेनाशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक नदी का नाम।

वेदव्यास—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यास'। उ०—कर्म फांस तहवाँ लग राखा। जहँ लग वेदव्यास कछु भाषा।—कबीर सा०, पृ० ६६१।

वेदव्रत—सज्ञा पु० [स०] वह जो वेदो का अध्ययन करता हो।

वेदशिर[1]—सज्ञा पु० [स०] १. भागवत के अनुसार कृशाश्व के पुत्र का नाम। २ पुराणानुसार एक प्रकार का अस्त्र।

वेदशिर[2]—सज्ञा पु० [स० वेदशिरस्] पुराणानुसार मार्कंडेय के एक पुत्र का नाम, जो मूर्द्धन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। कहते है, भार्गव लोगो का मूल पुरुष यही था।

वेदशिरा—सज्ञा पु० [स० वेदशिरस्] दे० 'वेदशिर' [को०]।

वेदशीर्ष—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वेदश्रवा—सज्ञा पुं० [स० वेदश्रवस्] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदश्री—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेदश्रुत—सज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

वेदश्रुति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

वेदसम्मत—वि० [स० वेदसम्मत] वेदानुकूल [को०]।

वेदसम्मित—वि० [स० वेदसम्मित] वेद के समान। महत्वपूर्ण। वेद के द्वारा विहित [को०]।

वेदसार—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

वेदसिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

वेदस्पर्श—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन वैदिक आचार्य का नाम।

वेदस्मृता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

वेदस्मृति, वेदस्मृती—सज्ञा स्त्री० [स०] वेदस्मृता नदी का नाम।

वेदहीन—वि० [स०] वेद के ज्ञान से रहित। वह जिसे वेद का ज्ञान न हो [को०]।

वेदाग—सज्ञा पुं० [स० वेदाङ्ग] १ वेदो के अग या शास्त्र जो छह है और जिनके नाम इस प्रकार है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छद।

विशेष—इनमे से व्याकरण को लोग वेदो का मुख, शिक्षा को नाक, निरुक्त को कान, ज्योतिष को आँख, कल्प को हाथ और छद को पैर मानते है।

२ सूर्य का एक नाम। ३ बारह आदित्यो मे से एक आदित्य।

वेदात—सज्ञा पु० [स० वेदान्त] १ उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अतिम भाग जिनमे आत्मा, परमात्मा, जगत् आदि के सबध में निरूपण है। ब्रह्मविद्या। अध्यात्म विद्या। अध्यात्म शास्त्र। ज्ञानकाड। उ०—यद्यपि उपनिषदो को 'वेदात' (वेद+अत) सज्ञा दी गई है।—सत० दरिया (भू०), पृ० ५६। २ छह दर्शनो मे से प्रधान दर्शन जिसमे चैतन्य या ब्रह्म ही एक मात्र पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है, जड जगत् और जीव कोई अतिरिक्त या अन्य पदार्थ नही माने गए। उत्तर मीमासा। अद्वैतवाद।

विशेष—यद्यपि इस सिद्धात का आभास वेद के मत्रभाग मे कही कही पाया जाता है, पर आगे चलकर ब्राह्मण, आरण्यको मे अधिक से अधिकतर होता गया है। तथापि सर्वाधिक इसका आधार उपनिषद् ही हैं जिनमे जीव, जगत् और ब्रह्म आदि का निरूपण है। उपनिषदो मे मुख्य वे दस कठ, केन, प्रश्न आदि उपनिषद् है जिनपर आद्य शकराचार्य का भाष्य मिलता है। उनमे जिस प्रकार 'अह ब्रह्मास्मि', 'तत्वमसि' आदि जीवात्मा और परमात्मा का एकता प्रतिपादित करनेवाले महावाक्य है, उसी प्रकार पचमहाभूतो मे से पृथ्वी, जल और अग्नि ब्रह्म के मूत रूप तथा वायु और आकाश अमूर्त रूप कहे गए हैं। इस प्रकार उनमे जीवात्मा और जडजगत् दोनो का समावेश ब्रह्म के भीतर मिलता है जो अद्वैतवाद का आधार है। आगे चलकर उपनिषद् की इस ब्रह्मविद्या का दार्शनिक ढग से निरूपण महर्षि बादरायण के 'ब्रह्मसूत्रो' मे हुआ है, जिनपर कई भाष्य भिन्न भिन्न आचार्यो ने अपने अपने मत के अनुसार रचे। इनमे अनेक भाष्य अत्यत प्रसिद्ध है,—शकराचार्य (शारीरक), रामानुज वल्लभ आदि अनेक आचार्यों ने इसपर भाष्य लिखे इनमे से शकर का भाष्य ही सबसे प्रसिद्ध और चिंतनपद्धति मे बहुत आगे बढ़ा हुआ है। अत. 'वेदात' शब्द से साधारणत. शकर का अद्वैतवाद ही समझा जाता है। शेष भाष्य अनेक विद्वानो के मत से साप्रदायिक माने जाते हैं।

जगत्, जीव और ब्रह्म या परमात्मा इन तीनो वस्तुओ के स्वरूप तथा इनके पारस्परिक सबध का निर्णय ही वेदात शास्त्र का विषय है। न्याय और वैशेषिक ने ईश्वर, जीव और जगत् (या जगत् के मूलद्रव्य परमाणु) ये तीन तत्व मानकर ईश्वर का जगत् का कर्ता ठहराया है, जो सर्वसाधारण की स्थूल भावना के अनुकूल है। वैशेषिक के अनुसार जगत् का मूल रूप परमाणु है जो नित्य है और जिनके ईश्वर-प्रेरित सयोग से सृष्टि होती है। इसके आगे बढकर साख्य ने दो ही नित्य तत्व स्थिर किए—पुरुष (आत्मा) और प्रकृत, अर्थात् एक ओर असख्य चेतन जीवात्माएँ और दूसरी ओर जडजगत् का अव्यक्त मूल। ईश्वर या परमात्मा का समावेश साख्यपद्धति मे नही है। सृष्टि के विकास की सूक्ष्म तात्विक विवेचना साख्य ने ही की है। किस प्रकार एक अव्यक्त प्रकृति से क्रमश. आपसे आप जगत् का विकास हुआ, इसका पूरा व्यौरा उसमे बताया गया है, और जगत् का कोई कर्ता है, नैयायिकों के इस सिद्धात का खडन किया गया है। पुरुष या आत्मा केवल द्रष्टा है, कर्ता नही। इसी प्रकार प्रकृति जड और क्रियामयी है। एक लँगडा है, दूसरी अधा। असख्य पुरुषो के सयोग या सान्निध्य से ही प्रकृति सृष्टि-क्रिया मे तत्पर हुआ करती है।

वेदात ने और आगे बढ़कर प्रकृति तथा असख्य पुरुषो का एक ही परमतत्व ब्रह्म मे अविभक्त रूप से समावेश करके जड चेतन के द्वैत के स्थान पर अद्वैत की स्थापना की। वेदात ने साख्यो के अनेक पुरुषो का खडन किया और चेतन तत्व को एक और अविच्छिन्न सिद्ध करते हुए बताया कि प्रकृति या माया की 'अहकार' गुणरूपी उपाधि से ही एक के स्थान पर अनेक पुरुषो या आत्माओ की प्रतीति होती है। यह अनेकता मायाजन्य है। साख्यो ने पुरुष और प्रकृति के सयोग से जो सृष्टि की उत्पत्ति कही है, वह भी असगत है, क्योकि यह सयोग या तो सत्य हो सकता है अथवा मिथ्या। यदि सत्य है, तो नित्य है, अत कभी टूट नही सकता। इस दशा मे आत्मा कभी मुक्त हो ही नही सकती। इस प्रकार की युक्तियो से पुरुष और प्रकृति के द्वैत को न मानकर वेदात ने उन्हे एक ही परम तत्व ब्रह्म की विभूतियाँ बताया। वेदात के अनुसार ब्रह्म जगत् का निमित्त और उपादान दोनो है।

नामरूपात्मक जगत् के मूल मे आधारभूत होकर रहनेवाले इस नित्य और निर्विकार तत्व ब्रह्म का स्वरूप कैसा हो सकता है, इसका भी निरूपण वेदात ने किया है। जगत् मे जो नाना दृश्य दिखाई पडते है, वे सब परिणामी और अनित्य है। वे बदलते रहते हैं, पर उनका ज्ञान करनेवाला आत्मा या द्रष्टा सदा वही रहता है। यदि ऐसा न होता तो भूतकाल मे अनुभव की हुई बात का वर्तमानकाल मे अनुभूत विषय के साथ जो सबध जोडा जाता है, वह असभव होता है (पचदशी)। इसी से ब्रह्म का स्वरूप भी ऐसा ही होना चाहिए। अर्थात् ब्रह्म चित्स्वरूप या आत्मस्वरूप है। नाना ज्ञेय पदार्थ भी ज्ञाता के ही सगुण, सोपाधि या मायात्मक रूप हैं, यह निश्चय करके ज्ञाता और ज्ञेय का द्वैत वेदात ने हटा दिया है, ब्रह्म स्वरूप का विवेचन वेदात के पिछले ग्रथो मे ब्यौरे के साथ हुआ है।

जगत् और सृष्टि के संबंध मे वेदातियो ने नैयायिको के 'आरंभवाद' (ईश्वर सृष्टि उत्पन्न करता है) और साख्य के 'परिणामवाद' (सृष्टि का विकास उत्तरोत्तर विकार या परिणाम द्वारा अव्यक्त प्रकृति से आपसे आप होता है) के स्थान पर 'विवर्तवाद' की स्थापना की है जिसके अनुसार जगत् ब्रह्म का विवर्त या कल्पित रूप है। रस्सी को यदि हम सर्प समझें तो रस्सी सत्य वस्तु है और सर्प उसका विवर्त या भ्रांतिजन्य प्रतीति है। इसी प्रकार ब्रह्म तो नित्य और वास्तविक सत्ता है और नामरूपात्मक जगत् उसका विवर्त है। यह विवर्त अध्यास द्वारा होता है। जो नामरूपात्मक दृश्य हम देखते हैं वह न तो ब्रह्म का वास्तव स्वरूप ही है, न कार्य या परिणाम ही क्योंकि ब्रह्म निर्विकार और अपरिणामी है। अध्यास के संबंध मे कहा जा सकता है कि सर्प कोई अलग पदार्थ है तब तो उसका आरोप होता है। अत इस विषय को और स्पष्ट करने के लिये 'दृष्टि-सृष्टि-वाद' उपस्थित किया जाता है जिसके अनुसार माया या नामरूप मन की वृत्ति है। इनकी सृष्टि मन ही करता है और मन ही देखता है। ये नामरूप उसी प्रकार मन या वृत्तियो के बाहर की कोई वस्तु नही है, जिस प्रकार जड चित् के बाहर की कोई वस्तु नही है। इन वृत्तियो का शमन ही मोक्ष है।

इन दोनो वादो मे कुछ त्रुटि देखकर कुछ वेदाती 'अवच्छेदवाद' का आश्रय लेते हैं। वे कहते हैं कि ब्रह्म के अतिरिक्त जगत् की जो प्रतीति होती है, वह एकरस या अनवच्छिन्न सत्ता के भीतर माया द्वारा अवच्छेद या परिमिति के आरोप के कारण होती है। कुछ अन्य वेदाती इन तीनो वादो के स्थान पर 'बिंब-प्रतिबिंब-वाद' उपस्थित करते हैं और कहते है कि ब्रह्म प्रकृति या माया के बीच अनेक प्रकार से प्रतिबिंबित होता है जिससे नामरूपात्मक दृश्यो की प्रतीति होती है। अतिम वाद 'अजात वाद' है जिसे 'प्रौढिवाद' भी कहते हैं। यह सब प्रकार की उत्पत्ति को, चाहे वह विवर्त के रूप मे कही जाय, चाहे सृष्टि सृष्टि या अवच्छेद या प्रतिबिंब के रूप मे—अस्वीकार करता है और कहता है कि जो जैसा है वह वैसा ही है और सब ब्रह्म है। ब्रह्म अनिर्वचनीय है, उसका वर्णन शब्दो द्वारा हो ही नही सकता क्योंकि हमारे पास जो भाषा है, वह द्वैत की है, अर्थात् जो कुछ हम कहते है वह भेद के आधार पर ही।

यद्यपि ब्रह्म का वास्तविक या पारमार्थिक रूप अव्यक्त, निर्गुण और निर्विशेष है, तथापि व्यक्त और सगुण रूप भी उसके बाहर नही है। पचदशी मे इन सगुण रूपो का विभेद प्रतिबिंबवाद के शब्दो मे इस प्रकार समझाया गया है रजोगुण की प्रवृत्ति से प्रकृति दो रूपो मे विभक्त होती है—सत्वप्रधान और तम प्रधान। सत्वप्रधान के भी दो रूप हो जाते हैं—शुद्ध सत्व (जिसमे सत्व गुण पूर्ण हो) और अशुद्ध सत्व (जिसमे सत्व अशत हो)। प्रकृति के इन्ही भेदो मे प्रतिबिंबित होने के कारण ब्रह्म को 'जीव' कहते हैं।

वेदात या अद्वैतवाद से साधारणत शकराचार्य प्रतिपादित अद्वैतवाद लिया जाता है जिसमे ब्रह्म स्वगत, सजातीय और विजातीय तीनो भेदो से परे कहा गया है। पर जैसा ऊपर कहा जा चुका है, बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर रामानुजाचार्य और शकराचार्य के भाष्य भी है। रामानुज के अद्वैतवाद को 'विशिष्टाद्वैत' कहते हैं, क्योंकि उसमे ब्रह्म को चित् और अचित् इन दो पक्षो से युक्त या विशिष्ट कहा है। ब्रह्म के इसी सूक्ष्म चित् और सूक्ष्म अचित् से स्थूल चित् (जीव) और स्थूल अचित् (जड) उत्पन्न हुए। अतः रामानुज के अनुसार ब्रह्म केवल निमित्त कारण है, उपादान है जड (स्थूल अचित्) और जीव (स्थूल चित्)। इस मत के अनुसार जीव को ब्रह्म का अश कह सकते है। पर शकर मत से नहीं, क्योंकि उसमे ब्रह्म सब प्रकार के भेदो से परे कहा गया है।

वल्लभाचार्य जी का अद्वैत 'शुद्धाद्वैत' कहलाता है, क्योंकि उसमे रामानुजकृत दो पक्षो की विशिष्टता हटाकर अद्वैतवाद शुद्ध किया गया है। इस मत के अनुसार सत्, चित् और आनद-स्वरूप ब्रह्म अपने इच्छानुसार इन तीनो स्वरूपो का आविर्भाव करता रहता है। जड जगत् भी ब्रह्म ही है, पर अपने चित् और आनद स्वरूपो का पूर्ण तिरोभाव किए हुए तथा सत् स्वरूप का कुछ अशत आविर्भाव किए हुए है। चेतन जगत् भी ब्रह्म ही है जिसमे सत्, चित् और आनद इन तीनो स्वरूपों का कुछ आविर्भाव और कुछ तिरोभाव रहता है। माया ब्रह्म ही की शक्ति है जो उसी की इच्छा से विभक्त होती है, अत मायात्मक जगत् मिथ्या नही है। जीव अपने शुद्ध ब्रह्मस्वरूप को तभी प्राप्त करता है जब आविर्भाव और तिरोभाव दोनो मिट जाते है, और यह बात केवल ईश्वर के अनुग्रह से ही, जिसे 'पुष्टि' कहते है, हो सकती है।

यहाँ यह भी समझ लेना चाहिए कि रामानुज और वल्लभाचार्य केवल दार्शनिक ही न थे, वे भक्तिमार्गी भी थे।

वेदातग[1]—सज्ञा पु० [स० वेदान्तग] वेदात दर्शन का अनुगमन करनेवाला। वेदात मत का अनुयायी [को०]।

वेदातग[2]—वि० वेदवेत्ता [को०]।

वेदातज्ञ—वि० [स० वेदान्तज्ञ] वेदात दर्शन का ज्ञाता। वेदातग [को०]।

वेदातवादी—वि० [स० वेदातवादिन्] अद्वैतवादी [को०]।

वेदातविद्—वि० [स० वेदान्तविद्] वेदात दर्शन का ज्ञाता [को०]।

वेदातवेदी—वि० [स० वेदातवेदिन्] अद्वैत दर्शन या वेदात का ज्ञाता। ब्रह्मवादी। वेदाती [को०]।

वेदातसूत्र—सज्ञा पु० [स० वेदान्तसूत्र] महर्षि बादरायण कृत सूत्र जो वेदात शास्त्र के मूल माने जाते है। विशेष द० 'वेदात'।

वेदाती—सज्ञा पु० [स० वेदान्तिन्] वह जो वेदात का अच्छा ज्ञाता हो। वेदात का पूरा पडित। ब्रह्मवादी।

वेदाग्रणी—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

वेदात्मा—सज्ञा पु० [स० वेदात्मन्] १ विष्णु। २ सूर्य।

वेदादि—सज्ञा पु० [स०] प्रणव या ओकार का मत्र।

यौ०—वेदादिबीज = प्रणव । वेदादिवर्ण = ओंकार मंत्र । प्रणव । वेदादिबीज ।

वेदादिबीज—संज्ञा पु० [सं०] प्रणव या ओंकार का मंत्र ।

वेदाधिगम—संज्ञा पु० [सं०] वेदाध्ययन [को०] ।

वेदाधिदेव—संज्ञा पु० [सं०] ब्राह्मण ।

वेदाधिप—संज्ञा पुं० [सं०] १ चारो वेदो के अधिपति ग्रह जो इस प्रकार है—ऋग्वेद के अधिपति बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल और अथर्ववेद के बुध । २ विष्णु का एक नाम (को०) ।

वेदाधिपति—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वेदाधिप' [को०] ।

वेदाध्यक्ष—संज्ञा पु० [सं०] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

वेदाध्ययन—संज्ञा पु० [सं०] वेदाधिगम । वेदाध्ययन । वेदो का पढना [को०] ।

वेदाध्यापक—संज्ञा पु० [सं०] वेदो का अध्यापन करनेवाला [को०] ।

वेदाध्यायी वि० [सं० वेदाध्यायिन्] वेदपाठ या वेद का अध्ययन करनेवाला [को०]

वेदानुवचन—संज्ञा पु० [सं०] १ वेद का पाठ करना । २ वेद का वचन । वेदवाक्य [को०] ।

वेदाप्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदो पर पूर्ण अधिकार होना [को०] ।

वेदार—संज्ञा पु० [सं०] गिरगिट ।

वेदार्ण—संज्ञा पु० [सं०] तीर्थविशेष [को०] ।

वेदार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] वेदवचन का अर्थ । वेदवाक्य का अर्थ [को०] ।

वेदाश्र—संज्ञा पु० [सं०] चतुष्कोण [को०] ।

वेदाश्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है ।

वेदि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ यज्ञ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि । वेदी । २ किसी शुभ कार्य के लिये बनाकर तैयार की हुई भूमि । ३ उँगली की एक प्रकार की मुद्रा । ४ अवष्ठा । ५ वह अँगूठी जिसपर किसी का नाम अंकित हो । ६ किसी मंदिर या महल का चौकोर सहन । मंदिर या प्रासाद के प्रांगण मे बना हुआ चौकोन स्थान या मंडप (को०) । ७ सरस्वती (को०) । ८ भूभाग । भूखंड (को०) । ९ कोई वस्तु रखने का आधार (को०) । १० ज्ञान । विज्ञान (को०) । ११ एक तीर्थ का नाम (को०) ।

वेदि[2]—संज्ञा पु० [सं०] १ विद्वान् ऋषि । २ आचार्य [को०] ।

वेदिकरण—संज्ञा पु० [सं०] वेदी का निर्माण [को०] ।

वेदिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी शुभ कार्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि । वेदी । २ जैन पुराणो के अनुसार एक नदी का नाम । ३ यज्ञभूमि (को०) । ४ चबूतरा । उच्च समतल भूमि (को०) । ५ आसन (को०) । ६ टीला । ढूहा (को०) । ७ लतामंडप । निकुंज (को०) ।

वेदिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] द्रौपदी का एक नाम ।

वेदित—वि० [सं०] १ जो कुछ बतलाया या सूचित किया गया हो । निवेदित । २ जो देखा गया हो ।

वेदितव्य—वि० [सं०] जो जानने के योग्य हो । ज्ञातव्य ।

वेदिता—वि० [सं० वेदितृ] चतुर । कुशल । विद्वान् । ज्ञाता । जाननेवाला [को०] ।

वेदित्व—संज्ञा पु० [सं०] विदित होने का भाव । ज्ञान ।

वेदिपुरीष—संज्ञा पुं० [सं०] वेदी की गीली या ढीली मिट्टी [को०] ।

वेदिमध्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसकी कमर वेदी की भाँति हो [को०] ।

वेदिमान, वेदिविमान—संज्ञा पु० [सं०] वेदी के लिये भूमि का परिमाण [को०] ।

वेदिश्रोणि, वेदिश्रोणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वेदी का श्रोणि भाग जिसे वेदिमेखला भी कहते हैं [को०] ।

वेदिष्ठ—वि० [सं०] जो सब बातें जानता हो । सर्वज्ञ ।

वेदिसभवा—संज्ञा स्त्री० [सं० वेदिसम्भवा] द्रौपदी का एक नाम [को०] ।

वेदी[1]—संज्ञा पुं० [सं० वेदिन्] [स्त्री० वेदिनी] १ पंडित । विद्वान् । आचार्य । २ ज्ञाता । जानकार । ३ वह जो विवाद करता हो । ४ ब्रह्मा । ५. अवष्ठा । पाढा (को०) ।

वेदी[2]—संज्ञा स्त्री० १. किसी शुभ कार्य के लिये, विशेषत धार्मिक कार्य के लिये तैयार की हुई ऊँची भूमि । जैसे,—विवाह की वेदी, यज्ञ की वेदी । २ सरस्वती । ३. मंदिर या महल के आगन मे बना हुआ चौकोर स्थान या मंडप (को०) । ४ मुहर करने की अँगूठी (को०) । ५ अँगुलियों की एक विशेष मुद्रा (को०) । ६ भूखंड । भूभाग (को०) । ७ ज्ञान विज्ञान (को०) । ८ कोई वस्तु रखने का आधार (को०) । दे० 'वेदि' ।

वेदी[3]—वि० १ जाननेवाला । ज्ञाता । २ अनुभव करनेवाला । ३ विवाह करनेवाला । ४ सूचना देनेवाला । सूचक । ५ विद्वान् । आचार्य [को०]

वेदीतिर्थि—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है ।

वेदीश—संज्ञा पुं० [सं०] १ वेदों के स्वामी, ब्रह्मा । २ अग्नि (को०) ।

वेदुक—वि० [सं०] १ जाननेवाला । ज्ञाता । २ प्राप्त करनेवाला । पानेवाला । ३ जो कुछ मिला हो । प्राप्त ।

वेदेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वेदो के स्वामी, ब्रह्मा ।

वेदोकत—वि० [सं० वेदोक्त] दे० 'वेदोक्त' । उ०—केसर अगर कपूर, चोक (व), वेदोकत चन्दण ।—रा० रू०, पृ० ३५९ ।

वेदोक्त—वि० [सं०] वेदों मे कहा गया । वेदविहित [को०] ।

वेदोदय—संज्ञा पुं० [सं०] सूर्य ।

वेदोदित—वि० [सं०] वेदविहित । वेद के अनुसार । वेदोक्त [को०] ।

वेदोवकरण—संज्ञा पु० [सं०] वेदाग ।

वेदोपनिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम ।

वेद्धव्य—वि० [स०] जो वेधने या छेदने के योग्य हो। वेधा जाने के योग्य। वेध्य।

वेद्धा—वि० [स० वेद्धृ] छेदने या भेदनेवाला। वेधन करनेवाला। लक्ष्य साधनेवाला।

वेद्य—वि० [स०] १. जो जानने या समझने के योग्य हो। २ जो कहने के योग्य हो। ३. जो स्तुति करने योग्य हो। ४ जो प्राप्त करने के योग्य हो। ५ विवाह के योग्य (को०)।

वेद्यत्व—सज्ञा पु० [स०] ज्ञान। जानकारी।

वेध[1]—सज्ञा पु० [स०] १. किसी नुकीली चीज से छेदने की क्रिया। वेधना। विद्ध करना। २ मत्रो आदि की सहायता से ग्रहो, नक्षत्रों और तारो आदि को देखना अथवा उनका स्थान निश्चित करना।

यौ०—वेधशाला।

३ ज्योतिष के ग्रहो का किसी ऐसे स्थान मे पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह से सामना होता हो। जैसे,—युतवेध, पताकी-वेध। ४ गहरापन। गभीरता। ५ झगडा। रार। उ०—राण गनै समरेस रै, बले प्रगट्यो वेध।—रा० रू०, पृ० ३४५। ६ क्षत। घाव। ७ समय का एक मान (को०)। ८ गर्त। गहराई। गड्ढा (को०)। ९ ज्योतिष मे परिधि का नवमाश (को०)। १० अशाति। बाधा (को०)। ११ घोडों का एक रोग (को०)। १२. रसो का मिश्रण (को०)। १४ निशाना मारना। लक्ष्य भेद करना (को०)।

वेध[2]—सज्ञा पुं० [स० वेधस्] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। महादेव। ४. सूर्य। ५ पडित। विद्वान्। ६ सफेद मदार। ७ दक्ष आदि प्रजापति।

वेधक—सज्ञा पु० [स०] १ वेध करनेवाला। २ लक्ष्य साधनेवाला। ३ वह जो मणियो आदि को वेधकर अपनी जीविका चलाता हो। ४ धतियाँ। ५ कपूर। ६ अम्लवेत। ७. नरक का एक विभाग (को०)। ८ बाली मे लगा हुआ धान। धान्य (को०)। ९ चदन (को०)। १० सेंधा नमक (को०)।

वेधगुप्त—सज्ञा पु० [स०] सगीत मे एक राग का नाम (को०)।

वेधन—सज्ञा पुं० [स०] १ बीधने की क्रिया। छेद कर देना। २ लक्ष्यवेध करना। ३ प्रवश। ४ प्रभावित करना। ५ गहराई। ६ खोदना। खनना क्रिया (को०)।

वेधनिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वह औजार जिससे मणियो आदि मे छेद करते हो।

वेधनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह औजार जिसमे मणियो आदि में छेद करते हो। वेधनिका। २ हाथी का अकुश। ३ गहराई (को०)।

वेधनीय—वि० [स०] वेधने के योग्य। जो वेधा जा सके (को०)।

वेधमुख्य—सज्ञा स० [स०] कचूर।

वेधमुख्यक—सज्ञा पु० [स०] हलदी का पौधा।

वेधमुख्या—सज्ञा स्त्री० [स०] कस्तूरी।

वेधशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ ग्रहो का वेध करने के यत्र आदि रखे हो। वह स्थान जहाँ नक्षत्रो और तारो आदि को देखने और उनकी दूरी, गति आदि जानने के यत्र हो।

वेधस—सज्ञा पु० [स०] हथेली के अँगूठे की जड के पास का स्थान।

विशेष—इसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं। आचमन के लिये इसी गड्ढे में जल लेने का विधान है।

वेधसी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

वेधा पु०—सज्ञा पु० [स० वेधस्] १ ब्रह्मा। स्रष्टा। उ०—सहस शब्द बीते तब वेधा। वर बूझि भाखेउ अति मेधा।—गिरधर (शब्द०)। २. विष्णु। ३ शिव। ४ सूर्य। ५. पडित। ६ सफेद मदार। ७ दक्ष आदि प्रजापति। ८. एक यादव का नाम जो अंगद या अंगत का पुत्र था। ९ पुरोहित (को०)। १० चद्रमा (को०)। ११. कवि (को०)।

वेधालय—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वेधशाला'।

वेधित—वि० [स०] जो वेधा गया हो। जिसमे छेद किया गया हो। बिँधा हुआ।

वेधिनी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जलौका। जोक। २ मेथी।

वेधिनी[2]—वि० वेधनेवाली। छेदनेवाली।

वेधी—सज्ञा पुं० [स० वेधिन्] [स्त्री० वेधिनी] १ वह जो वेध करता हो। वेध करनेवाला। २ अम्लवेत। ३ जो लक्ष्यभेद करता हो। वह जो निशाना मारता हो (को०)।

वेध्य[1]—वि० [स०] १ जिसे वेध किया जाय। २ जो वेध करने के योग्य हो।

वेध्य[2]—सज्ञा पु० [स०] लक्ष्य। निशाना (को०)।

वेध्या—सज्ञा स्त्री० [स०] बाध विशेष (को०)।

वेन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वेण' (को०)।

वेनु पु०—सज्ञा पु० [स० वेणु] बाँस की बशी। बाँसुरी।

वेनुधारी पु०—वि० [स० वेणुधारिन्] बंशी धारण करने या बजानेवाले। उ०—या प्रकार वृदावन के वृक्ष वृक्ष वेनुधारा श्री गोवर्धनधर रूप हैं।—दो सौ बावन०, भा० १ पृ० ३०२।

वेनुनाद पु०—सज्ञा पु० [स० वेणुनाद] दे० 'वेणुनाद'। उ०—हमारे श्री कृष्णचद्र जी तो वेनुनाद करि कै सब व्रज सुंदरीन को बुलाई कै रासरमन उन सा करत है।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ९१।

वेन्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक पवित्र नदी।

वेन्य[1]—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वेन'।

वेन्य[2]—वि० सुदर। खूबसूरत।

वेप—सज्ञा पु० [स०] कँपकँपी (को०)।

वेपथु—सज्ञा पुं० [स०] काँपने की क्रिया। कँपकँपी। कंप।

वेपथुपरीत—वि० [स०] कपनग्रस्त। कपायमान। काँपता हुआ [को०]।

वेपथुभृत्—वि० [स०] कपित। काँपता हुआ [को०]।

वेपन—सज्ञा पु० [स०] १ काँपना। थरथरी। कप। २ वात रोग।

वेपित—वि० [स०] कपित [को०]।

वेम—सज्ञा पु० [स०] करघा [को०]।

वेमक—सज्ञा पु० [स०] एक स्वर्गीय ऋषि।

वेमा—सज्ञा पु० [स० वेमन्] करघा। वामदड [को०]।

वेर—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर। देह। वदन। २ कुंकुम। केसर। ३ बैंगन। भटा (को०)। ४ मुख (को०)।

वेरक—सज्ञा पु० [स०] कपूर।

वेरट[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बेर नामक फल। २ निम्न वा सकर वर्ण का व्यक्ति (को०)।

वेरट[2]—वि० १. मिलाया हुआ। मिश्रित। २ नीच।

वेरि—सज्ञा स्त्री० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार बेंत आदि से बुनकर बना हुआ पहनावा या बकतर।

वेरो पु०—सज्ञा पुं० [देश०] कूप। कुआँ। उ०—पाहण गल बाँधै पडो, वेरो बावडियाँह। पिण मगण मत पारथो मुजलाँ मावडियाह। —बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० १४।

वेल[1]—सज्ञा पु० [स०] १ उपवन। बाग। २ बौद्ध मतानुसार एक बडी सख्या। ३ आम का वृक्ष (को०)।

वेल(पु)†[2]—सज्ञा स्त्री० [स० वेला] लहर। तरंग। उ०—ईडरिया आचार री, वीर चढै तो वेल।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० ७५।

वेलज—वि० [स०] नमकीन और चरपरा या कडवा [को०]।

वेलडी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० वल्लरी] दे० 'वेल' या 'वल्ली'। उ०—घर अबर विच वेलडी, तहुँ लाल सुगधा वूल। झक्खर इक नाँ आयो, नानक नही क्वूल।—सतवाणी०, पृ० ७०।

वेलन—सज्ञा पु० [स०] हीग।

वेलना—क्रि० अ० [स० वेल्ल, प्रा० वेल्ल] काँपना। तडपना। हिलना। उ०—ओछइ पाँणी मच्छ ज्यऊँ, वेलत थयउ विहाँण। —ढोला०, दू० १९२।

वेलव—सज्ञा पु० [स०] शूद्र पुरुष और क्षत्रिया स्त्री के सयोग से उत्पन्न पुत्र [को०]।

वेला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काल। समय। वक्त। २ समय का एक विभाग जो दिन और रात का चौबीसवाँ भाग होता है। कुछ लोग दिनमान के आठवें भाग को भी वेला मानते हैं। ३ मर्यादा। ४ समुद्र का किनारा। ५ समुद्र की लहर। ६ वाक्। वाणी। ७ मसूडा। ८ भोजन। खाना। ९ रोग। बीमारी। १० वृद्ध की स्त्री (को०)। ११ राग। आसक्ति (को०)। १२ अवसर। मौका (को०)। १३ विश्राम का अवकाश (को०)। १४ आसान या कष्ट-बाधा-विहीन मृत्यु (को०)। १५ मृत्यु का समय (को०)।

वेलाकूल—सज्ञा पुं० [स०] १ ताम्रलिप्त देश का नाम। २ वेलाभूत। समुद्रतट (को०)।

वेलाजल—सज्ञा पुं० [स०] ज्वार का पानी [को०]।

वेलाज्वर—सज्ञा पु० [स०] मरने के समय आनेवाला ज्वर।

वेलातर—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र का किनारा [को०]।

वेलातिक्रम—सज्ञा पुं० [स०] निश्चित समय का अतिक्रमण। विलब। देर [को०]।

वेलाद्रि—सज्ञा पुं० [स०] समुद्रतटवर्ती पर्वत [को०]।

वेलाधर—सज्ञा पुं० [स०] भारड या भारद्वाज नामक पक्षी [को०]।

वेलाधिप—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष मे दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता।

विशेष—रवि, शुक्र, बुध, चद्र, शनि, बृहस्पति, और मगल ये क्रमश वेलाधिप होते हैं। जिस दिन जो वार होता है, उस दिन की पहली वेला का वेलाधिप उसी वार का ग्रह होता है, और फिर पीछे की वेलाओं के अधिपति उक्त क्रम से शेष ग्रह होते है। जैसे,—रविवार की पहली वेला के वेलाधिप रवि, दूसरी के शुक्र, तीसरी के बुध, चौथी के चद्र आदि होगे। इसी प्रकार बुधवार की पहली वेला के वेलाधिप बुध, दूसरी के चद्र तीसरी के शनि, चौथी के बृहस्पति आदि होगे।

वेलान—वि० [स०] दे० 'वेलज'।

वेलाभूल—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र का किनारा [को०]।

वेलायनि—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

वलावन—सज्ञा पु० [स०] समुद्रतटवर्ती जगल [को०]।

वेलावलि—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक राग। दे० 'विलावल'।

वेलाविक्त—सज्ञा पुं० [स०] राजतरगिणी के अनुसार प्राचीन काल के एक प्रकार के राजकर्मचारी।

वेलाविलासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वारवनिता। वेश्या [को०]।

वेलाहीन—वि० [स०] असमय मे होनेवाला। समय के पहले होनेवाला।

वेलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ताम्रलिप्त देश का एक नाम। २ नदी-तट के आस पास का प्रदेश।

वेलिभुक्प्रिय—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का सुगधित आम जिसे वलिभुक्प्रिय भी कहा गया है [को०]।

वेलियो†—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का डिंगल गीत जिसके विषम पदों मे १६ मात्रा और सम पदो मे १५ मात्राएं तथा आदि पद मे १८ मात्राएं और तुकात मे लघु का विधान है।—रघु० रू०, पृ० १००।

वेलुव—सज्ञा पु० [स०] एक सख्या। दे० 'वेल' [को०]।

वेलोर्मि—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्वार का पानी [को०]।

वेल्लतर—सज्ञा पु० [स० वेल्लन्तर] वीरतरु नाम का एक वृक्ष [को०]।

वेल्ल—सज्ञा पु० [स०] १ विडग। २ गमन। गति (को०)। ३ काँपना। हिलना। लहराना (को०)।

वेल्लगिरिका—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियंगु।

वेल्लज—सज्ञा पुं० [स०] काली मिर्च।

वेल्लन—सज्ञा पुं० [स०] १ घोडो का जमीन पर लोटना। २ कपन। काँपना। गतिशील होना। हिलना डोलना (को०)। ३ तरंगो का ऊपर नीचे होना या लुढकना (को०)। ४ तेजी से मथना। तीव्र आलोडन (को०)। ५ गुल्म (को०)। ६ बेलन। रोटी बनाने का काष्ठ का बेलन (को०)।

वेल्लना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वेल्लन' [को०]।

वेल्लनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वल्ली दूब। मालादूब। २ काली मिर्च (को०)।

वेल्लभव—सज्ञा पुं० [स०] काली मिर्च। वेल्लज। मिर्च।

वेल्लरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. काला विधारा। २. मालादूब।

वेल्लहल—सज्ञा पुं० [स०] लपट। दुराचारी। बदचलन।

वेल्लि—सज्ञा स्त्री० [स०] लता। बेल।

वेल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पोई का साग। उपोदिका।

वेल्लिकाख्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बेल का पेड। २. बेल के फल का गूदा।

वेल्लित[1]—वि० [स०] १. हिलता डुलता हुआ। कपित। २. कुटिल। वक्र। ३ गत। गया हुआ [को०]।

वेल्लित[2]—सज्ञा पुं० १ कंपन। कापना। हिलना डुलना। २. गमन। गति। ३. लोटना। लुठन [को०]।

वेल्लितक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साँप।

वेल्ली—सज्ञा स्त्री० [स० वेल्ल] बेल। लता।

वेल्हा†—सज्ञा स्त्री० [स० वेला] तट। किनारा। द० 'वेला'। उ०—धण जीती प्रिव हारियउ, वेल्हा मिलण करेह।—ढोला०, दू० ५६०।

वेवहार(पु)—सज्ञा पु० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—उत्थि अपन वेवहार राँक ले राअहु चप्परि।—कीर्ति०, पृ० ५०।

वेवि(पु)†—वि० [स० द्वौ+अवि=द्वावपि] दोनों ही। उ०—वेव समत मिलिअ तवे एक्क वेवि सहोअर सग।—कीर्ति०, पृ० २२।

वेशत—सज्ञा पुं० [स० वेशन्त] १. छोटा तालाव। उ०—बह गया है अश्रु बनकर कालकूट ज्वलत। जा रहा भरता दया के दूध से वेशत।—सामधेनी, पृ० ४८। २. अग्नि। आग।

वेश—सज्ञा पुं० [स०] १. कपडे लत्ते और गहने आदि पहनकर अपने आपको सजाना। २ किसी के कपडे लत्ते आदि पहनने का ढग।

मुहा०—किसी का वेश धारण करना=किसी के ढग के कपडे लत्ते पहनना। किसी के रूप, रग और पहनावे आदि की नकल करना। जैसे,—(नटो आदि का) राजा का वेश धारण करना।

३. पहनने के वस्त्र। पोशाक। जैसे,—अब आप अपना वेश उतारिए।

यौ०—वेशभूषा=पहनने के कपडे आदि। पोशाक।

४ कपडे का बना हुआ घर। खेमा। तबू। ५. घर। मकान। ६ वेश्या का घर। ७ दे० 'प्रवेश'—१, २, ४। ८. छद्म वेश। कपट रूप (को०)। ९ मजदूरी। भृति (को०)। १०. वेश्या जन (को०)। ११. वेश्या को दिया जानेवाला द्रव्य (को०)। १२. प्राचुर्य। अधिकता। अतिरेक (को०)।

वेशक[2]—सज्ञा पु० [स०] गृह। मकान [को०]।

वेशक[1]—वि० घुसने या प्रवेश करनेवाला [को०]।

वेशकुल—सज्ञा पु० [स०] कुलटा स्त्री। दुश्चरित्रा स्त्री। २ वेश्या। रडी। वेश्याओ का समूह [को०]।

वेशता—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश का भाव या धर्म। वेशत्व।

वेशत्व—सज्ञा पु० [स०] वेश का भाव या धर्म। वेशता।

वेशदान—सज्ञा पुं० [स०] सूर्यमुखी फूल [को०]।

वेशधर—सज्ञा पु० [स०] १. वह जिसने किसी दूसरे का वेश धारण किया हो। वह जो भेस बदले हुए हो। छद्मवेशी। २ जैनो का एक सप्रदाय।

वेशधारी—सज्ञा पु० [स० वेशधारिन्] १ वह जिसने वेश धारण किया हो। वेश धारण करनेवाला। २. वह तपस्वी न हो, पर तपस्वियो का सा वेश धारण करता हो। ३ पुराणानुसार एक सकर जाति। ४ अभिनेता। नट (को०)।

वेशन—सज्ञा पु० [स०] १ प्रवेश करना। २ भवन। घर (को०)।

वेशनद—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल की एक नदी का नाम।

वेशनारी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या [को०]।

वेशनी—सज्ञा स्त्री० [स०] ड्योढ़ी। पौरी [को०]।

वेशभगिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती [को०]।

वेशभाव—सज्ञा पु० [स०] वेश्या की प्रकृति या दशा। वेश्याओ का सा हाव भाव [को०]।

वेशयुवती—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वेशयोषित, वेशयोषा—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या [को०]।

वेशर—सज्ञा पु० [स०] खच्चर [को०]।

वेशवधू—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वेशवनिता—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वेशवान्—सज्ञा पुं० [स० वेशवत्] १. वेश्या का कमाई पर जीवित रहनेवाला व्यक्ति। २ चकला चलानेवाला [को०]।

वेशवार—सज्ञा पु० [स०] नमक, मिर्च, धनिया आदि मसाले।

वेशव [illegible] [स०] वेश्या का घर। रडी का मकान।

वे [illegible] [स०] वेश्या। रडी।

[illegible] [स०] वेश्या। रडी [को०]।

[illegible] [स०] १. अग्नि। आग [illegible] [को०]।

वेशिक—सज्ञा पुं० [सं०] शिल्पविद्या। हाथ की कारीगरी।

वेशिका—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रवेशद्वार (को०)।

वेशी—सज्ञा पुं० [स० वेशिन्] १ वह जो वेश धारण किए हो। वेश धारण करनेवाला। २ वह जो प्रवेश करता हो। प्रवेश करनेवाला (को०)।

वेशीजाता—सज्ञा स्त्री० [स०] पुत्रदात्री नाम की लता।

वेश्म—सज्ञा पु० [स० वेश्मन्] १ घर। मकान। उ०—राजा किसी नगर मे अवस्थित राजप्रासाद (वेश्म) मे रहता था।—आ० भा० १०६। २ जन्मकुडली के लग्नचक्र का चौथा स्थान (को०)।

वेश्मकर्म—सज्ञा पु० [स० वेश्मकर्मन्] मकान बनाने की विद्या। गृहनिर्माण (को०)।

वेश्मकलिंग—सज्ञा पु० [स० वेश्मकलिङ्ग] चटक पक्षी। गौरया।

वेश्मकुलिग—सज्ञा पु० [स० वेश्मकुलिङ्ग] गौरैया पक्षी (को०)।

वेश्मकूल—सज्ञा पु० [स०] चिचिडा। चिचडा।

वेश्मचटक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की गौरैया (को०)।

वेश्मधूम—सज्ञा पुं० [स०] एक क्षुप या पौधा (को०)।

वेश्मनकुल—सज्ञा पु० [स०] छछूदर।

वेश्मपुरोधक—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार दूसरे के मकान को तोडकर या उसमे सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।

वेश्मभू—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जो मकान बनाने के लिये उपयुक्त हो अथवा जिसपर मकान बनाया जाय।

वेश्मवास—सज्ञा पु० [स०] १ रहने का घर। मकान। २ शयनकक्ष। शयनगृह।

वेश्मस्त्री—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी।

वेश्मस्थूणा—सज्ञा स्त्री० [स०] मकान का मुख्य स्तभ या खभा जिस पर छाजन रहता है (को०)।

वेश्मात—सज्ञा पु० [स० वेश्मान्त] घर के अदर का वह भाग जिसमे स्त्रियाँ रहती है। अत पुर। जनानखाना।

वेश्मादीपिक—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार मकान मे आग लगानेवाला।

वेश्य—सज्ञा पु० [स०] १ वेश्या के रहने का मकान। रडी का घर। २ आवास। निवास। मकान (को०)। ३. पडोस (को०)। ३ वेश्यावृत्ति (को०)।

वेश्यकामिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या। रडी। पुश्चली। बदचलन औरत (को०)।

वेश्यस्त्री—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या (को०)।

वेश्यागना—सज्ञा स्त्री० [स० वेश्याङ्गना] कुलटा स्त्री। बदचलन औरत।

वेश्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो नाचती गाती और धन लेकर लोगो के साथ सभोग करती हो। गाने और कसब कमानेवाली औरत। रडी।

पर्या०—गारस्त्री। गणिका। रूपाजीवा। क्षुद्रा। शूला। वारविलासिना। लज्जिका। कुभा। कामरेखा। पण्यागना। वारवधू। भोग्या। स्मरवीथिका।

यौ०—वेश्यापण=वेश्या के साथ सभोग करने के बदले दी जाने वाला रकम। वेश्यापति=जार। वेश्यावृत्ति=धन लेकर पर पुरुषो से सभोग कराना। वेश्यावेश्म=वेश्यालय।

२ दुद्रुका। पाढा (को०)।

वेश्यागमन—सज्ञा पु० [स०] रडीबाजी (को०)।

वेश्याघटक—सज्ञा पु० [स०] वेश्या का दलाल। भँडुआ। वेश्याचार्य (को०)।

वेश्याचार्य—सज्ञा पु० [स०] वह जो वेश्याओ के साथ रहता और उन्हे परपुरुषो से मिलाता हो। रडियो का दलाल। भडुआ।

वेश्याजन—सज्ञा पु० [स०] वेश्याओ का समूह (को०)।

वेश्याजन समाश्रय—सज्ञा पु० [स०] वेश्याभवन। रडियो का घर (को०)।

वेश्यापण—सज्ञा पु० [स०] रडी को भोग के निमित्त दिया जानेवाला धन (को०)।

वेश्यापति—सज्ञा पुं० [स०] रडी का पति। जार (को०)।

वेश्यापुत्र—सज्ञा पु० [स०] रडी का बेटा। दोगला (को०)।

वेश्यायत्त—वि० [स०] वेश्या की कमाई खानेवाला (को०)।

वेश्यालय—सज्ञा पु० [स०] वेश्याश्रम।

वेश्यावास—सज्ञा पु० [स०] शृगारहाट। वेश्याओ का निवास (को०)।

वेश्यावृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वेश्या की रोजी। रडी की आजीविका। कसब कमाना (को०)।

वेश्यावेश्म—सज्ञा पु० [स० वेश्यावेश्मन्] रंडी का घर। वेश्यालय (को०)।

वेश्याश्रय—सज्ञा पु० [स०] वेश्यालय (को०)।

वेश्वर—सज्ञा पु० [स०] गदहा। खच्चर।

वेष—सज्ञा पु० [स०] १. दे० 'वेश'। २ रगमच मे पीछे का वह स्थान जहाँ नट लोग वेशरचना करते हैं। नेपथ्य। ३ वेश्या का घर। रडी का मकान। ४. कर्म। ५ कार्यपरिचालन। काम चलाना।

वेषकार—सज्ञा पु० [स०] किसी चीज को लपेटने का कपडा। वेष्टन। बेठन।

वेषण—सज्ञा पु० [स०] १. कासमर्द नाम का क्षुप। कसौंदी। २. परिचर्या। सेवा।

वेषणा—सज्ञा स्त्री० [स०] धनियाँ।

वेषदान—सज्ञा पुं० [स०] सूर्यमुखी का फूल (को०)।

वेषधर—वि० [सं०] दूसरे का रूप या वेश धरनेवाला (को०)।

वेषधारी—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वेशधारी'।

वेषवार—सज्ञा पु० [स०] नमक, मिर्च, धनियाँ आदि मसाले।

वेषश्री—वि० [स०] १ (वेदमत्र) जिसमे सुदर और ललित वाक्य हो। २ मनोहर रूप मे अलकृत (को०)।

वेषिका—सज्ञा स्त्री० [स०] चमेली।

वेषी—सज्ञा पु० [स० वेषिन्] वेशधारी। दे० 'वेशी'।

वेष्क—सज्ञा पु० [स०] बलिपशुओ का गला बाँधने की फँसरी या रस्सी (को०)।

वेष्ट—सज्ञा पुं० [सं०] १. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। २. गोद। ३. धूप का पेड। धूपसरल। ४. श्रीवेष्ट। गधाबिरोजा। ५ सुश्रुत के अनुसार मुँह मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ६ शिरोवेष्टन। दे० 'वेष्टन'। ७ बाडा। बाड (को०)। ८. बधन। फँसरी (को०)। ९ दाँत का खोडर या गड्ढा (को०)। १०. आकाश (को०)।

वेष्टक[1]—सज्ञा पु० [स०] १. गंधाबिरोजा। श्रीवेष्ट। २. गोद। ३. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। ४. सफेद कुम्हडा। पेठा। ५. कुम्हडा। ६. छाल। वल्कल। ७. उष्णीष। पगडी। ८. प्राचीर। परकोटा। चहारदीवारी। ८ व्याकरण मे पूर्वापर मे लगनेवाला शब्द। जैसे, अथ, इति (को०)।

वेष्टक[2]—वि० चारो ओर से ढकने या आवृत करनेवाला। वेष्टन करनेवाला।

वेष्टकापथ—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन शिवस्थान का नाम।

वेष्टन—सज्ञा पु० [स०] १. वह कपडा आदि जिससे कोई चीज लपेटी जाय। वेठन। २. घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव। ३. मुकुट। ४. उष्णीष। पगडी। ५ गुग्गुल। गूगल। ६. कान का छेद। ७. मेखला। काची। कटिबध (को०)। ८. घाव आदि बाँधने की पट्टी (को०)। ९. नृत्य की एक विशेष मुद्रा (को०)। १० ग्रहण करना। अधिकार मे रखना (को०)। ११ विस्तृत। विस्तार (को०)। १२ एक प्रकार का अस्त्र। १३. एक नृत्यमुद्रा (को०)। १४ यज्ञ-यूप को वेष्टित करनेवाला बधन (को०)। १५. चहारदीवारी। घेरा (को०)।

वेष्टनक—सज्ञा पु० [स०] स्त्रीप्रसग करने का एक प्रकार। एक तरह का रतिबध।

वेष्टनवेष्टक—पज्ञा पु० [स०] एक प्रकार रतिबध।

वेष्टनीय—वि० [स०] घेरने लायक। लपेटने योग्य (को०)।

वेष्टवंश—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का बाँस जिसे वेठर बाँस कहते है। रध्रवश।

वेष्टव्य—वि० [स०] वेष्टन करने योग्य। वेठन आदि से लपेटने लायक।

वेष्टसार—सज्ञा पु० [स०] १ श्रीवेष्ट। गधाबिरोजा। २. धूप का पेड़। सरल काष्ठ। धूपसरल।

वेष्टा—सज्ञा स्त्री० [सं०] हर्रे। हरीतकी।

वेष्टित[1]—वि० [स०] १. नदी या परकोटे आदि से चारो ओर से घिरा हुआ। २. कपडे आदि से लपेटा हुआ। ३ रुका हुआ। रुद्ध।

वेष्टित[2]—सज्ञा पु० [स०] १. नृत्य की एक मुद्रा। २ घेरना। लपेटना। ३ एक रतिबध। ४ पहाडी (को०)।

वेष्टय—वि० [स०] दे० 'वेष्टनीय' (को०)।

वेष्प—सज्ञा पु० [स०] पानी। जल (को०)।

वेष्य[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ परिश्रम। २ पगडी। ३. पानी। ४. कर्म। कार्य। ५. पट्टी (को०)।

वेष्य[2]—वि० नट या अभिनेता जो वेश बदलनवाला हो (को०)।

वेसन—सज्ञा पु० [स०] मटर, चना आदि की दाल पीसकर तैयार किया हुआ आटा। बेसन।

वेसर—सज्ञा पु० [स०] १. गदहा। २. खच्चर। अश्वतर (को०)।

वेसवा(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—साध सत के उपाध रहत वेसवा के हाथ, बडे कुटिल हैं कुनाथ चलैं पथ ना निहार के।—सत तुरसी०, पृ० ३३६।

वेसवार—सज्ञा पुं० [स०] १. पीसा हुआ जीरा, मिर्च लौंग आदि मसाला। २. एक प्रकार का पकाया हुआ मास।

विशेष—पहले हड्डियाँ आदि अलग करके खाली मास पीस लेते है और तब गुड, घी, पीपल, मिर्च आदि मिलाकर उसे पकाते है। यही पका हुआ मास वेसवार कहलाता है।

वेसा(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—ज गुणमंता अलहना गौरव लहइ भुअग। वेसा मादर घुअ वसइ धुत्ताह रुअ अनग।—कीर्ति० पृ० ३४।

वेसास‡—सज्ञा पु० [स० विश्वास] दे० 'विश्वास'। उ०—मइ धणी थार मिल्हीय आस, मइला राजा थारउ कासउ हो वसास।—बी० रासो, पृ० ३७।

वेस्ट—सज्ञा पु० [अ०] पश्चिम दिशा।

वेस्टकोट—सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार की अँगरेजी कुरती या फतुही जिसमे बाहे नही होती और कमीज के ऊपर तथा कोट के नीचे पहनी जाती है।

वेस्म(पु)—सज्ञा पुं० [स० वेश्न] दे० 'वेश्म'।—नद० ग्र०, पृ० १०८।

वेस्या†—सज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—जा वह वेस्या के घर रहत है।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० ३२९।

वेस्वा†—सज्ञा स्त्री० [स० वेश्या] दे० 'वेश्या'। उ०—वेस्वा तजा सिगार सिद्ध का गइ सिद्धाई। रागी भूला राग जनमि सुत दई विहाई।—पलटू०, पृ० १०४।

वेहा†—संज्ञा पुं० [स० वेधस्, प्रा० वेह] विधाता। ब्रह्मा। उ०—(क) जारा रजपूता गया, वारत दाधी वह।—बाँकी० ग्र०, भाग १, पृ० ४। (ख) सादूलो साचा गुणा वेह कियौ वनराय।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० १५।

वेहत्—सज्ञा स्त्री० [स०] १. बाँझ गाय। वध्या गौ। २. वह गाय जिसका गर्भ असमय मे गिर गया हो (को०)।

वहनडी†—सज्ञा स्त्री० [हिं० वहिन+डी (प्रत्य०)] दे० 'वहन'। उ०—रहि रहि वेहनडी। वच न तू रोई।—वी० रासो, पृ० ६४।

वेहना—सज्ञा पु० [? वयन(=बुनना)] दे० 'वेहना'।—मैं अति नीच जाति कर वेहना, का कहुँ बूझि न मोना।—पट०, पृ० २०७।

वेहल(ु)†—सज्ञा पु० [देश०] चारण। उ०—वेगी वेहल वरणारा, दाठा जिण जिण देस।—वाकी० ग्र०, भा० १, पृ० ८४।

वेहला‡—सज्ञा स्त्री० [स० वेला, प्रा०, गुज० और प०राज० वेहला] वखत। समय। उ०—सभार्यो आवे रे वाहला, वेहना एहो जोई ठलँ। साथी जी साथे थई ने, पेली तीरे तरूँ।—दादू०, पृ० ५२२।

वेहानस—सज्ञा पुं० [स०] आत्महनन। जैन मतानुसार एक प्रकार की आत्महत्या [को०]।

वेहार—सज्ञा पु० [स०] विहार प्रदेश का एक नाम [को०]।

वेकि—सज्ञा पु० [स० वङ्कि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वेत‡—सज्ञा पु० [हिं० ब्योत, वेवत] दे० 'ब्यात'। उ०—वेत करं नह और विचारँ। मार सुना मिरजा नू मारूँ।—रा० रू०, पृ० २७८।

वेद—सज्ञा पु० [स० वैन्द] एक जाति का नाम। निषाद [को०]।

वेदव—सज्ञा पु० [स० वैन्दव] विदु का पुत्र [को०]।

वेदवि—सज्ञा स्त्री० [स० वैन्दवि] प्राचीन काल की एक जाति का नाम। इस जाति के लोग बहुत युद्धप्रिय होते थे।

वेध्य—वि० [स० वैन्ध्य] १. विध्य प्रात का। २ विध्य पवत का।

वैशतिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैशतिका] जिसका मूल्य बीस हो। जो बीस म क्रय किया जाय। बीस मे क्रीत [को०]।

वै(ु)[१]—अव्य० [स०] निश्चयसूचक शब्द या चिह्न। उ०—अदडमान दीन, गव दडमान भेद वै।—केशव (शब्द०)।

वै[२]—सर्व० [हिं० वह] वह हा। उसने। उ०—वै सब कीन्ह जहाँ लगि काई।—जायसी ग्र०, पृ० ३।

वै(ु)[३]—सज्ञा पु० [स० पति, प्रा० वइ] स्वामी। अधिपति। पति

वेकक—सज्ञा पु० [स० वैकटक] एक पहाड [को०]।

वेककत[१]—सज्ञा पु० [स० वैकङ्कत] दे० 'ककत'।

वेककत—वि० जो ककत का लकडी आदि से बना हो। ककत का।

वेकक्ष—सज्ञा पुं० [स०] १ वह हार या माला जो एक ओर कधे पर और दूसरी ओर हाथ के नीचे रहे। जनेऊ की तरह पहना जानवाला हार या माला। २ इस प्रकार माला पहनने का ढंग। ३ उत्तरीय। दुपट्टा [को०]।

वेकक्षक—सज्ञा पु० [स०] वह हार जो जनेऊ की तरह पहना गया हो। दे० 'वकक्ष' [को०]।

वेकक्षिक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैकक्षक' [को०]।

वेकाक्षकी—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैकक्षक' [सं०]।

वेकाटक[१]—सज्ञा पु० [स०] रत्नपरीक्षक। जौहरी।

वेकटिक[१]—वि० विकट सबधी। विकट का।

वैकट्य—सज्ञा पु० [स०] विकट होने का भाव या धर्म। विकटता। भीषणता। विशालता।

वैकतिक—सज्ञा पु० [स०] वह जो रत्नों की परीक्षा करता हो। रत्नपरीक्षक। जौहरी।

वैकथिक—सज्ञा पुं० [स०] वह जो अपने सबध में बहुत बढाकर बातें कहा करता हो। शेखीबाज। लाटनेसाना।

वैकरज—सज्ञा पु० [स० वैकरञ्ज] नकुर जाति का एक प्रकार का साँप। ऐसा साप जो फनवाले और बिना फनवाले साँपों के योग से उत्पन्न हुआ हो।

वेकर्ण—सज्ञा पु० [सं०] १ वात्स्य मुनि का एक नाम। २ एक प्राचीन जनपद का नाम जिसका उल्लेख वेदों मे है।

वेकर्णायन—सज्ञा पु० [स०] वह जो वैकर्ण या वात्स्य मुनि के वश मे उत्पन्न हुआ हो।

वेकर्त—सज्ञा पु० [स०] १ बलिपशु के शरीर का भागविशेष। २ २ बलिपशु का वध करनेवाला। ३. यज्ञ मे अध्वर्यु का सहायक। उ०—अध्वर्यु के तीन छोटे सहायक और होते थे—थमिता, वैकर्त और जमाताध्वर्यु।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ११८।

वेकर्तन[१]—सज्ञा पु० [स०] १ सूत के एक पुत्र का नाम। २ कर्ण का एक नाम। ३. सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम। ४ वह जो सूर्यवशी हो।

वेकर्तन[२]—वि० सूर्य सबधी। सूर्य का।

वैकर्तनकुल—सज्ञा पुं० [स०] सूर्य का वश या कुल [को०]।

वैकर्म—सज्ञा पु० [स०] १ विकर्म या अपकर्म का भाव। दुष्कृत्य।

वैकल्प—सज्ञा पु० [स०] विकल्प का भाव। सशय। सदिग्धता। अनिश्चय। असमजस।

वैकल्पिक—वि० [स०] १ जो किसी एक पक्ष मे हो। एकागी। २. जिसमे किसी प्रकार का सदेह हो। सदिग्ध। अनिश्चित। अनर्णीत। ३ जो अपने इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके। जो चुना जा सके। ऐच्छिक। ४. जिसका विकल्प हो।

वैकल्य[१]—सज्ञा पु० [स०] १ विकल होने का भाव। विकलता। घबराहट। २. कातरता। ३. टेढापन। ४ अगहीन होने का भाव। ५ न्यूनता। कमी। ६. अभाव। न होना। ७ अक्षमता। शक्तिहीनता (को०)। ८ उत्तेजना (को०)।

वैकल्य[२]—वि० अधूरा। अपूर्ण।

वेकायन—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैकारिक[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैकारिकी] १. जिसमे किसी प्रकार का विकार हुआ हो। बिगडा हुआ। विकृत। २ विकार सबधी (को०)। ३ परिवर्तनशील (को०)। ४. सात्विक (को०)।

वेकारिक—सज्ञा पु० विकार। बिगाड।

वेकारिककाल—सज्ञा पु० [स०] गर्भस्थ भ्रूण के बनने मे या पूरा होने मे लगनेवाला काल [को०]।

वैकारिक बंध—संज्ञा पुं० [सं० वैकारिक बन्ध] सांख्य दर्शन के अनुसार तीन प्रकार के बंधनों में से एक [को०]।

वैकार्य'—संज्ञा पुं० [सं०] १. विकार का भाव या धर्म। विकार। २ परिवर्तनशीलता।

वैकार्य'—वि० जिसमें विकार हो सकता या होता हो। विकार के योग्य।

वैकाल—संज्ञा पु० [सं०; तुल० वर्ग० विकाल] अपराह्न काल। दोपहर के बाद का काल [को०]।

वैकालिक—वि० [सं०] १. जो अपने उपयुक्त समय पर न होकर असमय में उत्पन्न हो। २ अपराह्न संबंधी या अपराह्न काल में घटित होनेवाला।

वैकालीन—वि० [सं०] दे० 'वैकालिक' [को०]।

वैकिंकट—संज्ञा पु० [सं० वैकिङ्कट] मौत। काल। मृत्यु। विकिंकर [को०]।

वैकिर—वि० [सं०] क्षरित। चूया हुआ। छना हुआ [को०]।

वैकिरवारि—संज्ञा पु० [सं०] चुआकर या टपकाकर छाना हुआ जल आदि [को०]।

वैकुंठ'—संज्ञा पु० [सं० वैकुण्ठ] १ विष्णु का एक नाम। २. पुराणानुसार विष्णु का धाम या स्थान। वह स्थान जहाँ भगवान् या विष्णु रहते हैं।

विशेष—पुराणानुसार यह धाम सत्यलोक से भी ऊपर है। यह धाम सबसे श्रेष्ठ माना गया है और कहा गया है कि जिन्हें विष्णु मोक्ष देते हैं, वे इसी धाम में निवास करते हैं। यहाँ रहनेवाले न तो बुड्ढे होते हैं और न मरते हैं।

३. वैकुंठ में रहनेवाले देवता। ४ स्वर्ग (डिं०)। ५ इंद्र। ६ सफेद पत्तोंवाली तुलसी। ७ अभ्रक। सितार्जक (को०)। ८ ब्रह्मा के महीने का चौबीसवाँ दिन (को०)। ९ संगीत में एक प्रकार का ताल (को०)।

वैकुंठगति—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठगति] वैकुंठ लोक की प्राप्ति [को०]।

वैकुंठ चतुर्दशी—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठ चतुर्दशी] कार्तिक शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी [को०]।

वैकुंठत्व—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठत्व] वैकुंठ का भाव या धर्म।

वैकुंठपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं० वैकुण्ठपुरी] विष्णु नगरी [को०]।

वैकुंठभुवन—संज्ञा पु० [सं० वैकुण्ठभुवन] विष्णुलोक [को०]।

वैकुंठलोक—संज्ञा पुं० [सं० वैकुण्ठलोक] विष्णुलोक [को०]।

वैकुंठीय—वि० [सं० वैकुण्ठीय] वैकुंठ संबंधी। वैकुंठ का।

वैकृत'—संज्ञा पुं० [सं०] १ विकार। खराबी। २ वीभत्स रस। ३ वीभत्स रस का आलंबन। जैसे,—खून, गोश्त, हड्डी आदि। ४ विरूपता। विकृति (को०)। ५ अपशकुन या अनिष्टसूचक घटना (को०)। ६ कपट (को०)। ७. उद्वेग (को०)। ८. अहंकार (को०)। ९ द्वेष। शत्रुता (को०)।

वैकृत'—वि० [वि० स्त्री० वैकृती] १ जो विकार से उत्पन्न हुआ हो। २. जो सहज में ठीक न हो सके। दुःसाध्य। ३. निकृष्ट। विकारग्रस्त (को०)। ४ सात्विक (को०)। ५ अप्राकृतिक (को०)।

वैकृतज्वर—संज्ञा पुं० [सं०] वह ज्वर जो ऋतु के अनुसार स्वाभाविक न हो, बल्कि किसी और ऋतु के अनुकूल हो। उ०—इसके (बीताद क्रम के) विपरीत जो ज्वर हो उसको वैकृत ज्वर कहते हैं'—माधव०, पृ० ३६।

विशेष—साधारणतः वर्षा ऋतु में वायु, शरद ऋतु में पित्त और वसंत ऋतु में कफ कुपित होता है। यदि वर्षा ऋतु में वायु के प्रकोप से ज्वर हो, तो वह वैकृत ज्वर कहा जायगा।

वैकृतविवर्त—संज्ञा पु० [सं०] कष्ट। पीड़ा। दुर्दशा [को०]।

वैकृतिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैकृतिकी] १ नैमित्तिक। २. परिवर्तित (को०)। ३ विकृति संबंधी (को०)।

वैकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीभत्स रस। २ परिवर्तन। विकार। ३ अपकर्षण। अपकर्ष (को०)।

वैक्रम—वि० [सं०] विक्रम संबंधी। पराक्रम संबंधी [को०]।

वैक्रमीय—वि० [सं०] विक्रम का। विक्रम संबंधी। जैसे,—वैक्रमीय संवत्।

वैक्रांत—संज्ञा पु० [सं० वैक्रान्त] एक प्रकार की मणि जिसे चुन्नी कहते हैं।

वैक्रिय—वि० [सं०] १ जो बिकने को हो। बेचा जाने योग्य। बिक्री का। २ विकारजन्य। विकारी। परिवर्तनशील।

वैक्लव—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्याकुलता। घबराहट। अस्तव्यस्तता। २ शोक। ३ व्यथा [को०]।

वैक्लव्य—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'वैक्लव' [को०]।

वैखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कंठ से उत्पन्न होनेवाले स्वर का एक विशिष्ट प्रकार। उच्च तथा गंभीर और बहुत स्पष्ट स्वर। वह वाणी या वाक् जिसमें स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ स्पष्ट सुनाई देती हैं। व्याकरण दर्शन के अनुसार वाग् के चार भेदों (परा, पश्यंती, मध्यमा और वैखरी) में स्थूलतम श्रवणीय भेद। २ वक्तृत्वशक्ति। वाक्शक्ति। ३ वाग्देवी।

वैखान—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु [को०]।

वैखानस'—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। २ प्राचीन काल के एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी जो प्रायः वन में रहा करते थे। ३ प्रजापति के नख एवं रोम से उत्पन्न एक ऋषि जिन्होंने वैखानस नामक धर्मसूत्र की रचना की थी। उ०—वैखानस धर्मसूत्र एवं हिरण्यकेशिन् के धर्मसूत्र लगभग तीसरी ईस्वी सदी के हैं।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १४६। ४ वैष्णव संप्रदाय की एक शाखा (को०)।

वैखानस'—वि० वानप्रस्थ आश्रम संबंधी [को०]।

वैखानसि—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैखानसीय—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

वैखानसीयोपनिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद्। दे० वैखानसीय स्त्री०।

वैखारक[1]—सज्ञा पु० [स०] चरपरा और नमकीन स्वाद को०]।

वैखारक[2]—वि० चरपरा और नमकीन [को०]।

वैगधिक—सज्ञा पु० [स० वैगन्धिक] गधक।

वैगधिका सज्ञा स्त्री० [स० वैगन्धिका] एक क्षुप का नाम [को०]।

वैगनेट—सज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की हलकी वग्गी या घोडागाडी जिसमे पीछे की ओर दाहिने बाएँ बैठने की लबी जगह होती है।

वैगलेय—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार भूतो का एक गण।

वैगुण्य—सज्ञा पु० [सं०] १ गुणहीन होने का भाव। विगुणता। २ अपराध। दोष। उ०—धन्य, भरत बोले गद्गद हो, दूर विकृति वैगुण्य हुआ। उस तपस्विनी मेरी माँ का आज पाप भी पुण्य हुआ।—साकेत पृ० ३८०। ३ नीचता। वाहियातपन। ४ गुणो की भिन्नता (को०)। ५ अकुशलता (को०)।

वैगुन(पु)—सज्ञा पु० [स० वैगुण्य] दे० 'वैगुण्य'। उ०—जौ जिय लोभ तौ गुनी न कहिए। गुन सकर वैगुन वै रहिए।—माधवानल०, पृ० २१६।

वैग्रहिक—सज्ञा पु० [स०] विग्रह या शरीर सबधी। शरीर का।

वैघटिक—सज्ञा पु० [स०] रत्नपारखी। जौहरी [को०]।

वैघसिक—वि० [स०] विघस अर्थात् जूठा खानेवाला [को०]।

वैघात्य—सज्ञा पु० [स०] वह जो घात करने के योग्य हो। मार डालने लायक।

वैचक्षण्य—सज्ञा पुं० [स०] विचक्षण या निपुण होने का भाव। निपुणता। होशियारी।

वैचित्य—सज्ञा पु० [स०] चित्त की भ्राति। भ्रम। अन्यमनस्कता। दु ख। कष्ट।

वैचित्र—सज्ञा पु० [स०] विचित्रता। विलक्षणता। दे० 'वैचित्र्य'।

वैचित्रवीर्य—सज्ञा पुं० [स०] विचित्रवीर्य की सतान—१ धृतराष्ट्र। २ पाडु। ३ विदुर।

वैचित्रवीर्यक—वि० [स०] विचित्रवीर्य का। विचित्रवीर्य सबधी [को०]।

वैचित्र्य—सज्ञा पु० [स०] १ विचित्र होने का भाव। विचित्रता। विलक्षणता। २ विभिन्नता। भेद। फर्क। ३ सुदरता। खूबसूरती। ४ शोक। दु ख। गम (को०)। ५ नैराश्य (को०)। ६ आश्चर्य (को०)।

वैचित्र्यवीर्य—सज्ञा पु० [स०] विचित्रवीर्य की सतान, धृतराष्ट्र, पाडु और विदुर आदि।

वैच्युत—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैच्युति—सज्ञा स्त्री० [स०] विच्युत होने का कार्य या भाव। विच्युति। पतन। गिरना।

वैजनन—सज्ञा पुं० [स०] वह मास जिसमे किसी स्त्री को सतान उत्पन्न हो। प्रसवमास।

वैजन्य—सज्ञा पु० [सं०] विजन होने का भाव। विजनता। एकात।

वैजयत—सज्ञा पुं० [स० वैजयन्त] १ इद्र की पुरी का नाम। २ इद्र। ३ घर। ४ अग्निमथ नामक वृक्ष। अरणी। ५ जैनो के अनुसार एक लोक जो सातो स्वर्गों से भी ऊपर है। ६ स्कद (को०)। ७ पर्वतविशेष (को०)। ८ इद्र की पताका (को०)। ९ पताका। झडा (को०)। १० भारत द्वारा निर्मित युद्ध मे आक्रामक प्रकार विशेष के एक टैंक का नाम।

वैजयतिक—सज्ञा पु० [स० वैजयन्तिक] वह जो पताका या झडा उठाता हो। झडा उठानेवाला।

वैजयतिका—सज्ञा स्त्री० [स० वैजयन्तिका] दे० 'वैजयती'।

वैजयती—सज्ञा स्त्री० [स० वैजयन्ती] १ पताका। झडा। २ जयती नामक वृक्ष। ३ एक प्रकार की माला जो पाँच रगो की और घुटनो तक लटकती हुई होती थी। कहते हैं, यह माला श्रीकृष्ण जी पहना करते थे। ४ चिह्न। लक्षण (को०)। ५ विजयमाल (को०)। ६ अग्निमथ वृक्ष (को०)। ७ एक कोश का नाम (को०)। ८ हार। माला (को०)।

वैजयिक—वि० [सं०] विजय सबधी। विजय का। २ विजय देनेवाला। जिससे जय प्राप्त हो (को०)। ३ विजय का आभास या सूचना देनेवाला (को०)।

वैजयी—सज्ञा पुं० [स० वैजयिन्] दे० 'विजयी'।

वैजवन—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि जो एक वैदिक शाखा के प्रवर्तक थे। पैजवन। वैजन।

वैजात्य—सज्ञा पु० [सं०] १ विजातीय होने का भाव। जातिबहिष्कृति। २ विलक्षणता। अद्भुतता। ३ बदचलनी। लपटता। ४ वर्ग या जातिगत भिन्नता। वर्णभेद। प्रकारभेद।

वैजिक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ आत्मा। २ हेतु। कारण।

वैजिक[2]—वि० १ बीजसबधी। बीज का। २ वीर्यसबधी। वीर्य का।

वैज्ञानिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। विज्ञान जाननेवाला। २ निपुण। दक्ष। होशियार।

वैज्ञानिक[2] वि० विज्ञान सबधी। विज्ञान का। जैसे,—वैज्ञानिक खोज।

वैडाल—वि० [सं०] विडाल का। विडाल सबधी [को०]।

वैडालव्रत—सज्ञा पुं० [स०] पाप और कुकर्मरत होते हुए भी ऊपर से साधु बने रहना।

वैडालव्रती—सज्ञा पुं० [स० वैडालव्रतिन्] वह तपस्वी या साधु जो वास्तव मे पापी और कुकर्मी हो। दुष्ट और नीच धर्मध्वजी।

वैडूर्य—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैदूर्य'।

वैडूर्यकाति—वि० [सं० वैडूर्यकान्ति] वैडूर्य की तरह दीप्त। वैडूर्य के समान कातिवाला [को०]।

वैडूर्यप्रभ—सज्ञा पुं० [स०] एक नाग का नाम [को०]।

वैडूर्यमणि—सज्ञा स्त्री० [स०] वैदूर्य नामक रत्नविशेष [को०]।

वैडूर्यशिखर—सज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम [को०]।

वैणु[1]—वि० [स०] वेणु संबधी। बाँस का।

वेण[२]—सज्ञा पुं० बाँस का कार्य करनेवाला। बँसोर या धरिकार [को०]।

वेण[३] (पु)—सज्ञा पु० [स० वचन, प्रा० वयण अप० एव राज० वेण] दे० 'वचन'। उ०—ढोला, खील्यौरी कहइ, सुणे कुढंगा वेण। —ढोला०, दू० ४३८।

वैणव[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ बाँस का फल। बाँस का चावल। २. बाँस का वह डडा जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। ३ वशी। वेणु। ४. बँसोरा। बाँस का काम करनेवाला (को०)। ५ वेणु नदी से प्राप्त सोना (को०)। ६ माहिष्य से उत्पन्न ब्राह्मणी का पुत्र। ७ पुराणानुसार कुशद्वीप का एक वर्ष (को०)।

वैणव—वि० १ वेणु सबधी। बाँस का। २. बाँस से बना हुआ (को०)। ३ बाँसुरी सबंधी (को०)।

वैणविक—सज्ञा पु० [स०] वह जो वेणु बजाता हो। वशी बजानेवाला। वशीवादक।

वैणवी[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] वशलोचन।

वैणवी[२]—सज्ञा पु० [स० वैणविन्] १ वह जो वेणु बजाता हो। २ शिव का एक नाम।

वैणावत—सज्ञा पु० [स०] धनुष [को०]।

वैणिक—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो वीणा बजाता हो। वीनवादक। वीनकार। २. विष्ठा सी गध। (को०)।

वैणुक—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो वेणु बजाने मे चतुर हो। वशी बजानेवाला। २ हाथी का अकुस।

वैणुकीय—वि० [स०] १ वेणु सबधी। वेणु का। २ वैणुक सबधी।

वैणेय—सज्ञा पु० [स०] वेद की एक शाखा का नाम।

वैण्य—सज्ञा पुं० [स०] राजा वेणु के पुत्र पृथु का एक नाम।

वैतडिक—सज्ञा पु० [स० वैतण्डिक] १ वह जो बहुत अधिक वितडा करता हो। तार्किक। तर्कप्रिय। हरेक बात मे तर्क उपस्थित करनेवाला। २ व्यर्थ का झगडा या बहस करनेवाला।

वैतडी—सज्ञा पुं० [स० वैतण्डिन्] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैतसिक—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो मास बेचता हो। मासिक। बूचड। कसाई। २ पक्षियो को फँसानेवाला। व्याध। बहेलिया (को०)। ३ व्याध का पेशा। पक्षियो को फँसाने का कार्य (को०)।

वैतत्य—सज्ञा पु० [सं०] वितततता। फैलाव। विस्तार [को०]।

वैतथ्य—सज्ञा पु० [स०] १ विफल होने का भाव। विफलता। २ वितथ होने का भाव। असत्यता।

वैतनिक—सज्ञा पु० [स०] वह जो वेतन लेकर काम करता हो। तनखाह लेकर काम करनेवाला। कर्मचारी। नौकर। भृत्य। मजदूर।

वैतरण[१]—वि० [सं०] १. नदी को पार करने का अभिलाषी। २ वैतरणी पार कराने का साधन [को०]।

वैतरण[२] सज्ञा पुं० [स०] वितरण करने का भाव या क्रिया। उ०—सविधि हो वैतरण, सुकृत कारण करण। —अर्चना, पृ० २६।

वैतरणि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'वैतरणी'।

वैतरणी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यम के द्वार पर मानी जाती है।

विशेष—कहते हैं, यह नदी बहुत तेज बहती है, इसका जल बहुत ही गरम और बदबूदार है और उसमे हड्डियाँ, लहू तथा बाल आदि भरे हुए हैं। यह भी माना जाता है कि प्राणी को मरने पर पहले यह नदी पार करनी पडती है, जिसमे उसे बहुत कष्ट होता है। परतु यदि उसने अपनी जीवितावस्था मे गोदान किया हो, तो वह उसी गौ की सहायता से सहज मे इस नदी के पार उतर जाता है। पुराणो मे लिखा है कि जब सती के वियोग मे महादेव जी रोने लगे, तब उनके आँसुओ का प्रवाह देखकर देवता लोग बहुत डरे और उन्होने शनि से प्रार्थना की कि तुम इस प्रवाह को ग्रहण करके सोख लो। शनि ने उस धारा को ग्रहण करना चाहा, पर उसे सफलता नही हुई। अत मे उसी धारा से यह वैतरणी नदी बनी। इसका विस्तार दो योजन माना गया है। पापियो को यह नदी पार करने मे बहुत कष्ट होता है।

२ उडीसा की एक नदी का नाम जो बहुत पवित्र मानी जाती है।

वैतस[१]—सज्ञा पु० [स०] १. पुरुष की मूत्रेंद्रिय। लिंग। २ अम्लवेंत। ३. बेंत की बनी वस्तु। ४ बेंत की टोकरी (को०)।

वैतस[२]—वि० १. बेंत सबधी। बेंत जैसा [को०]।

वैतसीवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] बेंत की तरह झुक जाने की आदत। नम्रता की प्रवृत्ति [को०]।

वैतसेन—सज्ञा पु० [स०] राजा पुरूरवा का एक नाम जो वीतसेन के पुत्र थे।

वैतस्त—वि० [स०] वितस्ता नदी से सबधित या प्राप्त [को०]।

वैतस्तिक—वि० [स०] वितस्ति परिमित (शर)। (बाण) जो एक बित्ता लबा हो [को०]।

वैतस्त्य—वि० [स०] वितस्ता नदी संबधी। वितस्ता से मिला हुआ [को०]।

वैतहव्य—सज्ञा पुं० [स०] आर्यों का एक प्रधान समूह जो वीतिहव्य के गोत्र का था। उ०—प्रधान आर्य समूहो मे थे—शिवि, मत्स्य, वैतहव्य, विदर्भ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७६।

वैताढ्य—सज्ञा पुं० [स०] एक पर्वत का नाम।

वैतान[१]—सज्ञा पुं० [स०] १ डेरा। शिविर। समूह। तबू। २. यज्ञ की एक विशेष विधि। ३. यज्ञीय हवि। यज्ञ में प्रयुक्त हवि [को०]।

वैतान[2]—वि० [वि० स्त्री० वैतानी] १ शुद्ध। पवित्र। पुनीत। २ यज्ञ-संबंधी। यज्ञ का। यज्ञीय (को०)।

वैतानिक[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ वह हवन या यज्ञ आदि जो श्रौत विधानों के अनुसार हो। २ वह अग्नि जिसमें अग्निहोत्र आदि कृत्य किए जायँ।

वैतानिक[2]—वि० दे० 'वैतान[2]' (को०)।

वैतानिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'वैतान[1]' (को०)।

वैताप्य—संज्ञा पु० [सं०] निर्वेद (को०)।

वैताल[1]—संज्ञा पु० [सं०] स्तुतिपाठक। वैतालिक।

वैताल[2]—वि० वेताल संबंधी। वेताल का।

वैतालकि—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन आचार्य का नाम जो ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक थे।

वैतालरस—संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का रस।

विशेष—यह रस गंधक, मिर्च और हरताल आदि के योग से बनता है और सन्निपातिक ज्वर तथा मूर्छा आदि में उपयोगी माना जाता है।

वैतालिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल का वह स्तुतिपाठक जो प्रातःकाल राजाओं को उनकी स्तुति करके जगाया करता था। स्तुतिपाठक। उ०—वैतालिक विहग भाभी के, सप्रति ध्यान-लग्न से हैं।—पंचवटी, पृ० ६। २ चौंसठ कलाओं में से किसी एक में प्रवीणता (को०)। ३. बाजीगर (को०)। ४ वह जो गाने में ताल का ध्यान न रखता हो। बिताल गानेवाला। ५ वेताल का उपासक। वेताल को पूजनेवाला व्यक्ति (को०)।

वैतालिकव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] स्तुतिपाठक की क्रिया या कार्य। वैतालिक का काम (को०)।

वैताली—संज्ञा पु० [सं० वैतालिन्] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

वैतालीय[1]—संज्ञा पु० [सं०] एक वर्णवृत्त जिसके पहले तथा तीसरे चरणों में चौदह और दूसरे तथा चौथे चरणों में सोलह मात्राएँ होती हैं।

वैतालीय[2]—वि० वेताल संबंधी। वेताल का।

वैतुष्य—संज्ञा पुं० [सं०] तुषरहित करना। भूसी निकालना (को०)।

वैतृष्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ तृष्णा से रहित होने का भाव। तृष्णा का शमन। तृष्णाशांति। २ आकांक्षाओं, इच्छाओं से मुक्ति। निर्वेद (को०)।

वैत्तपाल्य—वि० [सं०] १ वित्तपाल संबंधी। २. कुबेरसंबंधी (को०)।

वैत्रक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० वैत्रकी] बेंत का। बेंत संबंधी (को०)।

वैत्रकीय—वि० [सं०] बेंत का। वेत्रनिर्मित। बेंत संबंधी (को०)।

वैत्रासुर—संज्ञा पुं० [सं०] एक राक्षस। दे० 'वेत्रासुर' (को०)।

वैदंभ—संज्ञा पुं० [सं० वैदम्भ] शिव का एक नाम।

वैद[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० वैदी] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम जो विदु नामक ऋषि के पुत्र थे। २ विद्वान् पुरुष (को०)।

वैद[2]—वि० विद्वान् या पंडित संबंधी।

वैद[3]—संज्ञा पुं० [सं० वैद्य, प्रा०, वैद] दे० 'वैद्य'।

वैदक—संज्ञा पुं० [सं० वैद्यक] दे० 'वैद्यक'।

वैदग्ध—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव। पांडित्य। विज्ञता। २ कार्यकुशलता। पटुता। ३ चतुरता। धूर्तता। चालाकी। ४ रसिकता। ५. शोभा। सौंदर्य। ६ हावभाव। ७ प्रत्युत्पन्नमतित्व। प्रतिभा (को०)।

वैदग्धी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ चतुरता। २ प्रवीणता। ३ सुंदरता। ४ प्रत्युत्पन्न मतित्व। ५ नम्रता। ६ विद्वत्ता (को०)।

वैदग्ध्य—संज्ञा पुं० [सं०] विदग्ध या पूर्ण पंडित होने का भाव। पांडित्य। विज्ञता। २ दे० 'वैदग्ध'।

वैदज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो। जानकार।

वैदनृत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

वैदर्भ[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ विदर्भ देश का राजा या शासक। २ दमयंती के पिता भीमसेन का एक नाम। ३ रुक्मिणी के पिता भीष्मक का एक नाम। ४ वह जो बातचीत करने में बहुत चतुर हो। ५ बातचीत करने की चतुराई। वाक्चातुरी। ६ एक रोग जिसमें मसूड़े फूल जाते हैं और उनमें पीड़ा होती है।

वैदर्भ[2]—वि० १ जो विदर्भ देश में उत्पन्न हुआ हो। २ विदर्भ देश का। ३ वाक्पटु। वार्ताकुशल (को०)।

वैदर्भक[1]—संज्ञा पु० [सं०] वह जो विदर्भ देश का निवासी हो।

वैदर्भक[2]—वि० विदर्भ देश का। विदर्भ से संबद्ध (को०)।

वैदर्भी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ काव्य की एक रीति। वह रीति या शैली जिसमें मधुर वर्णों द्वारा मधुर रचना होती है। कालिदास वैदर्भी के उत्कृष्ट कवि माने जाते हैं।

विशेष—वामन के मतानुसार जिस काव्य रीति में श्लेष, प्रसाद, समता, माधुर्य, सौकुमार्य, अर्थव्यक्ति, उदारता, ओजस, कांति और समाधि आदि दस शब्दगुण रहते हैं वह काव्य रीति वैदर्भी कही गई है। यह सबसे अच्छी समझी जाती है।

२ अगस्त्य ऋषि की स्त्री का एक नाम। ३. दमयंती। ४. रुक्मिणी। ५ विदर्भ देश की राजकुमारी (को०)। ६ विदर्भ देश की राजनगरी। कुंडिनपुर (को०)।

वैदल[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिट्टी का वह पात्र जिसमें भिक्षुगण भीख मांगते हैं। खप्पर। २ एक प्रकार की पीठी। ३ बेंत या बाँस की बनी डलिया या आसन (को०)। ४ एक विषैला कीट (को०)। ५ द्विदल अन्न। दाल (को०)।

वैदल[2]—वि० १ बेंत का अथवा बाँस का बना हुआ (को०)।

वैदांतिक—वि० [सं० वैदान्तिक] वेदांत का ज्ञाता। वेदांती (को०)।

वैदारिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

विशेष—इसमें वायु का प्रकोप कम, पित्त का मध्यम और कफ का अधिक होता है। रोगी को हड्डियों और कमर में पीड़ा होती है, उसे भ्रम, क्लांति, श्वास, खाँसी तथा हिचकी होती है, और सारा शरीर सुन्न हो जाता है। ऐसा सन्निपात जल्दी अच्छा नहीं होता।

वैदिक[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो वेदो मे बतलाए हुए कर्मकाड का अनुष्ठान करता हो। वेद मे कहे हुए कृत्यो को करनेवाला। २. वह जो वेदो आदि का अच्छा ज्ञाता हो। वेदो का पडित।

वैदिक[2]—वि० १ जो वेदो मे कहा गया हो। वेदविहित। उ०—करनवेध चूड़ाकरन, लौकिक वैदिक काज। गुरु आयस भूषनि करत, मगल साज समाज।—तुलसी ग्र०, पृ० ८२। २ वेद-सबधी। वेद का। जैसे, वैदिक काल। ३ धर्मात्मा (को०)। ४ वेदज्ञ। वेदो का ज्ञाता (को०)। ५ पूत। शुद्ध। पावन (को०)।

वैदिककर्म—सज्ञा पुं० [स० वैदिककर्मन्] वेदानुकूल कर्म। वेदविहित कर्म (को०)।

वैदिकपाश—सज्ञा पुं० [स०] वह जो वेदविद्या मे अल्पज्ञ हो। वेद का थोड़ा सा ज्ञान रखनेवाला व्यक्ति (को०)।

वैदिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] बनजामुन (को०)।

वैदिश—सज्ञा पुं० [स०] वह जो विदिशा का निवासी हो।

वैदिश्य—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन नगर का नाम जो विदिशा के पास था (को०)।

वैदुरिक—सज्ञा पु० [स०] विदुर का नीतिसिद्धात। विदुरनीति (को०)।

वैदुल—सज्ञा पुं० [स०] बेंत की जड।

वैदुष—सज्ञा पु० [सं०] विद्वान्। पडित।

वैदुषी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. विद्वत्ता। २. बुद्धिमत्ता (को०)।

वैदुष्य—सज्ञा पुं० [सं०] विद्वत्ता। पाडित्य।

वैदूर्य—सज्ञा पु० [स०] धूमिल रग का एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जिसे 'लहसुनिया' कहते हैं। दे० 'लहसुनिया'। दीर्घ खभे हैं बने वैदूर्य के, ध्वजपटो मे चिह्न कुलगुरु सूर्य के। —साकेत, पृ० १६।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार इस रत्न के अधिष्ठाता देवता केतु माने गए है और कहा गया है कि जब केतु ग्रह खराब या बिगडा हुआ हो, तो यह रत्न धारण करना चाहिए। हमारे यहाँ इसकी गणना महारत्नो मे है। सुतार, घन, अदच्छ, कलिक और व्यंग ये पाँच इसके गुण और कर्कर, कर्कश, त्रास, कलक और देह ये पाँच इसके दोष कहे गए हैं। कुछ लोगो का मत है कि यह रत्न विदूर पर्वत पर होता है, इसी से वैदूर्य कहलाता है। वैद्यक के अनुसार यह अम्ल, उष्ण, कफ तथा वायु का नाशक और गुल्म तथा शूल को शात करनेवाला है।

पर्या०—केतुरत्न। अभ्ररोह। विदूररत्न। विदूरज। खराब्जाकुर।

वैदेशिक[1]—वि० विदेश सबधी। विदेश का।

वैदेशिक[2]—वह जो अन्य देश का रहनेवाला हो। अन्य देशवासी व्यक्ति। उ०—आग्निवपुत्र, पदिकपुत्र, वेदज्ञ, वैद्य, वैदेशिक, वार्तिक, वक्ता, व्यसनी, व्यावहारिक, विद्यामत।—वर्ण०, पृ० १०।

यौ०—वैदेशिक नीति = विदेश सबधी नीति। किसी राष्ट्र की वह नीति जो अन्य राष्ट्रो अर्थात् विदेशो के साथ बरती जाती है। उ०—उसे ठीक प्रकार से समझने के लिये हमे उसकी वैदेशिक नीति को भली भाँति समझने का प्रयत्न करना चाहिए। —आ० अ० रा० पृ० १०७।

वैदेश्य[1]—वि० [स०] 'वैदेशिक'।

वैदेश्य[2]—सज्ञा पुं० विदेशी होना। अन्यदेशीय होने का भाव।

वैदेश्यसार्थ—सज्ञा पु० [स०] (कौटिल्य अर्थशास्त्र द्वारा प्रयुक्त शब्द) विदेशी माल।

वैदेह[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ राजा निमि के पुत्र का नाम।

विशेष—कहते हैं, जब राजा निमि नि सतान मर गए, तब धर्म का लोप हो जाने के भय से ऋषियो ने अरणी से मथकर इन्हे, राज्य करने के लिये, उत्पन्न किया था।

२ वणिक्। सौदागर। ३ विदेह देश का नरेश (को०)। ४. अत.-पुर का पहरुआ। रनिवास का प्रहरी (को०)। ५. प्राचीन काल की एक वर्णसकर जाति।

विशेष—इस जाति के जनो का काम अत पुर मे पहरा देना था। मनु के अनुसार इस जाति की उत्पत्ति ब्राह्मणी माता और वैश्य पिता से है।

वैदेह[2]—वि० १ विदेह देश से सबधित। विदेह देश का। २. स्निग्ध-वर्ण और सुदर आकृतिवाला (को०)।

वैदेहक—सज्ञा पुं० [स०] १ वणिक्। व्यापारी। २. वैदेह नामक एक वर्णसकर जाति। ३. विदेह देश का व्यक्ति। (को०)।

वैदेहक व्यजन—सज्ञा पु० [स० वैदेहकव्यञ्जन] कौटिल्य के अनुसार वह जासूस जो व्यापारी के छद्म वेश मे हो। व्यापारी के वेश मे गुप्तचर।

विशेष—ये गुप्तचर समाहर्ता के अधीन काम करते थे और व्यापारियो मे मिलकर उनकी कारवाइयो की सूचना दिया करते थे।

वैदेहिक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैदेह'—२ और ३।

वैदेही—सज्ञा स्त्री० [स०] १. विदेहराज जनक की कन्या, सीता। २. वैदेह जाति की स्त्री। ३. रोचना। ४. पीपल। पिप्पली। ५. हरिद्रा। हल्दी (को०)। ६ गाय (को०)। ७. वणिक् जाति की स्त्री (को०)।

वैद्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १. पडित। विद्वान्। २ वह जो आयुर्वेद का ज्ञाता हो और उसके अनुसार रोगियो की चिकित्सा आदि करता हो। भिषक्। चिकित्सक। ३. वामक वृक्ष। अडूसा। ४. एक जाति जो प्राय बगाल मे पाई जाती है। इस जाति के लोग अपने आपको 'अबष्ठसतान' कहते है। दे० 'अबष्ठ-२'। ५. एक जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्र पिता और वैश्य माता से कही गई है (को०)। ६. एक नाग (को०)।

वैद्य[2]—वि० [वि० स्त्री० वैद्यी] १ वेद सबधी। वेद का। २. आयुर्वेद सबधी (को०)।

वैद्यक—सज्ञा पु० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें रोगो के निदान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्साशास्त्र। आयुर्वेद। विशेष दे० 'आयुर्वेद'। २ वैद्य। चिकित्सक (को०)।

वैद्यक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] चिकित्सा कर्म। वैदगी। डाक्टरी। वैद्य का कर्म (को०)।

वैद्यनाथ—सज्ञा पुं० [स०] १ बिहार का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो सथाल परगने के अतर्गत है। वहाँ इसी नाम का शिव का एक प्रसिद्ध मदिर है। २ महादेव। शिव (को०)। ३ धन्वतरि का एक नाम (को०)। ४ एक भैरव (को०)।

वैद्यबधु—सज्ञा पु० [स० वैद्यबन्धु] १ आरग्वध नामक वृक्ष। अमलतास। २ वैद्य का भाई (को०)।

वैद्यमाता—सज्ञा स्त्री० [स० वैद्यमातृ] १ वासक वृक्ष। अडूसा। २. वैद्य की माता (को०)।

वैद्यमानी—वि० [स० वैद्यमानिन्] ज्ञाता न होते हुए भी अपने को वैद्य माननेवाला (को०)।

वैद्यराज—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो अच्छा वैद्य हो। वैद्यो मे श्रेष्ठ। २ धन्वतरि का एक नाम (को०)। ३. शार्ङ्गधर के पिता का नाम।

वैद्यराट्—सज्ञा पु० [स० वैद्यराज्] दे० 'वैद्यराज' (को०)।

वैद्यविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] आयुर्वेद। चिकित्साशास्त्र (को०)।

वैद्यशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] वैद्यविद्या। आयुर्वेद (को०)।

वैद्यसिंही—सज्ञा स्त्री० [स०] वासक वृक्ष। अडूसा।

वैद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काकोली। २ वैद्य की पत्नी (को०)। ३ वैद्य का कर्म करनेवाली स्त्री (को०)।

वैद्याधर—वि० [स०] विद्याधर नामक देवयोनि सबधी। विद्याधर का। विद्याधर सबधी (को०)।

वैद्यानि—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक ऋषिपुत्र का नाम।

वैद्यावृत्य—सज्ञा पुं० [स०] फुटकर। खुदरा। थोक का उल्टा। जैसे—वैद्यावृत्य विक्रय।

वैद्युत[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैद्युती] विद्युत् सबधी। बिजली का।

वैद्युत[2]—सज्ञा पु० १. विद्युत् का देवता। २ पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के एक वर्ष का नाम। ३ वपुष्मान् का पुत्र (को०)। ४. वज्राग्नि। बिजली की अग्नि (को०)।

वैद्युतगिरि—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

वैद्योत—वि० [स०] क्रोधाविष्ट। क्रोध से भरा हुआ (को०)।

वैद्रुम—वि० [स०] विद्रुम सबधी। मूँगे का।

वैध[1]—वि० [स०] १ जो विधि के अनुसार हो। कायदे कानून के मुताबिक। कानून या विधिसमत। जैसे—वैध आदोलन, वैध अधिकार। २ उचित। जायज। ठीक।

वैधर्मिक—वि० [स०] धर्मविरुद्ध। विधर्म या विधर्मियो का। विधर्म सबधी (को०)।

वैधर्म्य—सज्ञा पु० [स०] १. विधर्मी होने का भाव। २. वह जो अपने धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य धर्मों के सिद्धातो का भी अच्छा ज्ञाता हो। ३ नास्तिकता। ४ असमानता। भिन्नता (को०)। ५ गुण, धर्म या कर्तव्य की भिन्नता (को०)। ६ वैपरीत्य। विपरीतता (को०)। ७ अवैधता (को०)।

वैधव[1]—सज्ञा पु० [स०] विधु अर्थात् चद्रमा के पुत्र, बुध।

वैधव[2]—वि० विधु सबधी। चद्रमा सबधी (को०)।

वैधवेय—सज्ञा पु० [स०] वह जो विधवा के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। विधवा का पुत्र।

वैधव्य—सज्ञा पुं० [स०] विधवा होने का भाव। रँडापा।

यौ०—वैधव्यलक्षण = विधवा होने का लक्षण या ग्रहयोग। वैधव्यलक्षणोपेता = वह कन्या जिसमे विधवा हो जाने के लक्षण हो। ज्योतिष के अनुसार ऐसी कन्या विवाह के अयोग्य समझी जाती है। वैधव्यवर्णी = विधवा वा सौभाग्यहीना स्त्री की वर्णी।

वैधस[1]—सज्ञा पु० [स०] राजा हरिश्चद्र का एक नाम जो इक्ष्वाकुवशी राजा वेधस के पुत्र थे।

वैधस[2]—वि० १ वेधा या ब्रह्मा द्वारा निर्मित। २ भाग्य या विधि द्वारा परिचालित (को०)।

वैधातकि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैधात्र'।

वैधात्र—सज्ञा पु० [स०] सनत्कुमार, जो विधाता के पुत्र माने जाते हैं।

वैधात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्राह्मी नाम की जडी।

वैधानिक—वि० [स०] १. विधान के अनुकूल। विधि के मुताबिक। २ विधान सबधी (को०)।

वैधिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैधिकी] विधिविहित। विधि के अनुकूल। विधिसम्मत (को०)।

वैधुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. भाग्य की प्रतिकूलता। विपत्ति (को०)।

वैधुर्य—सज्ञा पु० [स०] १ विधुर होने का भाव। हताश या कातर होने का भाव। २. भ्रम। सदेह। ३. कपित होने का भाव। ४ वियोग (को०)। ५ अनुपस्थिति। अविद्यमानता (को०)। ६ कष्ट। क्लेश। क्षोभ (को०)।

वैधुमाग्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नगरी का नाम जो शाल्व देश मे थी।

वैधृत—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो विधृति का पुत्र या सतान हो। २. ग्यारहवें मन्वतर के एक इद्र का नाम। ३ एक अशुभ योग। वैधृति (को०)।

वैधृत वाशिष्ठ—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

वैधृति—सज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से एक योग जो अशुभ माना जाता है। इस योग मे यात्रा या कोई शुभ कार्य करना वर्जित है। २ भागवत के अनुसार एक देवता, जो विधृति के पुत्र हैं।

वैधृत्य—सज्ञा पुं० [स०] १ 'वैधृति'।

वैधेय—वि० [स०] १. विधि सबधी। विधि का। २. नियमानुकूल। ३. मूर्ख। बेवकूफ। नासमझ।

वैध्यत—सज्ञा पु० [स०] यम के एक प्रतिहार का नाम ।

वैन'—सज्ञा पु० [स०] राजा वेन के पुत्र पृथु का एक नाम ।

वैन'—वि० वेन राजा संबधी (को०) ।

वैनतक—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पात्र जिसमे घी रखा जाता था और जिसका व्यवहार यज्ञो मे होता था ।

वैनतेय—सज्ञा पु० [सं०] १ विनता की सतान । २ गरुड । उ०—वैनतेय छठे आकाश के वासी बताए गए है ।—प्रा० भा० प०, पृ० ८३ । ३ अरुण ।

वैनतेयी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वैदिक शाखा का नाम ।

वैनत्य—वि० [स०] जिसका स्वभाव विनीत हो ।

वैनदी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वैनभृत—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम । २ एक वैदिक शाखा का नाम ।

वैनयिक'—सज्ञा पु० [स०] १ विनय । प्रार्थना । २. वह जो शास्त्रो आदि का अध्ययन करता हो । ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का रथ जिसका व्यवहार युद्ध मे होता था । ४ शासन मे नियम और अनुशासन की व्यवस्था करनेवाला व्यक्ति । नैतिकता का पालन करानेवाला । उ०—नियम और अनुशासन का अधिकारी वैनयिक कहलाता था । —हिंदु०, सभ्यता, पृ० १२७ ।

वैनयिक'—वि० विनय सबधी । विनय का । शिष्टता या अनुशासन सबधी ।

वैनयिक रथ—सज्ञा पु० [स०] लडाई सिखाने के लिये बने हुए रथ ।

वैनयिकवाद—सज्ञा पु० [स०] जैनमत का विरोधी मतविशेष । उ०—इन विरुद्ध मतो को जैनो ने क्रियावाद, अक्रियावाद, अज्ञानवाद और वैनयिकवाद कहा है ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २२७ ।

वैना—सज्ञा स्त्री० [स० वीणा] १ दे० 'वीणा' । २ दे० 'बेंदा' या 'वेना' । उ०—सीस पाग वैना धरे, राजमँदिर पगु दीन । —हिं० क० का०, पृ० १९२ ।

वैनायक'—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैनायकी] विनायक या गणश सबधी ।

वैनायक'—सज्ञा पु० भागवत के अनुसार भूतो का एक गण ।

वैनायिक'—वि० [स०] विनायक सबधी ।

वैनायिक'—सज्ञा पु० १ वह जो बौद्ध धर्म का अनुयायी हो । बौद्ध । २ बौद्ध सप्रदाय का एक दार्शनिक सिद्धात (को०) ।

वैनाशिक—सज्ञा पु० [स०] १. फलित ज्योतिष में जन्मनक्षत्र से तेईसवाँ नक्षत्र । २. जन्मनक्षत्र से सातवा, दसवाँ और अठारहवाँ नक्षत्र । ये तीनो नक्षत्र अशुभ समझे जाते है और निधनतारा कहलाते है । इन नक्षत्रो मे यात्रा करना वर्जित है । ३. बौद्ध । ४. दास । सेवक (को०) । ५ मकडी (को०) । ६ ज्योतिषी (को०) । ७. बौद्ध सप्रदाय का दार्शनिक सिद्धात (को०) ।

वैनाशिक'—वि० १. विनाश सबंधी । २. परतत्र । पराधीन ।

वैनाशिकतत्र—सज्ञा पु० [स० वैनाशिकतन्त्र] बौद्ध दर्शन (को०) ।

वैनाशिकसमय—सज्ञा पु० [स०] बौद्ध धर्म (को०) ।

वैनीतक—सज्ञा पु० [सं०] ऐसी सवारी जिसे कई आदमी मिलकर उठाते हो । जैसे—डोली, पालकी, तामजाम आदि । विनीतक ।

वैनेय—सज्ञा पु० [सं०] १ एक वैदिक शाखा का नाम । २. विनय या धर्म की शिक्षा प्राप्त करनेवाला छात्र (को०) ।

वैन्य—सज्ञा पु० [स०] राजा वेन के पुत्र पृथु का एक नाम ।

वैपचमिक—सज्ञा पु० [स० वैपञ्चमिक] वह व्यक्ति जो भविष्यकथन करता हो (को०) ।

वैपथक—सज्ञा पु० [स०] विपथ सबधी (को०) ।

वैपरीत्य—सज्ञा पु० [स०] विपरीत होने का भाव । विपरीतता । असगति ।

यौ०—वैपरीत्य लज्जालु = एक प्रकार का लजाधुर । लजालू पौधा ।

वैपश्चित—सज्ञा पु० [स०] तार्क्ष्य नामक ऋषि का एक नाम जो विपश्चित् ऋषि के वशज थे ।

वैपश्यत—सज्ञा पु० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम ।

वैपादिक'—वि० [स०] पैर के व्रण से व्यथित । विपादिका अर्थात् बिवाई से पीड़ित (को०) ।

वैपादिक'—सज्ञा पु० एक प्रकार का कुष्ठ रोग (को०) ।

वैपादिका—सज्ञा स्त्री० [स०] विपादिका नामक रोग ।

वैपार—सज्ञा पु० [स० व्यापार] दे० 'व्यापार' ।

वैपारी—सज्ञा पु० [स० व्यापरिन्] दे० 'व्यापारी' ।

वैपित्र—सज्ञा पुं० [स०] वे भाई बहन आदि जिनकी माता तो एक ही हो, पर पिता अलग अलग हो ।

वैपुल्य—सज्ञा पु० [स०] १ विपुल होने का भाव । विपुलता । अधिकता । २. विस्तृति । विशालता (को०) ।

वैप्रतिसम—वि० [स०] जो समान न हो । असम । विषम (को०) ।

वैप्रोताख्य—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का नृत्य (को०) ।

वैप्लव—सज्ञा पु० [स०] सावन का महीना (को०) ।

वैफल्य—सज्ञा पु० [स०] १. विफल होने का भाव । विफलता । नाकामयाबी । २ निरर्थकता । अनुपयोगिता (को०) ।

वैबाध—सज्ञा पु० [स०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का सिक्का । २ वह अश्वत्थ वृक्ष जो खैर के वृक्ष मे से निकला हो ।

वैबाधप्रणुत्त—वि० [स०] (वह वृक्ष) जिसके ऊपर पीपल का पेड उगा हो (को०) ।

वैबुध—वि० [स०] देव सबधी । विबुध सबधी (को०) ।

वैबोधिक—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो रात के समय पहरा देता, घंटा बजाता और सोए हुए लोगो को जगाता हो । २. पहरुआ । पहरेदार (को०) । ३. स्तुतिपाठक जो प्रात.काल स्तुतिपाठ द्वारा राजा को जगाता था (को०) ।

वैभंडि—सज्ञा पुं० [स० वैभण्डि] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम जिन्हे विभांडि भी कहते हैं ।

वैभव—सज्ञा पुं० [स०] १ धनसपत्ति। दौलत। विभव। ऐश्वर्य। २ महिमा। महत्व। बडप्पन। ३ सामर्थ्य। शक्ति। ताकत।

वैभवशाली सज्ञा पुं० [सं० वैभवशालिन्] वैभवयुक्त वह जिसके पास बहुत अधिक धन सपत्ति हो। विभववाला। मालदार।

वैभविक—सज्ञा पु० [स०] वह जो कोई काम करने का अच्छा सामर्थ्य रखता हो। समर्थ।

वैभाडकि—सज्ञा पु० [स० वैभाण्डकि] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैभाजन—वि० [स०] अनेक मार्गों मे विभक्त। जो कई मार्गो मे विभक्त हो [को०]।

वैभाजिक—सज्ञा पु० [स०] वह जो विभक्त करता हो [को०]।

वैभाजित्र—सज्ञा पु० [स०] विभाजन। कई भागो मे कर देना। बाँटना [को०]।

वैभातिक—वि० [सं०] विभात या प्रभात सबधी। अरुणोदय सबधी। उप कालीन [को०]।

वैभार—सज्ञा पु० [स०] राजगृह के पास के एक पर्वत का नाम। इसे वैहार भी कहते थे।

वैभावर—वि० [स०] विभावरी सबधी। रात का। रात्रिसबधी [को०]।

वैभाषिक[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैभाषिनी] १ विभाषा सबधी। वैकल्पिक। २ वैभाषिक नामक बौद्ध सप्रदाय के एक वर्ग का अनुगामी या तत्सबधी (को०)।

वैभाषिक[2]—सज्ञा पुं० बौद्धो के एक सप्रदाय का नाम।

वैभाष्य—सज्ञा पुं० [स०] वृहत् भाष्य। किसी सूत्र, कारिका वा वचन की विस्तृत व्याख्या [को०]।

वैभीत—वि० [स०] बहेडा से बना हुआ। जिसमे बहेडे का योग हो। विभीतक से निर्मित [को०]।

वैभीतक—वि० [सं०] दे० 'वैभीत' [को०]।

वैभूतिक—वि० [स०] १ विभूतिजन्य। विभूतिमत्। २ विभूतिसबधी। विभूति का।

वैभोज—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जाति का नाम।

विशेष—महाभारत के अनुसार द्रुह्यु के वशज वैभोज कहलाते थे। ये लोग सवारी आदि का व्यवहार करना नही जानते थे और न इन लोगो मे कोई राजा हुआ करता था।

वैभ्र—सज्ञा पुं० [स०] वैकुठ लोक। विष्णुधाम [को०]।

वैभ्राज—सज्ञा पु० [सं०] १ देवताओ का उद्यान या बाग। २ पुराणानुसार मेरु के पश्चिम मे सुपार्श्व पर्वत पर के एक जगल का नाम। ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ४ एक लोक का नाम जो स्वर्ग माना जाता है।

वैभ्राजक—सज्ञा पु० [स०] देवताओ का उद्यान। नदनवन [को०]।

वैमत्य—सज्ञा पुं० [स०] १ एक मत का अभाव। मतभेद। फूट। २ शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा का नाम। ३. नापसदगी। अरुचि (को०)।

वैमनस्य—सज्ञा पु० [स०] १ विमन या अन्यमनस्क होने का भाव। २ वैर। द्वेष। दुश्मनी। ३ बीमारी। अस्वस्थता (को०)।

वैमल्य—सज्ञा पु० [स०] विमल होने का भाव। मलराहित्य। स्वच्छता। विमलता। निर्मलता।

वैमात्र[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैमात्रा] विमाता से उत्पन्न। सौतेला। जैसे—वैमात्र भाई।

वैमात्र[2]—सज्ञा पु० सौतेला भाई [को०]।

वैमात्रक—सज्ञा पुं० [स०] सौतेला भाई [को०]।

वैमात्रा, वैमात्री—सज्ञा स्त्री० [स०] सौतेली बहन [को०]।

वैमात्रेय—वि० [स०] [वि० स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। विमातृज। सौतेला।

वैमात्रेयी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] सौतेली बहन [को०]।

वैमानिक—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो विमान पर चढकर अतरिक्ष मे विहार करता हो। २ वह जो आकाश मे विहार करता हो। आकाशचारी। ३ वह जो उड सकता हो। उड्डयनशील। ४ जैनो के अनुसार वे जीव जो स्वर्गलोक मे रहते हैं। ५ देवता [को०]।

वैमानिक[2]—वि० १. विमान द्वारा ले जाया जाता हुआ। विमानारूढ। २ विमानोत्पन्न। विमानजन्य। ३ वायुयान का चालक। विमान चलानेवाला। ४. विमान सबधी [को०]।

वैमानिकी—सज्ञा स्त्री० [स०] देवागना [को०]।

वैमित्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

वैमुक्त[1]—सज्ञा पु० [स०] मुक्ति। विमुक्ति। मोक्ष [को०]।

वैमुक्त[2]—वि० मुक्त [को०]।

वैमुख्य—सज्ञा पु० [स०] १ विमुख होने का भाव। विमुखता। २ विपरीतता। प्रतिकूलता। ३ अप्रसन्नता। नाराजगी। ४ विमुख होना। पलायन। भागना।

वैमूढक—सज्ञा पु० [स०] कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक मे वर्णित एक प्रकार का नृत्य। वह नृत्य जिसमे पुरुष नारी वेष मे नाचते है [को०]।

वैमूल्य—सज्ञा पुं० [स०] मूल्यो का अतर [को०]।

वैमृध[1]—सज्ञा पु० [स०] युद्ध करनेवाला, इद्र।

वैमृध[2]—वि० इद्र का दिया हुआ। इद्र को अर्पित [को०]।

वैमृध्य—सज्ञा पु० [स०] १ युद्धकर्ता—इद्र। वैमृध। २. वह जो युद्धविद्या मे बहुत निपुण हो। युद्धकुशल।

वैमेय—सज्ञा पु० [स०] विनिमय। परिवर्तन। बदला।

वैम्य—सज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैमुख्य—वि० [स० वैमुख्य] दे० 'विमुख'। उ०—प्रभु वैमुख जिनरो रिपु प्राणी। ताह न कदै सतावै। रघु० रू०, पृ० २६।

वैयक्तिक—वि० [स०] व्यक्तिगत। निजी। स्वगत। स्वकीय। उ०—हिंदी कविता छायावाद के रूप मे ह्रास युग के वैयक्तिक अनुभवो, ऊर्ध्वमुखी विकास की प्रवृत्तियो, ऐहिक जीवन की आकाक्षाओ

संबंधी स्वप्नो आदि को अभिव्यक्त करने लगी।—हिं० आ० प्र०, पृ० १३३।

वैयक्तिक संपत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं० वैयक्तिक सम्पत्ति] निजी जायदाद। वह धन जिसे व्यापार आदि के द्वारा कोई व्यक्ति एकत्र करता है और उसपर उसके अतिरिक्त अन्य किसी का कोई अधिकार नही होता। उ०—आखिर वैयक्तिक संपत्ति के स्वामी कामचोर शासको ने कानून भी तो अपने फायदे के लिये बनाए हैं।—मा० स०, पृ० २३२।

वैयग्र—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यग्रता। बेकली। तन्मय होना। २ तल्लीनता। अनन्यभक्ति (को०)।

वैयग्र्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैयग्र' (को०)।

वैयधिकरण्य—सज्ञा पु० [स०] व्यधिकरण का भाव। व्यधिकरणता। समानाधिकरणता का वैपरीत्य। अनेक स्थानो मे होने का भाव। (को०)।

वैयमक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति का नाम जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

वैयर्थ्य—सज्ञा पु० [स०] व्यर्थ होने का भाव। निरर्थकता। व्यर्थता। अनुत्पादकता। निष्फलता।

वैयवहारिक—वि० [स०] व्यावहारिक (को०)।

वैयशन—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

वैयश्व—सज्ञा पुं० [स०] एक वैदिक ऋषि का नाम जो विश्वमनस् के पिता थे।

वैयसन—वि० [स०] व्यसन से उत्पन्न। व्यसनजन्य। व्यसन का।

वैया†—प्रत्य० [हिं० ?] एक प्रत्यय जो क्रिया के अत मे लगकर 'वाला' अर्थ सूचित करता है, जैसे—करवैया, चलवैया, पढ़वैया आदि।

वैयाकरण[1]—सज्ञा पुं० [स०] वह जो व्याकरण शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। व्याकरण का पडित।

वैयाकरण[2]—वि० व्याकरण सबधी। व्याकरण का।

यौ०—वैयाकरण खसूचि = वह वैयाकरण जो सूई से वायु मे छेद करना चाहता है। व्याकरण का अल्प ज्ञाता। व्याकरण का साधारण जानकार। वैयाकरण पाश = व्याकरण का साधारण ज्ञाता। व्याकरण का साधारण जानकार। वैयाकरण भार्य = वह व्यक्ति जिसकी गृहिणी व्याकरण की पडिता हो।

वैयाख्य[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्याख्या'।

वैयाख्य[2]—वि० व्याख्यायुक्त। जिसकी व्याख्या की गई हो। व्याख्या सबधी। व्याख्याजन्य (को०)।

वैयाघ्र[1]—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का रथ जिसपर शेर या चीते की खाल मढी होती थी। इसे द्वैप भी कहते थे।

वैयाघ्र[2]—वि० १. व्याघ्र सबधी। व्याघ्र का। २ व्याघ्रचर्मावृत। व्याघ्रचर्ममडित (को०)।

वैयाघ्रपद—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैयाघ्रपद्य'।

वैयाघ्रपद्य—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

वैयाघ्रपाद—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'वैयाघ्रपद्य'।

वैयाघ्र्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का आसन। २. व्याघ्र की अवस्था (को०)।

वैयाघ्र्य[2]—वि० [स०] १. जो व्याघ्र के समान हो। व्याघ्रतुल्य। २ व्याघ्र का या व्याघ्रजन्य (को०)।

वैयात्य—सज्ञा पु० [स०] १. दुर्विनीतता। अविनय। २. ढिठाई। ३ बेहयापन। निर्लज्जता। ४. उजड्डपन (को०)।

वैयावृत्य—सज्ञा पु० [स०] जैनमतानुसार यतियो और साधुओ आदि की सेवा। उ०—दूसरे प्रकार के तप मे प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (शरीरत्याग) की गणना होती है—आ० भा०, पृ० १४३।

वैयास—वि० [सं०] व्यास सबंधी। व्यास का।

वैयासकि—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो व्यास के गोत्र या वश मे उत्पन्न हो। २. व्यास के पुत्र। शुकदेव।

वैयासिक—वि० [स०] व्यास का बनाया हुआ। व्यासरचित। (ग्रथ आदि)। २ दे० 'वैयासकि'।

वैयास्क—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का वैदिक छद। २. एक आचार्य का नाम (को०)।

वैयुष्ट—वि० [स०] उष कालीन। प्राभातिक। ऊषाकाल मे होनेवाला (को०)।

वैरकर[1]—सज्ञा पुं० [स० वैरङ्कर] वह जो किसी के साथ शत्रुता करता हो। दे० 'वैरकर' (को०)।

वैरकर[2]—वि० शत्रुता करनेवाला (को०)।

वैरगिक—वि० [स० वैरङ्गिक] वह जिसने समग्र इच्छाओ और वासनाओ का दमन कर लिया हो। इंद्रियनिग्रही। विरागी। सत। २ वह जो विराग के योग्य हो (को०)।

वैरडेय—सज्ञा पु० [वैरण्डेय] एक प्राचीन गोत्र सवर्तक ऋषि का नाम।

वैरभ—सज्ञा पु० [स० वैरम्भ] एक वायु का नाम। एक प्रकार का पवन (को०)।

वैरभक—सज्ञा पु० [स० वैरम्भक] वायु का एक भेद। एक प्रकार का पवन (को०)।

वैर—सज्ञा पु० [स०] १ शत्रुता। दुश्मनी। द्वेष। विरोध। २. घृणा (को०)। ३ शौर्य। पराक्रम (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—मानना।—रखना।—होना।

४ विपत्ती। शत्रु (को०)। ५ वह धन जो हत्या के लिये दंड के रूप मे दिया जाय (को०)।

वैरक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैर' (को०)।

वैरकर—सज्ञा पु० [स०] वह जो किसी के साथ वैर करता हो। दुश्मनी करनेवाला।

वैरकरण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैरकारण'।

वैरकार, वैरकारक—सज्ञा पु० [स०] वैरी। दे० 'वैरकर'।

वैरकारण—सज्ञा पु० [स०] शत्रुता का कारण [को०]।

वैरकारी—वि० [स० वैरकारिन्] शत्रुता करनेवाला [को०]।

वैरकृत्—वि० [स०] दे० 'वैरकारी' [को०]।

वैरक्त—सज्ञा पु० [स०] १. विरक्त होने का भाव। विरक्तता। वैराग्य। २ नापसदगी। अरुचि (को०)।

वैरखडी—वि० [स० वैरखण्डिन्] शत्रुता दूर करनेवाला [को०]।

वैरख—सज्ञा पुं० [तु० वैरक, हिं० वैरख] दे० 'वैरख'। उ०—उपम तीय उद्धर। कि मित्र कज्जल गिर। जु वैरख विराजही। वसत वृष्प लाजही।—रा०, ७। ४१।

वैरत—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैरता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैर का भाव। शत्रुता। दुश्मनी।

वैरथ—सज्ञा पु० [स०] १ ज्योतिष्मन् का पुत्र। २ एक वर्ष का नाम जिसपर वैरथ ने राज्य किया था [को०]।

वैरदेय—सज्ञा पु० [स०] १ वह वैर या शत्रुता जो किसी के शत्रुता करने पर उत्पन्न हो। २ वैदिक काल के एक असुर का नाम।

वैरनिर्यातन—सज्ञा पु० [स०] वैर का बदला। वैरशोध [को०]।

वैरपुरुष—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसके साथ वैर हो। शत्रु। दुश्मन।

वैरप्रतिक्रिया—सज्ञा पु० [स०] वैर का बदला [को०]।

वैरप्रतिमोचन—सज्ञा पुं० [स०] दुश्मनी न रहना। शत्रुता छूटना। वैरभाव दूर होना [को०]।

वैरप्रतियाचन—सज्ञा पु० [स०] वैरनिर्यातन। वैरप्रतीकार [को०]।

वैरप्रतीकार—सज्ञा पु० [स०] वैरशोधन [को०]।

वैरभाव—सज्ञा पु० [स०] शत्रुता। शत्रुभाव [को०]।

वैरमण—सज्ञा पु० [स०] वेद के अध्ययन की पूर्णता। ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति [को०]।

वैरयातना—सज्ञा स्त्री० [स०] वैर का शोधन या बदला [को०]।

वैररक्षी—वि० [स० वैररक्षिन्] वैर को दूर करनेवाला [को०]।

वैरल्य—सज्ञा पु० [स०] १ विरल होने का भाव। विरलता। २ शून्य। एकात।

वैरव्रत—सज्ञा पु० [स०] किसी से शत्रुता की प्रतिज्ञा। वैरभाव रूपी व्रत [को०]।

वैरशुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी के वैर का बदला चुकाना। दुश्मनी का बदला लेना।

वैरस—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैरस्य'

वैरसाधन—सज्ञा पु० [स०] १ शत्रुता का लक्ष्य या उद्देश्य। २ शत्रुता का साधन [को०]।

वैरसेनि—सज्ञा पु० [स०] राजा वीरसेन का पुत्र, नल [को०]।

वैरस्य—सज्ञा पु० [स०] १ विरस होने का भाव। विरसता। २ शत्रुता। वैपरीत्य। १३ इच्छा का न होना। अनिच्छा।

वैराग—सज्ञा पु० [स०] दे० 'वैराग्य'।

वैरागा—सज्ञा पुं० [स० वैराग] दे० 'वैराग्य'। उ०—वीना गेडे बजावै रागा वर विन उपजावै वरागा।—माधवानल०, पृ० १८६।

वैरागिक'—वि० [स०] जिसके कारण विराग उत्पन्न हो।

वैरागिक'—सज्ञा पु० विरागी। विरक्त।

वैरागी'—सज्ञा पु० [स० वैरागिन्] १ वह जिसके मन मे विराग उत्पन्न हो। वह जिसका मन ससार की ओर से हट गया हो। विरक्त। २ उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

विशेष—इस सप्रदाय के लोग रामानुज के अनुयायी होते हैं और श्रीकृष्ण अथवा रामचद्र की उपासना करते हैं। ये लोग प्राय भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह करते हैं और अखाडे बनाकर रहते हैं। बगाल के कुछ वैरागी विवाह करके गृहस्थों की भाँति भी रहते हैं।

वैरागी'—सज्ञा स्त्री० [स०] सगीत मे एक रागिनी [को०]।

वैराग्य—सज्ञा पु० [स०] १. मन की वह वृत्ति जिसके अनुसार ससार की विषयवासना तुच्छ प्रतीत होती है और लोग ससार की झझटें छोडकर एकात मे रहते और ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति। २ असतृप्ति। असतोष (को०)। ३ अरुचि। नापसदगी (को०)। ४ रज। शोक। अफसोस (को०)। ५ बदरग होना। विवर्णता (को०)।

वैराग्यशतक—सज्ञा पुं० [स०] भर्तृहरि प्रणीत शतकत्रय (शृंगार, वैराग्य, और नीति) मे से एक का नाम [को०]।

वैराज'—सज्ञा पु० [सं०] १ विराट् पुरुष। परमात्मा। २ एक मनु का नाम। ३ एक प्रकार का साम। ४ भागवत के अनुसार अजित के पिता का नाम। ५ सत्ताईसवें कल्प का नाम। ६ तपोलोक मे रहनेवाले एक प्रकार के पितृ। कहते हैं, ये कभी आग से नही जल सकते। ७ दे० 'वैराज्य'।

वैराज'—वि० विराज सबधी। ब्रह्मा सबधी [को०]।

वैराजक—सज्ञा पुं० [स०] उन्नीसवें कल्प का नाम।

वैराज्य—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन काल की एक प्रकार की शासन-प्रणाली जिसमे एक ही देश मे दो राजा मिलकर शासन करते थे। एक देश म दो राजाओ का शासन। २ वह देश जहाँ इस प्रकार की शासनप्रणाली प्रचलित हो। ३ विदेशियो का राज्य। विदेशियो का शासन।

विशेष—वैराज्य और द्वैराज्य के गुणदोष का विचार करते हुए कहा गया है कि द्वैराज्य मे अशाति रहती और वैराज्य मे देश का धनधान्य निचोड लिया जाता है। दूसरी बात यह भी कही गई है कि विदेशी राजा अपनी अधिकृत भूमि कभी कभी बेच भी देता है और आपत्ति के समय असहाय अवस्था मे छोड भी देता है।

वैराट'—वि० [स०] १ विराट् सबधी। २ विराट देश सबधी। विराट का। ३. विस्तृत। लबा चौडा।

वैराट[१]—सज्ञा पुं० १. इंद्रगोप नाम का कीडा। वीरबहूटी। २. महाभारत का विराट पर्व। ३. एक रत्न। ४ एक रग अथवा उसी रग की चीज। ५. देश विदेश (को०)।

वैराटक—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार शरीर मे किसी स्थान पर होनेवाली वह गाँठ जो जहरीली हो।

वैराटराज—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन वैराट देश का राजा। मत्स्य देश का नरेश (को०)।

वैराट्या—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनियो के अनुसार सोलह विद्यादेवियो मे से एक विद्यादेवी का नाम।

वैरातक—सज्ञा पुं० [स० वैरातङ्क] अर्जुन या कोह नाम का वृक्ष।

वैराम—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैराषित—सज्ञा पु० [स०] दुश्मनी। शत्रुता (को०)।

वैरिंच—वि० [स० वैरिञ्च] विरिंचि या ब्रह्मा संबंधी (को०)।

वैरिंचि—वि० [स० वैरिञ्चि] विरिंचि या ब्रह्मा सबधी। ब्रह्मा का।

वैरिञ्च्य—सज्ञा पु० [स० वैरिञ्च्य] ब्रह्मा के पुत्र। सनक आदि ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते है।

वैरि—सज्ञा पु० [स०] वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरिण—सज्ञा पु० [स०] १. वैर। शत्रुता। दुश्मनी। २ वैरी। शत्रु। दुश्मन।

वैरिता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैर का भाव। शत्रुता। दुश्मनी।

वैरिपण—सज्ञा पुं० [हिं० वैर+प्रा० पण, वण (प्रत्य०), हिं० वैरीपन] वैरत्व। वैरभाव। शत्रुता। उ०—किमि उँप्पन्नउँ वैरिपण किमि उँद्धरिउँ तेन।—कीर्ति० पृ० १६।

वैरिवीर—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार दशरथ के एक पुत्र जिनका दूसरा नाम इलविल भी है।

वैरी[१]—सज्ञा पुं० [स० वैरिन्] १ शत्रु। दुश्मन। वैरी। २ योद्धा। वीर (को०)।

वैरी[२]—वि० वैरयुक्त। वैर करनेवाला। शत्रुता करनेवाला (को०)।

वैरूप सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम। २ पितरों का एक वर्ग (को०)। ३ एक प्रकार का साम।

वैरूपाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] वह जो विरूपाक्ष के गोत्र या वश मे उत्पन्न हुआ हो।

वैरूप्य—सज्ञा पुं० [स०] १ विरूप का भाव या धर्म। विरूपता। २ विकृत होने का भाव।

वैरेकीय—वि० [स०] विरेचक (को०)।

वैरेचन—वि० [स०] विरेचन सबंधी। विरेचन का।

वैरेचनिक—वि० [स०] विरेचन सबधी (को०)।

वैरोचन[१]—सज्ञा पुं० [स०] १. बुद्ध का एक नाम। २ राजा बलि का एक नाम। ३. विष्णु के एक पुत्र का नाम (को०)। ४. एक प्रकार की समाधि (को०)। ५ सूर्य के एक पुत्र का नाम। ५. एक प्रकार के सिद्ध (को०)। ६ बौद्ध मतानुसार एक लोक का नाम (को०)। ७ अग्नि के एक पुत्र का नाम।

वैरोचन[२]—वि० १. विरोचन सबधी। विरोचन से उत्पन्न (को०)।

यौ० वैरोचन निकेतन = पाताल लोक। वैरोचनमुहूर्त = एक मुहूर्त जो दिन मे पडता है। वैरोचन रश्मिप्रतिमडित = बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

वैरोचनि—सज्ञा पु० [स०] १ बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३ सूर्य के एक पुत्र का नाम। ४ अग्नि के एक पुत्र का नाम। दे० 'वैरोचन'।

वैरोचि—सज्ञा पु० [स०] १ राजा बलि के पुत्र बाण दैत्य का एक नाम। २. दे० वैरोचनि (को०)।

वैरोट्या—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनियो की सोलह विद्यादेवियो मे से एक विद्यादेवी का नाम।

वैरोद्धार—सज्ञा पु० [स०] किसी के वैर का बदला चुकाना। वैरशुद्धि।

वैरोधक—वि० [स०] विरोधी या प्रतिकूल (आहार आदि)।

वैरोधिक—वि० [स०] दे० 'वैरोधक' (को०)।

वैल[१]—सज्ञा पु० [सं०] १ बेल नामक वृक्ष या उसका फल। २. छिद्र। विवर। बिल (को०)।

वैल[२]—वि० १. बिल सबधी। २. बेल सबंधी। ३. बिल मे रहनेवाला। बिलवासी (को०)।

वैलक्षण्य—सज्ञा पुं० [स०] १. विलक्षण होने का भाव। विलक्षणता। २ विभिन्न या अलग होने का भाव। विभिन्नता।

वैलक्ष्य—सज्ञा पु० [स०] १ लज्जा। संकोच। शर्म। २. विस्मय। आश्चर्य। ताज्जुब। ३ स्वभाव की विलक्षणता। ४. उलझन। गडबडी (को०)। ५ अस्वाभाविकता। कृत्रिमता (को०)। ६. वैपरीत्य (को०)।

वैलस्थान—सज्ञा पु० [स०] श्मशान। मरघट।

वैलिंग्य—सज्ञा पुं० [स० वैलिङ्ग्य] परिचायक चिह्न, लक्षण या लिंग का अभाव (को०)।

वैलि[१]—सर्व० [देश० या व० स० अवार (= इधर, निकट), हिं० उरे] उरली। उरे। इधर। उ०—दादू सेख मसाहक औलिया, पैंगबर सब पीर। दर्शन सू परसन नही, अजहूँ वैली तीर। —दादू०, पृ० २७७।

वैलोम्य—सज्ञा पु० [स०] विलोमता। विपरीतता (को०)।

वैल्व[१]—सज्ञा पु० [स०] बिल्व या बेल नामक फल। श्रीफल।

वैल्व[२]—वि० १ बिल्व या बेल सबधी। बेल का। २ बिल्व वृक्ष से आच्छादित। अभिप्रेत। जिसे कहना आवश्यक हो (को०)।

वैवक्षिक—वि० [स०] विवक्षायुक्त। कहने की इच्छावाला।

वैवधिक—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो अनाज आदि बेचकर अपना निर्वाह करता हो। गल्ले का व्यापारी। २. घूम घूमकर या फेरी लगाकर माल बेचनेवाला। ३. दूत। हरकारा। ४. बहँगी द्वारा बोझा ढोनेवाला। मजदूर।

वैवर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवर्ण या मलिन होने का भाव। २ सौंदर्य या लावण्य का अभाव। ३ स्त्रियों के आठ प्रकार के सात्विक भावों में से एक प्रकार का भाव। ४ वह जो बिना किसी रंग के हो या जिसमें नीला, पीला आदि कोई रंग न हो (को०)।

वैवर्णिक वि० [सं०] चित्रकर्बुर। चितकबरा (मुख्यत विद्रुम के लिये प्रयुक्त)। २ वर्णहीन। जातिच्युत। जो जाति बहिष्कृत किया गया हो।

वैवर्ण्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. विवर्ण होने का भाव। रंग परिवर्तित होना। २ बदरंग होना। मलिनता। मालिन्य। ३ विभिन्नता। भिन्नता। विलगाव। ४ लावण्य का अभाव। ५ जातिच्युत होना। जातिबहिष्कृत होना। जातिच्युति (को०)।

वैवर्त—संज्ञा पुं० [सं०] किसी पदार्थ का चक्र या पहिए के समान घूमना।

वैवश्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विवश होने का भाव। विवशता। लाचारी। २ दुर्बलता। कमजोरी।

वैवस्वत—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम। यम। २ एक रुद्र का नाम। ३ शनैश्चर। ४ पुराणानुसार सातवें मनु का नाम।

विशेष—आजकल का मन्वंतर इन्हीं मनु का माना जाता है। इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, दिष्ट, धृष्ट, करूषक, नरिष्यंत, पृषध्र, नाभाग और कवि ये दस इनके पुत्र माने गए हैं।

५ पुराणानुसार वर्तमान मन्वंतर का नाम।

विशेष—इस मन्वंतर के अवतार वामन, देवता पुरंदर इंद्र, आदित्यगण, वसुगण, रुद्रगण, मरुद्गण आदि और ऋषि कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ विश्वामित्र आदि कहे गए हैं।

६ अग्नि का एक नाम (को०)। ७. एक तीर्थ का नाम।

वैवस्वत—वि० १ सूर्य संबंधी। २ यम संबंधी। अग्निसंबंधी। ४ मनु संबंधी (को०)।

वैवस्वतद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] मोगरा चावल।

वैवस्वती—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दक्षिण दिशा जो वैवस्वत मनु की दिशा मानी गई है। २ सूर्य की एक पुत्री। यमुना। यमी (को०)।

वैवस्वतीय—वि० [सं०] वैवस्वत संबंधी (को०)।

वैवाह—वि० [सं०] विवाह संबंधी। विवाह का।

वैवाहिक'—संज्ञा पुं० [सं०] १ कन्या अथवा वर का श्वसुर। समधी। २. विवाह (को०)। ३ विवाह की तैयारी या उत्सव (को०)। ४ वह संबंध जो विवाह के कारण हो (को०)।

वैवाहिक'—वि० विवाह संबंधी। विवाह का।

वैवाह्य'—वि० [सं०] १. विवाह संबंधी। विवाह का। २ जो विवाह के योग्य हो।

वैवाह्य'—संज्ञा पुं० वह समारोह या उत्सव जो विवाह के अवसर पर हो।

वैविक्त्य—संज्ञा पुं० [सं०] विविक्तता। विभिन्नता। अलगाव। छुटकारा (को०)।

वैविध्य—संज्ञा पुं० [सं०] विविधता। अनेकरूपता। उ०—देशीय एवं बहुदेशीय अंतर्विरोधों ने इधर कितनी ही प्रकृतियों को जन्म दिया है जिनमें युगीन वैविध्य और असामान्य गुणयोग हैं।—हिं० का० आ०, पृ० २।

वैवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] उदात्त आदि स्वरों का क्रम।

वैव्रद्ध पै †—वि० [सं० वयोवृद्ध] दे० 'वयोवृद्ध'। उ०—आरंभ सेय लीनो बुलाइ। वैव्रद्ध ब्रह्म बुद्धी सुनाइ।—पृ० रा०, ६। ३१।

वैशंपायन—संज्ञा पुं० [सं० वैशम्पायन] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य थे। कहते हैं, महर्षि व्यासदेव की आज्ञा से इन्हीं ने जनमेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी।

वैशफल्या—संज्ञा स्त्री० [सं० वैशम्फल्या] सरस्वती का एक नाम (को०)।

वैशद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशद होने का भाव। विशदता। २ निर्मल या स्वच्छ होने का भाव। निर्मलता। ३ उज्ज्वलता। शुभ्रता (को०)। ४ स्पष्टता (को०)। ५ मस्तिष्क की स्वस्थता।

वैशली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ दे० 'वैशाली'। २ वसुदेव की एक पत्नी (को०)।

वैशल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशल्य होने का भाव या दशा। कष्टदायक भार से मुक्ति या छुटकारा। जैसे, गर्भभार आदि से (को०)।

वैशस'—संज्ञा पुं० [सं०] १ विनाश। हत्या। वध। २ युद्ध। ३ विपत्ति। ४. कष्ट। ५. एक नरक का नाम। ६ हिंसा (को०)।

वैशस'—वि० विनाशक। हिंसक। हिंसा या वध करनेवाला (को०)।

वैशसन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'वैशस'।

वैशस्त्र'—संज्ञा पुं० [सं०] १ शस्त्रहीनता। २ अधिकार। शासन। असुरक्षित होने का भाव (को०)।

वैशस्त्र'—वि० शस्त्ररहित। बिना शस्त्रवाला (को०)।

वैशाख—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथनी में का खंभा। मथनदंड। २ लाल गदहपूरना। ३ बारह महीनों में से एक महीना जो चांद्र गणना से दूसरा और सौर गणना के अनुसार पहला महीना होता है। इस मास की पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में पड़ती है, इसीलिये इसे वैशाख कहते हैं। चैत के बाद का और जेठ के पहले का महीना। ४ एक प्रकार का ग्रह जिसका प्रभाव घोड़ों पर पड़ता है और जिसके कारण उनका शरीर भारी हो जाता है और वे काँपने लगते हैं। ५ धनुष पर बाण चलाने के समय की एक मुद्रा। दे० 'विशाख' (को०)।

यौ०—वैशाखनंदन = (१) वैशाख में आनंदित होनेवाला। (२) गधा। खर। वैशाखरज्जु = मथनदंड की रस्सी। नेत्र।

वैशाखी'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त हो। २. मेष की संक्रांति (वैशाखपूर्णिमा) के अवसर पर

इस नाम से पंजाबियों में मनाया जानेवाला एक उत्सव। वैशाख मास की पूर्णिमा। उ०—जबलों पृथ्वी है तबलों बोना और लोना सरदी गर्मी, अगहनी और वैशाखी दिन और रात बद न होंगे।—कबीर म०, पृ० १६५। ३ लाल गदहपूरना। ४. पुराणानुसार वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

वैशाखी[२]—संज्ञा पुं० [सं० वैशाखिन्] हाथी के पैर का अगला भाग [को०]।

वैशाख्य—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैशारद[१]—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का अच्छा ज्ञाता हो। विशारद। पंडित।

वैशारद[२]—वि० ज्ञाता। अनुभवी। २ पंडित। विद्वान् [को०]।

वैशारद्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशारद या पंडित होने का भाव। २ निर्मलता। स्वच्छता। सफाई।

वैशाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वैशालक—वि० [सं०] वैशाली नगरी का। वैशाला संबंधी। [को०]।

वैशालाक्षु—संज्ञा पुं० [सं०] शिव जी द्वारा निर्मित शास्त्रविशेष [को०]।

वैशालिक—वि० [सं०] दे० 'वैशालक' [को०]।

वैशाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] प्राचीन बौद्ध काल की एक प्रसिद्ध नगरी।

विशेष—यह विशालनगरी या विशालपुरी भी कहलाती थी। कहते हैं, राजा तृणबिंदु के पुत्र विशाल ने यह नगरी बसाई थी। जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का जन्म यहीं हुआ था और बुद्ध भगवान् कई बार यहाँ गए थे। किसी समय यह नगरी बहुत प्रसिद्ध थी और यहाँ बौद्धों का बहुत प्राबल्य था। यहाँ का लिच्छवी राजवंश इतिहासों में प्रसिद्ध है। यहाँ जैनियों का भी तीर्थ था। विद्वानों का मत है कि आधुनिक मुजफ्फरपुर जिले का बसाढ़ नामक गाँव प्राचीन वैशाली का ही अवशेष है।

वैशालीय—संज्ञा पुं० [सं०] जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का एक नाम।

वैशालेय—संज्ञा पुं० [सं०] तक्षक जो विशाल के वंशज माने जाते हैं।

वैशिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ साहित्य के अनुसार तीन प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक। वह नायक जो वेश्याओं के साथ भोग विलास करता हो। वेश्यागामी नायक। उ०—भूपाल, मंडलीक, सामंत, सेनापति, वैशिक, राजपुत्र, राजशिष्ट, बंदालआ।—वर्ण०, पृ० ८। २ वेश्या से संबंध रखनेवाला पुरुष। ३. वेश्या की वृत्ति या कला (को०)।

वैशिक[२]—वि० [वि० स्त्री० वैशिकी] १ वेश संबंधी। वेश का। २. वेश्या द्वारा व्यवहृत। ३. वेश्यागामी (को०)।

वैशिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन जाति का नाम।

वैशिजाता—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुनर्नवा नाम का लता।

वैशिष्ट—संज्ञा पुं० [सं०] १. विशेषता। सार्थकता। २ पृथक्त्व-सूचक गुण। वैशिष्ट्य [को०]।

वैशिष्ट्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ विशिष्टता। विशेषता। २ श्रेष्ठता। पूर्णता। ३ विशिष्ट लक्षण या गुण आदि से युक्त होना। ४. अंतर। फर्क [को०]।

वेशीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वेश्या का पुत्र।

वैशेषिक[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ छह दर्शनों में से एक जो महर्षि कणाद कृत है और जिसमें पदार्थों का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ विद्या।

विशेष—महर्षि कणाद का एक नाम उलूक भी है, इससे इसे औलूक्य दर्शन भी कहते हैं। यह दर्शन न्याय के ही अंतर्गत माना जाता है। सिद्धांत पक्ष में न्याय कहने से दोनों का बोध होता है, क्योंकि गौतम में प्रमाणपक्ष प्रधान है और इसमें प्रमेय पक्ष लिया गया है। ईश्वर, जगत्, जीव आदि के संबंध के दोनों के सिद्धांत प्रायः एक ही हैं। यह दर्शन गौतम से पीछे का माना जाता है। गौतम ने मुख्यतः तर्कसिद्धांत और प्रमाणविषय का ही निरूपण किया है, पर कणाद उससे आगे बढ़कर द्रव्यों की परीक्षा में प्रवृत्त हुए हैं। नौ द्रव्यों की विशेषताएँ बताने के ही कारण इनके दर्शन का नाम वैशेषिक पड़ा। नौ द्रव्य ये हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। इनमें से पृथ्वी, जल, तेज और वायु नित्य भी हैं और अनित्य भी अर्थात् परमाणु अवस्था में तो वे नित्य हैं और स्थूल अवस्था में अनित्य। आकाश, काल, दिक् और आत्मा नित्य और सर्वव्यापक हैं। मन नित्य तो है, पर व्यापक नहीं, क्योंकि वह अणुरूप है। द्रव्यों की विशेषता इस प्रकार कणाद ने बताई है।

गौतम ने सोलह पदार्थ माने थे, पर कणाद ने छह ही पदार्थ रखे—द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। अंधकार आदि को इन छह के अंतर्गत अभाव न समझकर पीछे से एक सातवाँ पदार्थ 'अभाव' भी बढ़ाया गया। द्रव्यों के उद्भव (परिणमन), लक्षण और परीक्षा के उपरांत कणाद ने गुण और कर्म को लिया है जो द्रव्यों में रहते हैं। संख्या, पृथक्त्व, बुद्धि, सुख, दुःख इत्यादि २४ गुण गिनाए गए हैं, उत्क्षेपण, अवक्षेपण आदि पाँच प्रकार के गतियों कर्म के अंतर्गत आ गई हैं। अब रहा 'सामान्य'। यह द्रव्य, गुण और कर्म इन्हीं तीनों में सत्ता के रूप में पाया जाता है। पाँचवाँ पदार्थ 'विशेष' पृथ्वी, जल, तेज और वायु के परमाणुओं में तथा शेष पाँच द्रव्यों में पाया जाता है। 'विशेष' अनंत होते हैं। 'समवाय' जहाँ कहीं पाया जायगा, वहाँ रहेगा अतः वह एक ही है।

वैशेषिक का परमाणुवाद प्रसिद्ध है। द्रव्यों के टुकड़े करते करते एक ऐसा टुकड़ा रह जाता है जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते, तब वह परमाणु कहलाता है। परमाणु नित्य और अक्षर है। इन्हीं को यौगिक सृष्टि पदार्थ बनते हैं और छोटे होते हैं, आकाश को छोड़कर जितने प्रकार के द्रव्य होते हैं उतने ही प्रकार के परमाणु होते हैं जैसे—पृथ्वी परमाणु, जल

परमाणु, तेज परमाणु और वायु परमाणु। वैशेषिक मे दो परमाणुओ के योग को द्वयणुक कहते है। आगे चलकर यही द्वयणुक अधिक सख्या मे मिलते जाते हैं, जिपसे नाना प्रकार के पदार्थ बनते है, जैसे—तीन द्वयणुको से त्रसरेणु, चार द्वयणुको से चतुरणुक आदि। कारणगुण पूवक ही कार्य के गुण होते है, अत जिस गुण के परमाणु होगे, उसी गुण के उनसे बने पदार्थ होगे। पदार्थो मे जो नाना भेद दिखाई पडते है वे सन्निवेश भेद से होते हैं। तेज के सबध से वस्तुओ के गुण मे बहुत कुछ फेरफार हो जाता है।

परमाणुओ के बीच अतर की धारणा न होने के कारण वैशेषिको को 'पीलुपाक' नामक विलक्षण मत ग्रहण करना पडा। इस मत के अनुसार घडा आग मे पडकर इस प्रकार लाल होता है कि अग्नि के तेज से घडे के परमाणु अलग अगल हो जाते हैं और फिर लाल होकर मिल जाते हैं। घडे का यह बनना और बिगडना इतने सूक्ष्म काल मे होता है कि कोई देख नही सकता।

परमाणुओं का सयोग सृष्टि के आदि मे कैसे होता है, इस संबध मे कहा गया है कि ईश्वर की इच्छा या प्रेरणा से परमाणुओ मे गति या क्षोभ उत्पन्न होता है और वे परस्पर मिलकर सृष्टि की योजना करने लगते हैं। ऊपर जो नौ द्रव्य कहे गए हैं, उनमे 'आत्मा' भी है। आत्मा दो प्रकार का कहा गया है—ईश्वर और जीव। ईश्वर की सत्ता और कर्तृत्व मानने के कारण ही न्याय और वैशेषिक मतों एव पौराणिको के आक्षेपों से बचे रहे है।

और दर्शनो के समान इस दर्शन पर भाष्य नही मिलते। प्रशस्तपाद का 'पदार्थ-धर्म संग्रह' नामक ग्रंथ वैशेषिक सूत्रो का भाष्य कहा जाता है, पर वह वास्तव मे भाष्य नही है, सूत्रो के आधार पर बना हुआ अलग ग्रथ है।

२ कणाद का अनुयायी। वैशेषिक दर्शन का माननेवाला।

वैशेष्य—सज्ञा पुं० [स०] १ विशेष का भाव। विशेषता। सर्वोत्तमता। श्रेष्ठता। २ जाति या गुणगत प्राधान्य। प्रमुखता (को०)।

वैश्मिक—वि० [स०] वेश्मवाला। घरवाला। घर मे रहनेवाला (को०)।

वैश्य—सज्ञा पुं० [स०] भारतीय आर्यों के चार वर्णों मे से तीसरा वर्ण जो 'द्विजाति' के अतर्गत और उसमे अतिम है।

विशेष—'वैश्य' शब्द वैदिक विश् से निकला है। वैदिक काल मे प्रजा मात्र को विश् कहते थे। पर बाद मे जब वर्णव्यवस्था हुई, तब वाणिज्य व्यसाय और गोपालन आदि करनेवाले लोग वैश्य कहलाने लगे। इनका धर्म यजन, अध्ययन और पशुपालन तथा वृत्ति कृषि और वाणिज्य है। आजकल अधिकाश वैश्य प्राय: वाणिज्यव्यवसाय करके ही जीविकानिर्वाह करते हैं। इन वैश्यो मे देश और वश आदि के भेद से अनेक जातियाँ और उपजातियाँ पाई जाती है जैसे,—अग्रवाल, ओसवाल, रस्तोगी, भाटिए आदि।

वैश्यकर्म—सज्ञा पु० [सं० वैश्यकर्मन्] वैश्य का कर्तव्य कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य आदि।

वैश्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्य का भाव या धर्म। वैश्यत्व।

वैश्यत्व—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैश्यता'।

वैश्यध्वसी—वि० [स० वैश्यध्वसिन्] वैश्यो का नाश करनेवाला।

वैश्यभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की वैश्या और भद्रा नाम की दो देवियाँ।

वैश्यभाव—सज्ञा पुं० [स०] वैश्यत्व। वैश्यकर्म (को०)।

वैश्ययज्ञ—सज्ञा पु० [स०] वैश्यो द्वारा किया जानेवाला यज्ञ (को०)।

वैश्यवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्य की जीविका का साधन। व्यापार आदि वैश्यकर्म (को०)।

वैश्यसव—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सव या यज्ञ।

वैश्यस्तोम—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

वैश्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वैश्य जाति की। २. हलदी। ३ बौद्धो की एक देवी (को०)।

वैश्रभक[1]—सज्ञा पु० [सं० वैश्रम्भक] पुराणानुसार देवताओ के एक उद्यान या बाग का नाम।

वैश्रभक[2]—वि० १. विश्वस्त। विश्रभयुक्त। २ जाग्रत या चेतन करनेवाला (को०)।

वैश्रवण—सज्ञा पु० [स०] १ कुबेर। २ शिव। महादेव। ३ रावण (को०)। ४ चौदहवाँ मुहूर्त (को०)।

वैश्रवणानुज—सज्ञा पुं० [स०] कुबेर का भाई रावण, कुभकर्ण आदि (को०)।

वैश्रवणालय—सज्ञा पुं० [सं०] १ कुबेर के रहने का स्थान। २. वट वृक्ष। बड का का पेड। बरगद।

वैश्रवणावास—सज्ञा पु० [स०] १. वट वृक्ष। बरगद का पेड। २ दे० 'वश्रवणालय' (को०)।

वैश्रवणोदय—सज्ञा पु० [स०] १ वट वृक्ष। बरगद का पेड। २ दे० 'वश्रवणावास' (को०)।

वैश्रवन(पु)—सज्ञा पु० [स० वैश्रवण] कुबेर। वैश्रवण। उ०—पुन्य जनेश्वर वैश्रवन धनद अलविल होइ।—नंद० ग्र०, पृ० ६०।

वैश्व[1]—वि० [स०] विश्वदेव सबधी। विश्वदेव का।

वैश्व[2]—सज्ञा पु० उत्तराषाढा नक्षत्र का एक नाम।

वैश्वजनीन[1]—वि० [स०] विश्व भर के लोगों से सबध रखनेवाला। समस्त ससार के लोगो का।

वैश्वजनीन[2]—सज्ञा पु० वह जो समस्त ससार के लोगो का कल्याण करता हो।

वैश्वज्योतिष—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

वैश्वदेव—सज्ञा पु० [स०] १ वह होम या यज्ञ आदि जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय। इसमे केवल पके हुए अन्न से विश्वदेव के उद्देश्य से आहुति दी जाती है और ब्राह्मणो को भोजन कराने की आवश्यकता नही होती है। २ उत्तराषाढा नक्षत्र (को०)।

वैश्वदेवत—सज्ञा पुं० [स०] उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता विश्वदेव माने जाते हैं।

वैश्वदैविक—वि० [स०] विश्वदेव सबधी। विश्वदेव का।

वैश्वदेव्य—वि० [स०] विश्वदेव सबधी [को०]।

वैश्वदैवत—सज्ञा पु० [स०] उत्तराषाढा नक्षत्र।

वैश्वमनस—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का साम।

वैश्वयुग—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति के पाँच सवत्सरो का युग या समूह।

विशेष—इन पाँच सवत्सरो के नाम क्रमश शोभकृत्, शुभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव हैं। इनमे से पहले दो सवत्सर शुभ और शेष अशुभ माने जाते हैं।

वैश्वरूप'—सज्ञा पु० [स०] ससार। विश्व [को०]।

वैश्वरूप'—वि० विविध रूपोवाला। विविध प्रकार का। अनेक ढग का [को०]।

वैश्वरूप्य—सज्ञा स० [स०] विविध रूप या विभिन्न प्रकार का होने का भाव। विविधरूपता। विभिन्नता [को०]।

वैश्वस्त्य सज्ञा पु० [स०] वैधव्य। विधवापन [को०]।

वैश्वानर'—सज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। २ चित्रक या चीता नाम का वृक्ष। ३. पित्त। पित्ता। ४ परमात्मा। ५ चेतन। ६ जठराग्नि (को०)।

वैश्वानर'—वि० १ सभी लोगो के लिये उपयुक्त। २ सार्वभौम। सार्वजनीन। सार्वलौकिक। ३ राशिचक्र का। राशिचक्रीय [को०]।

वैश्वानरचूर्ण—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण जो सेंधा नमक, अजवायन और हर्रे आदि से बनाया जाता है। यह आमवात, शूल और गुल्म आदि के लिये बहुत उपयोगी माना जाता है।

वैश्वानरपथ, वैश्वानरमार्ग—सज्ञा पु० [स०] अग्निकोण या पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना जो वैश्वानर का मार्ग माना जाता है।

वैश्वानरमुख—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

वैश्वानरवटी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार की गोली जो पारे, गधक, ताँबे, लोहे, शिलाजीत, सोठ, पीपल, चित्रक तथा मिर्च आदि के योग से बनाई जाती है और जो पेट के रोग मे उपकारी मानी जाती है।

वैश्वानरविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

वैश्वानरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अग्निकोण। चद्रवीथी का एक भाग। २ प्रति वर्ष के प्रारभ मे की जानेवाली एक प्रकार की विशेष बलि [को०]।

वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक—वि० [स०] विश्वामित्र का। विश्वामित्र सबधी [को०]।

वैश्वासिक—वि०, सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० वैश्वासिकी] वह जिसपर विश्वास किया जाय। एतबार करने के काबिल। विश्वस्त।

वैश्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तराषाढा नक्षत्र।

वैष्ट—सज्ञा पु० [स०] वधकर्ता। काटनेवाला। हिंसक [को०]।

वैषम—सज्ञा पु० [स०] १ विषम होने का भाव। विषमता। २ परिवर्तन। (को०)

वैषमेषव—वि० [स०] विषमेषु सबधी। कामदेव सबधी।

वैषम्य—सज्ञा पु० [स०] १ विषम होने का भाव। विषमता। २ समतल न होना। ३ अनुपातरहित होना (को०)। ४ कठिनाई। सकट। विपत्ति (को०)। ५. अन्याय। अनौचित्य (को०)। ६. भूत (को०)। ७ एकाकीपन (को०)।

वैषयिक'—वि० [स०] १. विषय सबधी। विषय का। २ पदार्थ सबधी (को०)।

वैषयिक'—सज्ञा पु० वह जो सदा विषय वासना मे रत रहता हो। विषयी। लपट।

वैषुवत्—वि०, सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैषुवत' [को०]।

वैषुवत्'—सज्ञा पु० [स०] १. विषुवत सक्राति। २ केंद्र। मध्य।

वैषुवत्'—वि० [वि० स्त्री० वैषुवती] १ केंद्रवर्ती। २ विषुव रेखा सबधी [को०]।

वैषुवतीय—वि०, सज्ञा पुं० [स०] दे० 'वैषुवत्' [को०]।

वैष्क—सज्ञा पु० [स०] १ हिंस्र पशु द्वारा मारे हुए पशु का मास। २ जाल मे फँसाए गए पशु का मास [को०]।

वैष्किर'—सज्ञा पु० [स०] वह पशु या पक्षी जो चारो ओर घूम फिरकर आहार प्राप्त करता हो।

वैष्किर'—वि० १ जिसमे पशु पक्षी हो। २ चूजे के मास का बना हुआ रसा [को०]।

वैष्टभ—सज्ञा पु० [स० वैष्टम्भ] एक प्रकार का साम।

वैष्टिक—सज्ञा पु० [स०] वह जिससे जबरदस्ती काम लिया जाय। बेगार मे काम करनेवाला व्यक्ति [को०]।

वैष्टुत, वैष्टुभ—सज्ञा पु० [स०] होम की भस्म। भस्म [को०]।

वैष्ट्र—सज्ञा पु० [स०] १ स्वर्ग। २ वायु। ३ विष्णु। ४ लोक। विश्व का एक प्रभाग (को०)। ५, ससार (को०)।

वैष्णव'—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० वैष्णवी] १ वह जो विष्णु की आराधना करता हो। विष्णु की उपासना करनेवाला। २ हिंदुओ का एक प्रसिद्ध धार्मिक सप्रदाय। इस संप्रदाय के लोग प्रधानत विष्णु की उपासना करते ह और अपेक्षाकृत बड़े आचार विचार से रहते हैं।

विशेष—भारतवर्ष मे विष्णु की उपासना बहुत प्राचीन काल से चली आती है। महाभारत के समय मे यह धर्म पाचरात्र या नारायणीय धर्म कहलाता था। पीछे यही भागवत धर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इसमे वासुदेव या कृष्ण की उपासना प्रधान हुई। नारायणीय आख्यान मे लिखा है कि पहले नारायण ने इस धर्म का उपदेश ब्रह्मा को किया था। ब्रह्मा ने नारद को, नारद ने व्यास को और व्यास ने शुकदेव को यह धर्म बतलाया था, और तब शुकदेव से सर्वसाधारण मे यह धर्म प्रचलित

हुआ था। शकराचार्य ने इस मत को अवैदिक सिद्ध करना चाहा चाहा था, जिसका रामानुजाचार्य ने खडन किया। बीच मे इस धर्म का कुछ ह्रास हो गया था, पर चैतन्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य आदि आचार्यो ने इस धर्म का फिर से बहुत अधिक प्रचार किया, और इस समय यह भारत के मुख्य सप्रदायो मे से एक है। यह धर्म भक्तिप्रधान है और इसमे विष्णु ही उपास्य हैं। आजकल इस सप्रदाय की अनेक शाखाएँ और प्रशाखाएँ निकल आई है—चैतन्य, वल्लभ इत्यादि। अधिक सप्रदाय विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण के उपासक है। कुछ सप्रदायवाले माथे पर के तिलक के अतिरिक्त शख, चक्र, गदा, पद्म आदि चिह्न भी शरीर मे अकित कराते है।

३ यज्ञकुड की भस्म। ४ विष्णुपुराण। ५. विष्णु का लोक। वैकुठ (को०)। ६ श्रवण नक्षत्र (को०)।

वैष्णव[2]—वि० १ विष्णु सबधी। विष्णु का। २ विष्णु को इष्टदेव माननेवाला।

वैष्णवत्व—सज्ञा पु० [स०] वैष्णव होने का भाव या धर्म। वैष्णवता।

वैष्णवस्थानक—सज्ञा पुं० [स०] नाटक मे रगमच पर लबे डग भरना (को०)।

वैष्णवाचार—सज्ञा पुं० [स०] वैष्णवो का आचार (को०)।

वैष्णवी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की शक्ति। २ दुर्गा। ३ गगा। ४ अपराजिता या कोयल नाम की लता। ५ शतावर। ६ तुलसी। ७. पृथ्वी। श्रवण नक्षत्र। ९ एक प्रकार का साम।

वैष्णव्य—वि० [स०] विष्णु सबधी। विष्णु का।

वैसदर ⓤ†—सज्ञा पुं० [स० वैश्वानर, प्रा० हिं० वैसनर वैसदर] दे० वैश्वानर। उ०—वैसदर विकार।—गोरख० पृ० २५५।

वैस ⓤ—सज्ञा स्त्री० [सं० वयस दे० 'वस' (वयस्)। उ०—यो वरष्प दुग्ग वित्ति गय भइय वैस वर उच।—पृ० रा०, २५।१७६।

वैसणहार ⓤ†—वि० [हिं० बैठना-वैसना+हार (प्रत्य०)] १. डूबनेवाला। २ बैठनेवाला। उपवेशन करनेवाला। उ०—औघट दरिया क्यो तिरै, वोहिथ वेसणहार। दादू खेवट राम बिन, कौण उतारै पार।—दादू०, पृ० ४६१।

वैसर्गिक—वि० [स०] जो विसर्जन करने या त्यागने के योग्य हो। त्याज्य।

वैसर्जन—सज्ञा पु० [सं०] १ विसर्जन करने या उत्सर्ग करने की क्रिया। २. वह जो विसर्जित या उत्सर्ग किया जाय। ३. यज्ञ की बलि।

वैसर्प—सज्ञा पु० [स०] १ विसर्प नामक रोग। २ वह जो विसर्प रोग से आक्रात हो।

वैसा—क्रि० वि० [स०, एतादृश से व्युत्पन्न ऐसा के समान हिं० 'वह' से व्युत्पन्न रूप] १ उस प्रकार का। उस तरह का। जैसे—जैसा दुपट्टा तुमने पहले भेजा था वैसा ही एक और भेज दो। २ उस प्रकार। ३ उतना।

वैसादृश्य—सज्ञा पु० [स०] १. असदृश या असमान होने का भाव। असमानता। विषमता। २. फर्क। भेद। अतर।

वैसाना†—क्रि० स० [हिं०] दे० 'बिठाना', 'बैठना'। उ०—माघ पडित ईम उचरई, चउरी कुँवर वैसाडी छई आँणि।—बी० रासो, पृ० २१।

वैसारिण—सज्ञा पु० [स०] मछली।

यौ०—वैसारिणकेतन = मीनकेतन। कामदेव।

वैसासण†—क्रि० स० [स० विश्वासन, प्रा० विस्सासण, वीसासण, राज० वैसासण] विश्वास। उ०—पथी एक सदेसणउ लग ढालइ पैहच्याइ। सावज संवल तोडस्यइ, वैसासणइ न जाइ—ढोला०, दू० १३३।

वैसूचन—सज्ञा पुं० [सं०] नाटक मे पुरुष द्वारा स्त्री का वश बनाकर अभिनय करना (को०)।

वैसृप—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

वैसे—क्रि० वि० [हिं०] १ उस तरह। उस प्रकार। २ उस प्रकार के।

वैसेषिक ⓤ—सज्ञा पुं० [सं० वैशेषिक] दे० 'वैशेषिक'। उ०—वैसेषिक शास्त्र पुनि कालवादी ह प्रसिद्ध। पातजलि शास्त्र माहि योगवाद ह लह्या।—सनवाणी०, २। ११९।

वैस्तारिक—वि० [स०] विस्तार सबधी। विस्तार का।

वैस्नव ⓤ—वि० [वैष्णव] दे० 'वैष्णव'। उ०—श्री वल्लभ कुल को रही चेरी, वैस्नव जन का दास कहाऊँ।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० २२९।

वैस्पष्ट्य—सज्ञा पुं० [स०] स्पष्टता। स्पष्ट या साफ होने का भाव। सुस्पष्टता। विस्पष्टता (को०)।

वैस्वर्य—सज्ञा पु० [स०] १ स्वर का विकृत होना। गला बैठना। विस्वर होना। २ उच्चारण का विभिन्नता वा उतार चढ़ाव (को०)।

वैहग—वि० [सं० वैहङ्ग] विहग सबधी। विहग का।

वैहग—वि० [स०] दे० 'वैहग'।

वैहस्त्य—सज्ञा पु० [स०] सभ्रम। व्याकुलता। व्यग्रता। मोह (को०)।

वैहायस[1]—सज्ञा पु० [स०] १. एक सरावर। २ आकाश। व्योम। गगन। ३ व्योमगमन करना। ४ देवता (को०)।

वैहायस—वि० १. आकाशचारी। २ विहायस सबधी। आकाश सबधी। ३ वायु या पवन सबधी। ३ आकाश मे स्थित। व्योम मे स्थित (को०)।

वैहार[1]—सज्ञा पु० [स० वैभार] एक पर्वत जो मगध मे राजगृह के पास है। वैभार।

वैहार[2]—सज्ञा पुं० [स० व्यवहार, हिं० व्योहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—जीवन घडी तै नवि रहई। जाणसू कागली हुआ वैहार।—बी० रासो, पृ० ९३।

वैहारिक—वि० [स०] विहार के काम मे प्रयुक्त। विहार के योग्य विहार करने लायक (को०)।

वैहार्य—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसके साथ हँसी मजाक आदि का सबध हो। जैसे,—साला, सरहज, साली आदि। २ हास परिहास। दिल्लगी (को०)।

वैहाली—सज्ञा स्त्री० [सं०] शिकार । आखेट (को०) ।

वैहासिक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो सबको हँसाता हो । विदूषक । भाँड । २ नट । अभिनेता (को०) ।

वैह्वल—सज्ञा पु० [स०] १ विह्वलता । व्याकुलता । २ शक्तिहीनता । कमजोरी (को०) ।

वोट—सज्ञा पुं० [स० वोएट] डठल । वृत (को०) ।

वोतिस†—वि० [स० ऊनत्रिंश, प्रा० ओणतिस] दे० 'उनतिस' और 'ओनतिस' ।—इद्रा०, पृ० १६१ ।

वो—सर्व० [हिं०] दे० 'वह' । उ०—वो प्रभु अविगत अविनासी । दास कहाय प्रगट भे वासी ।—कबीर सा०, पृ० ४०१ ।

वोइल†—सज्ञा पु० [देश०] जमानत । जामिन । दे० 'ओल' । उ०—तुम प्रभु दीनदयाल रघुपति वोइल दिवाइय ।—कबीर सा०, पृ० १६० ।

वोई†—सर्व० [हिं० वह+ही] दे० 'वही' । उ०—फली वो वदी याँ वो तेरी थी । हुआ वोई च हासिल जो पेरी थी ।—दक्खिनी०, पृ० ६० ।

वोक†'—सज्ञा पु० [स० वर्क, हिं० वकरा, वोकरा] वकरा । वोक । उ०—वोक निलज्ज चरत नित डोलै । वकरी सग कामरन बोलै ।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३३४ ।

वोक²—सज्ञा पु० [स० ओकस्-ओक] निवास । घर । ओक ।

वोक्काण—सज्ञा पु० [स०] १. बृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम । २ इस देश का निवासी । ३ इस देश का अश्व । ४ दे० 'वोक्काण' ।

वोछा†—वि० [देश०] हलका । साधारण । दे० 'ओछा' ।

वोज—सज्ञा पु० [देश०] दे० 'वोज' । अश्वविशेष । उ०—लीले लक्खी लक्ख वोज बादामी चीनी ।—सुजान०, पृ० ८ ।

वोट'—सज्ञा पु० [अ०] वह सम्मति जो किसी सार्वजनिक पद पर किसी को निर्वाचित करने या न करने, अथवा सर्वसाधारण से सबध रखनेवाले किसी नियम या कानून आदि के निर्धारित होने या न होने आदि के विषय मे प्रकट की जाती है । किसी सार्वजनिक कार्य आदि के होने या न होने आदि के सबध मे दी हुई अलग अलग राय । छद ।

विशेष—आजकल सभा समितियो मे निर्वाचन के सबध मे या और किसी विषय मे सभासदो अथवा उपस्थित लोगो की सम्मतियाँ ली जाती हैं । यह सम्मति या तो हाथ उठाकर या खडे होकर या कागज आदि पर लिखकर प्रकट की जाती है । इसी सम्मति को वोट कहते है । आजकल प्राय म्युनिसिपल और डिस्ट्रिक्ट बोर्डो तथा काउसिलो (प्रातीय विधानसभा, लोकसभा) आदि के चुनाव मे कुछ विशिष्ट अधिकारप्राप्त लोगो से वोट लिया जाता है । भारतवर्ष मे प्राचीन बौद्धकाल मे और उसके पहले भी इससे मिलती जुलती सम्मति देने की प्रथा थी, जिसे छदस् या छद कहते थे ।

क्रि० प्र०—देना ।—माँगना ।

वोट²—सज्ञा स्त्री० [हिं० ओट] १ ओट । आड । उ०—इक पट वोट वोरि सुख कीजै । आवहु वलि छिन छिन छबि छीजै ।—नद० ग्र०, पृ० १६५ । २ ओट करने का पट । दुपट्टा । चादर वा चूनरी आदि का वह अश जिससे ओट या घूँघट किया जाता है । उ०—पहिरै कनक कडा औ बागा । वोट गै पाट उपर मनि लागा ।—इद्रा०, पृ० ११४ ।

वोट आफ सेसर—सज्ञा पु० [अ०] निंदा का प्रस्ताव । निंदात्मक प्रस्ताव । जैसे,—परिषद् ने बहुमत से सरकार के विरुद्ध वोट आफ सेंसर पास किया ।

वोटना†—क्रि० स० [हिं० ओट+करना] आड करना । उ०—इक पट वोट वोटि मुख कीजै । आवहु वलि छिन छिन छवि छीजै । नद० ग्र०, पृ० १६५ ।

वोटर—सज्ञा पुं० [अ०] वह जिसे वोट या सम्मति देने का अधिकार प्राप्त हो । वोट या सम्मति देनेवाला ।

यौ०—वोटर लिस्ट ।

वोटर लिस्ट—सज्ञा स्त्री० [अ० वोटर+लिस्ट] वह सूची जिससे किसी विषय मे वोट देने के अधिकारियो के नाम और पते आदि लिखे रहते हैं । वोट देनेवालो की सूची ।

वोटा—सज्ञा स्त्री० [स०] दासी । मजदूरनी । दाई । पोटा ।

वोटिग—सज्ञा स्त्री० [अ०] मतदान की क्रिया । मत देने की क्रिया । चुनाव मे अपना वोट देने का कार्य ।

वोड—सज्ञा पु० [स०] सुपारी ।

वोड़ना—क्रि० स० [हिं० ओढना] १. विस्तार करना । फैलाना । २ रोकना । सहना ।

वोड्र—सज्ञा पुं० [स०] १ गोह नामक जतु । गोनस सर्प । ३. एक प्रकार की मछली ।

वोड्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] पण का चतुर्थाश (को०) ।

वोढ'—सज्ञा पु० [सं०] १ वोढू ऋषि । २ कदम का पेड । कदव वृक्ष ।

वोढ²—वि० विवाहित । जिसका उद्वाह हो चुका हो (को०) ।

वोढना†—क्रि० स० [स० आवेष्ठन या उपवष्ठन, प्रा० आवठ्ठण] दे० 'ओढना' । उ०—लाल कमली वोढ़े पेनाए, वेसु हरि ये कैसे बनाए ।—दक्खिनी०, पृ० १०३ ।

वोढनी†—सज्ञा पु० [देशी ओड्ढण ओड्ढणिगा] ओढने का वस्त्र । ओढना । उ० - वोढनी है नरलज्जता की अपकीरति नूपुर के सुर गावत । लोभ को छोर धरे लटुवा मन रे नटुवा भयो भाव बतावत ।—सातसतक, पृ० ४, छद १८ ।

वोढव्य—वि० [स०] १ वहन करने योग्य । वाह्य । २ परिणेतव्य । परिणय करने योग्य । ३ धारण या सहन करने योग्य । ४ खीचने या ले जाने योग्य । ५ पूर्ण करने योग्य (को०) ।

वोढव्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह औरत जो रखने या विवाह के योग्य हो अथवा जिसका विवाह होनेवाला हो (को०) ।

वोढा'—सज्ञा स्त्री० [स०] ऋषभक नाम की ओषधि ।

वोढा²—सज्ञा पु० [स० वोढृ] १ वहन करने, ढाने या ले जानेवाला । भारिक । भारवाहक । २ नेता । पथदर्शक । नायक । ३. पति । परिणेता । शौहर । ४ साँड । वृषभ । ५. सूत । सारथि । ६. कर्षक अश्व । खीचनेवाला घोड़ा । ७. मूढ़ (को०) ।

वोढा[३]—वि० वहन करने या धारण करनेवाला [को०]।

वोढा(पु)[४]—वि० स्त्री० [सं० वोढृ] वहन या धारण करनेवाली। भरी हुई। निमग्न। उ०—यहि परकार कहै रस वोढा। सा स्वाधीन वल्लभा प्रौढा।—नद० ग्र०, पृ० १५।

वोढु—सज्ञा पु० [स०] वह बालक जो पिता के न रहने के कारण अपनी माता के साथ ननिहाल मे रहता हो। पति के न रहने से मायके मे रहनेवाली स्त्री का पुत्र [को०]।

वोढू—सज्ञा पु० [स० वोढु ?] एक प्राचीन ऋषि जिनके नाम से तर्पण के समय जल दिया जाता है।

वोतप्रोत(पु)—वि० [स० ओत प्रोत] एक मे एक बुना हुआ। गुथा हुआ। इतना मिला हुआ कि अलग करना असभव सा हो। अनुस्यूत। उ०—जैसे ततुहि पट लै बाना। वोत प्रोत सा ततु समाना।—सु दर० ग्र०, भा० १, पृ० १११।

वोद—वि० [स०] आर्द्र। गीला।

वोदर(पु)†—सज्ञा स्त्री० [स० उदर अथवा दश०] दे० 'उदर'। उ०—लौद लचीली लौं लचति घालत नहिं सकुचात। लगि जैहै वोदर लला वहै कृसोदर गात।—स० सप्तक, पृ० २६१।

वोदार—सज्ञा पु० [स०] मुरदार्सिगी। ककुद्।

वोदारना†—क्रि० स० [स० अवदारण] ओदारना। फाडना। उ०—खभ ते फारि वोदार दोन्ही नख ते डारेव चीर।—सत० दरिया, पृ० ११६।

वोदाल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली जिसे वोआरी कहते है।

वोद्र(पु)†—सज्ञा पुं० [स० उदर] दे० 'उदर'।

वोधक—सज्ञा पु० [स०] कफ का एक भेद। उ०—कफ भी अवलुपक, क्लेदक, वोधक, तर्पक और श्लेपक इन पाँच भेद से रहता है।—माधव०, पृ० ५८।

वोन‡—सज्ञा स्त्री० [प्रा० वोड्डिया] कपर्दिका। कौडी। उ०—अवतस इक खव खोन। दिसि कक आमिय वोन।—पृ० रा०, ६१। १४८।

वोनतिस†—वि० [सं० ऊनत्रिंश, प्रा० ओणतिस] दे० 'उनतीस'। उ०—वोनतिस अक्षर तापर भेजा सिर्जनहार। तेहि करता कहँ सुमिरहु मेरवँ मित्र तोहार।—इ द्रा०, पृ० १६१।

वोपदेव—सज्ञा पुं० [स०] सस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जो व्याकरण के ज्ञाता एव ग्रथनिर्माता थे।

विशेष—इनका लिखा व्याकरण का प्रसिद्ध ग्रथ मुग्धवोध है। कविकल्पद्रुम तथा और भी इनके लिखे अनेक ग्रथ प्रसिद्ध है। ये हेमाद्रि के समकालीन थे और देवगिरि के यादव राजा के दरवार के मान्य विद्वान् रहे। इनका समय तेरहवी शती का पूर्वार्ध मान्य है।

वोपना†—क्रि० अ० [प्रा० ओप्पा (=शाण), हिं० ओप] चमकना। दीप्त होना। ओपना। उ०—उवटन उवटि अँगन अन्हवाई। वोपी दामिनि लोपी माई।—नद० ग्र०, पृ० १२२।

वोवरा†—सज्ञा पुं० [स० उपविवर, हिं० ओवरी अथवा स० उपगृह] छोटा घर। छोटा मकान। मकान का एक छोटा भाग। कोठरी। उ०—ना वोवरा महल अटारी। अइया मनुपहु बूझि तुम्हारी।—पुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ३२५।

वोम†—सज्ञा पु० [सं० व्योम] आकाश। अतरिक्ष। उ०—वोम अरावै गाजिऐ ढोल हुआ सब दोड। आयौ रणी रामतण हाम वडी राठौड।—रा० रू०, पृ० २८३।

वोर†[१]—सज्ञा स्त्री० [स० अवार(=किनारा)] तरफ। दिशा। ओर। उ०—गँवाँ मिलवन मिस उठि भार। गहगोरी गमनी उहि वोर।—नद० ग्र०, पृ० १७२।

वोर†[२]—सज्ञा पुं० ओर। अत। पार। छोर। उ०—परकाला अरु गजी गनत कहुँ वोर न लहिए।—सु दर०, ग्र०, भा० १, पृ० ७५।

वोरक—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो लिखता हो। लेखक। २ कलाकार। चित्रकार (को०)।

वोरट—सज्ञा पु० [स०] कुद का फूल या पौधा।

वोरता†—सज्ञा पु० [देश०] अश्वविशेष। दे० 'वोज'। उ०—तुकुरा और दुवाज वोरता है छवि दूनी।—सुजान०, पृ० ८।

वोरपट्टी—सज्ञा स्त्री० [स०] गद्दा। तोसक। आस्तरण [को०]।

वोरव—सज्ञा पु० [स०] वोरो धान।

वोरुखान—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का घोडा। सभवत वोरता या वोज [को०]।

विशेष—हेमचद्र के अनुसार यह लाल रग का या हलके भूरे रग का होता था। इसे वोरता, वोज, वोर और वेरुहान भी कहते थे।

वोल—सज्ञा पु० [स०] रसगध। एक गध द्रव्य। दे० 'वोल' [को०]।

वोलक—सज्ञा पु० [स०] जलावर्त। जलगुल्म। भवर [को०]।

वोल्लाह—सज्ञा पु० [स०] वह घोडा जिसकी दुम और अयाल के वाल पीले रग के हो। वुनाह।

वोष्ठ†—सज्ञा पु० [स० ओष्ठ] दे० 'ओष्ठ'।

यौ०—वोष्ठपुट=ओष्ठपुट। उ०—सत सहस्र सहिता भारत व्यास जी के वोष्ठपुटन तें निकसी है।—पोद्दार अभि० ग्र थ, पृ०, ४८४।

वोसूल†—सज्ञा पु० [अ० वसूल] दे० 'वसूल'। उ०—पाप तहसील वोसूल होने लगी।—पलटू०, भा० २, पृ० ३३।

वोहि(पु)—सर्व० [हिं० वह] दे० 'वह'। उ०—सावरो पीतम जहाँ वसै सो दित है वोहि गाँव री।—नद० ग्र०, पृ० ३५१।

वोहित्थ—सज्ञा पु० [स०] वडी नाव। जहाज।

वोकाना†—क्रि० स० [देश०] १ देना। प्रदान करना। हवाले करना। २ झुकाना। लचकाना। उ०—कोई न दिखा तब अपने कलेजे से पलाश की डार मय गुच्छे के मुझे हाथ से वोका दिया।—श्यामा० पृ० ८६।

वौद्ध—सज्ञा पु० [स०] वौद्ध [को०]।

वौषट्—सज्ञा पुं० [स०] अग्नन्यास तथा पितरो या देवो को आहुति देने के समय प्रयुक्त होनेवाला एक उद्गार वा साकेतिक मत्र-विशेष [को०]।

वौसाउ(उ)†—सज्ञा पुं० [स० व्यवसाय] व्यवसाय। व्यापार। उ०—कै काहू को इछा पूरी। बल वौसाउ कीन्ह दुख दूरी। —चित्रा०, पृ० ३४।

व्यकुश—वि० [स० व्यङ्कुश] दे० 'निरंकुश'।

व्यग[1]—सज्ञा पुं० [स० व्यङ्ग] १ मेंढक। मेढक। २ भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे क्रोध या परिश्रम आदि के कारण वायु कुपित होने से मुँह पर छोटी छोटी काली फुसियाँ या दाने निकल आते हैं। ३ वह जिसका कोई अग टूटा हुआ या विकृत हो। लुजा। विकलाग। ४. दे० 'व्यग'।

मुहा०—व्यग की बौछार=बहुत से व्यगभरे वाक्य। व्यग की बहुत सी बातें। उ०—किसी ओर से कही सभ्य व्यग की बौछार आती।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २९२।

५ एक रत्न लहसुनिया (को०) ६ लौह। इस्पात (को०)।

व्यग[2]—वि० १. शरीररहित। २ जो व्यवस्थित न हो। अव्यवस्थित। ३ चक्रहीन। ४ लँगडा [को०]।

व्यगक—सज्ञा पु० [स० व्यङ्गक] पर्वत।

व्यगता—सज्ञा स्त्री० [स० व्यङ्गता] व्यंग का भाव।

व्यगत्व—सज्ञा पु० [स० व्यङ्गत्व] १ किसी अग का न होना या खडित होना। खजता। २. दे० 'व्यगता'।

व्यगार—वि० [स० व्यङ्गार] अगारहीन। ज्वालारहित [को०]।

व्यगार्थ—सज्ञा पु० [स०] दे० व्यग्य'।

व्यगिता—सज्ञा स्त्री० [स० व्यङ्गिता] अगहीनता। विकलागता [को०]।

व्यगी—वि० [स० व्यङ्गिन्] अगविशेष से रहित। अगहीन [को०]।

व्यगुल—सज्ञा पु० [स० व्यङ्गुल] एक अगुल का साठवाँ भाग [को०]।

व्यगुष्ठ—सज्ञा पु० [स० व्यङ्गुष्ठ] एक प्रकार का गुल्म।

व्यग्य[1]—सज्ञा पु० [स० व्यङ्ग्य] १ शब्द का वह अर्थ जो उसकी व्यजना वृत्ति के द्वारा प्रकट हो। व्यजना शक्ति के कारण प्रकट होनेवाला साधारण से कुछ विशिष्ट अर्थ। गूढ और छिपा हुआ अर्थ। विशेष दे० 'व्यजना'। २ वह लगती हुई बात जिसका कुछ गूढ अर्थ हो। ताना। बोली। चुटकी।

क्रि० प्र०—कहना।—छोडना।—बोलना।—सुनना।

व्यग्य[2]—सज्ञा १. व्यजना वृत्ति द्वारा बोधित। परोक्ष सकेत द्वारा सूचित वा उपलक्षित [को०]।

व्यग्यचित्र—सज्ञा पु० [स० व्यङ्ग्य+चित्र] वह चित्र जो किसी व्यक्ति का परिहास करने के लिये बिगाडकर इस प्रकार बनाया जाता है जिसे देखकर दर्शक को स्वभावत हँसी आ जाय। (अँ० कार्टून)।

व्यग्यदाम—सज्ञा पुं० [स० व्यङ्ग्यदामन्] व्यग्य का बधन। उ०—शवरी, गज गणिकादिक, हुए कृष्ट प्रासारिक। पारिक मैं सासारिक अविधा हो व्यग्यदाम।—प्रारावना, पृ० १४।

व्यग्यरूपक—सज्ञा पु० [स० व्यङ्ग्यरूपक] वह रूपक जिसमे अप्रस्तुत योजना व्यक्त न होकर प्रच्छन्न हो। प्रच्छन्न रूपक। उ०—काव्य के वर्तमान समीक्षको की दृष्टि मे दबी हुई या प्रच्छन्न अप्रस्तुत योजना, जिसे हमारे यहाँ व्यग्यरूपक कहेगे, बहुत उत्कृष्ट मानी जाती है।—चितामणि, भा० २, पृ० २२३।

व्यंग्योक्ति—सज्ञा स्त्री० [स० व्यङ्ग्य+उक्ति] परिहास वचन। चुभती हुई बात। व्यग्यपूर्वक कही गई बात [को०]।

व्यज—सज्ञा पुं० [स० व्यञ्जन] १. परिचायक चिह्न। २ प्रकाशन। उ०—चदवधू सिर व्यंज धरे वसुमत्ति सु रज्जिय।—पृ० रा०, २५।३५।

व्यजक[1]—वि० [स० व्यञ्जक] १. व्यजित करनेवाला। २ प्रकाशक [को०]।

व्यजक[2]—सज्ञा पु० १ भावप्रकाशन की चेष्टा। २ वह शब्द जो गूढार्थ को प्रकट करे। ३ सकेत। ४ अभिनय [को०]।

व्यंजन—सज्ञा पु० [स० व्यञ्जन] १ व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया। २. शब्द की तीन शक्तियो मे एक का नाम। विशेष दे० 'व्यजना'। ३. चिह्न। निशान। रूप। ४. अवयव। अग। ५. मूँछ। ६. दिन। ७ पेडू के नीचे का स्थान। उपस्थ। ८ तरकारी और साग आदि जो दाल, चावल, रोटी आदि के साथ खाए जाते है। ९ (साधारण बोलचाल मे) पका हुआ भोजन। १०. वर्णमाला मे का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता से न बोला जा सकता हो। हिंदी वर्णमाला मे 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यजन हैं। ११ गुप्तचर या गुप्तचरो का मडल। वयस्कता। १२. उ०—जब पूर्वोक्त प्रारूप प्रकट हो जाय तब उसको रूप ऐसे कहते हैं और सस्थान, व्यजन, लिंग, लक्षण, चिह्न और आकृति यह छह शब्द रूप के पर्याय है।—माधव०, पृ० ५। १३ निदान। लक्षण (को०)। १४ लिंगद्योतक या स्मारक चिह्न। जैसे, मूँछ, दाढी, स्तन आदि (को०)। १५ स्मारक (को०)। १६ कपट वेश। छद्म वेश (को०)। १७ बलि पशु का सस्कार या पूजन (को०)। १८ पखा। व्यजन (को०)।

व्यजनकार—सज्ञा पु० [स० व्यञ्जनकार] रसोइया। व्यजन बनानेवाला व्यक्ति। सूपकार।

व्यजनतालिका—पज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जन+तालिका (=सूची)] विक्रेतव्य भोज्य वस्तुओ की सूची। (अ०) मेनू। व्यजनिका।

व्यजनसधि—सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जनसन्धि] व्याकरण के अनुसार व्यंजन वर्ण का व्यजन वर्ण के साथ होनेवाला सबंध।

व्यजनहारिका—सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जनहारिका] १ पुराणानुसार एक प्रकार की अमगलकारिणी शक्ति जो विवाहिता लड़कियो के बनाए हुए खाद्य पदार्थ उठा ले जाती है। २ वह चुडैल जो स्त्रियो के भगस्थ बाल उडा ले जाती है।

व्यजना—सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जना] १ प्रकट करने की क्रिया। २ शब्द की तीन प्रकार की शक्तियो या वृत्तियो मे से एक प्रकार की शक्ति या वृत्ति।

विशेष—व्यजना शक्ति द्वारा शब्द या शब्दसमूह के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ का बोध होता

है। जैसे यदि कोई कहे कि 'तुम्हारे चेहरे पर पाजीपन झलक रहा है'। दूसरा व्यक्ति कहे कि 'मुझे आज ही जान पडा है कि मेरे चेहरे मे दर्पण का गुण है' तो इससे यह अर्थ निकलेगा कि तुमने मेरे दर्पण रूपी चेहरे मे अपना प्रतिबिंब देखकर उसमे पाजीपन की झलक पाई है। शब्दो की जिस शक्ति से यह अभिप्राय निकला, वही व्यंजना शक्ति है। इसके शाब्दी और आर्थी ये दो भेद माने गए हैं और इन दोनो भेदो के भी कई उपभेद किए गए है।

व्यजनावृत्ति सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जनावृत्ति] १ व्यंजनाशक्ति। २. साहित्य शास्त्र तथा अन्य शास्त्रो में स्वीकृत शब्द शक्ति का एक प्रकार जिसका बोधक शब्द व्यजक कहा जाता है तथा जिससे बोध्य अर्थ व्यग्य कहा गया है। इसी शक्ति का एक रूप ध्वनि या ध्वनित अर्थ होता है। शृगारादि रस ध्वन्यर्थ हैं। ३ व्यग्यपूर्ण लेखन वा कथन की शैली [को०]।

व्यंजनिका—सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जनिका] जिसमे व्यजन हो। व्यजन-तालिका।

व्यंजित—वि० [स० व्यञ्जित] १ संकेतित। संकेत द्वारा कथित। २. चिह्नित। ३ व्यंजनावृत्ति द्वारा व्यक्त। व्यक्त [को०]।

व्यजिनी—सज्ञा स्त्री० [स० व्यञ्जिनी] १ व्यजनसमूह। २. वह जो व्यजन करे।

व्यझ(ऊ)†—सज्ञा पुं० [स० विन्ध्य, प्रा० विझ] दे० 'विंध्य'। उ०—किस्न सकल चल अचल, अदिठ अलसत चलतइ। चंदन नभ वन भवन, अंब गिरि व्यझ वसतइ।—पृ० रा०, २१। १५।

व्यंत—वि० [स० व्यन्त] दूर रहनेवाला। दूरस्थ [को०]।

व्यतर—१ सज्ञा पुं० [स० व्यन्तर] जैनो के अनुसार एक प्रकार के पिशाच और यक्ष। २ अतर। अवकाश (को०)। ३ अतर न होना (को०)।

व्यदना(ऊ)—क्रि० स० [स० विद्] जानना। जान पडना। ज्ञात होना। उ०—मृदु मृदग धुनि संचरिय, अलि अलाप मुध व्यद। —पृ० रा०, ६१। १७००।

व्यश देश० पु० [सं०] पुराणानुसार विप्रचित्ति के पुत्र का नाम जो सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

व्यशक—सज्ञा पु० [स०] पर्वत। पहाड।

व्यशुक—वि० [स०] अशुक या वस्त्रहीन। नग्न। निर्वस्त्र [को०]।

व्यस[1]—सज्ञा पुं० [स०] एक राक्षस का नाम।

व्यंस[2]—वि० विस्तृत असवाला। चौडे कधोवाला [को०]।

व्यसक—सज्ञा पु० [स०] १ धूर्त। चालबाज। चालाक। २ ऐंद्र-जालिक। बाजीगर (को०)।

व्यसन—सज्ञा पुं० [स०] १. ठगने या धोखा देने की क्रिया। २ बाँटने की क्रिया। वितरण (को०)।

व्यसित—वि० [स०] १. जो छला गया हो। वचित। प्रतारित। २. पराजित। पराभूत। ३ प्रभावित [को०]।

व्य—सज्ञा पु० [स०] ढकने या आवरण करनेवाला। आच्छादक। परदा करनेवाला [को०]।

व्यक्त[1]—वि० [स०] १. दिखाई देता या झलकता हुआ। प्रकट। जाहिर। २ साफ। स्पष्ट। ३ स्थूल। बडा। ४ दुष्ट। पाजी। ५ विकसित (को०)। ६ विशिष्ट। प्रसिद्ध। विख्यात (को०)। ७ एकाकी। अकेला (को०)। ८. बुद्धिमान। विद्वान् (को०)। ९ विभूषित। सुसज्जित (को०)। १० उष्ण (को०)।

व्यक्त[2]—सज्ञा पुं० १ विष्णु। २ मनुष्य। आदमी। ३ कृत्य। कार्य। काम। ४ साख्य के अनुसार प्रधान, अहकार, इद्रियाँ, तन्मात्र, महाभूत आदि चौबीस तत्व जो पुरुष से उद्भूत माने गए हैं।

विशेष—साख्य के मत से प्रकृति अव्यक्त और पुरुष व्यक्त है। ५ उष्णता (को०)। ६ सुशिक्षित वा विद्वान् व्यक्ति (को०)। ७ जैन मतानुसार ग्यारह गणाधिपों मे से एक (को०)।

व्यक्तकृत्य—सज्ञा पुं० [स०] लोककार्य [को०]।

व्यक्तगधा—सज्ञा स्त्री० [स० व्यक्तगन्धा] १ नीली अपराजिता। २ सनजुही। ३ पिप्पली। पीपल।

व्यक्तगणित—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'अकगणित'।

व्यक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यक्त होने का भाव।

व्यक्ततारक—वि० [स०] [वि० स्त्री० व्यक्ततारका] १. जिसमे तारे चमकते हो। जैसे, आकाश। २. चमकते तारो या पुतलियोवाला।

व्यक्तदृष्टार्थ—सज्ञा पुं० [स०] वह जो देखी हुई बात कहे। चश्मदीद गवाह।

व्यक्तभुक्—सज्ञा पु० [स० व्यक्तभुज्] वह जो व्यक्त एव दृश्यमान् ससार को खाता हो। काल। समय [को०]।

व्यक्तभुज्—सज्ञा पुं० [स०] समय। वक्त।

व्यक्तराशि—सज्ञा स्त्री० [स०] अकगणित मे वह राशि या अक जो व्यक्त किया या बतला दिया गया हो। ज्ञात राशि।

व्यक्तरूप—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

व्यक्तलक्ष्मा—वि० [स० व्यक्तलक्ष्मन्] जिसके लक्षण प्रकट हो। व्यक्त या प्रकट चिह्नोवाला [को०]।

व्यक्तलवण—वि० [स०] जिसमे लवण व्यक्त हो अर्थात् मात्रा से अधिक हो [को०]।

व्यक्तवाक्, व्यक्तवाच्—सज्ञा पु० [स०] सुस्पष्ट कथन। स्पष्ट वाक्यावली।

व्यक्तविक्रम—वि० [स०] जिसका पराक्रम सबको विदित हो [को०]।

व्यक्ताव्यक्त वि० [स० व्यक्त+अव्यक्त] प्रकट और अप्रकट। जो इद्रियातीत हो। उ०—उपनिषदो मे ब्रह्म के लिये व्यक्ताव्यक्त शब्द का प्रयोग किया गया है।—आचार्य०, पृ० ७६।

व्यक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. व्यक्त होने की क्रिया या भाव। प्रकाशित या दृश्य होना। प्रकट होना। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का सारा शरीर, जिसकी पृथक् सत्ता मानी जाती है और जो किसी समूह या समाज का अग समझा जाता है। समष्टि का उलटा। व्यष्टि। ३. मनुष्य। आदमी। जैसे,—कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जो सदा दूसरो का अपकार ही किया करते हैं।

विशेष – यद्यपि यह शब्द सस्कृत मे स्त्रीलिंग है तथापि हिंदी में मनुष्य या आदमी के अर्थ मे यह प्राय: बोला और लिखा जाता है।

४. भूतमात्र। ५ वस्तु। पदार्थ। चीज। ६ प्रकाश। ७. भेद। विभेद (को०)। ८. वास्तविक रूप या प्रकृति (को०)। ९. व्याकरण मे लिंग तथा विभक्ति मे प्रयुक्त प्रत्यय (को०)।

व्यक्तिगत—वि० [स०] १ स्वगत। २. निजी। एक व्यक्ति तक सीमित। उ०—इससे व्यक्तिगत स्वतत्रता कम होती है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ५५।

व्यक्तित्व—सज्ञा पु० [स०] १. व्यक्ति होने का भाव। २. व्यक्ति का असामान्य गुण वा असाधारण विशेषता। किसी मे असामान्य वा असाधारण रूप से पाई जानेवाली विशेषता।

व्यक्तिमुखी—वि० स्त्री० [स०] व्यक्तिविशेष की रुचि या भावना से सबद्ध। एक व्यक्ति तक ही केंद्रित रहनेवाली। उ०—यह प्रणाली समीक्षक की व्यक्तिगत भावना या प्रतिक्रिया को व्यक्त करने का लक्ष्य रखता है, अतएव इसे व्यक्तिमुखी, भावात्मक या प्रभावाभिव्यजक शैली कहते हैं।—नया०, पृ० ३८।

व्यक्तीकरण—सज्ञा पु० [स०] प्रकाशन। प्रकटन। अभिव्यक्ति। उ०—साहित्य मनुष्य के विचारो, उसकी भावनाओ और कल्पनाओ का व्यक्तीकरण है।—पा० सा० सि०, पृ० १।

व्यक्तीकृत—वि० [स०] जो व्यक्त किया गया हो। प्रकट किया हुआ।

व्यक्तीभूत—वि० [स०] जो व्यक्त हुआ हो। प्रकट किया हुआ।

व्यग्र—वि० [स०] १. घबराया हुआ। व्याकुल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३ काम मे फंसा हुआ। ४. उद्यमी। उद्योगी। ५. आसक्त। उ०—मार्ग मे मिस ठिठकती ठहरती सौ बार। गई व्यग्र शकुतला नृप को निहार निहार।—शकुं०, पृ० ९। ६. आग्रही। ७. गतिशील। जैसे चक्र (को०)।

व्यग्र[1]—सज्ञा पु० विष्णु।

व्यग्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यग्र होने का भाव। २. व्याकुलता।

व्यग्रमना—वि० [स० व्यग्रमनस्] व्याकुल मनवाला [को०]।

व्यग्रहस्त—वि० [स०] जिसके हाथ किसी काम मे लगे हो। काम मे फंसा हुआ [को०]।

व्यज—सज्ञा पु० [स०] व्यजन। पखा [को०]।

व्यजन—सज्ञा पु० [स०] १. हवा करने का पखा। उ०—कभी विपिन मे हमे व्यजन का पडता नही प्रयोजन है।—पचवटी, पृ० १०। २ पखे के काम मे आनेवाला कोई वस्तु जिससे हवा की जा सके। ३. पखा झलना (को०)।

व्यजनक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यजन' [को०]।

व्यजनक्रिया—सज्ञा पु० [स०] पखा झलने का कार्य।

व्यजनचामर—सज्ञा पु० [स०] चमरी गाय की वह पूँछ जो पखे की तरह झली जाती है। चवर [को०]।

व्यजनी—सज्ञा पुं० [स० व्यजनिन्] वह पशु जिसकी पूँछ के बालो से व्यजन (चामर) बनता हो [को०]।

व्यज्य[1]—वि० [स०] जिसका बोध शब्द की व्यजना शक्ति के द्वारा हो।

व्यज्य[1]—सज्ञा पु० दे० 'व्यग्य'।

व्यडंबक—सज्ञा पु० [स० व्यडम्बक] रेंड का पेड। एरंड।

व्यडंबन—सज्ञा पु० [स० व्यडम्बन] रेंड का पेड।

व्यड़—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्याडि'।

व्यति—सज्ञा पु० [स०] घोड़ा।

व्यतिकर[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. व्यसन। २. विनाश। बरबादी। ३ मिश्रण। मिलावट। ४. व्याप्ति। सबध। लगाव। तअल्लुक़। ६. समूह। झुड। ७. रगड। घषण (को०)। ८ अतराय। विघ्न। रुकावट (को०)। ९. घटना। वृत्तात (को०)। १०. सुअवसर। सुयोग (को०)। ११ विनिमय। परिवर्तन। अदल बदल (को०)। १२. लाभ (को०)। १३. व्यानाकर्षण (को०)।

व्यतिकर[2]—वि० १. पारस्परिक। २. व्यापक विस्तारवाला। ३ निकट। समीप। आसन्न [को०]।

व्यतिकरित—वि० [स०] १ व्यतिकर युक्त। २. मिश्रित। ३. आपूर्ण। अभिव्याप्त [को०]।

व्यतिकीर्ण—वि० [स०] १ घुला मिला। मिश्रित। २. सयुक्त। एकीभूत (को०)। ३. प्रकापत। सक्षुब्ध (को०)।

व्यतिकृत—वि० [स०] परिव्याप्त [को०]।

व्यतिक्रम—सज्ञा पु० [स०] १. क्रम मे होनेवाला विपर्यय। सिलसिले मे होनेवाला उलटफेर। २. बाधा। विघ्न। ३ उल्लघन। अतिक्रमण (को०)। ४ उदासीनता। उपेक्षा। अवहेलना (को०)। ५ असगति (को०)। ६. पाप। अपराध (को०)। ७. विपत्ति। दुर्भाग्य (को०)। ८. रीतिभग (को०)।

व्यतिक्रमण—सज्ञा पुं० [स०] १ क्रम मे विपर्यय करना। सिलसिले मे उलट फेर करना। २. पाप या अपराध करना (को०)।

व्यतिक्रमी—वि० [स० व्यतिक्रमिन्] व्यतिक्रम या रीति भग करनेवाला। अपराधी [को०]।

व्यतिक्रात[1]—वि० [स० व्यतिक्रान्त] १. जिसमे किसी प्रकार का विपर्यय हुआ हो। २. बिताया हुआ (को०)।

व्यतिक्रात—सज्ञा पुं० १. उल्लघन। २. पाप [को०]।

व्यतिक्रांति—सज्ञा स्त्री० [स० व्यतिक्रान्ति] १. क्रम मे होनेवाला विपर्यय। व्यतिक्रम। २. बुराई (को०)।

व्यतिक्षेप—सज्ञा पु० [स०] १. कहासुनी। वाद विवाद। २. अदल बदल विनिमय [को०]।

व्यतिगत—वि० [स०] बीता हुआ। व्यतीत [को०]।

व्यतिचार—सज्ञा पु० [स०] १. पाप कर्म करना। पाप का आचरण करना। २. दोष। ऐब।

व्यतिपात—सज्ञा पु० [स०] १ बहुत बड़ा उत्पात। भारी उपद्रव या खराबी। २. ज्योतिष के अनुसार योगविशेष। दे० 'व्यतीपात'।

व्यतिभिन्न—वि० [स०] जो अलग न हो सके। परस्पर मिला हुआ। पूर्णत: घुला मिला [को०]।

व्यतिभेद—सज्ञा पुं० [स०] १. प्रवेश। व्याप्ति। २. एक साथ होने वाला। स्फोट [को०]।

व्यतिमूढ़—वि० [स०] कर्तव्यमूढ। अचकचाया हुआ [को०]।

व्यतियात—वि० [स०] गत । गुजरा हुआ ।

व्यतिरिक्त[1]—वि० [स०] १ भिन्न । अलग । २ अधिक । अतिशय । बढा हुआ । ३ रुद्ध । रोका हुआ (को०) । ४ मुक्त (को०) । ५ अपवादित । जिसका अपवाद किया गया हो (को०) ।

व्यतिरिक्त[2]—क्रि० वि० अतिरिक्त । सिवा । अलावा ।

व्यतिरिक्तक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की उडान (को०) ।

व्यतिरिक्तता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यतिरिक्त होने का भाव या धर्म । विभिन्नता ।

व्यतिरेक—सज्ञा पु० [स०] १ अभाव । २ भेद । अतर । भिन्नता । वैषम्य । असमानता । ३ वृद्धि । बढता । ४ अतिक्रम । ५ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे उपमान की अपेक्षा उपमेय मे कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है । उ०—(क) कहत सबै बेंदी दिए अक दस गुनो होत । तिय लिलार बेंदा दिए अगनित बढत उदोत । (ख) निज परताप द्रवहि नवनीता । पर दुख द्रवहि सो सत पुनीता । ६ वियोग । राहित्य (को०) । ७ निष्कासन । अपवर्जन (को०) । ८ न्याय मे असवधरूप पदार्थ । अन्वय का उलटा (को०) । ९ तुलना मे वैपरीत्य दिखाना (को०) । १० एक प्रकार का व्याप्ति (को०) ।

व्यतिरेकी—सज्ञा पु० [स० व्यतिरेकिन्] १ वह जो किसी को अतिक्रमण करके जाता हो । २ वह जो पदार्थो मे विभिन्नता या विशेषता उत्पन्न करता हो । ३. अभावात्मक (को०) । ४ भिन्न । विपरीत (को०) ।

व्यतिरेचन—सज्ञा पु० [स०] दो वस्तुओ या व्यक्तियो मे अतर दिखाने की क्रिया (को०) ।

व्यतिरोपित—वि० [स०] १ अधिकार रहित किया हुआ । २ निकाला हुआ (को०) ।

व्यतिलघी—वि० [स० व्यतिलङ्घिन्] फिसलनेवाला (को०) ।

व्यतिविद्ध—वि० [स०] १ आलिंगित । गुफित । २. विद्ध । छिद्रित (को०) ।

व्यतिव्यस्त—वि० [स०] उलझा हुआ । अत्यत व्यस्त (को०) ।

व्यतिषग—सज्ञा पु० [स० व्यतिषङ्ग] [वि० व्यतिषक्त] १ मिलाना । २. विनिमय । बदला । ६ सयोग (को०) । ४ परस्पर बाँधना । एक साथ गूँथना (को०) । ५ परस्पर भिडना (को०) । ६ अभिशोपण । शोपण (को०) ।

व्यतिषक्त—वि० [स०] १. मिला हुआ । मिश्रित । २ आसक्त । ३ एकमेक । ओतप्रोत । अनुस्यूत (को०) । ४ जिनमे अतर्विवाह हुआ हो (को०) ।

व्यतिहार—सज्ञा पु० [स०] १. विनिमय । परिवर्तन । बदला । २. गाली गलौज । ३ मारपीट ।

व्यतीकार—सज्ञा पुं० [स०] १ व्यसन । २ विनाश । बरबादी । ३ मिश्रण । ४ लडना भिडना (को०) ।

व्यतीत—वि० [स०] १. बीता हुआ । गत । जैसे,—बहुत दिन व्यतीत हो गए, वहाँ से कोई उत्तर नही आया । उ०—इसी प्रकार कभी व्यतीत वर्ष से लेकर ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४१ । २ मृत । मरा हुआ (को०) । ३ विसर्जित । परित्यक्त (को०) । ४ उपेक्षित । अवज्ञात (को०) । ५ लापरवाह । दीर्घसूत्री (को०) ।

व्यतीतकाल—वि० [स०] जिसका समय या अवसर बीत चुका हो । असामयिक (को०) ।

व्यतीतना†—क्रि० अ० [स० व्यतीत+हिं० ना (प्रत्य०)] बीतना । गत होना । व्यतीत होना ।

व्यतीपात—सज्ञा पुं० [स०] १. बहुत बडा उत्पात । भारी उपद्रव । जैसे—भूकप, उल्कापात आदि । २ अपमान । बेइज्जती । ३ ज्योतिष मे विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से १७वाँ योग जिसमे यात्रा अथवा शुभ काम करने का निषेध है । ४ एक प्रकार का योग जो अमावास्या के दिन रविवार या श्रवण, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा अथवा मृगशिरा नक्षत्र होने पर होता है । इस योग मे गगास्नान का बहुत माहात्म्य है । ५ पूर्णत. विचलन या प्रयाण (को०) ।

व्यतीहार—सज्ञा पु० [स०] १ विनिमय । परिवर्तन । बदला । २ आपस मे गाला गलौज, मारपीट या इसी प्रकार का और काम करना ।

व्यत्यय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यतिक्रम' ।

व्यत्ययग—वि० [स०] विपरीतगामी । उलटा चलनेवाला (को०) ।

व्यत्यस्त—वि० [स०] १ व्यतिक्रात । २ असगत । ३ विपरीत । विरोधी । ४ इस प्रकार रखी हुई दो वस्तुएँ जो एक दूसरी को काटती हो ।

व्यत्यास—सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यतिक्रम' ।

व्यथक—सज्ञा पु० [स०] वह जो व्यथा उत्पन्न करता हो । पीडा देनेवाला ।

व्यथन—सज्ञा पु० [स०] १. व्यथा । पीडा । तकलीफ । २ वह जो व्यथा उत्पन्न करता हो । पीडा देनेवाला । ३. कपन (को०) । ४ स्वर का परिवर्तन (को०) । ५ छेदना (को०) ।

व्यथयिता—वि० [स० व्यथयितृ] १. पीडा देनेवाला । २ दडित करनेवाला (को०) ।

व्यथा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पीडा । वेदना । तकलीफ । २ दु ख । क्लेश । ३ भय । डर । ४ विक्षोभ । अशाति (को०) । ५ रोग (को०) । ६ हानि । क्षति (को०) ।

व्यथातुर—वि० [स०] पीडित ।

व्यथान्वित—वि० [स०] १ व्यथायुक्त । पीडायुक्त । २. भयग्रस्त । भीत । ३ क्षुब्ध । ४. दु खित (को०) ।

व्यथित—वि० [स०] १ जिसे किसी प्रकार की व्यथा या तकलीफ हो । २ दु खित । रजीदा । ३. जिसे किसी प्रकार का शोक प्राप्त हुआ हो । ४. भीत । डरा हुआ ।

व्यथी—वि० [स० व्यथिन्] व्यथित (को०) ।

व्यध्य—वि० [सं०] १. व्यथा देने योग्य। २. भय उत्पन्न करनेवाला। भयानक।

व्यध—संज्ञा पुं० [सं०] १ चोट पहुँचाना। आहत करना। २. भेदन। छिद्र करना। ३. आघात (को०)।

व्यधन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बेधने की क्रिया। विद्ध करना। बींधना। २ आखेट (को०)। ३ वह जो विद्ध करता हो। बेधक (को०)।

व्यधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्त का गिरना या बहना। रक्तस्राव (को०)।

व्यधिकरण'—संज्ञा पुं० [सं०] भिन्न आधार पर होना।

व्यधिकरण'—वि० १ व्याकरण में अन्य कारक से संबद्ध। २ भिन्न आधारवाला (को०)।

व्यधिक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] निंदा। शिकायत।

व्यध्य'—संज्ञा पुं० [सं०] १. प्रत्यंचा। २ लक्ष्य (को०)।

व्यध्य'—वि० बेधने योग्य। भेदन करने योग्य (को०)।

व्यध्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ गलत रास्ता। बुरी राह। कुपथ। २ मार्ग का मध्य (को०)।

व्यनुनाद—संज्ञा पुं० [सं०] तीव्र प्रतिध्वनि। ऊँची गूँज (को०)।

व्यपकर्ष—संज्ञा पुं० [सं०] निंदा। अपवाद (को०)।

व्यपकृष्ट—वि० [सं०] १. दूर हटाया हुआ। पृथक् किया हुआ। २. अपवादित जिसकी निंदा की गई हो (को०)।

व्यपगत—वि० [सं०] १ बीता हुआ। गया हुआ। २ रहित। वंचित। ३ गिराया हुआ। मुक्त। ४. हटाया हुआ। दूर किया हुआ।

व्यपगम—संज्ञा पुं० [सं०] १ बीतना। व्यतीत होना। २. गमन। जाना। प्रस्थान (को०)।

व्यपत्रप—वि० [सं०] लज्जाहीन। बेहया (को०)।

व्यपदिष्ट—वि० [सं०] १. निंदित। तिरस्कृत। २ दिखाया हुआ। निर्दिष्ट। ३. बहाने या व्याज के रूप में प्रतिपादित (को०)।

व्यपदेश—संज्ञा पुं० [सं०] १. निंदा। शिकायत। २ व्याख्या। विवरण। (जैन)। ३ सूचना। संदेश (को०)। ४ नामकरण। नाम रखना (को०)। ५. नाम। अभिधान। उपाधि (को०)। ६ परिवार। वंश (को०)। ७ ख्याति। यश। प्रसिद्धि (को०)। ८. छल। कपट। चाल (को०)। ९. चालबाजी। चालाकी (को०)। १०. संयुक्ति। संगोपन। छिपाव (को०)।

व्यपदेशक—वि० [सं०] व्यपदेश करनेवाला। नाम का निर्देश करनेवाला (को०)।

व्यपदेशी—वि० [सं० व्यपदेशिन्] १. झूठक। २ नाम या उपाधिवाला। ३. संज्ञा या निर्देशानुसार व्यवहारवाला (को०)।

व्यपदेश्य—वि० [सं०] १. अपदेश या निंदा के लायक। निंद्य। २ जिसका निर्देश किया जाय (को०)।

व्यपदेष्टा—वि० [सं० व्यपदेष्टृ] १ निर्देशक। निर्देश करनेवाला। २. नायक। संचालक। प्रबंधक (को०)।

व्यपनय—संज्ञा पुं० [सं०] १. विनाश। बरबादी। २. त्याग देना। त्याग। ३. दुर्व्यवहार। अनाचार (को०)। ४. हटाना। दूर करना (को०)।

व्यपनयन—संज्ञा पुं० [सं०] फेंक देना। त्याग।

व्यपनीत—वि० [सं०] दूर हटाया हुआ। दूर किया हुआ।

व्यपनुत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] त्याग। दूर करना या हटाना (को०)।

व्यपमूर्धा—वि० [सं० व्यपमूर्धन्] मूर्धाहीन। सिरविहीन (को०)।

व्यपयान—संज्ञा पुं० [सं०] पलायन होना। भागना। पलायन। हवा होना (को०)।

व्यपरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० व्यपरोपित] १. मुक्त करना। २. काटना। ३. जड़ से काटना। ४. दूर करना। हटाना। ५. आघात पहुँचाना। चोट पहुँचाना (को०)।

व्यपवर्ग—संज्ञा पुं० [सं०] १ अलग होना। संबंधविच्छेद। विभाग। २. छोड़ना। त्याग। ३ पृथक्ता। अंतर।

व्यपवर्जन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० व्यपवर्जित] १ छोड़ना। त्याग। २. निराकरण। ३. दंड। दान।

व्यपवर्तन—संज्ञा पुं० [सं०] व्यावर्तन। लौटना (को०)।

व्यपवृक्त—वि० [सं०] १ अलग या पृथक् किया हुआ। २. विभाजित। बाँटा हुआ (को०)।

व्यपसारण—संज्ञा पुं० [सं०] दूर करना। निराकरण (को०)।

व्यपाकृत—वि० [सं०] वर्जित। रहित। (को०)।

व्यपाकृति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दूर करना। निराकरण। २. अपहरण। गोपन। छिपाव। ३. अस्वीकृति। अस्वीकरण। इनकार करना (को०)।

व्यपाय—संज्ञा पुं० [सं०] १ अंत। नाश। समाप्ति। २ अनुपस्थिति। गमन (को०)।

व्यपाश्रय'—संज्ञा पुं० [सं०] १. आश्रयस्थान। २. आश्रय। ३. विराम। ४ प्रस्थान। ५. अनुकरण। पदचिह्न। ६. शरण लेना। सहारा लेना। निर्भर होना। ७ आना।

व्यपाश्रय'—वि० १ आश्रयहीन। २. आश्रय भरोसे रखनेवाला (को०)।

व्यपाश्रयण—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्भरता। विश्वास (को०)।

व्यपाश्रित—वि० [सं०] जिसने आश्रय प्राप्त किया हो। जिसने सहारा पा लिया हो (को०)।

व्यपास्त—वि० [सं०] निष्कासित। बहिष्कृत (को०)।

व्यपेक्ष—वि० [सं०] १ आशा या आकांक्षा रखनेवाला। आकांक्षी। आशावान्। २. उत्सुक। चाहनेवाला। आकांक्षी। इच्छुक। ३. निरपेक्ष। निर्विकल्प (को०)।

व्यपेक्षक—वि० [सं०] आकांक्षी। आशावान्। आकांक्षक (को०)।

व्यपेक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] आशा। आकांक्षा। उत्साह (को०)।

व्यपेक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आकांक्षा। इच्छा। चाह। २ अनुरोध। आग्रह। ३. आवश्यकता। लक्ष्य (को०)। ४ दूर तक देखने की क्षमता। दिखाव। सुदूरदर्शन। दूरदर्शिता (को०)। ५. व्याकरण (को०)। ६. व्याकरण में दो विषयों का पारस्परिक प्रयोग (को०)।

व्यपेक्षित—वि० [सं०] १. जिसकी आशा या आकांक्षा की जाती हो। २. जिसका विचार करके व्यवस्था की गई हो। ३. आवश्यक। ४. प्रयुक्त। नियुक्त। व्यवहृत (को०)।

व्यपेत—वि० [स०] १. मुक्त। अलग किया हुआ। २. गत। ३ नष्ट। ४ प्रतीप। विपरीत। असाधु। दुष्ट (को०)।

यौ०—व्यपेतकल्मष = जो दोष या पापमुक्त हो। व्यपेतघृण = दयारहित। व्यपतधैर्य = धैर्यहीन। धीरतारहित। जिसे ढाढस न हो। व्यपेतभय = निर्भय। व्यपेतभी = निडर। निर्भय। व्यपेतमद = जिसका गर्व नष्ट हो गया हो। निरभिमान। व्यपेतहर्ष = हर्षरहित। विगतहर्ष।

व्यपोढ—वि० [स०] १ दूरीकृत। दर किया हुआ। २ प्रकटित। व्यक्त। दिखाया हुआ। ३ विपरीत। अननुकूल (को०)।

व्यपोह—सज्ञा पु० [स०] १ विनाश। बरबादी। २ दूर करना। निवारण (को०)। ३ प्रत्याख्यान। अस्वीकार (को०)। ४ समूह। निश्चय। चय (को०)।

व्यपोह्य—वि० [स०] स्वीकार न करने योग्य (को०)।

व्यभिचरण—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'व्यभिचार'। २ निश्चयहीनता। अनिश्चय। सदेह (को०)।

व्यभिचार—सज्ञा पु० [स०] १ बुरा या दूषित आचार। दुष्कर्म। कदाचार। बदचलनी। २ स्त्री का परपुरुष से अथवा पुरुष का परस्त्री से अनुचित सबध। छिनाला। २. न्याय के अनुसार साध्य के न होने पर भी हेतु की उपस्थिति। साध्यरहित हेतु (को०)। ४. अतिक्रमण। उल्लघन (को०)। ५. अलग होने की शक्ति। विच्छेद्यता (को०)। ६. असगति। अपवाद। ७ पाप। दोष (को०)।

व्यभिचारकृत्—वि० [स०] परस्त्रीगामी। व्यभिचारी (को०)।

व्यभिचारिणी—सज्ञा स्त्री० [स०] दुराचार करनेवाली स्त्री। असती। कुलटा। पुश्चली। २ अस्थिर बुद्धि। बुद्धि जो स्थिर न रहे (को०)।

व्यभिचारिता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्यभिचार'।

व्यभिचारित्व—सज्ञा पु० [स०] व्यभिचारी होने का भाव। दे० 'व्यभिचार'।

व्यभिचारिभाव—सज्ञा पु० [स०] साहित्य में मुख्य भाव की पुष्टि करनेवाले वे भाव जो इसके उपयोगी होकर जल के तरगो की भाति उनमे सचरण करते हैं। इनकी सख्या ३३ है। दे० 'सचारी'।

व्यभिचारी—सज्ञा पुं० [स० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. वह जो अपने मार्ग से गिर गया हो। मार्गभ्रष्ट। उ०—हे प्रभु आवगति कला तुम्हारी। हम है कीट जीव व्यभिचारी।—कबीर सा०, पृ० ४३६। २ वह जिसकी चालचलन अच्छी न हो। बदचलन। ३ वह जो परास्त्रियो से सबध रखता हो। परस्त्रीगामी। ४. दे० 'सचारी' या 'व्यभिचारिभाव'। ५. वह जो नियमविरुद्ध हो। असगत (को०)। ६ असत्य। मिथ्या (को०)। ७ वह जो स्थिर न रहे। अस्थायी (को०)। ८. वह जो किसी व्यवस्था, नियम आदि का भग या उल्लघन करता हो (को०)। ९. वह शब्द जिसके कई गौण अर्थ हो।

व्यभिहास—सज्ञा पु० [स०] उपहास। ठट्ठा। मजाक।

व्यभीचार—सज्ञा पुं० [स०] १ अतिक्रमण। उल्लंघन। २. कुकर्म। अनैतिक आचरण। ३. परिवर्तन। दे० 'व्यभिचार' (को०)।

व्यभीमान—सज्ञा पुं० [स०] भ्रात या गलत धारणा (को०)।

व्यभ्र—वि० [स०] निर्मेघ। निरभ्र। बिना बादल का (को०)।

व्यम्ल—वि० [स०] अम्लरहित। जिसमे अम्लता न हो (को०)।

व्यय—सज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ का, विशेषत धन आदि का, इस प्रकार काम मे आना कि वह समाप्त हो जाय। किसी चीज का किसी काम मे लगना। खर्च। सरफा। खपत। जैसे,—(क) उनका व्यय १००) मासिक है। (ख) व्यर्थ अपनी शक्ति व्यय मत करो। २. नाश। बरबादी। ३. दान। ४. छोड देना। परित्याग। ५ बृहस्पति के चार के एक वर्ष या सवत्सर का नाम। ६ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। ७. रुकावट। अडचन (को०)। ८. अपव्यय। फजूलखर्ची (को०)। ९ धन। सपत्ति। १०. जन्मकुडली मे लग्न से १२वाँ स्थान (को०)। ११ व्याकरण मे विभक्ति मे प्रयुक्त प्रत्यय। शब्दरूपातर (को०)।

व्ययक—सज्ञा पुं० [स०] वह जो व्यय करता हो। व्यय करनेवाला।

व्ययकरण, व्ययकरणक—सज्ञा पु० [स०] वह कर्मचारी जो वेतन बाँटने का काम करे (को०)।

व्ययगत—वि०[स०] सब कुछ व्यय कर डालनेवाला (को०)।

व्ययगामी—वि० [स० व्ययगामिन्] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार लग्न से १२ वें स्थान मे गमन करनेवाला। उ०—उनका सौम्य ग्रह बुध व्ययगामी होकर निर्बल हो गया है।—शुक्ल अभि० ग्र०, पृ० ६८।

व्ययगुण—वि० [स०] सब कुछ खर्च करनेवाला।

व्ययगृह—सज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष के अनुसार लग्न से बारहवाँ स्थान (को०)।

व्ययन—सज्ञा पु० [स०] खर्च करना। २. बर्बाद करना। नष्ट करना (को०)।

व्ययपराङ्मुख—वि० [स०] कृपण (को०)।

व्ययमान—वि० [स०] अपव्यय करनेवाला (को०)।

व्ययशाली—वि० [स० व्ययशालिन्] खर्च करनेवाला। शाहखर्च। अमितव्ययी (को०)।

व्ययशील—सज्ञा पु० [स०] वह जो बहुत अधिक खर्च करता हो। खर्चीले स्वभाव का। शाहखर्च।

व्ययसह—वि० [स०] (वह कोश या खजाना) जो रिक्त न हो (को०)।

व्ययसहिष्णु—वि० [स०] धन की हानि या अधिक व्यय को बर्दाश्त करनेवाला (को०)।

व्ययित—वि० [स०] १. खर्च किया हुआ। व्यय किया हुआ। २. बर्बाद। नष्ट (को०)।

व्ययी—सज्ञा पुं० [स० व्ययिन्] वह जो बहुत व्यय करता हो। खूब खर्च करनेवाला। शाहखर्च।

व्यर्ण—वि० [स०] १. जलरहित। जलहीन। २. सताया हुआ। उत्पीड़ित (को०)।

व्यर्थ[1]—वि० [स०] १. जिसका कोई अर्थ या प्रयोजन न हो। विना मतलब का। निरर्थक। २ जिसका कोई अर्थ या मतलब न हो। विना माने का। अर्थरहित। ३. जिसमे किसी प्रकार लाभ न हो। ४. सपत्तिहीन। धनहीन (को०)। ५ असगत (को०)।

व्यर्थ[2]—क्रि० वि० विना किसी मतलब के। फजूल। यो ही। जैसे,—वह दिन भर व्यर्थ घूमा करता है।

व्यर्थक—वि० [स०] व्यर्थ। निष्फल (को०)।

व्यर्थता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यर्थ होने का भाव।

व्यर्थनामक—वि० [स०] दे० 'व्यर्थनामा' (को०)।

व्यर्थनामा—वि० [स० व्यर्थनामन्] जिसमे नाम के अनुरूप गुण न हो। जिसका नाम व्यर्थ हो (को०)।

व्यर्थयत्न—वि० [स०] जिसके लिये प्रयत्न बेकार हो (को०)।

व्यलीक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय। अपराध। कसूर। ३ डाँट डपट। फटकार। ४. दु ख। कष्ट। तकलीफ। ५ पीठमर्द। विट। ६ विलक्षणता। अद्भुतता। ७. कपट। छल। उ०—भोर भयो जागहु रघुनदन। गत व्यलीक भगतनि उर चदन। —तुलसी (शब्द०)। ८. मिथ्यापन (को०)। ९. व्युत्क्रम। वैपरीत्य (को०)। १० कोई भी अप्रिय या असुखद वस्तु (को०)। ११. कामुक। रसिक नागर (को०)। १२. वह जो अप्राकृतिक मैथुन कराए। लौंडा (को०)। १३ दोष। पाप (को०)।

व्यलीक[2]—वि० १ जो अच्छा न हो। अप्रिय। २ दु ख देनेवाला। कष्टदायक। ३. विना जान पहिचान का। अपरिचित। ४ विलक्षण। अद्भुत। अजीब। ५ मिथ्या। झूठा। असत्य (को०)। ६. जो असत्य या अलीक न हो (को०)। ७ अकरणीय (को०)।

व्यलीक निःश्वास—सज्ञा पुं० [स०] शोक का उच्छ्वास। लबी साँस (को०)।

व्यवकलन—सज्ञा पु० [स०] १ एक अक या रकम मे से दूसरा अंक या रकम घटाना। बाकी निकालना। २ अलग करना। पृथक्ता। अलगाव (को०)।

व्यवकलित[1]—वि० [स०] १. घटाया हुआ। बाकी निकाला हुआ। २ पृथक् किया हुआ। वियोजित (को०)।

व्यवकलित[2]—सज्ञा पु० दे० 'व्यवकलन' (को०)।

व्यवकिरण—सज्ञा स्त्री० [स०] घालमेल। मिश्रण (को०)।

व्यवकीर्ण—वि० [स०] १. अलग किया हुआ। निकाला हुआ। जुदा किया हुआ। फैलाया हुआ। २. मिश्रित। पूरित। भरा हुआ (को०)।

व्यवक्रोशन—सज्ञा पुं० [स०] १ निंदा। २ कहासुनी। गालीगलौज। तू तू मैं मैं (को०)।

व्यवगाढ—वि० [स० व्यवगाढ] डूबा हुआ। निमज्जित। निमग्न (को०)।

व्यवगृहीत—वि० [स०] नम्रीकृत। विनत किया हुआ। झुकाया या नीचा किया हुआ (को०)।

व्यवच्छिन्न—वि० [सं०] १ अलग अलग। जुदा। २ विभाग करके अलग किया हुआ। विभक्त। ३ निर्धारण किया हुआ। निर्धारित। निश्चित। ४ अवरुद्ध। बाधित (को०)। ५. विशेषित। विशिष्ट। अंकित (को)।

व्यवच्छेद—सज्ञा पु० [स०] १ पृथक्ता। पार्थक्य। अलगाव। २ विभाग। खड। हिस्सा। ३. विराम। ठहरना। ४. निवृत्ति। छुटकारा। उ०—अपने को समझना चाहती हूँ, इससे अपना ही व्यवच्छेद करती चलूँगी।—मुखदा, पृ० १३। ५ (बाण आदि) छोडना। चलाना। नखना (को०)। ६ नाश (को०)। ७. निर्धारण। निश्चयन (को०)। ८. ग्रथादि का अध्याय, खड या विभाग (को०)। ९ विशेष निर्देश। विशिष्टता निर्देशन (को०)। १०. (शव आदि का) काटना। चीरफाड। अग छेदन (को०)। ११. विशिष्टता। वैशिष्ट्य (को०)।

व्यवच्छेदक—सज्ञा पुं० [स०] वह जो व्यवच्छेद या अलग करता हो।

व्यवच्छेदविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] शरीर विज्ञान। शरीर रचना-विज्ञान (को०)।

व्यवदात—वि० [स०] स्वच्छ। अवदात। निर्मल (को०)।

व्यवदान—सज्ञा पु० [स०] किसी पदार्थ को शुद्ध और साफ करने की क्रिया। सस्कार। सफाई।

व्यवदीर्ण—वि० [स०] १. विदीर्ण। टुकडे टुकडे किया हुआ। छिन्न भिन्न। २ व्यग्र। विह्वल। विक्षिप्त। भ्रात (को०)।

व्यवधा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवधान। परदा। २ वह जो बीच मे आ पडे (को०)। ३ छिपाव। गोपन। दुराव (को०)।

व्यवधाता—वि० [स० व्यवधातृ] १ व्यवधान उपस्थित करनेवाला। २ अलग करनेवाला (को०)।

व्यवधान—सज्ञा पु० [स०] १. वह चीज जो बीच मे पडकर आड करती हो। परदा। उ०—समाधि शरीर के व्यवधान को पार कर आत्मा से परमात्मा का सयोग कराने का साधन है।—ज्ञानदान, पृ० १७। २. भेद। विभाग। खड। ३ विच्छेद। अलग होना। ४ खतम होना। समाप्ति। ५ बाधा (को०)। ६ अतराल। अवकाश (को०)। ७ छिपाव। दुराव (को०)। ८. ढकना। आवरण (को०)। ९ व्याकरण मे किसी मात्रा या अक्षर का बीच मे आ पडना (को०)।

व्यवधायक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो आड मे जाता हो। छिपनेवाला। गायब होनेवाला। २ वह जो किसी को ढकता या छिपाता हो। आड करने या छिपानेवाला। ३ वह जो मध्य मे स्थित हो। मध्यवर्ती।

व्यवधारण—सज्ञा पुं० [स०] अच्छी तरह अवधारण या निश्चय करना।

व्यवधि—सज्ञा पु० [स०] व्यवधान। परदा। आड। ओट।

व्यवधूत—वि० [स०] वीतराग (को०)।

व्यवभासित—वि० [स०] प्रकाशित किया हुआ (को०)।

व्यवलोकित—वि० [स०] देखा हुआ। दृश्य (को०)।

व्यवशाद—सज्ञा पु० [स०] १ छोड देना। २ त्याग। ३ पीछे की ओर गिरना या हटना।

व्यवसर्ग—सज्ञा पु० [स०] १ किसी पदार्थ का विभाग करने की क्रिया। बाँट। २ मुक्ति। छुटकारा। ३ देना (को०)। ४. त्याग। परित्याग (को०)।

व्यवसाय—सज्ञा पु० [स०] १ वह कार्य जिसके द्वारा किसी की जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका। जैसे,—दूसरो की सेवा करना ही उसका व्यवसाय है। २ रोजगार। व्यापार। जैसे०—आजकल कपडे का व्यवसाय कुछ मदा है। ३ कोई कार्य आरंभ करना। ४ निश्चय। ५. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। ६ उद्यम। काम धधा। ७ इच्छा। विचार। कल्पना। ८ अभिप्राय। मतलब। ९ विष्णु का एक नाम। १० शिव का एक नाम। ११ अवस्था। परिस्थिति (को०)। १२. आचरण। १३ कौशल। कूटयुक्ति (को०)। १४ डीग। शेखी (को०)। १५. प्रथम अनुभूति (को०)। १६ धर्म के एक पुत्र का नाम जो दक्ष की एक कन्या वपुष्टमा से उत्पन्न हुआ था (को०)।

व्यवसायबुद्धि—वि० [स०] पक्के इरादावाला। दृढनिश्चयी (को०)।

व्यवसायवर्ती—वि० [स० व्यवसायवर्तिन्] पक्के इरादे से काम करनेवाला (को०)।

व्यवसायात्मक—वि० [स०] १ सकल्पयुक्त। निश्चयात्मक। दृढ। २ उत्साहयुक्त (को०)।

व्यवसायात्मिका—वि० स्त्री० [स०] सकल्पमय। दृढ (को०)।

व्यवसायात्मिकाबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह बुद्धि जो निश्चयात्मक या दृढ हो। निश्चयात्मिका बुद्धि (को०)।

व्यवसायी[1]—सज्ञा पु० [स० व्यवसायिन्] १ वह जो किसी प्रकार का व्यवसाय करता हो। व्यवसाय करनेवाला। २ रोजगार करनेवाला। रोजगारी। ३ वह जो किसी कार्य का अनुष्ठान करता हो।

व्यवसायी[2]—वि० १ उत्साही। उद्यमी। परिश्रमी। २ दृढ सकल्पवाला। धैर्यशाली। ३ किसी कार्य मे सलग्न (को०)।

व्यवसित[1]—वि० [स०] १ जिसका अनुष्ठान किया गया हो। व्यवसाय किया हुआ। २ जो कोई काम करने के लिये तैयार हो। उद्यत। तत्पर। ३ जो निश्चय किया जा चुका हो। निश्चित। ५ धैर्यवान्। ६. ठगा हुआ। वचित (को०)। ७ उत्तरदायित्व लेनेवाला (को०)।

व्यवसित[2]—सज्ञा पुं० [स०] १ निश्चय। निर्धारण। २ छल। वचना (को०)।

व्यवसिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवसाय। रोजगार। २ सकल्प। निश्चय (को०)। ३ प्रयास। प्रयत्न। उद्यम (को०)।

व्यवस्तक—सज्ञा पु० [स०] किसी उक्ति या रचना के क्रम को बदल देना। उ०—किसी अन्य कवि की उक्ति के पहले और पीछे आनेवाले क्रम को बदलकर ग्रहण करना व्यवस्तक है।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २६३।

व्यवस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी कार्य का वह विधान जो शास्त्रो आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो।

मुहा०—व्यवस्था देना=पडितो आदि का यह बतलाना कि अमुक विषय मे शास्त्रो का क्या मत अथवा आज्ञा है। किसी विषय मे शास्त्रो का विधान बतलाना।

२ चीजो को अलग अलग सजाकर या ठिकाने से रखना। ३ प्रबध। इतजाम। जैसे,—विवाह की सब व्यवस्था अपने ही हाथ मे है। ४ स्थिर होने का भाव। स्थिरता। स्थिति। ५ कानून। जैसे—भारत सरकार के व्यवस्था सदस्य। ६ दृढता। दृढ आधार (को०)। ७ सहमति (को०)। ८ अवस्था। दशा (को०)। ९ सबध। स्थिति (को०)। १० पृथक्ता। अलगाव (को०)। ११ निश्चित सीमा (को०)। १२ अध्यवसाय (को०)। १३ शर्त (को०)।

व्यवस्थाता—सज्ञा पु० [सं० व्यवस्थातृ] १ वह जो व्यवस्था करता हो। व्यवस्था या इतजाम करनेवाला। २ निश्चय करनेवाला। वह जो किसी व्यवस्था का निश्चय करे। ३ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय मे शास्त्रो की क्या आज्ञा है। शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला।

व्यवस्थान—सज्ञा पु० [स०] १ उपस्थित या अस्थिर होना। व्यवस्थिति। २ व्यवस्था। इतजाम। प्रबंध। ३ विष्णु का एक नाम। ४ विधान (को०)। ५ दृढता (को०)। ६ अध्यवसाय (को०)। ७ पार्थक्य (को०)। ८ अवस्था (को०)।

व्यवस्थानप्रज्ञप्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो के अनुसार एक बहुत बडी सख्या का नाम।

व्यवस्थापक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय मे शास्त्रो का क्या मत है। व्यवस्था देनेवाला। २ वह जो किसी कार्य आदि को नियमपूर्वक चलाता हो। ३ वह जो व्यवस्था या इतजाम करता हो। प्रबधकर्ता। इतजामकार। मैनेजर (आधुनिक प्रयोग)। ४ व्यवस्थापिका सभा का सदस्य (को०)। ५ निश्चय करनेवाला (को०)।

व्यवस्थापक मडल—सज्ञा पुं० [स०] वह समाज या समूह जिसे कानून कायदे बनाने और रद्द करने का अधिकार प्राप्त हो।

व्यवस्थापक सभा—सज्ञा स्त्री० [स०] विधान सभा। व्यवस्थापिका सभा। उ०—स्वय, राज्य करने को अचानक प्रस्तुत हो गई थी, या व्यवस्थापक सभाओ को तोड स्वय, व्यवस्था करने को उठ खडी हुई थी।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २७०।

व्यवस्थापत्र—सज्ञा पुं० [स०] वह पत्र जिसमे किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था या यह विधान लिखा हो कि अमुक विषय मे शास्त्र की क्या आज्ञा या मत है।

व्यवस्थापन—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी विषय मे शास्त्रीय व्यवस्था देना या बतलाना। यह बतलाना कि अमुक विषय में शास्त्रो का क्या आज्ञा अथवा मत है। २ किसी विषय मे कुछ निश्चय, निर्धारण या निरूपण करना।

व्यवस्थापनीय—वि० [स०] व्यवस्थापन करने के योग्य।

व्यवस्थापिका परिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] अंग्रेजी शासनकाल की वह सभा या परिषद् जिसमे देश के लिये कानून कायदे आदि बनते थे। देश के लिये कानून कायदे बनानेवाली सभा। बडी व्यवस्थापिका सभा। (अ०) 'लेजिस्लेटिव एसेंबली', 'लोअर चेंबर', 'लोअर हाउस'।

विशेष—ब्रिटिश भारत भर के लिये कानून कायदे बनानेवाली सभा व्यवस्थापिका परिषद् या लेजिस्लेटिव कहलाती थी। इसके सदस्यो की सख्या १४३ होती थी, जिनमे से १०३ लोक निर्वाचित और ४० सरकार द्वारा मनोनीत (२५ सरकारी और १५ गैर सरकारी) सदस्य होते थे।

व्यवस्थापिका सभा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह सभा जिसमे किसी प्रदेश-विशेष के लिये कानून कायदे आदि बनते थे। कानून कायदे बनानेवाली सभा। लेजिस्लेटिव कौंसिल।

व्यवस्थापित—वि० [स०] १ जिसके सबध मे कुछ निश्चय या निरूपण किया गया हो। व्यवस्था किया हुआ। जो नियमपूर्वक लगाया, रखा या किया गया हो। ३. जो नियम के अनुसार हो। नियमित।

व्यवस्थाप्य—वि० [स०] जो व्यवस्थापन करने के योग्य हो।

व्यवस्थावादी—वि० [स० व्यवस्थावादिन्] व्यवस्था को माननेवाला। मर्यादावादी। उ०—तुलसी यदि घोर व्यवस्थावादी थे तो वह प्रेम को सारे नियमो के, समूची व्यवस्था के, ऊपर क्यो मानते हैं।—आचार्य०, पृ० १०६।

व्यवस्थित—वि० [स०] १ जिसमे किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। जो ठीक नियम के अनुसार हो। कायदे का। जैसे,—वे सभी काम व्यवस्थित रूप से किया करते हैं। २ व्यूहबद्ध (को०)। ३ स्थिर (को०)। ४ अलग या एक ओर रखा हुआ। (को०)। ५ (रस आदि) निकाला हुआ (को०)। ६. आधारित। अवलबित (को०)।

व्यवस्थित विभाषा—सज्ञा स्त्री० [स०] व्याकरण शास्त्र के अनुसार निश्चित विकल्प (को०)।

व्यवस्थित विषय—वि० [स०] सीमित क्षेत्रवाला (को०)।

व्यवस्थिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उपस्थित या स्थिर होना। व्यवस्था। इतजाम। ३. दे० व्यवस्थान (को०)।

व्यवहरण—सज्ञा पु० [स०] अभियोगो आदि का नियमानुसार विचार। मुकदमे की सुनाई या पेशी। व्यवहार।

व्यवहर्ता—सज्ञा पुं० [स० व्यवहर्तृ] वह जो व्यवहार शास्त्र के अनुसार किसी अभियोग आदि का विचार करता हो। न्यायकर्ता।

व्यवहार—सज्ञा पुं० [स०] १. क्रिया। कार्य। काम। २. आपस मे एक दूसरे के साथ बरतना। बरताव। जैसे,—हमारा उनका इस तरह का व्यवहार नही है। ३. व्यापार। रोजगार। ४. लेनदेन का काम। महाजनी। ५ झगडा। विवाद ६. न्याय। ७. शर्त। पण। ८ स्थिति ९. दो पक्षो मे होनेवाला वह झगडा जिसका फैसला अदालत मे हो। मुकदमा। १० प्रयोग (को०)। ११. आचरण (को०)। १२. रीति। प्रथा। रिवाज (को०)। १३. पेशा। धंधा (को०)। १४ सबध। मेलजोल (को०)। १५ कामधाम सम्हालने की योग्यता (को०)। १६ पद (को०)। १७ तलवार। खड्ग (को०)। १८. अभियोग या मामले की छानबीन (को०)। १९ दड (को०)। २०. एक वृत्त (को०)।

व्यवहारक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसका जीविका व्यवहार से चलती हो। वह जो न्याय या वकालत आदि करता हो। २. वह जो वयस्क हो गया हो। बालिग।

व्यवहारजीवी—सज्ञा पुं० [स० व्यवहारजीविन्] वह जो व्यवहार या वकालत आदि के द्वारा अपनी जीविका चलाता हो।

व्यवहारज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता हो। २ व्यवहार या तौर तरीका जाननेवाला। ३. वह जो पूर्ण वयस्क हो गया हो। बालिग।

व्यवहार तंत्र—सज्ञा पु० [स० व्यवहार तन्त्र] आचार शास्त्र (को०)।

व्यवहारत्व—सज्ञा पुं० [स०] व्यवहार का भाव या धर्म।

व्यवहारदर्शन—सज्ञा पु० [स०] किसी अभियोग मे न्याय और अन्याय अथवा सत्य और मिथ्या का निर्णय करना।

व्यवहारद्रष्टा—सज्ञा पुं० [स० व्यवहारद्रष्टृ] न्यायाधीश (को०)।

व्यवहारपद—सज्ञा पुं० [स०] विवाद का विषय। मुकदमे का मामला।

व्यवहारपाद—सज्ञा पु० [स०] १ व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तर, क्रियापाद और निर्णय इन चारो का समूह। २. इन चारो मे से कोई एक जो व्यवहार का एक पाद या अश माना जाता है।

व्यवहारप्राप्त—वि० [स०] बालिग। वयस्क (को०)।

व्यवहारमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] वे क्रियाएँ जिनका व्यवहार मे उपयोग होता है। व्यवहार शास्त्र के अनुसार होनेवाली कारवाइयाँ। जैसे,—मुकदमा दायर होना, पेश होना, गवाहो का बुलाया जाना, उनको गवाही होना, जिरह और बहस होना, फैसला होना, आदि। मिताक्षरा के अनुसार ऐसी क्रियाएँ सख्या मे तीस हैं।

व्यवहारमार्ग—सज्ञा पु० [स०] मुकदमे का विषय।

व्यवहारमूल—सज्ञा पु० [स०] अकरकरा। अकरकरहा।

व्यवहार लक्षण—सज्ञा पुं० [स०] व्यवहार या मुकदमे की जाँच विषयक विशेषता (को०)।

व्यवहार विधि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह शास्त्र जिसमे व्यवहार संबंधी बातो का उल्लेख हो। वह शास्त्र जिसमे व्यवहार या मुकदमो आदि का विधान हो। धर्मशास्त्र।

व्यवहार विषय—सज्ञा पु० [स०] मुकदमे की कार्यवाही का क्रम (को०)।

व्यस्थक—वि० [स०] अस्थिहीन (को०)।

व्यह्न—सज्ञा पुं० [स०] कल का बीता हुआ दिन।

व्याकरण—सज्ञा पु० [स०] वह विद्या या शास्त्र जिसमे किसी भाषा के शब्दो के शुद्ध रूपो और वाक्यो के प्रयोग के नियमो आदि का निरूपण होता है। भाषा का शुद्ध प्रयोग और नियम आदि बतलानेवाला शास्त्र।

विशेष—व्याकरण मे वर्णो, शब्दो और वाक्यो का विचार होता है, इसीलिये इसके वर्णविचार, शब्दसाधन और वाक्यविन्यास, ये तीन मुख्य विभाग होते हैं। व्याकरण के नियम प्राय लिखी हुई और प्रचलित भाषा के आधार पर निश्चित किए जाते है, क्योकि बोलने मे लोग प्राय प्रयोगो की शुद्धता पर उतना अधिक ध्यान नही रखते। व्याकरण मे शब्दो के अलग भेद कर लिए जाते हैं, जैसे, क्रिया, विशेषण, सर्वनाम आदि, और तब इस बात का विचार किया जाता है कि इन शब्दभेदो का ठीक ठीक और शुद्ध प्रयोग क्या है। हमारे यहाँ व्याकरण की गणना वेदाग मे की गई है।

२ विग्रह। विश्लेषण (को०)। ३ व्याख्या। स्पष्ट करना। प्रकाशन (को०)। ४ अतर। विभेद। भेद (को०)। ५ धनुष की टकार (को०)। ६ भविष्यकथन। अनागत कथन (को७)। ७ विस्तार (को०)।

व्याकरणक—सज्ञा पु० [स०] हीन कोटि का व्याकरण (को०)।

व्याकरणप्रक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] शब्द की व्युत्पत्ति (को०)।

व्याकरणसिद्ध—वि० [स०] व्याकरण के नियमानुसार व्युत्पन्न (को०)।

व्याकरणोत्तर—सज्ञा पु० [स०] शिव (को०)।

व्याकर्त्ता—सज्ञा पुं० [स० व्याकर्तृ] १ सृष्टि की रचना करनेवाला, परमेश्वर। २ व्याख्या या विश्लेषण करनेवाला।

व्याकर्षण—सज्ञा पु० [स०] विशेष रूप से अपनी ओर खीचना। आकृष्ट करना (को०)।

व्याकार—सज्ञा पुं० [स०] १ विकृत वा परिवर्तित आकार। किसी पदार्थ का बिगडा या बदला हुआ आकार। २. व्याख्या।

व्यवहारिकजीव—सज्ञा पु० [स०] १. जो चारो ओर अच्छी तरह फैलाया गया हो। २. अस्तव्यस्त (को०)। ३. क्षुब्ध। घबडाया हुआ (वस्तु) जो ज्ञानेंद्रिय के द्वारा (को०)।

व्याकारिका—सज्ञा स्त्री० [स० व्याकुञ्चित] १ मुडा हुआ। सिमटा हुआ। व्यवहार या बर्ताव मे टेढ़ामेढा। वक्र (को०)।

व्याकुल—वि० [स०] १ वह जो भय या दुख के कारण इतना घबरा गया हो कि कुछ समझ न सके। बहुत घबराया हुआ। (को०)। २ जिसे किसी बात की बहुत अधिक उत्कठा या चिंता हो। ३ कातर। ४ वह जो इधर उधर चलता, दमकता या हिलता डुलता हो। (को०)। ५ वह जो किसी से आवृत वा पूरित हो (को०)।

यौ०—व्याकुलचित्त = व्याकुलचेता। व्याकुलमना। व्याकुललोचन।

व्याकुलचेता—वि० [स० व्याकुलचेतस्] व्याकुल चित्तवाला। घबराया हुआ (को०)।

व्याकुलता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ व्याकुल होने का भाव। विकलता। घबराहट। २ कातरता।

व्याकुलमना—वि० [स० व्याकुलमनस्] व्यग्रचित्त। उद्विग्नहृदय (को०)।

व्याकुलमूर्वज—वि० [स०] बिखरे हुए केशोवाला (को०)।

व्याकुललोचन—वि० [स०] मद दृष्टिवाला (को०)।

व्याकुलात्मा—वि० [स० व्याकुलात्मन्] उद्विग्न। चित्त कुन (को०)।

व्याकुलित—वि० [स०] १ व्याकुल चित्तवाला। २. डरा हुआ (को०)।

यौ०—व्याकुलितचित्त, व्याकुलितमना, व्याकुलितहृदय = (१) आक्रान्त। अभिभूत। (२) भयभीत। (३) घबराया हुआ।

व्याकुलितेंद्रिय—वि० [स० व्याकुलितेन्द्रिय] व्यग्रचित्त (को०)।

व्याकुलेंद्रिय—वि० [स० व्याकुलेन्द्रिय] दे० 'व्याकुलितेंद्रिय'।

व्याकूत—सज्ञा पुं० [स०] चिंता। खेद (को०)।

व्याकूति—सज्ञा स्त्री० [स०] छल। धोखा। फरेब।

व्याकृत—वि० [सं०] १ विश्लिष्ट। विग्रह किया हुआ। २ व्याख्या किया हुआ। व्याख्यात। ३ अभिव्यक्त। प्रकाशित। ४ परिवर्तित। बदला हुआ। विकृत। उ०—प्राना आभमानी जु व्याकृत तम गुण रूपा। ईश्वर तहँ देवता भोग आनद स्वरूपा। —सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० ६८।

व्याकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १. प्रकाश मे लाने का काम। २ व्याख्या करने का काम। व्याख्यान। ३. व्याकरण (को०)। ४ रूप मे परिवर्तन करने का काम।

व्याकोच—वि० [स०] प्रफुल्लित। पूर्ण विकसित (को०)।

व्याकोप—सज्ञा पुं० [स०] विरोध। प्रत्याख्यान (को०)।

व्याकोश, व्याकोप—सज्ञा पुं० [स०] १ विकास। २ स्फुटित होना। खिलना।

व्याक्रन—सज्ञा पुं० [स० व्याकरण, प्रा० वागरण अप० वागरण] दे० 'व्याकरण'। उ०—त कवि आय क.व पहि सँपते। गुरु व्याक्रन कहै मन मसो।—पृ० रा०, ६१।४६७।

व्याक्रन्न—सज्ञा पु० [स० व्याकरण] व्याकरण विद्या या शास्त्र। उ०—व्याक्रन्न कथा नाटक छद।—पृ० रा०, १।७३६।

व्याक्रोश—सज्ञा पुं० [स०] १ किसी का तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना। २ चिल्लाना। चिल्लाहट।

व्याक्रोशी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्याक्रोश' (को०)।

व्याक्षिप्त—वि० [स०] १. व्याकुल। हतबुद्धि। घबडाया हुआ। २ फैलाया हुआ। विकीर्ण। ३. भरा हुआ। आवृत (को०)।

व्याक्षेप—सज्ञा पुं० [स०] १ विलब। देर। २. आकुल होने का भाव। घबराहट। ३ अवरोध। बाधा। रुकावट। विघ्न (को०)। ४ इतस्तत. क्षेपण। जैसे, कटाक्षव्याक्षेप (को०)। ५. तिरस्कार। भर्त्सना (को०)।

व्याक्षेपी—वि० [स० व्याक्षेपिन्] हटानेवाला। दूर करनेवाला (को०)।

व्याक्षोभ—सज्ञा पु० [सं०] क्षोभ। अशाति। मानसिक विक्षोभ (को०)।

व्याख्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह वाक्य आदि जो किसी जटिल पद या वाक्य आदि का अर्थ स्पष्ट करता हो। किसी बात को समझाने के लिये किया हुआ उसका विस्तृत और स्पष्ट अर्थ। टीका। व्याख्यान।

विशेष—शास्त्रो या सूत्रो आदि की जो व्याख्या होती है, उसके वृत्ति, भाष्य, वार्तिक, टीका, टिप्पणी आदि अनेक भेद माने गए हैं।

२ वह ग्रथ जिसमे इस प्रकार अर्थविस्तार किया गया हो। ३ कहना। वर्णन।

व्याख्यागम्य[1]—सज्ञा पु० [स०] व्यवहार शास्त्र के अनुसार वादी के अभियोग का ठीक ठीक उत्तर न देकर इधर उधर की बातें कहना।

व्याख्यागम्य[2]—वि० जो व्याख्या अथवा टीका आदि की सहायता से समझा जा सके।

व्याख्यात—वि० [स०] १ जिसकी व्याख्या की गई हो। २. कथित। वर्णित (को०)। ३. आक्रात। अभिभूत। आकुल (को०)। ४ पराजित। वशीकृत (को०)।

व्याख्यातव्य—वि० [स०] जो व्याख्या करने के योग्य हो या जिसकी व्याख्या की गई हो।

व्याख्याता—सज्ञा पु० [स० व्याख्यातृ] १ वह जो किसी विषय की व्याख्या करता हो। व्याख्या करनेवाला। २ वह जो व्याख्यान देता हो। भाषण करनेवाला।

व्याख्यात्मक—वि० [स०] व्याख्या विषयक। जिसमे मूल विषय की व्याख्या की गई हो। उ०—रचनात्मक और व्याख्यात्मक आलोचनाओ के प्रतिपादन मे भी जो दूसरे और तीसरे प्रकरणो के विषय हैं, मैं बराबर उनकी तुलना निर्णयात्मक आलोचना से करता रहा हूँ।—पा० सा० सि०, पृ० ४।

व्याख्यान—सज्ञा पु० [सं०] १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। २. बोलकर कोई विषय समझाने का काम। भाषण। ३ वह जो कुछ व्याख्या रूप मे या समझाने के लिये कहा जाय। भाषण। वक्तृता।

व्याख्यानशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का व्याख्यान आदि होता है। २ स्कूल या विद्यालय जहाँ विषय की व्याख्या करके समझाया जाता है (को०)।

व्याख्यास्थान—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्याख्यानशाला'।

व्याख्यास्वर—सज्ञा पुं० [स०] वह स्वर जो न बहुत ऊँचा हो और न बहुत नीचा। मध्यम स्वर।

व्याख्येय—वि० [स०] जो व्याख्या करने के योग्य हो। वर्णन करने या समझाने लायक।

व्याघट्टन—सज्ञा पुं० [स०] १. अच्छी तरह रगड़ने का काम। संघर्षण। रगड़। २ मथना। बिलोना।

व्याघात—सज्ञा पु० [सं०] १. विघ्न। खलबल। बाधा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—होना।

२ आघात। प्रहार। मार। ३. ज्योतिष के विष्कभ आदि सत्ताइस योगो मे से तेरहवाँ योग जिसमे किसी प्रकार का शुभ कार्य करना वर्जित है।

विशेष—कुछ लोगो का मत है कि इसके पहले छह दडो को छोडकर शेष समय मे शुभ काम किए जा सकते हैं। कहते हैं, इस योग मे जो बालक जन्म ग्रहण करता है, वह साधुओ के काम मे विघ्न करनेवाला, कठोर, क्रूर और निर्दय होता है।

४ काव्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे एक ही उपाय के द्वारा अथवा एक ही साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यो के होने का वर्णन होता है। उ०—(क) जामा काटत जगत के बधन दीन दयाल। ता चितवन सो तियन के मन बाँधे गोपाल। (ख) नाम प्रभाव जान शिव नीके। कालकूट फल दीन अमी के। (ग) रण से हूबे को अमर भागत कादर कूर। यह चाह चित कार नही विचलत साचे सूर। (घ) मिलत एक दारुन दुख देही। बिछुरत एक प्रान हरि लेही। ५. विप्रतिषेध। वचनविरोध। ६. विरोधी आचरण (को०)। ७ पराजय। हार (को०)। ८. क्षोभ (को०)।

व्याघातक—वि० [स०] १ बाधक। विरोधी। २ आघात या प्रहार करनेवाला [को०]।

व्याघातिम—सज्ञा पु० [स०] आघात से होनेवाली तात्कालिक मृत्यु [को०]।

व्याघाती—वि० [स० व्याघातिन्] दे० 'व्याघातक'।

व्याघारण—सज्ञा पु० [स०] छौंकना। छोटा देना। बघारना [को०]।

व्याघारित—वि० [स०] बघारा हुआ। तेल या घी का गरम करके उसपर छौंका हुआ [को०]।

व्याघुटन—सज्ञा पु० [स०] परावर्तन। लौटना। वापस होना [को०]।

व्याघुष्ट—वि० [स०] ध्वनित। गूँजता हुआ। शब्दित [को०]।

व्याघूर्णित—वि० [स०] १ चक्कर खाया हुआ। २ गिरा हुआ [को०]।

व्याघ्र[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ बाघ या शेर नामक प्रसिद्ध हिंसक जतु। विशेष दे० 'शेर'। २. लाल रेंड। ३. करज। ४ एक राक्षस का नाम।

व्याघ्र[2]—वि० सर्वोत्तम। श्रेष्ठ। प्रधान।

विशेष—इसका प्रयोग समासात में ही मिलता है; जैसे, नरव्याघ्र, पुरुषव्याघ्र।

व्याघ्रकड—सज्ञा पु० [स०] लाल रेंड।

व्याघ्रखडूडा—सज्ञा पुं० [स०] बाघ या शेर का नाखून जो प्राय बालको के गले मे उन्हे नजर लगने से बचाने के लिये पहनाया जाता है।

व्याघ्रगिरि—सज्ञा पुं० [सं०] पुराणवर्णित एक पर्वत का नाम [को०]।

व्याघ्रग्रीव—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. इस देश का निवासी।

व्याघ्रघटा—सज्ञा स्त्री० [स० व्याघ्रघण्टा] किंकिणी या गोविंदी नाम की लता जो कोकण प्रदेश मे अधिकता से होती है। वैद्यक के अनुसार यह पित्तवर्धक, उष्ण, रुचिकर और विष तथा कफ की नाशक मानी गई है।

व्याघ्रघटी—सज्ञा स्त्री० [स० व्याघ्रघण्टी] दे० 'व्याघ्रघटा'।

व्याघ्रचर्म—सज्ञा पुं० [स० व्याघ्रचर्मन्] बाघ या शेर की खाल जिसपर प्राय लोग बैठते है, या जो शोभा के लिये कमरो आदि मे लटकाई जाती है।

व्याघ्रतरु—सज्ञा पु० [स०] लाल रेंड।

व्याघ्रतल—सज्ञा पु० [स०] १. लाल रेंड। २ नखी या व्याघ्रनख नामक गधद्रव्य।

व्याघ्रतला—सज्ञा स्त्री० [स०] नखी या व्याघ्रनख नामक गधद्रव्य। बगनहा।

व्याघ्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्याघ्र का भाव या धर्म।

व्याघ्रदंष्ट्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गुल्म।

व्याघ्रदल—सज्ञा पु० [स०] १ नख या व्याघ्रनख नामक गधद्रव्य। बगनहा। २ लाल रेंड।

व्याघ्रदला—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्याघ्रदल'।

व्याघ्रनख—सज्ञा पु० [स०] १ बाघ या शेर का नाखून जो प्राय बच्चो के गले मे उन्हे नजर से बचाने के लिये पहनाया जाता है। २ नख या बगनहा नामक प्रसिद्ध गधद्रव्य। विशेष दे० 'नख'। ३ थूहर। ४ बाघ के नख का आघात (को०)। ५ एक प्रकार का कद। ६ † एक प्रकार का शस्त्र। बघनख।

व्याघ्रनखक—सज्ञा पु० [स०] १ व्याघ्रनख। २ नाखून के द्वारा लगी हुई चोट। एक प्रकार का नखक्षत।

व्याघ्रनखी—सज्ञा स्त्री० [स०] नखी या बगनहा नामक गधद्रव्य। विशेष दे० 'नख'।

व्याघ्रनायक—सज्ञा पु० [स०] गीदड।

व्याघ्रपद—सज्ञा पुं० [स०] बृहत्सहिता मे वर्णित एक प्रकार का पेड़।

व्याघ्रपद्—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का गुल्म। २ वशिष्ठ गोत्र के एक प्राचीन ऋषि का नाम जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा थे। ३. वह जिसके पैर व्याघ्रवत् हो। व्याघ्रपाद।

व्याघ्रपाद—सज्ञा पुं० [स०] १ विकंकत या कटाई नामक वृक्ष। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्रपादपी—सज्ञा स्त्री० [स०] विकटक। गर्जाहुल।

व्याघ्रपाद्—सज्ञा पु० [स०] १. विकंकत या कटाई नामक वृक्ष। २. विकटक। गर्जाहुल। ३. एक प्राचीन ऋषि का नाम। ४. वह जिसके पैर व्याघ्र से हो (को०)।

व्याघ्रपुच्छ, व्याघ्रपुच्छक—सज्ञा पु० [स०] १. रेंड। २. बाघ की पूँछ (को०)।

व्याघ्रपुष्प—सज्ञा पु० [स०] नख या बगनहा नामक गधद्रव्य।

व्याघ्रपुष्पि—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

व्याघ्रभट—सज्ञा पु० [स०] एक राक्षस का नाम।

व्याघ्रमुख—सज्ञा पुं० [स०] १ बिल्ली। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। ३. बृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम। ४ इस देश का निवासी। ५. वास्तुशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का मकान जो अशुभ होता है?

व्याघ्ररूपा—सज्ञा स्त्री० [स०] वध्या कर्कटी। बन ककोडा।

व्याघ्रलोम—सज्ञा पु० [स० व्याघ्रलोमन्] १. ऊपरी आठ पर के बाल। मूँछ। २ बाघ के शरीर के राएँ (को०)।

व्याघ्रवक्त्र—सज्ञा पु० [स०] १. बिल्ली। २ शिव का एक नाम। ३ शिव के एक गण। दे० 'व्याघ्रमुख'।

व्याघ्रवक्ता—सज्ञा पुं० [स० व्याघ्रवक्तृ] दे० 'व्याघ्रास्या'।

व्याघ्रश्वा—सज्ञा पुं० [स० व्याघ्रश्वन्] बाघ जैसा कुत्ता (को०)।

व्याघ्रसेवक—सज्ञा पुं० [स०] शृगाल। गीदड।

व्याघ्रहस्त—सज्ञा पुं० [स०] लाल रेंड।

व्याघ्राक्ष¹—सज्ञा पु० [स०] १ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २. पुराणानुसार एक राक्षस का नाम।

व्याघ्राक्ष²—वि० बाघ जैसी आँखोवाला (को०)।

व्याघ्राजिन—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

व्याघ्राट—सज्ञा पु० [स०] लवा नामक पक्षी। अग्नि चिडिया। विशेष दे० 'लवा'।

व्याघ्राण—सज्ञा पुं० [स०] सूँघने की क्रिया (को०)।

व्याघ्रादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] निसोथ।

व्याघ्रादिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] निसोथ। त्रिवृता (को०)।

व्याघ्रायुध—सज्ञा पु० [स०] नख नामक गधद्रव्य।

व्याघ्रास्य—सज्ञा पुं० [स०] १. बाघ का मुख (को०)। २ वह जिसका मुँह बाघ सदृश हो। ३. बिल्ली।

व्याघ्रास्या—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की एक देवी (को०)।

व्याघ्रिस्त्री—सज्ञा स्त्री० [स०] बौद्धो की एक देवी का नाम।

व्याघ्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कटकारी। छोटी कँटाई। २ एक प्रकार की कौडी। ३ नखी नामक गधद्रव्य। ४. बाघिन (को०)। ५ एक बौद्ध देवी। व्याघ्रिस्त्री (को०)।

व्याघ्रीयुग—सज्ञा पु० [स०] बृहती या बनभटा और कटकारी, इन दोनो का समूह।

व्याज¹—सज्ञा पु० [स०] १ मन मे कोई और बात रखकर ऊपर से कुछ और करना या कहना। कपट। छल। धोखा।

यौ०—व्याजनिंदा। व्याजस्तुति। व्याजोक्ति।

२. बाधा। विघ्न। खलल। ३ विलब। देर। ४. बहाना। व्यपदेश। उ०—जब तक वह अपने कुटीर मे बैठता किसी न किसी व्याज से मैं उसे देख लेती।—श्यामा०, पृ० ५६। ५ कला। कौशल (को०)। ६. युक्ति। चाल। कूट-युक्ति (को०)।

व्याज[1]—संज्ञा पुं० दे० 'व्याज'।

व्याजउकुति पु०—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याजोक्ति] एक अलंकार। दे० 'व्याजोक्ति'। उ०—व्याज उकुति तासो कहत, भूषन सुकवि अनूप।—भूषण ग्र०, पृ० ७०।

व्याजखेद—संज्ञा पुं० [सं०] बनावटी खिन्नता [को०]।

व्याजगुरु—संज्ञा पुं० [सं०] बनावटी गुरु [को०]।

व्याजतपोधन—संज्ञा पु० [सं०] नकली तपस्वी [को०]।

व्याजनिंदा—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याजनिन्दा] १ वह निंदा जो व्याज अर्थात् छल या कपट से की जाय। निंदा जो ऊपर से देखने मे स्पष्ट निंदा न जान पडे। २ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमे इस प्रकार निंदा की जाती है।

व्याजव्यवहार—संज्ञा पुं० [सं०] कपटपूर्ण बर्ताव [को०]।

व्याजसुत—वि० [सं०] मोने का बहाना बनानेवाला [को०]।

व्याजस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वह स्तुति जो व्याज अथवा किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने मे स्तुति न जान पडे। २ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमे इस प्रकार स्तुति की जाती है, वह ऊपर से देखने मे निंदा सी जान पडती है।

व्याजहत—वि० [सं०] छल द्वारा मारा हुआ [को०]।

व्याजोह्वय—संज्ञा पु० [सं०] बनावटी नाम [को०]।

व्याजिह्म—वि० [सं०] कुटिल। टेढा [को०]।

व्याजी—संज्ञा स्त्री० [सं०] बिक्री मे माप या तौल के ऊपर कुछ थोडा सा और देना। घाल। घलुवा।

व्याजीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] धूर्तता। चालबाजी। प्रवचना [को०]।

व्याजोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह कथन जिसमे किसी प्रकार का छल हो। कपटभरी बात। २ एक प्रकार का अलंकार जिसमे किसी स्पष्ट या प्रकट को छिपाने लिये किसी प्रकार का बहाना किया जाता है। छेकापह्नुति से इसमे यह अंतर है कि छेकापह्नुति मे निषेधपूर्वक बात छिपाई जाती है और इसमें बिना निषेध किए ही छिपाई जाती है। उ०—(क) भूप प्रतापभानु अवनीसा। तासु सचिव मैं सुनहु मुनीसा। (ख) बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिशोर देखि किन लेहु।

व्याडंब—संज्ञा पु० [सं० व्याडम्ब] लाल रेंड।

व्याड[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ साँप। २ बाघ। शेर। ३. इंद्र का एक नाम। ४ शिकार करनेवाला और उसका मांस खानेवाला कोई पशु। जैसे, चीता, सिंह आदि (को०)।

व्याड[2]—वि० धूर्त। वंचक। २ दुष्ट। खल। निंदा या बुराई करनेवाला।

व्याडायुध—संज्ञा पु० [सं०] नख नामक गंध द्रव्य।

व्याडि—संज्ञा पुं० [सं०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम जिन्होने एक व्याकरण बनाया था।

विशेष—ये महाभाष्यकार पतंजलि के पूर्ववर्ती महावैयाकरण थे। परंपरागत मान्यतानुसार इन्होने 'संग्रह' नामक महाग्रंथ लिखा था जो संभवत लक्षश्लोकात्मक था और उसमे व्याकरण के दार्शनिक पक्ष का भी विस्तृत विवेचन था।

२. एक कोशकार का नाम [को०]।

व्यात्त[1]—वि० [सं०] खुला हुआ या फैलाया हुआ [को०]।

व्यात्त[2]—संज्ञा पुं० फैलाया हुआ मुख [को०]।

व्यात्तानन—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसका मुख खुला हो [को०]।

व्यात्तास्य—वि० [सं०] दे० 'व्यात्तानन' [को०]।

व्यात्युक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलक्रीडा।

व्यादन—संज्ञा पु० [सं० व्यादान] खोलना। उ०—वदन व्यादन पूर्वक प्रेतिनी। भय प्रदर्शन भी करती महा। निकलती जिससे अविराम थी। अनल की अति त्रासकरी शिखा।—प्रिय०, पृ० २३।

व्यादान—संज्ञा पुं० [सं०] १ फैलाव। विस्तार। २. उद्घाटन। खोलना।

व्यादिश—संज्ञा पु० [सं०] विष्णु का एक नाम।

व्यादिष्ट—वि० [सं०] १ जिसे आदेश दिया गया हो। २ पूर्वकथित। ३ निश्चित। ४ व्याख्यात [को०]।

व्यादीर्ण—वि० [सं०] खुला या फैलाया हुआ [को०]।

व्यादीर्णास्य—संज्ञा पुं० [सं०] सिंह [को०]।

व्यादेश—संज्ञा पुं० [सं०] विशेष आज्ञा [को०]।

व्याध[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जो जंगली पशुओं आदि को मारकर अपना निर्वाह करता हो। शिकारी। २ प्राचीन काल की एक जाति जो जंगली पशुओं को मारकर अपना निर्वाह करती थी। ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसर इसकी उत्पत्ति सर्वस्वी माता और क्षत्रिय पिता से है। ३ प्राचीन काल की शबर नामक नीच जाति। ४ नीच या कमीना आदमी (को०)।

व्याध[2]—वि० दुष्ट। पाजी। लुच्चा।

व्याधक—संज्ञा पु० [सं०] शिकारी। बहेलिया [को०]।

व्याधभीत—संज्ञा पु० [सं०] मृग। हिरन।

व्याधाम—संज्ञा पु० [सं०] वज्र।

व्याधाव—संज्ञा पु० [सं०] वज्र (को०)।

व्याधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ रोग। बीमारी। २. आफत। झंझट। ३. कुंड या कटु नाम की ओषधि। ४ साहित्य मे एक संचारी भाव। विरह या काम आदि के कारण शरीर मे किसी प्रकार रोग होना। ५ कोढ। कुष्ठ (को०)। ६ कष्ट पहुँचानेवाली वस्तु (को०)। ७ वह जो आधि या मानसिक रोग से मुक्त हो (को०)।

व्याधिकर—वि० [सं०] रोग उपजानेवाला। बीमारी पैदा करनेवाला [को०]।

व्याधिखड्ग—संज्ञा पु० [सं०] नख नामक गंधद्रव्य।

व्याधिग्रस्त—वि० [सं०] रोगी [को०]।

व्याधिघात—संज्ञा पु० [सं०] १ अमलतास। २ वाराही कंद। गँठो (को०)।

व्याधिघातक—संज्ञा पु० [सं०] १. अमलतास वृक्ष। आरग्वध। २ वाराही कंद [को०]।

व्याधिघ्न—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जिससे किसी प्रकार की व्याधि का नाश होता हो। २ वाराही कंद। गँठो (को०)। ३. अमलतास।

व्याधिजित्—संज्ञा पु० [सं०] अमलतास।

व्याधित—संज्ञा पुं० [सं०] वह जिसे किसी प्रकार की व्याधि हुई हो। रोगी। बीमार।

व्याधिनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] चोपचीनी।

व्याधिनिग्रह—संज्ञा पु० [सं०] रोग को दबाना। रोग की रोक थाम (को०)।

व्याधिनिर्जय—संज्ञा स्त्री० [सं०] रोग को वश मे करना (को०)।

व्याधिबहुल—वि० [सं०] (स्थान, ग्राम आदि) जहाँ रोगो की अधिकता हो। (को०)।

व्याधिमंदिर—संज्ञा पुं० [सं०] तन। शरीर। जिस्म। देह, जो रोग का स्थान है (को०)।

व्याधिरिपु—संज्ञा पु० [सं०] १ अमलतास। २ एक प्रकार का अमलतास जिसे कर्णिकार कहते हैं।

व्याधिविपरीत—संज्ञा पु० [सं०] ऐसी ओषधि जो व्याधि के विपरीत गुण करनेवाली हो। जैसे,—दस्त लाने के समय कब्जियात करनेवाली दवा।

व्याधिसमुद्देशीय—वि० [सं०] रोग का स्वरूप और लक्षण बतानेवाला (को०)।

व्याधिस्थान—संज्ञा पु० [सं०] शरीर। बदन। जिस्म।

व्याधिहता[1]—संज्ञा पु० [सं० व्याधिहन्तृ] वाराही कद। शूकर कद। गेंठी।

व्याधिहता[2]—वि० जिससे रोग का नाश हो। रोगनाशक।

व्याधिहर—वि० [सं०] व्याधि को दूर करनेवाला। जिससे रोग नष्ट होता हो।

व्याधी[1]—संज्ञा स्त्री० [सं० व्याधि] दे० 'व्याधि'।

व्याधी[2]—वि० [सं० व्याधिन्] १ आखेटको से सबद्ध (स्थान)। २ रोगी। ३ भेदक। भेदन करनेवाला (को०)।

व्याधूत—वि० [सं०] काँपता हुआ। कपित (को०)।

व्याध्मातक—संज्ञा पु० [सं०] फूला हुआ शव (को०)।

व्याध्य[1]—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम।

व्याध्य[2]—वि० १ व्याधि सबधी। व्याधि का। २ (नस आदि) जिसका भेदन किया जाय (को०)।

व्याध्यार्त—वि० [सं०] रोगी। रोगग्रस्त। व्याधि पीडित।

व्याध्युपशम—संज्ञा पु० [सं०] रोग का शात होना।

व्याध्युपशमन—संज्ञा पुं० [सं०] रोग दूर करना। व्याधि को शात करना।

व्यान—संज्ञा पु० [सं०] शरीर में रहनेवाली पाँच वायुओ मे से एक वायु जो सारे शरीर मे सचार करनेवाली मानी जाती है।

विशेष—कहते हैं, इसी के द्वारा शरीर की सब क्रियाएँ होती हैं, सारे शरीर मे रस पहुँचता है, पसीना बहता है और खून चलता है आदमी उठना, बैठता और चलता फिरता है और आँखें खोलता तथा बद करता है। भावप्रकाश के मत से जब यह वायु कुपित होती है, तब प्राय सारे शरीर मे एक न एक रोग हो जाता है।

व्यानत[1]—संज्ञा पु० [सं०] रतिबध का एक प्रकार (को०)।

व्यानत[2]—वि० झुका हुआ। नत (को०)।

व्यानतकरण—संज्ञा पु० [सं०] रतिबध का एक भेद (को०)।

व्यानदा—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शक्ति जो व्यान वायु प्रदान करती है।

व्यानभृत्—वि० [सं०] व्यान वायु को भरनेवाला। जिससे उक्त वायु बनी रहे (को०)।

व्यापक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० व्यापिका] १ जो बहुत दूर तक व्याप्त हो। चारो ओर फैला हुआ। जैसे,—यह एक सर्वव्यापक सिद्धात है। २ जो ऊपर या चारो ओर से घेरे हुए हो। घेरने या ढकनेवाला। आच्छादक। ३ किसी मे हमेशा एक भाव से स्थित रहनेवाला (को०)। ४. वाद के समय विचारणीय विषयो से युक्त। जिसमे विवाद सबधी सभी विचारणीय विषय आ गए हो (को०)। ५ तर्क शास्त्र के अनुसार व्याप्य से अधिक (को०)।

व्यापक[2]—संज्ञा पु० १ पदार्थ मे सर्वदा विद्यमान रहनेवाला गुण या धर्म। २ नित्य सहवर्ती (को०)।

व्यापकन्यास—संज्ञा पु० [सं०] तात्रिको के अनुसार एक प्रकार का अगन्यास। इसमे किसी देवता का मूल मत्र पढते हुए सिर से पैर तक न्यास करते हैं।

व्यापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु। मौत। २ विपत्ति मे पडना। सकट मे पडना (को०)। ३ क्षति। हानि। ४ विनाश। बरबादी (को०)। ५. असफलता (को०)। ६ व्याकरण के अनुसार स्थानापन्नता। किसी वर्ण का लोप या उसके स्थान मे दूसरे का आगम (को०)।

व्यापद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मृत्यु। मौत। विनाश। २ सकट। दुर्दिन। विपत्ति (को०)। ३ रोग। व्याधि (को०)। ४ चित्तविक्षेप (को०)।

व्यापन—संज्ञा पुं० [सं०] १ फैलाव। विस्तार। २ दूर तक फैलना। विस्तृत होना। ३ चारो ओर से या ऊपर से घेरना या ढकना। आच्छादन करना।

व्यापना—क्रि० अ० [सं० व्यापन] किसी चीज के अदर फैलना। व्याप्त होना। जैसे,—(क) तुम्हे भी इस समय मोह व्यापता है। (ख) ईश्वर घट घट मे व्यापता है। (ग) उसके सारे शरीर मे विष व्याप गया है।

सयो० क्रि०—जाना।—रहना।

व्यापनीय—वि० [सं०] व्यापन करने या व्याप्त होने के योग्य।

व्यापन्न—वि० [सं०] १ जो किसी प्रकार की विपत्ति मे पडा हुआ हो। आफत मे फँसा हुआ। २ मरा हुआ। मृत। ३ विनष्ट। लुप्त (को०)। ४. स्वरादि के आगम के कारण परिवर्तित (को०)। ६ विफल (को०)। ७ घायल (को०)। ८. विक्षिप्त। विकृत (को०)।

व्यापाद—संज्ञा पु० [सं०] १ मन मे दूसरे के अपकार की भावना करना। किसी की बुराई सोचना। २ मार डालना। ३. नष्ट करना। बरबाद करना। ४. बौद्धमतानुसार दस पापो मे से एक पाप (को०)।

व्यापादक—वि० पु० [स०] १. वह जो दूसरो की बुराई करने की इच्छा रखता हो। २ वह जो हत्या या विनाश करता हो। ३. वह (व्याधि) जो घातक हो।

व्यापादन—संज्ञा पु० [स०] १. किसी को कष्ट पहुँचाने का उपाय सोचना। २ मार डालना। वध। हत्या। ३ नष्ट करना। बरबाद करना।

व्यापादनीय—वि० [स०] मार डालने या नष्ट करने योग्य।

व्यापादित—वि० [स०] १ हत। २ अपकार बुद्धि से चिंतित। ३. विनष्ट। ध्वस्त को०]।

व्यापाद्य—वि० [स०] दे० 'व्यापादनीय'।

व्यापार—संज्ञा पु० [स०] १ कर्म। कार्य। काम। जैसे,—(क) संसार मे दिन रात अनेक प्रकार के व्यापार होते रहते हैं। (ख) सोचना मस्तिष्क का व्यापार है। २ न्याय के अनुसार विषय के साथ होनेवाला इंद्रियो का संयोग। पदार्थों अथवा धन के बदले मे पदार्थ लेना और देना। क्रय विक्रय का कार्य। रोजगार। व्यवसाय जैसे—(क) आजकल कपडे का व्यापार बहुत चमक रहा है। (ख) वे रुई, सोने, चाँदी आदि कई चीजो का व्यापार करते है। ४ सहायता। मदद। ५ कार्यपद्धति। प्रक्रिया (को०)। ६ उद्योग। प्रयत्न। चेष्टा (को०)। ७. प्रभाव। दखल (को०)। ८ अभ्यास। कौशल (को०)। कारबार। पेशा (को०)। ९ प्रयोग (को०)।

यौ०—व्यापारचिह्न = निर्माताओ द्वारा अपने माल की पहिचान के लिये अंकित विशेष चिह्न जिसका प्रयोग अन्य निर्माता द्वारा करना अपराध है [अ० ट्रेड मार्क]। व्यापारमंडल = व्यापारियो का मंडल। व्यापारियो की संस्था। व्यवसायियो का प्रतिनिधित्व करनेवाली संस्था या समाज (अ० चेंबर आव कामर्स)।

व्यापारक—वि० [स०] व्यवसाय करनेवाला [को०]।

व्यापारगर्त—संज्ञा पुं० [स०] सांसारिक क्रियाकलापो या व्यापारो का झंझट या गड्ढा। दुनियाँ की झंझट। काम धंधा। उ०—इससे स्पष्ट है कि मनुष्य को उसके व्यापारगर्त से बाहर प्रकृति के विशाल और विस्तृत क्षेत्र मे ले जाने की शक्ति फारस की परिमित काव्यपद्धति मे नही है—भारत और योरप की पद्धति मे है। —चिंतामणि, भा० २, पृ० ८।

व्यापारण—संज्ञा पुं० [स०] १ आज्ञा देना। २ किसी काम मे नियुक्त करना।

व्यापारिक—वि० [स०] व्यापार संबंधी। व्यावसायिक।

व्यापारित—वि० [स०] १ किसी कार्य मे नियोजित। २ किसी स्थान पर स्थापित [को०]।

व्यापारी[1]—संज्ञा पु० [स० व्यापारिन्] १. वह जो किसी प्रकार का व्यापार करता हो। २. व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी। ३ अभ्यास करनेवाला (को०)।

व्यापारी[2]—वि० [स० व्यापार + ई (प्रत्य०)] १ जो किसी प्रकार का व्यापार करता हो। २ व्यवसाय या रोजगार करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी।

व्यापारी[3]—वि० [स० व्यापार + हिं० ई (प्रत्य०)] व्यापार संबंधी। व्यापार का। जैसे,—व्यापारी बोलचाल, व्यापारी भाव।

व्यापित—वि० [स०] जो व्याप्त कराया गया हो [को०]।

व्यापी[1]—वि० [स० व्यापिन्] [वि० स्त्री० व्यापिनी] १. चारो ओर फैलनेवाला। छा जानेवाला। २. व्याप्त करने या होनेवाला। ३ आच्छादन करनेवाला। आवृत करनेवाला [को०]।

व्यापी[2]—संज्ञा पु० १ आवृत करने या व्याप्त होनेवाला पदार्थ। २. विष्णु का एक नाम [को०]।

व्यापीत—वि० [स०] जो एकदम पीला हो। गहरे पीत वर्ण का [को०]।

व्यापृत[1]—वि० [स०] १ किसी कार्य मे लगा हुआ। संलग्न। २. स्थिर किया हुआ। स्थापित। जमाया हुआ [को०]।

व्यापृत[2]—संज्ञा पु० वह जो कार्य करता हो। कर्मचारी। सचिव। मंत्री [को०]।

व्यापृति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ व्यवसाय। व्यापार। २. जीविका। पेशा। ३ अभ्यास। ४ उद्योग। क्रिया।

व्याप्त—वि० [स०] १. पूरित। भरा हुआ। २. ढका हुआ। आच्छादित। ३. सर्वत्र फैला हुआ या प्रसृत ४. परिवेष्टित। ५ स्थापित। ६ प्राप्त। अधिकृत। ७. समिलित। ८. प्रसिद्ध। विख्यात। ९ अंतर्भूत। नितांत संसक्त। १०. फैलाया हुआ [को०]।

व्याप्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव। चारो ओर या सब जगह फैला हुआ होना। २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ मे दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ मे अथवा उसके साथ सदा पाया जाना। जैसे—आग मे धूएँ की या तिल मे तेल की व्याप्ति है।

यौ०—व्याप्तिज्ञान।

३ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों मे से एक प्रकार का ऐश्वर्य।

विशेष—शेष सात ऐश्वर्यों के नाम ये है—अणिमा, लघिमा, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व और कामावसायिता।

४. सार्वजनिक नियम। सर्वव्यापक नियम (को०)। ५. पूर्णता (को०)। ६. प्राप्ति (को०)।

व्याप्तिकर्मा—संज्ञा पुं० [स० व्याप्तिकर्मन्] वह जिसका कर्म व्याप्ति विशिष्ट हो। वह जो व्यापन क्रिया से युक्त हो [को०]।

व्याप्तिग्रह—संज्ञा पु० [स०] विशेष बातो के आधार पर लोकसामान्य नियमो का निर्धारण [को०]।

व्याप्तिज्ञान—संज्ञा पुं० [स०] न्याय के अनुसार वह ज्ञान जो साध्य को देखकर साध्यवान् के अस्तित्व के संबंध मे अथवा

साध्यवान् को देखकर साध्य के अस्तित्व के संबंध में होना है। जैसे, धूएँ को देखकर यह समझना कि यहाँ आग भी होगी

व्याप्तित्व—संज्ञा पु० [सं०] व्याप्ति का धर्म या भाव।

व्याप्तिनिश्चय—संज्ञा पु० [सं०] संबंधित व्याप्त पदार्थ का निश्चयन (को०)।

व्याप्तिलक्षण—संज्ञा पु० [सं०] नित्य सहचर भाव या प्रमाण (को०)।

व्याप्य[1]—वि० [सं०] व्याप्त करने योग्य। व्यापनीय।

व्याप्य[2]—संज्ञा पुं० [सं०] १ जिसके द्वारा कोई काम हो। साधन। हेतु। २ कुट या कुड़ नामक औषधि। ३ दे० 'व्याप्ति'।

व्याबाध—संज्ञा पु० [सं०] बीमारी। रोग (को०)।

व्याभाषण—संज्ञा पु० [सं०] बोलने या भाषण की शैली (को०)।

व्याभुग्न—वि० [सं०] झुका हुआ। टेढा (को०)।

व्याम्युक्षी—संज्ञा स्त्री० [सं०] जलक्रीडा। जलकेलि (को०)।

व्याम[1]—संज्ञा पु० [सं०] लंबाई की एक नाप।

विशेष—दोनो हाथो को जहाँ तक हो सके, दोनो बगल मे फैलाने पर एक हाथ की उँगलियो के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियो के सिरे तक जितनी दूरी होती है, वह व्याम कहलाती है।

व्याम[2]—संज्ञा पुं० [सं० व्यायाम] दे० 'व्यायाम'।

उ०—व्याम करत पुहुमी जो हली। पीठि न लाइ सकै कोउ बली। —चित्रा०, पृ० १२३।

व्यामन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'व्याम'।

व्यामर्श—संज्ञा पुं० [सं०] १ धैर्यहीनता। औत्सुक्य। व्यग्रता। २. उच्छेद या मार्जन करना। रगडकर साफ करना (को०)।

व्यामर्ष—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'व्यामर्श'।

व्यामिश्र[1]—संज्ञा पु० [सं०] दो प्रकार के पदार्थों या कार्यों को एक मे मिलाने की क्रिया।

व्यामिश्र[2]—वि० १ मिला हुआ। मिश्रित। २ विभिन्न प्रकार का। ३ संदेहास्पद (को०)। ४ अस्थिर। पीडित। क्षुब्ध (को०)।

व्यामिश्रक—संज्ञा पु० [सं०] ग्रंथ, पुस्तक आदि, मुख्यतः रूपक जिसमे विभिन्न भाषाओं का मिश्रण हो (को०)।

व्यामिश्रवान—संज्ञा पुं० [सं०] मोटा वस्त्र जिसमे सूत्र, ऊर्ण, तंतु आदि मिश्रित हो (को०)।

व्यामिश्रव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] मिला जुला व्यूह। वह व्यूह जिसमे पैदल के अतिरिक्त हाथी घोडे और रथ भी सम्मिलित हो।

विशेष—कौटिल्य ने इसके दो भेद कहे हैं—मध्यभेदी और अंतभेदी। मध्यभेदी वह है जिसके अंत मे हाथी, इधर उधर घोडे, मुख्य भाग या केंद्र मे रथ तथा उरस्य मे हाथी और रथ हो। इससे भिन्न अंतभेदी है।

व्यामिश्रसिद्धि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार शत्रु और मित्र दोनो की स्थिति का अपने अनुकूल होना।

व्यामूढ—वि० [सं०] बहुत घबडाया हुआ (को०)।

व्यामृष्ट—वि० [सं०] रगडकर मिटाया हुआ (को०)।

व्यामोक—संज्ञा पु० [सं०] छुटकारा। मुक्ति (को०)।

व्यामोह—संज्ञा पुं० [सं०] १ मोह। २ अज्ञान। ३. व्याकुलता। घबडाहट (को०)।

व्यायं—संज्ञा पु० [सं०] बाण चलाने के समय धनुष की प्रत्यंचा को तानने की पद्धति या क्रिया (को०)।

व्यायत—वि० [सं०] १ लंबा। फैला या फैलाया हुआ। २ खुला हुआ। ३ कार्य मे लगा हुआ। व्यस्त। ४ कठोर। दृढ़। ५ कृताभ्यास। जिसने अभ्यास किया हो। अभ्यस्त। ६ प्रवर। प्रचंड। तीव्र। ७ शक्तिशाली। ८ गहरा। गभीर (को०)।

व्यायतत्व—संज्ञा पु० [सं०] व्यायत होने का भाव। शरीर की पेशियों का सिकुडन या फैलाव (को०)।

व्यायतपाती—वि० [सं० व्यायतपातिन्] दूर तक दौडनेवाला। विस्तृत मार्ग को तय करनेवाला। जैसे, अश्व आदि (को०)।

व्यायाम—संज्ञा पु० [सं०] १ वह शारीरिक श्रम जो केवल शरीर का बल बढाने के उद्देश्य से किया जाता है। कसरत। जोर। जैसे,—दंड, बैठका करना या मुगदर, डंबल आदि हिलाना। २ पौरुष। ३ परिश्रम। मेहनत। ४ व्यापार। काम। ५. युद्ध की तैयारी। ६ सेना की कवायद आदि। ७ विस्तार करना। फैलाना (को०)। ८. आयाम। प्रयत्न चेष्टा (को०)। ९ युद्ध। कलह। विवाद। संघर्ष (को०)। १०. कठिनाई। ११ लंबाई की एक माप। व्याम (को०)। १२ क्लांति। थकान (को०)। १३ अभ्यास। कौशल (को०)। १४ दुर्गम मार्ग

यौ०—व्यायामकर्शित = व्यायाम के कारण दुर्बल। व्यायामभूमि = व्यायाम करने की जगह। व्यायामयुद्ध। व्यायामयोग। व्यायामशाला = व्यायाम करने की जगह। व्यायामशील = कसरती। (२) परिश्रमी। (को०)। व्यायामशोषी।

व्यायामयुद्ध—संज्ञा पुं० [सं०] आमने सामने की लडाई।

विशेष—अर्थशास्त्र मे चाणक्य का मत है कि व्यायामयुद्ध अर्थात् आमने सामने की लडाई मे दोनो ही पक्षो को बहुत हानि पहुँचती है। जो राजा जीत भी जाता है, वह भी इतना कमजोर हो जाता है कि उसकी एक प्रकार से पराजित ही समझना चाहिए। (को०)।

व्यायामयोग—संज्ञा पु० [सं०] शस्त्रास्त्रों के प्रयोग का अभ्यास।

व्यायामशोषी—वि० [सं० व्यायामशोषिन्] जो अत्यंत कसरत या श्रम करने से क्षीणकाय हो गया हो। उ०—व्यायामशोषी (अत्यंत दंड कसरत आदि से क्षीण) मनुष्य रसत्यागतादियुक्त होय है।—माधव०, पृ० ८६।

व्यायामिक—वि० [सं०] व्यायाम का। व्यायाम संबंधी।

व्यायामी—संज्ञा पुं० [सं० व्यायामिन्] १ वह जो व्यायाम करता हो। कसरत करनेवाला। कसरती। २ वह जो बहुत परिश्रम करता हो। परिश्रमी। मेहनती।

व्यायुक—वि० [सं०] भाग निकलनेवाला (को०)।

व्यायुक्त—वि० [सं०] १ अलग अलग किया हुआ। २ मिला जुला। उ०—लोहित, श्वेत (ओदात्त) या मिश्रित (व्यायुक्त) वर्णों की

वेशभूषा और साजसज्जा धारण करते थे।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २०१।

व्यायुध—वि० [स०] शस्त्ररहित। निःशस्त्र [को०]।

व्यायोग—संज्ञा पु० [स०] साहित्य में दस प्रकार के रूपकों में से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य।

विशेष—इसकी कथावस्तु किसी ऐसे ग्रंथ से ली जानी चाहिए, जिससे सब लोग भली भाँति परिचित हों। इसके पात्रों में स्त्रियाँ कम और पुरुष अधिक होते हैं। व्यायोग में स्त्री के कारण युद्ध नहीं होता और इसमें गर्भ और विमर्श संधि नहीं होती। इसमें एक ही अंक रहता है और कैशिकी वृत्ति का व्यवहार नहीं होता है। इसका नायक कोई प्रसिद्ध राजर्षि, दिव्य और धीरोदात्त होना चाहिए। इसमें शृंगार, हास्य और शांत के सिवा और सब रसों का वर्णन होता है। जैसे, भास कवि का मध्यम व्यायोग।

व्यायोजिम—वि० [स०] (बंधन या पट्टी) जो खुली हुई या ढीली हो गई हो [को०]।

व्यारब्ध—वि० [स०] समुचित ढंग से रक्षित [को०]।

व्यारोष—संज्ञा पु० [स०] क्रोध। गुस्सा।

व्यार्त—वि० [स०] विशेष रूप से आर्त या दुःखी। क्लेशग्रस्त [को०]।

व्यालंब—संज्ञा पुं० [स० व्यालम्ब] लाल रेंड़।

व्यालंबी—वि० [स० व्यालम्बिन्] जो लटक रहा हो। लटकता हुआ। अवलंबी [को०]।

व्याल[1]—संज्ञा पु० [स०] १ साँप। २ दुष्ट या पाजी हाथी। ३ बाघ। शेर। ४ वह बाघ जो शिकार करने के लिये सधाया गया हो। ५ राजा। ६ विष्णु का एक नाम। ७ दंडक छंद का एक भेद। ८. कोई हिंसक जंतु। ९. चीता (को०)। १० ठग। धूर्त (को०)। ११ आठ की संख्या (को०)।

व्याल[2]—वि० १ दूसरों का अपकार करनेवाला। २ दुष्ट। पाजी। ३ बुरा। पापिष्ठ (को०)। ४ क्रूर। भीषण (को०)।

व्यालक—संज्ञा पु० [स०] १ दुष्ट या पाजी हाथी। २ हिंसक जंतु। ३. सर्प। व्याल (को०)।

व्यालकरंज—संज्ञा पुं० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालखड्ग—संज्ञा पु० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालगंधा—संज्ञा स्त्री० [स० व्यालगन्धा] नाकुली नामक कंद।

व्यालग्राह—संज्ञा पु० [स०] वह जो साँपों को पकड़ता हो। सँपेरा।

व्यालग्राही—संज्ञा पु० [स०] वह जो साँप पकड़ने का काम करता हो। मदारी। सँपेरा।

व्यालग्रीव—संज्ञा पु० [स०] १ बृहस्पति के अनुसार एक देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

व्यालजिह्वा—संज्ञा स्त्री० [स०] कँगही या कघी नामक पौधा। महासमंगा।

व्यालता—संज्ञा स्त्री० [स०] व्याल का भाव या धर्म। व्यालत्व। व्यालपन।

व्यालत्व—संज्ञा पु० [स०] व्याल का भाव या धर्म। व्यालपन।

व्यालदंष्ट्र—संज्ञा पु० [स०] गोखरू का पौधा।

व्यालदंष्ट्रक—संज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यालदंष्ट्र' [को०]।

व्यालनख—संज्ञा पु० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालपत्र—संज्ञा पु० [स०] खेतपापड़ा।

व्यालपत्रा—संज्ञा स्त्री० [स०] खेतपापड़ा।

व्यालपाणिज—संज्ञा पु० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालप्रहरण—संज्ञा पु० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालबल—संज्ञा पु० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालमृग—संज्ञा पु० [स०] १ बाघ। शेर। २ शिकारी चीता (को०)। ३ जंगली जानवर (को०)।

व्यालरूप—संज्ञा पु० [स०] शिव [को०]।

व्यालवल—संज्ञा पु० [स०] दे० 'व्यालबल'।

व्यालसूदन—संज्ञा पु० [स०] गरुड़। उ०—जयति भीमार्जुन व्यालसूदन गंधहर धनंजय रथवान केतू।—तुलसी (शब्द०)।

व्यालाद—संज्ञा पु० [स०] १. वह जो साँपों का खाता हो। गरुड़। २. मोर। मयूर [को०]।

व्यालायुध—संज्ञा पु० [स०] नख या बघनहा नामक गंधद्रव्य।

व्यालारि—संज्ञा पु० [स०] गरुड़। उ०—पुनु व्यालारि, कराल कलि, बिनु प्रयास निस्तार।—भक्तमाल (प्रि०), पृ० ५७६।

व्यालि—संज्ञा पु० [स०] व्याडि नामक एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने एक व्याकरण बनाया था।

व्यालिक—संज्ञा पु० [स०] वह जो साँपों को पकड़कर अपनी जीविका चलाता हो। सँपेरा।

व्यालिनि—संज्ञा स्त्री० [स० व्याली] सर्पिणी। साँपिनी। उ०—सरित की लहरें असु लेहिनो, लहरने खलु व्यालिनी सी लगी।—बी० श० महा०, पृ० २०१।

व्याली[1]—संज्ञा पु० [स० व्यालिन्] शिव [को०]।

व्याली[2]—संज्ञा स्त्री० [स० व्याल+ई] सर्पिणी। उ०—ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली—कामायनी, पृ० ५।

व्यालीढ—संज्ञा पु० [स०] साँप के काटने का एक प्रकार। साँप का वह काटना जिसमें केवल एक या दो दाँत लगे हों और घाव में से खून न बहा हो।

व्यालीन—वि० [स०] संश्लिष्ट। चिपका हुआ। घना [को०]।

व्यालुप्त—संज्ञा पु० [स०] साँप के काटने का एक प्रकार। साँप का वह काटना जिसमें दो दाँत भरपूर बैठे हों और घाव में से खून भी निकला हो।

व्यालू[1]—संज्ञा पु० स्त्री० [स० वला] रात के समय का भोजन। रात का खाना। उ०—जो कुछ बन पड़ा व्यालू करके लंबी तान अपने बिछौने में जा पड़ा।—श्यामा०, पृ० ६।

व्यालून—वि० [स०] छिन्न। कटा हुआ [को०]।

व्यालोक—संज्ञा पु० [स०] प्रकाश। उ०—अकस्मात् उस खिड़की में से एक सुंदर मुख निकला। व्यालोक डालकर देखा कि रासमा एक पात्र हाथ में लिए है और कुछ कह रही है।—छाया, पृ० ३८।

व्यालोल—वि० [सं०] १ चंचल। २ परिक्रांत। चक्कर खाता हुआ। ३ अतव्यस्त। बिखरा हुआ। जैसे, व्यालोलकेश। ४ काँपता हुआ (को०)।

व्यालोलन—संज्ञा पु० [स०] इधर उधर हिलना। काँपना (को०)।

व्यावकलन—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्यवकलन' (को०)।

व्यावक्रोशी—संज्ञा स्त्री० [स०] कहा सुनी। वादविवाद। झगड़ा (को०)।

व्यावचर्ची—संज्ञा स्त्री० [स०] आपस में कही हुई अथवा सामान्य बात, पुनरुक्ति (को०)।

व्यावचोरी—संज्ञा स्त्री० [स०] आपस में होनेवाली चोरी (को०)।

व्यावभाषी—संज्ञा स्त्री० [स०] आपस में अपशब्दों का व्यवहार। कहासुनी (को०)।

व्यावर†—वि० [हिं० बिआना, बिआउर] ब्यानेवाली। उत्पन्न करनेवाली। उ०—दादू काया व्यावर गुणमयी, मनमुख उपजै ज्ञान। चौरासी लख जीवकी, इस माया का ध्यान।—दादू०, पृ० ४१८।

व्यावर्ग—संज्ञा पुं०[स०] १ विभाग करना। हिस्सा लगाना। विभक्त करना। बाँटना। २ हिस्सा। विभाग (को०)।

व्यावर्जित—वि० [स०] आवर्जित। झुका। नत। झुका या लटका हुआ (को०)।

व्यावर्त्त—संज्ञा पु० [स०] १. चक्कर। चक्रमर्द। २ घेरना। लपेटना। परिवेष्टित करना (को०)। ३ चारो ओर भ्रमण करना। चक्कर खाना (को०)। ४ अलग करना। चुनना (को०)। ५ आगे का ओर निकली हुई नाभि। नाभिकटक।

व्यावर्त्तक—वि०, संज्ञा पु० [स०] [स्त्री० व्यावर्त्तिका] १. वह जो व्यावर्तन करता हो। चक्कर खानेवाला। पीछे का ओर लौटाने वाला। २ दूर हटानेवाला। अलग करनेवाला (को०)। ३. भेदक। अंतर करनेवाला (को०)।

व्यावर्त्तन—संज्ञा पु० [स०] १ जो पराङ्मुख किया गया हो। २ पीछे का ओर लौटाया या मोड़ा हुआ। ३. सर्प का कुंडला (को०)। ४. घुमाव। मोड़। जैसे, पथ का व्यावर्तन (को०)। ५ परिवेष्टन (को०)।

व्यावर्तनीय—वि० [स०] जिसका व्यावर्तन किया जा सके। व्यावर्तन के योग्य (को०)।

व्यावर्तित—वि० [स०] १ पराङ्मुख किया हुआ। लौटाया हुआ। जिसे चक्कर दिया गया हो। २ परिवर्तित (को०)।

व्यावल्गित—वि० [स०] नाचते या मटकते हुए चलता हुआ (को०)।

व्यावहारक[1]—संज्ञा पु० [स०] १. व्यवहार। २ वह जो व्यवहार शास्त्र के अनुसार अभियोगों का विचार करता हो। ३ राजा या वह अमात्य या मंत्री जिसके अधिकार में बाहरी और भीतरी सब तरह के काम हों। ४ व्यापार। कारबार (को०)।

व्यावहारिक[2]—वि० १ व्यवहार संबंधी। व्यवहार या बरताव का। २. व्यवहार शास्त्र संबंधी। व्यवहार शास्त्र का। ३. प्रचलित। ४ व्यवहारपटु। मिलनसार। ५ व्यापारिक। प्रातिभासिक। भ्रमात्मक (को०)।

व्यावहारिक ऋण—संज्ञा पु० [स०] वह ऋण जो किसी कारबार के संबंध में लिया गया हो।

व्यावहारी—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्यवहार संबंधी प्रधन। आपसी व्यवहार-जन्य लेनदेन (को०)।

व्यावहार्य—वि० [स०] १ व्यवहार में लाने योग्य। २ शक्त। क्षम। समर्थ (को०)।

व्यावहासी—संज्ञा स्त्री० [स०] आपस में होनेवाली हँसी (को०)।

व्याबाध—संज्ञा पुं० [स०] रोग। व्याधि (को०)।

व्याविद्ध—वि० [स०] १ परस्पर विद्ध। २ प्रविष्ट या घुसा हुआ। बेधा हुआ। ३ फेंका हुआ। क्षिप्त। ४ घूर्णित। ५ बिगाड़ा हुआ (को०)।

व्याविध—वि० [स०] तरह तरह का। अनेक प्रकार का (को०)।

व्यावृत्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रधानता। २. विरमण। विराम। ३ अंतर। फर्क। भेद (को०)।

यौ०—व्यावृत्काम=जो प्रधानता पाने की इच्छा रखता हो।

व्यावृत—वि० [स०] १ जो आवृत न हो। खुला हुआ। दे० 'व्यावृत्'। २ आच्छादित। आवृत। ३ हटाया या अलग किया हुआ। ४ अपवारित। अपवाद किया हुआ (को०)।

व्यावृति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ चयन करना। छाँटना। चुनना। २. आवृत या आच्छादित करना। ३. अनावृत करना। अनाच्छादित करना (को०)।

व्यावृत्त—वि० [सं०] छूटा हुआ। मुक्त। निवृत्त। २ मना किया हुआ। निषिद्ध। ३ हटा हुआ। खंडित। ४ अलग किया हुआ। विभक्त। ५ जो मन में पसंद किया गया हो। मनोनीत। ६ चारो ओर से घेरा हुआ। ७ ऊपर से ढका हुआ। आच्छादित। ८ असंगत (को०)। ९ जो विद्यमान न हो (को०)। १० लौटा हुआ (को०)। ११ चक्कर खाता हुआ (को०)। १२ जिसकी प्रशंसा या स्तुति की गई हो।

यौ०—व्यावृत्तगति=मंद गति। धीमी चाल। व्यावृत्तचेता=जिसका मन किसी ओर से पराङ्मुख हो। व्यावृत्त दंश=पर्वत आदि जो फट गए हों।

व्यावृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ खंडन। २ व्यावृत्त। ३ मन से चुनने या पसंद करने का काम। ४. चारो ओर से फेरना। ५ स्तुति। प्रशंसा। तारीफ। ६ मनाही। निषेध। ७. बाधा। खलल। ८ निराकरण। निर्णय। मीमांसा। ९ नियोग। १०. एक प्रकार का यज्ञ (को०)। ११ पृथक्ता। भिन्नता (को०)। १२ स्पष्टता (को०)। १३ (नगाड़े) घुमाना (को०)। १४. अविद्यमान होना (को०)। १५ घेरना (को०)। १६ ढकना (को०)।

व्याशा—संज्ञा स्त्री० [स०] विदिशा। दिशाओं का कोण या मध्यवर्ती भाग [को०]।

व्याश्रय—सज्ञा पु० [स०] १ सहारा। आश्रय। साहाय्य। २. वह जो दूसरे का सहारा लेता हो [को०]।

व्यासग—सज्ञा पुं० [स० व्यासङ्ग] भक्ति (को०)। २ बहुत अधिक आसक्ति। ३ आसक्तिपूर्ण अध्ययन (को०)। ४ पार्थक्य। अलग होना (को०)। ५ योग (को०)। ६. घबडाने की स्थिति या भाव (को०)। ७. घनिष्ठ सबध वा सपर्क (को०)। ८ मनोयोग।

व्यासगी—वि० [स० व्यासङ्गिन्] १. विशेष रूप मे आसक्त। २ जो मनोयोगपूर्वक सलग्न हो [को०]।

व्यास—सज्ञा पु० [स०] १ पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होने वेदो का सग्रह, विभाग और सपादन किया था। कहा जाता है, अठारहो पुराणो महाभारत, भागवत और वेदात आदि की रचना भी इन्होने की थी।

विशेष—इनके जन्म आदि की कथा महाभारत में बहुत विस्तार के साथ दी है। उसमे कहा गया है कि एक बार मत्स्यगधा सत्यवती नाव खे रही थी। उसी समय पराशर मुनि वहाँ जा पहुँचे और उसे देखकर आसक्त हो गए। वे उससे बोले कि तुम मेरी कामना पूरी करो। सत्यवती ने कहा—महाराज नदी के दोनो ओर ऋषि, मुनि आदि बैठे हुए है और हम लोग को देख रहे हैं। मै कैसे आपकी कामना पूरी करूँ। इसपर पराशर मुनि के अपने तप के बल से कुहरा खडा कर दिया जिससे चारो ओर अधेरा छा गया। उस समय सत्यवती ने फिर कहा महाराज, मैं अभी कुमारी हूँ, और आपकी कामना पूरी करने से मेरा कौमार नष्ट हो जायगा। उस दशा मे मै किस प्रकार अपने घर मे रह सकूँगी। पराशर ने उत्तर दिया नही, इससे तुम्हारा कौमार्य नष्ट नही होगा। तुम मुझसे वर मागो। सत्यवती ने कहा कि मेरे शरीर से मछली की जो गध आती है, वह न आवे। पराशर ने कहा कि ऐसा ही होगा। उसी समय से उसके शरीर से सुगध निकलने लगी और तबसे उसका नाम गधवती या योजनगधा पड़ा। इसके उपरात पराशर मुनि ने उसके साथ सभोग किया जिससे उसे गर्भ रह गया और उस गर्भ से इन्ही व्यासदेव की उत्पत्ति हुई। इनका जन्म नदी के बीच के एक टापू मे हुआ था और इनका रग बिलकुल काला था, इसलिये इनका नाम कृष्ण द्वैपायन पडा। इन्होने बचपन से ही तपस्या आरभ की और बड़े होने पर वेदो का सग्रह तथा विभाग किया, इसलिये ये वेदव्यास कहलाए। पीछे से जब शातनु से सत्यवती का विवाह हुआ, तब अपने पुत्र विचित्रवीर्य के मरने पर सत्यवती ने इन्हे बुलाकर विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियो (अबिका और अबालिका) के साथ नियोग करने की आज्ञा दी जिससे धृतराष्ट्र और पाडु का जन्म हुआ। विदुर भी इन्ही के वीर्य से उत्पन्न हुए थे। ये पाराशर्य, कानीन, बादरायण, सत्यभारत, सत्यव्रत और सत्यरत भी कहलाते हैं।

२ पुराणानुसार वे अट्ठाईस महर्षि, जिन्होने भिन्न भिन्न कल्पो मे जन्म ग्रहण करके वेदो का सग्रह और विभाग किया था।

विशेष—ये सब ब्रह्मा और विष्णु के अवतार माने जाते है, और इनके नाम इस प्रकार हैं—स्वयभुव, प्रजापति या मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु या यम, इद्र, वसिष्ठ, सारस्वत, त्रिधाम, ऋषभ या त्रिवृष, सुतेजा या भारद्वाज, अतरिक्ष या धर्म, वपृवन् या सुचक्षु, त्रय्यारुणि, धनजय, कृतजय, ऋतजय, भरद्वाज, गौतम, उत्तम या हर्यात्म, वाचश्रवा या नारायण (इन्हे वेण भी कहते हैं), सोममुख्यायन या तृणबिंदु, ऋक्ष या वाल्मीकि, शक्ति, पराशर, जातुकर्ण और कृष्ण द्वैपायन।

३ वह ब्राह्मण जो रामायण, महाभारत या पुराणो आदि की कथाएँ लोगो को सुनाता हो। कथावाचक। उ०—तो कभी व्यास बन पुरानी प्रयोजनीय वृत्तातो की कथा कह सुनाती है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३४१। ४ वह रेखा जो किसी बिलकुल गोल रेखा या वृत्त के किसी एक बिंदु से बिलकुल सीधी चलकर केंद्र से होती हुई दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ५. विस्तार। प्रसार। फैलाव। ६ वितरण। विभाजन (को०)। ७ समासयुक्त पदो का विश्लेषण या विग्रह (को०)। ८ पृथक्ता। अलगाव (को०)। ९ चौड़ाई। १० उच्चारण का एक दोष (को०)। ११ व्यवस्थापक। सकलन करनेवाला। वह जो सकलन करता हो (को०)। १२. व्यवस्था। सकलन करने का काम (को०)। १३. विस्तारयुक्त विवरण। विस्तृत विवरण (को०)। १४ एक प्रकार का धनुष जिसकी तौल या वजन १०० पल का होती थी (को०)।

व्यासकूट—सज्ञा पु० [स०] १ महाभारत से आए हुए वेदव्यास के कूट श्लोक। २ वे कूट श्लोक जो सीताहरण होने पर रामचद्र जी ने माल्यवान् पर्वत पर कहे थे और जिनका उन्हे कुछ भी पता नही मिला था।

व्यासक्त—वि० [स०] १ जो आसक्त हुआ हो। जिसका मन बेतरह आ गया हो। २ सबद्ध। लगा हुआ। जुडा हुआ (को०)। ३. पृथक्कृत। अलग किया हुआ। ४ व्याकुल। परेशान (को०)। ५. आलिगित। आलिगनबद्ध (को०)। ६. अनासक्त (को०)।

व्यासगीता—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

व्यासता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्यास का भाव या धर्म। व्यासत्व।

व्यासतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

व्यासत्व—सज्ञा पु० [स०] व्यास का भाव या धर्म।

व्यासदेव—सज्ञा पु० [स०] कृष्ण द्वैपायन। वेदव्यास (को०)।

व्यासपीठ—सज्ञा पु० [स०] पुराण के व्याख्याता का आसन। व्यासासन (को०)।

व्यासपूजा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. आषाढ मास की पूर्णिमा को होनेवाली गुरु की पूजा जिसे व्यासपूजा भी कहते है।

व्यासमाता—सज्ञा स्त्री० [स० व्यासमातृ] व्यास की माता, सत्यवती (को०)।

व्यासमूर्ति—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम।

व्यासयति—सज्ञा पुं० [स०] एक तीर्थ का नाम जिसे व्यासतीर्थ भी कहते हैं (को०)।

व्यासराज—सज्ञा पु० [स०] एक तीर्थ (को०)।

व्यासवन—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन वन का नाम।

व्यास समास—सज्ञा पु० [स०] विस्तार और सक्षेप (को०)।

व्यास सरोवर—सज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार वह सरोवर जिसमे युद्ध के अत मे दुर्योधन छिपा था (को०)।

व्याससू—सज्ञा स्त्री० [स०] सत्यवती (को०)।

व्याससूत्र—सज्ञा पु० [स०] वेदातसूत्र।

व्यासस्थली—सज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन पवित्र तीर्थ का नाम।

व्यासस्मृति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक स्मृति का नाम (को०)।

व्यासारण्य—सज्ञा पु० [स०] व्यासवन नामक प्राचीन वन।

व्यासार्द्ध—सज्ञा पु० [स०] व्यास का आधा भाग। किसी वृत्त के केंद्र से उसके किसी छोर तक की रेखा।

व्यासासन—सज्ञा पुं० [स०] वह आसन जिसपर कथा कहनेवाले व्यास बैठकर कथा कहते हैं। व्यासपीठ।

व्यासिद्ध—वि० [स०] १ मना किया हुआ। वर्जित। निषिद्ध (माल आदि)। २ रुका हुआ। अवरुद्ध।

व्यासीय—वि० [स०] व्यास सबधी। व्यास का।

व्यासेव—सज्ञा पु० [स०] निषेध। वर्जन। प्रतिषेध (को०)।

व्याहतव्य—वि० [स० व्याहन्तव्य] उल्लघन करने योग्य (को०)।

व्याहत—वि० [स०] १ मना किया हुआ। निवारित। निषिद्ध। २. व्यर्थ। ३ हताश। निराश (को०)। ४ भ्रमित। व्याकुल। चकराया हुआ (को०)। ५ जिसपर चोट की गई हो (को०)। ६. परस्पर विरुद्ध। परस्पर विरोधी (को०)। ७ रोका हुआ। बाधित। विफल या निष्फल किया हुआ। ८ भयभीत। भयालु। भययुक्त (को०)।

व्याहतार्थता—सज्ञा स्त्री० [स०] साहित्य के अनुसार एक रचनागत दोष जिसमे उत्तरवर्ती कथन से पूर्ववर्ती कथन की हीनता वा व्यर्थता व्यक्त हो। पहले कही हुई बात का आगे कही हुई बात से उत्कर्ष न रहना।

व्याहति—सज्ञा स्त्री० [स०] खलल पहुँचाना। बाधा डालना। २ न्याय मे परस्पर असगति या वचन विरोध (को०)।

व्याहनस्य—वि० [स०] [वि० स्त्री० व्याहनस्या] अत्यत अश्लील (को०)।

व्याहरण—सज्ञा पु० [स०] १. कथन। उक्ति। २ उच्चारण (को०)।

व्याहार—सज्ञा पु० [स०] १ वाक्य। जुमला। वचन। कथन। २. ध्वनि। स्वर। आवाज (को०)। ३ हास परिहास। मजाक। परिहास भरी उक्ति (को०)। ४ पक्षियो का चहचहाना। कलरव (को०)।

व्याहाव—सज्ञा पु० [स०] व्यक्त वा परिस्फुट ध्वनि। स्पष्ट पुकार (को०)।

व्याहित—वि० [स०] व्याधिग्रस्त। रोगयुक्त (को०)।

व्याहृत[1]—वि० [स०] १. कहा हुआ। कथित। उक्त। २ खादित। भक्षित (को०)। ३. जिसने कुछ कहा हो। जिसने ध्वनि की हो (को०)।

व्याहृत[2]—सज्ञा पु० १ बोलना। कहना। वार्ता करना। २. अस्पष्ट कथन। कल कूजन। अस्फुट ध्वनि (विशेषत पशुपक्षियो की)। ३ निर्देश। नियोग। बोधन। ख्यापन (को०)।

व्याहृत सदेश—सज्ञा पुं० [स० व्याहृत सन्देश] वह जो सूचना या समाचार कहे। सदेशहारक। दूत (को०)।

व्याहृति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कथन। उक्ति। २. उच्चारण। वचन (को०)। ३ भू, भुव, स्वः इन तीनो का मत्र।

विशेष—कहते हैं, जहाँ और कोई मत्र न हो, वहाँ इसी व्याहृति मत्र से काम लेना चाहिए। कुछ विद्वानो के मतानुसार व्याहृतियाँ सात हैं—भू., भुव., स्व, मह., जन, तप और सत्यम्। इनमे प्रारभिक तीन महाव्याहृति कही गई हैं और ये सवितृ और पूषन की कन्या मानी जाती हैं।

व्युदन—सज्ञा पु० [स० व्युन्दन] अच्छी तरह तर करना। आर्द्र करना। गीला करना (को०)।

व्युच्चरण—सज्ञा पु० [स०] अत्यय। उल्लघन। अतिक्रमण (को०)।

व्युच्छित्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] विनाश। बरबादी। उन्मूलन।

व्युच्छेत्ता—वि०, सज्ञा पु० [स० व्युच्छेतृ] १. विनाश करनेवाला। बरबाद करनेवाला। २. (वह) जो काटा गया हो। (वह) जिसे उन्मूलित किया गया हो (को०)।

व्युच्छेद—सज्ञा पु० [स०] विनाश। पूर्णत उन्मूलन। व्युच्छित्ति (को०)।

व्युत—वि० [स०] १ बुना हुआ। व्यूत। गूँथा हुआ। २ जो समतल किया गया हो। जैसे, मार्ग (को०)।

व्युति—सज्ञा पु० [स०] १ दे० 'व्यूति'। २ बुनाई की मजदूरी। बुनाई। सिलाई (को०)।

व्युत्क्रम—सज्ञा पु० [स०] १ क्रम मे उलटफेर होना। व्यतिक्रम। गडबडी। २. निश्चित वा उचित का परित्याग करना (को०)। ३. अतिक्रमण। उल्लघन (को०)। ४ अस्तव्यस्त होना (को०)। ५ मृत्यु। मरण (को०)।

व्युत्क्रमण—सज्ञा पु० [स०] १ अलग होना। अलगाव। २ अतिक्रमण। उल्लघन। (को०)।

व्युत्क्रात—वि० [स० व्युत्क्रान्त] १ लाँघा हुआ। लघित। उल्लघित। २ गत। गया हुआ। प्रस्थित। ३. तिरस्कृत। निरादृत। उपेक्षित। ४ विपरीत दिशा मे जानेवाला। प्रतिकूल पथगामी (को०)।

यौ०—व्युत्क्रात जीवित = मृत। निर्जीव। गतप्राण। व्युत्क्रातधर्म = कर्तव्य कर्म की उपेक्षा करनेवाला। धर्म का उल्लघन करनेवाला। व्युत्क्रातरजा। व्युत्क्रातवर्त्मा।

व्युत्क्रातरजा—वि० [स० व्युत्क्रान्तरजस्] १ रजोगुण से रहित । वासनाहीन । २ निष्पाप । अकलुष [को०] ।

व्युत्क्रातवर्त्मा—वि० [स० व्युत्क्रान्तवर्त्मन्] सत्पथ से च्युत । विहित एव उचित मार्ग का परित्याग करनेवाला [को०] ।

व्युत्क्रातसमापत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० व्युत्क्रान्त समापत्ति] १ बौद्ध मतानुसार अनन्यमनस्कता की स्थिति । समाधि या एकाग्रता की अवस्था । २ एकीकरण वा एकत्र समाहरण की स्थिति [को०] ।

व्युत्क्राता—सज्ञा स्त्री० [स० व्युत्क्रान्ता] एक प्रकार की प्रहेलिका । पहेली का एक भेद । पहेली ।

व्युत्त—वि० [स०] आर्द्र या तर किया हुआ । जिसका व्युदन किया गया हो [को०] ।

व्युत्थान—सज्ञा पु० [स०] १ स्वतत्र या स्वाधीन होकर काम करना । २ किसी के विरुद्ध आचरण करना । खिलाफ चलना । ३ रुकावट डालना । रोकना । ४ समाधि । ५ एक प्रकार का नृत्य । ६ योग के अनुसार चित्त की क्षिप्त, मूढ और विक्षिप्त ये तीन अवस्थाएँ या चित्तभूमियाँ जिनमे योग का साधन नही हो सकता । इन भूमियो मे चित्त बहुत चचल रहता है । ७ महत् सक्रियता । सचेष्टता (को०) । ८ हाथी को उठने के लिये प्रेरित करना (को०) । ९. किसी से दबना या नीचा देखना (को०) । १० खडन । विरोध (को०) ।

व्युत्थापित—वि० [स०] उठाया हुआ । जगाया हुआ । जिसे उठने या जगने के लिये प्रेरित किया गया हो [को०] ।

व्युत्थित—वि० [स०] १ कर्तव्य मार्ग से विचलित । उच्छास्त्रवर्ती । २ जिसकी बुद्धि स्थिर न हो । ३. जो बहुत क्षुब्ध हो [को०] ।

व्युत्पत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ किसी पदार्थ आदि की विशिष्ट उत्पति । किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान । २ शब्द का मूल रूप । वह शब्द जिससे कोई दूसरा शब्द निकला हो । ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञान वा प्रगाढ पाडित्य । जैसे,—दर्शन शास्त्र मे उनको अच्छी व्युत्पत्ति है । ४ विद्वत्ता । ज्ञान (को०) । ५ ध्वनि या उच्चारण की भिन्नता (को०) । ६ बाढ । विकास (को०) ।

व्युत्पन्न—वि० [स०] १ जिसका संस्कार हो चुका हो । सस्कृत । २. जिसका किसी विज्ञान या शास्त्र मे अच्छा प्रवेश हो । जो किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता हो । ३ उत्पादित । पैदा किया हुआ (को०) । ४ अव्युत्पन्न का विपरीतार्थबोधक । जिसकी व्युत्पत्ति की गई हो (को०) । ५ जो निरुक्ति या निर्वचन द्वारा निर्मित हो (को०) । ६ पूर्ण किया हुआ । संपन्न (को०) ।

व्युत्पादक—वि० [स०] १ व्युत्पत्ति या निर्वचन । करनेवाला । २ उत्पन्न करनेवाला ।

व्युत्पादन—सज्ञा पुं० [स०] १ व्युत्पत्ति । मूल रूप या शब्द का निर्वचन । २ निर्देशन । शिक्षण (को०) ।

व्युत्पाद्य—वि० [स०] जिसकी निरुक्ति की जा सके । व्युत्पत्ति के योग्य [को०] ।

व्युत्सर्ग—सज्ञा पु० [सं०] जैनो के अनुसार शरीर का मोह या चिंता का परित्याग । उ०—दूसरे प्रकार के तप मे प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (शरीरत्याग) की गणना होती है ।—आ०, भा०, पृ० १४३ । २ विरक्ति । त्याग (को०) ।

व्युत्सेक—सज्ञा पु० [स०] चारो ओर छिडकना या उडेलना [को०] ।

व्युद, व्युदक—वि० [स०] उदकविहीन । जलरहित [को०] ।

व्युदस्त—वि० [स०] १ फेंका हुआ । दूर किया हुआ । क्षिप्त । २ अस्वीकृत किया हुआ । ३ विकीर्ण [को०] ।

व्युदास—सज्ञा पु० [स०] १ हटाना । निकाल देना । निरसन । परित्याग । (व्याकरण) । २. हत्या । विनाश । वध । ३ प्रतिषेध । निषेध । ४. उदासीनता । उपेक्षा । ५ फेंकना । दूर करना । अस्वीकृत करना । ६ अत । समाप्ति । विराम [को०] ।

व्युदित—वि० [स०] जिसपर वाद विवाद किया गया हो [को०] ।

व्युन्मिश्र—वि० [स०] मिलाया हुआ । मिश्रित किया हुआ । सकीर्ण [को०] ।

व्युप—सज्ञा पुं० [स०] वह जो अपने हाथो को स्वय चबाता या खाता हो [को०] ।

व्युपदेश—सज्ञा पुं० [स०] ठगने या धोखा देने का काम । ठगी । व्यपदेश ।

व्युपद्रव—वि० [स०] जो भाग्य के फेर से या दुर्दिन से अशात एव क्षुब्ध न हो ।

व्युपपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] फिर से जन्म होना । पुनर्जन्म [को०] ।

व्युपरत—वि० [स०] शात । निश्चल । रुद्ध [को०] ।

व्युपरम—सज्ञा पुं० [स०] १ शाति । विराम । समाप्ति । २ छुटकारा । निवृत्ति । ३ स्थिति ।

व्युपवीत—वि० [स०] उपवीतरहित । यज्ञोपवीत विहीन [को०] ।

व्युपशम—सज्ञा पुं० [स०] १ अशाति । २ विराम का अभाव (को०) । ३. पूर्ण विराम, शाति या समाप्ति (को०) ।

व्युप्त—वि० [स०] १ विकीर्ण किया हुआ । बिखेरा हुआ । २ कटाया हुआ । छोर किया हुआ । मुडित [को०] ।

व्युप्तकेश—सज्ञा पु० [स०] १ शिव का एक नाम । २ अग्नि । ३ वह जिसने छौर कराया हो । ४ वह जिसके बाल बिखरे हो । अस्तव्यस्त केशोवाला [को०] ।

व्युष सज्ञा स्त्री० [स०] सूर्य के उदय होने का समय । भोरहरी प्रातःकाल । सवेरा ।

व्युषित—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'व्युष्ट' [को०] ।

व्युषिताश्व सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक राजा का नाम ।

व्युष्ट'—सज्ञा पु० [सं०] १ प्रभात । तडका । सवेरा । २ दिन । दिवस । ३ फल । परिणाम । ४ कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार श्रावण मे नए वर्ष का प्रथम दिवस (को०) ।

व्युष्ट[२]—वि० १ जला या भुनसा हुआ। २ द्योतित, प्रकाशयुक्त या जो स्पष्ट हो गया हो (को०)। ३ व्यतीत। बीता अथवा गुजरा हुआ (को०)। ४ उषःकालीन प्रकाश से युक्त। प्राभातिक सूर्य किरणो से युक्त। प्रभातीभूत। ५ बिताया हुआ। गुजारा हुआ। रहा हुआ। निवास द्वारा गुजारा हुआ (को०)।

व्युष्टि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ फल। नतीजा। परिणाम। २ समृद्धि। ३ स्तुति। प्रशंसा। ४ प्रकाश। उजाला। ५ प्रभात। तडका। ६ दाह। जलन। ७ इच्छा। कामना। खाहिश। ८ सौंदर्य। सुदरता (को०)। ९ आठवें दिन भोजन करना (को०)।

व्यूक—संज्ञा पु० [स०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

व्यूढ[१]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो व्यूह बनाकर खडा हो। २ वह जिसका विवाह हो चुका हो।

व्यूढ[२]—वि० १ स्थूल। मोटा। २ उत्तम। बढिया। ३ तुल्य। समान। ४ दृढ। मजबूत। ५ क्रमबद्ध। व्यवस्थित। जैसे, सेना (को०)। ६ विवाहित। ७ अव्यवस्थित। क्रमहीन। ८ विकसित (को०)। ९ फैला हुआ। विशाल (को०)।

यौ०—व्यूढकवच=वर्म आदि को धारण किए हुए। जिसने कवच आदि पहना हो।

व्यूढि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विन्यास। सजावट। २ स्थूलता। मोटाई। ३ सैन्यविन्यास। दे० 'व्यूह' (को०)।

व्यूढोरस्क—वि० [स०] विशाल या चौडी छातीवाला (को०)।

व्यूत—वि० [स०] १ बुना हुआ। २ समतल या बराबर किया हुआ (को०)।

व्यूति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ कपडे आदि बुनने की क्रिया। बुनाई। २ बुनने की मजदूरी (को०)।

व्यूह—संज्ञा पुं० [स०] १ समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३ तर्क। ४ शरीर। बदन। ५ सेना। फौज। ६ परिणाम। नतीजा। ७ युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। लडाई के समय की अलग अलग उपयुक्त स्थानो पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अगो की नियुक्ति। सेना का विन्यास। बलविन्यास।

विशेष—प्राचीन काल म युद्धक्षेत्र मे लडने के लिये पैदल, अश्वारोही, रथ और हाथी आदि कुछ खास ढग से और खास खास मोको पर रखे जाते थे, और सेना का यही स्थापन व्यूह कहलाता था। आकार आदि के विचार से ये व्यूह कई प्रकार के होते थे। जैसे,—दड व्यूह, शकटव्यूह, वराहव्यूह, मकरव्यूह, सूचीव्यूह, पद्मव्यूह, चक्रव्यूह, वज्रव्यूह, गरुडव्यूह, श्येनव्यूह, मडलव्यूह, धनुर्व्यूह, सर्वतोभद्रव्यूह आदि। राजा या सेना का प्रधान सेनापति प्राय व्यूह क मध्य मे रहता था, और उसपर सहसा आक्रमण नही हो सकता था। जब इस प्रकार सेना के सब अग स्थापित कर लिए जाते थे, तब शत्रु सहसा उन्हे छिन्न भिन्न नही कर सकते थे।

८ किसी प्रकार के भय कारण या विपत्ति आदि से रक्षित रहने के लिये की हुई ऊहा। योजनाएँ। ९ उपजीव्य। आश्रय। भाग। अश (को०)। १०. अलग अलग करना। विभाग करना (को०)। ११. अस्तव्यस्त करना (को०)। १२ स्थान बदलना (को०)। १३. विस्तृत व्याख्या (को०)। १४ अधिक प्रयास (को०)।

यौ०—व्यूहपार्ष्णि, व्यूहपृष्ठ=सेना का पिछला भाग। चतावल। व्यूहभग, व्यूहभेद=सैनिकों की स्थिति का क्रम टूटना। सैनिकों की व्यूहस्थिति का छिन्नभिन्न होना। व्यूहरचना, व्यूहराज, व्यूहविभाग=सेना की एक विशिष्ट एव पृथक् पक्ति।

व्यूहक—संज्ञा पुं० [सं०] आकार। रूप (को०)।

व्यूहन—संज्ञा पुं० [सं०] १ युद्ध के लिये भिन्न भिन्न स्थानो पर सैनिकों का नियुक्ति करना। सेना का स्थापित करना। व्यूह रचना। २ मिलाना। ३ शरीर के अगो की बनावट (को०)। ४ स्थानपरिवर्तन (को०)। ५ (भ्रूण का) विकास (को०)।

व्यूहमति—संज्ञा पुं० [स०] चक्तिविक्तर के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

व्यूहरचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सैनिकों को योजनानुसार उपयुक्त स्थान पर खडा करना। मोरचेबदी (को०)।

व्यूहराज—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक बोधिसत्व का नाम। २. सर्वोत्कृष्ट व्यूह। श्रेष्ठ व्यूह (को०)। ३ एक प्रकार की समाधि (को०)।

व्यूहित—वि० [सं०] १ समूहबद्ध। २ व्यूह के आकार मे स्थित। व्यूहबद्ध (को०)।

व्यृद्ध—वि० [सं०] १ वृद्धिहीन। समृद्धिरहित या वचित। दुर्भाग्यग्रस्त। बदकिस्मत। २ किसी वस्तु से पृथक् किया हुआ। पृथक्कृत या वचित। ३ दोषयुक्त। सदोष। अपूर्ण। ४ विफल किया हुआ। विमनीकृत। ५ नाराज (को०)।

व्यृद्धि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ अभाग्य। बदकिस्मती। २ न्यूनता। दुर्लभता। अभाव (को०)।

व्येक—वि० [स०] [वि० स्त्री० व्येका] जिसमे एक की कमी हो। एक से कम। ऐकोन (को०)।

व्येनस्—वि० [स०] दोषरहित। अनपराध (को०)।

व्येनी—संज्ञा स्त्री० [स०] वह जिसमें अनेक रग हो। उषा, जिसमे विविध वर्ण होते है (को०)।

व्योकस्—वि० [स०] अलग रहनेवाला। जो सपृक्त न हो (को०)।

व्योकार—संज्ञा पु० [सं०] लौहकार। लोहार (को०)।

व्योम—संज्ञा पु० [सं० व्योमन्] १ आकाश। अतरिक्ष। आसमान। २ मेघ। बादल। ३ जल। पानी। ४ अवकाश। अतर (को०)। ५ सूर्य का मदिर। सूर्यमदिर (को०)। ६ अभ्रक (को०)। ७ शरीरस्थ वायु (को०)। ८ एक बडी सख्या का सूचक शब्द (को०)। ९ कल्याण। सुरक्षा (को०)। १०. हार।

विष्णु (को०)। ११. एक एकाह कृत्य (को०)। १२. वर्षदेवता अथवा प्रजापति का नाम (को०)। १३ हरिवश पुराण मे वर्णित दशार्ह के एक पुत्र का नाम (को०)।

व्योमक—सज्ञा पुं० [स०] बौद्ध मतानुसार एक आभूषण (को०)।

व्योमकेश—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

व्योमकेशी—सज्ञा पु० [स० व्योमकेशिन्] शिव का एक नाम।

व्योमगगा—सज्ञा स्त्री० [स० व्योमगङ्गा] आकाशगगा।

व्योमग—वि० [स०] आकाशचारी (को०)।

व्योमगमनी—सज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या जिसके द्वारा मनुष्य आकाश मे उड सकता हो। आसमान मे उडने की विद्या।

व्योमगमनीविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'व्योमगमनी'।

व्योमगामी—वि० [स० व्योमगामिन्] आकाशचारी (को०)।

व्योमगुण—सज्ञा पु० [स०] शब्द (को०)।

व्योमचर—सज्ञा पुं० [स०] वह जो आकाश मे विचरण करता हो। आकाशचारी।

व्योमचारी—सज्ञा पु० [स० व्योमचारिन्] १ देवता। २ पक्षी। चिडिया। ३ वह जो आकाश मे विचरण करता हो। ४ सत (को०)। ५ आकाशीय पिंड (को०)। ६ ब्राह्मण (को०)।

व्योमदेव—सज्ञा पुं० [स०] शिव (को०)।

व्योमधारण—सज्ञा पु० [स०] पारा (को०)।

व्योमधूम—सज्ञा पुं० [स०] मेघ। बादल।

व्योमध्वनि—सज्ञा स्त्री० [स०] आकाशवाणी (को०)।

व्योमनाशिका, व्योमनासिका—सज्ञा स्त्री० [स०] भारती नामक पक्षी।

व्योमपचक—सज्ञा पुं० [स० व्योमपञ्चक] शरीर मे रहनेवाले पाँच छिद्र (को०)।

व्योमपाद—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

व्योमपुष्प—सज्ञा पु० [स०] असभव पदार्थ। आकाशकुसुम (को०)।

व्योममजर—सज्ञा पुं० [स० व्योममञ्जर] दे० 'व्योममडल' (को०)।

व्योममडल—सज्ञा पुं० [स० व्योममण्डल] १ आकाश। आसमान। उ०—व्योममंडल मे—जगतीतल मे सोती शात सरोवर पर उस अमल कमलिनी दल मे।—अपरा, पृ० १४। २ पताका। ध्वजा। झडा।

व्योममाय—वि० [स०] आकाशचुबी (को०)।

व्योममुद्गर—सज्ञा पु० [स०] वह शब्द जो हवा के बहुत जोर से चलने से होता है। हूका।

व्योममृग—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा के दसवें घोडे का नाम।

व्योमयान—सज्ञा पुं० [स०] १ वह यान या सवारी जिसपर चढकर मनुष्य आकाश मे उड सकता। हो। विमान। २ हवाई जहाज।

व्योमरत्न—सज्ञा पु० [स०] सूर्य।

व्योमवल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] आकाशवल्ली या अमरबेल नाम की लता।

व्योमवृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] अंतरिक्ष, आकाश से होनेवाली वर्षा। उ०—मजरित प्रकृति, मुकुलित दिगत, कूजन गुजन की व्योम-वृष्टि।—युगात, पृ० ६।

व्योमसभवा—सज्ञा स्त्री० [स० व्योमसम्भवा] विचित्रवर्ण की गौ। चित्रकबरी गाय (को०)।

व्योमसद्—सज्ञा पुं० [स०] १ देवता। सुर। २. एक देवयोनि। गधर्व। ३ भूत, प्रेत (को०)।

व्योमसरित्—सज्ञा स्त्री० [स०] आकाशगगा (को०)।

व्योमसरिता—सज्ञा स्त्री० [स० व्योमसरित्] आकाशगगा। मदाकिनी।

व्योमस्थल—सज्ञा स्त्री० [स०] आकाश। उ०—विद्युन्मयी घटा है घन की। छिपा रत्नदीपक अञ्चल मे, शोभित है वह व्योमस्थल मे, ज्योति झलकती है पल पल मे, वर्षा ऋतु ने दिखलाई है ज्योतिर्मणी विभूति गगन की।—प्रेमाजलि, पृ० ११६।

व्योमस्थली—सज्ञा स्त्री० [स०] पृथ्वी। जमीन।

व्योमाख्या—सज्ञा पुं० [स०] १ अबरक अभ्रक। २ मूल या आदि कारण (को०)।

व्योमाधिप—सज्ञा पु० [स०] शिव (को०)।

व्योमाभ—सज्ञा पु० [स०] गौतम बुद्ध का एक नाम।

व्योमारि—सज्ञा पुं० [स०] विश्वेदेवता।

व्योमी—सज्ञा पु० [स० व्योमिन्] चंद्रमा के दस घोडो मे से एक का नाम (को०)।

व्योमोदक—सज्ञा पुं० [स०] वर्षा का जल। बरसात का पानी।

व्योम्निक—वि० [स०] व्योम सबधी। व्योम या आकाश का।

व्योरना†—क्रि० स० [हिं० व्योरा] दे० व्यौरना'

व्योरा†—सज्ञा पु० [स० विवरण] दे० 'ब्यौरा'। उ०—मैं हूँ जीव मती का भोरा। कहँ जानूँ चौका के व्योरा।—कबीर सा०, पृ० ५४८।

व्योरेवार—अव्य० [हिं० व्योरा] तफसील के साथ। व्यौरेवार। सविस्तर। उ०—इन तमाम ग्रथो की रचना काल का ठीक ठीक पता लग सकता तो हिंदुस्तान का धार्मिक, सामाजिक, और आर्थिक इतिहास श्रमपूर्वक व्योरेवार लिखा जाता।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १४३।

व्योष—सज्ञा पुं० [स०] सोठ, पीपल और मिर्च इन तीनो का समूह। त्रिकटु।

व्योहरनी†—सज्ञा स्त्री० [स० व्यवहारणीय] व्यवहार। वर्ताव। उ०—कहै मित्र की बात करै दुसमन की करनी। ना कीजै विस्वास करै कैसो व्योहरनी।—पलटू०, पृ० ६७।

व्योहार†—सज्ञा पु० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—देष्या चाह जग व्यवहार।—रामानद०, पृ० ४६।

व्यौपारी†—सज्ञा पुं० [स० व्यापारिन्] दे० 'व्यापारी'। उ०—तब वह वैष्णवन का व्यौपारी के साथ घर रह्यो।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०४।

व्यौरना†—क्रि० स० [स० विवरण] दे० 'व्योरना'। उ०—आदित वार व्यौरि ले आप। आपा व्योरत पुनि न पाप। गोरख०, पृ० २४४।

व्यौहार†—सज्ञा पुं० [स० व्यवहार] दे० 'व्यवहार'। उ०—और मानिक चद सो प्रभु कहे, जो तुम व्यौहार करो।—दो सौ बावन०, भा० १, पृ० १६५।

व्रद पु०—सज्ञा पुं० [स० वृन्द] दे० 'वृद'। उ०—भिक्षुक व्रद दान तिहि दिन्नव।—पृ० रासो, पृ० १५६।

व्रच्छ सज्ञा पु० [स० वृक्ष] दे० 'वृक्ष'। उ०—सावण आयउ साहिबा पगइ विलवी गार। व्रच्छ विलवी वेलड्यां, नरा विलवी नार।—ढोला०, दू० २६६।

व्रज—सज्ञा पु० [स०] १ जाना या चलना। व्रजन। गमन। २. समूह। झुड ३ मथुरा और वृदावन के आसपास का प्रात जो भगवान् श्रीकृष्ण का लीलाक्षेत्र है और जो इसी कारण बहुत पवित्र माना जाता है। पुराणों आदि के अनुसार मथुरा से चारो ओर ८४-८४ कोस तक की भूमि व्रजभूमि कही गई है, और इसकी प्रदक्षिणा का बहुत अधिक माहात्म्य कहा गया है। ४ अहीरो का टोला या बाडा। उ०—नयननि को फल लेति निरख सुख मुग सुरभी व्रजवधू अहीर —तुलसी (शब्द०)। ५ गोष्ठ। गोकुल। गोशाला (को०)। ६ आवास। विश्राम करने की जगह (को०)। ७ पथ। सडक। मार्ग (को०)। ८ बादल (को०)।

व्रजक—सज्ञा पुं० [स०] भिक्षा के निमित्त भ्रमणशील सन्यासी (को०)।

व्रजकिशोर—सज्ञा पु० [स०] कृष्ण (को०)।

व्रजन—सज्ञा पुं० [स०] १ चलना। जाना। गमन। २ निर्वासन। देशनिकाला (को०)। ३ मार्ग। सडक (को०)। ४ आकाश (को०)। ५ अजामीढ के एक पुत्र का नाम (को०)।

व्रजनाथ—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजपर्यग्र—सज्ञा पु० [स०] पशुओ की गणना।

विशेष—चद्रगुप्त के समय मे अध्यक्ष को राजकीय पशुओ की पूरे निशान आदि के साथ बही मे गनती रखनी पडती थी।

व्रजभाषा—सज्ञा स्त्री० [स०] मथुरा, आगरा, इटावा और इनके आस-पास के प्रदेशो म बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा, जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। उक्त जिलो के पश्चिम या दक्षिण मे यही राजस्थानी का रूप धारण कर लेती है।

विशेष—इस भाषा का प्राचीन साहित्य बहुत उच्च और बडा है और इधर चार पाँच सौ वर्षों में उत्तर भारत के अधिकाश कवियो ने प्राय. इसी भाषा में कविताएँ की हैं, जिनमे से सूर, तुलसी, बिहारी आदि अनेक कवियो ने तो बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त की है। यह भाषा बहुत ही कर्णमधुर मानी जाती है। खडी बोली मे जो सज्ञाए, विशेषण और भूतकृदंत आदि आकारात होते हैं, वे इस भाषा मे प्राय ओकारात हो जाते हैं। और कारकचिह्न भी प्राय ओकारात ही होते हैं जैसे,—घोडो, चल्यो, को सों, मो आदि। इसके कारकचिह्न निज के हैं, जो न खडी बोली मे मिलते हैं और न अवधी में। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से यह भाषा अतरग समुदाय की सब भाषाओ मे मुख्य मानी जाती है।

व्रजभू[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] व्रजमडल की भूमि (को०)।

व्रजभू[2] सज्ञा पुं० एक प्रकार का कदब (को०)।

व्रजभू[1]—वि० व्रज मे होनेवाला (को०)।

व्रजभूमिक—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन भारत में धर्म महामात्र का एक पद। उ०—ये धर्म महामात्र कई प्रकार के थे, स्त्री अध्यक्ष-महामात्र, व्रजभूमिक, अतमहामात्र आदि।—भा० भा०, पृ० २५२।

व्रजमडल—सज्ञा पुं० [स० व्रजमण्डल] व्रज और उसके आस पास का प्रदेश।

व्रजमोहन—सज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजयुवती—सज्ञा स्त्री० [स०] गोपिका (को०)।

व्रजराज—सज्ञा पुं० [स०] १ श्रीकृष्ण। नंद महर। २ नदजी। उ०—कुँवर कन्हाई दृगनि सुखदाई नवमिश्र मनि गननि अलकृत राजत श्री व्रजराज के निकट।—घनानद, पृ ५५६।

व्रजरामा—सज्ञा स्त्री० [स०] व्रज की गोपी (को०)।

व्रजलाल—सज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजलीला—सज्ञा स्त्री० [स०] कृष्णलीला। व्रज में की गई कृष्ण भगवान् की लीला। उ०—सो इनकी जा प्रकार व्रजलीला मे प्राप्ति भई सो ऊपर कहि आए हैं।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ८६।

व्रजवधू, व्रजवनिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी (को०)।

व्रजवर—सज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण (को०)।

व्रजवल्लभ सज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजवीर—सज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजसान—सज्ञा पुं० [सं०] मनुष्य (को०)।

व्रजसुदरी—सज्ञा स्त्री० [स० व्रजसुन्दरी] गोपी (को०)।

व्रजस्त्री—सज्ञा स्त्री० [सं०] गोपी (को०)।

व्रजस्पति—सज्ञा पुं० [स०] श्रीकृष्ण।

व्रजागन सज्ञा पु० [स० व्रजाङ्गन] गोशाला। गोष्ठ (को०)।

व्रजागना—सज्ञा स्त्री० [सं० व्रजाङ्गना] गोपिका। व्रजवनिता।

व्रजाजिर—सज्ञा पुं० [स०] गोष्ठ। गोशाला (को०)।

व्रजावास—सज्ञा पुं० [स०] गोपो की बस्ती। ग्वालो का गाँव (को०)।

व्रजित[1]—सज्ञा पु० [स०] गमन। जाना। घूमना (को०)।

व्रजित[2]—वि० गत। प्रस्थित। गया हुआ (को०)।

व्रजी—वि० [सं० व्रजिन] समूह के रूप मे एकत्र (को०)।

व्रजेंद्र—सज्ञा पुं० [स० व्रजेन्द्र] १ नदराय। २. श्रीकृष्ण।

व्रजेश—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण। व्रजेंद्र [को०]।

व्रजेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रज्य—वि० [सं०] गोशाला या गोष्ठ में संबंधित [को०]।

व्रज्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ घूमना। फिरना। पर्यटन। प्रव्रजन। उ०—पुरलोक जहाँ नगण्य है वह व्रज्या अति धन्य धन्य है।—साकेत, पृ० ३५८। २ गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई। ४ एक ही तरह की बहुत सी चीजें एक जगह एकत्र करना। ५ दल। ६. रंगभूमि। नाट्यशाला। ७ गति। वेग अवधी (को०)।

व्रण—संज्ञा पुं० [सं०] १. शरीर में होनेवाला फोड़ा। २ घाव। जख्म। चोट (को०)। ३ अस्त्रक्षत (को०)। ४ छेद। छिद्र। रंध्र (को०)।

यौ०—व्रणकृत्। व्रणकेतुकी = दुग्धफेनी नाम का पौधा। व्रणग्रंथि। व्रणचिकित्सक। व्रणजिता। व्रणद्विट् = (१) ब्राह्मणयष्टिका नाम का क्षुप। (२) व्रण का शत्रु। जिससे घाव ठीक हो जाय। व्रणधूपन = चिकित्सार्थ व्रण का भाप से उपचार। व्रण का वाष्प द्वारा उपचार करना। व्रणपट्ट, व्रणपट्टक, व्रणपट्टिका = घाव बाँधने का चीथड़ा या पट्टा। व्रणभृत् = घाटिन। आहत। व्रणयुक्त = जिसे घाव लगा हो। फोड़े आदि से युक्त। व्रणरोपण। व्रणवास्तु। व्रणविरोपण = दे० 'व्रणरोपण'। व्रणशोधन। व्रणशोथ। व्रणशोषी = घाव, फोड़ा आदि के कारण दुर्बल या क्षीण होनेवाला। व्रणसंरोहण = दे० 'व्रणरोहण'। व्रणसह। व्रणसहा। व्रणसंवृत।

व्रणकृत्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] भिलावाँ।

व्रणकृत्[2]—वि० १ घाव करनेवाला। २. सुरचनेवाला। चीर फाड़ करनेवाला [को०]।

व्रणग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० व्रणगन्धि] वह गाँठ जो फोड़े के ऊपर हो जाती है। वैद्यक में इसकी गणना रोगों में होती है।

व्रणचिकित्सक—संज्ञा पुं० [सं० व्रणचिकित्सक] शल्यक्रिया या चीरफाड़ करनेवाला जर्राह [को०]।

व्रणजिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] गोरखमुंडी।

व्रणन—संज्ञा पुं० [सं०] वेधन। भेदना। व्रण करना [को०]।

व्रणरोपण—संज्ञा पुं० [सं०] १. वैद्यक के अनुसार फोड़े में से दूषित मांस आदि निकल जाने पर ऐसा क्रिया करना जिससे वह भर जाय। फोड़े का घाव भरने का क्रम। २. वह औषध जिससे घाव या फोड़ा ठीक हो जाय।

व्रणवास्तु—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ फोड़ा हो [को०]।

व्रणशोधन—संज्ञा पुं० [सं०] धमासा।

व्रणशोथ—संज्ञा पुं० [सं०] फोड़े या घाव में होनेवाला वह सूजन जिसके साथ में पीड़ा भी हो।

व्रणसह—संज्ञा पुं० [सं०] रेंड़ का वृक्ष।

व्रणसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुडूच।

व्रणहृत्—संज्ञा पुं० [सं०] भल्लातक। भिलावाँ [को०]।

व्रणायाम—संज्ञा पुं० [सं०] [illegible] जिसमें समस्थान से घाव में चारों ओर की त्वचा खींचकर बाँधी जाती है। यह घाव भरने में [illegible]।

व्रणारि—संज्ञा पुं० [सं०] १ बेर। झरबेर। २. अपामार्ग नामक वृक्ष।

व्रणित—वि० [सं०] व्रणयुक्त। आहत। घायल [को०]।

व्रणिल—वि० [सं०] (वृक्ष) जिसकी छाल फूली हो। मोटा खुरदरा। छिन्न [को०]।

व्रणी—संज्ञा पुं० [सं० व्रणिन्] वह जिसे व्रण हुआ हो। व्रण का रोगी।

व्रणीय—वि० [सं०] व्रण संबंधी। व्रण या फोड़े का।

व्रण्य—वि० [सं०] फोड़े को अच्छा करनेवाला [को०]।

व्रत—संज्ञा पुं० [सं०] १. मानता करना। संकल्प। मानना। २. किसी पुण्य तिथि को अथवा पुण्य की प्राप्ति के निमित्त नियमपूर्वक उपवास करना।

विशेष—प्रायः हिंदू लोग या तो यश के लिए कुछ नहीं करते, या केवल फल पाने के लिए ही कुछ करते हैं। साधारणतः प्रत्येक पूजा में जो कुछ किया जाता है, उसमें नाम केवल फल का ही होता है, पर प्रकार आदि के क्रम में अनेक बातें भी साथ की जाती हैं। कुछ विशिष्ट तिथियों के व्रत भी विशिष्ट हुआ करते हैं। जैसे—निर्जला एकादशी के व्रत में अन्न और जल ग्रहण करने का विधान है। कुछ विशिष्ट तारों या उनके दर्शनों के उद्देश से भी व्रत किया जाता है। कुछ व्रत एक ही दिन के होते हैं और कई कई दिनों बल्कि महीनों तक चलते हैं। जैसे,—चांद्रायण, चांद्रमासिक व्रत आदि। कुछ ऐसे बड़े व्रत भी होते हैं जिनके अंत अथवा दूसरे दिन विधिपूर्वक पारण करना चाहिए। कुछ ऐसे व्रत भी हैं जिनका संबंध केवल स्त्रियों के साथ है। जैसे,—आदित्यवार (रविवार) का व्रत, संतान सप्तमी का व्रत। व्रत के एक दिन पहले से ही कुछ लोग हविष्यान्न भोजन करते हैं।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

२ वह काम जो करने अथवा न करने के लिए कोई नियम या प्रतिज्ञा की जाय। नियमपूर्वक की जानेवाली बात या कार्य। जैसे,—ब्रह्मचर्य व्रत, एकादश। उ०—[illegible] —रघुवंश, ८, ६। ३. भोजन संबंधी नियम। खाने [illegible]। ४ आचरण। चालचलन। ५ धर्म। [illegible] (को०)। ६ नियम। [illegible] (को०)। ७ यज्ञ (को०)। ८. [illegible] (को०)। ९. याचना (को०)। १०. [illegible] (को०)। ११. [illegible] (को०)। १२ [illegible] (को०)। १३. [illegible] (को०)।

व्रतचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ व्रत का अनुष्ठान। २. अभ्यास करना [को०]।

व्रतचर्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी प्रकार का व्रत करने या रहने का काम।

व्रतचारिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रतचारी होने का भाव या धर्म।

व्रतचारी—संज्ञा पु० [स० व्रतचारिन्] वह जो किसी प्रकार के व्रत का आचरण या अनुष्ठान करता हो। व्रत करनेवाला।

व्रतति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विस्तार। २ लता। उ०—डोलने लगी मधुर मधुवात, हिला तृण, व्रतति कुंज, तरु पात।—गुंजन, पृ० ४७।

यौ०—व्रततिवलय=(१) लताओं का कंकण। (२) लताओं का घेरा वा आवेष्टन।

व्रततती—संज्ञा स्त्री० [स०] १ विस्तार। फैलाव। २ लता।

व्रतदंडी—संज्ञा पुं० [सं० व्रतदण्डिन्] वह जो दंडधारण का व्रत पालन करता हो।

व्रतदान—संज्ञा पुं० [स०] व्रत के निमित्त किया हुआ दान। वह दान जो व्रत संबंधी हो [को०]।

व्रतधर—संज्ञा पु० [सं०] वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत करनेवाला।

व्रतधारण—संज्ञा पुं० [सं०] किसी धार्मिक अनुष्ठान को विधिवत् करना या विधिवत् व्रत रखना [को०]।

व्रतपक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाद्रपद मास का शुक्लपक्ष। २ एक प्रकार का साम।

व्रतपारण—संज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० व्रतपारणा] व्रत या उपवास की विधिवत् समाप्ति [को०]।

व्रतप्रतिष्ठा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी व्रत की प्रतिष्ठा करना। व्रत का पालन करना [को०]।

व्रतबंध—संज्ञा पुं० [स० व्रत+बन्ध] यज्ञोपवीत। जनेऊ। उ०—सुदिन सोधि मंगल किए, दिए भूप व्रतबंध।—तुलसी ग्रं० पृ० ८२।

व्रतभंग—संज्ञा पुं० [स० व्रतभङ्ग] व्रत, नियम वा प्रतिज्ञा का टूट जाना [को०]।

व्रतभिक्षा—संज्ञा पुं० [स०] वह भिक्षा जो बालक को यज्ञोपवीत के समय माँगनी पड़ती है।

व्रतरुचि—वि० [स०] व्रत में आनंद लेनेवाला [को०]।

व्रतलुप्त—वि० [स०] अपना व्रत तोड़नेवाला [को०]।

व्रतलोपन—संज्ञा पुं० [स०] व्रतभंग [को०]।

व्रतविसर्ग, व्रतविसर्जन—संज्ञा पुं० [स०] व्रत की समाप्ति।

व्रतवैकल्य—संज्ञा पुं० [स०] व्रत पूरा न होना।

व्रतसंग्रह—संज्ञा पुं० [स० व्रतसङ्ग्रह] वह दीक्षा जो यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाती है।

व्रतसंपादन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत पूरा करना [को०]।

व्रतसंरक्षण—संज्ञा पु० [स०] व्रतपालन [को०]।

व्रतसमापन—संज्ञा पु० [स०] व्रत पूरा होना। व्रतसंपादन [को०]।

व्रतस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. वह जिसने किसी प्रकार व्रत धारण किया हो। २ ब्रह्मचारी।

व्रतस्नात—वि० [सं०] व्रत पूरा करने के बाद स्नान करनेवाला [को०]।

व्रतस्नातक—संज्ञा पुं० [सं०] तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में से एक प्रकार का ब्रह्मचारी। वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के यहाँ रहकर व्रत का समापन कर लिया हो पर बिना वेद समाप्त किए ही घर लौट आया हो।

व्रतस्नान—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्नान जो व्रतसमाप्ति के बाद किया जाता है [को०]।

व्रतहानि—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रत का त्याग करना। व्रत छोड़ देना [को०]।

व्रताचरण—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत का पालन [को०]।

व्रताचारी—वि० [सं० व्रताचारिन्] व्रत का पालन करनेवाला [को०]।

व्रतादान—संज्ञा पुं० [सं०] कोई व्रत ग्रहण करना। व्रत लेना [को०]।

व्रतादेश—संज्ञा पुं० [स०] उपनयन नामक संस्कार। यज्ञोपवीत।

व्रतादेशन—संज्ञा पुं० [स०] वेदों का वह उपदेश जो उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचारी को दिया जाता है।

व्रतापत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] व्रत छोड़ना। व्रत का त्यागना [को०]।

व्रतिक—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत का आचरण करनेवाला। २ ब्रह्मचारी (को०)। ३. संन्यासी (को०)। ४ यजमान (को०)।

व्रतिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] उपस्विनी [को०]।

व्रती—संज्ञा पुं० [सं० व्रतिन्] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत का आचरण करनेवाला। २ वह जो यज्ञ आदि करता हो। यजमान। ३ ब्रह्मचारी। ४ एक प्राचीन ऋषि का नाम। ५ संन्यासी (को०)।

व्रतेयु—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार रौद्राश्व के एक पुत्र का नाम।

व्रतेश—संज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

व्रतोपनयन—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञोपवीत संस्कार [को०]।

व्रतोपवास—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत के निमित्त किया जानेवाला उपवास। व्रत संबंधी उपवास [को०]।

व्रतोपायन—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत का प्रारंभ [को०]।

व्रतोपोह—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का साम।

व्रत्तमान पु०†—संज्ञा पुं० [स० वर्तमान] दे० 'वर्त्तमान'। उ०—भूतह भविष्य अरु व्रत्तमान इह अपुव मे कथ सुनिय।—पृ० रा०, २४।४।

व्रत्य—संज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २ ब्रह्मचारी। ३ व्रत के उपयुक्त आहार (को०)।

व्रध्न—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'व्रध्न' [को०]।

व्रम्म पु०†—संज्ञा पुं० [स० ब्रह्मा, प्रा० व्रम्म] दे० 'ब्रह्मा'। उ०—गंगा व्रम्म कमंडली, पावनता विणपार।—बाँकी० ग्रं०, भा० २, पृ० ११५।

व्रश्चन[1]—सज्ञा पु० [स०] १ सोना, चाँदी आदि काटने की छेनी। २ वह बुरादा जो लकडी आदि चीरने पर गिरता है। ३ कुल्हाडी। ४ छेदने या काटने की क्रिया। ५ छोटी आरी (को०)। ६ पेड मे छेद करने से उसमे से निकलनेवाला निर्यास (को०)।

व्रश्चन[2]—वि० काटनेवाला। जिससे काटा जाय या जो काट सके।

व्रह्मासन(यू)—सज्ञा पुं० [स० व्रह्म, अप० व्रह (व्रह्म = अर्थात् दे ता)+ अशन (= भोजन) या स० वर्ह (= श्रेष्ठ, अग्र)+अशन (= भोज)] दे० 'अग्राशन'। उ०—किय भोजन सब सथ्य व्रह्मासन ग्रास दिय।—पृ० रा०, ६१।१६३।

व्रह्म—सज्ञा पुं० [स० व्रह्मन्] दे० 'व्रह्म'।

व्रह्मपुर—सज्ञा पु० [स०] वृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम। —वृहत्०, पृ० ८६।

व्रह्ममणि—सज्ञा स्त्री० [स०] वृहत्सहिता के अनुसार एक रत्न का नाम।—वृहत्०, पृ० ३७७।

व्रह्मानद—सज्ञा पु० [स० व्रह्मानन्द] दे० 'व्रह्मास्वाद'। उ०—इसका आस्वाद व्रह्मानद के समान होता है।—रस० क०, पृ० ३३।

व्रह्मास्वाद—सज्ञा पु० [स० व्रह्मास्वाद] व्रह्मसाक्षात्कार करने का आनद।

व्राचट, व्राचड—सज्ञा स्त्री० [अप०] १ अपभ्रश भाषा का एक भेद जिसका व्यवहार आठवी से ग्यारहवी शताब्दी तक सिध प्रात में था। २. पैशाचिका भाषा का एक भेद।

व्राज—सज्ञा पुं० [स०] १. कुत्ता। २ दल। समूह। ३. जाना। गमन। ४. कुक्कट। मुर्गा (को०)।

व्राजपति—सज्ञा पु० [स०] दल या समूह का नायक।

व्राजि—सज्ञा स्त्री० [स०] बवंडर। तूफान। आँधी [को०]।

व्राजिक—सज्ञा पु० [स०] सन्यासियो का एक व्रतोपवास जिसमे वे केवल दूध पीते हैं [को०]।

व्रात—सज्ञा पु० [स०] १. दल। समूह। २. मनुष्य। आदमी। ३. वह परिश्रम जो जीविका के लिये किया जाय। ४ वह जिसको कोई निश्चित वृत्ति न हो या जो चोरी, डाके से निर्वाह करता हो। जरायम पेशा। दुर्जीवी। ५ बराती (को०)। ६ दैनिक मजदूरी। ७. यदाकदा कार्य मे नियुक्ति (को०)। ७ जातिच्युत ब्राह्मण की संतति (को०)।

व्रातजाति—सज्ञा स्त्री० [स०] दल के रूप मे इधर उधर रहनेवाली जाति [को०]।

व्रातजीवन—सज्ञा पुं० [स०] वह जो शारीरिक परिश्रम करके अपना निर्वाह करता हो।

व्रातपति—सज्ञा पुं० [स०] किसी समूह या सघ का अध्यक्ष [को०]।

व्रातिक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का धार्मिक कृत्य [को०]।

व्रातीन—वि० [स०] १ श्रमजीवी मजदूर। २. लूट मार करनेवाला। जो लूटमार द्वारा जीविकार्जन करता हो। ३ संघबद्ध होकर रोजी कमानेवाला [को०]।

व्रात्य[1]—वि० [स०] व्रत सबधी। व्रत का।

व्रात्य[2]—सज्ञा पुं० १. वह जिसके दस सस्कार न हुए हो। सस्कार हीन। उ०—अथर्ववेद मे मगध के निवासियो को व्रात्य कहा गया है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ६६। २ वह जिसका उपनयन या यज्ञोपवीत सस्कार न हुआ हो।

विशेष—ऐसा मनुष्य पतित और अनार्य समझा जाता है और उसे वैदिक कृत्य आदि करने का अधिकार नही होता। शास्त्रो मे ऐसे व्यक्ति के लिये प्रायश्चित्त का विधान किया गया है। प्राचीन वैदिक काल मे 'व्रात्य' शब्द प्राय परव्रह्म का वाचक माना जाता था, और अथर्ववेद मे 'व्रात्य' की बहुत अधिक महिमा कही गई है। उसमे वह वैदिक कार्यो का अधिकारी, देवप्रिय, ब्राह्मणो और क्षत्रियों का पूज्य, यहाँ तक की स्वय देवाधिदेव कहा गया है। परतु परवर्ती काल मे यह शब्द सस्कारभ्रष्ट, पतित और निकृष्ट व्यक्ति का वाचक हो गया है।

३ नीच या बदमाश व्यक्ति। ४ वह मनुष्य जो अपवर्ण माता पिता से उत्पन्न हो। दोगला। वर्णसकर।

यौ०—व्रात्यगण = इधर उधर घूमनेवाली जाति या वर्ग। व्रात्यचर्या = नीचतापूर्ण आचार व्यवहार। व्रात्यों का सा रहन सहन। खानाबदोश व्यक्ति का आचार विचार। व्रात्यबधु = वह व्यक्ति जो अपने को व्रात्य कहता हो। व्रात्ययज्ञ = एक प्रकार का यज्ञ। व्रात्ययाजक। व्रात्यस्तोम।

व्रात्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] व्रात्य का भाव या धर्म। व्रात्यत्व।

व्रात्यत्व—सज्ञा पुं० [स०] व्रात्य का भाव या धर्म। व्रात्यता।

व्रात्ययाजक—सज्ञा पु० [स०] वह जो व्रात्यों का यज्ञ कराता हो।

व्रात्यस्तोम—सज्ञा पुं० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञ जो व्रात्य या सस्कारहीन लोग किया करते थे।

व्रात्या—सज्ञा स्त्री० [स०] व्रात्य की कन्या। जातिच्युत व्यक्ति की कन्या [को०]।

व्रिद—सज्ञा पुं० [स० विरद] विरद। सुजस। उ०—मछ कवि कहै पुन मरन सधार व्रिद याही ते सरन लयो रावरे चरन को। —रघु० रू०, पृ० २८५।

व्रीख†—सज्ञा पु० [देश०] कदम। डग। उ०—भागा लार भरतनह, व्रीखाँ बाँकडियाँह।—बाँकी० ग्र०, भा० १, पृ० २८।

व्रीड—सज्ञा पु० [स०] लज्जा। शरम।

व्रीडन—सज्ञा पु० [स०] १. लज्जा। शर्म। हया। २ शिष्टता। विनम्रता। ३. निम्नता। अवनति। अपकर्ष [को०]।

व्रीडा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लज्जा। शरम। २ नम्रता। शिष्टता। संकोच (को०)।

यौ०—व्रीडानत, व्रीडान्वित = (१) विनम्र। लज्जित। सकुचित। व्रीडादान = नम्रता के कारण मिलनेवाला पुरस्कार।

व्रीध(यू)†—सज्ञा स्त्री० [स० वृद्धि] दे० 'वृद्धि'। उ०—बाँका हरष न व्रीध सूँ हाण हुवाँ नँह सोक। हरि सतोष दियौ हिए तिणसूँ दीध त्रिलोक।—बाँकी० ग्र०, भा० ३, पृ० ६३।

व्रीडित[1]—वि० [स०] लज्जित। शर्मिदा। २. विनीत। नम्र [को०]।

व्रीडित—संज्ञा पु० १ लज्जा। शर्म। २ विनय। नम्रता [को०]।

व्रील—संज्ञा पु० [सं०] लज्जा। शरम [को०]।

व्रीलस—वि० स०] लज्जित [को०]।

व्रीहि—संज्ञा पुं० [स०] १ धान। २ चावल। ३ अन्न (को०)। ४ धान का खेत (को०)। ५ चावल का बीज या दाना (को०)।

व्रीहिक—वि० [स०] १ जिसके पास धान हो। २ धान रोपनेवाला [को०]।

व्रीहिकाचन—संज्ञा पुं० [स० व्रीहिकाञ्चन] मसूर।

व्रीहितुदिका—संज्ञा स्त्री० [स० व्रीहितुन्दिका] देवधान्य।

व्रीहिद्रोण संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गुल्म।

व्रीहिपार्णिका—संज्ञा संज्ञा [स०] शालिपर्णी।

व्रीहिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [स०] शालिपर्णी [को०]।

व्रीहिभेद—संज्ञा पु० [स०] चेना धान।

व्रीहिमय—संज्ञा पु० [स०] यज्ञ मे आहुति के लिये निर्मित चावल का खीर। पुरोडाश [को०]।

व्रीहिमुख—संज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र जिसका व्यवहार शस्त्रचि कत्सा मे होता था।

व्रीहिराजिक—संज्ञा पु० [स०] चेना धान।

व्रीहिल—वि० [स०] दे० 'व्रीहिक' [को०]।

व्रीहीवाप—संज्ञा पु० [स०] धान की बुवाई। धान रोपना [को०]।

व्रीहिवापी—वि० [स० व्रीहिवापिन्] धान रोपनेवाला। धान बोनेवाला [को०]।

व्रीहिश्रेष्ठ—संज्ञा पु० [स०] शालि धान्य।

व्रीही[1]—संज्ञा पु० [स० व्रीहिन्] वह खेत जिसमे धान बोया गया हो।

व्रीही[2]—संज्ञा पु० दे० 'व्रीहि'।

व्रीह्यगार—संज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ पर बहुत सा धान रखा जाता हो। धान का गोदाम।

व्रीह्यपूप—संज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ जो चावल का पीसकर बनाया जाता था।

व्रीह्यागार—संज्ञा पु० [स०] दे० 'व्रीह्यगार'।

व्रीह्याग्रयण—संज्ञा पु० [स०] व्रीहि का अग्रभाग वा अँगौगा [को०]।

व्रीह्यूर्वरा—संज्ञा स्त्री० [स०] वह खेत या भूमि जो धान से उर्वर हो। धान का खेत [को०]।

व्रुडित—वि० [स०] १ डूबा हुआ। निमग्न। २ भूला वा भटका हुआ [को०]।

व्रैह—वि० [स०] चावल का बना हुआ [को०]।

व्रैहिक—वि० [स०] धान के साथ उत्पन्न किया हुआ [को०]।

व्रैहेय[1] वि० [स०] १ जो धान के साथ बोया गया हो। २ धान बोने योग्य [को०]।

व्रैहेय[2] संज्ञा पुं० [स०] १ धान का खेत। शालि का खेत। धान बोने योग्य भूमि [को०]।

व्लीन—वि० [स०] १ सँभाला हुआ। सहारा वा भरोसा दिया हुआ। २ कुचला हुआ। पददलित। ३ गया हुआ। निगत। गत [को०]।

व्लेप्क—संज्ञा पु० [स०] जाल। फंदा [को०]।

यौ०—व्लेप्कहत = जो फंदे द्वारा हत हो।

व्हाँ—क्रि० वि० [हिं० वहाँ] दे० 'वहा'। उ०—चले मजल दर मजल आया बेदर के मिमल। व्हा हुई वो नक्कन सो सकल तुम सुनो।—दक्खिनी०, पृ० ४५।

व्हाला[1]—संज्ञा पुं० [देश०] १. प्यारा। प्रिय। २ ज्वाला। ३ बरसाती नाला। उ०—झामिक पइठा झाल, सुदार दोठा सासविण। जिमि व्हाला विच वाल, प्रिव जाई मारू नही। —ढोला०, दू० ६०४।

व्हिस्की—संज्ञा स्त्री० [अ०] एक अंग्रेजी शराब। उ०—इसके बाद उसने मुझसे पूछा—'कहो, क्या पिओगे ? शेरी, शपेन, व्हिस्की, ब्राडी या और कोई दूसरी'।—सन्यासी, पृ० २३६।

व्हे—सर्व० [हिं० वह] दे० 'वह'। उ०—पय असेदे पूगणा, अलगो घणा अकथ्य। व्ह विण जाण्या हालणा, सबल (जा) विण सथ्य। —बाँकी० ग्र०, भा० २, पृ० ४५।

श

श—हिंदी वर्णमाला मे व्यंजन का तालव्य वर्ण। इसका उच्चारण प्रधानतया तालु का सहायता से होता है, इससे इसे तालव्य श कहते है। यह महाप्राण है और इसके उच्चारण म एक प्रकार का घर्षण होता है, इसलिय इसे ऊष्म भी कहते हैं। आभ्यंतर प्रयत्न के विचार से यह ईषत्स्पृष्ट है, और इसम बाह्य प्रयत्न श्वास और घोष होता है।

श[1]—संज्ञा पु० [स०] १. कल्याण। मंगल। २. सुख। ३. शांति। ४. राग का अभाव। बाह्य वस्तुओं से वैराग्य। ५. शास्त्र।

श[2]—वि० शुभ।

शंक[1]—संज्ञा पु० [स० शङ्क] १. बैल, जो छकड़ा खींचता है। २. भय। डर। आशंका।

शंक[2]—संज्ञा स्त्री० [स० शङ्का] संदेह। खटका। आशंका।

शंकन—संज्ञा पु० [स० शङ्कन] १ वह जो भयंकर हो। वह जिससे संत्रास या विस्मयाकुल हो। २. भय, शंका या संदेह उत्पन्न करने की क्रिया।

शंकना[1]—क्रि० अ० [स० शङ्का या शङ्कन] १. शंका करना। २ भय करना। डरना। उ०—(क) सोसति शोक चला, डरपैंहु ते किंकर से करना मुख मार।—तुलसी (शब्द०)। (ख) शंकया शंभु शैलजा समेत दंत मेरा शैल शंकरद देत हो सुशंकया मुरपाल हे।—भक्तमाल (शब्द०)।

शंकनीय—[स० शङ्कनीय] १ शंका करने योग्य। संदेहास्पद। २. भय के योग्य। ३. अनुमान के योग्य। जिसका अनुमान किया जा सके।

शंकर[1]—वि० [स० शङ्कर] १. मंगल करनेवाला। २. शुभ। ३. लाभदायक।

शकर[१]—सज्ञा पुं० १. शिव का एक नाम जो कल्याण करनेवाले माने जाते हैं। महादेव। शभु।

यौ०- शंकर की लकड़ी = कहारो की परिभाषा मे ऊख।

विशेष—जब कहार पालकी लेकर चलते हैं और रास्ते मे उन्हे ऊख पड़ी हुई मिलती है, तब आगेवाला कहार पीछेवाले कहार को सचेत करने के लिये इस पद का प्रयोग करता है।

२. दे० 'शंकर चार्य'। ३. भीमसेनी कपूर। ४. कबूतर। ५ एक छद का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे १६ और १० के विश्राम से २६ मात्राएँ होती हैं और अत मे गुरु लघु होता है। ६ एक राग जो मेघ राग का आठवाँ पुत्र कहा गया है।

विशेष—कहते हैं कि इसका रग गोरा है, श्वेत वस्त्र धारण किए हुए है, तीक्ष्ण त्रिशूल इसके हाथ मे है, पान खाए और अरगजा लगाए स्त्री के साथ विहार करता है। शास्त्रो मे यह सपूर्ण जाति का कहा गया है। रात्रि का प्रथम पहर इसके गाने का समय है, और यो रात्रि मे किसी समय गाया जा सकता है।

शकर[१]—सज्ञा पुं० [सं० मङ्कर] दे० 'सकर' उ०—शकर वरण पशु पक्षी मे ही पाइयत अलकही पारत अरु भग निरधारही।—गुमान (शब्द०)।

शकर का फूल—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कर + हिं० फूल] शखपुष्पी। गुलपरी।

शकरकिंकर—सज्ञा पुं० [स० शङ्करकिङ्कर] शकर का दास। शिवभक्त।

शकरचूर—सज्ञा पुं० [स० शङ्करचूर (<सं० चूड = चूडा)] एक प्रकार का सर्प।

विशेष—कहते हैं, इसकी उत्पत्ति पातराज और दूधराज सर्प के जोड़े से होती है। यह कभी कभी ९, १० हाथ लबा होता है। इसके जहर के दाँत बड़े होते हैं, इसी से इसका काटना साघातिक होता है, यह बहुत कम देखने मे आता है और बग देश में केवल सुंदरवन मे होता है। यह बहुत ही भयकर होता और इसका पकड़ना बड़ा कठिन है।

शंकरजटा—सज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करजटा] १ रुद्रजटा। जटाधारी नाम का पौधा। २ साबूदाना। साबूदाना। ३ एक प्रकार की पिठवन।

शकरताल—सज्ञा पुं० [सं० शङ्करताल] सगीत मे एक प्रकार का ताल। इसमें ११ मात्राएँ होती है। इसमे ९ आघात और २ खाली होते हैं। इसके मृदग की बोल इस प्रकार है—

+ १ ० २ ३ ४ ० ५
धा धिन ता देत खूना केटे ताग धाधिन ता, देत खूना तेंदे केटे
६ ७ ८ +
नाग् देत तटे कता गदि घेने। धा।

शंकरतीर्थ सज्ञा पुं० [सं० शङ्करतीर्थ] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शकरप्रिय—सज्ञा पुं० [स० शङ्करप्रिय] १ तीतर पक्षी। २. धतूरा। ३. गूमा। द्रोणपुष्पी। गोम।

शंकरमत्त—सज्ञा पुं० [सं० शङ्करमत्त] एक प्रकार का लोहा जिसे शकरलोह भी कहते है।

शकरवाणी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्करवाणी] शंकर का वाक्य अर्थात् ब्रह्मवाक्य जिसका सत्य होना परम निश्चित माना जाता है। सदा ठीक घटनेवाली बात।

शकरशुक्र—सज्ञा पु० [स० शङ्करशुक्र] पारा। पारद।

शकरशैल—सज्ञा पु० [स० शङ्करशैल] महादेव जी का पर्वत, कैलास। उ०—शकरशैल शिला तल मध्य किधौं शुक की अवली फिरि आई।—केशव (शब्द०)। (ख) शंकरशैल चढी मन मोहति। सिद्धन की तनया जनु सोहति।—केशव (शब्द०)।

शकरश्वशुर—सज्ञा पुं० [स० शङ्करश्वशुर] हिमवान् पर्वत।

शकरस्वामी—सज्ञा पुं० [शङ्करस्वामिन्] दे० 'शकराचार्य'।

शकरा[१]—सज्ञा पु० [स० शङ्कर] १. एक प्रकार का राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है। यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है। विशेष दे० 'शकर'-७ और 'शंकराभरण'। २ शमी। सफेद कीकर। ३. मजीठ। ४ शिवा। भवानी। पार्वती।

शकरा[२]—वि० स्त्री० [स० शङ्करा] कल्याण करनेवाली। मगल करनेवाली।

शंकराचारी—सज्ञा पुं०, वि० [स० शङ्कराचारिन्] श्रीशकराचार्य द्वारा सस्थापित शैव धर्म का अनुयायी।

शंकराचार्य—सज्ञा पुं० [सं०] अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य।

विशेष—इनका जन्म सन् ७८८ ई० मे केरल देश मे कालपी अथवा कापल नामक ग्राम मे नबूदरीपाद ब्राह्मण के घर हुआ था, और ये ३२ वर्ष की अल्प आयु मे सन् ८२० ई० मे केदारनाथ के समीप स्वर्गवासी हुए थे। इनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम सुभद्रा था। बहुत दिनो तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के अनतर शिवगुरु ने पुत्ररत्न पाया था, अत उसका नाम शकर रखा। जब ये तीन ही वर्ष के थे, तब इनके पिता का देहात हो गया था। ये बड़े ही मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। छह वर्ष की अवस्था मे ही ये प्रकाड पडित हो गए थे और आठ वर्ष की अवस्था मे इन्होने सन्यास गहण किया था। इनके सन्यास ग्रहण करने के समय की कथा बड़ी विचित्र है। कहते हैं, माता अपने एकमात्र पुत्र को सन्यासी बनने की आज्ञा नही देती थी। एक दिन जब शकर अपनी माता के साथ किसी आत्मीय के यहाँ से लौट रहे थे, तब नदी पार करने के लिये वे उसमे घुसे। गले भर पानी मे पहुँचकर इन्होने माता को सन्यास गहण करने की आज्ञा न देने पर डूब मरने की धमकी दी। इससे भयभीत होकर माता ने तुरत इन्हे सन्यासी होने की आज्ञा प्रदान की और इन्होने गोविंद स्वामी से सन्यास ग्रहण किया।

शकराचार्य ने ब्रह्मसूत्रो की बड़ी ही विशद और रोचक व्याख्या की है। पहले ये कुछ दिनो तक काशी मे रहे थे और तब इन्होने विछिलविंदु के तालवन मे मडन मिश्र को सपत्नीक

शास्त्रार्थ मे परास्त किया। इन्होने समस्त भारतवर्ष मे भ्रमण करके बौद्ध धर्म को मिथ्या प्रमाणित करके वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित किया था। उपनिषदो और ब्रह्मसूत्र पर लिखी हुई इनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध है। इन्होने भारतवर्ष मे चार मठो की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिनके प्रवर्तक तथा गद्दी के अधिकारी शकराचार्य कहे जाते हैं। वे चारो स्थान निम्नलिखित है—(१) बद्रिकाश्रम, (२) करवीरपीठ, (३) द्वारिका पीठ और (४) शारदापीठ। इन्होने अनेक विधर्मियो को भी अपने धर्म मे दीक्षित किया था। ये शकर के अवतार माने जाते है।

शकरादि—सज्ञा पु० [सं० शङ्करादि] सफेद आक। सफेद मदार।

शकराभरण—सज्ञा पुं० [स०शङ्कराभरण] सपूर्ण जाति का एक प्रकार का राग जो नटनारायण राग का पुत्र माना जाता है। इसके गाने का समय प्रभात है, और किसी किसी के मत से सायकाल मे १६ दड से २० दड तक भी गाया जा सकता है। उ०—गाऊँ कैसे शकराभरण, दरसाऊँ कैसे स्वर लक्षण। —क्वासि, पृ० ७३।

शकरालय—सज्ञा पुं० [सं० शङ्करालय] कैलास।

शकरावास—सज्ञा पुं० [स० शङ्करावास] १ कैलास। २ कर्पूर (को०)।

शकरावास कर्पूर—सज्ञा पुं० [स० शङ्करावास कर्पूर] भीमसेनी कपूर। बरास।

शकराह्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कराह्वा] शमी का वृक्ष।

शकरी[1]—सज्ञा स्त्री० [सं० शङ्करी] १. शिव की पत्नी पार्वती। २ मजिष्ठा। मजीठ। ३ शमी का वृक्ष। ४ एक रागिनी जो मालकोश राग की सहचरी मानी जाती है।

शकरी[2]—वि० कल्याण करनेवाली। मंगल करनेवाली।

शकर्षण—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कर्षण] १. विष्णु का एक नाम। २ रोहिणी के पुत्र का नाम। दे० 'सकर्षण'।

शकव—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कव] सकुची मछली। विशेष दे० 'सकुची'।

शकव्य—सज्ञा पु० [स० शङ्कव्य] १ वह वस्तु जो शकु या कील के योग्य हो। जैसे, काष्ठ आदि। २ वह जिसके सबध मे शका या सदेह किया जा सके (को०)।

शका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्का] १ मन मे होनेवाला अनिष्ट का भय। डर। खौफ। खटक। उ०—(क) टेढ जान शका सब काहू। वक्र चद्रमहि ग्रसै न राहू।—तुलसी (शब्द०)। (ख) शका है दशानन को हरा है सुवका वीर, डका है विजय को कपि कूद परयो लका मे।—पद्माकर (शब्द०)। २ किसी विषय की सत्यता या असत्यता के सबध मे होनेवाला सदेह। आशका। सशय। शक। उ०—(क) नृप विलोकि शका उपजावा। सजल नयन मुख वचन न आवा।—सबल (शब्द०)। (ख) तुमहि वरण चाहत हौं आपहि। पै हिडब शका मन आवहि।—सबल (शब्द०)। ३. साहित्य के अनुसार एक सचारी भाव। अपने किसी अनुचित व्यवहार अथवा किसी और कारण से होनेवाली इष्टहानि की चिंता। ४ आत्मविश्वास। ५. धारणा (को०)। ५. तर्कवितर्क या वादविवाद मे आपत्ति करना (को०)। ६ परिकल्पना। सभावना (को०)।

यौ०—शकाजनक = सदेह उत्पन्न करनेवाला। शकानिवारण = सदेह, भय आदि का दूर होना। शकानिवृत्त = सदेह दूर होना। खटका मिटना। शकाशकु = सदेह का काँटा। शकाशील = प्रत्येक बात मे सदेह करनेवाला। शकालु।

शका अतिचार—सज्ञा पुं० [सं० शङ्काअतिचार] जैनियो के अनुसार एक प्रकार का पाप या आचार जो जिनवचन मे शका करने से होता है।

शकाकुल—वि० [स० शङ्काकुल] शकित। सदेहयुक्त। उ०—लख शकाकुल हो गए अतुल बल शयनयन। खिच गए दृग मे सीता के राममय नयन।—अनामिका, पृ० १२२।

शकान्वित—वि० [सं० शङ्कान्वित] दे० 'शकाकुल'।

शकाभियोग—सज्ञा पुं० [सं० शङ्काभियोग] सदेह या शका का दोषारोपण (को०)।

शकालु—वि० [स० शङ्कालु] जो प्राय शका या सदेह करता हो। शकाशील।

शकासमाधान—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कासमाधान] शका या सदेह का निवारण या निराकरण। २ शका और समाधान। सदेह और उसका निवारण (को०)।

शकास्पद—वि० [सं० शङ्कास्पद] सदेह, खटका या भय का विषय (को०)।

शकित[1]—वि०—[स० शङ्कित] [वि० स्त्री० शकिता] १ डरा हुआ। भयभीत। त्रस्त। जिसे सदेह हुआ हो। ३ आत्मविश्वास। सदेहयुक्त। सदिग्ध। उ०—इतन धरि धरन चिक्करत दिग्गज कमठ, शेष सकुचित, शकित पिनाक।—तुलसी (शब्द०)। ४ विचलित। अदृढ़। अस्थिर (को०)।

यौ०—शकितचित्त, शकितमना = (१) शकाकुल। सशयालु। (२) भीरु। कातरहृदय। उरपोक। (३) सदिग्ध। शकितवर्ण। शकितवर्णक।

शकित[2]—सज्ञा पुं० भटेउर या चोरक नाम का गधद्रव्य।

शकितवर्ण—सज्ञा पुं० [स० शङ्कितवर्ण] दे० 'शकितवर्णक'।

शकितवर्णक—सज्ञा पुं० [स० शङ्कितवर्णक] तस्कर। चोर।

शकिनी—वि० स्त्री० [स० शङ्किनी] शकायुक्त। सदेहास्पद। उ०—प्रिये, ठीक कहती हो तुम यह, सदा शकिनी आशा है।—साकेत, पृ० ३६६। २ सदेह करनेवाली। शका करनेवाली।

शकी—वि० [सं० शङ्किन्] [वि० स्त्री० शकिनी] १ शका या सदेह करनेवाली। शका से पूर्ण (को०)। २ खतरनाक।

शकु—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कु] १ कोई नुकीली वस्तु। २ मेख। कील। ३ खूँटी। ४ भाला। बरछा। ५. गाँसी। फल।

६ लीलावती के अनुसार दस लक्ष कोटि की एक संख्या। शख। ७ एक प्रकार की मछली। सकुची मछली। ८ कामदेव। ९ शिव। १०. राक्षस। ११ विष। १२ हम। १३ वल्मीक। बाँबी। १४ कलुष। पाप। १५ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा। १६ बारह अंगुल की एक नाप। १७ बारह अगुल की एक खूँटी, जिसका व्यवहार प्राचीन काल मे सूर्य या दीए की छाया आदि नापने मे होता था। १८ वृक्षो मे की रस खीचने की शक्ति। १९ गावदुम खभा जिसके ऊपर का हिस्सा नुकीला और नीचे का मोटा हो। २० पुराणानुसार उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के नवरत्न पडितो मे से एक। २१. उग्रसेन का एक पुत्र। २२ दाँव। २३ पत्तो की नसें। २४ नखी नामक गधद्रव्य। २५ लिंग। २६ शिव के अनुचर एक गधर्व का नाम। २७ कटे हुए वृक्ष का तना। ठूँठ (को०)। २८ बाण का अग्रभाग। तीर की गाँसी (को०)। २९ साल का वृक्ष (को०)। ३० (ज्योतिष मे) लब रेखा या ऊँचाई (को०)।

शकुक—सज्ञा पु० [स० शङ्कुक] १ सस्कृत के एक प्रसिद्ध विद्वान् जिनका मत रसविवेचन के सबध मे समादृत साहित्यशास्त्रो मे है। २ छोटी खूँटी।

शकुकर्ण—सज्ञा पुं० [सं० शङ्कुकर्ण] १ वह जिसके कान शकु के समान लबे और नुकीले हो। २. गदहा। ३ एक नाग का नाम।

शकुकर्णी—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुकर्णिन्] शिव। महादेव।

शकुचि—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुचि] सकुची मछली।

शकुच्छाया—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुच्छाया] १ शकु की छाया। २. प्राचीन काल की बारह अंगुल की एक नुकीली खूँटी जिसका ऊपरी भाग नुकीला होता था। इसकी छाया से समय का परिमाण मालूम किया जाता था।

शकुजीवा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुजीवा] ज्योतिष के अनुसार शकु की ज्या या ज्यापिड।

शकुतरु—सज्ञा पु० [स० शङ्कुतरु] शाल का वृक्ष। साखू का पेड।

शकुद्वार—सज्ञा पु० [स० शङ्कुद्वार] गुजरात के समीप के एक छोटे टापू का नाम। यहाँ शकु नारायण की मूर्ति है।

शंकुधान—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुधान] वह सूराख जिसमे शकु बैठाई वा जडी जाय (को०)।

शकुनारायण—सज्ञा पु० [स० शङ्कुनारायण] नारायण की वह मूर्ति जो शकुद्वार टापू मे है।

शकुपुच्छ—सज्ञा पु० [स० शङ्कुपुच्छ] भौरे आदि का डंक (को०)।

शकुफणी—सज्ञा पु० [स० शङ्कुकर्णिन्] जल मे रहनेवाले जतु। जलचर।

शकुफलिका, शकुफली—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुफलिका, शङ्कुफली] सफेद कीकर। शमी।

शंकुमती—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुमती] एक वैदिक छंद जिसके पहले पाद मे पाँच और शेष तीनो मे छह छह या इससे कुछ न्यूनाधिक वर्ण होते है।

शकुमुख—सज्ञा पु० [स० शङ्कुमुख] १ मगर। २. चूहा।

शकुमुखी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुमुखी] जोक।

शकुमूली—सज्ञा पु० [स० शङ्कुमूली] अगहन मास के शुक्ल पक्ष का १५वाँ दिन (को०)।

शकुयत्र—सज्ञा पु० [स० शङ्कुयन्त्र] एक यंत्र जिसके द्वारा सूर्य चद्र के दिगश और उन्नतांश का ज्ञान होता है (ज्योतिष)।

शकुर'—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुर] पुराणानुसार एक दानव का नाम।

शकुर'—वि० भयकर। भीषण।

शकुला—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्कुला] १ सुनारो काटने का सरौता। २. एक प्रकार का चाकू या शलाका। उत्पलपत्र। उत्पलपत्रिका (को०)।

शकुवृक्ष—सज्ञा पुं० [स० शङ्कुवृक्ष] शाल का वृक्ष।

शकुशिर—सज्ञा पुं० [स० सङ्कुशिरस्] भागवत के अनुसार एक असुर का नाम।

शकुश्रवण—सज्ञा पुं० [शङ्कुश्रवण] दे० 'शकुकर्ण'।

शकोच, शकोचि—सज्ञा पु० [स० शङ्कोच, शङ्कोचि] सकुची मछली।

शकोशिक—वि० [स० शङ्कोशिक] नैमित्तिक। (साख्य)।

शक्य—वि० [स० शङ्क्य] दे० 'शकनीय'।

शख—सज्ञा पु० [स० शङ्ख] १ एक प्रकार का बडा घोघा जो समुद्र मे पाया जाता है।

विशेष—इसे एक प्रकार का जलजतु, जिसे शख कहते है, अपने रहने के लिये तैयार करता है। लोग इस जतु को मारकर उसका यह कलेवर बजाने के उपयोग मे लाते है। यह बहुत पवित्र समझा जाता है और देवता आदि के सामने तथा लडाई के समय मुँह से फूँककर बजाया जाता है। पुराणो के अनुसार विष्णु भगवान् के चारो हाथो मे से एक हाथ मे शख भी रहता है। इसके दो भेद होते हैं। एक दक्षिणावर्त्त और दूसरा वामावर्त्त। इनमे से दक्षिणावर्त्त बहुत कम मिलता है। वैद्यक के अनुसार यह नेत्रो को हितकारी, पित्त, कफ, रुधिरविकार विषविकार, वायुगोला, शूल, श्वास, अजीर्ण, सग्रहणी और मुँहासे को नष्ट करनेवाला माना गया है। दक्षिणावर्त्त मे इनसे भी अधिक गुण होते हैं। कहते है, जिसके घर मे यह रहता है, उसके धन की अधिक वृद्धि होती है। वामावर्त्त ही अधिक मिलता है और यही औषध के काम आता है। जो शख उज्वल और चमकदार होता है, वह उत्तम समझा जाता है। इसको विधिपूर्वक शुद्ध कर भस्म बनाकर देने से सब प्रकार के ज्वर, सब प्रकार की खाँसी, श्वास, अतिसार आदि रोगो मे उचित अनुपान से अत्यत लाभकारी है। यह स्तभक और वाजीकरण भी है। इसकी मात्रा चार रत्ती से डेढ़ माशे तक है।

मुहा०—शंख बजना = विजय प्राप्त होना। सफलता मिलना। शंख बजाना = (१) सफल होने पर अथवा कृतकार्य होने पर आनंद मनाना। (२) किसी की बुराई या हानि देखकर आनंद मनाना। (३) असफल एवं अकृतकार्य होने पर दुःखी होना। झखना (व्यंग्य)।

यौ०—शंख का मोती = एक प्रकार का कल्पित मोती। कहते हैं, यह समुद्र के अंतर्गत दुर्गम स्थानों में शंख के अंदर उत्पन्न होता है।

पर्या०—कंबु। कंबोज। पावनध्वनि। अंतर्कुटिल। सुनाद। महानाद। मुखर। बहुनाद। दीर्घनाद। हरिप्रिय।

२ दस खर्व की एक संख्या। एक लाख करोड़। ३ कनपटी। ४ हाथी का गंडस्थल, अथवा दाँतों के बीच का भाग। ५ चरणचिह्न। ६ एक दैत्य का नाम जो देवताओं को जीतकर वेदों को चुरा ले गया था और जिसके हाथों से वेदों का उद्धार करने के लिये भगवान् को मत्स्यावतार धारण करना पड़ा था। शंखासुर। ७ नखी नाम का सुगंधित द्रव्य। ८ एक निधि। उ०—शंख खर्व नीलाठए नवई निद्धि जु कुंद। विश्राम (शब्द०)। ९ राजा विराट् का पुत्र जिसे द्रोण बाण ने मारा था। इसके भाई का नाम उत्तर था। उ०—उत्तर शंख नृपनि सुख वीरा। और सजे अमित रणधीरा।—सबल (शब्द०)। १० एक राजमंत्री का नाम। उ०—सुरति सुधन्वा जू सो दोष के करत मरे शंख औ लिखित विप्र भयो मैलो मन है।—नाभादास (शब्द०)। ११ कुबेर की निधि के देवता। १२ चंपकपुरी के राजा हंसध्वज का उपरोहित और लिखित का भाई जो स्मृतिकार थे। उ०—शंख लिखित उपरोहित दोई। रहे तहाँ जानत सब कोई।—सबल (शब्द०)। १३ धारा नगर के राजा गंधर्वसेन का बड़ा लड़का और राजा विक्रमादित्य का बड़ा भाई जिसे मारकर विक्रम ने गद्दी प्राप्त की थी। १४ छप्पय के ७१ भेदों में से एक भेद। इसमें १५२ मात्राएँ या १४९ वर्ण होते हैं, जिनमें से ३ गुरु और शेष १४६ लघु होते हैं। १५ दंडक वृत्त के अंतर्गत प्रथित का एक भेद। इसमें दो नगण और चौदह रगण होते हैं। १६ कपाल। ललाट। १७ पवन के चलने में होनेवाला शब्द। १८ मस्तक की हड्डी (को०)। १९ सैनिक ढोल या मारू बाजा (को०)। २० नागों के आठ नायकों में से एक का नाम (को०)। ३१ शंख का बना हुआ वलय (को०)।

शंखकंद—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खकन्द] शंखालु। सांक।

शंखक—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खक] १ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का असाध्य रोग। शंखवात।

विशेष—इस रोग में बहुत गरमी होती है और त्रिदोष बिगड़ने से कनपटी में दाह सहित लाल रंग की गिल्टी निकल आती है, जिससे सिर और गला जकड़ जाता है। कहते हैं, यह असाध्य रोग है और तीन दिन के अंदर इसका इलाज संभव है, इसके बाद नहीं।

२ हंस के चलने का शब्द। ३ हीरा कसीस। ४ मस्तक। माथा। ५ नौ निधियों में से एक निधि। ६ शंख का बना कंकण या वलय।

शंखकर्ण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खकर्ण] शिव के एक अनुचर का नाम। शिव का एक गण।

शंखकार शंखकारक—संज्ञा सं० [सं० शङ्खकार, शंखकारक] पुराणानुसार एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से मानी गई है। इस जाति के लोग शंख की चूड़ियाँ बनाने का काम करते हैं।

शंखकुसुमा संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खकुसुमा] १ शंखपुष्पी। २ सफेद अपराजिता। सफेद कोयल लता।

शंखकूट संज्ञा पुं० [सं० शङ्खकूट] १ एक नाग का नाम। २. पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शंखक्षीर—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खक्षीर] शंख का दूध अर्थात् कोई असंभव और अनहोनी बात।

शंखचरी, शंखचर्ची—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खचरी, शङ्खचर्ची] १ चंदन का तिलक (ललाट पर का)। २ भाल। मस्तक। ललाट।

शंखचूड संज्ञा पुं० [सं० शङ्खचूड] १ एक राक्षस का नाम जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था।

विशेष—कहते हैं, यह सुदामा नामक गोप था जो राधा के शाप से असुर हो गया था इसका विवाह तुलसी से हुआ था। ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि इसका संहार महादेव जी ने अपने शूल से किया था।

२ कुबेर के दूत और सखा का नाम। ३ एक यक्ष का नाम। ४ पुराणानुसार द्वारिका निवासी एक गृहस्थ का नाम जिसके पुत्र उत्पन्न होकर अदृश्य हो जाते थे। ५ एक नाग का नाम। ६ एक तीर्थस्थान।

शंखचूर्ण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खचूर्ण] शंख की बुकनी। शंख का चूरा [को०]।

शंखज—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खज] बड़ा मोती जो शंख से निकलता है।

शंखजीरा—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खजीरा] संग जराहत।

विशेष—जान पड़ता है, यह शब्द फारसी संग जराहत का बनाया हुआ संस्कृत रूप है।

शंखण संज्ञा पुं० [सं० शङ्खण] रामायण के अनुसार प्रबुद्ध के लड़के का नाम।

शंखतीर्थ—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शंखदारक—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खदारक] एक वर्णसंकर जाति। दे० 'शंखकार'।

शंखद्राव¹—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खद्राव] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का अर्क जिसमें शंख भी गल जाता है।

विशेष—आध सेर हीरा कसीस, सेर भर सेंधा नमक और सेर भर शोरा चूर्ण करके ढेकनी यंत्र से रस निकाल लिया जाता है, जो शंखद्राव कहलाता है। कहते हैं, इसके सेवन से शूल, गुल्म

अर्श, प्लीहा, उदररोग, अजीर्ण और वातरोग सब दूर होते हैं। इसे काँच या चीनी की शीशी मे रखना चाहिए, अन्यथा पात्र गल जायगा। इसके सेवन के समय मुँह मे घी लगा लेना चाहिए, नही तो जिह्वा और दाँतो को हानि पहुँचेगी।

शंखद्राव[2]—वि० कोई ऐसा तीक्ष्ण रस या क्षार जिसमे डालने से शंख गल जाय।

शंखद्रावक—संज्ञा पु० वि० [सं० शङ्खद्रावक] दे० 'शंखद्राव'।

शंखद्रावी—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खद्रावित्] आमलबेत। चुक्र।

शंखद्वीप—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खद्वीप] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। (संभवत यह आधुनिक अफ्रीका है)

शंखधर संज्ञा पुं० [सं० शङ्खधर] १ शंख को धारण करनेवाले, अर्थात् विष्णु। २ श्रीकृष्ण। उ०—गिरिधर वज्रधर धरनीधर पीतांबरधर मुकुटधर गोपवर शंखधर सारंगधर चक्रधर रस धरें अधर सुधाधर।—सूर (शब्द०)।

शंखधरा—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खधरा] हुरहुर का साग। हिलमोचिका।

शंखधवना—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खधवना] जूही। यूथिका।

शंखध्म, शंखध्मा—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खध्म, शङ्खध्मा] शंखवादक। वह जो शंख बजावे [को०]।

शंखध्वनि—संज्ञा स्त्री० [शङ्खध्वनि] शंख की आवाज जो विजय, सफलता या कभी कभी आतंक और निराशा व्यक्त करती है।

शंखन—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खन] १. अयोध्या के राजा कल्माषपाद के एक पुत्र का नाम। २. वज्रनाभ के पुत्र का नाम।

शंखनक—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खनक] छोटा शंख। घोंघा [को०]।

शंखनख—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खनख] १. घोंघा। छोटा शंख। २. व्याघ्रनख। नखी नाम का गंधद्रव्य।

शंखनखा, शंखनखी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खनखा, शङ्खनखी] १. घोंघा। छोटा शंख। २ नखी नामक गंधद्रव्य।

शंखनाभि—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खनाभि] १. एक प्रकार का शंख। २ एक प्रकार का गंधद्रव्य।

शंखनाम्नी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खनाम्नी] शंखाहुली। शंखपुष्पी।

शंखनारी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खनारी] एक वृत्त का नाम जिसमे छह वर्ण होते हैं। यह दो यगण का वृत्त है। इसे सोमराजी वृत्त भी कहते हैं।

शंखनी[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खिनी] दे० 'शंखिनी'।

शंखपलीता—संज्ञा पु० [सं० शङ्ख+हिं० पलीता] एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ जो ज्वालामुखी पर्वतो से निकलता है।

विशेष—इसका रंग सफेद या हरा होता है और इसमे रेशम की सी चमक होती है। इसका विशेष गुण यह है कि यह जल्दी जल्दी जलता नही, इसी लिये गैस के भट्ठे बनाने मे इसका बहुत उपयोग होता है। आग से न जलनेवाले कपडे तैयार करने मे भी यह काम मे लाया जाता है। गरमी और बिजली का प्रवेश इसमे बहुत कम होता है, इसी से यह बिजली के तार आदि लपेटने मे भी काम आता है। इंजिनो के जोड इसी से भरे या बंद किए जाते हैं। यह कारसिका, स्काटलैंड कनाडा, इटली आदि देशो मे अधिक मिलता है।

शंखपाणि संज्ञा पु० [सं० शङ्खपाणि] हाथ मे शंख धारण करनेवाले विष्णु।

शंखपाल—संज्ञा पु० [सं० शङ्खपाल] १ शक्करपारा नाम की मिठाई। विशेष दे० 'शक्करपारा'। २. एक प्रकार का साँप। ३. एक नाग का नाम। ४. कर्दम के पुत्र का नाम। ५ सूर्य का एक नाम (को०)।

शंखपाषाण—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खपाषाण] संखिया।

शंखपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [शङ्खपुष्पिका] दे० 'शंखपुष्पी'।

शंखपुष्पी संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खपुष्पी] १ सफेद अपराजिता श्वेत-अपराजिता। सफेद कोयल लता। २ जूही यूथिका। ३. शंखाहुली। शंखाह्वा।

शंखप्रस्थ संज्ञा पु० [सं० शङ्खप्रस्थ] चंद्रमा का कलंक।

शंखभस्म—संज्ञा पुं० [शङ्खभस्म] १ चूना। २ शंख का वैद्यक विधि से निर्मित भस्म।

शंखभृत्—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खभृत्] शंख धारण करनेवाले विष्णु

शंखमालिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खमालिनी] शंखाहुली। शंखपुष्पी।

शंखमुक्ता—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खमुक्ता] शंखज नाम का बडा मोती।

शंखमुख—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खमुख] कुंभीर। घडियाल। ग्राह।

शंखमूलक संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खमूलक] मूली।

शंखयूथिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खयूथिका] जूही। यूथिका।

शंखरी—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खरी] वह जो शंख की चूडी बनाने का व्यवसाय करता हो।

शंखलिखित[1]—वि० [सं० शङ्खलिखित] निर्दोष। दोषरहित। बेऐब।

शंखलिखित[2]—संज्ञा पु० १ न्यायशील राजा। २ शंख और लिखित नाम के दो ऋषि जिन्होने एक स्मृति बनाई थी।

शंखलिखित[3]—संज्ञा स्त्री० शंख और लिखित ऋषियो द्वारा लिखी हुई स्मृति। उ०—सचिव सुधन्वै चह्यो जरावा। शंखलिखित फल आपुइ पावा —रघुनाथ (शब्द०)।

शंखवटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्खवटी] वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली।

विशेष—इसके प्रस्तुत करने की प्रणाली यह है—नीबू के रस मे बुझाई हुई शंख की भस्म टंके भर और जवाखार, सेंधा हींग, पाँचो नमक, सोंठ, काली मिर्च, पिप्पली, शुद्ध सिंगिया मुहरा शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक की कजली ये सब दस दस टंक एक मे मिलाकर सबका चूर्ण करके नीबू के रस मे खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाते हैं। कहते हैं, लौंग के जल के साथ इसकी एक गोली सेवन करने से संग्रहणी, शूल और वायुगोला आदि रोग दूर होते हैं।

शंखवटी रस—संज्ञा पुं० [सं० शङ्खवटी रस] वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली जो शूल रोग को तत्काल दूर करनेवाली मानी जाती है।

विशेष—इसके प्रस्तुत करने की विधि यह है,—बडे शख को तपा तपाकर ग्यारह बार नीबू के रस मे बुझाते हैं, और इस शख के चूर्ण मे टके भर इमली का खार, ५ टक साचर नमक, टके भर सेंधा नमक, टके भर विड नोन, ६ माशे सोठ, ६ माशे काली मिर्च, ६ माशे पिप्पली, टके भर सेकी हीग, टके भर शुद्ध गधक, टके भर शुद्ध पारा, १ टक शुद्ध सिंगी मुहरा, इन सबको मिलाकर जल के साथ घोटकर छोटे बैर के बराबर गोलियाँ बना लेते है।

शखवात—सज्ञा पु० [स० शङ्खवात] सिर की पीडा। विशेष दे० 'शखक'—१।

शखविष—सज्ञा पु० [स० शङ्खविष] सखिया।

शखवेलान्याय—सज्ञा पु० [स० शङ्खवेलान्याय] एक प्रकार का न्याय जिसमे किसी एक कार्य के होने से किसी दूसरी बात का वैसे ही ज्ञान होता है, जैसे शख बजने स समय का ज्ञान होता है।

शखशुक्तिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खशुक्तिका] सीप।

शखसकाश—सज्ञा पुं० [स० शङ्खसङ्काश] सखालु। सफेद शकरकद।

शखस—सज्ञा पु० [स० शङ्खस] शख की चूडी या कडा।

शंखस्वन—सज्ञा पु० [स० शङ्खस्वन] शख का शब्द या ध्वनि [को०]।

शखातर—सज्ञा पु० [स० शङ्खान्तर] ललाट। मस्तक [को०]।

शखाख्य—सज्ञा पु० [स० शङ्खाख्य] वृहन्नखी या वघनखा नामक गधद्रव्य।

शखारु, शखालु—सज्ञा पु० [स० शङ्खारु, शङ्खालु] शखालुक। शखकद। सफेद शकरकद।

शखालुक—सज्ञा पुं० [सं० शङ्खालुक] शखालु। सफेद शकरकद।

शखावर्त—सज्ञा पुं० [स० शङ्खावर्त] एक प्रकार का भगदर रोग जिसे शकुकावर्त भी कहते हैं। विशेष दे० 'शकुकावर्त'।

शखासुर—सज्ञा पु० [स० शङ्खासुर] एक दैत्य जो ब्रह्मा के पास से वेद चुराकर समुद्र के गर्भ म जा छिपा था। इसी को मारने के लिये विष्णु ने मत्स्यावतार धारण किया था। उ०—बहुरो किलाल बैठ मारयो जिन शखासुर ताते वेद अनेक विधाता को दिख है।—हनुमन्नाटक (शब्द०)। २ दैत्य का पिता। उ०—शखासुर सुत पितु वध जान्यो। तव बन जाइ तहाँ तप ठान्यो।—रघुनाथ (शब्द०)।

शखास्थि—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खास्थि] १ सिर की हड्डी। २ पीठ की हड्डी।

शखाहुली—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खपुष्पी या शङ्खफुल्ल] १ शखाहुली। शखपुष्पी। विशेष दे० 'कौडियाला'—४। २. सफेद अपराजिता या कोयल लता।

शखाहोली—सज्ञा स्त्री० [स० शखपुष्पी, शङ्खफुल्ली, हि० शखाहुली] शखपुष्पी। कौडियाला। कौडेना।

शखाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खाह्वा] शखपुष्पी [को०]।

शखिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिका] अंधाहुली। चोरपुष्पी।

शखिन—सज्ञा पु० [सं० शङ्खिन] सिरस। शिरिष का वृक्ष।

शखिनिका—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनिका] ग्रथिपर्णी। गठिवन।

शखिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनी] १ एक प्रकार की वनौषधि।

विशेष—इसकी लता और फल शिवलिंगी के समान होते हैं। अतर केवल यही है कि शिवलिंगी के फल पर सफेद छीट होते हैं जो शखिनी के फल पर नही होते। इसके बीज शख के समान होते हैं जिनका तेल निकलता है। वैद्यक में यह चरपरी, स्निग्ध और कडवी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निदीपक, बलकारक, रुचिकारी और विषविकार, आमदोष, क्षय रुधिरविकार तथा उदरदोष आदि को शात करनेवाली मानी जाती है।

पर्या०—यवतिक्ता। महातिक्ता। भद्रतिक्ता। सूक्ष्मपुष्पी। दृढपादा। विसर्पिणी। नाकुली। नक्रमीला। अक्षपीडा। माहेश्वरी। तिक्ता। यावी।

२ पद्मिनी आदि स्त्रियो के चार भेदो मे से एक भेद। उ०—होइ शखिनि युत रोष दया बिन वेगि प्रचार।—विश्राम (शब्द०)।

विशेष—कहत हैं, ऐसी स्त्री कोकशील, कोविद, सलाम शरीरवाली, बडी बडी और सजल आँखोवाली, देखने मे सुदर, लज्जा और शृगारहित, अधीर, रतिप्रिय, क्षार गधयुक्त और अरुण नखवाली होती है, यह वृषभ जाति क पुरुष के लिये उपयुक्त होती है।

३ गुदाद्वार की नस। ४ मुँह की नाडी। उ०—मुख अस्थान शंखिनी केरा। ये नाडिन क नाम निवेरा।—विश्राम (शब्द०)। ५ एक देवी का नाम। ६ सीप। ७ एक शक्ति जिसकी पूजा बौद्ध लोग करते हैं। ८ एक तीर्थस्थान का नाम। ९. एक प्रकार की अप्सरा। १० शखाहुली।

शखिनी डकिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शङ्खिनी] एक पकार का उन्माद।

विशेष—इस उन्माद रोग के लक्षण इस प्रकार कहे गए हैं—सर्वांग मे पीडा होना, नेत्र बहुत दुखना, मूर्छा होना, शरीर काँपना, रोना, हँसना, बकना, भोजन मे अरुचि, गला बैठना, शरीर के बल तथा भूख का नाश, ज्वर चढ़ना और सिर मे चक्कर आना, आदि।

शखिनी फल—सज्ञा पु० [स० शङ्खिनीफल] सिरस का वृक्ष।

शखिनीवास—सज्ञा पुं० [स० शङ्खिनीवास] शालोट वृक्ष। सहोरा।

शखिया—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'सखिया'।

शखी—सज्ञा पु० [स० शङ्खिन्] १. विष्णु। २ समुद्र। ३ एक प्रकार का साँप। ४ शख बजानेवाला।

शखोदक—सज्ञा पु० [स० शङ्खोदक] शख मे भरा हुआ जल जो पवित्र माना जाता है।

शखोदधिमल—सज्ञा पुं० [स०] समुद्रफेन।

शखोदरी—सज्ञा स्त्री० [स०] मध्यम आकार का एक प्रकार का बीज जो बागो मे शोभा के लिये लगाते हैं। गुलपरी। गुलतुरी। सिद्धेकर।

विशेष—इसके पत्ते चकवँड के पत्तो के समान होते हैं। पीले और लाल फूलो के भेद से यह वृक्ष दो प्रकार का होता है।

इसकी कलियाँ उँगली के समान मोटी, चिपटी तथा चार पाँच अंगुल लंबी होती हैं और इसमे ७-८ दाने होते हैं। इसके फूल गुच्छो मे लगते हैं जो बारहो महीने रहते हैं, परतु और महीनो की अपेक्षा आषाढ मे अधिक फूल लगते हैं। फूलों मे गध नही होती। इसकी लकडी मजबूत होती है। इसके वृक्ष बीज और कलम दोनो से ही लगते ह। कई प्रकार क रोगा मे इसका क्वाथ भी दिया जाता है। वैद्यक क अनुसार यह गरम, कफ, वात, शूल, आमवात और नेत्ररोग को दूर करनेवाला है।

शगजराहत—सज्ञा पु० [स० शङ्खु, फा० सग+जदाहत] दे० 'सग जराहत'।

शगर—सज्ञा पुं० [देश०]एक प्रकार का बहुत ऊँचा वृक्ष जो मदरास और सुदरबन मे अधिकता से होता है।

विशेष—इसकी लकडी लाल और मजबूत होती है और मकान तथा गाडी आदि बनाने के काम मे आती है। इसके पत्तो से रग भी निकाला जाता है।

शगरफ'—सज्ञा पु० [फा० शगर्फ, शगरफ] ईंगुर। शिंगरफ [को०]।

शगरफ'—वि० ईंगुर के रग का या लाल [को०]।

शजरफ—सज्ञा पुं० [फा० शजर्फ शजरफ] दे० 'शिंगरफ'।

शठ—सज्ञा पु० [स० शण्ठ] १. अविवाहित। २. नपुसक। हीजड़ा। ३. मूर्ख। बेवकूफ। उ०—मुग्ध मूढ जड मूक नर अज्ञ अबुध वद शठ।—नददास (शब्द०)।

शड—सज्ञा [स० शण्ड] १ नपुसक। हीजडा। २. वह पुरुष जिसे सतान न होती हो। वध्या पुरुष। ३. साँड। ४. उन्मत्त। पागल। ५. कमलिनी। पद्मिनी। ६ दही (को०)। ७ प्राचीन काल मे अत.पुर का परिचारक जो हीजडा होता था (को०)। ८. एक दैत्य का नाम। ९. पद्म आदि का समूह या राशि (को०)।

शडता—सज्ञा स्त्री० [स० शण्डता] शड का भाव या धर्म। नपुसकत्व। हिजडापन।

शडा—सज्ञा पुं० [सं० शण्डा] १ फटा हुआ खट्टा दूध अथवा दही। २ शुक्राचार्य का पुत्र जो असुरो का पुरोहित था। ३. एक यक्ष का नाम।

शडाकी मद्य—सज्ञा स्त्री० [स० शण्डाकी मद्य] अर्कप्रकाश के अनुसार एक प्रकार की शराब जो राई, मूली और सरसो के पत्तो का रस चावलो की पीठी मे मिलाकर अर्क निकालने से तैयार होती है।

शडामर्क—सज्ञा पु० [स० शण्डामर्क] शड और मर्क नाम के दो दैत्य जिनका नाम साथ ही साथ लिया जाता है। उ०—शडामर्क से कहियो जाय।—शब्दावली (शब्द०)।

शडिल—सज्ञा पुं० [स० शण्डिल] एक ऋषि। दे० 'शडील' [को०]।

शडील—सज्ञा पुं० [स० शण्डील] एक प्राचीन गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्र के लोग शाडिल्य कहलाते है।

शढ—सज्ञा पुं० [स० षण्ढ] १ नपुंसक। वध्या पुरुष। २ बैल। साँड। ३ उन्मत्त साँड। ४ राजाओ के अत पुर का वह सेवक जो पुरुषविहीन हिजडा होता था। ५. उन्मत्त पुरुष। पागल व्यक्ति [को०]।

शतनु(पु)—सज्ञा पुं० [स० शन्तनु] दे० 'शातनु'।—(क) बरणी शतनु की कथा, पुनि ययाति कर भोग।—रघुनाथ (शब्द०)। (ख) विष्णुसुता सत्य सुत माही। तासु पुत्र शतनु नृप आहीं।—सबल (शब्द०)।

शतनुसुत(पु)—सज्ञा पुं० [स० शन्तनुसुत] गगा के गर्भ से उत्पन्न शातनु के पुत्र, भीष्म पितामह। विशेष दे० 'भीष्म'।

शपा—सज्ञा स्त्री० [स० शम्पा] १ बिजली। उ०—उन्नत सिर पर जब तक हो शपा का प्रहार। सोओ तब तक जाज्वल्यमान मेरे विचार।—सामधेनी, पृ० ५२। २ कमरबद। मेखला। करधनी।

शपाक, शपात—सज्ञा पुं० [स० शम्पाक, शम्पात] आरग्वध वृक्ष। अमलतास।

शब'—सज्ञा पुं० [स० शम्ब] १. इद्र का वज्र। २. लोहे की जजीर जो कमर के चारो तरफ पहनी जाय। ३ प्राचीन काल की एक माप। ४. नियमित रूप मे हल जोतने का क्रिया। ५. दुहरी जुताई। दुबारा हल चलाने की क्रिया। ६ मुसल के सिरे पर लगी हुई लोहे की गोल पट्टी। नाम (को०)।

शब—वि० १. सुखी। भाग्यवान्। २. दरिद्र। अभागा [को०]।

शबपाणि—सज्ञा पुं० [स० शम्बपाणि] इद्र जिनका आयुध वज्र है [को०]।

शबर'—सज्ञा पुं० [स० शम्बर] १ एक दैत्य जो वेद के अनुसार दिवोदास का बडा शत्रु था। दिवादास की रक्षा के लिये इद्र ने इसे पहाड पर से नीचे गिराकर मार डाला था। २ एक दैत्य जो रामायण और महाभारत मे कामदेव का शत्रु कहा गया है। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ४ युद्ध। समर। लडाई। ५ एक प्रकार का मृग। ६ मछली। ७. एक पर्वत का नाम। ८. जल। पानी। ९ चीना नामक पेड़। चितउर। १०. लोध वृक्ष। ११ अर्जुन वृक्ष। १२. ताल वृक्ष। १३. सावर हिरन। १४ मुश्क जमी। १५ एक जिन देव (को०)। १६. बौद्धो का एक व्रत (को०)। १७. एक प्रकार का व्रत (को०)। १८ मेघ। बादल (को०)। १९ चित्र। तस्वीर (को०)। २० धन। सपत्ति (को०)। २१. एक प्रकार के शैव (को०)।

यौ०—शबरघ्न, शबरदारण, शबररिपु=कामदेव या प्रद्युम्न।

शबर'—वि० १. अति उत्तम। बहुत बढ़िया। २. भाग्यवान्। ३. सुखी।

शबरकद—सज्ञा पु० [स० शम्बरकन्द] बाराही कद। शूकर कद।

शबरघ्न—सज्ञा पु० [स० शम्बरघ्न] दे० 'शबरारि' [को०]।

शंबरचंदन—सज्ञा पुं० [स० शम्बर चन्दन] एक प्रकार का चदन जिसे कंरात, महलगध और गधकाष्ठ भी कहते है।

शबरमाया—सज्ञा स्त्री० [स० शम्बरमाया] १ इद्रजाल। जादू। २ शक्ति।

शबरसूदन—सज्ञा पु० [सं० शम्बरसूदन] १ कामदेव। २ प्रद्युम्न।

शबरहा—सज्ञा पुं० [सं० शम्बरहन्] दे० 'शबरारि'।

शबरारि—सज्ञा पु० [स० शम्बरारि] १ शबर का शत्रु अर्थात् कामदेव। मदन। उ०—शबर ज्यो शबरारि दुख देह को दहै।—केशव (शब्द०)। २ प्रद्युम्न जो कामदेव के अवतार कहे जाते है। उ०—मुरछि मुरछि गिरावो भूमि पर शबरारि ललकारि।—गर्गसहिता (शब्द०)।

शबरासुर—सज्ञा पुं० [स० शम्बरासु] शबर नाम का दत्य [को०]।

शबराहार—सज्ञा पु० [स० शम्बराहार] झरबेरी। भूवदरा।

शबरी—सज्ञा [स० शम्बरी] मूगाकानी। आखुपर्णी लता। २ बडी दती। बगरेंडा। ३ माया। ४ मायाविनी। जादूगरनी (को०)।

शबरीगधा सज्ञा स्त्री० [स० शम्बरीगन्धा] बनतुलसी। बर्बरी।

शबरोद्भव—सज्ञा पुं० [स० शम्बरोद्भव] सफद लोध।

शबल—सज्ञा पुं० [स० शम्बल] १ यात्रा के समय रास्ते के लिये भोजनसामग्री। सबल। पाथेय। २ तट। किनारा। ३ कूल। ४ ईर्ष्या। द्वेष। ५ दे० 'शबर'।

शबली—सज्ञा स्त्री० [सं० शम्बली] शमली। कुटनी [को०]।

शबसादन—सज्ञा पुं० [स० शम्बसादन] वाल्मीकीय रामायण के अनुसार एक दैत्य जिसे वशरी वानर ने मारा था।

शबा—सज्ञा पु० [अ० शबहू] १ शनिवार। शनैश्चरवार। २ वार। दिन (को०)।

शबाकृत सज्ञा पुं० [स० शम्बाकृत] वह खेत जो दो बार जोता गया हो। वह खेत जिसकी दुहरी जुताई हुई हो [को०]।

शबु—सज्ञा पु० [स० शम्बु] सीपी। घोघा।

शबुक, शबुक्क—सज्ञा पुं० [स० शम्बुक, शम्बुक्क] १ घोघा। २. छोटा शख।

शबुकपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स० शम्बुकपुष्पी] दे० 'शखपुष्पी'।

शबुकावर्त'—वि० [स० शम्बुकावर्त] घोघे या छोटे शख की भँवरी के सदृश घूमा हुआ।

शबुकावर्त'—सज्ञा पु० पाँच प्रकार के भगदरो मे से एक प्रकार का भगदर।

विशेष—इसका कई प्रकार का वर्ण होता है और इसमे सदैव पीव बहा करता है। इसके फोडने स अनेक प्रकार की पीडा होती है। इसका फोडा गौ के थन के आकार का हो जाता है और उसका छिद्र घोघे के घेरे के समान घूमता हुआ होता है। इसे शखावर्त भी कहते हैं।

शबूक—सज्ञा पु० [स० शम्बूक] १ एक तपस्वी शूद्र।

विशेष—शूद्र होने के कारण इसकी कठोर तपस्या के प्रभाव से त्रेतायुग म रामराज्य म एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ था, अत. इसे राम ने मारकर मृत ब्राह्मणपुत्र को पुनरुज्जीवित किया था।

२ घोघा। ३ शख। ४ एक दैत्य का नाम। ५. हाथी के सूड का अगला भाग।

शबूकपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शखपुष्पी'।

शबूका—सज्ञा स्त्री० [स० शम्बूका] सीपी।

शभ—सज्ञा पुं०, वि० [स० शम्भ] दे० 'शव' [को०]।

शभली—सज्ञा स्त्री० [सं० शम्भली] कुटनी। शबली [को०]।

शभु—सज्ञा पु० [स० शम्भु] १. शिव। महादेव। २ ग्यारह रुद्रो में से एक जो प्रधान रुद्र है। विशेष दे० 'महादेव' और 'रुद्र'। ३ रामायण के अनुसार एक दैत्य का नाम। ४. एक वृत्त का नाम। जिसके प्रत्येक चरण मे १६ वर्ण होते हैं, और उनका क्रम इस प्रकार होता है—स, त, य, म, म, म और ग (।।S, SS।, ।SS, S।।, SSS, SSS, S)। ५ ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७ सफेद आक। ८ पारा। ९ ऋषि। सत। तपस्वी (को०)। १०. एक प्रकार के सिद्ध (को०)। ११ बुद्ध (को०)। १२ अग्नि (को०)।

शभु मनु[२]—सज्ञा पुं० [स० स्वायम्भुव] दे० 'स्वायभुव'। उ०—कह शौनक शभू मनु पाछे। कीन्ह राज्य केहि कहिए आछे।—रघुनाथ (शब्द०)।

शभुकाता—सज्ञा स्त्री० [स० शम्भुकाता] १ शभु की स्त्री, पार्वती। २. दुर्गा।

शभुगिरि—सज्ञा पु० [स० शम्भुगिरि] शम्भु का पर्वत, कैलास।

शभुतनय—सज्ञा पुं० [स० शम्भुतनय] १ कार्तिकेय। २ गणेश [को०]।

शभुतेज—सज्ञा पु० [स० शम्भुतेजस्] पारा। पारद।

शभुनदन—सज्ञा पु० [स० शम्भुनन्दन] दे० 'शभुतनय'।

शभुबीज—सज्ञा पुं० [स० शम्भुबीज] पारा। पारद।

शभुप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स० शम्भुप्रिया] १ दुर्गा। शभुकाता। २. आमलकी [को०]।

शभुभूषण—सज्ञा पुं० [स० शम्भुभूषण] महादेव जी का भूषण, चद्रमा।

शभुमनु[१]—सज्ञा पु० [स० स्वायम्भुव मनु] स्वायभुव मन्वतर जो सबसे पहला मन्वतर है। विशेष दे० 'स्वायभुव' और मनु।

शभुलोक—सज्ञा पु० [स० शम्भुलोक] महादेव जी का लोक, कैलास।

शभुवल्लभ—सज्ञा पु० [स० शम्भुवल्लभ] श्वेत कमल जो शिव को विशेष प्रिय है [को०]।

शयु'—वि० [स०] प्रसन्न। शुभान्वित। सुखी [को०]।

शयु'—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार यज्ञ के अधिष्ठातृ देव अग्नि जो बृहस्पति के पुत्र रूप कहे गए हैं [को०]।

शव—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'शव' [को०]।

शस—सज्ञा पु० [स०] १ प्रतिज्ञा। इकरार। २ शपथ। कसम। ३. जादू। ४. प्रशसा। तारीफ। ५. इच्छा। ख्वाहिश। ६.

चापलूसी। चाटुता। ७ घोषणा। ८ वक्तृता। ९ किसी के प्रति शुभ वा मगल की कामना (को०)।

शंसन—सज्ञा पुं० [स०] १ कथन। कहना। वर्णन करना। २ प्रशसा करना। प्रशसन। ३. पाठ करना (को०)।

शंसनीय—वि० [स०] कथन या प्रशसा के योग्य (को०)।

शंसा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्रशसा। २ अभिलाषा। आशा। इच्छा। ३. वर्णन। कथन। ४ दुहराना। ५ पाठ करना। ६ अनुमान। कल्पना (को०)।

शंसित—वि० [स०] १ कथित। घोषित। २. प्रशसित। ३ इच्छित। काम्य। ४ निश्चित किया हुआ। निर्धारित। ५ जिसपर झूठा दोष मढा गया हो। कलकित। ६ अनुष्ठित (को०)।

यौ०—शंसितव्रत = व्रत करनेवाला। व्रत अनुष्ठित करनेवाला।

शंसी—वि० [स० शंसिन्] १ कहनेवाला। २ प्रशसक। ३ सकेत करनेवाला। सूचक। व्यजक। ४ भविष्यसूचक। भविष्यवक्ता (को०)।

शंस्ता—सज्ञा पु०, वि० [स० शंस्तृ] १ स्तुति करनेवाला। प्रशसक। स्तुतिपाठक। २. ऋचाओ का पाठ करनेवाला। मंत्र-पाठक (को०)।

शंस्य[1]—वि० [स०] १. प्रशसा के योग्य। २. इच्छित। चाहा हुआ। ३ उच्च स्वर से पठित (को०)। ४. कहने योग्य (को०)।

शंस्य[2]—सज्ञा स्त्री० अग्नि।

श—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। २. कल्याण। मगल। ३. शस्त्र। हथियार। ४ विनाशक। काटनेवाला (को०)। ५ शास्त्र (को०)। ६ आनद। सौख्य (को०)।

शअबान—सज्ञा पुं० [अ० शअबान] अरबी आठवाँ महीना जिसकी चौदहवी तारीख को मुसलमानो का शबेबरात नामक त्योहार होता है। यह रजब के बाद आता है।

शऊर—सज्ञा पु० [अ० शुऊर] १ किसी चीज की पहचान या जानकारी २ काम करने की योग्यता। ढग। ३. बुद्धि। अक्ल। ४. सभ्यता। तमीज (को०)।

क्रि० प्र०—आना।—सीखना।

मुहा०—शऊर पकडना = ढग सीखना। अक्ल सीखना। बुद्धिमान् होना।

शऊरदार—सज्ञा वि० [अ० शुऊर + फा० दार (प्रत्य०)] [सज्ञा स्त्री० शऊरदारी] जिसमे शऊर हो। काम करने की योग्यता रखनेवाला। हुनरमद। समझदार।

शक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्राचीन जाति।

विशेष—पुराणो मे इस जाति की उत्पत्ति सूर्यवशी राजा नरिष्यत से कही गई है। राजा सगर ने राजा नरिष्यत को राज्यच्युत तथा देश से निर्वासित किया था। वर्णाश्रम आदि के नियमो का पालन न करने के कारण तथा ब्राह्मणो से अलग रहने के कारण वे म्लेच्छ हो गए थे। उन्ही के वशज शक कहलाए। आधुनिक विद्वनो का मत है कि मध्य एशिया पहले शकद्वीप के नाम से प्रसिद्ध था। यूनानी इस देश को सीथिया कहते थे। उसी मध्य एशिया के रहनेवाला शक कहे जाते है। एक समय यह जाति बडी प्रतापशालिनी हो गई थी। ईसा से दो सौ वर्ष पहले इसने मथुरा और महाराष्ट्र पर अपना अधिकार कर लिया था। ये लोग अपने को देवपुत्र कहते थे। इन्होने १९० वर्ष तक भारत पर राज्य किया था। इनमे कनिष्क और हविष्क आदि बडे बडे प्रतापशाली राजा हुए है।

२. वह राजा या शासक जिसके नाम से कोई सवत् चले। ३. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ सवत् जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था। ४. शालिवाहन के अनुयायी अथवा उसके वशज। ५ संवत्।

यौ० शककर्ता, शककृत् = दे० 'शककारक'। शककाल = दे० 'शक सवत्'। शक सवत् = राजा शालिवाहन का चलाया हुआ सवत्। दे० 'शक'—३।

६. तातार देश। ७. जल। ८ मल। गोमय। ९ एक प्रकार का पशु। १० सदेह। आशका। भय। त्रास। डर।

शक[2]—सज्ञा पुं० [अ०] शका। सदेह। द्विविधा।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—निकालना।—पडना।—मिटना।—मिटाना।

शककारक—सज्ञा पुं० [स०] वह जिसने कोई नया संवत् (शक) चलाया हो। सवत् का प्रवर्तक।

शकट—सज्ञा पुं० [स०] १ छकडा। बैलगाडी। २ भार। बोझ। ३ शकटासुर नामक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था। ४ तिनिश वृक्ष। ५ धव का वृक्ष। धौ। ६ शरीर। देह। ७ दो हजार पल की तौल। ८. रोहिणी नक्षत्र, जिसकी आकृति शकट या छकडे के समान है। ९ शकट के आकार का सैनिक व्यूह। दे० 'शकट व्यूह' (को०)। १० एक गाडी भार। बोझ जो दो हजार पल के बराबर होता है (को०)। ११ अन्न सिद्ध करने का एक उपकरण (को०)।

शकटकर्म—सज्ञा पु० [सं०] गाडी या और कोई सवारी हाँकने का काम। २ गाडी आदि सवारियो की सामग्री बनाने और बेचने का काम।

शकटधूम—सज्ञा पु० [स०] १ गोबर या उपले आदि का धूआँ। २ एक नक्षत्र का नाम।

शकटभिद्—सज्ञा पु० [स०] १ शकटासुर को मारनेवाले, श्रीकृष्ण। २ विष्णु (को०)।

शकटभेद—सज्ञा पुं० [स०] किसी ग्रह द्वारा शकट अर्थात् रोहिणी नक्षत्र का विभाजन। यदि यह भेदन शनि ग्रह द्वारा हो तो १२ वर्ष अनावृष्टि होती है (को०)।

शकटविल—सज्ञा पुं० [स०] जलकुक्कुट (को०)।

शकटव्यूह—पुं० १. शकट के आकार का सेना का निवेश। खना कि आगे का भाग पतला और पीछे

का मोटा हो, और वह देखने मे शकट के आकार का जान पडे। २ कौटिल्य के अनुसार वह भोग व्यूह जिसके अदर उरस्थ मे दोहरी पक्तियाँ हो और पक्ष स्थिर हो।

शकटव्रत—सज्ञा पु० [स०] एक विशेष प्रकार का व्रत [को०]।

शकटसार्थ—सज्ञा पुं० [स०] गाडियो का जत्था [को०]।

शकटहा—सज्ञा पुं० [स० शकटहन्] शकटासुर नामक दैत्य के मारनेवाले, श्रीकृष्ण।

शकटाक्ष—सज्ञा पुं० [स०] गाडी का धुरा।

शकटाख्य, शकटाख्यक—सज्ञा पुं० [स०] धौ या धव का वृक्ष।

शकटार—सज्ञा पुं० [स०] १ राजा महानद का प्रधान मत्री।

विशेष—इसने अपने अपमान का बदला चुकाने के लिये चाणक्य से मिलकर षड्यत्र रचा था और इस प्रकार नदवश का नाश किया था।

२ एक प्रकार की शिकारी चिडिया।

शकटारि—सज्ञा पुं० [स०] शकट दैत्य के शत्रु, श्रीकृष्ण।

शकटाल—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शकटार'।

शकटासुर—सज्ञा पु० [स०] एक दैत्य जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिये भेजा था और जो स्वय ही कृष्ण द्वारा मारा गया था।

शकटाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] रोहिणी नक्षत्र [को०]।

शकटिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटी बैलगाड़ी। २ बच्चो के खेलने की गाडी।

शकटोर्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] कोई चौरस भूभाग [को०]।

शकटी—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी गाडी।

शकठ—सज्ञा पुं० [स० शकट] मचान। उ०—कृष्णचद्र के समय में भी वृदावन वन गिना जाता था, और गोप लोग उसमें शकठो पर रहते थे।—शिवप्रसाद (शब्द०)।

शकर[1]—सज्ञा स्त्री० [फा०, मि० स० शर्करा] कच्ची चीनी। शर्करा। शक्कर।

यौ०—शकरकद। शकरखोरा। शकरखाब=मीठी नीद। शकरगुड। शकरपा। शकरपारा। शकरपूरा। शकरबादाम। शकररगी, शकररजी=नाराजी। मनमुटाव। शकररेज=(१) न्योछावर। (२) खुशी का रोना। शकरलब=(१) मीठे अधरवाला। (२) मिष्टभाषी। (३) माशूक (लाक्ष०)।

शकर[2]—सज्ञा पु० [स०] टुकडा। खड। शकल [को०]।

शकरकद—सज्ञा पु० [हि० शकर+स० कन्द] एक प्रकार का प्रसिद्ध कद।

विशेष—इसकी खेती प्राय सारे भारत मे होती है। यह साधारणत सूखी जमीन मे बोया जाता है। इसका कद दो प्रकार का होता है—एक लाल दूसरा सफेद। लाल शकरकद रतालू या पिंडालू कहलाता है और सफेद को शकरकद या कदा कहते है। यह भूनकर वा उबालकर खाया जाता है। प्राय हिंदू लोग व्रत के दिन फलाहार रूप मे इसका व्यवहार करते हैं। यह कद बहुत मीठा होता है और इसमे से एक प्रकार की चीनी निकलती है। अनेक पाश्चत्य देशो मे इससे चीनी भी निकाली जाती है, और इसी लिये इसकी बहुत अधिक खेती होती है। वनस्पति शास्त्र के आधुनिक विद्वानो का अनुमान है कि यह मूलत अमेरिका का कंद है, और वहीं से सारे ससार में फैला है।

शकरखोरा—सज्ञा पुं० [फा० शकर+खार (=खानेवाला)] एक प्रकार का छोटा सुदर पक्षी।

विशेष—इसकी लबाई प्राय एक बालिश्त से भी कम होती है और यह भारत, फारस तथा चीन मे पाया जाता है। इसका रग नीला और चोच काली होती है और यह पेडो मे लटकता हुआ घोसला बनाता है। यह प्राय खेतो मे रहता और खेती को हानि पहुँचानेवाले कीडे मकोडे आदि खाता है। यह सफेद रंग के दो या तीन अडे एक साथ देता है पर इसके अडा देने का कोई निश्चित समय नहीं है।

शकरखवारा—वि० [फा० शकरख्वारह्] १ मीठी चीजें खानेवाला। तर माल खानेवाला। २ रस लेनेवाला। आनद लेनेवाला। रसग्राही [को०]।

शकरपा—वि० [फा०] जिसका एक पाँव टेढा हो। लँगडा [को०]।

शकरपारा—सज्ञा पुं० [फा० शकरपारह्] १ एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बडा होता है।

विशेष—इसका वृक्ष नीबू के वृक्ष के समान होता है, पर पत्ते नीबू से कुछ बडे होते हैं। फूल कुछ लाल रग के होते हैं, फल सुगधित और खट्टा मीठा होता है।

२. एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान जो बरफी की तरह चौकोर कटा हुआ होता है।

विशेष—यह मीठा भी बनता है और नमकीन भी। इसके बनाने के लिये पहले मैदे मे मोयन डालकर उसे दूध या पानी से गूँथते हैं और तब उसे मोटी रोटी की तरह बेलकर छूरी आदि से छोटे छोटे चौकोर टुकडो मे काटकर घी मे तल लेते हैं। यदि नमकीन बनाना होता है तो मैदा गूँथते समय ही उसमे नमक, अजवायन आदि डाल देते हैं और यदि मीठा बनाना होता है, तो कटी हुई टुकडियो को तलने के बाद चीनी के शीरे मे पाग लेते हैं।

३ रुईदार कपडे पर की एक प्रकार की सिलाई जो शकरपारे के आकार की चौकोर होती है। ४ माशूक, जिसकी अदाएँ मीठी लगती हैं (को०)।

शकरपाला—सज्ञा पुं० [फा० शक्र पारा] दे० 'शकरपारा'।

शकरपीटन—सज्ञा पुं० [देशी] एक प्रकार की कँटीली झाडी।

विशेष—यह हिमालय पर्वत की पथरीली और सूखी, जमीन मे कुमायूँ और उसके पश्चिम ओर बाई जाती है। यह थूहर का ही एक भेद है, पर साधारण सेंहुड या थूहड के वृक्ष से कुछ भिन्न होता है।

शकरपूरा—सज्ञा पु० [फा० शकरपूरह्] मीठा समोसा। पिराक। गुझिया [को०]।

शकरबादाम—सज्ञा पु० [फा० शकर+बादाम] खूबानी या जर्दआलू नामक फल जो पश्चिमोत्तर सीमाप्रात मे होता है।

शकरबार—वि० [फा०] १ शकर बरसानेवाला, बहुत मीठा। २ मिष्टभाषी [को०]।

शकरबूजा—सज्ञा पु० [फा० शकरबूजह्] दे० 'शकरपूरा' [को०]।

शकरी[1]—सज्ञा पु० [फा० शकर] फालसा नामक फल।

शकरी[2]—वि० शकर सबधी। शकर की [को०]।

शकल[1]—सज्ञा पु० [स०] १ त्वचा। चमडा। २ छाल। छिलका। दालचीनी। ४. आँवला। ५ कमल की नाल। कमलदड। ६. खाँड। शक्कर। ७. खड। टुकडा। ८ मनु के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम। ९ घडे या पात्र का एक अश (को०)। १० स्फुलिग। चिनगारी (को०)। ११. मछली की चोइयाँ। मछली के शरीर के ऊपर का छिलका (को०)। १३. अर्धांश। आधा भाग। जैसे, चद्रशकल (को०)।

शकल[2]—सज्ञा स्त्री० [अ० शक्ल] १ मुख की बनावट। आकृति। चेहरा। रूप। जैसे,—शकल न सूरत, गधे की मूरत।

मुहा०—शकल बिगाडना=मारते मारते चेहरे का रूप बिगाडना। बहुत मारना।

यौ०—सूरत शकल=चेहरे की बनावट। आकृति।

२ मुख का भाव। चेष्टा। ३ किसी चीज की बनावट। गढन। ढाँचा।

मुहा०—शकल बनाना=कोई चीज बनाकर उसका स्वरूप तैयार करना। रूपरेखा या ढाँचा तैयार करना।

४ किसी चीज का बनाया हुआ आकार। आकृति। स्वरूप। ५ उपाय। तरकीब। ढब। जैसे—अब इस मुकदमे से पीछा छुडाने की कोई शकल निकालनी चाहिए।

क्रि० प्र०—निकलना। निकालना।

६ मूर्ति।

शकलित—वि० [स०] खड खड किया हुआ। जो टुकडो मे विभक्त किया गया हो [को०]।

शकली—सज्ञा स्त्री० [स० शकलिन्] १. सकुची मछली। २ मछली।

शकलीकृत—वि० [स०] विभक्त। टुकडे टुकडे किया हुआ [को०]।

शकव—सज्ञा पु० [स०] राजहस।

शकातक—सज्ञा पु० [स० शकान्तक] शक जाति का अत करनेवाला, विक्रमादित्य।

शकाकुल—सज्ञा पु० [अ० शकाकुल] शतावर की जाति की एक प्रकार की वनस्पति। शकाकुल मिस्री। घुघली। घुघली। गर्सदस्ती।

विशेष—यह प्रायः मिस्र देश मे अधिकता से होती है और भारत के भी कुछ स्थानो, विशेषत काश्मीर और अफगानिस्तान मे पाई जाती है। यह प्राय. नम जमीन मे वृक्षो के नीचे उगती है। यह बारहो मास रहती है। इसके डठल डेढ़ दो हाथ ऊँचे होते है। इसके पत्ते प्राय तीन अगुल चौडे और एक बालिश्त लबे होते हैं। इसके पौधे की प्रत्येक गाँठ पर पत्ते होते है। इसमे नीले या लाल रंग के छोटे छोटे फूल गुच्छो मे होते और काले रग के फल लगते है। इसकी जड कद के रूप मे होती और बाजार मे प्राय 'शकाकुल मिस्री' के नाम से मिलती है। यह जड कामोद्दीपक तथा स्नायुओ के लिये बलकारक मानी जाती है और विविध प्रकार का पौष्टिक औषधो मे डाली जाती है। कबार मे इसके बीज औषधि के काम मे आते हैं। इसकी राख का क्षार (नमक) अर्श रोग मे लाभदायक समझा जाता है। यह जड प्राय. काबुल से आती है और वही सबसे अच्छी भी होती है।

शकाब्द—सज्ञा पु० [सं०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक सवत्।

विशेष—ईसवी सन् सवत् मे से ७८, ७९ घटाने से शकाब्द निकल आता है।

शकार—सज्ञा पु० [स०] १ शकवशीय व्यक्ति। वह जो शक वश का हो। २ सस्कृत नाटको की परिभाषा मे राजा का वह साला जो नीच जाति का हो।

विशेष—नाटक मे इस पात्र को बेवकूफ, चचल, घमडी, नीच तथा कठोर हृदयवाला दिखलाया जाता है। जैसे,—मृच्छकटिक मे सस्थानक।

शकारि—सज्ञा पुं० [स०] शक जाति का शत्रु विक्रमादित्य।

शकील—वि० [अ०] [वि० स्त्री० शकीला] अच्छी शक्लवाला। खूबसूरत। सुदर।

शकुंत—सज्ञा पुं० [स० शकुन्त] १ पक्षी। चिडिया। उ०—जिस पर निज पक्षो की छाया रक्खो शकुंत द्विजवर ने। मृदु कोपल सी वह मुनिकन्या देखा करव मुनीश्वर ने।—शकुं०, पृ० २। २ एक प्रकार का कीडा। ३ विश्वामित्र के लडके का नाम। ४ नीला चाष पक्षी। नीलकठ (को०)। ५. भास नाम का पक्षीविशेष (को०)।

शकुंतक—सज्ञा पु० [स० शकुन्तक] १ एक प्रकारकी छोटी चिडिया। २ पक्षी। चिडिया।

शकुंतला—सज्ञा स्त्री० [स० शकुन्तला] १ राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका अप्सरा की कन्या थी।

विशेष—महाभारत मे लिखा है कि शकुंतला का जन्म विश्वामित्र के वीर्य से मेनका अप्सरा के गर्भ से हुआ था जो इसे वन मे छोडकर चली गई थी। वन मे शकुंतों (पक्षियो) आदि ने हिंसक पशुओ से इसकी रक्षा की थी इसी से इसका नाम शकुंतला पडा। वन मे से इसे कण्व ऋषि उठा लाए थे और अपने आश्रम मे रखकर कन्या के समान पालते थे। एक बार राजा दुष्यत अपने साथ कुछ सैनिको को लेकर शिकार खेलने

निकले और घूमते फिरते कण्व ऋषि के आश्रम मे पहुँचे। ऋषि उस समय वहाँ उपस्थित नहीं थे, इससे युवती शकुंतला ने ही राजा दुष्यंत का आतिथ्य सत्कार किया था। उसी अवसर पर दोनो मे पहले प्रेम और फिर गंधर्व विवाह हो गया। कुछ दिनो के बाद राजा दुष्यंत वहाँ से अपने राज्य को चले गए। कण्व मुनि जब लौटकर अपने आश्रम मे आए, तब वे यह जानकर बहुत प्रसन्न हुए कि शकुंतला का विवाह दुष्यंत से हो गया। शकुंतला उस समय गर्भवती हो चुकी थी अत समय पाकर उसके गर्भ से बहुत ही बलवान् और तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम भरत रखा गया। कहते हैं, इस देश का भारतवर्ष नाम इसी के कारण पड़ा कुछ दिनो बाद शकुंतला अपने पुत्र को लेकर राजा दुष्यंत के दरबार में पहुँची। परंतु शकुंतला को बीच मे दुर्वासा ऋषि का शाप मिल चुका था, इससे राजा ने बिलकुल न पहचाना और स्पष्ट कह दिया कि न तो मैं तुम्हे जानता हूँ और न तुम्हे अपने यहाँ आश्रय दे सकता हूँ। परंतु उसी अवसर पर एक आकाश वाणी हुई जिससे राजा को विदित हुआ कि यह मेरी ही पत्नी है और यह पुत्र भी मेरा ही है। उसी समय उन्हे कण्व मुनि के आश्रम की भी सब बातें स्मरण हो आईं और उन्होने शकुंतला को अपनी प्रधान रानी बनाकर अपने यहाँ रख लिया।

२ महाकवि कालिदास का लिखा हुआ एक प्रसिद्ध नाटक जिसमे राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रेम, विवाह, प्रत्याख्यान और ग्रहण आदि का वर्णन है।

शकुंति—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्ति] १ भास नाम की चिड़िया। २ चिड़िया। पक्षी (को०)।

शकुंतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शकुन्तिका] १ छोटी चिड़िया। २ स्त्रियों। प्रजा। ३ एक प्रकार का पक्षी (को०)। ४ टिड्डी। झींगुर (को०)।

शकुद—संज्ञा पुं० [सं० शकुन्द] सफेद कनेर।

शकुची—संज्ञा स्त्री० [सं० शङ्कुचि] दे० 'सकुची'।

शकुन—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध मे शुभ या अशुभ माने जाते हैं। वे चिह्न आदि जो किसी काम के संबंध मे शुभ या अशुभ माने जाते हैं।

विशेष—प्राय लोग कुछ घटनाओं को देखकर उनका शुभ या अशुभ फल होना मानते हैं, और उन घटनाओं को शकुन कहते हैं। जैसे,—कहीं जाते समय रास्ते मे बिल्ली का रास्ता काट जाना अशुभ शकुन समझा जाता है और जलपूर्ण कलश या मृतक आदि का मिलना शुभ शकुन माना जाता है। इसी प्रकार अंगों का फड़कना, विशिष्ट पशुओं या पक्षियों आदि का बोलना या कुछ विशिष्ट वस्तुओं का दिखाई पड़ना भी शकुन समझा जाता है। हमारे यहाँ इस विषय का एक अलग शास्त्र ही बन गया है; और उसके अनुसार दही, घी, दूब, चंदन, शीशा, शंख, मछली, देवमूर्ति, फल, फूल, पान, सोना, चाँदी, रत्न, वेश्या आदि का दिखाई पड़ना शुभ और साँप, चमड़ा, नमक, खाली बरतन आदि दिखाई पड़ना अशुभ समझा जाता है। प्राय लोग अशुभ शकुन देखकर काम रोक या टाल देते हैं। साधारणत बोलचाल में लोग शकुन से प्राय शुभ शकुन का ही अभिप्राय लेते हैं, अशुभ शकुन को अपशकुन, अनशुन कहते हैं।

मुहा०—शकुन विचारना या देखना = कोई कार्य करने से पहले किसी उपाय से लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं, अथवा काम अभी करना चाहिए या नहीं।

२. शुभ मुहूर्त या उसमे होनेवाला कार्य। ३ पक्षी। चिड़िया। ४ गृद्ध नामक शिकारी पक्षी। ५ मंगल अवसरों पर गाए जानेवाले गीत (को०)।

शकुनक—संज्ञा पुं० [सं०] पक्षी। खग (को०)।

शकुनज्ञ—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शकुनों का शुभाशुभ फल जानता हो।

शकुनज्ञा—संज्ञा स्त्री० [सं०] गिरगिट। गृहगोधा (को०)।

शकुनज्ञान—संज्ञा पुं० [सं०] शकुन की जानकारी (को०)।

शकुनद्वार—संज्ञा पुं० [सं०] शकुन शास्त्र के अनुसार एक साथ ही शुभ और अशुभ दोनो प्रकार के शकुन होना जो यात्रा आदि के लिये बहुत शुभ माना जाता है।

शकुनशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमे शकुनों के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो। शकुन बतानेवाला शास्त्र।

शकुनाहृत—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार का चावल जिसे दाऊद-खानी कहते हैं। २ एक प्रकार की मछली। ३ एक प्रकार का बालरोग। शकुनी ग्रह। विशेष दे० 'शकुनी—१'। ४. वह पदार्थ जो चिड़ियों द्वारा लाया गया हो।

शकुनाहृता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चिड़ियों द्वारा लाई हुई वस्तु। २ एक प्रकार का चावल।

शकुनि—संज्ञा पुं० [सं०] १ पक्षी। चिड़िया। २ गिद्ध पक्षी। ३. एक नाग का नाम। ४ एक दैत्य जो हिरण्याक्ष का पुत्र और वृक का पिता था। ५ पुराणानुसार दुःसह के आठ पुत्रों मे से एक जो निर्माष्टि के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ६. पुराणानुसार विकुक्षि के पाँच पुत्रों मे से एक। ७ गांधारी का भाई और कौरवों का मामा जो सुबलराज का पुत्र था और इसी लिये सौबल कहलाता था।

विशेष—यह बहुत ही दुष्ट और पापाचारी था। दुर्योधन ने इसे अपना मंत्री बना रखा था और इसके परामर्श से उसने पांडवों के साथ अनेक कपटपूर्ण व्यवहार किए थे। कौरव कुल के नाश का मुख्य कारण यही शकुनि था। यह अपने पुत्र सहित सहदेव के हाथ से मारा गया था।

८. बड़ा भारी दुष्ट और पाजी आदमी। ९ फलित ज्योतिष के अनुसार बव आदि ग्यारह करणों मे से आठवाँ करण।

विशेष—कहते हैं, जो बालक इस करण मे जन्म लेता है, वह बडा भारी धूर्त, ठग, क्रूर, कृतघ्न, क्रोधी और लाट होता है। १० चल पक्षी (को०)। ११. मुर्गा (को०)।

शकुनिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार स्कद की अनुचरी एक मातृका का नाम।

शकुनिग्रह सज्ञा पु० [स०] १ पुराणानुसार स्कद के एक अनुचर का नाम। २ एक बालग्रह। शकुना।

शकुनिप्रपा—सज्ञा स्त्री० [स०] चिडियो के पानी पीने का बर्तन या स्थान (को०)।

शकुनिवाद्—सज्ञा पु० [स०] उषा काल के समय चिडियो का चहचहाना।

शकुनी'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्यामा पक्षी। २ गौरैया पक्षी की मादा। ३. पुराणानुसार एक पूतना का नाम जो बहुत क्रूर और भयकर कही गई है। ४ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह।

विशेष—कहते हैं, जिस बालक पर इसका आक्रमण होता है, उसके अग शिथिल पड जाते है, शरीर मे जलन होती है, फोडे फुसियाँ आदि निकल आती है शरीर से पक्षियो की सी गध आने लगती है और वह रह रहकर चौंक उठता है।

शकुनी'—सज्ञा पु० [स० शकुन+ई (प्रत्य०)] वह जो शकुनो का शुभ और अशुभ फल जानता हो। शकुनज्ञ।

शकुनी[3]—सज्ञा पुं० [स० शकुन] दुर्योधन का मामा सौबल। विशेष दे० 'शकुनि'। उ०—वे दु शासन और शकुनी बन गए।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ३०७।

शकुनीमातृका—सज्ञा स्त्री० [स०] बालको की एक प्रकार की व्याधि।

विशेष—यह बालको के जन्म से छठे दिन, छठे मास या छठे वर्ष होती है और इसमे उन्हे ज्वर तथा कप होता है, दृष्टि ऊर्द्ध्व हो जाती है और हरदम बहुत कष्ट बना रहता है।

शकुनीश्वर—सज्ञा पु० [स०] पक्षियों का स्वामी, अर्थात् गरुड।

शकुर—वि० [स०] पालतू (पशु आदि) (को०)।

शकुल, शकुलगड—सज्ञा पु० [स० शकुल, शकुलगण्ड] सौरी मछली।

शकुला—सज्ञा स्त्री० [स०] कुटकी। कटुकी।

शकुलाक्ष—सज्ञा पु० [स०] १ सफेद दूब। श्वेत दूर्वा। २ गाँडर दूब। गडदूर्वा।

शकुलाक्षका, शकुलाक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शकुनाक्षी'।

शकुलाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] गाँडर दूब।

शकुलादनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कुटकी। कटुकी। २. जलपिप्पली। जल चौलाई। कचट शाक। ४ कायफल। कटफल। ५ गजपीपल। गजपिप्पली। ६. गाँडर दूब। गडदूर्वा। ७. जटामासी। बालछड। ८. केचुआ। गडूपद।

शकुलार्भक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली। गडुई मछली।

शकुलाहनी—सज्ञा स्त्री० [स०] जलपीपल।

शकुली—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सकुची मछली। २. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शकृत्—सज्ञा पु० [स०] १. विष्ठा। गुह। २. गोबर गोमय।

शकृत्करि—सज्ञा पुं० [स०] गाय का बच्चा। बछडा।

शकृत्करी—सज्ञा स्त्री० [स०] बछिया। वत्सतरी (को०)।

शकृत्कीट—सज्ञा पु० [स०] १. मल का कीडा। विष्टकीट। २ गुबरैला।

शकृत्पिड, शकृत्पिडक—सज्ञा पु० [स० शकृत्पिण्ड, शकृत्पिण्डक] मल का पिड। लेंड। लेंडी (को०)।

शकृद्देश—सज्ञा पुं० [स०] मलद्वार। गुदा।

शकृद्द्वार—सज्ञा पु० [स०] मलद्वार। गुदा।

शकृद्भेद—सज्ञा पु० [स०] अतिसार। ग्रहणी रोग (को०)।

शक्क—सज्ञा पुं० [अ०] संदेह। शका। दे० 'शक' (को०)।

शक्कर'—सज्ञा स्त्री० [स० शर्करा, प्रा० सक्कर सक्करा, मि० फा० शकर (=चीनी)] १ चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड।

शक्कर'—सज्ञा पु० [स०] बैल। वृष।

शक्करि—सज्ञा पुं० [स०] बैल। वृष।

शक्करी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वर्णवृत्त के अतर्गत चौदह अक्षरों-वाले छदो की सज्ञा जिनके नाम इस प्रकार हैं—वसततिलका, असबाधा, अपराजिता, ग्रहणकलिका, वासती, मजरी, कुटल, इदुवदना, चक्र नादीमुख, लाली और अनद। इनमे से वसततिलका सबसे अधिक प्रसिद्ध है। २. मेखला। ३ एक प्राचीन नदी का नाम। ४ अँगुली। उँगली (को०) ५ निम्न वर्ण की महिला। नीच जाति की स्त्री (को०)।

शक्की—वि० [अ० शक+ई (प्रत्य०)] जिसे हर बात मे संदेह होता हो। सदा शक करनेवाला। उ०—इनका मिजाज निहायत शक्की है, ये सबको बेवफा समझते हैं।—श्रीनिवास ग्र० पृ० ११५।

शक्त'—सज्ञा पु० [स०] वह जिसमे शक्ति हो। शक्तिसंपन्न। समर्थ। ताकतवर। २ वह जो प्रिय बातें कहता हो। मिष्टभाषी।

शक्त'—वि० १ योग्य। काबिल। समर्थ। २. शक्तिसपन्न। ताकतवर। ३. धनाढ्य। समृद्धियुक्त। ४ अर्थ का अभिव्यंजक या अर्थद्योतक, जैसे कोई शब्द। ५. प्रियभाषी। मिष्टभाषी। ६. चतुर। चालाक। पटु (को०)।

शक्तव—सज्ञा पु० [स०] भुने हुए अनाज का आटा। सत्तू।

शक्ति'—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह शारीरिक गुण या धर्म जिसके द्वारा अगो का सचालन तथा दूसरे काम होते है। बल। पराक्रम। ताकत। जोर। जैसे—(क) उसमे दो मन बोझ उठाने की शक्ति है। (ख) अब तो उनमे उठने बैठने का भी शक्ति नही रह गई। (ग) दुर्बलो पर शक्ति का प्रयोग नही करना चाहिए।

क्रि० प्र०—देखना।—रखना।—लगना।—लगाना।

२. किसी प्रकार का बल या ताकत जिससे कोई काम हो। जैसे,—मानसिक शक्ति, स्मरण शक्ति, सोचने शक्ति, शब्द शक्ति। ३. किसी पदार्थ के सयोजक अगो या द्रव्यो आदि का प्रकट

होनेवाला बल। दूसरे पदार्थों पर प्रभाव डालनेवाला बल। जैसे,—(क) इस औषध मे ऐसी शक्ति है कि मृत्यु को भी कुछ देर के लिये रोक देती है। (ख) इस इजन मे बीस घोडो की शक्ति है। (ग) पानी के बहाव मे बडी बडी चट्टानो तक को तोडने की शक्ति होती है। ४ वश। अधिकार। जैसे,—इसकी रक्षा करना मेरी शक्ति के बाहर है। ५ राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओ पर विजय प्राप्त की जाती है।

विशेष—हमारे यहाँ राजाओ की तीन प्रकार की शक्ति कही गई है—प्रभुशक्ति, मंत्रशक्ति, और उत्साहशक्ति। कोश और दड आदि के सबध की शक्ति प्रभुशक्ति, सधि, विग्रह आदि के सबध की शक्ति मत्रशक्ति और पराक्रम प्रकट करने तथा विजय प्राप्त करने की शक्ति उत्साहशक्ति कहलाती है।

६ बडा और पराक्रमी राज्य जिसमे यथेष्ट धन और सेना आदि हो। जैसे,—इस समय युरोप मे इगलैड, फ्रास, जर्मनी, और रूस आदि कई बडी बडी शक्तियाँ है। ७ न्याय के अनुसार वह सबध जो किसी पदार्थ और उसका बोध करानेवाले शब्द मे होता है। इस शब्द का यह अर्थ बाद्धव्य है—इस प्रकार का अनादि सकेत। जैसे घट शब्द के कहने मात्र से श्रोता को घट शब्द के रूपाकार आदि का ज्ञान हो जाता है। ८ ईश्वर की वह कल्पित माया जो उसकी आज्ञा से सब काम करनेवाली मानी जाती है। प्रकृति। माया। ९ किसी देवता का पराक्रम या बल जो कुछ विशिष्ट कार्यो का साधक माना जाता है। जैसे,—रौद्री शक्ति, वैष्णवी शक्ति।

विशेष—हमारे यहाँ पुराणो मे भिन्न भिन्न देवताओ की अनेक शक्तियो की कल्पना की गई है और ये शक्तियाँ बहुधा देवी के रूप मे और मूर्तिमती मानी गई हैं। जैसे, विष्णु की कीर्ति, कांति, तुष्टि, पुष्टि, शांति, प्रीति आदि शक्तियाँ, रुद्र की गुणोदरी, गोमुखी, दीर्घजिह्वा, ज्वालामुखी, लबोदरी खेचरी, मजरी आदि शक्तियाँ, देवी की इद्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, नारसिंही, वाराही, माहेश्वरी और सर्वमगला आदि शक्तियाँ।

१० तत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी।

विशेष—इनकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते है। ऐसी शाक्त समस्त सृष्टि की रचना करनेवाली और सब तरह की सामर्थ्य रखनेवाली माना जाता है।

११. दुर्गा। भगवती। १२. गौरी। १३ लक्ष्मी। १४ तात्रिको की पारिभाषा मे वह नटी, कापालिका, वश्या, धोबिन, नाउन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन जो युवती, रूपवती और सौभाग्यवती हो। ऐसी स्त्रियो का विधिपूर्वक पूजन सिद्धिप्रद और मोक्षदायक माना जाता है। १५ स्त्री का मूत्रेंद्रिय। भग। (तात्रिक)। १६ एक प्रकार का शस्त्र। साग। १७. तलवार। १८ क्षमता। योग्यता (को०)। १९ साहित्य मे शब्द के अर्थ को बोधक शक्ति। अभिधा, लक्षणा और व्यजना नाम की शब्दशक्ति (को०)। २०. काव्यादि निर्माण की क्षमता। रचनाशक्ति। कवित्वशक्ति (को०)। २१ द्यूतक्रीडा का उपकरण वा यंत्र (को०)।

शक्ति[2]—सज्ञा पु० प्राचीन ऋषि का नाम जो पराशर के पिता थे।

शक्तिक—सज्ञा पु० [स०] १ धक।

शक्तिकुठन—सज्ञा पु० [स० शक्तिकुण्ठन] शक्ति का दब जाना। नरम पड जाना (को०)।

शक्तिग्रह[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। महादेव। २ कार्तिकेय। ३. शब्द का अर्थ बतलानेवाली शक्ति या वृत्ति का ज्ञान। ४ वह जो भाला या बरछी चलाता हो। भालाबरदार।

शक्तिग्रह[2]—वि० १ शक्ति या अर्थ को ग्रहण करनेवाला। २ बर्छाधारी (को०)।

शक्तिग्राहक[1]—वि० [स०] शब्दार्थ का निश्चय अथवा निर्धारण करनेवाला (को०)।

शक्तिग्राहक[2]—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय।

शक्तिता—सज्ञा स्त्री० [सं०] शक्ति का भाव या धर्म। शक्तित्व।

शक्तित—अव्य० [स० शक्तितस्] यथाशक्ति। शक्ति के अनुसार (को०)।

शक्तित्रय—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शक्ति'—५।

शक्तिधर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ स्कद। कार्तिकेय। उ०—शक्ति शक्तिधर पासहि पासी।—गर्गसहिता (शब्द०)। २ भालाबरदार। बर्छीधारी (को०)।

शक्तिधर[2]—वि० शक्तिशाली। ताकतवर। मजबूत (को०)।

शक्तिध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ कार्तिकेय। स्कद। २. वह जो शक्ति नामक अस्त्र धारण करता हो (को०)।

शक्तिनाथ—सज्ञा पु० [स०] शिव (को०)।

शक्तिपर्ण—सज्ञा पु० [सं०] छतिवन। सतिवन। सप्तपर्ण वृक्ष।

शक्तिपाणि—सज्ञा पु० [स०] १. कार्तिकेय। स्कद। २ शक्ति नामक अस्त्र या बर्छा धारण करनेवाला व्यक्ति (को०)।

शक्तिपात—सज्ञा पु० [स०] शक्ति का क्षय। पराजय। २ योग दर्शन मे एक आध्यात्मिक प्रक्रिया जिसके द्वारा गुरु अपना आध्यात्मिक शक्ति शिष्य मे स्थापित करता है (को०)।

शक्तिपूजक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो शक्ति की उपासना करता हो। शाक्त। २ तात्रिक। वाममार्गी।

शक्तिपूजा—सज्ञा स्त्री० [स०] शक्ति का शाक्तो द्वारा होनेवाला पूजन।

शक्तिपूर्व—सज्ञा पु० [स०] पराशर का एक नाम।

शक्तिबोध—सज्ञा पुं० [स०] शब्दशक्ति का ज्ञान। शब्द के अर्थ का बोध।

शक्तिभृत्—सज्ञा पुं० [स०] १. कार्तिकेय। स्कंद। २. साँग या भाला धारण करनेवाला पुरुष (को०)।

शक्तिमत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] शक्तिमान् होने का भाव या धर्म।

शक्तिमत्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शक्तिमत्ता'।

शक्तिमान्—वि० [स० शक्तिमत्] [वि० स्त्री० शक्तिमती] १ बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर। २ सामर्थ्य वा योग्यता का अतिक्रमण करनेवाला (को०)। ३. बाणधारी (को०)।

शक्तिवन—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक वन का नाम जो तीर्थ कहा गया है।

शक्तिवादी—संज्ञा पु० [शक्तिवादिन्] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। शाक्त।

शक्तिवीर—संज्ञा पुं० [स०] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। वाममार्गी।

शक्तिवैकल्य—संज्ञा पुं० [स०] १. शक्ति का नाश। दौर्बल्य कमजोरी। २ असमर्थता।

शक्तिशोधन—संज्ञा पु० [स०] शाक्तों का एक संस्कार जिसमे वे किसी स्त्री को शक्ति की प्रतिनिधि बनाने से पहले कुछ विशिष्ट क्रियाएँ करके उसे शुद्ध करते है।

शक्तिष्ठ—वि० [स०] जिसमे शक्ति हो। शक्तिशाली। मजबूत। ताकतवर। बलवान्।

शक्तिसंपन्न—वि० [स० शक्तिसम्पन्न] शक्ति से युक्त। बलवान्। ताकतवर। मजबूत।

शक्तिहीन—वि० [सं०] १ जिसमे शक्ति का अभाव हो। निर्बल। बलहीन। असमर्थ। नाताकत। २. हींजडा। नपुंसक। नामर्द।

शक्ती[1]—संज्ञा पुं० [स० शक्ति] एक प्रकार के मात्रिक छंद का नाम।

विशेष—इसके प्रत्येक चरण मे १८ मात्राएँ होती हैं और इसकी रचना ३+३+४+३+५ होती है। अत मे सगण, रगण, या नगण म से कोई एक और आदि मे एक लघु होना चाहिए। इसकी १, ६, ११ और १७वी मात्रा लघु रहती है। यह भुजगी और चद्रिका वृत्त की चाल पर होता है। अतर यह है कि वे गणबद्ध होते है और यह स्वतत्र है। यह छद फारसी के 'करीमा बबख्शाय बर हाल मा। कि हस्तम् असीरे कमदे हवा' की बहर से मिलता है। जैसे, उ०—शिवा शभु के पाँव पकज गहौ। विनायक सहायक सदा दिन चहौं।—काव्य प्र० (शब्द०)।

शक्ती[2]—संज्ञा पु० [स० शक्तिन्] शक्तिवाला। शक्तिशाली। बलवान्।

शक्ती[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शाक्त] दे० 'शक्ति'।

शक्तु—संज्ञा पुं० [स०] भुने हुए जौ चने आदि का आटा। सत्तू।

शक्तुक—संज्ञा पु० [स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बहुत तीव्र और उग्र विष जो भसोड के समान होता है। पीसने से यह सहज ही मे पिसकर सत्तू के समान हो जाता है।

शक्तुफला—संज्ञा स्त्री० [स०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर। छिकुर का पेड।

शक्तुफलिका, शक्तुफली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी का वृक्ष।

शक्त्यपेक्ष दायन—संज्ञा पुं० [स०] ऋणी की सामर्थ्य के अनुसार ऋण थोडा थोडा करके चुकता कराना।

शक्ति—संज्ञा पुं० [स०] वशिष्ठ मुनि के सबसे बडे लडके का नाम।

विशेष—महाभारत मे लिखा है कि एक बार रास्ते मे राजा कल्माषपाद से इनकी कहा सुनी हो गई, जिसपर राजा ने इन्हे एक कोड़ा जमा दिया। इसपर इन्होने राजा को शाप दिया कि तुम राक्षस हो जाओ। तदनुसार राजा राक्षस हो गया और पहले उसने इन्ही को भक्षण कर लिया।

शक्न, शक्नु—वि० [स०] प्रिय बोलनेवाला, प्रियंवद (को०)।

शक्मा—संज्ञा पुं० [स० शक्मन्] १. पराक्रम। शक्ति। सामर्थ्य। २ इद्र। सक्रदन। ३ कर्म।

शक्य[1]—वि० [सं०] १ किया जाने योग्य। जो किया जा सके। सभव। क्रियात्मक। २. जिसमे शक्ति हो।

शक्य[2]—संज्ञा पुं० शब्दशक्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ। जैसे—'अग्नि' पद मे अगार रूप की शक्ति है अत अग्निपद का अगार शक्य अथवा वाच्य है। (व्याकरण)।

शक्यता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शक्य होने का भाव या धर्म। क्रियात्मकता। २ क्षमता। समर्थता (को०)।

शक्यत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शक्यता' (को०)।

शक्यप्रतीकार—वि० [स०] जिसका प्रतीकार किया जा सके (को०)।

शक्यप्राप्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाता के वे प्रमाण जिनसे प्रमेय सिद्ध होता है।

शक्यसामतता—संज्ञा स्त्री० [स० शक्यसामन्तता] पडोसी राजाओ को जीतने योग्य क्षमता (को०)।

शक्यार्थ—संज्ञा पुं० [स०] वह अर्थ जो शब्द को अभिधाशक्ति द्वारा व्यक्त हो। अभधेयार्थ (को०)।

शक्र[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ दैत्यो का नाश करनेवाले, इद्र। उ०—भरत शोक बरन्यो नहिं जाई। मनहु शक्र द्विज हत्या पाई।—लवकुश-चरित्र (शब्द०)। २ कुटज वृक्ष। कोरैया। ३ अर्जुन वृक्ष। कोह वृक्ष। ४. इंद्रजौ। कुटज बीज। ५. रगण के चौथे भेद अर्थात् (ऽ।ऽ) की सज्ञा, जिसमे छह मात्राएँ होती है। जैसे—लोकवर्ती। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र, जिसके अधिष्ठता देवता इद्र है। ७. उलूक पक्षी (को०)। ८. चौदह की सख्या (को०)। ९. शिव का एक नाम (को०)। १०. स्वामी। राजा (को०)।

शक्र[2]—वि० समर्थ। योग्य।

शक्रकार्मुक—संज्ञा पु० [स०] इद्रधनुष।

शक्रकाष्ठा—संज्ञा स्त्री० [स०] प्राची दिशा। पूर्व दिशा जिसका आधपति इद्र है (को०)।

शक्रकुमारिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शक्रमातृका'।

शक्रकेतु—संज्ञा पुं० [स०] इद्रध्वज।

शक्रक्रीड़ाचल—संज्ञा पुं० [स० शक्रक्रीडाचल] इद्र के क्रीडा करने का पर्वत अर्थात् सुमेरु पर्वत।

शक्रगोप, शक्रगोपक—संज्ञा पुं० [स०] इद्रगोप नामक कीडा। बीरबहूटी।

शक्रचाप—संज्ञा पुं० [सं०] इद्रधनुष।

शक्रज, शक्रजात—संज्ञा पु० [सं०] कौआ। काक पक्षी।

शक्रजा—संज्ञा स्त्री० [स०] इद्रवारुणी लता। इद्रायण। इनारुन।

शक्रजानु—संज्ञा पुं० [स०] रामायण के अनुसार एक वानर का नाम।

शक्रजाल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'इंद्रजाल'।

शक्रजित्—संज्ञा पु० [सं०] १ वह जिसने इंद्र पर विजय प्राप्त की हो। २ इंद्र को जीतनेवाले मेघनाद का एक नाम।

शक्रतरु—संज्ञा पु० [सं०] भाँग का पेड़।

शक्रत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शक्र का भाव या धर्म।

शक्रदारु—संज्ञा पु० [सं०] १ देवदारु। २ साखू का पेड़। शाल।

शक्रदिक्—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्रदिश्] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इंद्र माने जाते हैं।

शक्रदेव—संज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र। २ हरिवंश के अनुसार शृगाल के एक पुत्र का नाम।

शक्रदैवत—संज्ञा पु० [सं०] ज्येष्ठा नामक नक्षत्र जिसके स्वामी इंद्र माने जाते हैं।

शक्रद्रुम—संज्ञा पुं० [सं०] १. देवदारु। २ मौलसिरी। बकुल वृक्ष। ३ साखू का पेड़। शाल वृक्ष।

शक्रधनु, शक्रधनुष—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रध्वज—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'इंद्रध्वज'।

शक्रनंदन—संज्ञा पु० [सं० शक्रनन्दन] इंद्र का पुत्र अर्थात् अर्जुन।

शक्रनेमी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रनेमिन्] १ देवदार का वृक्ष। २ मेढ़ासिंगी। मेषशृंगी। ३ कुडा। कोरैया। कुटज वृक्ष।

शक्रपर्याय, शक्रपादप—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुडा। कुटज वृक्ष। २ देवदार का पेड़।

शक्रपुर—संज्ञा पु० [सं०] इंद्र के रहने की पुरी, अमरावती।

शक्रपुरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शक्रपुर। अमरावती।

शक्रपुष्प—संज्ञा पु० [सं०] इंद्रजौ। कुटज बीज।

शक्रपुष्पा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० शक्रपुष्पिका'।

शक्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ अग्निशिखा नाम का वृक्ष। २ कलिहारी। लांगली। ३ नागदमनी। नागदौन।

शक्रप्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था। इंद्रप्रस्थ। उ०—उठे सुनत हरि उद्धव बानी। भे पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी।—सबल (शब्द०)।

शक्रबीज—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रजौ।

शक्रभवन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

शक्रभिद्—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र को दबानेवाला, मेघनाद। इंद्रजित्।

शक्रभुवन—संज्ञा पुं० [सं०] स्वर्ग।

शक्रभूभवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी नाम की लता। इनारुन। इंद्रायण।

शक्रभूरुह—संज्ञा पुं० [सं०] कुटज वृक्ष। कुडा। कोरैया।

शक्रमाता—संज्ञा स्त्री० [सं० शक्रमातृ] इंद्र की माता अर्थात् भार्गी।

शक्रमातृका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ इंद्रध्वज। २ भार्गी।

शक्रमूर्द्धा—संज्ञा पुं० [सं० शक्रमूर्द्धन्] वल्मीक। बाँबी।

शक्रयव—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रजौ। कुटज बीज।

शक्रलोक—संज्ञा पु० [सं०] इंद्रलोक। स्वर्ग।

शक्रवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्रवारुणी नाम की लता। इनारुन। इंद्रायण।

शक्रवापी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रवापिन्] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शक्रवास—संज्ञा पु० [सं०] स्वर्ग। शक्रभवन [को०]।

शक्रवाहन—संज्ञा पु० [सं०] इंद्र का वाहन अर्थात् मेघ। बादल।

शक्रवृक्ष—संज्ञा पु० [सं०] कुटज। कोरैया।

शक्रशरासन—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्रधनुष।

शक्रशाखी—संज्ञा पुं० [सं० शक्रशाखिन्] कुडा। कुटज वृक्ष।

शक्रशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] यज्ञभूमि में वह स्थान जहाँ इंद्र के उद्देश्य से बलि दी जाती हो।

शक्रशिर—संज्ञा पु० [सं० शक्रशिरस्] बाँबी। वल्मीक।

शक्रसारथी—संज्ञा पु० [सं० शक्रसारथि] इंद्र का सारथी अर्थात् मातलि।

शक्रसुत—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का पुत्र बालि, जिसे राम ने मारा था। २ जयंत (को०)। ३ अर्जुन (को०)।

शक्रसुधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुंदरू। गुदबरोसा।

शक्रसृष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरीतकी। हर्रे।

शक्राख्य—संज्ञा पुं० [सं०] उल्लू। पेचक पक्षी।

शक्राग्नि—संज्ञा पुं० [सं०] विशाखा नक्षत्र जिसके स्वामी इंद्र और अग्नि माने जाते हैं

शक्राणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] इंद्र की पत्नी शची। इंद्राणी। २ निर्गुंडी। शेफालिका। सेनुआर।

शक्रात्मज—संज्ञा पु० [सं०] १ अर्जुन। २ जयंत (को०)।

शक्रादन—संज्ञा पुं० [सं०] भाँग। भंग।

शक्रानिल—संज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष में प्रभव आदि साठ संवत्सरों के बारह युगों में से दसवें युग के अधिपति। इनके युग में ये पाँच संवत्सर होते हैं,—परिधावी, प्रमादी, आनंद, राक्षस और अनल।

शक्रावर्त्त—संज्ञा पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शक्राशन—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाँग। विजया। भंग। २. कुडा। कुटज। कोरैया। ३ इंद्रजौ। कुटज बीज।

शक्रासन—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र का आसन। २ सिंहासन।

शक्राह्व—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्रजौ। कुटज बीज। २. कुटज वृक्ष।

शक्राह्वा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शक्राह्व'।

शक्रि—संज्ञा पु० [सं०] १ मेघ। बादल। २ वज्र। ३. हाथी। ४ पर्वत। पहाड़।

शक्रुक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का विष [को०]।

शक्रेंद्र—संज्ञा पु० [सं० शक्रेन्द्र] वीरबहूटी या इंद्रगोप नाम का कीड़ा।

शक्रोत्थान—सज्ञा पुं० [सं०] इद्रध्वज नाम का उत्सव जो भाद्र शुक्ल द्वादशी को होता था। दे० 'इद्रध्वज'—२, ३।

शक्रोत्सव—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शक्रोत्थान'।

शक्ल—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शकल'।

मुहा०—शक्ल चिड़ियो की नाज परियो का = हैसियत के बाहर गुमान रखना। उ०—ऐसी तो सूरत भी नहीं पाई है बीबी, शक्ल चिड़ियो की नाज परियो का।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १६। शक्ल दिखाना = (१) मिलना। (२) सामने आना। शक्ल देखते रह जाना = (१) चकित होना। (२) मुग्ध होना। शक्ल देखा करना = दे० 'शक्ल देखते रह जाना'। शक्ल न दिखाना = (१) न मिलना। (२) मुँह छिपाना। शक्ल पकड़ना = मूर्त होना। आकार ग्रहण करना। शक्ल पहचानना = (१) रूपरेखा से परिचित होना (२) देखकर चरित्र की बारीकियाँ जानना। शक्ल बनाना = असुदर या विचित्र हो जाना। शक्ल बिगाड़ना = (१) चेहरे को कुरूप या विचित्र कर लेना। (२) पीटने पीटते मुँह सुजा देना।

शक्व—सज्ञा पुं० [स०] हाथी (को०)।

शक्वर—सज्ञा पु० [स०] १ बैल। २. आकाश।

शक्वरी सज्ञा स्त्री० [स०] १ उँगली। २ एक प्राचीन नदी का नाम। ३ मेखला। ४ गौ। गाय। ५ अंगूठी। मुद्रिका (को०)। ६ एक साम (को०)। ७ शक्करी नामक छद। विशेष दे० 'शक्करी'।

शक्वा'—सज्ञा पुं० [सं० शक्वन्] १. हाथी। गज। २. शिल्पी। निर्माता (को०)।

शक्वा'—वि० शक्तिमान्। ताकतवर। मजबूत (को०)।

शख्स—सज्ञा पुं० [अ० शख्स] दे० 'शख्स'।

शख्स—सज्ञा पु० [अ० शख्स] व्यक्ति। जन। मनुष्य। आदमी।

शख्सियत—सज्ञा स्त्री० [अ० शख्सियत] शख्स का भाव या धर्म। व्यक्तिता। व्यक्तित्व।

शख्सी—वि० [अ० शख्सी] शख्स का। मनुष्य का। व्यक्तिगत।

शगल—सज्ञा पुं० [अ० शगल, शग़ल, शुग़्ल] १ व्यापार। काम-धंधा। जैसे,—कहिए आजकल क्या शगल है। उ०—शगल बेहतर है इश्कबाजी का। क्या हकीकी व क्या मजाजी का।—कविता को०, भा० ४, पृ० ४। २ वह काम जो यों ही समय बिताने या मन बहलाने के लिये किया जाय। मनोविनोद। उ०—मनियर को एक नये शगल मे तल्लीन देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।—जिप्सी, पृ० ११६।

शगुन—सज्ञा पुं० [स० शकुन (मि० फा० शगून, शुगुन, शुगून)] १ किसी काम के समय होनेवाले लक्षणो का शुभाशुभ विचार। शकुन। विशेष दे० 'शकुन'।

मुहा०—शगुन लेना या विचारना = कोई काम करने से पहले कुछ विशिष्ट क्रियाओ द्वारा यह जानना कि यह काम होगा कि नहीं।

२ किसी काम के आरभ मे होनेवाले शुभ लक्षण। ३ एक प्रकार की रसम जो विवाह की बातचीत पक्की होने पर होती है। इसमे कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगो के यहाँ कुछ मिठाई और नगद आदि भेजते हैं। तिलक। टीका।

क्रि० प्र०—देना।—भेजना।—लेना।

४ नजराना। भेट। (क०)। ५ बहली मे वह स्थान जहाँ बैल हाँकनेवाला बैठता है।

शगुनियाँ—सज्ञा पुं० [हिं० शगुन + इयाँ (प्रत्य०)] वह जो ज्योतिष या रमल आदि के द्वारा शुभाशुभ शगुनो आदि का विचार करता हो। साधारण कोटि का ज्योतिषी। रम्माल।

शगून सज्ञा पु० [फा० शगून] दे० 'शगुन'।

शगूनियाँ—सज्ञा पुं० [फा० शगून + हिं० इयाँ] दे० 'शगुनियाँ'।

शगूफा—सज्ञा पुं० [फा० शिगूफ़ह्] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ पुष्प। फूल। ३. कोई नई और विलक्षण घटना। ४. कसीदा। बेलबूटा (को०)।

मुहा०—शगूफा खिलना = कोई नई और विलक्षण घटना होना। शगूफा खिलाना = कोई ऐसी नई और विलक्षण बात कर बैठना जिससे सब लोग चकित हो जायँ। शगूफा छोड़ना = झगड़े फसादवाली बात करना।

विशेष—इस मुहावरे का प्रयोग प्राय ऐसी बातो के सबध मे ही होता है जिनमे कोई लड़ाई झगड़ा या झझट आदि पैदा हो।

शचि, शची—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्र की पत्नी, इंद्राणी जो दानवराज पुलोमा की कन्या थी।

पर्या०—सची। ऐद्री। पुलोमजा। माहेद्री। जयवाहिनी।

२. सतावर। शतावरी। शतमूली। ३ स्पृक्का। असवरग। ४ वक्तृत्व शक्ति। वाग्मिता। ५ प्रज्ञा। बुद्धि। अक्ल। ६. बल। शक्ति (को०)। ७ क्षिप्रकारिता। क्रियात्मकता (को०)। ८. भक्ति। प्रीति (को०)। ९ पवित्र क्रिया (को०)।

शचीतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शचीपति—सज्ञा पु० [स०] शची के पति, इद्र।

शचीपती—सज्ञा पु० [स०] अश्विनीकुमार।

शचीबल—सज्ञा पु० [स०] नाटक मे वह पात्र जो इद्र के समान वेश-भूषा धारण करता हो।

शचीभर्ता—सज्ञा पु० [स० शचीभर्तृ] शची के पति, इद्र (को०)।

शचीश—सज्ञा पुं० [स०] शची के पति, इद्र।

शजर—सज्ञा पु० [अ०] दरख्त। वृक्ष। पेड़।

शजरा—सज्ञा पुं० [अ० शजरह्, शजरहू] १ वह कागज जिसमे किसी की वशपरंपरा लिखी हो। वशवृक्ष। पुश्तनामा। कुर्सीनामा। वशावली। २ वृक्ष। पौधा। ३ पटवारी का तैयार हुआ खेतो का नक्शा।

शट¹—सज्ञा पु० [स०] १ खटाई। अम्ल रस। ३. एक प्राचीन देश का नाम।

शट²—वि० [स०] अम्ल। खट्टा (को०)।

शटा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जटा। २ शेर की गर्दन का बाल। सटा। केसर (को०)।

शटि, शटी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कचूर। कर्चूर। २ गधपलाशी। कपूरकचरी। ३ अमिगा हल्दी। आम्रहरिद्रा। आमा हलदी। ४ सुगधवाला। नेत्रबाला।

शट्टक—सज्ञा पु० [स०] घी और पानी मे सना हुआ चावल का आटा जिसका व्यवहार वैद्यक मे होता है।

शठ'—वि० [स०] १ धूर्त। चालाक। धोखेबाज। २ पाजी। लुच्चा। बदमाश।

शठ[२]—सज्ञा पु० १ तगर का फूल। २ केसर। कुंकुम। जाफरान। ३ लोहा। ४ इस्पात। फौलाद। ५ धतूरे का वृक्ष। ६ चीता चित्रक। चितउर। ७ ताल वृक्ष। ८ आमला का वृक्ष। ९ साहित्य मे पाँच प्रकार के पतियो या नायको मे से एक प्रकार का पति या नायक। वह नायक जो छलपूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर और किसी दूसरी स्त्री के साथ प्रेम करते हुए भी अपनी स्त्री से प्रेम प्रदर्शित करने का बहाना करता हो। उ०—सहित काज मधुरै मधुर, बैननि कहै बनाय। उर अतर घट कपटमय, सो शठ नायक आय। —(शब्द०)। १० छलिया वा धूर्त जन (को०)। ११ वेवकूफ। जडबुद्धि। १२ आलसी। १३ वह जो दो आदमियो के बीच मे पडकर उनके झगडे का निपटारा करता हो। मध्यस्थ।

यौ०—शठधी, शठबुद्धि, शठमति=जिसकी बुद्धि शठतापूर्ण हो। शठ या दुष्ट व्यक्ति। धूर्त आदमी।

शठता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ शठ का भाव या धर्म। धूर्तता। २. बदमाशी। पाजीपन।

शठत्व—सज्ञा पुं० [स०] शठ का भाव या धर्म। शठता।

शठागा, शठान्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शठाङ्गा, शठान्वा] ब्राह्मणी लता। अवष्ठा। पाढा।

शठावा—सज्ञा स्त्री० [स० शठाम्बा] अवष्ठा। पाढा [को०]।

शठिका, शठी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कचूर। २ गधपलाशी। कपूरकचरी। ३ वन अदरक। पेऊ।

शठीरूपा—सज्ञा स्त्री० [सं०] कद गिलोय। कद गुडूची।

शठोदरक—वि० [स० शठोदर्क] अत में धोखा देनेवाला। धोखेबाज। धूर्त।

शडाप—सज्ञा पु० [अनुध्व०] कोडे, चाबुक आदि के मारने से होनेवाली ध्वनि।

मुहा०—शडाप शडाप कोडे जमाना=तेजी से कोडा मारना। उ०—और आदमी इधर उधर से शडाप शडाप से कोडे जमाते जाते हैं।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४।

शण—सज्ञा पु० [स०] १ सन नामक पौधा। विशेष दे० 'सन'। २ भग। विजया। ३ शणपुष्पी। वनसनई।

शणई—सज्ञा स्त्री० [स० शण+हिं० ई] दे० 'सन'।

शणकद—सज्ञा पुं० [स० शणकन्द] चर्मकषा नाम का सुगधि द्रव्य।

शणकदा—सज्ञा स्त्री० [सं० शणकन्दा] एक प्रकार का थूहड जिसे सातला कहते है।

शणक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम। सनक।

शणघटा, शणघटिका—सज्ञा स्त्री० [सं० शणघण्टा, शणघण्टिका] शणपुष्पी नाम की लता। विशेष दे० 'शणपुष्पी'।

शणचूर्ण—सज्ञा पुं० [स०] सनई का वह बचा हुआ भाग जो उसे कूट कर सन निकाल लेने के बाद रह जाता।

शणतातव—वि० [सं० शणतान्तव] [वि० स्त्री० शणतातवी] सन के रेशे का बना हुआ (को०)।

शणपट्ट—सज्ञा पुं० [सं०] सन का बना हुआ वस्त्र वा पट्ट (को०)।

शणपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] पटसन। अशनपर्णी (को०)।

शणपुष्पिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शणपुष्पी'।

शणपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की वनस्पति जो साधारणत. वनसनई कहलाती है।

विशेष—यह छोटी और बडी दो प्रकार की होती है। छोटी शणपुष्पी प्राय सब प्रातो मे पाई जाती है। इसका क्षुप, पत्ते, फूल इत्यादि सन के ही समान होते हैं, किंतु क्षुप सन से छोटा होता है। इसके फूल पीले, फलियाँ मटर के समान गोल और लबी होती हैं। यह कडवी, वमनकारक और पारे को बाँधने-वाली कही गई है। इसके फल सूख जाने पर अदर के बीजो के कारण झन झन शब्द करते हैं, इसी से इसे झुनझुनियाँ कहते हैं। बडी शणपुष्पी प्राय. वाटिकाओ में लगाते हैं। इसका क्षुप, पत्ते आदि छोटी शणपुष्पी से बडे होते हैं और फूल सफेद रग के होते हैं। यह कसैली, गरम और पारे को बाँधने-वाली कही गई है और मोहन, स्तभन आदि में व्यवहार की जाती है।

१ अरहर। आढकी। रहर।

शणशिफा—सज्ञा स्त्री० [सं०] सनई या सन की जड। शणमूल।

शणसमा—सज्ञा स्त्री० [सं०] वनसनई। शणपुष्पी।

शणसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] कुश आदि की बनी हुई पवित्री जो श्राद्ध, तर्पण आदि कृत्यो के समय कनिष्ठिका की बगलवाली उँगली मे पहनी जाती है। पवित्रक। पवित्री। पैंती।

शणाल—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शणालुक'।

शणालुक—सज्ञा पुं० [सं०] अमलतास का वृक्ष।

शणिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] शणपुष्पी। वनसनई।

शणीर—सज्ञा पु० [स०] १ सोन नदी के मध्य का उपजाऊ स्थल। २ सरयू नदी की शाखाओ से घिरा हुआ छपरे के समीप का एक द्वीप। दर्दरी तट।

शत'—वि० [सं०] दस का दस गुना। सौ।

शत[२]—सज्ञा पुं० १ सौ की सख्या। दस की दस गुनी सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००। २ कोई बडी सख्या। जैसे, शतपत्र।

शतक'—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १ सौ का समूह। २. एक ही तरह की सौ चीजो का सग्रह। जैसे,—नीतिशतक, रहिमन

शतक। ३ वह जिसमे सौ भाग या अवयव हो। ४ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। ५ विष्णु का एक नाम।

शतक[२]—वि० १ सौ। दस का दस गुना। २ जिसमे सौ का समावेश हो। सौ की सख्या से सबद्ध [को०]।

शतकपालेश—सज्ञा पु० [स०] शिव की एक मूर्ति का नाम।

शतकर्मा—सज्ञा पु० [स० शतकर्मन्] शनि ग्रह।

शतकिरण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की समाधि।

शतकीर्ति—सज्ञा पु० [स०] जैन पुराणानुसार एक भावी अर्हत् का नाम।

शतकुत, शतकुंद—सज्ञा पुं० [स० शतकुन्त, शतकुन्द] सफेद कनेर। करवीर।

शतकुभ—सज्ञा पु० [स० शतकुम्भ] १ एक प्राचीन पर्वत का नाम। २ सफेद कनेर। शतकुत। ३ सुवर्ण। सोना।

शतकुंभा—सज्ञा स्त्री० [स० शतकुम्भा] महाभारत मे वर्णित एक नदी का नाम।

शतकुलीरक—सज्ञा पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

शतकुसुमा—सज्ञा स्त्री० [स०] शतपुष्पा। सौंफ।

शतकेसर—सज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार एक वर्षपर्वत का नाम।

शतकोटि—सज्ञा पु० [स०] १. सौ करोड की सख्या। अर्बुद। २. इद्र का वज्र। ३ हीरा। हीरक।

शतकौभ, शतकौभक—सज्ञा पुं० [शतकौम्भ, शतकौम्भक] स्वर्ण। सोना।

शतक्रतु—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ वह जिसने सौ यज्ञ किए हो।

शतक्रतुद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] काली कुडा। कृष्ण कुटज।

शतकातुयव—सज्ञा पु० [स०] कुटज। बीज इद्रजौ।

शतखड—सज्ञा पु० [स० शतखण्ड] १ सोना। स्वर्ण। २ सोने की बनी हुई कोई चीज। ३. सौ भाग। सौ टुकड़ा।

शतगु—वि० [स०] मनु के अनुसार सौ गौओ का स्वामी। सौ गायो का रखनेवाला।

शतगुण, शतगुणित—वि० [स०] सौगुना।

शतग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० शतग्रन्थि] १ सफेद दूब। दूर्वा। २ नीली दूब।

शतग्रीव—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की भूतयोनि।

शतघ्न—सज्ञा पु० [स०] शिव का एक नाम [को०]।

शतघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

विशेष—किसी बडे पत्थर या लकडी के कुंदे मे बहुत से कीलकांटे ठोककर यह शस्त्र बनाया जाता था और इसका व्यवहार युद्ध के समय शत्रुओ पर फेंकने मे होता था। लोग इसे तोप या राकेट जैसा शस्त्र कहते हैं जिससे सैकडो व्यक्ति मारे जा सकते थे।

२ वृश्चिकाली। निछाती। ३. एक प्रकार की घास। ४. करंज या कजे का पेड। ५ भावप्रकाश के अनुसार गले में होनेवाला एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमें त्रिदोष के कारण गले में बत्ती के समान लबी और मोटी तथा कठ को रोकनेवाली, माप के अंकुरो से भरी हुई और बहुत पीडा देनेवाली सूजन हो जाती है। यह रोग प्राणनाशक कहा गया है।

शतचद्र—सज्ञा पुं० [स० शतचन्द्र] महाभारत के अनुसार वह तलवार या चर्म (ढाल) जिसपर चद्रमा के समान चमकते हुए आकार बने हो [को०]।

यौ०—शतचद्रवर्म = (१) तलवार चलाने की एक विधि या पद्धति। (२) तलवार की धार।

शतचरणा—सज्ञा स्त्री० [स०] कनखजूरा। गोजर। शतपदी [को०]।

शतच्छद—सज्ञा पुं० [स०] १ कठफोडवा या काठ ठोका नामक पक्षी। २ सौ पत्तो या पखडियोवाला कमल। शतदल पद्म।

शतजटा—सज्ञा स्त्री० [स०] सतावर। शतमूली।

शतजित्—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु का एक नाम। २ भागवत के अनुसार विराज के एक पुत्र का नाम। ३ एक यज्ञ का नाम।

शतजिह्व—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

शततम—वि० [स०] [वि० स्त्री० शततमी] सौवाँ। सौ की सख्या पर पडनेवाला [को०]।

शततारका, शततारा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शतभिषा नाम का नक्षत्र जिसमे सौ तारे है। विशेष दे० 'शतभिषा'।

शतदतिका—सज्ञा स्त्री० [स० शतदन्तिका] नखी नामक गधद्रव्य। हाथीशुडी। नागदती।

शतदल—सज्ञा पु० [स०] पद्म। शतपत्र।

शतदला—सज्ञा स्त्री० [स०] सेवती। शतपत्री।

शतद्रु—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पजाब की सतलज नाम की नदी।

विशेष—यह नदी हिमालय पर्वत के दक्षिण पश्चिमी भाग मे बहती हुई व्यास या विपासा से मिलकर मुलतान के दक्षिण ओर सिंधु मे मिलती है।

२. गगा नदी का एक नाम (को०)।

शतधन्वा—सज्ञा पु० [स० शतधन्वन्] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ एक योद्धा जिसे कृष्ण ने सत्राजित के मारने के अपराध मे मारा था।

शतधा[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] दूब। दूर्वा।

शतधा[२]—क्रि० वि० [स०] सौ टुकडो मे। सौ पर्तों मे। सौ प्रकार से। सैकडो बार। उ०—मूर्त प्रेरणा सी लहराती नभ मे शतधा विद्युत्।—प्रतिमा, पृ० १३६।

शतधामा—सज्ञा पु० [स० शतधामन्] विष्णु का एक नाम।

शतधार[1]—सज्ञा पु० [सं०] वज्र ।

शतधार[2]—वि० सैकडो धाराओ मे प्रवहमान । २ जिसमे सौ कोण वा धाराएँ हो [को०] ।

शतधार वन—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

शतधृति—सज्ञा पु० [स०] १ इद्र । २. ब्रह्मा । ३. स्वर्ग ।

शतधौत—वि० [स०] सैकडो बार धोया हुआ । पूर्णत स्वच्छ [को०] ।

शतनेत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] शतावर ।

शतपति—सज्ञा पुं० [स०] सौ मनुष्यो का मालिक या सरदार ।

शतपत्र[1]—वि० [सं०] १ सौ दलो या पत्तोवाला । २ सौ पखोवाला ।

शतपत्र[2]—सज्ञा पु० १ कमल । २ सेवती । शतपत्री । ३ मोर नामक पक्षी । ४ कठफोडवा नामक पक्षी । ५ सारस पक्षी । ६ मैना । शारिका । ७ बृहस्पति । ८ तोता या तोते की जाति का एक पक्षी (को०) ।

शतपत्रक—सज्ञा पु० [स०] १. कठफोडवा नाम का पक्षी । २ एक प्रकार का विषैला कीड़ा । ३ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम ।

शतपत्रनिवास—सज्ञा पु० [सं०] ब्रह्मा ।

शतपत्रभेदन्याय—पज्ञा पु० [स०] दे० 'न्याय'—४ (६७) ।

शतपत्रयोनि—सज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मा ।

शतपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूब । दूर्वा । २. नारी । स्त्री (को०) ।

शतपत्रिक, शतपत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का गुलाब । श्वेत गुलाब ।

शतपत्री केसर—सज्ञा पुं० [स०] गुलाब का जीरा । गुलाबकेसर ।

शतपथ—वि० [स०] १. असख्य मार्गोंवाला । २ बहुत सी शाखाओ-वाला ।

शतपथ ब्राह्मण—सज्ञा पुं० [स०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण ।

विशेष—इसके कर्ता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं । इसकी माध्यदिन और काण्व शाखाएँ मिलती हैं । इनमे से पहली की विशेष प्रतिष्ठा है । एक प्रणाली के अनुसार इसमे ६८ प्रपाठक हैं, और दूसरी के अनुसार यह १४ काडो और १०० अध्यायो मे विभक्त है । चारो ब्राह्मणो मे से यह अधिक क्रमपूर्ण और रोचक है । इसमे अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यंत कर्मकाड का बडा ही विशद और सुदर वर्णन है ।

शतपथिक—वि० [स०] १ बहुत से मतो का अनुयायी । २ शतपथ ब्राह्मण का जानने या पढनेवाला ।

शतपद्—वि० [स०] सैकडो पैरोवाला [को०] ।

शतपद—सज्ञा पु० [स०] १ कनखजूरा । गोजर । २ चूँटी ।

शतपद चक्र—सज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष मे सौ कोष्ठोवाला एक प्रकार का चक्र जिसकी सहायता से नक्षत्रो का ज्ञान सुगमतापूर्वक हो जाता है ।

शतपदी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. कनखजूरा । गोजर । २ सतावर । शतमूली । ३. मरसे की जाति का एक पौधा जिसके ऊपर कँलगी के आकार के लाल फूल लगते हैं । जटाधर । ४. नीली कोयल नाम की लता ।

शतपद्म—सज्ञा पु० [स०] १ सफेद कमल । श्वेतकमल । २ सौ पखुडियो वाला कमल [को०] ।

शतपरिवार—सज्ञा पु० [स०] समाधि का एक भेद ।

शतपर्वा[1]—सज्ञा पुं० [स० शतपर्वन्] १ बाँस । वश । २ पौंडा । गन्ना । केतारा ।

शतपर्वा[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूर्वा घास । दूब । २ सच । ३ कुटकी । ४ मुगधिद्रव्य । ५ भार्गव की पत्नी का नाम । ६ कलवा । करमू का साग । ७ क्वार या आश्विन की पूर्णिमा । कोजागर पूर्णिमा (को०) ।

शतपर्विका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दूब । २ दर्भ । ३ यव । जौ ।

शतपर्वेश—सज्ञा पुं० [सं०] भार्गव या शुक्र ग्रह [को०] ।

शतपाद्—वि० [स०] सैकडो पैरवाला । जिसे सैकडा पैर हो [को०] ।

शदपाद—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शतपद' ।

शतपादिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि । २ कनखजूरा । गोजर ।

शतपादी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शतपादिका' [को०] ।

शतपाल—सज्ञा पु० [स०] सौ गाँवो का अध्यक्ष वा अधिकारी [को०] ।

शतपुत्रिका, शतपुत्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सतपुतिया । तरोई । २ सतावर । शतावरी ।

शतपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १. साठी धान्य । २ किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता सस्कृत कवि 'भारवि' का एक नाम । इनका शतलु पक और शतलुप नाम भी प्राप्त होता है (को०) ।

शतपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सोआ नाम का साग । २ सौफ । ३ गवेधुक ।

शतपुष्पादल—सज्ञा पुं० [स०] १ सौफ का साग । शताह्वा ।

शतपुष्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शतपुष्पा' ।

शतपोद, शतपोदक—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का वातजन्य भगदर ।

विशेष—इसमे गुदा के समीप फोडा उत्पन्न होता है जिसके पकने पर बहुत से छेद हो जाते है और उनमे से मल, मूत्र, वीर्य निकलता है ।

२. एक प्रकार का रोग जिसमे वात और रक्त के कुपित होने से लिंग पर अनेक छेद हो जाते हैं ।

शतपोन—सज्ञा पु० [स०] चलनी । छनना [को०] ।

शतपोरक, शतपौर—सज्ञा पु० [स०] पौंडा । गन्ना ।

शतप्रसूना—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शतपुष्पा' ।

शतप्रास—सज्ञा पु० [स०] कनेर का वृक्ष । करवीर वृक्ष ।

शतफल—सज्ञा पुं० [स०] बाँस ।

शतफली—सज्ञा पुं० [सं० शतफलिन्] बाँस । शतफन [को०] ।

शतबला—सज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी का नाम ।

शतबलाक—संज्ञा पु० [सं०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

शतबलि—संज्ञा पुं० [सं०] १. मछली। २. रामायण के अनुसार एक बंदर का नाम।

शतबाहु—संज्ञा पु० [सं०] १ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा। २ भागवत के अनुसार एक असुर का नाम। ३ बौद्धों के अनुसार मार के पुत्र का नाम।

शतभिष—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शतभिषा'।

शतभिषा संज्ञा स्त्री० [सं०] अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र।

विशेष—यह सौ तारों का समूह है और इसकी आकृति मंडलाकार है। इसके अधिष्ठाता देवता वरुण कहे गए हैं, और यह ऊर्ध्वमुख माना गया है। कहते हैं, जो बालक इस नक्षत्र में जन्म लेता है, वह साहसी, निष्ठुर, चतुर और अपने वैरी का नाश करनेवाला होता है।

शतभीरु—संज्ञा पु० [सं०] मल्लिका। चमेली।

शतमख—संज्ञा पु० [सं०] १ इंद्र। शतक्रतु। २ उल्लू। कौशिक।

शतमन्यु'—वि० [सं०] १. क्रोधी। गुस्सावर। २ उत्साही।

शतमन्यु'—संज्ञा पुं० १. इंद्र। २ उल्लू।

शतमयूख—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा।

शतमल्ल—संज्ञा पु० [सं०] सखिया नामक विष।

शतमान—संज्ञा पुं० [सं०] १. सुवर्ण की कोई वस्तु जो तौल में सौ मान की हो। २ सोना या चाँदी तौलने के लिये सौ मान की तौल या बाट। ३. चाँदी का एक पल। ४ आढक नाम की प्राचीन काल की तौल जो प्रायः पौने चार सेर की होती थी। ५ रूपामाखी या तारमाक्षिक नाम की उपधातु।

शतमार्ज—संज्ञा पु० [सं०] वह जो अस्त्र आदि बनाता या उन्हें ठीक करता हो।

शतमुख'—वि० [सं०] जिसमें सैकड़ों मार्ग हों। सैकड़ों मुख या निकास रखनेवाला [को०]।

शतमुख'—क्रि० वि० [सं०] सौ खंडों या धाराओं में। अनेक ओर से। चारों ओर से। उ०—ताम्रपर्णी पीपल से, शतमुख झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर —ग्राम्या, पृ० ६३।

शतमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कूर्चिका। मार्जनी। झाड़ू [को०]।

शतमूर्धा—संज्ञा पु० [सं० शतमूर्धन्] बिमौट। बाँबी [को०]।

शतमूला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बड़ी सतावर। २. बच। ३. नीली दूर्वा। नीली दूब।

शतमूलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आखुपर्णी नाम की लता। २. बड़ी दंती। बँगरेंडा।

शतमूली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शतावरी नाम की ओषधि। २. तालमूली। मूसला। ३ बच।

शतयज्वा—संज्ञा पु० [सं० शतयज्वन्] शतक्रतु। इंद्र [को०]।

शतयष्टिक—संज्ञा पुं० [सं०] वह हार जिसमें सौ लड़ हों।

शतयातु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम।

शतरंज—संज्ञा पु० [फा०, मि० सं० चतुरङ्ग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।

विशेष—यह खेल दो आदमी खेलते हैं जिनमें से प्रत्येक के पास १६-१६ मुहरे होते हैं। इन सोलह मुहरों में एक बादशाह, एक वजीर, दो ऊँट, दो घोड़े, दो हाथी या किश्तियाँ तथा आठ प्यादे होते हैं। इनमें से प्रत्येक मुहरे की कुछ विशिष्ट चाल होती है, अर्थात् उसके चलने के कुछ विशिष्ट नियम होते हैं। उन्हीं नियमों के अनुसार विपक्ष के मुहरे मारे जाते हैं। जब बादशाह किसी ऐसे घर में पहुँच जाता है जहाँ से उसके चलने की जगह नहीं रहती, तब बाजी मात समझी जाती है। इसको बिसात में आठ आठ खाने की आठ पंक्तियाँ होती हैं। विशेष दे० 'चतुरंग' शब्द।

शतरंजबाज—संज्ञा पुं० [फा० शतरंज+बाज] शतरंज का खिलाड़ी। शातिर।

शतरंजबाजी—संज्ञा स्त्री० [फा० शतरंज+बाजी] १ शतरंज खेलने का व्यसन। २. शतरंज खेलने का काम या भाव।

शतरंजी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह दरी जो शतरंज की बिसात की तरह कई प्रकार के रंग बिरंगे सूतों से बनी हो। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. वह रोटी जो कई प्रकार के अनाजों को मिलाकर बनाई गई हो। मिस्सी रोटी। ४ वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

शतरथ—संज्ञा पु० [सं०] एक राजा का नाम जिसका उल्लेख महाभारत में है।

शतरात्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ जो सौ रातों में समाप्त होता था।

शतरुद्र—संज्ञा पुं० [सं०] १. रुद्र का एक रूप जिसके सौ मुँह माने जाते हैं। २ शैव दर्शन के अनुसार एक शक्ति जो आत्मा की उत्पादक कही गई है।

शतरुद्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हिमालय की एक नदी का नाम।

शतरुद्रिय, शतरुद्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. यज्ञ की हवि। २. यजुर्वेद का एक अंश जिसमें रुद्र के स्तोत्र हैं। ३. महाभारत में वर्णित शिव की एक स्तुति [को०]।

शतरूप—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शतरूपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की मानसी कन्या तथा पत्नी का नाम।

विशेष—इसी के गर्भ से स्वायंभुव मनु का उत्पन्न हुई थीं। पर विष्णुपुराण में लिखा है कि शतरूप स्वायंभुव मनु की स्त्री थी, न कि माता।

शतर्चिन्—संज्ञा पु० [सं० शतर्चिन्] ऋग्वेद के प्रथम मंडल के मंत्रद्रष्टा ऋषियों की उपाधि।

शतलुपक—संज्ञा पुं० [सं० शतलुम्पक] भारवि का एक नाम।

शतलुप—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शतलुपक'।

शतलोचन[1]—वि० [स०] सौ नेत्रोंवाला।

शतलोचन[2]—सज्ञा पुं० १ स्कद के एक गण या अनुचर का नाम। २ पुराणानुसार एक असुर का नाम। ३ महाभारत के अनुसार इद्र का एक नाम (को०)।

शतवनि—सज्ञा पुं० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शतवर्ष—सज्ञा पुं० [स०] १ सौ वर्ष। एक शताब्दी। २ वह जो सौ वर्ष पुराना हो। ३ वह जो सौ वर्ष तक टिक सके। सौ वर्ष तक रहनेवाला (को०)।

शतवल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नीली दूब। २ काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

शतवादन—सज्ञा पुं० [स०] बहुत से बाजो का एक साथ बजना।

शतवार—सज्ञा पुं० [स०] एक कवच का नाम जो अथर्ववेद मे है।

शतवार्षिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शतवार्षिकी] १ प्रति सौ वर्ष पर होनेवाला। २ सौ वर्ष तक रहने या होनेवाला।

शतवार्षिकी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. पानी न बरसना। अनावृष्टि। २ वह उत्सव जो सौ वर्ष बीतने पर मनाया जाय (को०)।

शतवाही—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो मैके से बहुत सा धन साथ लेकर ससुराल आई हो।

शतविध—वि० [स०] सौ या अनत प्रकार का। उ०—शकर, जय कृष्ण, राम, शतविध नामानुबध, वाचक हे निराकार।—आराधना, पृ० ६७।

शतवीर—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु का एक नाम।

शतवीर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सफेद दूब। सतावर। शतमूली। ३ मुनक्का। कपिलद्राक्षा। ४ सफेद मूसली। ५ किसमिश।

शतवृषभ—सज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष मे एक मुहूर्त का नाम।

शतवेधिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] चूका या चुक्रिका नामक साग।

शतवेधी—सज्ञा पुं० [स० शतवेधिन्] १. अमलबेंत। २ चूका या चुक्रिका नामक साग।

शतश.—क्रि० वि० [स० शतशस्] १ सैकडो। २ सौ बार। ३. वैविध्यपूर्ण। अनेकानेक। उ०—अधिकत बाधता वह ध्यान था। व्रजविभूषण ह शतश बने।—प्रिय प्र०, पृ० १६३।

शतशत—वि० [स० शत का द्वित्व प्रयोग] सैकडो। अनत। उ०—जग के सर से सरस्वती शतशत रूपो को निकला क्षिप्र, मद, गति रको की, भूपो की।—अपरा, पृ० १६४।

शतशलाका—सज्ञा स्त्री० [स०] छत्र।

शतशाख—वि० [स०] १ सैकडा। २ शताधिक। जिसमे सैकडो शाखाएँ हो। ३. अनेक प्रकार का। वैविध्यपूर्ण (को०)।

शतशीर्ष—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु का एक नाम। २ रामायण के अनुसार एक प्रकार का अभिमत्रित अस्त्र।

शतशीर्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] वासुकी देवी का एक नाम।

शतशृग—सज्ञा पुं० [स० शतशृङ्ग] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम। विशेष—यह पर्वत महाभद्र के उत्तर मे अवस्थित बतलाया गया है। अनुमान है कि यह वर्तमान मैसूर राज्य के एक पर्वत का प्राचीन नाम है।

शतसख्य—सज्ञा पुं० [स० शतसख्य] विष्णुपुराण के अनुसार दसवें मन्वतर के एक देवता का नाम।

शतसहस्र—सज्ञा पुं० [स०] १ सौ हजार की सख्या। एक लाख की सख्या। २ कई सौ का सख्या अर्थात् एक बडी सख्या (को०)।

शतसहस्रक—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शतसाहस्र—वि० [स०] [वि० स्त्री० शतसाहस्री] १ सौ हजार से युक्त वा सौ हजार सबधी। २ सौ हजार अर्थात् एक लाख मूल्य द्वारा क्रीत वा प्राप्त (को०)।

शतसुख—सज्ञा पुं० [स०] अतहीन आनद। अनत सुख (को०)।

शतसूता—सज्ञा स्त्री० [स०] सतावर। शतमूली।

शतह्रद—सज्ञा पुं० [स०] हरिवश के अनुसार एक असुर का नाम।

शतह्रदा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विद्युत्। बिजली। २ वज्र। ३. दक्ष की एक कन्या का नाम जो वसुपुत्र की स्त्री था। ४ विराध राक्षस की माता का नाम।

शतागु[1]—सज्ञा पुं० [स० शताङ्गु] १ रथ। युद्ध का रथ। २ तिनिश। तिरिच वृक्ष। ३. हरिवश के अनुसार एक दानव का नाम (को०)।

शतागु[2]—वि० सौ अगो या अवयवोवाला।

शतागुल—सज्ञा पुं० [स० शताङ्गुल] १. ताल या ताड का वृक्ष। २ वह जो माप मे सौ अगुल हो।

शताश—सज्ञा पुं० [स०] सौ भागो मे से एक भाग। १००वाँ हिस्सा।

शता—सज्ञा स्त्री० [स०] सतावर।

शताकरा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक किन्नरी का नाम।

शताकारा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक गधर्व की स्त्री का नाम।

शताक्ष—सज्ञा पुं० [स०] हरिवश के अनुसार एक दानव का नाम।

शताक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रात। रात। २ शतपुष्पा नामक वनस्पति। सौफ। ३. पार्वती। ४ दुर्गा।

शतानद—सज्ञा पुं० [स० शतानन्द] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ विष्णु का रथ। ४ कृष्ण। ५. गौतम मुनि। ६ राजा जनक के एक पुरोहित का नाम। उ०—शतानद तब वाद प्रभु बैठ गुरु पहँ जाय।—तुलसी (शब्द०)।

शतानदा—सज्ञा स्त्री० [स० शतानन्दा] १. कार्तिकेय की एक मातृका का नाम। २. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शतानक—सज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हो। मसान। श्मशान। मरघट।

शतानन—सज्ञा पुं० [स०] बेल। श्रीफल।

शतानना—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम।

शतानीक—सज्ञा पुं० [स०] १ वृद्ध पुरुष। बुड्ढा आदमी। २. एक मुनि का नाम जो व्यास के शिष्य थे। ३. श्वसुर। ससुर। ४.

पुराणानुसार चौथे युग मे चद्रवश का द्वितीय राजा। इसका पिता जनमेजय और पुत्र सहस्रानीक था। ५ भागवत के अनुसार सुदास राजा का पुत्र। ६. महाभारत के अनुसार नकुल के एक पुत्र का नाम जो द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। एक असुर का नाम। ८ सौ सिपाहियो का नायक।

शताब्द¹—वि० [सं०] सौ वर्षवाला।

शताब्द²—सज्ञा पुं० सौ वर्ष। शताब्दी। सदी।

शताब्दी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सौ वर्षो का समय। २ किसी सवत् मे सैकडे के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय। जैसे,—ईसवी पाँचवी शताब्दी अर्थात् ई० सन् ४०१ से ५०० तक का समय।

शतामघ—सज्ञा पु० [स०] इंद्र का एक नाम।

शतायु—सज्ञा पुं० [स० शतायुस्] १ वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो। सौ वर्षो तक जीवित रहनेवाला। २ महाभारत के अनुसार पुरुरवा के एक पुत्र का नाम। ३ विष्णुपुराण के अनुसार उशना के एक पुत्र का नाम।

शतायुध—सज्ञा पु० [स०] वह जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रोवाला।

शतायुधा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक किन्नरी का नाम।

शतार—सज्ञा पुं० [स०] १ वज्र। २ सुदर्शन चक्र।

शतारु—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का कोढ।

विशेष—इस रोग मे खाल पर लाल, काली और दाहयुक्त फुसियाँ हो जाती हैं।

शतारुषी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शतारु'।

शतावधान—सज्ञा पु० [स०] १ वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हे सिलसिलेवार याद रख सकता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो। श्रुतिधर।

विशेष—कुछ मेधावी लोग ऐसे होते है जो एक साथ बहुत से काम करने का अभ्यास करते है। जैसे,—एक आदमी रह रहकर कुछ सख्या या अको का नाम लेता है। दूसरा आदमी रह रहकर घडियाल बजाता है। तीसरा आदमी किसी ऐसी भाषा के वाक्य के शब्द बोलता है जिससे शतावधान करनेवाला मनुष्य अपरिचित होता है। एक आदमी पूर्ति के लिये कोई समस्या देता है। एक ओर शतरज का खेल होता रहता है। शतावधान का यह कर्तव्य होता है कि वह सख्याओ और अपरिचित भाषा के वाक्य के शब्द याद रख, समस्या की पूर्ति करे और शतरज खेलता चले, और इसी प्रकार और जितने काम होते हो, उन सबमे सम्मिलित, और अत मे सबका ठीक ठीक उत्तर दे और सब काम ठीक ठीक पूरे उतारे।

२. शतावधान का काम।

शतावधानी¹—सज्ञा पु० [स० शतावधानिन्] दे० 'शतावधान'।

शतावधानी²—सज्ञा स्त्री० [स० शतावधान] शतावधान का काम।

शतावर—सज्ञा पु० [स० शतावरी] शतावर नाम की ओषधि। सफेद मूसली।

शतावरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शतमूली। शतावर। सफेद मूसली। २. कचूर। शटी। ३. इद्र की भार्या, इद्राणी।

शतावर्त्त—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु। २. महादेव। ३. हरिवश के अनुसार एक पवित्र वन का नाम।

शतावर्त्ती—सज्ञा पु० [स० शतावर्त्तिन्] विष्णु।

शताशिन—सज्ञा पु० [स०] वज्र।

शताह्वया—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सौफ। २. सोआ। मधूरिका। ३. सतावर।

शताह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सौफ। २. सतावर। ३. अजमोदा। ४ एक प्राचीन नदी का नाम। ५. एक तीर्थ का नाम।

शतिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शतिकी] १. सौ सबधी। सौ का। २. सौ मे क्रीत (को०)। ३ जिसमे या जिसके पास सौ हो। सौ वाला (को०)। ४ सौ के बदले मे परिवर्तित हुआ या प्राप्त (को०)। ५ (राशि) जिसपर प्रतिशत ब्याज या कर निर्धारित हो (को०)। ६. सौ या सौ का प्राप्ति का द्योतक (को०)।

शती¹—सज्ञा स्त्री० [स० शतन्] सौ का समूह। सैकडा। जैसे,—दुर्गासप्तशती। २. दे० 'शताब्दी'।

शती²—वि० १. सौ गुना। शतगुणित। २. सख्यातीत। असख्य (को०)।

शती³—सज्ञा पु० वह जो सौ का स्वामी हो। सौ का स्वामी (को०)।

शतेर—सज्ञा पु० [स०] १. शत्रु। २ घाव। जख्म। ३. हिंसा।

शतोदर—सज्ञा पु० [स०] १. शिव का एक नाम। २. शिव के एक गण का नाम। ३. रामायण के अनुसार एक अस्त्र का नाम।

शतोदरी—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शतौदना—सज्ञा स्त्री० [स०] यज्ञ मे होनेवाला एक प्रकार का कृत्य।

शत्य—वि० [स०] दे० 'शतिक' (को०)।

शत्रि—सज्ञा पु० [स०] १ गज। हाथी। २. बल। ताकत। ३ एक राजर्षि का नाम।

शत्रुजय—सज्ञा पु० [स० शत्रुञ्जय] १. काठियावाड प्रात का एक प्रसिद्ध पर्वत जो विमलाद्रि भी कहलाता है। यह जैनियो का एक प्रसिद्ध तीर्थ है। गिरनार। २. रामायण के अनुसार एक नाग (हाथी) का नाम। ३. परमेश्वर।

शत्रुजय—वि० शत्रुओ को जीतनेवाला।

शत्रुतप—वि० [स० शत्रुन्तप] शत्रुओ को परास्त करने नष्ट करनेवाला (को०)।

शत्रु—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जिसके साथ भारी विरोध या वैमनस्य हो। रिपु। अरि। दुश्मन। २. एक असुर का नाम। ३ नागदवन या मरुआबा नाम का वनस्पति।

शत्रुकटक—सज्ञा पु० [स० शत्रुकण्टक] पुर्नाफल। सुपारी।

शत्रुकटका—सज्ञा स्त्री० [स० शत्रुकण्टका] सुपारी।

शत्रुक—सज्ञा पुं० [स०] अरि। रिपु। शत्रु (को०)।

शत्रुकर्षण—वि० [स०] दे० 'शत्रुदमन' (को०)।

शत्रुकुल—सज्ञा पु० [स०] वैरी का घर। शत्रु का निवासस्थान [को०]।

शत्रुगृह—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष मे लग्न से छठा स्थान [को०]।

शत्रुघात—वि० [स०] शत्रुघाती। शत्रुहता [को०]।

शत्रुघाती[1]—सज्ञा पुं० [स० शत्रुघातिन्] राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक पुत्र।

शत्रुघाती[2]—वि० शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्रुघ्न[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ राम के एक भाई जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। इनका भरत के साथ वैसा ही प्रेम था जैसा लक्ष्मण का राम के साथ। २ शकटाक्ष का एक पुत्र। ३ देवश्रवा के एक पुत्र का नाम।

शत्रुघ्न[2]—वि० शत्रु को मारनेवाला। अरि को नष्ट करनेवाला।

शत्रुघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] हथियार।

शत्रुजित्[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। २ क्रतुध्वज या कुवलयाश्व के पिता का नाम।

शत्रुजित्[2]—वि० शत्रु को जीतनेवाला।

शत्रुतपन—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। २ एक दैत्य का नाम। कहते है, यह राग फैलाता है।

शत्रुता—सज्ञा स्त्री० [स०] शत्रु का भाव या धर्म। दुश्मनी। वैर भाव।

क्रि० प्र०—करना।—दिखलाना।—रखना।—होना।

शत्रुताई—सज्ञा स्त्री० [स० शत्रुता+हिं० ई (प्रत्य०) या सं० शत्रु+ताति (प्रत्य०) ?] दे० 'शत्रुता'।

शत्रुतापन—वि० [स०] शत्रुओ को जलानेवाला। शत्रुहता।

शत्रुत्व—सज्ञा पु० [स०] शत्रु का भाव या धर्म। शत्रुता। दुश्मनी।

शत्रुदमन[1]—वि० [स०] दुश्मनो को वश मे करनेवाला।

शत्रुदमन[2]—सज्ञा पु० दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम।

शत्रुद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] अमलवेत।

शत्रुनिबर्हण—वि० [स०] शत्रुओ का नाश करनेवाला [को०]।

शत्रुपक्ष—सज्ञा पुं० [स०] १ शत्रु का दल या दिशा। २ दुश्मन। वैरी। विरोधी [को०]।

शत्रुभग—सज्ञा पु० [स० शत्रुभङ्ग] मूँज नामक तृण।

शत्रुभूमिज—सज्ञा पु० [स०] आँखो मे लगाने का सुरमा।

शत्रुमर्दन[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शत्रुघ्न का एक नाम। २ कुवलयाश्व के पुत्र का नाम।

शत्रुमर्दन[2]—वि० शत्रुओ का मर्दन या नाश करनेवाला।

शत्रुलाव—वि० [स०] शत्रुओ को मारनेवाला [को०]।

शत्रुविग्रह—सज्ञा पु० [स०] शत्रु की चढाई या आक्रमण [को०]।

शत्रुविनाशन—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम।

शत्रुशाल—वि० [स० शत्रु+शल्य] शत्रु के हृदय मे शूल उत्पन्न करनेवाला। उ०—नृप शत्रुशाल नदन नवल भावसिंह भूपाल मान।—मतिराम (शब्द०)।

शत्रुसह, शत्रुसाह—वि० [स०] शत्रु से लडने या भिडनेवाला। शत्रु का सामना करनेवाला [को०]।

शत्रुसूदन—सज्ञा पु० [स०] शत्रुघ्न का एक नाम।

शत्रुसेवी—वि० [स० शत्रुसेवन] शत्रु राजा की सेवा करनेवाला [को०]।

शत्रुहता—वि० [स० शत्रुहन्तृ] शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्रुहत्या—सज्ञा स्त्री० [स०] शत्रु का वध या हनन। दुश्मन को मार डालना [को०]।

शत्रुहा[1]—सज्ञा पु० [स० शत्रुहन्] दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न का एक नाम।

शत्रुहा[2]—वि० शत्रु का नाश करनेवाला।

शत्वरी—सज्ञा स्त्री० [स०] रात्रि। रात।

शद—सज्ञा पु० [स०] १. फल मूलादि। २ कर। महसूल। लगान। ३ तरकारी।

शदक—सज्ञा पु० [स०] वह अनाज जिसकी भूसा न निकाली गई हो।

शदीद—वि० [अ०] बहुत ज्यादह। जोर का। भारी। सख्त। जैसे,—उसका चोट शदीद है।

शदेवी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सहदेवा'।

शब्द[1]—सज्ञा पु० [स० शब्द, प्रा० सद्द, तुल० अ० शद, शद्द] आवाज ध्वनि। शब्द। उ०—सन्मुख सारस शब्द। आह जीवनी फनमद्द।—प० रासो, पृ० ५८।

शब्द[2]—सज्ञा पु० [अ०] १ किसी अक्षर को दुहराकर या दो बार पढना। दृढ करना। मजबूत करना। २ स्वर का ऊँचा करना। आवाज पर जोर देना। ३ स्वर का आरोहावरोह या उतार चढाव [को०]।

यो०—शब्द व मद, शब्दोमद=(१) धूमधाम। (२) जोर शोर। तेजी।

शब्दाद—सज्ञा पु० [अ०] १ वह व्यक्ति जो बहुत अत्याचारी हो। २ एक प्राचीन शक्तिशाली सम्राट् जिसने ईश्वरत्व का दावा किया और खुद को इश्वर कहलवाता था। इसने एक कृत्रिम स्वर्ग भी बनावाया था परतु उसमे प्रवेश करते समय घोडे से गिरकर इसकी मृत्यु हो गई [को०]।

शब्दि[1]—सज्ञा पु० [स०] १ मेघ। बादल। २ हाथी। ३. अर्जुन का का एक नाम (को०)।

शब्दि—सज्ञा स्त्री० १ खड। टुकडा। २ बिजली। दामिनी। तडित। सौदामनी। ३. घनीभूत शर्करा। जमाई हुई चीनी। मिस्री। खडमोदक (को०)।

शब्दु[1]—वि० [स०] १ गिरानेवाला। नष्ट करनेवाला। पतन करनेवाला। २ जानेवाला। चलनेवाला। गतिशील (को०)।

शब्दु[2]—सज्ञा पुं० विष्णु।

शब्दवला—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ शाति। २ चुप्पी। खामोशी। मौनता।

शन[2]—सज्ञा पु० [स० शण] दे० 'सन' (पौधा)।

शनई—अव्य० [स० शनैः] दे० 'शनै'।

शनई शनई—क्रि० वि० [स० शनैः शनैः] शनैः शनैः। धीरे धीरे। उ०—शनई शनई ताहि चढावै। चक्कर चक्कर मे पहुँचावै। —अष्टाग योग, पृ० ७६।

शनक—सज्ञा पु० [स०] हरिवश के अनुसार शबर के एक पुत्र का नाम।

शनकावलि—सज्ञा स्त्री० [स०] गजपीपल।

शनपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] कटुकी नाम की ओषधि।

शनपुष्पी सज्ञा स्त्री० [स०] बन सनई।

शनवा—वि० [फा०] श्रोता। सुननेवाला (को०)।

शनवाई—सज्ञा स्त्री० [फा० शनवा + ई] सुनवाई (को०)।

शनहुली सज्ञा स्त्री० [स० शणपुष्पी] १. दे० 'शनपुष्पी' २ अरहर।

शनाख्त—सज्ञा स्त्री० [फा० शनाख्त] पहचान। परख। दे० 'शिनाख्त'। उ०—जो इनको आदमी की ही शनाख्त होती तो नुक्स क्या था।—श्रीनिवास ग्र०, पृ० ११८।

क्रि० प्र०—करना—पहचानना। परखना।

शनावर—वि० [फा० शनावर, शिनावर] तैराक। तैरनेवाला (को०)।

शनावर—सज्ञा स्त्री० [फा० शनावरी, शिनावरी] तैराकी। तैरने का काम।

शनास—वि० [फा० (प्रत्य०)] पहचाननेवाला। भले बुरे का विवेक करनेवाला। पारखी।

विशेष—यह समास वा शब्द के अत में आता है जैसे—मर्दुम-शनास, हकशनास। उ०—निहायत किसी ने कहा शाह पास, है यहाँ एक मेहरॉ इसम हकशनास।—दक्खिनी०, पृ० ३००।

शनासा—वि० [फा०] १ पहचाननेवाला। जानकार। २ परिचित। वाकिफ (को०)।

शनासाई—सज्ञा स्त्री० [फा०] जान पहचान। परिचय (को०)।

शनि—सज्ञा पुं० [स०] १ सौर जगत् के नौ गहो मे से सातवाँ ग्रह। शनैश्चर।

विशेष—सूर्य से इस ग्रह का अतर ८८३,०००,००० मील अथवा पृथ्वी के अंतर से ९½ गुना है। इसका व्यास ७५८०० मील का है। प्रति सेकेंड ६ मील की चाल से सूर्य की परिक्रमा मे इसको २९ वर्ष और १६७ दिन अर्थात् कुल १०७५९ दिन लगते हैं। इसका ताप १५° सें० है। वृहस्पति को छोडकर यह सबसे बडा ग्रह है पृथ्वी से इसका व्यास ९ गुना, विस्तार ६९७ गुना और मान ९३ गुना है। इसके साथ नौ उपग्रह या चद्रमा है। जिनमे एक उपग्रह 'टाइटेन' बुध ग्रह से भी बडा है। वृहस्पति से छोटा होन पर भी यह सब ग्रहो से अधिक चमकदार है, जिससे इसका आकार सबसे बडा प्रतीत होता है। यह ३७८ दिन में एक बार अपनी धुरी पर घूमता है। यह ग्रह विचित्र आकार का है। इसके बाहर चारो ओर कम से कम ३ एककेंद्रीय बहुत बडे वलय हैं, और उस बाह्य वलय से इसके पिंड की दूरी ५,९०० मील है। इसके बाह्य वलय की चौडाई ११,२०० मील है। उस वलय का व्यास १,७२,८०० मील और मोटाई सौ मील से कुछ कम है। इस ग्रह पर पृथ्वी जैसा जीवन सभव नही है।

फलित ज्योतिष के अनुसार यह गह काले रग का, शूद्र वर्ण और सूर्यमुख है तथा इसका वाहन गृध्र है। यह सौराष्ट्र देश का स्वामी, नपुसक (मदगामी) और तमोगुण से युक्त तथा कषाय रस का अधिपति है। यह मकर और कुभराशि तथा नीलकात मणि (नीलम) का भी अधिपति है। यह चतुर्भुज है और इसके हाथो मे बाण, शूल, धनुष और भल्ल है। इसके अधिपति देवता यम और प्रत्यधिदेवता प्रजापति है। इसका परिमाण चार अगुल है। पद्मपुराण के अनुसार सूर्य की स्त्री छाया के गर्भ से इसकी उत्पत्ति हुई थी। अपनी स्त्री के शाप से इसकी दृष्टि क्रूर हो गई और पार्वती के शाप के कारण यह खंज हो गया। इसे कश्यप मुनि की सतान भी मानते है। फलित के अनुसार शनि का फल इस प्रकार है यह पापग्रह और अशुभ फल का देनेवाला है, परतु राशि और स्थानविशेष मे शुभ फल भी प्रदान करता है। शनि और मगल दोनो ग्रह स्थानविशेष पर एक साथ होने से राजयोग कारक होते है। यह भी माना जाता है कि लोगो पर जो भारी विपत्तियाँ आती है, वे प्राय इसी की कुदृष्टि के कारण होती हैं। इसका फल साढे सात दिन, साढे सात मास या साढे सात वर्ष तक रहता है।

पर्या०—सौरि। शनिश्चर। नीलवासा। मद। छायात्मज। पातगि। ग्रहनायक। छायासुत। भास्करी। नीलाजन। आर। क्रोड। वक्र। कोल। समाशु। पगु। काल। सूयपुत्र। असित। २ शिव का एक नाम (को०)। ३. दुर्भाग्य। अभाग्य। बदकिस्मती। ४ दे० 'शनिवार'।

शनिचक्र—सज्ञा पु० [स०] फलित ज्योतिष मे मनुष्य के शरीर के आकार का एक प्रकार का चक्र।

विशेष—इसमे शनिभोग्य नक्षत्र से आरंभ करके चक्ररूपी मनुष्य के भिन्न भिन्न अगो मे २७ नक्षत्रो की स्थापना करके शुभाशुभ फल जाने जाते है।

शनिज—सज्ञा पु० [स०] काली मिर्च।

शनिप्रदोष—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का प्रदोष (पर्व) जो शनिवार के दिन किसी मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी पडने पर होता है। इस दिन व्रत रहते हैं और शिव का पूजन किया जाता है।

शनिप्रसू—सज्ञा स्त्री० [स०] शनि की माता छाया जो सूर्य की पत्नी कही गई है।

शनिप्रिय—सज्ञा पुं० [स०] नीलमणि। नीलकात मणि। नीलम।

शनिरुह—सज्ञा पु० [स०] १ शनिग्रह का वाहन। २ भैसा। महिष।

शनिरुहा—सज्ञा स्त्री० [स०] भैस। महिषी।

शनिर्भाव—सज्ञा पुं० [स०] १ मदता। शिथिलता। २ क्रमबद्धता। क्रमिकता (को०)।

शनिवार—सज्ञा पुं० [स०] वह वार जो रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद पडता है।

शनिश्चर—सज्ञा पु० [स० शनिश्चर] दे० 'शनि'।

शनै१—अव्य० [स०] १ धीरे। आहिस्ता। हौले। २. उत्तरोत्तर। ३. क्रमश। क्रमानुसार (को०)। ४. धीमे धीमे। मृदुता या मुला-

यमियत से (को०)। ५ शिथिलता से (को०)। ६ स्वतत्र या स्वच्छद रूप से (को०)।

यौ०—शनै शनै = धीरे धीरे। आहिस्ते आहिस्ते।

शनै२—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'शनिवार'।

शनै प्रमेह—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

विशेष—इस प्रमेह मे रोगी को धीरे धीरे, थमकर और बहुत पतली धार में थोडा थोडा पेशाब आता है।

शनैर्मेह—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शनै प्रमेह'।

शनैर्मेही—सज्ञा पु० [स० शनैर्मेहिन्] वह रोगी जिसे शनै प्रमेह का रोग हो।

शनैश्चर१—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शनि'।

शनैश्चर२—वि० धीरे धीरे गमन करनेवाला को०]।

शन्न—वि० [सं०] १ पतित। गिरा हुआ। २ परिक्षीण। क्षीण। ३ मुरझाया हुआ। कुम्हलाया हुआ [को०]।

शन्नाह—सज्ञा पुं० [फा०] एक डोरी मे बँधी हुई दो तुबियाँ अथवा मशक जिसके सहारे तैरना सीखते हैं [को०]।

शप्१—[सं०] पाणिनि द्वारा प्रयुक्त एक विकरण जो भ्वादि गण मे प्रयुक्त होता है। धातुओ के बाद और तिङन्त प्रत्ययो के पूर्व इसका प्रयोग होता है जिसका रूप 'अ' शेष रहता है। जैसे, √भू+शप्+ति=√भू+अ+ति=भवति।

शप्२—अव्य० [स०] स्वीकरणसूचक शब्द। स्वीकार [को०]।

शप१—सज्ञा पुं० [स०] १ शाप। निर्भर्त्सना। २ शपथ। कसम [को०]।

शप२—सज्ञा स्त्री० [स० अनुध्व०] १ बेंत, छडी, चाबुक आदि के मारने की आवाज। २ कोई गाढा और तरल पदार्थ तेजी से सुडकते हुए निगलने की ध्वनि। ३ कुत्ते, बिल्ली आदि के द्वारा किसी वस्तु के चाटने की आवाज।

शप३—क्रि० वि० जल्दी से। झटपट। तुरत।

यौ०—शपशप, शप से, शपाशप = शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

शपथ—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह कथन जिसके अनुसार कहनेवाला इस बात की प्रतिज्ञा करता है कि यदि मेरा कथन असत्य हो, मैंने अमुक काम किया हो, मैं अमुक काम करूँ या न करूँ इत्यादि, तो मुझपर अमुक देवता का शाप पडे अथवा मैं अमुक पाप का भागी होऊँ आदि। कसम। दिव्य। सौगध। उ०—दुर्बलता का ही चिह्नविशेष शपथ है।—साकेत, पृ० २२६।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लेना।

मुहा०—दे० 'कसम' शब्द के मुहा०।

२ दिव्य। विशेष दे० 'दिव्य'—२१। ३ अभिशाप। शाप (को०)। ४ प्रतिज्ञा या दृढ़तापूर्वक कोई काम करने या न करने आदि के सबध मे कथन। कौल। वचन।

यौ०—शपथपत्र = हलफनामा।

शपन—सज्ञा पुं० [स०] १ शपथ। कसम। २ गाली। कुवाच्य।

शपशप शपाशप—सज्ञा स्त्री० [अनुध्व०] दे० 'शप२' का यौगिक।

शपित—वि० [स०] दे० 'शप्त२'।

शप्त१—सज्ञा पुं० [सं०] १ उलूक अथवा उल्लू नामक तृण। २ वह व्यक्ति जिसे शाप दिया गया हो।

शप्त२—वि० १ शापग्रस्त। अभिशप्त। २ भर्त्सित। जिसकी भर्त्सना की गई हो [को०]।

शफ—सज्ञा पुं० [स०] १ वृक्ष की जड। २ पशुओं का खुर। ३. नखी नामक गधद्रव्य।

शफक—सज्ञा स्त्री० [अ० शफक़] प्रात काल या सायकाल आकाश मे दिखाई पडनेवाली ललाई, विशेषत सध्या के समय दिखाई पडनेवाली लालिमा जो बहुत ही मनोहर होती है। उ०—चढा शाम का बाम पर गर्द माह। शफक का नया रग लाई घटा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ४६०।

मुहा०—शफक फूलना = प्रात काल या सध्या के समय आकाश मे लालिमा फैलना।

शफकत—सज्ञा स्त्री० [अ० शफकत] १. कृपा। दया। मेहरबानी। २ प्यार। मुहब्बत। प्रेम। उ०—जो बात माने तो ऐन शफकत न माने तो ऐन हुस्ने गुरूर।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५७।

क्रि० प्र०—खिलाना।—रखना।

शफगोल—सज्ञा स्त्री० [हिं०] हिं० 'इसबगोल'।

शफतालू—सज्ञा पुं० [फा० शफ्तालू] एक प्रकार का बडा आडू जिसे सफालुक या सफालू भी कहते हैं। विशेष दे० 'सफालू'।

शफर—सज्ञा पुं० [सं०] पोठी या पोठिया नाम की मछली। उ०—भरत सिहरे शफरवारि समान।—साकेत, पृ० १७१।

शफराधिप—सज्ञा पुं० [स०] झिलमा मछली।

शफरी—सज्ञा सज्ञा [सं०] एक प्रकार की छोटी मछली। पोठी या पोठिया। उ०—शफरी, अरी, तडपती तू तडप रही क्यो निमग्न हो इस सर मे? जो रस निर सागर मे सो रस गोरस नही क्षय सागर मे।—साकेत पृ० २७८।

शफरुक—सज्ञा पुं० [स०] १ सदूक। बक्स। २ पात्र। बरतन।

शफह—सज्ञा पुं० [अ० शफह] ओष्ठ। ओठ। अधर [को०]।

शफा—सज्ञा स्त्री० [अ० शफा] शरीर का स्वस्थ होना। नीरोगता। आरोग्यता। तदुरुस्ती। उ०—जो पीएगा दो दिन की बीमारी मे शफा पाएगा।—पिंजरे०, पृ० ७६।

क्रि० प्र०—(किसी को) शफा देना = किसी का रोग दूर करना। अच्छा करना। आराम देना। नीरोग करना।

शफाखाना—सज्ञा पुं० [अ० शफा+फा० खाना] वह स्थान जहाँ रोगियो की चिकित्सा होती है। चिकित्सालय। अस्पताल।

शफाअत—सज्ञा स्त्री० [अ० शफाअत] सिफारिश [को०]।

शफीक—वि० [अ० शफीक] १ कृपालु। दयालु। मित्र। दोस्त [को०]।

शफोरु१—वि० [सं०] जिसकी जाँघ गाय के खुर के समान हो।

शफोरु२—सज्ञा स्त्री० १ गाय के खुर के समान जाघवाली स्त्री। २ वह स्त्री जिसकी जाँघ पर खुर का चिह्न हो (को०)।

शफ्फाफ—वि० [अ० शफ्फाफ] १. निर्मल। शुद्ध। २ उज्वल। चमकदार। ३ पारदर्शी [को०]।

शब—सज्ञा स्त्री० [फा०] रात। रात्रि। रजनी। निशा। उ०—मौका पाकर एक शब उसको सोते हुए गिरफ्तार कर लाना।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५२१।

शबकोर—वि० [फा०] जिसे रात मे दिखाई न दे। रतौंधी का रोगी [को०]।

शबकोरी—सज्ञा पु० [फा०] रतौंधी [को०]।

शबखून—सज्ञा पु० [फा० शबखून] सेना का रात के अँधेरे मे अचानक हमला। वह आक्रमण जो रात को असावधान शत्रु पर किया जाय [को०]।

शबख्वाँ—सज्ञा पु० [फा० शबख्वाँ] बुलबुल नाम का पक्षी [को०]।

शबगर्द'—वि० [फा०] रात को घूमने या पहरा देनेवाला [को०]।

शबगिर्द—सज्ञा पुं० [फा०] १ चद्रमा। २ पहरेदार। चौकीदार। ३ कोतवाल। ४ चोर [को०]।

शबगीर'—१. वि० [फा०] रात को जागनेवाला। उ०—सो आशक के नालए शबगीर मे देखो।—कबीर म०, पृ० ४६७।

शबगीर'—सज्ञा पु० १ पिछली रात की यात्रा। २. झोगुर।

शबचिराग—सज्ञा पु० [फा० शबचिराग] १ एक बहुमूल्य रत्न जो रात मे दीप सा चमकता है। २. रात मे चमकनेवाला या प्रकाशित होनेवाला, चाँद [को०]।

शबताब—सज्ञा पुं० [फा०] १. रात का प्रकाश। २ खद्योत। जुगनू। ३. दीपक। ४ चद्रमा। ५ वह जो रात मे चमकता हो। ६. काली बिल्ली।

शबनम—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ओस। तुषार। २. एक प्रकार का सफेद रग का बहुत ही बारीक कपडा।

मुहा०—शबनम का रोना=ओस गिरना।

शबनमी'—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ चारपाई के ऊपर का वह ढाँचा जिसपर रात के समय ओस से बचने के लिये मसहरी टाँगी जाती है। मसहरी। छपरखट। २. दे० 'शबनम'।

शबनमी'—वि० [फा०] शबनम या ओस जैसी। उ०—पुलकित पलको की प्रिय पाँखुरियो पर, लो सहसा ढलक गई शबनमी नजर, अँगडाई ली बह चले पवन, गूँजे भँवरो के गान।—ठडा०, पृ० ३२।

शबबरात—सज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानो के आठवें मास की चौदहवी अथवा पद्रहवी रात।

विशेष—इस रात को मुसलमानो के विश्वास के अनुसार फरिश्ते परमात्मा की आज्ञा से भोजन बाँटते और आयु का हिसाब लगाते हैं। इस दिन मुसलमान अपने मृत पूर्वजो के उद्देश्य से प्रार्थना करते, हलुआ पूरी बाँटते, रोशनी करते और आतिशबाजी छोडते है।

शबबाश—वि० [फा०] १ रात मे टिकने या निवास करनेवाला। २. सहवास करनेवाला [को०]।

शबबेदारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० शबबेदार] रतजगा [को०]।

शबमेराज—सज्ञा स्त्री० [फा० शब+अ० मेराज] वह रात जब हजरत पैगबर साहब ने अर्श पर जाकर अल्लाह का साक्षात्कार किया था। यह समय अरबी रजब महीने की २६ और २७ तारीखो के बीच पडता है [को०]।

शबरग—सज्ञा पु० [फा०] वह जो रात के रंगवाला अर्थात् काला हो। सियाह। काला। २ काला घोडा [को०]।

शबर'—सज्ञा पुं० [स०] १ दक्षिण मे रहनेवाली एक जंगली या पहाडी जाति। २ जगली। वहशी। ३ शूद्र तथा भील से उत्पन्न सतान। ४. लोध नामक वृक्ष। ५ शिव। ६ हस्त। हाथ (को०)। ७ मीमासा के एक प्रसिद्ध आचार्य (को०)। ८ जल (को०)।

शबर'—वि० १ चितकबरा। २ रग बिरगा।

शबरकद—सज्ञा पुं० [स० शबरकन्द] एक प्रकार का मीठा कंद।

शबरक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शबरिका] जगली। वहशी।

शबरचदन—सज्ञा पु० [स० शबर+चदन] एक प्रकार का चदन जो लाल और सफेद दोनो मिले हुए रगो का होता है।

विशेष—वैद्यक के अनुसार यह शीतल तथा कडवा, और वात, पित्त कफ, विस्फोटक, खुजली, कुष्ठ, मोहादि को नष्ट करनेवाला माना जाता है।

शबरजबु—सज्ञा पु० [स० शबरजम्बु] एक प्राचीन नगर का नाम।

शबरबल—सज्ञा पु० [स०] पर्वतीय जातियो की सेना [को०]।

शबरलोध्र—सज्ञा पु० [स०] सफेद लोध।

शबरालय, शबरावास—सज्ञा पु० [स०] शबर लोगो का निवास। पक्करण [को०]।

शबरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शबर जाति की स्त्री। २ रामायण मे वर्णित शबर या किरात जाति की एक रामभक्त स्त्री [को०]।

शबल'—वि० [स०] १. चितकबरा। २ रग बिरंगा। चित्र विचित्र। २ अनेक हिस्सा मे विभक्त (को०)। ३ किसी की अनुकृति पर बना हुआ। अनुकृत (को०)। ३. घालमेल किया हुआ। मिश्रित (को०)। ४ विकृताकार। विकृत। विवर्ण (को०)। ५. आत। दु खित। पीडित (को०)।

शबल'—सज्ञा पु० १ एक नाग का नाम। २. बौद्धो का एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। ३ अगिया घास। गधतृण। ४ चित्रक। चितउर वृक्ष। ५ अनेक प्रकार का रग। विविध वर्ण (को०)। ६ जल (को०)।

शबलक—वि० [स०] १ चितकबरा। २ रग बिरगा। चित्र विचित्र।

शबलचेतन—सज्ञा पुं० [स०] वह जो किसी प्रकार की पीडा या कष्ट आदि के कारण बहुत घबराया हुआ हो। जो संतप्त या व्यथित होने के कारण अन्यमनस्क हो।

शवलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ शवल का भाव या धर्म। २. रंग-विरंगापन। ३ मिलावट।

शवलहृदय—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शवलचेतन' [को०]।

शवला संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चितकबरी गौ। २. कामधेनु।

शवलाक्ष संज्ञा पुं० [सं०] महाभारत के अनुसार एक ऋषि का नाम।

शवलाश्व—संज्ञा पुं० [सं०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. दक्ष के एक पुत्र का नाम।

शवलिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का पक्षी।

शवलित—वि० [सं०] चितकबरा। रंग बिरंगा।

शवलिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शवलिमन्] रंग बिरंगा या शवल होने की क्रिया या भाव [को०]।

शवली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. कामधेनु। २ चितकबरी गाय।

शवान—संज्ञा पुं० [फा०] वह जो ढोर चराता हो। चरवाहा [को०]।

शवाना—वि० [फा० शब नहू] १ रात का। रातवाला। २ रात्रि संबंधी। ३ बासी। पर्युषित [को०]।

यौ०—शवाना रोज = अहर्निश। रात दिन।

शबाब संज्ञा पुं० [अ०] १ यौवन काल। जवानी। २. किसी वस्तु की वह मध्य की अवस्था जिसमें वह बहुत अच्छा या सुंदर जान पड़े। ३ बहुत अधिक सौंदर्य।

क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—जाना।

मुहा०—शबाब फट पड़ना = जवानी का पूरी तरह खिल उठना या जोर पर होना।

शबाहत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ समानता। अनुरूपता। २ सूरत। शक्ल। आकृति।

शबीना—वि० [फा० शबीनहू] १ रात संबंधी। रात का। २ जो ताजा न हो। बासी। दे० 'शबाना' [को०]।

शबीह—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह चित्र जो किसी व्यक्ति की सूरत शक्ल के ठीक अनुरूप बना हो।

क्रि० प्र०—खींचना।—बनाना।

२ समानता। अनुरूपता।

शबेइंतजार—संज्ञा स्त्री० [फा० शबे इंतजार] प्रतीक्षा की रात [को०]।

शबेअरोस—संज्ञा स्त्री० [फा०] सुहागरात [को०]।

शबेकद्र—संज्ञा स्त्री० [फा०] रमजान की २७ वीं रात जो अति पवित्र मानी जाती है [को०]।

शबेजवानी—संज्ञा स्त्री० [फा०] युवावस्था का उन्माद [को०]।

शबेतार, शबेतारीक, शबेदैजूर—संज्ञा स्त्री० [फा०] तमिस्रा। कुहू-निशा। अँधेरी रात [को०]।

शबेबरात संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शब बरात'।

शबेमहताब, शबेमाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] ज्योत्स्ना या राकायुक्त रात्रि। चाँदनी रात [को०]।

शबेवस्ल—संज्ञा स्त्री० [फा०] नायिका और नायक के मिलने की रात।

शबेहिज्र—संज्ञा स्त्री० [फा०] वियोगरात्रि। जुदाई की रात [को०]।

शबेशबादत—संज्ञा स्त्री० [फा०] मुहर्रम की नवीं रात जिसके बीत जाने पर इमाम हुसैन मारे गए [को०]।

शबोरोज—अव्य० [फा० शब = (रात) + रोज (= दिन)] १ अहर्निश। रातदिन। २ हर समय। प्रहरम। ३ निरंतर। लगातार।

शब्द संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु में होनेवाला वह कंपन जो किसी पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न होकर वायु या श्रवणेंद्रिय तक पहुँचता और उसमें एक विशेष प्रकार का ज्ञान उत्पन्न करता है। ध्वनि। आवाज।

विशेष—प्रायः सभी पदार्थों में, ऊपर आघात आदि करने या उनमें जल्दी जल्दी गति उत्पन्न करने, शब्द उत्पन्न किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, ढोल, ढोल, घंटा, तुरही, सितार, करताल, घंटी, जूता, हथौड़ा आदि। जब किसी पदार्थ पर दूसरा कोई पदार्थ आकर गिरता है अथवा किसी पदार्थ में बार-बार गति उत्पन्न की जाती है, तब वायु में एक प्रकार की ऐंठन लगती है जो शब्द और कुछ दूर तक जाती है, और जहाँ तक यह श्रवणेंद्रिय होती है, वहाँ वह उसे शब्द का अस्तित्व की सूचना देती है। वायु ही शब्द का वहन करता है, पर इसके अतिरिक्त और अनेक प्रकार की गैसें जल तथा अनेक तरल और ठोस पदार्थ भी शब्द वहन करते हैं। पर इनमें मुख्य वाहक वायु ही है। तो भी वायु की अपेक्षा जल में शब्द बहुत अधिक दूर तक जाता है। जिस स्थान में वायु बिलकुल नहीं होती, वहाँ शब्द का वहन भी किसी प्रकार नहीं हो सकता। वायु की अपेक्षा जल में शब्द की गति और भी अधिक होती है। शब्द धीमा या हलका भी होता है, और भारी या तेज भी। यदि वायु में कंप बहुत अधिक होता है तो शब्द भी तेज या ऊँचा होता है। यदि वायु या शब्द के वाहक दूसरे साधन का घनत्व कम हो, तो भी शब्द हलका या धीमा हो जाता है। इसके अतिरिक्त दूरी भी शब्द को हलका या धीमा कर देती है। प्रकाश की भाँति शब्द का भी परावर्तन होता है। अर्थात् शब्द एक स्थान से उत्पन्न होकर किसी ओर जाता है, और मार्ग में अवरोध पाकर फिर पीछे की ओर लौट आता है। पहाड़ के नीचे या गुंबदों आदि में बोलने से उत्पन्न शब्द की जो गूँज या प्रतिध्वनि होती है, वह इसी परावर्तन के कारण होती है। यदि वातावरण का तापमान ६२° हो तो शब्द की गति प्रति सेकंड ११२५ फुट या प्रति मिनट प्रायः १२ मील होती है। यदि प्रायः एक ही तरह के बहुत से शब्द लगातार रह रहकर हों, तो उनसे 'शोर' पैदा होता है।

शब्द के दो मुख्य भेद होते हैं, वर्णात्मक और ध्वन्यात्मक। ध्वन्यात्मक शब्द वह है जो कंठ और तालु आदि की सहायता से उत्पन्न होता है। इसके भी दो भेद हैं—व्यक्त और अव्यक्त। जो शब्द सुनने में स्पष्ट हो और जिसका कोई अर्थ हो वह व्यक्त कहलाता है, (दे० 'शब्द'—२) और जो स्पष्ट सुनाई न दे और जिसका कोई अर्थ न हो, वह अव्यक्त कहलाता है। जैसे, हाँ,

ऊँ, खों। वर्णात्मक शब्द के अतिरिक्त और जितने प्रकार के शब्द होते हैं, वे ध्वन्यात्मक कहलाते हैं। जैसे, मृदंग या घंटे आदि से अथवा जोर से हवा चलने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। 'मीमांसाकार' ने शब्द को नित्य और सांख्यकार ने उसे आकाश का गुण माना है। न्याय आदि ने शब्द को आकाश का गुण माना है। भारतीय वैयाकरणों ने उसे द्रव्य माना है। व्याकरण दर्शन में शब्द को नित्य, कूटस्थ—यहाँ तक कि शब्दब्रह्म भी कहा है जो स्फोटात्मक है। विशेष दे० 'ध्वनि'।

पर्या०—निनाद। रव। राव। निर्घोष। नाद। घोष। निनद। ध्वनि। ध्वान। स्वन। स्वान। निर्हाद। आरव। आराव। निस्वन। निस्वान। सरव। सराव। विराव।

२ वह स्वतंत्र, व्यक्त और सार्थक ध्वनि जो एक या अधिक वर्णों के संयोग से, कंठ और तालु आदि के द्वारा, उत्पन्न हो और जिससे सुननेवाले को किसी पदार्थ, कार्य या भाव आदि का बोध हो। लफ्ज। जैसे, मैं, क्या, सोना, घोड़ा, मोटाई, काला आदि। ३ अमृतोपनिषद् के अनुसार 'ओऽम्' जो परमात्मा का मुख्य नाम है। ४ किसी साधु या महात्मा के बनाए हुए पद या गीत आदि। जैसे, गुरु नानक के शब्द, कबीर के शब्द। ५ नाम। संज्ञा (को०)। ६. व्याकरण (को०)। ७. ख्याति। मशहूरी (को०)। ८ केवल नाम। शुद्ध नाम। जैसे, शब्दपति में (को०)।

शब्द अतीत—संज्ञा पु० [सं० शब्दातीत] जिसका वर्णन शब्दों के द्वारा न हो सके। शब्दातीत। उ०—शब्द अतीत शब्द सो अपना बूझै बिरला कोई।—कबीर श०, भा० १, पृ० ५४।

शब्दकार—वि० [सं०] १ वह जो सार्थक शब्दों को किसी छंद के लय ताल पर क्रमबद्ध करता हो। गीतकार या कवि। उ०—ह्रस्व दीर्घ की घट बढ़ के कारण पूर्ववर्ती गर्वीले शब्दकारों पर जो लांछन लगता है, उससे भी बचने का प्रयत्न किया है।—गीतिका (भू०), पृ० ६। २. वह जो शब्द या ध्वनि उत्पन्न करे। शब्द करनेवाला।

शब्दकारी—वि० [सं० शब्दकारिन्] शब्द करनेवाला (को०)।

शब्दकोश, शब्दकोष—संज्ञा पु० [सं०] ऐसा ग्रंथ जिसमें शब्दों की वर्तनी, उनका व्युत्पत्ति, व्याकरणनिर्देश, अर्थ, परिभाषा, प्रयोग और पर्याय आदि का संनिवेश हो। अभिधान। लुगत। (अं०) डिक्शनरी।

शब्दगत—वि० [सं०] शब्द में निहित या स्थित (को०)।

शब्दग्रह[१]—संज्ञा पु० [सं०] १ कान, जिससे शब्द का ग्रहण होता है। २ एक प्रकार का काल्पनिक बाण।

शब्दग्रह[२]—वि० शब्द को ग्रहण करनेवाला।

शब्दग्राम—संज्ञा पु० [सं०] शब्दसमूह (को०)।

शब्दचातुर्य—संज्ञा पु० [सं०] शब्दों के प्रयोग करने की चतुरता। बोल चाल की प्रवीणता। वाग्मिता।

शब्दचालि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का नृत्य।

शब्दचित्र—संज्ञा पु० [सं०] १. अनुप्रास नामक अलंकार। २ एक शब्दालंकार जिसमें प्रयुक्त वर्णों का इस प्रकार संयोग रहते हैं कि किसी न किसी वस्तु का रूप बन जाता है। ३. काव्य के तीन भेदों में अंतिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक जिसे मम्मट ने अवर या अधम माना है। इस प्रकार के काव्य में सौंदर्य उन शब्दों या अक्षरों के बारंबार प्रयोग करने में होता है और वे श्रुतिमधुर होते हैं। ४ शब्दों के माध्यम से किसी स्थान, व्यक्ति, घटना आदि का ऐसा वर्णन प्रस्तुत करना जिससे उसका रूप-चित्र भासित हो उठे। (अं० स्केच)।

शब्दचोर—संज्ञा पु० [सं०] दूसरों की कविता में प्रयुक्त विशिष्टता-मूलक शब्दों या पदों को अपनी कविता में रख लेनेवाला कवि या रचनाकार। राजशेखर, क्षेमेंद्र आदि ने अपने ग्रंथ में इस प्रकार के कवियों की कई श्रेणियाँ निर्धारित की हैं (को०)।

शब्दता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शब्दत्व'।

शब्दत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द का भाव या धर्म। शब्दता।

शब्दन[१]—वि० [सं०] शब्द या ध्वनि करनेवाला। ध्वननशील।

शब्दन[२]—संज्ञा पु० शब्द या ध्वनि करना। २ ध्वनि। ३ शब्द। ४. नाम लेना। ५ पुकारना। बुलाना। आह्वान (को०)।

शब्दनृत्य—संज्ञा पु० [ ] एक प्रकार का नृत्य।

शब्दनेता—संज्ञा पु० [सं० शब्दनेतृ] पाणिनि का एक नाम (को०)।

शब्दपति—संज्ञा पुं० [सं०] नाम मात्र का नेता। वह नेता जिसके अनुयायी न हों। जिसमें शब्द के अलावा पति या राजा का कोई भाव न हो।

शब्दपाती—वि० [सं० शब्दपातिन्] किसी प्रकार के शब्द या ध्वनि को सुनकर उसी के आधार पर दिशा और दूरी का अंदाज करते हुए शब्द करनेवाले पर निशाना मारनेवाला। विशेष दे० 'शब्दवेधी' (को०)।

शब्दप्रमाण—संज्ञा पुं० [सं०] वह प्रमाण जो किसी के केवल शब्द या कथन के ही आधार पर हो। आप्त या विश्वासपात्र पुरुष की बात जो प्रमाणस्वरूप मानी जाती हो। विशेष दे० 'प्रमाण'। मौखिक प्रमाण।

शब्दप्राण—संज्ञा पुं० [सं०] शब्द के अर्थों का अनुसंधान। शब्दार्थ की जिज्ञासा।

शब्दविरोध—संज्ञा पुं० [सं०] वह विरोध जो वास्तविक या भाव में न हो बल्कि केवल शब्दों में जान पड़ता हो।

शब्दबोध—संज्ञा पु० [सं०] शाब्दिक साक्षात्कार द्वारा प्राप्त ज्ञान। वह ज्ञान जो शब्दों या वाक्यों से प्राप्त हो।

शब्दब्रह्म—संज्ञा पुं० [सं०] १. वेद जो अपौरुषेय और ईश्वर का कहा हुआ माना जाता है। २. ब्रह्मज्ञान जो शब्दरूप हो (को०)। ३. शब्द का एक गुण जिसकी संज्ञा स्फोट है (को०)।

शब्दभेद—संज्ञा पु० [सं०] व्याकरण के अनुसार शब्द का वह विवेचन जो उनके कार्य, स्थिति और संबंध आदि के आधार पर किया गया हो। इससे शब्द के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण, संबंधसूचक, अव्यय, संयोजक, विस्मयादिबोधक आदि रूपों का ज्ञान होता है।

शब्दभेदी[१]—वि० [सं० शब्दभेदिन्] दे० 'शब्दवेधी'।

शब्दभेदी[2]—सज्ञा पुं० [स०] १ अर्जुन का एक नाम (को०)। २ एक प्रकार का बाण (को०)। ३ गुदा। मलद्वार।

शब्दमहेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] शिव।

विशेष—कहते हैं, पाणिनि को व्याकरण का आदेश शिव ने ही किया था। आरभिक चौदह सूत्रो को महेश्वर सूत्र (इति माहेश्वराणि अर्थात् महेश्वरप्रणीत सूत्र) कहा गया है। इसी से शिव का यह नाम पडा।

शब्दमाधुर्य—सज्ञा पु० [स० शब्द+माधुर्य] शब्द की मधुरता। शब्दो की विशेष योजना से निष्पन्न सौंदर्य या माधुर्य। उ०—रूप-सौंदर्य से मध्यम कोटि की वस्तु नादसौंदर्य या शब्दमाधुर्य है।—रस०, पृ० ७२।

शब्दमाल—सज्ञा पु० [सं०] पोला बाँस।

शब्दयोनि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जड। मूल। २ धातु। ३ शब्द की उत्पत्ति। ४ वह शब्द जो अपने मूल अथवा प्रारभिक रूप मे हो।

शब्दरोचन—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की घास।

शब्दवारिधि—सज्ञा पु० [स०] शब्दो का सागर। शब्दकोश (को०)।

शब्दविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] व्याकरण। शब्दशास्त्र।

शब्दविधान—सज्ञा पुं० [स० शब्द+विधान] शब्दो की क्रमबद्ध योजना। पदयोजना। उ०—हृदय की इसी मुक्ति का साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती आई है उसे कविता कहते है।—रस०, पृ० ६।

शब्दवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साहित्य मे शब्द का कार्य या प्रयोग। २ शब्द की शक्ति। द्योतक शक्ति। अभिधा, लक्षणा, व्यजना आदि (को०)।

शब्दवेध—सज्ञा पु० [स० शब्द+वेधस] शब्द सुनकर ही निशाना लगाना। उ०—देखा चाहो शब्दवेध तुम, तो कहो।—साकेत, पृ० १३८।

शब्दवेधी[1]—सज्ञा पु० [स० शब्दवेधिन्] १ वह मनुष्य जो आँखो से बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु का बाण से मारता हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्राचीन काल में ऐसे धनुधर हुआ करते थे जो आँखो पर पट्टी बाँधकर किसी व्यक्ति का शब्द सुनकर या लक्ष्य पर की हुई टकार सुनकर ही यह समझ लेते थे कि वह व्यक्ति अथवा वस्तु अमुक ओर है, और तब ठीक उसी पर बाण चलाते थे।

२ अर्जुन। ३ दशरथ। ४ एक प्रकार का बाण (को०)। ५ धनुष्क। धनुर्धर व्यक्ति (को०)

शब्दवेधी[2]—वि० दे० 'शब्दपाती'।

शब्दशक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।

विशेष—जब शब्द किसी वाक्य या वाक्यांश का अग होता है, तब उसका अर्थ या तो साधारण और या वाक्य के तात्पर्य के अनुसार और अपने साधारण अर्थ से कुछ भिन्न होता। उसकी जिस शक्ति के अनुसार वह साधारण या उससे कुछ भिन्न अर्थ प्रकट होता है, वह शब्दशक्ति कहलाती है। यह शब्दशक्ति तीन प्रकार की मानी गई है—अभिधा, लक्षणा और व्यजना। विशेष दे० ये तीनो शब्द इन तीनो से प्रकट होनेवाले अर्थ क्रमश वाक्य, लक्ष्य और व्यग्य कहे गए है तथा इन्हे प्रकट करनेवाले शब्द वाचक, लक्षक और व्यजक कहलाते है।

शब्दशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे भाषा के भिन्न भिन्न अगो और स्वरूपो का विवेचन तथा निरूपण किया जाय। व्याकरण।

शब्दज्ञ—प्रत्य० [स०] अक्षर अक्षर। किसी के कहे या लिखे हुए प्रत्येक शब्द के अनुसार। किसी के शब्दो का ठीक ठीक अनुकरण करते हुए। जैसा किसी ने कहा या लिखा हो ठीक वैसा ही। अक्षरश।

शब्दश्लेष—सज्ञा पु० [स०] श्लेष अलकार का एक भेद। वह शब्द जो दो या अधिक अर्थो मे प्रयुक्त किया जाय।

विशेष—साहित्यशास्त्रियो ने श्लेषालकार के दो भेद कहे हैं। एक शब्दश्लेष और दूसरा अर्थश्लेष। शब्दश्लेष म श्लिष्ट शब्द को समानार्थक शब्द रखकर हटाया नही जा सकता। वह परिवृत्तिसह नही होता क्योकि इससे उसकी श्लिष्टता नष्ट हो जाती है। अर्थश्लेष शब्द की परिवृत्ति सह सकता है अर्थात् समानार्थ शब्द द्वारा हटाया भी जा सकता है।

शब्दसग्रह—सज्ञा पु० [सं० शब्दसङ्ग्रह] शब्दो का सचयन। शब्दकोश (को०)।

शब्दसभव—सज्ञा पुं० [सं० शब्दसम्भव] वायु जो शब्द की उत्पत्ति का कारण है, अथवा जिससे शब्द का अस्तित्व सभव होता है।

शब्दसाधन—सज्ञा पु० [स०] व्याकरण का वह अंग जिसमे शब्दो की व्युत्पत्ति, भेद और रूपातर आदि का विवेचन होता है। शब्दो के सज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण, सर्वनाम आदि जो भेद होते हैं, वे भी इसी के अतर्गत है।

शब्दसौंदर्य—सज्ञा पु० [सं० शब्दसौन्दर्य] शब्दो के उच्चारण की सुगमता। दे० 'शब्दसौष्ठव'।

शब्दसौकर्य—सज्ञा पुं० [स०] शब्दो के उच्चारण की सुगमता।

शब्दसौष्ठव—सज्ञा पुं० [स०] किसी लेख या शैली आदि म प्रयुक्त किए हुए शब्दो का कोमलता या सुदरता।

शब्दहीन[1]—सज्ञा पुं० [स०] शब्दो का वह रूप या प्रयोग जिसे आचार्यो ने अप्रयुक्त कहा हो।

शब्दहीन[2]—वि० [स०] शब्दरहित। निःशब्द। (को०)।

शब्दांतर—सज्ञा पु० [स० शब्दान्तर] शब्द का ही अतर या परिवर्तन। ऐसा उक्ति या रचना जो किसी उक्ति या रचना को समानार्थक शब्द सबधी परिवर्तन करके रखती हो।

शब्दांतरकरण—सज्ञा पु० [स० शब्दान्तर+करण] शाब्दिक परिवर्तन करना। उ०—डान्टे की 'डिवाइना कामेडिया' तो सेंट टामस को कथोलिक नीति पर कही कही तो केवल शब्दांतरकरण है।—पो० सा० सि०, पृ० ८।

शब्दाक्षर—सज्ञा पु० [स०] ध्वनिपूर्वक उच्चरित 'ओम्' शब्द।

शब्दाख्येय—वि० [स०] १ जोर से या चिल्लाकर कहा जानेवाला। २ शब्द द्वारा कहा जाने योग्य। जिसे शब्दो द्वारा व्यक्त किया जा सके। ३. (सदेश या समाचार आदि) जो मौखिक वा शाब्दिक हो (को०)।

शब्दाडवर—सज्ञा पु० [स० शब्दाडम्बर] बडे बडे शब्दो का ऐसा प्रयोग जिसमे भाव की बहुत ही न्यूनता हो। केवल शब्दो की सहायता से खडा किया जानेवाला आडबर। शब्दजाल।

शब्दाढ्य—सज्ञा पु० [स०] काँसा नाम की धातु।

शब्दातिग—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

शब्दातीत[1]—सज्ञा पु० [स०] वह जो शब्द से परे हो, अर्थात् ईश्वर।

शब्दातीत[2]—वि० शब्दो द्वारा जिसका वर्णन न हो सके। जो शब्दो द्वारा व्यक्त न हो सके। वर्णनातीत (को०)।

शब्दात्मक—वि० [स०] शब्द सबधी। शाब्दिक। उ०—केवल शब्दात्मक साम्य को लेकर यदि हम किसी पहाड को कहे कि वह बैल है क्योकि इसे भी 'शृग' है, तो वह काव्यकला नही होगी।—आचार्य०, पृ० १२४।

शब्दाधिष्ठान—सज्ञा पु० [स०] कर्ण। कान।

शब्दाध्याहार—सज्ञा पु० [स०] वाक्य को पूरा करने के लिये उसमे अपनी ओर से शब्द जोडना।

शब्दानुकरण—सज्ञा पु० [स०] शब्द या पदयोजना का अनुकरण करना (को०)।

शब्दानुकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शब्दानुकरण'।

शब्दानुशासन—सज्ञा पु० [स०] व्याकरण। जैसे, हिंदी शब्दानुशासन।

शब्दायमान—वि० [स०] शब्द करता हुआ। शब्दित। शब्द या ध्वनियुक्त (को०)।

शब्दार्थ—सज्ञा पु० [स०] शब्द का अर्थ या अभिप्राय। वाच्य। मानी (को०)।

शब्दालकार—सज्ञा पुं० [स० शब्दालङ्कार] साहित्य मे वह अलकार जिसमे केवल शब्दो या वर्णो के विन्यास से भाषा मे लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे,—अनुप्रास, यमक आदि।

शब्दाल—वि० [स०] ध्वनिकारक। शब्द करनेवाला (को०)।

शब्दावली—सज्ञा स्त्री० [स०] किसी कथन या रचना मे प्रयुक्त होनेवाला शब्दसमूह (को०)।

शब्दित[1]—वि० [स०] १ ध्वनियुक्त। शब्दायमान। ध्वनित। उ०—(क) सतत शब्दित गेह समूह मे, विजनता परिवर्धित थी हुई।—प्रिय०, पृ० २२। (ख) मुझे प्रेम का नीरव मानस सुदर शब्दित करने दो।—वीणा, पृ० २७। २. बजाया हुआ या बजता हुआ। ३. पुकारा हुआ। आहूत। ४. व्याख्या किया हुआ। व्याख्यात। ५. घोषित। प्रचारित (को०)।

शब्दित[2]—सज्ञा पु० कोलाहल। शोर। हल्ला (को०)।

शब्दी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० शब्द] १ सबद। आध्यात्मिक भजन या पद। २. उपदेश। शिक्षा। उ०—सतगुरु शब्दी मेल है सहै धमूका साध।—चरण० बानी, पृ० ३।

शब्देंद्रिय—सज्ञा स्त्री० [स० शब्देन्द्रिय] कर्ण। कान।

शब्दोद्भावक—वि० [स०] शब्दो की उद्भावना करनेवाला। शब्द का निर्माता। शब्दस्रष्टा। उ०—इस दिशा मे समालोचक ही न रहकर वे शब्दोद्भावक भी हुए।—आचार्य०, पृ० २०६।

शम—सज्ञा पु० [स०] १ शाति। उ०—सतिगुरु शरन महाँ शम पाई अँसो आकुल रिदै पियारा।—प्राण०, पृ० २३२। २. मोक्ष। ३ कर। हस्त। हाथ। ४ उपचार। रोगमुक्ति। सुस्थता। ५ अत:करण तथा अतर इद्रिय को वश मे करना। ६ बाह्य इद्रियो का निग्रह। ७ निवृत्ति। निःसगता। निरपेक्षता। ८ साहित्य मे शात रस का स्थायी भाव। ९ क्षमा। १० तिरस्कार। ११. मन स्थैर्य। मन की स्थिरता। मानसिक स्थिरता (को०)।

शमई[1]—वि० [अ० शमअ] १ शमा सबधी। शमा का। मोमबत्ती या दीपक सबधी। २. शमा के रग का (को०)।

शमई[2]—सज्ञा स्त्री० दीपाधार। शमादान। उ०—सप्तशती के पाठ के लिये १४ ब्राह्मण, दुर्गा के मादर मे चाँदी की शमईयो मे घी के दिए जलाए।—झाँसी०, पृ० ३२२।

शमक—वि० [स०] १ शात या शाति करानेवाला। २ सधि या समझौता करनेवाला (को०)।

शमठ—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार का तूत या शहतूत। २. गडार नामक शाक।

शमता—सज्ञा स्त्री० [स०] शम का भाव या धर्म। शमत्व।

शमत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शमता'।

शमथ—सज्ञा पु० [स०] १ शाति। मनशाति। २ वह जो मत्रणा वा सलाह देता हो। मत्री।

शमन—सज्ञा पु० [स०] १ यज्ञ के लिये होनेवाला पशुओ का बलिदान। २ यम। ३ एक प्रकार का मृग। ४. हनन। हिंसा। ५ शम। शाति। जैसे,—रोग का शमन। ७. अन्न। ८. मटर। ९. वह ओषधि जो वातादि दोषों का वमन, विरेचनादि द्वारा दूर करे। जैसे—गिलोय। १० तिरस्कार। ११. आघात। चोट। १२ वैद्यक मे एक प्रकार का धूम्रपान।

विशेष—इस धूम्रपान मे इलायची, तगर, कुडा, जटामासी, गधतृण, दालचीनी, तेजपत्ता, नागकेशर, नखी, सरल, बाला, शिलारस आदि कई ओषधियो का मिश्रण किया जाता है, इसका धूआँ नली या सटक आदि के द्वारा पीते हैं। इससे वात आदि दोषो का नाश होना माना जाता है।

१३. एक प्रकार का वस्ति कर्म जो मोथा और रसाजन आदि मिले हुए दूध से किया जाता है। १४. रात्रि। रात। १५. शात करना। बुझाना (को०)। १६. प्रसन्न करना (को०)। १७. अत।

ठहराव। समाप्ति। विनाश (को०)। १८. निगल जाना। चबाना (को०)।

शमनवस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वस्ति कर्म जिसमे फूल प्रियगु मुलेठी, नागरमोथा और रसौत को दूध मे पीसकर मलद्वार से पिचकारी देते हैं।

शमनस्वसा—संज्ञा स्त्री० [सं० शमनस्वस्] यम की भगिनी अर्थात् यमुना।

शमनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

शमनीय—वि० [सं०] शमन करने योग्य। दबाने या शांत करने योग्य।

शमनीषद्, शमनीसद—संज्ञा पुं० [सं०] निशाचर। राक्षस।

शमधर—वि० [सं०] शांतिपरायण। शांत (को०)।

शमप्रधान—वि० [सं०] जिसमे शम की प्रधानता हो। जो शम को ही मुख्य मानता हो। शांत। विषयराग से रहित (को०)।

शमर†—संज्ञा पुं० [अ० समर] फल। उ०—सरसब्ज हुआ फज्ले सनम से शमर आया।—कबीर म०, पृ० ३८६।

शमल१—संज्ञा पुं० [सं०] १ विष्ठा। मल। गुह। २ पाप। गुनाह। ३ अशुचिता। अपवित्रता (को०)। ४ अभाग्य। बदकिस्मती। दुर्भाग्य (को०)।

शमल२—वि० पापात्मा। पापी (को०)।

शमला—संज्ञा पुं० [अ०] १ एक छोटी शाल जिसे कधो पर डालते या सिर पर लपेटकर पगडी की तरह बाँधते हैं। उ०—मुर्शी जी की सज धज निराली। सिर पर एक हरा शमला था, देह पर एक अबा।—काया०, पृ० १३२। २ पुराने वकीलो के पहनने की पगडी जिसे वे गाऊन के ऊपर पहन लेते थे। ३ तुर्रा। पगडी का सिरा या छोर। ४ एक प्रकार की बनी हुई गोल पगडी जिसे सिर पर टोपी की तरह पहना जाता है।

शमशम—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

शमशाद—संज्ञा पुं० [फा०] सव या सरो का वृक्ष जो सीधा होता है और अपनी लबाई और सुदरता के लिये प्रसिद्ध है, इसकी उपमा माशूक के कद से दी जाती है। उ०—चमन पर देख कर उस दुख का पहाड, दिया है खोल बालों सब शमशाद।—दक्खिनी०, पृ० १६१।

शमशीर—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शमशेर'। (क) उधर शमशीर खीची हो इधर गर्दन झुकाई हो।—श्यामा०, पृ० ७३। (ख) जानता हूँ पखुरी, शमशार का भी, जानता हूँ प्यार, उसकी पीर का भी।—मिलन०, पृ० ४८।

शमशेर—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ वह हथियार जो शेर की पूँछ अथवा नख के समान हो अर्थात् तलवार, खड्ग आदि। २. तलवार।

मुहा०—शमशेर का खत=युद्धक्षेत्र।

यौ०—शमशेरजन=तलवार चलानेवाला। असिवाही। शमशेरजनी=(१) सिपाही का पेशा। (२) तलवार की लड़ाई। असियुद्ध। शमशेरदम=तलवार की तरह बाढ़ रखनेवाला। तलवार जैसी काट करनेवाला। शमशेरजग=वीरतासूचक उपाधि। शमशेर बकफ=शस्त्रपाणि। जिसके हाथ मे तलवार हो। शमशेर बहादुर=तलवार चलाने मे कुशल।

शमश्रु,पुं०†—संज्ञा पुं० [सं० श्मश्रु] दाढी। श्मश्रु। उ०—अरु शमश्रु जो दाढी है सो चौदीवत चमत्कार करती है।—प्राण०, पृ० २६२।

शमातक—संज्ञा पुं० [सं० शमान्तक] वह जो शम को, मन शांति को नष्ट कर दे, अर्थात् कामदेव।

शमा—संज्ञा स्त्री० [अ० शमअ्] १ मोम। २. मोम या चर्बी की बनी हुई बत्ती जो जलाने के काम मे आती है। मोमबत्ती। उ०—झिलमिलाकर और जलाकर तन शमा दो, अब शलभ की गोद मे आराम से सोई हुई।—ठडा० पृ० १२। ३. दीपक। दीया। उ०—सुबह तक शमा सर को धुनती रही। क्या पतग ने इल्तमास किया।—कविता को०, भा० ४, पृ० १७२।

यौ०—शमादान।

शमादान—संज्ञा पुं० [फा०] वह आधार जिसमे मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं। यह प्राय धातु का बना हुआ अनेक आकार प्रकार का होता है।

शमामचा—संज्ञा पुं० [फा० शमामचह्] सूँघने का कोई सुगधित पदार्थ (को०)।

शमामा—संज्ञा पुं० [अ० शमामह्] सुगध। सुशबू। महक (को०)।

शमारुख, शमारुखसार—वि० [फा० शमारुख, शमारुखसार] १. शमा की तरह प्रकाशमान चेहरा। २. सुदर। उ०—शमारुख का तेरे ये गुन कोई परवाना नहो, और अगर हूँ तो मही।—श्यामा०, पृ० १०२।

शमारू—वि० [फा०] दे० 'शमारुख'।

शमि'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिवी धान्य।

विशेष—इस धान्य मे मूँग, मसूर, माठ, उडद, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया इत्यादि वे अन्न आते हैं, जिनमे छीमियाँ लगती हैं।

२. सफेद कीकर। विशेष दे० 'शमी'।

शमि२—संज्ञा पुं० १. भागवत के अनुसार उशीनर के पुत्र का नाम। २. यज्ञ।

शमिक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शमिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] शमी वृक्ष।

शमिज—संज्ञा पुं० [सं०] लाल कुलथी।

शमिजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. लाल कुलथी। २. शिवी धान्य।

शमित—वि० [सं०] १ जिसका शमन किया गया हो। २. शांत। ठहरा हुआ। ३ विश्रामित। आराम किया हुआ (को०)। ४. मारा हुआ। नष्ट या विध्वस्त किया हुआ (को०)।

शमिता१—संज्ञा पुं० [सं० शमितृ] वह जो यज्ञ मे पशु का बलिदान करता हो।

शमिता[१]—सज्ञा स्त्री० [सं०] चौरेठा। चावल का चूर्ण [को०]।

शमिपत्र—सज्ञा पुं० [स०] पानी मे होनेवाली लजालू नाम की लता।

शमिपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शमिपत्र'।

शमिर—सज्ञा पुं० [स०] १. शमी वृक्ष। २ नकुची। सोमराजी।

शमिरोह—सज्ञा पुं० [स०] शिव। महादेव।

शमिला—सज्ञा स्त्री० [स०] चमेली की जाति का एक प्रकार का पौधा।

शमी[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कर्म। क्रिया (को०)। २ एक प्रकार का बडा वृक्ष। सफेद कीकर। छिकुर। छोंकर।

विशेष—शमी का वृक्ष पंजाब, सिंध, राजपूताना, गुजरात, और दक्षिण के प्रांतो मे पाया जाता है। इसे बागो मे भी लगाते हैं। इसका वृक्ष ३०-४० फुट तक ऊँचा होता है, परंतु सिंध मे यह ६० फुट का भी होता है। इसकी शाखें पतली खाकी रंग की, चित्तीदार और भूमि की ओर लटकती हुई होती हैं। इसकी जड कही कही ६० फुट तक भूमि के भीतर नीचे चली जाती है, और चारो ओर बहुत दूर तक बढती है, जिससे नए अकुर निकलकर और पौधे उत्पन्न होते हैं। इसकी लकडी बहुत मजबूत होती है। इसके वृक्ष पर काँटे होते हैं। डालियो पर विषमवर्ती सींके रहते हैं। इन सीको पर ७ से १२ जोडे तक छोटे छोटे पत्ते रहते है। शाखो के अंत मे ३-४ इंच लबे सींको पर नन्हे नन्हे पीले तथा गुलाबी रंग के फूल आते हैं। इसकी फलियाँ ५ से १० इंच तक लबी और चिपटी होती हैं। प्रत्येक फली मे १०-१५ बीज रहते है जो अंडाकार और भूरे रग के होते हैं। इसकी छाल और फलियाँ ओषधि के काम में आती हैं। लोग इसकी फलियो का अचार और साग बनाकर खाते हैं। दुर्भिक्ष के समय इसकी छाल के आटे की रोटी बनाकर भी खाई जाती है। इसका भस्म बुद्धि, केश तथा नखो का नाश करनेवाला होता है। अतिसार मे इसका काढ़ा लाभदायक होता है। गठिया पर इसकी छाल पीसकर गरम करके लगाने से लाभ होता है। लोग विजयादशमी आदि कुछ विशिष्ट अवसरो पर इसका पूजन भी करते हैं।

पर्या०—शक्तुफला। शिवा। केशहत्री। शाता। हविर्गंधा। मेध्या। ईशानी। लक्ष्मी। तपनतनया। शुभदा। पवित्रा। बागुजि। पापनाशिनी। शकरी। पापशमनी। इष्टा। तुगा। शिवाफला। सुपत्रा। सुखदा।

शमी[२]—वि० [स० शमिन्] शात।

शमीक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षमाशील ऋषि का नाम।

विशेष—कहते हैं, परीक्षित ने उनके गले मे एक बार मरा हुआ साँप डाल दिया, परंतु ये कुछ न बोले। इनके लडके शृगी ऋषि ने अपने पिता की दुर्दशा देखकर क्रुद्ध हो शाप दिया कि आज के सातवें दिन मेरे पिता के गले मे सर्प डालनेवाले को तक्षक नाग डसेगा। कहा जाता है, इसी शाप के द्वारा तक्षक के काटने से राजा परीक्षित की मृत्यु हुई थी।

शमीगर्भ—सज्ञा पुं० [स०] १ ब्राह्मण। २ अग्नि।

शमीजाति सज्ञा स्त्री० [स०] शमीधान्य।

शमीधान, शमीधान्य—सज्ञा पुं० [स०] शिबी धान्य। मूँग, मसूर, उडद आदि।

शमीपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] लजालू नाम की लता।

शमीम[१]—सज्ञा स्त्री० [अ० शमीमह्] सूँघने की वस्तु। सुगध। उ०—मगजे जाँ को जँनतो राहत का शमीम। याद उसका दिल के गुचे को नसीम।—दक्खिनी०, पृ० २०१।

शमीम[२]—सज्ञा पु० [अ०] सुगध। खुशबू।

शमीर—सज्ञा पु० [स०] शमी वृक्ष।

शमीरकद—सज्ञा पु० [स०] शमीरकन्द] बाराही कद। चमार आलू। शूकर कद।

शमीरमा—सज्ञा स्त्री० [स० शमी+रमा] लक्ष्मीदेवी जो शमी वृक्ष मे निवास करती हैं। उ०—शमी वृक्ष मे शमीरमा रानी की पूजा वीरपूजा ही का जाज्वल्य प्रमाण है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २०६।

शमीरोह—सज्ञा पुं० [स०] शिव [को०]।

शम्मा—स० पुं० [अ०] किंचिन्मात्र वस्तु। बहुत थोडा सामान।

शम्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. लगुड। यष्टि। लाठी। २. काठ का स्तभ। ३. ३६ अगुल लबा एक परिमाण या मानदंड। ४. जुए का सैला। ५ झाँझ। ६. एक यज्ञपात्र। ७ वैद्यो का एक यत्र या औजार। ८ सगीत में तालविशेष [को०]।

यौ०—शम्याक्षेप। शम्याग्राह=झाँझ बजानेवाला। झालर बनानेवाला। शम्यापात=दे० 'शम्याक्षेप'।

शम्याक—सज्ञा पुं० [स०] आरग्वध वृक्ष। अमलतास।

शम्याक्षेप—सज्ञा पुं० [स०] १. वह दूरी जहाँ तक घुमाकर तेजी से फेंकी हुई छडी गिरे। २. एक यज्ञ जिसका मडप बलिष्ठ पुरुष द्वारा क्षिप्त छडी गिरने की दूरी तक हो [को०]।

शम्श(ष)—सज्ञा पु० [अ० शम्स] १ सूरज। रवि। सूर्य। उ०—तकरीम को शम्शो महे अनवार झुका।—कबीर म०, पृ० ४६८।

शम्शी(ष)—वि० [अ० शम्सी] १. सूर्य का। सौर। २ सूर्य सबंधी। उ०—आखिर कुछ धन माह न दीना, शम्शी कमरी घटा महीना।—दक्खिनी०, पृ० ३११।

शम्स—सज्ञा पुं० [अ०] १ सूर्य। जैसे, शम्स-उल उलेमा अर्थात् विद्वानो में सूर्यवत्। २ सुमिरनी का फुंदना जो तसबीह (माला) में लगाया गया हो। [को०]।

शम्सा—सज्ञा पु० [अ० शम्सह्] गवाक्ष। झरोखा। रोशनदान [को०]।

शम्सी[१]—वि० [अ०] दे० 'शम्शी'।

शम्सी[२]—सज्ञा स्त्री० छमाही वेतन।

शयड[१]—सज्ञा पुं० [स० शयण्ड] १. एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस देश का निवासी।

शयंड[२]—वि० सोनेवाला। निद्रालु [को०]।

शयंडक—सज्ञा पुं० [स० शयण्डक] गिरगिट ।

शय'—सज्ञा पुं० [स०] १ शय्या । २. सर्प । साँप । ३ निद्रा । नीद । उ०—इगों मे ज्योति है, शय है, हृदय मे स्पद है, भय है ।—अर्चना, पृ० १०७ । ४ पण । ५ हाथ । ६ लबाई की एक माप (को०) । ७ बद्दुआ । शाप (को०) । ८ भर्त्सना (को०) ।

शय'—वि० लेटनेवाला । सोनेवाला (विशेषन समास मे, जैसे दिवा-शय, उत्तानशय) ।

शय'—सज्ञा स्त्री० [अ०, फा० शै] १ वस्तु । पदार्थ । चीज । २ भूत । प्रेत । आसेब । जैसे,—इस मकान मे कोई शय है ।

शय'—सज्ञा स्त्री० [फ्रा० शह] दे० 'शह' ।

शयत—सज्ञा पु० [स०] १ निद्रालु व्यक्ति । वह जिसे नीद आई हो । २ चद्रमा (को०) ।

शयतान—सज्ञा पुं० [अ० शैतान] दे० 'शैतान' ।

शयतानी—सज्ञा स्त्री० [अ० शैतानी] दे० 'शैतानी' ।

शयथ'—सज्ञा पुं० [स०] १ साँप । सर्प । अजगर । २ सूअर । सूकर । वाराह । ३ मछली । मीन । ४ गाढी नीद । ५ मृत्यु । मौत । ६ यम । ७ शयनीय स्थल (को०) ।

शयथ'—वि० सोया हुआ । सुषुप्त (को०) ।

शयन—सज्ञा पु० [स०] १ निद्रा लेने या सोने की क्रिया । सोना । २ शय्या । बिछौना । ३ मैथुन । स्त्रीप्रसग । सभोग ।

शयनआरती—सज्ञा स्त्री० [स० शयन+आरती] । देवताओ की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है ।

शयनकक्ष—सज्ञा पुं० [स०] सोने का कमरा या घर । शयनागार ।

शयनगृह—सज्ञा पुं० [स०] सोने का स्थान । शयनमदिर । शयनागार ।

शयनतलगत—वि० [सं०] शय्या पर लेटा हुआ (को०) ।

शयनपाल—सज्ञा पु० [स०] निद्राकाल में पहरा देनेवाला व्यक्ति या अतरग अगरक्षक ।—वर्ण०, पृ० ६ ।

शयनपालिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो शय्या की रक्षिका हो शयनकक्ष की रक्षा करनेवाली । (को०) ।

शयनबोधिनी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अगहन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी । उ०—अगहन असित एकादसि केरा । शयनबोधिनी नाम निवेरा —रघुनाथ (शब्द०) ।

शयनभूमि—सज्ञा स्त्री० [सं०] शयनमदिर । शयन का स्थान (को०) ।

शयनमदिर—सज्ञा पुं० [सं० शयनमन्दिर] सोने का स्थान । सोने का कमरा । शयनगृह । शयनागार ।

शयनरचन—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० शयनरचना] ६४ कलाओ में से एक कला । सेज तैयार करना या सजाना (को०) ।

शयनवास—सज्ञा पुं० [स० शयनवासस्] वे कपडे जो सोने के समय पहने जायँ ।

शयनशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] शयनगृह । शयनागार । उ०—इन क्षत्रियो को आलस्य की शयनशाला से उठाओ ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ६६ ।

शयनसखी—सज्ञा स्त्री० [सं०] शय्या पर साथ सोनेवाली महेली (को०) ।

शयनस्थ—वि० [स०] बिछौने पर बैठा या सोया हुआ (को०) ।

शयनस्थान—सज्ञा पु० [स०] सोने की जगह (को०) ।

शयनागार—सज्ञा पु० [स०] सोने का स्थान । शयनमदिर । शयनगृह ।

शयनीय'—वि० [सं०] सोने के योग्य ।

शयनीय'—सज्ञा पुं० १ सेज । शय्या । २ शयनगृह । शयनागार (को०) ।

शयनीयक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शयनीय' ।

शयनैकादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] आषाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

विशेष—विष्णु भगवान् के शयन का प्रारभ इसी दिन से माना जाता है ।

शयाड—सज्ञा पुं० [स० शयाण्ड] १ एक प्राचीन देश या जनपद का नाम । २. इस देश का निवासी ।

शयाडक—सज्ञा पु० [स० शयाण्डक] गिरगिट । कृकलास ।

शयातीन—सज्ञा पुं० [अ० शैतान का बहु व०] शैतान । उ०—बस है यह उसको अज उफूरे अयाल, के शयातीन हो उसके माला-माल ।—दक्खिनी०, पृ० २१६ ।

शयान'—वि० [स०] सोया हुआ । स्थित । पडा हुआ । उ०—कुद के शेष पूज्यार्घदान, मल्लिका प्रथमयौवन शयान ।—अनामिका, पृ० २२ ।

शयान'—सज्ञा पु० दे० 'शयानक' ।

शयानक—सज्ञा पुं० [स०] १ सर्प । साँप । अजगर । २. गिरगिट । कृकलास ।

शयालु'—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जिसे नीद आई हो । निद्रालु । २ अजगर । ३ कुत्ता । ४ शृगाल । गीदड । सियार ।

शयालु'—वि० निद्रालु । निद्राशील । शयित (को०) ।

शयित'—सज्ञा पु० [स०] १ अजगर । २ लिसोडा । श्लेष्मातक । ३ निद्रा । नीद (को०) । ४ सोने का स्थान (को०) ।

शयित'—वि० १ सोया हुआ । निद्रित । २ लेटा हुआ (को०) ।

शयिता—सज्ञा पु० [स० शयितृ] वह जो सोया हुआ हो । सोनेवाला ।

शयु—सज्ञा पुं० [स०] १ अजगर । २. एक प्राचीन वैदिक ऋषि का नाम ।

शयुन—सज्ञा पु० [स०] अजगर । साँप ।

शय्यात—सज्ञा पुं० [स० शय्यान्त] शयनकक्ष (को०) ।

शय्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह बिछी हुई वस्तु जो सोने के काम मे लाई जाय । बिस्तर । बिछौना । बिछावन । २ पलग । खाट । खटिया । ३ बाँधना । नत्थी करना (को०) ।

शय्याकाल—सज्ञा पुं० [स०] सोने का समय । शय्या पर जाने का काल (को०) ।

शय्यागत—वि० [स०] १ जो बीमार होने के कारण खाट पर पडा हो । रोगी । २. सोया या लेटा हुआ (को०) ।

शय्यागृह—सज्ञा पु० [स०] शयनगृह। शयन का कक्ष या स्थान [को०]।

शय्याच्छादन—सज्ञा पुं० [स०] पलग पर बिछाने की चादर।

शय्याद—वि० [अ०] छली। धूर्त। मक्कार। वंचक [को०]।

शय्यादान—सज्ञा पुं० [स०] मृत्यु के अनतर मृतक के सबधियो का महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जादान।

शय्याध्यक्ष—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शय्यापाल'।

शय्यापाल, शय्यापालक—सज्ञा पुं० [स०] वह जो राजाओ के शयनागार की व्यवस्था करता हो।

शय्यामूत्र—सज्ञा पुं० [सं०] एक रोग जो प्राय बालको को होता है। इसमे उन्हे निद्रावस्था मे ही शय्या पर पडे पडे पेशाब हो जाता है।

शरड—सज्ञा पु० [सं० शरण्ड] १ पक्षी। विहग। चिडिया। २ कामुक। ३. धूर्त। चालाक। ४ एक प्रकार का गहना। ५. छिपकली। ६ गिरगिट। ७ चतुष्पद। चतुष्पाद। चौपाया (को०)।

शर'—सज्ञा पुं० [स०] १. बाण। तीर। नाराच। २ सरकडा। सरई। ३. सरपत। रामशर। ४. दूध की मलाई। ५ दही की मलाई। ६. सामुद्रिक के अनुसार शरीर मे का एक चिह्न। ७. उशीर। खस। ८ भाले का फल। उ०—मूआ है मरि जाहुगे, बिन शर थोथे भाल।—कबीर (शब्द०)। ९ चिता। उ०—पूहो पैन्हि पी सँग सुहागिन बधू ह्वै लीजो सुख के समूहै बैठि सेज पै कि शर पै।—देव (शब्द०)। १. हिंसा। ११ पाँच की संख्या। १२ पुराणानुसार एक असुर का नाम। १३ जल (को०)। १४ कुश नाम की घास (को०)।

शर'—सज्ञा पुं० [अ०] १ उपद्रव। शरारत। झगडा। बखेडा। २ बदी। बुराई। उ०—रहो कायम अपस इकरार ऊपर, खयाले कत्ल मे लिए दीन का शर।—दक्खिनी०, पृ० ३४०।

शरअ—सज्ञा स्त्री० [अ० शरअ] १ वह सीधा रास्ता जो ईश्वर ने भक्तो के लिये बतलाया हो। २. सीधा राह। राजमार्ग (को०)। ३ कुरान मे दी हुई आज्ञा। ४ दीन। मजहब। धर्म। ५ दस्तूर। तौर। तरीका। ६ मुसलमानो का धर्मशास्त्र।

शरई'—वि० [अ०] शरअ के अनुसार। मुसलमानी धर्म के अनुसार।

यौ०—शरई पैजामा = ऊँचा पैजामा। शरई दाढी = बहुत लबी दाढी। शरई शादी = बिना बाजे गाजे का विवाह (मुसल०)।

शरई'—सज्ञा पुं० शरअ पर चलनेवाला मनुष्य।

शरकाड—सज्ञा पुं० [स० शरकाण्ड] १ सरपत। सरकडा। २ बाण की लकडी।

शरकार—सज्ञा पुं० [स०] वह जो तीर बनाता हो।

शरक्षेप—सज्ञा पुं० [स०] १ बाण का लक्ष्य स्थान। बाणप्रहार। तीर का चलाना। उ०—देखता रहा मैं खडा अपल वह शरक्षेप, वह रणकौशल।—अनामिका, पृ० १२०।

शरखगक—सज्ञा पु० [स० शरखङ्गक] उलूक वृक्ष। उल्लू।

शरगा—सज्ञा पुं० [अ० शरगा] बादामी रग का घोडा [को०]।

शरगुल्म—सज्ञा पु० [स०] १ सरकडा। २ रामायण के अनुसार एक यूथपति बदर का नाम।

शरघात—सज्ञा पु० [स०] बाण चलाने का कार्य। तीरदाजी [को०]।

शरच्चद्र—सज्ञा पु० [स० शरत्+चन्द्र] शरद ऋतु का चद्रमा।

शरच्चंद्रिका—सज्ञा स्त्री० [स० शरत्+चन्द्रिका] शरत् की चाँदनी।

शरज'—सज्ञा पुं० [स०] १ मक्खन। नवनीत। २ कार्तिकेय।

शरजन्मा (को०)।

शरज'—वि० सरकडे मे उत्पन्न या बना हुआ।

शरजन्मा—सज्ञा पु० [स० शरजन्मन्] कार्तिकेय।

शरजाल, शरजालक—सज्ञा पुं० [स०] बाणो का जाल। बाणसमूह [को०]।

शरज्ज्योत्स्ना—सज्ञा स्त्री० [स० शरत्+ज्योत्स्ना] शरद् ऋतु की चाँदना। शरद का जुन्हाई [को०]।

शरट—सज्ञा पु० [स०] १ कुसुभ नाम का साग। २. कृकलास। गिरगिट। ३ करज। ४ प्रागैतिहासिक काल का एक भयावना जानवर।

शरटी—सज्ञा स्त्री० [स०] लज्जालुक। लाजवती। लजाधुर।

शरटु—वि० [स०] भयानक। भीषण। रौद्र [को०]।

शरण'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रक्षा। आड। आश्रय। पनाह। जैसे,—अब तो मैं आपकी ही शरण मे आया हूँ। उ०—(क) वपु कृष्ण कृष्ण करना करण जग व्यापक हम तव शरण।—गिरधर (शब्द०)। (ख) जिनकी शरण विश्व बुध जिनको निरभिलाष बतलाते हैं।—द्विवेदी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—मे आना।—जाना।—पाना।—लेना।

२ आश्रय का स्थान। बचाव की जगह। ३ घर। मकान। ४ जो शरण मे आवे, उसके वैरी को मारना। ५ अधीन। मातहत। ६ शाहाबाद के उत्तर सारन नाम का जिला।

शरण'—वि० [स०] दे० 'शरण्य' [को०]।

शरणद—वि० [स०] शरण देनेवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक।

शरणदाता—वि० [स० शरणदातृ] दे० 'शरणद' [को०]।

शरणप्रद—वि० [स०] दे० 'शरणद'।

शरणा—सज्ञा स्त्री० [स०] गवप्रसारिणी नाम की लता।

शरणागत'—सज्ञा पुं० [स०] १ शरण मे आया हुआ व्यक्ति। किसी के भय से अपने प्राण रक्षा के लिये आया हुआ मनुष्य। २. शिष्य। चेला।

शरणागत—वि० शरण मे आया हुआ।

शरणागति—सज्ञा स्त्री० [स०] शरण में जाने का कार्य या स्थिति [को०]।

शरणापन्न—वि० [स०] शरण मे आया हुआ। शरणागत।

शरणार्थी—वि० [स० शरणार्थिन्] १ शरण माँगनेवाला। अपनी

रक्षा की प्रार्थना करनेवाला। २ विस्थापित। एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जा बसनेवाला। उ०—शरणार्थी, नवभू जीवन के शरणार्थी हैं।—रजत०, पृ० ८८।

शरणागंक—वि० [स०] शरणागत। शरणागत [को०]।

शरणि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ रास्ता। मार्ग। पथ। २ पृथ्वी। जमीन ३ हिंसा। ४ पंक्ति [को०]।

शरणि' संज्ञा स्त्री० [स०] १ गंधप्रसारिणी नाम की लता। २ पथ। मार्ग। रास्ता। ३ जयंती लता। ४ पृथ्वी [को०]। ५ पंक्ति। श्रेणी [को०]। ६ इंद्र की पुत्री, जयंती (को०)।

शरणी ⓤ—वि० शरण देनेवाली।

शरण्य' वि० [स०] १. शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला। उ०—रक्षण करिहैं अवशि हमारा। प्रभु ब्रह्मण्य शरण्य उदारा।—भक्तमाल (शब्द०)। २ रक्षणीय। शरण देने योग्य (को०)। ३ दुःखी। अबलबहीन (को०)।

शरण्य' संज्ञा पुं० १ आश्रयस्थान। २ रक्षा। त्राण। ३ हिंसा। ४ वह जो रक्षा कार्य करे। ५. शिव [को०]।

शरण्यता—संज्ञा स्त्री० [स०] शरण्य का भाव।

शरण्या—संज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।

शरण्यु'—संज्ञा पुं० [स०] १ मेघ। बादल। २ वायु। हवा। ३ वह जो पालन वा रक्षण करे अथवा शरण दे। रक्षक। ४ दे० 'भरण्यु'।

शरण्यु'—संज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी।

शरण्यु'—वि० [स०] रक्षक। पालक। त्राता।

शरत् संज्ञा स्त्री० [स०] १ वर्ष। साल। २. एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है। पहले वैदिक काल में यह ऋतु भाद्रपद और आश्विन मास में मानी जाती थी। उ०—वर्षा बिगत शरत् ऋतु आई।—तुलसी (शब्द०)।

पर्या०—शारदा। कालप्रभात। मेघांत। वर्षावसान।

शरत'—संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शर्त'।

शरत'—संज्ञा स्त्री० [स० शरत्] दे० 'शरत्'।

शरतल्प—संज्ञा पुं० [सं०] बाणों की शय्या। शर पंजर।

शरता—संज्ञा स्त्री० [स०] बाण फेंकने की क्रिया तीरंदाजी।

शरत्कामी—संज्ञा पुं० [सं० शरत्कामिन्] कुत्ता। कुक्कुर। श्वान।

शरत्काल—संज्ञा पुं० [स०] कन्या संक्रांति से तुला संक्रांति तक का अथवा आश्विन और कार्तिक का समय। शरद् ऋतु।

शरत्त्रियामा—संज्ञा स्त्री० [स०] शरत् ऋतु की रात [को०]।

शरत्पद्म संज्ञा पुं० [सं०] श्वेत पद्म।

शरत्पर्व—संज्ञा पुं० [सं० शरत्पर्वन्] आश्विन मास की पूर्णिमा। कोजागर। शरद्पूर्णिमा।

शरत्पुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] एक क्षुप। भार्गी।

शरदंड—संज्ञा पुं० [स० शरदण्ड] १ चाबुक। २. सरकंडा।

शरदंडा—संज्ञा स्त्री० [सं० शरदण्डा] १. एक प्राचीन नदी का नाम। २. एक प्राचीन देश का नाम।

शरदंत—संज्ञा पुं० [स० शरदन्त] शरद ऋतु का अंत अर्थात् हेमंत ऋतु।

शरद—संज्ञा स्त्री० [स० शरद्] दे० 'शरत्'।

शरदई—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सरदई'।

शरदपूर्णिमा—संज्ञा स्त्री० [स० शरत्पूर्णिमा] कुआर मास की पूर्णमासी। शरद् पूनो।

शरदा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ शरद ऋतु। २. वर्ष। साल।

शरदिंदु—संज्ञा पुं० [स० शरदिन्दु] शरद् ऋतु का चंद्र। उ०—प्रतनु शरदिंदु वर।—गीतिका, पृ० १२।

शरदिज—वि० [स०] जो शरत् ऋतु में उत्पन्न हो।

शरदुद्भव—संज्ञा पुं० [स०] वृत्तपत्र नाम का साग।

शरदुर्दिन—संज्ञा पुं० [स०] बाणों की वर्षा या झड़ी [को०]।

शरदेंदु—संज्ञा पुं० [स० शरदिन्दु, हिं० शरद+इंदु] शरद ऋतु का चंद्रमा। शरच्चंद्र।

शरद्घन—संज्ञा पुं० [स०] शरद् ऋतु के मेघ। शरत्काल के बादल [को०]।

शरद्चंद्र—संज्ञा पुं० [स० शरच्चन्द्र] शरद् ऋतु का चंद्रमा। उ०—शरद्चंद्र की चाँदनी मंद परत सी जान।—गंधाकर (शब्द०)।

शरद्वत्—संज्ञा पुं० [सं०] शरत् ऋतु। २ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शरद्वसु—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शरद्वीप—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम जो जलद्वीप भी कहलाता है।

शरधा ⓤ†—संज्ञा स्त्री० [स० श्रद्धा] दे० 'श्रद्धा'। उ०—यदि शरधा हो तो।—मैला०, पृ० ८८।

शरधान—संज्ञा पुं० [स०] १ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। २ इस देश का निवासी।

शरधि—संज्ञा पुं० [स०] तीर रखने का चोगा। तूणीर। तरकस।

शरनाई ⓤ—संज्ञा स्त्री० [स० शरण] दे० 'शरण'। उ०—यहि मुद्रा का लेहु हँकराई। हम सब तव रहें तुव शरनाई।—कबीर सा०, पृ० १५१५।

शरनी ⓤ'—वि० स्त्री० [स० शरण] शरण देनेवाली। उ०—अशरण शरनी भवभय हरनी वेद पुरान बखानी।—सूर (शब्द०)।

शरनी ⓤ'—संज्ञा स्त्री० [स० शरण] दे० 'शरण'। उ०—तीरथ व्रत कीन्ह बहु करनी। रूपदास गुरु को गहि शरनी।—कबीर सा०, पृ० ४२०।

शरन्मुख—संज्ञा पुं० [स०] शरद् ऋतु का आरंभ।

शरन्मेघ—संज्ञा पुं० [स०] शरत्काल के बादल।

शरपंख—संज्ञा पुं० [स० शरपङ्ख] जवासा। हिंगुआ। धमासा।

शरपट्टा ⓤ—संज्ञा पुं० [स० शर+हिं० पट्टा] एक प्रकार का शस्त्र। उ०—असि शर भिंडिपाल शरपट्टा।—गिरधर (शब्द०)।

शरपर्णी—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा।

शरपुंख—संज्ञा पुं० [स० शरपुङ्ख] १ नील की तरह का एक प्रकार

का पौवा। सरफोंका। २. बाण या तीर मे लगा हुआ पंख। ३ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का यत्र।

शरपुखा—सज्ञा स्त्री० [स० शरपुङ्खा] दे० 'शरपुख' [को०]।

शरप्रवेग—सज्ञा पु० [स०] तीव्रगामी या तीक्ष्ण बाण [को०]।

शरफल—सज्ञा पु० [स०] बाण का फल या नोक [को०]।

शरबत—सज्ञा पु० [अ०] १ पीने की मीठी वस्तु। रस। २. चीनी आदि मे पका हुआ किसी ओषधि का अर्क जो दवा के काम आता है। जैसे,—शरबत बनफशा, शरबत अनार। ३ पानी मे घोली हुई शक्कर या खाँड। ४. मुसलमानो की एक रस्म जो विवाह के पश्चात् शरबत पिलाकर पूरी की जाती है और उसके बदले मे वधू के पक्षवालो को कुछ धन दिया जाता है। ५ सगाई की रस्म। (मुसल०)।

मुहा०—शरबत पिलाना=ब्याह के पहले या बाद मे शरबत पिलाने की रीति। शरबत के प्याले पर निकाह पढाना या करना=बिना कुछ भी खर्च किए ब्याह करना।

शरबत पिलाई—सज्ञा स्त्री० [हिं० शरबत+पिलाना] वह धन जो वर और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को शरबत पिलाकर देते हैं। (मुसल०)।

शरबती[1]—सज्ञा पुं० [हिं० शरबत+ई (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का हल्का पीला रग जिसमे साधारण लाली भी होती है। यह प्राय हरसिंगार के फूल और शहाब मिलाकर बनाया जाता है। २. एक प्रकार का नगीना जो पालापन लिए लाल रग का होता है। ३ एक प्रकार का नीबू जिसे मीठा नीबू भी करते है। ज्वर मे लोग प्राय इसका रस चूसते है। चकोतरा। मधुककर्कटी। ४ एक प्रकार का बढिया कपडा जो तनजेब से कुछ मोटा और अद्धी से कुछ पतला होता है। ५ एक प्रकार का फालसा जो बडा और मीठा होता है।

शरबती[2]—वि० १ रसीला। रसदार। रस भरा हुआ। २. हलका गुलाबी।

शरबती डाँक—सज्ञा पु० [हिं० शरबती+डाँक] नगीने के नीचे रखने का शरबती रग का बहुत पतला चाँदी या ताँबे का पत्तर विशेष दे० 'डाँक'।

शरबती नीबू—सज्ञा पु० [हिं० शरबत+नीबू] १. चकोतरा। २. गलगल। ६. जंबीरी नीबू। मीठा नीबू।

शरबती फालसा—सज्ञा पु० [हिं० शरबती+फालसा] एक प्रकार का फालसा जो बडा और मीठा होता है।

शरभान—सज्ञा पुं० [स० शर+बान] भूतृण। अगिया घास।

शरबीज—सज्ञा पु० [स०] १. सरपत्ते के बीज। चारुक। २. भद्रमुज।

शरभग—सज्ञा पु० [स० शरभङ्ग] एक प्राचीन महर्षि जो दाक्षिण मे रहते थे। वनवास के समय रामचद्र इनके दर्शन करने गए थे।

शरभ—सज्ञा पु० [स०] १. राम की सेना का एक यूथपति बदर। उ०—ऋषभ शरभ अरु नील गवाक्षहु गंधमादन हू पाँचो।—रघुराज (शब्द०)। २. बिल्ला। ३ हाथी का बच्चा। ४ विष्णु। ५ ऊँट। ६ एक प्रकार का पक्षी। ७ आठ पैरोवाला एक कल्पित मृग। कहते हैं, यह सिंह से भी अधिक बलवान् होता है। ८. एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता है। इसे 'शशिकला' और 'पणिपुणा' भी कहते है। ९ दोहे का एक भेद जिसमें बीस गुरु और आठ लघु मात्राएँ होती हैं १०. शेर। सिंह। ११ दनुज के एक पुत्र का नाम। १२. महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शरभता—सज्ञा स्त्री० [स०] शरभ का भाव या धर्म। शरभत्व।

शरभलील—सज्ञा पुं० [स०] सगीत में ताल का एक भेद [को०]।

शरभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुष्क अवयववाली और विवाह के अयोग्य कन्या। २ लकडी का एक प्रकार का यत्र।

शरभू—सज्ञा पुं० [स०] कार्तिकेय।

शरभृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] बाण की नोक [को०]।

शरभेद—सज्ञा पु० [स०] बाण का घाव [को०]।

शरभेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] एक शिवलिंग का नाम।

शरम—सज्ञा स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा। हया। गैरत।

क्रि० प्र०—आना।—करना।—रखना।—होना।

मुहा०—शरम से गडना=मारे लज्जा के दबे या झुके जाना। बहुत लज्जित होना। शरम से पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना।

२ लिहाज। सकोच। ३ प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—शरम रखना=इज्जत रखना। लाज रखना। शरम रहना=प्रतिष्ठा रहना। आबरू रहना।

शरमनाक—वि० [फा० शर्मनाक] लज्जाजनक। शर्मनाक।

शरमल्ल—सज्ञा पु० [स०] १ शारिका पक्षी। मैना। २. वह जो तीर चलाने मे निपुण हो। धनुर्धारी।

शरमसार—वि० [फा० शर्मसार] १. जिसे शर्म हो। लज्जावाला। हयादार। २. लज्जित। शरमिंदा। ३ पछतानेवाला (को०)।

शरमसारी[1]—सज्ञा स्त्री० [फा० शर्मसारी] १. शरमिंदा होने का भाव या क्रिया। २. लज्जा। शरमिंदगी। ३. पछतावा। पश्चात्ताप (को०)।

शरमसारी[2]—सज्ञा पु० वह जो वास्तव में लज्जा या मुरव्वत न करता हो, केवल किसी के सामने आ जाने पर लज्जा या मुरव्वत करता हो। मुँह देख की लज्जा करनेवाला।

शरमहुजूरी—सज्ञा स्त्री० [अ० शर्म०+फा० हुजूर] ऐसी लज्जा या मुरव्वत जो वास्तविक न हो, केवल किसी के सामने आ जाने से उत्पन्न हो। मुँह देख का लाज।

शरमाऊ—वि० [हिं० शरम+आऊ (प्रत्य०)] जिसे बहुत लज्जा मालूम होती हो। शरमीला।

शरमाना'—क्रि० अ० [अ० शर्म+हिं० आना (प्रत्य०)] शरमिंदा होना। लज्जित होना। लाज करना। हया करना। जैसे,—व तुम्हारे

सामने शरमाते हैं। उ०—वह न शरमावे कब तलक आखिर। दोस्ती यारी आशनाई है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ०, १६६।

शरमाना[2]—क्रि० स० शरमिंदा करना। लज्जित करना। जैसे—अब उन्हें ज्यादा मत शरमाओ।

शरमालू†—वि० [फा० शर्मआलूद अथवा हिं० शरम+आलु (प्रत्य०)] दे० 'शरमाऊ'।

शरमा शरमी—क्रि० वि० [फा० शर्म] लज्जा के कारण। शरमिंदा होकर। जैसे,—आप शरमा शरमी साथ हो लिए हैं।

शरमिंदगी—सज्ञा स्त्री० [फा०] शरमिंदा या लज्जित होने का भाव या धर्म। नदामत। लाज। झेंप।

मुहा०—शरमिंदगी उठाना=ऐसा काम करना जिसमे लज्जित होना पडे।

शरमिंदा वि० [फा० शरमिंदह्] जिसे शरम या लज्जा आई हो। लज्जित।

शरमीला—वि० [फा० शर्म+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे। शरम करनेवाला। लज्जालु।

शरयत्रक—सज्ञा पु० [स० शरयन्त्रक] वह डोरी जिसमे प्राचीन काल मे लिखे हुए ताडपत्रो को ग्रथित किया जाता था। लिखे हुए ताडपत्रो को नत्थी करने की डोरी [को०]।

शरयु, शरयू—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सरयू'।

शरर—सज्ञा स्त्री० [अ०] अग्निकण। चिनगारी। स्फुलिंग। उ०—क्या आग की चिनगारियाँ सीने मे भरी है। जो आंसू मेरा आँख से गिरता है शरर है।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० १६४।

शररबार—सज्ञा पु० [अ० शरर+फा० बार] चिनगारी बरसानेवाला। उ०—दरबार मे वह तेगे शररबार न चमके।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ५२२।

शरल[1]—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'सरल[2]'।

शरल[2]—वि० १ वक्र। टेढा। कुटिल। २ दे० 'सरल[1]'।

शरलक—सज्ञा पु० [स०] जल। पानी।

शरलोमा—सज्ञा पु० [स० शरलोमन्] एक प्राचीन ऋषि जिन्होने कई ऋषियो के साथ भारद्वाज जी से आयुर्वेद सहिता लाने के लिये प्रार्थना की थी।

शरवण—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शरवन' [को०]।

शरवणी†—सज्ञा स्त्री० [स० श्रवण+ई] कान मे पहनी जानेवाली छोटे छोटे दानो की माला। उ०—माला ताहि गले महँ दीन्हा। श्रवण शरवणी बाँधन लीन्हा।—कबीर सा०, पृ० २७०।

शरवन—सज्ञा पु० [स०] १ नरसल या नरकुलो का झुरमुट। २ कुश की चटाई [को०]।

शरवनोद्भव—स्त्री० पु० [स०] कार्तिकेय।

शरवर्ष—सज्ञा पु० [स०] बाणवृष्टि। बाणो की बौछार [को०]।

शरवाणि—सज्ञा पु० [स०] १ शर का अगला भाग। तीर का फल। २ वह जो शर चलाकर जीविका निर्वाह करता हो। तीर चलानेवाला सिपाही। ३ पैदल सिपाही। ४ बाण बनानेवाला (को०)।

शरवारण—सज्ञा पु० [स०] चर्म या ढाल जिससे तीरो की बौछार रोकी जाती है।

शरवृष्टि[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] बाणो की वर्षा [को०]।

शरवृष्टि[2]—सज्ञा पु० [स०] एक मरुत्वान् [को०]।

शरव्य—सज्ञा पु० [स०] वह जिसपर शर का सधान किया जाय। वह जो तीर का निशाना बनाया जाय। लक्ष्य।

शरव्यीकरण—सज्ञा पु० [स०] निशाना ठीक करना [को०]।

शरव्रात—सज्ञा पु० [स०] बाणों का समूह [को०]।

शरशोर—सज्ञा पु० [अ० शर, शर+फा० शोर] झगडा। फसाद। शोर गुल। उ०—फिर न बाकी रहे कोई शरशोर। मेह कर जब कबीर बदिछोर।—कबीर म०, पृ० ३७४।

शरसधान—सज्ञा पु० [स० शरसन्धान] निशाना लगाना [को०]।

शरसबाध—वि० [स० शरसम्बाध] बाणो से ढँका हुआ [को०]।

शरस्तंब—सज्ञा पु० [स० शरस्तम्ब] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन स्थान का नाम। २ एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम। ३ नरकुलो का सचय वा समूह (को०)।

शरह—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वह कथन या वर्णन जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिये किया जाय। २ टीका। भाष्य। व्याख्या।

यौ०—शरहनवीस, शरहनिगार=व्याख्याकार। टीकाकार। ३ दर। भाव। ४ दे० 'शरह लगान'।

यौ०—शरहनामा=दर या भाव की सूची। निर्खनामा। शरहबदी=दर या भाव निश्चित करना। मूल्य पर कट्रोल करना। शरह मुअय्यन। शरह लगान।

शरहमुअय्यन, शरहमुएयन—सज्ञा पु० [अ०] वह काश्तकार जो दवामी बदोबस्त के समय से मुकर्रर एक ही लगान देता हो। विशेष दे० 'काश्तकार'।

शरह लगान—सज्ञा स्त्री० [अ० शरह+हिं० लगान] भूकर की दर। जमीन की पडती। बिघौती।

शरा†—सज्ञा स्त्री० [अ० शरअ, या शरीअत का बहु व० 'शराए'] दे० 'शरअ'। उ० शरा का खेल मुहम्मद से कर कहैं, यही बिध तुरक तकरीर लावा।—तुरसी० श०, पृ० १५।

शराकत—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शरीक या सम्मिलित होने का भाव। २ साझा। हिस्सेदारी।

यो०—शराकतनामा=हिस्सेदारी की शर्तोंवाला दस्तावेज।

शराटि—सज्ञा स्त्री० [सं०] टिटिहरी।

शराटिका, शराति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ टिटिहरी। २ लज्जालुक। लजालू। लाजवती।

शराडि, शराति—सज्ञा स्त्री० [स०] टिटिहरी। टिट्टिभ।

शराध—सज्ञा पु० [स० श्राद्ध] दे० 'श्राद्ध'।

शरापा†—सज्ञा पुं० [सं० शाप] दे० 'शाप'।

शरापना†—क्रि० स० [स० शाप+ना (प्रत्य०)] किसी को शाप देना। सरापना।

शराफ—सज्ञा पुं० [अ० सर्राफ, गुज० श्राफ] दे० 'सराफ'।

शराफत—सज्ञा स्त्री० [अ० शराफत] १ शरीफ या सज्जन होने का भाव। भलमनसी। सज्जनता। २ कुलीनता। कुल की शुद्धता (को०)।

यौ०—शराफत पनाह=शराफत की रक्षा करनेवाला। शरीफ जनो को शरण देनेवाला। शराफत पेशा=उच्च वश का। कुलीन। शरीफ।

शराफा—सज्ञा पु० [अ० सर्राफह्] दे० 'सराफा'।

शराफी—सज्ञा स्त्री० [अ० सर्राफी] दे० 'सराफी'।

शराब—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. मदिरा। सुरा। वारुणी। मद्य। दारू। विशेष दे० 'मदिरा'।

क्रि० प्र०—खीचना।—ढालना।—पिलाना।—पीना।

मुहा०—शराब का दौर चलना=मदिरा पीने का क्रम चालू रहना। शराब पीते जाना।

२ हकीमो की परिभाषा मे, शरबत। जैसे—शराब बनफशा।

शराबखाना—सज्ञा पु० [अ० शराब+फा० खानह्] शराब बनने तथा बिकने की जगह। वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

शराबखोर—वि० [अ० शराब+फा० खोर] शराब पीनेवाला। मद्यप (को०)।

शराबखोरी—सज्ञा स्त्री० [अ० शराब+फा० खोर+ई (प्रत्य०)] १ शराब पीने का कृत्य। मदिरापान। २ शराब पीने की लत।

शराबख्वार—सज्ञा पु० [अ० शराब+फा० ख्वार] वह जो शराब पीता हो। मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

शराबख्वारी—सज्ञा स्त्री० [अ० शराब+फा० ख्वारी] शराब पीने की लत (को०)।

शराबजदा—वि० [अ० शराब+जदह्] मत्त। मतवाला।

शराबी—सज्ञा पु० [हिं० शराब+ई (प्रत्य०)] वह जो शराब पीता हो। शराब पीनेवाला। मद्यप।

शराबेतहूर—सज्ञा स्त्री० [अ०] स्वर्ग की पवित्र शराब (को०)।

शराबोर—वि० [फा०] जल आदि से बिल्कुल भीगा हुआ। लथपथ। तरबतर। जैसे—रग से शराबोर, पानी से शराबोर।

शरायुध—सज्ञा पु० [स०] धनुष (को०)।

शरारत—सज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर या पाजी होने का भाव। पाजीपन। दुष्टता। बदमाशी। नटखटी।

शरारती—वि० [अ० शरारत+ई (प्रत्य०)] पाजी। दुष्ट। नटखट।

शरारि—सज्ञा पुं० [स०] १. राम की सेना का एक यूथपति बंदर। २ 'शरारिमुख'।

शरारिमुख—सज्ञा पुं० [सं०] टिटिहरी नाम की छोटी चिडिया जो जलाशयों के पास रहती है।

शरारी—सज्ञा स्त्री० [स०] टिटिहरी नाम की छोटी चिडिया।

शरारीमुखी—सज्ञा स्त्री० [स०] कैंची जैसा एक प्राचीन औजार।

शरारु[1]—वि० [स०] १ हानिकारक। २. आघात या चोट पहुँचानेवाला (को०)।

शरारु[2]—सज्ञा पुं० [स०] चोट या हानि पहुँचानेवाला जानवर (को०)।

शरारोप—सज्ञा पु० [सं०] जिसपर शर चढाया जाता है, धनुष। जिसपर रखकर तीर चलाते है, कमान।

शरालि, शराली—सज्ञा स्त्री० [स०] टिटिहरी नाम की छोटी चिडिया।

शराव सज्ञा पुं० [स०] १ मिट्टी का एक प्रकार का पुरवा। कुल्हड। २ वैद्यक मे एक प्रकार का परिमाण या तौल जो चौंसठ तोले या एक सेर की होती थी। (वैद्यक मे सेर चौंसठ तोले का ही माना जाता है)। ३ ढकना। ढक्कन (को०)।

शरावक—सज्ञा पु० [स०] ढकना। ढक्कन (को०)।

शरावती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक नदी जो आजकल वाणगगा कहलाती हैं। २ एक प्राचीन नगरी जो लव की राजधानी थी।

शरावर—सज्ञा पुं० [स०] १ ढाल। २. कवच। वर्म। ३ तरकश। भाथा। तूणीर (को०)।

शरावरण—सज्ञा पु० [स०] ढाल जिससे तीर का वार रोकते हैं।

शरावाप—सज्ञा पु० [स०] धनुष। कमान। ३. तूणीर। भाथा (को०)।

शराविका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह फुसी जो ऊपर से ऊँचा और बीच मे गहरी हो। २. एक प्रकार का कोढ।

शराश्रय—सज्ञा पु० [स०] तरकस। भाथा। तूणीर (को०)।

शरास—सज्ञा पु० [सं०] धनुष। उ०—दीखते उनसे विचित्र तरग है, कोटि शक्रशरास होते भग हैं।—पाकेत, पृ० ६।

यौ०—शक्रशरास=इद्रधनुष।

शरासन—सज्ञा पुं० [स०] १. धनुष। कमान। चाप। २. महाभारत के अनुसार धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

शरास्य—सज्ञा पु० [स०] धनुष। कमान।

शरियत—सज्ञा स्त्री० [अ० शरीअत] दे० 'शरीअत'। उ०—उसको छोड राह विचार शरियत जिसहँ कहना। इन्साफ उपर सभी काम फरमूद के सूँ रहना।—दक्खिनी०, पृ० ५५।

शरिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का प्रासाद।

शरिष्ठ—वि० [स० श्रेष्ठ > शरिष्ठ (वरिष्ठ के वजन पर)] दे० 'श्रेष्ठ'। उ०—कन्या कहउ सुनौ मतिमता। जो शरिष्ठ सोई मम कता।—सबल (शब्द०)।

शरी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] एरका या मोथा नाम का तृण।

शरी[2]—वि० [स० शरिन्] बाणधारी। बाणयुक्त (को०)।

शरीअत—सज्ञा स्त्री० [अ० शरीअत] १ मुसलमानो के अनुसार वह पथ जो परमात्मा ने अपने भक्तो के लिये निश्चित किया हो। २. धर्मशास्त्र। (मुसल०)। ३. खुला हुआ और चौड़ा रास्ता। राजमार्ग (को०)।

यौ०—शरीअते मुहम्मदी=मुहम्मद साहब के चलाए हुए नियम वा कानून।

शरीक[1]—वि० [अ०] शामिल। सम्मिलित। मिला हुआ।

शरीक[2]—संज्ञा पु० १ वह जो किसी बात मे साथ रहता हो। साथी। २ साझी। हिस्सेदार। पट्टीदार। ३ सहायक। मददगार। ४ रिश्तेदार। सबंधी। (पश्चिम)।

यौ०—शरीके जलसा=सभा मे उपस्थित लोग। शरीके राय=सहमत। शरीके हाल सुख दुख का साथी।

शरीफ[1]—संज्ञा पु० [अ० शरीफ़] १ ऊँचे घराने का व्यक्ति। कुलीन मनुष्य। २ सभ्य पुरुष। भला मानुस भला आदमी। ३ मक्के के प्रधान अधिकारी की उपाधि।

शरीफ[2]—वि० १ पाक। पवित्र जैसे,—मिजाज शरीफ। कुरान शरीफ। २ भला। नेक (को०)। ३ शिष्ट। सभ्य (को०)। ४. प्रतिष्ठित। सम्मानित (को०)।

यौ०—शरीफजादा=कुलीन व्यक्ति। शिष्ट एव कुलीन परिवार का। शरीफजादी=कुलीन महिला। ऊँचे खानदान की स्त्री।

शरीफ[3]—संज्ञा पु० [अ० शेरिफ] ब्रिटिश शासनकाल में कलकत्ते, बबई और मद्रास मे सरकार की ओर से नियुक्त किए जानेवाले एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी।

विशेष—प्राय नगर के बडे बडे रईस और प्रतिष्ठित व्यक्ति कुछ निश्चित समय के लिये 'शराफ बनाए जाते हैं। इनके सुपुर्द शान्तिरक्षा तथा इसी प्रकार के और कुछ काम होते है। यूराप और अमेरिका आदि मे भी इस प्रकार के अधिकारी नियुक्त किए जाते है जिन्हे कुछ शासन सबधी कार्य भी सौपे जाते हैं। इनके अधिकार प्राय मजिस्ट्रेटो से कुछ मिलते जुलते होते हैं।

शरीफा—संज्ञा पुं० [स० श्रीफल या सीताफल] १. मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध फलवाला वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष प्राय. सारे भारतवर्ष मे फल के लिये लगाया जाता है और मध्य तथा पश्चिमी भारत के जगली प्रदेशो मे बहुत अधिकता से पाया जाता है। कहते है, यह वृक्ष वेस्ट-इंडीज से यहाँ आया है। इस वृक्ष की छाल पतली और खाकी रग की, और लकडी कुछ मटमैलापन लिए सफेद रग की होती है। इसके फल अमरूद के फल के सदृश, अडाकार तथा अनीदार होते है। इसमे एक प्रकार के त्रिदल फूल लगते है जो नीचे की ओर झुके हुए होते है। ये फूल तरकारी बनाने के काम मे आते हैं। यह वृक्ष गरमी के दिनो मे फूलता है और कार्तिक अगहन मे इसमे अमरूद के आकार के खाकी रग के गोल फल लगते हैं। यह वृक्ष बीजो से उगता है और बहुत जल्दी बढकर फूलने लगता है। इसके पौधे जब कुछ बड़े हो जाते हैं, तब उखाडकर दूसरे स्थान पर रोपे जाते है। इसकी छाल, जड़ और पत्तियो का व्यवहार औषधो में होता है। इसकी छाल बहुत दस्तावर होती है। इसके बीज मे से एक प्रकार का तेल भी निकलता है और इसमे तीन तरह के गोंद भी लगते हैं।

२ इस वृक्ष का फल जो अमरूद के सदृश गोल और खाकी रग का होता है। श्रीफल। सीताफल। रामसीता।

विशेष—इसके तल पर आँख के आकार के बडे बडे दाने होते हैं जिनके अदर सफेद गूदे मे लिपटे हुए काले लंबोतरे बीज होते है। इसका गूदा बहुत मीठा होता है, और इसी के लिये यह फल खाया जाता है। अकाल के दिनो मे गरीब लोग प्राय जगली शरीफे के फल खाकर निर्वाह करते हैं। वैद्यक मे इसे मधुर, हृदय के लिये हितकारी, बलवर्धक, वातकारक, शक्तिवर्धक, तृप्तिकारक, मासवर्धक और दाह, पित्त, रक्तपित्त, प्यास, वमन, रुधिरविकार आदि के लिये लाभदायक माना है।

शरीर[1]—संज्ञा पु० [स०] मनुष्य या पशु आदि के समस्त अगो की समष्टि। सिर से पैर तक के सब अगो का समूह। देह। तन। बदन। जिस्म।

विशेष—'शरीर' शब्द से प्राय आत्मा से भिन्न और सब अगो या अवयवो का ही भाव ग्रहण किया जाता है। पर हमारे यहाँ शास्त्रो मे शरीर के दो भेद किए गए हैं—सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर। बुद्धि, अहंकार, मन, पाचो ज्ञानेंद्रियाँ, पाँचो कर्मेंद्रियाँ और पाँच तन्मात्र के समूह को सूक्ष्म या लिंगशरीर कहते हैं। और, हाथ, पैर, मुँह, सिर, पेट, पीठ आदि अगो का समूह स्थूल शरीर कहलाता है। इसी स्थूल शरीर मे सूक्ष्म या लिंगशरीर का वास होता है। कहते हैं, जब जीव मर जाता है, तब उसका सूक्ष्म शरीर या लिंग शरीर उसके स्थूल शरीर मे से निकलकर परलोक को जाता है।

पर्या०—क्लेवर। गात्र। विग्रह। काय। मूर्ति। तनु। क्षेत्र। पिंड। स्कंध। पंजर। करण। वपु। पुद्गल।

२ शारीरिक शक्ति (को०)। ३. जीवात्मा (को०)। ४ शव (को०)।

शरीर[2]—वि० [अ०] [संज्ञा शरारत] पाजी। दुष्ट। नटखट।

शरीरक—संज्ञा पुं० [स०] १ शरीर। तन। गात्र। २ लघु या छोटा शरीर। ३. आत्मा (को०)।

शरीरकर्ता—संज्ञा पु० [स० शरीरकर्तृ] १. शरीर को बनानेवाला, परमेश्वर। सृष्टिकर्ता। २ पिता। जनक (को०)।

शरीरकृत—संज्ञा पुं० [स०] १ परमेश्वर। २ पिता (को०)।

शरीरग्रहण—संज्ञा पुं० [स०] शरीरयुक्त होना या जन्म लेना (को०)।

शरीरज[1]—संज्ञा पु० [स०] १ रोग। बीमारी। २. कामदेव। ३. कामवासना। कामेच्छा (को०)। ४ पुत्र। लडका। बेटा।

शरीरज[2]—वि० शरीर से उत्पन्न।

शरीरता—संज्ञा स्त्री० [स०] शरीर का भाव या धर्म।

शरीरत्याग—संज्ञा पु० [स०] मृत्यु। मौत।

शरीरत्व—संज्ञा पु० [स०] शरीर का भाव या धर्म। शरीरता।

शरीरदंड—संज्ञा पु० [स० शरीरदण्ड] १ शारीरिक दंड। काय-क्लेश (को०)।

शरीरदेश—सज्ञा पु० [स०] शरीर का कोई अवयव या अग [को०]।

शरीरधर्म—सज्ञा पु० [अ० शरीर+धर्म] चेष्टा। शरीरगत लक्षण। अनुभाव। (अ० फिजिक्स)। उ०—वह एक वृत्तिचक्र है, जिसके अतर्गत प्रत्यय, अनुभूति, इच्छा, गति या प्रवृत्ति, शरीरधर्म सबका योग रहता है।—चिंतामणि, भा० २, पृ० ८८।

शरीरधातु—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर का घटक एक मुख्य तत्व। २. बुद्ध के शरीर का अवशेष (जैसे दात, हड्डी, बाल आदि)

शरीरनिपात—सज्ञा पुं० [स०] मृत्यु [को०]।

शरीरपतन—सज्ञा पु० [स०] १. शरीर का धीरे धीरे क्षीण होना। २ मृत्यु। मौत।

शरीरपाक—सज्ञा पुं० [स०] शरीर का धीरे धीरे क्षीण होना।

शरीरपात—सज्ञा पु० [स०] देह का अंत या नाश। शरीरात। देहावसान। मृत्यु। मौत।

शरीरप्रभव—सज्ञा पुं० [स०] पिता। जनक [को०]।

शरीरबध—सज्ञा पुं० [सं० शरीरबन्ध] शरीर की बनावट शरीर का गठन या ढाँचा [को०]।

शरीरबंधक—सज्ञा पुं० [स० शरीरबन्धक] ओल या प्रतिभू [को०]।

शरीरबद्ध—वि० [सं०] शरीरधारी [को०]।

शरीरभाज्—वि० [सं०] शरीरी। शरीरधारी। जीवधारी।

शरीरभृत्—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो शरीर धारण किए हो। शरीरी। २. विष्णु। ३. जीवात्मा।

शरीरभेद—सज्ञा पुं० [स०] (आत्मा या जीव का) शरीर से भिन्न या अलग होना। मृत्यु [को०]।

शरीरयष्टि—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर का आकार। २ पतला या क्षीण शरीर [को०]।

शरीरयात्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जीवननिर्वाह के साधन। वे साधन जिससे जीवन का पोषण हो। उ०—वहाँ वे शरीरयात्रा के स्थूल स्वार्थ से सन्निकृष्ट होकर कलुषित नहीं होते।—रस०, पृ० १४८। २ जीवन। जिंदगी।

शरीररक्षक—सज्ञा पु० [स०] वह जो राजा आदि के साथ उसके शरीर की रक्षा करने के लिये रहता हो। अगरक्षक।

शरीररत्न—सज्ञा पु० [स०] भव्य एव आकर्षक शरीर [को०]।

शरीरवान्—सज्ञा पु० [स० शरीरवत्] शरीरवाला। देहधारी।

शरीरविज्ञान—सज्ञा पु० [स० शरीर+विज्ञान] शरीररचना के सभी अगो और उपागो के विवेचन से सबध रखनेवाला विज्ञान। शरीरशास्त्र। (अ० एनाटमी)। उ०—पशुओ के शरीर विज्ञान को भी वे भली भाँति जानते थे।—पू० म० भा०, पृ० २७१।

शरीरविमोक्षण—सज्ञा पुं० [स०] आत्मा का शरीर से अलग होना। शरीरत्याग [को०]

शरीरवृत्त—सज्ञा पुं० [स०] वे पदार्थ जो शरीर का सौंदर्य बढ़ाने के लिये आवश्यक हों।

शरीरवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जीवन निर्वाह करने की वृत्ति। जीविका। २. दे० 'शरीरस्थिति'।

शरीरवेग—सज्ञा पु० [स० शरीर+वेग] शरीर की प्राकृतिक आवश्यकता या माँग। उ०—'भाव' मन की वेगयुक्त अवस्थाविशेष है वह क्षुत्पिपासा कामवेग आदि शरीरवेगो से भिन्न है।—रस०, पृ० १६४।

शरीरवैकल्य सज्ञा पु० [स०] शरीर की विकलता। अस्वस्थता [को०]।

शरीरशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे शरीर के सब अवयवो नसो, नाडियो आदि का विवेचन होता है और जिससे यह जाना जाता है कि शरीर का कौन सा अग कैसा है और क्या काम करता है। शरीरविज्ञान।

शरीरशुश्रूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] शरीर की सेवा करना। अपनी देह की सेवा करना। व्यक्तिगत सेवा [को०]।

शरीरशोधन—सज्ञा पुं० [स०] वह औषध जो कुपित मल, पित्त, तथा कफ को हटाकर उर्द्ध्व अथवा अधोमार्ग से निकाल दे।

शरीरसपत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० शरीरसम्पत्ति] शरीर की समृद्धि। अच्छा स्वास्थ्य।

विशेष—शरीरसपत्ति के भीतर शरीर का सौंदर्य, गठन, उसकी महाप्राणता, स्वास्थ्य एव आकर्षक व्यक्तित्व आदि शरीररचना के सभी उत्तमोत्तम गुण आते हैं।

शरीरसबध—सज्ञा पु० [स० शरीरसम्बन्ध] १ विवाह का संबध। २ नरनारी का परस्पर लैंगिक सबध [को०]।

शरीरसस्कार—सज्ञा पु० [स०] १. गर्भाधान से लेकर अत्येष्टि तक के मनुष्य के वेदविहित सोलह सस्कार। २ शरीर की शोभा तथा मार्जन। नाना प्रकार के अनुष्ठानो द्वारा शरीर को निर्मल करना [को०]।

शरीरसाद—सज्ञा पुं० [स०] शरीर की क्लाति या थकान। शारीरिक थकावट [को०]।

शरीरस्थ—वि० [स०] १ शरीर मे रहनेवाला। २. जीवित। जीता हुआ।

शरीरस्थान—सज्ञा पुं० [स०] शरीर सबधी सिद्धात या तत्व [को०]।

शरीरस्थिति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शरीर का पालन पोषण या वृत्ति। २ भोजन करना। खाना [को०]।

शरीरात—सज्ञा पुं० [स० शरीरान्त] १ देह का अत अथवा नाश। मृत्यु। देहात। मौत। २ रोम। बाल। केश (को०)।

शरीरातर—सज्ञा पुं० [स० शरीरान्तर] १ दूसरा शरीर। दूसरा जन्म लेना। २ शरीर का भीतरी भाग [को०]।

शरीराधीन—वि० [स०] देह के वश मे रहनेवाला। शरीर का वशवर्ती उ०—रेणु वह किस दिगंत मे लीन। वेणु ध्वनि सी न शरीराधीन।—अपरा, पृ० १२१।

शरीरार्पण—सज्ञा पु० [स०] किसी कार्य के निमित्त अपने शरीर को इस प्रकार लगा देना मानो उसपर अपना कोई स्वत्व ही न हो। उ०—कियो शरीरार्पण परकाजा। सतन सेवन कियो दराजा।—रघुराज (शब्द०)।

शरीरावरण—सज्ञा पु० [स०] १ खाल। चमडा। २ वर्म। ढाल। ३ शरीर को ढकने की कोई चीज।

शरीरास्थि—सज्ञा पु० [स० शरीर+अस्थि] ककाल। पिंजर।

शरीरी[1]—सज्ञा पु० [स० शरीरिन्] [वि० स्त्री० शरीरिणी] १ वह जो शरीर धारण किए हो। शरीरवाला। शरीरवान्। २ आत्मा। जीव। ३ प्राणी। जीवधारी। ४ मनुष्य (को०)।

शरीरी[2]—वि० १ शरीरधारी। शरीरयुक्त। २ जीवित। जीता हुआ (को०)।

शरीष्ट—सज्ञा पु० [सं०] आम का पेड।

विशेष—सस्कृत व्याकरण के अनुसार यह शब्द साध्य नही है। इसका साधु रूप शरेष्ट है।

शरु[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ क्रोध। गुस्सा। २ वज्र। ३ बाण। तीर। ४ आयुध। शस्त्र। हथियार। ५ हिंसा। हत्या। मार डालना। ६ वह जो हिंसा करता हो। हिंसक। ७ महाभारत के अनुसार एक गधर्व का नाम। ८ विष्णु (को०)। ९ बाण चलाने का अभ्यास (को०)।

शरु[2]—वि० १ बहुत पतला। २ जिसका अगला भाग बहुत ही छोटा या नुकीला हो।

शरेज—सज्ञा पुं० [स०] कार्तिकेय।

शरेष्ट[1]—सज्ञा पुं० [सं०] आम। आम्र।

शरेष्ट[2]—वि० [सं० श्रेष्ठ] दे० 'श्रेष्ठ'।

शरै‡—सज्ञा स्त्री० [अ० शरअ] दे० 'शरअ'। उ०—परदे पैगबर की सुनी, कायम करी साबित शरै।—तुरसी० श०, पृ०, २६।

शर्क—सज्ञा पु० [अ० शर्क] पूर्व। पूरब दिशा।

शर्कर—सज्ञा पुं० [स०] १ ककड। २ बालू का कण। ३ जल मे उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का प्राणी। ४ पुराणानुसार एक देश का नाम। ५ इस देश का निवासी। ६ दे० 'शर्करा'। ७ एक तरह का ढोल (को०)।

शर्करक—सज्ञा पु० [सं०] मीठा नीबू। शरबती नीबू।

शर्करकद—सज्ञा पु० [स० शर्करकन्द] दे० शकरकद'।

शर्करजा—सज्ञा स्त्री० [स०] चीनी।

शर्करा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शक्कर। चीनी। खाँड। २ बालू का कण। ३ पथरी नामक रोग। ४ ककड। ५ ठीकरा। ६ ककरीली मट्टी। ककड से युक्त मिट्टी (को०)। ७ खड। टुकडा (को०)। ८. पुराणानुसार एक देश का नाम जो कूर्म्म चक्र के पुच्छ भाग मे है। ९. एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमे त्रिदोष के कारण मास, शिरा और स्नायु मे गाँठ उत्पन्न होती है। गाँठ के फूटने से शहद, घी और चर्बी के समान पदार्थ निकलता है और वायु के बढने से अनेक गाँठें उत्पन्न होती हैं।

शर्कराकर्षी—वि० [स० शर्कराकर्षिन्] बालुकायुक्त। बालू, ककड आदि को उडाने या खीचनेवाला [को०]।

शर्कराक्ष—सज्ञा पुं० [स०] चरक के अनुसार एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शर्कराचल—सज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार चीनी का वह पहाड जो दान करने के लिये लगाया जाता है।

शर्कराधेनु—सज्ञा स्त्री० [स०] पुराणानुसार चीनी की वह गौ जो दान करने के लिये बनाई जाती है।

शर्कराप्रभा—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनो के अनुसार एक नरक का नाम।

शर्करा प्रमेह—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का प्रमेह जिसमे मूत्र का रग मिस्री का सा हो जाता है और उसके साथ शरीर की शर्करा निकलती है।

शर्करार्बुद—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का रोग। विशेष दे० 'शर्करा'—९।

शर्कराल—वि० [स०] जो ककड से भरी हुई हो (हवा)। ककड़ीली (आँधी) [को०]।

शर्करावत्[1]—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग। विशेष दे० 'शर्करा'—९।

शर्करावत्[2]—वि० ककरीला। कर्कर से युक्त। बालुकामय [को०]।

शर्करा सप्तमी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैशाख शुक्ला सप्तमी।

विशेष—पुराणानुसार उस दिन सुवर्ण का पूजन किया जाता है और उसके आगे घडे में चीनी भरकर रखी जाती है।

शर्करासव—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का मद्य या शराब।

विशेष—यह चीनी से तैयार की जाती है। चरक के अनुसार यह स्वादिष्ट, सुगधित, पाचक और वायुरोगनाशक है।

शर्करासुरभि—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शर्करासव'।

शर्करिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शर्करिकी] १ शर्करायुक्त। शर्कर सहित। २ ककडीला [को०]।

शर्करिल—वि० [स०] दे० 'शर्करावत्'।

शर्करी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वर्णवृत्त के अतर्गत चौदह अक्षरो का एक वृत्त। इसके कुल १६, ३८४ भेद होते हैं जिनमे १३ मुख्य हैं। २ नदी। दरिया। ३ मेखला। ४ लिखने की कलम। लेखनी।

शर्करी[2]—वि० [स० शर्करिन्] पथरी नामक रोग से आक्रात। शर्करा रोग से ग्रस्त [को०]।

शर्करीय—वि० [सं०] शर्करा सबधी। चीनी का।

शर्करोदक—सज्ञा पुं० [स०] १ चीनी घोला हुआ पानी। शरबत। २ वह शरबत जिसमे इलायची, लौंग, कपूर और गोल मिर्च मिली हो।

विशेष—वैद्यक मे इसे बलवर्धक, रुचिकारक, वायु, पित्त तथा रक्तदोष का नाशक और वमन, मूर्छा, दाह और तृष्णा आदि को शमन करनेवाला माना गया है।

शर्की—वि० [अ० शर्की] पूरब का। पूर्वीय [को०]।

शर्कुर—वि० [स०] तरुण। युवक। जवान [को०]।

शर्कोटि—सज्ञा पु० [स०] सर्प। साँप।

शर्जा—सज्ञा पु० [फा० शर्जह्] चीता। शेर। उ०—कमर के क्यो कहूँ इसके यो शर्जा। कमर को किए सामने शर्जा भी हुर्जा।—दक्खिनी०, पृ० २८०।

शर्ट—सज्ञा स्त्री० [अ०] पहनने का सिला हुआ एक कपडा। कमीज।

शर्णचापिलि—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रर्वतक ऋषि का नाम।

शर्त—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दो व्यक्तियो या दलो मे होनेवाली ऐसी प्रतिज्ञा कि अमुक बात होने या न होने पर हम तुमको इतना धन देंगे, अथवा तुमसे इतना धन लेंगे। बाजी जिसमे हार जीत के अनुसार कुछ लेन देन भी हो। बाजी। दाँव। बदान।

क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—बाँधना।—रहना।—लगना।—हारना।

२. किसी कार्य की सिद्धि के लिये आवश्यक या अपेक्षित होनेवाली बात या कार्य जिसके न होने से उस काम में बाधा उपस्थित हो। जैसे,—मैं चलने के लिये तैयार हूँ, पर शर्त यह है कि आप भी मेरे साथ चले। (ख) हम इस शर्त पर रुपया देंगे कि आप उसके जिम्मेदार हो। (ग) उन्होने कई ऐसी शर्तें लगाई हैं कि जिनके कारण काम होना बहुत कठिन है। ३. सधि या समझौता आदि के अगभूत नियम। जैसे,—भारत और रूस की सधि की शर्तें इस प्रकार हैं।

क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।

मुहा०—शर्त बदकर सोना=देर तक या लंबी नीद सोना। शर्त बदना या बाँधना=बाजी रखना या लगाना। शर्त होना=शर्त या बाजी करना।

शर्तबद—वि० [अ० शर्त+फा० बद] १. शर्त से युक्त या बँधा हुआ। २. प्रतिज्ञापत्र के अनुसार निश्चित समय तक अनिवार्य मजदूरी करनेवाला। दे० 'गिरमिटिया'।

शर्तिया[1]—क्रि० वि० [अ० शर्तियह्] शर्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढतापूर्वक। जैसे,—मैं शर्तिया कहता हूँ कि आपका काम जरूर हो जायगा।

शर्तिया[2]—वि० १ बिलकुल ठीक। निश्चित। जैसे,—यह तो इस बीमारी की शर्तिया दवा है। २. अनिवार्य। लाजिम।

शर्ती[1]—वि० [अ०] १ शर्तवाला। २ शर्तसंबधी [को०]।

शर्ती[2]—क्रि० वि० दे० 'शर्तिया'।

शर्दि—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन नगर का नाम।

शर्द्धजह, शर्धजह—सज्ञा पु० [स० शर्द्ध+जह] १. वह जो वायुकारक हो। २ माष। उरद [को०]।

शर्द्ध, शर्ध—सज्ञा पु० [स०] १ तेज। शक्ति। २. सेना। फौज। ३ अपान वायु का त्याग करना। पादना।

शर्द्धन, शर्धन—सज्ञा पु० [स०] १ अधोवायु। पाद। २ पादने की क्रिया। पादना (को०)।

शर्बत—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'शरबत'।

शर्बती—सज्ञा पु० [अ०] दे० 'शरबती'।

शर्म[1]—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शरम'। उ०—मुद्रा संतोष शर्म पति झोली। गुरमुखि जोगी तत्तु विरोली।—प्राण०, पृ० १०६।

मुहा०—शर्म आना, शर्म करना=लाज या लिहाज करना। शर्म की बात=लज्जाकारक कार्य। शर्म से गठरी हो जाना=(१) नई बहू का लाज से सिकुडकर बैठना। (२) लज्जा से गड जाना। शर्म और दया भून खाना=शर्म को जान बूझकर छोड देना। उ०—उस छोकरी ने तीखी चितवन करके कहा—ओ मरदूये शर्म और हय भून खाई। आँखें बंद कर ले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० १४६।

यौ०—शर्मगाह=(१) गोपनीय या आवृत किए जानेवाले अंग। भग। योनि। शर्मनाक=लज्जाजनक। शर्मिंदा करनेवाला। उ०—प्रत्येक शर्मनाक और जलील स्थिति मे वह मनुष्य की निकृष्ट से निकृष्ट भावनाओ का एक कलाकार की पैनी दृष्टि से विश्लेषण करता था।—प्रेम० और गोर्की, पृ० १०। शर्मसार=लज्जित। शर्मिंदा। उ०—हव्वा और होर आदम कहे यूँ पुकार। हमे तो मेरे मुक सूँ है शर्मसार।—दक्खिनी०, पृ० ३३४। शर्मेहजूर, शर्मेहुजूरी=दे० 'शरम हजूरी।'

शर्म[2]—सज्ञा पु० [स०] १. सुख। आनद। २. वह जो सुखी हो। ३ गृह। घर। ४ आशीर्वाद। दुआ। (को०)। ५ रक्षण। रक्षा। आश्रय (को०)।

शर्मण्य—वि० [स०] भला। रक्षक। शरण देनेवाला [को०]।

शर्मद, शर्मप्रद[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शर्मदा] आनद देनेवाला। सुखदायक। उ०—कृष्णचद को प्रिय अधिकारी। शर्मद धरा धर्म धुरधारी।—कबीर (शब्द०)। (ख) तीर शर्मदा नर्मदा करत भयो नृप वास।—(शब्द०)।

शर्मद, शर्मप्रद[2]—सज्ञा पु० विष्णु का एक नाम।

शर्मन्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शर्मा'।

शर्मर—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का वस्त्र वा पहनावा।

शर्मरा, शर्मरी—सज्ञा स्त्री० [स०] दारु हल्दी।

शर्मा[1]—सज्ञा पुं० [स० शर्मन्] ब्राह्मणो की उपाधि। जैसे,—ब्रह्मदेव शर्मा।

शर्मा[2]—वि० आनदित। प्रसन्न। सुखी।

शर्माऊ[1]—वि० [फा० शर्म+हिं० आऊ (प्रत्य०)] शर्मानेवाला। शर्मीले स्वभाव का।

शर्माख्य—सज्ञा पु० [स०] मसूर।

शर्माना—क्रि० अ०, क्रि० स० [फा० शर्म+हिं० आना] दे० 'शरमाना'।

शर्मालू—वि० [फा० शर्म+हिं० आलू (प्रत्य०)। शर्मानेवाला। शरमीला।

शर्माशर्मी—क्रि० वि० [फा० शर्म] लज्जावश। लज्जापूर्वक।

शर्मिंदा—वि० [फा० शर्मिंदह्] दे० 'शरमिंदा'।

शर्मिष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] दैत्यो के राजा वृषपर्वा की कन्या का नाम

जो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी। विशेष दे० 'देवयानी'।

शर्मीला—वि० [फा० शर्म+हिं० ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० शर्मीली] दे० 'शरमीला'।

शर्य'—वि० [स०] हिंस्र। हिंसक। घातक [को०]।

शर्य[2]—सज्ञा पुं० १ शत्रु। योद्धा। २ बाण।

शर्यण—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक जनपद का नाम जो कुरुक्षेत्र के अंतर्गत था।

शर्यणावत्—सज्ञा पुं० [स०] शर्यण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर जो तीर्थ माना जाता था।

शर्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रात्रि। रात। २ उँगली। अँगुली। ३ तीर इषु। बाण।

शर्याति—सज्ञा पुं० [स०] मनुष्य। आदमी।

शर्याति—सज्ञा पु० [स०] १ एक राजा का नाम जिसकी कन्या 'सुकन्या' महर्षि च्यवन को ब्याही गई थी। २ भागवत के अनुसार वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

शर्र—सज्ञा पुं० [अ०] १ झगडा। कलह। २ दुष्टता। बुराई [को०]।

यौ०—शर्रोफसाद=कलह। झगडा।

शर्व—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। शकर। महादेव। उ०—यो थल के बिनु कष्ट सो नाचत शर्व हरौ दुख सर्व तुम्हारे। —भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० १३५। २ विष्णु।

शर्वक—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शर्वपत्नी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. लक्ष्मी।

शर्वपर्वत—सज्ञा पु० [स०] कैलास।

शर्वर—सज्ञा पुं० [स०] १. अधकार। अँधेरा। २ कामदेव। ३ सध्या।

शर्वरी'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रात। रात्रि। निशा। २ साँझ। सध्या। शाम। ३ हल्दी। दरिद्रा। ४ स्त्री। औरत।

शर्वरी[2]—सज्ञा पु० [स० शर्वरिन्] बृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से चौंतीसवाँ सवत्सर। कहते हैं, इस सवत्सर में दुर्भिक्ष का भय होता है।

शर्वरीक—वि० [स०] नुकसान करनेवाला। हानिकारक।

शर्वरीकर—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ चद्रमा (को०)।

शर्वरीदीपक—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शर्वरीनाथ—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा [को०]।

शर्वरीपति—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। २ शिव। महादेव।

शर्वरीश, शर्वरीश्वर—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शर्वला, शर्वली—सज्ञा स्त्री० [सं०] तोमर नामक अस्त्र। लौहदंड [को०]।

शर्वाक्ष—सज्ञा पु० [स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

शर्वाचल—सज्ञा पुं० [स०] कैलास।

शर्वाणी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शर्शरीक'—सज्ञा पु० [सं०] १. हिंसक। २ खल। दुष्ट। पाजी। ३. घोडा। ४. अग्नि।

शर्शरीक[2]—वि० दुष्ट [को०]।

शलकट—सज्ञा पु० [स० शलङ्कट] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलकु—सज्ञा पुं० [स० शलङ्कु] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलग—सज्ञा पुं० [स० शलङ्ग] १ लोकपाल। राजा। प्रभु। २ एक प्रकार का नमक।

शलदा—सज्ञा पु० [स०] पाताल गारुडी। जल जमुनी। छिरेंटा। छिरहटा।

शल'—सज्ञा पुं० [स०] १ कस के एक मल्ल का नाम। उ०—और मल्ल मारे शल तोशल बहुत गए सब भाज।—सूर (शब्द०)। २ ब्रह्मा। ३ ऊँट। ४ एक प्रकार का वृक्ष। ५ शल्यराज का एक नाम। विशेष दे० 'शल्यराज'। ६ भाला। ७. साही का काँटा। उ०—ठीक, यहाँ पर शल्य छोडकर शल गया। नाम रहे पर काम बराबर चल गया।—साकेत, पृ० १३७। ८ शृगी या भृगी जो शिव के पारिषद् है। ९ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ११ वासुकी के वश के एक नाग का नाम।

शल[2]—वि० [अ० शल्ल] निश्चेष्ट। सुन्न। जो हिलाया न जा सके। उ०—हाथ लट जाय, शल हयेलो हो। उँगलियाँ पोर पोर कट जावें।—चुभते०, पृ० ३९।

शलक—सज्ञा पु० [स०] १ मकडी। २ ताल। ताड वृक्ष। ३. साही का काँटा। ४ पत्ती (को०)।

शलकर—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शलगम—सज्ञा पुं० [फा० शलगम] दे० 'शलजम'।

शलजम—सज्ञा पु० [फा०] गाजर की तरह का एक प्रकार का कद शलगम।

विशेष—यह कद प्राय सारे भारत मे जाडे के दिनो मे होता है यह गाजर से कुछ बडा और प्राय गोल होता है और तरकारी, अचार और मुरब्बे आदि बनाने के काम आता है यूरोप मे इससे चीनी भी निकाली जाती है।

शलजमी—वि० [फा० शलजम] १ शलजम जैसा या शलजम से मिलता जुलता। २ शलजम के समान (रग)।

यौ०—शलजमी आँखें=बडी आँखें।

शलभ—सज्ञा पु० [स०] १ टीडी। टिड्डी। शरभ। २ एक असुर का नाम। ३. पतगा। फतिंगा। उ०—किंतु शलभवर। जसे न छेडो, सोने दो उसको उस पार। वही स्वप्न मे पा लेगी वह अपने प्रियतम का उपहार।—वीणा, पृ० ३३।

विशेष—कविता मे यह प्रेमी का प्रतीक माना जाता है।

४ छप्पय के ३१ वें भेद का नाम। इसमे ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

शलभता—सज्ञा स्त्री० [स०] शलभ का भाव या धर्म।

शलभत्व—सज्ञा पु० [स०] शलभ का भाव या धर्म। शलभता।

शलल—सज्ञा पु० [स०] १ साही। २ साही का काँटा।

शललचचु—सज्ञा पुं० [स० शललचञ्चु] शल्लकीलोम या साही के काँटे की लेखनी [को०]।

शलाकधूर्त—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो शलाकाओं आदि की सहायता से पक्षियों को पकड़ता हो। चिड़ीमार। बहेलिया। २ बेईमान जुआड़ी (को०)।

शलाका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ लोहे या लकड़ी आदि की लंबी सलाई। सलाख। सींख। २ वह सलाई जिससे घाव की गहराई आदि नापी जाती है। ३. बाण। शर। तीर। ४ अस्थि। हड्डी। ५. मदनवृक्ष। मैनफल। ६ तिनका। तृण। ७ शारिका पक्षी। मैना। ८ सलई। शल्लकी वृक्ष। ९ सुरमा लगाने की सलाई। १० खेलने का पासा। ११ वच। वचा। १२ रामायण के अनुसार एक प्राचीन नगरी का नाम। १३ नली की हड्डी। १४ मतदान के लिये पर्चियों की भाँति काम में आनेवाली लकड़ी की सलाइयाँ।—उ०—एक पुरुष सदस्यों को रंग रंग की लकड़ी की सलाकाएँ बाँट देता था और समझा देता था कि प्रत्येक रंग का अर्थ क्या है।—हिंदु० स०, पृ० २५६। १५ सींग। नेजा। भाला (को०)। १६. तीली। जैसे, छत्रशलाका (को०)। १७ तूलिका। कूँची (को०)। १८. साही नामक जानवर (को०)। १९ अंकुर। अँखुवा (को०)। २० उँगली। जैसे, शलाकानख (को०)। २१. दाँत साफ करने की कूँची (को०)। २२ शासक। शास्ता (को०)। २३ कील। खूँटी (को०)। २४ पिंजड़े या खिड़की आदि का छड़ (को०)। २५ रेखा खींचने की नोकदार सिलाई (को०)।

शलाका ग्राहापक—संज्ञा पु० [सं०] मतदान के लिये बँटी हुई शलाकाओं को एकत्रित करनेवाला अधिकारी। उ०—जो अधिकारी शलाकाओं को फिर एकत्रित करते थे उनका नाम शलाका गाहापक होता था।—हिंदु० स०, पृ० २१०।

शलाकाधूर्त—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शलाकधूर्त'।

शलाका परीक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] विद्यार्थी की वह परीक्षा जिसमें ग्रंथ में शलाका डालने से जो पृष्ठ सामने आ जाय उसी की परीक्षा ली जाती थी।

शलाकापुरुष—संज्ञा पु० [सं०] १. बौद्धों जैनों के तिरसठ अवतारी पुरुष। देवपुरुष। जैसे, त्रिषष्ठि शलाकापुरुष चरित्र। उ०—कभी किसी शलाकापुरुष ने ब्राह्मण कुल में जन्म नहीं लिया।—हिंदु० स०, पृ० २७३।

विशेष—इन शलाकापुरुषों में १२ चक्रवर्ती, २४ जिन, ९ वासुदेव, ९ बलदेव और ९ प्रतिवासुदेव माने जाते हैं। इस प्रकार ६३ शलाकापुरुष माने गए हैं।

शलाकायंत्र—संज्ञा पुं० [सं० शलाकायन्त्र] एक नोकदार शल्योपकरण (को०)।

शलाख—संज्ञा स्त्री० [फा० सलाख] दे० 'सलाख'।

शलाट—संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक के अनुसार दो हजार पल का परिमाण। शकट।

शलाटु[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ कच्चा फल। २. बेल। बिल्व। ३ एक प्रकार का कंद (को०)।

शलाटु[2]—वि० जो पका न हो। कच्चा। अपक्व (को०)।

शलातुर—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद का नाम जो पाणिनि का निवासस्थान था।

शलायल—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शलाभोलि—संज्ञा पु० [सं०] ऊँट।

शलालु—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सुगंधिद्रव्य।

शली—संज्ञा स्त्री० [सं०] साही नामक जंतु जिसके सारे शरीर पर काँटे होते हैं।

शलीता—संज्ञा पु० [देश०] एक प्रकार का वस्त्र। दे० 'सलीता'।

शलूका—संज्ञा पु० [फा०] आधी या पूरी बाँह की एक प्रकार की कुरती जो प्रायः स्त्रियाँ पहना करती हैं।

शल्क—संज्ञा पु० [सं०] १ टुकड़ा। खंड। २ छिलका। ३ वृक्ष की छाल। वल्कल। ४ मछली के ऊपर का छिलका।

शल्कल—संज्ञा पु० [सं०] १ मछली का छिलका। २ वृक्ष की छाल। ३ छिलका ४. खंड। टुकड़ा।

शल्कली—संज्ञा पुं० [सं० शल्कलिन्] मछली। मत्स्य। मीन।

शल्की—संज्ञा पुं० [सं० शल्किन्] मत्स्य। मीन (को०)।

शल्प—संज्ञा पु० [देश०] १ बाढ़। २. बौछार। भरमार। ३. धड़ाका। कड़ाका।

शल्पदा, शल्पपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

शल्मलि—संज्ञा पु० [सं०] शाल्मली वृक्ष। सेमल।

शल्मली—संज्ञा स्त्री० [सं०] शाल्मली वृक्ष।

शल्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ मद्र देश के एक राजा का नाम।

विशेष—राजा पांडु की दूसरी स्त्री माद्री (जिसके पुत्र नकुल और सहदेव थे) के ये भाई थे और इस संबंध से ये पांडवों के मातुल होते थे। द्रौपदी के स्वयंवर के समय ये भीमसेन के साथ मल्लयुद्ध में हार गए थे। कुरुक्षेत्र के युद्ध में ये पांडवों की ओर से लड़ने के लिये जा रहे थे पर दुर्योधन ने अपनी चातुरी से इन्हें अपनी ओर कर लिया था। फलस्वरूप इन्होंने दुर्योधन का ही पक्ष ग्रहण किया था। युद्ध के १६ वें और १७ वें दिन महावीर कर्ण के ये सारथी हुए थे। कर्ण की मृत्यु के अनंतर १८ वें दिन ये सेनापति बनाए गए थे और युधिष्ठिर द्वारा मारे गए थे।

२ एक प्रकार का बाण। ३. अस्त्रचिकित्सा। चीरफाड़ का इलाज। (अँ०) सर्जरी। उ०—सुश्रुत में शल्यचिकित्सा का चरम उत्कर्ष देखने को मिलता है।—पू० म० भा०, पृ० २६७। ४ छप्पय के ५६ वें भेद का नाम। इसमें १५ गुरु और १२२ लघु, कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५. हड्डी। अस्थि। ६ अंजन लगाने की सलाई। शलाका। ७. मैनफल। मदन वृक्ष। ८. सफेद खैर। ९. शिलिंध मछली। १०. लोध। लोध्र वृक्ष। ११ बेल। बिल्व वृक्ष। १२ साही नामक जंतु। उ०—ठीक, यहाँ पर शल्य छोड़कर शल

गया। नाम रहै पर काम बराबर चल गया। —साकेत, पृ० १३७। १३ साँग नामक अस्त्र। १४ दुर्वाक्य। १५ पाप। १६ जमीन मे गडी हुई जानवरो आदि की हड्डियाँ जो मकान बनाने के समय निकालकर फेंकी जाती है। १७ जैन सिद्धात के अनुसार वे भ्रमात्मक धारणाएँ जिनमे बचना धर्माचरण के लिये अनिवार्य माना गया है। उ०—व्रत या धर्म के पालन के लिये तीन तीन शल्यो का अभाव आवश्यक है। —हिंदु स०, पृ० २३२। १८ वे पदार्थ जिनसे शरीर मे किसी प्रकार की पीडा या रोग आदि उत्पन्न होता है।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार ये शल्य दो प्रकार के होते है—शरीर और आगतु। यदि वात, पित्त आदि के दोष से रोएँ, नाखून, शरीर के धातु, अन्न, मल आदि कुपित होकर पीडा या रोग उत्पन्न करें तो उसे शारीर शल्य कहते है। और इनके अतिरिक्त जो और बाहरी पदार्थ (लोहा, लकडी, सीग आदि) शरीर मे पीडा या रोग उत्पन्न करें, तो उन्हे आगतु शल्य कहते हैं।

१९ काँटा। खपची। २० कील। मेख। खूँटी (को०)। २१ घेरा। बाड (को०)।

शल्यकठ—सज्ञा पु० [स० शल्यकण्ठ] साही नामक जतु।

शल्यक—सज्ञा पु० [स०] १ साही नामक जतु। २ मैनफल। मदन वृक्ष। ३ सफेद खैर। ४ लाल खैर। ५ एक प्रकार की मछली। ६. लोध वृक्ष। ७ बेल। बिल्व। ८ भाला (को०)। ९ काँटा (को०)। १० व्याध। बहेलिया (को०)।

शल्यकर्तन—सज्ञा पु० [स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

शल्यकर्त्ता—सज्ञा पु० [स० शल्यकर्तृ] वह जो शस्त्रचिकित्सा करता हो। चीरफाड़ का इलाज करनेवाला।

शल्यकी—सज्ञा स्त्री० [स० शल्लकी ? या स० शल्यक(=साही)+ई (स्त्री० प्रत्य०)] साही नामक जतु। उ०—रोम राम बेध्या तनु बाणन। भया शल्यकी सरिस दशानन।—रघुराज (शब्द०)।

शल्यक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] चीरफाड का इलाज। शस्त्रचिकित्सा।

शल्यचिकित्सा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शल्यक्रिया'।

शल्यज—वि० [स०] व्रण या घाव आदि से उत्पन्न।

शल्यज नाडीव्रण—सज्ञा पु० [स०] नाडी मे होनेवाला एक प्रकार का व्रण या घाव।

विशेष—जब किसी घाव मे काँटा या ककड आदि पडकर किसी नाडी मे पहुँच जाता और वही रह जाता है, तब जो व्रण होता है, वह शल्यज नाडीव्रण कहलाता है। इसमे घाव मे से गरम खून के साथ मवाद निकलता है।

शल्यज मूत्रकृच्छ्र—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का मूत्रकृच्छ्र। विशेष दे० 'मूत्रकृच्छ्र'।

शल्यतत्र—सज्ञा पु० [स० शल्यतन्त्र] सुश्रुत के अनुसार आठ प्रकार के तत्रो मे से एक तत्र जिसमे चीरफाड के यत्रो, शस्त्रो, क्षारो और अग्निकर्म आदि के प्रयोगो का वर्णन होता है।

शल्यदा—सज्ञा स्त्री० [स०] मेदा नाम की ओषधि।

शल्यपर्णिका, शल्यपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] मेदा नाम की ओषधि।

शल्यपर्व—सज्ञा पुं० [स० शल्यपर्वन्] महाभारत का नवाँ पर्व (को०)।

शल्यप्रोत—वि० [स०] जिसके शरीर मे बाण घुसा हो।

शल्यलोम—सज्ञा पु० [स० शल्यलोमन्] साही नामक जतु का काँटा।

शल्यविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] चीरफाड की चिकित्सा। सर्जरी।

शल्यशालक—सज्ञा स्त्री० [स०] फोडो आदि की चीरफाड का काम।

शल्यशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] १ चिकित्सा शास्त्र का वह अग जिसमे शरीर मे गडे हुए काँटों आदि के निकालने का विधान रहता है। २ दे० 'शल्यक्रिया'।

शल्यहृत्—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो कुश कटक आदि को काटकर साफ कर दे। २ शल्यचिकित्सक। चीरफाड करनेवाला चिकित्सक। (अं०) सर्जन।

शल्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेदा नाम की ओषधि। २. नागबल्ली नाम की लता। ३ विकंकत वृक्ष। ४ एक प्रकार का नृत्य (को०)।

शल्यारि—सज्ञा पु० [स०] शल्य को मारनेवाले युधिष्ठिर।

शल्याहरण—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शल्योद्धार'।

शल्यित—वि० [स०] शल्ययुक्त। विद्ध (को०)।

शल्योद्धरण—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शल्योद्धार'।

शल्योद्धार—सज्ञा पु० [स०] १ शरीर मे लगे हुए बाण या काँटे आदि निकालने की क्रिया। २ वास्तुविद्या के अनुसार नया मकान बनवाने के समय जमीन को साफ करना और उसमें की हड्डियाँ आदि निकलवाकर फेकवाना।

शल्ल[1]—सज्ञा पु० [स०] १. चमडा। २ वृक्ष की छाल। ३ मेढक।

शल्ल[2]—वि० [अ०] १ (अग) जो दुर्बलता या थकावट आदि के कारण बिल्कुल शिथिल, सुस्त या सुन्न हो गया हो। २. काहिल। आलसी (को०)।

शल्लक—सज्ञा पु० [स०] १ शोण वृक्ष। सलई। २ साही नामक जतु। ३. चमडा।

शल्लकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. साही नामक जतु। २ सलई का वृक्ष।

शल्लकीद्रव—सज्ञा पु० [स०] शिलारस। सल्हक।

शल्लकीरस—सज्ञा पुं० [स०] शिलारस। सिल्हक।

शल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] नाव। नौका।

शल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ साही नामक जतु। २. शल्लकी का वृक्ष। सलई।

शल्व(पु)—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शाल्व'। उ०—निराकरन जब भीष्म किय, तब अंबका उदास। लौट गई अपने भवन, शल्व भूप के पास।—रघुराज (शब्द०)।

शव—सज्ञा पु० [स०] १ मृत शरीर। प्राणरहित देह। लाश। मुर्दा।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग केवल मनुष्य के मृत शरीर के लिये होता है।

२ जल । पानी ।

शवकर्म—सज्ञा पु० [स० शवकर्मन्] मृतक कर्म । दाह आदि मृतक सस्कार ।

शवकाम्य—सज्ञा पुं० [स०] कुक्कुर । कुत्ता ।

शवकृत्—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण का एक नाम ।

शवता—सज्ञा स्त्री० [सं०] निष्प्राणता । निर्जीवता । उ०—जिनमे सब कुछ ले लेना हो हत । बची क्या शवता ।—बी० श० महा०, पृ० १७३ ।

शवदहन, शवदाह—सज्ञा पु० [स०] मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया या भाव ।

यौ०—शवदहन स्थान, शवदाह स्थान = मरघट । मसान ।

शवधान—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक प्रदेश का नाम जिसे शरधान भी कहते है ।

शवभस्म—सज्ञा पु० [स०] चिता का भस्म । मरघट की राख । उ०—शवभस्म विभूषित भूरि गण ।—रघुनाथ (शब्द०) ।

शवमदिर—सज्ञा पु० [स०] श्मशान । मरघट ।

शवयान—सज्ञा पु० [स०] अरथी जिसपर शव ले जाते है । टिकठी ।

शवर—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शवरी] १ एक पहाडी जगली जाति ।

विशेष—इस जाति के लोग मोरपख से अपने को सजाते है । ये लोग अब तक मध्यप्रदेश और हजारीबाग आदि जिलो मे रहते और 'सौर' कहलाते हैं ।

२. शव । ३ जल ।

शवरथ—सज्ञा पु० [स०] शवयान । अरथी । टिकठी ।

शवरलोध्र—सज्ञा पु० [स०] सफेद लोध ।

शवरालय—सज्ञा पु० [स०] शवरो का गृह । पर्णशाला (को०) ।

शवरी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी ।

विशेष—सीता जी को ढूँढते हुए रामचद्र जी इस तपसी के आश्रम मे पहुँचे थे । इसने राम की अभ्यर्थना की थी और उन्ही की अनुमति से उनके सामने ही चिता मे प्रविष्ट होकर यह स्वर्ग को सिधारी थी ।

२ शवर जाति की स्त्री ।

शवल[1]—सज्ञा पु० [स०] १. चीता । चित्रक । २ जल । पानी ।

शवल[2]—वि० [वि० स्त्री० शवली] चितकबरा । चित्तल । चीतल ।

शवला—सज्ञा स्त्री० [स०] चितकबरी गाय ।

शवलित—वि० [स०] १. मिश्रित । मिला हुआ । २ चित्रविचित्र । चित्रकर्बुर । चितकबरा ।

शवली[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] चितकबरी गाय ।

शवली[2]—वि० चितकबरी । उ०—अथवा मधुकरो की शवली अवली नवली नलिनी के चारो ओर गूँजती जान पडती थी ।—श्यामा०, पृ० २५ ।

शवशय—सज्ञा पुं० [स०] कमल (को०) ।

शवशयनाथ—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु (को०) ।

शवशयन—सज्ञा पु० [स०] श्मशान । मरघट ।

शवशिविका—सज्ञा स्त्री० [स०] अरथी (को०) ।

शवस्—सज्ञा पु० [स०] शक्ति । बल । ताकत (को०) ।

शवसमाधि—सज्ञा स्त्री० [स०] शव को मिट्टी मे गाडना या पानी मे डुबो देना ।

शवसाधन—सज्ञा पु० [स०] [सज्ञा स्त्री० शवसाधना] तंत्र के अनुसार एक प्रकार का साधन ।

विशेष—यह तात्रिक साधन है जो श्मशान मे किसी व्यक्ति के शव या मृत शरीर पर बैठकर अथवा उसे सामने रखकर किया जाता है । कहते हैं, इस प्रकार के साधन से साधक को सिद्धि और अनत पद प्राप्त होता है ।

शवसान—सज्ञा पु० [स०] १ पथिक । यात्री । २ मार्ग । पथ (को०) । ३ श्मशान । कबरिस्तान (को०) । ४ अग्नि (को०) ।

शवाग्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] चिता की आग (को०) ।

शवाच्छादन—सज्ञा पु० [स०] कफन (को०) ।

शवान्न—सज्ञा पु० [स०] १. वह अन्न जो बिलकुल खराब हो गया हो और किसी काम का न रह गया हो । २ मनुष्य के शव या मृत शरीर का मास ।

शवाश—वि० [सं०] शव का मास खानेवाला । शवभक्षी (को०) ।

शव्य[1]—सज्ञा पु० [स०] वह कृत्य या उत्सव जो शव को अत्येष्टि क्रिया के लिये ले जाने के समय होता है ।

शव्य[2]—वि० शव सबधी (को०) ।

शव्वाल—सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानो का दसवाँ महीना । हिजरी का दसवाँ महीना ।

शश[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ खरहा । खरगोश । २ चद्रमा का लाछन या कलक । ३ लाघ्रवृक्ष । लोध । ४ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदो मे से एक भेद ।

विशेष—रतिमजरी के अनुसार जो मनुष्य मृदु वचन बोलता हो, सुशील, कामलोग, सुदर कशोवाला, सत्यवादी और सकल-गुण-सपन्न हो, वह शश जाति का माना जाता है ।

५ बाल नामक गध द्रव्य । गध रस । ६. मृग । हरिण (को०) ।

शश[2]—वि० [फा०] छह् । षट् ।

यौ०—शशखाना = मकान जिसमे छह कोठरियाँ हो । शशदर = (१) चौसर के खेल मे एक घर जहा गोटी बद हो जाती है । (२) चौकत । शशपज = सकोच । उधेडबुन । शशपहलू = षट्कोण । शशपाया = जिसमे छह पाए हो । शशमाहा = छह मास का । शशमाही = षाण्मासिक । छमाही ।

शशक—सज्ञा पु० [स०] १. खरगोश । खरहा । २. कामशास्त्रानुसार पुरुष का एक भेद । विशेष दे० 'शश' [को०] ।

शशगानी—सज्ञा पु० [फा० शश(=छह्+गानी] चाँदी का एक प्रकार का सिक्का जो फिरोजशाह के राज्य मे प्रचलित था । यह लगभग दुअन्नी के बराबर होता था ।

शशघातक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शशघाती' ।

शशघाती—सज्ञा पु० [स० शशघातिन्] बाज या श्येन नामक पक्षी। हरगोला।

शशदर—वि० [फा०] हक्का बक्का। चकित। आश्चर्यपूर्ण। उ०—देख लेगा अगर वह रुख की तजल्ली तेरे, आइना खानए मायूसी मे शशदर होगा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५७।

शशधर—सज्ञा पु० [स०] १ चद्रमा। २ कपूर। कर्पूर।

यौ०—शशधरमुखी = चद्रमा की तरह सुदर मुखवाली। चद्रमुखी। शशधरमौलि = शिव। शकर [को०]।

शशपद—सज्ञा पु० [सं०] खरगोश के पैरो का चिह्न [को०]।

शशप्लुतक—सज्ञा पु० [स०] नखक्षत [को०]।

शशबिंदु—सज्ञा पुं० [स० शशबिन्दु] १ विष्णु। २ चित्ररथ के एक पुत्र का नाम। ३ चद्रमा (को०)।

शशभृत्—सज्ञा पुं० [स०] १ चद्रमा। २ कपूर।

यौ०—शशभृत्भृत = शिव। चद्रमौलि।

शशमाही—वि० [फा०] हर छह महीने पर होनेवाला। छमाही। अर्धवार्षिक।

शशमुंड—सज्ञा पु० [स० शशमुण्ड] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

शशमौलि—सज्ञा पु० [स०] शिव, जिनके मौलि पर चद्रलाछन है।

शशयान—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

शशरज—सज्ञा पु० [स० शशरजस्] एक प्रकार की विशेष माप।

शशलक्षण, शशलक्ष्मण—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शशलाछन—सज्ञा पु० [स० शशलाञ्छन] १ चद्रमा। २. कपूर [को०]।

शशविदु—सज्ञा पु० [स० शशविन्दु] दे० 'शशबिंदु'।

शशविषाण—सज्ञा पु० [स०] दे० शशशृङ्ग'।

शशशिविका—सज्ञा स्त्री० [सं० शशशिम्बिका] जीवती। डोडी।

शशशृंग—सज्ञा पु० [स० शशशृङ्ग] कोई असभव और अनहोनी बात। वैसा ही असभव कार्य जैसा खरगोश को सीग होना होता है। आकाशकुसुम की सी असभव बात।

शशस्थली—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा और यमुना के मध्य का प्रदेश। दोआब।

शशाक—सज्ञा पुं० [स० शशाङ्क] १ चद्रमा। २ कपूर। ३. हर्षवर्धन का समकालीन गुप्तवशीय एक प्रतापी राजा जो गौड देश का अधिपति था।

शशाकज—सज्ञा पुं० [स० शशाङ्कज] बुध जो चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

शशाकमुकुट—सज्ञा पु० [स० शशाङ्कमुकुट] शिव। महादेव।

शशाकमूर्ति—सज्ञा पु० [स० शशाङ्कमूर्ति] चद्रमा का एक नाम [को०]।

शशाकलेखा—सज्ञा स्त्री० [स० शशाङ्कलेखा] चद्रमा की रेखा या कला [को०]।

शशाकशत्रु—सज्ञा पु० [स० शशाङ्कशत्रु] राहु [को०]।

शशाकशेखर—सज्ञा पु० [स० शशाङ्कशेखर] महादेव। शिव।

शशाकसुत—सज्ञा पु० [स० शशाङ्कसुत] बुध ग्रह जो शशाक या चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

शशाकार्ध—सज्ञा पुं० [स० शशार्द्ध] १ शिव। २. अर्ध चद्र।

शशाकार्धमुख—सज्ञा पुं० [स० शशाङ्कार्धमुख] अर्धचद्र के आकार का बाण [को०]।

शशाकित—सज्ञा पुं० [स० शश+अङ्कित] १ वह जिसमे शश का चिह्न हो। चद्रमा। २. वह जो शशाक से युक्त हो।

शशाकोपल—सज्ञा पु० [स० शशाङ्कोपल] चद्रकात मणि।

शशाडुलि, शशाडुली—सज्ञा स्त्री० [स० शशाण्डुल, शशाण्डुली] कडुवी ककडी।

शशाधु—सज्ञा पु० [स० शशक] दे० 'शश'।

शशाद—सज्ञा पुं० [स०] १ बाज। श्येन पक्षी। २. भागवत के अनुसार इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम।

शशादन—सज्ञा पु० [स०] बाज नाम का पक्षी।

शशि—सज्ञा पुं० [स० शशिन्] १ चद्रमा। इदु। २ छप्पय के ५४वें भेद का नाम। इसमे १७ गुरु और ११८ लघु, कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। ३ रगण के दूसरे भेद (।ऽ।) की सज्ञा। ४. मोती। ५ एक की सख्या। उ०—एहि भाति कीन्ह्या युद्ध शिव शशि मास तव हहरयो हियो।—रघुनाथ (शब्द०)।

शशिक—सज्ञा पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २. इस जनपद मे रहनेवाली जाति।

शशिकर—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा की रश्मि या किरण।

शशिकला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चद्रमा की कला। २. एक प्रकार का वृत्त। इसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है। इसका 'मणिगुण' और 'शरभ' भी कहते है।

शशिकात—सज्ञा पु० [स० शशिकान्त] १ चद्रकात मणि। २. कुमुद। कोई। बबूला।

शशिकुल—सज्ञा पुं० [स०] चद्रवश। उ०—शशिकुल छत्र शिरोमणि आही।—गर्गसहिता (शब्द०)।

शशिकेतु—सज्ञा पु० [स०] एक बुद्ध का नाम।

शशिकोटि—सज्ञा पु० [स०] द्वितीया के चद्रमा के दोनो नुकीले कोण या कोटि। चद्रशृग [को०]।

शशिक्षय—सज्ञा पु० [स०] द्वितीया का नया चाँद [को०]।

शशिखड—सज्ञा पुं० [स० शशिखण्ड] १ शिव। महादेव। २. चद्रमा की कला। ३ एक विद्याधर का नाम।

शशिखडिक—सज्ञा पु० [स० शशिखण्डिक] पुराणानुसार एक देश का नाम।

शशिगुह्या—सज्ञा स्त्री० [स०] मुलेठी।

शशिग्रह—सज्ञा पुं० [स०] चद्रग्रहण [को०]।

शशिज—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा का पुत्र, बुध ग्रह। उ०—पथम शुक्र दूजे रवि शशिजहु राहु चतुर्थ गवाई।—रघुराज (शब्द०)।

शशितनय—सज्ञा पु० [स०] बुध ग्रह (को०)।

शशितिथि—सज्ञा स्त्री० [स०] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

शशिदेव—सज्ञा पु० [स०] राजा रतिदेव का एक नाम (को०)।

शशिदेव—सज्ञा पु० [स०] मृगशिरा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता चद्रमा माने जाते हैं।

शशिधर—सज्ञा पुं० [स०] १. शिव। २ एक प्राचीन नगर का नाम। उ०—शशिधर नगर जाहु प्रियकारी।—श० दि० (शब्द०)।

शशिध्वज—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक असुर का नाम।

शशिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा की सोलह कलाओ मे से एक का नाम (को०)।

शशिपर्ण—सज्ञा पु० [स०] परवल। पटोल।

शशिपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] बुध ग्रह जो चद्रमा का पुत्र माना जाता है।

शशिपुष्प—सज्ञा पु० [स०] कमल। पद्म।

शशिपोषक—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा का पोषण करनेवाला, शुक्ल पक्ष।

शशिप्रभ—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसकी प्रभा चद्रमा के समान हो। २. कुमुद। कोई। ३ मुक्ता। मोती।

शशिप्रभा—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्योत्सना। चाँदनी।

शशिप्रिय—सज्ञा पु० [स०] १. कुमुद। कोई। २ मुक्ता। मोती।

शशिप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] सत्ताइसो नक्षत्र जो चद्रमा की पत्नियाँ माने जाते हैं।

शशिभागा—सज्ञा स्त्री० [स०] राजा मुचकुद की कन्या का नाम। उ०—सुनत कहेउ पति ते शशिभागा।—रघुनाथ (शब्द०)।

शशिमाल—सज्ञा पु० [स०] मस्तक पर चद्रमा धारण करनेवाले, शिव। महादेव। उ०—जय सज्जन रिपु काल, जयति पाल शशिमाल अज। रघुराज (शब्द०)।

शशिभूषण—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

शशिभृत्—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

शशिमडल—सज्ञा पुं० [स० शशिमण्डल] चद्रमा का घेरा या मडल। उ०—सब नक्षत्र को राजा दीन्हो शशिमडल मे छाप।—सूर (शब्द०)।

शशिमणि—सज्ञा पु० [स०] चद्रकात मणि।

शशिमुख—वि० [स०] [वि० स्त्री० शशिमुखी] (वह व्यक्ति) जिसका मुख चद्रमा के सदृश सुदर हो। अति सुदर। उ०—(क) राग सुनि भक्तन को भयो, अनुराग वश शशिमुख लाल जू को जाइके सुनाइये।—नाभादास (शब्द०)। (ख) शशिमुख पर घूँघट डाले।

शशिमौलि—सज्ञा स० [सं०] शिव। महादेव।

शशिरस—सज्ञा पु० [स०] अमृत।

शशिरेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] चद्रमा की एक कला।

शशिलेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ चद्रमा की कला। २ बकुची। सोमराजी। ३ गिलोय। गुरुच।

शशिवदना[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण (।।।) और एक यगण (।ऽऽ) होता है। इसे चौवसा, चडरसा और पादाकुलक भी कहते है। उ०—पिक द्विज देखे। कुपित विशेषे। नयन निराते। वचन निताते।—गुमान (शब्द०)।

शशिवदना[2]—वि० स्त्री० चद्रमा के समान सुदर मुखवाली। शशिमुखी।

शशिवार्टिका—सज्ञा स्त्री० [स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

शशिशाला—सज्ञा स्त्री० [फा० शीशा+स० शाला (=आलय)] वह घर जो बहुत से शीशो का बना हुआ हो या जिसमे बहुत से शीशे लगे हुए हो। शीशमहल। उ०—(क) अति उतंग सुदर शशिशाला सात मरातिब ओर।—रघुराज (शब्द०)। (ख) पूरित सस्य प्रमोद मही सब शशि भूपति शशिशाला।—रघुराज (शब्द०)। (ग) शशिशाला अत पुरशाला शाला सभा सदन के।—रघुराज (शब्द०)।

शशिशेखर—सज्ञा पु० [स०] १. शिव। महादेव। उ०—(क) शिला एक बिच लसत चिह्न तहँ पद शशिशेखर।—लक्ष्मण (शब्द०)। (ख) अवर मे हुए दिगबर अर्चित शशिशेखर।—अपरा, पृ० ८०। २ एक बुद्ध का नाम।

शशिशोपक—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा को क्षीण करनेवाला, कृष्ण पक्ष।

शशिसुत—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा का पुत्र, बुध ग्रह।

शशिहासिनी—वि० स्त्री० [स० शशि+हासिनी] चद्रमा की तरह हँसनेवाली या हासयुक्त (स्त्री)। उ०—मेरा मानस तो शशि-हासिनि तेरी क्रीडा का स्थल है।—वीणा, पृ० ८।

शशिहीरा—सज्ञा पु० [स० शशि+हिं० हीरा] चद्रकात मणि। उ०—शशिहीरा की एक बात। कलीन कील तब लजानों गात।—रत्नपरीक्षा (शब्द०)।

शशी—सज्ञा पु० [स० शशिन्] चद्रमा। उ०—सहजी दसवें दार की कथा सुनीजै सत। तहँ प्रगास अति घना तहँ शशी अर सुर अनत।—प्राण०, पृ० १८।

शशीअर—सज्ञा पु० [स० शशधर] चद्रमा।

शशीकर—सज्ञा पु० [स० शशिकर] चद्रमा की किरण।

शशीश—सज्ञा पु० [स०] १ शिव। महादेव। २ कार्तिकेय।

शश्वत्[1]—अव्य० [स०] १ सर्वदा। हमेशा। अनादि काल से। २. पुन. पुन.। बार बार (को०)।

शश्वत्[2]—वि० [स० शश्वत्] दे० 'शाश्वत'।

शष्कुल—सज्ञा पु० [स०] करज।

शष्कुलि, शष्कुली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पूरी, पक्वान्न आदि। २. कान का छेद। ३. मौरी मछली। ४ माँड (को०)। ५. करज (को०)। ६ कर्णरोग। कान का रोग (को०)।

शष्प—सज्ञा स्त्री० [स०] १, नई घास। नीली दूब। ३ बौद्धिक चेतना न रहना। प्रतिभाक्षय (को०)। ४. पशम। रोयाँ (बोलचाल)।

यौ०—शष्पवृत्ती=कुश की चटाई। शष्पभुक्, शष्पभोजन=घास खानेवाला। पशु।

शसन—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ के लिये पशुओं की हत्या करना। २ वह स्थान जहाँ पशुओं का बलिदान होता हो। ३ वध। हिंसा। हत्या (को०)।

शसा(पु)—संज्ञा पुं० [स० शशक] खरगोश। खरहा।

शसि(पु)—संज्ञा पुं० [स० शशि] दे० 'शशि'।

शसी(पु)—संज्ञा पु० [स० शशि] दे० 'शशि'।

शस्कुली—संज्ञा स्त्री० [ ] दे० 'शष्कुली' (को०)।

शस्त[1]—संज्ञा पु० [स०] १ शरीर। बदन। जिस्म। २ कल्याण। मंगल। भलाई। ३ अंगुलित्राण (को०)। ४ उत्कृष्टता। प्रशस्तता। उत्तमता (को०)। ५ वधक। हत्यारा (को०)।

शस्त[2]—वि० १ जिसकी प्रशंसा की गई हो। २ अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। ३ प्रशस्त। ४ जो मार डाला गया हो। निहत। ५. घायल। जख्मी। चुटैल (को०)। ६ कल्याणयुक्त। मंगलयुक्त। ७ बार बार कहा गया (को०)।

शस्त[3]—संज्ञा पु० [फा०] १. वह हड्डी या बाँस का छल्ला जो तीर चलाने के समय अँगूठे मे पहना जाता है। अँगुलित्राण। २ वह जिसपर तीर या गोली आदि चलाई जाती है। लक्ष्य। निशाना।

मुहा०—शस्त बाँधना या लगाना = निशाना बेधने के लिये सीध या ताक लगाना।

३ जमीन की पैमाइश करनेवालों की दूरबीन के आकार का वह यंत्र जिसकी सहायता से जमीन की सीध देखी जाती है। ४ मछली पकड़ने का काँटा।

शस्तक—संज्ञा पु० [स०] हाथ मे पहनने का चमड़े का दस्ताना। अंगुलित्राण।

शस्तर(पु)†—संज्ञा पु० [स० शस्त्र] शस्त्र। हथियार। उ०—दरिया शस्तर बाँधकर बहुत कहावै सूर।—दरिया० बानी, पृ० ११।

शस्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्तुति। स्तोत्र। २ प्रशंसा। तारीफ। ३ अंगुलित्राण (को०)।

शस्त्र—संज्ञा पु० [स०] १ हथियार। आयुध। लोहा। २ उपकरण। औजार। ३ इस्पात। ४ स्तोत्र। ५ बार बार कथन। पाठ (को०)।

शस्त्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १ लोहा। लौह। २ इस्पात। चित्रायस। पिंडायस। मारलोह (को०)। ३ औजार। शस्त्र (को०)।

शस्त्रकर्म—संज्ञा पु० [स० शस्त्रकर्मन्] घाव या फोड़े मे नश्तर लगाना। फोड़ा आदि की चीर फाड़ का काम।

शस्त्रकार—संज्ञा पु० [स०] हथियार बनानेवाला। शस्त्रों का निर्माण करनेवाला कारीगर (को०)।

शस्त्रकेतु—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का केतु जो पूर्व मे उदय होता है। कहते हैं, इसके उदय होने पर महामारी फैलती है।

शस्त्रकोप—संज्ञा पु० [स०] युद्ध। लड़ाई।

शस्त्रकोश—संज्ञा पु० [स०] म्यान (को०)।

शस्त्रकोशतरु—संज्ञा पु० [स०] बड़ा मैनफल।

शस्त्रकोष—संज्ञा पु० [स०] हथियार रखने का खाना। म्यान (को०)।

शस्त्रक्रिया—संज्ञा स्त्री० [स०] फोड़ा आदि की चीरफाड़। नश्तर लगाने की क्रिया।

शस्त्रक्षार—संज्ञा पुं० [पु०] सोहागा (को०)।

शस्त्रगृह—संज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के शस्त्र आदि रहते हों। शस्त्रशाला। हथियार घर। सिलहखाना।

शस्त्रग्रह—संज्ञा पु० [स०] युद्ध। लड़ाई (को०)।

शस्त्रग्राही—वि० [स० शस्त्रग्राहिन्] हथियार धारण करनेवाला। शस्त्रपाणि (को०)।

शस्त्रचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० [स०] शस्त्र द्वारा उपचार करना।

शस्त्रचूर्ण—संज्ञा पु० [स०] मदूर।

शस्त्रजीवी—संज्ञा पु० [स० शस्त्रजीविन्] योद्धा। सैनिक। सिपाही।

शस्त्रत्याग—संज्ञा पु० [स०] आयुधों का परित्याग। हथियार डालना (को०)।

शस्त्रवर—वि०, संज्ञा पु० [स०] दे० 'शस्त्रधारी' (को०)।

शस्त्रधारी—वि० [स० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

शस्त्रधारी[2]—संज्ञा पुं० १ योद्धा। सिपाही। सैनिक। २ एक प्रकार का जंतु जिसे सिलहपोश भी कहते हैं। ३ एक प्राचीन देश का नाम।

शस्त्रनिपातन—संज्ञा पु० [सं०] शल्यक्रिया। चीरफाड़ (को०)।

शस्त्रन्यास—संज्ञा पु० [स०] शस्त्रत्याग। हथियार डाल देना (को०)।

शस्त्रपाणि[1]—वि० [स०] हथियारबंद (को०)।

शस्त्रपाणि[2]—संज्ञा पुं० योद्धा। सिपाही।

शस्त्रपूत—वि० [स०] शस्त्रों द्वारा पवित्रीकृत। युद्ध क्षेत्र में मारे जाने से मुक्त (को०)।

शस्त्रप्रहार—संज्ञा पु० [स०] हथियार की चोट (को०)।

शस्त्रबल—संज्ञा पु० [स०] शस्त्र, सेना आदि की शक्ति। सैन्यबल। उ०—अगर हम आपको स्वेच्छा से यह करोड़ो रुपया न दें तो आप हमसे शस्त्रबल के जरिये छीन सकते हैं।—अखबार।

शस्त्रभृत्—संज्ञा पु० [स०] वह जो शस्त्र धारण करता हो। शस्त्रधारी।

शस्त्रमार्ज—संज्ञा पु० [स०] वह जो हथियार की सफाई करता हो। सिकलीगर (को०)।

शस्त्रवार्त—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन देश का नाम।

शस्त्रवार्त्त—संज्ञा पु० [स०] शस्त्रजीवी। दे० 'शस्त्रवृत्ति' (को०)।

शस्त्रविद्या—संज्ञा स्त्री० [स०] १. हथियार चलाने की विद्या। २ यजुर्वेद का उपवेद, धनुर्वेद, जिसमे सब प्रकार के अस्त्र चलाने की विधियों और लड़ाई के संपूर्ण भेदों का वर्णन दिया गया है।

शस्त्रविधान—सज्ञा पु० [स० शस्त्र+विधान] सुरक्षा के लिये शरीर के किसी अग का शस्त्र जैसा होना। प्रकृतिदत्त आगिक शस्त्रयुक्तता या शस्त्र जैसी स्थिति। उ०—जिन क्षुद्र से क्षुद्र जीवो के शरीर मे बचाव के लिये शस्त्रविधान होता है वे बाधा पहुँचने पर आपसे आप सस्कारवश जिधर से बाधा आती हुई जान पडती है उस ओर झपट पडते हैं।—रस०, पृ० १६२।

शस्त्रवृत्ति—सज्ञा पुं० [स०] वह जो शस्त्र आदि चलाकर अपना निर्वाह करता हो। योद्धा। सैनिक। सिपाही।

शस्त्रशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ बहुत से शस्त्र आदि रखे हो। शस्त्रगृह। शस्त्रागार। सिलहखाना।

शस्त्रशास्त्र—सज्ञा पु० [स०] १ वह शास्त्र जिसमे हथियार चलाने आदि का निरूपण हो। २ धनुर्वेद।

शस्त्रहत—सज्ञा पु० [स०] वह जिसकी हत्या शस्त्र द्वारा हुई हो।

शस्त्रहत चतुर्दशी—सज्ञा स्त्री० [स०] गौण आश्विन कृष्ण चतुर्दशी और गौण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी।

विशेष—इन दोनो चतुर्दशियो को उन लोगो का श्राद्ध किया जाता है, जिनकी हत्या शस्त्रो द्वारा हुई रहती है।

शस्त्रहस्त—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'शस्त्रधारी'।

शस्त्रागा—सज्ञा स्त्री० [स० शस्त्राङ्गा] खट्टी लोनी या अमलोनी जिसका साग होता है। चागेरी।

शस्त्राख्य—सज्ञा पु० [स०] १ बृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार का केतु। २. लौह। लोहा (को०)।

शस्त्रागार—सज्ञा पुं० [स०] शस्त्रो के रखने का स्थान। शस्त्रशाला। शस्त्रालय। सिलहखाना।

शस्त्राजीव—सज्ञा पु० [स०] शस्त्रजीवी। योद्धा [को०]।

शस्त्राभ्यास—सज्ञा पुं० [स०] शस्त्रास्त्र चलाने का अभ्यास। सैनिक शिक्षा मे निपुणता [को०]।

शस्त्रायस—सज्ञा पु० [स०] १ वह लोहा जिससे शस्त्र बनाए जाते है। इस्पात। फौलाद। २ लोहा (को०)।

शस्त्रास्त्र—सज्ञा पु० [स०] हाथ मे रहनेवाले (शस्त्र) और फेंककर मारे जानेवाले (अस्त्र) हथियार।

शस्त्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] छुरिका। कृपाणी। असिपुत्रिका [को०]।

शस्त्री[1]—सज्ञा पु० [स० शस्त्रिन्] १. वह जो शस्त्र आदि चलाना जानता हो। २ वह जिसके पास शस्त्र हो। शस्त्रसज्ज व्यक्ति।

शस्त्री[2]—सज्ञा स्त्री० [स०] छुरी। चाकू।

शस्त्रीकरण—सज्ञा पुं० [स०] सैनिको को विविध शस्त्रास्त्रो से सज्जित करना। युद्ध वा शाति के नाम पर सेना और युद्ध सामग्री की प्रवृद्धि। उ०—आज के शस्त्रीकरण मे वे भी धीमे धीमे लोप हो रही हैं।—अखबार।

शस्त्रोपजीवी—सज्ञा पुं० [स० शस्त्रोपजीविन्] दे० 'शस्त्रजीवी' [को०]।

शस्प—सज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शष्प' [को०]।

शस्य[1]—सज्ञा पु० [स०] १. नई घास। कोमल तृण। २ वृक्षो का फल। ३ खेती। फसल। ४. प्रतिभा की हानि या नाश। ५. धान्य। अन्न। ६ सद्गुण।

शस्य[2]—वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा। २ प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। ३ काटकर गिराने योग्य (को०)।

शस्यक—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का रत्न। २. असि। तलवार (को०)।

शस्यक्षेत्र—सज्ञा पुं० [स०] अनाज का खेत [को०]।

शस्यघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] चोरहुली। चोर पुष्पी।

शस्यध्वसी[1]—सज्ञा पु० [स० शस्यध्वसिन्] तून का पेड। तूर्णवृक्ष।

शस्यध्वंसी[2]—वि० जिससे शस्य का नाश हो।

शस्यपाल—सज्ञा पु० [स०] खेत का रखवाला [को०]।

शस्यभक्षक—वि० [स०] अनाज या खेत खानेवाला [को०]।

शस्यमजरी—सज्ञा स्त्री० [स० शस्यमञ्जरी] १ गेहूँ, जौ आदि अनाज की बाली। २. फल का वह अश जिससे वे डाल से लगे रहते है। वृत। फल। काड [को०]।

शस्यमारी—सज्ञा पु० [शस्यमारिन्] एक प्रकार का बडा मूषक या चूहा [को०]।

शस्यमाली—वि० [स० शस्यमालिन्] फसल से हरा भरा। लहलाता हुआ [को०]।

शस्यरक्षक—सज्ञा पु० [स०] खेती का रखवाला। शस्यपाल [को०]।

शस्यवेद—सज्ञा पुं० [स०] कृषि संबधी ज्ञान। कृषि शास्त्र [को०]।

शस्यशाली—वि० [स० शस्यशालिन्] अन्न से युक्त। धान्य से परिपूर्ण [को०]।

शस्यश्रूक—सज्ञा पु० [स०] धान, यव की बाली का नुकीला अगला भाग [को०]।

शस्यसपन्न—वि० [स० शस्यसम्पन्न] दे० 'शस्यशाली' [को०]।

शस्यसपद्—सज्ञा स्त्री० [स० शस्यसम्पद्] शस्य वा अन्न रूपी संपत्ति। धान्य की अधिकता [को०]।

शस्यसवर—सज्ञा पु० [स० शस्यसम्वर] १ शालवृक्ष। २ अश्वकर्ण वृक्ष।

शस्यहता[1]—वि० [स० शस्यहन्तृ] फसल या खेती को नष्ट करनेवाला [को०]।

शस्यहता[2]—सज्ञा पुं० एक दैत्य का नाम [को०]।

शस्यहा—वि०, सज्ञा पु० [स० शस्यहन्] दे० 'शस्यहंता'।

शस्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वेद की ऋचा [को०]।

शस्यागार—सज्ञा पु० [स०] खलिहान [को०]।

शस्यारु—सज्ञा पु० [स०] छोटी शमी।

शहशा—सज्ञा पुं० [स०] राजाधिराज। शाहशाह।

शहशाह—सज्ञा पु० [फा०] बादशाहो का बादशाह। सम्राट्। महाराजाधिराज। शाहशाह।

शहंशाही[1]—वि० [फा०] शाहो का सा। शाही। राजसी।

शहंशाही[१]—सज्ञा स्त्री० १ शाहशाह का भाव या धर्म। २ शाहशाह का पद। ३ लेने देने मे खरापन। (बाजारू)।

क्रि० प्र०—दिखलाना।— रखना।

शह[१]—सज्ञा पुं० [फा० शाह का सक्षिप्त रूप] १ बहुत बडा राजा। बादशाह। २. वर। दूल्हा।

यौ०—शहबाला।

शह[२]—वि० बढा चढा। श्रेष्ठतर।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने के समय उसके आरभ मे होता है। जैसे,—शहजोर, शहबाज, शहसवार।

शह[३]—सज्ञा स्त्री० १ शतरज के खेल मे कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से विपक्षी बादशाह उसकी मार मे हो। किश्त। उ०—राजा पील देइ शह माँगा। शह दै चाहि मरे रथ खागा।—जायसी (शब्द०)।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—बचाना।—लगाना।

२ गुप्त रूप से किसी के भडकाने या उभारने की क्रिया या भाव। बढ़ावा। हुशकारी। जैसे,—ये तुम्हारी शह पाकर ही तो इतना उछलते हैं।

क्रि प्र०—देना=बढ़ावा देना। उभारना। उ०—मिर्जा साहब ने मुहम्मद अस्करी को अब मैदान खाली पाकर और भी शह दी और चंग पर चढाया।—सैर०, भा० १, पृ० २३।—पाना।—मिलना।

३ गुड्डी, पतग या कनकौवे आदि को धीरे धीरे, डोर ढीली करते हुए, आगे बढाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

शहकार—सज्ञा पुं० [फा०] किसी कलाकार की सर्वोत्कृष्ट कृति [को०]।

शहकारा—सज्ञा स्त्री० [फा०] बदचलन औरत।

शहखर्च—वि० [फा०] बहुत अधिक व्यय करनेवाला। शाह की तरह खर्च करनेवाला [को०]।

शहचाल—सज्ञा स्त्री० [फा० शह+हिं० चाल] शतरज में बादशाह की वह चाल जो और मोहरो के मारे जाने पर चली जाती है।

शहजादगी—सज्ञा स्त्री० [फा० शहजादगी] शहजादा होने का भाव। राजकुमारपन [को०]।

शहजादा—सज्ञा पु० [फा० शहजादह] [स्त्री० शहजादी] १. राजपुत्र। राजकुमार। २ राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज।

शहजादी—सज्ञा स्त्री० [फा० शहजादी] दे० 'शाहजादी'। उ०—आज न बस मे, विह्वल रस मे, कुछ ऐसा बेकाबू मन, क्या जादू कर गया नया किस शहजादी का भोलापन।—ठडा०, पृ० २५।

शहजोर—वि० [फा० शहज़ोर] बली। बलवान। ताकतवर।

शहजोरी—सज्ञा स्त्री० [फ़ा० शहजोरी] बल। ताकत। जबरदस्ती।

शहत—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शहद'।

शहतरा—सज्ञा पुं० [फा०] पितपापड़ा। शाहतरा [को०]।

शहतीर—सज्ञा पुं० [फा०] लकडी का चीरा हुआ बहुत बडा और लबा लट्ठा जो प्राय इमारत के काम मे आता है।

शहतूत—सज्ञा पुं० [फा०] तूत नाम का पेड और उसका फल। विशेष दे० 'तूत'।

शहद—सज्ञा पुं० [अ०] शीरे की तरह का एक बहुत प्रसिद्ध मीठा, गाढ़ा, तरल पदार्थ जो कई प्रकार के कीडे और विशेषत. मधुमक्खियाँ अनेक प्रकार के फूलो के मकरद से सग्रह करके अपने छत्तो मे रखती हैं। मधु।

विशेष—शहद अनेक रग के होते हैं। यह जब अपने शुद्ध रूप मे रहता है, तब इसका रग सफेदी लिए कुछ लाल या पीला होता है। यह पानी मे सहज में घुल जाता है। यह बहुत बलवर्धक माना जाता है और प्राय औषधो के साथ, दूध मे मिलाकर अथवा यो ही खाया जाता है। इसमे फल आदि भी रक्षित रखे जाते हैं, अथवा उनका मुरब्बा डाला जाता है। योरप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि अनेक देशो मे इसका जलपान के साथ पर्याप्त प्रयोग होता है। कभी कभी ऐसा शहद भी मिलता है जो मादक या विष होता है। वैद्यक मे यह शीतवीर्य, लघु, रुक्ष, धारक, आँखो के लिये हितकारी, अग्निदीपक, स्वास्थ्यवर्धक, वर्णप्रसादक, चित्त को प्रसन्न करनेवाला, मेधा और वीर्य बढानेवाला, रुचिकारक और कोढ, ववासीर, खाँसी, कफ, प्रमेह, प्यास, कै, हिचकी, अतीसार, मलरोध और दाह को दूर करनेवाला माना गया है।

मुहा०—शहद लगाकर चाटना=किसी निरर्थक पदार्थ को यो ही लिए रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना। (व्यग्य)। जैसे—उसका दिवाला हो गया, अब आप अपना तमस्सुक शहद लगाकर चाटिए। शहद लगाकर अलग होना=उपद्रव का सूत्रपात करके अलग होना। आग लगाकर दूर होना।

यौ०—शहद की छुरी=जो जबान का मीठा पर दिल का बुरा हो। शहद की मक्खी=(१) मधुमक्षिका। (२) वह जो लोभ के कारण पीछे लगा रहे।

शहनगी—सज्ञा पुं० [अ० शहनह+गी] १. शस्त्ररक्षक का कार्य। २ वह धन जो चौकीदार को देने के लिये असामियो से वसूल किया जाता है। चौकीदारी।

शहना—सज्ञा पुं० [अ० शहनह] १ खेत की चौकसी करनेवाला। शस्त्ररक्षक। २ वह व्यक्ति जो जमीदार की ओर से असामियो को बिना पोत दिए, खेत की उपज उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिये नियुक्त किया जाता है। ३ कोतवाल। नगररक्षक।

शहनाई—सज्ञा स्त्री० [फा०] बाँसुरी या अलगोजे के आकार का, पर उससे कुछ बड़ा, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो प्राय. रोशनचौकी के साथ बजाया जाता है। नफीरी। २ दे० 'रोशनचौकी'।

शहनाज—वि० [फा० शहनाज] दुलहन। नवविवाहिता।

शहनामा—सज्ञा पु० [फा० शाहनामह] दे० 'शाहनामा'।

शहपर—संज्ञा पुं० [फा०] पक्षी का डैना जिसमें पंख या पर होते हैं [को०]।

मुहा०—शहपर झाड़ना = कमजोर और खराब पर गिराने के लिये पक्षियों का अपने डैनों को हिलाना।

शहबाज—संज्ञा पुं० [फा० शहबाज] एक प्रकार का शिकारी बाज। बड़ा बाज। उ०—किस पर छोड़े निगाह का शहबाज, क्या करे है शिकार को बातें।—कविता को०, भा० ४, पृ० २४। २ वीर। बहादुर। योद्धा।

शहबाजी—संज्ञा स्त्री० [फा० शाहबाजी] वीरता। बहादुरी।

शहबाला—संज्ञा पुं० [फा०] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोड़े पर बैठकर जाता है। यह प्रायः वर का छोटा भाई या उसका कोई निकट संबंधी हुआ करता है।

शहबुलबुल—संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बुलबुल।

विशेष—इसका सारा शरीर लाल होता है, केवल कंठ काला होता है, और सिर पर सुनहले रंग की चोटी होती है।

शहमात—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

विशेष—इसमें बादशाह को केवल शह या किश्त देकर इस प्रकार मात किया जाता है कि बादशाह के चलने के लिये और कोई घर ही नहीं रह जाता। उ०—राजा चहै बुर्द भा, शाह चहै शहमात।—जायसी। २. निरुत्तर या चुप कर देनेवाली बात।

शहर—संज्ञा पुं० [फा० शहर, शह्र] मनुष्यों की वह बड़ी बस्ती जो कस्बे से बहुत बड़ी हो, जहाँ हर पेशे के लोग रहते हों और जिसमें अधिकतर पक्के मकान हों। उ०—रघुराज गरीब नवाज दीऊ अवलोकन काज चले शहर।—रघुराज (शब्द०)।

मुहा०—शहर की दाई = सबके घर का हाल चाल जानने या रखनेवाली स्त्री।

शहरग—संज्ञा पुं० [फा० शाहरग का संक्षिप्त रूप] शरीर की सबसे बड़ी रग या नाड़ी जो हृदय में मिलती है। सुषुम्ना। सुखमना। उ०—क्या भटकता फिर रहा तू है तलाश यार में। रास्ता शहरग में है दिलवर पै जाने के लिये।—तुरसा० श०, पृ० ५।

यौ०—शहरखबरा = घर घर की या पूरे नगर का हाल चाल रखनेवाला। शहरगश्त, शहरगिर्द = (१) पतरोल। (२) शहर में घूमनेवाला। शहरदार = नगर का निवासी। शहरपनाह। शहरबंद। शहरबंदर = दे० 'शहर बदल'। शहर ब शहर = (१) एक से दूसरे नगर तक। (२) स्थान स्थान में। जगह जगह। शहरयार = शहरी। नागरिक। शहरयारी। शहरशमला = जहाँ न्याय का जगह अन्याय होता हो। अंधेर नगरी।

शहरपनाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] नगर के चारों ओर बनी हुई पक्की दीवार। वह दीवार जो किसी नगर के चारों ओर रक्षा के लिये बनाई जाय। शहर की चारदीवारी। प्राचीर। नगर-कोट। उ०—गमनत बरात सुहात ऐहि बिधि निकट शहरपनाह के।—रघुराज (शब्द०)।

शहरबंद—संज्ञा पुं० [फा०] १. जेल। कारा। २. दुर्ग। कोट। किला। ३. वह व्यक्ति जिसे राज्य की ओर से शहर से बाहर जाने की आज्ञा न हो। ४ किसी शुभ अवसर पर होनेवाली शहर की सजावट [को०]।

शहरबदल वि० [फा०] जिसे शहर से निकाले जाने का दंड मिला हो। निर्वासित।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

शहरयार संज्ञा पुं० [फा०] नृपति। बादशाह। शासक। उ०—तो फिर उसका क्या पूछना है ऐ यार। श्री दीनो जहाँ का हुआ शहरयार।—दक्खिनी०, पृ० २३२।

शहरयारी—संज्ञा स्त्री० [फा०] बादशाहत। शहंशाही। शाही दबदबा [को०]।

शहराती—वि० [फा० शहर + हिं० आती (प्रत्य०)] नागरिक। शहर का निवासी। शहरी। उ०—आज हम शहरातियों को, पालतू मालंच पर मँवरी जुही के फूल से।—हरी घास०, पृ० ५८।

शहरी—वि० [फा०] १. शहर से संबंध रखनेवाला। शहर का। २ शहर का रहनेवाला। नगर का निवासी। नागरिक। ३. सभ्य शिष्ट [को०]।

शहवत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कामातुरता। काम का उद्रेक। स्त्री-प्रसंग की प्रबल आकांक्षा। उ०—ना जोरू ना मर्द है ना शहवत ना साख। ना माय ना बाप है ना बेटा ना आल।—दक्खिनी०, पृ० ३८४।

क्रि० प्र०—उठना।—होना।

२. भोग विलास। विषय। मैथुन।

यौ०—शहवतपरस्त = कामुक। भोगी। विषयी। शहवतपरस्ती = कामुकता। एयाशी।

शहवात—संज्ञा स्त्री० [अ० शहवत का बहुवचन] इच्छाएँ। कामवासनाएँ। उ०—यह कहने का हो है सब आदमे जाद। किया शहवात ने अकल उनका बरबाद।—कुवार म०, पृ० २०८।

शहसवार—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो घोड़े पर अच्छी तरह सवारी कर सकता हो। अच्छा सवार। सवारी में चतुर। उ०—यह अच्छे अच्छे शहसवारों को मात करता है।—फसाना०, भा० ३, पृ० २।

शहादत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. गवाही। साक्ष्य।

क्रि० प्र०—गुजरना।—देना।—मिलना।—लेना।

२. सबूत। प्रमाण। ३. धर्म या देश के लिये लड़ाई मोर्चे में मारा जाना। शहीद होना (मुसल०)।

यौ०—शहादतकदा, शहादतगाह = शहीद होने का स्थान। शहादतनामा = (१) वह ग्रंथ जिसमें धर्म के लिये शहीद होने का वर्णन हो। (२) शहादत का कलमा जो कपड़े पर लिखा रहता और कफन के साथ रखा जाता है। (३) प्रमाणपत्र। सनद।

शहाना[1] - सज्ञा पु० [देश० या फा० शाह] सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

विशेष - यह राग फरोदस्त और कान्हडा को मिलाकर बनाया गया है और इसका व्यवहार प्राय. उत्सवो तथा धर्म सबंधी कार्यों मे होता है। शास्त्र के अनुसार यह मालकोश राग की रागिनी है। इसके गाने का समय ११ दड से १५ दड तक है।

शहाना[2]—वि० [फा० शहानह्] शाहो या बादशाहो का सा। राजाओ के योग्य। शाही। राजसी। २. बहुत बढिया। उत्तम।

शहाना[3]—सज्ञा पु० वह जोडा जो विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाता है।

यौ०—शहाना जोडा = (१) लाल रग का पहनावा या पोशाक। (२) दूल्हे का जोडा जामा जो लाल रग का होता है। शहाना वक्त = सायकाल। सुहावना समय। शहानी चूडी = विवाह के समय दुलहन के हाथ की लाल रग की चूडियाँ। शहानी मेहँदी = गहरे लाल रग की मेहँदी। विवाह के अवसर पर दुलहन के हाथो मे लगाई मेहँदी।

शहाना कान्हड़ा—सज्ञा पु० [हिं० शहाना + कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक प्रकार का कान्हडा राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

शहाब—सज्ञा पु०[फा०] एक प्रकार का गहरा लाल रग। उ०—त्योरी मे बल बालो के ताब के बदले। खून मे रँगना कपडा शहाब के बदले।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० २०३।

विशेष—यह रंग कुसुम के खूब अच्छे और गहरे लाल रग मे आम या इमली की छाल मिलाकर बनाया जाता है।

शहाबा—सज्ञा पु० [फा० शहाब = (गहरा लाल)] दे० 'अगिया बैताल'—२।

शहाबी—वि० [फा० शहाब + ई (प्रत्य०)] शहाब के रग का। गहरा लाल।

शहाबुद्दीन (गोरी)—सज्ञा पु० [फा०] गजनी का एक शाह जिसने चौहान नरेश पृथ्वीराज (११९७ ई० मे) को पराजित कर भारत मे मुसलिम साम्राज्य कायम किया।

शहिजदा—सज्ञा पुं० [फा० शाहज़ादह्] [स्त्री० शहेजादी] दे० 'शहजादा'। उ०—(क) पट्यो कबरू नाम ज ह, शाहिजादा को शाह।—रघुराज (शब्द०)। (ख) रहा शाह का एक शाहजादी। लखि सा मूरत छवि मरयादा।—रघुराज (शब्द०)।

शाही—वि० [फा०] शाही। राजा का। राजा सबधी [को०]।

शहीद—सज्ञा पु० [अ०] वह व्यक्ति जो धर्म या इसी प्रकार के और किसी शुभ कार्य के लिये युद्ध आदि मे मारा गया हो। न्योछावर या बलिदान होनेवाला व्यक्ति।

शहीद मर्द—सज्ञा पु० [अ० शहीद + फा० मर्द] धर्म या ईश्वर के नाम पर जान देनेवाला [को०]।

शहीदाना—वि० [फा० शहीदानह्] शहीद के ढग का। शहीदो जैसा। उ०—शहीदाना ततुओ स भरा हुआ, विवायकता से रहित व्यक्ति, अपना शहीद प्रवृत्ति के लिये, काल और पात्र की उपयुक्तता अनुपयुक्तता के लिये नही ठहरता।—शुक्ल अभि० ग्र० (जी०), पृ० ५५।

शहीदी—वि० [फा०] १ जो शहीद होने को तैयार हो। रक्त (वर्ण)। लाल।

यौ०—शहीदी जत्था = शहीद होने को तैयार लोगो का समूह। शहीदी तरबूज = एक प्रकार का गहरा लाल तरबूज। उ०—तुम आप जाओ और एक अच्छा सा शहीदी तरबूज देख कर लाओ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६१।

शहीदेकर्बला—सज्ञा पु० [फा०] कर्बला के युद्ध मे शहीद होनेवाले, हजरत इमाम हुसेन।

शहना—सज्ञा पु० [अ०] १ चौकीदार। २ कोतवाल। ३ शस्यपाल [को०]।

शह्नाई—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'शहनगी'।

शाकर[1]—वि० [स० शाङ्कर] १ शकर सबधी। २ शकराचार्य का। जैसे,—शाकर भाष्य, शाकर व्रत।

शाकर[2]—सज्ञा पु० १ वृष। साँड। ३ शकराचार्य का अनुयायी। ३ आर्द्रा नक्षत्र, जिसके देवता शिव जी माने गए है। ४ एक छद का नाम। ५ सोमलता का भेद।

शाकरि—सज्ञा पु० [स० शाङ्करि] १ शिव के पुत्र, गणेश। २. कार्तिकेय। ३ अग्नि। ४ एक मुनि का नाम। ५ शमी का पेड।

शाकरी—सज्ञा स्त्री० [स० शाङ्करी] शिव द्वारा निर्धारित अक्षरो का क्रम। शिवसूत्र। माहेश्वर सूत्र।

शाकित—सज्ञा पु० [स० शाङ्कित] चोरक नामक गधद्रव्य।

शाकुची—सज्ञा स्त्री० [स० शाङ्कुची] शकुची मछली।

शाख[1]—सज्ञा पु० [स० शाङ्ख] शख की ध्वनि।

शाख[2]—वि० शख सबधी। शख का बना हुआ।

शाखायन—सज्ञा पु० [स० शाङ्खायन] एक गृह्य और श्रौत सूत्रकार ऋषि जिनका कौशातकी ब्राह्मण भी है।

शाखारि—सज्ञा पु० [स० शाङ्खारि] शख बेचनेवाली जाति।

शाखिक[1]—वि० [स० शाङ्खिक] [वि० स्त्री० शाखिकी] १ शख सबधी। २ शख का बना हुआ।

शाखिक[2]—सज्ञा पु० १ शख बनाने और बेचनेवाला। शाखारि। २ शख बजानेवाला व्यक्ति। ३ एक सकर जाति [को०]।

शाख्य—वि० [स० शाङ्ख्य] १ शख का। शख सबधी। २ शख का बना हुआ।

शागुष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स० शाङ्गुष्ठा] गुफा। दे० 'सागुष्ठा'।

शाची—सज्ञा स्त्री० [स० शाङ्वी] एक प्रकार का शाक।

शाडदूर्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शाण्डदूर्वा] एक प्रकार की दूब। पाक दूर्वा।

शाडाकी—सज्ञा स्त्री० [स० शाण्डाकी] एक प्रकार का पशु।

शाडिक—सज्ञा पु० [स० शाण्डिक] माँद मे रहनेवाला साँड़ा नामक जतु।

शाडिली—सज्ञा स्त्री० [स० शाण्डिली] एक ब्राह्मणी जो अग्नि की माता मानकर पूजी जाती थी। (महाभारत)।

शाडिल्य—सज्ञा पु० [स० शाण्डिल्य] १ बेल। श्रीफल। २ अग्नि। ३ एक मुनि जिनकी रची एक स्मृति है और जो भक्तिसूत्र के कर्ता माने जाते हैं। ४ शाडिल्य के कुल मे उत्पन्न पुरुष। ५ सरयूपारीण ब्राह्मणो के तीन प्रधान गोत्रो मे से एक गोत्र।

यौ०—शाडिल्य गोत्र = शाडिल्य के कुल मे उत्पन्न।

शात[1]—वि० [सं० शान्त] १ जिसमे वेग, क्षोभ या क्रिया न हो। ठहरा हुआ। रुका हुआ। बद। जैसे,—अधड शात होना, उपद्रव शात होना, झगडा शात होना। २ (कोई पीडा, रोग, मानसिक वेग आदि) जो जारी न हो। बद। मिटा हुआ। जैसे,—क्रोध शात होना, पीडा शात होना, ताप शात होना। ३ जिसमे क्रोध आदि का वेग न रह गया हो। जिसमे जोश न रह गया हो। स्थिर। जैसे,—जब हमने समझाया, तब वे शात हुए। ४ जिसमे जीवन की चेष्टा न रह गई हो। मृत। मरा हुआ। ५ जो चचल न हो। धीर। उग्रता या चचलता से रहित। सौम्य। गंभीर। जैसे,—शात प्रकृति, शात आदमी। ६ मौन। चुप। खामोश। ७ जिसने मन और इद्रियो के वेग को रोका हो। मनोविकारो से रहित। रागादिशून्य। जितेंद्रिय। ८. उत्साह या तत्परतारहित। जिसमे कुछ करने की उमग न रह गई हो। शिथिल। ढीला। ९ हारा हुआ। थका हुआ। श्रात। १० जो दहकता न हो। बुझा हुआ। जैसे,—अग्नि शात होना। ११ विघ्न-बाधा-रहित। स्थिर। १२. जिसकी घबराहट दूर हो गई हो। जिसका जी ठिकाने हो गया हो। स्वस्थचित्त। १३ जिसपर असर न पडा हो। अप्रभावित। १४ नि.शब्द। सुनसान। जैसे, शात तपोवन (को०)। १५. पूत। पवित्राकृत (को०)। १६. शुभ (को०)। १७. (अस्त्र, शस्त्र आदि) जिसका प्रभाव नष्ट कर दिया गया हो। प्रभावविहीन किया हुआ (को०)।

शात[2]—सज्ञा पुं० १. काव्य के नौ रसो मे से एक रस जिसका स्थायी भाव 'निर्वेद' (काम, क्रोधादि वेगो का शमन) है।

विशेष—इस रस मे ससार की अनित्यता, दु खपूर्णता, असारता आदि का ज्ञान अथवा परमात्मा का स्वरूप आलबन होता है, तपोवन, ऋषि, आश्रम, रमणीय तीर्थादि, साधुओ का सत्सग आदि उद्दीपन, रोमाच आदि अनुभाव तथा निर्वेद, हर्ष, स्मरण, मति, दया आदि सचारी भाव होते है। शात को रस कहने मे यह बाधा उपस्थित की जाती है कि यदि सब मनोविकारो का शमन ही शात रस है, तो विभाव, अनुभाव और सचारी द्वारा उसकी निष्पत्ति कैसे हो सकती है। इसका उत्तर यह दिया जाता है कि शात दशा म जो सुखादि का अभाव कहा गया है, वह विषयजन्य सुख का है। योगियो को एक अलौकिक प्रकार का आनद होता है जिसमे संचारी आदि भावो की स्थिति हो सकती है। नाटक म आठ ही रस माने जाते है; शात रस नही माना जाता। कारण यह कि नाटक मे अभिनय क्रिया ही मुख्य है, अतः उसम 'शात' का समावेश (जिसमे क्रिया, मनोविकार आदि की शाति कही जाती है) नही हो सकता। पर बाद के विवेचको ने नाटय मे भी शात रस की स्थिति मान्य ठहराई है।

२ इद्रियनिग्रही। योगी। विरक्त पुरुष। ३ मनु का एक पुत्र। ४ संतोषण। सात्वन। तुष्टि करना। तोषना। ५ शाति। निस्तब्धता (को०)।

शात[3]—अव्य० बस बस। ऐसा नही। छि. छि। अधिक नही आदि अर्थों का सूचक अव्यय (को०)।

शातक—वि० [स० शातक] तोष करनेवाला। शात करनेवाला। प्रसादक (को०)।

शात गुण—वि० [स० शान्तगुण] मरा हुआ। मृत (को०)।

शात चेता—वि० [स० शान्तचेतस्] शातात्मा। स्थिर मनवाला (को०)।

शातता—सज्ञा स्त्री० [स० शान्त+ता] १ शाति। शमन। २ खामोशी। नीरवता। ३ रागादि का अभाव। विराग। ४ हलचल का न होना। उपद्रव आदि का अभाव।

शातनव—सज्ञा पु० [स० शान्तनव] [स्त्री० शातनवी] १. राजा शातनु के पुत्र, भीष्म २. मेधातिथि का पुत्र।

शातनु—सज्ञा पु० [स० शातनु] १ द्वापर युग के इक्कीसवें चद्रवंशी राजा।

विशेष—ये राजा प्रतीप के पुत्र और महाभारत युद्ध के प्रसिद्ध योद्धा भीष्म पितामह के पिता थे। शातनु को स्त्री गगादेवी के गर्भ से भीष्म (गागेय) की उत्पत्ति हुई थी। वसुराज नामक धीवर की कन्या सत्यवती के रूप पर मोहित होकर शातनु ने उसे व्याहने की इच्छा प्रकट की। वसुराज ने सत्यवती के पुत्र को राज्य देने की प्रतिज्ञा लेकर कन्या व्याह दी। कन्या के गर्भ से विचित्रवीर्य और चित्रागद। उत्पन्न हुए थे।

२. ककडी। ३. एक कदन्न (को०)।

शाता—सज्ञा स्त्री० [स० शान्ता] १. अयोध्या के राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यशृग की पत्नी।

विशेष—दशरथ ने अपने मित्र अग देश के राजा लोमपाद (रोमपाद) को अपनी कन्या शाता पोष्यपुत्रिका के रूप म दी थी।

२. रेणुका। ३ दूर्वा। दूब। ४ शमी। छिकुर। ५ आमला। ६. सगीत मे एक श्रुति।

शाति—सज्ञा स्त्री० [स० शान्ति] १. वेग, क्षोभ या क्रिया का अभाव। किसी प्रकार की गति, हलचल या उपद्रव का न होना। स्थिरता। २. नीरवता। स्तब्धता। सन्नाटा। ३ चित्त का ठिकाने होना। स्वस्थता। चैन। इतमीनान। आराम। ४. रोग आदि का दूर होना। मनोवेग, पीड़ा, शारीरिक उपद्रव या विकार आदि का न रह जाना। जैसे—रागशाति, तापशाति, क्रोधशाति। ५. जीवन का चेष्टा का रुक जाना। मृत्यु। मरण। ६. चचलता का अभाव। धीरता। गभीरता। सौम्यता। ७. रागादि की निवृत्ति। वासनाओ से छुटकारा। तृष्णा का क्षय। विराग। ८. एक गार्गी का नाम। ९ दुर्गा। १०. अशुभ या अनिष्ट का निवारण। अमगल दूर करने का उपचार। जैसे—ग्रहशाति, पापशाति, मूलशाति। ११. क्षुधातृप्ति। क्षुधानिवृत्ति (को०)। १२. सौभाग्य (को०)। १३. युद्धादि का रुक जाना या न होना (को०)। १४. सात्वना। आश्वास (को०)।

शांतिक¹—वि० [स० शान्तिक] शांति संबंधी। शांति का। शांतिकर।

शांतिक²—संज्ञा पुं० विपत्ति एव दुष्ट ग्रहो की शांति के लिये किया जानेवाला यज्ञ, पूजन आदि। शांति कर्म।

शांतिकर—वि० [स० शान्तिकर] शांति करनेवाला।

शांतिकरणिक—संज्ञा पु० [स० शान्तिकरणिक] राजाओं मे शांति या संधि करानेवाला व्यक्ति।—वर्ण०, पृ० ८।

शांतिकर्म—संज्ञा पु० [स० शान्तिकर्म] बुरे ग्रह, प्रेतबाधा, पाप आदि द्वारा होनेवाले अमंगल के निवारण का उपचार।

शांतिकलश—संज्ञा पुं० [स० शान्तिकलश] किसी मांगलिक उत्सव या पूजा आदि के समय स्थापित जलपूर्ण घट [को०]।

शांतिकाम—वि० [स० शान्तिकाम] शांति का इच्छुक [को०]।

शांतिकारी—वि० [स० शान्तिकारिन्] [वि० स्त्री० शांतिकारिणी] दे० 'शांतिकर'।

शांतिकार्य—संज्ञा पु० [स०] दे० 'शांतिकर्म'।

शांतिगृह—संज्ञा पुं० [शान्तिगृह] यज्ञ के अंत मे पाप तथा अशुभ आदि की शांति के लिये, स्नान करने का स्नानागार।

शांतिघट—संज्ञा पुं० [स० शान्तिघट] दे० 'शांतिकलश'।

शांतिजल—संज्ञा पु० [स० शान्तिजल] यज्ञ, पूजा आदि मे शांतिदायक मंत्रपूत जल, जिससे अभिषेक किया जाता है [को०]।

शांतिद¹—वि० [स० शान्तिद] [वि० स्त्री० शांतिदा] शांति देनेवाला।

शांतिद²—संज्ञा पु० विष्णु।

शांतिदाता—वि०, संज्ञा पु० [स० शान्तिदातृ] [स्त्री० शांतिदात्री] शांति देनेवाला।

शांतिदायक—वि०, संज्ञा पुं० [स० शान्तिदायक] [स्त्री० शांतिदायिका] शांति देनेवाला।

शांतिदायी—वि० [स० शान्तिदायिन्] [वि० स्त्री० शांतिदायिनी] शांति देनेवाला।

शांतिनाथ—संज्ञा पु० [स० शान्तिनाथ] जैनो के एक तीर्थंकर या अर्हत् का नाम।

शांतिनिकेतन—संज्ञा पु० [स० शान्ति+निकेतन] १ शांतिदायक स्थान। २. पश्चिम बंगाल का बोलपुर स्थान जहाँ विश्वकवि ने अंतर-राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना की थी।

शांतिपर्व—संज्ञा पु० [स० शान्तिपर्वन्] महाभारत का बारहवाँ और सबसे बड़ा पर्व जिसमे युद्ध के उपरांत युधिष्ठिर की चित्तशांति के लिये कही हुई बहुत सी कथाएँ, उपदेश और ज्ञानचर्चा है।

शांतिपात्र—संज्ञा पु० [स० शान्तिपात्र] वह पात्र जिसमे ग्रह, पाप आदि की शांति के लिये जल रखा जाय।

शांतिप्रद—वि० [स० शान्तिप्रद] शांति देनेवाला।

शांतिप्रिय—वि० [स० शान्तिप्रिय] शांति का अभिलाषी [को०]।

शांतिभंग—संज्ञा पु० [स० शान्तिभङ्ग] १ शांति का नाश। शांतिभंग २. उपद्रव [को०]।

शांतिमय—वि० [स० शान्तिमय] [वि० स्त्री० शांतिमयी] शांति से पूर्ण। शांति से भरा हुआ।

शांतिमार्ग—संज्ञा पु० [स० शान्तिमार्ग] मोक्ष की ओर ले जानेवाला पथ [को०]।

शांतिवाचन—संज्ञा पु० [स० शान्तिवाचन] ग्रह, प्रेतबाधा, पाप आदि से होनेवाले अमंगल को दूर करने के लिये मंत्रपाठ।

शांतिवादी—वि० [स० शान्ति+वादिन्] विश्व के राष्ट्रो मे परस्पर व्यवहार मे शांति का मंत्र मानकर चलनेवाला। उ०—युद्ध के संबंध मे हमारा दृष्टिकोण साधारणतः दृष्टि से पूंजीवादी, शांतिवादी, अथवा अराजकतावादियों से भिन्न है।—आ० अ० रा०, पृ०, २२।

शांतिसंधि—संज्ञा स्त्री० [स० शान्ति+सन्धि] परस्पर शांत रहने या संघर्ष न करने का संधि। उ०—शांतिसंधियों और समझौतों मे, जिनमे महासमर का अंत होगा।—आ० अ० रा०, पृ० ८।

शांतिसद्म—संज्ञा पु० [स० शान्तिसद्मन्] दे० 'शांतिगृह'।

शांतिहोम—संज्ञा पुं० [स० शान्तिहोम] अमंगल, पाप, दोषादि के निवारणार्थ किया जानेवाला हवन [को०]।

शांत्वति—संज्ञा स्त्री० [स० शान्त्वति] भारंगी। बमनेटी। ब्राह्मण-यष्टिका।

शांब—संज्ञा पु० [स० शाम्ब] १ एक राजा का नाम। २. श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। विशेष दे० 'साब'।

शांबर¹—वि० [स० शाम्बर] १ शंबर दैत्य संबंधी। २. सांभर मृग का।

शांबर²—संज्ञा पु० १ लोध्र वृक्ष। लोध। २. एक प्रकार का चंदन (को०)।

शांबरशिल्प—संज्ञा पु० [स० शाम्बर शिल्प] इंद्रजाल। जादू।

शांबरिक—संज्ञा पु० [स० शाम्बरिक] जादूगर। मायावी।

शांबरी¹—संज्ञा स्त्री० [स० शाम्बरी] १ माया। इंद्रजाल।

विशेष—कहते है, शंबर दैत्य ने पहले पहल इसका प्रयोग किया था, इसी कारण इसका नाम शांबरी पड़ा।

२ जादूगरनी। मायाविनी।

शांबरी²—संज्ञा पु० [स० शाम्बरिन्] १ एक प्रकार का चंदन। २ लोध्र। लोध। ३ मूसाकानी नाम की लता।

शांबविक—संज्ञा पु० [स० शाम्बविक] शंख का व्यवसाय करनेवाला।

शांबव्य—संज्ञा पु० [स० शाम्बव्य] गृह्यसूत्रो मे से एक सूत्र। उ०—शांबव्य सूत्र और आश्वलायन गृह्यसूत्र मे भारत एवं महाभारत का उल्लेख है।—हिंदु० स०, पृ० १५३।

शांबुक—संज्ञा पु० [स० शाम्बुक] घोंघा।

शांबूक—संज्ञा पु० [स० शाम्बूक] घोंघा।

शांभर¹—संज्ञा स्त्री० [स० शाम्भर] राजपूताने की एक झील जिसमे सांभर नमक होता है। सांभर झील।

शांभर²—संज्ञा पु० सांभर नमक।

शांभव¹—वि० [स० शाम्भव] शंभु संबंधी। शिव का।

शांभव²—संज्ञा पु० १ देवदार वृक्ष। २ कपूर। ३. शिवमल्लिका का पौधा। वसु। ४ गूगल। गुग्गुल।

शांभवी—संज्ञा स्त्री० [स० शाम्भवी] १ नीला दूब। २. दुर्गा। ३. ब्रह्मरंध्र (को०)। ४. तंत्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा

जिसमे नेत्र अपलक खुले रहते हैं किंतु बाह्य विषयो के ज्ञान से वे शून्य होते हैं (को०)।

शाम्भवीय—वि० [स० शाम्भवीय] शिव से संबंधित (को०)।

शाइर—सज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शाइरा] दे० 'शायर'। उ०—कई तो शाइर जो शेर और गजल बनाते हैं।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० ८७।

शाइरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शायरी'।

शाइस्तगी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. शिष्टता। सभ्यता। तहजीब। २ भलमनसी। आदमीयत। मनष्यत्व। ३. योग्यता। पात्रता (को०)। ४ सस्कृति। सस्कार (को०)।

शाइस्ता—वि० [फा० शाइस्तह्] १ शिष्ट। सभ्य। तहजीबवाला। २ विनीत। नम्र। ३. जो अच्छी चाल सीखा हो। अदब कायदा जाननेवाला। शिक्षित। जैसे,—शाइस्ता घोडा। ४. उत्तम। श्रेष्ठ (को०)। ५ योग्य। काबिल। पात्र।

शाकट—सज्ञा पुं० [स० शाकट] वथुआ नाम का साग।

शाकंभरी—सज्ञा स्त्री० [स० शाकम्भरी] १. दुर्गा। २ सांभर नामक प्रदेश या नगर।

शाकंभरीय[1]—वि० [स० शाकम्भरीय] सांभर झील से उत्पन्न।

शाकंभरीय[2]—सज्ञा पुं० सांभर नमक।

शाक[1]—सज्ञा पु० [स०] १. पत्ती, फूल, फल आदि जो पकाकर खाए जायँ। भाजी। तरकारी। साग।

विशेष—शाक छह प्रकार का कहा गया है—(१) पत्रशाक—चौलाई, बथुआ, मेथी आदि, (२) पुष्पशाक—केले का फूल, अगस्त का फूल आदि, (३) फलशाक—बैंगन, करेला आदि, (४) नालशाक—करेमू आदि, (५) कदशाक—जमीकद, कच्चू आदि, (६) सस्वेदज शाक—डिंगरी, भुइँफोड, गोबर-छत्ता आदि। ये शाक अनुक्रम से एक दूसरे से भारी होते हैं। सब प्रकार के पत्रशाक विष्टभकारक, भारी, रूखे, मलकारक, अधोगत, वातकारी तथा शरीर, हड्डी, नेत्र, रुधिर, वीर्य, बुद्धि, स्मरणशक्ति और गति शक्ति का नाश करनेवाले तथा समय से पहले बालो को सफेद करनेवाले कहे गए हैं। परतु जीवती, बथुआ और चौलाई हानिकारक नही हैं।

२. सागौन का पेड। ३. भोजपत्र। भूर्ज वृक्ष। ४ सिरिस का पेड। ५ पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक द्वीप। विशेष दे० 'शाकद्वीप'। ६ एक प्राचीन जाति। विशेष दे० 'शक' (को०)। ७ शक राजा शालिवाहन का सवत्। ८ शक्ति। बल। ताकत।

शाक[2]—वि० [सं०] १. शक जाति संबंधी। २ शक राजा का। जैसे,—शाक संवत्।

शाक[3]—वि० [अ० शाक] १. भारी। दूभर। कठिन।

मुहा०—शाक गुजरना = कष्टकर होना। खलना।

२ दुख देनेवाला। कडा। (फाग)।

शाककलंबक—सज्ञा पुं० [सं० शाककलम्बक] १ प्याज। २.

शाकचुक्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. अमलोनी का साग। नोनिया। २ इमली।

शाकट[1]—वि० [स०] १. शकट या गाडी संबंधी। गाडी का। २ गाडी मे लदा हुआ या जाता हुआ (को०)।

शाकट[2]—सज्ञा पुं० १. गाडी का बैल या जानवर। २ गाडी का बोझ। ३ लिसोडा। लसोरा। ४ बड वृक्ष। ५ खेत। क्षेत्र। जैसे,—शाकशाकट।

शाकटपोतिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] पोई या पोय का पौधा।

शाकटायन—सज्ञा पुं० [स०] १ शकट का पुत्र। २ एक बहुत प्राचीन वैयाकरण जिनका उल्लेख पाणिनि एव निरुक्तकार यास्क ने किया है। ३. एक दूसरे अर्वाचीन वैयाकरण जिनके व्याकरण का प्रचार जैनो मे है।

शाकटिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ गाडीवाला। २ गाडीवान।

शाकटिक[2]—वि० [वि० स्त्री० शाकटिकी] दे० 'शाकट[1]' (को०)।

शाकटीन—सज्ञा पु० [स०] १ गाडी का बोझ। २ प्राचीन काल की एक तौल जो बीस तुला या दो सहस्र पल की होती थी।

शाकतरु—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शाकद्रुम' (को०)।

शाकदीक्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] केवल शाक के आधार पर रहना।

शाकद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] १. वरुण वृक्ष। २. सागौन का पेड।

शाकद्वीप—सज्ञा पुं० [स०] १ पुराणानुसार सात द्वीपों मे से एक द्वीप।

विशेष—इसमे एक बहुत बडा शाक या सागौन का पेड माना गया है और यह चारो ओर क्षीरसमुद्र से घिरा हुआ कहा गया है। कहते हैं, इसमे ऋतुव्रत, सत्यव्रत, दानव्रत और अनुव्रत बसते हैं।

२ ईरान और तुर्किस्तान के बीच मे पडनेवाले उस प्रदेश का नाम जिसमे होकर वक्षु नद या आक्सस नदी बहती है। इस प्रदेश मे आर्य और शक जातियाँ बसती थी।

शाकद्वीपीय[1]—वि० [स०] शाकद्वीप का रहनेवाला।

शाकद्वीपीय[2]—सज्ञा पु० ब्राह्मणो का एक भेद। मग ब्राह्मण।

विशेष—शाकद्वीपीय ब्राह्मणो के जबूद्वीप में आने की कथा हरिवश मे इस प्रकार मिलती है—एक बार कृष्ण के पुत्र साब ने सूर्य का मदिर बनवाया और मख यज्ञ करना चाहा। जब उन्हे यह मालूम हुआ कि सूर्य की उपासनाविधि के अच्छे जाननेवाले शाकद्वीप मे मिलेंगे, तब उन्होने वहाँ से कुछ ब्राह्मण बुलवाए। यह उस समय की बात है जब भारत और ईरान मे एक ही आर्य सभ्यता प्रचलित थी और एक देश के ऋत्विज दूसरे देश मे जाकर बराबर यज्ञ कराया करते थे। फारस में यज्ञ करनेवाले पुरोहित 'मग' कहलाते थे, इसी से इन शाकद्वीपीय ब्राह्मणो को 'मग ब्राह्मण' भी कहते थे।

॥ सज्ञा पुं० [स०] १ एक मुट्ठी का परिमाण। २ एक मुट्ठी या सब्जी (को०)।

॥ पुं० [सं०] सहिजन। शोभाञ्जन वृक्ष।

शाकपार्थिव—सज्ञा पु० [स०] सवत् चलाने का इच्छुक एक राजा।

शाकपूणि, शाकपूणि—सज्ञा पु० [स०] वेद का भाष्य करनेवाले एक प्राचीन ऋषि।

शाकवालेय—सज्ञा पु० [स०] ब्रह्मयष्टि। भारगी (को०)।

शाकविल्व, शाकविल्वक—सज्ञा पु० [स०] बैंगन। भटा। भाँटा।

शाकभक्ष—वि० [स०] मास न खानेवाला। शाकाहारी।

शाकयोग्य—सज्ञा स्त्री० [स०] धनिया। धान्याक।

शाकराज—सज्ञा पु० [स०] वथुआ। वास्तूक साग।

विशेष—निर्दोष होने के कारण वथुआ शाको का राजा कहा गया है।

शाकरी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शाकारी'।

शाकल[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाकली] १ शाकल नामक द्रव्य से रँगा हुआ। २ खड या अश सबधी।

शाकल[2]—सज्ञा पु० १ खड। टुकडा। चिप्पड। २ एक प्रकार का साँप। ३ ऋग्वेद की एक शाखा या सहिता। ४ लकडी का बना हुआ तावीज। ५ मद्र देश का एक नगर। ६ पातजलि महाभाष्य के अनुसार वाहीक (पजाब) देश का एक ग्राम। ७ उक्त ग्राम या नगर का निवासी। ८ एक प्रकार का पीताभ चदन (को०)। ९ हवन की सामग्री जिसमे जौ, तिल, घी, मधु आदि का मेल रहता है।

शाकल प्रातिशाख्य—सज्ञा पु० [स०] ऋग्वेद का एक प्रातिशाख्य।

शाकल शाखा—सज्ञा स्त्री० [स०] ऋग्वेद का वह शाखा या सहिता जो शाकल्य ऋषि के गोत्रजो मे चली।

विशेष—आजकल ऋग्वेद की यही शाखा मिलती और प्रचलित है।

शाकलहोम—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का हवन (को०)।

शाकलि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शाकली'।

शाकलिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाकलिकी] १ टुकडा या खड सबधी। अश सबधी। २ शाकल से सबध रखनेवाला (को०)।

शाकली—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

शाकल्य—सज्ञा पु० [स०] एक बहुत प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद की एक शाखा के प्रचारक थे और जिन्होने पहले पहल उसका पदपाठ ठीक किया था।

शाकवर—सज्ञा पु० [स०] जीवशाक।

शाकवरा—सज्ञा पु० [स०] जीवती या डोडी नामक लता।

शाकवल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] लताकरज। सागर। गोटा।

शाकवालेय—सज्ञा पु० [स०] बभनेटी। भारगी। ब्राह्मणयष्टिका।

शाकवाट, शाकवाटक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शाकवाटी, शाकवाटिका] साग सब्जी आदि के लगाने का घेरा हुआ क्षेत्र (को०)।

शाकविदक—सज्ञा पु० [स० शाकविन्दक] बेल का पेड।

शाकवीर—सज्ञा पुं० [स०] १. वथुआ। वास्तूक शाक। २ पुनर्नवा। गदहपूरना। ३ जीवशाक।

शाकवृक्ष—सज्ञा पुं० सागौन। शाकद्रुम (को०)।

शाकशाकट, शाकशाकिन—सज्ञा पु० [स०] शाकसब्जी का खेत। शाकवाट (को०)।

शाकशाल—सज्ञा पु० [स०] वकायन। महानिब वृक्ष।

शाकश्रेष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] वथुआ। वास्तूक शाक।

शाकश्रेष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ जीवती। डोडी शाक। २ डोडी। ३ भटा। बैंगन। ४ पेठा। भतुआ। ५ तरबूज।

शाकाग—सज्ञा पुं० [स० शाकाङ्ग] गोल मिर्च। काली मिर्च।

शाका[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] हरीतकी। हड। हर्रे।

शाका[2]—सज्ञा पु० [स० शाक(=शक सबधी)] शक सवत्। उ०—जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण उनका शाका और सवत् है।—प्रेम घन०, भा० २, पृ० २२६।

शाकाख्य—सज्ञा पुं० [स०] सागौन का पेड।

शाकाम्ल—सज्ञा पुं० [स०] १ महादा। वृक्षाम्ल। २ इमली।

शाकाम्लभेद, शाकाम्लभेदक—सज्ञा पुं० [स०] चूक। चुक।

शाकारी—सज्ञा स्त्री० [स०] शको अथवा शकारो की भाषा, जो प्राकृत का एक भेद है। इसका प्रयोग मृच्छकटिक मे द्रष्टव्य है।

शाकाष्टका—सज्ञा स्त्री० [स०] फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

विशेष—इस दिन पितरो के उद्देश्य से शाक दान किया जाता है।

शाकाष्टमी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शाकाष्टका'।

शाकाशन—सज्ञा पु० [स०] 'शाकाहार'।

शाकाहार—सज्ञा पु० [स०] अनाज अथवा, फल, फूल, पत्ते आदि का भोजन। मासाहार का उलटा।

शाकाहारी—वि० [स० शाकाहारिन्] [वि० स्त्री० शाकाहारिणी] केवल अनाज या साग भाजी खानेवाला। मास न खानेवाला।

शाकिन—सज्ञा पुं० [स०] खेत। वाडी। जैसे, शाकशाकिन=साग का खेत।

शाकिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह भूमि जिसमे शाक बोया हुआ हो। साग की क्यारी। २ एक पिशाची या देवी जो दुर्गा के गणो मे समझी जाती है। डाइन। चुडैल।

शाकिर—वि० [अ०] १ कृतज्ञता प्रकाशित करनेवाला। शुक्रगुजार। २ सतोष रखनेवाला।

शाकी—वि० [अ०] १ शिकायत करनेवाला। २ नालिश करनेवाला। ३ चुगली खानेवाला।

शाकुतल—वि० सज्ञा पु० [स० शाकुन्तल] दे० 'शाकुंतलेय'। जैसे अभिज्ञान शाकुतल।

शाकुतलेय[1]—सज्ञा पु० [स० शाकुन्तलेय] १ शकुतला का पुत्र, भरत। २ कालिदासविरचित एक नाटक का नाम।

शाकुंतलेय[2]—वि० शकुतला सबधी। शकुतला का।

शाकुंतिक—सज्ञा पु० [स० शाकुन्तिक] चिडीमार। बहेलिया।

शाकुण—वि० [स०] [स्त्री० शाकुणी] १. अनुतापयुक्त। अनुतप्त। २ दूसरे को पीडित करने या ताप देनेवाला। परोपतापी। परतापक [को०]।

शाकुन¹—वि० [स०] १ पक्षी सबधी। चिडियो का। २ शुभाशुभ लक्षण सबंधी। सगुनवाला।

शाकुन²—सज्ञा पु० १ चिडिया पकडनेवाला। बहेलिया। २ यात्रा आदि मे कुछ विशेष पक्षियों जतुओ या और पदार्थों के मिलने से शुभाशुभ का निर्णय। शकुन। सगुन। ३. शुभाशुभ निर्णय या सगुन विचार करनेवाला शकुनज्ञ (को०)।

शाकुनि—सज्ञा पु० [स०] बहेलिया।

शाकुनी—सज्ञा पु० [स० शाकुनिन्] १. मछवाहा। मछली पकडनेवाला। २ एक प्रकार का प्रेत। ३. सगुन विचारनेवाला।

शाकुनेय¹—वि० [स०] पक्षी सबधी।

शाकुनेय²—सज्ञा पुं० १ एक प्रकार का छोटा उल्लू। २ वकासुर नामक दैत्य। ३ एक मुनि का नाम।

शाकुल—वि० सज्ञा पु० [सं०] दे० 'शाकुलिक' [को०]।

शाकुलिक¹—सज्ञा पुं० [स०] १ मछवाहा। २ मछलियो का समूह।

शाकुलिक²—वि० मछली सबधी। मछली का [को०]।

शाकद्र—सज्ञा पु० [स० शाकेन्द्र] शाकाप्रवर्तक। दे० 'शाकेश्वर' [को०]।

शाकेक्षु—सज्ञा पु० [स०] ईख का एक भेद।

शाकेश्वर—सज्ञा पुं० [स०] वह राजा जिसके नाम से संवत् चले। जैसे,—युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, शालिवाहन।

शाकोल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की लता।

शाक्कर—सज्ञा पु० [स०] बैल। वृष। दे० 'शाक्वर'।

शाक्की—सज्ञा स्त्री० [स०] पाँच विभाषाएँ।

शाक्त¹—वि० [स०] १ प्रभाव, प्रताप या शक्ति सबधी। २. दैविक शक्ति (देवी) सबधी।

शाक्त²—सज्ञा पुं० शक्ति का उपासक। तत्रपद्धति से देवी की पूजा करनेवाला।

विशेष—शाक्तो के पूजन का विधान वैदिक पूजनविधि से भिन्न होता है। ये ईश्वर का शक्ति का शिव की पत्नी दुर्गा के रूप मे उपासना करते हैं। यह उपासनापद्धति दो प्रकार की है—दक्षिणाचार। और वामाचार। वामाचारियो या वाममार्गियो की पूजा मे मद्य, मास, स्त्री आदि पचमकार का व्यवहार होता है। स्त्रियो की जननेंद्रिय को शक्ति का प्रतीक मानकर ये लोग उसकी विशेष रीति से पूजा करते हैं।

शाक्तमत—सज्ञा पुं० [सं०] शक्ति के उपासको का मत या सिद्धात। विशेष दे० 'शाक्त'।

शाक्तागम—सज्ञा पुं० [सं०] तत्रशास्त्र।

शाक्तिक—सज्ञा पुं० [सं०] १ शक्ति का उपासक। शाक्त। २. शक्ति नाम का अस्त्र या भाला बाँधनेवाला।

शाक्तीक¹—वि० [स०] शक्ति या भाला सबधी।

शाक्तीक²—सज्ञा पु० भाला चलानेवाला।

शाक्तेय, शाक्त्य—सज्ञा पुं० [स०] १. शक्ति का उपासक। २ पराशर ऋषि का एक नाम (को०)।

शाक्य—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो नेपाल की तराई मे बसती थी और जिसमे गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

विशेष—बौद्ध ग्रथो मे शाक्य इक्ष्वाकुवंशी कहे गए हैं। जिस स्थान मे वे रहते थे, उसमे 'शाक' या सागौन के पेड अधिक थे, इसी से उसका 'शाक्य' नाम पडा। विद्वानो का अनुमान है कि लिच्छवियो के समान शाक्य भी व्रात्य क्षत्रिय थे।

२. बुद्ध का एक नाम (को०)। ३. शाक्यनरेश शुद्धोदन जो बुद्ध के पिता थे (को०)। ४. बौद्ध भिक्षु (को०)।

यौ०—शाक्यकेतु = बुद्ध। शाक्यपुगव = दे० 'शाक्यमुनि'। शाक्यपुत्रीय = बौद्ध यति। शाक्यभिक्षु, शाक्यभिक्षुक = बौद्ध मतानुयायी सन्यासी। शाक्यमुनि। शाक्यसिंह। शाक्यशासन = बुद्ध का उपदेश।

शाक्य मुनि, शाक्य सिंह—सज्ञा पु० [सं०] गौतम बुद्ध।

शाक्र¹—सज्ञा पु० [स०] १ ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके अधिपति इद्र हैं। २. इद्र के निमित्त अर्पित हवि आदि (को०)।

शाक्र²—वि० शक्र सबधी। इद्र सबधी। शक्र का (को०)।

शाक्री—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २. इद्राणी। शक्रपत्नी। शची।

शाक्वर¹—वि० [स०] शक्तिशाली। पराक्रमी। बलवान्।

शाक्वर²—सज्ञा पुं० १ इद्र। २. इद्र का वज्र। ३. साँड। बैल। ४ प्राचीन काल की एक रीति या सस्कार।

शाख¹—सज्ञा पु० [स०] १ कृत्तिका का पुत्र कार्तिकेय। २. भाग। ३ करज।

शाख²—सज्ञा स्त्री० [फा० शाख] १ टहनी। डाल। टाली।

मुहा०—शाख लगाना = (१) कलम लगाना। टहनी लगाना। (२) सिंगी लगाना। (३) पद बढाना। समान करना। शाख लगना = घमंड होना। इतराना। शाख निकालना = दोष देना। कलक लगाना। नुक्ताचीनी करना। झगडा खडा करना। शाख निकालना = ऐब निकालना झगडा निकालना। बखेडा निकालना।

२. सींग। ३ लगा हुआ टुकडा। खड। फाँक। ४ कमान की लकडी (को०)। ५ एक पकवान (को०)। ६. वश। कुलपरपरा। ७. नदी आदि की बडी धारा मे से निकली हुई छोटी धारा।

शाखचा—सज्ञा पुं० [फा० शाखचह] छोटी शाखा। टहनी। डाली। काँचा [को०]।

यौ०—शाखचाबंदी = (१) लाछन लगाना। दोषारोपण। २. पेड की कलम लगाना।

शाखदार¹—वि० [फा० शाखदार] १. जिसमे बहुत सी शाखाएँ हों। टहनीदार। २. सींगवाला। सींगदार।

शाखदार[२]—सज्ञा पु० वह व्यक्ति जो स्त्री की कमाई खाय (को०)।

शाखशाना—सज्ञा पुं० [फा० शाखशानह्] १ बाधा। अडचन। पख। २ बात मे बात। बात का ढग। ३. बहस मुबाहिसा। ४. एक प्रकार के फकीर जो अपने को घायल कर देने की धमकी देकर भीख माँगते हैं (को०)।

शाखा[१]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पेड के धड से चारो ओर निकली हुई लकडी या छड। टहनी। डाल। २ शरीर का अवयव। हाथ और पैर। ३ उँगली। ४ चौखट। बृहत्०, पृ० २८१। ५ घर का पाख। ६. किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद। प्रकार। ७ विभाग। हिस्सा। ८. अंग। अवयव। ९. किसी शास्त्र या विद्या के अतर्गत उसका कोई भेद। १०. वेद की सहिताओ के पाठ और क्रमभेद जो कई ऋषियो ने अपने गोत्र या शिष्यपरपरा मे चलाए।

विशेष—शौनक ने अपने 'चरणव्यूह' मे वेदो की जो शाखाएँ गिनाई है, उसके अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएँ हैं—शाकल्य, वाष्कल, आश्वलायन, शाखायन और माडूक्य। वायु पुराण मे यजुर्वेद की ८६ शाखाएँ कही गई हैं जिनमे ४३ के नाम चरणव्यूह मे आए हैं। इन ४३ मे माध्यदिन और कण्व को लेकर ३७ शाखाएँ वाजसनेयी के अतर्गत हैं। सामवेद की सहस्र शाखाएँ कही जाती हैं जिनमे १५ गिनाई गई हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद की भी बहुत सी शाखाओ मे से पिप्पलादा-शौनकीया आदि केवल नौ गिनाई गई हैं।

११ सप्रदाय। पंथ (को०)। १२ ग्रथ का परिच्छेद। अध्याय (को०)। १३ पक्षातर। प्रतिपक्ष (को०)। १४ भुजा। बाहु। हस्त (को०)।

शाखा[२]—सज्ञा पुं० [फा० शाखह्] अपराधी को दंड देने का काष्ठ का एक यत्र (को०)।

शाखाकंट—सज्ञा पु० [सं० शाखाकण्ट] थूहर। स्नुही वृक्ष।

शाखाक्रमण—सज्ञा पुं० [सं० शाखाचङ्क्रमण] १ एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद जाना। २ एक विषय अधूरा छोडकर दूसरा विषय हाथ मे लेना। एक विषय पर स्थिर न रहना। ३ कोई विषय पूरा अध्ययन न करके थोडा यह, थोडा वह पढना।

शाखाचद्र न्याय—सज्ञा पुं० [सं० शाखाचन्द्रन्याय] एक न्याय या कहावत जो ऐसी बात के सबध मे कही जाती है जो केवल देखने मे जान पडती है, वास्तव मे नही होती।

विशेष—चद्रमा कभी कभी देखने मे ऐसा जान पडता है मानो पेड की डाल पर है। इसी से इस कहावत या न्याय की रचना हुई है।

शाखादड—सज्ञा पु० [स० शाखादण्ड] दे० 'शाखारंड'।

शाखाद—सज्ञा पुं० [स०] पेडो की डाल या टहनी खानेवाले पशु। जैसे—गौ, बकरी, हाथी।

शाखानगर, शाखानगरक—सज्ञा पुं० [स०] बडे नगर का वसातिस्थान या मुहल्ला। उपनगर। उ०—शाखानगर शृगाटक आक्रीडते।—कीर्ति०, पृ० २८।

शाखापित्त—सज्ञा पुं० [स०] एक रोग जिसमे हाथ और पैर में जलन और सूजन होती है।

शाखापुर—सज्ञा पुं० [स०] [सज्ञा स्त्री० शाखापुरी] किसी नगर के आसपास फैली हुई बस्ती।

शाखाप्रकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] मनु के अनुसार अपने राज्य के कुछ दूर पर के आठ प्रकार के राजा जिनका विचार किसी राजा को युद्ध के समय रखना चाहिए।

शाखावा—सज्ञा पुं० [फा० शाखाबह्] खाटी (को०)।

शाखाबाहु—सज्ञा पुं० [सं०] १ शाखा के समान बाहु या भुजा। २ वह जिसकी भुजा शाखा के समान हो।

शाखाभृत्—सज्ञा पुं० [सं०] वृक्ष। शाखी (को०)।

शाखामृग—सज्ञा पु० [सं०] १ वानर। बदर। २ गिलहरी।

शाखाम्ल—सज्ञा पुं० [स०] जलबेंत।

शाखाम्ला—सज्ञा स्त्री० [स०] इमली।

शाखायन—सज्ञा पुं० [स०] ऋग्वेद के एक ब्राह्मण ग्रथ का नाम। उ०—ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण के पहले पाँच भाग और कौषीतकि या शाखायन ब्राह्मण बने—हिंदु० स०, पृ० ७६।

शाखारड—सज्ञा पु० [स० शाखाण्ड] वह ब्राह्मण जो अपनी शाखा को छोडकर दूसरा शाखा का अध्ययन करे। शाखादड।

शाखारथ्या—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटी गली या सडक जो बडी सडक से मिलती हो (को०)।

शाखाल—सज्ञा पुं० [स०] जलबेंत।

शाखावात—सज्ञा [सं०] हाथ पैर में होनेवाला वातरोग।

शाखाशिफा—सज्ञा स्त्री० [स०] वह डाल जो नीचे की ओर बढकर जड पकड ले और एक अलग पेड के धड़ के रूप में हो जाय। जैसे—वट की जटा या बरोह।

शाखिमूल—सज्ञा पुं० [स०] वृधि वृक्ष।

शाखी[१]—वि० [स० शाखिन्] शाखाओ से युक्त। शाखावाला।

शाखी[२]—सज्ञा पुं० १ पेड। वृक्ष। २. वेद। ३ वेद की किसी शाखा का अनुयायी। ४. पीलू का पेड। ५ तुर्किस्तान का निवासी।

शाखुल—सज्ञा पुं० [फा० शाख़ुल] अरहर नाम से प्रसिद्ध द्विदल अन्न (को०)।

शाखोच्चार—सज्ञा पुं० [स०] विवाह के समय वशावली का कथन।

शाखोट, शाखोटक—सज्ञा पुं० [सं०] सिहोर का पेड। पीत वृक्ष।

विशेष—वैद्यक मे यह कडुआ, गरम पित्तकारक और वातहारी माना गया है।

शाख्य—वि० [सं०] १. शाखा के समान। शाखा तुल्य। २ शाखा सबधी (को०)।

शागर†—सज्ञा पुं० [स० सागर] सागर। उ०—हकुमिनिहरन सुने जो हृदै विचारइ। आप तरै भव शागर कुल निस्तारइ।—अकबरी०, पृ० १५०।

शागिर्द—सज्ञा पुं० [फा०] १ किसी से विद्या प्राप्त करने का संबंध रखनेवाला। विद्यार्थी। २. शिष्य। चेला।

मुहा०—शागिर्द करना = किसी को कुछ सिखाने का काम अपने ऊपर लेना। चेला बनाना।

शागिर्दपेशा—संज्ञा पु० [फा० शागिर्दपेशह्] १ मातहत। उ०—विशेषत अँगरेजों के शागिर्दपेशे लोग।—प्रेमघन०, भा० १, पृ० ३८३। २ अहलकार। कर्मचारी। ३. खिदमतगार। सेवक। ४ शागिर्द। विद्यार्थी ५. बड़ी कोठी के पास नौकरों के लिये अलग बने हुए घर।

शागिर्दाना—वि० [फा० शागिर्दानह्] १ शिष्योचित। २ शागिर्द होने के एवज मे गुरु को दिया जानेवाला (द्रव्य)।

शागिर्दी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शिक्षा प्राप्त करने के निमित्त किसी गुरु के अधीन रहने का भाव। शिष्यता। २. सेवा। टहल।

शाचि[1]—संज्ञा पु० [सं०] दलकर भूमी निकाला हुआ जौ।

शाचि[2]—वि० १ प्रसिद्ध। विख्यात। विश्रुत। २ प्रतापी। शक्तिशाली [को०]।

शाट—संज्ञा पु० [सं०] १. कपडे का टुकडा। २. वह कपडा जो कमर मे लपेटकर पहना जा सके। धोती। परदनी। ३ एक प्रकार की कुरती। ४. ढीलाढाला पहनावा।

शाटक—संज्ञा पु० [सं०] १. वस्त्र। पट। २. दे० 'शाट'।

शाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ साडी। धोती। २. कचूर।

शाटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साडी। धोती।

शट्यायन—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. एक प्रकार का कृत्य जिस यज्ञकार्य मे हुए दोषो की निवृत्ति के निमित्त करने का विधान है (को०)।

शाट्यायनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

शाठ्य—संज्ञा पु० [सं०] १ शठता। दुष्टता। बदमाशी। २ कपट। दभ। छल।

शाड्वल—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शाद्वल'।

शाण[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. हथियारो को धार तेज करने का पत्थर। सान। उ०—कृश होकर भी अग वीर के सुगठित शाण चढ़े से थे।—साकेत, पृ० ३७२। २. कसौटी। कषपाट्टिका। ३ चार माशे का एक तोल। ४. आरा। करपत्र (को०)।

शाण[2]—वि० [सं०] १. सन के पौधे से सबध रखनेवाला। २. सन का बना हुआ।

शाण[3]—संज्ञा पु० १. सन के रेशे का बना हुआ कपडा। भँगरा। २. मोटा कपडा (को०)।

शाणक—संज्ञा पु० [सं०] पटसन का बना कपडा। भँगरा [को०]।

शाणवास—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो सन का बना हुआ वस्त्र पहने। २. एक भुतहू का नाम।

शाणाजीव—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शस्त्रो पर सान देने का काम करके जीविकार्जन करता हो। हथियार की सफाई का काम करनेवाला व्यक्ति [को०]।

शाणाश्मा—संज्ञा पु० [सं० शाणाश्मन्] सान चढ़ाने का पत्थर [को०]।

शाणि—संज्ञा पु० [सं०] पट्टमा।

शाणित—वि० [सं०] १. सान रखा हुआ। तीखा या तेज किया हुआ। २ कसौटी पर कसा हुआ।

शाणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सन के रेशो से बुना हुआ कपडा। भँगरा। २ फटा हुआ वस्त्र। चीथडा। ३. वह छोटा कपडा जो यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को पहनने के लिये दिया जाता है। ४. सान। ५. कसौटी। ६. छोटा खेमा या पर्दा। ७. चार माशे की तौल (को०)। ८ आरा (को०)। ९ हाथ या आँख आदि से सकेत करना (को०)।

शाणीर—संज्ञा पुं० [सं०] शोण (सोन) नदी का किनारा या उसका भूभाग [को०]।

शाणोपल—संज्ञा पुं० [सं०] १ सान चढाने का प्रस्तर। २. कसौटी [को०]।

शात—वि० [सं०] १. सान रखा हुआ। तेज किया हुआ। २. दुबला। पतला। क्षीण। कृश। जैसे,—शातोदरी = कृशोदरी। ३. दुर्बल। कमजोर (को०)। ४ सुदर। मनोहर (को०)। ५ प्रसन्न। प्रफुल्ल (को०)। ६ गिरा हुआ। पतित (को०)। ७ दीप्तिशाली। चमकदार (को०)।

शात[2]—संज्ञा पुं० १ धतूरा। २ खुशी। आनंद। प्रसन्नता (को०)।

शातकर्णि—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक ऋषि। २. सातवाहन राजाओ का एक नाम। उ०—सातवाहनो ने अपने अभिलेखो मे अपने को 'सातवाहन' अथवा 'शातकर्णि' कहा है।—आदि०, पृ० २८६।

शातकुभ—पद्मा पु० [सं० शातकुम्भ] १ कचनार का वृक्ष। २. कनक। धतूरा। ३ कनेर का वृक्ष। ४. सोना। स्वर्ण।

शातकौभ[1]—संज्ञा पुं० [सं० शातकौम्भ] सोना। सुवर्ण।

शातकौभ[2]—वि० स्वर्णनिर्मित। सोने का बना हुआ [को०]।

शातक्रतव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. इद्रधनुष। २. इंद्र। वह जिसने शतक्रतु पद प्राप्त किया हो। उ०—मधुरतर से मधुरतम होती हुई, रूप से गुण, पुष्प से मधु की तरह, साथ, शातक्रतव के पाथेय का।—आराधना, पृ० ९१।

शातक्रतव[2]—वि० देवराज इद्र का या इद्र संबधी। इद्र से सबध रखनेवाला [को०]।

शातन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० शातनीय, शातित] १ सान पर धार तेज करना। चोखा करना। २. कटवाना। (पेड आदि)। ३. नष्ट करना। काट गिराना। जैसे,—पक्षशातन। ४. काटना। तराशना। छीलना। ५ क्षीण या लघु होना (को०)। ६. विच्छेद। विलगाव। झडना (को०)। ७. सतह बराबर करना। रदना।

शातपत्रक—संज्ञा पु० [सं०] [संज्ञा स्त्री० शातपत्रकी] चद्रिका। चाँदनी।

शातभिष—वि० [सं०] शतभिषा नक्षत्र सबधी या उसमें उत्पन्न [को०]।

शातभारु—पद्मा पु० [सं०] भद्रवल्ला। मदनमाला।

शातमन्यव—वि० [सं०] शतमन्यु अर्थात् इंद्र से सबध रखनेवाला [को०]।

शातमान—वि० [स०] [वि० स्त्री० शातमानी] जो सौ के मूल्य से क्रीत हो। एक शत मे खरीदा हुआ [को०]।

शातला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का थूहर का वृक्ष। विशेष दे० 'सातला'।

शातवाहन—सज्ञा पुं० [स०] एक राजा का नाम। विशेष दे० 'शालिवाहन'।

शातह्रद—वि० [सं०] विद्युत् सबधी। वैद्युतिक। विद्युत्जन्य [को०]।

शातातप—सज्ञा पु० [सं०] एक स्मृतिकार ऋषि का नाम।

शातित—वि० [स०] जो नष्ट या ध्वस्त किया गया हो। जो काटकर गिराया हुआ हो [को०]।

शातिर[1]—वि० [अ०] १ चालाक। चतुर। उस्ताद। कारीगर। २ चपल। चचल (को०)। ३. पृष्ठ (को०)। ४ निपुण। दक्ष।

शातिर[2]—सज्ञा पुं० १ दूत। २ शतरंज का खिलाडी।

शातिराना—वि० [फा०] धूर्ततापूर्ण। शातिरो जैसा [को०]।

शात्—सज्ञा पुं० [स०] सीढी। सोपान। नि.श्रेणी [को०]।

शातोदर—सज्ञा पुं० [सं०] [वि० स्त्री० शातोदरी] १ पतली कमरवाला। २ क्षीण। पतला।

शात्रव[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शत्रुत्व। शत्रुता। २ शत्रु। ३ शत्रुओ का समूह।

शात्रव[2]—वि० १ शत्रु संबधी। २ शत्रुतापूर्ण। विरोधी [को०]।

शात्रवीय—वि० [स०] दे० 'शात्रव[2]'।

शाद[1]—सज्ञा पु० [स०] १ पतन। गिरना। पडना। २ कर्दम। कीचड। ३ घास। दूब।

यौ०—शादहरित=जमी हुई दूब के कारण हरा भरा भूखड या भूमि। हरे घास से भरी हुई भूमि। हरी भरी जमीन।

शाद[2]—वि० [फा०] खुश। प्रसन्न। २ परिपूर्ण। भरा पूरा।

यौ०—शादकाम=(१) प्रसन्न। खुश। (२) कामयाब। सफलमनोरथ। शादकामी=(१) खुशी। प्रसन्नता। (२) कामयाबी। सफलता। शादगूना=(१) गायिका। डोमनी। (२) तोशक। शादमाँ=हर्षित। शादमान, शादमानी।

शादमान—वि० [फा०] प्रसन्न। खुश। हर्षित। उ०—जबाँ पर उसे याद है सब कुरान। फसाहत पर उसके हुआ शादमान।—दक्खिनी०, पृ० ७८।

शादमानी—सज्ञा स्त्री० [फा०] प्रसन्नता। खुशी।

शादा—सज्ञा स्त्री० [स०] ईंट।

शादाब—वि० [फा०] १ हरा भरा। सरसब्ज। तरोताजा। २. सींचा हुआ। सिक्त (को०)। ३ प्रफुल्ल (को०)।

शादाबी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ तरोताजगी। हरियाली। २. प्रफुल्लता [को०]।

शादियाना—सज्ञा पुं० [फा० शादियानह्] १. खुशी का बाजा। आनदमगल सूचक वाद्य।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

२. वह धन जो किसान जमींदार को ब्याह के अवसर पर देते हैं। ३. बधावा। बधाई।

क्रि० प्र०—देना।

४ खुशी या शादी के मौके पर गाया जानेवाला मागलिक गीत।

शादी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. खुशी। प्रसन्नता। हर्ष। आनद। २ आनदोत्सव।

यौ०—शादीगमी।

३. विवाह। ब्याह।

शाद्वल[1]—वि० [सं०] १ हरित तृण या दूर्वा से युक्त। २ हरी हरी घास से ढँका हुआ। हरा भरा। ३. हरा (को०)।

शाद्वल—सज्ञा पुं० १ हरी घास। दूब। २ सोट। बैल। ३ रेगिस्तान के बीच की वह थोडी सी हरियाली जहाँ कुछ हरका वर्त्ता भी हो। नखलिस्तान। ओसिस।

यौ०—शाद्वलस्थली=हरीभरी भूमि। दूर्वाच्छादित भूमि।

शाद्वलाभ—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का हरा कीडा।

शाद्वलित—सज्ञा पुं० [सं०] दूब से भरा हुआ होना। दूब हरा भरा होना [को०]।

शान[1]—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ तडक भडक। ठाट बाट। सजावट। जैसे,—कल बडी शान से सवारी निकली थी।

यौ०—शान व शौकत=दे० शानशौकत। उ०—वह उनकी शान व शौकत का कायल होगा।—प्रेमघन०, भा०, २, पृ० १७६। शान शौकत।

२ गर्वीली चेष्टा। ठसक। जैसे,—यह घोडा बडी शान से चलता है। ३ भव्यता। विशालता। चमत्कार। ४ शक्ति। करामात। विभूति। ऐश्वर्य। जैसे—पुदा की शान। ५. श्रेष्ठता। बुजुर्गी। गौरव (को०)। ६ प्रतिष्ठा। इज्जत। मानमर्यादा।

मुहा०—शान जाना=अप्रतिष्ठा होना। मान भग होना। शान घटना=इज्जत में कमी होना। बडप्पन मे कमी होना। शान बरसना=गौरव व्यक्त होना। शान मारी जाना=दे० 'शान जाना'। शान मे बट्टा लगना=दे० 'शान घटना'। किसी की शान मे=किसी बडे के सबध में। किसी के प्रति या किसी के विषय मे। जैसे,—उनकी शान मे ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

शान[2]—सज्ञा पुं० [सं०] शरण। सान। २ कसौटी। निकषोपल (को०)।

शानच्—प्रत्य० [स०] एक कृदत प्रत्यय जो पाणिनि व्याकरण में प्रयुक्त है।

शानदार—वि० [अ० शान+फा०दार] १ भड़कीला। तडक भडकवाला। ठाट बाट का। जो बडी सजावट और तैयारी के साथ हो। २. भव्य। विशाल। चमत्कारपूर्ण। ३ ऐश्वर्ययुक्त। वैभव से पूर्ण। ४. गर्वीली चेष्टा से युक्त। ठसकवाला।

शानपाद—सज्ञा पुं० [सं०] १ चदन घिसने का पत्थर। २. पारियात्र पर्वत।

शानशौकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] तडक भडक। ठाट बाट। तैयारी। सजावट।

शाना—संज्ञा पु० [फा० शानह्] १. कंघा। कघी। उ०—हो परेशानी सरेमू भी न जुल्फेयार को। इसलिये मेरा दिले सद चाक शाना हो गया।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५१। २ मोढा। कधा। खवा। ३ जुलाहो का राछ। कघी (को०)। ४ एक हाथियार (को०)।

शानी[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] इनारुन। इद्रवारुणी।

शानी[2]—वि० [अ०] शत्रुता करनेवाला। वैर करनेवाला। वैरी (को०)।

शानी[3]†—वि० [अ० शान] शानवाला। शानदार।

शानीला†—वि० [अ० शान] दे० 'शानी'।

शानैश्चर—वि० [स०] [वि० स्त्री० शानैश्चरी] १ शनिग्रह सबधी। शनि का। २ शनिवार को पडने या होनेवाला (को०)।

शाप—संज्ञा पु० [स०] १. अहित-कामना सूचक शब्द। तुम्हारा कुछ अनिष्ट हो, इस प्रकार का वचन। कोसना। बद दुआ। जैसे,—ऋषि के शाप से वह राक्षस हो गया। २. धिक्कार। फटकारना। भर्त्सना।

क्रि० प्र०—देना।

३. ऐसी शपथ जिसके न पालन करने का कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय। बुरी कसम। ४. प्रतिषेध। प्रत्याख्यान। वर्जन (को०)। ५ कठिनाई। बाधा। उपद्रव (को०)।

शापग्रस्त—वि० [स०] जिसे शाप दिया गया हो। शापित।

शापज्वर—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का ज्वर जो माता, पिता, गुरु आदि बडो के शाप के कारण कहा गया है।

शापटिक, शापठिक—संज्ञा पु० [स०] मयूर। मोर।

शापना Ⓤ—क्रि० स० [स० शाप से नाम धा०] श्राप देना। शाप देना।

शापनिवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] शाप से छुटकारा या मुक्ति (को०)।

शापप्रद—वि० [स०] श्राप देनेवाला (को०)।

शापमुक्त—वि० [स०] जिसका शाप छूट गया हो। जिसके ऊपर से शाप का बुरा प्रभाव हट गया हो।

शापमुक्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] शाप से छुटकारा। शापनिवृत्ति (को०)।

शापमोक्ष—संज्ञा पु० [स०] दे० 'शापनिवृत्ति' (को०)।

शापयत्रित—वि० [स० शापयन्त्रित] शाप के कारण नियत्रित या बँधा हुआ (को०)।

शापात—वि० [स० शापान्त] शाप का अत या परिसमाप्ति (को०)।

शापाबु—संज्ञा पुं० [स० शापाम्बु] वह जल जिसे हाथ मे लेकर शाप दिया जाय।

शापावसान—संज्ञा पुं० [स०] शाप की निवृत्ति या अत (को०)।

शापास्त्र—संज्ञा पु० [स०] १. वह व्यक्ति जिसके पास अस्त्रो के स्थान पर शाप ही हो। २. एक मुनि का नाम। दुर्वासा

शापित—वि० [स०] १. जिसे शाप दिया गया हो। शापग्रस्त। २. शपथयुक्त। सौगंध से बँधा हुआ। जिसने शपथ ले ली हो (को०)।

शापोत्सर्ग—संज्ञा पुं० [स०] शाप का उच्चारण। शाप छोडना। शाप देना।

शापोद्धार—संज्ञा पुं० [स०] शाप या उसके प्रभाव से छुटकारा। शापमुक्ति।

शाफरिक—संज्ञा पु० [स०] मछुआ। धीवर।

शाफी—वि० [अ० शाफी] १ रोगमुक्त करनेवाला। २ भरोसा या सत्वना देनेवाला (को०)।

शाफेय—संज्ञा पुं० [स०] यजुर्वेद की एक शाखा।

शाबर[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाबरी] १ दुष्ट। कपटी। २ असभ्य। जगली (को०)। ३ नीच कर्मोना। अधम (को०)।

शाबर[2]—संज्ञा पु० १. बुराई। हानि। दुःख। २ लोध्र वृक्ष। लोध का पेड। ३ ताँबा। ४. अधकार। ५ एक प्रकार का चदन। ६ अपराध। दोष। पाप (को०)। ७ दुष्टता (को०)। ८ जैमिनिमीमासा सूत्रो के एक भाष्यकार का नाम (को०)।

शाबर भाष्य—संज्ञा पु० [स०] मीमांसासूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या जिसके कर्ता शबर स्वामी थे।

शाबरभेदाक्ष, शाबरभेदाख्य—संज्ञा पु० [स०] ताँबा।

शाबरिका—संज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की जोक।

शाबरी—संज्ञा पुं० [स०] शबरो की भाषा। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबल्य—संज्ञा पु० [स०] १ कई रगो का मेल। शबलता। कबरापन। चितकबरापन। २. एक साथ भिन्न भिन्न कई वस्तुओ का मेल।

शाबस्त—संज्ञा पु० [स०] भागवत के अनुसार राजा युवनाश्व का एक पुत्र जिसने शाबस्ती या श्रावस्ती नगरी बसाई थी।

शाबस्ती—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रावस्ती'।

शाबान—संज्ञा पु० [अ०] मुसलमानो का आठवाँ महीना (को०)।

शाबाश—अव्य० [फा०] 'शादबाश' का सक्षिप्त रूप। एक प्रशसा-सूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो। क्या कहना।

शाबाशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] कोई कार्य करने पर प्रशसा। वाह-वाही। साधुवाद।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

शाब्द[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शाब्दी] १ शब्द सबधी। शब्द का। २ शब्द विशेष पर निर्भर। ३. शब्दमय (को०)। मौखिक। वाचाकथित या उक्त (को०)। ५ मुखर। ध्वनियुक्त (को०)।

शाब्द[2]—संज्ञा पुं० शब्दशास्त्री। वैयाकरण।

शाब्दबोध—संज्ञा पु० [स०] शब्दो के प्रयोग द्वारा अर्थ का ज्ञान। वाक्य के तात्पर्य का ज्ञान।

शाब्द व्यजना—संज्ञा स्त्री० [स० शाब्दव्यञ्जना] दे० 'शाब्दी व्यजना'।

शाब्दिक[1]—वि० [सं०] १. शब्द सबधी। शब्द का। २. मौखिक। जबानी (को०)। ३. निनादी (को०)।

शाब्दिक[2]—संज्ञा पुं० १. शब्दशास्त्र का जाननेवाला। वैयाकरण। २. अभिधान बनानेवाला। शब्दकोश का निर्माता।

शाब्दी—वि० स्त्री० [स०] १ शब्द सबधिनी। २ केवल शब्दविशेष पर निर्भर रहनेवाली। जैसे,—शाब्दी व्यजना।

शाब्दी व्यजना—सज्ञा स्त्री० [स० शाब्दी व्यञ्जना] साहित्य मे व्यजना के दो भेदो मे से एक। वह व्यजना जो शब्दविशेष के प्रयोग पर ही निर्भर हो। अर्थात् उसका पर्यायवाची शब्द रखने पर न रह जाय। आर्थी व्यजना का उलटा।

शाम[1]—सज्ञा स्त्री० [फा०] सूर्य अस्त होने का समय। रात्रि और दिवस के मिलने का समय। साँझ। सायम्। सध्या।

मुहा०—शाम फूलना=सध्या समय पश्चिम की ललाई का प्रकट होना।

यौ०—शामगाह=सध्याकाल।

शाम[2]—वि०, सज्ञा पु० [स० श्याम] दे० 'श्याम'।

यौ०—शामकरण।

शाम[3]—वि० [स०] शम सबधी। शम का।

शाम[4]—सज्ञा पु० [स० शामन्] साम गान।

शाम[5]—सज्ञा स्त्री० [दश०] लोहे, पीतल आदि धातु का बना हुआ वह छल्ला जो हाथ मे ली जानेवाली लकडियो या छडियो के निचले भाग मे अथवा औजारो के दस्ते मे लकडी को घिसने या छीजने से बचाने के लिये लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—जडना।—लगाना।

शाम—सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर मे है। कहते है, यह देश हजरत नूह के पुत्र शाम ने बसाया था। इसका राजधानी का नाम दमिश्क है। आजकल यह प्रदेश सीरिया कहलाता है।

शामकरण[2]—सज्ञा पु० [स० श्यामकर्ण] वह घोडा जिसका कान श्याम रग का हो।

शामत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बदकिस्मती। दुर्भाग्य। २. विपत्ति। आफत। ३ दुर्दशा। दुरवस्था।

क्रि० प्र०—आना।—मे पडना या फँसना।

मुहा०—शामत का घेरा या मारा=जिसकी दुर्दशा का समय आया हुआ हो। जिसकी दुर्दशा होने को हो। शामत की मार=अभाग्य। बदकिस्मती। कमबख्ती। शामत सवार होना या सिर पर खेलना=शामत आना। दुर्दशा का समय आना।

शामतजदा—वि० [अ० शामत+फा० ज़दह्] कमबख्त। बदनसीब। अभागा।

शामती—वि० [अ० शामत+फा० ई (प्रत्य०)] जिसकी शामत आई हो। जिसकी दुर्दशा होने को हो। शामत का मारा।

शामन—सज्ञा पु० [स०] १ शमन। २. शाति। ३. मारण। हत्या करना। ४. यमराज (को०)। ५ समाप्ति। अत (को०)।

शामनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दक्षिण दिशा जिसके अधिपति यम माने गए हैं। २ शाति। स्तब्धता। ३. अत। समाप्ति। ४. वध। हत्या।

शामा[1]—सज्ञा स्त्री० [?] एक प्रकार का पौधा, जिसकी पत्तियाँ और जड़ कोढ़ रोग के लिये लाभदायक मानी जाती हैं।

शामा[2]—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामा] दे० 'श्यामा'।

शामित्र[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ यज्ञ मे मास पकाने के निमित्त प्रज्वलित की हुई अग्नि। २ वह स्थान जहाँ ऐसी अग्नि प्रज्वलित की जाय। ३ यज्ञ। ४ यज्ञपात्र। ५ यज्ञ के लिये पशुओ की हत्या। ६ वधस्थान। बलि करने की जगह (को०)। ७ बलि के निमित्त यूपकाष्ठ मे पशुबधन (को०)। ८ घातक प्रहार या चोट (को०)।

शामित्र[2]—वि० यज्ञबलि करनेवाले से सबद्ध (को०)।

शामियाना—सज्ञा पुं० [फा० शामियानह्] एक प्रकार का बड़ा तबू। उ०—खाकसारी ने दिखाया बाद मुर्दन भी उन्ज। आममाँ तुरबत पे मेरे शामियाना हो गया।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ८५०।

विशेष—इसमे प्राय ऊपर की ओर लबा चौडा कपडा होता है जो बासो पर तना रहता है। इसके नीचे चारो ओर प्राय. खुला ही रहता है। पर कभी कभी इसके चारो ओर कनात भी खडी की जाती है।

क्रि प्र०—खडा करना।—गाडना।—लगाना।

शामिल—वि० [फा०] १ जो साथ मे हो। मिला हुआ। सम्मिलित। जैसे,—(क) ये कागज मिसिल मे शामिल कर दो। (ख) अब तो तुम भी उन्ही लोगो मे शामिल हो गए। २ भागीदार। साझा (को०)। ३. मददगार। सहकारी (को०)। ४ एकत्र। इकट्ठा (को०)।

यौ०—शामिल हाल।

शामिल हाल—वि० [अ० शामिल+हाल] जो दु.ख सुख आदि सब अवस्थाओ मे साथ रहे। साथी। शरीक।

शामिलात—सज्ञा स्त्री० [अ० शामिल] १ हिस्सेदारी। साझा। शराकत। दे० 'शामिल'। २ धन सपत्ति, जायदाद आदि जो साझे की हो।

शामिली—सज्ञा स्त्री० [स०] स्रुवा (को०)।

शामी[1]—सज्ञा स्त्री० [दश०] लोहे या पीतल का वह छल्ला जो लकडियो आदि के नीचे के भाग मे अथवा औजारो के दस्ते के सिरे पर उसकी रक्षा के लिये लगाया जाता है, शाम।

क्रि० प्र०—जडना। लगाना।

शामी[2]—वि० [अ० शाम (देश)] शाम देश का। शाम देश सबधी। जैसे,—शामी कबाब।

शामी कबाब—सज्ञा पुं० [हि० शामी+कबाब] एक प्रकार का कबाब जो मास को मसाले के साथ भूनने के उपरात पीसकर गोलियो या टिकियो के रूप मे बनाया जाता है।

शामीन—सज्ञा पुं० [स०] १. भस्म। २. यज्ञ करने का एक उपकरण। स्रुवा (को०)।

शामील—सज्ञा पुं० [स०] भस्म। खाक। राख।

शामीली—सज्ञा स्त्री० [स०] स्रक्। माला।

शामुल्य—सज्ञा पुं० [स०] गले मे पहनने का कोई ऊनी कपडा।

शामूल—संज्ञा पु० [सं०] ऊनी कपडा।

शामेय—संज्ञा पु० [स०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शाम्य[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ शम का भाव। २ बधुत्व। भाई चारा। ३ शांति।

शाम्य[2]—वि० शमसबधी [को०]।

शाम्यप्रास—संज्ञा पुं० [स०] यज्ञ की बलि।

शाय—संज्ञा पुं० [स०] शयन करना। लेटना। सोना [को०]।

शायक[1]—संज्ञा पु०[स०] १ बाण। तीर। शर। २ खड्ग। तलवार।

शायक[2]—वि० [अ० शायक] [बहु० शायकीन] १. शौक करने या रखनेवाला। शौकीन। २. ख्वाहिशमद। इच्छुक। आकाक्षी।

शायद—अव्य० [फा०] कदाचन। कदाचित्। संभव है। स्यात्। जैसे—शायद वह आज आएगा।

शायर—संज्ञा पुं० [अ०] [संज्ञा स्त्री० शायरा] वह जो शेर आदि बनाता हो। काव्य करनेवाला। कवि।

शायराना—वि० [अ० शायर+फा० आनह्] १. कवियो जैसा। कवियो के लहजेवाला। २. कवित्वमय अतिरजित।

शायरी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ कविता करने का कार्य या भाव। २. काव्य। कविता। ३. अतिरजना।

शायाँ—वि० [अ०] योग्य। तुल्य। मुनासिब [को०]।

शाया—वि० [अ०] १. प्रकट। जाहिर। २ प्रकाशित। छपा हुआ।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

शायिक—संज्ञा पुं० [स०] [संज्ञा स्त्री० शायिका] वह जो शय्यारचना का जानकार हो। वह जो शय्या द्वारा अपनी जीविका का निर्वाह करता हो।

शायिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ नीद। निद्रा। २. लेटने की क्रिया। शयन [को०]।

शायित—वि० [स०] [स्त्री० शायिता] १. सुलाया या लेटाया हुआ। उ०—अशनिपात से शायित उन्नत शत शत वीर, क्षत विक्षत हत अचल शरीर।—अपरा, पृ० २१। २ गिरा हुआ। पतित। ३. सोया हुआ। लेटा हुआ। उ०—शायित जन जगे सकल। कला के खुले उत्पल।—वेला, पृ० ७२।

शायिता—संज्ञा स्त्री० [स०] शयन। सोना।

शायिनी—वि० स्त्री० [स० शायिन्=शायी का स्त्री०] शयन करनेवाली। उ०—वह नही, पर्यक, पिय की अक की जो शायिनी थी।—मिट्टी०, पृ० १३४।

शायी—वि० [सं० शायिन्] [वि० स्त्री० शायिनी] शयन करनेवाला। सोनेवाला।

शारग—संज्ञा पुं० [स० शारङ्ग] दे० 'सारग'।

शारगक—संज्ञा पुं० [स० शारङ्गक] एक प्रकार का पक्षी।

शारगधनुप—संज्ञा पुं० [स० शारङ्ग धनुप] शारंग नामक धनुप से सुशोभित, अर्थात् विष्णु। उ०—विष्णु के हाथ मे गदा कौमदी और चक्र सुदर्शन और शारगधनुप और शंख आदि रहता है। कबीर म०, पृ० ४१। २. कृष्ण।

शारगपाणि—संज्ञा पुं० [स० शारङ्गपाणि] १ हाथ में शारग नामक धनुप धारण करनेवाले विष्णु। २ कृष्ण। ३ राम।

शारगपानी ‡—संज्ञा पुं० [स० शारङ्गपाणि] दे० 'शारगपाणि'।

शारंगभृत—संज्ञा पुं० [सं० शारङ्गभृत्] १ शारग नामक धनुप धारण करनेवाले, विष्णु। २ कृष्ण।

शारंगवत—संज्ञा पुं० [स० शारङ्गवत] कुरुवर्ष नामक देश।

शारगष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं० शारङ्गष्ठा] १ काकजंघा। २ मकोय। ३ गुंजा। चोटली। करजनी।

शारंगाष्ठा—संज्ञा स्त्री० [स० शारङ्गाष्ठा] १. मकोय। २ कठकरंज। लताकरंज।

शारंगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शारङ्गी] सारंगी नामक बाजा। विशेष दे० 'सारगी'।

शारगेष्टा—संज्ञा स्त्री० [स० शारङ्गेष्टा] दे० 'शारंगाष्ठा'।

शारंवर—संज्ञा पुं० [सं० शारम्बर] राजतरगिणी के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम।

शार[1]—वि० [सं०] १. चितकबरा। कई रगो का। २ पीला। ३. नीले, पीले और हरे रग का।

शार[2]—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पासा। अक्ष। २ वायु। हवा। ३ हिंसा। ४. चितकबरा रग [को०]। ५ हरा रंग [को०]।

शारणिक[1]—संज्ञा पुं० [स०] वह जो शरण मे आए हुए की रक्षा करता हो। रक्षक।

शारणिक[2]—वि० शरण चाहनेवाला। रक्षा चाहनेवाला। शरणार्थी [को०]।

शारतल्पिक—संज्ञा पुं० [स०] बाणो की शय्या पर सोनेवाले भीष्म पितामह [को०]।

शारद[1]—वि० [सं०] १ शरदकाल सबधी। शरदकाल का। २. नवीन। नया। ३. लज्जावान। शालीन। ४ वार्षिक। वर्ष से सबध रखनेवाला [को०]। ५. अभिनव। ६. योग्य। चतुर [को०]।

शारद[2]—संज्ञा पु० १ वर्ष। साल। २. मेघ। बादल। ३. सफेद कमल। ४. मौलसिरी का वृक्ष। काश तृण। ६. हरा मूँग। ७. एक प्रकार का रोग। ८ शरत् का समय [को०]। ९. शरत् की धूप [को०]। १०. शरत्कालीन अन्न [को०]।

यौ०—शारदचद्र=शरद् ऋतु का निर्मल चाँद। शारदज्योत्सना=शरत्काल की शुभ्र चाँदनी। शारदनिशा=शरद् ऋतु की रात। शारदपूर्णिमा=शरत्पूर्णिमा। आश्विन महीने की पूनो। शारदमेघ=जलरहित होने से निर्मल और श्वेत बादल। शारदयामिनी। शारदरात्रि, शारदशर्वरी=शरद् ऋतु की आह्लादक रात्रि।

शारदक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का तृण [को०]।

शारदावा—संज्ञा स्त्री० [सं० शारदाम्बा] सरस्वती।

शारदा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार की वीणा। २ ब्राह्मी। ३ अनतमूल। शारिवा। ४ सरस्वती। ५ दुर्गा। ६ प्राचीन काल की एक प्रकार की लिपि।

विशेष—कश्मीर देश की अधिष्ठात्री देवी शारदा मानी जाती हैं जिससे वह देश 'शारदादेश' या 'शारदमडल' कहलाता है और इसी से वहाँ की लिपि को 'शारदा लिपि' कहते है। पीछे से उसको (कश्मीर को) 'देवदेश' भी कहते थे। मूल शारदा लिपि ईस्वी सन् की दसवी शताब्दी के आस पास कुटिल लिपि से निकली है और उसका प्रचार कश्मीर तथा पजाब मे रहा। उस मे परिवर्तन होकर वर्तमान शारदा लिपि बनी जिसका प्रचार अब कश्मीर मे बहुत कम रह गया है। उसका स्थान बहुधा नागरी, गुरुमुखी या टाकरी ने ले लिया है।

शारदिक—सज्ञा पुं० [स०] १ शरद ऋतु मे होनेवाला ज्वर। २ रोग। बीमारी। ३ शरद् ऋतु मे होनेवाला अथवा वार्षिक श्राद्ध। ४. शरद् ऋतु की धूप (को०)।

शारदी—सज्ञा स्त्री० [स०] जलपीपल। २ छतिवन। सप्तपर्णी। ३ आश्विन मास की पूर्णिमा। कोजागर पूर्णिमा। ४ कार्तिक मास की पूर्णिमा (को०)।

शारदी[2]—वि० शरद्काल का। शरद् काल सबधी।

शारदी[3]—सज्ञा पुं० [स० शारदिन्] १ अपराजिता। कोयल। २ सफेद कमल। ३ अन्न या फल आदि।

शारदीय—वि० [स०] शरद्काल का। शरद् ऋतु सबधी।

शारदीयपूजा—सज्ञा स्त्री० [स०] शारदीय महापूजा। शरद् ऋतु मे नवरात्र की दुर्गापूजा। उ०—नहीं तो वे स्वदेशाचारानुसार प्राय शारदीय पूजा ही मे हँस लिया करते थे।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५७।

शारदीय पूर्णिमा—सज्ञा स्त्री० [स०] आश्विन पूर्णिमा। कोजागर पूर्णिमा।

शारदीय महापूजा—सज्ञा स्त्री० [स०] शरत्काल मे होनेवाली दुर्गा की पूजा। नवरात्र की दुर्गापूजा।

शारद्य[1]—वि० [स०] शरद्काल का। शरद् ऋतु सबधी।

शारद्य[2]—सज्ञा पुं० शरत् ऋतु मे होनेवाला अन्न (को०)।

शारद्वत—सज्ञा पुं० [स०] १ कृपाचार्य का एक नाम। २ गौतम (को०)।

शारद्वती—सज्ञा स्त्री० [स०] कृपाचार्य की पत्नी। कृपी (को०)।

शारि[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ पासा आदि खेलने की गोट। २ शतरज का मुहरा (को०)। ३ छोटी गोल गेंद (को०)।

शारि[2]—सज्ञा स्त्री० १ मैना। २. कपट। छल। धोखा। ३. एक प्रकार का गीत। ४ हाथी की झूल (को०)।

शारिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मैना नाम की चिड़िया। २ शतरज या चौसर खेलने की क्रिया। ३. सारगी आदि बजाने की कमानी। ४ वीणा या सारगी आदि बजाने की क्रिया। ५ दुर्गा देवी का एक नाम। शतरज की गोटी (को०)। ६ कोण। मिजराब (को०)।

शारिकाकवच—सज्ञा पुं० [स०] दुर्गा का एक कवच जो रुद्रयामल तत्र मे है।

शारित—वि० [सं०] रगीन। चित्रविचित्र।

शारिपट्ट—सज्ञा पुं० [सं०] शतरज या चौसर आदि खेलने की बिसात।

शारिपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] गौतम बुद्ध के एक प्रधान शिष्य (को०)।

शारिफल, शारिफलक—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'शारिपट्ट'।

शरिवा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अनंतमूल। सालसा। दुगलभा। २ जवासा। धवासा।

शारिशृग—सज्ञा पुं० [सं० शारिशृङ्ग] जुआ खेलने का एक प्रकार का पासा या गोट।

शारी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कुशा नाम की घास। २ एक प्रकार का पक्षी। ३. मूँज। काँडा।

शारी[2]—सज्ञा पुं० १ शतरज की गोट। २ गेंद।

शारीर[1]—वि० [सं०] १ शरीर सबधी। शरीर का। २. शरीर से उत्पन्न।

शारीर[2]—सज्ञा पुं० १. शरीर को होनेवाले दु ख जो आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक, तीन प्रकार के होते है। २. वृष। साँड। ३. जीवात्मा। आत्मा (को०)। ४ मल (को०)। ५ शरीररचना (को०)। ६ एक प्रकार की ओषधि (को०)।

शारीरक[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शारीरकी] १ शरीर से उत्पन्न। २ शरीर स सबधित (को०)। ३ मूर्तिमान्। शरीरधारी (को०)।

शारीरक[2]—सज्ञा पु० १ मूर्तिमान् जीव। २ दे० 'शारीरक भाष्य'।

शारीरक भाष्य—सज्ञा पु० [स०] शकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरक सूत्र—सज्ञा पुं० [स०] वेदव्यास का बनाया हुआ वेदातसूत्र।

शारीरकीय—वि० [स०] मूर्तिमान। शरीरधारी (को०)

शारीरतत्व—सज्ञा पुं० [स०] वह शास्त्र जिसमे शरीर के तत्वो और रचना आदि का विवेचन होता है।

शारीर विद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शारीर विधान'।

शारीर विधान—सज्ञा पु० [स०] १ वह शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार उत्पन्न होते और बढते है। २ वह शास्त्र जिसमे जीवो के शरीर के भिन्न भिन्न अगो और उनके कार्यों का विवेचन होता है।

शारीर व्रण—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का रोग।

विशेष—यह वात, पित्त कफ और रक्त से उत्पन्न होता है। परतु रक्त के सबध से द्विदोषज और त्रिदोषज होने के कारण आठ प्रकार का हो जाता है—(१) वातव्रण, (२) पित्तव्रण, (३) कफव्रण, (४) रक्तव्रण, (५) वातपित्तज व्रण, (६) वातकफज व्रण, (७) कफपित्तज व्रण, और (८) सन्निपातज व्रण।

शारीर शास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शारीर विधान'।

शारीरिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शारीरिकी] १ शरीर संबंधी। कालेवरिक। कायिक। दैहिक। जिस्मानी। जैसे, शारीरिक कष्ट। २. आध्यात्मिक (को०)।

शारुक—वि० [स०] १ हत्या या नाश करनेवाला। २ कष्ट देनेवाला। दुष्ट।

शारुँगु'—सज्ञा स्त्री० [स० शारि] मैना। उ०—वो शारुँ के मूँ ते सुने यो वैन। नसीहत पर उसकी गजब मे हो ऐन। —दक्खिनी०, पृ० ८४।

शार्क'—सज्ञा पु० [स०] १ चीनी। शर्करा। २ एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम।

शार्क'—सज्ञा पुं० [अ०] एक विशालकाय मछली।

विशेष—यह शिकारी मछली है जो समुद्रो मे रहती है। इसका शिकार करना बहुत खतरनाक होता है। यह समुद्री जीवो को खाती है। कभी कभी छोटी मोटी नावो को उलट देती है। इसके जरीर का तेल दवा के काम आता है।

शार्कक—सज्ञा पु० [स०] १. दूध का फेन। दुग्धफेन। मलाई। २ चीनी का ढेला। शर्करापिंड। ३ गोश्त का टुकडा।

शार्करं'—सज्ञा पु० [स०] १ दूध का फेन। २ दूध की पपड़ी या मलाई। ३ लोध्रवृक्ष। ४ कँकरीली और पथरीली जगह।

शार्करं'—वि० [वि० स्त्री० शार्करी] १ कँकरीला। २ शक्कर या चीनी का बना हुआ।

शार्करक—सज्ञा पु० [स०] १ वह स्थान जो ककरो और पत्थरो से भरा हो। कँकरीली या पथरीली जगह। २ वह स्थान जहाँ चीनी बहुत होती हो।

शार्करक'—वि० कँकरीला। पथरीला।

शार्कर मद्य—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का मद्य जो चीनी और घी से बनाया जाता था।

शार्करिक—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'शार्करक'।

शार्करी—वि० [स० शार्करिन्] मधुमेह या पथरी रोग से ग्रस्त [को०]।

शार्करीधान—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल का एक देश जो उत्तर दिशा मे था।

शार्करीय—सज्ञा पुं०, वि० [स०] दे० 'शार्करक'।

शार्गाल—वि० [स०] शृगाल सबधी। शृगाल का [को०]।

शार्ङ्ग'—सज्ञा पु० [स०] १ धनुष। कमान। २ विष्णु का धनुष। विष्णु के हाथ मे रहनेवाला धनुष। ३ अदरक। आदी। ४ एक प्रकार का साम। ५. शार्ङ्गक। पक्षी। चिडिया (को०)।

शार्ङ्ग'—वि० १ शृग सबधी। २ शृग का। शृगनिर्मित। २ धनुर्धर। धनुष धारण करनेवाला (को०)।

शार्ङ्गक—सज्ञा पु० [स०] पक्षी। चिडिया।

शार्ङ्गधन्वा—सज्ञा पु० [शार्ङ्गधन्वन्] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गधर—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. कमनैत।

शार्ङ्गपाणि—सज्ञा पुं० [स०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण ३ वह जो धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गभृत्—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शार्ङ्गपाणि'।

शार्ङ्गवैदिक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का स्थावर विष जो देखने मे सोठ के समान होता है।

शार्ङ्गष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. काकजंघा। २. घुँघची।

शार्ङ्गष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ महाकरज। २ लताकरज।

शार्ङ्गायुध—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष धारण करता हो। कमनैत।

शार्ङ्गिक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शार्ङ्गक'।

शार्ङ्गी—सज्ञा स्त्री० [स० शार्ङ्गिन्] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण ३. धनुर्धारी। कमनैत।

शार्टकट—वि० [अ०] सक्षिप्त या छोटा रास्ता। उ०—रास्ते तो कई हो सकते है, और शार्टकट होते नही।—नदी०, पृ० ३८।

शार्दूल'—सज्ञा पु० [सं०] १ चीता। २ व्याघ्र। बाघ। ३ राक्षस। ४ शरभ नामक जतु। ५ एक प्रकार का पक्षी। ६ यजुर्वेद की एक शाखा। ७. दोहे का एक भेद जिसमे ६ गुरु और ३६ लघु मात्राएँ होती हैं। ८. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ९. सिंह।

शार्दूल'—वि० । सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

विशेष—इस अर्थ मे इसका प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने मे उनके अत मे होता है। जैसे,—नरशार्दूल।

शार्दूलकद—सज्ञा पुं० [स० शार्दूलकन्द] जगली प्याज।

शार्दूलकर्ण—सज्ञा पु० [स०] त्रिशंकु के एक पुत्र का नाम।

शार्दूलचर्म—सज्ञा पु० [स० शार्दूलचर्मन्] बाघ का चमडा। व्याघ्रचर्म [को०]।

यौ०—शार्दूलचर्मावर = व्याघ्रचर्म धारण करनेवाले, शिव।

शार्दूलज—सज्ञा पुं० [स०] व्याघ्रनख नामक गधद्रव्य।

शार्दूललालित—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त। इसका पद अठारह अक्षरो का होता है, और उनका क्रम इस प्रकार है—म+स+ज+स+त+स। इसका दूसरा नाम शार्दूललसित भी है।

शार्दूललसित—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शार्दूललालित'।

शार्दूलवाहन—सज्ञा पुं० [सं०] जैनियो के अनुसार पचीस पूर्व जिनो मे से एक जिन का नाम।

शार्दूलविक्रीडित—सज्ञा पुं० [स०] १ एक प्रकार का वर्णवृत्त। इसका चरण उन्नीस अक्षरो का होता है, और उनका क्रम इस प्रकार है—म [illegible] ज+स+त+त+एक गुरु। २ बाघ की क्रीड़ा।

शार्मण्य'—सज्ञा पुं० [स०] जर्मनी देश का नाम [को०]।

शार्मण्य'—वि० जर्मनी।

शार्यात—सज्ञा पुं० [सं०] १ वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि का नाम। २ एक प्रकार का साम।

शार्व—वि० [स०] शर्व अर्थात् शिवसबधी [को०]।

शार्वदिक्—सज्ञा स्त्री० [स० शार्वदिश्] पूर्व दिशा [को०]।

शार्वर[1]—सज्ञा पुं० [स०] बहुत अधिक अधकार। अधतमस।

शार्वर[2]—वि० १ रात का। रात्रि से सबंध रखनेवाला। रात्रिकालीन। २ घातक। हिंसक। दुर्मति [को०]।

शार्वरिक—वि० [स०] रात्रि सबधी। रात का।

शार्वरी[1] सज्ञा स्त्री० [स०] १ रात। रात्रि। २. लोध।

शार्वरी[2]—सज्ञा पुं० [स० शार्वरिन्] बृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से चौंतीसवाँ सवत्सर।

शार्वरीक—वि० [स०] रात्रि सबधित [को०]

शालकटकट—सज्ञा पु० [स० शालङ्कटङ्कट] सुकेशी राक्षस का एक नाम जो वामनपुराण के अनुसार विद्युत्केशी और शालकटकटा का पुत्र था।

शालकायन—सज्ञा पुं० [स० शालङ्कायन] १. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ नदी।

यौ०—शालकायन जीवसू=व्यास की माता। सत्यवती।

शालकायनजा—सज्ञा स्त्री० [स० शालङ्कायनजा] शालंकायन की पुत्री सत्यवती जो व्यास की माता थी।

शालकायनि—सज्ञा पु० [स० शालङ्कायनि] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शालंकि—सज्ञा पुं० [स० शालङ्कि] पाणिनि ऋषि का नाम।

शालकी—सज्ञा स्त्री० [स० शालङ्की] १ गुडिया। २ कठपुतली।

शाल[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष। सखुआ। साखू। सालू।

विशेष—यह हिमालय पर्वत पर सतलज से आसाम तक, मध्य भारत के पूरब प्रात मे पश्चिम बगाल की पहाडियो पर और छोटा नागपुर के जंगलो मे उत्पन्न होता है। इसका वृक्ष बहुत बडा और विशाल होता है। छोटे वृक्षों की छाल प्राय. दो इच मोटी खुरदरी, काले रग की और रेशेदार होती है। कच्ची लकडी सफेद रग की और जल्दी बिगडनेवाली होती है। सार भाग जब ताजा होता है तब कुछ पीलापन लिए हुए भूरे रग का होता है परतु सूखने पर काला हो जाता है। पत्ते चिकने चमकीले, अंडाकार, ६ से १० इंच तक लबे और ४ से ६ इच तक चौडे होते हैं। डालियो के अत मे फूलो के गुच्छे लगते हैं। पुष्पदल लबे और हलके पीले रग के आते है, और किंचित् अडाकार तथा अनीदार होते हैं। फल गोल और आध इच लबा होता है। वसत मे यह फूलता है और वर्षा के प्रारभ मे इसके फल पक जाते हैं। इसकी लकडी मकान आदि बनाने मे अधिकता से काम मे आती है। इससे एक प्रकार का लाल रग निकलता है। इसके बीजो का तेल निकालकर जलाने के काम मे लाया जाता है। दुर्भिक्ष मे फलो का आटा खाने के काम मे आता है। यह दो प्रकार का होता है—एक बडा शाल और दूसरा पीतशाल या विजयसार। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा, कडवा, रूखा, स्निग्ध, गरम, कसैला, कातिजनक तथा कफ, पित्त, घाव, पसीना, कृमिरोग, योनिरोग, प्रमेह, कुष्ठ, विस्फोटक आदि रोगो को दूर करनेवाला है। इसके पत्ते और गोद प्राय औषधि के काम मे आते है।

पर्या०—साल। अश्वकर्ण। शकुवृक्ष। सर्ज रस। यक्षधूप। आदि।

२ एक प्रकार की मछली। ३ वृक्ष। पेड। ४. एक नदी का नाम। ५ वृक्ष के एक पुत्र का नाम। ६. राजा शालिवाहन का एक नाम। ७ राल। धूना। ८ घेरा। बाडा। बाड (को०)।

शाल[2]—सज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर जिसके किनारे पर प्राय बेल बूटे आदि बने होते हैं। दुशाला।

यौ०—शालदुशाला। शालदोज। शालबाफ।

शाल(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शाला] घर। कक्ष। कमरा। उ०—ऊँचे मदिर शाल रसोई। एक घरी पुनि रहन न होई।—सत रवि०, पृ० १३४।

शाल[4]—सज्ञा स्त्री० [स० शल्य] एक प्रकार की बर्छी।

शालक—सज्ञा पुं० [स०] १ पटुआ। नाडी शाक। २. ममेरा। दिल्लगीबाज। भाँड। ३ एक प्रकार का राग [को०]।

शालकटकट—सज्ञा पु० [स० शालकटङ्कट] महाभारत के अनुसार एक राक्षस का नाम जिसे घटोत्कच ने मार डाला था।

शालकल्याणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का साग जो चरक के अनुसार भारी, रूखा मधुर, शीतवीर्य और पुरीषभेदक होता है।

शालग्राम—सज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति जो पत्थर की होती है और नारायणी नदी मे पाई जाती है।

विशेष—यह मूर्ति प्राय पत्थर की गोलियो या बटियो आदि के रूप मे होती है और उसपर चक्र का चिह्न बना होता है जिसे लोग साधारण बोलचाल की भाषा मे जन्ञ कहते हैं। जिस शिला पर यह चिह्न नहीं होता वह पूजन के लिये उपयुक्त नहीं मानी जाती। लोग अन्य देवमूर्तियो की भाँति इसको भी पहले प्रतिष्ठा करते हैं। और तब इसका पूजन करते है। अनेक पुराणो मे इसकी पूजा का माहात्म्य मिलता है।

२. बडी गंडकी या नारायणी नदी के किनारे का एक गाँव।

विशेष—इस गाँव के समीप शाल के वृक्ष बहुत अधिकता से हैं। इस गाँव के पास ही नदी मे शालग्राम शिलाएँ भी पाई जाती हैं। वैष्णव लोग इस गाँव को बहुत पवित्र मानते हैं।

शालग्रामगिरि—सज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जहाँ शालग्राम की मूर्तियाँ मिलती हैं।

शालज—सज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की मछली जिसे शाल भी कहते हैं। २. सर्ज रस। शाल वृक्ष का निर्यास।

शालदोज—सज्ञा पुं० [फा० शालदोज़] वह जो शाल के किनारे पर बेल बूटे आदि बनाता है।

शालिनि—[सं० शालाद्रि] शालि या धानों वाला एक नाम।

शाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. घर। गृह। मकान। २. आश्रम। स्थान। —कपाट, संज्ञा पु०, सीसाम। ३. नाला। खाल। ४. दरवाजे और खिड़की के बीच में बनवाया जानेवाला पल्लों के जोड़ों में से एक जोड़ा। ५. भवन का एक भाग या भाग। पुं० शाला। पुं० दरवाजा। पट्ट। (देश०)। ६ वृक्ष का नाम (?)।

शालाकी—संज्ञा पुं० [सं०] १. भाई। भाई। २. घर। शालि जो ... ३. शालिहोत्र का एक ... (?)।

शालागर्भ—संज्ञा पुं० [सं० शालगर्भ] १. दुर्गा। मकान बनाना। २. ... ३. ...

शालीन—संज्ञा पुं० [सं० शालीन] १. घर का सामान। घर की ... २. ... ३. ...

शालीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. आयुर्वेद में अनेकों आठ प्रकार के सन्या ... ...

शालावृक—सज्ञा पु० [स०] १. बदर। बानर। कपि। २ कुत्ता। कुक्कुर। ३ लोमडी। शृगाल। ४ बिल्ली। विडाल। ५ हरिन। मृग। ६ भेडिया (को०)।

शालासद्—वि० [स०] घर पर रहनेवाला (को०)।

शालिच—सज्ञा पु० [स० शालिञ्च] एक प्रकार का साग जिसे शालच या शालि साग भी कहते हैं। वैद्यक के अनुसार यह चरपरा दीपन, तथा प्लीहा, बवासीर और कफ पित्त का नाश करनेवाला माना गया है।

शालिची—सज्ञा स्त्री० [स० शालिञ्ची] दे० 'शालिच'।

शालि—सज्ञा पु० [स०] १ वैद्यक के अनुसार पाँच प्रकार के धानो मे से एक प्रकार का धान जो हेमत ऋतु मे होता है। जडहन।

विशेष—वैद्यक मे इसके रक्तशालि, कलम, पाडुक, शकुनाहृत, सुगधक, कर्दमक, महाशालि, दूषक, पुष्पाडक, पुडरीक, महिष मस्तक, दीर्घशूक, काचनक, हायन, लोध्रपुष्पक आदि अनेक भेद कहे गए हैं। यद्यपि वैद्यक के अनुसार भिन्न भिन्न देशो मे उत्पन्न होनेवाले के भिन्न भिन्न गुण कहे गए हैं, तथापि साधारणत. सभी शालि धान्यो के गुण इस प्रकार माने गए हैं—मधुर, कषायरस, स्निग्ध, बलकारक, स्वरप्रसादक, शुक्रवर्धक, कुछ कुछ वायु और कफवर्धक, शीतवीर्य पित्तनाशक और मूत्रवर्धक।

पर्या०—मधुर। रुच्य। व्रीहिश्रेष्ठ। नृपप्रिय। धान्योत्तम। कैदार। सुकुमारक।

२ वासमती चावल। ३. काला जीरा। ४. गन्ना। पौंढा। ५ गधविलाव। गधमार्जार। ६. पक्षी (को०)। ७. एक यज्ञ का नाम।

शालिक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो शाला या भवन सबधी हो। २. वह जो शाल वृक्ष सबधी हो। ३. ततुवाय। जुलाहा। ४ एक प्रकार का कर या महसूल। राजस्व। ५ कारीगरो का गाँव (को०)।

शालिकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विदारी कद। २. मैना। शारिका। ३ शालपर्णी। ४ घर। मकान। ५. आधार। स्थान (को०)।

शालिगोप—सज्ञा पुं० [स०] [सज्ञा स्त्री० शालिगोपी] वह जो खेतो की, विशेषत. धान के खेतो की, रखवाली करता हो।

शालिचूर्ण—सज्ञा पु० [स०] चावल का आँटा (को०)।

शालिधान—सज्ञा पुं० [स० शालिधान्य] बासमती चावल।

विशेष—यह धान जेठ मास मे बोया जाता है और अगहन के अत या पूस के आरभ मे पककर तैयार हो जाता है। इसे अगहनी या हैमतिक शालिधान्य भी कहते हैं। इसका पौधा मिट्टी तथा देश के अनुसार दो हाथ से लेकर तीन हाथ तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते साधारण धान के समान होते हैं पर उनकी अपेक्षा कुछ कडे और चिकने होते है। यह छोटा और बडा दो प्रकार का होता है। भेद इतना ही है कि छोटा पहले पकता है और बडा कुछ देर मे। यह धान बिना कुटे हुए सफेद होता है और बहुत बारीक तथा सुदर होता है। चावलो मे यह सबसे उत्तम माना जाता है।

शालिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ ग्यारह अक्षरो का एक वृत्त। इसमें क्रम से एक यगण दो तगण और अत मे दो गुरु होते हैं। २ भसीड। पद्मकद। ३ मेथी। ४. गृहिणी। गृहस्वामिनी (को०)।

शालिपार्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] एक ओषधि। दे० 'एकागी'—३।

शालिपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ पिठवन। गृश्निपर्णी। ३ बनउरदी। ४ शालपर्णी। सरिवन।

शालिपिड—सज्ञा पु० [स० शालिपिण्ड] महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम।

शालिपिष्ट—सज्ञा पु० [स०] १ स्फटिक। बिल्लौर पत्थर। २ चावल का आटा (को०)।

शालिभवन—सज्ञा पुं० [स०] धान से भरा हुआ क्षेत्र।

शालिराट्—सज्ञा पु० [स०] हमराज चावल।

शालिवाह—सज्ञा पु० [स०] चावल ढोनेवाला बैल (को०)।

शालिवाहन—सज्ञा पुं० [स०] शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा।

विशेष—इसने शाक नामक संवत् चलाया था। टाड के राजस्थान के इतिहास मे लिखा है कि यह गजनी के राज गज का पुत्र था। पिता के मारे जाने पर यह पजाब चला आया और उसपर अपना अधिकार जमा लिया। इसने शालिवाहन पुर नामक नगर भी बसाया था। इसकी राजधानी गोदावरी के किनारे प्रतिष्ठानपुर मे थी। कही कही इसका नाम सातवाहन भी मिलता है। कथा सरित्सागर मे लिखा है कि इसे सात नामक गुह्यक उठाकर ले चला करता था, इसी से इसका नाम सातवाहन पडा।

शालिहोत्र—सज्ञा पु० [स०] १. घोडा। २. घोडो और पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। अश्ववद्यक। ३. पुराणानुसार एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम। ४. अश्वचिकित्सा शास्त्र का लेखक। अश्ववैद्यक का प्रणेता (को०)।

शालिहोत्री—सज्ञा पु० [स० शालिहोत्रिन्] १ वह जो पशुओं और विशेषत. घोडा आदि की चिकित्सा करता हो। अश्ववैद्य। २ अश्व। घोडा (को०)।

शाली—सज्ञा स्त्री० [स०] १. काला जीरा। २. मेथी। ३. शालपर्णी। ४ दुरालभा।

शाली—वि० [स० शालिन्] १ (प्राय समास मे प्रयुक्त) युक्त। सहित। २. घरेलू। गृह सबधी। ३. अच्छे आचार व्यवहारवाला। शालीन। श्लाघ्य (को०)।

शालीक—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन आचार्य का नाम।

शालीन[1]—वि० [स०] १. जो धृष्ट या उद्दड न हो। विनीत। नम्र। २ जिसे लज्जा आती हो। सलज्ज। ३ सदृश। समान। तुल्य। ४. अच्छे आचार विचारवाला। ५. शाला सबधी।

माना गया। ६ सँभालनेवाला। संचालक। प्रबंधक। ७ जो व्यवहार में कुशल हो। दक्ष। चतुर।

शालीन'—वि० पुं० १. नम्र। २. विनीत। शालीनता। नम्रता। ३. वह जो अच्छी तरह निर्वाह कर सके।

शालीनता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शालीन होने का भाव या धर्म। २. लज्जा। लाज। शर्म। ३. नम्रता। उ०—मैं नहीं जो प्रवेहनि लज्जा हूँ, मैं शालीनता सिखाती हूँ। मतवाली सुंदरता पग में नूपुर सी लिपट मनाती हूँ।—कामायनी, पृ० १०३। ४ सभ्यता।

शालीनत्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ नम्रता। शालीनता। २ मोथा नामक घास। ३. लज्जाशीलता। विनम्रता (जै०)।

शालीना—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शालीनता'।

शालीनीकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १. नम्र या शिष्ट बनाना। २ दुर्वचन। निंदा। धिक्कार (जै०)।

शालीय'—वि० [सं०] शाला या घर संबंधी। २ शाल वृक्ष का।

शालीय'—संज्ञा पुं० एक वैदिक आचार्य का नाम।

शालु—संज्ञा पुं० [सं०] १ भसीड़। कमलकंद। २ भटेउर या गोरक नामक ओषधि। ३ कषाय द्रव्य। ४ मेढ़क। भेक। ५ एक प्रकार का फल।

शालुक—संज्ञा पुं० [सं०] १. भसीड़। पद्मकंद। २. जायफल।

शालुर—संज्ञा पुं० [सं०] मंडूक। भेक। मेढक (जै०)।

शालूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंडूक। मेढक। २ जायफल। शालीफल। ३ दे० 'शालुक'। ४ भसीड़। ५ एक प्रकार का रोग।

शालूकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] महाभारत के अनुसार एक तीर्थ का नाम।

शालूर—संज्ञा पुं० [सं०] भेक। मेढक।

शालूरक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का कीटाणु जो अतड़ियों में पीड़ा उत्पन्न करता है।

शालेय'—संज्ञा पुं० [सं०] १. मोथा। मधुरिका। २. शालि धान का खेत। ३ मूली।

शालेय—वि० १. शाल संबंधी। शाल वृक्ष का। २. शाला संबंधी (जै०)।

शालेया—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेवी। मिश्रेया।

शालोत्तरीय—संज्ञा पुं० शालोत्तर उपनिषद के अनुयायी, पाणिनि (जै०)।

शाल्मल—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेमर। सेमल वृक्ष। सेमल का पेड़। २. नागरमोथा। ३ एक द्वीप का नाम। विशेष दे० 'शाल्मलि'—३। ४. एक नरक। विशेष दे० 'शाल्मलि'—४।

शाल्मलक—संज्ञा पुं० [सं०] शाल्मल वृक्ष। सेमल का पेड़। वि० दे० 'शाल्मल'। २. पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।

विशेष—यह द्वीप क्षीर समुद्र के चारों ओर है और इसका विस्तार शाल्मल द्वीप के विस्तार से दुगुना है।

शाल्मलि—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेमर। सेमल वृक्ष। २. महाभारत के अनुसार एक द्वीप का नाम। ३ पुराणानुसार एक नरक का नाम।

विशेष—यह नरक अंधतामिस्र के ऊपर और रौरव के नीचे है। इसमें पापी लोग भेजे जाते हैं। इसमें तीक्ष्ण, लौहमय, अग्नि के समान तप्त सेमर वृक्ष हैं। इसमें आकर, यम, दंडधर आदि पापियों को अनेक प्रकार की यातनाएँ देते हैं। इसे वैतरणी, असिपत्रवन आदि नामों से भी कहते हैं।

शाल्मलिक—संज्ञा पुं० [सं०] १. सेमर वृक्ष। २. सेमल का फल। सेमल का फूल।

शाल्मलिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सेमर का वृक्ष। सेमल।

शाल्मलिपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] सेमर। सेमल वृक्ष।

शाल्मलिस्थ—संज्ञा पुं० [सं०] १. नरक का एक नाम। २. पाप। पुण्य (जै०)।

शाल्मली'—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. सेमर। सेमल। २. एक नरक का नाम। उ०—जिन कहूँ नर्क नाम शाल्मली द्वार। पापी बाँध सटासट तार।—कबीर सा०, पृ० ४६७। ३. पाताल की एक नदी का नाम (जै०)।

शाल्मली'—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलिन्] सेमर। सेमल।

शाल्मलीकंद—संज्ञा पुं० [सं० शाल्मलिकन्द] सेमल की जड़, जो मधुर के अनुसार मधुर, शीतल, रसायन, शुक्र तथा रक्तपित्त नाशक माना जाता है।

शाल्मलीफल—संज्ञा पुं० [सं०] सेमल या सेमर का फल या पुष्प।

शाल्मलीफलक—संज्ञा पुं० [सं०] गुप्त के अनुसार सेमल या काठ की वह पट्टी जिसपर रखकर सुनार सोने की पात बनाते हैं।

शाल्मलीद्वीप—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप। विशेष दे० 'शाल्मलि'-२।

शाल्मलीवेष्ट, शाल्मलीवेष्टन—संज्ञा पुं० [सं०] सेमल का गोंद। मोचरस।

शाल्मलीवेष्टक—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप। विशेष दे० 'शाल्मलि'-२।

शाल्व—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौभ नगर के एक राजा का नाम।

विशेष—महाभारत में लिखा है कि काशिराज की कन्या अंबा ने [illegible] शाल्वराज को कामना करके तपस्या की थी। इसपर महादेव ने प्रसन्न होकर वर दिया था कि तुम्हारी अभीष्ट सिद्धि होगी। अंबा ने दूसरा जन्म लेकर द्रुपद के यहाँ शिखंडी के रूप में जन्म लिया। [illegible] शाल्वराज ने [illegible] शाल्व नगर [illegible] का नाम।

शाल्व

[illegible] शाल्व

शाल्वगिरि—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन पर्वत का नाम ।

शाल्वण—सज्ञा पुं० [स०] १ वह लेप जो फोडे पकाने के लिये उसपर चढाया जाता है । पुलटिस । २ भरता । चोखा ।

शाल्वसेनी—सज्ञा पु० [स०] १ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश का नाम । २ इस देश का निवासी ।

शाल्विक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का पक्षी जिसे क्षुद्रचूड भी कहते हैं ।

शाव[1]—सज्ञा पु० [स०] १ बच्चा, विशेषत पशुओ आदि का बच्चा । २. मृतक । मुरदा । ३ भूरा रंग । ४. सूतक जो किसी के मर जाने पर उसके सबधियो को लगता है । ५. मरघट । श्मशान ।

शाव[2]—वि० १ शवसबधी । शव का । २. भूरे रग का (को०) । ३ मरा हुआ । मुरदा (को०) ।

शावर[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ बच्चा । विशेषत पशु या पक्षी का बच्चा । २ झाऊ ।

शावक—सज्ञा पु० [स०] १ पाप । गुनाह । २ अपराध । कसूर । ३ लोध वृक्ष । ४ शबर स्वामीकृत भाष्य । ५ एक तत्र ग्रथ जो शिव का बनाया हुआ माना जाता है ।

शावर[2]—वि० शबर सबधी । शबर का ।

शावरक—सज्ञा पुं० [स०] पठानी लोध ।

शावर चदन—सज्ञा पु० [स० शावर चन्दन] एक प्रकार का चदन ।

शावरभेदाक्ष—सज्ञा पु० [स०] ताँबा ।

शावरी—सज्ञा स्त्री० [स०] कौछ । केवाँच ।

शावरोत्सव—सज्ञा पुं० [सं०] कालिकापुराण के अनुसार शाबर या म्लेच्छो का एक उत्सव जो होली के सदृश कथित है [को०] ।

शाश्वत[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाश्वती] १ जो सदा स्थायी रहे । कभी नष्ट न होनेवाला । नित्य । २ सपूर्ण । समस्त । सब (को०) ।

शाश्वत[2]—सज्ञा पुं० १ वेदव्यास । २ शिव । ३ स्वर्ग । ४ अतरिक्ष । ५ सूर्य (को०) । ६ एक कोशकार का नाम (को०) । ७. नित्यता । निरतरता (को०) ।

शाश्वतिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० शाश्वतिकी] स्थायी । नित्य । शाश्वत ।

शाश्वती—सज्ञा स्त्री० [सं०] पृथ्वी ।

शाष्कुल—वि० [स०] मास या मछली खानेवाला । मासाहारी । गोश्तखार ।

शाष्कुलिक—सज्ञा पु० [स०] सेंकी या पकी हुई रोटियाँ, पूडी, कचौडी आदि । शष्कुला का समूह या ढेर [को०] ।

शास—सज्ञा पु० [स०] १ स्तुति । स्तव । २. अनुशासन ।

यौ०—शासानुशास ।

शासक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शासिका] १ वह जो शासन करता हो । २. वह जिसके हाथ मे किसी नगर, प्रात या देश आदि की राजकीय व्यवस्था हो । दडाधिकारी । हाकिम । ३ कौटिल्य के अनुसार जहाज का कप्तान ।

शासन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. आज्ञा । आदेश । हुक्म । २ किसी को अपने अधिकार या वश मे रखना । ३ लिखित प्रतिज्ञा । पट्टा । ठोका । ४ राजा की दान की हुई भूमि । मुआफी । ५ वह परवाना या परमान जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय । ६ शास्त्र । ७ इद्रियनिग्रह । ८. किसी के कार्यो आदि का नियत्रण । ९. किसी नगर, प्रात या देश आदि की राजकीय व्यवस्था करने का काम । हुकूमत । १० दड । सजा । ११ शिक्षण । अध्यापन (को०) ।

यौ०—शासनकर्ता । शासनतत्र । शासनदूषक=राजाज्ञा का उल्लघन करनेवाला । शासनप्रणाली । शासनव्यवस्था ।

शासन[2]—वि० १ शिक्षा देनेवाला । शिक्षक । बोधक । २. दड देनेवाला । मारक [को०] ।

विशेष—यौगिक शब्दो के अत मे प्रयुक्त होने से इस शब्द के उक्त अर्थ होते हैं । जैसे, पाकशासन, स्मरशासन, शिष्यशासन आदि ।

शासनकर्ता—सज्ञा पुं० [स० शासनकर्तृ] शासन । शास्ता ।

शासनतत्र—सज्ञा पु० [स० शासन तन्त्र] हुकूमत का तौर तरीका । राज्यशासन का रीति या पद्धति ।

शासनदूषक—वि० [स०] शासन को न माननेवाला । राज्यादेश को न माननेवाला [को०] ।

शासनदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] जैनियो का एक देवी का नाम ।

शासनधर—सज्ञा पुं० [स०] १ शासक । २ राजदूत । एलची ।

शासनपत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ वह ताम्रपत्र या शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखा या खोदा हुई हो । २. शुक्रनीति के अनुसार राजाज्ञा का वह पत्र जिसपर राजा का हस्ताक्षर हो । फरमान ।

शासनप्रणाली—सज्ञा स्त्री० [स०] शासन की रीति या पद्धति । हुकूमत का तौर तरीका ।

शासनवाहक—सज्ञा पु० [स०] १. वह जो राजा की आज्ञा लोगो के पास पहुँचाता हो । २ राजदूत । एलची ।

शासनव्यवस्था—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शासनप्रणाली' ।

शासनशिला—सज्ञा स्त्री० [स०] वह शिला जिसपर कोई राजाज्ञा लिखी हो ।

शासनसत्ता—सज्ञा स्त्री० [स० शासन+सत्ता] शासन या नियमन की स्थिति या अधिकार । उ०—यहाँ उन्ही राजनीतिक दलो के हाथ मे शासनसत्ता रहेगी जो रूस के प्रति मित्रता रखेंगे ।—आ० अ० रा०, पृ० १२५ ।

शासनहर—सज्ञा पु० [स०] १. राजदूत । २ वह जो राजा की आज्ञा लोगो तक पहुँचाता हो ।

शासनहारक—सज्ञा पुं० [सं० शासनहारक] दे० 'शासनहर' ।

शासनहारी—सज्ञा पु० [स० शासनहारिन्] राजदूत । एलची । शासनहर ।

शासनातर्गत—वि० [स० शासन+अन्तर्गत] १ शासन के भीतर या अधीन। २. अधीन। वशीकृत।

शासना[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शासन] आज्ञा।—उ० दास होइ पुत्र होइ शिष्य होइ कोइ भाइ, शासना न मानई तौ कोटि जन्म नर्क जाइ।—राम चं०, पृ० ४८।

शासना[2]†—क्रि० स० [स० शासन] हुकूमत करना। शासन करना। उ०—या विधि शासन जीवन देई। हरिहर नाम न कबहूँ लेई। —कबीर सा०, पृ० २५५।

शासनाधीन वि० [स०] दे० 'शासनातर्गत'।

शासनानिवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] राजकीय आज्ञा का उल्लंघन [को०]।

शासनी सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्त्री जो लोगो को धर्म का उपदेश करती हो।

शासनीय—वि० [स०] १ शासन करने के योग्य। २ सुधारने के योग्य। ३ दड देने के योग्य। सजा देने के लायक।

शासनुशास—सज्ञा पुं० [स० शास+अनुशास] राजा। नरेश। शाह-शाह। उ०—जब उन्होने एथेस के वीरो के साथ मिलकर पर्शुपुरी के शासानुशास से युद्ध करके असाधारण शौर्य प्रकट किया था।—वैशाली०, पृ० १२४।

शासित[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शासिता] १ जिसका शासन किया जाय। शासन किया हुआ। २ सयमित। निग्रहित (को०)। ३. जिसे दड दिया जाय। दडित।

शासित[2]—सज्ञा पुं० १. प्रजा। २. निग्रह। सयम।

शासिता—सज्ञा पु० [स० शासितृ] १ शासक। शास्ता। २ दडविधान करनेवाला। दड देनवाला। ३. शिक्षक। उपदेशक [को०]।

शासी—सज्ञा पु० [स० शासिन्] शासन करनेवाला। शासक।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग प्राय. यौगिक शब्द बनाने मे, उसके अत में किया जाता है।

शास्—सज्ञा पुं० [स०] वक्ता। उद्घोषक। जैसे,—उक्थशस् = सूक्तो को उद्घोषित करनेवाला [को०]।

शास्तर पु—सज्ञा पु० [स० शास्त्र] दे० 'शास्त्र'। उ०—ब्रह्मा विध वेद कीन शास्तर मुन मथन काठ, कर कर अठरा पुरान गाई ज्ञान गैली।—सत तुरसी०, पृ० १५६।

शास्ता—सज्ञा पुं० [स० शास्तृ] १ शासक। २ राजा। ३. पिता। ४ उपाध्याय। गुरु। उ०—देवताओ और मनुष्यो के शास्ता हैं।—वैशाली०, पृ० ३३। ५ वह मनुष्य जिसे कोई काम करने का पूरा अधिकार हो। प्रधान नेता या पथप्रदर्शक। ६. वह मनुष्य जिसे शासन की अबाधित सत्ता प्राप्त हो। निरकुश शासक। दे० 'डिक्टेटर'। ७ बुद्ध (को०)। ८. जिन (को०)। ९ बौद्धो या जैनो का पूज्य उपदेष्टा (को०)।

शास्त्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शासन। २ दड। सजा। उ०—शिक्षा समेत बहुधा बहु शस्ति देते।—प्रिय०, पृ० १६७। ३ आदेश। आज्ञा (को०)। ४ राजदंड। उ०—अटल शास्ति नित करने पालन।—पल्लव, पृ० १३०। ५ शासन का चिह्न (को०)।

शास्त्र—सज्ञा पु० [स०] १ हिंदुओ के अनुसार ऋषियो और मुनियो आदि के बनाए हुए वे प्राचीन ग्रथ जिनमे लोगो के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलाए गए हैं और अनुचित कृत्यों का निषेध किया गया है। वे धार्मिक ग्रथ जो लोगो के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं।

विशेष—हमारे यहाँ वे ही ग्रथ शास्त्र माने गए हैं जो वेदमूलक हैं। इनकी सख्या १८ कही गई है और नाम इस प्रकार दिए गए हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमासा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद और अर्थशास्त्र। इन अठारहो शास्त्रो को अठारह विद्याएँ भी कहते हैं। इस प्रकार हिंदुओ की प्राय सभी धार्मिक पुस्तकें शास्त्र की कोटि मे आ जाती हैं। साधारणत शास्त्र मे बतलाए हुए काम विधेय माने जाते है, और जो बातें शास्त्रो मे वर्जित हैं, वे निषिद्ध और त्याज्य समझी जाती हैं।

२. किसी विशिष्ट विषय या पदार्थसमूह के सबध का वह समस्त ज्ञान जो ठीक क्रम से सग्रह करके रखा गया हो। विज्ञान। जैसे,—प्राणिशास्त्र, अर्थशास्त्र, विद्युत्शास्त्र, वनस्पति-शास्त्र। ३ आज्ञा। आदेश (को०)। ४ धर्मशास्त्र की आज्ञा (को०)। ५ पुस्तक। ग्रथ (को०)। ६. सिद्धात (को०)। ७. ज्ञान (को०)।

शास्त्रकार—सज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने शास्त्रो का प्रणयन या रचना की हो। शास्त्र बनानेवाला। २. ग्रथलेखक (को०)। ३. ऋषि। मुनि (को०)।

शास्त्रकृत्—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्र बनानेवाले, अर्थात् ऋषि, मुनि। २ आचार्य।

शास्त्रकोविद—वि० [स०] जो शास्त्रो मे निष्णात हो [को०]।

शास्त्रगंड—सज्ञा पु० [स० शास्त्रगण्ड] साधारण पाठक। बहुत हलका अध्ययन करनेवाला विद्यार्थी [को०]।

शास्त्रचक्षु—सज्ञा पुं० [स० शास्त्र चक्षुष्] १ शास्त्र की आँख, अर्थात् व्याकरण। २. वह जिसे शास्त्ररूपी नेत्र प्राप्त हो। ज्ञानी। पंडित।

शास्त्रचर्चा—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्र सबधी विचारविमर्श, अध्ययन, मनन आदि [को०]।

शास्त्रचारण—सज्ञा पु० [स०] वह जो शास्त्रो का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रदर्शी।

शास्त्रज्ञ—सज्ञा पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो शास्त्रो का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रो का जानकार। शास्त्रवेत्ता।

शास्त्रतत्व—सज्ञा पुं० [सं०] शास्त्रो मे वर्णित सत्य। परम सत्य [को०]।

शास्त्रतत्वज्ञ—सज्ञा पुं० [स० शास्त्रतत्त्वज्ञ] गणक। ज्योतिषी।

शास्त्रत्व—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्र का भाव या धर्म।

शास्त्रदर्शी [स० शास्त्रदर्शिन्] वह जिसे शास्त्रो का अच्छा [illegible] स्त्रज्ञ।

शास्त्र [illegible] शास्त्रो या धर्मग्रथो मे [illegible] [को०]।

शास्त्रदृष्टि'—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो शास्त्रो का ज्ञाता हो। शास्त्रज्ञ। २ ज्योतिषी (को०)।

शास्त्रदृष्टि'—सज्ञा स्त्री० [सं०] शास्त्र की दृष्टि। शास्त्रीय दृष्टिकोण। शास्त्रानुसार विचारपद्धति (को०)।

शास्त्रप्रवक्ता—सज्ञा पुं० [स० शास्त्रप्रवक्तृ] दे० 'शास्त्रवक्ता'।

शास्त्रप्रसग—सज्ञा पुं० [स० शास्त्रप्रसङ्ग] १ शास्त्र का विषय। २ किसी भी प्रकार का धार्मिक विवाद (को०)।

शास्त्रमति—सज्ञा पु० [स०] शास्त्रवेत्ता। शास्त्रविद् (को०)।

शास्त्रमीमासक—सज्ञा पु० [स० शास्त्र+मीमासक] शास्त्र की मीमासा या व्याख्या करनेवाला व्यक्ति।—शास्त्र मीमासक या तत्व निरूपक को किसी सामान्य तथ्य या तत्व तक पहुँचने की जल्दी रहती है।—रस०, पृ० ४३।

शास्त्रमीमासा—सज्ञा स्त्री० [स० शास्त्र+मीमासा] तत्वविचार। उ०—आधुनिक पश्चिमी शास्त्रमीमासा को विदेशी कहकर त्य गा भी नही।—रस०, पृ० ५।

शास्त्रयोनि—सज्ञा स्त्री० [स०] शास्त्रो का उद्गम स्थान (को०)।

शास्त्रवक्ता—सज्ञा पु० [स० शास्त्रवक्तृ] वह जो लोगो को शास्त्रो का उपदेश देता हो।

शास्त्रवर्जित—वि० [स०] शास्त्रो द्वारा निषिद्ध (को०)।

शास्त्रवाद—सज्ञा पु० [स०] किसी विषय का शास्त्रीय विवेचन (को०)।

शास्त्रविद्—वि० पु० [स०] शास्त्रो का जाननेवाला। शास्त्रदर्शी। शास्त्रज्ञ।

शास्त्रविधान—सज्ञा पुं० [स०] शास्त्रीय आज्ञा। वेदाज्ञा (को०)।

शास्त्रविधि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शास्त्रविधान' (को०)।

शास्त्रविमुख—वि० [स०] शास्त्रो का अध्ययन न करनेवाला (को०)।

शास्त्रविरुद्ध—वि० [स०] शास्त्रो के कथन के प्रतिकूल। अशास्त्रीय। अवैधानिक (को०)।

शास्त्रविप्रतिषेध, शास्त्रविरोध—सज्ञा पु० [स०] १ शास्त्रीय विषयो का परस्पर अनैक्य। विधि विधान की असगति। २ शास्त्रीय विधिके विरुद्ध आचरण (को०)।

शास्त्रविहित—वि० [स०] जो शास्त्र द्वारा कथित, अनुमोदित हो। शास्त्रसमत।

शास्त्रव्युत्पत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] शास्त्रो का अतरग ज्ञान। शास्त्रो मे प्रवीणता (को०)।

शास्त्रशिल्पी—सज्ञा पु० [स० शास्त्रशिल्पिन्] १ काश्मीर देश का एक नाम। २ भूमि। जमीन।

शास्त्रस गत, शास्त्रसमत—वि० [स० शास्त्रसङ्गत, शास्त्रसम्मत] शास्त्र के अनुकूल। शास्त्रसिद्ध।

शास्त्रसिद्ध—वि० [स०] शास्त्रो के प्रमाणानुसार स्थापित (को०)।

शास्त्रस्थिति सपादन—सज्ञा पुं० [स० शास्त्र+स्थिति+सम्पादन] शास्त्र मे निर्दिष्ट विधियो का पालन। उ०—पर रावण यदि राम के प्रति क्रोध या घृणा की व्यजना करेगा तो रस के तीनो अवयवो के कारण 'शास्त्रस्थिति सपादन' चाहे जो हो जाय पर उस व्यजित भाव के साथ पाठक के भाव का तादात्म्य कभी न होगा।—रस०, पृ० ६६।

शास्त्राचरण—सज्ञा पु० [स०] शास्त्र विधियो का पालन। २. शास्त्र का अध्ययन। ३ वह जो शास्त्रादेश का पालन करता हो। ४ वेदाध्यायी वटु (को०)।

शास्त्राज्ञा—सज्ञा स्त्री० [स०] शास्त्र की आज्ञा। शास्त्र का आदेश। उ०—धर्मविघ्न तथा शास्त्राज्ञा का कुछ भी विचार करते।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १८७।

शास्त्रातिक्रम—सज्ञा पु० [स०] शास्त्रीय विधियो का उल्लघन (को०)।

शास्त्रातिग—वि० [स०] शास्त्रो को न माननेवाला (को०)।

शास्त्रानुशीलन—सज्ञा पु० [स०] शास्त्रो का मनन (को०)।

शास्त्रानुष्ठान—सज्ञा पु० [स०] शास्त्रीय नियमो का पालन (को०)।

शास्त्रान्वित—वि० [स०] शास्त्रीय नियमो के अनुसार (को०)।

शास्त्राभिज्ञ—वि० [स०] शास्त्रो मे निष्णात। शास्त्रज्ञ (को०)।

शास्त्राभ्यासी—वि० [स०] शास्त्र का अभ्यास या अध्ययन करनेवाला। उ०—भारतीय शास्त्राभ्यासी रसमीमासा मे आत्मा को भी ग्रहण करते है।—रस० (भू०), पृ० ३।

शास्त्रार्थ—सज्ञा पु० [स०] १ किसी शास्त्रीय विषय पर वादविवाद करना। उ०—उसने अनेक पडितो को शास्त्रार्थ में जीता है।—भारतेंदु ग्र०, भा०, १, पृ० १०। २ शास्त्रविधियो या वचनो का अर्थ (को०)।

शास्त्रालोचन—सज्ञा पु० [स०] शास्त्रो के तत्व का विचार या आलोचना। शास्त्रार्थ। उ०—मध्यस्थ उभय भारती हुई, शास्त्रालोचन, शकर से हुआ प्रखर जिसमे, हारे मडन।—अपरा, पृ० २१३।

शास्त्रावर्तलिपि—सज्ञा स्त्री० [स०] ललितविस्तर के अनुसार प्राचीन काल का एक प्रकार की लिपि।

शास्त्रिक—वि० [स०] शास्त्रो का ज्ञाता। शास्त्री।

शास्त्री'—वि० [स० शास्त्रिन्] [वि० स्त्री० शास्त्रिणी] १. शास्त्र का जाननेवाला शास्त्रज्ञ। शास्त्रविद्।

शास्त्री'—सज्ञा पुं० १ वह जो शास्त्रो आदि का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रज्ञ। २ वह जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता हो। ३ एक उपाधि जो कुछ विद्यालयो आदि मे, इसी नाम की परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर प्राप्त होती है। ४ वह जो धार्मिक शिक्षा देता हो (को०)।

शास्त्रीय—वि० [स०] १ शास्त्र सबधी। शास्त्र का। २. शास्त्रसमत। (को०)। ३ वैज्ञानिक (को०)।

शास्त्रोक्त—वि० [स०] जो शास्त्र मे लिखे या कहे के अनुसार हो। शास्त्रो मे कहा हुआ। वैधानिक।

शास्य—वि० [स०] १ शासन करने योग्य। २ दड देने के योग्य। दडनीय। ३. सुधारने योग्य।

शाहंशाह—संज्ञा पुं० [फा०] बादशाहों का बादशाह। बहुत बड़ा बादशाह। महाराजाधिराज।

शाहशाही—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ शाहशाह का कार्य या भाव। २. व्यवहार का खरापन। (बोलचाल)।

क्रि० प्र०—जताना।—दिखलाना।—बघारना।

शाह'—संज्ञा पुं० [फा०] १ बहुत बड़ा राजा या महाराज। बादशाह। (अन्य अर्थ के लिये दे० 'बादशाह')। २ मुसलमान फकीरों की उपाधि।

शाह'—वि० बड़ा। भारी। महान्। जैसे,—शाहशाह।

विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग केवल यौगिक शब्द बनाने में उनके आदि में होता है।

शाहकार—संज्ञा पुं० [फा०] किसी कलाकार की सर्वोत्तम कृति [को०]।

शाहखर्च—वि० [फा० शाहखर्च] बादशाहों की तरह बहुत अधिक खर्च करनेवाला [को०]।

शाहगाम—संज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़े की एक चाल [को०]।

शाहजहाँ—संज्ञा पु० [फा०] १. दुनिया या विश्व का राजा। संसार का स्वामी। २ सम्राट् अकबर का पौत्र जिसने ताजमहल बनवाया था।

शाहजादा—संज्ञा पुं० [फा० शाहजादह्] [स्त्री० शाहजादी] बादशाह का लड़का। महाराजकुमार।

शाहजादी—संज्ञा स्त्री० [फा० शाहजादी] १ बादशाह की कन्या। राजकुमारी। २ कमल के फूल के अंदर का पीला जीरा।

शाहतरा—संज्ञा पुं० [फा० शाहतरह्] पित्त पापड़ा।

शाहतीर—संज्ञा पु० [फा०] दे० 'शहतीर' [को०]।

शाहतूत संज्ञा पुं० [फा०] दे० 'शहतूत' [को०]।

शाहदरा—संज्ञा पु० [फा० शाहदरह्] १ वह आबादी जो किसी महल या किले के नीचे बसी हो। २ राजमार्ग। आम रास्ता (को०)। ३. दिल्ली के पास यमुना के उस पार बसा हुआ एक कस्बा।

शाहदाना—संज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का भाँग का बीज जो दवा के काम आता है [को०]।

शाहदापरस्ती—संज्ञा स्त्री० [अ० शोहदा+फा० परस्ती] विषय वासना। उ०—चालीस बरस भए ये मस्ती। यो शेर को शाहदापरस्ती।—दक्खिनी०, पृ० १६२।

शाहनशी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ बादशाहों के बैठने का बहुमूल्य आसन। २ राजमहल के झरोखे के आगे का वह स्थान जहाँ बैठकर मुगल बादशाह प्रजा को दर्शन देते थे। ३ बैठने की ऊँची जगह [को०]।

शाहनामा संज्ञा पुं० [फा० शाहनामह्] १ वह काव्यग्रंथ जिसमें किसी राज्य विशेष के बादशाहों का वर्णन हो। २. फिरदौसी द्वारा रचित एक काव्य ग्रंथ, जिसमें ईरान के बादशाहों का वर्णन है [को०]।

शाहबलूत—संज्ञा पु० [फा०] दे० 'बलूत'।

शाहबाज—संज्ञा पुं० [फा० शाहबाज] १ सफेद रंग का एक प्रकार का शिकारी पक्षी। २ शूर। योद्धा (को०)।

शाहबाला—संज्ञा पु० [हिं०] दे० 'शहबाला'।

शाहमियाना—संज्ञा पु० [हिं०] दे० 'शामियाना'। उ०—बड़ा भारी देश और शाहमियाना खड़ा है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १२०।

शाहराह—संज्ञा स्त्री० [फा०] बड़ी सड़क। बड़ा रास्ता। राजमार्ग।

शाहरुखी—संज्ञा पुं० [फा० शाहरुखी] एक सिक्का। उ०—उन्होंने लूटपाट नहीं किया और चार अरब शाहरुखी लेकर संधि कर ली।—हुमायूँ०, पृ० १६।

शाहाना'—वि० [फा०] बादशाहों के योग्य। राजाओं का सा। राजसी।

शाहाना'—संज्ञा पु० १ विवाह का जोड़ा जो दूल्हे को पहनाया जाता है। यह प्रायः लाल रंग का होता है। जामा। २ दे० 'शहाना'। (राग)।

शाहिद'—संज्ञा पुं० [अ०] १ वह मनुष्य जो आँखों देखी घटना का न्यायाधीश के समक्ष वर्णन करे। साक्षी। गवाह। २ नायिका। प्रेमिका (को०)।

शाहिद'—वि० १ सुंदर। मनोहर। खूबसूरत। २. श्रेष्ठ। उत्तम। उम्दा।

शाही—संज्ञा पुं० [फा०] १. बाज पक्षी। श्येन। २ तुलादंड। तराजू की डाँडी [को०]।

शाही—वि० [फा०] शाहों या बादशाहों का। राजसी। जैसे—शाही दरबार। शाही महल। शाही सवारी।

शाहिन—संज्ञा पु० [फा०] १ दे० 'शाहबाज'। २ वह सुई जो तराजू की डंडी के मध्य भाग में लगी होती है और जिसके बिल्कुल सीधे रहने से तौल बराबर और ठीक मानी जाती है।

शिंगरफ—संज्ञा पुं० [फा० शंगर्फ] ईंगुर। हिंगुल। विशेष दे० 'ईंगुर'।

शिंगरफी—वि० [फा० शिंगरफ] शिंगरफ के रंग का लाल। सुर्ख।

शिंघण—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घण] १ नासिकामल। रेंट। २ दाढ़ी (को०)।

शिंघाण—संज्ञा पु० [सं० शिङ्घाण] १ लोहमल। मड़ूर। २ नाक के अंदर का चेप जिसमें झिल्ली तर रहती है। ३ कांच का बरतन। ४ दाढ़ी। ५ फूला हुआ अन्नकोश। ६ फेन। झाग (को०)। ७ बलगम। कफ या श्लेष्मा (को०)।

शिंघाणक—संज्ञा पु० [सं० शिङ्घाणक] [स्त्री० शिंघाणिका] १ नाक के अंदर का चेप। २. कफ। बलगम।

शिंघाणी—संज्ञा पुं० [सं० शिङ्घाणिन्] नाक।

शिंघान—संज्ञा पु० [सं० शिङ्घाण] दे० 'शिंघाण'।

शिंघित—वि० [सं० शिङ्घित] सूँघा हुआ। आघ्रात।

शिंघिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिङ्घिनी] नाक।

शिंजजिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जञ्जिका] करधनी।

शिंज—संज्ञा पु० [सं० शिञ्ज] झंकार। झनझनाहट। ध्वनि (विशेषकर गहनों की)।

शिंजन—संज्ञा पुं० [सं० शिञ्जन] [वि० शिंजित] १ धातुखंड का परस्पर बजना। झंकार करना। झनकारना। किंकिनी, नूपुर आदि गहनों को पहनकर चलने फिरने या उनके हिलने आदि से होनेवाली मधुर ध्वनि। २ झंकार (को०)।

शिंजा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जा] १ करधनी, नूपुर आदि आभूषणों की झनकार। २ धातुखंड के बजने का शब्द। झनझनाहट २. धनुष की डोरी। प्रत्यंचा। ज्या।

यौ०—शिंजालता = प्रत्यंचा। ज्या।

शिंजित'—वि० [सं० शिञ्जित] १ झंकार करता हुआ। झंकृत। २ बजता हुआ।

शिंजित²—संज्ञा पुं० ध्वनि। झनकार। आवाज।

शिंजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिञ्जिनी] १ धनुष की डोरी। चिल्ला। पतंचिका। २. करधनी या नूपुर के घुंघरू।

शिंजी—वि० [सं० शिञ्जिन्] १ मधुर झनकार करता हुआ। २ आभूषणों की झनकार से युक्त (को०)।

शिंडाकी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिण्डाकी] एक प्रकार की कांजी।

विशेष—यह मूली के पत्तों के रस में राई और नमक डालकर अथवा सरसों के रस में चावल का चूर्ण डालकर बनाई जाती है। वैद्यक के अनुसार यह रुचिकारी, कफकारक, पित्त करनेवाली और भारी होती है।

शिंब—संज्ञा पुं० [सं० शिम्ब] १. फली। छीमी। २. चकवड़। चक्रमर्द।

शिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बा] १. छीमी। फली। २ सेम। ३. शिंबी धान्य।

शिंबि—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बि] दे० 'शिंबी'।

शिंबिक—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बिक] १ मूँगफली। २ कृष्ण मुद्ग। काली मूँग (को०)।

शिंबिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिका] १ फली। छीमी। २ सेम।

शिंबिजा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिजा] द्विदल अन्न। दाल।

शिंबिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिनी] १ श्यामा चिड़िया। कृष्ण चटक। २ बड़ी सेम।

शिंबिपर्णिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिपर्णिका] वनमूँग। मुद्गपर्णी।

शिंबिपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बिपर्णी] वनमूँग।

शिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिम्बी] १ छीमी। फली। बोंडी। २ सेम। ३ कौंछ। केवाँच। कपिकच्छु। वनमूँग।

शिंबीधान्य—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बीधान्य] वह अन्न जिसके दानों में दो दल हों। द्विदल अन्न दाल। जैसे,—मूँग, मसूर, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया आदि।

शिंबीफल—संज्ञा पुं० [सं० शिम्बीफल] तरबट या आहुल्य नामक क्षुप।

शिंश—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का फलदार वृक्ष।

शिंशपा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शीशम का पेड़। २ अशोक वृक्ष।

शिंशुपा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिंशपा] दे० 'शिंशपा'।

शिंशुमार—संज्ञा पुं० [सं०] सूँस नामक जलजंतु।

शि—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिव। २ सुख। सौभाग्य। ३. ज्ञाति। ४ धीरता। धैर्य।

शिकजबी, शिकजबीन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'सिकंजबीन'।

शिकजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० सिकंजबीन] १ दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र। २ पैर कसने का यंत्र या औजार जिसमें छिद्रयुक्त किलावें दबाते और उनके पार काटते हैं। ३ वह तागा जिसमें जुलाहे घुमावदार बंद बनाने और पनिक बाँधते हैं। (जुलाहे)। ४ प्राचीन काल का अपराधियों को कसकर दंड देने के लिये एक यंत्र जिसमें उनका डालकर कस दी जाती थी। ५ पेरने का यंत्र। कोल्हू। ६ दंड देने की कल। पैंच। ७. यंत्रणा (को०)। ८ पीड़न। दबाव (को०)।

मुहा०—शिकंजे में कसना = घोर यंत्रणा दिलाना। सांसत कराना। शिकंजे में लेना = तंग कर देना। घोर यंत्रणा पहुंचाना।

शिक—संज्ञा स्त्री० [अ० शिक] १ पक्ष। ओर। तरफ। २ एक ओर का बोझ। ३. खंड। दूसरा विभाग। ४ क्षेत्रविभाग। तहसील। ५ पर्दा। बाधा। आवरण (को०)।

यौ०—शिकदार = किसी विशेष विभाग का क्षेत्राधिकारी। तहसीलदार।

शिकन—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी। मुड़कर दबने से पड़ी हुई लकीर। सिलवट। बली। बलि। बल।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—निकालना।

शिकन²—वि० तोड़नेवाला। भंजक। (समास में प्रयुक्त) जैसे, बुतशिकन।

शिकम—संज्ञा पुं० [फ़ा०] १. पेट। उदर।

मुहा०—शिकम पालना = पेट पालना।

यौ०—शिकमसारा = चूपार्त। भूखा। शिकमपरस्त, शिकमपरवर, शिकमबंदा = पेटार्थी। पेट पालनेवाला। पेटू। शिकमबंदगी = पेटपूजा। शिकमसेर = तृप्त। भरे पेटवाला। अघाया हुआ।

२ आमाशय। पाकस्थली। मेदा (को०)।

शिकमी—वि० [फ़ा०] १. पेट संबंधी। निज का। अपना। २ भीतरी (को०)। ३. बड़े पेटवाला (को०)। ४ दे० 'शिकमी काश्तकार (को०)।

शिकमी काश्तकार—संज्ञा पुं० [फ़ा०] वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

विशेष—इसका हक खास काश्तकार के हक से बहुत कम होता है।

शिकरा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शिकरह्] एक प्रकार का बाज पक्षी। उ०—कोई शिकरा बाज उड़ाता है कोई हाथ में रखे तुतली है। —नजीर (शब्द०)।

शिकरम—संज्ञा पुं० [?] एक प्रकार की घोड़ागाड़ी।

शिकवा—संज्ञा पुं० [अ०] शिकायत। उलाहना। उ०—मुझको तुमसे नहीं कुछ बाकी है करना शिकवा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ५६०।

शिकस्त—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ हार। पराजय। मात। २. भंग। टूटना। शिकस्तगी। ३ विफलता। असिद्धि।

मुहा०—शिकस्त देना=पराजित करना। हराना। शिकस्त खाना=पराजित होना। हारना।

शिकस्तगी—संज्ञा स्त्री० [फा० शिकस्तह्] टूटा हुआ। भग्न। खंडित।

शिकस्ता[1]—संज्ञा स्त्री० उर्दू या फारसी की घसीट लिखावट।

यौ०—शिकस्ता नवीस=घसीट लिखनेवाला। शिकस्ता दिल=भग्न हृदय। शिकस्ता हाल=जिसकी आर्थिक दशा खराब हो। शिकस्ता हिम्मत=पस्त हिम्मत। हतोत्साह।

शिकायत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ बुराई करना। गिला। शिकवा। चुगली। २. किसी भूल, त्रुटि, दोष आदि की बात जो मन में हो। जैसे,—उनसे अब मुझे कोई शिकायत नहीं है। ३. उपालंभ। उलाहना। ४ किसी के गलत काम की उसके अधिकारी को सूचना।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

५ शारीरिक अस्वस्थता। रोग। बीमारी। जैसे,—उसे दस्त की शिकायत है।

मुहा०—शिकायत रफा करना=रोग दूर करना। मांदगी हराना।

शिकायती—वि० [अ० शिकायत] शिकायत करनेवाला। २ जिसमें शिकायत हो।

शिकार—संज्ञा पुं० [फा०] १ जंगली पशुओं को मारने का कार्य या क्रीड़ा। आखेट। मृगया। अहेर। जैसे,—शेर का शिकार।

क्रि० प्र०—करना। होना।

२ वह जानवर जो मारा गया हो। ३ गोश्त। मांस। ४. आहार। भक्ष्य। जैसे,—बिल्ली का शिकार चूहा। ५ कोई ऐसा आदमी जिसके फँसने या वश में होने से बहुत लाभ हो। असामी। जैसे,—बहुत दिनों पर आज एक शिकार फँसा है, कुछ मिल ही जायगा।

मुहा०—शिकार आना=(१) मारने के लिये कोई जानवर मिलना। (२) किसी ऐसे आदमी का मिलना जिससे कुछ लाभ हो। शिकार करना=(१) कोई जानवर मारना। (२) किसी से कोई लाभ उठाना। (३) लूटना। शिकार खेलना=शिकार करना। किसी का शिकार होना=(१) किसी के द्वारा या कारण मारा जाना। जैसे,—न जाने कितने आदमी प्लेग के शिकार हुए। (२) वश में आना। फँसना। (३) किसी पर मोहित होना।

शिकारगड्ढा—संज्ञा पुं० [फा० शिकार+हिं० गड्ढा] वह बड़ा गड्ढा जो शिकारी जानवरों को फँसाने के लिये खोदते हैं।

शिकारगाह—संज्ञा स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान।

शिकारबंद—संज्ञा पुं० [फा०] वह तस्मा जो घोड़े का दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बाँधने के लिये लगाया जाता है।

शिकारा—संज्ञा पुं० [?] काश्मीर में सवारी के लिये उपयोग में आनेवाली एक प्रकार की नाव। उ०—मेरा शिकारा वह खड़ा है।—पिंजरे०, पृ० २१।

शिकारी[1]—संज्ञा पुं० [फा०] आखेट करनेवाला। शिकार करनेवाला। अहेरी।

शिकारी[2]—वि० १ शिकार करनेवाला। जंगली पशुओं को पकड़ने या मारनेवाला। जैसे,—शिकारी कुत्ता। २. शिकार में काम आनेवाला। जैसे,—शिकारी कोट। शिकारी खेमा।

मुहा०—शिकारी ब्याह=गंधर्व विवाह जो क्षत्रियों में अबतक कहीं कहीं होता है।

शिकोह—संज्ञा पुं० [फा०] १. भय। त्रास। डर। २. दबदबा। रोबदाब [को०]।

शिकाल—संज्ञा पुं० [फा०] १. वह घोड़ा जिसका अगला दाहिना और पिछला बाँया पैर सफेद हो। (यह दोष माना जाता है)। २. छल। धोखा। फरेब (को०)।

शिक्कु—वि० [सं०] निकम्मा। सुस्त। आलसी [को०]।

शिक्थ—संज्ञा पुं० [सं०] मोम। मैन। मधुमक्खी के छत्ते का मोम या सीठी। मधुशेष।

शिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिक्या'।

शिक्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. बहँगी के दोनों छोरों पर बँधा हुआ रस्सी का जाल जिसपर बोझ रखते हैं। २. छत में लटकता हुआ रस्सी का जालीदार सपुट जिसपर दूध, दही आदि का मटका रखते हैं। छीका। झींका। सिकहर। ३. तराजू की रस्सी। ४ बहँगी पर लटकाकर ले जाया जानेवाला बोझ (को०)।

शिक्यित—वि० [सं०] सिकहर पर रखा हुआ या स्थापित।

शिक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] गंधर्वों का एक नायक। रोहित।

शिक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षिका, शिक्षिका] १ शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु। उस्ताद। २. सीखनेवाला (को०)।

शिक्षण—संज्ञा पुं० [सं०] १ पढ़ाने का काम। तालीम। शिक्षा। २. शिक्षा प्राप्त करना सीखने का काम। सीखना (को०)।

यौ०—शिक्षणकला=शिक्षा देने, पढ़ाने की कला या हुनर।

शिक्षणीय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शिक्षणीया] जो शिक्षा देने के योग्य हो। जिसे शिक्षा दी जा सके।

शिक्षमाण—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शिक्षमाणा] सीखने की स्थिति में रहनेवाला छात्र। उ०—वह अभी शिक्षमाणा ही थी। भिक्षुणी नहीं हुई थी।—इरा०, पृ० १७।

शिक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। पढ़ने पढ़ाने की क्रिया। सीख। तालीम।

क्रि० प्र० —देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

२ गुरु के निकट विद्या का अभ्यास। विद्या का ग्रहण। ३ दक्षता। निपुणता। ४ उपदेश। मंत्र। सलाह। ५ छह वेदांगों में से एक जिसमें वेदों के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण रहता है। मंत्रों के ठीक उच्चारण का विषय।

विशेष—यह विषय कुछ तो ब्राह्मण भाग में आया है और कुछ प्रातिशाख्य सूत्रों में। ऋग्वेद का शिक्षा का ग्रंथ शौनक का प्रातिशाख्य सूत्र है। यजुर्वेद के प्रातिशाख्य के दो ग्रंथ मिलते हैं —एक तो आत्रेय महर्षि और वररुचि संकलित त्रिभाष्यरत्न, जो तैत्तिरीय शाखा का है और दूसरा कात्यायन जी का आठ अध्यायों का वाजसनेयी प्रातिशाख्य। पाणिनि आदि के व्याकरण से संबद्ध भी शिक्षा विषयक ग्रंथ हैं जिनकी संख्या पचासों से ऊपर है।

६ शासन। दबाव। ७ किसी अनुचित कार्य का बुरा परिणाम। सबक। दंड। जैसे,—अच्छी शिक्षा मिली, अब कभी ऐसा काम न करेंगे। ८ विनय। विनम्रता। शिष्टता। सुजनता (को०)। ९ विज्ञान। कला। प्रायोगिक शिक्षा। जैसे, रणशिक्षा, सैनिक शिक्षा (को०)।

शिक्षाकर—संज्ञा पुं० [सं०] १ व्यास। उपदेशक। २ शिक्षक। शिक्षा देनेवाला। अध्यापक (को०)।

शिक्षाक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा के अनुसार उच्चरित ध्वनि (को०)।

शिक्षाक्षेप—संज्ञा पुं० [सं०] केशव के अनुसार काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें शिक्षा द्वारा गमन स्वरूप कार्य रोका जाता है।

शिक्षागुरु—संज्ञा पुं० [सं०] विद्या पढानेवाला गुरु। ज्ञानदाता गुरु। दीक्षागुरु का विलोम।

शिक्षाग्राहक—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा प्राप्त करनेवाला व्यक्ति। पढनेवाला। विद्यार्थी। छात्र।

शिक्षाचार—वि० [सं०] शिक्षा के अनुकूल आचरण करनेवाला (को०)।

शिक्षात्मक—वि० [सं०] उपदेशात्मक। उपदेशप्रद (अं० प्रइडेक्विक)। उ०—इसे स्वीकार कर लेने पर भारतीय काव्य की प्रकृति के निरूपण के लिये आदर्शात्मक, शिक्षात्मक आदि रस और भाव के क्षेत्र के बाहर के शब्दों के व्यवहार की आवश्यकता नहीं रह जाती।—रस०, पृ० ९२।

शिक्षादंड—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षादण्ड] वह दंड जो किसी चाल को छुडाने के लिये दिया जाय।

शिक्षानर—संज्ञा पुं० [सं०] इंद्र का एक नाम (को०)।

शिक्षापद—संज्ञा पुं० [सं०] १ उपदेश। २ बौद्धों के 'विनयपिटक' का एक प्रकरण।

शिक्षापद्धति—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिक्षा देने का ढंग। शिक्षण की प्रणाली (को०)।

शिक्षापरिषद्—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. वैदिक काल की शिक्षा संस्था या विद्यालय जो एक ऋषि या आचार्य के अधीन रहता था और उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था। २ शिक्षा या पढाई का प्रबंध करनेवाली सभा या समिति।

शिक्षाप्रद—वि० [सं०] जिससे शिक्षा प्राप्त हो। शिक्षा या सीख देनेवाला। जैसे, शिक्षाप्रद ग्रंथ।

शिक्षामंत्री—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा+मन्त्रिन्] [स्त्री० शिक्षामंत्रिणी] राज्य का शिक्षा संबंधी सर्वोच्च अधिकारी (अं० एजुकेशन मिनिस्टर)।

शिक्षारस—संज्ञा पुं० [सं०] किसी विषय में शक्ति या प्रवीणता प्राप्त करने की कामना (को०)।

शिक्षार्थी—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षार्थिन्] शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। विद्यार्थी। तालिब इल्म।

शिक्षालय—संज्ञा पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाय। विद्यालय। पाठशाला।

शिक्षावल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] तैत्तिरीय उपनिषद् का पहला अध्याय।

शिक्षावाद—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा+वाद] उपदेशात्मकता। उपदेश वृत्ति। उ०—मंगल और अमंगल के द्वंद्व में कवि लोग अंत में मंगल शक्ति की जो सफलता दिखा दिया करते हैं उसमें सदा शिक्षावाद या अस्वाभाविकता की गंध समझकर नाक भौं सिकोडना ठीक नहीं।—रस०, पृ० ६१।

शिक्षाविभाग—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा+विभाग] वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है। महकमा तालीम।

शिक्षाव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] जैन धर्म के अनुसार गार्हस्थ धर्म का एक प्रधान अंग जो चार प्रकार का होता है, (१) सामयिक, (२) देशावकाशिक, (३) पौष और (४) अतिथि संविभाग।

शिक्षाशक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति। मेधा।

शिक्षाशास्त्र—संज्ञा पुं० [सं० शिक्षा+शास्त्र] वह शास्त्र, ग्रंथ आदि जिसमें शिक्षा की विधि, प्रणाली, अध्यापनपद्धति आदि तत्संबंधी विधानों का विवेचन मिलता है। (अं० एडुकेशन)।

शिक्षाहीन—वि० [सं०] जिसे शिक्षा न मिली हो। अशिक्षित। बेपढा। गँवार।

शिक्षित—वि० पुं० [सं०] [वि० स्त्री० शिक्षिता] १ जिसने शिक्षा पाई हो। पढा लिखा। २ विद्वान्। पंडित। ३ पालतू (को०)। ४. निपुण। कुशल (को०)। ५ विनीत। लज्जाशील (को०)। ६ प्रशिक्षित। अनुशासित (को०)। उ०—जीवन रण में सक्षम, संघर्षों से शिक्षित।—ग्राम्या, पृ० २०।

शिक्षिताक्षर—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जिसने विद्या पढी हो। शिक्षित। २ शिक्षा देनेवाला। शिक्षक (को०)। ३ लेखक। मुहर्रिर (को०)।

शिक्षितायुध—वि० [सं०] जो आयुधों के प्रयोग में पटु हो। हथियार चलाने में निपुण (को०)।

शिखंड—संज्ञा पुं० [सं० शिखण्ड] १ मोर की पूँछ। मयूरपुच्छ।—उ०—(क) कुटिल कच भ्रुव तिलक रेखा सोभ शिखी शिखंड।—सूर (शब्द०)। (ख) सिरनि शिखंड सुमन दल मंडल लाल सुभाय बनाए।—तुलसी (शब्द०)। २ चोटी। शिखा। चुटिया। उ०—सोभित केश विचित्र भाँति द्युति शिखि शिखंड हरनी।—सूर (शब्द०)। ३. काकपक्ष। काकुल।

यौ०—शिखडखडिका = चूडाकरण का उत्सव । चूडाकरण ।

शिखडक—सज्ञा पु० [स० शिखण्डक] १ काकपक्ष । काकुल । २ मयूरपुच्छ । ३. चोटी । शिखा । चुटिया (को०) । ४ नितब के नीचे का मासल भाग (को०) । ५ वह जिसने शैव मतानुसार मुक्ति की एक विशेष अवस्था प्राप्त कर ली हो (को०) ।

शिखडिक—सज्ञा पु० [स० शिखण्डिक] १. कुक्कुट । मुर्गा । २ एक प्रकार का मानिक (रत्न) ।

शिखडिका—सज्ञा स्त्री० [स० शिखण्डिका] शिखा । चोटी । दे० 'शिखड' ।

शिखडिनी[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखण्डिनी] १ मोरनी । मयूरी । २ जूही । यूथिका । ३ गुजा । करजनी । चोटली । ४ मुर्गी । ५ द्रुपदराज की एक कन्या जो पीछे पुरुष के रूप मे होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध मे लडी थी ।

विशेष—कहते है, पूर्व जन्म मे यह काशिराज की बडी कन्या अबा थ जिसे भीष्म हर लाए थे । भीष्म से बदला लेने के लिये यह पुरुष रूप मे हो गई और महाभारत के युद्ध मे लडी थी । विशेष दे० 'शिखडी' ।

६ कश्यप की पुत्री दो अप्सराएँ जो ऋग्वेद के मत्र को द्रष्टा मानी जाती हैं ।

शिखडिनी[2]—वि० स्त्री० शिखड से युक्त । शिखडवाली ।

शिखडी[1]—सज्ञा पु० [स० शिखण्डिन्] १ पीली जूही । स्वर्णयूथिका । २ गुजा । चिरमिटी । घुँघची । ३ मोर । मयूर पक्षी । ४ मुर्गा । ५ मोर की पूँछ । ६ बाण । ७. विष्णु । ८ कृष्ण । ९ शिव । १०. शिखा । बालो की चोटी । उ०—शिखंडी शीश मुख मुरली बजावत बन्यो तिलक उर चदन ।—सूर (शब्द०) । ११ द्रुपद का एक पुत्र ।

विशेष—यह पहले कन्या के रूप मे उत्पन्न हुआ था, पर इसे पुत्र के रूप मे प्रसिद्ध किया गया और शिक्षादीक्षा भी पुत्र के समान दी गई । कालातर मे हिरण्य वर्मा की कन्या से इसका विवाह भी हुआ । यह जानकर कि मेरी कन्या का विवाह एक स्त्री से हुआ है और द्रुपद ने मुझे धोखा दिया है, हिरण्य वर्मा ने द्रुपद पर आक्रमण करने की तैयारी की । इस बीच शिखडी ने बन मे घोर तप किया और एक यक्ष को प्रसन्न कर अपना स्त्रीत्व उसे दे देने के पीछे पुरुष के रूप मे हो गया । इसी को आगे करके महाभारत के युद्ध मे अर्जुन ने युद्ध के दसवें दिन पितामह भीष्म का वध किया था । भीष्म की प्रतिज्ञा थी कि हम किसी स्त्री पर बाण न चलावेंगे । अश्वत्थामा के हाथ इसका वध हुआ था । विशेष दे० 'शिखडिनी' ।

१२ राम के दल का एक बदर । उ०—धुधमाल गिरि पुनि गए मिले शिखडी नाम ।—विश्राम (शब्द०) । १३. बृहस्पति । देवगुरु ।—अनेक (शब्द०) ।

शिखडी—वि० शिखडयुक्त । शिखावाला [को०] ।

शिख(पु)[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखा] दे० 'शिखा' । उ०—फूलो फिरत रोहिणी मैया नव शिख कर सिंगार ।—सूर (शब्द०) ।

शिख[2]—वि०[स०] जिसे शिखा हो । शिखावाला । (समासात मे प्रयुक्त) जैसे विशिख, पचशिख ।

शिखक—सज्ञा पुं० [स०] लेखक । मुहर्रिर ।

शिखर—सज्ञा पु० [स०] १ सबसे ऊपर का भाग । सिरा । चोटी । २ पहाड की चोटी । पर्वतशृग । ३ अग्रभाग । ४ मदिर या मकान के ऊपर का निकला हुआ नुकीला सिरा । कगूरा । कलश । ५ मडप । गुबद । ६ जैनियो का एक तीर्थ । ७ एक अस्त्र का नाम । ८ एक रत्न जो अनार के दाने के समान सफेद और लाल होता है । उ०—श्रीफल सकुचि रहे दुरि कानन शिखर हियो बिहरान ।—सूर (शब्द०) । ९ कुद की कली । १० नाँग । ११ काँख । बगल । १२ पुलक । रोमाच । १३. उँगलियों की एक मुद्रा जो तात्रिक पूजन मे बनाई जाती है । १४ तलवार की नोक (को०) । १५. सूखा तिनका (को०) ।

शिखरणी—सज्ञा स्त्री० [स० शिखरिणी] दे० 'शिखरिणी' ।

शिखरदशना—वि० स्त्री० [स०] जिसके दाँत कुद की कली के समान हो ।

शिखरन—सज्ञा पुं० [स० शिखरिणी] दही और चीनी का बनाया हुआ एक प्रकार का मीठा पेय पदार्थ या शरबत जिसमे केसर, कपूर तथा मेवे आदि डाले जाते है । श्रीखंड ।

शिखरवासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] शिखर पर बसनेवाली, दुर्गा ।

शिखरा—सज्ञा स्त्री० [ ] १ मूर्वा । मरोडफली । मुर्रा । २ एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचद्र को दी थी ।

शिखराद्रि—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम ।

शिखरिचरण—सज्ञा पुं० [स०] चिचडे की जड । अपामार्ग का मूल ।

शिखरिणी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ रसाल । २ नारीरत्न । स्त्रियो मे श्रेष्ठ । ३ रोमावली । ४ मल्लिका । बेला । मोतिया । ५. नेवारी का पौधा । ६ किशमिश । लघु द्राक्षा । ७. मूर्वा । मरोडफली । मुरहरी । ८ दही और चीनी का रस या शर्बत । ९ सत्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसमे क्रमश यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु होते है तथा छठे और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है । जैसे,—शिला पै गेरू तें कुपित ललना तोहि लिखि कै ।

शिखरिणी—वि० स्त्री० १ शिखर या चूडावाली । २. नोकदार । अनीदार [को०] ।

शिखरी[1]—सज्ञा पु० [स० शिखरिन्] १ पर्वत । पहाड । २. पहाडी दुर्ग । ३. वृक्ष । पेड । ४. अपामार्ग । चिचडा । ५ बदाक । बाँदा । ६. कुदरु नामक गधद्रव्य । ७ लोबान । ८ काकडासिंगी । ९ ज्वार । मक्का । १०. एक प्रकार का मृग ।

शिखरी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखर] चोटी । चूडा । उ०—जिस दिन शैल शिखरियाँ उनको रजत मुकुट पहनाने आएँ ।—हिम कि०, पृ० २ ।

शिखरी(पु)[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शिखरा] एक गदा जो विश्वामित्र ने रामचद्र को दी थी । शिखरा । उ०—शिखरी कौमोदकी गदा युग दोपति भरी सदाई ।—रघुराज (शब्द०) ।

शिखरी४—वि० [स०] १ शिखरवाला। शिखरयुक्त। २ नोकदार। नुकीला (को०)।

शिखलोहित—सज्ञा स्त्री० [स०] कुकुरमुत्ता।

शिखाडक—सज्ञा पु० [स० शिखाण्डक] क कपक्ष।

शिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मुडन के समय सिर के बीचोबीच छोडा हुआ बालो का गुच्छा जो फिर कटाया नही जाता और हिंदुओ का एक चिह्न है। चोटी। चुटिया।

यौ०—शिखा सूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजो के चिह्न हैं और जिनका त्याग केवल सन्यासियो के लिये विधेय है।

२ मोर, मुर्गा आदि पक्षियो के सिर पर उठी हुई चोटी या पखो का गुच्छा। चोटी। कलगी। ३ आग की लपट। ज्वाला। ४ दीपक की लो। टेम। उ०—(क) केशौदास तामें दुरी दीप की शिखा सो दौरि दुरावति नीलवास दुति अग अग की।—केशव (शब्द०)। (ख) दीप शिखा सम जुवति जन मन जनि होसि पतग।—तुलसी (शब्द०)। ५ प्रकाश की किरण। ६ नुकीला छोर या सिरा। नोक। ७ ऊपर को उठा हुआ भाग। चोटी। शिखर। ८ पैर के पंजे का सिरा। ९ स्तन का अग्रभाग। चूचक। १० पेड की जड। ११ शाखा। डाली। १२ अधिपति नायक। १३ श्रेष्ठ पुरुष। १४ कलियारी विष। लागला। १५. मूर्वा। मरोडफली। १६ जटामासी। बालछड। १७. वच। १८ शिफा। १९ तुलसी। २० कामज्वर। २१ एक वर्णवृत्त जिसके विषम पादो मे २८ लघु मात्राए और अत मे एक गुरु होता है और सम पादो मे ३० लघु मात्राएँ और अत मे एक गुरु होता है।

शिखाकद—सज्ञा पु० [स० शिखाकन्द] शलजम। शलगम।

शिखातरु—सज्ञा पु० [स०] दीपवृक्ष। दीवट। दीयट।

शिखाधर१—सज्ञा पु० [स०] १. मयूर। मोर। २ भजुघोष नाम के एक पूर्व जिन (को०)।

शिखाधर२—वि० १ शिखाधारी। २ नोकदार। नुकीला (को०)।

शिखाधार—सज्ञा पु० [स०] मयूर। मोर। २. वह जिसे शिखा हो। चूडा या चोटीवाला।

शिखापाश—सज्ञा पु० [स०] चोटी। चुदी।

शिखापित्त—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे हाथ पैर की उँगलियो मे सूजन और जलन होती है।

शिखाबधन—सज्ञा पु० [स० शिखाबन्धन] सिर के बालो को मिलाकर बाँधने की क्रिया। चोटी बाँधना।

शिखाभरण—सज्ञा पु० [स०] सिर का आभूषण। मुकुट।

शिखामणि१—सज्ञा पु० [स०] १ वह रत्न जो सिर पर पहना जाय। २ श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिखामणि२—वि० सर्वश्रेष्ठ। प्रधान। शिरोमणि। जैसे,—चौरशिखामणि।=श्रीकृष्ण।

शिखामूल—सज्ञा पु० [स०] १ वह कद जिसके ऊपर पत्तियो का गुच्छा हो। २ गाजर। गृजन (को०)। ३ शिखाकद। शलगम। शलजम (को०)।

शिखालु—सज्ञा पुं० [स०] मयूरशिखा। मोर के सिर पर की कलगी (को०)।

शिखावती—सज्ञा स्त्री० [स०] मूर्वा। मरोडफली।

शिखावर—सज्ञा पु० [स०] कटहल का वृक्ष। पनस।

शिखावर्त—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का यज्ञ। (महाभारत)।

शिखावल१—सज्ञा पु० [स०] १ मोर। मयूर। २. कटहल।

शिखावल२—वि० १. नुकीला। नोकदार। २. चोटीवाला (को०)।

शिखावला—सज्ञा स्त्री० [स०] मयूरशिखा नामक वृक्ष (को०)।

शिखावली—सज्ञा स्त्री० [स०] मोरनी। मयूरी (को०)।

शिखावान्१—वि० [स० शिखावत्] [वि० स्त्री० शिखावती] १ शिखावाला। २ लपटवाला। ज्वालायुक्त (को०)। ३. नुकीला। नोकदार (को०)।

शिखावान्२—सज्ञा पु० १ अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। चीता। ३ केतु ग्रह। पुच्छल तारा। ४ मोर। मयूर। ५. दीपक (को०)।

शिखावृक्ष—सज्ञा पु० [स०] दीवट। दीयट।

शिखावृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह ब्याज जो प्रति दिन बढता जाय। सूद-दर-सूद। २ पराशर स्मृति के अनुसार वह ब्याज जो रोजाने के हिसाब से नित्य वसूल किया जाता है। रोजही।

शिखासूत्र—सज्ञा पु० [स०] चोटी और जनेऊ जो द्विजो का चिह्न है।

शिखि—सज्ञा पु० [स०] १ मोर। मयूर। उ०—चीर फारि करिहौं भगौहाँ शिखनि शिखि लवलेस।—पूर (शब्द०)। २. तामस मन्वतर के इद्र का नाम। ३ कामदेव। ४ अग्नि। ५ तीन की सख्या।

शिखिकठ१—वि० [स० शिखिकण्ठ] मोर के कठ के समान। मोर के कठ सा।

शिखिकठ२—सज्ञा पु० तूतिया। नीला थोथा।

शिखिकण—सज्ञा पुं० [स०] चिनगारी। स्फुलिंग (को०)।

शिखिकुद—सज्ञा पु० [स० शिखिकुन्द] कुदरु। विरोजा।

शिखिग्राव—सज्ञा पु० [स०] १ नीला थोथा। २. एक प्रकार का नीला पत्थर। कात पाषाण।

शिखिध्वज—सज्ञा पु० [स०] १ धूआँ। २ कार्तिकेय। ३ वह जिस पर अग्नि या मोर का चिह्न बना हो। ४. एक प्राचीन तीर्थ का नाम। ५ मयूरध्वज नामक राजा। उ०—नृपति शिखिध्वज षोडशें जीतिगो ससार।—केशव (शब्द०)।

शिखिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मयूरी। २ मुर्गी। ३. मुर्गकेश। जटाधारी का पौधा।

शिखिपिच्छ, शिखिपुच्छ—सज्ञा पुं० [स०] मयूरपख। मोरपख। मोर की पूँछ (को०)।

शिखिप्रिय—सज्ञा पु० [स०] जगली बेर।

शिखिभू—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय का एक नाम। स्कद (को०)।

शिखिमडल—सज्ञा पुं० [स० शिखिमण्डल] वरुण वृक्ष। तपिया।

शिखिमोदा—सज्ञा स्त्री० [स०] अजमोदा। अजवायन।

शिखिमृत्यु—सज्ञा पु० [स०] मदन। कामदेव (को०)।

शिखियूप—सज्ञा पु० [स०] शीकारी नाम का मृग।

शिखिवर्द्धक—सज्ञा पु० [स०] १ गोल कद्दू। गोल घीया। २. कूष्माड। कोहँडा (को०)।

शिखिवाहन—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय।

शिखीव्रत—सज्ञा पुं० [स०] गरुडपुराण मे वर्णित एक प्रकार का व्रत (को०)।

शिखिशिखा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आग की लपट। लौ। २. मोर की कलँगी (को०)।

शिखिश्रृग—सज्ञा पु० [स०शिखिशृङ्ग] चित्रमृग। चित्तीवाला हिरन।

शिखिशेखर—सज्ञा पु० [स०] मयूरशिखा। मोर की कलँगी।

शिखिहिंटी—सज्ञा स्त्री० [स० शिखिहिण्टी] सहदेई। महाबला।

शिखीद्र—सज्ञा पुं० [स० शिखीन्द्र] १. तेंदू का पेड। तिंदूक। २. आबनूस का पेड।

शिखी[1]—वि० [स० शिखिन्] [वि० स्त्री० शिखिनी] १ शिखावाला। चोटीवाला। २ नुकीला। नोकदार (को०)। ३. ज्ञान की चोटी पर पहुँचनेवाला (को०)। ४ अभिमानी। घमंडी (को०)।

शिखी[2]—सज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। उ०—कुटिल कच तिलक रेखा सीस शिखी शिखड।—सूर (शब्द०)। २ मुर्गा। ३ एक प्रकार का सारस। ४ बैल। साँड। ५ घोडा। ६. चित्रक। चीते का पेड। ७. अग्नि। उ०—आखडल और दहधर, शिखी वरुण दिगपाल।— गुमान (शब्द०)। ८ तीन की सख्या (अग्नि तीन प्रकार की होने के कारण)। ९ दीपक। १० पित्त। ११. पुच्छल तारा। केतु। १२ मेथी। १३ पर्वत। १४ वृक्ष। १५. ब्राह्मण। १६. सतावर। १७. बाण। १८. जटाधारी साधु या भिक्षु। १९. एक नाग का नाम। २०. इद्र। २१. बगला। बक। २२. अपामार्ग। ओगा। चिचडा। २३. एक प्रकार का विष। २४ अजमोदा (को०)।

शिखीश्वर—सज्ञा पुं० [स०] कार्तिकेय (को०)

यौ०—शिखीश्वर मास = कार्तिक मास।

शिगाफ—सज्ञा पुं० [फा० शिगाफ] १ चीरा। नश्तर। २ दरार। दर्ज। ३. कलम के बीच का चिराव। ४. छेद। सूराख।

मुहा०—शिगाफ देना या लगाना = (१) कलम को चीरना। (२) चीरा लगाना। नश्तर लगाना।

शिगाल—सज्ञा पुं० [फा०। तुल० स० शृगाल] जबुक। शृगाल (को०)।

शिगिफ्त—सज्ञा पुं० [फा० शिगिफ्त] अचभा। आश्चर्य। हैरत।

शिगुफ्त, शिगुफ्तगी—सज्ञा स्त्री० [फा० शिगुफ्त, शिगुफ्तगी] विकास। खिलना। २. प्रसन्नता। आह्लाद (को०)।

शिगुफ्ता—वि० [फा० शिगुफ्ताह्] १. मुकुलित। विकसित। खिला हुआ। २ प्रसन्न। आह्लादित (को०)।

शिगूडी—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक जगली झुप या पौधा जो दवा के काम मे आता है।

विशेष—यह वनस्पति चरपरी, गरम तथा वात और पृष्ठशूल का नाश करनेवाली तथा दूसरी ओषधियो के योग से रसायन और शरीर को दृढ करनेवाली कही गई है।

शिगूफा—सज्ञा पु० [फा० शिगूफह्] १ बिना खिला हुआ फूल। कली। २ फूल। पुष्प। ३ किसी अनोखी बात का होना। अचभे की बात। चुटकुला।

मुहा०—शिगूफा खिलना = कोई ऐसी बात या झगडा खडा होना जिससे मनोरंजन हो। शिगूफा खिलाना = बात खडी करना। तमाशे के लिये कोई मामला पैदा कर देना। शिगूफा छोडना = (१) कोई नई या अनोखी बात कहना। (२) तमाशा देखने के लिये कोई मामला खडा कर देना। शिगूफा फूलना = (१) अनोखी बात निकलना। (२) मामला खडा होना।

शिग्रु—सज्ञा पुं० [स०] १. सहिजन का वृक्ष। शोभाजन। २ शाक। साग।

यौ०—शिग्रुबीज = शिग्रुज।

शिग्रुक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिग्रु'। सहिजन।

विशेष—मनु ने वानप्रस्थ आश्रमी लोगो के लिये इसके भक्षण का निषेध किया है। मेधातिथि और कुल्लूक ने इसे वाह्लिक देशोद्भव कहा है।

शिग्रुज—सज्ञा पुं० [स०] सहिजन का बीज।

शिच्—सज्ञा स्त्री० [स०] [कर्त्ता का० शिक्] १. जुए की रस्सी। २. बहँगी का छोका या जाल जिसपर बोझ रखा जाता है।

शिचि—वि० [स०] काला या सफेद (को०)।

शित[1]—वि० [स०] १ कृश। दुर्बल। २. कमजोर। निर्बल (को०)। नुकीला। पतला। ४ चोखा। धारदार।

यौ०—शितधार = तीक्ष्ण धारवाला। शितशूक = (१) यव। जौ। (२) गेहूँ। गोधूम।

शित[2]—सज्ञा पुं० विश्वामित्र के गोत्र के एक ऋषि का नाम।

शित(पृ)[3]—वि० [स० श्वेत या सित] दे० 'सित'।

शितद्रु—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शतद्रु। सतलज नदी। २. क्षीर मोरट। मोरट।

शितनिर्गुंडी—सज्ञा स्त्री० [स० शितनिर्गुण्डी] श्वेफालिका।

शितपर्ण—सज्ञा पुं० [स०] मोथा।

शितवर, शितवार—सज्ञा पु० [स०] शिरियारी नामक नाग।

शिताशाक—सज्ञा पुं० [स०] शालिच शाक। शालि शाक।

शिताग्र—सज्ञा पु० [स०] कटक। काँटा (को०)।

शिताद्रिकर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] विष्णुक्रांता लता। अपराजिता। कोयल।

शिताफल—सज्ञा पु० [स०] शरीफा। सीताफल।

शिताब'—वि० [फा०] १ जल्द। शीघ्र। उ०—दिए धोरक उसे इस वजा वेहिस व। उड्या वाँते दरहाल तोना शिताब।—दक्खिनी०, पृ० ६१। २ तेज। फुर्तीला। तीव्र (को०)।

शिताब'—सज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी (को०)।

शितावी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शीघ्रता। जल्दी। २ तेजी। हड़बड़ी।

शितावर—सज्ञा पुं० [स० शतावर] १ बकुची। सोमराजी। २ शिरियारी। सतावर।

शितावरी—सज्ञा स्त्री० [स० शतावरी] दे० 'शतावर'।

शिति'—वि० [स०] १ सफेद। शुक्ल। श्वेत। २ काला। कृष्ण। ३. नील। नीला। ४ कर्बुर। चितकबरा (को०)।

यौ०—शितिकठ। शितिकुभ।

शिति'—सज्ञा पु० भोजपत्र। भूर्ज तरु।

शितिकठ—सज्ञा पुं० [स० शितिकण्ठ] १ दात्यूह पक्षी। मुर्गाबी। जलकाक। २ पपीहा। चातक। ३ मोर। मयूर। ४ नाग देवता। ५ शिव। महादेव।

शितिकुभ—सज्ञा पुं० [स० शितिकुम्भ] कनेर का पेड़। करवीर वृक्ष।

शितिकेश—सज्ञा पु० [स०] स्कद के एक अनुचर का नाम।

शितिचदन—सज्ञा पुं० [स० शितिचन्दन] कस्तूरी।

शितिचार—सज्ञा पु० [स०] शिरियारी नामक साग।

शितिच्छद—सज्ञा पु० [स०] हस।

शितिपक्ष—सज्ञा पु० [स०] हस।

शितिपृष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] एक नाग जो एक यज्ञ मे मैत्रावरुण बना था।

शितिमास—सज्ञा पु० [स०] मज्जा। मेद। चर्बी (को०)।

शितिमूलक—सज्ञा पु० [स०] खस। उशीर।

शितिरत्न—सज्ञा पु० [स०] नील मणि। नीलम।

शितिवासा—सज्ञा पुं० [स० शितिवासस्] बलदेव। बलराम (को०)।

शितिसार, शितिसारक—सज्ञा पु० [स०] तिदुक वृक्ष। तेंद।

शितीक्षु—सज्ञा पु० [स०] वैदिक देवता उशना के एक पुत्र का नाम।

शित्पुट—सज्ञा पु० [स०] १ बिलनी की जाति का एक जानवर। २ एक प्रकार का काला मौरा।

शिथिल'—वि० [स०] १ जो कसा या जकड़ा न हो। जो खूब बँधा न हो। ढीला। २ सुस्त। मद। धीमा। ३ जिसमे और शक्ति न रह गई हो। थका हुआ। हारा हुआ। श्रात। उ०—देह शिथिल भई उठ्यो न जाई।—सूर (शब्द०)। ४ जो कार्य मे पूर्ण तत्पर न हो। जो पूरा मुस्तैद न हो। आलस्ययुक्त। जैसे,—कार्य मे शिथिल पड़ना। ५ जो अपनी बात पर खूब जमा न हो। अदृढ़। ६ जिसका पालन कड़ाई के साथ न हो। जिसकी पूरी पाबदी न हो। जैसे,—नियम शिथिल होना। ७. जो साफ सुनाई न दे। अस्पष्ट (शब्द)। ८ जो पूरे दबाव में न रखा गया हो। छोड़ा हुआ। ९. निष्क्रिय। निरर्थक (को०)। १० अभावयुक्त (को०)। ११. डाल से गिरा या टूटा हुआ (को०)। १२ दुर्बल। कमजोर (को०)।

क्रि० प्र०—करना।—पड़ना।—होना।

शिथिल'—सज्ञा पुं० १ ढीलापन। शिथिलता। सुस्ती। २ वचन जो कसा न हो। ३ छोड़ना। डालना। ४ त्याग देना। त्यजन (को०)।

शिथिलता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कसे या जकड़े न रहने का भाव। ढीलापन। ढिलाई। २ थकावट। थकान। श्राति। ३ मुस्तैदी का न होना। अतत्परता। आलस्य। ४ नियम पालन की कड़ाई का न होना। ५ शक्ति की कमी। सामर्थ्य की त्रुटि। ६ वाक्य मे शब्दो का परस्पर गठा हुआ अर्थसबध न होना। ७. तर्क मे किसी अवयव का अभाव।

शिथिलाई†—सज्ञा स्त्री० [स० शिथिल+हिं० आई (प्रत्य०)] दे० 'शिथिलता'।

शिथिलाना†—क्रि० अ० [स० शिथिलायते ? या स० शिथिल+हिं० आना (प्रत्य०)] १ शिथिल होना। ढीला पड़ना। २ थकना। श्रात होना। उ०—करत सिगार परस्पर दोऊ अति आलस शिथिलाने।—सूर (शब्द०)।

शिथिलित—वि० [सं०] १ जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ। २ विश्रात। थका हुआ। उ०—मृग डाल दिया, फिर धनु को भी, मनु बैठ गए शिथिलित शरीर। बिखरे थे सब उपकरण वहीं आयुध, प्रत्यचा, शृग, तीर।—कामायनी, पृ० १४१। ३ घुला हुआ। प्रविलीन (को०)।

शिथिलीकरण—सज्ञा पु० [स०] [वि० शिथिलीकृत] शिथिल करना। ढीला करना।

शिथिलीकृत—सज्ञा पुं० [स०] जो शिथिल किया गया हो।

शिथिलीभूत—वि० [स०] जो शिथिल हो गया हो। शिथिलित पड़ा हुआ। श्लथ।

शिद्दत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेजी। जोर। उग्रता। प्रचडता। २ अधिकता। ज्यादती। जैसे,—शिद्दत की गरमी या बुखार। ३ कठिनाई (को०)। ४ कष्ट। तकलीफ (को०)।

शिना—सज्ञा पुं० [स०] भुइँ आवला।

शिनाख्त—सज्ञा स्त्री० [फा० शिनाख्त] १ यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। पहचान। जैसे,—तुम अपने माल की शिनाख्त कर लो। २ स्वरूप या गुण का बोध। असल नकल, अच्छा बुरा, जान लेने की बुद्धि। परख। तमीज। जैसे,—तुम्हे आदमी की शिनाख्त नही है।

शिनि—सज्ञा पु० [स०] १ गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम। २ क्षत्रियो का एक भेद। ३ एक यादव वीर का नाम।

विशेष—इन्होने वसुदेव के लिये देवकी का बलपूर्वक हरण किया था। इस कारण इनका सोमदत्त के साथ भयकर युद्ध हुआ था। इनके पुत्र का नाम सत्यक और पौत्र का सात्यकि था जो पाडवो की ओर से महाभारत मे लड़ा था।

शिनिवाहु—सज्ञा पुं० [सं०] वायुपुराण मे वर्णित एक नदी का नाम।

शिनिवास—सज्ञा पु० [स०] एक पहाड का नाम [को०]।

शिनूसा—सज्ञा पुं० [फा०] छिक्का। छीक [को०]।

शिपविष्ट—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिपिविष्ट' [को०]।

शिपि[1]—सज्ञा पु० [स०] १ रश्मि। किरण। २. जल (को०)।

शिपि[2]—सज्ञा स्त्री० चमडा। खाल।

शिपिविष्ट[1]—वि० [स०] १ किरणो से व्याप्त। किरणाच्छादित। २ गजे सिरवाला। ३ कुष्ठ रोगवाला [को०]।

शिपिविष्ट[2]—सज्ञा पु० १. कुष्ठी। कोढी। २ खत्वाट व्यक्ति। वह जिसकी खोपडी गंजी हो (को०)। ३ शिव (को०)। ४ विष्णु (को०)। ५ वह व्यक्ति जिसके शिश्नाग पर चमडा न हो (को०)।

शिपुरगड्डी—सज्ञा स्त्री० [त०] एक प्रकार का पौधा जिसकी डाल के रेशे बुरुश बनाने के काम मे आते है।

शिप्र—सज्ञा पु० [स०] १ लोहे या तांबे का टोप। शिरस्त्राण। उ०—झिलम टोप (शिप्र) यह लोहे या तांबे का बनता था।—हिंदु० स०, पृ० ८५। २ हिमालय पर्वत का एक सरोवर (को०)। ३ कपोल। गाल (को०)। ४ चिबुक। ठुड्डी (को०)। ५ नाक। नासिका (को०)।

शिप्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मध्यप्रदेश की एक नदी का नाम जिसके किनारे उज्जैन (प्राचीन नाम उज्जयिनी) स्थित है। यह हिमालय के 'शिप्र' सरोवर से निकली है। उ०—आर्य, आपकी वीरता की लेखमाला शिप्रा और सिंधु की लोल लहरियो से लिखी जाती है।—स्कद०, पृ० ३। २ टोप। शिरस्त्राण (को०)।

शिप्रावात—सज्ञा पुं० [स०] शिप्रा से आनेवाला पवन। उ०—वह शिप्रावात, प्रिया से प्रिय ज्यो चाटुकार।—अपरा, पृ० २१०।

शिप्री—सज्ञा पु० [स० शिप्रिन्] शिरस्त्राणधारी योद्धा। उ०—शिरस्त्राण पहने हुए योद्धा शिप्री कहलाता था।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ८५।

शिफ—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिफा' [को०]।

शिफर ९†—सज्ञा पु० [फा० सिफर] ढाल। उ०—सतएँ शिफर सुमरस बनाई। नान वृष्टि तिन सबै बचाई।—हनुमन्नाटक (शब्द०)।

शिफा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वृक्ष की रेशेदार जड जिसमे प्राचीन काल मे कोडे बनते थे। २. कोडे की फटकार। चाबुक की मार। ३ माता। ४ हरिद्रा। हलदी। ५ कमल की जड। पद्मकद। भसींड। ६ लता। ७ नदी। ८ एक प्राचीन नदी का नाम। ९ मासिका। जटामासी। १० शिखा। चोटी। ११ जड। मूल (को०)। १२ दे० 'शतपुष्पा' (को०)। १३. कोडा। बेत।

यौ०—शिफादड = कोडे मारने का दड।

शिफा[2]—सज्ञा स्त्री० [अ०] आरोग्य। तंदुरुस्ती। दे० 'शफा'। उ०—उस मसीहा को दिखा दो तो कुछ आजार नही, अभी हो जाय शिफा।—श्यामा०, पृ० १०१।

यौ०—शिफाखाना = अस्पताल। दवाखाना।

शिफाकंद—सज्ञा पु० [स० शिफाकन्द] कमल की जड। भसीड।

शिफाक—सज्ञा पु० [स०] पद्ममूल। भसीड।

शिफाघर—सज्ञा पुं० [स०] डाल। शाखा।

शिफारुह—सज्ञा पु० [स०] बरगद का पेड।

शिबि—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिवि' [को०]।

शिबिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शिविका'।

शिबिर—सज्ञा पु० [स०] 'शिविर' [को०]।

शिमाल—सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शिमाली] उत्तर दिशा।

शिमूडी—सज्ञा स्त्री० [स०] चगोनी या चिगोनी नाम का पौधा।

शिया—सज्ञा पुं० [अ० शीया] १ मददगार। सहायक। २ अनुयायी। ३ मुसलमानो के दो प्रधान और परस्पर विरोधी सप्रदायो मे से एक। हजरत अली को पैगबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला संप्रदाय।

विशेष—उमर, अबूबक्र आदि जो चार खलीफा मुहम्मद साहब के पीछे हुए हैं उन्हे इस सप्रदाय के लोग अनधिकारी मानते हैं तथा पैगबर के बाद अली और उनके बेटों हसन और हुसेन को ही आदर का स्थान देते है। मुहर्रम के महीने मे ये अब तक हसन और हुसेन के वीरगति को प्राप्त होने के दिनो मे शोक मनाते हैं।

शिर.—सज्ञा पु० [स० शिरस्] शिरस् शब्द का समासगत रूप। शिरस् शब्द के कर्ताकारक का एकवचन।

शिर कपाली—सज्ञा पु० [स०] कापालिक सन्यासी।

शिर कृतन—सज्ञा पु० [स० शिर कृन्तन] शिर काटना। शिरच्छेद।

शिर खड—सज्ञा पु० [स० शिर खण्ड] माथे की हड्डी। कपालास्थि।

शिर पीडा सज्ञा स्त्री० [स०] सिर का दर्द। माथे की पीडा।

विशेष—आयुर्वेद मे ११ प्रकार के और यूनानी मे १९ प्रकार के शिरोरोग कहे गए हैं। परतु कोई कोई २१ प्रकार के सिरदर्द बताते है। आयुर्वेद के अनुसार वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज, क्षयज, कृमिज, सूर्यावर्त, अनतवात, अर्द्धविभेदक और शखक ये ११ प्रकार के शिरोरोग होते है।

शिर फल—सज्ञा पुं० [स०] नारिकेल वृक्ष। नारियल।

शिर शूल—सज्ञा पु० [स०] सिर की पीडा।

शिर स्थ—वि०, सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिरस्थ'।

शिर—सज्ञा पु० [स० शिर, शिरस्] १. सिर। कपाल। मुंड। खोपडा। २. मस्तक। माथा। ३ किसी वस्तु का सबसे ऊँचा भाग या सिरा। चोटी। ४ शिखर। ५. सेना का अग्र भाग। ६ पद्य के चरण का आरभ। टोका। ७. मुखिया। प्रधान।

अगुआ। ८ पिप्पली मूल। पिपरा मूल। ९ शय्या। १० विस्तर। बिस्तार। ११ अजगर।

शिरकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु के अधिकार मे भाग। समिलित अधिकार। साझा। हिस्सा। २ किसी कार्य मे योग। किसी काम या व्यवसाय मे शामिल होना। जैसे,—उनकी शिरकत से यह काम होगा।

यौ०—शिरकतनामा = दे० 'शिराकतनामा'।

शिरकती—वि० [अ० शिरकत] शिरकत करनेवाला।

शिरखिस्त—सज्ञा पु० [फा० शीरखिश्त] एक वृक्ष का गोद जो औषध के काम मे आता है और जिसे साधारणत लोग ज्वार से बनी चीनी मानते हैं।

शिरगोला—सज्ञा पु० [देश०] दुग्धपाषाण नामक वृक्ष।

शिरज—सज्ञा पुं० [स०] केश। बाल। शिरसिज।

शिरत्रान—सज्ञा पुं० [स० शिरस्त्राण] खोद। दे० 'शिरस्त्राण'। उ०—टूटत धुजा पताक छत्र रथ चाप चक्र शिरत्रान।—सूर (शब्द०)।

शिरनी—सज्ञा स्त्री० [फा० शीरीनी] मिठाई। उ०—इतनी सुनी हर्ष धर्मदासा। शिरनी पान लाइ घरे पासा।—कबीर सा०,पृ०८२।

शिरनेत—सज्ञा पुं० [देश०] १ गढवाल या श्रीनगर के आस पास का प्रदेश। उ०—सुनि सिधाय शिरनेतन देशू। तहँ विवाह किय ब्रह्मनरेशू।—कबीर (शब्द०)। २ क्षत्रियो की एक शाखा।

शिरपेंच—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरपेंच'।

शिरफूल—सज्ञा पुं० [हिं० शिर+फूल] सिर मे पहनने का स्त्रियो का आभूषण। सीसफूल। उ०—माँग फूल शिरफूल सब वेणी फूल बनाव।—केशव (शब्द०)।

शिरमौर—सज्ञा पुं० [स० शिरस् + स० मुकुट, प्रा० मउड] १ शिरोभूषण। मुकुट। २ श्रेष्ठ व्यक्ति। मुख्य व्यक्ति। प्रधान। उ०—हम खेलब तव साथ, होइ नीच सब भाँति जो। कह्यौ बचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमौर मम।—सबल (शब्द०)। २. अधिपति। नायक।

शिरश्चद्र—सज्ञा पुं० [स० शिरश्चन्द्र] महादेव, शिव।

शिरश्छेद, शिरश्छेदन—सज्ञा पुं० [स०] सिर काटना। शिर कृतन [को०]।

शिरसिज—सज्ञा पु० [स०] केश। बाल।

यौ०—शिरसिज पाश = केशबध।

शिरसिरुह—सज्ञा पुं० [स०] केश। बाल।

शिरस्क—सज्ञा पु०[सं०] १. शिरस्त्राण। २ पगडी। शिरोवेष्टन [को०]।

शिरस्का—सज्ञा स्त्री० [सं०] नरयान। पालकी। शिविका [को०]।

शिरस्तापी—सज्ञा पु० [स० शिरस्तापिन्] हाथी। हस्ती [को०]।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण—सज्ञा पु० [स०] १ युद्ध आदि के समय सिर के बचाव के लिये पहनी जानेवाली लोहे की टोपी। कूड। खोद। उ०—उसके पटदाँव (पीछे की ओर) एक लबी पुरुष मूर्ति है जो उरस्त्राण, कचुक और शिरस्त्राण पहने हुए है।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २६०। २, पगडी। मुरेठा। शिरोवेष्टन (को०)।

शिरस्थ[1]—सज्ञा पुं० [सं०] १ मुखिया। अग्रणी। नायक। २. वह जो वाद या अभियोग लगावे। वादी। अभियोक्ता [को०]।

शिरस्थ[2]—वि० उपस्थित। आसन्न। उपनत [को०]।

शिरस्थान—सज्ञा पुं० [स०] मुख्य स्थान। प्रधान कक्ष [को०]।

शिरस्य[1]—वि० [स०] शिर सबधी। शिर का। शिर पर स्थित।

शिरस्य[2]—सज्ञा पुं० साफ एव स्वच्छ बाल [को०]।

शिरहन—सज्ञा पुं० [हिं० शिर+आधान] १ उसीसा। तकिया। २ सिरहाना। मुडवारी। उ०—(क) शिरहन ओर चरण की सोवन लगी अवधि नहि जानी।—रघुराज (शब्द०)। (ख) ताके हृदय गर्व नहि थोरा। बैठेउ जाइ शिरहने ओरा।—सबल (शब्द०)

शिरा[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ रक्त की छोटी नाडी। खून की छोटी नली। विशेष दे० 'नाडी'। २ पानी का सोता या धारा। ३ जाल के समान गुथी हुई रेखाएँ। ४ पानी खीचने का डोल। ५ पृथ्वी के भीतर भीतर बहनेवाला पानी का सोता।

विशेष—आठो दिशाओ के स्वामियो के नाम से आठ शिराएँ प्रसिद्ध है जैसे,—आग्नेयी, ऐंद्री, याम्या, आदि। बीच मे सबसे बडी शिरा या महाशिरा है। इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी शिराएँ है।

शिरा[2]—सज्ञा पु० [देश०] भूरे रग का एक प्रकार का पक्षी।

विशेष—इस पक्षी का सिर किरमिजी रग का तथा पूँछ सफेद होती है। इसकी लबाई १२ अगुल के लगभग होता है। यह कुमाऊँ, काश्मीर और अफगानिस्तान में होता है तथा भटकटैया के बीज खाता है।

शिराकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ साझा। हिस्सेदारी। २. कार्य मे योग।

शिराकतनामा—सज्ञा पुं० [अ० शिराकत+फा० नामह्] वह कागज जिसपर साझे की शर्त लिखी हो।

शिराकती—वि० [अ० शिराकत] १. साझेदार। हिस्सेदार। २ सहायक। सहयोगी।

शिराग्रह—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वातरोग जिसमे वायु रुधिर के साथ मिलकर गले की नसो को काला कर देती है।

शिराज—सज्ञा स्त्री० [देश०] हिंदुओ की एक जाति जो चमडे का काम बहुत अच्छा करती है।

शिराजाल—सज्ञा पुं० [स०] १ छोटी रक्तनाडियो का समूह। २. आँख का एक रोग जिसमे लाल डोरे मोटे और कड़े पड जाते हैं।

शिरापत्र—सज्ञा पुं० [सं०] १ पीपल का पेड। २ एक प्रकार का खजूर। हिंताल। ३ कैथ का पेड। कपित्थ।

शिरापिडिका—सज्ञा स्त्री० [स० शिरापिडिका] आँख का एक रोग जिसमे पुतली के पास एक फुंसी निकल आती है। २ प्रमेहपिडिका। शिराविका पिडिका।

शिराप्रहर्ष—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का नेत्ररोग।

शिराफल—सज्ञा पु० [स०] १. नारियल। २. अजीर।

शिरामूल—सज्ञा पुं० [सं०] नाभि ।

शिरामोक्ष—सज्ञा पु० [स०] रक्तस्राव । रक्त का निकलना [को०] ।

शिरायु—सज्ञा पु० [स०] रीछ । भालू ।

शिराल[1] वि० [सं०] १ शिरायुक्त । जिसमे शिराएँ हो । २ शिरा-संबधी [को०] ।

शिराल[2]—सज्ञा पुं० कर्मरग । कमरख [को०] ।

शिरालक[1]—वि० [स०] बहुत नसो या नाडियोवाला ।

शिरालक[2]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का पौधा जिसे हाडा भाँग कहते हैं । अस्थिभग वृक्ष ।

शिरालक[3]—सज्ञा पु० [?] एक प्राचीन जाति का नाम ।

शिराला -सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार का पौधा । २ कमरख ।

शिराविकापिड़िड़िका—सज्ञा स्त्री० [स० शिराविका पिडिका] वह घातक फुसी जो बहुमूत्र के रोगियो को निकलती है । प्रमेह पीडिका ।

शिरावृत्त—सज्ञा पु० [स०] सीसा नामक धातु ।

शिराहर्ष—सज्ञा पु० [स०] १ नसो का झनझनाना । २ आँख का एक रोग जिसमे आँख ताँबे के समान लाल हो जाती है और दिखाई नही पडता ।

शिरि—सज्ञा पु० [स०] १ खड्ग । तलवार । २ शर । ३ वध करने-वाला व्यक्ति । घातक (को०) । ४. शलभ । पतिंगा । ५. टिड्डी ।

शिरि[2]—वि० उग्र । क्रूर । रौद्र [को०] ।

शिरियारी—सज्ञा स्त्री० [देश०] एक जंगली बूटी या शाक जो औषध के काम मे आता है । सुसना । सुनिषण्णक ।

विशेष—यह जगली शाक हर जगह होता है । इसमे चँगेरी के समान एक साथ चार चार पत्ते होते हैं जो एक अगुल चौडे और नोकदार होते हैं । पत्तो के बीच मे कली लगती है । फलो मे दो चिपटे बीज होते हैं जो कुछ रोएदार होते हैं । ये बीज सूजाक मे दिए जाते है । शिरियारी पजाब और सिंध मे अधिक होती है । वैद्यक मे यह कसैली, रूखी, शीतल, हलकी, स्वादिष्ट, शुक्रजनक, रुचिकारी, मेधाजनक और त्रिदोष-नाशक कही गई है । इसका साग भी लोग खाते है ।

शिरीष—सज्ञा पु० [स०] १ सिरस का पेड । २ शिरीष का पुष्प (को०) ।

शिरीषक—सज्ञा पुं० [स०] १. सिरिस का पेड । २. एक नाग का नाम ।

शिरीषपत्रिका—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद कटभी का पौधा ।

शिरीषी—सज्ञा पुं० [स० शिरीषिन्] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम ।

शिरुआरी—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'शिरियारी' ।

शिरोगद—सज्ञा पुं० [स०] शिर का रोग [को०] ।

शिरोगुहा—सज्ञा स्त्री० [सं०] शरीर के तीन घटो या कोठो मे से एक जिसमे मस्तिष्क और सुषुम्ना नाडी का सिरा रहता है । सिर के भीतर का भाग ।

शिरोगृह—सज्ञा पुं० [सं०] चद्रशाला । अट्टालिका । कोठा ।

शिरोगेह—सज्ञा पुं० [सं०] अट्टालिका । कोठा ।

शिरोग्रह—सज्ञा पु० [सं०] सिर का एक वातरोग । समलवाई ।

शिरोज—सज्ञा पु० [स०] बाल । केश ।

शिरोदाम—सज्ञा पु० [स० शिरोदामन्] पगडी । साफा ।

शिरोधरा—सज्ञा स्त्री [स०] ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधाम—सज्ञा पु० [स०] चारपाई का सिरहाना ।

शिरोधार्य—वि० [स०] १. सिर पर धरने योग्य । आदरपूर्वक मानने योग्य । सादर अगीकार करने योग्य ।

मुहा०—शिरोधार्य करना = (१) सिर पर धारण करना । सिर माथे चढाना । (२) आदरपूर्वक स्वीकार करना । आदर के साथ मानना, जैसे—आज्ञा शिरोधार्य करना ।

शिरोधि—सज्ञा स्त्री० [स०] ग्रीवा । गरदन ।

शिरोधिजा—सज्ञा स्त्री० [स०] शिरा । नस । नाड़ी ।

शिरोध्र—सज्ञा पु० [स०] गरदन [को०] ।

शिरोनाप—सज्ञा पु० [स० शिरस्+हिं० नाप] सिर का परिमाण । सिर का नाप । उ०—और भी कई भेद हैं जिनका नरदेह-शास्त्र मे विस्तार से अध्ययन होता है । एक प्रमुख भेद का नाम है शिरोनाप, यदि किसी के के सिर की लंबाई 'क' और चौडाई 'ख' है तो उसका शिरोनाप क/ख × १०० हुआ । आर्यो०, पृ० ७ ।

शिरोपाव—सज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सिरोपाव' । उ०—अच्छे खिलअत और शिरोपाव दने का कृपा की । —हुमायूँ, पृ० १८३ ।

शिरोभूषण—सज्ञा पु० [स०] १. सिर पर पहनने का गहना । जैसे,—सास फूल । २. मुकुट । ३. शिरोमणि । श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोभूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] शिर का अलकरण, शीशफूल, कलँगा आदि । उ०—कुछ उदाहरणो मे शिरोभूषा पर कमलपुष्प भी जडे है ।—सपूर्णा० अभि० ग्रं०, पृ० ४५० ।

शिरोभ्यग—सज्ञा पु० [स० शिरोभ्यङ्ग] सिर मे तेल लगाने की क्रिया ।

शिरोमणि[1]—सज्ञा पुं०, स्त्री० [स०] सिर पर का रत्न । चूडामणि । २. श्रेष्ठ व्यक्ति । सबसे उत्तम मनुष्य । सिरताज । मुखिया । प्रधान । ३. माला मे सुमेरु ।

शिरोमणि[2]—वि० सर्वप्रधान । सर्वश्रेष्ठ [को०] ।

शिरोमर्मा—सज्ञा पु० [स० शिरोममन्] जगली सूअर । शूकर ।

शिरोमाली—सज्ञा पु० [स० शिरोमालिन्] मुड का माला धारण करनेवाला, शिव । महादेव ।

शिरोमौलि—सज्ञा पु० [स०] १ सिर का रत्न । २. श्रेष्ठ व्यक्ति ।

शिरोरक्षी—सज्ञा पु० [स० शिरोरक्षिन्] सदा राजा के साथ रहनेवाला रक्षक । बाडीगार्ड ।

शिरोरत्न—सज्ञा पु० [स०] शिरोमणि ।

शिरोरुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] सप्तपर्ण वृक्ष । सातवन । २. मस्तक का पीडा (को०) ।

शिरोरुह—सज्ञा पु० [सं०] सिर के ऊपर के बाल । केश ।

शिरोरेखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] नागरी अक्षरों पर लगाई जानेवाली शीर्ष रेखा। उ०—शिरोरेखा ने नागरी की वैज्ञानिकता और कलापूर्णता दोनों को बढाया है।—भाषा शि०, पृ० ५८।

शिरोवर्ती—वि० [सं० शिरोवर्तिन्] अग्रवर्ती। मुखिया। प्रधान। नायक। शीर्षस्थ (को०)।

शिरोवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] मोर या मुर्गे की चोटी। कलगी।

शिरोवस्ति संज्ञा पु० [सं०] वातज सिर के दर्द का एक उपचार।

विशेष—उर्द के सने हुए आटे से सिर पर आठ या सोलह अंगुल की बाढ बाँधकर बीच मे गरम तेल भर दे और चार घडी रखकर निकाल डाले। इससे वातज शिरोरोग, कर्णरोग, ग्रीवा रोग, और दाढ़ के रोग ४, ५ दिन के सेवन से अच्छे हो जाते हैं।

शिरोवृत्त—संज्ञा पुं० [सं०] गोल मिर्च। काली मिर्च।

शिरोवृत्तफल—संज्ञा पु० [सं०] लाल ओगा। रक्त अपामार्ग। लाल चिचडा।

शिरोवेष्ट—संज्ञा पु० [सं०] उष्णीष। पगडी। साफा।

शिरोवेष्टन—संज्ञा पु० [सं०] पगडी (को०)।

शिरोहर्त्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिर की पीडा। सिर का दर्द।

शिरोहर्ष—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का नेत्ररोग जो शिरोत्पात को चिकित्सा न करने से हो जाता है।

शिरोहारी—संज्ञा पु० [सं० शिरोहारिन्] १ सिरो की माला पहननेवाले, शिव। महादेव।

शिरोऽर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सिर का दर्द। सिर की पीड़ा (को०)।

शिरोऽस्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] खोपडी की हड्डी। करोटि (को०)।

शिर्क—संज्ञा पु० [अ०] अनेकेश्वरवादी होना। ईश्वर मे द्वैत भाव रखना (को०)।

शिर्कत—संज्ञा स्त्री० [अ०] दे० 'शिरकत', 'शिराकत' (को०)।

यौ०—शिर्कतनामा।

शिलडी—संज्ञा स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। बीड।

विशेष—यह सिंध, बलोचिस्तान, दक्षिण, मलाबार और लंका आदि के रेतीले स्थानो मे बहुतायत से पाई जाती है। भारत से बाहर यह अरब और उत्तरी तथा मध्य अमरीका मे भी होती है। यह घास जिस स्थान पर होती है उस स्थान पर जमीन मे चावल की तरह के एक प्रकार के दाने भी होते हैं। गरीब लोग इन दानो को उबालकर अथवा इनका आटा बनाकर खाते हैं।

शिलधिर—संज्ञा पुं० [सं० शिलन्धिर] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शिलब—संज्ञा पु० [सं० शिलम्ब] १ जुलाहा। ततुवाय। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३ तपस्वी। साधु। संत (को०)।

शिल[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ खेत कट जाने और कृषक द्वारा उसे छोड देने के बाद भूमि मे पडा हुआ एक एक दाना बीनना। दे० 'उछ'। २. पारियात्र के एक पुत्र का नाम।

शिल[2]—संज्ञा स्त्री० १. दे० 'शिला'। २. दे० 'सिल'।

शिलक—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शिलगर्भज—संज्ञा पुं० [सं०] पाषाणभेद। पखानभेद।

शिलज—संज्ञा पु० [सं०] शैलज। भूमि चुरीला।

शिलरति—संज्ञा पु० [सं०] वह जो उछ वृत्ति के द्वारा जीविका निर्वाह करता हो। उछशील।

शिलवट—संज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सिलवट'।

शिलवाहा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिलावहा] एक प्राचीन नदी का नाम। दे० 'शिलावहा'।

शिलाजनी—संज्ञा स्त्री० [सं० शिलाञ्जनी] कालाजनी वृक्ष। काली कपास।

शिलात—संज्ञा पुं० [सं० शिलान्त] अश्मतक वृक्ष।

शिला—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पाषाण। पत्थर। २ पत्थर का बडा चौडा टुकडा। चट्टान। सिल। ३. मन शिला। मैनसिल। ४ कपूर। ५. शिलाजीत। ६ गेरु। ७ नाग का पौधा। ८ हरीतकी। हर्रे। ९. गोरोचन। १० दूब। ११ पत्थर की ककडी अथवा बटिया। १२ भूमि मे पडा हुआ एक एक दाना बीनने का काम। उछवृत्ति। उ०—बीन्यो शिला क्षुधावश छीना।—रघुराज (शब्द०)। १३ दे० 'जिरा'। १४ चक्की के नीचे का पाट (को०)। १५ चौखट के नीचे की लकडी (को०)। १६ स्तभ का ऊपरी सिरा (को०)।

शिलाकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शालकी वृक्ष। सलई।

शिलाकुट्टक—संज्ञा पुं० [सं०] पत्थर तोडने की छेनी।

शिलाकुसुम—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शिलाक्षर—संज्ञा पु० [सं०] प्रस्तरखड पर अक्षर उत्कीर्ण करना। शिलालेखन। शिलालेख। २ लीथोग्राफी (अंग०)। पत्थर की छपाई (को०)।

शिलाक्षार—संज्ञा पु० [सं०] चूना।

शिलागृह—संज्ञा पुं० [सं०] गह्वर। गुहा। कदरा (को०)।

शिलाघन—वि० [सं०] शिला की तरह कठोर।

शिलाचक्र—संज्ञा पु० [सं०] १ शालग्राम की मूर्ति। २. प्रस्तर पर उत्कीर्ण कोई चक्र।

शिलाचय—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत। पहाड।

शिलाज[1]—संज्ञा पु० [सं०] १. छरीला। पत्थर का फूल। २. लोहा। ३. शिलाजीत। ४ पेट्रोल (को०)। ५ कोई भी शिलाभूत पदार्थ (को०)।

शिलाज[2]—वि० खनिज (को०)।

शिलाजतु—संज्ञा पु० [सं०] १. शिलाजीत। २. गैरिक धातु। गेरु (को०)।

शिलाजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] सफेद रग का पत्थर। सगमरमर।

शिलाजित्—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलाजीत—संज्ञा पु०, स्त्री० [सं० शिलाजतु] काले रग की एक प्रसिद्ध ओषधि जिसे कुछ लोग मोमियाई भी कहते हैं।

विशेष—सुश्रुत के अनुसार यह ग्रीष्म ऋतु मे सूर्य की किरणो से तपी हुई शिलाओ का रस है। 'मदनघटु' के अनुसार यह दो प्रकार का होता है—एक पर्वतो से निकलता है और दूसरा खारी जमीन मे मिट्टी और पानी के योग से बनता है। 'रसरत्नाकर' इसकी उत्पत्ति सोने, चाँदी, लोहे और ताँबे से मानता है। परतु यह प्राय पहाडो पर या लोहे की खानवाले गड्ढे मे ही मिलता है। शास्त्रो के अनुसार यह छह प्रकार का होता है। 'रसरत्न' के अनुसार यह दो प्रकार का होता है। एक वह जिसमे से गोमूत्र के समान गध आती है। यह साधारणत. बहुत मिलता है। और दूसरा कपूर के समान सफेद होता है। इसमे से किसी प्रकार की गध नही आती। इसका रग कई प्रकार का होता है। विध्याचल का शिलाजीत सबसे उत्तम कहा जाता है। इसको रासायनिक रीति से शुद्ध करके औषधि के काम मे लाते है। यह बडा ही गुणकारी और शक्तिवर्धक होता है। अनुपानभेद के अनुसार नाना प्रकार के रोगो के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। वैद्यक के अनुसार यह कडवा, चरपरा, गरम, रसायन, छेदन, योगवाही, कफ, मद, पथरी, शर्करा, सूजाक, क्षय, श्वास, वातरक्त, वसासार, पाडुरोग, मृगी, उन्माद, खासी, इत्यादि रोगो का नाश करनेवाला माना गया है।

पुराणो के अनुसार देवासुर सग्राम के समय जब अमृत निकालने के लिये देवताओ और राक्षसो ने समुद्र का मदराचल पर्वत को मथानी बनाकर मथा, तब शेषनाग के झाग और मथने का गरमी से पर्वत के भीतर की धातुए पिघल गई और पसीने के रूप मे बहने लगी। उसी स्राव का नाम शिलाजीत, गिरिस्वेद या शिलामल हुआ। पीछे से देवताओ ने ब्रह्मा और इद्र का पूजनकर मनुष्यो के कल्याणार्थ मदराचल का वही पसीना अन्य पर्वतो को दे दिया।

पर्या०—अगज। अद्रिज। शिलाज। शीतपुष्पक। शैल। शैलेय। अश्मलाक्षा। जत्वश्मक। गैरेय। अर्घ्य। गिरिज। अश्मज। अश्मोत्थ। शिलाव्याधि। अश्मजतुक।

शिलाटक—सज्ञा पुं० [स०] १ बहुत बडा मकान। अट्टालिका। २. मकान के सबसे ऊपरी भाग मे बना हुआ छोटा कमरा। चौबारा। ३. किसी इमारत के चारो ओर बना हुआ बडा घेरा। चहारदीवारी। परकोटा। ४. गड्ढा। गर्त। बिल। सूराख।

शिलाठिका—सज्ञा स्त्री० [स०] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

शिलातल—सज्ञा पुं० [सं०] शिला। पाषाणपृष्ठ।

शिलातमज—सज्ञा पुं० [स०] लोहा।

शिलातिमका—सज्ञा स्त्री० [स०] सोना या चाँदी गलाने की घरिया।

शिलात्व—सज्ञा पुं० [सं०] शिला का भाव या धर्म।

शिलात्वच्—सज्ञा स्त्री० [स०] शिला या वल्का नाम की ओषधि।

शिलाद—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शिलादद्रु—सज्ञा पुं० [स०] १. शैलेय नामक गधद्रव्य। छरीला। २ शिलाजीत।

शिलादान—सज्ञा पुं० [स०] १ पुराणो के अनुसार वह दान जिसमे किसी ब्राह्मण को शालग्राम की मूर्ति दी जाती है। २ शिव का महाग करना। खेत मे से दाने चुनना।

शिलादित्य—सज्ञा पुं० [स० शीलादित्य] कान्यकुब्ज का एक नरेश। विशेष दे० 'हर्षवर्धन'।

शिलाद्रु—सज्ञा पुं० [स० शिलाद्रु] शैलेय नामक गधद्रव्य। छरीला।

शिलाधातु—सज्ञा पुं० [स०] १. गोनागेरु। २. खडिया। मिट्टी। ३ चीनी। शक्कर।

शिलानिर्यास—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलानीड—सज्ञा पुं० [स० शिलानीड] गरुड।

शिलान्यास—सज्ञा पुं० [स०] नीव की शिला रखना। नवीन भवन-निर्माण के समय नीव मे पूजनादि करके शिला का स्थापन करना।

शिलापट्ट—सज्ञा पुं० [स०] १ पत्थर की चट्टान। उ०—घरी तरे ही काज यह शिलापट्ट विधि लाय।—सीताराम (शब्द०)। २ मसाला आदि पीसने की सिल।

शिलापट्टक—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिलापट्ट (को०)।

शिलापुत्र, शिलापुत्रक—सज्ञा पुं० [स०] बट्टा जिसमे सिल पर कोई चीज पीसा जाती है।

शिलापुष्प—सज्ञा पुं० [स०] १. छरीला। शैलेय। पत्थर का फूल। पथरफूल। २ दे० 'शिलाजीत'।

शिलापेष—सज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तर का चकरी या बिल आदि (को०)।

शिलाप्रतिकृति—सज्ञा स्त्री० [स०] शिला पर उकेरी मूर्ति या शिलात्मक प्रतीक (को०)।

शिलाप्रमोक्ष—सज्ञा पुं० [सं०] कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार लडाई मे पत्थर फेंकना या लुढकाना।

शिलाप्रवालक—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य अर्थशास्त्रानुसार एक प्रकार का साधारण रत्न (को०)।

शिलाप्रसून—सज्ञा पुं० [स०] शैलज या छरीला नामक गधद्रव्य। शिलाकुसुम।

शिलाफलक—सज्ञा पुं० [स०] पत्थर की पटिया। पत्थर का पाटा।

शिलाबद्ध—सज्ञा पुं० [स० शिलाबन्ध] वह प्राकार या परकोटा जो पत्थरो के टुकडो से बना हो।

शिलाभव—सज्ञा पुं० [स०] छरीला। शैलज।

शिलाभिष्यद—सज्ञा पुं० [स० शिलाभिष्यन्द] शिलाजीत।

शिलाभेद—सज्ञा पुं० [स०] १. पाषाणभेदा वृक्ष। पखानभेद। २. पत्थर तोडने का छेनी।

शिलामल—सज्ञा पुं० [स०] शिलाजीत।

शिलायु—सज्ञा पुं० [स०] गले मे होनेवाला एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमे कफ और रक्त के दुषित होने से गले मे आँवले की गुठली के समान गाँठ उत्पन्न होती है जिसमे बहुत पीडा होती

है। इसके कारण खाया हुआ अन्न गले मे अटकता है। इसको गिलायु भी कहते है।

शिलायूप—पद्मा पु० [स०] महाभारत के अनुसार विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

शिलारंभा—सज्ञा स्त्री० [स० शिलारम्भा] कठकेला। काष्ठ कदली।

शिलारस—सज्ञा पु० [स०] लोहवान की तरह का एक प्रकार का सुगधित गोद।

विशेष—कुछ लोग इसे खनिज भी मानते हैं, पर वास्तव मे यह एक वृक्ष का गोद अथवा जमा हुआ दूध है। इसका वृक्ष पूरबी बगाल, आसाम, भूटान, पेगू, चीन, मलाया, मेरगुई, जावा और यूनान मे पाया जाता है। इसका वृक्ष ६० से १०० फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते ४½ इच तक लबे, जड की ओर गोलाकार, अनीदार और किंचित् बारीक कँगूरेदार होते है। शाखाओ के अत मे घुडीदार फूल होते हैं। फल गोलाकार होते हैं जिनमे बीजो की अधिकता होती है। वैद्यक के अनुसार यह कडवा, चरपरा, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, सुगधित, वर्ण को सुंदर करनेवाला और त्रिदोष आदि को शात करनेवाला होता है।

शिलारोपण—सज्ञा पु० [सं०] शिलान्यास।

शिलारोहण—सज्ञा पु० [स०] विवाह का एक विधि। अश्मारोहण। उ०—अब तक विवाह की तीन विधियाँ थी। एक अग्निप्रदक्षिणा, दूसरी, सप्तपदी लाजाहोम, तीसरी शिलारोहण।—वैशाली, पृ० ३४५।

शिलालिपि—सज्ञा स्त्री० [स०] शिलालेख

शिलाली—सज्ञा पु० [स० शिलालिन्] एक अति प्राचीन नाट्यशास्त्र क आचार्य।

शिलालेख—सज्ञा पु० [स०] पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख। पुराने लेख जो पत्थरो पर लिखे हुए पाए जाते है और जिनमे किसी प्रकार का अनुशासन या दान आदि उल्लिखित होता है।

शिलावर्षी[1]—सज्ञा पु० [स० शिलावर्षिन्] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शिलावर्षी[2]—वि० पत्थर बरसानेवाला।

शिलावल्कल—सज्ञा पु० [स०] [सज्ञा स्त्री० शिलावल्कला] एक प्रकार का आपधि। शिलावल्का।

शिलावल्का—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की विधि जिसे शिलजा और श्वेता भी कहते है। राजनिघटु क अनुसार यह ठढी, स्वादु, कृच्छ्रमेह, मूत्रावरोध, अश्मरी, शूलज्वर और पित्त का नाश करनेवाली है।

शिलावह—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्राचीन जनपद का नाम। २ इस जनपद का निवासी।

शिलावहा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन नदी का नाम।

शिलावृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आकाश से ओले या पत्थर गिरना। २. उपलवृष्टि। पथराव।

शिलावेश्म—सज्ञा पु० [सं० शिलावेश्मन्] १. कंदरा। गुफा। २. पत्थर का बना हुआ मकान।

शिलाव्याधि—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिलाजीत'।

शिलासन—सज्ञा पु० [स०] १ शैलेय नामक गधद्रव्य। २ पत्थर का बना हुआ आसन। ३ शिलाजीत।

शिलासार—सज्ञा पु० [स०] लोहा।

शिलास्वेद—सज्ञा पु० [स०] शिलाजीत।

शिलाहरि—सज्ञा पु० [स०] शालिग्राम की मूर्ति। उ०—भृगु मुनि कहा शिलाहरि धोई। करहु पान कछु दोष न होई।—विश्राम (शब्द०)।

शिलाहारी—सज्ञा पु० [स० शिलाहारिन्] वह जो शिला या उछ वृत्ति से अपना निर्वाह करता हो। उछशील।

शिलाह्व, शिलाह्वय—सज्ञा पु० [स०] शिलाजीत।

शिलिंग—सज्ञा पु० [अ०] इगलैंड मे चलनेवाला चाँदी का एक सिक्का जो प्राय पुराने बारह आने मूल्य का होता है।

शिलिंद—सज्ञा पु० [स० शिलिन्द] एक प्रकार की मछली।

विशेष—वैद्यक के अनुसार इसका मास बहुत स्वादिष्ट होता है और श्लेष्मावधक, हृद्य और वात-पित्त नाशक माना जाता है।

शिलि[1]—सज्ञा पुं० [सं०] भोजपत्र। भूर्जवृक्ष।

शिलि[2]—सज्ञा स्त्री० चौखट के नीचे का लकडी। डेहरी। देहली।

शिलिन—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शिलीध्र—सज्ञा पु० [स० शिलीध्र] १ कले का फूल। २ ओला। बनोरी। ३. शिलिंद नामक मछली। ४. मुइँछता। कुकुरमुत्ता। ५ कहरुवा।

शिलीध्रक—सज्ञा पु० [स० शिलीन्ध्रक] कुकुरमुत्ता। खुमी।

शिलीध्री—सज्ञा स्त्री० [स० शिलीन्ध्री] १. केचुआ। गडूपदी। २ मिट्टी। ३. एक प्रकार का चिडिया।

शिली—सज्ञा स्त्री० [स०] १. देहलीज। २ केचुआ। गडूपदी। ३. भोजपत्र। ४ बाण। ५ भाला। ६ खभे का ऊपरी भाग। स्तभशीर्ष (को०)। ७ मडूक। मेढक।

शिलीपद—सज्ञा पु० [स०] फीलपाँव नामक रोग। श्लीपद।

शिलीभूत—वि० [स०] शिला बना हुआ। उ०—शिलीभूत सौंदर्य, ज्ञान, आनद अनश्वर। शब्द शब्द मे तेरे उज्ज्वल जडित हिम शिखर।—युग०, पृ० ६२।

शिलीमुख—सज्ञा पु० [स०] १. भ्रमर। भौंरा। उ०—(क) कुँवरि ग्रासत श्रीखड आह भ्रम चरण शिलीमुख लाम।—सूर (शब्द०)। २. बाण। तीर। उ०—न डगै न भगै जिय जानि शिलीमुख पच धरे रतिनायक है।—तुलसी (शब्द०)। ३. युद्ध। समर। लडाई। ४ मूर्ख। बेवकूफ।

शिलु—सज्ञा पु० [स०] लिसोडा। बहुवार वृक्ष।

शिलूष—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि जो नाट्यशास्त्र के आचार्य माने जाते है। २ बेल का वृक्ष।

शिलेय[1]—वि० [स०] शिला संबधी। शिला का।

शिलेय[2]—सज्ञा पुं० शिलाजीत ।

शिलोछ—सज्ञा पुं० [स० शिलोञ्छ] फसल कट जाने पर खेत मे गिरे पडे दाने चुनकर जीवन निर्वाह करने की वृत्ति । शिल और उछवृत्ति ।

यौ०—शिलोंछवृत्ति = दे० 'शिलोछ' । शिलोछ वृत्ती(यु) = दे० 'शिलोछ' । उ०—करि शिलोछ वृत्ती मन लावै । स्वामी को परसाद करावै ।—राम० धर्म०, पृ० ३४४ ।

शिलोछन—सज्ञा पुं० [स० शिलोञ्छन] शिल और उछवृत्ति ।

शिलोछी—वि० [सं० शिलोञ्छिन्] शिलोछ वृत्तिवाला । अल्पसग्रही ।

शिलोच्चय—सज्ञा पुं० [स०] पर्वत । पहाड ।

शिलोत्थ—सज्ञा पुं० [स०] १. छरीला या शैलेय नामक गधद्रव्य । २ शिलाजीत ।

शिलोद्भव—सज्ञा पु० [स०] १ शैलेय । छरीला । २. पीला चदन । ३ सोना । स्वर्ण (को०) ।

शिलोद्भिदा—सज्ञा स्त्री० [स०] पाषाणभेद । पत्थरफोड ।

शिलौका—सज्ञा पु० [स० शिलौकस्] १. वह जो पर्वत पर होता हो । २. गरुड ।

शिल्प—सज्ञा पु० [सं०] १. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम । दस्तकारी । कारीगरी । हुनर । जैसे, बरतन बनाना । कपडे सीना । गहने गढना आदि । २. कला सबधी व्यवसाय, जैसे—अब इस नगर मे के कई शिल्प नष्ट हो गए हैं । ३ दक्षता । पाटव । कौशल । चातुर्य (को०) । ४. निर्माण । सर्जन । सृष्टि । रचना (को०) । ५ आकार । आवृत्ति । रूप (को०) । ६ अनुष्ठान । क्रिया । धार्मिक कृत्य (को०) । ७ यज्ञादि मे प्रयुक्त स्रुवा (को०) ।

शिल्पक—सज्ञा पु० [स०] अष्टादश उपरूपको मे एक उपरूपक जिसमे चारो वृत्तियाँ, चार अक, शात और हास्य के अलावा कोई भी रस, ब्राह्मण नायक, उपनायक हीन पुरुष और इद्रजाल, श्मसानादि का वर्णन होता है । इसके २७ अग कहे गए हैं ।

शिल्पकर—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिल्पकार' ।

शिल्पकर्म—सज्ञा पुं० [स०] दस्तकारी । शिल्पकला । हस्तकला (को०) ।

शिल्पकला—सज्ञा स्त्री० [स०] हाथ से चीज बनाने की कला । कारीगरी । दस्तकारी । उ०—तो सो लहि आदर्श बढत कर शिल्पकला सब ।—श्रीधर (शब्द०) ।

शिल्पकार—सज्ञा पुं० [सं०] १. वह जो हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनाकर तैयार करता हो । शिल्पी । कारीगर । दस्तकार । उ०—नए नए साजो बाजो को शिल्पकार करते हैं सृष्टि ।—साकेत, पृ० ३७४ । २ राज । मेमार ।

शिल्पकारक—सज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शिल्पकारिका] हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनानेवाला कारीगर । शिल्पकार ।

शिल्पकारी—सज्ञा पुं० [सं० शिल्पकारिन्] वह जो शिल्प का कार्य करता हो । कारीगर ।

शिल्पकौशल—सज्ञा पुं० [सं०] शिल्पकार्य मे पटुता या दक्षता ।

शिल्पगृह—सज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर चीजें बनाते हो । कारखाना ।

शिल्पगेह सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिल्पगृह' ।

शिल्पजीवी—सज्ञा पुं० [स० शिल्पजीविन्] वह जो शिल्प के द्वारा जीविका निर्वाह करता हो । कारीगर । दस्तकार ।

शिल्पज्ञ—वि० पुं० [स०] शिल्प जाननेवाला । कारीगरी को जाननेवाला ।

शिल्पता—सज्ञा स्त्री० [स०] शिल्प का भाव या धर्म । शिल्पत्व ।

शिल्पत्व—सज्ञा पु० [स०] शिल्प का भाव या धर्म । शिल्पता ।

शिल्पप्रजापति—सज्ञा पुं० [स०] विश्वकर्मा का एक नाम ।

विशेष—विश्वकर्मा ही समस्त शिल्पो के आविष्कर्ता और शिल्पियो के मूलपुरुष माने जाते हैं ।

शिल्पलिपी—सज्ञा स्त्री० [स०] पत्थर या ताँबे आदि पर अक्षर खोदने की विद्या ।

शिल्पविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हाथ से अच्छी अच्छी चीजें बनाने की विद्या । २. गृहनिर्माण कला । मकान आदि बनाने की विद्या । ३. यात्रिक विज्ञान (को०) ।

शिल्पविधान—सज्ञा पुं० [स० शिल्प + विधान] साहित्य मे रचना या निर्माण का ढग । रीति या पद्धति । उ०—अतएव कामायनी अपना स्वतंत्र आदर्श और स्वतत्र शिल्पविधान रखती है । —बी० श० महा०,—पृ० ३४८ ।

शिल्पशाला—सज्ञा स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ बहुत से शिल्पी मिलकर तरह तरह की चीजें बनाते हो । कारखाना । शिल्पगृह ।

शिल्पशास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] १. वह शास्त्र जिसमे हाथ से चीजें बनाने का निरूपण हो । शिल्पविद्या । २ वास्तु शास्त्र । वास्तु शास्त्र ।

शिल्पसमाह्वय—सज्ञा पुं० [स०] कारीगरी का मुकाबला ।

शिल्पस्थान—सज्ञा पुं० [स०] वह जो शिल्पकला मे निपुण हो । शिल्पज्ञ व्यक्ति (को०) ।

शिल्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] नाई की दुकान (को०) ।

शिल्पाजीवी—सज्ञा पु० [स० शिल्पाजीविन्] दे० 'शिल्पजीवी' ।

शिल्पालय—सज्ञा पुं० [सं०] शिल्पगृह । कारखाना ।

शिल्पिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १. वह जो [illegible] कारीगर । दस्तकार । २ शिव [illegible] एक भेद । दे० 'शिल्पक' । ४. [illegible]

शिल्पिक[2]—वि० हाथ सबधी अथवा [illegible]

शिल्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] [illegible] काम

[illegible] मे [illegible] है । [illegible]

शिल्पिता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पी होने का भाव। उ०—रूपत्व, अकृत्रिम कला शिल्पिता के ध्वनिगूढ़ निदर्शन, रंगों की रुचि के स्वर करते दृष्टि सरणि को विस्मित।—अतिमा, पृ० १०३।

शिल्पिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पी का स्त्रीलिंग रूप। २ एक प्रकार की घास।

शिल्पिशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिल्पगृह। कारखाना।

शिल्पी[1]—संज्ञा पुं० [सं० शिल्पिन्] १ शिल्पकार। कारीगर। २ राज। थवई। ३ चितेरा। चित्रकार। ४ नख नामक गंधद्रव्य। ५ वह जो किसी भी कला में प्रवीण हो (को०)।

शिल्पी[2]—वि० १ ललितकला या यांत्रिक कला संबंधी (को०)।

शिल्ह—संज्ञा पुं० [सं० शिल्ह] दे० 'शिलारस'।

शिल्हक—संज्ञा पुं० [सं० शिल्हक] दे० 'शिलारस'।

शिवकर—संज्ञा पुं० [सं० शिवङ्कर] १ मंगल करनेवाले, शिव। २ तलवार। ३ शिव का एक गण। ४. रोग फैलानेवाले एक असुर का नाम। ५ एक प्रकार का बालग्रह।

शिवतिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवन्तिका] गुलदाउदी।

शिवंसा—संज्ञा पुं० [सं० शिव+अंश] धान्य का वह अंश जो शैव साधुओं के लिये अनाज काटने के समय पृथक् कर दिया जाता है।

शिव[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ मंगल। कल्याण। क्षेम। २ जल। पानी। ३ सेंधा नमक। ४ शृगाल। सियार। गीदड़। ५ चूँटा। ६ पारा। ७. गुग्गुल। ८ पुंडरीक वृक्ष। ९ मोक्ष। १०. काला धतूरा। ११ वेद। १२ देव। १३ कोलक ग्रह। शुभग्रह। १४ रुद्र। काल। १५ वसु। १६ एक प्रकार का मृग। १७. एक प्रकार की गुड़ की शराब। १८ प्लक्ष द्वीप तथा जंबू द्वीप के एक वर्ष का नाम। १९ लिंग। २०. एक प्रकार का नृत्य। २१ एक छंद का नाम। इसके प्रत्येक चरण में ५,६ के विश्राम से ११ मात्राएँ और अंत में सगण, रगण, नगण, में से कोई एक होता है। इसकी तीसरी, छठी और नवीं मात्राएँ लघु रहती हैं। २२ परमेश्वर। भगवान्। २३ विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों के अंतर्गत एक योग। २४ समुद्री लवण। २५ सुहागा। २६ आँवला। २७ कदंब। कदम। २८ फिटकरी। २९ सिंदूर। ३० मिर्च। ३१ तिल का फूल। ३२ चंदन। ३३ लोहा। ३४ बालू। ३५ नीलकंठ पक्षी। ३६ कौवा। ३७ मौलसरी का पेड़। ३८ हिंदुओं के प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करनेवाले और पौराणिक त्रिमूर्ति के अंतिम देवता कहे गए हैं।

विशेष—वैदिक काल में यही रुद्र के रूप में पूजे जाते थे। पर पौराणिक काल में ये शंकर, महादेव और शिव आदि नामों से प्रसिद्ध हुए। पुराणानुसार इनका रूप इस प्रकार है,—इनके सिर पर गंगा, माथे पर चंद्रमा तथा एक और तीसरा नेत्र, गले में साँप तथा नरमुंड की माला, सारे शरीर में भस्म, व्याघ्रचर्म ओढ़े हुए और बाएँ अंग में अपनी स्त्री पार्वती को लिए हुए। इनके पुत्र गणेश तथा कार्तिकेय, गण भूत और प्रेत, प्रधान अस्त्र त्रिशूल और वाहन बैल है जो नंदी कहलाता है। इनके धनुष का नाम पिनाक है जिसे धारण करने के कारण ये पिनाकी कहे जाते हैं। इनके पास पाशुपत नामक एक प्रसिद्ध अस्त्र था जो उन्होंने अर्जुन की उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर दे दिया था। पुराणों में इनके संबंध में बहुत सी कथाएँ हैं। ये कामदेव का दर्प चूर करनेवाले और दक्ष का यज्ञ नष्ट करनेवाले माने जाते हैं। कहते हैं, समुद्रमंथन के समय जो विष निकला था, वह इन्होंने पान किया था। वह विष इन्होंने अपने गले में ही रखा और नीचे पेट में नहीं उतारा, इसलिये इनका गला नीला हो गया और ये नीलकंठ कहलाने लगे। परशुराम ने अस्त्रविद्या की शिक्षा इन्हीं से पाई थी। संगीत और नृत्य के भी ये प्रधान आचार्य और परम तपस्वी तथा योगी माने जाते हैं। इनके नाम से एक पुराण भी है जो शिवपुराण कहलाता है। इनके उपासक 'शैव' कहलाते हैं। इनका निवासस्थान कैलास माना जाता है और लोक में इनके लिंग का पूजन होता है।

पर्या०—शंभु। महादेव। ईश्वर। ईश। पशुपति। कर्परिता। ईशान। पंचानन। त्रिपुरारि। अर्धनारीश। भर्ग। विश्वनाथ। गिरीश। मृत्युंजय। त्रिलोचन। हर। भैरव। उमापति। भूतनाथ। काशीनाथ। नंदीश्वर। रुद्र। महाकाल। वामदेव। जटाधर। पशुपति। पुरुष। कृत्तिवासा। पिनाकी। धूर्जटि। नीललोहित। उग्र। कपर्दी। श्रीकंठ। शितिकंठ। शूली।

शिव[2]—वि० १ कल्याण करनेवाला। मंगल करनेवाला। २ सुखी। प्रसन्न (को०)।

शिवक—संज्ञा पुं० [सं०] १ कांटा। कील। २ चूँटा। बड़ी मेख। ३ वह खंभा जिसमें पशु अपना शरीर रगड़ता है। ४. शिवमूर्ति (को०)।

शिवकर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] जैनों के चौबीस जिनों में से एक जिन का नाम।

शिवकर[2]—वि० मंगलकारी। कल्याणकारी (को०)।

शिवकर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शिवकांची—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवकाञ्ची] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध नगर।

विशेष—कृष्णा और पोलर नदी के बीच में स्थित कारोमंडल के एक भाग की राजधानी कांची थी। इसके दो हिस्से हैं। एक विष्णुकांची और दूसरा शिवकांची। शिवकांची उत्तर की ओर है। दक्षिण भारत के शैवों का यह एक प्रधान तीर्थ और सप्तपुरियों में से एक है।

शिवकांता—संज्ञा स्त्री० [सं० शिवकान्ता] शिव की पत्नी, दुर्गा।

शिवकारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा का एक नाम।

शिवकारी—वि० [सं० शिवकारिन्] मंगल करनेवाला। कल्याण करनेवाला।

शिवकिंकर—संज्ञा पुं० [सं० शिवकिङ्कर] शिव का गण या दूत।

शिवकीर्त्तन—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शिव का कीर्तन करता हो।

शैव। २ विष्णु। ३ शिव के द्वारपाल। भृगरीट। भृंगी। ४ शिव की स्तुति (को०)।

शिवकेसर—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का गुल्म। बकुल।

शिवक्षेत्र—सज्ञा पुं० [स०] कैलास।

शिवगग—सज्ञा पुं० [स० शिव+गङ्गा] मैसूर राज्य के एक पर्वत का नाम।

शिवगगा—सज्ञा स्त्री० [स० शिवगङ्गा] वह नदी या जलाशय जो शिव जी के मदिर के समीप हो।

शिवगति[1]—सज्ञा पुं० [स०] जैनो के अनुसार एक अर्हत् का नाम।

शिवगति[2]—वि० सुखी। प्रसन्न। समृद्ध (को०)।

शिवगिरि—सज्ञा पु० [स०] कैलास पर्वत।

शिवगुरु—सज्ञा पु० [स०] शकराचार्य के पिता का नाम जो विद्याधिराज के पुत्र थे।

शिवघर्मज—सज्ञा पु० [स०] मगल ग्रह।

विशेष—मत्स्यपुराण के अनुसार दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने के लिये क्रुद्ध शिव के ललाट से गिरे हुए पसीने की बूँद से मंगल ग्रह की उत्पत्ति हुई है।

शिवचतुर्दशी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शिवरात्रि'।

शिवजा—सज्ञा स्त्री० [स०] शिवलिंगी लता। पचगुरिया।

शिवज्ञ—वि० [स०] १. जो शिव का भक्त हो। शैव। २. शुभ को जाननेवाला (को०)।

शिवज्ञा—सज्ञा स्त्री० [स०] शिवभक्त महिला।

शिवज्ञान—सज्ञा पु० [स०] शुभाशुभ-काल-बोधक शास्त्र (को०)।

शिवता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शिव का भाव या धर्म। उ०—शिव शिवता इनही सो लही।—सूर (शब्द०)। २ मनुष्य के शिव मे लीन होने की अवस्था। मोक्ष।

शिवताति[1]—सज्ञा स्त्री० शुभता। शुभत्व (को०)।

शिवताति[2]—सज्ञा पु० [स०] सगीत मे एक ताल का नाम जिसे रुद्रताल भी कहते है (को०)।

शिवतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] काशी नामक स्थान जो शिव का प्रधान तीर्थ माना जाता है।

शिवतेज—सज्ञा पु० [स० शिवतेजस्] पारा। पारद।

शिवदत्त—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का चक्र। सुदर्शन चक्र।

शिवदारु—सज्ञा पु० [स०] देवदार वृक्ष।

शिवदिक्, शिवदिशा—सज्ञा स्त्री० [स०] ईशान कोण जिसके स्वामी शिव माने गए हैं।

शिवदूतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शिवदूती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २ आठ योगिनियो मे से अतिम योगिनी का नाम।

शिवदैव—सज्ञा पु० [स०] आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता शिव माने जाते हैं।

शिवद्रुम—सज्ञा पु० [स०] बिल्व वृक्ष। बेल का पेड।

शिवद्विष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] केतकी। केवडा।

विशेष—केतकी का फूल शिवजी पर चढाने का निषेध है, इसी से इसका यह नाम पडा है।

शिवधातु—सज्ञा पु० [स०] १ पारद। पारा। २ गोदती नामक मणि।

शिवनदन—सज्ञा पु० [स० शिवनन्दन] शिव जी के पुत्र गणेश जी। उ०—विघ्नहरण गणनाथ शिवनदन कदन कुमति। तुव पद नाऊँ माथ, करहु पूर सतन मुपश।—रघुराज (शब्द०)।

शिवनाथ—सज्ञा पु० [स०] शिव। महादेव।

शिवनाभि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का शिवलिंग जो और सब शिवलिंगो मे श्रेष्ठ माना जाता है।

शिवनारायणी—सज्ञा पु० [स०] हिंदुओं का एक सप्रदाय।

शिवनिर्माल्य—सज्ञा पु० [स०] १. वह पदार्थ जो शिव जी को अर्पित किया गया हो। शिव पर चढा हुआ नैवेद्य आदि।

विशेष—पुराणो मे ऐसी चीजो के ग्रहण करने का निषेध है।

२. वह चीज जो किसी प्रकार ग्रहण न की जा सकती हो। परम त्याज्य वस्तु। जैसे,—हमारे लिये तुम्हारी यह सपत्ति शिवनिर्माल्य है।

शिवनृत्य—सज्ञा पु० [स०] गतिभेद के अनुसार एक प्रकार का नृत्य।

शिवपत्र—सज्ञा पु० [स०] लाल कमल।

शिवपुत्र—सज्ञा पु० [स०] १ पारा। पारद। २. शिव के पुत्र, कार्तिकेय और गणेश।

शिवपुर—सज्ञा पु० [स०] १ जैनियो का स्वर्ग जहाँ वे जैनसिद्धानुसार मुक्ति का सुख भोगते हैं। मोक्षशिला। २ शिवपुरी। काशी (को०)।

शिवपुराण—सज्ञा पुं० [स०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण जो शैवपुराण भी कहा जाता है।

विशेष—यह पुराण शिवप्रोक्त माना जाता है और इसमे शिव का माहात्म्य वर्णित है। अन्य पुराणो के अनुसार इसमे बारह संहिताएँ और २४,००० श्लोक है। पर आजकल जो शिवपुराण मिलता है उसमे केवल चार सहिताएँ और ७,००० श्लोक पाए जाते हैं। इसीलिये कुछ लोगो का मत है कि शिवपुराण और वायुपुराण दोनो एक ही है। विष्णु, पद्म, मार्कंडेय, कूर्म, वराह, लिंग, ब्रह्मवैवर्त, भागवत और स्कदपुराण मे तो शिवपुराण का नाम है पर मत्स्य, नारद और देवीभागवत मे शिवपुराण के स्थान पर वायुपुराण का नाम मिलता है। कहते हैं, शैवधर्म का प्रकाश करने के लिये शिव जी ने यह पुराण रचा था। इसमे निम्नलिखित बारह सहिताएँ हैं—विद्येश्वर, रौद्र,

विनायक, भौम, मातृका, रुद्रैकादश, कैलास, शतरुद्र, कोटिरुद्र, महालक्षकोटिरुद्र, वायवीय और धर्मसहिता। इसके रचयिता भगवान् वेदव्यास जी कहे जाते हैं। पर आजकल जो शिवपुराण मिलता है उसमे केवल ज्ञान, विद्येश्वर, कैलास, वायवीय, और धर्म आदि सहिता ही पाई जाती हैं। किसी किसी शिवपुराण मे सनत्कुमारसहिता और गया माहात्म्य भी मिलता है।

शिवपुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] शिव जी की पुरी, वाराणसी। काशी।

शिवपुष्पक—सज्ञा पु० [स०] आक का वृक्ष। मदार।

शिवप्रिय'—सज्ञा पु० [स०] १ रुद्राक्ष। २. अगस्त। वकवृक्ष। ३ धतूरा। ४ भाँग। ५ स्फटिक। बिल्लौर।

शिवप्रिय'—वि० जो शिव को प्रिय हो।

शिवप्रिया सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा।

शिवप्रीति—सज्ञा स्त्री० [स०] बेल का वृक्ष। बिल्व।

शिवबीज—सज्ञा पु० [स०] पारा जो शिव जी का वीर्य माना जाता है।

शिवब्राह्मी—सज्ञा स्त्री० [स०] सखाहुली। शखपुष्पी।

शिवभक्त—सज्ञा पुं० [स०] वह जो शिव का उपासक हो। शैव।

शिवभक्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] शिवोपासना। शिवार्चन या पूजन आदि के प्रति भक्तिभावना।

शिवभारत—सज्ञा पुं० [स०] शिवा जी छत्रपति (१६३०–१६८०) पर कवि परमानंद लिखित एक ऐतिहासिक काव्य।

शिवमल्लक—सज्ञा पु० [स०] अर्जुन वृक्ष।

शिवमल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] वसु या वसुक नामक पुष्पवृक्ष। २ मदार। आक। ३ अगस्त वृक्ष। ४. शिवलिंगी। ५ श्रीवल्ली नामक कँटीला पेड।

शिवमल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पाशुपति। मौलसिरी। २. मदार। आक। ३ वक नाम क वृक्ष। ४ लिंगिनी नाम की लता।

शिवमात्र—सज्ञा पुं० [स०] बौद्धो के अनुसार एक बहुत बडी सख्या का नाम।

शिवमार्ग—सज्ञा पुं० [स०] कल्याण मार्ग। मोक्ष। मुक्ति [को०]।

शिवमौलिसुता—सज्ञा स्त्री० [स०] गगा का एक नाम। उ०—वह विष्णुपदी शिवमौलिसुता वह भीष्मप्रसू और जह्नुसुता। —ग्राम्या, पृ० ४२।

शिवरस—सज्ञा पु० [स०] उबले हुए चावल का पानी जो तीन दिन का हो [को०]

शिवराई—सज्ञा पुं० [स० शिव + हिं० राई] महादेव। शिव। उ०—राजयोग कीना शिवराई। गौरा सग अनग न जाई। सुंदर ग्रं०, भा० १, पृ० १०३।

शिवराजी—सज्ञा पु० [हिं० शिव + राज] एक प्रकार का बहुत बड़ा कबूतर।

शिवरात्र—सज्ञा स्त्री० [स० शिव + रात्रि] दे० 'शिवरात्रि'।

शिवरात्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] फाल्गुन वदी चतुर्दशी। शिवचतुर्दशी।

विशेष—इस दिन लोग शिव जी का पूजन करते और उनके उद्देश्य से व्रत रखते हैं।

शिवरानी—सज्ञा स्त्री० [स० शिव + हिं० रानी] शिव जी की पत्नी, पार्वती। उ०—शिवरानी यो रति समुझाई। तब तनु धरि शबर घर आई।—लल्लू (शब्द०)।

शिवलिंग—सज्ञा पु० [स० शिवलिङ्ग] महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है।

शिवलिंगी'—सज्ञा स्त्री० [स० लिङ्गिनी] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता जो चौमासे मे जगलो और झाडियो मे बहुत अधिकता से मिलती है। पचगुरिया। बिजगुरिया।

विशेष—इसकी डडियाँ बहुत पतली और पत्ते करेले के पत्तो के समान ३ से ५ इच के घेरे मे गोलाकार, गहरे, कटे किनारे-वाले और ५ ७ भागो मे विभक्त रहते हैं। पत्रदड की जड़ मे ५-६ फूलो के छोटे छोटे गुच्छे लगते हैं। ये फूल पीले होते हैं। इसका व्यवहार ओषधि के रूप मे होता है। वैद्यक के अनुसार यह चरपरी, गरम, दुर्गंधयुक्त, पौष्टिक, शोधक, गर्भ-धारण करनेवाली और कुष्ट आदि का नाश करनेवाली होती है। इसके फलने पर इसका सर्वांग ओषधि के निमित्त सग्रह किया जाता है।

पर्या०—लिंगिनी। ईश्वरलिंगी। चित्रफला। बहुपत्रा। शिव वल्लिका।

शिवलिंगी—वि० [स०] शैव। शिवलिंग की पूजार्चा करनेवाला।

शिवलोक—सज्ञा पुं० [स०] शिव जी का लोक, कैलास। उ०—सोने मदिर सँवराई और चदन सब लीप। दिया जो मन शिवलोक महँ उपना सिंहलद्वीप।—जायसी (शब्द०)।

शिववल्लभ—सज्ञा पु० [स०] आम्र वृक्ष [को०]।

शिववल्लभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. दुर्गा। २ सेवती। शतपत्री। ३ श्वेत गुलाब (को०)।

शिववल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शिवलिंगी'।

शिववल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शिवलिंगी'।

शिववाहन—सज्ञा पुं० [स०] शिव का वाहन, बैल। नदी।

शिववीर्य—सज्ञा पु० [स०] पारा जो शिव जी का वीर्य माना जाता है।

शिववृषभ—सज्ञा पुं० [स०] शिव जी की सवारी का बैल। उ०—बिराजेगो जो तू अमहरन ताकी शिखर पै। दिपेगो ज्यो गोरे शिववृषभ खोदी कलिल है।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

शिवशंकरी—सज्ञा स्त्री० [स० शिवशङ्करा] देवी की एक मूर्ति का नाम।

शिवशेखर—सज्ञा पु० [स०] १ वक वृक्ष। अगस्त वृक्ष। २. चद्रमा (को०)। ३. धतूरा। ४. शिव का मस्तक। ५ सफेद मदार।

शिवशैल—सज्ञा पु० [स०] कैलास पर्वत।

शिवसंप्रदाय—संज्ञा पु० [सं० शिव + सम्प्रदाय] दे० 'शैव'। उ०—केवल दो सप्रदाय इस ससार मे हैं। एक विष्णुसप्रदाय तथा दूसरा शिवसप्रदाय।—कबीर म०, पृ० ५९।

शिवसायुज्य—संज्ञा पु० [स०] १ शैवो के अनुसार वह मोक्ष जिसमे मनुष्य शिव मे लीन हो जाता है। २. मृत्यु। मौत।

शिवसुंदरी—संज्ञा स्त्री० [स० शिवसुन्दरी] दुर्गा।

शिवाक—संज्ञा पु० [स० शिवाङ्क] अगस्त का वृक्ष। वकवृक्ष।

शिवा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा। २ पार्वती। गिरिजा। उ०—जेहि रस शिव सनकादि मगन भए शभु रहत दिन साधा। सो रस दिए सूर प्रभु तोको शिवा न लहति अराधा।—सूर (शब्द०)। ३ मुक्ति। मोक्ष। ४ शृगाली। सियारिन। उ०—शिवा यज्ञशाला मे बोली। ढहे भवन धरणी जब डोली।—सबल (शब्द०)। ५. हड। हर्रे। हरीतकी। ६ सोआ नामक साग। ७ शमी। सफेद कीकर। ८ आँवला। ९. हलदी। १० दूब। ११. गोरोचन। १२. श्यामा नाम की लता। १३ एक बुद्धशक्ति का नाम। १४ घी। घव। १५. अनत-मूल। १६. सौभाग्यवती स्त्री। भाग्यशालिनी स्त्री (को०)। १६. पीत वर्ण का एक भेद। एक प्रकार का पीला रग (को०)।

शिवाकु—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शिवाक्ष—संज्ञा पु० [स०] रुद्राक्ष।

शिवाख्या—संज्ञा स्त्री० [स०] बल्ली दूब।

शिवाघृत—संज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे एक प्रकार का तैयार किया हुआ घृत।

विशेष—इसको प्रस्तुत करने के लिये गीदड का मास, बकरी का दूध, मुलेठी, मजीठ, कुडा, लाल चंदन, पदम काठ, हर्रे, बहेडा, आँवला, विडग, देवदार, दतीमूल, श्यामा लता, काकोली, हलदी, दारु हलदी, अनतमूल, इलायची, आदि पदार्थों को घी मे डालकर घृतपाक विधि से पकाते हैं। यह घृत पागलपन के लिये बहुत उपकारी माना जाता है। इसके अतरिक्त वात, अपस्मार, मेह आदि मे भी इसका व्यवहार होता है।

शिवाची—संज्ञा स्त्री० [स०] वशपत्री।

शिवाजी—संज्ञा पुं० [हिं०] महाराष्ट्र राज्य के सस्थापक तथा भारत को विदेशी दासता से मुक्त करने के लिये आजीवन मुगल साम्राज्य से लडनेवाले एक महान् योद्धा। 'छत्रपति' इनकी उपाधि थी। इनके पिता का नाम शाहजी भोसला और माता का नाम जीजा बाई था। इनका जन्म सन् १६२७ मे और मृत्यु सन् १६८० ई० मे हुई थी।

शिवाटिका—संज्ञा स्त्री० [स०] १ वशपत्री नामक तृण। २ सफेद पुनर्नवा। ३. लालपुनर्नवा। गदहपूरना। ४ हिंगुपत्री। ५. कठूमर।

शिवात्मक—संज्ञा पु० [स०] सेंवा नमक।

शिवादेशक—संज्ञा पु० [स०] १. वह जो शुभ समाचार लाए। २. भविष्यवक्ता (को०)।

शिवाधूत—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शतद्रु'।

शिवानी—संज्ञा स्त्री० [स०] १. दुर्गा। २. जयती वृक्ष।

शिवापर—वि० [स०] निर्दय। निष्ठुर (को०)।

शिवापीड़—संज्ञा पु० [स० शिवापीड] अगस्त या वक नामक वृक्ष।

शिवाप्रिय—संज्ञा पु० [स०] १. शिवा के पति, शिव। २ बकरा जिसके बलिदान से दुर्गा का प्रसन्न होना माना जाता है।

शिवाफला—संज्ञा स्त्री० [स०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

शिवाबलि—संज्ञा पु० [स०] तांत्रिकों के अनुसार वह नैवेद्य जो रात के समय देवी के सामने रखा जाता है और जिसमे मास की प्रधानता होती है।

शिवायतन—संज्ञा पु० [स०] दे० 'शिवालय'।

शिवारांति—संज्ञा पुं० [स०] १. कुत्ता जो गीदड (शिवा) का शत्रु होता है। २ शिव का विरोधी या शत्रु, कामदेव (को०)। ३. शिवद्रोही।

शिवारुत—संज्ञा पु० [स०] गीदड के बोलने का शब्द, जिसे यात्रा आदि के समय शुभाशुभ शकुन का विचार किया जाता है।

शिवालय—संज्ञा पु० [स०] १. वह मदिर जिसमे शिव जी की मूर्ति या लिंग स्थापित हो। शिव जी का मदिर। २ कोई देवमदिर। (क०)। ३. लाल तुलसी। ४. शमशान। मसान। मरघट।

शिवाला—संज्ञा पु० [स० शिवालय] १. शिव जी का मदिर। शिवालय। २. देवमदिर (क्व०)। ३. कोयला जलाने की भट्ठी। (बाजारू)।

शिवालु—संज्ञा पुं० [स०] शृगाल। सियार। गीदड।

शिवा विद्या—संज्ञा स्त्री० [स०] शृगाल की बोली से शकुन विचारने की विद्या (को०)।

शिवास्मृति—संज्ञा स्त्री० [स०] जयती वृक्ष।

शिवाह्लाद—पु० [स०] अगस्त या वक नामक वृक्ष।

शिवाह्वय—संज्ञा पु० [स०] १ पारद। पारा। २. बरगद। वट वृक्ष। ३ मदार। आक।

शिवाह्वा—संज्ञा स्त्री० [स०] रुद्रजटा। शकरजटा।

शिवि—संज्ञा पु० [स०] १ हिंसक पशु। शिकारी जानवर। २ भोजपत्र। ३, राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा का नाम जो अपनी दयालुता और दानशीलता के लिये प्रसिद्ध हैं। उ०—अब बरनौं शिवि भूप की कथा परम रमणीय। शरणागत पालन कियो दै निज तनु कमनीय।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, एक बार देवताओं ने इनकी परीक्षा लेने का विचार किया। अग्नि ने कबूतर का रूप धारण किया और इंद्र ने बाज पक्षी का। कबूतर उडता उड़ता राजा शिवि की गोद मे जा छिपा और कहने लगा कि यह बाज मेरा प्राण लेना चाहता है। आप इससे मेरी रक्षा करें। इतने मे बाज भी वहाँ आ पहुँचा और कहने लगा कि यह कबूतर मेरा भक्ष्य है। आप यह मुझे दे दीजिए। शिवि ने और कुछ भोजन देकर

बाज को सतुष्ट करना चाहा, पर बाज किसी प्रकार नही मानता था। अत मे राजा ने अपनी जाघ से मास काटकर और कबूतर के बराबर तौलकर बाज को देना चाहा। पर ज्यो ज्यो राजा अपने शरीर से माँस काटकर तराजू पर रखते जाते थे, त्यो त्यो, कबूतर भारी होता जाता था। अत मे राजा विवश होकर स्वय तराजू के पलडे पर बैठ गए। इसपर बाज ने सतुष्ट होकर कबूतर को भी छोड दिया और राजा का मास भी नही लिया। तब से ये बहुत दानी और धर्मात्मा प्रसिद्ध हैं।

४ पुराकाल मे आर्यों का एक प्रधान वर्ग या समूह। उ०—प्रधान आर्य समूहो मे थे—शिवि, मत्स्य, वैतहव्य और विदर्भ आदि।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७७।

शिविका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पालकी या डोली नाम की सवारी। उ०—देखि पुष्ट पकरयो तिनकाही। ल्याय लगायो शिविका माही।—रघुराज (शब्द०)। २. शव को श्मसान ले जाने की अरथी (को०)। ३ कुबेर का अस्त्र (को०)। ४. चबूतरा (को०)।

शिविकागर्भ—सज्ञा पु० [स०] गृह का वह भाग जहा पालकियाँ आदि वाहन ठहरें। ड्योढी का छायादार बरामदा।—हिंदु०, सभ्यता, पृ० २८८।

शिविपिष्ट—सज्ञा पु० [स०] महादेव।

शिविर—सज्ञा पु० [स०], १. डेरा। खेमा। निवेश। २ फौज के ठहरने की जगह। पडाव। छावनी। ३ किला। कोट। उ०—राम शिविर अँगरेज नृप तहँ आए जिहि वार। तब हौंहू हाजिर रख्यो आदर सहित उदार।—मतिराम (शब्द०)। ४ चरक के अनुसार एक प्रकार का तृण धान्य।

शिविरगिरि—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम।

शिवीरथ—सज्ञा पु० [स०] पालकी। शिविका।

शिवेतर—वि० [स०] अमगल। अशुभ। दुर्भाग्य (को०)।

शिवेश—सज्ञा पु० [स०] शृगाल। गीदड़। सियार।

शिवेष्ट—सज्ञा पु० [स०] १. अगस्त का वृक्ष। बक वृक्ष। २. बेल। श्रीफल।

शिवेष्टा—सज्ञा स्त्री० [स०] दूब। दूर्वा।

शिवोद्भव—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

शिवोपनिषद्—सज्ञा स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

शिशन[1]—सज्ञा पु० [अं० सेशन] दे० 'सेशन'।

शिशन[2]—सज्ञा पुं० [स० शिश्न] दे० 'शिश्न'।

शिशिर[1]—सज्ञा पु० [सं०] १ एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास मे होती है। उ०—गोपी गाइ ग्वाल गोसुत वै मलिन वदन कृस गात। परम दीन जनु शिशिर हिमी हत अबुज गत विन पात।—सूर (शब्द०)। २. जाड़ा। शीतकाल। ३. हिम। ४ विष्णु। ५ एक प्रकार का अस्त्र। ६. सूर्य का एक नाम। ७ लाल चदन। ८. प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष (को०)।

शिशिर[2]—वि० शीतल। ठडा।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्दो के बनाने मे उनके आरभ मे होता है। जैसे—शिशिरकर।

२ शिशर सबधी। शिशिर का (को०)। ३ जो ठंढक पहुँचावे। गर्मी हटाने या दूर करनेवाला (को०)।

शिशिरकर—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा, जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

शिशिरकिरण—सज्ञा पु० [स०] चंद्रमा (को०)।

शिशिरकाल—सज्ञा पु० [स०] जाडा या शिशिर ऋतु (को०)।

शिशिरगु—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

शिशिरघ्न—सज्ञा पु० [स०] अग्नि। आग (को०)।

शिशिरता—सज्ञा स्त्री० [स०] शिशिर का भाव या धर्म।

शिशिरदीधिति—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा (को०)।

शिशिरधौत—वि० [स० शिशिर+धौत] शिशिर से धुला हुआ। ओस से आर्द्र। उ०—सजल शिशिरधौत पुष्प ज्यो प्रात मे देखता है एकटक किरण कुमारी को।—अपरा०, पृ० १४४।

शिशिरपीड़ित—वि० [स० शिशिर+पीडित] ठढ मे त्रस्त। जाड़े से आक्रात। उ०—चिर शून्य शिशिर पीडित जग मे निज अमर स्वरो से भरो प्राण।—युगात, पृ० १०।

शिशिरमथित—वि० [स०] दे० 'शिशिरपीडित'।

शिशिरमयूख—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शिशिरयामिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शिशिर+यामिनी] जाडे की रात। उ०—विरह परी सी खडी कामिनी, व्यर्थ वह गई शिशिरयामिनी।—गीतिका, पृ० १०।

शिशिरर्तु, शिशिरसमय—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शिशिरकाल'।

शिशिरसमीर—सज्ञा पु० [स० शशिर+समीर] शिशिर या जाडे की हवा। उ०—वह चली अब अलि शिशिरसमीर।—गीतिका, पृ० १०।

शिशिरात—सज्ञा पु० [स० शिशिरान्त] शिशिर ऋतु के अंत मे होनेवाली ऋतु, वसत। उ०—शिशिरात की लक्ष्मी का दिया हुआ कलियो का गुच्छा पलास मे शोभायमान हुआ।—लक्ष्मण सिह (शब्द०)।

शिशिराशु—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शिशिराक्ष—सज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम जो सुमेरु के पश्चिम ओर बतलाया गया है।

शिशिरात्यय—सज्ञा पुं० [स०] शिशिरात। वसंत (को०)।

शिशिरित—वि० [स०] शीतल किया हुआ।

शिशु—सज्ञा पु० [स०] १ छोटा बच्चा, विशेषत: आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा। छोटा लड़का। उ०—माथे मुकुट सुभग पीतावर उर साभित भृगु रेखा हो। शख चक्र भुज चारि विराजत अति प्रताप शिशु भेषा हो।—सूर (शब्द०)। २. पशुओ

आदि का बच्चा। जैसे, हरिणशिशु। ३ कार्तिकेय का एक नाम। ४. बालक जो ८ से १६ वर्ष तक का हो (को०)। ५. शिष्य। छात्र (को०)। ६. करभ जो ६ साल का हो (को०)।

शिशुक—सज्ञा पु० [स०] १ शिशुमार या सूँस नामक जलजतु। २ शिशु। बच्चा। बालक। ३ एक प्रकार का वृक्ष। ४ सूँस के आकार का एक मत्स्य (को०)। ५. पशुशावक (को०)। ६ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप।

शिशुकृच्छ्र—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का चाद्रायण व्रत जिसे 'शिशु चाद्रायण' या 'स्वल्प चाद्रायण' भी कहते है।

शिशुक्रंद, शिशुक्रंदन—सज्ञा पुं० [स० शिशुक्रन्द, शिशुक्रन्दन] बच्चे का रोना। शिशु का रुदन।

शिशुक्रदीय—सज्ञा पुं० [स०] बालको के रोग और उनकी चिकित्सा सबंधी एक प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्र थ।

शिशुगधा—सज्ञा स्त्री० [स० शिशुगन्धा] मल्लिका। मोतिया।

शिशुचाद्रायण—सज्ञा पु० [स० शिशुचान्द्रायण] एक प्रकार का चाद्रायण व्रत जिसे स्वल्प चाद्रायण या कृच्छ्र चाद्रायण भी कहते हैं। इस व्रत मे प्रात काल चार ग्रास और सायकाल चार ग्रास भोजन करके निर्वाह किया जाता है।

शिशुता—सज्ञा स्त्री० [स०] शिशु का भाव या धर्म। बचपन। शिशुत्व।

शिशुताई—सज्ञा पुं० [स० शिशुता+हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'शिशुता'। उ०—यशुपति भाग सुहागिनी हरि को सुत जानै। मुख मुख जोरि बतावई शिशुताई ठानै।—सूर (शब्द०)।

शिशुत्व—सज्ञा पु० [स०] शिशु का भाव या धर्म। शिशुता। शैशव।

शिशुनाग—सज्ञा पुं० [स०] १. एक राक्षस का नाम। २ भागवत के अनुसार एक राजा का नाम। ३. दे० 'शैशुनाग'। ४ करभ। हाथी का बच्चा (को०)। ५ संपोला। साँप का बच्चा (को०)।

शिशुनामा—सज्ञा पु० [स० शिशुनामन्] ऊँट।

शिशुपन—सज्ञा पुं० [स० शिशु+हिं० पन] दे० 'शिशुता'।

शिशुपाल—सज्ञा पु० [स०] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। उ०—देश देश के नृपति जुरे सब भीष्म नृपति के धाम। रुक्म कह्यो शिशुपालहि दैहौं नहीं कृष्ण सो काम।—सूर (शब्द०)

विशेष—महाभारत मे लिखा है कि दमघोष के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ था जिसके तीन आँखें और चार हाथ थे और जो जनमते ही गधे की तरह रेंकने लगा था। इससे डरकर माता-पिता ने इसका त्याग करना चाहा था, पर इतने मे आकाश-वाणी हुई कि यह शिशु बहुत ही बलवान् और वीर होगा, तुम लोग इस शिशु का पालन करो। (इसीलिये इसका नाम शिशुपाल रखा गया था)। इसका नाश करनेवाला भी पृथ्वी पर उत्पन्न हो चुका है। आकाशवाणी सुनकर शिशुपाल की माता ने आकाश की ओर देखकर पूछा कि इसका नाश कौन करेगा? फिर आकाशवाणी हुई कि जिस आदमी की गोद मे जाते ही इसकी तीसरी आँख और अतिरिक्त दोनो बाँहें जाती रहेंगी, वही इसका प्राण लेगा। दमघोष ने बहुत से राजाओ आदि को बुलाकर उनकी गोद मे अपना पुत्र दिया, पर उसकी तीसरी आँख और दोनो अतिरिक्त भुजाएँ ज्यो की त्यो बनी रही। अत मे जब श्रीकृष्ण ने उसे गोद मे लिया, तब उसके दो हाथ भी गिर गए और तीसरा नेत्र भी अदृश्य हो गया। इसपर शिशुपाल की माता ने श्रीकृष्ण से कहा कि तुम इसके सब अपराध क्षमा करना। श्रीकृष्ण ने प्रतिज्ञा की कि मैं इसके सौ अपराध तक क्षमा करूँगा।

बडा होने पर शिशुपाल बहुत पराक्रमी हुआ और अकारण ही श्रीकृष्ण से बहुत अधिक द्वेष रखने लगा। जब युधिष्ठिर ने अपने राजसूय यज्ञ के समय लोगो से पूछा कि यज्ञ का अर्घ्य किसे दिया जाय, और भीष्म ने उत्तर दिया—'श्रीकृष्ण को', तब शिशुपाल बहुत बिगडा और सब राजाओ को सबोधन करके श्रीकृष्ण की निंदा करने और उन्हें कुवाच्य कहने लगा। श्रीकृष्ण उसके कुवाच्य गिनते जाते थे। जबतक उसने सौ गालियाँ दी, तबतक तो श्रीकृष्ण बिलकुल चुप थे, क्योकि वे उसकी माता के सामने उसके सौ अपराध क्षमा करने की प्रतिज्ञा कर चुके थे। पर जब वह इतने पर भी शात न हुआ और उसने एक और कुवाच्य कहा, तब श्रीकृष्ण ने तुरत उसका सिर काट डाला। विष्णुपुराण के अनुसार यह पूर्व जन्म मे हिरण्यकशिपु था, दूसरे जन्म मे यह रावण हुआ और तीसरे जन्म मे यह शिशुपाल था। सस्कृत के प्रसिद्ध महाकाव्य माघ कवि कृत शिशुपालवध मे भी उसके तीन जन्म की घटना सक्षेप मे उल्लिखित है।

शिशुपालक—सज्ञा पु० [स०] १. दमघोष का पुत्र शिशुपाल। २. केलि कदब। नीम।

शिशुपालनिपूदन—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण।

शिशुपालवध—सज्ञा पु० [स०] महाकवि माघ कृत एक प्राचीन सस्कृत महाकाव्य जिसमे श्रीकृष्ण द्वारा शिशुपाल के मारे जाने की कथा वर्णित है। उ०—आनद की साधनावस्था या प्रयत्नपक्ष को लेकर चलनेवाले काव्यो के उदाहरण हैं—रामायण, महाभारत, रघुवश और शिशुपालवध (महाकाव्य)।—रस०, पृ० ५८।

शिशुपालहा—सज्ञा पु० [स० शिशुपालहन्] शिशुपाल को मारनेवाले, श्रीकृष्ण।

शिशुप्रिय—सज्ञा पु० [स०] १. राव। शीरा। २ कुमुदिनी। कोइँ [को०]।

शिशुमार—सज्ञा पु० [स०] १. सूँस नामक जलजतु। २. मगर की आकृतिवाला, नक्षत्रमडल। ३. दे० 'शिशुमार चक्र'। उ०—(क) मेरो रूप चक्र शिशुमारा। जामे सकल बँध्यो ससारा।—रघुराज (शब्द०)। (ख) बहुत काल मे सुरति करि, जब डोल्यो शिशुमार। तब सब्या भै भानु किय, अस्ताचल सचार। रघुराज (शब्द०)। ४. कृष्ण। ५. विष्णु।

शिशुमार चक्र—सज्ञा पु० [स०] सब ग्रहो सहित सूर्य। सौर जगत्। उ०—अवध अनद निहारि मगन रुके भानु गति भूली। रुक्यो

चक्र शिशुमार वार तेहि राम जन्म सुख फूनी '—रघुराज (शब्द०)।

शिशुमारमुखी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शिशुमारशिर—संज्ञा पुं० [सं० शिशुमारशिरस्] ईशान कोण। पूर्वोत्तर दिक् (को०)।

शिशुल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिशूल' (को०)।

शिशुवाहक—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बकरा।

शिशुवाह्यक—संज्ञा पुं० [सं०] शिशुवाहक। जंगली बकरा।

शिशुशाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह गृह जहाँ धाई बच्चे की देखरेख करती हो।

शिशुहत्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिशु की हत्या या वध।

शिशूल—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिशु'।

शिश्नभर—वि० [सं० शिश्नम्भर] कामी। लंपट। छिनरा (को०)।

शिश्न—संज्ञा पुं० [सं०] पुरुष की उपस्थेंद्रिय। लिंग।

शिश्नदेव—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिश्न को ही देवता माने। लंपट वा कामी व्यक्ति (को०)।

शिश्नोदरपरायण—वि० [सं०] जो पेट और शिश्न की बुभुक्षा-शांति का ही सब कुछ मानता हो। कामी और पेटू (को०)।

शिश्नोदरवाद संज्ञा पुं० [सं० शिश्नोदर+वाद] पेट की भूख और कामोत्तेजनापरक विचारधारा। फ्रायड और मार्क्स की विचारधारा।

शिष[1]—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—(क) रामानुज के शिष हरि भयऊ। यह यश त्रिभुवन महँ भरि गयऊ। —रघुराज (शब्द०)। (ख) तुम गुरु सतगुरु ब्रह्म समाना। मैं शिष आँहु महा अज्ञाना।—कबीर सा०, पृ० १०१४।

शिष[2]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। शिक्षा। सिखावन। उ०—कहेउ सुभग शिष धर्म कुमारा। कीन्ह सबन मिलि अंगीकारा।—सबलसिंह (शब्द०)।

शिष[3]—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखण्ड या शिखा] बाल जो मुंडन के समय सिर पर छोड़े जाते हैं। उ०—कटि पट पीत पिछौरी बाँधे कागपच्छ शिष शीश। शर क्रीडा दिन देखत आवत नारद सुर तैतीस।—सूर (शब्द०)।

शिषर—संज्ञा पुं० [सं० शिखर] दे० 'शिखर'। उ०—काल गिरिक शिषर अइसन, द्रोणपर्व उक्त घटोत्कच अइसन।—वर्ण०, पृ० १८।

शिषरी[1]—संज्ञा पुं० [सं०] ओगा। अपामार्ग। चिचड़ा।

शिषरी[2]—वि० [सं० शिखर+ई (प्रत्य०)] शिखर से युक्त। शिखर-वाला। उ०—कोपि शिषरी गदा तव लव हन्यो ताके गात मैं। मोहि कपिपति गिरयो श्रीहत यथा कुमुदिन प्रात मैं।—श्याम-विहारी (शब्द०)।

शिषा—संज्ञा स्त्री० [सं० शिखा] दे० 'शिखा'। उ०—स्तुति वेद शिषा प्रभु केरी। एकादश मन लेहु निबेरी।—रघुराज (शब्द०)।

शिषि—संज्ञा पुं० [सं० शिष्य] दे० 'शिष्य'। उ०—(क) जहँ शिषि तहँ ते गुरु पर्यंता। प्रगटे पद्मिनि पत्र अनंता। —रघुराज (शब्द०)। (ख) अरु विचारि शिषि करौं न तोही। बाट न रोकु जान दे मोही।—विश्राम (शब्द०)।

शिषी—संज्ञा पुं० [सं० शिखिन्] दे० 'शिखी'। उ०—यह कौन आवत है सखी मलयज अंकित अंग। शिर केश लुंचित नग्न हाथ शिषी शिखंड सुरंग '—केशव (शब्द०)।

शिष्ट[1]—वि० पुं० [सं०] १ जो अच्छी तरह धर्म का आचरण करता हो। धर्मशील। २ शांत। धीर। ३ अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। सुशील। ४ बुद्धिमान्। शिक्षित। ५ सभ्य। सज्जन। भला आदमी। ६ भला। उत्तम। श्रेष्ठ। ७ आचार व्यवहार में निपुण। शालीन। ८ आज्ञाकारी। विनीत। विनम्र। ९ प्रसिद्ध। मशहूर। १०. छोड़ा हुआ। बचा हुआ। बाकी (को०)। ११ आदिष्ट। आज्ञप्त। समादिष्ट (को०)। १२ सधाया हुआ। पालतू। वश्य (को०)।

शिष्ट[2]—संज्ञा पुं० १. मंत्री। वजीर। २ सभ्य। सभासद। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति। चतुर मनुष्य (को०)।

शिष्टता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शिष्ट होने का भाव या धर्म। २ सभ्यता। सज्जनता। भद्रता। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता। ४ अधीनता।

शिष्टत्व—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शिष्टता'।

शिष्टप्रयुक्त वि० [सं०] सभ्य एवं शिष्ट जनों द्वारा व्यवहृत।

शिष्टयोग—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिष्टजनों द्वारा व्यवहार में लाया गया हो (को०)।

शिष्टमंडल—संज्ञा पुं० [सं० शिष्ट+मण्डल] राज्य या किसी संघटन द्वारा चुना हुआ अधिकारयुक्त प्रतिनिधिवर्ग जो किसी कार्य से कहीं भेजा जाय।

शिष्टविगर्हण—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो शिष्ट जनों द्वारा निंदित हो (को०)।

शिष्टविगर्हणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० शिष्टविगर्हण (को०)।

शिष्टसभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ राजसभा। राज्यपरिषद्। २ शिष्ट एवं सभ्य जनों की गोष्ठी।

शिष्टसंमत—वि० [सं० शिष्टसम्मत] शिष्ट जनों द्वारा अनुमोदित या स्वीकृत (को०)।

शिष्टसमाज—संज्ञा पुं० [सं०] वह समाज जिसमें पढ़े लिखे तथा सदाचारी व्यक्ति हों। भले आदमियों का समाज। सभ्य समाज।

शिष्टाचार—संज्ञा पुं० [सं०] १ सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण। भले आदमियों का सा बरताव। साधु व्यवहार। २. आदर। संमान। खातिरदारी। ३ विनय। नम्रता। ४ वह अच्छा बरताव जो केवल दिखलाने के लिये किया जाय। दिखावटी सभ्य व्यवहार। जैसे—शिष्टाचार की बात छोड़कर अपने आने का अभिप्राय कहो। ५ आवभगत। जैसे—शिष्टाचार के अनंतर उन्होंने वार्तालाप प्रारंभ किया।

शिष्टाचारी—वि० [स० शिष्टाचारिन्] शिष्टाचारयुक्त। सदाचारयुक्त। विनम्र। शालीन।

शिष्टादिष्ट—वि० [स०] शिष्ट जनो द्वारा कथित, समर्थित या मान्य।

शिष्टानुमोदित—वि० [स०] सभ्य एव शिष्ट जनो द्वारा समर्थित। शिष्टसमत।

शिष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आज्ञा। अनुशासन। हुकूमत। ३. दड। सजा। ४. सुधार। ५. सहायता। मदद।

शिष्टयर्थ—क्रि० वि० [स०] अनुशासन या सुधार के लिये [को०]।

शिष्ण—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शिश्न'।

शिष्य—सज्ञा पुं० [स०] १ समय। काल। २. दे० 'शिल्प' [को०]।

शिष्य'—सज्ञा पुं० [स०] [स्त्री० शिष्या] १. वह जो शिक्षा या उपदेश देने के योग्य हो। २. वह जो विद्या पढने के उद्देश्य से किसी गुरु या आचार्य आदि के पास रहता हो। विद्यार्थी। अतेवासी। चेला। उ०—तीर चलावत शिष्य सिखावत धर निशान देखरावत। कबहुँक सधे अश्व चढि आपुन नाना भाँति नचावत।—सूर (शब्द०)। ३. (शिक्षक या गुरु के सबध से) वह जिसने किसी से शिक्षा प्राप्त की हो। शागिर्द। ४ (गुरु के सबध से) वह जिसने किसी धार्मिक आचार्य से दीक्षा या मत्र आदि ग्रहण किया हो। मुरीद। चेला। ५ वह जो हाल मे श्रावक बना हो (जैन)। ६ क्रोध। दोष। आवेश (को०)। ७ हिंसा। बलात्कार (को०)।

शिष्य'—वि० शासनीय। शिक्षणीय।

शिष्यक—सज्ञा पुं० [स०] छात्र। विद्यार्थी [को०]।

शिष्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] शिष्य होने का भाव या धर्म। शिष्यत्व।

शिष्यत्व—सज्ञा पुं० [स०] शिष्य होने का भाव या धर्म। शिष्यता।

शिष्यपरपरा—सज्ञा स्त्री० [स०] शिष्यो की क्रमागत परंपरा या सरणि।

शिष्यशिक्षि—सज्ञा स्त्री० [स०] शिष्य का शासन करना। शिष्य या छात्र का सुधार [को०]।

शिष्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे सात गुरु अक्षर होते हैं। इसका दूसरा नाम 'शीर्षरूपक' भी है। २. छात्रा। विद्यार्थिनी।

शिस्त—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. मछली पकडने का काँटा। २ निशाना। लक्ष्य।

मुहा०—शिस्त बाँधना = ताक लगाना। निशाना बाँधना।

३. दूरबीन की तरह का एक प्रकार का यत्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है। ४ अँगूठा। ५. दे० 'अगुलित्राण' (को०)। दे० 'अगुश्ताना' (को०)।

शिस्तबाज—सज्ञा पुं० [फा० शिस्तबाज] १ निशाना लगानेवाला। निशानेबाज। २. शिस्त लगाकर मछली पकडनेवाला।

शिह्लु, शिह्लुक—सज्ञा पुं० [सं०] शिलारस नाम का गधद्रव्य।

शी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शाति। २ शयन। सोना। नीद। ३ भक्ति।

शीआ—सज्ञा पु० [अ० शीअह्] दे० 'शिया' [को०]।

शीकर—सज्ञा पुं० [सं०] १ गधा विरोजा। २ तुषार। ओस। शबनम। ३. हवा। वायु। ४ जलकण। पानी की बूँद। ५ शीत। जाडा। ६ वर्षा की छोटी छोटी बूँदें। फुहार। ७ सरल नाम का वृक्ष (को०)। ८ धूप। (जलाने का)।

यौ०—शीकरकण = वर्षा या जल की फुहार। शीकरवर्षी = फुहारें बरसानेवाला।

शीकरी—वि० [स० शीकरिन्] बूँदें या फुहार बरसानेवाला [को०]।

शीघ्र'—क्रि० वि० [स०] बिना विलब। बिना देर के। चटपट। तुरंत। जल्द।

शीघ्र'—सज्ञा पु० १. लामज्जक या लामज नामक तृण। २ भागवत के अनुसार कुरुवशीय अग्निवर्ण के पुत्र का नाम। ३. वायु। हवा। ४ वह अतर जो पृथ्वी के दो भिन्न भिन्न स्थानो से ग्रहो के देखने मे होता है। ५ चक्राग।

शीघ्र कर्म—सज्ञा पु० [स०] ग्रह सयोग की गणना [को०]।

शीघ्रकारी'—वि० [स० शीघ्रकारिन्] १ जल्दी से काम करनेवाला। शीघ्र कार्य करनेवाला। ३. तीव्र। कडा। (पीडा आदि के लिये)।

शीघ्रकारी'—सज्ञा पु० एक प्रकार का सनिपात ज्वर जिसमे मूर्छा, तंद्रा, प्यास, श्वास और पार्श्व मे पीडा होती है। यह असाध्य और मृत्यु का पूर्वरूप माना जाता है।

शीघ्रकृत्—वि० [स०] शीघ्र काम करनेवाला [को०]।

शीघ्रकेंद्र—सज्ञा पुं० [स० शीघ्रकेन्द्र] ग्रहसंयोग से दूरी [को०]।

शीघ्रकोपी—वि० [सं० शीघ्रकोपिन्] १ जल्दी गुस्सा होनेवाला व्यक्ति। २ चिडचिडा।

शीघ्रग'—वि० [स०] शीघ्र चलनेवाला। द्रुतगामी।

शीघ्रग'—सज्ञा पु० १ सूर्य। २. वायु। ३ खरगोश। ४ अग्निवर्ण के पुत्र का नाम।

शीघ्रगामी—वि० [स० शीघ्रगामिन्] शीघ्र चलनेवाला। जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रचेतन—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो किसी बात को बहुत शीघ्र समझे। जल्दी बात समझनेवाला। चतुर। २ कुत्ता। कुक्कुर।

शीघ्रचेतना—सज्ञा स्त्री० [स०] अतिबला नाम की ओषधि [को०]।

शीघ्रजन्मा—सज्ञा पुं० [स० शीघ्रजन्मन्] कट करज।

शीघ्रजीर्ण—सज्ञा पुं० [स०] चौलाई का साग।

शीघ्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] शीघ्र का भाव या धर्म। जल्दी। तेजी फुरती।

शीघ्रत्व—सज्ञा पु० [स०] शीघ्र का भाव या धर्म। जल्दी। तेजी। फुरती।

शीघ्रपतन—सज्ञा पु० [स०] स्त्रीसहवास के समय वीर्य का शीघ्र स्खलित हो जाना। स्तभनशक्ति का अभाव।

विशेष—वैद्यक मे इसकी गणना एक प्रकार के नपुसकत्व मे की जाती है।

शीघ्रपरिधि—सज्ञा स्त्री० [स०] ग्रह सयोग का अधिचक्र [को०]।

शीघ्रपाणि—सज्ञा पुं० [स०] वायु।

शीघ्रपुष्प—सज्ञा पु० [स०] अगस्त्य वृक्ष।

शीघ्रफल—सज्ञा पु० [स०] ग्रहसयोग का समीकरण [को०]।

शीघ्रबुद्धि—वि० [स०] कुशाग्रबुद्धि। तीक्ष्ण बुद्धिवाला [को०]।

शीघ्रबोध—सज्ञा पुं० [स०] १ वह जो जल्दी समझ मे आ जाय। २ ज्योतिष विषयक सस्कृत का एक ग्रथ।

शीघ्रवेधी—सज्ञा पुं० [स०] शीघ्रता से बाण चलानेवाला। लघुहस्त।

शीघ्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक नदी का नाम। २ दती वृक्ष। उदुबरपर्णी।

शीघ्रिय[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ शिव। २ विष्णु। ३ बिल्लियो का लडना।

शीघ्रिय[2]—वि० शीघ्र। तेज। क्षिप्र [को०]।

शीघ्री—वि० [स० शीघ्रिन्] १ गतिशील। शीघ्रगामी। २ कोई काम शीघ्र या तुरत करनेवाला। ३ उच्चारण मे जल्दी करनेवाला [को०]।

शीघ्रीय—वि० [स०] जल्दी। तीव्र। तेज [को०]।

शीघ्र्य—सज्ञा पुं० [स०] शीघ्रता [को०]।

शीत[1]—वि० [स०] १ ठढा। सर्द। शीतल। २. शिथिल। सुस्त। निद्रालु। झपकी लेता हुआ। ३ क्वथित (को०)।

शीत[2]—सज्ञा पुं० १ जाडा। सर्दी। ठढ। २ दालचीनी। ३ बेंत। ४ लिसोडा। ५ नीम। ३ कपूर। ७ एक प्रकार का चदन। ८ ओम। तुपार। ९ पित्तपापडा। १० शीतकाल। जाडे का मौसिम। अगहन, पूस और माघ के महीने। ११ जुकाम। सरदी। प्रतिश्याय। १२ पटसन। अशनपर्णी (को०)। १३. जल। पानी।

शीतक[1]—सज्ञा पु० [स०] १ शीत काल। जाडे का मौसिम। २ बिच्छू। ३ बनमनई। ४ वह जो हर काम मे बहुत देर लगाता हो। दीर्घसूत्री। ५ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश का नाम। ६ एक प्रकार का चदन। ७ आलसी। सुस्त। काहिल। ८ कोई शीतल वस्तु। ठढी चीज (को०)। ९. सतोषी पुरुष।

शीतक[2]—वि० ठढा। शीतल। सर्द [को०]।

शीत कटिबध—सज्ञा पुं० [स० शीतकटिबन्ध] पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अश उत्तर के बाद और २३½ अश दक्षिण के बाद माने गए हैं। इन विभागो मे जाडा बहुत अधिक पडता है। ये दोनो विभाग उष्ण कटिबंध के उत्तर और दक्षिण मे कर्क और मकर रेखा के बाद पडते हैं।

शीतकण—सज्ञा पु० [सं०] ओरा।

शीतकर[1]—सज्ञा पुं० [सं०] २ ठंढी किरणोवाला, चद्रमा। २ कपूर।

शीतकर[2]—वि० शीतल करनेवाला। ठढा करनेवाला।

शीतकषाय—सज्ञा पु० [स०] वैद्यक मे किसी काष्ठौषध आदि का वह कषाय या रस जो उसे छहगुने ठढे पानी मे रात भर भिगो रखने से तैयार होता है।

शीतकाल—सज्ञा पुं० [स०] १ हेमंत ऋतु। अगहन और पूस के महीने। २ जाडे का मौसिम। हेमत और शिशिर।

शीतकालीन वि० [स०] शीत ऋतु मे होनेवाला। शीतकाल का [को०]।

शीतकिरण—सज्ञा पु० [स०] शीत किरणोवाला, चद्रमा।

शीतकुभ—सज्ञा पुं० [स० शीतकुम्भ] कनेर। कनैल।

शीतकुभिका—सज्ञा स्त्री० [सं० शीतकुम्भिका] कुंभीरिका नाम की लता। जलकुभी। कुभी।

शीतकुभी—सज्ञा स्त्री० [स० शीतकुम्भी] जल में उत्पन्न होनेवाली एक प्रकार की लता जिसे शीतली जटा भी कहते हैं।

शीतकूर्चिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बरियारा। बला। खिरेंटी।

शीतकृच्छ्र सज्ञा पुं० [सं०] मिताक्षरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत जिसमे तीन दिन तक ठढा जल, तीन दिन तक ठढा दूध और तीन दिन तक ठढा घी पीकर और तीन दिन तक बिना कुछ खाए पीए रहना पडता है।

शीतक्षार—सज्ञा पुं० [स०] शुद्ध सोहागा।

शीतगध—सज्ञा पुं० [सं० शीतगन्ध] चदन। सदल।

शीतगात्र—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

विशेष—इस ज्वर मे रोगी का शरीर बहुत ठढा रहता है, इसे श्वास, खाँसी, हिचकी, मोह, कप, अतर्दाह और कै होती है, उसके शरीर मे बहुत पीडा रहती है, उसका स्वर बिलकुल बदल जाता है और वह बकता झकता है।

शीतगु—सज्ञा पु० [सं०] १ चद्रमा। २ कपूर।

शीतचपक—सज्ञा पु० [सं० शीतचम्पक] १. दर्पण। शीशा। आइना। २ प्रदीप। दीया।

शीतच्छाय, शीतच्छाया[1]—सज्ञा पुं० [स०] वट वृक्ष या बरगद, जिसकी छाया बहुत शीतल होती है।

शीतच्छाय, शीतच्छाया[2]—वि० शीतल छायावाला।

शीतज्वर—सज्ञा पुं० [सं०] जाडा देकर आनेवाला बुखार। जूडी। जडैया।

शीतता—सज्ञा स्त्री० [स०] शीत का भाव या धर्म। शीतत्व। ठढक।

शीतत्व—सज्ञा पुं० [स०] शीत का भाव या धर्म। शीतता। ठढापन।

शीतदत—सज्ञा पुं० [स० शीतदन्त] ठढी वायु या ठढ जल का दाँतो से लगना या एक प्रकार की वेदना उत्पन्न करना जो वैद्यक के अनुसार दाँतो का एक रोग माना गया है।

शीतदंतिका—सज्ञा स्त्री० [स० शीतदन्तिका] नागदती। हाथीशुडी।

शीतदीधिति—सज्ञा पुं० [सं०] चंद्रमा जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

शीतदीप्य —सज्ञा पु० [स०] सफेद जीरा।

शीतदूर्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद दूब।

शीतद्युति —सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शीतद्रु—सज्ञा पु० [स०] दे० 'मोरट'।

शीतपक—सज्ञा पु० [स० शीतपङ्क] आसव। मैरेय [को०]।

शीतपत्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद लजालू। सफेद लाजवती।

शीतपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] अर्धपुष्पी। अधाहुली।

शीतपल्लवा—सज्ञा स्त्री० [स०] छोटा जामुन। भूमि जबु।

शीतपाकिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. गुजा। चोटली। घुँघची। ३ ककही। अतिबला।

शीतपाकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. काकोली। २ गुजा। ३ वाट्यालक। अतिबला [को०]।

शीतपित्त—सज्ञा पु० [स०] जुडपित्ती नामक रोग।

विशेष—इसमे वात की अधिकता से सारे शरीर की त्वचा मे चकत्ते पड जाते हैं और उनमे सूई चुभने की सी पीडा होती है। इसमे वमन, ज्वर और दाह भी होता है।

शीतपाणि—सज्ञा पु० [स०] वह जिसके पाणि या कर शीतल हो।

शीतपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १. छरीला। शैलेय। २ केवटी मोथा। ३ सिरिस। शिरीष वृक्ष।

शीतपुष्पक—सज्ञा पु० [स०] १ आक। अर्क। मदार। २ केवटी मोथा। ३. छरीला। शैलेय।

शीतपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] अतिबला। ककही। महासमगा।

शीतपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] अतिबला। ककही। कघी।

शीतपूतना—सज्ञा स्त्री० [स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

विशेष—इस रोग मे बालक काँपता और खाँसता है, उसकी आँखें दुखती हैं और शरीर दुबला पड जाता है, शरीर से दुर्गंध आती है और उसे वमन तथा अतिसार होता है।

शीतप्रधान—वि० [स०] १. जहाँ शीत अधिक हो। जैसे,—शीतप्रधान क्षेत्र। २. जिसमे शीतत्व की प्रधानता हो। जैसे, शीतप्रधान वस्तु।

शीतप्रभ—सज्ञा पुं० [स०] कपूर।

शीतप्रिय—सज्ञा पुं० [स०] पित्तपापड़ा। पर्पटक।

शीतफल—सज्ञा पु० [स०] १ गूलर। २. पीलू। ३. अखरोट। ४. आँवला। ५ लिसोड़ा।

शीतबला—सज्ञा स्त्री० [स०] ककही। महासमगा।

शीतभानु—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शीतभीरु—सज्ञा स्त्री० [स०] १. मल्लिका। मोतिया। २. दे० 'निर्गुंडी'। ३. वह जो शीत से डरे।

शीतभीरुक—सज्ञा पु० [स०] १. मल्लिका। २ एक प्रकार का शालि-धान्य। ३. काली निर्गुंडी।

शीतमजरी—सज्ञा स्त्री० [स० शीतमञ्जरी] शेफालिका। निर्गुंडी।

शीतमयूख—सज्ञा पु० [स०] १. चद्रमा। २. कपूर।

शीतमरीचि —सज्ञा पुं० [स०] १ चंद्रमा। २. कपूर।

शीतमूलक—सज्ञा पुं० [स०] खस। उशीर।

शीतमेह—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शीतमेही—सज्ञा पुं० [स० शीतमेहिन्] वह जिसे शीतप्रमेह रोग हो।

शीतयुद्ध—सज्ञा पु० [स० शीत+युद्ध] संदेह और तनातनी की वह स्थिति जिसमे शस्त्रीकरण और अपने पोषक राष्ट्रो से परस्पर सहायता की सधियाँ हो। (अ० 'कोल्ड वार')।

शीतरम्य—सज्ञा पुं० [स०] प्रदीप। दीपक।

शीतरश्मि—सज्ञा पु० [स०] १. चद्रमा। २. कपूर।

शीतरस—सज्ञा पुं० [सं०] ईख के कच्चे रस की बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।

शीतरुच्—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शीतरुचि—सज्ञा पु० [स०] चाँद। चद्रमा [को०]।

शीतरुह—सज्ञा पु० [स०] सफेद कमल।

शीतल[1]—वि० [स०] १ ठंढा। सर्द। गरम का उल्टा। २. क्षोभ या उद्वेगरहित। जिसमे आवेश का अभाव हो। शात। ३ प्रसन्न। सतुष्ट। तृप्त।

शीतल[2]—सज्ञा पु० १ कसीस। २ छरीला। शैलेय। पत्थरफूल। ३ चदन। ४ मोती। मुक्ता। ५ उशीर। खस। ६. वन-सनई। ७. लिसोडा। ८ चंपा। ९ राल। १० पद्मकाठ। ११ पीतचदन। १२ भीमसेनी कपूर। १३. शाल वृक्ष। १४ बर्फ। हिम। १५. केराव। मटर। १६ चद्रमा। १७ जैनो का एक प्रकार का व्रत।

शीतलक—सज्ञा पुं० [स०] १ मरुआ। मरुवक। २. कुमुद।

शीतलचीनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० शीतल+चीन (देश)] कबाब चीनी।

शीतलच्छद—सज्ञा पु० [स०] चपा। चपक।

शीतल जल—सज्ञा पु० [सं०] पद्म। कमल [को०]।

शीतलता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. ठढापन। सर्दी। २. अमृतवल्ली। ३. जडता।

शीतलताई—सज्ञा स्त्री० [स० शीतलता+हिं० ई] दे० 'शीतलता'।

शीतलत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शीतलता'।

शीतलपाटी—सज्ञा स्त्री० [स० शीतल+हिं० पाटी] दे० 'सीतलपाटी'।

शीतलप्रद—सज्ञा पुं० [स०] शीतलता प्रदान करनेवाला, चदन।

शीतलवात—सज्ञा पु० [स०] ठढी हवा। शीतलता भरी वायु।

शीतलवातक—सज्ञा पु० [स०] अपराजिता। कोयल लता। विष्णुक्रांता।

शीतला—सज्ञा स्त्री० [स०] १. विस्फोटक रोग। चेचक। २. एक देवी

जो विस्फोटक की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। ३ आराम शीतला। ४ नीली दूब। ५ अर्कपुष्पी। ६ बालू। रेत (को०)। ७ कुटज विनी वृक्ष (को०)। ८ दे० 'शीतली' (को०)।

शीतलापूजा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शीतला देवी की पूजा जो फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को होती है [को०]।

शीतलावाहन—संज्ञा पु० [सं०] गधा [को०]।

शीतलाषष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल पक्ष की छठी तिथि।

शीतलाष्टमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी। इसी दिन शीतला देवी की पूजा होती है।

शीतलासप्तमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल सप्तमी को होनेवाला देवोत्सव [को०]।

शीतली—संज्ञा स्त्री० [सं०] जल मे होनेवाला एक पौधा। शीतली जटा। पातडी। २ श्रीवल्ली। ३ चेचक। विस्फोटक।

शीतवर—संज्ञा पुं० [सं०] शिरियारी। गुठवा।

शीतवरा, शीतवला संज्ञा स्त्री० [सं०] ककही। कघी नाम का पौधा।

शीतवल्क—संज्ञा पुं० [सं०] गूलर। उदुबर।

शीतवल्लभ—संज्ञा पु० [सं०] पित्तपापडा। शाहतरा।

शीतवल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] नीली दूब।

शीतवासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जूही। यूथिका।

शीतवीर्य[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. पद्मुम काठ। २ पाषाणभेद। पखानभेद। ३ पित्तपापडा। ४. पाकड। पकडी। ५. नीली दूब। ६. वच। वचा।

शीतवीर्य[2]—वि० खाने में जिसका प्रभाव ठढा हो। जिसकी तासीर सर्द हो।

शीतवीर्यक—संज्ञा पुं० [सं०] पाकर। प्लक्ष वृक्ष।

शीतवृक्षा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हुरहुर का पेड।

शीतवृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का रत्न [को०]।

शीतशिव—संज्ञा पु० [सं०] १ सेंधा नमक। २ छरीला। पथरफूल। ३ सोआ। ४ शक्तुफला वृक्ष। सौंफ। मधुरिका (को०)। ५ शमी का पेड। सफेद कीकर। ६. कपूर।

शीतशिवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सफेद कीकर। शमी। २ सौंफ।

शीतशूक—संज्ञा पुं० [सं०] जौ। यव।

शीतसवासा—संज्ञा स्त्री० [सं०] जूही। शीतवासा।

शीत सन्निपात—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे शरीर सुन्न और ठढा हो जाता है। पक्षाघात। अर्द्धांग।

शीतसह—संज्ञा पु० [सं०] पीलू। भल्ल वृक्ष।

शीतसहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निर्गुंडी। शेफालिका। २. नेवारी। वासती का पौधा। ३ मोतिया बेला। मल्लिका का एक भेद। ४. चमेली। ५. भल्ल वृक्ष। पीलू

शीतस्पर्श—वि० [सं०] जो स्पर्श करने मे ठढा हो। शीतल [को०]।

शीताग—संज्ञा पुं० [सं० शीताङ्ग] शीत सन्निपात।

शीतागी—संज्ञा स्त्री० [सं० शीताङ्गी] हमपदी लता।

शीतावु—संज्ञा स्त्री० [सं० शीताम्बु] दुब्बी नाम की घास।

शीताशु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कर्पूर। कपूर। २ चद्रमा।

यौ०—शीताशु तैल = कर्पूर का तैल।

शीता—संज्ञा स्त्री० [सं०] मरदा। ठढ। २ एक प्रकार की दूब। ३ शिल्पिका धाम। ४ तसर की छाल। ५ श्मलतास। ६ दे० 'सीता' (को०)।

शीताकुल—वि० [सं०] शीत से व्याकुल। जाडे मे ठिठुरा हुआ।

शीतातपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] छाता। छत्र। छतरी।

शीताद—संज्ञा पुं० [सं०] दात के मसूढो का एक रोग जिसमे मसूढे जगह जगह पक जाते है और उनमे से दुर्गंध निकलने लगती है।

शीताद्रि—संज्ञा पु० [सं०] हिमालय पर्वत।

शीताद्य—संज्ञा पुं० [सं०] शीतज्वर। जूडी।

शीतावला—संज्ञा स्त्री० [सं०] ककही। महाभृगा।

शीतारु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कपूर। २ चद्रमा।

शीतास—वि० [सं०] जो जाडे के कारण ठिठुरा हुआ हो [को०]।

शीतार्त्त—वि० [सं०] शीत से पीडित। शीतालु।

शीताल—संज्ञा पु० [सं०] हिताल वृक्ष।

शीतालु—वि० [सं०] दे० 'शीतार्त' [को०]

शीताश्म—संज्ञा पुं० [सं० शीताश्मन्] चद्रकात मणि।

शीतिका, शीतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं० शीतिमन्] ठढक। शैत्य।

शीतीभाव—संज्ञा पुं० [सं०] १. शीतलता। २ मनोविकारो के वेग का न रह जाना। शाति। शम। ३. मोक्ष। मुक्ति।

शीतेतर—वि० [सं०] शीत से भिन्न। गरम। उष्ण [को०]

शीतोत्तम—संज्ञा पुं० [सं०] जल। पानी [को०]।

शीतोदक—संज्ञा पु० [सं०] १ एक नरक का नाम। २ ठढा जल।

शीतोष्ण—वि० [सं०] ठढा और गरम। मातदिल [को०]।

शीत्कार—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'सीत्कार'।

शीत्य—वि० [सं०] १. शीतल करने योग्य। २. धान्य। ३. जोता हुआ या जोतने योग्य।

शीधु—संज्ञा पुं० [सं०] १. पकी हुई ईख के रस से बनी हुई मदिरा। सीधु। २. मद्य। शराब (को०)।

शीधुगध संज्ञा पु० [सं०] १. मद्य गध। २. वकुल वृक्ष। मौलसिरी।

शीधुप—संज्ञा पुं० [सं०] मद्यप। शराबी [को०]।

शीन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूर्य। २. हिम। बर्फ। ३ अजगर।

शीन[2]—वि० जमा हुआ।

शीन[3]—संज्ञा पुं० [अ०] अरबी का १२वाँ, फारसी का १५वाँ, उर्दू का अठारहवाँ और देवनागरी का तीसवाँ वर्ण। तालव्य श।

मुहा०—शीन काफ दुरस्त होना = (१) उच्चारण ठीक होना। (२) सजकर तैयार होना (व्यग्य)।

शीकर—वि० [स०] आनददायक । सुंदर । मनोहर (को०) ।

शीफालिका—संज्ञा स्त्री० [स०] निर्गुंडी । शेफालिका ।

शीभर[1]—संज्ञा पु० [स०] मेह की झडी ।

शीभर[2]—वि० आनदप्रद । मनोहर (को०) ।

शीभव—संज्ञा पुं० [स०] सीकर । फुहारा (को०) ।

शीभ्य—संज्ञा पुं० [स०] १. शिव । २ वृष । बैल ।

शीर[1]—वि० [स०] नुकीला । तेज ।

शीर[2]—संज्ञा पुं० १. अजगर । २. दे० 'सीर' ।

शीर[3]—संज्ञा पुं० [फा०; मि० स० क्षीर] क्षीर । दूध ।

मुहा०—शीर शकर या शीरोशकर हो जाना = (१) घुलमिल जाना । (२) गाढ स्नेह या प्रेम होना ।

शीरखाना—संज्ञा पुं० [फा० शीरख़ानह्] १. दुग्धकेंद्र । दुग्धालय । २ मदिरालय (को०) ।

शीरखार—वि० [फा० शीरख्वार] शीरखोरा । दूध पीता (बच्चा) । उ०—उनो की अक्ल होर लायक के माफिक फरमाते हैं क्या वास्ते तिफ्ले शीरखार ** ।—दक्खिनी०, पृ० ४२५ ।

शीरखिश्त—संज्ञा पु० [फा० शीरख़श्त] हकीमी मे एक रेचक ओषधि ।

विशेष—कहते हे, यह ओषधि खुरासान में पेडो और पत्थरो पर ओस की बूँदो की तरह जमा हुई मिलती है ।

शीरखोरा—संज्ञा पु० [फा० शीरख्वार] १ दूध पीता बच्चा । २. अनजान बालक ।

शीरवा, शीरविरंज—संज्ञा स्त्री० [फा०] पायस । खीर [को०]

शीरमाल—संज्ञा स्त्री० [फा०] १ चीनी मिला हुआ पानी । शर्बत । २. चीनी या गुड को पकाकर शहद के समान गाढा किया हुआ रस । चाशनी । ३. आँटे को दूध मे गूँधकर बनाई जानेवाली रोटी (को०) ।

शीरा—संज्ञा पुं० [फा० शीरह्] १. शकर की चाशनी । २. फलो का निचोडा हुआ रस । ३. पीसी हुई ओषधियो का रस । दे० 'सीरा' ।

शीराज—संज्ञा पुं० [फा०] ईरान का एक प्राचीन एव प्रसिद्ध नगर ।

शीराजा—संज्ञा पु० [फा० शीराजह्] १. वह बुना हुआ रगीन या सफेद फीता जो किताबो को सिलाई का छोर पर शोभा और मजबूती के लिये लगाया जाता है । २. पुस्तक और पुट्ठो पर की गई सिलाई । ३. प्रबध । इंतजाम । ४. क्रम । सिलसिला । ५. टुकडा । जर्रा । कण । उ०—उन्नीसवी सदी म बिखरे शीराजे के एकत्रित करने का जो प्रयत्न हुआ था, वह नगण्य सा था ।—भा० ई० रू०, पृ० ३३६ ।

यौ०—शीराजाबद = (किताब) जिसकी सिलाई हो चुकी हो या जिल्द बँध गई हो ।

मुहा०—शीराजा खुलना या टूटना = (१) टाँका टूटना । सिलाई खुल जाना । (२) प्रबंध का बिगड़ जाना । इंतजाम खराब होना । शीराजा बँधना = (१) किताब के जुजो की सिलाई होना । (२) बिखरी चीजो का क्रम लगाना या सिलसिला बैठाना । शीराजा बिखरना = बेतरतीब होना । क्रमहीन होना ।

शीराजी—संज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का कबूतर । २ घोड़ा का एक भेद । शीराज का घोडा । दे० 'सिराजी' ।

शीरि—संज्ञा स्त्री० [स०] रक्तनाडी । शिरा ।

शीरिका—संज्ञा स्त्री० [स०] वशपत्री नामक तृण ।

शीरी[1]—वि० [फा०] १. मीठा । मधुर । २. प्रिय । प्यारा ।

शीरी—संज्ञा स्त्री० फरहाद की प्रेयसी एक रमणी । (शीरी फरहाद की प्रेमकथा बहुत ही प्रसिद्ध है ।)

शीरी जबाँ—वि० [फा० शीरीज़बा] मधुरभाषी । उ०—बहू लाजती आई मैन किचन । कहा यूँ जा ए तू है शीरी जबा ।—दक्खिनी०, पृ० ८४ ।

शीरी—संज्ञा पुं० [स०] १. कुश । कुशा । हरिदर्भ । २ मूँज । ३. कलिहारी । लागली ।

शीरीनी—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मिठास । मीठापन । २. खाने की वस्तु जिसमे खूब चीनी या मीठा पडा हो । मिठाई । मिष्ठान्न । ३. बताशा । सिरनी ।

क्रि० प्र०—चढाना ।—बाँटना ।—मानना ।

शीर्ण[1]—वि० [स०] १. छितराया हुआ । टूटा फूटा हुआ । खंड खड । २. गिरा हुआ । च्युत । ३. जीर्ण । फटा पुराना । ४. मुरझाया हुआ । सूखकर सिकुडा हुआ । ५. चुचका हुआ । ६. कृश । दुबला पतला ।

शीर्ण[2]—संज्ञा पुं० एक गंधद्रव्य । स्थौणेयक । धुनेर ।

शीर्णक—वि० [स०] शीर्ण वा च्युत पत्तो को खानेवाला (को०) ।

शीर्णकाय—वि० [स०] दुर्बल शरीरवाला । कृशकाय (को०) ।

शीर्णता—संज्ञा स्त्री० [स०] शीर्ण होने का भाव । शीर्णत्व ।

शीर्णत्व—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'शीर्णता' (को०) ।

शीर्णदंत—वि० [स० शीर्णदन्त] जिसके दाँत गिर गए हो (को०) ।

शीर्णदल—संज्ञा पु० [स०] नीम ।

शीर्णनाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी । पिठवन (को०) ।

शीर्णपत्र—संज्ञा पुं० [स०] १ कर्णिकार । कनियारी । २. पठानी लोध । ३. नीम । ४. वृक्ष से गिरा हुआ पत्ता (को०) ।

शीर्णपर्ण—संज्ञा पुं० [स०] १. निंब । नीम । २. वृक्ष से गिरा हुआ या कुम्हलाया हुआ पत्ता (को०) ।

यौ०—शीर्णपर्ण फल = जिसके पत्ते और फल मुरझाए, सूखे या झर गए हो ।

शीर्णपर्णी—संज्ञा स्त्री० [स०] एक वृक्ष का नाम (को०) ।

शीर्णपाद—संज्ञा पु० [स०] १. यमराज ।

विशेष—पुराणो म कथा है कि माता के शाप से यमराज के पैर शीर्ण हो गए थे ।

२. शनिग्रह । ३. अत्यत कृश पैर (को०) ।

शीर्णपुष्पिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सौंफ। मधुरिका। २ सोआ।

शीर्णपुष्पी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सौंफ।

शीर्णमाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

शीर्णरोमक—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का गठिवन।

शीर्णवृत—संज्ञा पु० [सं० शीर्णवृन्त] तरबूज।

शीर्णाघ्रि—संज्ञा पुं० [सं० शीर्णाङ्घ्रि] यम। विशेष दे० 'शीर्णपाद'।

शीर्णि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शीर्ति' [को०]।

शीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] तोडने फोडने की क्रिया। खडन।

शीर्य'—वि० [सं०] १ टूटने फूटने योग्य। भगुर। २ नाशवान्।

शीर्य'—संज्ञा पु० एक प्रकार की दूब या घास जिसका प्रयोजन यज्ञो मे पडता था।

शीर्वि—वि० [सं०] १ अपकारक। २ हिंसक। ३ बर्बर। जगली।

शीर्ष—संज्ञा पु० [सं०] १ सिर। मुड। कपाल। २ माथा। ३ सबसे ऊपर का भाग। सिरा। चोटी। ४. सामना। अग्र भाग। ५ कालागुरु। काला अगर। ६ एक पर्वत का नाम। ७ एक प्रकार की घास।

शीर्षक—संज्ञा पु० [सं०] १. सिर। मुड। २. माथा। ३ चोटी। सिरा। ४ राहु ग्रह। ५. सिर मे लपेटने की माला। ६ अगर। ७ नारिकेल वृक्ष। ८ टोप। शिरस्त्राण। कूँड। ९ व्यवहार या अभियोग का निर्णय। फैसला। १०. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख या प्रबध के ऊपर लिखा जाय। ११. सिर की हड्डी। शिरोस्थि (को०)। १२. पगडी। शिरोवेष्टन। मुरेठा (को०)।

शीर्षघाती—वि०, संज्ञा पु० [सं० शीर्षघातिन्] सिर काटनेवाला। जल्लाद [को०]।

शीर्षच्छेद, शीर्षच्छेदन—संज्ञा पु० [सं०] सिर काटना [को०]।

शीर्षच्छेदिक, शीर्षच्छेद्य—वि० [सं०] शिरच्छेद करने योग्य। वध करने योग्य। वध्य [को०]।

शीर्षण्वी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शय्या का सिरहाना [को०]।

शीर्षण्य'—संज्ञा पुं० [सं०] १ टोप। कूँड। २. सुलझे हुए साफ वाल। ३ सिर पर बाँधी जानेवाली कोई वस्तु (को०)। ४ सिर पर लपेटने की रज्जु (को०)। ५ चारपाई का सिरहाना।

शीर्षण्य'—वि० शीर्षांकित। श्रेष्ठ [को०]।

शीर्षत्राण—संज्ञा पुं० [सं०] शिरस्त्राण। टोप। कूँड [को०]।

शीर्षपट्ट, शीर्षपट्टक—संज्ञा पु० [सं०] १ सिर मे लपेटने का कपडा। २ पगडी। मुरेठा। साफा।

शीर्षबिंदु—संज्ञा पु० [सं० शीर्षबिन्दु] १ सिर के ऊपर और ऊँचाई मे सब से ऊपर का स्थान। २. मौतियाबिंद।

शीर्षरक्ष, शीर्षरक्षक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शीर्षत्राण' [को०]।

शीर्षवर्तन—संज्ञा पु० [सं०] अभियोग चलानेवाले का उस दशा मे दंड सहने के लिये तैयार होना जब कि अभियुक्त ने 'दिव्य परीक्षा देकर अपने को निर्दोष प्रमाणित कर दिया हो। शिरोपस्थायी।

शीर्षवेदना, शीर्षव्यथा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिरोवेदना। सिर का दर्द। शीर्ष शोक [को०]।

शीर्षशोक—संज्ञा पुं० [सं०] शिरोवेदना। सिरदद [को०]।

शीर्षस्थ—वि० [सं०] दे० 'शीर्षांकित' [को०]।

शीर्षस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ उत्तमाग। सिर। शीर्ष। २ ललाट। मस्तक। ३ सर्वोच्च स्थान या पद [को०]।

शीर्षस्थानीय—वि० [सं०] दे० 'शीर्षांकित' [को०]।

शीर्षांकित—वि० [सं० शीर्षाङ्कित] शीर्षस्थानीय। श्रेष्ठ। सर्वोच्च।

शीर्षोदय—संज्ञा पुं० [सं०] ज्योतिष मे मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुभ और मीन राशि [को०]।

शील'—संज्ञा पुं० [सं०] १ चाल-व्यवहार। आचरण। वृत्ति। चरित्र। २ स्वभाव। प्रवृत्ति। आदत। मिजाज। ३. अच्छा चाल-चलन। उत्तम आचरण। सद्वृत्ति। उ०—'भाव' ही कर्म के मूल प्रवर्तक और शील के सस्थापक हैं।—रस०, पृ० १६१।

विशेष—बौद्ध शास्त्रों मे दस शील कहे गए हैं—हिंसा, स्तेय, व्यभिचार, मिथ्याभाषण, प्रमाद, अपराह्न भोजन, नृत्य गीतादि, मालागधादि, उच्चासन शय्या और द्रव्यसग्रह इन सब का त्याग। कहीं कहीं पचशील भी कहे गए हैं। यह शील छह या दस पारमिताओं मे से एक है और तीन प्रकार का कहा गया है—सभार, कुशलसग्राह और सत्त्वार्थ क्रिया। ४ उत्तम स्वभाव। अच्छी प्रकृति। अच्छा मिजाज। ५ दूसरे का जी न दुखे, यह भाव। कोमल हृदय। ६ सौंदर्य। सुदरता। सौम्यता (को०)। ७ सकोच का स्वभाव। मुरौवत।

मुहा०—शील तोडना = दूसरे के जी दुखने न दुखने का ध्यान न रखना। मुरौवत न रखना। आँखों मे शील न होना = दे० 'आँख' के मुहा०।

८ अजगर।

शील'—वि० प्रवृत्त। तत्पर। प्रवृत्तिवाला। स्वभावयुक्त। जैसे—दान-शील, पुण्यशील।

शीलक—संज्ञा पु० [सं०] १ एक कवि का नाम। २ पान की जड। कर्णमूल [को०]।

शीलकीर्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] गुणों की ख्याति, शुचिता और सदाचार की प्रशस्ति [को०]।

शीलखडन—संज्ञा पु० [सं०] शुचिता, सदाचार या नैतिकता का उल्लघन [को०]।

शीलगुप्त—वि० [सं०] चतुर। मक्कार। प्रवचक [को०]।

शीलज्ञ—वि० [सं०] सदाचार एव नैतिकता का ज्ञाता।

शीलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शीलत्व'।

शीलत्याग—संज्ञा पुं० [सं०] सदाचार का त्याग [को०]।

शीलत्व—संज्ञा पुं० [सं०] शीलयुक्त होने का भाव या क्रिया। शीलता। शालीनता [को०]।

शीलदशा—संज्ञा स्त्री० [सं० शील+दशा] किसी विशेष भाव का किसी की प्रकृति या स्वभाव का लक्षण बनने की अवस्था। जैसे,

तुनकमिजाजी, हँसोड़पन, भीरुता आदि। उ०—भाव के इस प्रकार प्रकृतिस्थ हो जाने की अवस्था को हम शील दशा कहेंगे। —रस०, पृ० १८२।

शीलधारी¹—वि० [स० शीलधारिन्] सद्वृत्तिवाला। शीलवान् [को०]।

शीलधारी²—संज्ञा पुं० शिव [को०]।

शीलन—संज्ञा पुं० [स०] १. बारबार अभ्यास करना। जैसे, शास्त्र आदि का। २ निरंतर प्रयोग में लाना। आधिक्य। ३. समान या सेवा करना। ४ वस्त्र पहिनना [को०]।

शीलभंग—संज्ञा पु० [स० शीलभङ्ग] १ दे० 'शीलखंडन'। २ (आधुनिक प्रयोग) किसी भी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध प्रसंग करना। बलात्कार।

शीलभ्रंश—संज्ञा पुं० [स०] सदाचार का विनाश [को०]।

शीलवंचना—संज्ञा स्त्री० [स० शीलवञ्चना] १. सतीत्व या इंद्रियनिग्रह का अतिक्रमण। २ शुचिता या शील का उल्लंघन [को०]।

शीलवर्जित—वि० [स०] दुराचारी। शील से रहित [को०]।

शीलवान्—वि० [स० शीलवत्] [वि० स्त्री० शीलवती] १ अच्छे आचरण का। सात्विक वृत्ति का। २. अच्छे या कोमल स्वभाव का। मुरौवतवाला। सुशील।

शीलवृत्त¹—वि० [स०] अच्छे आचरणवाला। सदाचारी [को०]।

शीलवृत्त²—संज्ञा पु० अच्छा आचरण। सदाचार [को०]।

शीलवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुशीलता। सदाचार। भलमनसी [को०]।

शीलवृद्ध—वि० [स०] संमान्य। सदाचारी [को०]।

शीलसौंदर्य—संज्ञा पु० [स० शीलसौन्दर्य] उत्कृष्ट एवं सत् आचरण की सुंदरता। शील की सुंदरता। उ०—किसी को रूपसौंदर्य और शीलसौंदर्य का पहले पहल साक्षात्कार या परिचय होते ही सबसे पहली अनुभूति आनंद की होती है। सबसे पहले हृदय विकसित और लुब्ध होता है।—रस०, पृ० ७५।

शीला—संज्ञा स्त्री० [स०] कौंडिन्य मुनि की पत्नी का नाम।

शीलित¹—वि० [स०] १. बारबार किया हुआ। अभ्यस्त। प्रयुक्त। २. धारण किया हुआ। पहना हुआ। ३. कृत। संपादित। ४ कुशल। निपुण। ५. युक्त। सहित। संपन्न।

शीलित²—संज्ञा पु० अनवरत क्रिया। अभ्यास [को०]।

शीली—वि० [सं० शीलिन्] १ सदाचारी। सुशील। २. बार-बार किया हुआ। अभ्यस्त। प्रयुक्त [को०]।

शीव—संज्ञा पु० [स० शिव] दे० 'शिव'। उ०—ब्रह्मा विष्णु शीव अधिकारी। तीन की आशा जगत महँ भारी।—कबीर सा०, पृ० ४६८।

शीवल—संज्ञा पुं० [सं०] १. छरीला। शैलेय। पथरफूल। २. सेवार।

शीवा¹—संज्ञा पुं० [स० शीवन्] अजगर।

शीवा²—संज्ञा पुं० [सं० शिव] शिव। ब्रह्म। उ०—सब को प्रेरक कहिए जीवा। सो ब्रह्म निरंतर शीवा।—सुंदर० ग्रं०, भा० १, पृ० ११०।

शीश(ष)¹—संज्ञा पु० [स० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'।

यौ०—शीशफूल।

शीश²—संज्ञा पुं० [फ़ा० शीशह्] शीशा। काँच। (प्रायः समास में प्रयुक्त)। जैसे,—शीश-ए-दिल, शीश महल [को०]।

यौ०—शीश-ए-दिल = कोमल हृदय। नाजुक दिल। शीशगर = काँच के सामान बनानेवाला। शीशबाज = धूर्त। मक्कार। शीशमहल। शीश-ए-साअत, शीश-ए-साआ = बालू की घड़ी।

शीशफूल—संज्ञा पुं० [स० शीर्ष + फुल्ल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का गहना विशेष। उ०—सिर पर है चंदवा शीशफूल, कानों में झुमके रहे झूल।—ग्राम्या, पृ० ४०।

शीशम संज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है।

विशेष—यह पेड़ बहुत ऊँचा और सीधा होता है। इसकी पत्तियाँ छोटी और गोल होती हैं। लकड़ी लाल रंग की होती है और मजबूती तथा सुंदरता के लिये प्रसिद्ध है। इससे पलंग, कुरसी, मेज आदि सजावट के सामान बढ़िया बनते हैं।

शीशमहल—संज्ञा पु० [फा० शीश + अ० महल] १ वह कमरा या कोठरी जिसकी दीवारों में सर्वत्र शीशे जड़े हों। काँच का मकान।

मुहा०—शीश महल का कुत्ता = पागल कुत्तों की तरह बकने या उछलने कूदनेवाला। (शीशे में अपना ही प्रतिबिंब देखकर कुत्ता घबराता और भूँकता है।)

शीशा—संज्ञा पुं० [फा० शीशह्] १. एक मिश्र धातु, जो बालू या रेह या खारी मिट्टी को आग में गलाने से बनती है।

विशेष—यह पारदर्शक होती है और खरी होने के कारण थोड़े आघात से टूट जाती है। काँच।

२. काँच का वह खंड जिसमें सामने की वस्तुओं का ठीक प्रतिबिंब दिखाई पड़ता है और जिसका व्यवहार चेहरा देखने के लिये किया जाता है। दर्पण। आइना। ३. झाड़ फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान।

मुहा०—शीशे को पत्थर के हवाले करना = जान बूझकर किसी को संकट में डालना। उ०—वे सुबहा सना की जो दिल उस बुत से लगाया। खुद हमने किया शीशे को पत्थर के हवाले।—फिसाना०, भा० ३, पृ० २६। शीशा बाशा = बहुत नाजुक चीज। शीशे में उतारना = (१) भूत झुलाना। प्रतारणा करना। वश में करना। मोहित करना। उ०—इनकी भड़क कोई नहीं मिटा सकता मगर हमने इन शीशे में उतारा है।—फिसाना०, भा० ३, पृ० ४।

शीशी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा० शीशह्, शीशा] शीशे का छोटा पात्र जो तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम में आता है। काँच की नली कुप्पी।

मुहा०—शीशी सुँघाना = क्लोरोफार्म सुँघाना। दवा सुँघाकर बेहोश करना।

विशेष—अस्त्रचिकित्सा आदि के समय रोगी इस प्रकार क्लोरोफार्म सुँघाकर बेहोश किए जाते हैं।

शीस[1]—सज्ञा पु० [स० शीर्ष] दे० 'शीर्ष'। उ०—शीस झुकाकर चली गई वह मंदिर मे निज हृदय हिलोर।—साकेत, पृ० ३६८।

शीस[2]—सज्ञा पु० [अ०] एक पैगंबर। आदम का तीसरा पुत्र [को०]।

शुग—सज्ञा पुं० [स० शुङ्ग] १ वट वृक्ष। २ आँवला। ३. पाकड। पकडी। ४. नव पल्लव। ५ फूल के नीचे का आधार या कटोरी। ६ एक राजवश जो मौर्यो के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।

विशेष—इस वश का स्थापक मौर्यो का सेनापति पुष्यमित्र था जिसने मौर्यवश के अंतिम राजा बृहद्रथ को मारकर ईसा से १८५ वर्ष पूर्व उसके साम्राज्य पर अपना अधिकार जमा लिया था। विशेष दे० 'पुष्यमित्र' शब्द।

७. जौ या अन्न का टूँड। किशारु। शूक (को०)।

शुगा—सज्ञा स्त्री० [स० शुङ्गा] १ पर्कटी का पेड। २ कली का रक्षक आवरण। ३ गेहूँ जौ आदि का टूँड। शूक (को०)।

यौ०—शुगाकर्म=पुंसवन नाम का एक संस्कार विशेष।

शुगी—सज्ञा पु० [स० शुङ्गिन्] १ पकड का पेड। पाकर। २. वट वृक्ष।

शुठि, शुठी—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्ठि, शुण्ठी] सोंठ।

शुठ्य—सज्ञा पु० [स० शुण्ठ्य] सूखी आदी। सोंठ [को०]।

शुड—सज्ञा पुं० [स० शुण्ड] १. हाथी की सूँड। २ हाथी का मद जो उसकी कनपटी से बहता है।

शुडक—सज्ञा पु० [स० शुण्डक] १ एक प्रकार का रणवाद्य। भेरी। २ युद्धगान। युद्धगीत (को०)। ३ मद्य उतारने या बेचनेवाला।

शुडमूषिका—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्डमूषिका] छछुंदर [को०]।

शुडरोह—सज्ञा पु० [स० शुण्डरोह] अगिया घास। भूतृण।

शुडा—सज्ञा पुं० [स० शुण्डा] १. सूँड़। २. मद्यपान करने का स्थान। होली। ३ शराब। ४. वेश्या। ५ कुटनी। ६ कमलनाल। नलिनी। कमल की डडी (को०)। ७. चिबुक। हनु (को०)।

यौ०—शुडादड। शुडापान।

शुडादड—सज्ञा पु० [स० शुण्डादण्ड] हाथी की सूँड।

शुडापान—सज्ञा पु० [स० शुण्डापान] मधुशाला। मद्यपानगृह [को०]।

शुडार—सज्ञा पु० [स० शुण्डार] १ हाथी को सूँड। २. साठ वर्ष का हाथी। ३. मद्य उतारने या बेचनेवाला।

शुडाल—सज्ञा पु० [स० शुण्डाल] हाथी।

शुडिक—सज्ञा पु० [स० शुण्डिक] १ मद्य बिकने का स्थान। कलवरिया। २ एक प्राचीन जाति का नाम जिसका व्यवसाय मद्य उतारना और बेचना था।

शुडिका—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्डिका] १. अलिजिह्वा। गले का कौवा। घाँटी। २. ग्रंथि मे आनेवाली सूजन। ३. दे० 'शुडा' [को०]।

शुडिमूषिका—सज्ञा स्त्री० [स० शुण्डिमूषिका] छछूँदर।

शुडी[1]—सज्ञा पुं० [सं० शुण्डिन्] १ (सूँडवाला) हाथी। २ मद्य बनानेवाला। कलवार।

यौ०—शुडिमूषिका।

शुडी[2]—सज्ञा स्त्री० १ हाथीसूँडी का पौधा। २. गले का कौवा। घाँटी।

शुध्यु[1]—सज्ञा पुं० [सं० शुन्ध्यु] १. वायु। २ अग्नि। ३. एक पक्षी। ४. आदित्य [को०]।

शुध्यु[2]—सज्ञा स्त्री० बडवा। घोडी [को०]।

शुध्यु[3]—वि० पवित्र। विमल। शुचि [को०]।

शुभ—सज्ञा पुं० [सं० शुम्भ] एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।

विशेष—अग्निपुराण के अनुसार यह प्रह्लाद का पौत्र और गवेष्ठी का पुत्र था। इसके भाई का नाम निशुंभ था। वामनपुराण मे इसे कश्यप की दनु नामक भार्या से उत्पन्न कहा गया है।

यौ०—शुंभघातिनी। शुंभपुर। शुंभपुरी। शुंभमथनी। शुंभमर्दिनी। शुंभहननी=दुर्गा।

शुंभघातिनी, शुंभमर्दिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शुम्भघातिनी, शुम्भमर्दिनी] दुर्गा।

शुंभपुर—सज्ञा पुं० [सं० शुम्भपुर] दे० 'शुंभपुरी'।

शुंभपुरी—सज्ञा स्त्री० [स० शुम्भपुरी] शुंभ राक्षस की पुरी। एकचक्रा पुरी। हरिगृह।

विशेष—विद्वानों का अनुमान है कि मध्य प्रदेश मे गोंडवाना के अंतर्गत सभलपुर ही प्राचीन शुंभपुरी है।

शुंशुमार—सज्ञा पुं० [स०] शिशुमार का आमाघु रूप। सूँस [को०]।

शु—क्रि० वि० [स०] शीघ्रतापूर्वक। त्वरित। जल्दी [को०]।

शुक—सज्ञा पु० [सं०] १. तोता। सुग्गा। २ एक प्रकार की गठिवन। ३. सिरिस का पेड। ४. सोना पाठा। ५. लोध का वृक्ष। ६ तालीशपत्र। ७. भरभाँड। भरभाँड। ८. रावण के एक दूत का नाम। ९ व्यासदेव के पुत्र। विशेष दे० 'शुकदेव'। १०. वस्त्र। कपडा। ११. कपडे का आँचल। १२ शिरस्त्राण। खोद (को०)। १३ पगडी। साफा। १४. महाभारत के अनुसार एक पौराणिक अस्त्र (को०)। १५. एक वीर योद्धा (को०)। १६ गधर्वो का एक राजा

शुककर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा।

शुककीट—सज्ञा पुं० [स०] हरे रंग का एक फतिंगा जो खेतो मे दिखाई पडता है।

शुककूट—सज्ञा पुं० [स०] दो खभो के बीच मे शोभा के लिये लटकाई हुई माला।

शुकच्छद—सज्ञा पु० [सं०] १ तोते का पर। २. ग्रंथिपर्ण। गठिवन। ३. तेजपत्ता।

शुकजिह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] शुकतुंडी। सुप्राठाठो नामक पौधा।

शुकतरु—सज्ञा पु० [स०] शिरीष वृक्ष।

शुकता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शुकत्व' [को०]।

शुकतुंड—सज्ञा पुं० [सं० शुकतुण्ड] १. तोते की चोच। २ हाथ की एक मुद्रा जो तांत्रिक पूजन मे बनाई जाती है।

शुकतुंडी—सज्ञा स्त्री० [स० शुकतुण्डी] शुकजिह्वा या सूआठोंठी नामक पौधा।

शुकत्व—सज्ञा पु० [सं०] शुक होने का भाव। सुग्गापन। शुकता [को०]।

शुकदेव—सज्ञा पुं० [स०] कृष्णद्वैपायन व्यास के पुत्र जो पुराणो के भारी वक्ता और ज्ञानी थे।

विशेष—इन्होने राजा परीक्षित को उनके मरने के पहले मोक्ष धर्म का उपदेश दिया था। कहा जाता है, वही उपदेश भागवत पुराण है।

शुकद्रुम—सज्ञा पु० [स०] शिरीष वृक्ष।

शुकनलिका न्याय—सज्ञा पु० [स०] तोता जिस प्रकार फँसाने की नली (नलनी) मे लोभ के कारण फँस जाता है, वैसे ही फँसने की रीति।

विशेष—सूर, तुलसी आदि हिंदी के कवियो ने भी 'नलनी के सुअटा' पद का व्यवहार किया है।

शुकनामा—सज्ञा स्त्री० [स०] शुकजिह्वा या सूआठोंठी नामक पौधा।

शुकनाशन—सज्ञा पु० [स०] चकवँड। चक्रमर्द।

शुकनास[1]—सज्ञा पु० [स०] १. कपिकच्छु। केवाँच। कौंछ। २. शुकजिह्वा। सुआठोंठी। ३. गभारी। ४. नलिका। ५. श्योनाक वृक्ष। छोकर। ६ सोनापाठा। ७ अगस्त का पेड। ८. वास्तुशास्त्र के अनुसार गृह की सजावट (को०)। ९. कादंबरी मे वर्णित तारापीड का एक अमात्य (को०)।

शुकनास[2]—वि० जिसकी नाक सुग्गे के समान झुकी हुई हो [को०]।

शुकनासा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० शुकनास[1]।

शुकनासिका—संज्ञा स्त्री० [स०] शुक की तरह झुकी हुई नासिका [को०]।

शुकपुच्छ—सज्ञा पुं० [स०] गवक।

शुकपुच्छक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की गठिवन। धुनेर।

शुकपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] १ धुनेर। २ सिरिस का पेड। ३. गवक। ४ अगस्त का पेड।

शुकपोत्र—सज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का विषरहित वा अहानिकर सर्प [को०]।

शुकप्रिय—सज्ञा पुं० [स०] १ सिरिस का पेड। २. कमरख।

शुकप्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नीम। २ जामुन।

शुकफल—सज्ञा पुं० [स०] १ आक। मदार। २ सेमर।

शुकबर्ह—सज्ञा पुं० [स०] गठिवन।

शुकरान—सज्ञा पुं० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जिसके फल कड़ुए होते हैं।

शुकराना—सज्ञा पुं० [अ० शुक्र] १ शुक्रिया। कृतज्ञता। २ वह धन जो कार्य हो जाने के पश्चात् धन्यवाद के रूप मे किसी को दिया जाय। जैसे,—वकीलो का शुकराना, जमीदारो का शुकराना इत्यादि।

शुकलोचन—वि० [स० शुक(=तोता)+लोचन (=चक्षु)] तोताचश्म। तोते के समान आँख फेर लेनेवाला। बेमुरौवत। (व्यंग्य मे)। उ०—ए निर्दयी क्या तुझे दया का नाम भी भूल गया जो ऐसे शुकलोचन से पाला डाला।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० १५।

शुकवल्लभ—सज्ञा पुं० [स०] अनार। दाडिम।

शुकवाक्—वि० [स० शुकवाच्] जिसकी बोली सुग्गे की तरह मीठी हो [को०]।

शुकवाह, शुकवाहन—सज्ञा पुं० [स०] कामदेव, जिसका वाहन शुक या तोता माना गया है।

शुकशालक—सज्ञा पुं० [स०] बकायन।

शुकशिंबा, शुकशिंबी—सज्ञा स्त्री० [स० शुकशिम्बा, शुकशिम्बि] कपिकच्छु। केवाँच।

शुकशीर्षा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. धुनेर। स्थौणेयक। २ तालीस। तेजपत्ता।

शुकसप्तति—सज्ञा स्त्री० [स०] इस नाम की एक पुस्तिका जिसमे शुक ने ७० कहानियाँ कही हैं।

शुकाख्या—सज्ञा स्त्री० [स०] शुकजिह्वा नामक पौधा।

शुकादान—सज्ञा पुं० [स०] अनार।

शुकानना—सज्ञा स्त्री० [सं०] शुकाख्या नामक पौधा।

शुकायन—सज्ञा पुं० [स०] १ बुद्ध। २ अर्हत।

शुकाह्व, शुकाह्वय—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मोथा।

शुकी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ मादा तोता। सुग्गी। २. कश्यप की पत्नी का नाम।

शुकेष्ट—सज्ञा पुं० [स०] शिरीष वृक्ष। सिरिस।

शुकोदर—सज्ञा पुं० [स०] तालीश वृक्ष।

शुकोह—सज्ञा स्त्री० [फा०] रोबदाब। शान शौकत।

यौ०—शुकोहे अलफाज=शब्दाडबर। उत्कलिका।

शुक्त[1]—वि० [सं०] १. सडाकर खट्टा किया हुआ। खमीर उठाया हुआ। २ खट्टा। अम्ल। ३ कडा। कठोर। ४ अप्रिय। नापसद। ५ निर्जन। सुनसान। उजाड। ६ शिलष्ट। मिला हुआ। ७. पूत। शुद्ध। स्वच्छ। साफ (को०)।

शुक्त[2]—सज्ञा पुं० १. अम्लता। खटाई। २ वसिष्ठ के एक पुत्र का नाम। ३ सडाकर खट्टी की हुई कोई वस्तु। ४ काँजी। ५ सिरका। ६ चुक। ७. माग। ८ कठोर वचन।

शुक्तक—सज्ञा पुं० [स०] खट्टी डकार [को०]।

शुक्तपाक—सज्ञा पु० [सं०] आमाशय या पक्वाशय का खट्टापन [को०]।

शुक्ता—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ चुक्रिका का पौधा। चूका। २ काँजी।

शुक्ताम्ल—सज्ञा पुं० [सं०] चुक्रिका शाक। चुक का साग।

शुक्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ सीप। सीपी। २ नाल की सीपी। सुनुही। ३. शख। ४. दो कर्ष या चार तोले की एक तौल। ५. बेर। ६. नखी नामक गधद्रव्य। ७ अर्श। बवासीर। ८ मुख का एक रोग जिसमे मसूढे तालु के ऊपर मास की एक बिंदी सी

निकल आती है। ९ कपाल जो कानी या कापालिको के हाथ में रहता है। १०. हड्डी। ११ घोडे क. गरदन अथवा छाती की एक भौंरी। १२ छोटा शख। शखनख (को०)।

यौ०—शुक्तिकर्ण=जिसके कान सीपी के समान हो। शुक्ति सपुटित=पूर्णत सस्वाट। पूरी तरह गजा। शुक्तिचूर्णक। शुक्तिपुटी=द० शुक्तिपुट'। शुक्तिबीज। शुक्तिवधू।

शुक्तिक—सज्ञा पु० [स०] १ एक प्रकार का नेत्ररोग। २ गवक।

शुक्तिका—सज्ञा स्त्री० [सं०] १. सीप। सीपी। २. चुक्रिका शाक। चुक नाम का साग। ३ आँख का शुक्ति नामक रोग।

शुक्तिचूर्णक—सज्ञा पु० [स०] कौटिल्य के अनुसार एक प्रकार का घटिया किस्म का रत्न जो देखने मे सीपी की खोल जैसा होता है।

शुक्तिज—सज्ञा पुं० [सं०] मुक्ता। मोती।

शुक्तिपत्र, शुक्तिपर्ण—सज्ञा पु० [सं०] छतिवन। सप्तपर्ण वृक्ष।

शुक्तिपुट—सज्ञा पु० [स०] सीपी का खोल [को०]।

शुक्तिबीज, शुक्तिमणि—सज्ञा पुं० [स०] मोती।

शुक्तिमती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक नदी का नाम। २ चेदि की राजधानी।

शुक्तिमान्—सज्ञा पुं० [स० शुक्तिमत्] एक पर्वत जो आठ कुलपर्वतो मे से है।

शुक्तिवधू—सज्ञा स्त्री० [स०] सीप। सीपी।

शुक्तिस्पर्श—सज्ञा पुं० [स०] मोती पर पडा हुआ मटमैला धब्बा [को०]।

शुक्त्यगी—सज्ञा पु० [सं० शुक्त्यङ्गिन्] सभालू। सिंदुवार। मेउडी।

शुक्त्युद्भव—सज्ञा पुं० [स०] मोती [को०]।

शुक्र'—वि० [स०] १ देदीप्यमान। चमकीला। २ स्वच्छ। उज्वल।

शुक्र२—सज्ञा पुं० १. अग्नि। २ एक बहुत चमकीला ग्रह या तारा जो पुराणानुसार दैत्यो का गुरु कहा गया है।

विशेष—आधुनिक ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार इसका व्यास ७०० मील है। यह पृथ्वी से सबसे अधिक निकट है, एक करोड कोस से कुछ ही अधिक दूर है। सूर्य से इसकी दूरी तीन करोड पैंतीस लाख कोस है। इसका अक्ष भ्रमण-काल २२५ दिनो का है अर्थात् इसका एक दिन रात हमारे २२५ दिनो के बराबर होता है। बुध के समान यह ग्रह भी प्रधान द्युति के पीछे पश्चिम मे निकलता है और पूर्व की ओर बढ़ता हुआ लघु द्युति के समय लुप्त हो जाता है। इसमे वायु और जल दोनो का होना अनुमान किया गया है। इसका पृष्ठ बादलो से ढका रहता है। फलित ज्योतिष मे इसका वर्ण जल के समान श्यामल कहा गया है और यह धान्य का स्वामी, जनभूमिचारी और स्निग्ध रुचिवाला माना गया है।

पुराणो मे शुक्र दैत्यो के गुरु और भृगु के पुत्र कहे गए हैं। ऐसी कथा है कि दैत्यराज बलि जब वामन को पृथ्वी दान करने लगे, तब वे उन्हे रोकने के विचार से उस जलपात्र की टोटी मे जा बैठे जिसमे सकल्प करने का जल था। उस समय सीक से गोदने पर इनकी एक आँख फूट गई। इसी कारण काने आदमी को लोग हँसी मे शुक्राचार्य कह दिया करते है। विशेष दे० 'शुक्राचार्य'।

पर्या०—दैत्यगुरु। काव्य। उशना। भार्गव। कवि। सित। भृगु। षोडशार्चि। श्वेतरथ।

३. ज्येष्ठ मास। जेठ (यह कुबेर का भडारी कहा गया है)। ४. स्वच्छ और शुद्ध साम। ५. चित्रक वृक्ष। चीता। ६. सार। रस। सत। ७. नर जीवो के शरीर का वह धातु जिसमे माता के अड को गर्भित करनेवाले घटक या अणु रहते हैं। वीर्य। मनी। ८ बल। सामर्थ्य। पौरुष। शक्ति। ९. सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पडता है। १० आँख की पुतली का एक रोग। फूला। फूली। ११ एरड वृक्ष। अडी का पेड। रेंड़। १२ स्वर्ण। सोना। १३ धन। दौलत। सपत्ति। १४. जल (को०)। १५. चमकीलापन (को०)। १६ गायत्री मत्र मे आनेवाली प्रथम तीन (भू. भुव स्व) व्याहृतियाँ (को०)। १७. वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम (को०)। १८. तीसरे मनु के एक पुत्र का नाम (को०)। १९. सत्कार्य। सत्कर्म (को०)।

शुक्र३—सज्ञा पुं० [अ०] धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश। जैसे,—खुदा का शुक्र है।

शुक्रकर'—सज्ञा पुं० [स०] मज्जा, जिससे शुक्र या वीर्य का बनना कहा गया है।

शुक्रकर२—वि० वीर्य को बढानेवाला [को०]।

शुक्रकृच्छ्र सज्ञा पु० [स०] मूत्रकृच्छ्र रोग। सूजाक।

शुक्रगुजार—वि० [अ० शुक्र+फा० गुजार] एहसान माननेवाला। धन्यवाद देनेवाला। आभारी। कृतज्ञ।

शुक्रगुजारी—सज्ञा स्त्री० [अ०] एहसानमदी। किए हुए उपकार का मानना। कृतज्ञता।

शुक्रज—सज्ञा पुं० [स०] १ पुत्र। बेटा। २ देवताओ का एक भेद (जैन)।

शुक्रद—सज्ञा पु० [सं०] गेहूँ। गोधूम।

शुक्रदोष—सज्ञा पु० [सं०] क्लीवत्व। नपुसकता।

शुक्रपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] १. कटसरैया। २. सफेद अपराजिता।

शुक्रप्रमेह—सज्ञा पु० [स०] धातुक्षीणता। धातु का गिरना जो एक रोग है।

शुक्रभुज्—सज्ञा पु० [स०] मयूर। मोर।

शुक्रभू—सज्ञा पुं० [स०] मज्जा।

शुक्रमाता—सज्ञा स्त्री० [स०] बभनेटी। भारगी।

शुक्रमेह—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'शुक्रप्रमेह'।

शुक्रल वि० [स०] २. जिसमें शुक्र या वीर्य हो। २ वीर्य उत्पन्न करनेवाला।

शुक्रला—सज्ञा स्त्री० [स०] उटगन के बीज । उच्चटा । ओकडा ।

शुक्रवर्ण—वि० [स०] उज्वल । चमकीला । दीप्तियुक्त (को०) ।

शुक्रवार, शुक्रवासर—सज्ञा पु० [स०] सप्ताह का छठा दिन जो जो वृहस्पतिवार के बाद और शनिवार के पहले पडता है ।

शुक्रशिष्य—सज्ञा पु० [स०] दैत्य । असुर ।

शुक्रस्तभ—सज्ञा पु० [स० शुक्रस्तम्भ] ध्वजभग या नपुसकता का एक भेद जो बहुत दिनो तक ब्रह्मचर्य पालन करने से होता है ।

शुक्राग—सज्ञा पु० [स०] शुक्राङ्ग] मयूर । मोर ।

शुक्रा—सज्ञा स्त्री० [स० बसलोचन ।

शुक्राचार्य—सज्ञा पु० [स०] एक ऋषि जो दैत्यो के गुरु और महर्षि भृगु के पुत्र थे ।

विशेष—इनकी कन्या का नाम देवयानी था और पुत्रो का नाम पड तथा अमर्क था । देवगुरु वृहस्पति के पुत्र कच ने इनसे सजीवनी विद्या सीखी थी । दे० 'शुक्र'[२] ।

शुक्राना—सज्ञा पु० [फा० शुक्रानह्] दे० 'शुकराना' ।

शुक्राश्मरी—सज्ञा स्त्री० [सं०] अश्मरी रोग का एक भेद । वह पथरी जो वीर्य को स्खलित होते समय रोकने से उत्पन्न होती है ।

शुक्रिय—वि० [स०] १. शुक्र सबधी । शुक्र का । २ शुक्र को बढानेवाला । शुक्रल । ३. जिसमे शुद्ध रस हो ।

शुक्रिया—सज्ञा पुं० [फा० शुक्रियह्] धन्यवाद । कृतज्ञता प्रकाश ।
क्रि० प्र०—अदा करना ।

शुक्ल[1]—वि० [स०] १ सफेद । उजला । धवल । श्वेत । स्वच्छ । २ निष्कलक । बेदाग (को०) । ३ सात्विक (को०) । ४ यशस्कर (को०) । ५. तेजोमय । प्रकाशदीप्त (को०) ।

शुक्ल[2]—सज्ञा पु० १ ब्राह्मणो की एक पदवी । २ शुक्ल पक्ष । ३ सफेद रेड का वृक्ष । ४ आँखो का एक प्रकार का रोग जो उसके सफेद तल या डेले पर होता है । ५ कुद नामक पुष्पवृक्ष । ६ सफेद लोध । ७ नवनीत । मक्खन । ८ चाँदी । रजत । ९ धव वृक्ष । धौ । १०. एक योग । ११ विष्णु का एक नाम । १२ श्वेत रग (को०) । १३. शिव (को०) । १४ कपिल मुनि का नाम (को०) । १५ खट्टी काजी । १६ उज्वलता (को०) । १७ सफेद घव्वा (को०) । १८ वैशाख मास (को०) । १९ एक सवत्सर (को०) । २० बलभद्र । बलराम (को०) ।

शुक्लकठ, शुक्लकंठक—सज्ञा पुं० [स० शुक्लकण्ठ, शुक्लकण्ठक] मुर्गा । जलकाक ।

शुक्लकंद—सज्ञा पु० [स० शुल्ककन्द] १. भैसाकद । २ शंखालू । ३ अतीस ।

शुक्लकदा—सज्ञा स्त्री० [स० शुक्लकन्दा] १. सफेद अतीस । २ विदारी कंद ।

शुक्लक—सज्ञा पुं० [स०] १ शुक्ल पक्ष । २ श्वेत वर्ण (को०) । ३ खिरनी का वृक्ष ।

शुक्लकर्कट—सज्ञा पु० [स०] सफेद रग का केकडा ।

शुक्लकर्मा—वि० [स० शुक्लकर्मन] सात्विक कर्मोवाला । सुकर्मा (को०) ।

शुक्लकुष्ठ—सज्ञा पु० [स०] वह कोढ जिसमे शरीर पर सफेद चकत्ते पड जाते है ।

शुक्लक्षीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] काकोली ।

शुक्लक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] पवित्र स्थान । तीर्थस्थान ।

शुक्लक्षीरा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काकोली । २. वह जो श्वेत दुग्ध-युक्त हो (को०) ।

शुक्लजीव—सज्ञा पु० [स०] वज्री नामक पौधा (को०) ।

शुक्लता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुक्ल का भाव या धर्म । २. सफेदी । श्वेतता ।

शुक्लतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसे विष्णु-तीर्थ भी कहते है ।

शुक्लत्व—सज्ञा पु० [स०] १ शुक्ल का भाव या धर्म । शुक्लता । २ सफेदी । श्वेतता ।

शुक्लदुग्ध—सज्ञा पु० [स०] सिंघाडा ।

शुक्लदेह—वि० [स०] १ शुद्ध शरीरवाला । २ शरीर की तरह जिसका मन भी शुद्ध हो (को०) ।

शुक्लधातु—सज्ञा पु० [स०] खरिया नाम की मिट्टी ।

शुक्लध्यान—सज्ञा पुं० [स०] योग । उ०—जैन शास्त्रो मे शुक्ल ध्यान या योग के भी चार भेद है ।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २३४ ।

शुक्ल पक्ष—सज्ञा पुं० [स०] अमावस्या के उपरात प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष, जिसमे चद्रमा की कला प्रतिदिन बढती जाती है जिससे रात उजेली होती है । चाद्रमास मे कृष्ण पक्ष से भिन्न दूसरा पक्ष ।

शुक्लपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ क्षत्रक वृक्ष । २. कुद नामक फूल का पौधा । ३ मरुआ । सफेद तालमखाना । ५. पिंडार । ६ मैनफल ।

शुक्लपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हाथीशुडी नामक क्षुप । २ शीत-कुभी । शीतली लता । ३ कुद ।

शुक्लपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नागदती । २. कुद नामक फूल का पौधा ।

शुक्लपृष्ठक—सज्ञा पु० [स०] मेउडी । मंभालू । सिंधुप्रार ।

शुक्लफल—सज्ञा पुं० [स०] मदार । आक ।

शुक्लफला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शमी । छोकुर । २ अर्क । मदार ।

शुक्लफेन—सज्ञा पु० [स०] समुद्रफेन ।

शुक्लबल—सज्ञा पुं० [स०] जैनियो के अनुसार एक जिन देव का नाम ।

शुक्लमं [स० शुक्लमञ्जरी] सफेद निर्गुडी ।

शुक्ल [स० शुक्लमण्डल] आँखो का सफेद भाग जो ता है ।

शुक्लमेह—संज्ञा पुं० [सं०] चरक के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह रोग।

शुक्ल रोहित—संज्ञा पु० [सं०] १ श्वेत रोहितक का वृक्ष। २ श्वेत रोहित या रोहू नाम की मछली [को०]।

शुक्लल—वि० [स०] श्वेत। शुभ्र [को०]।

शुक्लला—संज्ञा स्त्री० [स०] उच्चटा। शुक्ला [को०]।

शुक्लवर्ग संज्ञा पु० [सं०] उच्चटा वस्तुओं का समूह। वैद्यक में श्वेत वस्तुओं का वर्ग। जैसे, शंख, शुक्ति, कौडी आदि [को०]।

शुक्लवस्त्र—वि० [स०] स्वच्छ वस्त्रधारी। श्वेत वस्त्रवाला [को०]।

शुक्लवायस—संज्ञा पु० [स०] बक। बगुला।

शुक्लवृक्ष—संज्ञा पुं० [स०] धौ या धव का वृक्ष।

शुक्लवृत्ति—संज्ञा स्त्री० [स०] १ जीवनयापन की शुद्ध पद्धति या विद्या। २ वह वृत्ति या आजीविका जो ब्राह्मण को ब्राह्मण द्वारा प्राप्त हो [को०]।

शुक्लशाल—संज्ञा पुं० [स०] १ गिरिनिंब। २ सफेद शाल का वृक्ष।

शुक्लांग—संज्ञा पुं० [स० शुक्लाङ्ग] चौबचीनी।

शुक्लांगा—संज्ञा स्त्री० [स० शुक्लाङ्गा] निर्गुंडी। शेफालिका।

शुक्लांगी—संज्ञा स्त्री० [स० शुक्लाङ्गी] निर्गुंडी। शेफालिका।

शुक्ला—संज्ञा स्त्री० [स०] १ सरस्वती। २ शर्करा। शक्कर। चीनी। ३ काकोली। ४ विदारी। ५ शूकरकंद। ६ श्वेत वर्ण की या श्वेत पुखराजवाली स्त्री (को०)। ७ निर्गुंडी। शेफालिका।

शुक्लाक्ष—संज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का पक्षी।

शुक्लाचार—वि० [स०] जिसका आचार व्यवहार शुद्ध हो [को०]।

शुक्लापांग—संज्ञा पु० [स० शुक्लापाङ्ग] मयूर पक्षी। मोर।

शुक्लाम्ल—संज्ञा पु० [स०] चूका या चुक्रिका नामक साग।

शुक्लायन—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुक्लार्क—संज्ञा पु० [स०] सफेद मदार।

शुक्लार्म—संज्ञा पु० [स० शुक्लार्मन्] आँखों का एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमें आँखो के सफेद भाग मे एक प्रकार का सफेद मस्सा हो जाता है जो धीरे धीरे बढता रहता है।

शुक्लाहिफेन—संज्ञा पु० [स०] पोस्ते का पेड।

शुक्लोदन—संज्ञा पुं० [स०] ललितविस्तर के अनुसार महाराज शुद्धोदन के भाई का नाम।

शुक्लोपला—संज्ञा स्त्री० [स०] चीनी। शर्करा।

शुक्लौदन—संज्ञा पु० [स०] अरवा चावल। भुजिया का उलटा।

शुक्षि—संज्ञा पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २ तेज। ३ अग्नि (को०)। ४ चित्र। तसवीर।

शुगुन—संज्ञा पु० [फ़ा०] शकुन। सगुन [को०]।

शुचा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ शोक। दुःख। रज। २ दे० 'शुचि'।

शुचि[1]—संज्ञा पु० [स०] १ अग्नि। आग। २ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ३ ग्रीष्म ऋतु। गरमी। ४ ज्येष्ठ मास। ५ आषाढ मास। ६ चंद्रमा। ७ शुक्र। ८ ब्राह्मण। ९ श्वेत वर्ण। सुफेद रंग (को०)। १०. शुद्ध बुद्धिवाला मंत्री या सलाहकार (को०)। ११ सूर्य की ऊष्मा। सौराग्नि (को०)। १२. भागवत के अनुसार अक्रूर के एक पुत्र का नाम। १३ कार्तिकेय। १४ शृंगार रस जिसका वर्ण श्वेत कहा गया है (को०)। १५ अर्क का वृक्ष। मदार (को०)। १६ निष्कपट मित्र या सखा (को०)। १७. अन्नप्राशन के समय होनेवाला हवन (को०)। १८ वह जो सद्वृत्तिवाला हो। सदाचारी व्यक्ति (को०)। १९ आकाश। व्योम। नभ (को०)।

शुचि[2]—संज्ञा स्त्री० १ पवित्रता। सफाई। स्वच्छता। शुद्धता। २ पुराणानुसार कश्यप की पत्नी ताम्रा के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या का नाम।

शुचि[3]—वि० १ शुद्ध। पवित्र। २ स्वच्छ। साफ। ३ निरपराध। निर्दोष। ४ दीप्तिमान्। चमकीला (को०)। ५ उज्वल। धवल (को०)। ६. जिसका अंत.करण शुद्ध हो। स्वच्छ हृदयवाला।

शुचिकर्मा—वि० [स० शुचिकर्मन्] पवित्र कार्य करनेवाला। सदाचारी। कर्मनिष्ठ।

शुचिका—संज्ञा स्त्री० [स०] महाभारत के अनुसार एक अप्सरा का नाम।

शुचिकापुष्प—संज्ञा पु० [स०] केवडा। केतकी।

शुचित—वि० [स०] विषण्ण। संतप्त। दुःखित। अवसन्न [को०]।

शुचितम—वि० [स०] अतिशय पवित्र। उ०—बिखर चुकी थी अवर तल में, सौरभ की शुचितम सुख धूल।—झरना, पृ० १४।

शुचिता—संज्ञा स्त्री० [स०] शुचि का भाव या धर्म। उ०—मैं शुचिता सरल समृद्धि।—अपरा, पृ० ७०।

शुचिद्रुम—संज्ञा पु० [स०] पीपल। अश्वत्थ वृक्ष।

शुचिप्रणी—संज्ञा पु० [स०] आचमन।

शुचिमणि—संज्ञा स्त्री० [स०] १ स्फटिक मणि। २. शिरोमणि। वह मणि जो सिर पर धारण की जाय [को०]।

शुचिमल्लिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] नेवारी। नवमल्लिका।

शुचिरोचि—संज्ञा पु० [स० शुचिरोचिस्] चंद्रमा।

शुचिवाच्—संज्ञा पुं० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शुचिवृक्ष—संज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन प्रवरकार ऋषि का नाम।

शुचिव्रत—वि० [स०] जिसका संकल्प या कार्य शुद्ध हो। पुण्यात्मा [को०]।

शुचिश्रवा—संज्ञा पुं० [स० शुचिश्रवस्] विष्णु का एक नाम।

शुचिष्मान्[1]—वि० [स० शुचिष्मत्] चमकीला। द्युतिमान्।

शुचिष्मान्[2]—संज्ञा पु० अग्नि [को०]।

शुचिस्—संज्ञा पुं० [स०] प्रकाश। ज्योति। दीप्ति [को०]।

शुचिस्मित—वि० [स०] [वि० स्त्री० शुचिस्मिता] जिसकी हँसी प्रसन्न और निश्चल हो [को०]।

शुची—वि० [स० शुचिन्] १. शुद्ध। पवित्र। २ स्वच्छ। साफ।

शुचीरता—सज्ञा स्त्री०, पु० [स०] वीर्य।

शुचीर्य—सज्ञा पु० [स०] वीर्य। शुक्र।

शुजा—वि० [अ० शुजाअ] बहादुर। शूरवीर। दिलेर।

शुजाअत—सज्ञा स्त्री० [अ०] वीरता। बहादुरी। शूरता। दिलेरी।

शुजात—सज्ञा स्त्री० [अ० शुजाअत] दे० 'शुजाअत'। उ०—देखे माँ जिनो की है मरियम शुजात। ओ बीवियाँ मे बीबी अहै पाकजात।—दक्खिनी०, पृ० ३५०।

शुटीर—सज्ञा पु० [स०] वीर व्यक्ति। योद्धा [को०]।

शुटीर्य—सज्ञा पु० [स०] शुक्र। वीर्य।

शुठि—अव्य० [हिं०] दे० 'सुठि'। उ०—पहप वाटिका प्रेम सोहावन। वह शोभा सुंदर शुठि पावन।—कबीर सा०, पृ० ३६८।

शुतर—सज्ञा पु० [फा० शुतुर] दे० 'शुतुर'। उ०—था उसके ऊपर लिवास मोटा, बालों से शुतर के ऐ।—दक्खिनी, पृ० २२८।

शुतरी—वि० [फा०] ऊँट का सा या भूरा। उ०—आज शाल के बदले वह शुतरी रग का ओवरकोट पहने थी।—पिजरे०, पृ० १४।

शुतुद्रि, शुतुद्रु—सज्ञा स्त्री० [स०] शतद्रु नदी। सतलज।

शुतुर—सज्ञा पुं० [फा०] ऊँट [को०]।

यौ०—शुतुरगाव। शुतुरदिल=डरपोक। बुजदिल। शुतुरनाल=एक प्रकार की तोप जो ऊँट पर लादी जाती थी। शुतुरमुर्ग। शुतुर सवार=साडनी सवार। ऊँटनी का सवार।

शुतुरगाव—सज्ञा पु० [फा] जिराफा नामक जतु। विशेष दे० 'जिराफा'।

शुतुरमुर्ग—सज्ञा पु० [फा०] अमेरिका, अफ्रिका और अरब के रेगिस्तान मे होनेवाला एक प्रकार का बहुत बडा पक्षी।

विशेष—यह प्रायः तीन गज तक ऊँचा होता है। इसकी गरदन ऊट की तरह बहुत लबी होती है। यह उड तो नही सकता, पर रेगिस्तान मे घोडे से भी अधिक तेज दौड़ सकता है। यह घास और अनाज खाता है। कभी कभी कंकड पत्थर भी खा जाता है। इसके पर बहुत दाम पर बिकते है। यह एक बार मे तीस से कम अडे नही देता।

शुतुर्मुर्ग—सज्ञा पु० [फा शुतुरमुर्ग] दे० 'शुतुरमुर्ग'।

शुद'—सज्ञा स्त्री० [हिं०] दे० 'सुदी'।

शुद'—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुध या सुधि] दे० 'सुध'। उ०—अबस जग के धधे मे तू शुद गँवाया। नही काम आएगा अपना पराया।—दक्खिनी०, पृ० २५४।

शुदनी—सज्ञा स्त्री० [फा०] वह बात जिसका होना पहले से ही किसी दैवी शक्ति से निश्चित हो। भावी। होनहार। नियति।

शुदा—वि० [फा०] जो हो चुका हो। जैसे, शादीशुदा। (शब्दात मे प्रयुक्त)।

शुद्ध'—वि० [स०] १. जिसमे किसी प्रकार की मैल या खोट आदि न हो। पवित्र। साफ। स्वच्छ।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग प्राय यौगिक बनाने मे शब्दो के आरंभ मे होता है। जैसे,—शुद्धबुद्धि, शुद्धमति।

२ सफेद। उज्वल। ३ जिसमे किसी प्रकार की अशुद्धि न हो। जो गलत न हो। ठीक। सही। ४. दोषरहित। निर्दोष। बेऐब। ५ जिसमे किसी तरह की मिलावट न हो। खालिस। ६ निष्कलक। बेदाग (को०)। ७. ईमानदार (को०)। ८ चुकाया हुआ ऋण (को०)। ९ केवल। मात्र। १० अद्वितीय (को०)। ११ अधिकृत (को०)। १२. अननुनासिक (को०)। १३ सपूर्ण। निरा। पूरा (को०)। १४ भोलाभाला। सीधा सादा (को०)। १५ जाँचा हुआ। परीक्षित (को०)। ताक्ष्ण। तेज किया हुआ (को०)।

शुद्ध'—सज्ञा पुं० १ सेंधा नमक। काली मिर्च। ३ चाँदी। रूपा। ४ गुडा नाम की घास। ५ सगीत मे राग के तीन भेदो मे से एक भेद। वह राग जिसमे और किसी राग का मेल न हो। जैसे,—भैरव, मेघ। ६ शिव का एक नाम। ७ चौदहवें मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक। ८. शुद्ध वस्तु (को०)। ९ शुक्ल पक्ष। सुदी (को०)। १०. वह मकान जो किसी एक ही वस्तु से निर्मित हो और जिसमे नाममात्र के लिये लकडी, ईंट, प्रस्तर का उपयोग किया हो (को०)।

शुद्धकर्मा—वि० [स० शुद्धकर्मन्] जिसके कर्म शुद्ध हो। पवित्र आचार, विचार, व्यवहारवाला [को०]।

शुद्धकोटि—सज्ञा स्त्री० [स०] वह त्रिभुज जिसके कोण सम हो। समकोण त्रिभुज [को०]।

शुद्धचैतन्य—सज्ञा पुं० [स०] शुद्ध आत्मा या चेतना [को०]।

शुद्धजघ—सज्ञा पु० [स० शुद्धजङ्घ] गर्दभ। गदहा।

शुद्धजड़—सज्ञा पु० [स० शुद्धजड] चौपाया। चतुष्पद [को०]।

शुद्धता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. शुद्ध होने का भाव या धर्म। पवित्रता। २. निर्दोषिता।

शुद्धत्व—सज्ञा पु० [स०] शुद्ध होने का भाव या धर्म। शुद्धता। पवित्रता।

शुद्धदंत'—वि० [स० शुद्धदन्त] श्वेत हाथीदाँत का बना हुआ। शुद्ध हाथीदाँत का। २. दे० 'शुद्धरद' [को०]।

शुद्धदत'—वि० [स०] जिसके दाँत श्वेत हो [को०]।

शुद्धधी—वि० [स०] पवित्र विचारोवाला। सच्चा। ईमानदार [को०]।

शुद्ध निसाणी—सज्ञा स्त्री० [स० शुद्ध+हिं० निसाणी] एक प्रकार का डिंगल छद जिसमे पहले तेरह मात्राएँ और फिर दस मात्राएँ इस प्रकार २३ मात्राएँ प्रत्येक पद मे होती है और तुकात मे दो गुरु होते हैं। उ०—कल तेरह फिर दशकला, दे माहरे गुरु दोय। कली एक ते बीस कल, शुद्ध निसाणा साय।—रघु० रू०, पृ० २६९।

शुद्धनेरि—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का नृत्य [को०]।

शुद्धपक्ष—सज्ञा पु० [स०] अमावस्या के उपरात की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष। शुक्ल पक्ष।

शुद्धपुरी—सज्ञा स्त्री० [स०] दक्षिण भारत के एक पवित्र तीर्थ का नाम।

शुद्धप्रतिभास—सज्ञा पुं० [स०] बौद्धो के अनुसार एक प्रकार की समाधि [को०]।

शुद्धबटुक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का दुर्गाभिषादक [को०]।

शुद्धबुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शुद्धधी'।

शुद्धबोध—वि० [स०] (वेदान्त) विशुद्ध ज्ञान से युक्त [को०]।

शुद्धभाव—वि० [स०] पवित्र विचारोवाला [को०]।

शुद्धमति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० शुद्धधी [को०]।

शुद्धमास—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक के अनुसार वह पकाया हुआ मास जिसके साथ मे हड्डी आदि न लगी हो।

शुद्धमुख—सज्ञा पु० [स०] भली भाति सिखाया हुआ घोडा [को०]।

शुद्धवश्य—वि० [स०] [वि० स्त्री० शुद्धवश्या] शुद्धवश मे उत्पन्न होनेवाला। पवित्र कुल का [को०]।

शुद्धवल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] गिलोय। गुडूच।

शुद्धवासा—वि० [स० शुद्धवासस्] स्वच्छ वस्त्राभूषणादि धारण करनेवाला [को०]।

शुद्धविष्कभक—सज्ञा पु० [स० शुद्धविष्कम्भक] विष्कभक का एक भेद जिसमे केवल सस्कृत बोलनेवाले पात्र ही हो [को०]।

शुद्धव्यूह—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार सेना का वह व्यूह जिसमे उरस्य मे हाथी, मध्य मे तेज घोडे और पक्ष मे व्याल (मतवाले हाथी) हो।

शुद्धशुक्र—सज्ञा पु० [स०] आँख की पुतली मे होनेवाला एक दोष [को०]।

शुद्धहार—सज्ञा पुं० [स०] कौटिल्य के अनुसार वह हार जिसमे एक शीर्षक मोती का हो।

शुद्धात—सज्ञा पु० [स० शुद्धान्त] १ अत पुर। रनिवास। जनानखाना। २ राजमहिषी। रानी (को०)।

यौ०—शुद्धातचर, शुद्धातचारी, शुद्धातरक्षक = दे० शुद्धातपालक'।

शुद्धातपालक—सज्ञा पु० [स० शुद्धान्तपालक] वह जो अत.पुर के द्वार पर पहरा देता हो। गृहदौवारिक।

शुद्धाता सज्ञा स्त्री० [स० शुद्धान्ता] रानी। राज्ञी।

शुद्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्रजव। कुटज बीज।

शुद्धाचार—सज्ञा पु० [स०] उत्तम व्यवहार। उ०—रखती थी प्रेमार्द्र सभी को वह अपने व्यवहारो से। पशु पक्षी भी सुख पाते थे उसके शुद्धाचारो स।—शकु० (आमुख)।

शुद्धात्मा—सज्ञा पु० [स० शुद्धात्मन्] १ शिव का एक नाम। २ वह जिसका हृदय पवित्र हो (को०)। ३ निखालिस या बिना मिली हुई शराब (को०)।

शुद्धानुमान—सज्ञा पु० [स०] अनुमान का एक भेद। केवलान्वयी। विशेष दे० 'अनुमान'।

शुद्धापह्नुति—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का अलकार जिसमे प्रकृत अर्थात् उपमेय को झूठ ठहराकर या उसका निषेध करके उपमान की सत्यता स्थापित की जाती है। अपह्नुति। उ०—शुद्धापह्नुति झूँठ लहि, साँची बात दुराहि। नैन नही ये मीन युग, छवि सागर के आहि।—भानु (शब्द०)।

शुद्धाभ—वि० [स०] पवित्र आभा से युक्त [को०]।

शुद्धाशय—वि० [स०] [वि० स्त्री० शुद्धाशया] जिसके विचार शुद्ध हो। जिसका हृदय पवित्र है (को०)।

शुद्धाशुद्धीय—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साम।

शुद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुद्ध होने का कार्य। २ सफाई। स्वच्छता। ३ वैदिक धर्म के अनुसार वह कृत्य या सस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है। जैसे—अशौच की समाप्ति पर शुद्ध होने के समय का कृत्य या किसी धर्मभ्रष्ट व्यक्ति के शुद्ध होकर पुन अपने धर्म मे आने के समय होनेवाला कृत्य या सस्कार। ४ दुर्गा का एक नाम। ५ दीप्ति। चमक। काति (को०)। ६ पवित्रता। पुण्यशीलता (को०)। ७ ऋण आदि का परिशोधन (को०)। ८ प्रतिहिंसा। प्रतिशोध (को०)। ९ छुटकारा (को०)। १० सचाई। यथार्थता (को०)। ११ समाधान। सशोधन (को०)। १२ व्यवकलन (को०)।

शुद्धिकद—सज्ञा पुं० [स० शुद्धिकन्द] लहसुन।

शुद्धिकर—वि० [स०] शुद्ध करनेवाला। पवित्र करनेवाला [को०]।

शुद्धिकरण—वि० [स० शुद्धि+करण] शुद्ध या पवित्र करनेवाला। उ०—पापो के शुद्धिकरण चारु, चरण धोए।—वेला, पृ० ४५।

शुद्धिकृत्—सज्ञा पु० [सं०] रजक। धोबी [को०]।

शुद्धिपत्र—सज्ञा पुं० [स०] १. वह व्यवस्थापत्र जो प्रायश्चित्त के पीछे शुद्धि के प्रमाण मे पडितो की ओर से दिया जाता था। (शुक्रनीति) २ वह पत्र जिसमे छपने के समय पुस्तक मे रही हुई अशुद्धियाँ बतलाई गई हो। वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुद्धिबोध—सज्ञा पु० [स० शुद्धि (=शुद्ध)+बोध] शुद्धि या पवित्रता का ज्ञान। उ०—शतशुद्धिबोध सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक।—अपरा, पृ० ४७।

शुद्धोद—सज्ञा पुं० [स०] समुद्र। सागर।

शुद्धोदन—सज्ञा पुं० [स०] एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो भगवान् बुद्धदेव के पिता थे और जिनकी राजधानी कपिलवस्तु मे थी।

विशेष—इस शब्द के साथ पुत्र या उसका वाचक कोई शब्द लगने से 'बुद्धदेव' अर्थ होता है।

शुद्धोदनि—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

शुन—सज्ञा पु० [स०] शुनम् (=श्वान) शब्द का समासप्रयुक्त रूप।

शुन पुच्छ—सज्ञा पु० [स०] १. अजीगर्त का एक पुत्र जो शुन शेप का भाई था। २ कुत्ते की पूँछ [को०]।

शुन शेप, शुन शेफ—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

विशेष—रामायण के अनुसार ये महाराज अंबरीष के यज्ञ मे बलि के लिये लाए गए थे। विश्वामित्र ने दयावश इनको अग्नि की स्तुति बतला दी थी। अग्निदेव इनकी स्तुति से इतने प्रसन्न हुए थे कि जब ये यज्ञकुड मे डाले गए, तब उसमे से अक्षत शरीर बाहर निकल आए। इसके उपरात ये महर्षि विश्वामित्र के यहाँ उनके पुत्रतुल्य होकर रहने लगे। देवीभागवत आदि कुछ पुराणो मे इनके सबध मे कई कथाएँ आई हैं। ऐतरेय ब्राह्मण (हरिश्चद्रोपाख्यान) के अनुसार ये अजीगर्त के पुत्र थे और हरिश्चद्र के यज्ञ मे वरुणदेव की बलि के लिये लाए गए थे। २ कुत्ते का लिंग [को०]।

शुनःसख—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जिनका उल्लेख महाभारत मे है।

शुन.स्कर्ण—संज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शुन[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ कुत्ता। २. वायु। ३. सुख। आराम।

शुन(पु)[2]—सज्ञा पु० [स० शून्य] दे० 'शून्य'। उ०—रामा हरिजन अगम गति रामनाम सब टेक। एकै माँहि अनेक है एक बिना शुन देक।—राम० धर्म०, पृ० २४१।

शुनक—सज्ञा पुं० [स०] १ कुत्ता। कुक्कुर। श्वान। २ छोटा श्वान। कुत्ते का बच्चा। पिल्ला (को०)। ३ महाभारत के अनुसार एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शुनकचचुका—सज्ञा स्त्री० [स० शुनकचञ्चुका] चेंच नाम का साग।

शुनकचिल्ली—सज्ञा स्त्री० [सं०] बथुआ।

शुनकी—सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्ते की मादा। कुतिया [को०]।

शुनहोत्र—सज्ञा पुं० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ भरद्वाज ऋषि के पुत्र का नाम जो ऋग्वेद के कई मत्रो के द्रष्टा हैं।

शुनामुख—सज्ञा पु० [स०] हिमालय के उत्तर ओर के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। अनुमान है कि यह नेपाल के उत्तर का प्रदेश है।

शुनाशीर, शुनासीर—सज्ञा पुं० [स०] १ इद्र। २ वायु और सूर्य। ३ इद्र और वायु। ४. उल्लू। कौशिक [को०]।

शुनासीरी—सज्ञा पु० [स० शुनासीरिन्] इद्र।

शुनासीरीय—वि० [स०] १ इद्र संबधी। इंद्र का। २ वायु देवता के सबध का। ३. सूर्य देवता के सबध का।

शुनि—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

शुनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कुष्माडी। २. कुतिया [को०]।

शुनीर—सज्ञा पु० [स०] कुतियो का समूह [को०]।

शुनीलागूल—सज्ञा पु० [स० शुनीलागूल] देवीभागवत के अनुसार शुन शेफ के छोटे भाई का नाम।

शून्य[1]—वि० [स०] खाली। शून्य। रिक्त [को०]।

शून्य[2]—सज्ञा पु० १ कुतियो का दल या समूह। २. दे० 'शून्य[1]' [को०]।

शुबहा—सज्ञा पु० [अ० शुब्हह्] १. सदेह। शक। २. धोखा। वहम। भ्रम।

क्रि० प्र०—करना। —निकालना। —मिटना। —मिटाना। —होना।

शुभकर—वि० [स० शुभङ्कर] १ शुभ या मगल करनेवाला। मगलकारक। शुभकारी। २. प्रसन्न करनेवाला [को०]।

शुभकरी—सज्ञा स्त्री० [स० शुभङ्करी] १ कल्याण करनेवाली, पार्वती। २ शमी वृक्ष।

शुभंयु—वि० [स०] १ मंगलान्वित। मगलमय। २. शुभ।

शुभ भावुक—वि० [स० शुभम्भावुक] सज्जित। भूषित। द्योतित। अलकृत [को०]।

शुभ[1]—वि० [स०] १. अच्छा। भला। उत्तम। सुखप्रद। जैसे—शुभ शकुन, शुभ समाचार, शुभ कार्य। २. कल्याणकारी। मगलप्रद। ३ सुदर। लावण्ययुक्त। लोना (को०)। ४ दीप्तियुक्त चमकीला (को०)। ५ भाग्यवान्। भाग्यशाली। ६ वेदप्रवण। वेदविद् (को०)। ७ जो प्रतिकूल न हो। अनुकूल (को०)।

शुभ[2]—सज्ञा पु० १ मगल। कल्याण। भलाई। २ विष्कभादि सत्ताईस योगो के अतर्गत एक योग।

विशेष—फलित ज्योतिष के अनुसार जो बालक इस योग मे जन्म लेता है, वह सब लोगो का कल्याण करनेवाला, पडितों का सत्सग करनेवाला और बुद्धिमान् होता है।

३ पदुमाख। एक सुगधित लकडी। पदमकाठ। ४ चाँदी। ५. बकरा। ६ वह जो अजन्मा हो। सर्वशक्तिमान् (को०)। ७ जल (को०)। ८ एक प्रकार का आभूषण (को०)।

शुभक—सज्ञा पु० [स०] सरसो का बीज। सर्षप [को०]।

शुभकथ—वि० [स०] कल्याणप्रद बातें कहनेवाला। अच्छी बात कहनेवाला।

शुभकर—वि० [स०] शुभ या मगल करनेवाला।

शुभकरी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शुभकर्म—सज्ञा पुं० [स०] १. शुभ काम। सत्कर्म। २. वह वृत्ति या आचार जो आदरणीय हो। [को०]।

शुभकर्मा—सज्ञा पुं० [स० शुभकर्मन्] १ वह जो शुभ कर्म करता हो। २. स्कद का एक अनुचर [को०]।

शुभकाम—वि० [स०] शुभ या कल्याण की कामना करनेवाला [को०]।

शुभकूट—सज्ञा पुं० [स०] सिंहल द्वीप या लका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर चरणचिह्न बने हुए हैं। ईसाई इन्हे हजरत आदम के चरण चिह्न और बौद्ध महात्मा बुद्ध के चरणचिह्न मानते हैं।

शुभकृत्—वि० [स०] शुभकर। मगल करनेवाला।

शुभकृत्स्न—सज्ञा पुं० [स०] बौद्ध देवताओ का एक वर्ग।

शुभगधक—सज्ञा पु० [स० शुभगन्धक] बोल नामक गधद्रव्य। गंधवाला।

शुभग—वि० [स०] १. भाग्यवान्। खुशकिस्मत। २. सुदर। सौंदर्ययुक्त [को०]।

शुभग—सज्ञा स्त्री० [स०] एक शक्ति का नाम [को०]।

शुभग्रह—संज्ञा पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति और शुक्र।

विशेष—ये दोनों ग्रह सौम्य और शुभ माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त बुध ग्रह भी, यदि पापयुक्त न हो तो, शुभ माना जाता है। आधे से अधिक चंद्र भी शुभ कहा गया है।

शुभचिंतक—वि० [सं० शुभचिन्तक] शुभ या भला चाहनेवाला। भलाई की इच्छा रखनेवाला। हितैषी। खैरख्वाह।

शुभजानि—वि० [सं०] जिसकी स्त्री सुंदर हो [को०]।

शुभतांति—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्याण। मंगल। शुभ [को०]।

शुभदंता—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभदन्ता] पुराणानुसार पुष्पदंत नामक हाथी की हथिनी का नाम।

शुभदंती—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके दाँत सुंदर हों [को०]।

शुभद—संज्ञा पुं० [सं०] अश्वत्थ वृक्ष। पीपल का पेड़।

शुभद[२]—वि० शुभप्रद। शुभदायक।

शुभदर्श, शुभदर्शन—वि० [सं०] १ जिसका मुँह देखने से कोई शुभ या मंगल बात हो। २. सुंदर। खूबसूरत।

शुभदायी—वि० [सं० शुभदायिन्] शुभ या मंगल करनेवाला। शुभप्रद। शुभद।

शुभदृष्टि—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभ+दृष्टि] १. शुभदर्शन। २ मुँह देखना। मुँह दिखाई। उ०—विवाह के बाद जब दूल्हा वधू के मुख से शुभदृष्टि के अवसर पर पहली बार घूँघट हटाता है।—जायसी०, पृ० ४३०।

शुभनामा—संज्ञा स्त्री० [सं०] किसी मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी, दशमी या पूर्णिमा तिथि।

शुभपत्रिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सरिवन। शालपर्णी।

शुभप्रद—वि० [सं०] शुभ या मंगल करनेवाला। शुभद। मंगलकारी।

शुभफलप्रद—वि० [सं०] सुफल देनेवाला। उ०—सकल शुभफलप्रद एक विधान, बाँध माँ, तंत्री के से गान।—गीतिका, पृ० ३५।

शुभमंगल—संज्ञा पुं० [सं० शुभमङ्गल] सौभाग्य। कल्याण [को०]।

शुभर⑤†—संज्ञा पुं० [?] गड्ढा। उ०—नउसर शुभर दशवँ चढिआ।—प्राण०, पृ० ८०।

शुभलक्षण—वि० [सं०] जिसके लक्षण शुभ हों। अच्छे लक्षणों से युक्त [को०]।

शुभलग्न—संज्ञा पुं० [सं०] शुभ समय। शुभ मुहूर्त [को०]।

शुभवक्त्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।

शुभवार्ता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शुभ समाचार [को०]।

शुभवासन—संज्ञा पुं० [सं०] मुख को सुवासित करनेवाली वस्तु [को०]।

शुभविमलगर्भ—संज्ञा पुं० [सं०] बोधिसत्व का नाम।

शुभव्रत—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो कार्तिक शुक्ला पंचमी को किया जाता है।

शुभशंसी—वि० [सं० शुभशंसिन्] शुभ करनेवाला। मंगल की सूचित करनेवाला [को०]।

शुभशैल—संज्ञा पुं० [सं०] तंत्र के अनुसार एक कल्पित पर्वत का नाम।

शुभसूचक—वि० [सं०] दे० 'शुभशंसी' [को०]।

शुभसूचना—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल्याण की सूचना [को०]।

शुभसूचनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम जिनकी पूजा का संकल्प किसी शुभ काम के होने की आशा से किया जाता है, और वह शुभ काम हो जाने पर जिनकी पूजा की जाती है। इनकी पूजा प्रायः स्त्रियाँ ही करती हैं।

शुभसूत्र संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'मंगलसूत्र' [को०]।

शुभस्थली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मंगल भूमि। पवित्र स्थान। २ यज्ञभूमि।

शुभस्रवा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शुभांग—वि० [सं० शुभाङ्ग] सुंदर। मनोज्ञ। लावण्ययुक्त [को०]।

शुभांगी—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभाङ्गी] १ कुबेर की पत्नी का नाम। २ कामदेव की पत्नी, रति। ३ महाभारत के अनुसार राजा कुरु की पत्नी का नाम। ४ सुंदरी स्त्री [को०]।

शुभांजन—संज्ञा पुं० [सं० शुभाञ्जन] दे० 'शोभांजन'।

शुभा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शोभा। कांति। छवि। २ इच्छा। ३. यशलोचन। ४ गोरोचन। ५ शमी। सफेद कीकर। ६ प्रियंगु। वनिता। ७ सफेद दूब। ८ बकरी। ९ अरारोट। १० पुरइन की पत्ती। ११ सोंठ। १२. सफेद बच। १३ असवरग। १४ पार्वती की एक सखी का नाम। १५ देवताओं की सभा। १६ प्रकाश। दीप्ति [को०]। १७. पुराणानुसार एक नदी का नाम।

शुभाकांक्षी—वि० [सं० शुभाकाङ्क्षिन्] शुभ की कामना करनेवाला। हित चाहनेवाला। हितैषी।

शुभांकिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

शुभाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] शिव [को०]।

शुभागमन—संज्ञा पुं० [सं०] सुख या मंगलसूचक आगमन या अवाई।

शुभाचल—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक कल्पित पर्वत का नाम।

शुभाचार—वि० [सं०] पवित्र आचरणवाला। सदाचारी [को०]।

शुभाचारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पार्वती की एक सखी का नाम।

शुभानना—संज्ञा स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री [को०]।

शुभानुष्ठान—संज्ञा पुं० [सं०] मंगल संबंधी कार्य।

शुभान्वित—वि० [सं०] कल्याणयुक्त। मंगलयुक्त [को०]।

शुभापांगा—संज्ञा स्त्री० [सं० शुभापाङ्गा] वह स्त्री जिसके नेत्रकोण शुभद हों। सुंदर स्त्री [को०]।

शुभावह—वि० [सं०] मंगलमय। मंगलजनक [को०]।

शुभाशंसा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शुभ या भला कहना। २. सद्विचार। सुविचार। उ०—आपकी शुभाशंसा से ही मैंने वह सब लिखा था।—नदी०, पृ० १००।

शुभाशीर्वाद—संज्ञा पुं० [सं०] मंगलकारक आशीर्वचन [को०]।

शुभाशीष—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'शुभाशीर्वाद'।

शुभाशुभ—संज्ञा पु० [स०] १ भला और बुरा। २ पवित्र और अपवित्र [को०]।

शुभिका—संज्ञा स्त्री० [स०] पुष्पमाला। पुष्पहार। फूलो का हार [को०]।

शुभेक्षण—वि० [स०] शुभ दृष्टि या नेत्रोवाला [को०]।

शुभेक्षणा—संज्ञा स्त्री० [स०] सुदर नेत्रोवाली स्त्री।

शुभेतर—वि० [स०] १ बुरा। खराब। २ अशुभ। अमागलिक [को०]।

यौ०—शुभेतरच्छति = अशुभ का दूरीकरण या मागलिकता।

शुभैषिणी—वि० [स०] शुभ चाहनेवाली। उ०—वह रचनात्मक साहित्य की प्रिय सखा, शुभैषिणी सविका और हृदय स्वामिनी कही जा सकती है।—नया०, पृ० २७।

शुभोदय—वि० [स०] भाग्यवाला। सौभाग्यपूर्ण [को०]।

शुभोदर्क—वि० [स०] जिसका अत आनददायक हो।

शुभ्र[1]—संज्ञा पुं० [स०] १ अबरक। २ साँभर नमक। ३. चाँदी। रूपा। ४ कसीस। ५ पद्माख। पदुमकाठ। ६. खस। उशीर। ७. चरबी। ८ रूपामक्खी। ९ सेंधा नमक। १०. बसलोचन। ११ फिटकिरी। १२ चीनी। १३ सफेद विधारा। १४. श्वेत वर्ण। श्वेत रग (को०)। १५ चदन (को०)। १६ स्वर्ग (को०)।

शुभ्र[2]—वि० १ श्वेत। सफेद। उ०—शोभजति दतरुचि शुभ्र उर मानिए।—केशव (शब्द०)। २. चमकता हुआ। चमकीला। देदीप्यमान (को०)।

शुभ्रकर—संज्ञा पु० [स०] १ चंद्रमा। २ कपूर [को०]।

शुभ्रतरु—संज्ञा पु० [स०] सिरिस का वृक्ष।

शुभ्रता—संज्ञा स्त्री० [स०] शुभ्र का भाव या धर्म। सफेदी। श्वेतता।

शुभ्रत्व—संज्ञा पुं० [स०] दे० 'शुभ्रता' [को०]।

शुभ्रदंत—वि० [स० शुभ्रदन्त] [वि० स्त्री० शुभ्रदन्ती] दे० 'शुभ्रदत्' [को०]।

शुभ्रदंती—संज्ञा स्त्री० [स० शुभ्रदन्ती] पुराणानुसार पुष्पदंत नामक दिग्गज की हथनी का नाम। दे० 'शुभदती'। २. सार्वभौम दिग्गज की हस्तिनी (को०)।

शुभ्रदत्—वि० [स०] [वि० स्त्री० शुभ्रदती] चमकीले दाँतवाला [को०]।

शुभ्रपर्ण—संज्ञा पु० [स०] सफेद पान।

शुभ्रपुष्प—संज्ञा पु० [स०] खस। उशीर।

शुभ्रभानु—संज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शुभ्ररश्मि—संज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

शुभ्रवेष्ट—संज्ञा पु० [स०] शाल्मली। सेमल।

शुभ्राशु—संज्ञा पु० [स०] १ चंद्रमा। २ कपूर।

शुभ्रा—संज्ञा स्त्री० [स०] १ बसलोचन। २ फिटकरी। ३ गगा (को०)। ४ स्फटिक (को०)। ५ शर्करा। सिता। चीनी (को०)।

शुभ्रालु—संज्ञा पुं० [स०] १ भैसा कद। महिष कंद। २ शखालु।

शुभ्रि—संज्ञा पुं० [स०] १ ब्रह्मा। २. सूर्य [को०]।

शुभ्रिका—संज्ञा स्त्री० [स०] शहद से तैयार की हुई चीनी। मधुशर्करा।

शुमार—संज्ञा पु० [फा०] १. गिनती। गणना। २ तखमीना। अदाज। ३ जोड। मीजान। ४ आतक या भय [को०]।

यौ०—शुमारकुनिंदा = दे० 'शुमारिंदा'। शुमारनवीस = हिसाब किताब करनेवाला।

शुमारिंदा—वि० [फा० शुमारिंदह्] शुमार करनेवाला। गणना करनेवाला। गणक [को०]।

शुमारी—प्रत्य० [फा०] गणना का काम। गिनने की स्थिति या क्रिया। जैसे, मर्दुमशुमारी।

शुमाल—संज्ञा पुं० [फा०] १. एक जाति। दे० 'सुमाली'। २ उत्तर दिशा। २. बायाँ हाथ [को०]।

शुमाली—वि० [फा०] उत्तरी। उत्तर का [को०]।

शुरफा—संज्ञा पु० [अ० शरीफ का बहु व०] शरीफ लोग। उ०—शुरफा व रूजला एक है दरबार मे मेरे। कुछ खास नही फौज तो इक आम है मेरा।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ७९१।

शुरवा—संज्ञा पु० [फा० शोरवा] दे० 'शोरवा'।

शुरू—संज्ञा पु० [अ० शुरुअ्] १ किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन। आरभ। प्रारभ। जैसे,—अब तुम यह काम जल्दी शुरू कर डालो। २ वह स्थान जहाँ से किसी वस्तु का आरंभ हो। जैसे,—शुरू से आखीर तक।

शुरूआत—संज्ञा स्त्री० [अ०] आरभ। प्रारभ [को०]।

शुल्क—संज्ञा पु० [स०] १ वह महसूल जो घाटो और रास्तो आदि पर राज्य की ओर से वसूल किया जाता है। २ वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले मे उसका पिता वर के पिता से लेता है।

विशेष—शास्त्र मे इस प्रकार का धन या शुल्क लेने का बहुत अधिक निषेध किया गया है।

३ विवाह के समय दिया जानेवाला दहेज। दायजा। वैवाहिक उपहार। ४ बाजी। शर्त। ५ किराया। भाडा। ६ मूल्य। दाम। ७ वह धन जो किसी कार्य के बदले मे लिया या दिया जाय। फीस। जैसे,— प्रवेश शुल्क। ८ फायदा। लाभ (को०)। ९ किसी सौदे को पक्का करने के लिये दिया गया अग्रिम धन (को०)। १० दूल्हे द्वारा दुलहिन को दी हुई भेंट (को०)। ११ श्वान (को०)। १२ कर। टैक्स। महसूल (को०)।

यौ०—शुल्कग्राहक, शुल्कग्राही = कर या शुल्क एकत्र करनेवाला। शुल्कखडन = शुल्क मोचण। शुल्कद = (१) वैवाहिक उपहार देनेवाला। (२) विवाहार्थी। शुल्कमोचण = वह जो करग्राहक को कर देने मे धोखा दे टैक्सचोर। कर चोर शुल्कशाला। शुल्कस्थान।

शुल्कता—संज्ञा स्त्री० [स०] शुल्क का भाव या धर्म।

शुल्कशाला—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ वह स्थान जहाँ पर घाट या मार्ग आदि का महसूल चुकाया जाता है। महसूल अदा करने की जगह।

शुल्कस्थान—सज्ञा पुं० [स०] वह स्थान जहाँ आने जानेवालो को शुल्क देना पडता हो।

शुल्काध्यक्ष—सज्ञा पुं० [स०] कौटिलीय अर्थशास्त्रानुसार चुगी का अध्यक्ष।

शुल्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शुल्व'।

शुल्ल—सज्ञा पु० [स०] १ रस्सी। २ ताँबा।

शुल्व—सज्ञा पु० [स०] १ ताँबा। २ रज्जु। रस्सी। ३ यज्ञकर्म। ४ आचार। ५ नियम। विधि (को०)। ६ जल का सामीप्य। जल की निकटता (को०)।

शुल्वज—सज्ञा पु० [स०] पीतल [को०]।

शुल्वल—सज्ञा पुं० [स०] सत। ऋषि [को०]।

शुल्वसूत्र—सज्ञा पु० [स०] एक सूत्रग्रथ जिसमे श्रौत कर्मकाडो से सबधित गणितीय आकलन दिए गए हैं।

शुल्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शुल्व'।

शुल्वारि—सज्ञा पुं० [स०] गधक।

शुल्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शुल्व' [को०]।

शुश्रू—सज्ञा स्त्री० [स०] बालक की सेवा शुश्रूषा करनेवाली, माता। माँ। जननी।

शुश्रूषक—सज्ञा पु० [स०] वह जो शुश्रूषा करता हो। सेवा करनेवाला। खिदमत करनेवाला। जैसे,—शिष्य, दास, अधीनस्थ कर्मचारी आदि।

शुश्रूषण—सज्ञा पु० [स०] [सज्ञा स्त्री० शुश्रूषणा] १ शुश्रूषा। शुश्रूषा करने का कार्य। सेवा करना। खिदमतगुजारी। २ सुनने की इच्छा (को०)। ३ कर्तव्यनिष्ठता। आज्ञा कारिता (को०)।

शुश्रूषा—सज्ञा स्त्री० [स०] [वि० शुश्रूष्य] १ सेवा। टहल। परिचर्या। २ खुशामद। ३ कथन। ४ किसी से कुछ सुनने की इच्छा। ५ समान (को०)। ६ कर्तव्यनिष्ठता (को०)।

यौ०—शुश्रूषा पद्धति। शुश्रूषा प्रणाली=सेवा की रीति या ढग।

शुश्रूषिता—वि० [सं० शुश्रूषितृ] सेवक। आज्ञापालक [को०]।

शुश्रूषी—वि० [स०] दे० शुश्रूषक।

शुश्रूषु—वि० [स०] १ सुनने को उत्सुक। श्रवणेच्छु। २. सेवा करने के लिये इच्छुक। नौकरी चाकरी चाहनेवाला। ३ आज्ञा पालन करनेवाला। हुक्म माननेवाला [को०]।

शुष—सज्ञा पुं० [स०] १ छिद्र। विवर। गर्त। २. शुष्क होना। शोष। सूखना [को०]।

शुषि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सूखना। २ गर्त। बिल। ३ ऐंठन। बल। मरोड। शिकन। ४ सर्प के विष के दाँत का सूराख [को०]।

शुषिका—सज्ञा स्त्री० [स०] शुष्कता। खुश्की। प्यास [को०]।

शुषिर'—सज्ञा पुं० [सं०] १ लौंग। २ अग्नि। ३. मूसा। चूहा। ४ बिल। गड्ढा। विवर। ५ आकाश। ६ वह बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता हो। जैसे, वंशी, अलगोजा, शहनाई आदि।

शुषिर'—वि० छिद्रयुक्त। छेदवाला। सूराखदार [को०]।

शुषिरा—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ नदी। दरिया। २ धरणी। ३ नलिका या नली नाम का गंधद्रव्य।

शुषिल—सज्ञा पुं० [स०] वायु। हवा [को०]।

शुषेण—सज्ञा पु० [सं०] दे० 'सुषेण'।

शुष्क'—वि० [स०] १ जिसमें किसी प्रकार की नमी या गीलापन न रह गया हो। जो किसी प्रकार सुखा लिया गया हो। आर्द्रता-रहित। सूखा। खुश्क। जैसे,—शुष्क काष्ठ। २ जिसमे जल या और किसी तरल पदार्थ का व्यवहार न किया गया हो। ३. जिसमे रस का अभाव हो। नीरस। रसहीन। ४ जिससे मनोरजन न होता हो। जिसमे मन न लगता हो। जैसे,—शुष्क विषय। ५ जिसका कुछ परिणाम न निकलता हो। निरर्थक। व्यर्थ। जैसे,—शुष्क वादविवाद। ६ जिसमें सौहार्द्र आदि कोमल मनोवृत्तियाँ न हो। स्नेह आदि से रहित। निर्मोही। ७ जो बिलकुल पुराना और बेकाम हो गया हो। जीर्ण शीर्ण। ८ निराधार। निष्कारण (को०)। ९ झुर्रीदार। सिकुडन वाला। कृश (को०)।

शुष्क'—सज्ञा पुं० १ काला अगर। कालागुरु। २. कोई भी सूखी हुई वस्तु या पदार्थ (को०)।

शुष्कक—वि० [स०] शुष्क। सूखा हुआ। क्षीण [को०]।

शुष्ककलह—सज्ञा पुं० [सं०] १ व्यर्थ या निराधार झगडा। अकारण सघर्ष। २ छद्म सघर्ष [को०]।

शुष्ककास—सज्ञा पु० [स०] सूखी खाँसी [को०]।

शुष्कक्षेत्र—सज्ञा पुं० [स०] वितस्ता नदी के किनारे के एक पर्वत का नाम।

शुष्कगर्भ—सज्ञा पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार स्त्रियो का एक रोग जिसमे वायु के प्रकोप से स्त्रियो का गर्भ सूख जाता है।

शुष्कगान—सज्ञा पु० [सं०] किसी भी प्रकार के उपवाद्य या सह ध्वनि के साथ गाना [को०]।

शुष्कगोमय—सज्ञा पुं० [सं०] कडा। उपला [को०]।

शुष्कचर्चण—सज्ञा पु० [स०] निरर्थक बातचीत [को०]।

शुष्कता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ शुष्क होने का भाव या धर्म। सूखापन।

शुष्कतर्क—सज्ञा पु० [स०] मात्र बहस। बेकार बहस।

शुष्कतोय—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शुष्कतोया] जिसका जल सूख गया हो।

शुष्कपाक—सज्ञा पुं० [स०] दे० शुष्काग्निपाक [को०]।

शुष्कमत्स्य—सज्ञा पु० [स०] सूखी या सुखाई हुई मछली [को०]।

शुष्कमास—सज्ञा पु० [स०] सुखाया हुआ मास।

शुष्करुदित—सज्ञा पु० [स०] इस प्रकार रोना जिसमे आँख से आँसू न गिरे [को०]।

शुष्करेवती—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पुराणानुसार एक मातृका का नाम। २ एक प्रकार का बालग्रह जिसके प्रकोप से बालको के अग सूखने या क्षीण होने लगते है।

शुष्कल—सज्ञा पु० [स०] १ मास। गोश्त। २ वह जो माम खाता हो। मासभक्षी। ३, सूखा माम (को०)।

शुष्कली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ माम। गोश्त। २ सूखा मास (को०)।

शुष्कवृक्ष—सज्ञा पुं० [स०] धव का वृक्ष। धौ।

शुष्कवैर—सज्ञा पु० [सं०] अकारण वैर। निराधार शत्रुता [को०]।

शुष्कव्रण सज्ञा पुं० [स०] १ स्त्रियो का योनिकद नामक रोग। विशेष दे० 'योनिकंद'। २ सूखा हुआ घाव (को०)।

शुष्काग[1]—सज्ञा पुं० [स० शुष्काङ्ग] धव का वृक्ष। धौ।

शुष्काग[2]—वि० कृश शरीरवाला। दुबला पतला [को०]।

शुष्कागी—सज्ञा स्त्री० [स० शुष्काङ्गी] १. प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी। २ गोह। गोधिका।

शुष्का—सज्ञा स्त्री० [स०] स्त्रियो का योनिकंद नामक रोग।

शुष्काक्षिपाक—सज्ञा पु० [स०] आँखो का एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमे आँखो की पलकें कठोर और रूखी हो जाती हैं और उनके खोलने बद करने मे पीडा होती है, आँखो मे जलन होती है और साफ नही देख पडता।

शुष्कार्द्र—सज्ञा पु० [स०] सूखा अदरक। सोठ।

शुष्कार्द्रक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शुष्कार्द्र' [को०]।

शुष्कान्न—सज्ञा पु० [स०] भूसा मिला हुआ अन्न [को०]।

शुष्कार्श—सज्ञा पु० [स० शुष्कार्शस्] आँखो का एक प्रकार का रोग जिसमे आँख की पलको के भीतर खरखरी और कठिन फुसियाँ उत्पन्न हो जाती है।

शुष्काशुष्क—सज्ञा पुं० [स०] समुद्रफेन।

शुष्ण—सज्ञा पु० [स०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३. बल। शक्ति। ताकत। ४ एक राक्षस (को०)।

शुष्म—सज्ञा पु० [स०] १ तेज। पराक्रम। २ अग्नि। ३ सूर्य। ४ वायु। ५. पक्षी। चिडिया। ६ प्रकाश। कांति (को०)। ७. लौ। लपट (को०)।

शुष्मा—सज्ञा पु० [स० शुष्मन्] १ अग्नि। २ चीता। चित्रक। ३. तेज। पराक्रम। ४ प्रकाश। कांति (को०)।

शुष्मी—वि० [स० शुष्मिन्] १. शक्तिशाली। बलवान्। २ बहुत जल्दी भडक जानेवाला। जैसे, घोडा, साँड, हाथी। ३. प्रतिभाशाली। मेधावी [को०]।

शुहदा—वि० [अ० शहीद का बहु व०] गुडा। बदमाश। चरित्रहीन। ऐश आराशी मे रुपया उडानेवाला। दे० 'शोहदा'। उ०—महाप्रालसी झूठे शुहदे बेफिकरे बदमासी।—भारतेंदु ग्र०, भा० १, पृ० ३३३।

यौ०—शुहदापन, शुहदापना = शोहदापन।

शुहरत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ शोहरत। प्रसिद्धि। ख्याति। २ दे० 'शोहरत'।

यौ०—शुहरतपसंद, शुहरतपरस्त = प्रसिद्धि का भूखा। नामवरी का इच्छुक। यशलोलुप।

शूडल—सज्ञा पु० [दश०] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष।

विशेष—इसके हीर की लकडी मजबूत, कडी और लाली लिए होती है और अच्छे दामो पर बिकती है। यह इमारतो और पुलो के बनाने के काम मे आती है। इसकी छाल बहुत पतली होती है और उतारने से बारीक कागज के वरको की तरह उतरती है। बगाल के सुदरवन मे यह पेड बहुत होता है।

शूक—सज्ञा पु० [स०] १ अन्न की बाल या सीका जिसमे दाने लगते हैं। २ यव। जौ। ३. एक प्रकार का कीडा। ४. एक प्रकार का तृण जिसे शूकडी कहते हैं और जो दुर्बल पशुओ के लिये बहुत बलकारक माना जाता है। ५. एक प्रकार का रोग जो लिंगवर्धक औषधो के लेप के कारण होता है।

विशेष—इसमे लिंग पर कई प्रकार की फुसियाँ और घाव आदि हो जाते है। यह रोग १८ प्रकार का माना गया है। यथा—सर्पपिका, अष्ठीलिका, ग्रथित, कुभिका, अलजी, मृदित, समूढपीडका, अधिमथ, पुष्करिका, स्पर्शहानि, उत्तमा, शतपोनका, त्वक्पाक, शोणितार्बुद, मासार्बुद, मासपाक, विद्रधि और तिलकालक।

५. यवादि की बाल का अगला, नुकीला भाग, टूँड। ६ रेशा या रोआँ जो नुकीला हो (को०)। ७ नोक। नुकीला अग्रभाग (को०)। ८. मृदुता। करुणा। कोमलता (को०)। ९ श्मश्रु। दाढी (को०)। १० शोक। दु ख (को०)।

शूकक—सज्ञा पुं० [स०] १. शरीर का रस नामक धातु। २ टूँड (को०)। ३. दया। दयालुता (को०)। ४. एक प्रकार का अन्न (को०)। ५ पावस। प्रावृट्। वर्षा (को०)।

शूककीट, शूककीटक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रोएँदार कीडा।

शूकज—सज्ञा पु० [स०] जवाखार। यवक्षार।

शूकतृण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की घास जो दुर्बल पशुओ के लिये बहुत बलकारक मानी जाती है। इसे शूकडी या चोरहुली भी कहते हैं।

शूकदोष—सज्ञा पु० [स०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक'-५।

शूकधान्य—सज्ञा पु० [स०] वह अन्न जिसके दाने बालो या सीको में लगते है। जैसे, गेहूँ, जौ आदि।

शूकपत्र—सज्ञा पु० [स०] वह साँप जिसमे विष न होता हो। जैसे,—पानी का साँप या डेडहा।

शूकपाक्य—सज्ञा पु० [स०] जवाखार। शूकज।

शूकपिंडि, शूकपिंडी—सज्ञा स्त्री० [स० शूकपिण्डि, शूकपिण्डी] कपिकच्छु। किवाच। कौंछ।

शूकर—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० शूकरी] १ सूअर। वाराह। उ०—भजन बिनु कूकर शूकर जैसो।—सूर (शब्द०)। २ विष्णु का तीसरा अवतार। वाराह अवतार। विशेष दे० 'वाराह'।

शूकरकद—संज्ञा पु० [सं० शूकरकन्द] वाराही कद।

शूकरक्षेत्र संज्ञा पु० [सं०] एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। उ०—मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा जो शूकरखेत। समुझी नहिं तस बालपन तब अति रहेउँ अचेत।—तुलसी (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, भगवान् विष्णु ने वाराह अवतार धारण करने पर हिरण्यकेशी (हिरण्याक्ष) को यहीं मारा था। आजकल यह स्थान सोरो नाम से प्रसिद्ध है।

शूकरदष्ट्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसे सूअरदाढ़ कहते हैं।

विशेष—यह रोग प्राय बालकों को होता है। इसमें दाह सहित सूजन हो जाती है, जो पकती, पीडा करती और खुजलाती है, और इसके विकार से ज्वर उत्पन्न होता है।

शूकरपादिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कोलशिंबी। सेम की फली।

शूकरशिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकरशिम्बी] सेम की फली।

शूकराक्रांता—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकराक्रान्ता] वराहक्रांता। खैरी साग।

शूकरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सूअर की मादा। सूअरी। वाराही। २ खैरी साग। वाराहक्रांता। वाराहीकंद। गेंठी। ४ सुईस या सूँस नामक जलजंतु। ५ विधारा।

शूकरेष्ट संज्ञा पुं० [सं०] १ कसेरू। २ मोथा। मुस्तक।

शूकरोग—संज्ञा पुं० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक'—५।

शूकल—संज्ञा पु० [सं०] वह घोडा जो जल्दी चौंक या भडक जाता हो।

शूकवती—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। किवाँच। कौंछ।

शूकवान्—वि० [सं० शूकवत्] १ नुकीला। टूँडवाला। २ दाढीवाला [को०]।

शूकशिंबा—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकशिम्बा] कपिकच्छु। किवाँच। कौंछ।

शूकशिंबिका, शूकशिंबी—संज्ञा स्त्री० [सं० शूकशिम्बिका, शूकशिम्बी] कौंछ। केवाँच।

शूकशिखा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूकशिंबा। केवाँच [को०]।

शूका—संज्ञा स्त्री० [सं०] कपिकच्छु। केवाँच। कौंछ।

शूकाक्ष—संज्ञा पुं० [सं०] सिरिस। शिरीष।

शूकाट्य—संज्ञा पुं० [सं०] शूक या शूकरी नामक तृण।

शूकापट्ट—संज्ञा पु० [सं०] कहरुवा नामक गोंद जो बरमा की खानों से निकलता और औषध के काम आता है। तृणमणि। विशेष दे० 'कहरुआ—१'।

शूकामय—संज्ञा पुं० [सं०] शूक नामक रोग। विशेष दे० 'शूक—५'।

शूकी—वि० [सं० शूकिन्] श्मश्रुल। शूकवाला। टूँडदार [को०]।

शूकुल—संज्ञा पु० [सं०] १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार की सुगंधित घास।

शूक्त—संज्ञा पुं० [सं० शुक्त] सिरका।

शूक्ष्म—वि० [सं० सूक्ष्म] दे० 'सूक्ष्म'।

शूची—संज्ञा स्त्री० [सं० सूची] सूई। उ०—भक्ति मार तव करत मैं, शंकर सो परिहाम। शूची छिद्र समानवर, देहु नाथ कैलास।—रघुराज (शब्द०)।

शूट—

शूटिंग—१ फिल्म की शूटिंग। २ गोलियाँ आदि चलना। शूट करना। लक्ष्य बनाना।

शूटिंग स्टिक—संज्ञा स्त्री० [अं०] छापेखाने में काम आनेवाली एक लकडी जो प्राय एक बालिश्त लंबी होती है।

विशेष—इसके मुँह पर एक गड्ढेदार पीतल की सामी होती है। इसी में गुल्ली अडाकर ठोकते हैं जिससे यह मूँजे पर चढकर टाइप को कस देती है। किसी किसी में स्टिक सामी नहीं भी होती।

शूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] अभिवृद्धि। बढती [को०]।

शूतिपर्ण—संज्ञा पुं० [सं०] अमलतास। आरग्वध वृक्ष। धनबहेडा।

शूद्र—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्री] १ प्राचीन आर्यों के लोकविधान के अनुसार चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण।

विशेष—इनका कार्य अन्य तीन वर्णों की सेवा करना और शिल्पकला के काम करना माना गया है। यजुर्वेद में शूद्रों की उपमा समाजरूपी शरीर के पैरों से दी गई है, इसीलिये कुछ लोग इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के पैरों से मानते हैं। इनके लिये गृहस्थाश्रम के अतिरिक्त और किसी आश्रम में जाने का निषेध है। आजकल इनमें से कुछ लोग अछूत और अंत्यज समझे जाते हैं। साधारणत कोई इस वर्ण के लोगों का अन्न ग्रहण नहीं करता।

पर्या०—अवर वर्ण। वृषल। दास। पादज। अंत्यजन्मा। जघन्य। द्विजसेवक। अंत्यवर्ण। द्विजदास। उरासक। जघन्यज।

२. शूद्र जाति का पुरुष। ३ नैऋत्य कोण में स्थित एक देश का नाम। ४ बहुत ही खराब। निकृष्ट। ५ सेवक। दास।

शूद्रक—संज्ञा पुं० [सं०] १. विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' का रचयिता महाकवि। २ शूद्र। (डिं०)। ३ शूद्र जाति का एक व्यक्ति जिसका नाम शवक था।

विशेष—कहते हैं, यह रामचद्र के राजत्व काल में था। एक बार एक ब्राह्मण का पुत्र इसकी तपस्या के कारण मर गया। उसने जाकर रामचद्र जी के यहाँ प्रार्थना की। नारद आदि ऋषियों ने कहा कि इस राज्य में कोई शूद्र तपस्या कर रहा है, उसी के फलस्वरूप इस ब्राह्मण का पुत्र इसके सामने मरा है। इसपर रामचद्र जी ने इसका पता लगवाया और तब इसका सिर कटवा डाला।

शूद्रकल्प—वि० [सं०] शूद्र के समान। शूद्र तुल्य [को०]।

शूद्रकृत्य—संज्ञा पुं० [सं०] शूद्र का कार्य। शूद्रों के लिये विहित कर्तव्य [को०]।

शूद्रकेश्वर—संज्ञा पु० [सं०] एक शिवलिंग का नाम।

शूद्रक्षेत्र—सज्ञा पु० [सं०] वह भूमि जिसका रग काला हो और जिसमे अनेक प्रकार की घास, तृण, बबूर के वृक्ष तथा नाना प्रकार के धान उत्पन्न हो।

शूद्रघ्न—वि० [स०] शूद्र की हत्या करनेवाला (को०)।

शूद्रजन्मा—वि० [स० शूद्रजन्मन्] शूद्र से उत्पन्न होनेवाला (को०)।

शूद्रता—सज्ञा स्त्री० [स०] शूद्र का भाव या धर्म। शूद्रत्व। शूद्रपन।

शूद्रत्व—सज्ञा पुं० [स०] शूद्र होने का भाव या धर्म। शूद्रता। शूद्रपन।

शूद्रद्युति—सज्ञा पु० [स०] नीला रंग जो रगो मे शूद्र वर्ण का माना जाता है। उ०—वैश्य श्वेत मिलि पीत होत घृत बरण रुचिर अति। हरित श्याम मिलि होइ शूद्रद्युति तरु तमाल प्रति।—गुरुदास (शब्द०)।

शूद्रपति—सज्ञा पु० [स०] शूद्रो का सरदार। उ०—आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई। लागेउ करन शूद्रपति सोई।—सबलसिंह (शब्द०)।

शूद्रप्रिय—सज्ञा पु० [स०] पलाडु। प्याज।

शूद्रप्रेष्य—सज्ञा पु० [स०] वह ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी या सेवा करता हो।

शूद्रभूयिष्ठ—वि० [स०] जहाँ शूद्रो की संख्या अधिक हो। (राष्ट्र) जो अत्यधिक शूद्रो से युक्त हो (को०)।

शूद्रभोजी—वि० [स० शूद्रभोजिन्] शूद्र के यहाँ भोजन करनेवाला (को०)।

शूद्रवर्ग—सज्ञा पुं० [स०] शूद्रश्रेणी या सेवक वर्ग (को०)।

शूद्रवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] शूद्र का आचरण या पेशा (को०)।

शूद्रशासन—सज्ञा पु० [स०] १ शूद्र राज्य। २ शूद्रो के लिये निर्धारित आचार व्यवहार। ३ शूद्र द्वारा लिखा गया प्रतिज्ञापत्र (को०)।

शूद्रसेवन—सज्ञा पु० [स०] शूद्र की सेवा।

शूद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्राणी।

यौ०—शूद्रापरिणयन=दे० 'शूद्रावेदन'। शूद्राभार्य=जिसकी भार्या शूद्र जाति की हो। शूद्रावेदन। शूद्रावेदी। शूद्रासुत।

शूद्राणी—सज्ञा स्त्री० [स०] शूद्र की स्त्री।

शूद्रान्न—सज्ञा पु० [स०] १. शूद्र से प्राप्त होनेवाली जीविका। २, शूद्र वर्ण के व्यक्ति द्वारा दिया हुआ अन्न आदि (को०)।

शूद्रार्त्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] प्रियगु वृक्ष। वनिता।

शूद्रावेदन—सज्ञा पुं० [स०] शूद्रा स्त्री के साथ विवाह करना (को०)।

शूद्रावेदी—सज्ञा स्त्री० [स० शूद्रावेदिन्] उच्च वर्ण का वह व्यक्ति जिसने शूद्र जाति की किसी स्त्री के साथ विवाह कर लिया हो। मनु के अनुसार ऐसा व्यक्ति पतित माना जाता है।

शूद्रासुत—सज्ञा पुं० [स०] वह व्यक्ति जो किसी उच्च वर्ण के व्यक्ति के वीर्य से शूद्रा माता के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो।

शूद्राह्निक—सज्ञा पुं० [स०] शूद्र का दैनिक कृत्य (को०)।

शूद्री—सज्ञा स्त्री० [स०] शूद्र की स्त्री। शूद्रा। उ०—सो शूद्रो पुनि जन्यो कुमारा। नाम तासु कनि कृष्ण उचारा।—रघुराज (शब्द०)।

शून—वि० [स०] १ शून्य। २ सूजा हुआ। शोथयुक्त। फूला हुआ (को०)। ३ वर्धित। बढा हुआ (को०)।

शूनकचचु—सज्ञा पु० [स० शूनकचञ्चु] क्षुद्रचचु या छोटा चँच नाम का साग।

शूना—सज्ञा स्त्री० [स०] १. गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान मे अनेक जीवो की हत्या हुआ करती है। जैसे,—चूल्हा, चक्की, पानी का बरतन आदि।

विशेष—इन स्थानो मे जीवो की जो हत्या होती है, उसी के दोष के परिहार के लिये ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ और पितृयज्ञ करने की आवश्यकता होती है। विशेष दे० 'पचसूना' और 'पच महायज्ञ'।

२ तालू के ऊपर की छोटी जीभ। छोटी जीभ। गलशुंडी। ३ थूहर। स्नुही। ४ वधस्थान। बूचडखाना (को०)।

शून्य'—सज्ञा पुं० [स०] १ वह स्थान जिसमे कुछ भी न हो। खाली स्थान। २ आकाश। ३ एकात स्थान। निर्जन स्थान। ४. विंदु। बिंदी। सिफर। ५ अभाव। राहित्य। कुछ न होना। जैसे,—तुम्हारे हिस्से मे शून्य है। ६. स्वर्ग। ७. विष्णु। ८ ईश्वर। उ०—कहै एक तासा शिवे शून्य एकै। कहै काल एकै महा विष्णु एकै। कहैं अर्थ एकै परब्रह्म जानो। प्रभा पूर्ण एकै सदा शून्य मानो।—केशव (शब्द०)। ९ कान का एक आभूषण (को०)।

शून्य'—वि० १. जिसके अदर कुछ न हो। खाली। २. निराकार। उ०—रूप रेख कछु जाके नाही। तौ का करब शून्य के माही।—विश्राम (शब्द०)। ३ जो कुछ न हो। असत्। ४ विहीन। रहित। जैसे,—सज्ञाशून्य।

विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग यौगिक शब्द बनाने मे अत मे होता है। जैसे, विवेकशून्य।

५. एकात। निर्जन (को०)। ६ खिन्न। उदास। उत्साहहीन (को०)। ७. तटस्थ। निरपेक्ष (को०)। ८. निर्दोष (को०)। ९. अर्थहीन। निरर्थक (को०)।

शून्यगर्भ'—सज्ञा पु० [स०] पपीता नामक फल।

शून्यगर्भ'—वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। २ जिसमे कुछ भी सार या तत्व न हो। ३ वेवकूफ। मूर्ख।

शून्यता—सज्ञा स्त्री० [स०] शून्य का भाव या धर्म। शून्यत्व।

शून्यत्व—सज्ञा पु० [स०] शून्य का भाव या धर्म। शून्यता।

शून्यदृष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] सूनी निगाह। उदास दृष्टि (को०)।

शून्यपथ—सज्ञा पु० [स०] १ अतरिक्ष। आकाश। व्योम। २. सूना रास्ता। निर्जन मार्ग (को०)।

शून्यपदवी—सज्ञा स्त्री० [स०] ब्रह्मरध्र।

शून्यपाल—संज्ञा पु० [सं०] वह जो किसी के रिक्त स्थान पर अस्थायी रूप से काम करता हो। एवजी।

शून्यबहरी—संज्ञा स्त्री० [सं० शून्य+बहरी?] पाँव का सुन्न हो जाना या उसमें झुनझुनी चढना।

शून्यमध्य—संज्ञा पु० [सं०] वह पदार्थ जिसके बीच का भाग खाली हो। जैसे,—नल, नरसल नरकट।

शून्यमनस्क—वि० [सं०] अन्यमनस्क। अनमना [को०]।

शून्यमना—वि० [सं० शून्यमनस्] दे० 'शून्यमनस्क' [को०]।

शून्यमय—वि० [सं०] निष्फल। व्यर्थ [को०]।

शून्यमूल'—संज्ञा पु० [सं०] सेना की एक प्रकार की सजावट।

शून्यमूल'—वि० कौटल्य के अनुसार (सेना) जिसका वह केंद्र नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते जाते हों।

शून्यवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का एक सिद्धांत जिसमें ईश्वर या जीव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता।

शून्यवादी—संज्ञा पु० [सं० शून्यवादिन्] १ शून्यवाद का माननेवाला, अर्थात् वह व्यक्ति जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो।—हिंदु० सभ्यता, पृ० २२७। २ बौद्ध। ३ नास्तिक।

शून्यहर—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्रकाश। उजाला। २ सोना। स्वर्ग।

शून्यहस्त—वि० [सं०] जिसका हाथ खाली हो। रिक्तपाणि [को०]।

शून्यहृदय—वि० [सं०] १ अनमना। शून्यमना। २ खुले हृदयवाला। विशाल हृदय का। सदेहरहित [को०]।

शून्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नलिका या नली नाम का गंधद्रव्य। २ वंध्या स्त्री। बाँझ औरत, जिसे कोई संतान न होती हो। ३ नरकट। नरसल (को०)। ४ थूहर या सेंहुड़ का वृक्ष।

शून्यालय—संज्ञा पु० [सं०] वह स्थान जहाँ कोई न हो। एकांत स्थान।

शून्याशून्य—संज्ञा पु० [सं०] जीवन्मुक्ति।

शूप—संज्ञा पु० [सं० शूर्प] बेंत, सीक या बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा चौड़ा पात्र जिसमें रखकर अन्न आदि पछोड़ा जाता है। सूप। फटकनी। उ०—तेहि बन शूप बनावनहारे। बेत लेन इक समय सिधारे।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—इसकी लंबाई के बल में एक सिरे पर कुछ ऊँची लंबी बाढ़ होती है, और दूसरा सिरा बिलकुल खाली रहता है। चौड़ाई के बल में दोनों ओर कुछ ऊँची ढालुआँ बाढ़ होती है जो बिलकुल आगे के सिरे पर पहुँचकर खतम हो जाती है।

शूपकार—संज्ञा पु० [सं० शूर्पकार] दे० 'सूपकार'।

शूम—संज्ञा पु० [अ०] 'सूम'।

शूरगम—संज्ञा पु० [सं० शूरङ्गम] १. एक प्रकार का समाधि। २ एक बोधिसत्व [को०]।

शूरमन्य—वि० [सं० शूरम्मन्य] अपने आपको वीर समझनेवाला [को०]।

शूर'—संज्ञा पु० [सं०] १ वीर। बहादुर। सूरमा। २. योद्धा। भट। सिपाही। ३. सूर्य। ४. सिंह। ५. सुअर। शूकर। ६. चीता। ७ शाल। साखू। ८ बटेर। लकुच। ९ मसूर। मांगल्य। १० चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ११ आक। मदार। १२. कृष्ण के पितामह का नाम। १३ विष्णु का एक नाम। १४ जैन हरिवंश के अनुसार उत्तर दिशा के एक देश का नाम। १५ श्वान। कुत्ता (को०)। १६ कुक्कुट। मुर्गा (को०)।

शूर—वि० [सं०] योद्धा। बहादुर। शौर्यशक्तियुक्त। [को०]।

शूरकीट—संज्ञा पुं० [सं०] कमजोर या साधारण कोटि का वीर।

शूरण—संज्ञा पु० [सं०] १ सूरन। ओल। जमीकंद। विशेष दे० 'सूरन'। २ भयानक वृक्ष।

शूरणोद्भुज—संज्ञा पुं० [सं०] हरियल या हारिल नाम का पक्षी।

शूरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूर होने का भाव या धर्म। शौर्य। बहादुरी। वीरता।

शूरताई—संज्ञा स्त्री० [सं० शूरता+हिं० ई (प्रत्य०)] दे० 'शूरता'।

शूरत्व—संज्ञा पु० [सं०] शूर होने का भाव या धर्म। शूरता। वीरता। बहादुरी।

शूरदेव—संज्ञा पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार भविष्य में होनेवाले चौबीस अर्हतों में से एक अर्हत का नाम।

शूरन—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'सूरन'।

शूरपुत्रा—संज्ञा स्त्री० [सं०] अदिति का एक नाम।

शूरबल—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक देवपुत्र का नाम।

शूरभू—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शूरभूमि'।

शूरभूमि—संज्ञा स्त्री० [सं०] उग्रसेन की एक कन्या का नाम।

विशेष—भागवत में लिखा है कि वसुदेव के छोटे भाई श्यामक ने इसके साथ विवाह किया था, और उनके वीर्य से इसके गर्भ से हरिकेश और हिरण्याक्ष नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे।

शूरमान—संज्ञा पुं० [सं०] अभिमान। अहंकार [को०]।

शूरमानी—संज्ञा पुं० [सं० शूरमानिन्] वह जिसे अपनी शूरता का बहुत अभिमान हो। अपनी बहादुरी पर बहुत भरोसा रखनेवाला।

शूरवाणेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] विष्णु का एक नाम।

शूरवाद—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्धों का शून्यवाद का सिद्धांत [को०]।

शूरवादी—वि० [सं०] शूरवादिन्] १. बौद्ध। २ नास्तिक [को०]।

शूरविद्या—संज्ञा स्त्री० [सं०] युद्ध आदि करने की विद्या।

शूरवीर—संज्ञा पु० [सं०] वह जो अच्छा वीर और योद्धा हो। सूरमा।

शूरवीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] शौर्य। बहादुरी।

शूरश्लोक—संज्ञा पुं० [सं०] वीरों के वीरतापूर्ण कृत्यों की कहानी। वीरगाथा।

शूरसेन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता थे। २ मथुरा और उसके आस पास के प्रदेश का प्राचीन नाम जहाँ राजा शूरसेन का राज्य था।

शूरसेनप—सज्ञा पुं० [सं०] शूरवीरो की सेना का पालन करनेवाले, कार्तिकेय।

शूरसेना—सज्ञा स्त्री० [स०] शूरसेन राजा का पुरी। मथुरा नगरी एक का नाम [को०]।

शूरा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] क्षीरकाकोली नामक अष्टवर्गीय औषधि।

शूरा[2]—सज्ञा पु० [स० शूर] सामत। वीर। उ०—पैठि गुफा मे सब जग देखै, बाहर कछू न सूझै। उलटा बान पारथिव लागे, शूरा होय सो बूझै।—कबीर (शब्द०)।

शूरा[3]—सज्ञा पुं० [स० शूर (=सूर्य) अथवा सूर्य] सूर्य। उ०—जहाँ चद न शूरा, तारा नहि जहाँ मोरनिया।—कबीर (शब्द०)।

शूरिमृग—सज्ञा पु० [स०] वाराह आदि जगली पशु।

शूर्प—सज्ञा पु० [स०] १ गेहूँ, चावल आदि अन्न पछोडने के लिये बना हुआ बाँस या सीक का पात्र। सूप। २ एक प्राचीन तौल जो २०४८ तोले या ३२ सेर की होती थी।

शूर्पक—सज्ञा पु० [स०] एक असुर जो किसी किसी के मत से कामदेव का शत्रु और किसी किसी के मत स उसका पुत्र था।

शूर्पकर्ण—सज्ञा पु० [स०] १. हाथी, जिसके कान सूप के समान होते है। २. गणेश। ३ एक प्राचीन देश का नाम। ४ इस देश का निवासी। ५ पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

शूर्पकारारि—सज्ञा पु० [स०] शूर्पक राक्षस का शत्रु, कामदेव।

शूर्पकारि—सज्ञा पुं० [स०] शूर्पक नामक राक्षस का शत्रु, कामदेव।

शूर्पखारी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की तौल जो १६ द्रोण की होती थी [को०]।

शूर्पणखा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहिन थी।

विशेष—कहते हैं, इसके नख सूप के समान थे। राम के वनवास के समय काम से पीड़ित होकर यह राम के पास उनके साथ विवाह करने की इच्छा से गई थी। वहाँ राम के इशारे से लक्ष्मण ने इसकी नाक और कान काट लिए थे। इसी का बदला लेने के लिये रावण सीता को हर ले गया था।

शूर्पणखी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सूर्पणखा'।

शूर्पणाय—सज्ञा पुं० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

शूर्पनखा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शूर्पणखा'।

शूर्पपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] बन मूँग। बन उर्द।

शूर्पवात—सज्ञा पुं० [स०] सूप की हवा। अनाज फटकने के समय शूर्प से उत्पन्न हवा [को०]।

विशेष—बच्चो को सूप की हवा लगना अशुभ माना जाता है।

शूर्पश्रुति—सज्ञा पु० [सं०] हस्ती। हाथी।

शूर्पा—सज्ञा स्त्री० [स० शूर्प या शूर्पी] बच्चो के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।

शूर्पाद्रि—सज्ञा पुं० [सं०] दक्षिणी भारत के एक पर्वत का नाम। इसे कुछ लोग सूर्पाद्रि भी कहते हैं।

शूर्पारक—सज्ञा पु० [स०] बबई प्रात के थाना जिले के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

शूर्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ छोटा सूप। सूपेली। २ शूर्पणखा का एक नाम। ३ बच्चो के खेलने का एक खिलौना [को०]।

शूर्म—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शूर्मि] १ लोहे की बनी हुई मूर्ति। २. निहाई।

शूर्मि, शूर्मिका, शूर्मी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शूर्म' [को०]।

शूल[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जो प्राय. बरछे के आकार का होता था। २ सूली जिससे प्राचीन काल के लोगो को प्राणदड दिया जाता था। ३ दे० 'त्रिशूल'। ४ कोई बडा, लबा और नुकीला काँटा। ५. वायु के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दर्द।

विशेष—यह दर्द प्राय पेट, पसली, कलेजे या पेडू आदि मे होता है। वैद्यक के अनुसार बहुत अधिक व्यायाम या मैथुन करने, घोडे पर चढने, रात के समय जागने, बहुत अधिक ठढा जल पीने, रूखे द्रव्यो का सेवन करने, सूखा मास खाने, विरुद्ध भोजन करने, शारीरिक वेगो को रोकने, बहुत अधिक शोक या उपवास करने अथवा बहुत अधिक हँसने के कारण वायु का प्रकोप होता है जिससे पेट मे या उसके आस पास बहुत तीव्र पीडा होती है। इस पीडा मे ऐसा अनुभव होता है कि कोई अदर से बहुत नुकीला काटा या शूल गडा रहा है, इसी से इसे शूल कहते हैं। यह रोग आठ प्रकार का—वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, आमज, वातश्लैष्मिक, पित्तश्लैष्मिक और वातपैत्तिक—कहा गया है, और इसे शात करने के लिये स्वेद, अभ्यग, मर्दन और स्निग्ध तथा उष्ण द्रव्यो के सेवन का विधान है।

६. किसी नुकीली वस्तु के चुभने के समान होनेवाली पीडा। कोच। टीस। ७. पीडा। क्लेश। दु.ख। दर्द। उ०—(क) तुम लछिमन निज पुरहि सिधारो बिछुरन मेट देहु लघु बधू जियत न जैहै शूल तुम्हारो।—सूर (शब्द०)। (ख) मन तोसों कोटिक बार कही। समुझ न चरण गहत गोविंद के उर अघ शूल सही।—सूर (शब्द०)। ८ ज्योतिष मे विष्कंभ आदि सत्ताइस योगो के अतर्गत नवाँ योग।

विशेष—कहते हैं, जो बालक इस योग मे जन्म लेता है, वह डरपोक, दरिद्र, मूर्ख, विद्याहीन, शूलरोगी, दूसरो का अनिष्ट करनेवाला और अपने बधु बाधव को शूल के समान खटकनेवाला होता है। इस योग मे किसी प्रकार का शुभ काम करने का निषेध है।

९. छड। सलाख। सीख। उ०—खाने को बहुधा शूल पर भुना हुआ मास मिलता है, सो भी कुसमय।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)। १०. मृत्यु। ११. झडा। पताका। १२. पोस्ते की पत्तियो की वह तह जो अफीम की चक्की जमाने के समय उसके चारो

ओर और ऊपर नीचे लगाई जाती है। (बंगाल)। १३ ग्रंथि वात। गठिया (को०)।

शूल[2]—वि० काँटे की तरह नोकवाला। नुकीला।

शूलक—संज्ञा पु० [सं०] १. पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २ दुष्ट या पाजी घोड़ा। शकल।

शूलकार—संज्ञा पुं० [सं०] पुराणानुसार एक नीच जाति का नाम।

शूलगजकेसरी रस—संज्ञा पु० [सं०] १ वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

विशेष—यह रस शुद्ध गंधक, पारे, कटवेधी, ताँबे के पत्र आदि के योग से तैयार किया जाता है और शूल रोग के लिये गुणकारी माना जता है।

२ वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली।

विशेष—इसके लिये कौडियो की राख, शुद्ध सिंगी मुहरा, सेंधा नमक, काली मिर्च, पिप्पली इन सब का चूर्ण कर पान के रस मे एक रत्ती के बराबर गोलियाँ बनाई जाती हैं। ये गोलिया शूल का नाश करती ह।

शूलगव—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम।

शूलगिरि—संज्ञा पु० [सं०] मदरास प्रांत के एक पर्वत का नाम।

शूलग्रंथि—संज्ञा स्त्री० [सं० शूलग्रन्थि] माला दूब।

शूलग्रह—संज्ञा पु० [सं०] हाथ मे त्रिशूल धारण करनेवाले, शिव।

शूलग्राही—संज्ञा पुं० [सं० शूलग्राहिन्] शिव। महादेव।

शूलघातन—संज्ञा पु० [सं०] मदूर। लौहकिट्ट।

शूलघ्न[1]—संज्ञा पु० [सं०] तुंबुरु वृक्ष।

शूलघ्न[2]—वि० शूल को शमन करनेवाला [को०]।

शूलघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सज्जी मिट्टी। सज्जिखार। २. नरसल जैसा एक पौधा (को०)।

शूलदावानल रस—संज्ञा पु० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

विशेष—यह दो तरह से बनता है—(१) शुद्ध पारा, शुद्ध सींगी मुहरा, काली मिर्च, पिप्पली, सोंठ, भुनी हींग, पाँचो नमक, इमली का खार, जवाखार का खार, शंखभस्म और नीबू के रस के योग से बनता है और शूल रोग का तत्काल दूर करता है। (२) शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सिंगी मुहरा, पिप्पली, भूनी हींग, पाँचो नमक, इमली के खार और नीबू के रस मे भुने हुए शंख की राख तथा नीबू के रस से बनता है और शूल, अजीर्ण, उदररोग और मंदाग्नि को दूर करता है।

शूलद्विट्—संज्ञा पु० [सं० शूलद्विष्] हींग। हिंगु।

शूलधन्वा—संज्ञा पु० [सं० शूलधन्वन्] शिव। महादेव।

शूलधर—संज्ञा पुं० [सं०] शिव। शंकर। उ०—गंगाधर हर शूलधर, ससिधर शंकर वाम। सर्वेस्वर भव शंभु शिव, रुद्र कामरिपु नाम।—नंद (शब्द०)।

शूलधरा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।

शूलधारिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा। शूलधरा।

शूलधारी—संज्ञा पुं० [सं० शूलधारिन्] त्रिशूल धारण करनेवाले शिव। महादेव। उ०—सध्यावनि पूजन जब होइ शूलधारी को, डुंडुभि की ठौर दीजो गरज सुनाइ कै।—लक्ष्मणसिंह (शब्द०)।

शूलधृक्[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शिव।

शूलधृक्[2]—संज्ञा स्त्री० दुर्गा [को०]।

शूलना—क्रि० अ० [हिं० शूल+ना (प्रत्य०)] १ शूल के समान गड़ना। २. दुःख देना। पीड़ा देना। कष्ट देना। उ०—(क) सो युधि यदुनंदन नहिं भूलत। सुमिरि सुमिरि अजहूँ, उर शूलत।—सबल (शब्द०)। (ख) लै लै विष को नाम ठाँव हमरो नहिं छाडै। कठिन तुम्हारो बोल जाइ हिरदै मे शूलै।—गिरधर (शब्द०)।

शूलनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौवर्चल लवण। २ हींग। ३. पुष्करमूल। ४ वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण।

विशेष—यह चूर्ण शंखभस्म, कचूरमूल, भूनी हींग, सोंठ, काली मिर्च, पीपल और सेंधा नमक के योग मे बनाया जाता है और इसका व्यवहार प्रायः शूलरोग मे किया जाता है।

शूलनाशिनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] शूलरोग का नाश करनेवाली, हींग।

शूलनाशिनी वटी—संज्ञा स्त्री० [सं०] वैद्यक मे एक प्रकार की वटी या गोली।

विशेष—इसके लिये हड़ का छिलका, सोंठ, काली मिर्च, पीपल, शुद्ध कुचला, शुद्ध गंधक, भूनी गंधक, भूनी हींग, सेंधा नमक जल से खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाई जाती हैं। कहते हैं कि प्रातःकाल इसे गरम जल के साथ सेवन करने से संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, मंदाग्नि आदि दूर होती है।

शूलनाशी—संज्ञा पुं० [सं० शूलनाशिन्] हींग।

शूलनिर्मूलन—संज्ञा पुं० [सं०] दुःख का नाश करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलपत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास जिसे शूली भी कहते हैं।

शूलपर्णी—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की घास जिसे शूली भी कहते हैं।

शूलपाणि—संज्ञा पु० [सं०] हाथ मे शूल धारण करनेवाले, शिव। महादेव।

शूलपानि—संज्ञा पुं० [सं० शूलपाणि] शिव। महादेव। उ०—दारिद्रदमन, दुखदोष दाह—दावानल, दुनि न दयालु दूजो दानि शूलपानि सो।—तुलसी (शब्द०)।

शूलपाल—संज्ञा पु० [सं०] वेश्यालय का रक्षक [को०]।

शूलप्रोत—संज्ञा पुं० [सं०] नरक के एक भाग का नाम।

शूलभृत्—संज्ञा पुं० [सं०] शूलधारी शिव [को०]।

शूलमर्दन—संज्ञा पुं० [सं०] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

शूलयोग—संज्ञा पु० [सं०] ज्योतिष के २७ योगो मे से एक योग। विशेष दे० 'शूल'—८।

शूलशत्रु—सज्ञा पुं० पु० [स०] रेंड का पेड ।

शूलशब्द—सज्ञा पुं० [स०] पेट की गडगडाहट के कारण होनेवाला शब्द ।

शूलस्थ—वि० [स०] शूली पर चढा हुआ [को०] ।

शूलहत्री—सज्ञा स्त्री० [स० शूलहन्त्री] शूल का नाश करनेवाली, अजवाइन । यवानी ।

शूलहर—सज्ञा पुं० [स०] पुष्करमूल ।

शूलहस्त—सज्ञा पुं० [स०] हाथ मे शूल धारण करनेवाले, शिव । महादेव ।

शूलहृत्—सज्ञा पु० [स०] हिंगु । हीग ।

शूलाक—सज्ञा पुं० [स० शूलाङ्क] शिव । महादेव ।

शूला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वेश्या । रडी । २. सूली जिसके द्वारा प्राचीन काल मे लोगो को प्राणदड दिया जाता था । ३ छड । सीख । सलाख ।

शूलाकृत—सज्ञा पु० [सं०] लोहे की सीख मे खोंसकर भूना हुआ मास । सीख पर भूना हुआ मास । कबाब आदि ।

शूलारि—सज्ञा पु० [स०] हिंगोट । इगुदी वृक्ष ।

शूलि[1]—सज्ञा पुं० [स०] शिव का एक नाम । महादेव ।

शूलि[2]—वि० शूल या कुत धारण करनेवाला [को०] ।

शूलि[3]—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'सूली' ।

शूलिक[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ खरगोश । खरहा । २. सीख मे गोदकर पकाया हुआ मास । कबाब । ३ फाँसी देनेवाला । सूली देनेवाला । उ०—इन मघादि तीसरे मडल के दैत्यगुरु यदि और किसी ग्रह से रुक जाँय तो पेडो के समूह, शबर, शूद्र, पुड्र, पश्चिम की सीमा का अन्न, शूलिक, बनवासी, द्रविड, समुद्र के पुरुषो का नाश हो जाता है ।—वृहत्सहिता (शब्द०) । ४ कुक्कुट । मुर्गा [को०] । ५ ब्राह्मण या क्षत्रिय की वह जारज सतति जो शूद्रा से उत्पन्न हो [को०] ।

शूलिक[2]—वि० १ प्रासधारी । शूल धारण करनेवाला । २ सलाख पर भुना हुआ [को०] ।

शूलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सीख मे गोदकर भूना हुआ मास । कबाब । २ वह सीख जिसमे गोदकर मास भूना जाता है [को०] ।

शूलिकाप्रोत—सज्ञा पुं० [स०] १ भाडीर वृक्ष । वट का वृक्ष । २. गूलर का पेड । उदुबर ।

शूलिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दुर्गा का एक नाम जो त्रिशूल धारण करनेवाली मानी जाती हैं । २ पान । नागवल्ली । ३ पुत्रदात्री नाम की लता ।

शूली[1]—सज्ञा पु० [स० शूलिन्] १ त्रिशूल धारण करनेवाले, शिव । महादेव । उ०—शृगी शली धूरजटी, कुडलीश त्रिपुरारि । वृषा वपर्दी मानहर, मृत्युजय कामारि ।—सबल (शब्द०) । २. खरगोश । शशक । खरहा । ३ शूलरोग से पीडित व्यक्ति । वह जिसे शूलरोग हुआ हो । ४. एक नरक का नाम । उ०—(क) तेरहो शूली नरक कहावै । शूली सम दुख तामे पावै । जो नर पाप करै अधिकाई । करि शिकार मृग मारै जाई । —विश्राम (शब्द०) । (ख)—लाहू को शस्त्रन ते मारै । तेहि यम शूली नरक मे डारै ।—विश्राम (शब्द०) । ५ कुतवारी व्यक्ति । वह जो शूल धारण किए हो (को०) ।

शूली[2]—सज्ञा स्त्री० दे० 'सूली' । उ०—नाहक नर शूली धरि दीन्हो । जिन बन माहि ठगाही कीन्हो ।—विश्राम (शब्द०) । (ख) कौन पाप मैं ऐसो कियो । जाते मोकूँ शूली दियो ।—सूर (शब्द०) ।

शूली[3]—सज्ञा स्त्री० [स० शूल] पीडा । शूल । उ०—सा सुधि भूप हिये महँ भूली । अजहूँ उठत जासु ते शूली ।—सबल (शब्द०) ।

क्रि० प्र०—उठना ।

शूली[4]—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की घास । शूलीपत्री ।

विशेष—इस घास को पशु बडे चाव से खाते है और इसका व्यवहार औषध रूप मे भी होता है । वैद्यक के अनुसार यह किंचित उष्ण गुरु, बलकारक, पित्त तथा दाहनाशक और गौओ तथा भैसो का दूध बढानेवाली मानी जाती ।

शूलोत्खा, शूलोत्था—सज्ञा स्त्री० [स०] सोमराजी लता । बकुची ।

शूल्य[1]—सज्ञा पु० [स०] सीख मे वेधकर पकाया हुआ मास । कबाब ।

शूल्य[2]—वि० १. सीख पर भूना हुआ । २ शूली पर चढाए जाने या शूली पाने योग्य [को०] ।

शूल्यपाक—सज्ञा पुं० [स०] कबाब ।

शूल्यमास—सज्ञा पुं० [स०] कबाब ।

शूल्यवाण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की भूतयोनि जिसका मान वैदिक काल मे होता था ।

शूष[1]—वि० [स०] १ गुजायमान । २ साहसी [को०] ।

शूष[2]—सज्ञा पुं० १ गुजित होता हुआ स्वर । २ साहस । शक्ति । वेग [को०] ।

शृंखल—सज्ञा पुं० [स० शृङ्खल] १ एक प्रकार का आभरण जो प्राचीन काल मे पुरुष लोग कमर मे पहनते थे । मेखला । २. हाथी आदि के बाँधने की लोहे की जजीर । साँकल । सिक्कड । उ०—अंकुस घट मुशृखल जेऊ । चौदह सहस महा गज लेऊ । —पद्माकर (शब्द०) । ३ हथकडी बेडी । ४ नियम । ५ मापने की जजीर [को०] । ६ परपरा । सिलसिला (को०) । ७ बधन (को०) ।

शृंखलक—सज्ञा पु० [स० शृङ्खलक] १ ऊँट । २. दे० 'शृंखल' । ३ वह जानवर जिसके पैर बँधे हो (को०) ।

शृंखलता—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खलता] सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव ।

शृंखलबद्ध—वि० [स० शृङ्खलबद्ध] १. नियमबद्ध । २. बधन या जंजीर से बँधा हुआ [को०] ।

शृंखला—सज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्खला] १ क्रम। सिलसिला। २ जजीर। साँकल। ३ पुरुष का कटिबधन वस्त्र। मेखला। ४ चाँदी का एक आभूषण जिसे स्त्रियाँ कमर मे पहनती हैं। करधनी। तागडी। श्रेणी। कतार। ६ एक प्रकार का अलकार जिसमे कथित पदार्थों का वर्णन शृंखला के रूप मे सिलसिलेवार किया जाता है।

शृंखलाबद्ध—वि० [स० शृङ्खलाबद्ध] १. जो क्रम से हो। सिलसिलेवार। २ जो शृंखला से बाँधा हुआ हो।

शृंखलि—सज्ञा पुं० [स० शृङ्खलि] कोकिलाक्ष। तालमखाना।

शृंखलित—वि० [स० शृङ्खलित] १ क्रमबद्ध। श्रेणीबद्ध। सिलसिलेवार। २ पिरोया हुआ। ३ निगडित। शृंखलाबद्ध (को०)।

शृंखली—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्खली] कोकिलाक्ष।

शृंग[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। चोटी। २ गो, भैंस, बकरी आदि के सिर के सीग। उ०—भक्ति बिन बैल बिराने ह्वै हो। पाउ चारि सिर शृंग पुंग मुख तब कैसे गुण गैहो।—सूर (शब्द०)। ३ कँगूरा। उ०—जो काचनीय रथ शृंग मयूर माली। जाके उदार उर षण्मुख शक्तिशाली।—केशव (शब्द०)। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। सिंगी बाजा। उ०—कस ताल करताल बजावत शृंग मधुर मुहचग। मधुर खजरी पटह प्रणव मिल सुख पावत रतभग।—सूर (शब्द०)। ५ कमल। पद्म। ६ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ७ सोठ। ८ अदरक। आदी। ९ अगर। १० प्रभुत्व। प्रधानता। ११ काम की उत्तेजना। १२ चिह्न। निशान। १३ स्तन। छाती। १४ एक प्राचीन ऋषि का नाम। वि० दे० 'ऋष्यशृंग'। १५ पानी का फौवारा या पिचकारी। १६ कूर्चशीपक वृक्ष (को०)। १७ उत्तुगता। ऊँचाई (को०)। १८ चद्रचूडा। चाँद की नोक (को०)। १९ किसी वस्तु का अग्रभाग। नोक (को०)। २० कोटि। चाप के सिरे का नुकीला अश (को०)। २१ अभिमान। आत्मश्लाघा (को०)। २२ बाण का नुकीला दड। बाणकाड (को०)। २३ एक प्रकार का सेना का व्यूह (को०)। २४ हाथी का दाँत (को०)। २५ उत्कर्ष। अभ्युदय (को०)।

शृंग[2]—वि० नुकीला। तीक्ष्ण। तेज।

शृंगकद—सज्ञा पु० [स० शृङ्गकन्द] सिंघाडा।

शृंगक—सज्ञा पु० [स० शृङ्गक] १ जीवक वृक्ष। २ सिंगिया नामक विष। ३ सीग (को०)। ४ चद्रमा की नोक। चद्रचूडा (को०)। ५ कोई भी नुकीला पदार्थ (को०)। ६ पिचकारी (को०)।

शृंगकूट—सज्ञा पुं० [सं० शृङ्गकूट] एक पर्वत का नाम।

शृंगगिरि—सज्ञा पु० [स० शृङ्गगिरि] दे० 'शृंगकूट'।

शृंगग्राहिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उचित मार्ग। सीधा मार्ग। सरल विधि। २ एक न्याय। दे० 'शृंगग्राहिता न्याय'।

शृंगग्राहिता न्याय—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गग्राहिता न्याय] एक न्याय जिसका उपयोग उस समय होता है, जब किसी कठिन काम का एक अश हो जाने पर शेष अश का सपादन उसी प्रकार सहज हो जाता है, जिस प्रकार सीग मारनेवाले बैल का एक सीग पकड लेने पर दूसरा सीग भी पकड लेना सहज हो जाता है।

शृंगज[1]—सज्ञा पु० [सं० शृङ्गज] १ अगर। अगरु। २ शर। तीर।

शृंगज[2]—वि० १. शृंग निर्मित। २ शृंग से उत्पन्न (को०)।

शृंगधर—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गधर] पर्वत। पहाड (को०)।

शृंगनाभ—सज्ञा पु० [स० शृङ्गनाभ] एक प्रकार का विष।

शृंगनाम्नी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गनाम्नी] काकडासिंगी। कर्कटशृंगी।

शृंगपुर—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गपुर] दे० 'शृंगवेरपुर'।

शृंगप्रहारी—वि० [स० शृङ्गप्रहारिन्] सीग से प्रहार करनेवाला (को०)।

शृंगप्रिय—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गप्रिय] शिव (को०)।

शृंगभेदी—सज्ञा पुं० [सं० शृङ्गभेदिन्] गुंदा नामक तृण।

शृंगमूल—सज्ञा पु० [स० शृङ्गमूल] सिंघाडा।

शृंगमोही—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गमोहिन्] चंपक वृक्ष। चंपा।

शृंगरुह—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गरुह] सिंघाडा।

शृंगला—सज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गला] मेढासिंगी।

शृंगवत्—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गवत्] पुराणानुसार कुरुवर्ष की सीमा पर के एक पर्वत का नाम।

शृंगवाद्य—सज्ञा पुं० [सं० शृङ्गवाद्य] सिंघा। सीग का बना बाजा। सिंगी।

शृंगवान्[1]—वि० [स० शृङ्गवत्] शिखरयुक्त। शृंगयुक्त। चोटीवाला (को०)।

शृंगवान्[2]—सज्ञा पु० १ पर्वत। २ शृंगवत् नामक गिरि (को०)।

शृंगवृष—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गवृष] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शृंगवेर—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गवेर] १ आदी। अदरक। २ सोठ। ३ महाभारत के अनुसार एक नाग का नाम। ४. दे० 'शृंगवेरपुर'।

शृंगवेरक—सज्ञा पु० [स० शृङ्गवेरक] १ अदरक। आदी। २. सोठ।

शृंगवेरपुर—सज्ञा पु० [स० शृङ्गवेरपुर] रामायण के अनुसार एक प्राचीन नगर का नाम। उ०—(क) ता दिन शृंगवेरपुर आए। राम सखा ते समाचार सुनि बारि विलोचन छाए।—तुलसी (शब्द०)। (ख) छलि पुरबासिन को आए शृंगवेरपुर खबरि निषाद राजँ कोऊ कही जाइकै।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—रामचद्र के समय मे यह निषाद राजा गुह की राजधानी थी। सभवत प्रतापगढ जिले का सिंगरौरा (आधुनिक इलाहाबाद जिले का गगातट पर बसा हुआ सिंगरौर) नामक गाँव ही प्राचीन शृंगवेरपुर है। गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस मे इसका एक नाम सिंगरौर भी आया है।

शृंगवेराभमूल—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गवेराभमूल] गुदा नामक तृण।

शृंगवेरिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गवेरिका] गोभी।

शृंगसुख—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गसुख] सिंगी या सिंघा नामक बाजा।

शृंगाट—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गाट] १. सिंघाड़ा। २. गोखरू। ३ कँटाई। विककत। ४ कामरूप देश के एक पर्वत का नाम। ५. चौराहा। चौमुहानी।

शृंगाटक—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गाटक] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का खाद्य पदार्थ जो मास से बनाया जाता था। २ एक मर्म-स्थान जो मस्तक मे उस स्थान पर माना जाता है, जहाँ नाक, कान, आँख और जीभ से सबध रखनेवाली चारो शिराएँ मिलती हैं।

विशेष—कहते है, यह मर्मस्थान चार अगुल का होता है और इसके चारो ओर से चारो शिराएँ निकलती है, इसी से इसे शृगाटक कहते हैं। यह भी माना जाता है कि इस स्थान पर चोट लगने से तुरत मृत्यु हो जाती है।

३ सिंघाड़ा। दे० 'शृगाट'। ४. तीन चोटियोवाला पहाड (को०)। ५ द्वार। दरवाजा (को०)। ६ एक प्रकार का सिंघाड़े के आकार का पकवान। समोसा (को०)। ७ चौराहा (को०)। ८. काँटा। कटक (को०)।

शृंगाटिका—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गाटिका] चौमुहानी। चौराहा।

शृंगाटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गाटी] जीवती।

शृंगार—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गार] १ साहित्य के अनुसार नौ रसो मे से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध है और प्रधान माना जाता है। उ०—जाको थायी भाव रस, सो शृंगार सुहोत। मिलि विभाव अनुभाव पुनि सचारिन के गोत।—पद्माकर (शब्द०)।

विशेष—इसमे नायक नायिका के परस्पर मिलन के कारण होने-वाले सुख की परिपुष्टता दिखलाई जाती है। इसका स्थायी भाव रति है। आलबन विभाव नायक और नायिका है। उद्दीपन विभाव सखा, सखी, वन, बाग आदि, विहार, चंद्र-चदन, भ्रमर, झकार, हाव भाव, मुसक्यान तथा विनोद आदि है। यही एक रस है जिसमे सचारी विभाव, अनुभाव सब भेदो सहित होता है, और इसी कारण इसे रसराज कहते हैं। इसके देवता विष्णु अथवा कृष्ण माने गए हैं और इसका वर्ण श्याम कहा गया है। यह दो प्रकार का होता है—एक सयोग और दूसरा वियोग या विप्रलभ। नायक नायिका के मिलने को सयोग और उनके विछोह को वियोग कहते है।

२. स्त्रियो का वस्त्राभूषण आदि से शरीर को सुशोभित और चित्ताकर्षक बनाना। सजावट। सग सखी मोहैं विधि बारा। कीन्हे तन षोडश शृगारा।—रघुनाथ (शब्द०)।

विशेष—शृगार १६ कहे गए हैं—अंग मे उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, काजल लगाना, सेंदुर से माँग भरना, महावर देना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, अगजा आदि सुगधित वस्तुओ का प्रयोग करना, आभूषण पहनना, फूलो की माला धारण करना, पान खाना, मिस्सी लगाना। जैसे—अग शुची मंजन वसन, माँग महावर केश। तिलक भाल तिल चिबुक मे भूषण मेहदी वेश। मिस्सी काजल अगजा, बीरी और सुगध। पुष्प कली युत होय कर, तब नव सत्त निबध।

३ किसी चीज को दूसरे सुदर उपकरणो से सुसज्जित करना। सजा-वट। बनाव चुनाव। ४ भक्ति का एक भाव या प्रकार जिसमे भक्त अपने आप को पत्नी के रूप मे और अपने इष्टदेव को पति के रूप मे मानते हैं। उ०—शात दास्य सख्य वात्सल्य और शृगारु चारु पाँचो रस सार विस्तार नीक गाए हैं।—नाभादास (शब्द०)। ५ वह जिससे किसी चीज की शोभा बढती हो। उ०—यशुमति कोखि सराहि बलैया लेन लगी ब्रजनार। ऐसो सुत तेरे गृह प्रकट्यो या ब्रज को शृगार।—सूर (शब्द०)। ६ लौंग। ७ सेंदुर। ८. अदरक। ९. चूर्ण। चूरन। १०. काला अगर। ११. सोना। १२ रति। मैथुन। १३ हाथी की सूँड पर चित्रित सिंदूर की रेखाएँ (को०)।

शृंगारक[1]—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारक] १ सेंदुर। २ लौंग। ३. अद-रक। आदी। ४ काला अगर।

शृंगारक[2]—वि० सींग का बना हुआ। शृग से निर्मित। सींग सबधी (को०)।

शृंगारगर्व—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गारगर्व] १. प्रेम का गर्व। २. सजाव-बनाव का अभिमान।

शृंगारचेष्टा—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गारचेष्टा] शृगारजन्य क्रिया। काम-चेष्टा। अनुराग, रति, सभोग आदि को व्यक्त करना (को०)।

शृंगारचेष्टित—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गारचेष्टित] दे० 'शृगारचेष्टा'।

शृंगारजन्मा—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारजन्मन्] कामदेव या मदन का एक नाम।

शृंगारण—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गारण] १. किसी रूपवती स्त्री को देखकर उसपर अपनी कामवासना प्रकट करने की क्रिया। प्रेम प्रदर्शन। मुहब्बत जतलाना। २ शृंगार करना। सजाना। सिंगारना।

शृंगारधारी—वि० [सं० शृङ्गारधारिन्] जिसका शृंगार हुआ हो। जो सजाया गया हो। रगबिरगी रेखाओ और भूषणो से शोभित।

शृंगारना—वि० स० [सं० शृङ्गार से नाम०] आभूषण आदि से या और किसी प्रकार सँवारना। शृगार करना। सजाना।

शृंगारभाषित—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारभाषित] प्रेमालाप। प्रणय-वार्ता। केलिसलाप (को०)।

शृंगारभूषण—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारभूषण] १. सेंदुर। सिंदुर। २ हड़ताल।

शृंगारमंडल—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गारमण्डल] १ ब्रज का एक स्थान जहाँ पर श्रीकृष्ण ने राधिका का शृंगार किया था।

२ वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलकर कामक्रीडा करते हो। क्रीडास्थल।

शृंगारयोनि—सज्ञा पु० [स० शृङ्गारयोनि] मदन या कामदेव का एक नाम।

शृंगार रस—सज्ञा पु० [स० शृङ्गार रस] साहित्य शास्त्र के ६ रसो मे पहला रस। विशेष दे० 'शृंगार'—१।

शृंगारलज्जा—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गारलज्जा] प्रेम वा कामजन्य अनुरक्ति के कारण उत्पन्न लज्जा [को०]।

शृंगारविधि—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गार विधि] दे० 'शृंगारवेश'।

शृंगारवेश—सज्ञा पु० [स० शृङ्गारवेश] वह सुदर वेश जिसे धारण करके प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है।

शृंगारसहाय—सज्ञा पु० [स० शृङ्गार सहाय] नायक नायिका के प्रेम व्यापार मे सहायता देनेवाला व्यक्ति। प्रेम व्यापार मे मध्यस्थ रहनेवाला व्यक्ति। नर्मसचिव [को०]।

शृंगारहाट—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गार+हिं० हाट] १ वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हो। चकला। उ०—पुनि शृंगारहाट भल देसा। किए सिंगार बैठि तहँ वेसा।—जायसी (शब्द०)। २ वह बाजार जहाँ शृंगार की वस्तुएँ बिकती हो।

शृंगारिक—वि० [स० शृङ्गारिक] शृंगार संबंधी। न०—ललित लताओ को पहले के अपने सब शृंगारिक भाव। हरिण, नारियो को नयनो की चचलता का सहज स्वभाव।—महावीरप्रसाद (शब्द०)।

शृंगारिणी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गारिणी] १ शृंगार करनेवाली स्त्री। शृंगारप्रिय। २ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक पाद मे चार रगण (ऽऽ) होते हैं। इसको 'स्रग्विणा', 'कामिनी', 'मोहन', 'लक्ष्मीधारा' और 'लक्ष्मीधर' भी कहते है।

शृंगारित—वि० [स० शृङ्गारित] १ जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ। सँवारा हुआ। २ भूषित। सज्जित। सजा हुआ (को०)। ३ प्रेमाभिभूत। कामाभिभूत (को०)। ४ चित्रित। रँगा हुआ (को०)।

शृंगारिया—सज्ञा पु० [स० शृङ्गार+हिं० इया (प्रत्य०)] १. वह जो देवताओ आदि का शृंगार करता हो। २ नाटक, लीला आदि मे मेक अप करनेवाला। वह जो लीला की मूर्तियो का शृंगार करता हो। ३. वह जो तरह तरह के भेस बनाता हो। बहुरूपिया।

शृंगारी[1]—सज्ञा पु० [स० शृङ्गारिन्] १ सुपारी। २ मानिक। चुन्नी। ३ हाथी। ४ शृंगारयुक्त वा कामोत्तेजनायुक्त व्यक्ति (को०)। ५ वेशभूषा। सजावट (को०)। ६ पान का बीडा बनाना (को०)। ७ सुदर वेशभूषा वाला या सजा हुआ व्यक्ति (को०)।

शृंगारी[2]—वि० १. प्रेमासक्त। २. शृंगार या प्रेम संबधी। ३ सिंदूर या गेरू से चित्रित [को०]।

शृंगारुहा—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गारुहा] सिंघाडा। शृंगाटक।

शृंगालिका, शृंगाली—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गालिका, शृङ्गाली] विदारीकद।

शृंगाह्व—सज्ञा पु० [स० शृङ्गाह्व] १ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ सिंघाडा।

शृंगाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गाह्वा] १. जीवक। शृंगाह्व। २. सिंघाडा।

शृंगि[1]—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गि] सिंगी मछली।

शृंगि[2]—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गि] आभूषण मे प्रयुक्त वा आभूषण तैयार करने का सोना [को०]।

शृंगि[3]—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिन्] वह पशु जिसके सिर पर सींग हो। सींगवाला जानवर। उ०—नखी, नदी और शृंगि जो धरत शस्त्र निज पास। राजवस औ नारि मे कर न कबहुँ विश्वास।—सीताराम (शब्द०)।

शृंगिक—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिक] १ सिंगिया विष। २ एक प्रकार का वाद्य। सिंगी (को०)।

शृंगिका—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गिका] १ बहुत प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था। सिंगी। २ अतीस। अतिविषा। ३ काकडासिंगी। ४ मेढा सिंगी। ५ पिप्पली। पीपल।

शृंगिण—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिण] १ जगली मेढा। मेष। २ वह जो सींगवाला हो [को०]।

शृंगिणी—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गिणी] १ गाय। गौ। २ मल्लिका। मोतिया। ३ मालकगनी। ज्योतिष्मती लता। ४ अतीस। अतिविषा।

शृंगी[1]—सज्ञा पु० [स० शृङ्गिन्] १ हाथी। हस्ती। २. वृक्ष। पेड। ३ पर्वत। पहाड। ४ एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। इन्ही के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित को तक्षक ने डसा था। उ०—(क) शृंगी ऋषि तब कियो विचार। प्रजा दुख कर नृपत गुहार।—सूर (शब्द०)। (ख) जहँ शृंगी ऋषिवर तप करही। चर्म नयन सो देखि न परही।—राधाकृष्ण (शब्द०)। ५ बरगद। ६ पाकड। ७. अमडा। ८ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ९. सींगवाला पशु। जैसे,—गौ, बैल, बकरी आदि। १० जीवक नामक ओषधि। ११ सिंगिया नामक विष। १२ सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा, जिसे कनफटे बजाते हैं। उ०—शृंगी शब्द बघरी करा। जरै सो ठाठ जहाँ पग धरा।—जायसी (शब्द०)। १३ महादेव। शिव। उ०—शृंगी शूली घूरजटि, कुंडलीश त्रिपुरारि। वृषा कपर्दी मानहर, मृत्युजय कामारि।—सबल (शब्द०)। १४ एक प्राचीन देश का नाम। उ०—शृंगी सिंधु कच्छ के राई। आए सकल समेत सहाई।—सबल (शब्द०)। १५. मेष। भेडा (को०)। १६. वृष। बैल (को०)। १७ शिव का एक गण (को०)।

शृंगी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शृङ्गी] १ अतीस। २ काकडासिंगी। ३ सिंगी मछली। ४ मजीठ। मजिष्ठा। ५ आँवला। ६ पोई का साग। ७ ऋषभक नामक ओषधि। ८ पाकर। ९ वट। बट। १० विष। जहर। ११ वह सोना जिससे गहने बनाए जाते हैं।

शृंगीक—सज्ञा पुं० [स० शृङ्गीक] काकडासिंगी।

शृंगीकनक—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गीकनक] वह सोना जिससे गहने बनाए जाते हैं।

शृंगीगिरि—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गीगिरि] एक प्राचीन पर्वत का नाम जिसपर शृंगी ऋषि तप किया करते थे। उ०—पूरण काम ज्ञान गन राजा। शृंगी गिरि गवने यति राजा। जह शृंगी ऋषि वर तप करही। चर्म नयन सो देखि न परही।—राघव कृष्ण (शब्द०)।

शृंगेरी—संज्ञा पु० [सं० शृङ्गेरी] १ मैसूर (दक्षिण भारत) का एक पर्वत। २ शंकराचार्य के मतानुयायी संन्यासियों का एक प्रसिद्ध मठ।

विशेष—यह स्थान मैसूर (दक्षिण भारत) में है। इसके प्रधान अधीश्वर शंकराचार्य कहलाते हैं। आद्य शंकराचार्य द्वारा भारत में स्थापित चार पीठों में यह एक है। शृंगगिरि पर स्थित होने से इसे शृंगेरी कहते हैं।

शृंगोन्नति—संज्ञा स्त्री० [सं० शृङ्गोन्नति] ग्रहों और नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति।

शृंगोष्णीश—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्गोष्णीश] सिंह। मृगेंद्र। पंचास्य [को०]।

शृंकाल—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शृंगाल'।

शृंग्रु—संज्ञा पु० [सं० शृंगाल] दे० 'शृंगाल'। उ०—बहुतन कंक काक शृंग श्वाना। भक्षत करत कटकटी नाना।—विश्राम (शब्द०)।

शृंगाल[1]—संज्ञा पु० [सं०] १ गीदड़ नामक जंगली जंतु। सियार। जंबुक। विशेष दे० 'गीदड़'। उ०—व्याघ्र कुरंग शृंगाल शशादी। कानन नर वानर चित्तादी।—सबल (शब्द०)। २ एक दैत्य का नाम। ३. वासुदेव। कृष्ण।

शृंगाल[2]—वि० १ कायर। भीरु। डरपोक। २ क्रूर। निष्ठुर। निर्दय। ३ खल। दुष्ट।

शृंगालकंटक—संज्ञा पुं० [सं० शृंगालकण्टक] भरभाँड या सत्यानासी नाम का कँटीला क्षुप।

शृंगालकोलि—संज्ञा पु० [सं०] उन्नाव। कर्कंधु

शृंगालघंटी—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंगालघण्टी] तालमखाना। कोकिलाक्ष।

शृंगालजंबु—संज्ञा पुं० [सं० शृंगालजम्बु] १ गोंडुवा। गोमा ककड़ी। २. कर्कंधु। उन्नाव। ३ तरबूज।

शृंगालजंबू—संज्ञा पु० [सं० शृंगालजम्बू] दे० 'शृंगालजंबु' [को०]।

शृंगालयोनि—संज्ञा स्त्री० [सं०] दूसरे जन्म में शृंगाल रूप में जन्म लेना [को०]।

शृंगालरूप—संज्ञा पु० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

शृंगालविन्ना—संज्ञा स्त्री० [सं०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

शृंगालवृंता—संज्ञा स्त्री० [सं० शृंगालवृन्ता] पृश्निपर्णी [को०]।

शृंगालिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विदारी कंद। २. पृश्निपर्णी। पिठवन। ३. सियारिन। गीदड़ी। ४. लोमड़ी। ५. भय से पलायन की क्रिया।

शृंगाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. तालमखाना। २. विदारी कंद। ३ गीदड़ की मादा। गीदड़ी। ४ भयजन्य पलायन (को०)।

शृंणि—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ गजबाग। अंकुश। आंकुस। २ पैना।

शृत[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. क्वाथ। काढ़ा। २. औटा हुआ दूध।

शृत[2]—वि० १. उद्वेलित। खौलाया हुआ। २. पकाया हुआ [को०]।

शृतपाक—वि० [सं०] पूर्णतः पक्व। पूरी तौर से पकाया हुआ [को०]।

शृतशीत—संज्ञा पु० [सं०] औटाया हुआ पानी जो प्रायः ज्वर के रोगियों को दिया जाता है और वैद्यक के अनुसार रक्तविकार, वमन, ज्वर और सन्निपात आदि रोगों का नाशक माना जाता है।

शृदर—संज्ञा पु० [सं०] सर्प। साँप [को०]।

शृद्ध—वि० [सं०] १ आर्द्र। गीला। २. शरीर के भीतर से नीचे की ओर निकाला हुआ (वायु)। जैसे, अपान [को०]।

शृधु—संज्ञा पुं० [सं०] १. मलद्वार। गुदा। २. बुद्धि।

शृधू[1]—संज्ञा पु० [सं०] गुदा। मलद्वार।

शृधू[2]—वि० कुत्सित। बुरा। खराब।

शृष्टि—संज्ञा पु० [सं०] कंस के आठ भाइयों में से एक। उ०—शृष्टि सुनामा कंक सुहू राष्ट्रपाल न्यग्रोध। शंकु तुष्टि ए शस्त्रधर योधा पूरित क्रोध।—गोपाल (शब्द०)।

शेख[1]—संज्ञा पु० [अ० शेख] [स्त्री० शेखानी] १. पैगंबर मुहम्मद के वंशजों का उपाधि। २ मुसलमानों के चार वर्गों में सबसे पहला वर्ग। ३. मुसलमान उपदेशक। इसलाम धर्म का आचार्य। ४ पीर। बड़ा बूढ़ा।

शेख[2]—संज्ञा पुं०, वि० [सं० शेष] वि० 'शेष'।

शेख[3]—संज्ञा पु० [सं० शंख] पतित ब्राह्मण का संतति। शंख।

शेखचिल्ली[1]—संज्ञा पुं० [अ० शेख+हिं० चिल्ली] १ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध में बहुत सी विलक्षण और हँसानेवाली कहानियाँ कही जाती हैं। २ बैठे बैठे बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला। झूठमूठ बड़ी बड़ी बातें हाँकनेवाला। ३. मूर्ख मसखरा।

शेखचिल्ली[2]—वि० चंचल। शरारती। नटखट।

शेखड़ा—संज्ञा पुं० [सं० शंख+हिं० ड़ा (प्रत्य०)] शंख का छोकड़ा। पतित ब्राह्मण का पुत्र।

शेखर—संज्ञा पुं० [सं०] १. शीर्ष। सिर। माथा। २ सिर का आभूषण। मुकुट। किरीट। ३. सिर पर धारण की जानेवाली माला। ४. सिरा। चोटी। शिखर (पर्वत आदि का)। ५. श्रेष्ठतावाचक शब्द। सबसे श्रेष्ठ या उत्तम व्यक्ति या वस्तु। ६. गण के पाँचवें भेद की संज्ञा (ज्यो०)। यथा, ब्रजनाथ। ७. लवंग। लौंग [को०]। ८. शिशु मूल। सहिजन की जड़ (को०)। ९. संगीत में ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद।

शेखरापीड़ योजन—संज्ञा पुं० [सं० शेखरापीडयोजन] चौंसठ कलाओं में से एक कला का नाम। सिर पर या कला में फूल अनेक प्रकार की रचना करना।

शेखरित—वि० [स०] १ शेखरयुक्त। चूडायुक्त। २ जिससे शेखर या चूडा निर्मित हो। शेखर या चूड़ा के लिये उपयुक्त (को०)।

शेखरी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ बदा। बदाक। २ लौंग। देवी पुष्प ३. सहिंजन की जड।

शेखसद्दो—संज्ञा पुं० [अ० शेख+देश० सद्दो] मुसलमान स्त्रियों के उपास्य एक पीर जो कभी कभी भूत की तरह उनके सिर पर आते है।

शेखावत—संज्ञा स्त्री० [अ० शेख ?] क्षत्रियों की एक जाति। कछवाहे राजपूतों की एक शाखा। उ०—शेखावत राजा रह्यो, रह्यो पुरोहित तास। करमैती दुहिता रही, ताही को छत्रिराम।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—कहते हैं, किसी मुसलमान शेख या फकीर की दुआ से इस वंश के प्रवर्तक उत्पन्न हुए थे जिनका नाम इसी कारण शेखाजी पड़ा। जयपुर राज्य के अंतर्गत शेखावाटी नामक स्थान में इस शाखा के राजपूत बसते हैं।

शेखी—संज्ञा स्त्री० [फा० शेखी] १. गर्व। अहंकार। घमंड। २ शान। ऐंठ। अकड। ३ अभिमान भरी बात। डींग।

मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या मारना=बढ़ बढ़कर बातें करना। अभिमान से भरी बातें बोलना। डींग मारना। शेखी झड़ना या निकलना=गर्व चूर्ण होना। मान ध्वस्त होना। ऐसा दंड पाना या हानि सहना कि अभिमान दूर हो जाय। शेखी की बोलना=दे० 'शेखी बघारना'। उ०—अच्छा अच्छा, बस बहुत शेखी को न बोलो।—फिसाना०, भा० २, पृ० ३४।

शेखीबाज—वि० [फ़ा० शेखी+बाज] १. अभिमानी। घमंडी। २. डींग मारनेवाला (व्यक्ति)।

शेज†—संज्ञा पुं० [देश०] अंधेरी नामक वृक्ष। (बुंदेल०)।

शेठ†—संज्ञा पुं० [हिं० सेठ] दे० 'सेठ'। उ०—तब ही शेठ शाम जो आए। प्रेमभाव से शीश नवाए।—कबीर सा०, पृ० ४७४।

शेड—संज्ञा पुं० [अ०] १ छाया। छाजन। जैसे, टिन का शेड। २. लैंप का ढक्कन। उ०—पास ही टेबिल पर रखे हुए लैंप का नीलवर्ण 'शेड' उतारकर, चिमनी निकालकर, जयंती एक झाडन से उसे साफ करने लगी।—सन्यासी, पृ० २७।

शेणघटा—संज्ञा स्त्री० [स० शेणघण्टा] दंती। उदुंबरपर्णी।

शेप—संज्ञा पुं० [स०] १ पुरुष की इंद्रिय। लिंग। शिश्न। २ अंडकोश। फोता (को०)। ३. दुम। पूँछ। लांगूल (को०)।

शेपाल—संज्ञा पुं० [स०] सेवार। शैवाल।

शेफ—संज्ञा पुं० [सं०] १. लिंग। शिश्न। २ मुष्क। अंडकोश (को०)। ३. पुच्छ। दुम (को०)।

शेफालि, शेफालिका, शेफाली—संज्ञा स्त्री० [सं०] निर्गुंडी। नील सिंधुवार का पौधा।

शेयर—संज्ञा पुं० [अ०] १ हिस्सा। भाग। साझा। बाँट। २ किसी कारबार में लगी हुई पूँजी का हिस्सा जो उसमें शामिल होनेवाला हर एक आदमी लगावे।

शेयर होल्डर—संज्ञा पुं० [अं०] वह जिसके पास सम्मिलित मूलधन या पूँजी में चलनेवाले किसी कारबार या कंपनी के 'शेयर' या 'हिस्से' हों। हिस्सेदार। अंशी। जैसे,—बैंक के 'शेयर होल्डर', कंपनी के 'शेयर होल्डर'।

शेर—संज्ञा पुं० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। बाघ। व्याघ्र। नाहर।

यौ०—शेरबबर, शेरबच्चा, शेरमर।

मुहा०—शेर का पानी=भाँग छानने का कपड़ा। (भंगड़)। (चिराग) शेर करना=बत्ती बढ़ाकर रोशनी तेज करना। शेर का जाया=सिंह की मूँछ के बाल। शेर की मासी या मौसी=बिल्ली। मार्जार। शेर के मुँह में जाना=प्राणसंकट की जगह जाना। शेर के मुँह से शिकार छीनना=अत्यंत बहादुरी करके अपने से प्रबल से कोई वस्तु जबरन् ले लेना। शेर बकरी का एक घाट पर या एक साथ पानी पीना=गरीब और सबल का समान न्याय करना। ठीक ठीक इंसाफ करना। शेर होना=निडर और धृष्ट होना। डर या दबाव में न रहना। स्वेच्छाचारी और उद्दंड होना।

२. अत्यंत वीर और साहसी पुरुष। बड़ा बहादुर आदमी। (लाक्षणिक)।

शेर'—संज्ञा पुं० [अ०] फारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरण।

शेर गुलाबी—संज्ञा पुं० [फ़ा०] गहरा गुलाबी रंग।

शेरदरवाजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेरदरवाज़ा] सिंहद्वार।

शेरदहाँ'—वि० [फा०] १ जिसका मुँह शेर का सा हो। २. जिसके छोरों पर शेर का मुँह बना हो।

शेरदहाँ'—संज्ञा पुं० १. वह जिसकी पूँछ शेर के मुँह के आकार की बनी हो। २ वह मकान जो आगे की ओर चौड़ा और पीछे की ओर पतला और सकरा हो। ३ पुराने ढंग की एक प्रकार की बंदूक।

शेरदिल—वि० [फ़ा०] बहादुर। साहसी। निर्भय (को०)।

शेरनर—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर+सं० नर] वीर पुरुष। उ०—नेकबख्त दिलपाक सखी जवांमर्द शेरनर।—अकबरी०, पृ० २५।

शेरपंजा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर+हिं० पंजा] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघनहा।

शेरबकरी—संज्ञा स्त्री० [हिं०] बच्चों का एक खेल।

शेरबचा—संज्ञा पुं० [फा० शेरबचह्] दे० 'शेरबच्चा'।

शेरबच्चा—संज्ञा पुं० [फ़ा० शेर+हिं० बच्चा] १. शेर का बच्चा। २ वीरपुत्र। पराक्रमी पुरुष। बहादुर आदमी। ३. एक प्रकार की छोटी बंदूक।

शेरबबर—संज्ञा पुं० [फ़ा०] सिंह। केसरी। उ०—जूहा शेरबबर से विरुद्धता कर सके ऐसे ही ये मूर्ख मनुष्यों के ध्यान हैं।—कबीर म०, पृ० २०६।

शेरमर्द—वि० [फा०] बहादुर। वीर।

शेरमर्दी—संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] बहादुरी। वीरता।

शेरवानी—सज्ञा स्त्री० [देश०] अंग्रेजी ढग की काट का एक प्रकार का अगा।

विशेष—यह घुटनो तक लबा होता है। इसमे बालाबर, कली और चौबगले काट काटकर नहीं लगाए जाते। आगे जिस ओर बटन लगाया जाता है, उसके नीचे का आधा भाग अधिक चौडा होता है जिसमे बद या हुक लगाकर दूसरे भाग क नीचे करके बाँधते या बद करते हैं। मुसलमानो मे इसका रवाज अधिक है।

शेल—सज्ञा पु० [स० शल्य] दे० 'सेल'।

शेलक—सज्ञा पुं० [स०] लिसोडा। लिभेरा। बहुवार वृक्ष।

शेलमुख—सज्ञा पु० [स०] १. श्रीफल। बिल्व वृक्ष। २ एक प्रकार का फल।

शेलु—सज्ञा पु० [स०] १ लिसोडा। लभेरा। २ बनमेथी नामक शाक।

शेलुक—सज्ञा पु० [स०] १. लिसोडा। २. मेथी। ३ लोध्र वृक्ष।

शेलुका—सज्ञा पु० [स०] बनमेथी।

शेलुष—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का लिसोड़ा।

शेवतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] गुलदाउदी।

शेव[1]—सज्ञा पु० [स०] अभ्युदय। उन्नति। वृद्धि। २ ऊँचाई। ३. धन सपत्ति। ४ शिश्न। लिंग। ५. मछली। ६ सर्प। ७. अग्नि का एक नाम। ८ सोम का एक नाम (को०)।

शेव[2]—सज्ञा पुं० [अ०] हजामत बनाने का काम। क्षौर कर्म।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।—होना।

शेवधि—सज्ञा पुं० [स०] १ निधि। खजाना। २. कुबेर की नौ निधियो मे एक का नाम (को०)।

शेवल—सज्ञा पु० [स०] सेवार। शैवाल।

शेवलिनि, शेवलिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] (जिसमे सेवार हो) नदी। शैवलिनी।

शेवा[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] लिंग का आकार। लिंग [को०]।

शेवा[2]—सज्ञा पुं० [फा० शेवह] ढग। तरीका। उ०—ये मातम की खिजाँ का देख शेवा। उरूसे बाग हो गई आज बेवा।—दक्खिनी०, पृ० १९१।

शेवाल—सज्ञा पु० [स०] सेवार। शैवाल।

शेवाली—सज्ञा स्त्री० [स०] आकाशमासी। जटामासी का एक भेद।

शेष[1]—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो कुछ भाग निकल जाने पर रह गया हो। बची हुई वस्तु। बाकी। २. वह शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ करने के लिये ऊपर से लगाया जाय। अध्याहार। ३. बडी सख्या मे से छोटी सख्या घटाने से बची हुई सख्या। बाकी। ४. समाप्ति। अंत। खातमा। ५ परिणाम। फल। ६. स्मारक वस्तु। यादगार की चीज। ७ मरण। नाश। ८. पुराणानुसार सहस्र फनो के सर्पराज जो पाताल मे हैं और जिनके फनो पर पृथ्वी ठहरी है।

विशेष—ये 'अनत' कहे गए हैं और विष्णु भगवान् क्षीर सागर मे इन्ही के ऊपर शयन करते हैं। विष्णुपुराण मे शेष, वासुकि और तक्षक तीनो कद्रु के पुत्र माने गए हैं। पाताल के राजा कही वासुकी कहे गए हैं और कही शेष। कुछ पुराणो के अनुसार गर्ग ऋषि ने ज्योतिष विद्या इन्ही से पाई थी। लक्ष्मण और बलराम शेष के अवतार कहे गए हैं।

९. लक्ष्मण। उ०—सोहत शेष सहित रामचद्र कुश लव जोति के समर सिंधु साँचेहु सुधारचो है।—केशव (शब्द०)। १०. बलराम। ११. एक प्रजापति का नाम। १२ दिग्गजो मे से एक। १३. अनत। परमेश्वर। १४. पिगल मे टगण के पाँचवें भेद का नाम। १५. छप्पय छद के पचीसवें भेद का नाम जिसमे ४६ गुरु, ६० लघु, कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। १६. हनन। घातन। वध (को०)। १७. प्रसाद (को०)। १८ हाथी। १९ जमालगोटा।

शेष[2]—वि० १ जो कुछ भाग निकल जाने पर रह गया हो। बचा हुआ। बाकी। उ०—यह जीवन का निमेष था, पर आगे यह काल शेष था।—साकेत, पृ० ३४९। २ अत को पहुँचा हुआ। समाप्त। खतम। जैसे,—कार्य शेष होना। उ०—(क) बातें करत शेष निशि आई ऊघो गए असनान।—सूर (शब्द०)। (ख) कर स्नान शेष, उन्मुक्त केश, सासु जा रहरम समेत सुवेश, आईं करने को बातचीत।—अनामिका, पृ० १२५। ३. अतिरिक्त। और दूसरे।

शेषक—सज्ञा पु० [स०] शेषनाग [को०]।

शेषकाल—सज्ञा पु० [स०] अतिम समय। मृत्युकाल [को०]।

शेषजाति—सज्ञा स्त्री० [स०] गणित मे बचे हुए अक को लेने की क्रिया।

शेषता—सज्ञा स्त्री० [स०] शेष का भाव या क्रिया। शेषत्व [को०]।

शेषत्व—सज्ञा पु० [स०] १ उपकारिता। २ दे० 'शेषता' [को०]।

शेषवर—सज्ञा पुं० [स०] (शेष अर्थात् सर्प को धारण करनेवाले) शिव जी। उ०—शेषवरु नाग मुख ब्रह्म विष्णु इनका कलेवर तौ काल को कवरु है।—केशव (शब्द०)।

शेषनाग—सज्ञा पु० [स०] सर्पराज। शेष। विशेष दे० 'शेष'—८।

शेषपति—सज्ञा पु० [स०] व्यवस्थापक। मैनेजर [को०]।

शेषभुक्—वि० [स०] उच्छिष्टभोजी। भोजन से बचे अश को खानेवाला।

शेषभूषण—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम [को०]।

शेषभोजन—सज्ञा पु० [स०] उच्छिष्ट वस्तु का भक्षण [को०]।

शेषर—सज्ञा पु० [स० शेखर] दे० 'शेखर'।

शेषराज—सज्ञा पु० [स०] एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण होते है। विद्युल्लेखा।

शेषरात्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] रात का पिछला पहर। रात्रि का अतिम याम।

शेषव—सज्ञा पु० [स०] कार्य द्वारा कारण का निश्चय। एक अनुमान [को०]।

शेषवत्—संज्ञा पुं० [सं०] न्याय में अनुमान का एक भेद। कार्य को देखकर कारण का निश्चय। जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

शेषशयन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शेषशायी'। उ०—लख शकाकुल हो गए अतुल बल शेषशयन।—अपरा०, पृ० ४१।

शेषशायी—संज्ञा पुं० [सं० शेषशायिन्] शेष नाग पर शयन करनेवाले विष्णु।

विशेष—पुराणों के अनुसार प्रलय काल में विष्णु भगवान् तीनों लोकों को अपने पेट में धारण कर क्षीर सागर में शेषनाग की शैया बनाकर उसपर शयन करते हैं। कुछ काल के उपरांत उनकी नाभि से एक कमल निकलता है जिसपर ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है और सृष्टि का क्रम फिर से चलता है।

शेषांश—संज्ञा पुं० [सं०] १ बचा हुआ अंश। अवशिष्ट भाग। २ अंतिम अंश। आखिरी भाग।

शेषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] देवता को चढ़ी हुई वस्तु जो दर्शकों या उपासकों को बाँटी जाय। प्रसाद।

शेषाचल—संज्ञा पुं० [सं०] दक्षिण का पर्वत। उ०—मुरि मुनीश शेषाचल माहीं। बैठे आगे धरि पटकाही।—रघुराज (शब्द०)।

शेषावस्था—संज्ञा स्त्री० [सं०] वृद्धावस्था (को०)।

शेषाहि—संज्ञा पुं० [सं०] शेषनाग (को०)।

शेषोक्त—वि० [सं०] अंत में कहा या लिखा हुआ।

शेष्य—वि० [सं०] उपेक्षणीय। त्याज्य (को०)।

शै—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चीज। वस्तु। पदार्थ द्रव्य। उ०—(क) सब करामत उस कैंकर ते है मुझे। जे मेंगूं सा होवे हाजिर शै मुझे।—दक्खिनी०, पृ० १८४। (ख) लगा के बर्फ में साकी सुराहिए मै ला। जिगर की आग बुझे जल्द जिससे वह शै ला।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० २६६। २. बात (को०)। ३ अभिवृद्धि। बढ़ती (को०)।

शैक्य'—संज्ञा पुं० [सं०] १ शिक्य। २ छींका। सिकहर। छीका। २ बर्तन जो छींके पर लटकाया हुआ हो (को०)।

शैक्य'—वि० १ जो सिकहर पर लटक या हो। २. धारदार। चोखा। नोकदार। नुकीला (को०)।

शैक्यायस—संज्ञा पुं० [सं०] इस्पात लोहा।

शैक्ष'—संज्ञा पुं० [सं०] १. आचार्य के निकट रहकर शिक्षा प्राप्त करनेवाला मनुष्य। २ शिक्षा देने योग्य। वह शिष्य जो प्रारंभिक शिक्षाप्राप्त कर रहा हो।

शैक्ष'—वि० शस्त्रशास्त्रादि शिक्षा संपन्न। शिक्षा के अनुकूल व्यवहार-युक्त (को०)।

शैक्षिक—संज्ञा पुं० [सं०] शिक्षा विषय को जाननेवाला। 'शिक्षा' का ज्ञाता।

शैक्ष्य—संज्ञा पुं० [सं०] पांडित्य। पाटव। नैपुण्य (को०)।

शैख'—संज्ञा पुं० [सं०] पतित ब्राह्मण की संतान। व्रात्य (स्मृति)।

शैख'—संज्ञा पुं० [अ० शैख] दे० 'शेख' (को०)।

शैखरिक, शैखरेय—संज्ञा पुं० [सं०] ओगा। अपामार्ग। चिचड़ा। लटजीरा।

शैखिन—वि० [सं०] शिखी संबंधी। मयूरसंबंधी। मयूर का (को०)।

शैखेय—वि० [सं०] जिसमें शिखा अर्थात् नोक हो। नोकदार। नुकीला (को०)।

शैग्रव—संज्ञा पुं० [सं०] सहिजन के बीज। सिग्रुबीज।

शैत्र, शैत्र्य'—संज्ञा पुं० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

शैत्र, शैत्र्य'—वि० ज्योतिष के योग में पर्वत रखनेवाला।

शैतान—संज्ञा पुं० [प०] १ ईश्वर के समान सर्वशक्तिमान का विरोध करनेवाली शक्ति या देवता। तमोगुणमय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर सर्वनाश में अर्थात् करने के प्रयत्न में रहा करता है।

विशेष—यहूदी, ईसाई और इसलाम तीनों पैगंबरी मतों में दो परस्पर विरुद्ध शक्तियाँ मानी गई हैं—एक सत् दूसरी असत्। सत्स्वरूप ईश्वर के सर्वशक्तिमान में, असत् शक्ति सदा विरोध भावना में तत्पर रहती है। आदि पैगंबर मूसा ने 'तौरेत' में लिखा है कि पहले आदम और हौवा ईश्वर की आज्ञा में रहकर बड़े आनंद से स्वर्ग के उद्यान में रहा करते थे। शैतान ने हौवा को बहकाकर ज्ञान का वह फल खाने के लिए कहा जिसका ईश्वर ने निषेध किया था। इस अपराध पर आदम और हौवा स्वर्ग से निकाल दिए गए और वे पृथ्वी पर आए। इन्हीं से यह मनुष्यसृष्टि चली। ऐसा लिखा है कि शैतान भी पहले ईश्वर का मुख्य एक फरिश्ता (पारिषद) था। जब ईश्वर ने आदम या मनुष्य उत्पन्न किया, तब यह ईर्ष्यावश ईश्वर से बिगड़ी हो गया और उसकी सृष्टि में उत्पात करने लगा। ईश्वर ने उसे स्वर्ग से निकालकर नरक में भेज दिया जहाँ का वह राजा हुआ। सत् और असत् इन दो नित्य शक्तियों की भावना यहूदियों के पैगंबर मूसा को पारसियों (जाबुस्ताक) और पारसीकों आदि प्रायः सब जातियों में मिली थी। जरथुस्त्र ने भी अवस्ता में अहुरमज्द (सत् शक्ति) और अहरिमान (असत् शक्ति) दो शक्तियाँ कही हैं।

मुहा०—शैतान का कान में फूँकना = शैतान का बहकाना। शैतान का चक्का = दुर्वृत्त। बुरा प्रेरणा। शैतान का बच्चा = बहुत दुष्ट आदमी। शैतान का आंत = बहुत लंबा वस्तु। शैतान का साला = बहुत दुष्ट या पाजी औरत। (गाली)। शैतान की सूरत = अंध रूप। राक्षस की आकृति का।

२ दुष्ट देवयोनि। भूत। प्रेत।

मुहा०—शैतान उतरना = (१) भूतप्रेतादि का आवेश शांत होना। (२) क्रोधावेश दूर होना। (३) शरारतापन न रहना। शैतान चढ़ना या लगना = (१) भूत प्रेत का आवेश होना। प्रेत का भाव पड़ना। (२) क्रोधावेश से आगबबूला हो जाना। शैतान का कान काटना = शैतान से भी बढ़ जाना। (सिर पर) शैतान

सवार होना। (१) किसी का अत्यत क्रुद्ध होना। (२) किसी बात की हठ पकडना। जिद चढना। (३) शैतानी करना।

यौ०—शैतानसीरत = शैतान की प्रकृतिवाला। महादुष्ट। शैतान सूरत = शैतान की आकृति का। डरावना।

३ बहुत ही दुष्ट या क्रूर मनुष्य। घोर अत्याचारी। (लाक्षणिक)। ४ बहुत ही नटखट मनुष्य। बहुत शरारती आदमी। (लाक्षणिक)। ५ क्रोध। तामस। गुस्सा। ६ झगडा। टटा। फसाद। उपद्रव।

मुहा०—शैतान उतरना = झगडा खडा करना। उपद्रव मचाना।

शैतानी[1]—सज्ञा स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। शरारत। पाजीपन।

शैतानी[2]—वि० १ शैतान सबधी। शैतान का। जैसे,—शैतानी गोल। २ नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण। जैसे,—शैतानी हरकत। ३ निकृष्ट। बुरा। पापमय (को०)।

शैत्य—सज्ञा पु० [स०] शीत। ठढक।

शैथिलिक—वि० [स०] आलसी। मद। ढीलाढाला [को०]।

शैथिल्य—सज्ञा पु० [स०] १. शिथिल होने का भाव। शिथिलता। ढिलाई। २ तत्परता का अभाव। फुरती का न होना। सुस्ती। ३. दीर्घसूत्रता (को०)। ४. दुर्बलता। भीरुता (को०)। ५ अस्थिरता। चचलता (को०)। ६ दृष्टि की शून्यता या रिक्तता (को०)। ७. अवहेला। अवज्ञा। उपेक्षा (को०)।

शैदा—वि० [फा०] आशिक। आसक्त। मुग्ध। उ०—तुझ हुश्न आलमताब का जो आशिकी शैदा हुआ। हर खूबरू के हुस्न के जलवा सूं बेपरदा हुआ।—कविता कौ०, भा० ४, पृ० ८। २. बहुत अधिक इच्छुक या आतुर (को०)। ३. उन्मत्त। पागल (को०)।

यौ०—शैदाए इल्म = ज्ञान प्राप्त करने का अभिलाषी। शैदाए वतन = देशभक्त। शैदाए हुस्न = सौदर्य प्रेमी।

शैनेय—सज्ञा पु० [स०] शिनि का पुत्र सात्यकि नामक वीर यादव, जो कृष्ण का सारथी था।

विशेष—यह अर्जुन का शिष्य था और महाभारत की लडाई मे भूरिश्रवा को इसी ने मारा था। यादवो के पारस्परिक मुसलयुद्ध मे यह मारा गया था।

शैन्य—सज्ञा पुं० [स०] शिनि के वशज जो क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गए थे।

शैव्य—वि० सज्ञा पु० [स०] दे० 'शैव्य' [को०]।

शैरस—सज्ञा पु० [स०] पलग या चारपाई का सिरहाना [को०]।

शैरिक—सज्ञा पु० [स०] नीले फूल की कटसरैया।

शैरीयक, शैरेयक सज्ञा पु० [स०] दे० 'शैरिक' [को०]।

शैल[1]—वि० [स०] १. शिला सबधी। पत्थर का। २. पथरीला। चट्टानी। ३ कडा। कठोर।

शैल[2]—सज्ञा पुं० १. पर्वत। पहाड। उ०—दीन्हो डारि शैल ते भू पर पुनि जन्म भीतर डारयो।—सूर (शब्द०)। २ चट्टान। शिला। ३ छरीला। शैलेय। ४. रसौत। रसवत। ५. शिलाजीत। ६. लिसोडा। बहुवार। ७. बाँध। बधा (को०)। ८ एक प्रकार का अजन। सुरमा (को०)। ९. पत्थरो का ढेर। प्रस्तरनिचय। प्रस्तरसमूह (को०)। १० सात की सख्या का बोधक शब्द (को०)।

शैलकंपी—सज्ञा पु० [स० शैलकम्पिन्] १. स्कद का एक अनुचर।

शैलक—सज्ञा पु० [स०] १ छरीला। शैलेय। २ गूगुल (को०)।

शैलकटक—सज्ञा पु० [स०] पहाड की ढाल।

शैलकन्या—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती।

शैलकुमारी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती। उ०—पुनि चढि नदी चले पुरारी। पाणि जोरि तब शैलकुमारी।—रघुराज (शब्द०)।

शैलकूट—सज्ञा पु० [स०] पहाड की चोटी [को०]।

शैलगग, शैलगगा—सज्ञा स्त्री० [स० शैलगङ्गा] गोवर्धनपर्वत की एक नदी जिसमे श्रीकृष्ण ने सब तीर्थो का आवाहन किया था। उ०—इन्हहिं आदि तीरथ सकल शैलगग प्रति आँहि। जेहि दरसे परसे परम गति कहँ मानव जाहिं।—गोपाल (शब्द०)।

शैलगध—सज्ञा पु० [स० शैलगन्ध] शबर चदन। बर्बर चदन।

शैलगर्भाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सिहली पीपल। २ पखानभेद। पत्थरचूर।

शैलगुरु[1]—सज्ञा पु० [स०] हिमालय [को०]।

शैलगुरु[2]—वि० पहाड जैसा भारी [को०]।

शैलज—सज्ञा पुं० [स०] १ पथरफूल। छरीला। २ शिलाजतु। शैलाज।

शैलजन—सज्ञा पु० [स०] पहाडी मनुष्य [को०]।

शैलजा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पर्वत से उत्पन्न। पार्वती। दुर्गा। २. सिहपिप्पली। ३ गजपिप्पली। ४ पाषाणभेद।

शैलजात—सज्ञा पुं० [स०] छरीला। पथरफूल।

शैलजाता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गोल मिर्च। काली मिर्च। २ गजपिप्पली।

शैलतटी—सज्ञा स्त्री० [स०] पहाड की तराई। उ०—जब वह मेरे साथ टहलने शैलतटी मे जाता था। अपनी अमृतमय वाणी से प्रेमसुधा बरसाता था।—श्रीधर (शब्द०)।

शैलतनया—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती [को०]।

शैलता—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'शैलत्व'।

शैलत्व—सज्ञा पु० [स०] शैल होने का भाव [को०]।

शैलदुहिता—सज्ञा स्त्री० [स० शैलदुहितृ] पार्वती।

शैलधन्वा—सज्ञा पु० [स० शैलधन्वन्] महादेव। शिव।

शैलधर—सज्ञा पु० [स०] गिरिधर। श्रीकृष्ण।

शैलधातु—सज्ञा पु० [स०] खनिज द्रव्य। धातु [को०]।

यौ०—शैलधातुज = शिलाजतु।

शैलधातुक, शैलधातुज—सज्ञा पु० [स०] शिलाजतु। शिलाजीत।

शैलनदिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शैलनन्दिनि] पार्वती।

शैलनिर्यास—सज्ञा पु० [स०] शिलाजतु। शिलाजीत।

शैलपति—सज्ञा पुं० [स०] हिमालय पहाड।

शैलपत्र—संज्ञा पुं० [सं०] बेत। बिल्व वृक्ष।

शैलप्रतिमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शिला पर चित्रित, अंकित वा टंकित आकृति (को०)।

शैलपुत्री—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक दुर्गा का नाम। ३ गंगा नदी।

शैलपुष्प—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजतु। शिलाजीत।

शैलबाला—संज्ञा स्त्री० [सं०] छोटा झरना। निर्झरिणी। निर्झरी।

शैलबीज—संज्ञा पुं० [सं०] भिलावाँ। भेला।

शैलभित्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] पत्थर को तोड़ने या काटने का औजार। टाँकी। छेनी (को०)।

शैलभेद—संज्ञा पुं० [सं०] पाषाणभेद।

शैलमल्ली—संज्ञा स्त्री० [सं०] कुटज। कोरैया।

शैलमृग—संज्ञा पुं० [सं०] जंगली बकरा (को०)।

शैलरंध्र—संज्ञा पुं० [सं० शैलरन्ध्र] गुफा।

शैलराज—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत।

यौ०—शैलराजतनया, शैलराजपुत्री, शैलराजसुता = पार्वती।

शैलरोही—संज्ञा पुं० [सं०] मोगरा चावल।

शैलवल्कला—संज्ञा पुं० [सं०] पाषाणभेद। श्वेत पाषाण।

शैलशिखर—संज्ञा पुं० [सं०] पर्वत की चोटी (को०)।

शैलशिविर—संज्ञा पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

विशेष—कहते हैं, जब इंद्र ने पर्वतों पर चढ़ाई की थी, तब कुछ पर्वत समुद्र में जा छिपे थे। इसी से समुद्र का यह नाम पड़ा है।

शैलशेखर—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ की चोटी।

शैलशृंग—संज्ञा पुं० [सं० शैलशृङ्ग] दे० 'शैलकूट' (को०)।

शैलसंधि—संज्ञा स्त्री० [सं० शैलसन्धि] पर्वत के बीच की संधि। दर्रा। घाटी (को०)।

शैलसंभव—संज्ञा पुं० [सं० शैलसम्भव] शिलाजीत।

शैलसंभूत—संज्ञा पुं० [सं० शैलसम्भूत] गेरू।

शैलसार—वि० [सं०] पर्वत के समान अचल वा स्थिर। दृढ़ (को०)।

शैलसुता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २ ज्योतिष्मती (को०)।

शैलसेतु—संज्ञा पुं० [सं०] प्रस्तर निर्मित पुल या बाँध (को०)।

शैलाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] एक देश का नाम (को०)।

शैलाग्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ पथरफूल। छरीला। २ शिलाजीत।

शैलाग्र—संज्ञा पुं० [सं०] पहाड़ की चोटी (को०)।

शैलाज—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शैलज'।

शैलाट—संज्ञा पुं० [सं०] १ पहाड़ी आदमी। परवतिया। २ किरात। ३ सिंह। ४ देवलक। देवल का पुजारी (को०)। ५. स्फटिक। बिल्लौर।

शैलादि—संज्ञा पुं० [सं०] शिव के गण, नंदी।

शैलाधारा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पर्वतों का आधार, पृथिवी (को०)।

शैलाधिप, शैलाधिराज—संज्ञा पुं० [सं०] हिमालय पर्वत।

यौ०—शैलाधिपतनया, शैलाधिराजतनया = पार्वती।

शैलाभ—संज्ञा पुं० [सं०] विश्वेदेव में से एक।

शैलाली—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाली। नट।

शैलासन—संज्ञा पुं० [सं०] १. बैठने का एक ढंग। २ लकड़ी या पत्थर का बना हुआ एक प्रकार का पासन (को०)।

शैलाधा—संज्ञा स्त्री० [सं०] शैलपुत्री। पार्वती (को०)।

शैलाह्व—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शैलिक—संज्ञा पुं० [सं०] शिलाजीत।

शैलिनेय—संज्ञा पुं० [सं०] संन्यासी। वह व्यक्ति जिसने मन, वचन, कर्म से लिंग न हो। पारंगी व्यक्ति।

शैली—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. चाल। ढब। ढंग। २ परिपाटी। प्रणाली। तर्ज। तरीका। ३. रीति। प्रथा। रस्म रिवाज। ४. लिखने का ढंग। ग्रंथरचना का प्रकार। विचारों या भावों को अभिव्यक्त करने की रीति या कौशल। उ०—शैली श्रेष्ठ कवीश की, गुरु का गुरु है जोन। सादा चरित्र बनाति है, वह होय मति तीन।—रघुराज (शब्द०)। ५. बढ़ाव। कढ़ाई। सजावट। ६ व्याकरण संबंधी या व्याकरण के नियम वा वचनों की संक्षिप्त निवृत्ति (को०)। ७. प्रस्तरमूर्ति। शिला-प्रतिमा (को०)।

शैलीकार—संज्ञा पुं० [सं० शैली+कार] कला, साहित्य में विशिष्ट शैली का निर्माण या उसकी विशेष ढंग से अभिव्यक्ति करने-वाला व्यक्ति।

शैलू'—संज्ञा पुं० [सं०] लिसोड़ा। लभेरा।

शैलू'—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की चटाई जिसका व्यवहार दक्षिण और गुजरात में होता है।

शैलूक—संज्ञा पुं० [सं०] १ बहुवार वृक्ष। लिसोड़ा। लभेरा। २ कमलकंद। भसीड़।

शैलूकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कमलकंद। भसीड़।

शैलूष—संज्ञा पुं० [सं०] १ अभिनय करनेवाला। नाटक खेलनेवाला। सूत्रधार। नट। २ पक्षियों का स्वामी, रोहितपक्षी (रामायण)। ३ धूर्त। ४ विल्व वृक्ष। बेल। ५ वह जो संगीत में ताल देता हो (को०)। ६ तालधारक (को०)।

शैलूषभूषण—संज्ञा पुं० [सं०] हरताल।

शैलूषिक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शैलूषिकी] नट वृत्ति से जीवन निर्वाह करनेवाली एक जाति। शिलाली। नट।

शैलूषिकी—संज्ञा स्त्री० [सं०] नटी। शैलूष जाति की स्त्री (को०)।

शैलेंद्र—संज्ञा पुं० [सं० शैलेन्द्र] हिमालय।

यौ०—शैलेंद्रजा, शैलेंद्रदुहिता, शैलेंद्रसुता—(१) हिमालय की पुत्री। पार्वती। (२) गंगा।

शैलेंद्रस्थ—संज्ञा पुं० [सं० शैलेन्द्रस्थ] भोजपत्र। भूर्जपत्र का वृक्ष।

शैलेय[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शैलेयी] १ पत्थर का । पथरीला । २ पहाडी । ३ पत्थर से उत्पन्न । ४ शिलातुल्य । पत्थर की तरह कठोर (को०) । ५ जो डिगाया न जा सके । अचल ।

शैलेय[2]—सज्ञा पु० १. दे० 'छरीला' । २ शिलाजीत । ३. मूसली । तालपर्णी । ४ सेधा नमक । ५ सिंह । ६ भ्रमर ।

शैलेयक—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शैलेय' ।

शैलेयी—सज्ञा स्त्री० [स०] पार्वती । शैलपुत्री ।

शैलेश्वर—सज्ञा पु० [स०] शिव । महादेव ।

शैलोदा—सज्ञा स्त्री० [स०] वाल्मीकि रामायण और महाभारत मे वर्णित उत्तर दिशा की एक नदी ।

शैलोद्भेदा—सज्ञा स्त्री० [स०] पाषाणभेद । क्षुद्र पाषाण ।

शैल्य[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शैल्या] १ पत्थर का । २ पथरीला । ३ कडा । कठोर ।

शैल्य[2]—सज्ञा पु० शिलापन । कडापन । कठोरता [को०] ।

शैव[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० शैवी] शिव सबधी । शिव का । जैसे,—शैव दर्शन ।

शैव[2]—सज्ञा पु० १ शिव का अनन्य उपासक । महादेव का भक्त ।

विशेष—उपासनाभेद मे आधुनिक हिंदू धर्म मे तीन मुख्य सप्रदाय प्रचलित हैं—शैव, शाक्त और वैष्णव । शैव लोग परमेश्वर को शिवरूप ही मानते है । उनके अनुसार शिव ही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और सहार तीनो करते हैं । पूजा के लिये शिव की प्रतिमा नही बनाई जाती, लिंग ही उनका प्रतीक माना जाता है । (विशेष दे० 'लिंग') । शैव लोग शरीर मे भस्म लगाते, गले में रुद्राक्ष की माला पहनते और माथे पर त्रिपुड (तीन आडी रेखाएँ) लगाते हैं । शैवो के अनेक भेद है जो अधिकतर दक्षिण मे पाए जाते हैं । काश्मीर मे भी शैव मत का विशेष रूप से प्रचार था । शकराचार्य के अनुयायी अद्वैतवादी भी उपासनाक्षेत्र में शैव ही होते है । शिव की उपासना भारत तथा उसके निकटवर्ती देशो मे बहुत प्राचीन काल मे भी प्रचलित थी । नैपाल, तिब्बत आदि मे बौद्ध धर्म के साथ उसमे मिली हुई शिव की उपासना बहुत दिनो से प्रचलित चली आती है । ईसा के पूर्व के सिक्को मे भी त्रिशूल, नंदी आदि पाए जाते हैं । ऐसे सिक्के खुरासान तक मे पाए गए हैं । शको और हूणो में भी शैव धर्म प्रचलित था ।

२ पाशुपत अस्त्र । ३ धतूरा । ४ वासक । अडूसा । ५ शुभ । कल्याण । शुभता (को०) । ६ आचारभेद तत्र के अनुसार देवी की उपासना का एक विशेष आचार (को०) । ७ शिवपुराण (को०) । ८ तत्र का एक ग्रथ (को०) । ९ शैवाल । १० पाँचवें कृष्ण । वासुदेव । (जैन) ।

शैवपत्र—सज्ञा पुं० [स०] बिल्व वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ शिव पर चढ़ती हैं । बेल ।

शैवपुराण—सज्ञा पु० [स०] शिवपुराण ।

शैवमल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] लिंगिनी नाम की लता । पँचगुरिया ।

शैवल—सज्ञा पु० [स०] १ पद्माख । पद्मकाष्ठ । पदुमाख । २. सेवार । ३ एक पर्वत । ४ एक नाग का नाम । (बौद्ध) ।

शैवलिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] नदी ।

शैवाल—सज्ञा पु० [स०] सिवार । सेवार ।

शैवी[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पार्वती । २ मनसा नाम की देवी । ३ कल्याण । मंगल ।

शैवी[2]—वि० स्त्री० शिव सबधिनी । शिव की । जैसे,—शैवी उपासना, शैवी शक्ति ।

शैव्य[1]—वि० [स०] १. शिव सबधी । २ शिवी नरेश या जनपद सबधी ।

शैव्य[2]—सज्ञा पु० १ पाडवो का एक सेनापति । २ श्रीकृष्ण का एक घोडा । ३ अश्व । घोडा (को०) ।

शैव्या—सज्ञा स्त्री० [स०] १. चडकौशिक के अनुसार अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चद्र की रानी का नाम । २ महाभारत के अनुसार प्रतीप नरेश की पत्नी का नाम (को०) । ३ सूर्यवशी राजा सगर की पत्नी जिसका पुत्र असमज था (को०) ।

शैशव[1]—वि० [स०] शिशु सबधी । बच्चा का । २. बाल्यावस्था सबधी ।

शैशव[2]—सज्ञा पु० १ अनजान बालक की अवस्था । बचपन । २ बच्चो का सा व्यवहार । लडकपन ।

शैशिर[1]—वि० [स०] १ शिशिर सबधी । २ शिशिर मे उत्पन्न । ३. बर्फ से युक्त । हिमण्य । बर्फीला (को०) ।

शैशिर[2]—सज्ञा पु० १. ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक एक ऋषि का नाम । २ कृष्ण चातक पक्षी । काले रंग का पपीहा ।

शैशिरीय—वि० [स०] दे० 'शैशिर[1]' ।

शैशिरीय (शाखा)—सज्ञा स्त्री० [स०] ऋग्वेद की साकल शाखाओ मे से एक ।

शैशुनाग—सज्ञा पु० [स०] मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग का वशज ।

शैशुमार—सज्ञा पु० [स०] शिशुमार सबधी ।

शैश्न्य—सज्ञा पुं० [स०] सभोग । मैथुन । रति [को०] ।

शैष—सज्ञा पु० [स०] शिशिर ऋतु । ठढ का मौसिम [को०] ।

शैषिक—वि० [स०] शेष या शेषाश सबधी [को०] ।

शैसीक—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन जाति का नाम ।

शोक—सज्ञा पु० [स०] इष्ट के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से उत्पन्न मनोविकार । किसी प्रिय व्यक्ति के अभाव या पीडा आदि से अथवा दु खदायी घटना से उत्पन्न क्षोभ । रंज । गम ।

विशेष—साहित्य मे 'शोक' नौ स्थायी भावो मे से एक है और करुण रस का मूल है । पुराणो मे 'शोक' मृत्यु का पुत्र कहा गया है ।

यौ०—शोककर्षित। शोकचर्या। शोकनाश। शोकनिहित, शोकपरायण, शोकपरिप्लुत, शोकपीडित, शोकविकल, शोकविह्वल, शोकरुग्ण, शोक संतप्त = शोक से ग्रस्त। शोक से व्याकुल।

शोककर्षित—वि० [स०] शोक से पीडित। शोक से दुखी [को०]।

शोककारक—वि० [स०] शोक उत्पन्न करनेवाला।

शोकघ्न—सज्ञा पुं० [स०] अशोक वृक्ष।

शोकचर्चा—सज्ञा स्त्री० [स०] शोक की चरचा करना। शोक व्यक्त करना [को०]।

शोकनाश, शोकनाशक, शोकनाशन—सज्ञा पुं० [स०] १ अशोक वृक्ष। २ वह जिससे शोक का नाश हो।

शोकसारण—वि० [स० शोक+सारण] शोक या दुःख को दूर करनेवाला। उ०—शोकसारण करण कारण, तरण तारण विष्णु शंकर।—अर्चना, पृ० ८८।

शोकसूचक—वि० [स०] शोक या दुःख को बतानेवाला। शोक को व्यक्त करनेवाला।

शोकस्थान—सज्ञा पु० [स०] शोक का कारण [को०]।

शोकहर—सज्ञा पुं० [स०] एक छद का नाम जिसके प्रत्येक पद में ८, ८, ८, ६ के विश्राम से (अंत गुरु सहित) तीस मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पद से दूसरे, चौथे और छठे चौकल मे जगण न पडे। इसको शुभागी भी कहते हैं।

शोकहारी—सज्ञा स्त्री० [स०] बन बर्बरी। अजगधा।

शोकाकुल—वि० [स०] शोक से व्याकुल।

शोकातुर—वि० [स०] शोक से विह्वल वा व्याकुल।

शोकापनोद, शोकापनोदन—सज्ञा पुं० [स०] शोक को दूर करना। शोक का निवारण करना [को०]।

शोकाभिभूत—वि० [स०] शोकार्त। शोकातुर।

शोकारि—सज्ञा पु० [स०] कदम। कदब वृक्ष।

शोकार्त—वि० [स०] शोक से आर्त। शोक से विकल।

शोकाविष्ट—वि० [स०] जो शोक मे अत्यत सतप्त और व्याकुल हो।

शोकावेग—सज्ञा पुं० [स०] बार बार या रह रहकर शोक का अनुभव होना [को०]।

शोकी—सज्ञा स्त्री० [स०] रात्रि। रात।

शोकोपहत—वि० [स०] शोक से विकल।

शोख—वि० [फा० शोख] १ ढीठ। धृष्ट। प्रगल्भ। २ शरीर। नटखट। ३. चचल। चपल। ४. जो मद या धूमिल न हो। गहरा और चमकदार। चटकीला। जैसे,—शोख रग।

यौ०—शोखबयानी = चटपटा या धृष्टतापूर्ण बयान। उ०—चरब जुबानी हाय हाय। शोखबयानी हाय हाय।—भारतेंदु ग्र०, भा० २, पृ० ६७८।

शोखी—सज्ञा स्त्री० [फा० शोखी] १. धृष्टता। ढिठाई। १. नटखटपना। ३. चचलता। चपलता। ४ तेजी। चटकीलापन। जैसे,—रग की शोखी।

शोग—सज्ञा पु० [स० शोक] दे० 'सोग'। उ०—आज्ञा भई फिर्‌यो सब लोगा। सब कहँ भयो राम कर शोगा।—कबीर सा०, पृ० ३९।

शोच—सज्ञा पुं० [स० शोचन] १ दुख। रंज। शोक। अफसोस। २ पीडा। वेदना (को०)। ३ चिंता। फिक्र। खटका।

शोचन—सज्ञा पु० [स०] [वि० शोचनीय, शोचितव्य, शोच्य] १ शोक करना। रंज करना। २ चिंता करना। ३. शोक। रज।

शोचनीय—वि० [स०] १. शोक करने योग्य। जिसकी दशा देखकर दुख हो। २ जिससे दुख उत्पन्न हो। दुःखोत्पादक। ३ जो बहुत हीन या बुरा हो।

शोचि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ लौ। लपट। २ दीप्ति। चमक। ३ वर्ण। रग।

शोचितव्य—वि० [सं०] दे० 'शोचनीय' [को०]।

शोचिष्केश—सज्ञा पु० [सं०] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ चित्रक वृक्ष। चीता।

शोच्य—वि० [सं०] दे० 'शोचनीय' [को०]।

शोटीर्य—सज्ञा पु० [सं०] बल वीर्य। पराक्रम।

शोठ—वि० [स०] १. मूर्ख। बेवकूफ। २. नीच। खोटा। ३ आलसी। निकम्मा। ४. धूर्त। ठग।

शोण'—सज्ञा पुं० [स०] १ लाल रंग। २. लाली। अरुणता। ३. अग्नि। आग। ४ सिंदूर। सेंदुर। ५ रक्त। रुधिर। खून। ६. पद्मराग मणि। मानिक। ७. रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना। ८. सोना पाठा। ९. लाल गन्ना। १०. एक नद का नाम। विशेष दे० 'सोन'। ११. ललाई लिए भूरे रग का, भिंग वर्ण का घोडा (को०)। १२. मगल ग्रह (को०)।

शोण'—वि० १ लाल। गहरा लाल। २ लाख के रंग का। लालिमा युक्त भूरा। ३. पीत। पीला [को०]।

शोणक—सज्ञा पु० [स०] १. सोनापाठा। २. लाल गदहपूरना। ३. लाल गन्ना।

शोणगिरि—सज्ञा पुं० [सं०] एक पहाडी का नाम जिसपर मगध देश की पुरानी राजधानी 'राजगृह' थी।

शोणझिंटिका, शोणझिंटी—सज्ञा स्त्री० [स० शोणझिण्टिका, शोणझिण्टी] पीली कटसरैया।

शोणपत्र—सज्ञा पुं० [स०] रक्त पुनर्नवा। लाल गदहपूरना।

शोणसद्म—सज्ञा पुं० [स०] लाल कमल।

शोणपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] कचनार। कोविदार वृक्ष।

शोणपुष्पक—सज्ञा पुं० [स०] १. दे० 'शोणपुष्प'। २. वह जिसके फूल शोण वर्ण के हो [को०]।

शोणपुष्पी—सज्ञा स्त्री० [स०] सिंदूरपुष्पी। सेंदुरिया।

शोणभद्र—सज्ञा पु० [स०] सोन नदी।

शोणमणि—सज्ञा स्त्री० [स०] पद्मराग मणि। मानिक [को०]।

शोणरत्न—सज्ञा पुं० [स०] मानिक। लाल।

शोणसंभव—सज्ञा पुं० [स० शोणसम्भव] पिपलामूल। पिप्पलीमूल।

शोणहय—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत के अनुसार द्रोणाचार्य का एक नाम। (को०)।

शोणाबु—सज्ञा पु० [स० शोणाम्बु] प्रलय काल के मेघो मे से एक मेघ का नाम।

शोणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ वह स्त्री जिसका वर्ण शोण हो (को०)। २ सोन नदी। ३ लाल कटसरैया। ४. श्योनाक। सोनापाठा (को०)।

शोणाक—सज्ञा पुं० [स०] श्योनाक वृक्ष (को०)।

शोणाश्म—सज्ञा पुं० [स० शोणाश्म] १. लाल पत्थर। २. पद्मराग। मानिक (को०)।

शोणित[1]—वि० [स०] लाल। रक्त वर्ण का।

शोणित[2]—सज्ञा पु० १ रक्त। रुधिर। खून। उ०—आहत जन के शोणित पर ही गिरी भरत रोदन धारा।—साकेत, पृ० ३८१। २. पौधो का रस। ३ केसर। जाफरान। ४. ईगुर। शिंगरफ। ५ ताम्र धातु। ताँबा। ६ तृणकेशर।

शोणितचदन—सज्ञा पुं० [स० शोणितचन्दन] लाल चदन।

शोणितप—वि० [स०] रक्त पीनेवाला (को०)।

शोणितपारणा—सज्ञा स्त्री० [सं०] उपवास आदि के बाद खून या मास का भोजन (को०)।

शोणितपित्ता—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे रक्तवाहिनी शिराएँ फट जाती हैं और रक्तस्राव होने लगता है (को०)।

शोणितपुर—सज्ञा पुं० [स०] बाणासुर की राजधानी।

शोणितभृत्—सज्ञा पु० [स०] शरीरधारी। शरीरवाला। शरीरी (को०)।

शोणितमेह—सज्ञा पुं० [स०] लाल प्रमेह।

शोणितमेही—सज्ञा पु० [स० शोणितमेहिन्] शोणित मेह का रोगी। प्रमेह का रक्त रोगी (को०)।

शोणितशर्करा—सज्ञा स्त्री० [स०] शहद की चीनी।

शोणितशोण—वि० [स०] खून से लाल।

यौ०—शोणितशोणपाणि = खून से लाल लाल हाथोवाला।

शोणितार्बुद—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का शूक रोग जिसमे लिंग पर फुसियाँ निकलती हैं।

शोणितार्श—सज्ञा पु० [स०] आँख की पलक का एक रोग जिसमे पलको की कोर पर कोमल और लाल रग का मास का अकुर उत्पन्न होता है।

शोणिताह्वय—सज्ञा पुं० [स०] केसर। कुंकुम।

शोणितोत्पल—सज्ञा पुं० [स०] लाल कमल। कोकनद (को०)।

शोणितोपल—सज्ञा पु० [स०] १. मानिक। लाल। शोणाश्म। २. लाल वर्ण का पत्थर (को०)।

शोणिमा—सज्ञा स्त्री० [सं० शोणिमन्] अरुणिमा। लालिमा (को०)।

शोणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वह स्त्री जिसके शरीर का रग लाल कमल के समान हो। रक्तोत्पल वर्ण की स्त्री। २. शोण वर्ण की बडवा (को०)।

शोणोपल—सज्ञा पु० [स०] १. मानिक। लाल। २ लाल वर्ण का पत्थर (को०)।

शोथ—सज्ञा पुं० [स०] १. किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम। २. अंग मे सूजन होने का रोग। वरम।

विशेष—जब दूषित रक्त, पित्त या कफ कुपित वायु से नसो में रुद्ध हो जाता है, तब सूजन होती है। शोथ तीन प्रकार का कहा गया है—वातज, पित्तज और कफज। आमाशय मे दोष होने से छाती के ऊपर, पक्वाशय मे होने स छाती के नीचे और मलाशय मे होने से कमर से पैर तक सारे शरीर मे शोथ होता है। शरीर के मध्य भाग या सर्वांग का शोथ कष्टसाध्य कहा गया है। जो शोथ केवल अर्वांग मे उत्पन्न होकर ऊपर की ओर बढ़ता हो, वह प्राय घातक होता है। पर पाडु आदि रोगो मे पैर से ऊपर की ओर बढनेवाला शोथ घातक नही होता। स्त्रियो को कुक्षि, उदर, गर्भस्थान या गले का शोथ असाध्य होता है। जो शोथ बहुत भारी और कडा हो और जिसमे श्वास, प्यास, दुर्बलता, अरुचि आदि उपद्रव भी उत्पन्न हो, वह भी असाध्य कहा गया है।

शोथक—सज्ञा पुं० [स०] १. द० 'शोथ'। २ मुरदासग।

शोथघ्न—सज्ञा पु०, वि० [स०] दे० 'शोथजित्' (को०)।

शोथघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ गदहपूरना। पुनर्नवा। २. शालपर्णी। सरिवन।

शोथजित्[1]—सज्ञा पु० [सं०] १. भिलावाँ। भल्लातक। २. पुनर्नवा।

शोथजित्[2]—वि० शोथ दूर करनेवाला। जिससे शोथ रोग दूर हो।

शोथजिह्म—सज्ञा पुं० [स०] पुनर्नवा। गदहपूर्णा।

शोथरोग—सज्ञा पु० [स०] शोथ या सूजन का रोग।

शोथहृत्—सज्ञा पु० [स०] भिलावाँ। भल्लातक।

शोथारि—सज्ञा पु० [स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

शोद्धव्य—वि० [स०] जिसे शुद्ध करना हो। शोधने योग्य।

शोध—सज्ञा पु० [स०] १. शुद्धि सस्कार। सफाई। २ ठीक किया जाना। दुरुस्ती। ३ चुकता होना। अदा होना। बेबाक होना। जैसे,—ऋण का शोध होना। ४. जाँच। परीक्षा। ५. प्रतिकार। प्रतिशोध। बदला (को०)। ६. खोज। ढूँढ। तलाश। अनुसधान। अन्वेषण। उ०—करते हैं ज्ञानी विज्ञानी नित्य नए सत्यो का शोध।—साकेत, पृ० ३७३।

शोधक[1]—वि० [वि० स्त्री० शोधका, शोधिका] शोध करनेवाला। शुद्ध करनेवाला।

शोधक[2]—सज्ञा पुं० [सं०] १. शोधनेवाला। शुद्ध या साफ करनेवाला। उ०—ससार को बहुधा विरोध कुचित्त शोधक जानि। ठाढो भई तह शाति सो करुणा सखो सुख मानि।—केशव (शब्द०)। २. सुधार करनेवाला। सुधारक। सशोधक। ३. ढूँढनेवाला। खोजनेवाला। अनुसधान करनेवाला। ४. गणित मे वह सख्या जिसे घटाने स ठीक वर्गमूल निकल। ४. रेचक। रेचन करनेवाला। जैसे, मलशोधक (को०)।

शोधन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोधित, शोधनीय, शोध्य, शोधयितव्य] १ शुद्ध करना। साफ करना। २. दुरुस्त करना। ठीक करना। सुधारना। जैसे,—लेखशोधन। ३ धातुओं का औषध रूप में व्यवहार करने के लिये संस्कार। जैसे,—पारद का शोधन। ४ छानबीन। जाँच। ५ खोजना। ढूँढना। तलाश करना। अनुसंधान करना। ६ व्रण धुलाना। घाव साफ करना। ७ किसी पाप से शुद्ध होने का संस्कार। प्रायश्चित्त। ८ चाल सुधारने के लिये दंड। सजा। ९ दाँत साफ करना। सफाई के लिये दूर करना। साफ करना। १० दस्त लाकर कोठा साफ करना। विरेचन। ११ मुरदाशंख। कपर्दक। १२ मल। विष्ठा। १३ घटाना। वियोग। (गणित)। १४ नीबू। १५. हींग। रसोन। १६. उन्मूलन। उत्पाटन। हटाना। दूर करना। जैसे,—कष्टशोधन। १७ ज्योतिष के अनुसार किसी शुभ कार्य के लिये शुभ दिन, मास योगादि का विचार। जैसे,—लग्नशोधन (स०)। १८. बदला। प्रतिशोध। जैसे,—वैरशोधन (को०)।

शोधन'—वि० शुद्धि करनेवाला। साफ करनेवाला (को०)।

शोधनक—संज्ञा पुं० [सं०] १ प्राचीन काल के न्यायालय या धर्मसभा का स्थान साफ और ठीक करनेवाला अधिकारी, कर्मचारी।

शोधना—क्रि० स० [सं० शोधन] १ शुद्ध करना। साफ करना। मैला आदि निकालकर स्वच्छ करना। २ दुरुस्त करना। ठीक करना। त्रुटि या दोष दूर करना। सुधारना। जैसे,—लेख शोधना। ३. औषध के लिये धातु का संस्कार करना। जैसे,—पारा शोधना। ४ ढूँढना। खोजना। अन्वेषण करना। तलाश करना। उ०—ग्रहबल, लग्न, नखत शोधि बोली वेदध्वनि।—सूर (शब्द०)।

शोधनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मार्जनी। झाड़ू। बुहारी। २ ताम्रवल्ली। ३ नील। ४ वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

शोधनीबीज—संज्ञा पुं० [सं०] जमालगोटे का बीज।

शोधनीय—वि० [सं०] १ शुद्ध करने योग्य। २. छुड़ाने योग्य। ३ ढूँढने योग्य।

शोधवाना—क्रि० स० [स० शोधना का प्रे० रूप] १ शोधने का काम कराना। शुद्ध कराना। दुरुस्त कराना। २ ढूँढवाना। तलाश कराना।

शोधवैया—संज्ञा पुं० [हिं०] दे० 'शोधैया'।

शोधा—वि० [सं० शोधक] धातु शोधन करनेवाला। शुद्ध करनेवाला।

शोधित—वि० [सं०] १. शुद्ध किया हुआ। स्वच्छ। संस्कृत। २ छाना हुआ। ४ संशोधित। जिसका सुधार किया गया हो। ५ जो चुकता कर दिया गया हो। जैसे, कर्ज। ६ जिसका अन्वेषण किया गया हो। अन्वेषित। ७ हटाया हुआ। दूर किया हुआ (को०)।

शोधैया—संज्ञा पुं० [हिं० शोध+ऐया (प्रत्य०)] शोधनेवाला। सुधारक। उ०—मंगल सदा ही करैं राम युगलेश करैं राम रसिकावली शोधैया औ बोधैया को।—रघुराज (शब्द०)।

शोध्य'—वि० [सं०] शोधन करने योग्य (को०)।

शोध्य'—संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जो अपने ऊपर लगाए गए अभियोग के संबंध में संफाई दे। वह जिसपर अभियोग लगाया गया हो। अभियुक्त (को०)।

शोफ—संज्ञा पुं० [सं०] सूजन। वरम। अर्बुद।

शोफघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शोथ को दूर करनेवाली। सोंठ। २ पाढ़ा। पाठा (को०)।

शोफजित्—संज्ञा पुं० [सं०] भल्लातक। भिलावाँ (को०)।

शोफनाशन—संज्ञा पुं० [सं०] १ पुनर्नवा। गदहपूरना। २. सहजन। सोहंजना। सोनापाठा (को०)।

शोफर—संज्ञा पुं० [फा़० > सं० शफर] मोटर चलानेवाला। मोटर का ड्राइवर। उ०—अब न वह राजा रहा न वह साहब मोटर पर आ ५० सोफर साथ में हैं इस लिये वे लिफ्ट पर चलने को कहा।—प्रेम० पृ० २७८।

शोफहारी—संज्ञा पुं० [सं० शोफहारिन्, शोफ के बदले का रोगी।

शोफमूल—संज्ञा पुं० [सं०] भिलावाँ। भल्लातक वृक्ष।

शोफारि—संज्ञा पुं० [सं०] सहजना। शिग्रु।

शोभित—वि० [सं०] १. शोभायुक्त किया हुआ।

शोभ—संज्ञा पुं० [सं०] १ शोभा। २ शोभा।

शोभन—संज्ञा पुं० [सं०] १ सौंदर्य। २ आभूषण। गहना। अलंकार। जेवर। गाजा। बाजा। ३. नृत्य। नाच। कत्थक। (डिं०)।

यौ०—शोभनदासा = (१) बाजीगर। (२) धूर्त (डिं०)।

शोभा—संज्ञा पुं० [सं० शोभ+टाप्] १ दृश्य। दर्शन। हिस्सा। २. आभा। आभ। आभा। ३ सौंदर्य। विभूति (डिं०)।

शोभ'—वि० [सं०] शोभायुक्त। सुंदर। सुशोभित।

शोभ'—संज्ञा पुं० १ एक प्रकार के दानव। २ एक प्रकार के सन्निपात। ३ (यौगिक शब्दों में प्रयुक्त) शोभा। कांति।—जैसे—शोभाकर।

शोभकु'—संज्ञा स्त्री० [सं० शोभा] दे० 'शोभा'।

शोभक—वि० [सं०] सुंदर। कांतिमान्। सजावट।

शोभकृत्—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह जो शोभाकारक हो। २. मुहूर्तचिंतामणि के ६० वर्षों के चक्र में ३७ वाँ अथवा ३६ वाँ संवत्। एक संवत्सर का नाम (डिं०)।

शोभन'—वि० [सं०] १ शोभायुक्त। सुंदर। सुहावना। २. सुहावना। रमणीय। ३ उत्तम। अच्छा। भला। श्रेष्ठ। ४. सदाचारी। पुण्यात्मा। ५ उचित। उपयुक्त। सुशोभित होता हुआ। ६ शुभ। मंगलदायक।

शोभन'—संज्ञा पुं० १ अग्नि का नाम। २ शिव का नाम। ३. ऋषि योग। ४. ज्योतिष में विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से पाँचवाँ योग। ५ ग्रह। ६. बृहस्पति का नवाँ संवत्सर। ७. २७ मात्राओं का एक छंद जिसमें १४ और १० मात्रा पर यति होती है और अंत में जगण होता है। इसका दूसरा नाम 'सिंहिका' है। ८. मालकोश राग का पुत्र। एक राग। ९.

कमल। १० गंगा। ११ आभूषण। गहना। १२ मगल। कल्याण। शुभ। १३. धर्म। पुण्य। १४ दीप्ति। सौंदर्य। १५ सिंदूर। सेंदुर। १६ ककुट। १७ अच्छे फल की प्राप्ति के लिये अग्नि मे दी हुई आहुति (को०)।

शोभनक—सज्ञा पुं० [स०] सहिजन या शोभाजन का वृक्ष।

शोभनतम—वि० [स० शोभन+तम (प्रत्य०)] अत्यत सुदर। उ०—अचल हिमालय का शोभनतम, लता कलित शुचि सानु शरीर। —कामायनी, पृ० २९।

शोभना'—सज्ञा स्त्री० [स०] १ सुंदरी स्त्री। २. हलदी। हरिद्रा। ३ गोरोचन। ४ स्कद की अनुचरी एक मातृका।

शोभना'—क्रि० स० [स० शोभन] शोभित होना। सोहना। उ०—फूल की झालर बनी है शोभती, गध सौरभ वायु मडल की तहे।—झरना, पृ० ३५।

शोभनिक—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का नट या अभिनयकर्ता।

शोभनी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक रागिनी जो मालकोश राग की स्त्री कही जाती है।

शोभनीय—वि० [स०] सुदर। मनोहर [को०]।

शोभनीया—सज्ञा स्त्री० [स०] गोरखमुंडा।

शोभाजन—सज्ञा पु० [स० शोभाञ्जन] सहिजन का पेड।

शोभा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ दीप्ति। कांति। चमक। २ छवि। सुदरता। छटा। सजीलापन। रुचिरता।

मुहा०—शोभा देना=अच्छा लगना। सुदर लगना। शोभा बरसना=शोभा या सौंदर्य की अधिकता होना।

३ सजावट। ४. उत्तम गुण। ५ वर्ण। रंग। ६ बीस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमे क्रम से यगण, मगण, दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं तथा ६, ७ और ९ पर यति होती है। ७ हलदी। हरिद्रा। ८ गोरोचन। ९ फारसी सगीत मे मुकाम की स्त्रियाँ जो चौबीस होती हैं। १०. काव्य के दस गुणो मे से एक (को०)। ११ एक काव्यालकार (को०)।

शोभाकर'—वि० [स०] सौंदर्यकारक। शोभित करनेवाला।

शोभाकर'—सज्ञा पुं० १. शोभा की खान। २. अत्यंत सुदर व्यक्ति। सौंदर्य का आकर।

शोभातिशायी—वि० [स० शोभा+अतिशायिन्] शोभावर्धक। सौंदर्य बढानेवाला। उ०—आचार्यों ने भी अलकारो को काव्यशोभाकर, शोभातिशायी आदि ही कहा है।—रस०, पृ० ५२।

शोभाधर—वि० [स०] मनोहर [को०]।

शोभाधायक—वि० [स०] उपकारक। जिससे सौंदर्य मे वृद्धि हो। शोभाकर। उ०—किंतु वामन ने उस व्यगार्थ को भी वाच्यार्थ का उपकारक (शोभाधायक) बनाकर अलकारो की कुक्षि (कोख) मे ही रख दिया था।—पोद्दार अभि० ग्र०, पृ० ४४२।

शोभाधारक—वि० [स०] दे० 'शोभाधर' [को०]।

शोभानक—सज्ञा पु० [स०] शोभाजन वृक्ष। सहिजन।

शोभान्वित—वि० [स०] शोभा से युक्त। सुदर। सजीला।

शोभामय—वि० [स०] सुदरता से पूर्ण [को०]।

शोभायमान—वि० [स०] सोहता हुआ। सुदर।

शोभित—वि० [स०] १ शोभा से युक्त। सुदर। सजीला। २ अच्छा लगता हुआ। सजा हुआ। ३ विद्यमान। उपस्थित। विराजता हुआ। जैसे,—सिंहासन पर शोभित होना।

शोभिनी—वि० [स०] शोभा देनेवाली। सुंदरी [को०]।

शोभी—वि० [स० शोभिन्] १. दीप्तिमान्। कांतिमान्। २ शोभायुक्त। सुदर। मनोहर [को०]।

शोर—सज्ञा पु० [फा०] १ जोर की आवाज। हल्ला। गुल गपाडा। कोलाहल। उ०—(क) जहाँ तहाँ शोर भारी भीर नर नारिन की सबही की छूटि गई लाज यहि भाइ कै।—केशव (शब्द०)। (ख) घननि की घोर सुनि मोरनि के शोर सुनि सुनि केशव अलाप आली जन को।—केशव (शब्द०)। २. धूम। प्रसिद्धि। जैसे,—उसके बडप्पन का शोर हो गया है। उ०—आप द्वारका शोर कियो उन हरि हस्तिनापुर जाय। प्रद्युम्न लरे सप्त दश दो दिन रच हार नहिं माने।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—करना।—मचना।—मचाना।

यौ०—शोरगुल=हल्ला। कोलाहल। धमाचौकडी।

३. खारी नमक (को०)। ४. ऊसर भूमि (को०)। ५ उन्माद। पागलपन (को०)।

शोरवा—सज्ञा पु० [फा०] १ किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। झोल। जूस। रसा। २. पके हुए मास का पानी।

शोरा—सज्ञा पु० [फा० शोरह्] एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी से निकलता है।

विशेष—यह बहुत ठढा होता है और इसीलिये पानी ठढा करने के काम मे आता है। बारूद मे भी इसका योग रहता है और सुनार इससे गहने भी साफ करते हैं। खारी मिट्टी मे क्यारियाँ बनाकर इसे जमाते हैं। साफ किए हुए बढिया शोरे को कलमी शोरा कहते हैं।

मुहा०—शोरे की पुतली=बहुत गोरी स्त्री।

शोरा आलू—सज्ञा पु० [हि० शोरा+आलू] बन आलू।

शोरापुश्त—वि० [फा०] लडाका। झगडालू। फसादी।

शोरिश—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. खलबली। हलचल। २ बलवा। बगावत। उपद्रव। दगा।

शोरी—सज्ञा पु० [फा० शोर] १. फारसी सगीत मे एक मुकाम का पुत्र। २. एक पजाबी प्रसिद्ध गवैया जिसने टप्पा नाम का गीत निकाला था।

शोला'—सज्ञा पुं० [देश०] एक छोटा पेड़ जिसकी लकडी बहुत हल्की होती है।

विशेष—पानी पर तैरनेवाले जाल मे इसकी लकडी लगाई जाती है। लकडी का सफेद हीर फूल, खिलौने तथा विवाह के मुकुट बनाने के काम मे आता है।

शोला[2]—संज्ञा पुं० [प्र०] आग की लपट। ज्वाला।

यौ०—शोलाबारी = अग्निवर्षा। आग बरसना। शोलामिजाज = अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का। गुस्सैल। शोलारुख, शोलारू = लाल लाल गालोंवाला। रक्ताभ कपोलोंवाला।

शोली—संज्ञा स्त्री० [सं०] वनहलदी। वनहरिद्रा।

शोलेप—संज्ञा पुं० [सं०] वाल्मीकि रामायण में वर्णित एक प्रकार का अस्त्र।

शोशा—संज्ञा पुं० [फा० शोशह्] १ निकला हुई नोक। २. अरबी फारसी के सीन या शीन अक्षर का ददाना या नोक (को०)। ३ अद्भुत या अनसुनी बात। चुटकुला। ४ झगड़ा खड़ा करनेवाला बात। ५ लगती बात। व्यंग्य।

क्रि० प्र०—छोड़ना।

६ खंड। टुकड़ा (को०)। ७ सोने या चाँदी का ढला (को०)।

शोष—संज्ञा पुं० [सं०] १ सूखने का भाव। सूखना। रस या गीलापन दूर होने का भाव। २ शोषण का भाव। क्षय। ३ शरीर का घुलना या क्षीण होना। ४ एक रोग जिसमें शरीर सूखता या क्षीण होता जाता है। राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी।

विशेष—वैद्यक में शोष रोग के छह कारण बताए गए हैं—अधिक शोक, जरावस्था, अधिक मार्ग चलना, अधिक व्यायाम, अधिक स्त्रीप्रसंग और क्षय में चोट लगना। इस रोग में शरीर क्षीण होता जाता है, सदा ज्वर और खाँसी रहती है, पसली, छाती और कमर में पीड़ा रहती है तथा अतिसार भी हो जाता है।

५. बच्चों का सूखा रोग। ६ सूखी। सूखापन।

शोषक—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० शोषिका] १ जल, रस या तरी सोखनेवाला। सोखनेवाला। २ सुखानेवाला। सुखा करनेवाला। ३. घुलानेवाला। क्षीण करनेवाला। ४. नाश करनेवाला। ५. दूर करनेवाला। ६ समाज का वह व्यक्ति या वर्ग जो स्वल्पतम मूल्य देकर परिश्रम करनेवालों के परिश्रम का फल भोगता हो।

विशेष—मार्क्सवाद के अनुसार समाज दो वर्गों में विभक्त है। शोषक और शोषित। शोषक वह वर्ग है जो पैसा लगाकर दूसरों से काम कराकर मुनाफा कमाता है और सभी सुविधाओं का उपभोग करता है। जो वर्ग मजदूर है, मेहनत करता है और सुविधा से वंचित रहता है वह शोषित वर्ग है।

शोषकवर्ग—संज्ञा पुं० [सं० शोषक+वर्ग] शोषकों का समूह। दे० 'शोषक'—५।

शोषघ्न—संज्ञा पुं० [सं०] जलप्याज।

शोषण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० शोषी, शोषित, शोषणीय] १. जल या रस सोखना। सोखना। २ सुखाना। सुखा करना। तरी या गीलापन दूर करना। ३ हरापन या ताजापन दूर करना। ४. घुलाना। क्षीण करना। क्षय करना। ५. नाश करना। दूर करना। न रहने देना। ६. कामदेव के एक बाण का नाम। ७. सोंठ। शुंठि। ८ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। ९. पिप्पली। पीपल। १० एक प्रकार की अग्नि (को०)। ११ किसी के धन का बलपूर्वक ले लेना (को०)।

शोषण[2]—वि० शोषण करनेवाला, सोखनेवाला।

शोषणीय—वि० [सं०] सोखने योग्य।

शोषयितव्य—वि० [सं०] १. जो सोखा जानेवाला हो। २. जिसे सुखाना हो।

शोषयिता—वि० [सं० कर्तृवाचक] सुखानेवाला (को०)।

शोषयित्नु—संज्ञा पुं० [सं०] शुंठ (को०)।

शोषनाशन—संज्ञा पुं० [सं० शोषनाशन] जलप्याज।

शोषहा—संज्ञा पुं० [सं० शोषहन्] (शोषण का नाश करनेवाला)] सोंठ। शुंठि। सोनापाठा।

शोषापहा—संज्ञा स्त्री० [सं०] हरीतकी।

शोषिणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] सोंठ। शुंठि। सोनापाठा।

शोषित—वि० [सं०] १ सोखा हुआ। सुखाया हुआ। ३. क्षीण किया हुआ (को०)। ४ दूर किया हुआ (को०)। ५ कम किया हुआ। घटाया हुआ।

शोषितवर्ग—संज्ञा पुं० [सं० शोषित+वर्ग] समाज का वह वर्ग जिसका शोषण किया गया हो। दे० 'शोषक'—५।

शोषी—वि० [सं० शोषिन्] [स्त्री० शोषिणी] १ सोखनेवाला। २ सुखानेवाला।

शोषु—संज्ञा पुं० [सं०] जलादि को सोखना। सोखन। शोषण (को०)।

शोष्य—वि० [सं०] जिसे सोखा या सुखाया जाय। सुखाने या शोषित करने के योग्य।

शोहदा—संज्ञा पुं० [अ० । वि० स्त्री० शोहदी] १ बदनियत। लंपट। २. गुंडा। बदमाश। गुंडा। ३ धूर्त। मक्कार। बहुत बनाव सिंगार करनेवाला।

शोहदापन—संज्ञा पुं० [हिं० शोहदा+पन (प्रत्य०)] १. गुंडापन। २. धूर्तापन।

शोहरत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १ लोकप्रियता। ख्याति। प्रसिद्धि। २. बुरी कीर्ति या खबर। धूम। जोर। जैसे,—शहर में शोहरत तो ऐसी ही है।

शोहरा—संज्ञा पुं० [सं० शोहरत] १ ख्याति। प्रसिद्धि। २ बुरी से फैली हुई खबर। जोर। उ०—भयो रघुराज दूत सागत बचन माहि, लोरवा पियारा का बखानै सुने शोहरा।—रघुराज (शब्द०)।

शोंग—संज्ञा पुं० [सं० शोङ्ग] नरहरि रूप का एक नाम जो युग के अपत्य थे।

शोंगिपुत्र—संज्ञा पुं० [सं० शोङ्गिपुत्र] एक वाचक आचार्य का नाम।

शोंगेय—संज्ञा पुं० [सं० शोङ्गेय] १. गरुड़। २. श्येन पक्षी। बाज।

शौड[1]—सज्ञा पुं० [सं० शौण्ड] १. मुर्गा। कुक्कुट पक्षी। २. पुनेरा। देवधान्य। ३. वह जो मद्य पीकर मतवाला हुआ हो। मस्त। मत्त।

शौड[2]—वि० १ मद्यप। शराबी। २ उत्तेजित। नशे मे चूर। ३ (समास मे) कुशल। दक्ष [को०]।

शौडता—सज्ञा स्त्री० [स० शौण्डता] मत्तता। बदमस्ती।

शौडा—सज्ञा स्त्री० [स० शौण्डा] मद्य। शराब [को०]।

शौडायन—सज्ञा पु० [स० शौण्डायन] प्राचीन काल की एक योद्धा जाति का नाम।

शौडि—वि० [स० शौण्डि] १ चतुर। दक्ष। कुशल। २. आसक्त। अनुरक्त [को०]।

शौडिक—सज्ञा पु० [स० शौण्डिक] [स्त्री० शौण्डिकी] १ प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध जाति जिसका व्यवसाय मद्य बनाना और बेचना था।

विशेष—पराशरपद्धति मे इस जाति की उत्पत्ति कैवर्त पिता और गाधिक माता से लिखी है, और मनु ने कहा है कि इस जाति के आदमी के घर भोजन नही करना चाहिए।

२ पिप्पलीमूल।

शौडिकप्रिय—सज्ञा पु० [स० शौण्डिकप्रिय] आम।

शौडिकागार—सज्ञा पु० [स० शौण्डिकागार] शराब की दूकान। शराबखाना। हौली। कलवरिया।

शौडिकी—सज्ञा स्त्री० [स० शौण्डकी] शौंडिक जाति की स्त्री [को०]।

शौडिनी—सज्ञा स्त्री० [स० शौण्डिनी] दे० 'शौंडिकी'।

शौडी[1]—सज्ञा पु० [स० शौण्डिन्] प्राचीन काल की शौंडिक नामक जाति।

शौडी[2]—सज्ञा स्त्री० [स० शौण्डी] १ पीपल। पिप्पली। २. चव्य। चविका। कटभी वृक्ष। ३ मिर्च।

शौडिर—वि०, सज्ञा पु० [स० शौण्डिर] दे० 'शौंडीर'।

शौडीर[1]—वि० [स० शौण्डीर] १ बहुत घमड करनेवाला। अहकारी। अभिमानी। २ उत्तुग। उन्नत (को०)। ३ समर्थ (को०)।

शौडीर[2]—सज्ञा पु० अभिमान। गर्व। घमड [को०]।

शौंडीर्य—सज्ञा पु० [स० शौण्डीर्य] १. शूरत्व। नायकत्व। २ अभिमान। घमड। गर्व। शान [को०]।

शौक—सज्ञा पु० [अ० शौक] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या निरतर भोग के लिये अथवा कोई कार्य करते रहने के लिये होनेवाली तीव्र अभिलाषा या कामना। प्रबल लालसा। जैसे,—मोटर का शौक, सफर का शौक, खाने पीने का शौक, जूए का शौक, किताबो का शौक।

क्रि० प्र —करना।–रखना।–होना।

मुहा०—शौक करना = किसी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। जैसे,—तबाकू आ गया, शौक कीजिए। शौक चर्राना या पैदा होना = मन मे प्रबल कामना होना। तीव्र लालसा होना (जैसे—अब आप को भी घोडे पर चढने का शौक चर्राया है। शौक पूरा करना या मिटाना = किसी बात की प्रबल इच्छा की पूर्ति करना। जैसे,—जाइए, आप भी शतरंज का शौक पूरा कर (मिटा) लीजिए। शौक फरमाना = दे० 'शौक करना'। शौक से = प्रसन्नतापूर्वक। आनद से। जैसे—हाँ हाँ, आप भी शौक से चलिए।

२ आकाक्षा। लालसा। हौसिला। जैसे,—मुझे आज तक इस बात का शौक ही रहा कि लोग तुम्हारी तारीफ करते।

३ व्यसन। चसका। चाट। जैसे—(क) आजकल उसे शराब का शौक हो गया है। (ख) आपका गगास्नान का शौक कब से हुआ?

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।—होना।

४ प्रवृत्ति। झुकाव। जैसे,—जरा आपका शौक तो देखिए, पेड पर चढने चले हैं।

शौक[2]—सज्ञा पु० [स०] १ शुकसमूह। तोतो का झुड। २ रतिबध का एक प्रकार (को०)। ३ शोक की अवस्था। शोकदशा। शोकपूर्णता (को०)।

शौकत—सज्ञा स्त्री० [अ० शौकत] ठाठ बाट। शान। उ०—हशमत व शौकत थिर नही मत देख हो मगरूर।—चरण० बानी, पृ० ११४।

यौ०—शान शौकत।

२. आतक। दबदबा। वि० दे० 'शान'।

शौकर—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शूकरक्षेत्र'।

शौकरव—सज्ञा पु० [स०] दे० 'शूकरक्षेत्र'।

शौकरी—सज्ञा स्त्री० [स०] वाराहीकद। गेंठी।

शौकि—सज्ञा पु० [स०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शौकिया[1]—क्रि० वि० [अ० शौकियह] शौक के कारण। शौक पूरा करने के लिये। प्रवृत्ति के वश होकर। जैसे,—(क) मुझे तमाकू पीने की आदत तो नही है, पर हाँ कभी कभी शौकिया पी लिया करता हूँ। (ख) उन्हे कोई जरूरत तो न थी, सिर्फ शौकिया फारसी सीख ली थी।

शौकिया[2]—वि० शौक से भरा हुआ। जैसे,—शौकिया सलाम।

शौकीन—सज्ञा पु० [अ० शौक + हिं० ईन (प्रत्य०)] १ वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। चाव रखनेवाला। जैसे,—आप गाने बजाने के बडे शौकीन है। २ वह जो सदा छैला बना रहता हो। सदा बना ठना रहनेवाला। ३. रडीबाज। ऐयाश। तमाशबीन।

शौकीनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० शौकीन + ई (प्रत्य०)] १. शौकीन होने का भाव या काम।

क्रि० प्र०—करना।—छोटना।—दिखाना।—बघारना।

२. तमाशबीनी। रडीबाजी। ऐयाशी।

शौकेय पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

शौक्त[1]—संज्ञा पु० [सं०] एक साम का नाम ।

शौक्त[2]—वि० १ अम्लयुक्त । क्षारयुक्त । तेजाबी । २ शुक्ति का बना हुआ (को०) ।

शौक्तिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] शुक्तिका या सीपी से उत्पन्न, मोती । मुक्ता ।

शौक्तिक[2]—वि० १ सीपी से या मोती से संबंधित । २ क्षार या अम्ल युक्त । तेजाबी (को०) ।

शौक्तिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] सीप ।

शौक्तिकेय, शौक्तेय—संज्ञा पु० [सं०] मोती, जो शुक्ति या सीपी से उत्पन्न होता है ।

शौक्र—वि० [सं०] १ शुक्र ग्रह संबंधी । शुक्र का । २ वीर्य संबंधी (को०) ।

शौक्ल[1]—वि० [सं०] शुक्ल संबंधी । शुक्ल का ।

शौक्ल[2]—संज्ञा पु० दे० 'शौक्त[1]' ।

शौक्लिकेय—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का हलका विष (को०) ।

शौक्ल्य—संज्ञा पु० [सं०] सफेदी । उज्वलता (को०) ।

शौग्र—संज्ञा पु० [सं०] सिग्रु, सहिजन का बीज ।

शौच—संज्ञा पुं० [सं०] १ शुचि होने का भाव । शुद्धता । पवित्रता । पाकीजगी । २ शास्त्रीय परिभाषा मे पवित्रतापूर्वक धर्माचरण करना, शरीर और मन शुद्ध रखना, सत्य बोलना और निषिद्ध पदार्थों तथा कार्यों आदि का त्याग करना । सब प्रकार से शुद्धतापूर्वक जीवन व्यतीत करना ।

विशेष—मनु के अनुसार यह धर्म के दस लक्षणों में से पाँचवाँ लक्षण है, और योगशास्त्र के पाँच नियमों मे से पहला नियम है । कुछ लोगों ने इसके बाह्य और आभ्यंतर ये दो भेद माने है । शरीर का बाह्य शौच मिट्टी और जल आदि से होता है, और अपने चित्त का भाव सब प्रकार से शुद्ध रखने से आभ्यंतर शौच होता है । जैनों के अनुसार संयमवृत्ति को निष्कलंक रखना शौच कहलाता है ।

३ वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं । जैसे,—पाखाने जाना, मुँह हाथ धोना, नहाना, संध्या वंदन करना आदि । ४ पाखाने जाना । जंगल जाना । टट्टी जाना । ५ दे० 'अशौच' । ६ खरापन । ईमानदारी (को०) । ७ तर्पण का जल (को०) ।

शौचकर्म—संज्ञा पु० [सं०] लोकव्यवहार या शास्त्रानुसार शुद्ध होने की क्रिया (को०) ।

शौचकल्प—संज्ञा पु० [सं०] दे० 'शौचकर्म' (को०) ।

शौचकूप—संज्ञा पु० [सं०] शौचगृह । संडास (को०) ।

शौचगृह—संज्ञा पु० [सं०] पाखाना (को०) ।

शौचविधि—संज्ञा स्त्री० [सं०] मल मूत्र आदि का त्याग करना । शौच आदि से निवृत्त होना । निपटना ।

शौचागार—संज्ञा पु० [सं०] शौचगृह । पाखाना ।

शौचाचार—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'शौचकार्य' (को०) ।

शौचादिरेय—संज्ञा पुं० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

शौचालय—संज्ञा पुं० [सं० शौच+आलय] शौचगृह । शौचागार ।

शौचिक—संज्ञा पु० [सं०] १ प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौंडिक पिता और कैवर्त माता से कही गई है । २ शुद्ध, पवित्र या साफ करनेवाला (को०) ।

शौची—वि० [सं० शौचिन्] विशुद्ध । पवित्र ।

शौचेय—संज्ञा पु० [सं०] रजक । धोबी ।

शौटीर[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीर । बहादुर । २ शौर्य । पराक्रम । साहस (को०) । ३. संन्यासी या त्यागी व्यक्ति । ४ अभिमानी । मनुष्य ।

शौटीर[2]—वि० १ गर्वयुक्त । गर्वीला । प्रगल्भ । २ उदार (को०) ।

शौटीरता—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ शौटीर का भाव या धर्म । २ वीरता । बहादुरी । ३ त्याग । ४ अभिमान । अहंकार । गर्व ।

शौटीर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वीर्य । शुक्र । २ गर्व । अभिमान । ३ वीरता । बहादुरी ।

शौत पु०—संज्ञा स्त्री० [हिं० सौत] दे० 'सौत' । उ०—पेरे आगे को यह गढ़ी । अब भइ शौत बदन पर चढ़ी ।—लालचदास (शब्द०) ।

शौद्धोदनि—संज्ञा पुं० [सं०] बुद्धदेव, जो शुद्धोदन के पुत्र थे ।

शौद्र[1]—संज्ञा पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य के वीर्य से शूद्रा से उत्पन्न पुत्र ।

विशेष—यह बारह प्रकार के पुत्रों मे से एक प्रकार का पुत्र माना जाता है । ऐसा पुत्र अपने पिता के गोत्र का नहीं होता और न उसको संपत्ति का अधिकारी ही हो सकता है ।

शौद्र[2]—वि० शूद्र या शूद्र जाति से संबंधित (को०) ।

शौध पु०[1]—वि० [सं० शुद्ध] निर्मल । पवित्र (क्व०) । उ०—कटि काती पग पदुमिका माथे हरिका शौध । हृदया भया कँठ मधुरी काशि घ्राण शिर औध ।—विश्राम (शब्द०) ।

शौध पु०[2]—संज्ञा स्त्री० दे० 'सुध' ।

शौधिका संज्ञा स्त्री० [सं०] रक्तकंगु । लाल कँगनी ।

शौन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] बधालय मे रखा हुआ मांस । वह मांस जो बिक्री के लिये रखा हो ।

शौन[2]—वि० श्वान संबंधी । कुत्ते का ।

शौनक—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे ।

विशेष—ये नैमिषारण्य मे तपस्या करते थे और इन्होंने एक बार एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था जो बारह वर्षों तक होता रहा । ये बड़े तदर्शी थे । इनके नाम से ऋग्वेद प्रातिशाख्य तथा अन्य कई ग्रंथ प्रसिद्ध है ।

शौनकायन—संज्ञा पु० [सं०] वह जो शुनक ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो ।

शौनकीपुत्र—संज्ञा पुं० [सं०] वैदिक काल के एक प्राचीन आचार्य का नाम।

शौनायण—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

शौनिक—संज्ञा पु० [सं०] १ मांस बेचनेवाला। कसाई। २ शिकार। आखेट। मृगया। ३ शिकारी। व्याध। बहेलिया (को०)।

शौनिकशास्त्र—संज्ञा पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमे शिकार खेलने, घोडो आदि पर चढने और पशुओ आदि को लडाने की विद्या का वर्णन हो।

शौभ—संज्ञा पु० [सं०] १ चिकनी सुपारी। २. देवता। ३ राजा हरिश्चद्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश मे मानी जाती है।

शौभनेय—संज्ञा पु० [सं०] १ शोभना अर्थात् सुंदरी स्त्री का पुत्र। २ वह जो शोभन संबंधी हो (को०)।

शौभाजन[1]—संज्ञा पुं० [सं० शौभाञ्जन] सहिजन नामक वृक्ष। शोभाजन। विशेष दे० 'महिजन'।

शौभायन—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक योद्धा जाति का नाम।

शौभिक—संज्ञा पु० [सं०] १. इंद्रजाल का तमाशा करनेवाला। इंद्रजालिक। जादूगर। २. शिकारी। व्याध (को०)। ३ यज्ञ का यूप या स्तंभ (को०)।

शौभ्रायण—संज्ञा पु० [सं०] १ प्राचीन काल के एक देश का नाम। २. इस देश के निवासी।

शौभ्रेय—संज्ञा पु० [सं०] १. वह जो शुभ्र वस्तु वा व्यक्ति से संबद्ध हो। २ एक युद्धक जाति।

शौर(पु)—संज्ञा पु० [फा० शोर] शोर। चखचख। उ०—ऋषि शौर सुनौ जब काना। मन मे उपज्यो तब ज्ञाना।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १३६।

शौरसेन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] आधुनिक ब्रजमडल का प्राचीन नाम जहाँ पहले राजा शूरसेन का राज्य था।

शौरसेन[2]—वि० शूरसेन संबंधी। शूरसेन का।

शौरसेनिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'शौरसेनी'।

शौरसेनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा जो शूरसेन (वर्तमान ब्रजमडल) प्रदेश मे बोली जाती थी।

विशेष—यह मध्य देश की प्राकृत थी और शूरसेन देश मे इसका प्रचार होने के कारण यह शौरसेनी कहलाई। मध्यदेश मे ही साहित्यिक सस्कृत का अभ्युदय हुआ था और यही की बोलचाल की भाषा से साहित्य की शौरसेनी प्राकृत का जन्म हुआ। इसपर सस्कृत का बहुत अधिक प्रभाव पडा था और इसी लिये इसमे तथा सस्कृत मे बहुत समानता है। यह अपेक्षाकृत अधिक पुरानी, विकसित और शिष्ट समाज की भाषा थी। वर्तमान हिंदी का जन्म शौरसेनी और अर्धमागधी प्राकृतो तथा शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रशो से हुआ है।

२. प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध अपभ्रश भाषा जिसका प्रचार मध्यदेश के लोगो और साहित्य मे था। यह नागर भी कहलाती थी।

शौरि—संज्ञा पु० [सं०] १ विष्णु। २ कृष्ण। ३ बलदेव। ४ शनैश्चर ग्रह।

शौरिप्रिय—संज्ञा पु० [सं०] हीरा।

शौरिरत्न—संज्ञा पुं० [सं०] नीलम।

शौर्प—वि० [सं०] [वि० स्त्री० शौर्पी] १ सूप संबंधी। सूप से नापा हुआ। सूप के बराबर (को०)।

शौर्पारक—संज्ञा पु० [सं०] काले रग का एक प्रकार का हीरा जो प्राचीन काल मे शूर्पारक प्रदेश मे पाया जाता था।

शौर्पिक—वि० [सं०] दे० 'शौर्प' (को०)।

शौर्य—संज्ञा पुं० [सं०] १. शूर का भाव। शूरता। पराक्रम। वीरता। बहादुरी। शूर का धर्म। ३ नाटक मे आरभटी नाम की वृत्ति। विशेष दे० 'आरभटी'-२।

शौल—संज्ञा पुं० [सं०] हल के एक भाग का नाम (को०)।

शौलायन—संज्ञा पु० [सं०] प्राचीन काल के एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम जो कौलायन भी कहलाते थे।

शौलिक—संज्ञा पु० [सं०] १. प्राचीन काल के एक देश का नाम जो शूलिक भी कहलाता था। २. इस देश का निवासी।

शौलिकि—संज्ञा पुं० [सं०] योगशास्त्र के अनुसार धौति, नेति आदि छह प्रकार के कर्मों मे से एक कर्म। इसमे दाहिने नथने से धीरे धीरे साँस खीचते हुए बाएँ नथने से छोडते हैं, और फिर बाएँ नथने से खीचते हुए दाहिने नथने से छोडते है। कहते हैं, इस क्रिया द्वारा कफ के दोष का शमन होता है।

शौल्क[1]—वि० [सं०] शुल्क संबंधी। शुल्क का।

शौल्क[2]—संज्ञा पुं० एक साम का नाम।

शौल्कशालिक—संज्ञा पु० [सं०] वे अधिकारी जो प्रत्येक माल की सख्या, परिमाण, गुण आदि की जाँच पडताल करते थे। उ०—रात्रि के समय भी शौल्कशालिक अधिकारी नियुक्त रहते थे।—हिंदु० सभ्यता, पृ० १६६।

शौल्कायनि—संज्ञा पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि का नाम जो वेददर्श के शिष्य थे और जिनका उल्लेख भागवत मे आया है।

शौल्किक—संज्ञा पु० [सं०] वह अधिकारी जो लोगो से शुल्क लेता हो। कर या महसूल आदि वसूल करनेवाला अफसर। शुल्काध्यक्ष।

शौल्किकेय—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार का विष।

शौल्फ—संज्ञा पु० [सं०] १. सौफ। शतपुष्पा। २. सुलफा नाम का साग।

शौल्विक—संज्ञा पु० [सं०] १. प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति का नाम। २. ठठेरा। कसेरा।

शौव¹—वि० [स०] [स्त्री० शौवी] १ कुक्कुर सबधी २ पर या उत्तर दिवस सबधी। आगामी कल का। आनेवाले कल से सबध रखनेवाला (को०)।

शौव² सज्ञा पु० [स०] १ कुत्तो का समूह। २ कुत्ते की प्रकृति, स्वभाव या स्थिति (को०)।

शौवन¹—सज्ञा पु० [स०] १ कुत्ते का मास। २ कुत्तो का झुड। ३ कुत्ते का पिल्ला (को०)। ४ कुत्ते की प्रकृति या स्वभाव (को०)।

शौवन²—वि० [वि० स्त्री० शौवनी] १. श्वान सबधी। कुत्ते का। २ जिसकी प्रकृति या स्वभाव कुत्ते की तरह हो (को०)।

शौवस्तिक¹—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शौवस्तिकी] वह पदार्थ जो भविष्य मे व्यवहार करने के विचार से सग्रह करके रखा गया हो।

शौवस्तिक²—वि० १ जो दूसरे दिन तक टिक सके या खराब न हो। २. परेद्यु सबधी (को०)।

शौवापद—वि० [स०] [वि० स्त्री० शौवापदी] १. श्वापद या वन्य पशु से सबध रखनेवाला। २ जगली।

शौष्कल—सज्ञा पु० [स०] १ मास का विक्रेता। मास बेचनेवाला। २ जिसका स्वभाव मास खाने का हो। मासभक्षी। मत्स्य-मास भक्षी। ३ सूखे मास का मूल्य (को०)।

शौहर¹—सज्ञा पु० [फा०] स्त्री का पति। स्वामी। खाविद। मालिक। विशेष दे० 'पति—२'।

श्चोत, श्चोतन, श्च्योत, श्च्योतन—सज्ञा पु० [स०] निकलना। बहना। रिसना (को०)।

श्नाभ—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

श्नुष्टि—सज्ञा स्त्री० [स०] १. वैदिक काल का 'समय' का एक परिमाण। २ छोटी ढेरी या अन्न नापने का छोटा नाप (को०)।

श्नौष्ट—सज्ञा पु० [स०] एक साम का नाम।

श्म—सज्ञा पुं० [स० श्मन्] १ मुख। आनन। २. देह। शरीर। ३. मृत शरीर। शव। मुर्दा (को०)।

श्मशान—सज्ञा पुं० [स० श्म (=शव)+शान (=शयन)] १ वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हो। शवदाह करने का स्थान। मसान। मरघट।

पर्या०—पितृवन। शवानक। रुद्राक्रीड। दाहसर। अंतशय्या। पितृकानन।

२ पितरो के लिये दी जानेवाली बलि या पिंड (को०)।

श्मशान कालिका—सज्ञा स्त्री० [स०] तात्रिको के अनुसार एक प्रकार की काली जिनका पूजन मास, मछली खाकर, मद्य पीकर और नगे होकर श्मशान मे किया जाता है।

श्मशान काली—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्मशान कालिका' (को०)।

श्मशानगोचर—वि० [स०] मसान मे घूमनेवाला (को०)।

श्मशाननिलय—सज्ञा पुं० [स०] श्मशान मे रहनेवाले, महादेव। शिव।

श्मशाननिवासी¹—वि० [स० श्मशाननिवासिन्] श्मशान में रहनेवाला (चाडाल)।

श्मशाननिवासी²—सज्ञा पुं० १ शिव। २ भूत प्रेत (को०)।

श्मशानपति—सज्ञा पु० [स०] १. श्मशान के स्वामी, शिव। २ एक प्रकार के ऐंद्रजालिक।

श्मशानपाल—सज्ञा पुं० [स०] श्मशान का रक्षक, चाडाल।

श्मशानभाक्—सज्ञा पु० [स० श्मशानभाज्] शिव (को०)।

श्मशान भैरवी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ तात्रिको के अनुसार वे देवियाँ जो श्मशान मे रहती हैं। २ दुर्गा का एक नाम।

श्मशानवर्ती—सज्ञा पु० [स० श्मशानवर्तिन्] दे० 'श्मशानवासी' (को०)।

श्मशानवाट—सज्ञा पुं० [स०] मसान का घेरा (को०)।

श्मशानवासिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] काली।

श्मशानवासी—सज्ञा पु० [स० श्मशानवासिन्] १ महादेव। शिव। २. चाडाल। ३ भूत प्रेत आदि (को०)।

श्मशानवेताल—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की भूतयोनि।

श्मशानवेश्म—सज्ञा पुं० [स० श्मशानवेश्मन्] महादेव। शिव। २ भूतप्रेत (को०)।

श्मसानवैराग्य—सज्ञा पुं० [स०] श्मशान मे शरीर की नश्वरता को देखकर होनेवाला क्षणिक वैराग्य (को०)।

श्मशानशूल—सज्ञा पुं० [स०] श्मशान भूमि मे स्थित सूली जिससे प्राचीन काल मे प्राणदड दिया जाता था।

श्मशानसाधन—सज्ञा पु० [स०] भूत प्रेतो को वश मे करने के लिये श्मशान भूमि मे शव पर बैठकर का जानेवाली तात्रिक क्रिया (को०)।

श्मशानाग्नि—सज्ञा पुं० [स०] मरघट की आग (को०)।

श्मशानालय—सज्ञा पुं० [स०] मरघट। मसान।

यौ०—श्मशानालयवासिनी=काली।

श्मशानिक—वि० [स०] श्मशान मे रहनेवाला (को०)।

श्मशानी—वि० [सं० श्मशानिक्] मरघट पर रहनेवाला। श्मशान का। श्मशान संबंधी। उ०—यह जिसके मन मे प्रवेशित होता है वह जीवित श्मशानी भूत है। —कबीर म०, पृ० १८७।

श्मश्रु—सज्ञा पु० [स०] होठो, गालो और ठोढ़ी आदि पर होनेवाले बाल। मुँह पर के बाल। दाढी मूँछ।

श्मश्रुकर—सज्ञा पुं० [स०] दाढी की सफाई करनेवाला, हज्जाम। नापित।

श्मश्रुकर्म—सज्ञा पु० [स० श्मश्रुकर्मन्] दाढ़ी बनवाना। हजामत बनवाना। क्षौर कर्म।

श्मश्रुधर—वि० [स०] दाढीवाला (को०)।

श्मश्रुधारी—वि० [स० श्मश्रुधारिन्] श्मश्रुयुक्त। मूँछ दाढीवाला।

श्मश्रुप्रवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] दाढी का बढना (को०)।

श्मश्रुमुखी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसके गालो और ऊपरी होठ पर दाढी और मोछ के बाल हो।

विशेष—ऐसी स्त्री क्रूर, कुलक्षणी और चचली समझी जाती है।

श्मश्रुल—वि० [स०] दाढी मूँछ से युक्त [को०]।

श्मश्रुवर्द्धक—सज्ञा पु० [स०] हज्जाम।

श्मश्रुशेखर—सज्ञा पुं० [स०] नारियल का वृक्ष।

श्मीलन—सज्ञा पुं० [स०] आँख झपकाना या मुलकाना [को०]।

श्मीलित[1]—वि० [स०] निमीलित। आँख झपकाया हुआ। मुलकाया हुआ [को०]।

श्मीलित[2]—सज्ञा पु० पलक झपकाना, गिराना या मारना [को०]।

श्यश्मनाक्षी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक देवी का नाम। उ०—विनायक, फल्गुचडी, श्यश्मनाक्षी और मगला की गया क्षेत्र मे उपासना होती थी।—प्रा० भा० प०, पृ० ४२०।

श्यान[1]—वि० [स०] १. गया हुआ। गत। २ जमा हुआ। गाढा। ३ क्षीण। क्षाम। सिकुडा हुआ। ४. घनीभूत। सान्द्र। चिक्कण (को०)।

श्यान[2]—सज्ञा पु० धुआँ [को०]।

श्याना[3]—वि० [हिं० सयाना] वयस्क। दे० 'सयाना'। उ०—कितक दिन कूँ ओ ज्यो के श्याना हुआ। ओ हर एक हुनर-फन मे दाना हुआ —दक्खिनी०, पृ० ३६०।

श्यापीय—सज्ञा पु० [स०] एक वैदिक शाखा का नाम।

श्याम[1]—सज्ञा पु० [स०] १ श्रीकृष्ण का एक नाम, जो उनके शरीर के श्याम वर्ण होने के कारण पडा था। उ०—एक बार हरि निज पुर छाए। हलधर जी वृंदावन गए। यह देखत लोगन सुख पाए। जान्यो राम श्याम दोउ आए।—सूर (शब्द०)। २ प्रयाग के अक्षयवट का नाम। ३. सावाँ नामक धान्य (डिं०)। ४. एक राग जो श्रीराग का पुत्र माना जाता है। यह राग उत्सवो आदि के समय गाया जाता है, और हास्य रस के लिये भी उपयुक्त होता है। इसके गान का समय सध्या के समय १ दड से ५ दड तक है। इसे श्यामकल्याण भी कहते हैं। उ०—नट मलार जु मलार सुनाई। श्याम गूजरी पुनि भल गाई।—जायसी (शब्द०)। ५. सेंधा या समुद्री नमक। ६. धतूरा। ७ विधारा। ८. मेघ। बादल। ९ दौना का क्षुप। दमनक। १०. एक प्रकार का तृण। गधतृण। ११. गोल मिर्च। छोटा या काली मिर्च। १२. पालू वृक्ष। १३. कायस्थ। कोकिल। १४. प्राचीन काल का एक देश जो कन्नौज के पश्चिम ओर था। १५ श्याम नामक देश। वि० दे० 'श्याम'। १६. काला रग (को०)। १७ गहरा हरा रग (को०)।

श्याम[2]—वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रग)। गहरा हरा। २ काला। साँवला। उ०—अमी हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार। जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवत एक बार। (शब्द०)। ३. धूसर। भूरा (को०)। ४. विवर्ण। उदास। जैसे, श्याम मुख।

श्यामकठ—सज्ञा पु० [स० श्यामकण्ठ] १ मोर। मयूर। २. नीलकठ नामक पक्षी। ३. शिव का एक नाम।

श्यामकदा—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामकन्दा] अतीस। अतिविषा।

श्यामक—सज्ञा पु० [स०] १. सावाँ का चावल। २ गधतृण नामक तृण। रामकपूर। ३ स्याम नामक देश। ४. भागवत के अनुसार शूर के एक पुत्र और वसुदेव के भाई का नाम।

श्यामकर्ण—सज्ञा पुं० [स०] वह घोडा जिसका सारा शरीर सफेद और एक कान काला होता है। उ०—श्यामकर्ण हय चाहत आवै।—चमर छत्र तापर छवि छावै।—सबलसिंह (शब्द०)।

विशेष—अश्वमेध यज्ञ मे यही श्यामकर्ण अश्व रखा जाता था।

श्यामकाडा, श्यामकाता—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामकाण्डा, श्यामकान्ता] गाँडर दूब।

श्यामग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामग्रन्थि] गाडर दूब।

श्यामचटक—सज्ञा पु० [स०] श्यामा नामक पक्षी।

श्याम चिरैया—सज्ञा स्त्री० [स० श्याम+हिं० चिरैया] एक विशेष पक्षी। श्यामा पक्षी। उ०—एक सूखे पेड की टहनी पर श्यामचिरैया का जोडा प्रणयाकुल हो रहा था।—भस्मावृत०, पृ० ११।

श्यामचूड़ा—सज्ञा स्त्री० [स० श्यामचूडा] कृष्ण चटक या श्यामा नामक पक्षी।

श्यामजीरा—सज्ञा पु० [स० श्याम+जीरक] १. एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है और जिसका चावल बहुत दिनो तक रखा जा सकता है। २. काला जीरा। कृष्ण जीरक।

श्याम टीका—सज्ञा पु० [स० श्याम+हिं० टीका] वह काला टीका जो बच्चो को नजर से बचाने के लिये लगाया जाता है। दिठौना। उ०—पठवहि मातु भूप दरबारै टीका श्याम लगाई।—रघुराज (शब्द०)।

श्यामता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ श्याम का भाव या धर्म। २ कालापन। साँवलापन। कृष्णता। ३. मलिनता। उदासी। जैसे,—यह बात सुनते ही उसके मुँह पर श्यामता छा गई। ४. एक प्रकार का राग जिसमे शरीर का रग काला होने लगता है।

श्याम तीतर—सज्ञा पु० [स० श्याम+हिं० तीतर] प्राय: डेढ बालिश्त लबा एक प्रकार का पक्षी जो अकेला रहता है और पाला भी जा सकता है।

विशेष—यह काश्मीर, भूटान और दक्षिण हिमालय मे पाया जाता है। ऋतुभेदानुसार यह स्थानपरिवर्तन करता रहता है। इसकी चोच लबी होती है और यह बहुत तेज उडता है। इसका शब्द धामा पर विचित्र होता है। इसका मास स्वादिष्ट होता है, इसलिये इसका शिकार भी किया जाता है।

श्यामत्व—सज्ञा पु० [स०] दे० 'श्यामता'।

श्यामपट्ट—सज्ञा पु० [स० श्याम+पट्ट] कक्षाओ मे लगा हुआ वह काला तख्ता जिसपर खडिया से लिखकर अध्यापक छात्रो को समझाता है (अ० ब्लैक बोर्ड)।

श्यामपत्र—सज्ञा पु० [स०] तमाल वृक्ष।

श्यामपत्रा—संज्ञा स्त्री० [स०] जामुन का वृक्ष।

श्यामपर्ण—संज्ञा पु० [सं०] सिरिस का पेड। शिरीष का वृक्ष।

श्यामपर्णी—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'चाय'।

श्यामपूरबी—संज्ञा पु० [स० श्याम+हिं० पूरबी] एक प्रकार का संकर राग। इसमे और सब तो शुद्ध स्वर लगते हैं, केवल मध्यम तीव्र लगता है।

श्यामभूषण—संज्ञा पु० [स०] मिर्च।

श्याम मंजरी—संज्ञा स्त्री० [स० श्याम+मञ्जरी] काले रंग की एक प्रकार की मिट्टी जिससे वैष्णव लोग माथे पर तिलक लगाते है यह मिट्टी प्रायः जगन्नाथ जी के आसपास की भूमि में पाई जाती है।

श्यामल[1]—संज्ञा पु० [स०] १ पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। २ सिरिस का पेड। शिरीष। ३. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला बिच्छू। ४ भौंरा। भ्रमर (को०)। ५ काली मिर्च (को०)। ६ काला रंग। श्याम वर्ण (को०)। ७. दे० 'पूतिका' (को०)।

श्यामल[2]—वि० जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला। साँवला।

श्यामलचूड़ा—संज्ञा स्त्री० [स०] गुंजा। घुँघची।

श्यामलता—संज्ञा स्त्री० [स०] श्यामल या काले रंग के होने का भाव। साँवलापन। कालापन।

श्यामला—संज्ञा स्त्री० [स०] १ अश्वगंध। असगंध। २. कटभी। ३ जामुन। ४. कस्तूरी। मृगमद। ५ पार्वती का एक नाम।

श्यामलिका—संज्ञा स्त्री० [स०] नीली।

श्यामलित—वि० [स०] श्याम या काला किया हुआ (को०)।

श्यामलिया—संज्ञा स्त्री० [स० श्यामलियन्] श्यामता। कालापन। श्यामलता (को०)।

श्यामली[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्यामला'।

श्यामली[2]—वि० स्त्री० [स० श्यामल] श्याम वर्ण की। साँवली। उ०—काढ़ूँ कैसे हृदय तल से श्यामली मूर्ति न्यारी।—प्रिय०, पृ० २४६।

श्यामलेक्षु—संज्ञा पु० [स०] काले रंग की ईख।

श्यामवर्त्म—संज्ञा पुं० [स० श्यामवर्त्मन्] एक प्रकार का नेत्ररोग।

विशेष—इसमे आंख की पलकें बाहर तथा भीतर से काली होकर फूल जाती हैं और उनमे पीड़ा होती है।

श्यामवल्ली—संज्ञा स्त्री० [स०] काली मिर्च (को०)।

श्यामशबल—संज्ञा पु० [स०] पुराणानुसार यम के अनुचर दो कुत्ते जो उनके द्वार पर पहरा देने का काम करते है।

विशेष—ये चार आंखोवाले कहे गए हैं। इन्हे संतुष्ट करने के लिये एक प्रकार का व्रत करने का भी विधान है।

श्यामशर—संज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की ईख जो बहुत अच्छी और गुणवाली मानी जाती है।

श्यामशालि—संज्ञा पु० [स०] काला शालिधान्य।

श्यामसार—संज्ञा पुं० [स०] कृष्ण खदिर का वृक्ष।

श्यामसुंदर—संज्ञा पु० [स० श्यामसुन्दर] १ श्रीकृष्ण का एक नाम। उ०—लिये उठाय श्यामसुंदर को धन गहि कै मुख लीन्हो।—सूर (शब्द०)। २ एक प्रकार का वृक्ष।

विशेष—यह वृक्ष कद मे बहुत ऊँचा होता है। इसकी छाल प्रारंभ मे उज्वल होती है, परंतु ज्यो ज्यो यह पुराना होता जाता है, त्यो त्यो छाल काली होती जाती है। इसके हीर की लकड़ी चमकदार होती है। पहाड़ो पर यह चार हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है। इसकी लकड़ी प्राय बढ़िया चीजो के बनाने मे काम आती है। इससे खेती के औजार भी बनाए जाते है।

श्यामांग[1]—संज्ञा पुं० [सं० श्यामाङ्ग] बुध ग्रह, जिसका वर्ण दूर्वा की तरह या प्रियंगुकलिका की तरह श्याम माना गया है।

श्यामांग[2]—वि० जिसका शरीर कृष्ण वर्ण का हो। काले या साँवले रंगवाला।

श्यामांगी—संज्ञा स्त्री० [स० श्यामाङ्गी] नीली दूब।

श्यामा[1]—संज्ञा स्त्री० [स०] १ राधा या राधिका का एक नाम, जो श्याम या श्रीकृष्ण के साथ उनका प्रेम होने के कारण पड़ा था। उ०—मदनमोहन भाव जान्यो गगन मेघ छिपाइ। श्याम श्यामा गुप्त लीला ...।—सूर (शब्द०)। २ एक गोपी का नाम। उ०—श्यामा कामा चतुरा नवला प्रमुदा सुमदा नारि।—सूर (शब्द०)। ३. प्रायः सवा या डेढ़ बालिश्त लंबा एक प्रकार का पक्षी।

विशेष—इसका रंग काला और पैर पीले होते है। यह पंजाब के अतिरिक्त सारे भारत मे मिलता है। यह एक ही स्थान पर स्थिर रूप से रहता है और पहाड़ पर नही जाता। यह प्रायः घने जंगलो मे रहता है। इसका स्वर बहुत ही मधुर और कोमल होता है। यह पत्ती और घास से घोंसला बनाता है और एक बार मे चार अंडे देता है।

४ सोलह वर्ष की तरुणी। षोडशी। ५ काले रंग की गाय। ६ कबूतरी। मादा कबूतर।—बृहत्०, पृ० ४१०। ७ काला अनंतमूल। श्यामा लता। ८ काली निसोथ। ९ प्रियंगु। वनिता। १० बकुची। सोमराजी। ११ नील। १२. गूगुल। १३ सोम लता। सोमवल्ली। १४ भद्रमोथा। १५ गुडुच। गिलोय। १६. वंदा। बंदाक। बंदा। १७. कस्तूरी। मुश्क। १८. वटपत्री। पाषाणभेदी। १९. पीपल। पिप्पली। २० हल्दी। हरिद्रा। २१ हरी दूब। २२. तुलसी। सुरसा। झुंप। २३ कमलगट्टा। २४ विधारा। २५ शिंशपा वृक्ष। शीशम। २६ सावाँ नामक अन्न। २७ काली गदहपूरना। २८. गोलोचन। गोरोचन। २९. एरका या गुंदा नामक घास। ३०. लता कस्तूरी। मुश्क दाना। ३१ मेढ़ासिंगी। ३२. हरीतकी। हर्रे। ३३. कोयल नामक पक्षी। ३४ यमुना। ३५. रात। रात्रि। ३६ स्त्री। औरत। ३७. श्याम वर्ण की स्त्री। साँवली औरत (को०)।

३८ वह स्त्री जिसको संतान न हुई हो। अप्रसूता स्त्री (को०)। ३९ तपे हुए सोने के वर्ण की एक विशिष्ट प्रकार की स्त्री। वह स्त्री जो शीतऋतु से सुखद ऊष्मायुक्त और ग्रीष्म मे सुखद शीतल हो (को०)। ४० छाया। ४१ कालिका देवी का एक नाम।

श्यामा[२]—वि० १. तपाए हुए सोने के समान वर्णवाली। २. श्याम रगवाली। काली।

श्यामाक—सज्ञा पु० [स०] १ सावाँ नामक अन्न। २ एक देश। —बृहत्०, पृ० ८६।

श्यामाढकी—सज्ञा स्त्री० [स०] काले फूल की अरहर।

विशेष—यह वैद्यक के अनुसार दीपन और पित्त तथा दाह को नाशक मानी जाती है।

श्यामायन—सज्ञा पु० [स०] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम जो गोत्रप्रवर्तक ऋषि थे।

श्यामायनि—सज्ञा पु० [स०] एक वैदिक आचार्य का नाम।

श्यामायनी—सज्ञा पु० [स०] १. वैशपायन के शिष्यो का सप्रदाय। वह जो इस सप्रदाय मे हो।

श्यामायमाना—वि० स्त्री० [स०] १ श्यामतायुक्त। हरीभरी। हरीतिमायुक्त। २ श्याम अर्थात् कृष्ण के न रहने पर भी जो श्यामयुक्त सी प्रतीत होती हो (लाक्ष०)। उ०—वे आए जिस काल कात व्रज मे देखा महा मुग्ध हो, श्रीवृदावन की मनोज्ञ मधुरा श्यामायमाना मही।—प्रिय०, पृ० ९८।

श्यामालता—सज्ञा स्त्री० [स०] काला अनतमूल। कृष्ण शारिवा।

श्यामाह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] पिप्पली। पीपल।

श्यामिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काला रग। कृष्ण वर्ण। २ कालापन। श्यामता ३ मलिनता। उदासी। ४ अपवित्रता (को०)। ५ खाटाई। खोटापन। ६. मैल या किट्ट जो किसी धातु पर हो (को०)।

श्यामित—वि० [स०] काला बनाया या किया हुआ (को०)।

श्यामेक्षु—सज्ञा पु० [स०] काला ईख। कजली ईख।

श्यार(पु)†—सज्ञा पु० [फा० शहर] दे० 'शहर'। उ०—श्यार के वो पापी पावाँ मुज पो आ सकते नँई। मैं तो मैं मेरी गरद को बी वो पा सकते नँई।—दक्खिनी०, पृ० २९६।

श्याल[१]—सज्ञा पु० [स०] १ पत्नी का भाई। साला। उ०—बार बार सत्कार करि, कीन्हो श्याल निहाल।—रघुराज (शब्द०)। बहन का पति। बहनोई। भगिनीपति। (ब्रह्मवैवर्त)।

श्याल[२]—सज्ञा पुं० [स० शृगाल] गीदड। सियार। उ०—रोव वृषभ तुरग अरु नाग। श्याल दिवस निशि बोले काग।—सूर (शब्द०)।

श्यालक—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० श्यालिका] पत्नी का भाई। साला।

श्याल काँटा—सज्ञा पु० [श्याल ?+हिं० काँटा] स्वर्णक्षीरी। सत्यानाशी। भरभाँड़।

श्यालकी, श्यालिका, श्याली—सज्ञा स्त्री० [स०] पत्नी की बहन। साली।

श्याव[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्यावा, श्यावी] कृष्ण और पीत मिश्रित (वर्ण)। काला और पीला मिला हुआ (रग)। कपिश।

श्याव[२]—सज्ञा पु० १ काला पीला मिला हुआ रग। कपिश वर्ण। २ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बिच्छू जिसका विष बहुत तेज नही होता।

श्यावक—सज्ञा पु० [स०] वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि का नाम।

श्यावता—सज्ञा स्त्री० [स०] श्याव (वर्ण) का भाव या धर्म। कपिशता।

श्यावतैल—सज्ञा पु० [स०] आम का पेड़।

श्यावदत—सज्ञा पु० [स० श्यावदन्त] १. दाँतो का एक प्रकार का रोग।

विशेष—इसमे रक्त मिश्रित पित्त से दाँत जलकर काले, पीले या नीले हो जाते है।

२. वह जिसके दाँत स्वभावतः काले रंग के हो। ३ वह व्यक्ति जिसके आगे के दो दाँतो के बीच छोटा सा दाँत हो या उनके ऊपर दाँत हो (को०)।

श्यावदंतक—सज्ञा पु० [स० श्यावदन्तक] दे० 'श्यावदत'।

श्यावनाथ—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्यावरथ—सज्ञा पुं० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्याववर्त्म—सज्ञा पु० [स० श्याववर्त्मन्] आँखो का श्यामवर्त्मन् नामक रोग। वि० दे० 'श्यामवर्त्म'।

श्यावाश्व—सज्ञा पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

श्यावास्य—वि० [स०] जिसका मुख श्याम रग का हो (को०)।

श्येत[१]—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्येता, श्येती] श्वेत। सफेद। शुक्ल। (वर्ण)।

श्येत[२]—सज्ञा पु० सफेद रग। श्वेतवर्ण।

श्येतकोलक—सज्ञा पुं० [सं०] एक प्रकार की मछली।

श्येन—सज्ञा पु० [स०] १. शिकरा या बाज नामक प्रसिद्ध पक्षी जो प्राय छोटे छोटे पक्षियो का शिकार किया करता है। उ०—शून्याश्रम से इधर दशानन, मानो श्येन कपोती को। हर ले चला विदेहसुता को, भय से अबला रोती को।—साकेत, पृ० ३८४।

पर्या०—शशघातन। शशाद। शशादन। कपोतारि। क्रूर। वेगी। खगातक। करग। ग्राहक। लवकर्ण। नीलपिच्छ। रणप्रिय। रणपक्षी। भयकर। स्थूलनील। पिच्छवाण। मारक। घातिपक्षी।

२. दोहे के चौथे भेद का नाम। इसमे १९ गुरु और १० लघु मात्राएँ होती है। ३. पीला रग। पाडुर वर्ण। ४. श्वेत वर्ण। सुफेद रंग (को०)। ५. धवलिमा। श्वेतता (को०)। ६. हिंसा।

हिम्मत (को०)। ७ अश्व। घोड़ा (को०)। ८ एक प्रकार का सैनिक व्यूह। श्येन व्यूह (को०)।

श्येनकरण—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी काम को उतनी ही तेजी और दृढ़ता से करना जितनी तेजी और दृढ़ता से बाज झपटकर अपने शिकार को पकड़ता है। २ जल्दबाजी। शीघ्रता। उतावलापन। हड़बड़ी (को०)।

श्येनकरणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्येनकरण' (को०)।

श्येनगामी—संज्ञा पुं० [सं० श्येनगामिन्] रामायण के अनुसार एक राक्षस का नाम।

श्येनघटा—संज्ञा स्त्री० [सं० श्येनघण्टा] दंती वृक्ष। उदुंबरपर्णी। विशेष दे० 'दंती'।

श्येनचित्—संज्ञा पुं० [सं०] १ यज्ञ आदि में अग्नि स्थापित करने की वह वेदी जिसका आकार श्येन या बाज पक्षी के समान होता है। २ श्येनजीवी (को०)।

श्येनचित—संज्ञा पुं० [सं०] १ एक प्रकार की अग्नि। २ 'श्येनचित्'—१ (को०)।

श्येनजीवी—संज्ञा पुं० [सं० श्येनजीविन्] वह जो श्येन या बाज पकड़ और बेचकर जीविका निर्वाह करता हो।

विशेष—मनु ने ऐसे आदमी के साथ एक पंक्ति में बैठकर खाने पीने का निषेध किया है।

श्येनपात्—संज्ञा पुं० [सं०] १ बाज की तरह झपटना या झपट्टा मारना। २ ऐंद्रजालिकों का अनुकूल अद्भुत कार्य (को०)।

श्येनभृत—संज्ञा पुं० [सं०] श्येन द्वारा लाया हुआ, सोम (को०)।

श्येनव्यूह—संज्ञा पुं० [सं०] कौटिल्य के अनुसार वह दंडव्यूह जिसमें पक्ष और कक्ष को स्थिर रखकर उरस्य को आगे बढ़ाया जाय।

श्येनहृत्, श्येनाहृत—संज्ञा पुं० [सं०] सोम लता।

श्येनिका'—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं, और मात्रा के अनुसार उनका क्रम इस प्रकार होता है—र, ज, र, ल, ग (ऽ।ऽ, ।ऽ। ऽ ऽ, ऽ)। इसका दूसरा नाम 'श्येनी' भी है।

श्येनिका'—संज्ञा स्त्री० बाज पक्षी की मादा।

श्येनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दे० 'श्येनिका'। २. मार्कंडेयपुराण के अनुसार कश्यप की एक कन्या का नाम।

विशेष—यह दक्ष की पुत्री ताम्रा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। कहते हैं, बाज, तीते, कबूतर आदि पक्षी इसी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

श्यैनपात—संज्ञा पुं० [सं० श्यैनम्पात] १ श्येन छोड़ने का उपयुक्त स्थान। २ दे० 'श्यैनपाता' (को०)।

श्यैनपाता—संज्ञा स्त्री० [सं० श्यैनम्पाता] १ मृगया। शिकार। श्येन पक्षी द्वारा शिकार करना (को०)। २. श्येन छोड़ने की उपयुक्त भूमि (को०)।

श्यैन—वि० [सं०] श्येन या बाज संबंधी (को०)।

श्यैनिक—संज्ञा पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का याग, जो एक दिन में होता था।

श्यैनिक शास्त्र—संज्ञा पुं० [सं०] मृगया करने का ढंग बतानेवाला ग्रंथ (को०)।

श्यैनेय—संज्ञा पुं० [सं०] जटायु का एक नाम।

श्योणाक, श्योनाक—संज्ञा पुं० [सं०] १ सोनापाढ़ा वृक्ष।—बृहत्संहिता, पृ० ३५६। २ लोध्र। लोध।

श्योरा—संज्ञा पुं० [लश०] बड़ी मेख।

क्रि० प्र०—ठोंकना।—मारना।

श्रंग'—संज्ञा पुं० [सं० श्रङ्ग] गमन। जाना।

श्रंग'—संज्ञा पुं० [सं० शृङ्ग] शृंग। (दि०)।

श्रंथ—संज्ञा पुं० [सं० ग्रन्थ] १. संसार के बंधन से छुड़ानेवाले, विष्णु। २ बंधन। ३ मोक्ष। ४ ढीला या शिथिल करना (को०)। ५ शिथिलता। ढीलापन (को०)। ६ छोड़ना या मुक्त करना (को०)।

श्रंथन—संज्ञा पुं० [सं० ग्रन्थन] १ खोलना। छोड़ना। ढीला करना। २ हिंसन। घातन। ३. नष्ट या विध्वस्त करना। ४ बाँधना। अच्छी तरह संबद्ध करना। ५. ग्रथन करना। रचना। जैसे, गद्य या पद्यात्मक कृति (वि०)।

श्रंथित—वि० [सं० ग्रन्थित] १ बँधा हुआ। एक साथ बाँधा हुआ। २ शिथिलित। ढीला किया हुआ। ३. मुक्त। ४ एक दूसरे से संबद्ध। परस्पर संबद्ध। ५ व्याप्त। फैला हुआ। घायल (को०)। ६ विनष्ट। ध्वस्त (को०)। ७. अभिभूत। पराभूत (वि०)। ८ प्रसन्न। हर्षित। खुश।

श्रंसन—संज्ञा पुं० [सं०] वह औषधि जो पेट में जमे हुए मल या गाँठ को बाहर निकालती हो। जैसे, अमलतास या दूधी।

श्रंक(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रक्] माला। उ०—माला श्रंक अज गुनवती यह चु नाम की दाम।—अनेकार्थ०, पृ० ७८।

श्रंग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्वर्ग>सर्ग>श्रंग] दे० 'स्वर्ग'। उ०—साधू श्रंग पयाल में, साचा लेवै गोय। सकल लोक सिरि देखिए, परगट सबही होय।—साधू बानी, पृ० ५२।

श्रंग(पु)—संज्ञा पुं० [सं० स्रक्] माला।

श्रंज(पु)—संज्ञा स्त्री० [सं० स्रज्, स्रक्] माला।—अनेकार्थ०, पृ० ७८।

श्रंथन—संज्ञा पुं० [सं०] १ मार डालना। वध। हत्या। २ अलग करना। बंधन से मुक्त करना। खोलना। ३ शिथिल या ढीला करना (को०)। ४. यत्न। कोशिश। ५ बाँधना। बंधन में डालना (को०)। ५ बारबार प्रसन्न करना (को०)।

श्रद्दधान—वि० [सं०] विश्वास रखनेवाला। आस्थावान्। श्रद्धापूर्ण (को०)।

श्रद्दान—संज्ञा पुं० [सं०] आस्था। विश्वास (को०)।

श्रद्ध—वि० श्रद्धा या विश्वास करनेवाला। श्रद्धालु। आस्थावान् (वि०)।

श्रद्धाजलि—संज्ञा पुं० [सं० श्रद्धाञ्जलि] श्रद्धायुक्त प्रणाम। श्रद्धा सहित किसी के समक्ष में विनयपूर्वक कुछ कथन या निवेदन। उ०—श्रद्धाजलि स्वीकार करें गुरुदेव शिष्य की, आज श्राद्ध वासर के वाष्प नयन भवसर पर।—युगपथ, पृ० १०६।

श्रद्धा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ एक प्रकार की मनोवृत्ति, जिसमे किसी बड़े या पूज्य व्यक्ति के प्रति भक्तिपूर्वक विश्वास के साथ उच्च और पूज्य भाव उत्पन्न होता है। बडे के प्रति मन मे होनेवाला आदर और पूज्य भाव। उ०—(क) महिमा वेद पुराण सबै वहु भाँति बखानत। यथा सहित सब करत सहित श्रद्धा गुण गानत।—केशव (शब्द०)। (ख) पूजत श्रद्धा भक्ति जु कोई। ताके वश्य जगत हम दोई।—सबलसिंह (शब्द०)। २. बौद्ध धर्म के अनुसार बुद्ध, धर्म और सघ मे विश्वास। ३ वेदादि-शास्त्रो और आप्त पुरुषो के वचनो पर विश्वास। भक्ति। आस्था। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रसन्नता। ६. कर्दम मुनि की कन्या का नाम।

विशेष—भागवत के अनुसार श्रद्धा कर्दम की पत्नी देवहूति के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और अत्रि ऋषि की पत्नी थी। इन्हे मनु की पत्नी भी कहा गया है। आस्था, विश्वास, दृढता, सत्यता की देवी के रूप मे इसका प्राचीन ग्रथो मे अनेक जगह अनेक रूपो मे उल्लेख आया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण मे प्रजापति की कन्या, शतपथ मे सूर्य की पुत्री, महाभारत मे दक्ष की कन्या और धर्म की पत्नी के रूप मे इनका उल्लेख आया है और मार्कंडेय-पुराण मे श्रद्धा काम की माता कही गई है। ७ घनिष्ठता। परिचय (को०)। ८ गर्भिणी महिला का दोहद (को०)। ९. प्रबल या उत्कट इच्छा (को०)।

श्रद्धाकृत—वि० [स०] श्रद्धावान् होकर किया हुआ। जो श्रद्धायुक्त होकर किया गया हो [को०]।

श्रद्धाजाड्य—सज्ञा पु० [सं०] श्रद्धा के कारण उत्पन्न जडता। अध-विश्वास [को०]।

श्रद्धातव्य—वि० स्त्री० [स०] जिसपर श्रद्धा की जा सके। श्रद्धा करने के योग्य।

श्रद्धादेय—सज्ञा पु० [स०] विश्वास। विश्रभ। प्रत्यय [को०]।

श्रद्धादेव—वि० [स०] जो श्रद्धा पर पूर्ण विश्वास करता हो। श्रद्धालु [को०]।

श्रद्धादेही—वि० स्त्री० [स० श्रद्धा+देही] श्रद्धास्वरूपिणी। श्रद्धारूपी देहवाली। उ०—श्रद्धादेही आशागेही, स्नेही रूपलता। श्री लाई तुम, शोभा लाई, लाई मधुमयता।—अग्नि०, पृ० २३।

श्रद्धान—सज्ञा पुं० [स०] श्रद्धा।

श्रद्धान्वित—वि० [स०] श्रद्धावान्। श्रद्धायुक्त।

श्रद्धामय, श्रद्धायुक्त—वि० [स०] श्रद्धा से पूर्ण। श्रद्धावान्। श्रद्धालु [को०]।

श्रद्धारहित—वि० [स०] जो श्रद्धायुक्त न हो। श्रद्धाविरहित [को०]।

श्रद्धालु—वि० [स०] १ जिसके मन मे श्रद्धा हो। श्रद्धा रखनेवाला। श्रद्धायुक्त। श्रद्धावान्। २. (स्त्री) जिसके मन मे, गर्भावस्था की अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ हो। दोहदवती।

श्रद्धावान्—सज्ञा पु० [स० श्रद्धावत्] १. वह जिसके मन मे श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त। श्रद्धालु पुरुष। २. जिसके मन मे धर्म के प्रति निष्ठा हो। धर्मनिष्ठ।

श्रद्धाविरहित—वि० [स०] दे० 'श्रद्धारहित' [को०]।

श्रद्धासमन्वित—वि० [स०] श्रद्धान्वित। श्रद्धायुक्त [को०]।

श्रद्धास्पद—वि० [स०] जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। श्रद्धापात्र। श्रद्धेय। पूजनीय।

श्रद्धी—सज्ञा पुं० [स० श्रद्धिन्] जिसके मन मे श्रद्धा हो। श्रद्धावान्।

श्रद्धेय—वि० [स०] [सज्ञा श्रद्धेयत्व] जिसपर श्रद्धा की जाय। श्रद्धा करने के योग्य। श्रद्धा का पात्र। श्रद्धास्पद।

श्रद्धेयता—सज्ञा पुं० [स०] श्रद्धेय होने का भाव वा कर्म।

श्रद्धेयत्व—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रद्धेयत्व'। श्रद्धेय होने की पात्रता या भाव।

श्रपण[1]—सज्ञा पु० [सं०] गार्हपत्य या आहवनीय अग्नि जिसके द्वारा चरु पकाया जाय। उबालना चरु आदि पकाने की क्रिया।

श्रपणा—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रपण'।

श्रपित[1]—वि० [स०] पका हुआ। पक्व। सिझाया वा उबाला हुआ।

श्रपित[2]—सज्ञा पु० [स०] पकाया या उबाला हुआ मास आदि [को०]।

श्रपिता—सज्ञा स्त्री० [स०] १. काँजी। काजिक। २ चावल की माँड।

श्रप्प—सज्ञा पु० [स० सर्प] दे० 'सर्प'। उ०—अगनि होत्र वरमेद, मध्य जग मेध श्रप्प वर।—पृ० रा०, ५५।४०।

श्रब(पु)—वि० [स० सर्व] दे० 'सब'। उ०—षबरि श्रब धूमान दिन्नं नृप आदि सूर सामंत। अनगपाल तप सरन दिल्लीय दीन राज प्रथिराजं।—पृ० रा०, १९।९५।

श्रब्बदा—अव्य० [स० सर्वदा] दे० 'सर्वदा'। उ०—वही तत्त त्रैलोक संसार सारं। वही तारनं सत्त भौसिंध पारं। जगत्त अधारं निराधार वोही। वही श्रब्बदा सपदा नित्य सोही।—पृ० रा०, १।७७२।

श्रब्बर(पु)—सर्व० [स० सर्व] दे० 'सब'। उ०—वटि दियो प्रथिराज भाग किन्ने सह श्रब्बर।—पृ० रा०, २४।४८४।

श्रम—सज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य के सपादन मे होनेवाला शारीरिक अभ्यास। शरीर के द्वारा होनेवाला उद्यम। परिश्रम। मेहनत। मशक्कत। उ०—दूरि तीर्थन श्रम करि जाहि। जहाँ रहैं तहँ लख्यो न ताहि।—सूर (शब्द०)।

क्रि० प्र०—उठाना।—करना।—पडना।—होना।

२. थकावट। क्लांति।

मुहा०—श्रम पाना=परिश्रम करना। मेहनत करके थकना। उ०—आजु कहा उद्यम करि आए। कहै वृथा भ्रमि भ्रमि श्रम पाए।—सूर (शब्द०)।

३ साहित्य मे संचारी भावो के अतर्गत एक भाव। कोई कार्य करते करते संतुष्ट और शिथिल हो जाना। ४ क्लेश। दु.ख। तकलीफ। ५ दौड धूप। परेशानी। ६ पसीना। स्वेद। ७. व्यायाम। कसरत। ८ शस्त्रो का अभ्यास। सैनिक कवायद। ९ चिकित्सा। इलाज। १० खेद। ११ तप। १२. प्रयास। १३. (शास्त्रादि का) अभ्यास।

श्रमकण—सज्ञा पु० [स०] पसीने की बूँदें, जो परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हैं। स्वेदबिंदु।

श्रमकन(ऊ)—संज्ञा पुं० [सं० श्रमकण] स्वेदबिंदु। श्रमकण। उ०—(क) श्यामल तन श्रमकन राजत ज्यों नवघन सुधा सरोवर खारे।—तुलसी (शब्द०)। (ख) मुझे व्यजन सा हिलकर अविरल शीतलता बरसाने दो। अपने मुख से जगचिंता के श्रमकन सदय! सुखाने को।—वीणा, पृ० २०।

श्रमकर—वि० [सं०] खेदकारक। थकानेवाला [को०]।

श्रमकर्षित—वि० [सं०] मेहनत से थका हुआ [को०]।

श्रमक्लांत—वि० [सं० श्रमक्लान्त] मेहनत से थका हुआ। श्रम से शिथिल [को०]।

श्रमघ्न—वि० [सं०] जिससे श्रम दूर हो। थकावट दूर करनेवाला।

श्रमघ्नी—संज्ञा स्त्री० [सं०] मीठा कद्दू या कुम्हड़ा। मीठी लौकी [को०]।

श्रमजर्जर—वि० [सं० श्रम+जर्जर] परिश्रम से थका हुआ या चूर। उ०—वे ढाल ढाल कर उर अपने, है बरसा रही मधुर सपने। श्रमजर्जर विधुर चराचर पर, गा गीत स्नेह वेदना-सने।—युगांत, पृ० १६।

श्रमजल—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। स्वेद। प्रस्वेद। उ०—(क) श्रमजल बिंदु इंदु आनन पर राजत अति सुकुमार। मानों विविध भाव मिल विलसत मगन मित्रु रस सार।—सूर (शब्द०)। (ख) कुंकुम आड अवत श्रमजल मिलि मधु पीवत छवि छीट चली री।—सूर (शब्द०)।

श्रमजित—वि० [सं० श्रम+सं० जित् या हिं० जीतना] जो मनमाना परिश्रम करने पर भी न थके। श्रम को जीत लेनेवाला। उ०—स्वामि भक्त श्रमजित सुधी, सेनापति सु अभीत। अनालसी जन प्रिय जमी, सुख संग्राम अजीत।—केशव (शब्द०)।

श्रमजीवी'—वि० [सं० श्रमजीविन्] १ शारीरिक परिश्रम करनेवाला। मेहनत करके पेट पालनेवाला। उ०—चोटी है प्राणी सामाजिक वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।—युगवाणी, पृ० २२। २ बौद्धिक परिश्रम करके जीविका चलानेवाला। जैसे, श्रमजीवी पत्रकार, श्रमजीवी लेखक।

श्रमजीवी—संज्ञा पुं० मजदूर। कुली। उ०—ये नाच रहे निज घर का मग, कुछ श्रमजीवी घर डगमग पग, भारी है जीवन भारी पग।—युगांत, पृ० २०।

श्रमण'—संज्ञा पुं० [सं०] १ बौद्ध या जैन मतावलंबी सन्यासी। २ यति। मुनि। ३ वह जो नीच कर्म करके जीविका निर्वाह करता हो। नीच। घृणित। ४ श्रमजीवी। मजदूर। ५ भिक्षुक (को०)।

श्रमण'—वि० १ श्रम करनेवाला। २ नीच। निम्न कोटि का। ३ नंगा [को०]।

श्रमणक—संज्ञा पुं० [सं०] बौद्ध या जैन भिक्षु [को०]।

श्रमणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ सुदर्शना नामक ओषधि। २ जटा। मासी। बालछड़। ३ मुंडी। घुंडी। श्रावणिका। ४. शबर जाति की एक स्त्री का नाम। ५ सन्यासिनी। ६ लावण्यमयी स्त्री (को०)। ७. कठिन परिश्रम करनेवाली स्त्री (को०)।

श्रमणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] भिक्षुणी। बौद्ध सन्यासिनी। दे० 'श्रमण' [को०]।

श्रमदान—संज्ञा पुं० [सं०] सार्वजनिक कार्य में स्वेच्छया बिना मजदूरी लिए शारीरिक मेहनत करना [को०]।

श्रमबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० श्रमबिन्दु] परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हुई बूंद। श्रमकण। स्वेद।

श्रमभंजिनी—संज्ञा स्त्री० [सं० श्रमभञ्जिनी] पनवारी लता, जो थकावट दूर करनेवाली मानी जाती है। पान। नागवल्ली।

श्रममोहित—वि० [सं०] अति श्रम के कारण जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो [को०]।

श्रमवारि—संज्ञा पुं० [सं०] परिश्रम के कारण शरीर से निकलनेवाला पसीना। श्रमकण।

श्रमबिंदु—संज्ञा पुं० [सं० श्रमबिन्दु] स्वेद। श्रमबिंदु।

श्रमविनयन—वि० [सं०] थकान को दूर करनेवाला। [को०]

श्रमविनोद—संज्ञा पुं० [सं०] वह कार्य जिससे थकान दूर हो सके [को०]।

श्रमविभाग—संज्ञा पुं० [सं०] १ किसी कार्य के भिन्न भिन्न अंगों के संपादन के लिये, अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति। परिश्रम या काम का विभाग। जैसे,—किसी का रूई ओटना, किसी का सूत कातना, किसी का कपड़ा बुनना, किसी का अनाज पीसना, किसी का रोटी पकाना। २. अधिकार के लिए आदि से संबंधित मामलों की देखभाल करनेवाला सरकारी महकमा।

श्रमशीकर—संज्ञा पुं० [सं०] श्रम से होनेवाला पसीना। श्रमकण।

श्रमशील—वि० [सं०] मेहनती। परिश्रम करनेवाला [को०]।

श्रमसहिष्णु—वि० [सं०] जो यथेष्ट श्रम कर सकता हो। मेहनती। परिश्रमी।

श्रमसाध्य—वि० [सं०] जिसके संपादन में श्रम करना पड़े। जो सहज में या बिना परिश्रम न हो सके।

श्रमसीकर—संज्ञा पुं० [सं०] पसीना। श्रमबिंदु। उ०—(क) कुंचित अलक कपोलनि झलकत श्रमसीकर के दाग।—सूर० (शब्द०)। (ख) मुख श्रमसीकर थे, छवि के निर्झर झरे नयनों से, शक्ति शिराएँ हुई रक्तप्लावित सी।—अनामिका, पृ० १४७।

श्रमस्थान—संज्ञा पुं० [सं०] १ श्रम करने का स्थान। व्यायामभूमि। कारखाना [को०]।

श्रमांबु—संज्ञा पुं० [सं० श्रमाम्बु] पसीना। स्वेद [को०]।

श्रमार्त—वि० [सं०] श्रम से थका हुआ या चूर। उ०—हमारे देश में भी नाट्याचार्य ने नाटक की विशेषता बताते हुए लिखा कि यह दुखी, श्रमार्त्त, शोकार्त को विश्रांतिदायक होता है।—सं० शास्त्र, पृ० १६।

श्रमित—वि० [सं० श्रम] जो श्रम से शिथिल हो गया हो। श्रांत। थका हुआ। उ०—चारो भ्रातन श्रमित जानि कै जननी तब पौढाए। चापत चरण जननि अरु अपनी कछुक मधुर स्वर गाए।—सूर (शब्द०)।

श्रमितचरण—वि० [स० श्रमित+चरण] जिसके पाँव थक गए हो। उ०—श्रमित चरण लौटे गृहिजन निज निज द्वार।—अपरा, पृ० ३५।

श्रमी—वि०, सज्ञा पु० [स० श्रमिन्] १ मेहनती। परिश्रमी। उ०—थके श्रमी जीवो के पसीने भरे सीने लग, जीने को सफल करने के लिये सोते चलो।—झरना, पृ० ४१ २ दे०। 'श्रमजीवी'।

श्रय—सज्ञा पु० [स०] आश्रय। श्रयण [को०]।

श्रयण—सज्ञा पुं० [स०] आश्रय।

श्रयना(पु)—वि० स० [स० स्रवण] श्रयण करना। आश्रय करना या लेना। उ०—इकै अइ कीरति अमृत एक। कछूक कवित्त सुधारै बिसेक।—पृ० रा०, १२ ३३४। २ गिराना। बहाना। दे० 'स्रवना'।

श्रवंतिनी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रवन्तिनी] नदी।

श्रव'—सज्ञा पुं० [स०] १. जिससे सुना जाय, कान (डिं०)।

यौ०—श्रवपत्र=एक आभूषण। कर्ण फूल।

२. जो सुना जाय, शब्द। ३. श्रवण करना। सुनना जैसे, सुखश्रव (को०)। ४. त्रिभुज का कर्ण (को०)। ५. स्रवित होना। क्षरण (को०)। ६. कीर्ति। यश (को०)। ७ अन्न। धान्य (को०)। ८. धन। सपत्ति (को०)।

श्रव(पु)²—सर्व० [स० सर्व] सब। उ०—राजकुँवर श्रव वर्णिया, सयल सभा सभलो हो सजोग।—बी० रासो, पृ० १००।

श्रवण—सज्ञा पुं० [स०] १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। कर्ण। श्रुति। २ वह ज्ञान जो श्रवणेंद्रिय द्वारा होता है। ३ सुनना। श्रवण करने की क्रिया। श स्त्रीय परिभाषा मे शास्त्रो मे लिखी हुई बातें सुनना और उनके अनुसार कार्य करना अथवा देवताओ आदि के चरित्र सुनना। उ०—श्रवण कीर्त्तन सुमिरन करै। पद सेवन अर्चन उर धरै।—सूर (शब्द०)। ४ नौ प्रकार की भक्तियो मे से एक प्रकार की भक्ति। उ०—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पद रत, अरचन, वदन दास। सख्य और आत्मा निवेदन प्रेम लक्षण जास।—सूर (शब्द०)। ५ वैश्य तपस्वी अधक मुनि के पुत्र का नाम। ६. राजा मेवध्वज के पुत्र का नाम। उ०—ता सगति नव सुत नित जाए। श्रवणादिक मिलि हरि गुण गाए।—सूर (शब्द०)। ७. अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रो मे से बाइसवाँ नक्षत्र, जिसका आकार शर या तीर का सा माना गया है।

विशेष—इसमे तीन तारे है, और इसके अधिपति देवता हरि कहे गए हैं। फलित ज्योतिष के अनुसार जो बालक इस नक्षत्र मे जन्म लेता है, वह शास्त्रो से प्रेम रखनेवाला, बहुत से लोगो से मित्रता रखनेवाला, शत्रुओ पर विजय प्राप्त करनेवाला और अच्छी संतानवाला होता है।

८. किसी त्रिभुज का कर्ण (को०)। ९ अध्ययन (को०)। १०. यश। कीर्ति (को०)। ११ धन। संपत्ति (को०)। १२. बहना। क्षरण। स्रवित होना (को०)।

श्रवणकातरता—सज्ञा स्त्री० [स०] सुनने की लालसा [को०]।

श्रवणगोचर—वि० [सं०] १. जो सुना जा सके। २. जहाँ से सुनाई पडे [को०]।

श्रवण द्वादशी—सज्ञा स्त्री० [स०] भादो मास के शुक्ल पक्ष की वह द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र से युक्त हो। उ०—अस कहि शुभ दिन शोधि ब्रह्म ऋषि तुरत सुमत बोलायो। भादौं मास श्रवण द्वादशि को सुदिवस सुखद सुनायो।—रघुराज (शब्द०)।

विशेष—यह बहुत पुण्य तिथि मानी जाती है। इसे वामन द्वादशी भी कहते है। कहते है, वामनावतार इसी दिन हुआ था।

श्रवणपथ—सज्ञा पु० [स०] श्रवणेंद्रिय। कान।

श्रवण परुष—वि० [स०] जो सुनने मे कठोर हो। श्रवणकटु।

श्रवणपालि, श्रवणपाली—सज्ञा स्त्री० [स०] कान की लरी [को०]।

श्रवणपुट, श्रवणपुटक—सज्ञा पु० [सं०] कर्णरध्र [को०]।

श्रवण पूरक—सज्ञा पुं० [स०] कान का आभूषण।

श्रवण फूल—सज्ञा पु० [स० श्रवण+हिं० फूल] करनफूल।—पोद्दार अभि० ग्रं०, पृ० १९३।

श्रवणभूषण—सज्ञा पु० [स०] कान का आभूषण।

श्रवणविद्या—सज्ञा स्त्री० [स०] वह विद्या जो श्रवण इंद्रिय के संपर्क से मानसिक तृप्ति प्रदान करती है। जैसे, सगीतशास्त्र।

श्रवणविवर—सज्ञा पु० [स०] कान का छेद को०]।

श्रवणविषय—[स०] १. दे० 'श्रवणपथ'। २ श्रवण की सीमा में आनेवाला विषय, वस्तु आदि।

श्रवणवृत्ति—सज्ञा स्त्री० [स० श्रवण+वृत्ति] सुनने की वृत्ति। श्रवण। सुनने की ललक। उ०—जिस प्रकार दर्शन वृत्ति की बोध दशा और रागात्मिका दशा ये दो दशाएँ होती है, उसी प्रकार श्रवण वृत्ति की भी।—रस०, पृ० ७२।

श्रवणशीर्षिका—सज्ञा स्त्री० [स०] श्रावणी वृक्ष। गोरखमुंडी। बड़ी मुंडी।

श्रवणसुभग—वि० [स०] कर्णेंद्रिय को सुख देनेवाला। जो सुनने मे अच्छा लगे [को०]।

श्रवणहारी—सज्ञा पु० [स० श्रवणहारिन्] वह जो कानो को भला लगे। सुनने मे अच्छा जान पडनेवाला। कर्णमधुर।

श्रवणा—सज्ञा स्त्री०[स०] १ बडी मुंडी। २ पु (मुं०) डेरी। ३ अश्विनी आदि सत्ताइस नक्षत्रो के अंतर्गत बाईसवाँ नक्षत्र। विशेष दे० 'श्रवण'—७।

श्रवणाधिकारी—सज्ञा पु० [स० श्रवणाधिकारिन्] वह जो बोल रहा हो। वक्ता [को०]।

श्रवणावभास—सज्ञा पु० [स०] श्रुतिपथ। कर्ण-श्रवण-पथ [को०]।

श्रवणाह्वया—सज्ञा स्त्री० [स०] १. निर्विषी नामक तृण। २. जल चौलाई।

श्रवणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ पु (मुं०) डेरी। २ गोरखमुंडी। महामुंडी।

श्रवणीय—वि० [स०] सुनने लायक। श्रवण करने योग्य।

श्रवणेंद्रिय—सज्ञा पुं० [स० श्रवणेन्द्रिय] कान। कर्ण।

श्रवणोत्पल—सज्ञा पु० [स०] आभूषण की दृष्टि से कान मे लगाया हुआ कमल [को०]।

श्रवणोदर—सज्ञा पुं० [स०] कर्णरंध्र। कर्णविवर। कान [को०]।

श्रवती—सज्ञा स्त्री० [सं० श्रवन्तिनी या हिं०] नदी।—नद० ग्रं० पृ०, ६८।

श्रवन—सज्ञा पु० [स० श्रवण] १ श्रवण। कान। उ०—(क) नयन बैन औ श्रवन ये सबही तोर प्रसाद। सेवा मोर यही नित बोलौं आसिरवाद।—जायसी (शब्द०)। (ख) नैन राच्यो रूप सो श्रवनूँ राच्यो नाद।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० १८०। २ दे० 'श्रावण'। उ०—श्रवन मास नौमी तिथि लग्गिय।—प० रासो, पृ० १५६। ३. आकर्णन। अकनना। श्रवण करना। सुनना।

श्रवना[1]—क्रि० अ० [स० स्राव] बहना। चूना। रसना। उ०—राति दिवस रस श्रवत सुधा मे कामधेनु दरसाई। लूट लूट दधि खात सखन सँग तैसो स्वाद न पाई।—सूर (शब्द०)।

श्रवना[2]—क्रि० स० गिराना। बहाना। उ०—खर भर लक सशक, दशानन गर्भ श्रवहिं अरि नारि।—तुलसी (शब्द०)।

श्रवनी—सज्ञा स्त्री० [हिं० सुमरनी] दे० 'सुमिरनी'। उ०—हस दशा धरि पथ चलावे। श्रवनी कठी तिलक लगावे।—कबीर सा०, पृ० २२१।

श्रवस्यु—सज्ञा पु० [स०] १ प्रसिद्धि। यश। ख्याति। २ ख्यातिदायक कार्य [को०]।

श्रवाप्य, श्रवाय्य[1]—सज्ञा पुं० [स०] बलिपशु [को०]।

श्रवाप्य, श्रवाय्य[2]—वि० प्रशसनीय [को०]।

श्रवित—वि० [स० स्राव] बहा हुआ। रसा या चुआ हुआ। उ०—काचे घट मे जल जथा श्रवित होत अति जाय।—दीन ग्र०, पृ० ७६।

श्रविष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] वैदिक काल के एक ऋषि का नाम।

श्रविष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] धनिष्ठा नक्षत्र।

श्रविष्ठाज—सज्ञा पुं० [स०] बुधग्रह।

श्रविष्ठामण—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

श्रविष्ठासू—सज्ञा पुं० [स०] बुधग्रह।

श्रव्य—वि० [स०] जो सुना जा सके। सुनने योग्य। जैसे,—संगीत।

यौ०—श्रव्य काव्य=वह काव्य जो केवल सुना जा सके। वह काव्य जो अभिनय आदि के रूप मे देखा जा न सके। इसके तीन भेद हैं—(१) गद्य, (२) पद्य और (३) गद्य-पद्य-मय। विशेष दे० 'काव्य'।

श्रात—वि० [स० श्रान्त] १ जितेंद्रिय। शात। २. जो अधिक श्रम करने के कारण थक गया हो। परिश्रम से थका हुआ। ४. दु.खी। खिन्न। रजीदा। ५ निवृत्त। ६ जो सुख भोगकर तृप्त हो चुका हो।

यौ०—श्रातचित्त, श्रातमना श्रातहृदय=दुखी। उदास। श्रानसंवाह, श्रातसवाहना=थके व्यक्ति को आराम देना।

श्राति—सज्ञा स्त्री० [स० श्रान्ति] १, श्रम। परिश्रम। मेहनत। २ थकावट। उ०—सध्या पर्यंत मार्ग मे चलती रही, इससे अत्यत श्राति मालूम हुई।—प्रतापनारायण (शब्द०)। ३ खेद। दु.ख। ४ विश्राम। आराम।

श्राण[1]—वि० [स०] १ घी, दूध या जल में पका हुआ। सिद्ध। पक्व। भूना हुआ (को०)। ३. उबाला या पकाया हुआ। ४ आर्द्र। तर (को०)।

श्राण[2]—सज्ञा पु० [स०] उबाला हुआ मास [को०]।

श्राणा—सज्ञा स्त्री० [स०] माँड की काँजी जिसका व्यवहार पथ्य रूप मे होता है। यवागू। विशेष दे० 'यवागू'।

श्राणिक—सज्ञा पु० [स०] वे भृत्य जिनको केवल—भाजी (या यवागू) दी जाती थी।—सपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २४६।

श्राद्ध—सज्ञा पु० [स०] १ वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। श्रद्धा से किया जानेवाला काम। २ वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरो के उद्देश्य से किया जाता है। जैसे पितरो के उद्देश्य से तर्पण और पिंडदान करना तथा ब्राह्मणो को भोजन कराना। उ०—श्राद्ध करत पितरन को तर्पण करि बहु भाँति। कहुँ विप्रन को देत दक्षिणा कहुँ भोजन की पाँति।—सूर (शब्द०)।

विशेष—कुछ लोगो के मत से श्राद्ध पाँच प्रकार का है—नित्य, नैमित्तिक, काम्य, वृद्धि और पार्वण और कुछ लोग इन पाच प्रकार के श्राद्धो के अतिरिक्त नीचे लिखे सात प्रकार के और भी (कुल बारह प्रकार के) श्राद्ध मानते है—सपिंडन, गोष्ठी, शुद्धयर्थ, कर्मांग, दैविक, यात्रार्थ और पुष्ट्यर्थ।

३ आश्विन कृष्ण पक्ष जिसमे पितरो के उद्देश्य से विशेष रूप से पिंडदान किया और ब्राह्मणभोजन कराया जाता है। पितृपक्ष। ४ विश्वास। ५ प्रीति।

श्राद्धकर्म—सज्ञा पुं० [सं०] १. अत्येष्टि क्रिया। २. मृत की वार्षिक तिथि पर पिंडदान आदि करना [को०]।

श्राद्धकर्ता—सज्ञा पु० [स० श्राद्धकर्तृ] श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति। श्राद्धकारक।

श्राद्धकृत्य—सज्ञा पु० [स०] दे० 'श्राद्धकर्म'।

श्राद्धक्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्राद्धकर्म'।

श्राद्धत्व—सज्ञा पु० [स०] श्राद्ध का भाव या धर्म।

श्राद्धद—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'श्राद्धकर्ता'।

श्राद्धदिन—सज्ञा पुं० [स०] श्राद्धकृत्य करने का दिन। मृत व्यक्ति की वह वार्षिक तिथि जिस दिन मृत का श्राद्धकर्म किया जाय।

श्राद्धदेव—सज्ञा पुं० [सं०] १. धर्मराज। २ यमराज। ३ श्राद्ध मे निमंत्रित ब्राह्मण। ४ मार्कंडेय पुराण के अनुसार वैवस्वत मनु का एक नाम। ५. एक वैश्वदेव (को०)। ६ वह लोक जहाँ मरने पर पितर लोग जाते हैं। पितृलोक। ७ प्रजापति। पितर (को०)।

श्राद्ध पक्ष—संज्ञा पु० [सं०] तर्पण, पिंडदान आदि के लिये निश्चित आश्विन मास का कृष्ण पक्ष। पितृपक्ष।

श्राद्धभुक्[1]—संज्ञा पु० [सं० श्राद्धभुज्] पितर [को०]।

श्राद्धभुक्[2]—वि० श्राद्धान्न भोजन करनेवाला [को०]।

श्राद्धभोक्ता—संज्ञा पु० [सं० श्राद्धभोक्तृ] पितर [को०]।

श्राद्धमित्र—संज्ञा पु० [सं०] मनु के अनुसार वह व्यक्ति जो श्राद्धकर्म के अवसर पर मित्र बनावे या मित्रता करे [को०]।

श्राद्धशाक—संज्ञा पु० [सं०] नाडी शाक। कलशाक।

श्राद्धसूतक—संज्ञा पु० [सं०] श्राद्ध के उद्देश्य से बनाया हुआ भोजन। पितरो के उद्देश्य से ब्राह्मणो को खिलाने के लिये बनाया हुआ भोजन।

श्राद्धिक[1]—वि० [सं०] श्राद्ध संबंधी। श्राद्ध का।

श्राद्धिक[2]—संज्ञा पु० १ वह जो श्राद्ध के अवसर पर पितरो के उद्देश्य से भोजन करता हो। श्राद्ध मे दी हुई वस्तु को स्वीकार करनेवाला। २ श्राद्ध मे दी हुई वस्तु [को०]।

श्राद्धी—संज्ञा पु० [सं० श्राद्धिन्] श्राद्ध मे भोजन करनेवाला। श्राद्धिक।

श्राद्धीय—वि० [सं०] श्राद्ध संबंधी। श्राद्ध का।

श्राद्धेय—वि० [सं०] श्राद्ध के योग्य। श्राद्ध मे प्रयुक्त होने योग्य। जैसे, श्राद्धेय अन्न [को०]।

श्राप Ⓟ—संज्ञा पु० [सं० शाप] दे० 'शाप'। उ०—राछसन मारि विश्वामित्र सा करायो यज्ञ तारी रिषि नारी सिला श्राप सो भई रहा।—रघुनाथ बंदीजन (शब्द०)।

श्रापी—संज्ञा पु० [सं० श्रापिन्] वह जो भोजन बनाता हो। रसोइया।

श्राम—संज्ञा पु० [सं०] १. मास। महीना। २ मडप। छाजन। घर। ३. काल। समय।

श्रामणेर श्रामणेरक—संज्ञा पु० [सं०] वह जो नया बौद्धभिक्षु हुआ हो [को०]।

श्राय—संज्ञा पु० [सं०] आश्रय।

श्रावती—संज्ञा स्त्री० [सं०] धर्मपत्तन। धर्मपुरा। दे० 'श्रावस्ती' [को०]।

श्राव—संज्ञा पु० [सं०] १. श्रवण। कान। २. गवाबिरोजा। ३. दे० 'स्रवण'।

श्रावक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १. बौद्ध धर्म को माननेवाला सन्यासी। २. जैन धर्म को माननेवाला सन्यासी। ३. वह जो जैन धर्म का अनुयायी हो। ४. नास्तिक। पाखडी। उ०—यह नरक को कोउ जीव है जिनि याहि देखि डेराहि। निज जानियै यह श्रावका आत दूर ते तजि ताहि।—केशव (शब्द०)। ५. दूर की आवाज। दूर का शब्द। ६ कौआ। काक। ७. छाव। शिष्य।

श्रावक[2]—वि० श्रवण करनेवाला। सुननेवाला।

श्रावग Ⓟ—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] दे० 'श्रावक'। उ०—अजहूँ, श्रावग ऐसो करै। ताही को मारग अनुसरै।—सूर (शब्द०)।

श्रावगी—संज्ञा पुं० [सं० श्रावक] जैन धर्म को माननेवाला। जैनी।

श्रावण[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. चैत आदि महीनो मे से एक महीने का नाम। असाढ के बाद और भादो के पहले का महीना।

विशेष—गणना मे यह पाँचवाँ महीना होता है और वर्षा ऋतु मे पडता है। इस मास की पूर्णमासी श्रवण नक्षत्र से युक्त होती है इसी लिये इसे श्रावण कहते है। सावन।

२ एक प्रकार का वर्ष।

विशेष—यदि श्रवण अथवा धनिष्ठा नक्षत्र मे बृहस्पति उदय हो तो उस दिन से एक वर्ष तक का समय श्रावण कहलाता है। कहते है, इस वर्ष मे धान्य खूब पकते है, सब लोग बहुत सुखी होते है, पर पाखडी मनुष्य तथा उनके अनुयायी पीड़ित होते हैं।

३. श्रावण मास की पूर्णिमा। ४. शब्द, जिसका ग्रहण श्रवणेंद्रिय द्वारा होता है। आवाज। ५. श्रवण करने से प्राप्त ज्ञान। श्रवणजन्य ज्ञान (को०)। ६. श्रवण नामक तपस्वी (को०)। ७. नास्तिकता। पाखड। ८ वचक। पाखडी (को०)। ९ मार्कडेय पुराण के अनुसार। योगियो के याग मे होनेवाले पाच प्रकार के विघ्न या उपसर्ग जिसमे योगी हजार योजन तक के शब्द ग्रहण करके उनके अर्थ हृदयगम करता है।

श्रावण[2]—वि० १. श्रवण नक्षत्र संबंधी। श्रवण नक्षत्र का। २. श्रवण नक्षत्र मे उत्पन्न (को०)। ३. श्रवणेंद्रिय या कान से संबंधित (को०)। ३ वेदविहित वेदोक्त। वैदिक (को०)।

यौ०—श्रावण ज्ञान, श्रावण प्रत्यक्ष = श्रवणेंद्रिय द्वारा प्राप्त ज्ञान वा अनुभूति।

श्रावणा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. भुँइ कदंब। २. सुदर्शना नामक वृक्ष।

श्रावणिक[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. श्रावण मास। सावन। २. एक प्रकार की आग्न।

श्रावणिक[2]—वि० श्रावण संबंधी। श्रावण का।

श्रावणिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] मुंडी।

श्रावणी—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा। सावन मास की पूर्णमासी।

विशेष—इस दिन ब्राह्मणो का प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षाबंधन' या 'सलोनो' तथा कुछ और कृत्य या पूजन आदि होते हैं। इस दिन लोग यज्ञोपवीत का पूजन करते और नवीन यज्ञोपवीत भी धारण करते हैं।

२. मुंडी। घुंडा। ३. भुँइ कदंब। ४. वृद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ५. ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधी।

श्रावना[1] Ⓟ—क्रि० स० [सं० स्राव(=बहाना), हिं० स्रवना] गिराना। बहाना। उ०—रुचि द्रुम प्रीति रीति नैनन जल सींचि ध्यान भर लागी। ताके प्रेम सुफल मुनिश्रावन श्याम सुरँग अनुरागी।—सूर (शब्द०)।

श्रावन[2] Ⓟ—संज्ञा पु० ढरकाने या बहाने या द्रवित करने की क्रिया या भाव।

श्रावस्त—सज्ञा पु० [स०] हरिवश के अनुसार राजा श्राव के पुत्र का नाम, जिन्होने श्रावस्तकी नगरी वसाई थी।

श्रावस्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रावस्ती'।

श्रावस्ती—सज्ञा स्त्री० [स०] उत्तर कोशल मे गगा के तट पर वसी हुई एक बहुत प्राचीन नगरी।

विशेष—यह अब एक छोटे से गाँव के रूप मे रह गई है और सहेत महेत कहलाती है। आजकल यह स्थान बलरामपुर राज्य के अतर्गत है। यहाँ श्रीरामचद्र के पुत्र लव की राजधानी थी। जैनी इसे 'सावत्थी' कहते हैं और अपने नवें तीर्थकर सुदृढनाथ का कल्याणक बतलाते हैं। यह राजा प्रसेनजित् की राजधानी भी कही जाती है। यहाँ एक बार कुछ दिनो तक भगवान् बुद्ध ने भी निवास किया था, इसलिये बौद्धो की दृष्टि म यह एक बहुत पुण्यस्थल है। बुद्ध के समय मे और उनसे पहले भी यह नगरी बहुत आसपन्न थी।

श्रावा—सज्ञा स्त्री० [स०] माँड। पसावन। पीच।

श्रावित[1]—वि० [स०] कहा हुआ। बताया हुआ। सुनाया हुआ [को०]।

श्रावित[2]—सज्ञा पु० १ पुकार। गुहार। २. निवेदन [को०]।

श्रविता—वि० [स० श्रावितृ] श्रवण करने या सुननेवाला। श्रोता [को०]।

श्राविष्ठ, श्राविष्ठीय—वि०[स०] १. श्रविष्ठ या श्रवण नक्षत्र सबधी। २. श्रविष्ठा मे उत्पन्न या जात [को०]।

श्रावी[1]—सज्ञा पु० [स० श्राविन्] सज्जी। स्वर्जिका क्षार।

श्रावी[2]—वि० श्रवण करनेवाला।

श्राव्य—वि० [स०] १. सुनने के योग्य। सुनने लायक। श्रोतव्य। २ स्फुट। व्यक्त। श्रोत्रेंद्रिय द्वारा ग्राह्य (को०)।

श्रित—वि० [स०] १ आश्रय मे पहुँचा हुआ। २ चिपका, लगा हुआ। सहारा लिया हुआ। अधिष्ठित। ३. मीलित। सबद्ध। ४ रक्षित। बचाया हुआ। ५. समानित। सेवित ६ अनुजीवी। सहकारी। ७. आच्छादित। ८. पूरित। ९ एकत्रित। समवेत। १० संपन्न। ११. पकाया हुआ [को०]।

यौ०—श्रितक्षम=अक्षुब्ध। शातमना। स्वस्थ। श्रितसत्व=धैर्ययुक्त। साहस युक्त।

श्रीतवान—वि० [स० श्रुतवत्] १. आश्रय लेनेवाला। सेवक।

श्रिति—सज्ञा स्त्री० [स०] अवलब। सहारा [को०]।

श्रियमन्य—वि० [स० श्रियम्मन्य] [वि० स्त्री० श्रियमन्या] अपने को श्रीयुक्त माननेवाला। अभिमानी। घमडी [को०]।

श्रिय[1]—सज्ञा स्त्री० [स० श्रिया] मगल। कल्याण। उ०—लखी जोति जो वाम्हन लोगा। तिनके वचन न ससय जोगा। इनकी बानि सग श्रिय रहही। ये नहिं कबहुँ मृषा कछु कहही। —सीताराम (शब्द०)।

श्रिय(पु)[2]—सज्ञा स्त्री० [स० श्री] शोभा। प्रभा। उ०—दुहुन बीच सकेत राधिका नदकुँवर कौ। सो श्रिय को कहि सकै भेदु पिय प्यारी घर कौ।—सूदन (शब्द०)।

श्रिया—सज्ञा स्त्री० [स०] विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी।

श्रियावास—सज्ञा पु० [स०] वह जिसके पास यथेष्ट लक्ष्मी हो। धनवान्। अमीर।

श्रियावासी—सज्ञा पु० [स० श्रियावासिन्] महादेव। शिव।

श्री[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। कमला। उ०—तजि बैकुठ गरुड तजि आ तजि निकट दास के आयो।—सूर (शब्द०)। २. सरस्वती। ३ धूप। सरल वृक्ष। ४ लवग। लौग। ५ कमल। पद्म। ६ बेल। बिल्व वृक्ष। ७ ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ८. सफेद चदन। सदल। ९. धर्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। १० सपत्ति। धन। दौलत। ११. विभूति। ऐश्वर्य। १२ उपकरण। १३ अधिकार। १४ कीर्ति। यश। १५ प्रभा। शोभा। १६ काति। चमक। १७ वृद्धि। १८ सिद्धि। १९ एक प्रकार का पद-चिह्न। उ०—स्वस्तिक अष्टकोण श्री केरा। हल मूसल पन्नग शर हेरा।—विश्राम (शब्द०)। २० स्त्रियो का बेंदी नामक आभूषण। उ०—श्री जो रतन माँग बैठारा। जानहु गगन टूट निस तारा।—जायसी (शब्द०)। २१. ऊर्ध्व पुड्र के बीच की लंबी नोकदार लाल रग की रेखा। २२. चद्रमा की बारहवीं कला (को०)। २३ सजावट। रचना (को०)। २४. उक्ति। वाणी (को०)। २५ ऋक्, साम और यजुर्वेद। वेदत्रयी (को०)। २५ पक्व करना। एकदिल करना। पकान। (को०)। २६ समझ। ज्ञान। बुद्धि (को०)। २७. आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि मे लिखा जाता है।

विशेष—सन्यासी, महात्माओ के नाम के आगे श्री १०८ लिखा जाता है। माता, पिता और गुरु के लिये श्री के साथ ६, स्वामी के लिये ५, शत्रु के लिये ४, मित्र के लिये ३, नौकर के लिये २ और शिष्य, सुत और स्त्री के लिये श्री के साथ १ लिखने की प्राचीन प्रणाली है।

श्री[2]—सज्ञा पु० १ कुबेर। (डिं०)। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ वैष्णवो का एक सप्रदाय। ५ एक वृत्त का नाम। यह एकाक्षरा वृत्ति है। इसके प्रत्येक पद मे एक गुरु होता है। यथा—गो। श्री। धी। ही। ६ सपूर्ण जाति का एक राग, जो हनुमत् के मत से छह रागो के अतर्गत पाँचवाँ राग है।

विशेष—यह धैवत स्वर की संतान और पृथ्वी की नाभि से उत्पन्न माना गया है। इसकी ऋतु शरद् और वार शुक्र है। कहते हैं, इस राग को शुद्धतापूर्वक गाने से सूखा वृक्ष भी हरा हो जाता है। शास्त्र के अनुसार इस राग की रागिनियाँ ये हैं—गौरी, पूरवी, मालवी, मुलतानी, और जयती। इसका सहचर मगलराग और सहचरी चद्रावती रागिनी है। श्यामकल्याण, मारू, एमन, मौन ध्यान और गौड इसके पुत्र है। भीमपलाश्री, धनाश्री, मालश्री, वारवा, चित्राचकोरी इसकी पुत्रवधुएँ है। हनुमत् के अनुसार मारवा, पूरवा, श्याम, हेम, क्षेत्र, हविरिक, भूपाल, जेतरा, कल्याण, ध्यानकल्याण इसके पुत्र हैं। इसकी स्त्रियाँ मालवी, त्रिवेणी, गौरी, गौरा

और पूरबी है, तथा इसकी प्रियाएँ एमनि, टकी, माली, गौरा, नागध्वनि और चेतकी है।

श्री[3]—वि० १. योग्य। २. सुदर। श्रेष्ठ। ४ मिश्र। मिश्रित। ५ शुभ।

श्रीकठ—सज्ञा पु० [स० श्रीकण्ठ] १. महादेव। उ०—श्रीकठ उर वासुकि लसत सर्वमगला गार।—केशव (शब्द०)। २ हस्तिनापुर के उत्तर पश्चिम का कुरु जागल देश। ३ सस्कृत के नाटककार भवभूति का एक नाम।

यौ०—श्रीकठपदलाछन=श्रीकठ नामवाला, भवभूति का एक नाम। ४ एक राग का नाम (को०)। ५ सुंदर कठवाला एक पक्षी (को०)।

श्रीकठसखा—सज्ञा पु० [स० श्रीकण्ठसखा] कुबेर का एक नाम।

श्रीकदा—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीकन्दा] बध्या कर्कोटकी। खेखसा। वनपरवल।

श्रीकर[1]—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ लाल कमल। ३. नौ उपनदो मे से एक।

श्रीकर[2]—वि० १. शोभा बढानेवाला। सौंदर्य बढानेवाला। २ कल्याण करनेवाला।

श्रीकरण—सज्ञा पु० [स०] १ कलम। लेखनी। २ कायस्थो की शाखा या उपजाति का नाम। ३ उत्तर कोशल की राजधानी का नाम (को०)।

श्रीकर्ण—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार का पक्षी। (बृहत्सहिता)।

श्रीकात—सज्ञा पु० [स० श्रीकान्त] लक्ष्मी के पति, विष्णु।

श्रीकाम—वि० [स०] कीर्ति या यश चाहनेवाला। अभ्युदय की आकाक्षा करनेवाला।

श्रीकाम—सज्ञा स्त्री० [सं०] राधिका का एक नाम (को०)।

श्रीकारी—सज्ञा पु० [स० श्रीकारिन्] एक प्रकार का मृग। कुरग।

पर्या०—महायव। शिखिपुप। यवन। जघाल।

श्रीकीर्ति—सज्ञा पु० [स०] सगीतदामोदर के अनुसार ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक भेद। इसमे दो गुरु और दो लघु मात्राएँ होती है (सगीतदामोदर)।

श्रीकुज—सज्ञा पुं० [स० स्त्रीकुञ्ज] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम, जो सरस्वती नदी के तट पर था।

श्रीकुड—सज्ञा पु० [स० श्रीकुण्ड] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीकृच्छ्र—सज्ञा पु० [स०] एक व्रत जिसमें केवल श्रीफल (बेल) खाकर रहते हैं।

श्रीकृष्ण—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'कृष्ण'-१।

यौ०—श्रीकृष्णस्मरण=पुष्टिमार्गीय जनो का नमस्कार। उ०—तब उन वैष्णन को श्रीकृष्णस्मरण करि बोहोत आदर करि बैठारे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० ७७।

श्रीक्षेत्र—सज्ञा पु० [स०] जगन्नाथ पुरी तथा उसके आसपास के प्रदेश का नाम, जो पुण्य क्षेत्र माना जाता है।

श्रीखंड—सज्ञा पुं० [स० श्रीखण्ड] १. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का चदन जो हरिचंदन भी कहलाता है। मलयागिरि चंदन। उ०—मुकता माल नद नदन उर अर्घ सुधा घट काति। तनु श्रीखड मेघ उज्जवल अति देखि महाबल भाँति।—सूर (शब्द०)। २ एक पेय पदार्थ। दे० 'शिखरण'। उ०—कलिया अरु कबाब वर स्वादू। तिमि श्रीखड करन अहलादू।—रघुराज (शब्द०)। ३ वैश्यो की एक जाति।

श्रीखड शैल—सज्ञा पुं० [स० श्रीखण्ड शैल] मलय पर्वत, जहाँ श्रीखंड (चदन) होता है।

श्रीखडा—सज्ञा पु० [हिं०] दे० 'श्रीखड'।

श्रीगध—सज्ञा पु० [स० श्रीगन्ध] सफेद चदन। संदल।

श्रीगणेश—सज्ञा पुं० [स०] आरंभ। प्रारभ। शुरुआत।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

श्रीगदित—सज्ञा पुं० [स०] उपरूपक के अठारह भेदो मे से एक भेद।

विशेष—इसकी रचना प्राय किसी पौराणिक घटना के आधार पर होती है। इसका दूसरा नाम श्रीरामिका भी है।

श्रीगर्भ—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु। २. खड्ग। तलवार। ३. राजा का शयनकक्ष (को०)।

श्रीगुरु—सज्ञा पुं० [स०] वैश्यो की एक जातिविशेष।

श्रीगेह—सज्ञा पु० [स०] कमल। पद्म।

श्रीगोड—सज्ञा पु० [स० श्री+हिं० गोड] वैश्यो की एक जाति विशेष।

श्रीग्रह—सज्ञा पु० [स०] वह स्थान जहाँ चिडियो के पानी पीने का प्रबंध हो।

श्रीग्रामर—सज्ञा पु० [स०] नारायण। विष्णु (को०)।

श्रीघन—सज्ञा पु० [स०] १. दही। दधि। २. बुद्धदेव का एक नाम। ३. बौद्ध यति या संन्यासी।

श्रीचदन—सज्ञा पु० [स० श्रीचन्दन] सफेद चदन। सदल।

श्रीचक्र—सज्ञा पु० [स०] १. तात्रिको के अनुसार एक प्रकार का चक्र या यत्र।

विशेष—इसका व्यवहार देवी के पूजन मे, विशेषत. त्रिपुरासुदरी देवी के पूजन मे होता है।

२. भूमडल। ३. इद्र के रथ का एक चक्र (को०)।

श्रीचमरी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का हिरन।

श्रीज—सज्ञा पु० [स०] १. कामदेव। मदन। २. शाव का एक नाम।

श्रीटंक—सज्ञा पु० [स० श्रीटङ्क] संगीत मे एक प्रकार का राग, जिसमे सब कोमल स्वर लगते हैं।

श्रीणा—सज्ञा स्त्री० [स०] रात। रात्रि।

श्रीतरु—सज्ञा पुं० [स०] सर्ज वृक्ष। साल का पेड। शाल।

श्रीतल—सज्ञा पु० [स०] विष्णुपुराण के अनुसार एक नरक का नाम।

श्रीताल—सज्ञा पुं० [स०] ताड़ या ताल के वृक्ष से मिलता जुलता एक प्रकार का वृक्ष जिसे हिंताल भी कहते हैं।

विशेष—यह मलाया देश मे उत्पन्न होता है। वैद्यक के अनुसार यह मधुर, कुछ कुछ खट्टा, कफकारक, किंचित् वायु को कुपित करनेवाला तथा पित्त का नाश करनेवाला माना गया है।

पर्या०—मृदुताल। लक्ष्मीताल। मृदुच्छद। विशालपत्र। मसीलेखन्न। शिरालपत्रक।

श्रीतीर्थ—सज्ञा पु० [स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीतेज, श्रीतेजा सज्ञा पु० [स० श्रीतेजस्] ललितविस्तर के अनुसार एक बुद्ध का नाम।

श्रीद[1]—सज्ञा पु० [स०] धन देनेवाले, कुबेर।

श्रीद[2]—वि० १. श्री बढानेवाला। २ शोभा बढानेवाला।

श्रीदयित—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

श्रीदामा—सज्ञा पुं० [स० श्रीदामन्] श्रीकृष्ण के एक ग्वाल सखा का नाम, जिन्हे सुदामा भी कहते है। उ०—हँसि हसि तारी देत सखा सब भए श्रीदामा चोर। सूरदास हसि कहति यशोदा जीत्यो है सुत मोर।—सूर (शब्द०)।

श्रीदेवा—सज्ञा स्त्री० [स०] वसुदेव की पत्नी सुदेवा का एक नाम।

श्रीद्रुम—सज्ञा पु० [स०] दे० 'श्रीवृक्ष' (को०)।

श्रीधन्वी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीधर[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु का एक नाम। उ०—धनि धनि नद धन्य निशिवासर धन्य यशुमति जिन श्रीधर जाए।—सूर (शब्द०)। २ शालग्राम शिलाचक्र (को०)। ३ जैनियो के चौबीस तीर्थंकरो मे से सातवें तीर्थंकर का नाम। ४ श्रीधर स्वामी। श्रीमद्भागवत के एक व्याख्यानकार टीकाकार।

श्रीधर[2]—वि० तेजस्वी। तेजवान्।

श्रीधाम—सज्ञा पु० [स०] १ लक्ष्मी का निवासस्थान। २. पद्म।

श्रीनदन—सज्ञा पुं० [स० श्रीनन्दन] २. कामदेव। २ एक ताल का नाम (को०)।

श्रीनगर—सज्ञा पुं० [स०] काश्मीर राज्य की आधुनिक राजधानी। २ राजतरगिणी मे उल्लिखित दो नगर जिनमे एक कानपुर और दूसरा बुदेलखड मे था (को०)।

श्रीनाथ—सज्ञा पु० [स०] विष्णु का एक नाम।

श्रीनाथजी द्वार—सज्ञा पुं० [स० श्रीनाथ+हिं० जी+स० द्वार] वल्लभ मतानुयायियो का एक पवित्र तीर्थ जो उदयपुर मे है। उ०—ऐसे करत कछुक दिन भे श्री गुसाईं जी द्वारिकाजी तें श्रीनाथजी द्वार पधारे।—दो सौ बावन०, भा० २, पृ० १०।

श्रीनिकेत—सज्ञा पु० [स०] १ लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुठ। उ०—श्रीनिकेत समेत सब सुख रूप प्रगट निधान। अबर सुधा पिआइ बिछुरे पठै दीना ज्ञान।—सूर (शब्द०)। २ गवाबिरोजा। सरल निर्यास। ३. लाल कमल। ४. स्वर्ण। सोना।

श्रीनिकेतन—सज्ञा पु० [स०] १ विष्णु। २ लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुठ। ३ गवाबिरोजा। सरल निर्यास।

श्रीनितबा—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीनितम्बा] राधा का एक नाम।

श्रीनिधि—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम।

श्रीनिवास—सज्ञा पु० [स०] १. विष्णु का एक नाम। २ श्री या लक्ष्मी का निवासस्थान, वैकुठ। उ०—श्रीनिवास पुर ते अधिक रचना विविध प्रकार।—मानस, १।१२९।

श्रीनिवासक—सज्ञा पु० [स०] कटसरैया।

श्रीपचमी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीपञ्चमी] माघ शुक्ल पचमी। बसत पचमी।

श्रीपत[1]—सज्ञा पुं० [स० श्रीपति] विष्णु। (डिं०)।

श्रीपति—सज्ञा पुं० [स०] १ विष्णु। नारायण। हरि। उ०—(क) श्रीपति निज माया तब प्रेरी।—मानस, १।१२९। (ख) जाके सखा श्यामसुदर से श्रीपति सकल सुखन के दाता।—सूर (शब्द०)। २ रामचद्र। उ०—बार बार श्रीपति कहै केवट नहिं मानै।—सूर (शब्द०)। ३ कृष्ण। उ०—जो हम कछु न बसाइ पार्थ जो श्रीपति तोहि जितावै।—सूर०, १।२७५। ४ कुबेर। ५. पृथ्वीपति। नृप। राजा।

श्रीपथ—सज्ञा पु० [स०] बडी और चौडी सड़क। राजमार्ग। राजपथ।

श्रीपदी—सज्ञा स्त्री० [स०] वार्षिको पुष्पवृक्ष। मल्लिका। बेला।

श्रीपद्म—सज्ञा पु० [स०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

श्रीपर्ण—सज्ञा पु० [स०] १ कमल। पद्म। २. अग्निमथ वृक्ष। अरनी। गनियारी।

श्रीपर्णिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. कटफल। कायफल। २. गभारी। ३. गनियारी। अरनी। ४ पृश्निपर्णी। पिठवन। ५. सेमल का पेड। शाल्मलि।

श्रीपर्णी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कायफर। कायफल। २ गभारी। ३. गनियारी। अरनी। ४ पिठवन। ५. सेमल का पेड।

श्रीपर्वत—सज्ञा पु० [स०] एक पर्वत का नाम।

श्रीपा—वि० [स०] श्री की रक्षा करनेवाला। समृद्धि का रक्षण करनेवाला।

श्रीपाद—सज्ञा पु० [स०] १ वह जो चरण पूजने योग्य हो। पूज्य। श्रेष्ठ। २ धनवान्। संपन्न।

श्रीपिष्ट—सज्ञा पु० [स०] सरल वृक्ष का रस। गवाबिरोजा।

श्रीपुत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ अश्व। घोडा। २ कामदेव। ३ चद्रमा (को०)। ४ इद्र का अश्व (को०)।

श्रीपुर—सज्ञा पु० [स०] दक्षिण का मणिद्वीप नामक स्थान।

विशेष—यह वाममार्गी शाक्तो का प्रधान स्थान है। यहीं ये लोग मुक्ति का सुख अनुभव करते हैं।

श्रीपुष्प—सज्ञा पु० [स०] १ लौंग। लवंग। २ पद्मकाष्ठ। पदुमाख। ३ पुडेरी। ४ सफेद कमल।

श्रीप्रद—सज्ञा पु० [स०] वह जो श्री या सौभाग्य प्रदान करता हो।

श्रीप्रदा—सज्ञा स्त्री० [स०] राधा का एक नाम।

श्रीप्रसून—सज्ञा स्त्री० [स०] लौंग। लवंग।

श्रीप्रिय—सज्ञा पु० [स०] हरताल।

श्रीफल—सज्ञा पु० [स०] १. बेल। २. नारियल। उ०—(क) श्रीफल मधुर चिरौंजी आनी। सफरी चिरुआ अरु नय बाणा।

—सूर (शब्द०)। (ख) हिया थार कुच कनक कचूरा। जानहुँ दोऊ श्रीफल जूरा।—जायसी (शब्द०)। ३. खिरनी। राजादनी वृक्ष। ४ आँवला। ५ कच्ची चिकनी सुपारी। ६ द्रव्य। धन। उ०—श्रीफल को अभिलाष प्रगट कवि कुल के जी मे।—केशव (शब्द०)।

श्रीफला—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नीली। नील का पौधा। २ करेली। क्षुद्र कारवेली। ३ आँवला।

श्रीफलिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १ क्षुद्र कारवेली। करेली। २. महानीली का पौधा।

श्रीफली—सज्ञा स्त्री० [स०] १ आँवला। २. नील। ३ वडी मालकँगनी। महाज्योतिष्मती लता।

श्रीबधु—सज्ञा पुं० [स० श्रीबन्धु] १. अमृत। २ चद्रमा।—अनेकार्थ०, पृ० ३०।

श्रीवन—सज्ञा पु० [सं० श्री+वन] वृंदावन। उ०—प्रीतम के शृगार के अर्थ श्रीवन (निधि वन) की लताओ मे गुजा एकत्रित कर उसकी माला पिरोवै।—पोद्दार अभि० ग्र० पृ० १९६।

श्रीवीज—सज्ञा पु० [स०] ताड। ताल वृक्ष।

श्रीभक्ष—सज्ञा पु० [स०] मधुपर्क जो देवताओ के सामने रखा जाता या दान किया जाता है। विशेष दे० 'मधुपर्क'—१।

श्रीभद्र—सज्ञा पु० [स०] मुस्तक। मोथा।

श्रीभद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] भद्रमोथा। भद्रमुस्तक।

श्रीभाव—सज्ञा पुं० [स०] भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम, जिनका जन्म सत्यभामा के गर्भ से हुआ था।

श्रीभ्राता—सज्ञा पुं० [स० श्रीभ्रातृ] अश्व, चद्र, अमृत आदि चौदह रत्न जो समुद्र से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी या श्री के भाई कहे जाते हैं।

श्रीमगल—सज्ञा पु० [स० श्रीमङ्गल] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

श्रीमजरी—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीमञ्जरी] तुलसी। सुरसा।

श्रीमजु—सज्ञा पु० [स० श्रीमञ्जु] एक पर्वत का नाम।

श्रीमडप—सज्ञा पु० [स० श्रीमण्डप] एक पर्वत का नाम।

श्रीमत[1]—सज्ञा पु० [स० श्रीमन्त] १. एक प्रकार का शिरोभूषण। उ०—शीश सचिक्कन केश हो विच श्रीमत सँवारि।—सूर (शब्द०)। २ स्त्रियो के सिर के बीच की माँग।

श्रीमत[2]—वि० १. श्रीमान्। धनवान्। धनाढ्य। धनी। २ सुंदर। सौंदर्यशाली।

श्रीमकुट—सज्ञा पु० [स०] सोना। स्वर्ण (को०)।

श्रीमत्[1]—सज्ञा पु० [स०] १ तिल पुष्प। २ पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। ३ विष्णु का एक नाम। ४ शिव का एक नाम। ५ कुवेर। ६ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ७ हल्दी का पौधा। ८ शुक। सुग्गा (को०)। ९ प्रजनन कराने के लिये रखा हुआ वृष (को०)। १० पुरुष एव ग्रथादि के नाम के आदि मे प्रयुक्त शब्द।

श्रीमत्[2]—वि० १ जिसके पास बहुत अधिक धन हो। धनवान्। अमीर। २ जिसमे श्री या शोभा हो। ३. सुदर। खूबसूरत। ४ प्रसिद्ध। ख्यात। आदरणीय (को०)।

श्रीमती—सज्ञा स्त्री० [स०] १. 'श्रीमान्' का स्त्रीलिंग वाचक शब्द। स्त्रियो के लिये आदरसूचक शब्द। जैसे,—श्रीमती सुभद्रा देवी। २ लक्ष्मी। ३ राधा का एक नाम। ४ मुडिका। मुडी। ५ पत्नी (को०)।

श्रीमत्कुभ—सज्ञा पु० [स० श्रीमत्कुम्भ] सोना।

श्रीमत्ता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ 'श्रीमत्' या 'श्रीमान्' होने का भाव या धर्म। २ सपन्नता। अमीरी।

श्रीमद—सज्ञा पुं० [स०] धनमद। सपत्ति का गर्व। उ०—(क) श्रीमद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि। मृगलोचनि के नैनसर को अस लाग न जाहि।—मानस, ७।७०। (ख) ऐ परि यह श्रीमद है जैसो। बड अनर्थकर अवर न ऐसो।—नद० ग्र०, पृ० २५२।

श्रीमय—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

श्रीमलापहा—सज्ञा स्त्री० [स०] तमाखू। तमाकू।

श्रीमस्तक—सज्ञा पु० [स०] १ लहसुन। २ लाल आलू।

श्रीमहिमा—सज्ञा पुं० [स० श्रीमहिमन्] शिव। महादेव।

श्रीमान्[1]—वि० [स० श्रीमत्] १ लक्ष्मीवान्। धनवान्। अमीर। २ शोभायुक्त। शोभावान्। ३ सुदर। ४ यशस्वी। प्रसिद्ध (को०)। ५ प्रसन्न। भाग्यशाली (को०)।

श्रीमान्[2]—सज्ञा पुं० १. तिल पुष्पी। २ पीपल। अश्वत्थ वृक्ष। ३ हल्दी। हरिद्रा। ४ ऋषभक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ५ विष्णु। ६ शिव। ७ कुवेर। ८ सुग्गा। शुक (को०)। ९ साँड (को०)।

श्रीमान—सज्ञा पु० [स० श्रीमत्] आदरसूचक शब्द जो नाम के आदि मे रखा जाता है। उ०—जय जय जय श्रीमान महावपु जय जय जगत अधार।—सूर (शब्द०)।

श्रीमाल[1]—सज्ञा पु० [देश०] वश्यो की एक जाति।

श्रीमाल[2]—सज्ञा स्त्री० [स० श्री+माला] गले मे पहनने का एक आभूषण। कठश्री। उ०—चिबुक तर कठ श्रीमाल मोतीन छवि कुच उचनि हेम गिरि अतिहि लाजै।—सूर (शब्द०)।

श्रीमुख—सज्ञा पु० [स०] १ शोभित या सुदर मुख। उ०—आगम कल्प रमण तुव ह्वै है श्रीमुख कही बखान।—सूर (शब्द०)। २ बृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से सातवाँ सवत्सर। ३. विष्णु का मुख, वेद। ४ सूर्य। उ०—व्योम मे मुनि देखिए अति लाल श्रीमुख साजही।—केशव (शब्द०)। ५. वह पत्र लेख आदि जिसके प्रारभ मे स्वस्तिवाचक शब्द श्री लिखा हुआ हो।

श्रीमुद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] वैष्णवों का तिलक जो मस्तक पर लगाया जाता है।

श्रीमूर्ति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ विष्णु की मूर्ति। २ लक्ष्मी की प्रतिमा। प्रतिमा। मूर्ति (को०)।

श्रीवृक्षक—सज्ञा पु० [स०] १. घोडे की छाती पर की एक भँवरी जो शुभ मानी जाती है। २ एक व्रत का नाम।

श्रीवृद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बोधिद्रुम पर की एक देवी। (ललित-विस्तर)। २ समृद्धि। वृद्धि। सपन्नता। उ०—अत्यत प्रसन्नता का अवसर है कि इधर हमारी भाषा और हमारे साहित्य की उत्तरोत्तर श्रीवृद्धि होती जा रही है —रस क० (पा०), पृ० १।

श्रीवेष्ट, श्रीवेष्टक—सज्ञा पु० [स०] १ सरल द्रव। गधाबिरोजा। २ तारपीन का तेल। सरल वृक्ष।

श्रीवैष्णव—सज्ञा पु० [स०] रामानुज के अनुयायी वैष्णव। वैष्णवो का एक सप्रदाय।

श्रीश—सज्ञा पु० [स०] विष्णु।

श्रीसज्ञ—सज्ञा पु० [स०] लौंग। लवग।

श्रीसपदा—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीसम्पदा] ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

श्रीसभूता—सज्ञा स्त्री० [स० श्रीसम्भूता] ज्योतिष मे कर्म मास की छठी रात्रि।

श्रीसदा—सज्ञा स्त्री० [स०] रजनी। निशि। रात्रि। उ०—निसि श्रीसदा विभावरी, रात्रि त्रिजामा सोय।—अनेकार्थ (शब्द०)।

विशेष—इस अर्थ मे यह शब्द सस्कृत कोशो मे नहीं मिलता।

श्रीसमाध—सज्ञा पु० [स०] एक राग जो श्री, शुद्ध, मालश्री, भीम पलाश्री और टक को मिलाकर बनाया जाता है।

श्रीसहोदर—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा। (चद्रमा और लक्ष्मी दोनो समुद्र से उत्पन्न हैं)।

श्रीसिद्धि—सज्ञा स्त्री० [स०] ज्योतिष के अनुसार सोलहवाँ योग [को०]।

श्रीसूक्त—सज्ञा पु० [स०] ऋग्वेदोक्त एक सूक्त का नाम [को०]।

श्रीहट्ट—सज्ञा पु० [स०] एक नगर का नाम। सिलहट।

श्रीहत—वि० [स०] १ शोभारहित। २ निस्तेज। निष्प्रभ। प्रभाहीन। उ०—(क) नमित सीस सोचहिं सलज्ज सब श्रीहत सरीर।—तुलसी (शब्द०)। (ख) वे शेर हो गए आज रण भए मे श्रीहत खडित।—अपरा, पृ० ४७।

श्रीहरि—सज्ञा पुं० [स०] विष्णु [को०]।

श्रीहर्ष—सज्ञा पु० [स०] १ नैषध काव्य के रचयिता सस्कृत के प्रसिद्ध पडित और कवि जो कान्यकुब्ज के गहडवार राजा के आश्रित थे। २ रत्नावली, नागानद और प्रियदर्शिका नाटको के रचयिता जो संभवत कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।

श्रीहस्तिनी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ हस्तिशुडी। नागदती। २. सूर्य-मुखी का पौधा।

श्रुग—सज्ञा पु० [सं० स्वर्ग] दे० 'स्वर्ग'। उ०—सुवर सूर सामत गुन, श्रुग मत्त मति भोग।—पृ० रा०, २५।६६२।

श्रुग्वारु—सज्ञा पुं० [स०] विष्कत। कटाई। फज वृक्ष।

श्रुघ्निका—सज्ञा स्त्री० [सं०] मज्जीखार।

श्रुतवर—सज्ञा पु० [स० श्रुतन्वर] वास्तुविद्या में एक प्रकार का मडप।

श्रुत—वि० [स०] १ सुना हुआ। जो श्रवणगोचर हुआ हो। २. जिस परपरा से सुनते आते हो। ३ ज्ञात। प्रसिद्ध। ख्यात। ४ सीखा हुआ। समझा हुआ (को०)। ५ प्रतिज्ञात।

श्रुत[1]—सज्ञा पुं० [स०] १ सुनने का विषय। श्रुतिविषय शब्दादि। २ वेद। ३. विद्या। ४ सुनने की क्रिया [को०]।

श्रुतकाम—वि० [स०] वेदादि पवित्र ज्ञान का इच्छुक।

श्रुतकीर्ति[1]—वि० [स०] जिसकी कीर्त्ति प्रसिद्ध हो। कीर्तियुक्त।

श्रुतकीर्ति[2]—सज्ञा पुं० १ अर्जुन के एक पुत्र का नाम। २. उदार चरित व्यक्ति (को०)। ३ सत। ऋषि (को०)।

श्रुतकीर्ति[3]—सज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।

श्रुतकेवली—सज्ञा पु० [स० श्रुतकेवलिन्] एक प्रकार के अर्हत् जो छह् कहे गए हैं। (जैन)।

श्रुतदेवी—सज्ञा स्त्री० [स०] सरस्वती।

श्रुतधर[1]—सज्ञा पु० [स०] १. कान। २. पुराणानुसार शाल्मलि द्वीप के ब्राह्मणो की सज्ञा।

श्रुतधर[2]—वि० सुनी हुई बात का स्मरण रखनेवाला [को०]।

श्रुतनिगदी—वि० [स० श्रुतनिगदिन्] जो एक बार सुने हुए पद्य आदि को ज्यो का त्यो कह सके।

श्रुतनिष्क्रय—सज्ञा पुं० [स०] शिक्षा प्राप्त करने के बदले दिया जाने-वाला धन। शिक्षा शुल्क। (अ० ट्यूशन फीस)।

श्रुतपूर्व—वि० [स०] जो पहले सुना गया हो। जानाबूझा।

श्रुतर्षि—सज्ञा पुं० [स०] ऋषि विशेष [को०]।

श्रुतवास—वि० [स० श्रुत+वास] वेदज्ञ। विद्वान्। उ०—सिद्धि श्री श्रीनिवास, पास, श्रुतवास सहायक।—नद० ग्र०, पृ० २०५।

श्रुतविज्ञ—वि० [स०] वेदज्ञ। वेद शास्त्र का पडित [को०]।

श्रुतवित्त—वि० [स०] वैदिक। वेदज्ञ। श्रुताढ्य [को०]।

श्रुतवृद्ध—सज्ञा पुं० [स०] विद्वान्।

श्रुतशील[1]—वि० [स०] विद्वान् और सदाचारी।

श्रुतशील[2]—सज्ञा पुं० विद्या और सदाचार (मनु०)।

श्रुतश्रवा—सज्ञा पुं० [स० श्रुत श्रवस्] शिशुपाल के पिता का नाम [को०]।

श्रुतश्रवानुज—सज्ञा पु० [स०] शनिग्रह [को०]।

श्रुतश्रेणी—सज्ञा स्त्री० [सं०] १, मूषाकानी। २ नदी [को०]।

श्रुता—स० स्त्री० [सं० श्रुत] ख्यात। प्रसिद्ध। श्रुत। उ०—वह देव निम्नगा, स्वर्गगा, वह सगर पुत्र तारिणी, श्रुता।—ग्राम्या, पृ० ४२।

श्रुतादान—सज्ञा पुं० [सं०] ब्रह्मवाद [को०]।

श्रेणीभुक्त—वि० [स०] जो श्रेणी या पंक्ति मे कर लिया गया हो। श्रेणी मे आया या मिला हुआ [को०]।

श्रेणीसंघर्ष—सज्ञा पु० [स० श्रेणी+सङ्घर्ष] समानधर्मियो के एक वर्ग या श्रेणी का दूसरे से सघर्ष वर्गसघर्ष। (अ० क्लास वार)। उ०—वे लोग सुधारवादी ढग के विरोधी थे और श्रेणीसघर्ष के द्वारा श्रमजीवियो की अवस्था को सुधारना चाहते थे।—मा० वि०, पृ० ७२।

श्रेणीहित—सज्ञा पुं० [स०] वर्ग का हित। वर्गीय स्वार्थ। (अ० क्लास इटेरेस्ट)। उ०—मजदूरो के दृष्टिकोण को—उनके श्रेणीहित के साधनों का—न अपना सके।—'आज', पृ० ३, (३।१०।५१)।

श्रेय[1]—वि० [स० श्रेयस्] [वि० स्त्री० श्रेयसी] १ अधिक अच्छा। बेहतर। २ श्रेष्ठ। उत्तम। बहुत अच्छा। प्रशस्त। ३ मगलदायक। शुभ। कल्याणकारी। ४. यश देनेवाला। कीर्तिकर। ५ अधिक सौभाग्यशाली (को०)। ६ अत्यत प्रिय। प्रियतर (को०)। ७ उपयुक्त (को०)।

श्रेय[2] सज्ञा पु० १ अच्छापन। २ भलाई। बेहतरी। कल्याण। मगल। ३ धर्म। पुण्य। सदाचार। ४. एक साम का नाम। ५ ज्योतिष मे दूसरा मुहूर्त्त। ६ वर्त्तमान अवसर्पिणी के ग्यारहवें अर्हत्। (जैन)। ७ मुक्ति। मोक्ष (को०)। ८ शुभ अवसर (को०)। ९ सुख (को०)।

श्रेयसी[1]—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ हरीतकी। हर्रे। २ पाठा। पाठी। ३ गज पीपल। ४ रास्ना। ५ प्रियगु।

श्रेयसी[2]—वि० स्त्री० कल्याणमयी। श्रेययुक्ता [को०]।

श्रेयस्कर—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्रेयस्करी] कल्याण करनेवाला। शुभदायक।

श्रेयस्त्व—सज्ञा पुं० [स०] उत्तमता। श्रेष्ठता [को०]।

श्रेयासनाथ—सज्ञा पु० [स०] वर्त्तमान अवसर्पिणी के ग्यारहवें अर्हत् या तीर्थंकर (जैन)।

श्रेष्ठ[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्रेष्ठा] १ सर्वोत्तम। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा। २ मुख्य। प्रधान। प्रथम। ३. पूज्य। बडा। ४ वृद्ध। ज्येष्ठ। ५ कल्याण भाजन। ६ प्रियतम। अत्यत प्रिय (को०)।

श्रेष्ठ[2]—सज्ञा पुं० १. कुबेर। २. विष्णु। ३ द्विज। ब्राह्मण। ४ राजा। नृप (को०)। ५ गोदुग्ध। गाय का दूध (को०)। ६ ताँबा (को०)। ७ शिव। महादेव (को०)।

श्रेष्ठकाष्ठ—सज्ञा पु० [स०] १ सागौन। सागवान का पेड। २ घर मे लगा प्रधान स्तभ।

श्रेष्ठतम—वि० [स०] सबसे श्रेष्ठ। सबसे बडा या ज्येष्ठ। सर्वोत्तम।

श्रेष्ठता—सज्ञा स्त्री० [स०] १ उत्तमता। २ प्रधानता। गुरुता। बडाई। बडप्पन।

श्रेष्ठवाक्—वि० [स० श्रेष्ठवाच्] वाक्पटु। मुखर। श्रेष्ठ वक्ता [को०]।

श्रेष्ठवेधिका—सज्ञा स्त्री० [स०] कस्तूरी। मृगमद [को०]।

श्रेष्ठा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ बहुत उत्तम स्त्री। २ स्थल कमल। ३. मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ४ त्रिफला।

श्रेष्ठाम्ल—सज्ञा पुं० [स०] इमली [को०]।

श्रेष्ठाश्रम—सज्ञा पु० [स०] १ गृहस्थाश्रम। २ गृहस्थ [को०]।

श्रेष्ठिकन्या—सज्ञा स्त्री० [सं०] व्यवसायी की पुत्री। सेठ महाजन की कन्या। उ०—ववराओ मत श्रेष्ठिकन्ये।—स्कद०, पृ० ८४।

श्रेष्ठिचत्वर—सज्ञा पुं० [स०] नगर का वह भाग जहाँ बडे बडे व्यापारी रहते हैं [को०]।

श्रेष्ठी—सज्ञा पु० [स० श्रेष्ठिन्] १ व्यापारियो या वणिको का मुखिया। प्रतिष्ठित व्यवसायी। महाजन। सेठ। २ बडा व्यापारी। श्रेष्ठ व्यापारी।—हिंदु० सभ्यता, पृ० ७८।

श्रेष्ठ्य—सज्ञा पुं० [स०] सर्वोत्कृष्टता। सबसे श्रेष्ठ होने का भाव [को०]।

श्रोण[1]—वि० [स०] पगु। खंज।

श्रोण[2]—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का रोग [को०]।

श्रोण[3]—सज्ञा पुं० [स० शोण] दे० 'शोण'। उ०—श्रोण की सरिता दुरत अनत रूप सुनत।—केशव (शब्द०)।

श्रोणा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ काँजी। भात का मांड। २ श्रवण नक्षत्र।

श्रोणि—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कटि। कमर। २. नितब। चूतड। ३ यज्ञ की वेदी का किनारा। ४ पथ। मार्ग।

यौ०—श्रोणितट=नितब की उतार या ढाल। श्रोणिफलक, श्रोणिफलक=बडा नितंब। कटिप्रदेश। श्रोणिबिंब=(१) कटिसूत्र। (२) गोलाकार नितब। श्रोणिसूत्र।

श्रोणिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्रोणि'।

श्रोणित—सज्ञा पुं० [स० शोणित] दे० 'शोणित'।

श्रोणिसूत्र—सज्ञा पुं० [स०] १. करधनी। मेखला। खड्गबधन का सूत्र परतला। तलवार का पट्टा [को०]।

श्रोणी—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कटि। कमर। २ चूतड। नितब। ३ मध्य भाग। कटि प्रदेश। ४ पथ। मार्ग (को०)।

श्रोत.आपत्ति—सज्ञा स्त्री० [सं०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार मुक्ति या निर्वाणसाधना की प्रथम अवस्था जिसमे बधन ढीले होने लगते हैं।

विशेष—बौद्ध शास्त्र मे पाँच प्रतिबंध माने गए हैं—आलस्य, हिंसा, काम, विचिकित्सा और मोह। श्रोत.आपन्न को ये पांचो बधन छोडते तो नही पर क्रमश ढीले हते जाते हैं। इस अवस्था को प्राप्त साधक को केवल सात बार और जन्म लेना पडता है। इस अवस्था के उपरात 'सकृदागामी' की अवस्था है जिसमे प्रथम तीन बधन सर्वथा छूट जाते हैं और एक ही जन्म और लेना रह जाता है।

श्रोत आपन्न—वि० [स०स्रोतस्+आपन्न] बौद्ध शास्त्र के अनुसार मुक्ति या निर्वाण की साधना मे प्रथम अवस्था को प्राप्त जिसमे क्रमश बधन ढीले होने लगते हैं।

श्रोत—संज्ञा पु० [स० श्रोतस्] १ श्रवणेंद्रिय। कान। २ हाथी की सूँड (को०)। ३. इंद्रिय। ज्ञानेंद्रिय (को०)। ४ धारा। प्रवाह (को०)।

श्रोतक—वि० [स०] १ सुनने योग्य। श्रवणीय। २. जिससे सुनना हो।

श्रोतव्य—वि० [स०] १ सुनने के योग्य। उ०—श्रोत्र सु अध्यातम प्रगट श्रोतव्य अधिभूत। दिशा तत्र है देवता यह त्रिपुटी इहि सूत —सुंदर ग्र०, भा० १, पृ० ६८।

श्रोता—संज्ञा पु० [स० श्रोतृ] १ सुननेवाला। श्रवणकर्ता। २. कथा या उपदेश सुननेवाला। शिक्षार्थी।

श्रोत्र—संज्ञा पुं० [स०] १. श्रवणेंद्रिय। कान। २ वेदज्ञान। वेद में निपुणता। वेद संबंधी प्रवीणता। ३ वेद। श्रुति (को०)।

यौ०—श्रोत्रपदवी = श्रवणगोचरता। श्रवण की सीमा। श्रोत्रपदानुग = श्रुतिप्रिय। श्रोत्रपालि = कान की लोर या लालरी। श्रोत्रपुट = (१) कर्णपुट। (२) कान की लालरी। श्रोत्रपेय = कानों द्वारा पान करने योग्य। सुननेयोग्य। श्रवणीय। श्रोत्रमार्ग = कर्ण। कान श्रोत्रमूल = कान की जड़। कर्णमूल। श्रोत्रवर्त्म = कर्ण। कान। श्रोत्रवादी = आज्ञापालक। आज्ञाकारी। सुनने के साथ ही आज्ञापालन करनेवाला। श्रोत्रसुख = कानों को सुखद। श्रवणमधुर। अतिमधुर। श्रोत्रहीन = कर्णरहित। श्रवणशक्ति विहीन। बधिर। बहरा।

श्रोत्रकांता—संज्ञा स्त्री० [स० श्रोत्रकान्ता] एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

श्रोत्रिय[1]—संज्ञा पुं० [स०] १. वह जो वेद वेदांग में पारंगत हो। वेदज्ञ। २. ब्राह्मणों का एक वर्तमान भेद। (को०)।

श्रोत्रिय[2]—वि० १ वेदज्ञ। वेद में पारंगत। २ विधेय। अनुशासनीय। वश्य। ३. सभ्य। शिष्ट। सुसंस्कृत (को०)।

श्रोत्रियता—संज्ञा स्त्री० [स०] श्रोत्रिय होने का भाव या धर्म।

श्रोत्रियत्व—संज्ञा पु० [स०] श्रोत्रियता (को०)।

श्रोत्री - संज्ञा पु० [स० श्रोत्रिय] दे० 'श्रोत्रिय'।

श्रोन—संज्ञा पु० [सं० शोण, हिं० श्रोण] दे० 'शोण'। उ०—लिए नृकपाल नृदेह कराल। करे नर मुंडनि की उर माल। पिए नर श्रोन मिल्यो मदिरा सो। कपालि कु देखिए भीम प्रभा सो।—केशव (शब्द०)।

श्रोनित—संज्ञा पुं० [सं० शोणित] दे० 'शोणित'। उ०—श्रोनित श्रवत लसै तनु कैसे। परम प्रफुल्लित किंसुक जैसे।—मधुसूदन (शब्द०)।

श्रौत[1]—वि० [सं०] [वि० स्त्री० श्रौती] १. श्रवण संबंधी। कर्ण संबंधी। २ श्रुति या वेद संबंधी। ३ श्रुतिविहित। वेद प्रतिपादित। जो वेद के अनुसार हो। ४ यज्ञ संबंधी। जैसे,—श्रौतकर्म, श्रौत सूत्र। ५ श्रोत्र ग्राह्य। जो अस्फुट न हो (को०)।

श्रौत—संज्ञा पुं० १ तीनों प्रकार की अग्नि। गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण नाम की अग्नि। २. वेद प्रतिपादित धर्म। ३. यज्ञाग्नि का रक्षण वा भरण (को०)।

यौ०—श्रौतकर्म = दे० 'श्रौतकर्म'। श्रौतजन्म = यज्ञादि में संस्कार। श्रौतजन्म। श्रौतमार्ग = (१) श्रुतिविहित मार्ग। (२) श्रवण। कर्णपथ। श्रौतपथ।

श्रौतश्रव - संज्ञा पुं० [सं०] शिशुपाल का एक नाम।

श्रौतसूत्र—संज्ञा पुं० [सं०] यज्ञादि के विधानवाले सूत्र। कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमें पौर्णमास्येष्टि से लेकर अश्वमेध पर्यंत यज्ञों का विधान है।

विशेष—दो प्रकार के वैदिक सूत्रग्रंथ मिलते हैं—श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र। श्रौत सूत्रों में यज्ञों का विधान है। सूत्रकार कई हैं। जैसे,—आश्वलायन, आपस्तंब, कात्यायन, द्राह्यायण।

श्रौतहोम—संज्ञा पु० [सं०] सामवेद का एक परिशिष्ट।

श्रौत्र[1]—वि० [स०] श्रवणेंद्रिय संबंधी। श्रवण संबंधी।

श्रौत्र[2]—संज्ञा पुं० १ वेद में दक्षता। वेदज्ञता। वैदिक वाङ्मय या कार्यों में पारंगत होना। २. श्रवण। कर्ण (को०)।

श्रौत्रकर्म—संज्ञा पुं० [स०] वेदविहित यागादि कर्म। यज्ञ।

श्रौत्रजन्म—संज्ञा पुं० [स० श्रौत्रजन्मन्] द्विजों का उपनयन संस्कार जिसमें वे वेद के अधिकारी होकर द्वितीय जन्म प्राप्त करते हैं।

श्रौन—संज्ञा पुं० [स० श्रवण] दे० 'श्रवण'। उ०—पीतम श्रौन समीप सदा बजौ यों कहकै पहिल पहिरायो।—गतिराम (शब्द०)।

श्लाघ्य—संज्ञा पु० [स०] १. कमल। पद्म। २. गवाक्षिरोजा। सरल द्रव्य।

श्लक्ष्ण[1]—वि० [सं०] १. कोमल। मृदु। सौम्य। जैसे, शब्द। २. चिकना, चमकदार। ३ स्वच्छ। पतला। सूक्ष्म। ४ सुंदर। लावण्यमय। ५ सच्चा। ईमानदार। निश्छल। खरा (को०)।

यौ०—श्लक्ष्णत्वक् = (१) वृक्ष की चिकनी छाल या वल्कल। (२) अश्मंतक नामक वृक्ष। कचनार। श्लक्ष्णपत्रक = आबनूस या कोविदार। श्लक्ष्णपिष्ट = चूर महीन या चिकना पीसा हुआ। श्लक्ष्णवाक् = मधुर वचन। श्लक्ष्णवादी = मृदु या मधुर बोलनेवाला।

श्लक्ष्णक[1]—वि० [सं०] १. कोमल। चिकना। २ सुंदर (को०)।

श्लक्ष्णक[2]—संज्ञा पुं० सुपारी। पूगफल (को०)।

श्लथ—वि० [स०] १ शिथिल। ढीला। उ०—बीता उत्सव ज्यों चिह्न म्लान, छाया श्लथ।—तुलसी ग्र०, पृ० ५। २ मंद। धीमा। ३ दुर्बल। अशक्त। ४ गिरा हुआ। च्युत (को०)। ५. न बँधा हुआ। बिखरा हुआ। छूटा हुआ। जैसे, केश।

श्लथगात—वि० [स०] शिथिल शरीरवाला। उ०—श्लथगात, पुर में ज्यों रही म बद्ध हो।—अपरा, पृ० १८५।

श्लथबंधन—वि० [सं० श्लथबन्धन] जिसके बंधन ढीले हो गए हों।

श्लथांग—वि० [सं० श्लथाङ्ग] जिसके अंग शिथिल हों। श्लथगात।

श्लथोद्यम—वि० [सं०] चेष्टा या उद्यम को विश्राम देने या शिथिल करनेवाला (को०)।

श्लाघन[1]—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लाघित, श्लाघी, श्लाघनीय, श्लाघ्य] १ प्रशंसा करना। प्रशस्ति गान। २ खुशामद या चाटुकारिता। चापलूसी। ३ अपनी प्रशंसा करना। डींग हाँकना।

श्लाघन[2]—वि० अपनी प्रशंसा करनेवाला।

श्लाघनीय—वि० [सं०] १ प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लाघा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ प्रशंसा। तारीफ। २ स्तुति। बड़ाई। ३ खुशामद। चापलूसी। ४ इच्छा। चाह। उ०—अच्छा तो ज्ञात हुआ कि कदाचित् तुम्हारी श्लाघा है कि मैं तुमको इनसे भी नीचतर समझूँ।—अयोध्यासिंह (शब्द०)। ५ आज्ञा-पालन। सेवा। ६ आत्मप्रशंसा (को०)।

यौ०—श्लाघाविपर्यय=आत्म प्रशंसा या चापलूसी का अभाव।

श्लाघित—वि० [सं०] १ जिसकी तारीफ हुई हो। प्रशंसित। २. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ।

श्लाघी—वि० [सं० श्लाघिन्] १ सदर्प। साहंकार। मदोद्धत। २ अभिमानी। प्रगल्भ। धृष्ट। डींग हाँकनेवाला। ३ प्रख्यात। प्रसिद्ध (को०)।

श्लाघ्य—वि० [सं०] १. सराहने योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. श्रेष्ठ। अच्छा। ३ आदरणीय। श्रद्धेय (को०)।

श्लिकु—संज्ञा पुं० [सं०] १ लंपट। कामुक। २ सेवक। दास। ३ आश्रित। ४ नक्षत्र विद्या। फलित ज्योतिष (को०)।

श्लिक्यु—संज्ञा पुं० [सं०] १ कामुक। लंपट। २. आश्रित। दास। सेवक।

श्लिषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। संयुक्त होना। २. परिरंभण। आलिंगन।

श्लिष्ट—वि० [सं०] १ मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ। सटा हुआ। लगा हुआ। २ अच्छी तरह जमा हुआ। चिपका हुआ। खूब बैठा हुआ (वस्त्र आदि)। ३ आलिंगित। भेंटा हुआ। ४ (साहित्य में) श्लेषयुक्त। जिसके दोहरे अर्थ हों। ५ टिका हुआ। झुका हुआ (को०)।

श्लिष्ट रूपक—संज्ञा पुं० [सं०] रूपक अलंकार का एक भेद। जहाँ शब्दों द्वारा रूपक का विधान किया जाय। जैसे,—देखत ही सुबरन हीरा हरिबे का पश्यतोहर मनोहर ये लोचन तिहारे हैं।—भिखारी ग्र०, भाग २, पृ० १००।

श्लिष्टवर्त्म—संज्ञा पुं० [सं० श्लिष्टवर्त्मन्] एक नेत्र रोग, पलकों की बरौनियों का आपस में चिपक जाना (को०)।

श्लिष्टि[1]—संज्ञा स्त्री० [सं०] १. जोड़। मिलान। लगाव। २ आलिंगन। परिरंभण।

श्लिष्टि[2]—संज्ञा पुं० ध्रुव के एक पुत्र का नाम।

श्लिष्टोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] वह उक्ति कथन जो श्लेषयुक्त हो। द्व्यर्थक उक्ति।

श्लीपद—संज्ञा पुं० [सं०] टाँग फूलने का रोग। फीलपाव।

विशेष—इस रोग में प्रथम पैर, अंडकोष और जंघा की संधियों में पीड़ासहित और ज्वरयुक्त सूजन होकर पीछे से उतर आती है और पैर हाथी के पैर के समान मोटा हो जाता है। वैद्यक के अनुसार यह रोग हाथ, नाक, कान, आँख, लिंग और होठ में भी होता है। यह चार प्रकार का होता है, अर्थात् वातज, पित्तज, श्लेष्मज और सन्निपातज। एक वर्ष बाद यह रोग असाध्य हो जाता है।

यह रोग तालाब आदि का पुराना जल पीने, शीत देश में अधिक निवास करने तथा जिन स्थानों में सदा पुराना पानी जमा रहता है, वहाँ रहने से उत्पन्न होता है।

श्लीपदप्रभव—संज्ञा पुं० [सं०] आम का पेड़ (को०)।

श्लीपदारुह—संज्ञा पुं० [सं०] पुत्रजीव वृक्ष।

श्लीपदी—वि० [सं० श्लीपदिन्] जिसे श्लीपद रोग हो गया हो।

श्लील—वि० [सं०] १ उत्तम। नर्मोक्ति। श्रेष्ठ। २. जो अश्लील न हो। जो भद्दा न हो। भद्र या सभ्य समाज में स्त्री, पुरुष, बच्चे आदि सभी के बोलने, पढ़ने या दिखाए जाने योग्य। ३ भाग्यशाली। मंगलदायक। पुं० १० 'आल' (को०)।

श्लेष—संज्ञा पुं० [सं०] १ मिलना। जुड़ना। एक में सटने या लगने का भाव। २. संयोग। जोड़। मिलान। ३. आलिंगन। परिरंभण। भेंटना। ४ साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिए जाते हैं। दो अर्थवाले शब्दों का प्रयोग। ५. मैथुन। संभोग (को०)। ६ दाह। जलन (को०)। ७. व्याकरण में वृद्धि या आगम (को०)।

श्लेषक[1]—वि० [सं०] मिलानेवाला। जोड़नेवाला।

श्लेषक[2]—संज्ञा पुं० १ दे० 'श्लेष'। उ०—केशव दशम प्रभाव में, श्लेषक कवित विलास। वर्णन के विभु प्रगट ही, वरषा शरद प्रकाश।—केशव (शब्द०)। २. कफ का एक भेद।

विशेष—कफ के अवलंबक, क्लेदक, बोधक, तर्पक और श्लेषक पाँच भेद हैं।

श्लेषण—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। एक में सटाना। संयुक्त करना। २ परिरंभण। आलिंगन।

श्लेषभित्तिक—वि० [सं०] जो श्लेष पर आधारित हो (को०)।

श्लेषा—संज्ञा स्त्री० [सं०] आलिंगन। भेंटना।

श्लेषार्थ—संज्ञा पुं० [सं०] अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग (को०)।

श्लेषी—वि० [सं० श्लेषिन्] श्लेषण करनेवाला। आलिंगन करने वाला (को०)।

श्लेषोक्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] श्लेषयुक्त कथन। द्व्यर्थक वचन। श्लिष्टोक्ति (को०)।

श्लेषोपमा—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं। उ०—सगुन, सरस, सब अंग रागरंजित है

सुनहु सुभाग । बडे भाग बाग पाइए । चातुरी की शाला मानि आतुर ह्वै, नदलाल । चपे की माला वाला उर उरझाइए । —केशव (शब्द०) । यहाँ सगुन (गुणयुक्त, सूत्रयुक्त), सरस आदि शब्द बाला और चपकमाला दोनो मे लग जाते हैं ।

श्लेष्म, श्लेष्मक—सज्ञा पु० [स०] श्लेष्मा ।

श्लेष्म कटाहक—सज्ञा पु० [स०] निष्ठीवन का पात्र । पीकदान [को०] ।

श्लेष्मघन—सज्ञा पु० [स०] १. केतकी । २ चमेली या जूही ।

श्लेष्मघ्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] १ त्रिपुर मल्लिका । २. मल्लिका । मोतिया का एक भेद । ३. केतकी । केवडा । ४ महाज्योतिष्मती लता । ५ तीन कडवे मसाले । त्रिकटु ।

श्लेष्मघ्नी—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'श्लेष्मघ्ना' ।

श्लेष्मज अर्श—सज्ञा पु० [स०] श्लेष्मा (कफ) से उत्पन्न बवासीर रोग ।—माधव०, पृ० ५४ ।

श्लेष्मण—वि० [स०] १. कफवाला । कफ प्रकृतिवाला । २. कफ सबंधी । श्लेष्मल ।

श्लेष्मणा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक पौधा ।

श्लेष्मधातु—सज्ञा पु० [स०] कफ प्रकृति । कफ स्वभाव [को०] ।

श्लेष्मभू—सज्ञा पु० [स०] फुफ्फुस [को०] ।

श्लेष्मल[1]—सज्ञा पु० [स०] लिसोडा । बहुवार वृक्ष ।

श्लेष्मल[2]—वि० कफयुक्त । श्लेष्मयुक्त । श्लेष्मण । कफ सबधी ।

श्लेष्महृ—सज्ञा पु० [स०] श्लेष्मा को हरनेवाला । कायफल । कटफल ।

श्लेष्महर—वि० [स०] श्लेष्मा का हरण करनेवाला । बलगम दूर करनेवाला [को०] ।

श्लेष्मातक—सज्ञा पु० [स० श्लेष्मान्तक] लिसोडा । लभेरा । बहुवार वृक्ष ।

श्लेष्मा—सज्ञा पु० [स० श्लेष्मन्] १ वैद्यक के अनुसार शरीर की तीन धातुओ या विकारो मे से एक । कफ । बलगम । २. रस्सी । बधन । बाँधने की रस्सी । ३. लिसोडे का फल । लभेरा ।

श्लेष्मात, श्लेष्मातक—सज्ञा पु० [स०] लिसोडा । लभेरा ।

श्लेष्मातक वन—सज्ञा पु० [स०] गोकर्णतीर्थ के पास का जगल जिसमे शिव एक बारहसिंघे के रूप मे छिपे थे । (पुराण) ।

श्लेष्मातिसार—सज्ञा पु० [स०] कफ के विकार से होनेवाला सग्रहणी या पेचिश का रोग [को०] ।

श्लेष्मिक—वि० [स०] [वि० स्त्री० श्लेष्मिकी] १ कफ संबधी । श्लेष्मल । २. कफ बढानेवाला । बलगम पैदा करनेवाला । कफकारक [को०] ।

श्लेष्मी—सज्ञा पु० [स० श्लेष्मिन्] १. गधा बिरोजा । २ लोबान ।

श्लेष्मोज—सज्ञा पु० [स०] कफप्रकृति । दे० 'श्लेष्मधातु' [को०] ।

श्लेष्मोदर—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का उदर रोग । उ०—श्लेष्मोदर रोग मे हाथ पैर आदि अगो मे शून्यता होय और जकड जाँय ।—माधव०, पृ० १६४ ।

विशेष—इसमे कफ के विकार के कारण हाथ, पैर आदि में शून्यता आ जाती है । पेट चिकना, सफेद, कडा तथा ठढा मालूम पडने लगता है ।

श्लैष्मिक—वि० [स०] श्लेष्म संबधी । कफवाला ।

श्लोक—सज्ञा पुं० [स०] १ शब्द । ध्वनि । आवाज । २ पुकार । आह्वान । ३ स्तोत्र । स्तुति । ४ पद्यबद्ध कीर्तिगान या प्रशसा । ५ स्तवन या प्रशसा का विषय वा आस्पद (को०) । ६ नाम । कीर्ति । यश । जैसे,—पुण्यश्लोक । ७ सस्कृत का सबसे अधिक व्यवहृत छद । अनुष्टुभ छद । ८. सस्कृत का कोई पद्य । ९ किंवदती । कहावत (को०) । १०. इष्टमित्र (को०) ।

यौ०—श्लोककार = कवि । छदबद्ध कविता करनेवाला । श्लोकनिबद्ध, श्लोकबद्ध = छदबद्ध । पद्यबद्ध । श्लोकभू = ध्वनि या शब्द से उत्पन्न होनेवाला ।

श्लोकत्व—सज्ञा पुं० [स०] श्लोक होने का भाव या धर्म ।

श्लोक्य—वि० [स०] स्तुत्य । प्रशस्य [को०] ।

श्लोण—सज्ञा पु० [स०] लँगडा मनुष्य [को०] ।

श्व—अव्य० [स० श्वस्] आनेवाले दूसरे दिन । कल । २ (समास मे) भविष्यत् काल मे (को०) ।

यौ०—श्व.श्रेयस = (१) प्रसन्न । समृद्ध । (२) प्रसन्नता । समृद्धि । (३) ब्रह्म या परमात्मा ।

श्वकटक—सज्ञा पु० [स० श्वकण्टक] व्रात्य और शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न पुरुष (स्मृति) ।

श्वक—सज्ञा पु० [स०] भेडिया । वृक ।

श्वक्रीडी—सज्ञा पुं० [स० श्वक्रीडिन्] करतबी या खिलाडी कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति [को०] ।

श्वगण—सज्ञा पु० [स०] कुत्ते का झुड [को०] ।

श्वगणिक—सज्ञा पु० [स०] १ शिकारी । २ कुत्ता पालनेवाला व्यक्ति [को०] ।

श्वग्रह—सज्ञा पुं० [स०] १ बालग्रह या रोग । २ बच्चो को कष्ट देनेवाला एक प्रेत । वह जो कुत्तो को पकडता है (को०) ।

श्वचिल्ली—सज्ञा पु० [स०] कुकुरबदा ।

श्वज पु०—अव्य० [स० स्वयम्] स्वयम् । खुद । उ० —बिन पत्त मत्त जनु डड डक, रभ धंभ कर कटिय श्वज ।—पृ० रा०, ५।५१ ।

श्वजीविका—सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्तो की जीविका । दासता । गुलामी [को०] ।

श्वदष्ट्रक—सज्ञा पुं० [स०] १ कुत्ते का दाँत । २ गोखरू ।

श्वदंष्ट्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कुत्ते की दाढ । २ गोखरू ।

श्वदयित—सज्ञा पु० [स०] हड्डी जो कुत्तो को प्रिय है [को०] ।

श्वधूर्त—सज्ञा पुं० [स०] शृगाल । गीदड ।

श्वन्—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० शुनी] कुत्ता । कुक्कुर ।

विशेष—समास मे इस शब्द का पूर्वपद केवल 'श्व' रह जाता है । जैसे,—श्वकर्ण, श्वपच ।

श्वनर—संज्ञा पु० [सं०] नीच व्यक्ति। कमीना आदमी (को०)।

श्वनिश—संज्ञा पु० [सं०] वह रात्रि जिस दिन कुत्ते भोजन नहीं खाते। कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि। उ०—वर्तमान काल में भी यत्र तत्र इस प्रकार के कुत्ते सुने गए हैं जो उक्त तिथि को नहीं खाते। इस तिथि के लिये श्वनिश तथा श्वनिशा (२।४।५) शब्द प्रचलित थे।—संपूर्णा० अभि० ग्र०, पृ० २४८।

श्वनिशा—संज्ञा स्त्री० [सं०] दे० 'श्वनिश'।

श्वपच्, श्वपच—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० श्वपची, श्वपची] १ कुत्ते का मांस पकाकर खानेवाला। २ एक प्रकार का चांडाल। डोम।

विशेष—भिन्न भिन्न स्मृतियों में इसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न कही गई है। जैसे,—कहीं चांडाल और ब्राह्मणी से, कहीं निषाद और किराती से, कहीं क्षत्रिय और उग्र जाति की स्त्री से, कहीं अंबष्ठ और ब्राह्मणी से इत्यादि।

३ कुत्ते को खिलानेवाला (को०)। ४ वधिक। जल्लाद (को०)।

श्वपति—संज्ञा पु० [सं०] कुत्ते का मालिक (को०)।

श्वपद—संज्ञा पुं० [सं०] १ कुत्ते का पैर। २ कुत्ते के पदचिह्न का निशान (को०)।

विशेष—मनु ने इसे चोरों के सिर पर लगाने के लिये कहा है।

श्वपाक—संज्ञा पु० [सं०] [स्त्री० श्वपाकी] दे० 'श्वपच'। चांडाल।

श्वपामन—संज्ञा पुं० [सं०] पपरी नाम का पौधा जिसकी कड़वी जड़ रेचक होती है और औषध के काम में आती है। काकजंघा।

श्वपुच्छ—संज्ञा पुं० [सं०] १ वृश्चिक। बिच्छू। २ कुत्ते की पूँछ (को०)।

श्वपुच्छा—संज्ञा स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी। पिठवन।

श्वफल—संज्ञा पुं० [सं०] बिजौरा नीबू। बीजपूर वृक्ष।

श्वफल्क—संज्ञा पु० [सं०] यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।

श्वभीरु—संज्ञा पुं० [सं०] वह जो कुत्ते से डरता हो, शृगाल। गीदड़।

श्वभ्र—संज्ञा पु० [सं०] १ दरार। छेद। गड्ढा। २ एक नरक। ३ वसुदेव के एक पुत्र का नाम। ३ गुफा। कंदरा (को०)।

श्वभ्रित—वि० [सं०] छिद्रों से भरा हुआ (को०)।

श्वमुख—संज्ञा पु० [सं०] एक जंगली जाति।

श्वयथ—संज्ञा पु० [सं०] शोथ। सूजन।

श्वयथु—संज्ञा पु० [सं०] शोथ। सूजन।

श्वयीचि—संज्ञा पु० [सं०] चंद्रमा (को०)।

श्वयीची—संज्ञा स्त्री० [सं०] बीमारी। रोग (को०)।

श्वयूथ्य—संज्ञा पु० [सं०] कुत्तों का झुंड (को०)।

श्ववृत्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ नीच सेवा की वृत्ति। निकृष्ट नौकरी द्वारा निर्वाह। २ कुत्ते की सी जीवन वृत्ति (को०)।

श्वव्याघ्र—संज्ञा पु० [सं०] १ हिंस्र पशु। २ व्याघ्र। ३ चीता।

श्वहन्—संज्ञा पुं० [सं०] शिकारी (को०)।

श्वशुर—संज्ञा पु० [सं०] १ पति या पत्नी का पिता। ससुर। २. आदरणीय व्यक्ति (को०)।

श्वसुरक—संज्ञा पु० [सं०] ससुर (को०)।

श्वश्यर्य—संज्ञा पुं० [सं०] पति या पत्नी का भाई। देवर या साला।

श्वश्रू—संज्ञा स्त्री० [सं०] पति या पत्नी की माता। सास।

श्वसन—संज्ञा पु० [सं०] [वि० श्वसनीय, श्वसित] १ साँस लेना। दम लेना। २ हाँफना। ३ फूँकना। मुँह से हवा छोड़ना। ४. फूत्कार करना। फुफकारना। ५ लंबी साँस खींचना। आह भरना। ६ वायु देवता। पवन। ७ एक वसु का नाम। ८ मैनफल। मदनफल। ९ एक राक्षस का नाम जिसे इंद्र ने मारा था (को०)।

श्वसनरंध्र—संज्ञा पु० [सं० श्वसनरन्ध्र] नाक। नासिका (को०)।

श्वसनव्यापार—संज्ञा पुं० [सं० श्वसन+व्यापार] श्वास लेने और छोड़ने की क्रिया। उ०—श्वसन व्यापार, जीभ की क्रियाएँ, शुद्ध उच्चारण सुनने का अभ्यास आदि की सहायता भी लेनी चाहिए।—भा० शिक्षा, पृ० ४७।

श्वसनसमीरण—संज्ञा पुं० [सं०] साँस (को०)।

श्वसनाशन—संज्ञा पु० [सं०] वायु भक्षण करनेवाला, सर्प। साँप।

श्वसनेश्वर—संज्ञा पुं० [सं०] अर्जुन वृक्ष।

श्वसनोत्सुक—संज्ञा पुं० [सं०] साँप। सर्प।

श्वसनोर्मि—संज्ञा स्त्री० [सं०] हवा का झोंका (को०)।

श्वसान—वि० [सं०] साँस लेता हुआ। जीवित (को०)।

श्वसित'—वि० [सं०] १ श्वासमय। श्वाससयुक्त। उ०—चित्रित से उपवन में शत रंगों में आतप छाया, सुरभि श्वसित मारुत, पुलकित कुसुमों की कंपित काया।—ग्राम्या, पृ० ७६। २ साँस लेनेवाला। जीवित (को०)। ३ आह भरनेवाला (को०)।

श्वसित²—संज्ञा पुं० [सं०] १ साँस। २. ऊँची साँस लेना। आह भरना (को०)।

श्वसुत, श्वसुन—संज्ञा पु० [सं०] कुकुरौंधा। कुकरौंधा नामक पौधा।

श्वस्तन'—वि० [सं०] आनेवाले दिन का। कल का।

श्वस्तन²—संज्ञा पुं० कल का दिन। आनेवाला दूसरा दिन।

श्वस्तनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] कल का दिन। आनेवाला दूसरा दिन।

श्वस्त्य—वि०, संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्वस्तन' (को०)।

श्वहा—संज्ञा पुं० [सं० श्वहन्] आखेटक। शिकारी (को०)।

श्वास्थि—संज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार का रत्न या बहुमूल्य पत्थर जो काँसे, रूपे, शंख, कुमुद आदि के रंग का कहा गया है। (रत्नपरीक्षा)।

श्वा—संज्ञा पु० [सं० श्वन्] कुक्कुर। कुत्ता (को०)।

श्वाकर्ण—संज्ञा पु० [सं०] कुत्ते का कान (को०)।

श्वागणिक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'श्वगणिक' (को०)।

श्वाग्र—सज्ञा पुं० [स०] कुत्ते की पूँछ [को०]।

श्वाघ्निक—सज्ञा पु० [स०] १. शिकारी। २. कुत्ता पालनेवाला [को०]।

श्वाद—सज्ञा पुं० [स०] श्वानभक्षक। श्वपाक।

श्वान—सज्ञा पु० [स०] [स्त्री० श्वानी] १. कुत्ता। कुक्कुर। उ०—गोकुल चले प्रेम आतुर ह्वै खुलि गए कपट कपाट। सोए श्वान, पहरुआ सोए, सबै मुक्त भई बाट।—सूर (शब्द०)। २ दोहे का इक्कीसवाँ भेद। इसमे दो गुरु और ४४ लघु होते हैं। ३ छप्पय का पंद्रहवाँ भेद। इसमे ५६ गुरु, ४० लघु कुल ९६ वर्ण, १५२ मात्राएँ होती हैं।

श्वानचिल्लिका—सज्ञा स्त्री० [स०] बथुआ नामक शाक।

श्वाननिद्रा—सज्ञा स्त्री० [स०] ऐसी नीद जो थोडे खटके से भी चट खुल जाय। हलकी नींद। झपकी।

श्वानवैखरी—सज्ञा स्त्री० [स०] कुत्ते की गुर्राहट [को०]।

श्वानी—सज्ञा स्त्री० [स०] शुनी। कुतिया।

श्वान्नति—सज्ञा स्त्री० [स०] भारंगी। बमनेटी। ब्राह्मणयष्टिका।

श्वापद'—सज्ञा पुं० [स०] हिंसक पशु। व्याघ्र आदि।

श्वापद'—वि० खौफनाक। जगली। बर्बर [को०]।

श्वापुच्छ—सज्ञा पुं० [स०] कुत्ते की पूँछ।

श्वाचित्, श्वाविद्, श्वाविध्—सज्ञा पु० [स०] साही नामक जतु। शल्य।

श्वास—सज्ञा पु० [स०] १. नासिका के मार्ग से प्राणवायु के भीतर जाने और बाहर निकलने की क्रिया। प्राणियो का नाक से हवा खीचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। दम। उ०—तातो तातो श्वासन विनास्यो रूप होठन।—शकुतला, पृ० १०९।

क्रि० प्र०—लेना।—छोडना।—निकलना।—खीचना।——रोकना।

मुहा०—श्वास रहते = प्राण रहते। जीते जी। श्वास खीचना या चढाना = साँस रोके रहना। श्वास छूटना = मृत्यु होना।

२ व्यजनो के उच्चारण के प्रयत्न मे मुँह से हवा छूटना। ३ जल्दी जल्दी साँस लेना। हाँफना। ४. वायु। हवा (को०)। ५ निश्वास लेना। आह भरना (को०)। ६. एक रोग जिसमे साँस अधिक वेग से और जल्दी जल्दी चलती है। दम फूलने का रोग। दमा।

यो०—श्वासकास।

विशेष—आयुर्वेद मे श्वास रोग पाँच प्रकार का कहा गया है—महाश्वास, ऊर्ध्व श्वास, छिन्न श्वास, तमक श्वास और क्षुद्र श्वास। इनमे से प्रथम तीन असाध्य, चौथा कष्टसाध्य और पाँचवाँ साध्य कहा गया है।

श्वासकष्ट—सज्ञा पु० [स०] साँस लेने मे होनेवाला कष्ट। श्वास-कास।

श्वासकास—सज्ञा पुं० [स०] १ दमा और खाँसी। २ दमे की खाँसी। दमा।

श्वासकुठार—सज्ञा पु० [स०] श्वास रोग मे उपकारी एक रसौषध।

विशेष—इसे बनाने के लिये शुद्ध पारा, शुद्ध गधक की कजली, सिंगी मुहरा, चूना, सोहागा, मैनसिल, काली मिर्च, सोठ और पिप्पली के चूर्ण को अदरक के रस की एक पुट देकर सिद्ध करते हैं।

श्वासधारण—सज्ञा पुं० [स०] कात्यायन श्रौतसूत्र के अनुसार श्वास को रोक रखना। साँस रोकने की क्रिया।

श्वासप्रश्वास—सज्ञा पु० [स०] साँस लेने की क्रिया। श्वाँस की रेचक और पूरक क्रिया। साँस लेना और निकालना।

श्वासरोग—सज्ञा पुं० [स० श्वास + रोग] दे० 'श्वास-४'।—माधव०, पृ० ९४।

श्वासरोध—सज्ञा पु० [स०] १ साँस रोकना। साँस को बाहर निकलने से रोके रहना। २ दम घुटना। साँस भीतर न समाना।

श्वासहिक्का—सज्ञा स्त्री० [सं०] एक प्रकार की हिचकी [को०]।

श्वासहीन—वि० [स०] जो श्वासग्रहण की क्रिया से रहित हो। मृत। मुर्दा।

श्वासहेति—सज्ञा स्त्री० [स०] (दमा को हटानेवाली) निद्रा। नीद।

श्वासा ऊ—सज्ञा स्त्री० [स० श्वास] १ साँस। दम। जैसे,—जब तक श्वासा तब तक आशा। उ०—श्वासा तासु भए श्रुति चार। करि सो स्तुति या परकार।—सूर (शब्द०)। २. प्राण। प्राणवायु।

श्वासारि—सज्ञा पु० [स०] १ पुष्कर मूल। २. कुष्ठ नामक पौधा। कूट।

श्वासी—सज्ञा पुं० [स० श्वासिन्] १ श्वास लेनेवाला जीव। जीवित प्राणी। २ वायु। हवा।

श्वासोच्छ्वास—सज्ञा पु० [स०] वेग से साँस खीचना और निकालना।

क्रि० प्र०—लेना।

श्वित'—वि० [स०] श्वेत। श्वेत। धवल।

श्वित'—सज्ञा पु० श्वैत्य। धवलिमा। सुफेदी [को०]।

श्वितान—वि० [स०] धवल। श्वेत [को०]।

श्वितिं—सज्ञा स्त्री० [स०] धवलिमा। उज्वलता [को०]।

श्वित्न, श्वित्न्य, श्वित्य—वि० [स०] श्वेत। सफेद। धवल [को०]।

श्वित्र'—वि० [स०] १. सफेद। श्वेत। २ सफेद कोढवाला।

श्वित्र'—सज्ञा पु० १. श्वेत कुष्ट। सफेद कोढ। सफेद दागवाला कोढ।

विशेष—इस रोग मे शरीर के चमडे के ऊपर सफेद दाग पड जाते है। यह रुधिर, मास और मेद मे रहता है। अन्य प्रकार के कुष्ठो की तरह यह पकता, बहता और पीडा नही करता। जिसमे केश सफेद न हुए हो तथा जिसमे दाग परस्पर मिलकर एक न हो गए हो, वह साध्य है।

२ शरीर के चर्म पर पडा हुआ श्वेत कुष्ठ का दाग। सुफेद कोढ का धब्बा (को०)।

श्वित्रघ्नी—सज्ञा स्त्री० [सं०] वृश्चिकाली। पीतपर्णी। बिछाली का पौधा।

श्वित्रनाशन, श्वित्रहर—वि० [स०] कुष्ठ रोग दूर करनेवाला।

श्वित्रारि—सज्ञा स्त्री० [सं०] बकुची। सोमराजी।

श्वित्री—वि० [स० श्वित्रिन्] [वि० स्त्री० श्वित्रिणी] १. श्वित्र रोगी। सफेद कोढवाला। २. श्वित्र रोग सबधी।

श्वेत[1]—वि० [स०] १ जिसमे कोई रग न मालूम हो। बिना रग का। सफेद। धौला। चिट्टा।

विशेष—विज्ञान से सिद्ध है कि श्वेत रग में सातो रगो का अभाव नही है बल्कि उनका गूढ मेल है। सूर्य की किरनें देखने में सफेद जान पडती है, पर रश्मि विश्लेषण क्रिया से सातो रगो की किरणें अलग अलग हो जाती हैं।

२. शुभ्र। उज्वल। साफ। निर्मल। ३. निर्दोष। निष्कलक। ४ जो साँवला न हो। गोरा।

श्वेत[2]—सज्ञा पुं० १ सफेद रग। श्वेत वर्ण। २ चाँदी। रजत। ३. कौडी। कपर्दक। ४ पुराणानुसार एक द्वीप। ५ आयुर्वेद में तीसरी त्वचा की सज्ञा। शरीर के चमडे की तीसरी तह। ६ एक पर्वत। ७. स्कद के एक अनुचर का नाम। ८ शोभाजन वृक्ष। सहिजन। ९ जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। १०. शख। ११ शुक्र ग्रह। १२ सफेद घोडा। १३ सफेद बादल। १४. एक केतु या पुच्छल तारा। १५ सफेद जीरा। श्वेत जीरक। १६ शिव का एक अवतार। १७ वराह-मूर्ति-भेद। श्वेत वराह। १८. पुराण के अनुसार हिरण्मय वर्ष और रम्यक वर्ष के बीच का एक पर्वत। १९ सफेद बकरा (को०)। २० आँखो की सफेदी। नेत्र का श्वेत रग (को०)। २१. अग्निपुराण मे वर्णित एक राजा का नाम (को०)। २२. भागवत के अनुसार एक नाग (को०)। २३. तक्र या मट्ठा जिसमे समानुपात में जल मिलाया हो (को०)।

श्वेतकटकारी—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतकण्टकारी] सफेद कटकारी। श्वेत पुष्पवाली कटकारी (को०)।

श्वेतकंद—सज्ञा पुं० [स० श्वेतकन्द] प्याज।

श्वेतकंदा—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतकन्दा] अतिविषा। अतीस नामक ओषधि।

श्वेतक—सज्ञा पु० [स०] १ चाँदी। रजत। रौप्य। २ कौडी। कपर्दक। ३ काँसा। ४ एक नाग का नाम।

श्वेतकपोत—सज्ञा पु० [स०] १. एक प्रकार का चूहा। २. एक प्रकार का साँप।

श्वेतकमल—सज्ञा पुं० [स०] उज्वल कमल। पुडरीक (को०)।

श्वेतकल्प—सज्ञा पुं० [स०] एक कल्प का नाम (को०)।

श्वेतकाडा—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतकाण्डा] सफेद दूब। श्वेत दूर्वा।

श्वेतकाक—सज्ञा पुं० [सं०] सफेद कौआ अर्थात् असभव बात।

श्वेतकाकीय—वि० [स०] असभव। व्यर्थ। बेकार (को०)।

श्वेतकापोती—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का पौधा (को०)।

श्वेतकि—सज्ञा पुं० [स०] महाभारत मे वर्णित एक धर्मपरायण राजा।

श्वेतकिणही—सज्ञा स्त्री० [स०] शतपत्रा। विषघ्निका नामक वृक्ष (को०)।

श्वेतकुजर—सज्ञा पुं० [स० श्वेतकुञ्जर] १ श्वेत वर्ण का हाथी। २ इद्र का ऐरावत हाथी (को०)।

श्वेतकुक्षि—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की मछली।

श्वेतकुश—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का तृण। सित दर्भ (को०)।

श्वेतकुष्ठ—सज्ञा पु० [स०] सफेद दागवाला कोढ। श्वित्र।

श्वेतकृष्ण—सज्ञा पुं० [स०] १ सफेद और काला। २ यह पक्ष और वह पक्ष। एक बात और दूसरी बात। जैसे,—हम श्वेत कृष्ण कुछ न कहेगे। ३ एक प्रकार का विषैला कीडा। (सुश्रुत)।

श्वेतकृष्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक विषैला कृमि (को०)।

श्वेतकेतु—सज्ञा पुं० [स०] १. महर्षि उद्दालक के पुत्र का नाम। २. बोधिसत्व की अवस्था मे गौतम बुद्ध का नाम। ३. केतु ग्रह-विशेष।

श्वेतकेश—सज्ञा पुं० [स०] १. लाल फूल का सहिजन का पेड। २ सफेद बाल।

श्वेतकोल—सज्ञा पु० [स०] पोठी या पोठिया नाम की मछली। शफर (को०)।

श्वेतक्षार—सज्ञा पुं० [स०] शोरा (को०)।

श्वेतगज—सज्ञा पुं० [सं०] ऐरावत हाथी। उ०—अप्सरा पारिजातक धनुष अश्व गज श्वेत ए पाँच नरपतिहि दीने। —सूर (शब्द०)।

श्वेतगरुत्, श्वेतगरुत—सज्ञा पुं० [सं०] हस (को०)।

श्वेतगुजा—सज्ञा स्त्री० [सं० श्वेतगुञ्जा] सफेद घुँघची (को०)।

श्वेतघटा—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतघण्टा] नागदती।

श्वेतचदन—सज्ञा पु० [सं० श्वेतचन्दन] श्वेत मलयागिरि चदन। दे० 'चदन'।

श्वेतचरण—सज्ञा पुं० [सं०] एक पक्षी।

श्वेतचिलिका, श्वेतचिल्ली—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का शाक। बथुआ (को०)।

श्वेतच्छद—सज्ञा पुं० [स०] १. गधपत्र। वनतुलसी। २. हस।

श्वेतजीरक—सज्ञा पु० [स०] सफेद जीरा।

श्वेतटकक—सज्ञा पुं० [स० श्वेतटङ्कक] सोहागा। श्वेत टकण (को०)।

श्वेतटंकण—सज्ञा पुं० [स० श्वेतटङ्कण] सोहागा।

श्वेतता—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेदी। उज्वलता। शुक्लता। उ०—उसने देखा मक्रील की फेनिल श्वेतता युवती की सुघडता पर विराज रही है।—पिजरे०, पृ० १३।

श्वेतद्युति—सज्ञा पु० [स०] चद्रमा।

श्वेतद्रुम—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का वरुण वृक्ष ।

श्वेतद्विप—सज्ञा पुं० [स०] १. ऐरावत हाथी । २ सफेद रग का हाथी (को०) ।

श्वेतद्वीप—सज्ञा पुं० [स०] १ पुराणानुसार क्षीरसागर के पास एक अत्यत उज्वल द्वीप जहाँ विष्णु भगवान् निवास करते हैं । २. वह स्थान या देश जहाँ श्वेत रंग के व्यक्ति या गोरे रहते है । योरप । उ०—यूरप या श्वेतद्वीप मानो पश्चिमीय सभ्यता का मायका ।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५६ ।

श्वेतधातु—सज्ञा पुं० [स०] १ श्वेत रग के खनिज पदार्थ । २ खडिया मिट्टी । ३ दूधिया पत्थर (को०) ।

श्वेतधामा—सज्ञा पु० [स० श्वेतधामन्] १. चद्रमा । २. कपूर । ३. समुद्र फेन । ४. अपामार्ग । चिचडा । ५ अपराजिता ।

श्वेतनील—सज्ञा पु० [स०] मेघ । बादल ।

श्वेतपटल—सज्ञा पुं० [स०] जस्ता नामक धातु ।

श्वेतपत्र—सज्ञा पुं० [स०] १ हँस । २. किसी प्रकार की राजनीतिक वार्ता या सधिचर्चा के अत मे उसमे तै की हुई शर्तों आदि की लिखित घोषणा (अ० ह्वाइट पेपर) ।

श्वेतपत्ररथ—सज्ञा पुं० [स०] ब्रह्मा (को०) ।

श्वेतपर्णा—सज्ञा स्त्री० [स०] जलकुंभी । वारिपर्णा ।

श्वेतपर्णास—सज्ञा पु० [स०] श्वेत तुलसी (को०) ।

श्वेतपाटला—सज्ञा स्त्री० [स०] श्वेत वर्ण के फूलवाला पाटल या पाडर वृक्ष (को०) ।

श्वेतपाद—सज्ञा पु० [स०] शिव के एक गण का नाम ।

श्वेतपिंग—सज्ञा पु० [स० श्वेतपिङ्ग] सिंह (को०) ।

श्वेतपिंगल—सज्ञा पु० [स० श्वेतपिङ्गल] १. सिंह । २ महादेव । शिव । ३ वह जिसका वर्ण श्वेत और कपिल रंग का हो (को०) ।

श्वेतपिंगलक—सज्ञा पु० [स० श्वेतपिङ्गलक] सिंह ।

श्वेतपुष्प—सज्ञा पुं० [स०] १. निर्गुडा । सफेद फूल ।

श्वेतपुष्पा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ नागपुष्पा । २. तारई । ३ सन । ४. सेंधुआर । सभालु । ५. नागदता । ६ सफेद अपराजिता ।

श्वेतपुष्पिका—सज्ञा स्त्री० [स०] १. पुत्रदात्री लता । २ बडी सन-पुष्पी ।

श्वेतप्रदर—सज्ञा पु० [स०] वह प्रदर रोग जिसमे स्त्रियो को सफेद रग की धातु गिरती है ।

श्वेतप्रस्तर—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'श्वेतधातु' (को०) ।

श्वेतबर्बर—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का चंदन ।

श्वेतबिंदुका—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतबिन्दुका] १. वह कन्या जिसके शरीर पर सफेद धब्बे या दाग हो । (यह विवाह के अयोग्य मानी जाती है) । २. कोई भी श्वेत बूँदोवाली वस्तु ।

श्वेतबुह्ना—सज्ञा स्त्री० [स०] बनतिक्ता ।

श्वेतभंडा—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतभण्डा] सफेद फूलवाली अपराजिता (को०) ।

श्वेतभानु—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा ।

श्वेतभिक्षु—सज्ञा पु० [स०] श्वेत वस्त्रधारी साधु । धूर्त (को०) ।

श्वेतभुजग—सज्ञा पुं० [स० श्वेतभुजङ्ग] ब्रह्मा का एक अवतार ।

श्वेतमंडल—सज्ञा पुं० [स० श्वेतमण्डल] एक प्रकार का सौर (सुश्रुत) ।

श्वेतमदारक—सज्ञा पुं० [स० श्वेतमदारक] सफेद फूलोवाला अर्क वृक्ष । सुफेद मदार (को०) ।

श्वेतमज्य—सज्ञा पुं० [स०] मुस्तक । मोथा ।

श्वेतमयूख—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा ।

श्वेतमरिच—सज्ञा पुं० [स०] १. शोभाजन बीज । सहिजन के बीज । २ सफेद मिर्च ।

श्वेतमाल—सज्ञा पु० [स०] १. मेघ । बादल । २ धूम्र । धुआँ ।

श्वेतमूला—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की गदहपूरना । पुनर्नवा का एक भेद ।

श्वेतयावरी—सज्ञा स्त्री० [स०] (श्वेत बहनेवाली) एक नदी जिसका नाम ऋग्वेद मे आया है ।

श्वेतरंजन—सज्ञा पु० [स० श्वेतरञ्जन] सोसा धातु ।

श्वेतरक्त'—सज्ञा पु० [स०] गुलाबी रग ।

श्वेतरक्त'—वि० गुलाबी रगवाला (को०) ।

श्वेतरथ—सज्ञा पुं० [स०] शुक्र ग्रह ।

श्वेतरस—सज्ञा पु० [स०] तक्र या मट्ठा जिसमे जल का अनुपात समान हो (को०) ।

श्वेतराजी—सज्ञा स्त्री० [स०] चिचिडा (जिसका तरकारी होती है) ।

श्वेतरावक—सज्ञा पु० [स०] निर्गुंडी ।

श्वेतरोचिस्—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा ।

श्वेतरोहित—सज्ञा पु० [स०] १. गरुड का एक नाम । २. एक प्रकार का पौधा जिसका फूल सफेद और फल लाल होता है ।

श्वेतलोध्र—सज्ञा पु० [स०] पठानी लोध । पट्टिका लोध ।

श्वेतवक्त्र, श्वेतवक्त्र—सज्ञा पुं० [स०] स्कद के एक अनुचर का नाम ।

श्वेतवचा—सज्ञा स्त्री० [स०] १. सफेद वच । २. अतिविषा । अतीस ।

श्वेतवल्कल—सज्ञा पुं० [स०] १. गूलर । उदुबर वृक्ष । २. सफेद रग की छाल ।

श्वेतवह—सज्ञा पु० [सं०] [सज्ञा स्त्री० श्वेतवोहा] इद्र ।

श्वेतवाजी—सज्ञा पु० [श्वेतवाजिन्] १. सफेद घोड़ा । २. चंद्रमा । ३. अर्जुन । ४ कपूर (को०) ।

श्वेतवाराह—सज्ञा पुं० [सं०] १ वाराह भगवान् की एक मूर्ति । २. एक कल्प का नाम जो ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन माना गया है । ३. एक तीर्थ ।

श्वेतवासा—सज्ञा पुं० [स०] श्वेत वस्त्रधारी सन्यासी । २. वह जिसने श्वेत परिधान धारण किया हो (को०) ।

श्वेतवाह—सज्ञा पु० [सं०] १. (सफेद घोड़ेवाले) इद्र । २. अर्जुन ।

श्वेतवाहन—सज्ञा पुं० [सं०] १ चद्रमा। २. अर्जुन का एक नाम। ३ समुद्र का मकर। ४ शिव का एक रूप या मूर्ति। ५ कपूर (को०)। ६ हरिवश के अनुसार एक राजा जो विदूरथ का पौत्र था (को०)।

श्वेतवाही—पज्ञा पुं० [स० श्वेतवाहिन्] अर्जुन (को०)।

श्वेतवृक्ष—पज्ञा पु० [स०] वरुण नाम का वृक्ष (को०)।

श्वेतशिशपा—सज्ञा स्त्री० [स०] श्वेत वर्ण का शिशपा वृक्ष (को०)।

श्वेत शिग्रु—पज्ञा पु० [स०] श्वेत पुष्पवाला सहिजन वृक्ष (को०)।

श्वेतशुग, श्वेतशृग—सज्ञा पु० [सं० श्वेतशुङ्ग, श्वेतशृङ्ग] जौ। यव।

श्वेतसर्प—सज्ञा पुं० [स०] १ वरुण वृक्ष। २ सफेद साँप।

श्वेतसर्षप—सज्ञा स्त्री० [स०] पीली सरसो।

श्वेतसार—सज्ञा पुं० [स०] खैर। कत्था। खदिर।

श्वेतसिंही—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार का शाक।

श्वेतसिद्ध—सज्ञा पुं० [स०] स्कद के एक अनुचर का नाम।

श्वेतसुरसा—सज्ञा स्त्री० [स०] सफेद फूल की निर्गुडी।

श्वेतस्पदा—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतस्पन्दा] अपराजिता (को०)।

श्वेतहनु—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार का साँप। (सुश्रुत)।

श्वेतहय—सज्ञा पुं० [सं०] १ इंद्र का घोडा। उच्चैश्रवा। २ अर्जुन। ३ इद्र (को०)। ४ श्वेत वर्ण का अश्व।

श्वेतहस्ती—सज्ञा पुं० [स०] १. ऐरावत। २ श्वेत वर्ण का हाथी।

श्वेताग[1]—वि० [स० श्वेताङ्ग] १. श्वेत अगवाला। गोरा। गौराग। २ श्वेत वर्णवाला।

श्वेताग[2]—सज्ञा पु० यूरोप का निवासी। यूरोपियन। अगरेज। उ०—(क) भारत भर आज श्वेताग होने की अभिलाषा से।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५९। (ख) जो आज श्वेताग लोग करते है।—प्रेमघन०, भा० २, पृ० २५८।

श्वेताबर—सज्ञा पुं० [स० श्वेताम्बर] १. सफेद वस्त्र धारण करनेवाला। २ जैनो के दो प्रधान सप्रदायो मे से एक।

विशेष—ये लोग चँवरी रखते, बाल उखडवाते, श्वेत वस्त्र पहनते, क्षमायुक्त रहते और भिक्षा माँगकर अपना निर्वाह करते हैं। ये स्त्रियो को भी अपवर्ग मानते है।

३ शिव का एक रूप।

श्वेताशु—सज्ञा पुं० [स०] चद्रमा।

श्वेता[1]—सज्ञा स्त्री० [स०] १ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक। २ कौडी। ३ भोजपत्र का पेड। ४. श्वेत पाटला। काष्ठ पाटला। ५ श्वेत या शख नामक हस्ती की माता। शखिनी। ६ अतीस। अतिविषा। ७ अपराजिता लता। ८ सफेद वन भटा। ९ श्वेत कटकारी। भटकटैया। १०. पाषाणभेद। पखानभेद। ११ वशलोचन। १२. श्वेत पुनर्नवा। सफेद गदहपूरना। १३. शिलावाक। १४ फिटकरी। १५ चीनी। शक्कर। १६. मिस्री। १७. सफेद बच। १८. क्षुरपत्री। पर्वमूला।

विशेष—यह तृण बरसात में उगता है और जाड़े मे नष्ट हो जाता है। यह एक या डेढ बालिश्त ऊँचा और छतनारा होता है। पत्तियाँ छोटी, फूल नीले या बैंगनी रग के और बीज छोटे छोटे दाना की तरह के होते हैं। क्षुरपत्री मधुर, शीतल और स्त्रियो का दूध बढानेवाली कही गई है।

१९ स्कद की अनुचरी एक मातृका। २० कश्यप की क्रोधवशा नाम्नी पत्नी से उत्पन्न एक कन्या जो दिग्गजो की माता है।

श्वेता[2]—वि० श्वेत वर्ण की। गोरी। गौरवर्णा।

श्वेताक्ष—सज्ञा पुं० [स०] एक प्रकार की सोमलता।

श्वेताद्रि—सज्ञा पु० [स०] १ श्वेत नाम का पर्वत। २ कैलास पर्वत (को०)।

श्वेताभ—वि० [स०] आभायुक्त। श्वेतकातिवाला।

श्वेताभ्रि—सज्ञा स्त्री० [स०] इमली।

श्वेतारण्य—सज्ञा पुं० [स०] कावेरी नदी के किनारे का एक वन जो तीर्थ माना गया है।

श्वेतार्क—सज्ञा पु० [स०] १. चद्रमा। २ श्वेत मदार का वृक्ष।

श्वेतार्चि—सज्ञा पुं० [स० श्वेतार्चिस्] चद्रमा।

श्वेतालु—सज्ञा पुं० [सं०] महिष कद। भैसाकद।

श्वेतावार—सज्ञा पुं० [स०] सितावर शाक।

श्वेताश्व—सज्ञा पुं० [स०] अर्जुन का एक नाम।

श्वेताश्वतर—सज्ञा स्त्री० [सं०] १ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। २ उपनिषद् विशेष।

विशेष—कृष्ण यजुर्वेद की यह उपनिषद् छह अध्यायो की है। इसमे वेदात के प्राय सब सिद्धातो के मूल पाए जाते है। भगवद्गीता के बहुत से प्रसग इसमे लिए हुए जान पडते है। इसकी सस्कृत बडी ही सरल और स्पष्ट है। वेदात के प्रसगो के अतिरिक्त इसमे योग और साख्य के सिद्धातो के मूल भी मिलते है। वेदात, साख्य और योग तीनो शास्त्रो के कर्ताओ ने मानो इसी के मूल वाक्यों को लेकर ब्रह्म के स्वरूप तथा पुरुष-प्रकृति भेद आदि का विस्तार किया है।

श्वेताह्वा—सज्ञा स्त्री० [स०] श्वेत पाटला।

श्वेतिका—सज्ञा स्त्री० [स०] साँफ।

श्वेतित—वि० [स०] श्वेत या सफेद बनाया हुआ या किया हुआ (को०)।

श्वेतिमा—सज्ञा स्त्री० [स० श्वेतिमन्] शुक्लत्व। शुभ्रता। धवलिमा। सफेदी (को०)।

श्वेतेक्षु—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की ईख। सफेद ईख (को०)।

श्वेतोदर—सज्ञा पुं० [स०] १ कुबेर। २. एक प्रकार का साँप। (सुश्रुत)। ३ मार्कडेय पुराण के अनुसार एक पर्वत।

श्वेतोही—सज्ञा स्त्री० [स०] इद्राणी। शची।

श्वेत्र—सज्ञा पु० [सं०] सफेद कोढ।

श्वैत्य—सज्ञा पु० [सं०] १ श्वेतता। शुभ्रता। २ सफेद कुष्ठ (को०)।

श्वैत्र, श्वैत्र्य—सज्ञा पुं० [स०] सफेद कोढ़ (को०)।

ष

ष—सस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णों मे ३१ वाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारणस्थान मूर्धा है। इससे यह मूर्धन्य वर्णों मे कहा गया है। इसका प्रयोग केवल सस्कृत के शब्दो मे होता है और उच्चारण दो प्रकार से होता है। कुछ लोग 'श' के समान इसका उच्चारण करते है और कुछ लोग 'ख' के समान। इसी से हिंदी की पुरानी लिखावट मे इस अक्षर का व्यवहार कवर्गीय 'ख' के स्थान पर होता था। जैसे,—देषि (देखि), लषन (लखन) इत्यादि।

अनेक धातुएँ जो दत्य 'स' से आरंभ है वे सस्कृत धातुपाठ मे मूर्धन्य 'ष' से लिखी गई है इस अक्षर का परिवर्तन अधिकतर 'श', 'स' और 'ख' के रूप मे होता है। एक तरह से इसका शुद्ध उच्चारण, 'ऋ' की तरह, लुप्तप्राय है। व्रज और अवधी मे यह 'स' लिखा जाता है।

षजन—सज्ञा पु० [स० षञ्जन] १. आलिंगन। २ मिलना। समागम।

षड—सज्ञा पु० [स० षण्ड] १. राशि। समूह। २. झाड़। ३ प्रजनन के लिये पालित वृष। छुट्टा साँड। ४ भेड़ बकरो का झुड (को०)। ५. हीजडा। नपुसक। नामर्द।

विशेष—कुछ विद्वान् इनके १४ तथा कुछ २० प्रकार मानते है।

६ कमलो का समूह। ७. शिव का एक नाम। ८ लिंग। चिह्न। लक्षण (को०)। ९. धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

षडक—सज्ञा पु० [स० षण्डक] हीजडा। नपुसक (को०)।

षडत्व—सज्ञा पुं० [स० षण्डत्व] नामर्दी। हीजडापन। पुस्त्व का अभाव।

षडयोनि—सज्ञा स्त्री० [स० षण्डयोनि] वह स्त्री जिसे मासिक धर्म न हो और जिसके स्तन न हो, अर्थात् जो पुरुषसमागम के अयोग्य हो।

षडव(पु)—सज्ञा पु० [स० खाण्डव] दे० 'खाडव'। उ०—रषि षडव षडव लष्पि ग्रह।—पृ० रा०, १२। ४७।

षडवेश—सज्ञा पु० [स० षण्डवेस] दे० 'षडवेश'।

षडामर्क—सज्ञा पु० [स० षण्डामर्क] शुक्राचार्य के पुत्र का नाम। उ०—कविसुत असुर वश गुरु आमा। षडामर्क रह्यो अस नाम।—रघुराज (शब्द०)।

षडाली—सज्ञा स्त्री० [स० षण्डाली] १. तेल नापने की एक छोटी घरिया जिसमे एक छटाँक वस्तु आ सकती हो। २. दुश्चरित्रा स्त्री। व्यभिचारिणी। ३. ताल। तलैया।

षडी—सज्ञा स्त्री० [स० षण्ड] वह स्त्री जिसे मासिक धर्म न होता हो, स्तन छोटे हो, और जो पुरुषसमागम के अयोग्य हो।

षढ—सज्ञा पु० [स० षण्ढक] दे० 'षड'।

षढक—सज्ञा पु० [स० षण्ढक] दे० 'षडक' (को०)।

यौ०—षढकतिल = दे० 'षढतिल'।

षढतिल—सज्ञा पु० [स० षण्ढतिल] १ बाँझपन का तिल। २. (लाक्ष०) निकम्मा आदमी (को०)।

षढवेश—सज्ञा पु० [स० षण्ढवेश] १. वह जो हिजडे का वेश धारण करे। २. जनखा। हीजडे के वेश मे रहनेवाला।

षढा—सज्ञा स्त्री० [स० षण्ढा] वह स्त्री जिसकी चेष्टा पुरुषो की सी हो।

षाढता—सज्ञा स्त्री० [स० षाण्ढना] दे० 'षंडा' (को०)।

षढीयोनि—सज्ञा स्त्री० [स० षण्ढीयोनि] दे० 'षडयोनि' (को०)।

ष[1]—सज्ञा पु० १. विद्वान् पुरुष। आचार्य। २. कुच। चूचुक। ३. नाश। ४. शेष। बाकी। ५ प्राप्त ज्ञान का क्षय। ६. मुक्ति। मोक्ष। ७ स्वर्ग। ८ अंत। समाप्ति। अवधि। ९. गर्भ। १० धैर्य। सहिष्णुता। ११. निद्रा। नींद (को०)। १२ केश। बाल (को०)। १३. गर्भविमोचन (को०)।

ष[2]—वि० १ बहुत अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। २ विद्वान् (को०)।

षट[1]—वि० [स०] गिनती मे ६। छह्।

षट्[2]—सज्ञा पुं० १. छह् की संख्या। २ षाडव जाति का एक राग।

विशेष—यह राग दीपक राग का पुत्र माना गया है। इसके गाने का समय प्रात १ दड से ५ दड तक है। इसमे सब कोमल स्वर लगते हैं। कोई कोई इसे आसावरी, ललित, टोड़ी और भैरवी आदि रागिनियो से उत्पन्न सकर राग मानते हैं।

षटक(पु)—सज्ञा पु० [स० षट्क] दे० 'षट्कर्म'। उ०—तौ पंडित आये बेद भुलाए षटक रमाए अपनाए।—सुदर० ग्र०, भा० १, पृ० २३७।

षटतुकी(पु)—सज्ञा स्त्री० [स० षट्+हिं० तुक+ई (प्रत्य०)] छप्पय छद। उ०—किए कवित षटतुकी बहुरि मनहर अरु इदव। कुडलिया पुनि साषि भक्ति विमुखान को निदव।—सुदर० ग्र० (जी०), भा० १, पृ० १४४।

षटबदन(पु)—सज्ञा पुं० [स० षट्+वदन] (छह् मुँहवाले) कार्तिकेय। उ०—तब जनमेउ षटबदन कुमारा। तारकु असुर समर जेहि मारा।—मानस, १। १०३।

षट्क[1]—सज्ञा पु० [स०] १. छह्। ६ की सख्या। २. छह् वस्तुओ का समूह।

विशेष—इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दु ख और ज्ञान के समूह को प्राय षट्क कहते हैं।

३. दे० 'षड्विकार'।

षट्क[2]—वि० छह् सबधी। छह का। छहवाला।

षट्कर्ण[1]—सज्ञा पु० [स०] एक प्रकार की वीणा या सितार जिसमे छह कान होते है।

षट्कर्ण[2]—वि० १. छह कानो से सुना गया। वक्ता या श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे आदमी से भी सुना गया। २. जिसे छह् कान हो (को०)।

षट्कर्म—सज्ञा पु० [स० षट्कर्मन्] १. ब्राह्मणो के छह् कर्म—(१) यजन, (२) याजन, (३) अध्ययन, (४) अध्यापन,

(५) दान देना और (६) दान लेना। २. स्मृतियो के अनुसार छह् काम जिनके द्वारा आपत्काल मे ब्राह्मण अपनी जीविका कर सकता है (१) उञ्छ वृत्ति (कटे हुए खेतो मे दाने बिनना), (२) दान लेना, (३) याचना करना, (४) कृषि, (५) वाणिज्य और (६) गोरक्षा (अथवा किसी किसी के मत से सूद पर रुपया देना)। ३ तान्त्रिको के वध आदि छह कर्म—(१) शान्ति, (२) वशीकरण, (३) स्तभन, (४) विद्वेष, (५) उच्चाटन तथा (६) मारण। ७. योगाभ्यास सबधी छह् क्रियाएँ (१) धौती, (२) वस्ती, (३) नेती, (४) नौलिकी या नौलिक, (५) त्राटक तथा (६) कपालभाती (को०)।

षट्कर्मा—सज्ञा पुं० [स०] १ यजन याजन आदि नियत कर्मो को करनेवाला ब्राह्मण। कर्मनिष्ठ ब्राह्मण। २ तान्त्रिक।

षट्कल—वि० [सं०] (मुहूर्त आदि) जो छह् कलाओ तक रहे (को०)।

षट्कला—सज्ञा पुं० [स०] सगीत मे ब्रह्मताल के चार भेदो मे से एक भेद।

षट्कसपत्ति—सज्ञा पु० [स० षट्कसम्पत्ति] छह् प्रकार के कर्म—(१) शम, (२) दम (३) उपरति, (४) तितिक्षा, (५) श्रद्धा और (६) समाधान।

षट्कुलीय—वि० [स०] छह् कुलोवाला (को०)।

षट्कूटा—सज्ञा स्त्री० [स०] भैरवी का एक रूप (को०)।

षट्कोण[1]—वि० [सं०] छह् कोनोवाला। छह्कोना। छह्पहला।

षट्कोण—सज्ञा पु० ज्योतिष मे लग्न से छठा घर जो रिपुक स्थान कहा जाता है। २. एक प्रकार का यंत्र जिसमे छह् कोण की आकृति रहती है। ३ इद्र का वज्र। ४ हीरा (को०)।

षट्कोप—सज्ञा पुं० [स०] एक पुराने आचार्य का नाम।

षट्खड—वि० [स० षट्खण्ड] जिसमे ६ खड हो। छह् खडो या विभागोवाला (को०)।

षट्चक्र[1]—सज्ञा पुं० [स०] हठयोग मे माने हुए कुडलिनी के ऊपर पडनेवाले छह् चक्र जो मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा चक्र कहे गए है।

षट्चक्र[2]—सज्ञा पु० [स० षट्+चक्र (=चक्कर या घेरा)] किसी के विरुद्ध आयोजन। भीतरी चाल। षड्यत्र।

क्रि० प्र०—चलाना।—खड़ा करना।—रचना।

षट्चरण—सज्ञा पुं० [स०] १. भ्रमर। भौंरा। २. जूँ। यूका (को०)। ३ टिड्डा (को०)।

षट्चिति, षट्चितिक—वि० [स०] छह् स्तरो या तहोवाला (को०)।

षट्तन्त्री—सज्ञा स्त्री० [स० षट्तन्त्री] छह् दर्शनो का एक नाम षड्दर्शन (को०)।

षट्तक्रतैल—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक का एक तेल जिसमे तेल से छह् गुना अधिक तक्र (मट्ठा) मिलाया जाता है।

षट्ताल—सज्ञा पु० [स०] १. मृदग का एक ताल जो आठ मात्राओं का होता है।

विशेष—इसमे पहले २ आघात, १ खाली, फिर ४ आघात और अत मे एक खाली होता है।

२ एक प्रकार का ख्याल जो एकताला ताल पर बजाया जाता है।

षट्तिला—सज्ञा स्त्री० [सं०] माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम। इसमे तिल के व्यवहार और दान का बहुत फल कहा गया है। उ०—पहिकर नाम षट्तिला अहई। करि व्रत नेम निकर अघ दहई।—विश्रामसागर (शब्द०)।

षट्तिली—सज्ञा पुं० [स० षट्तिलिन्] तिल को ६ प्रकार से व्यवहार करनेवाला व्यक्ति।

विशेष—इसके व्यवहार के ढग ये है—(१) तिलोद्वर्तन, (२) तिलस्नान, (३) तिलहोम, (४) तिल का दान, (५) तिल-भक्षण और (६) तिलवपन।

षट्त्रिश—वि० [स०] छत्तीसवा (को०)।

षट्त्रिशत्—सज्ञा पुं० [स०] छत्तीस की सख्या (को०)।

षट्पचाशत्—सज्ञा पुं० [स० षट्पञ्चाशत्] छप्पन की सख्या (को०)।

षट्पत्र—वि० [स०] छह् पत्ता या दला से युक्त। जिसमें छह् पत्ते हो (को०)।

षट्पद[1]—वि० [स०] [वि० स्त्री० षट्पदा] छह् पैरवाला।

षट्पद[2]—सज्ञा पुं० १ भ्रमर। भौंरा। २. किनना। ३. छह् पदोवाला छद। गति छद (को०)।

षट्पदज्य—सज्ञा पुं० [स०] कामदेव का धनुष जो भ्रमरश्रेणी का बना माना जाता है (को०)।

षट्पदप्रिय—सज्ञा पुं० [सं०] १ कमल। २ नागकेशर का वृक्ष।

षट्पदा—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्राकृत छद (को०)।

षट्पदातिथि—सज्ञा पु० [सं०] १ (जहा भ्रमर अतिथि रूप मे हो अर्थात्) आम का वृक्ष। २ चंपक। चपा।

षट्पदानदवर्धन—सज्ञा पुं० [स० षट्पदानन्दवर्धन] (भ्रमर के आनंद का बढानेवाला) किंकरात का वृक्ष।

षट्पदिका—सज्ञा स्त्री० [स०] दे० 'षट्पदा' (को०)।

षट्पदी[1]—वि० स्त्री० [स०] छह् पैरवाली।

षट्पदी[2]—सज्ञा स्त्री० १ भ्रमरा। भौंरी। २ एक छद जिसमे छह् पद या चरण होते है। छप्पय। ३. किलनी या जू (को०)। ४ भूख प्यास, शोक अव्यवस्थित चेतना, बाधक्य तथा मृत्यु नाम की छह् स्थितियाँ। ५ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद तथा मान नाम की छह् भावनाएँ (को०)।

षट्पाद—सज्ञा पुं० [स०] दे० 'षट्पद' (को०)।

षट्पितापुत्रक—सज्ञा पु० [स०] सगीत मे ताल का एक भेद जिसमे १२ मात्राएँ होती है। एक प्लुत, एक लघु, दो गुरु, एक लघु, एक प्लुत, यह इसका प्रमाण है।

षट्प्रज्ञ—सज्ञा पु० [स०] १ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकार्य और तत्वार्थ का ज्ञाता। २. उच्छृखल। ३. कामुक। ४. अच्छे स्वभाववाला पड़ोसी (को०)।

षट्मुख—सज्ञा पुं० [स०] कार्तिकेय। उ०—गिरिवेष षट्मुख जीति तारकनद को जब ज्यो हस्यो।—केशव (शब्द०)।

षट्रस—सज्ञा पु० [स०] छह प्रकार के रस या स्वाद। विशेष दे० 'षड्रस'।

यौ०—षट्रस भोजन।

षट्राग—सज्ञा पु० [स० षट्+राग] १ सगीत के ६ राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल मालकोस और दीपक। २. बखेडा। जजाल। आडबर। जैसे—इसमे बडा षट्राग है, हमसे न होगा। ३. झझट।

षट्रिपु—सज्ञा पु० [स०] दे० 'षड्रिपु'।

षट्शास्त्र—सज्ञा पुं० [स०] हिंदुओ के ६ दर्शन।

षट्शास्त्री—सज्ञा पु० [स० षटशास्त्रिन्] छह दर्शनो का जाननेवाला।

षट्वाग—सज्ञा पुं० [स० षट्वाङ्ग] खट्वाग नामक राजर्षि जिन्हे केवल दो घडी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी। उ०—एक षट्वाग राजऋषि भयऊ। असुर विजय हित सो दिवि गयऊ।—रघुराज (शब्द०)। २ शिव का एक शस्त्र। दे० 'खट्वाग'।

षडग[1]—सज्ञा पुं० [स० षडङ्ग] १. वेद के छह अग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छद और ज्योतिष। २ शरीर के छह अवयव—दो पैर, दो हाथ, सिर और धड। तथा कुछ लोगो के मत से हृदय, शिर, शिखा, नेत्र, कवच तथा अस्त्र। ३. गाय से प्राप्त होनेवाली पवित्र छह वस्तुएँ—गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोघृत, गोदधि, गोरोचन (को०)। ४. छह वस्तुओ का समाहार (को०)। ५. छठा भाग। षष्ठाश (को०)। ६ छोटा गोखरू (को०)।

षडग—वि० जिसके छह अग या अवयव हो।

षडगजित्—सज्ञा पु० [स० षडङ्गजित्] सब अंगो को वश मे करनेवाले विष्णु।

षडगयूष—सज्ञा पु० [स० षडङ्गयूष] एक प्रकार का यूष जिसमे ६ वस्तुएँ मिली रहती हैं।

षडगिनी—सज्ञा स्त्री० [स० षडङ्गिनी] अपने सभी अगो से पूर्ण सेना (को०)।

षडंघ्रि—सज्ञा पु० [स० षडङ्घ्रि] भ्रमर। भौरा।

षडक्षरी—सज्ञा स्त्री० [स०] वैष्णवो के रामानुज सप्रदायवालो का मुख्य मत्र।

षडक्षीण—सज्ञा पुं० [स०] मछली जिसे छह आँखें कही जाती हैं।

षडग्नि—सज्ञा स्त्री० [स०] १ कर्मकाड के अनुसार छह प्रकार की अग्नि।

विशेष—इनके नाम इस प्रकार कहे गए हैं—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि। इनमे से प्रथम तीन प्रधान हैं। कुछ लोगो ने अग्नि के ये ६ भेद किए हैं—धूमाग्नि, मदाग्नि, दीपाग्नि, मध्यमाग्नि, खराग्नि और भयाग्नि।

षडधिक—वि० [स०] छह से अधिक जैसे, षडधिक दश=सोलह (को०)।

षडभिज्ञ—सज्ञा पुं० [स०] बुद्ध या बोधिसत्व।

षडष्टक—सज्ञा पु० [स०] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का योग (को०)।

षडशीत—वि० [स०] छियासीवाँ (को०)।

षडशीति—सज्ञा स्त्री० [स०] १ छियासी की सख्या। २ सूर्य का एक राशि से दूसरे राशि पर जाने का चार मार्ग (को०)।

षडह—सज्ञा पुं० [स०] छह दिनो का समय (को०)।

षडात्मा—वि० [स० षडात्मन्] अग्नि जो छह स्वरूपोवाला है (को०)।

षडानन[1]—वि० [स०] जिसे छह मुँह हो।

षडानन[2]—सज्ञा पु० १ कार्तिकेय। २ सगीत मे स्वरसाधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार होती है—आरोही सा रे ग म प ध रे ग म प ध नि, ग म प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प म ग नि ध प म ग रे, ध म प ग रे सा।

षडाम्नाय—सज्ञा पुं० [स०] छह तत्र (को०)।

षडायतन[1]—सज्ञा पु० [स०] छह इंद्रियो के छह स्थान (को०)।

षडायतन[2]—वि० १ जो षट् आयतन से युक्त हो। २ विज्ञान, भूमि, जल, आकाश, अग्नि और वायु के आयतनवाला (को०)।

षडायतन भेदक—सज्ञा पु० [स०] बुद्ध (को०)।

षडार—वि० [स०] जिसमे छह किनारे या कोण हो (को०)।

षडूषण—सज्ञा पुं० [स०] वैद्यक मे ये छह गरम मसाले—पीपल, पिपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ और काली मिर्च।

षड्गया—सज्ञा स्त्री० [स०] गयादित्य, गयागज, गायत्री, गदाधर, गयासुर तथा गया क्षेत्र—जो मोक्षदायक हैं (को०)।

षड्गव—सज्ञा पु० [स०] १ छह बैलो की जोडी। २ वह जुवा जिसमे छह बैल जोते जायँ (को०)।

षड्गवीय—वि० [स०] छह बैलो से खीचा जानेवाला (को०)।

षड्गुण[1]—सज्ञा पु० [स०] १ छह गुणो का समूह। २ राजनीति की छह बातें—सधि, विग्रह, यान (चढाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय।

षड्गुण[2]—वि० १. छगुना। २ जो छह गुणो से युक्त हो (को०)।

षड्ग्रथ—सज्ञा पु० [स० षड्ग्रन्थ] १ मीठा वच। विशेष दे० 'वच'। २. करज का एक भेद (को०)।

षड्ग्रथा—सज्ञा स्त्री० [स० षड्ग्रन्था] १ इसका जड जो काश्मीर और काबुल से आती है। २ वच। ३. श्वेत वच (को०)। ४ शटी (को०)। ५ महाकरज (को०)।

षड्ग्रथि—सज्ञा स्त्री० [स० षड्ग्रन्थि] दे० 'षड्ग्रथिका'।

षड्ग्रथिका—सज्ञा स्त्री० [स० षड्ग्रन्थिका] १. पीपलामूल। पिपरामूल। २ शटी। शठी।

षड्ज—सज्ञा पुं० [स०] सगीत के सात स्वरो मे से पहला स्वर।

विशेष—यह गले के स्वर से मिलता जुलता माना गया है। इसके उच्चारणस्थान छह कहे गए हैं—नासा, कठ, उर, तालु, जिह्वा और दत, इसी से इसका नाम षड्ज पड़ा। मूल

स्थान दत और अत स्थान कठ है। देवता इसके अग्नि हैं। वर्ण रक्त, आकृति ब्रह्मा की, ऋतु हिम, वार रविवार, छद अनुष्टुप् और सतति इसकी भैरव राग है। कुछ के मतानुसार यह प्रथम स्वर है और मोर के स्वर से मिलता जुलता है।

षड्दरशनी(पु)—सज्ञा पु० [स० षड्दर्शन+हिं० ई (प्रत्य०)] दर्शनो का जाननेवाला। ज्ञानी। उ०—षड्दरशनी अभाव सर्वथा घट करि मानै।—(शब्द०)।

षड्दर्शन—सज्ञा पु० [स०] न्याय, मीमासा आदि हिंदुओ के छह् दर्शन।

षड्धा—अव्य० [स०] छह् प्रकार का। छह् प्रकार से [को०]।

षड्दुर्ग—सज्ञा पु० [स०] छह् प्रकार के दुर्ग जिनके नाम धन्व दुर्ग, मही दुर्ग, गिरि दुर्ग, मनुष्य दुर्ग, मृद् दुर्ग और वन दुर्ग हैं [को०]।

षड्विंदु—सज्ञा पुं० [स० षड्बिन्दु] विष्णु। दे० 'षड्विंदु'।

षड्भाग—सज्ञा पुं० [सं०] छठा हिस्सा। छठा भाग या अश [को०]।

षड्भुज[1]—वि० [सं०] १. छह् भुजाओवाला। २ छह् पहल का।

षड्भुज[2]—सज्ञा पु० १. चैतन्यदेव का एक नाम। षड्भुज क्षेत्र [को०]।

षड्भुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] १ खरबूजा। २ दुर्गा का एक नाम (को०)।

षड्यत्र—सज्ञा पुं० [स० षड्(=छह्)+यन्त्र (कौशल)] १ किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई काररवाई। भीतरी चाल। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

क्रि० प्र०—करना।—चलाना।—रचना।

षड्योग—सज्ञा पु० [स०] योगाभ्यास मे प्रयुक्त छह् प्रकार के तरीके [को०]।

षड्योनि—सज्ञा पुं० [स०] शिलाजीत। शिलाजतु।

विशेष—राँगा, सीसा, ताँबा, रूपा, सुवर्ण और लोहा इन छह् धातुओ मे से किसी एक की सुगध शिलाजीत मे अवश्य आती है, इसी से इसे षड्योनि कहते हैं। कारण यह है कि ऊपर कही हुई धातुओ मे से जिस किसी एक धातु का अश जिसमे होगा उसी पर्वत से शिलाजीत की उत्पत्ति होगी।

षड्रस—सज्ञा पु० [सं०] छह् प्रकार के रस या स्वाद—मधुर लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल अर्थात् माठा, नमकीन, तीता, कडुआ, कसैला और खट्टा।

यौ०—षड्रस भोजन = अनेक प्रकार के व्यजन या खाद्य पदार्थ।

षड्रसायन—सज्ञा पु० [स०] दे० 'रसोका'।

षड्राग—सज्ञा पु० [स०] दे० 'षट्राग'।

षड्रात्र—सज्ञा पुं० [स०] छह् रात का समय [को०]।

षड्रिपु—सज्ञा पुं० [स०] काम, क्रोध आदि मनुष्य के छह् विकार।

षड्रेखा—सज्ञा स्त्री० [स०] खरबूजा।

षड्वक्त्र—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय। षडानन।

षड्वदन—सज्ञा पु० [स०] षडानन। कार्तिकेय।

षड्वर्ग—सज्ञा पुं० [स०] छह् वस्तुओ का समूह या वर्ग। १ ज्योतिष मे क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवमाश, द्वादशाश और त्रिशाश जो षड्वर्ग कहलाते हैं। २ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर का समूह।

षड्विंदु—सज्ञा पु० [स० षड्बिन्दु] १ विष्णु। २. गुबरीले की जाति का एक कीडा जिसकी पीठ पर छह् गोल बिंदियाँ होती हैं। इसे पूरब मे 'छबुंदवा' कहते हैं।

षड्विंदुतैल—सज्ञा पु० [स० षड्बिन्दुतैल] वैद्यक का एक तैल जिसकी छह् बूँद नास लेने से सिर का दर्द दूर होता है और आँख तथा दाँत को लाभ पहुचता है।

विशेष—रेंड की जड, तगर, सोंफ, सेंधा नमक, पुनर्नवा, रास्ना, जलभँगरा, बायविडग, मुलेठी, सोंठ, इन सबका चौगुना दूध, भँगरे का रस और आठ गुना तेल इन सबको कढाही मे मद-मद पकावे। जब रसादिक जलकर तेल मात्र रह जाय, तो छान ले।

षड्विंश—सज्ञा पुं० [स०] १ सामवेद का एक ब्राह्मण।

षड्विंशति—सज्ञा स्त्री० [स०] छब्बीस की सख्या [को०]।

षड्विकार—सज्ञा पु० [सं०] १ प्राणो के छह् विकार या परिणाम, अर्थात् (१) उत्पत्ति, (२) शरीरवृद्धि, (३), बालपन (४) प्रौढता, (५) वृद्धता और (६) मृत्यु। २ काम, क्रोध आदि छह् विकार।

षड्विध—सज्ञा पुं० [स०] छह् प्रकार का। छहगुना [को०]।

षण्णवति—सज्ञा स्त्री० [स०] छानवे की सख्या।

षण्णाडीचक्र—सज्ञा पुं० [स०] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का चक्र।

षण्णाभि, षण्णाभिक—वि० [सं०] चक्र या पहिया जिसमे छह् नाभि हो।

षण्मतस्थापक—सज्ञा पु० [स०] शकराचार्य [को०]।

षण्मास—सज्ञा पुं० [स०] छह् महीने की अवधि [को०]।

षण्मासनिचय—वि० [स०] छह् मास की भोजनसामग्री इकट्ठा करनेवाला [को०]।

षण्मासिक—वि० [स०] अर्धवार्षिक (को०]।

षण्मुख[1]—वि० [स०] छह् मुँहवाला।

षण्मुख[2]—सज्ञा पु० षडानन। कार्तिकेय।

षण्मुखा—सज्ञा स्त्री० [स०] खरबूजा [को०]।

षन्मुख(पु)—सज्ञा पुं० [स० षण्मुख] दे० 'षण्मुख'। उ०—जग जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुसारथु महा।—मानस, १।१०३।

षप्र(पु)—सज्ञा पु० [हिं० खप्पर] दे० 'खप्पर'। उ०—भरि रुद्धि षप्र जुगनोय ईस मुडन भर वथ्थिय। पनचर रुधिचर पूरि सबक करि कारज सथ्थिय।—पृ० रा०, २।२६३।

षर्षपी—सज्ञा स्त्री० [स०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

षष्ट—वि० [स०] साठवाँ।

षष्टि¹—वि० [सं०] जो गिनती में पचास से दस अधिक हो। साठ।

षष्टि²—संज्ञा स्त्री० साठ की संख्या।

षष्टिक¹—वि० [सं०] १ साठवाला। २. जो साठ पर खरीदा जाय।

षष्टिक²—संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान जो बहुत जल्दी तैयार होता है। साठी धान।

षष्टिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] साठी धान [को०]।

षष्टिक्य—संज्ञा पुं० [सं०] १ वह खेत जिसमे साठी धान बोया गया हो। २. वह खेत जो साठी धान बोने लायक हो। ३ साठी धान से परिपूर्ण खेत [को०]।

षष्टितम—वि० [सं०] साठवाँ। उनसठ के बाद का [को०]।

षष्टिभाग—संज्ञा पुं० [सं०] शिव का एक नाम [को०]।

षष्टिमत—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'षष्ठिमत्त'।

षष्टियोजनी—संज्ञा स्त्री० [सं०] साठ योजन की यात्रा या दूरी [को०]।

षष्टिलता—संज्ञा स्त्री० [सं०] भ्रमरमारी नाम का पौधा। विशेष दे० 'भ्रमरमारी' [को०]।

षष्टिवर्षी—वि० [सं० षष्टिवर्षिन्] जो साठ वर्ष का हो।

षष्टिवासरज—संज्ञा पुं० [सं०] साठी धान। षष्टिक [को०]।

षष्टिशालि—संज्ञा पुं० [सं०] साठी धान।

षष्टिसवत्सर—संज्ञा पुं० [सं०] साठ वर्ष की अवधि। साठ वर्ष का समय। प्रभव आदि साठ सवत्सर या वर्ष [को०]।

षष्टिहायन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० षष्टिहायन' [को०]।

षष्टिह्रद—संज्ञा पुं० [सं०] एक तीर्थ का नाम [को०]।

षष्ट्यंशक—संज्ञा पुं० [सं०] एक यंत्र जिससे जहाज पर नक्षत्रो की स्थिति देखकर यह स्थिर करते हैं कि जहाज पृथ्वी के किस भाग मे है।

षष्ठ—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षष्ठी] जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

षष्ठक—वि० [सं०] छठा [को०]।

षष्ठकाल—संज्ञा पुं० [सं०] भोजन का छठा समय जो तीसरे दिन का सायंकाल है [को०]।

षष्ठकालोपवास—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत। दे० 'षष्ठान्नकाल'।

षष्ठभक्त¹—वि० [सं०] छठे समय अर्थात् तीसरे दिन शाम को भोजन करनेवाला [को०]।

षष्ठभक्त²—संज्ञा पुं० छठा भोजन। षष्ठकाल का आहार [को०]।

षष्ठम—वि० [सं०] छठा [को०]।

षष्ठमी—संज्ञा स्त्री० [सं०] षष्ठी तिथि [को०]।

षष्ठांश—संज्ञा पुं० [सं०] १. छठा हिस्सा। २. कर के रूप मे दिया जानेवाला उपज का छठा भाग या हिस्सा। राजस्व के रूप मे राजा को दिया जानेवाला कृषि का छठा अंश [को०]।

षष्ठांशवृत्ति—संज्ञा पुं० [सं०] नरेश। वह जिसकी वृत्ति राजस्व के रूप मे प्राप्त कृषि का छठा भाग हो। राजा जो कर के रूप मे मिले कृषि के छठे अश द्वारा कार्यवृत्ति सपादित करता है [को०]।

षष्ठान्न—संज्ञा पुं० [सं०] वह भोजन जो तीन दिनो के बीच मे केवल एकबार किया जाय। षष्ठान्नकाल नाम के व्रत की विधि के अनुसार तीसरे दिन सायंकाल किया जानेवाला आहार।

षष्ठान्नकाल—संज्ञा पुं० [सं०] एक व्रत जिसमे तीन दिन मे केवल एक बार, विशेषत सायंकाल के समय, भोजन किया जाता है।

षष्ठान्नकालता—संज्ञा स्त्री० [सं०] षष्ठान्नकाल व्रत के अनुसार भोजन करना [को०]।

षष्ठान्नकालक—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'षष्ठालुकालुक' [को०]।

षष्ठालुकालुक—संज्ञा पुं० [सं०] तीन दिन मे केवल एक बार किया जानेवाला भोजन [को०]।

षष्ठिका—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ एक देवी। षष्ठी देवी। २. जातक के जन्म से छठे दिन का उत्सव जिसमे षष्ठी देवी की पूजा विधेय है [को०]।

षष्ठिमत्त—संज्ञा पुं० [सं०] हाथी। वह हाथी जो साठ वर्ष का हो।

विशेष—कहते है कि हाथी को साठ वर्ष की अवस्था होने पर उसके गडस्थल से मदस्राव होता है।

षष्ठिहायन—संज्ञा पुं० [सं०] १. हाथी। २. साठी धान।

षष्ठी—संज्ञा स्त्री० [सं०] १ किसी पक्ष का छठा दिन। शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. षोडश मातृकाओं मे से एक। देवसेना। ३. कात्यायनी। दुर्गा। ४ (व्याकरण मे) संबंध कारक। ५. बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा उक्त दिन का उत्सव।

यौ०—षष्ठीजाय = जिसने छठा विवाह किया हो। षष्ठीतत्पुरुष = तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमे पूर्वपद मे षष्ठी विभक्ति होती है। षष्ठीपूजन = प्रसव के छठें दिन होनेवाला पूजा। षष्ठीव्रत = व्रतविशेष। षष्ठी समास = दे० 'षष्ठी तत्पुरुष'।

षष्ठीप्रिय—संज्ञा पुं० [सं०] स्कंद। कार्तिकेय [को०]।

षष्ठ्य—संज्ञा पुं० [सं०] छठा हिस्सा। छठा अंश।

षहसानु¹—संज्ञा पुं० [सं०] १. मयूर। मोर। २. यज्ञ [को०]।

षहसानु²—वि० सहिष्णुता से परिपूर्ण [को०]।

षाड—संज्ञा पुं० [सं० षाण्ड] शिव का एक नाम। षड।

षाड्य—संज्ञा पुं० [सं० षाण्ड्य] हीजडापन। नपुंसकता।

षाट्कौशिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षाट्कौशिकी] जो ६ कोश या तह मे लिपटा हुआ हो [को०]।

षाट्पौरुषिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षाट्पौरुषिकी] ६ पीढ़ियों से संबंध रखनेवाला। पुराना [को०]।

षाड़व—संज्ञा पुं० [सं०] १ राग का एक जाति जिसमे केवल छह (प और ध) लगते हैं और निषाद नहीं लगता। २ मेघ। पाड़व दो प्रकार का

(१) शुद्ध पाडव और (२) ब्राह्म पाडव। २ मिठाई। ३ हलवाई का काम। ४ मनोराग। मनोविकार। ५ गाना। सगीत (को०)।

षाडविक—सज्ञा पु० [स०] मिठाई बनानेवाला। हलवाई (को०)।

षाड्गुण्य—सज्ञा पु० [स०] १ छह उत्तम गुणो का समूह। २ नीति के छह अग। विशेष दे० 'षड्गुण'। ३ किसी वस्तु का छह से गुणा करने से प्राप्त गुणनफल। ४, तत्व (को०)।

यौ०—षाड्गुण्य प्रयोग = राजनीति के ६ अगो का प्रयोग करना षाड्गुण्यवेदी = नीति के छहो अगो का जानकार। षाड्गुण्य युत, षाड्गुण्यसयुत = ६ गुणो से युक्त जो नीति के छहो अगों से युक्त हो।

षाड्रसिक—सज्ञा पु० [स०] १ वह जिसे छहो रसो का ज्ञान हो। २ वह जिसमे छहो रसो का स्वाद प्राप्त हो।

षाड्वर्गिक—वि० [स०] पाचो ज्ञानेंद्रियो और मन मे सयम रखनेवाला (को०)।

षाण्मातुर—सज्ञा पु० [स०] कार्तिकेय (जिनका पालन छह कृत्तिकाओ ने किया था)।

षाण्मासिक[1]—वि० [स०] १ छह महीने का। २ छह महीने मे होनेवाला। ३ छठे महाने मे पडनेवाला।

षाण्मासिक[2]—सज्ञा पु० मृतक सबधी एक कृत्य जो किसी की मृत्यु के छह महीने पीछे किया जाता है। छमसो। छमासी।

षादतर—सज्ञा पु० [स०] सगीत मे एक बनावटी मस्तक जो मद से भी नीचा होता है। यह मस्तक केवल बजाने के काम मे आता है।

षाष्टिक—वि० [स०] साठ वर्ष की अवस्थावाला (को०)।

षाष्ठ—सज्ञा पुं० [स०] छठा (को०)।

षाष्ठिक[1]—वि० [स०] छठे से सबधित (को०)।

षाष्ठिक[2]—सज्ञा पु० चार मास का एक व्रत जिसमें प्रति छठे दिन खाया जाता है (को०)।

षिंग—सज्ञा पु० [स० पिङ्ग] १ व्यभिचारी। स्त्रैण। कामुक। २ शूरवीर।

षिङ्ग—सज्ञा पुं० [स०] १ कामुक व्यक्ति। २ विट। ३. वेश्या रखनेवाला पुरुष (को०)।

षु, षू—सज्ञा पुं० [स०] प्रसव (को०)।

षेध—सज्ञा पु० [स०] निषेध। वारण (को०)।

षोडत्—सज्ञा पु० [स० षोडत्] छह दाँत का बैल। जवान बैल।

षोड़श[1]—वि० [स० षोडश] [वि० स्त्री० षोडशी] सोलहवाँ।

षोड़श[2]—वि० [स० षोडशन्] जो गिनती मे दस से छह अधिक हो। सोलह।

षोड़श[3]—सज्ञा पु० सोलह की सख्या।

षोडशक[1]—वि० [स०] जिसमे सोलह अश हो (को०)।

षोडशक[2]—सज्ञा पु० सोलह की सख्या।

षोडशकल—वि० [स०] सोलह कलाओ या अशो से युक्त।

षोड़शकला—सज्ञा स्त्री० [स० षोडशकला] चद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं। विशेष दे० 'कला'—२।

षोडशगण—सज्ञा पु० [स० षोडशगण] पाच ज्ञानेंद्रिय, पाँच कर्मेंद्रिय, पाच भूत और एक मन इन सबका समूह।

षोडशदान—सज्ञा पु० [स०] सोलह प्रकार के दान जो ये हैं—(१) भूमि, (२) आसन, (३) पानी, (४) कपडा, (५) दीपक, (६) अन्न, (७) पान, (८) छत्र, (९) सुगंध, (१०) फूलमाला, (११) फल, (१२) सेज, (१३) खडाऊँ, (१४) गाय, (१५) सोना और (१६) चाँदी।

षोडशधूप—सज्ञा पु० [स०] 'तत्रसार' के अनुसार एक धूप जो सोलह वस्तुओ के मिश्रण से तयार होता है और देव पितृ कार्यो मे इसका प्रयोग विहित है (को०)।

षोडशपक्षशायी—सज्ञा पु० [स० षोडशपक्षशायिन्] मेढक, जो सोलह पक्ष तक निश्चेष्ट रहता है (को०)।

षोडशपूजन—सज्ञा पुं० [स० षोडशपूजन] सोलहो सामग्री के साथ पूजन। विशेष दे० 'षोडशोपचार'।

षोडशभुजा—सज्ञा स्त्री० [स०] दुर्गा देवी का एक रूप (को०)।

षोडशभेदित—वि० [स०] जो सोलह भागो मे विभक्त हो। सोलह भागो मे बँटा हुआ (को०)।

षोड़शमातृका—सज्ञा स्त्री० [स० षोडशमातृका] एक प्रकार की देवियाँ जो सोलह हैं—(१) गौरी, (२) पद्मा, (३) शची, (४) मेधा, (५) सावित्री, (६) विजया, (७) जया, (८) देवसेना, (९) स्वधा, (१०) स्वाहा, (११) शाति (१२) पुष्टि, (१३) धृति, (१४) तुष्टि, (१६) आत्मदेवता।

षोडशविध—वि० [स०] सोलह प्रकार का। सोलह भेद का (को०)।

षोडश शृगार—सज्ञा पु० [स० षोडशशृङ्गार] पूर्ण शृगार जिसके अतर्गत सोलह बातें हैं। पूरा सिगार। विशेष दे० 'शृगार—२' तथा 'सोलह सिगार'।

विशेष—प्राचीन सस्कृत साहित्य मे षोडश शृगार की गणना अज्ञात प्रतीत होती है। अनुमानत यह गणना वल्लभदेव की सुभाषितावली (१५वी शती या १२वी शती) मे प्रथम बार आती है। उनके अनुसार वे इस प्रकार हैं—

आदौ मज्जनचीरहारतिलक नेत्राञ्जन कुडले,
नासामौक्तिक केशपाशरचना सत्कचुक नूपुरौ।
सौगन्ध्य करकङ्कण चरणयो रागो रणन्मेखला,
ताम्बूल करदर्पण चतुरता शृगारका षोडश॥

अर्थात् (१) मज्जन, (२) चीर, (३) हार, (४) तिलक, (५) अजन, (६) कुडल, (७) नासामुक्ता, (८) केशविन्यास, (९) चोली (कचुक), (१०) नूपुर, (११) अंगराग (सुगंध), (१२) ककण, (१३) चरणराग, (१४) करधनी, (१५) ताबूल तथा (१६) करदर्पण (आरसी नामक अंगूठी)।

पुन १६वी शती मे श्रीरूपगोस्वामी के उज्वलनीलमणि मे शृगार की यह सूची इस प्रकार गिनाई गई है—

स्नातानासाग्रजाग्रन्मणिरसितपटा सूत्रिणी बद्धवेणि.
सोत्तंसा चर्चिताङ्गी कुसुमितचिकुरा स्रग्विणी पद्महस्ता।
ताम्बूलास्योरुबिन्दुस्तबकितचिबुका कज्जलाक्षी सुचित्रा
राधालक्तोज्ज्वलाघ्रि स्फुरति तिलकिनी षोडशाकल्पिनीयम्॥

उक्त प्रमाण से शृंगारो की यह सूची बनती है—

अर्थात् (१) स्नान (२) नासा मुक्ता, (३) असित पट, (४) कटि सूत्र (करधनी), (५) वेणीविन्यास, (६) कर्णावतंस, (७) अंगो का चर्चित करना, (८) पुष्पमाल, (९) हाथ मे कमल, (१०) केश मे फूल खोसना, (११) तांबूल, (१२) चिबुक का कस्तूरी से चित्रण, (१३) काजल, (१४) शरीर पर पत्रावली, मकरीभंग आदि का चित्रण, (१५) अलक्तक और (१६) तिलक।

यहाँ वल्लभदेव के तथा श्रीरूपगोस्वामी के काल तक की शृंगार सूची मे विभिन्नता स्पष्ट है।

हिंदी कवियो मे जायसी के अनुसार ये शृंगार यो है—(१) मज्जन, (२) स्नान (जायसी ने मज्जन, स्नान को अलग रखा है), (३) वस्त्र, (४) पत्रावली, (५) सिंदूर, (६) तिलक, (७) कुंडल, (८) अंजन, (९) अधरो का रंगना, (१०) तांबूल, (११) कुसुमगंध, (१२) कपोलो पर तिल, (१३) हार, (१४) कचुकी, (१५) छुद्रघटिका और (१६) पायल।

रीतिकाव्य के आचार्य केशवदास ने भी सोलह शृंगार की गणना इस प्रकार की है—

प्रथम सकल सुचि, मंजन अंमल वास,
जावक, सुदेस केस पास की सम्हारिबो।
अंगराग, भूषन, विविध मुखवास-राग,
कज्जल ललित लोल लोचन निहारिबो।
बोलन, हँसन, मृदुचलन, चितौनि चारु,
पल पल पतिव्रत प्रन प्रतिपालिबो।
'केसोदास' सो बिलास करहु कुँवरि राधे,
इहि विधि सोरहै सिंगारन सिंगारिबो।

उक्त छंद की टीका करते हुए सरदार कवि ने ये शृंगार यो गिने हैं—(१) उबटन, (२) स्नान, (३) अमल पट्ट, (४) जावक, (५) वेणी गूँथना, (६) माँग मे सिंदूर, (७) ललाट मे खौर, (८) कपोलो मे तिल, (९) अंग मे केसर लेपन, (१०) मेहदी, (११) पुष्पाभूषण, (१२) स्वर्णाभूषण, (१३) मुखवास (१४) दंत मंजन, (१५) तांबूल और (१६) काजल। यहाँ स्पष्ट है कि टीकाकार ने कई उपकरण अपनी ओर से जोडे है।

नगेंद्रनाथ वसु ने हिंदी विश्वकोश में इन शृंगारो को गणना निम्नलिखित दी है—

(१) उबटन, (२) स्नान, (३) वस्त्रधारण, (४) केश प्रसाधन, (५) काजल, (६) सिंदूर से माँग भरना, (७) महावर, (८) तिलक, (९) चिबुक पर तिल, (१०) मेहदी, (११) सुगंध लगाना, (१२) आभूषण, (१३) पुष्पमाल, (१४) मिस्सी लगाना, (१५) तांबूल, और (१६) अधरो को रंगना।

उक्त विभिन्न सूचियो से पता चलता है कि षोडश शृंगार की कोई निश्चित परिभाषा या सूची नही रही है। देश और काल के अनुसार उसमे भिन्नता होती रही।

षोड़श संस्कार—संज्ञा पुं० [सं० षोडश संस्कार] वैदिक रीति के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ संस्कार जो द्विजातियो के लिये कहे गए ह। विशेष दे० 'संस्कार'।

षोडशांग[1]—वि० [सं० षोडशाङ्ग] सोलह अंगोवाला। जिसके सोलह भाग या प्रकार हो [को०]।

षोड़शांग[2]—संज्ञा पु० दे० 'षोडशधूप'।

षोड़शांग चूर्ण—संज्ञा पु० [सं० षोडशाङ्ग चूर्ण] वैद्यक मे एक चूर्ण जो विषमज्वर मे दिया जाता है।

विशेष—चिरायता, नीम की छाल, कुटकी, गिलोय, हड का छिलका, नागर मोथा, धनिया, अडूसा, त्रायमाणा, कटियाली, काकडासिंगी, सोंठ, पित्तपापडा, प्रियंगु पुष्प, पेखल, पीपल, कचूर सब सामान लेकर पीस डाले और ११ टंक प्रति दिन ठढे जल से आठ दिन तक सेवन करे।

षोड़शांगुलक—वि० [सं० षोडशाङ्गुलक] जो सोलह अंगुल माप का हो। सोलह अंगुल के नाप की चौडाई का [को०]।

षोड़शांघ्रि—संज्ञा पु० [सं० षोडशाङ्घ्रि] केकडा।

षोड़शांशु—संज्ञा पु० [सं० षोडशांशु] शुक्र ग्रह, जिसमे सोलह किरनें मानी गई है।

षोडशात्मक—संज्ञा पु० [सं०] आत्मा [को०]।

षोडशार[1]—वि० [सं०] १ सोलह अराओ वाला। जैसे, षोडशार चक्र। २ जिसमे सोलह पखडियाँ हों [को०]।

षोडशार[2]—संज्ञा पुं० एक प्रकार का कमल।

षोडशार्चि—संज्ञा पु० [सं०] शुक्र ग्रह [को०]।

षोडशावर्त—संज्ञा पु० [सं० षोडशावर्त] शंख।

षोड़शाश्रि—संज्ञा पु० [सं० षोडशाश्रि] वह घर या मंदिर जो सोलह कोनो का हो। ऐसे घर मे सदा अँधेरा रहता है। (बृहत्संहिता)।

षोडशाह—संज्ञा पुं० [सं०] व्रत या उपवास आदि जो सोलह दिनो तक चलता रहे [को०]।

षोड़शिक—वि० [सं०] [वि० स्त्री० षोडशिकी] दे० 'षोडशक'।

षोडशिका—संज्ञा स्त्री० [सं० षोडशिका] एक प्राचीन तौल जो मागधी मान से १६ माशे और व्यावहारिक मान से एक तोले के बराबर होती थी।

षोडशिकाम्र—संज्ञा पु० [सं०] एक प्रकार की बीज जिसे पलू कहते हैं [को०]।

षोड़शी[1]—वि० स्त्री० [सं० षोडशी] १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की (लडकी या स्त्री)। जैसे,—षोडशी बाला।

षोड़शी[2]—संज्ञा स्त्री० १ सोलह वर्ष की स्त्री। नव यौवना स्त्री। २. दस महाविद्याओ मे से एक। ३. एक यज्ञपात्र। ४. एक

प्राचीन तौल। पल का एक भेद जो मागधी मान से ५ तोले और व्यावहारिक मान से ४ तोले के बराबर होता था। ५ इन सोलह पदार्थों का समूह–ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, इंद्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम। ६ मृतक संबंधी एक कर्म जो मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है।

यौ०—षोड़शी सपिंडी।

षोडशी[1]—संज्ञा पुं० [सं०] १. सोमयुक्त पात्र विशेष। २. अग्निष्टोम यज्ञ का विभेद या रूपांतर विधान [को०]।

यौ०—षोडशीग्रह = अग्निष्टोम यज्ञ में देवता के निमित्त दिया हुआ पेयनिषेक वातर्पण।

षोड़शोपचार—संज्ञा पु० [सं० षोडशोपचार] पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह माने गए हैं।

विशेष—इनके नाम इस प्रकार हैं—(१) आवाहन, (२) आसन, (३) अर्घ्यपाद्य, (४) आचमन, (५) मधुपर्क, (६) स्नान, (७) वस्त्राभरण, (८) यज्ञोपवीत, (९) गंधन (चंदन), (१०) पुष्प, (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) तांबूल, (१५) परिक्रमा और (१६) वंदना। तंत्रसार के अनुसार इनके नाम इस प्रकार है,–(१) आसन, (२) स्वागत, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) मधुपर्क, (७) आचमन, (८) स्नान (९) वस्त्र, (१०) आभरण, (११) गंध, (१२) पुष्प, (१३) धूप, (१४) दीप, (१५) नैवेद्य और (१६) वंदना।

षोढा—क्रि० वि० [सं०] छह् ढंग से। छह् प्रकार से। षड्धा [को०]।

षोढान्यास—संज्ञा पु० [सं०] तंत्र में छह् प्रकार अंगन्यास [को०]।

षोढामुख—संज्ञा पुं० [सं०] कार्तिकेय जिनके छह् मुख कहे जाते हैं षण्मुख [को०]।

षोदत्—संज्ञा पुं० [सं०] जवान वृष। दे० 'षोहत्' [को०]।

ष्ठीवन—संज्ञा पुं० [सं०] [वि० ष्ठीवित, ष्ठ्यूत] १. थूकना। २. लाला। लार (को०)।

ष्ठीवित—वि० [सं०] दे० 'ष्ठ्यूत' [को०]।

ष्ठेव, ष्ठेवन—संज्ञा पुं० [सं०] दे० 'ष्ठीवन' [को०]।

ष्ठेविता—वि० [सं० ष्ठेवितृ] थूकनेवाला।

ष्ठ्यूम—संज्ञा पु० [सं०] १. चंद्रमा। २. प्रकाश। ३. जल। ४. सूत्र। डोरा। ५ शुभता। कल्याण [को०]।

ष्ठ्यूत—वि० [सं०] थूका हुआ।

ष्ठ्यूति—संज्ञा स्त्री० [सं०] थूकना। ष्ठीवन करना।